

# महाभारत

का

## भीष्मपर्व

— १० —

श्रीवेदव्यास रचित संस्कृत मूल

हिन्दी और अंग्रेजी अनुवाद सहित

THE MAHABHARAT.

BUISHMA PARV

The Sanskrit text of Mahabhi Vyas  
with complete English and Hindi translations.

जिसको

रामकृष्ण कम्पनी मुरादाबाद ने

“तन्त्रप्रकाश प्रेस” में छपाकर प्रकाशित किया।

Published by

Ram Krishna & Co, of Moradabad

पुस्तक मिलनेका पता—

रामकृष्ण कम्पनी

मुरादाबाद.

To be had of the publishers  
RAM KRISHNA & Co

Moradabad.

॥ श्रीः ॥

# महाभारतम्

## भीष्मपर्व

नारोयणं नमस्कृत्य नरञ्चैव नरोत्तमम् ।  
देवीं सरस्वतीञ्चैव ततो जयमुदीरयेत् ॥

जनमेजय उवाच । कथं युयुधिरे वीराः कुरुपाण्डवसोमकाः । पार्थिवो ह्यमर-  
त्मानो नानादेशसमागताः ॥ १ ॥ वैशम्पायन उवाच । यथा युयुधिष्ठिरे पार्थ-  
कुरुपाण्डवसोमकाः । कुरुक्षेत्रे तपःक्षेत्रे मृणुत्वं पृथिवीपते ॥ २ ॥ तेष्वतीर्यकु-  
क्षेत्रं पाण्डवाः सहसोमकाः । कौरवाः समवसन्तः-जिगीषन्तो महाबलाः ॥ ३ ॥

### अध्याय ॥ १ ॥

राजा जनमेजय बोले कि महावीर योद्धा कौरव पांडव सोमक और अ-  
नेक देशोंसे आये हुए वड़े २ महात्मा राजालोग कैसे २ युद्ध करते हुए उ-  
को वर्णन कीजिये वैशम्पायन बोले कि हे राजा जनमेजय बड़े वीर शूर प्रताप  
कौरव पांडव सोमक आदि अनेक राजालोगों समेत महा उत्तम तीर्थ कुरुक्षेत्र ।  
जैसे युद्ध करते हुये उसको मैं कहता हूं वृष चिचलगाकर सुनो कि वह महाबल  
युद्ध में प्रशंसनीय विजय के चाहनेवाले वेदपाठी पांडव सोमकों समेत कुरुक्षेत्र

## Bhishma Parv

### CHAPTER I

Having looked down to Narayan and Nar the best of males as  
well as to the goddess of Learning, let us say of the great victory.  
“How,” said Janmejaya, “did the brave Kauravas, the Pandavs,  
the Somaks and other kings, assembled from different countries,  
fight?” “Listen, king,” replied Vaishampayan, “how they fought  
on the sacred plain of Kurukshetra. Entering that plain, the  
mighty Pandavas, and the Somaks, desirous of victory, advanced

वेदाध्ययनसम्पन्ना सर्वे रक्षाभनानन्दन । अशिसन्तो जय युद्धे बलेनाभिमुखा  
रणे ॥ ४ ॥ अभियाय चतुर्धा धार्तराष्ट्रस्य बाहिनीम् । प्राच्यमथा पश्चिमभागे  
न्याविशन्त ससैनिका ॥ ५ ॥ समन्तपञ्चराट्पुत्रा शिबिराणि सहस्रशः । कारया  
मान्मयाधिवत् कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः ॥ ६ ॥ शूराश्च पृथिवी सर्वा बालवृद्धाश्च  
शोपिताः । निरभ्यारुर्येवास्यैर्द्रव्यकुण्ठाज्जिता ॥ ७ ॥ यावत्तथास्ते सूर्या हि जम्बू  
द्वीपस्यमण्डलम् । तावदेव समायात बलपार्थिवसत्तम ॥ ८ ॥ एतस्था सर्ववर्णा  
स्तेमण्डलं यदुयोजनम् । पर्याक्रामन्त देशाश्च नदी शैलान् वनानि च ॥ ९ ॥  
तेषां युधिष्ठिरा राजा सर्वपापकर्मणः । व्यादादेश सवाहाना भयभाज्यमनुज  
मम् ॥ १० ॥ सध्याश्च त्रिविधास्तात तपाराजौ युधिष्ठिर । एतवेदी घोदत्तय

में उत्तरकर कौरवों के सम्मुख वर्चमान हुए, और पराक्रम के द्वारा विजयपी  
आशा रखनेवाले युद्धभूमि में वर्चमान हुएोंचन क उस दुःखमे महाखदित सेनाक  
सम्मुख पहुँचकर कुक्षत्र के पश्चिम भाग में सेनाआक गनुष्यों सभेत प्रार्थिभि-  
मुख हो स्थिरता से निपतहुए । ५ । फिर कुन्तानन्दन युधिष्ठिर ने स्वगणपचक  
से बाहर अपनी बुद्धिक अनुसार हजारों शिबिर अर्थात् खपडर तबू तैयार किय  
और बुद्ध बालक स्त्री इनको छाडकर सब पृथ्वी क गनुष्य गात्र हाथी घाट रथ  
इत्यादि समेत यहाँतक इकट्ठ हुए कि पृथ्वी के मद्दश निर्जन स हागये, इ राजन्द्र  
जन्मेजय जहाँतक कि सूर्य में प्रकाश करना हुआ स तप्त काता है उस पृथ्वी  
मंडल के सबराजा लोग अपनी २ सेनाओं सभेत आकर इकट्ठ हुये सब वर्णों  
देशनदी पर्वतों को और बहुत योजन क उम पृथ्वी मंडलका उल्लघन करक एक  
स्थानमें निवास किया । ९ । तब महा बुद्धिमान राजायुधिष्ठिर न उा अष्टश्री  
राजाओं से लेकरम्लच्छउपर्यन्त लोगोंक निमित्त बहुत उत्तम २ प्रकारक भोजनों  
के बनवानेकी आज्ञादी और भोजनक अनन्तर रात्रि क समय सब लोगों का

against the Kurvyas. Those scholars of the Vedas too great  
delight in war and being desirous of victory, faced the battle  
field with their troops. Approaching the army of Duryodhan the  
invincible Pandu is stationed their armies to the west of the plain  
with their faces looking East. And Yudhishtir the son of Kunti  
caused thousands of tents to be pitched in a regular order beyond  
Samantprinchak. It seemed as if the whole earth had poured down  
there all its horse men chariots and elephants and had kept only  
the children and aged people at home. The whole of Jamrud up  
under the sun joined to make up the force. People of all races  
assembled there having marched for miles over hills rivers woods and  
plains. Yudhishtir, the best of men, ordered good food and other  
necessities to be supplied to the warriors and their lists. He gave

पाण्डवेयोऽय मित्युत ॥ ११ ॥ अगिज्ञानान सवेषां सत्ताश्चाभरणानिच । योजया  
मास्त कौरव्यो युद्धकाल उपायते ॥ १२ ॥ दृष्ट्वाच्चजाग्र पार्थस्य घातप्राप्तो  
मेहामनाः । सह सर्वमर्हापाले, प्रथम्युद्धतपांडवम् ॥ १३ ॥ पाण्डुरेणातपत्रेण ध्रियमाणेन  
मूर्धनि । मध्ये नागसहस्रस्य घ्रातुमि परिवारित ॥ १४ ॥ दृष्ट्वा दुष्योधने  
दृष्टाः पात्राला यजनन्दिन । दध्मु मीता महा शयान् अश्वरथ मधुसूतना, १५  
तत प्रहृष्टां तां सेनामभिमोक्षाय पाण्डवा । वम्बुर्दृष्टमनसो वासुदेवश्च दीर्यवान्  
॥ १६ ॥ ततो हर्ष समागम्य वासुदेवघनजयौ । दध्मतु पुरपन्थावो । द्रुप्योशंखौ  
रथे स्थितौ ॥ १७ ॥ पञ्चजन्यस्य निर्घोष देवदत्तस्य चोभयौ । श्रुत्वा तु  
निनन्द योधा, शरुन्मूत्र प्रसृष्टुः ॥ १८ ॥ यथा सिंहस्य नदन स्वन श्रुत्वेतरे

उत्तम स्वच्छ विस्तरों समेत यथा सोनेकाँदी इस प्रकारसे उस बुद्धिमान पांडवों  
के वड़े भाई युधिष्ठिरने सचका यथोचित मान सम्मान करके युद्ध वर्त्तमान होनेके  
समयपर अपनी सेनाके मनुष्यों की पहचान के लिये सबके चिह्ननाम और  
आभूषण रणआदि में लगवादिगे, तब तो गडासाहसी दुर्योधनने अर्जुनकी ध्वजा  
पताकाको देखकर सब राजाओं समेत अपनी सेनाकी पाँडवों से लड़नेके लिये  
युद्धमें सज्जद क्रिया और आपभी अपने श्वत छत्रका धारण करके भाइयों समेत  
हजारों हाथी घोड़ों समेत उास्थितहुआ । १४ । दुर्योधन की इस धूमधाम और  
तैयारी को देखकर युद्धाभिलाषी मसन्तचित्त निगम के चाहने वाले पांचालन  
वड़े शब्दापमान शंख और मधुवाणी वाली दुन्दुभी का बनाया तदनन्तर पांडव  
और श्री कृष्णजी उस अपनी सेनाका मसन्तचित्त देखकर गडा आनन्दितहुये  
फिर श्रीकृष्ण और अर्जुन दोनों वीरशूरोंने रथमें सवार हाकर अपने दिव्य  
शंखों की ध्वनिसे इनदोनों शूरप सिंहवीरोंके पांचजन्य और देवदत्त नाग शंखों-  
की ध्वनिसे सुनतेही कौरवी सेनाके वीरोंने मोरे भयके मूत्र और विष्टा

his men various watchwords in order to distinguish them from others and fixed for them names and badges for recognition during battle. Seeing the banner of the son of Kunti, the magnanimous son of Dhritiashtra, with the white umbrella raised over his head, surrounded by a thousand elephants and accompanied by his hundred brothers and kings began to array his own troops against the Pandavas. 14 The warlike Panchals blew their conchshells and beat the sweet-sounding cymbals in glee at the sight of Duryodhan. Arjun and valiant Vasudev were delighted to see those troops. The best of men, Vasudev and Arjun seated on the same chariot blew their celestial conchshells in great glee. The warriors were terrified by the sound of their peals as deer do on hearing a lion roar. A terrible dust enveloping the sun and hiding all things from view, arose with



मृगाः । व्रसेयुर्निनदं श्रुत्वा तथासीदत तद्वलम् ॥ १९ ॥ वरतिष्ठद्रजो भौम  
न प्राप्तायन किञ्चन । अतं गत इवादित्ये सैन्येन सहसा धृतः ॥ २० ॥ यवर्ष  
तत्र पर्जन्यो मांसशोणतवृष्टिमान् । दिक्षुसर्वाणि सैन्यानि तदद्भुतामिषाभयत् ॥ २१ ॥  
वायुस्ततः प्रादुर्भून् नीचै शंकरकर्पणः । विनिघ्नस्तान्यनीकानि शतशोभसहस्रशः  
॥ २२ ॥ उभे सैन्यं च राजेन्द्र युद्धाय मुदिते धृशम् । कुरुक्षेत्रे स्थिते यत्ते  
सागरक्षुभ्रतोपमे ॥ २३ ॥ तयोस्तु सेनयोरासीद्भुतः सतुसङ्गम् । युगान्तेसम  
नुप्राप्ते द्वयोः सागरयोरिव ॥ २४ ॥ शय्यासी पृथ्वी सर्वा बालवृद्धावशेषिता ।  
तेन जेनासमूहेन समानीतेन कौरवै ॥ २५ ॥ तवस्ते समयं चक्रुः कुरुपाण्डव-

कादी जैसे कि सिंहा की गर्वनाका घुनकर अन्य मृगादि पशु भयभीत होकर मूत्र  
पुरीषादि फरडालते हैं वैसेही कौरवी सेनाभी शंखोंके शब्दोंको घुनकर व्याकुल  
हागई और पृथ्वीकी धूलि आकाशको ऐसी उड़ी जिसके कारण सूर्य अस्तंगतसा  
हागया और कुछनहों जानागया । २० । और बादलने उससमय सेनाके चारों  
तरफ के मनुष्यों पर मांस और रुधिरकी वर्षाकी यहबडा आश्चर्यसा हुआ तदन  
न्तर नीचेकी आरसे पृथ्वीके कंकड़ोंका खींचनेवाला वायु बड़े वेगसे ऐसा मचण्ड-  
हुआ कि जिसने संपूर्णसेना के मनुष्यों को घापल कर दिया हे राजेन्द्र इस  
मकारसे पीड़ित होकर दोनों ओरकी सेनाओं के मनुष्य युद्धकरनेके लिये अत्यन्त  
प्रसन्नाचित कुरुक्षेत्रके मैदानमें नियत हों सावधान और व्याकुल होकर श्रोमिंत  
सागरकी सगनताको प्राप्तहुए अर्थात् उन दोनों सेनारूपी समुद्रों का ऐसा अपूर्व  
योग हुआ जैसा कि मलयके समय दोनों समुद्रों का सङ्घात होता है, और सब  
पृथ्वी जिसमें केवल बालक और वृद्ध ही शेषरहगये वह कौरवोंके जुलायेहुए  
उनसेनाओंके समूहोंके कारणघोड़े मनुष्य रथ और हाथियों सेभी शून्य हागई २५

the march of the army 20. Flesh and blood dropped from a black  
cloud over the army It was a strange sight. The wind blew  
pieces of stone which hit hundreds and thousands of warriors Both  
the armies stood in great j y ready for action on the field of Kuruk-  
shetra, like two agitated oceans The encounter of the two armies,  
was very wonderful like the two oceans at the end of the Yug. On  
account of the great muster of the armies by the Kauravas the  
cuth was divested of men and only children and aged people were  
left at home. 25. The Kauravas and the Pandavas with the Somaks  
then entered into certain conditions and rules to be observed during the  
battle as people under similar circumstances do to fight fairly and to  
secure safety to the party which has to retire Those engaged in  
contests of words should be fought against with words, those leaving

सोमका । धर्मान् सखापयामासुर्गुह्यानां भरतर्षभ ॥ २६ ॥ निवृत्ते विहिते पुद्गे  
स्यात् प्रीतिर्न परस्परम् । यथारप यथा योग न च स्याच्छूलनं पुन ॥ २७ ॥ याचा  
युद्धे प्रवृत्तानां याचय प्रतियोधनम् । निष्क्रान्तौ पृतनामध्याह्नहन्तध्या कदाचन २८  
रथी च रथिना योध्यो गजेन गजधूर्गत । अश्वेनाश्वो पदातिश्च पादाते नैव भारत-२९॥  
यथा योग्यं यथा काम यथोत्साह यथा बलम् । समाभाष्य प्रहर्ष्य न विश्वस्ते न  
विह्वले ॥ ३० ॥ पकेन सह सयुक्त प्रपन्नो विमुक्तस्तथा । क्षीणशस्त्रो विषर्मा च न हन्  
तज्यः कदाचन ॥ ३१ ॥ नसूतेषु न धुर्त्येषु न च शस्त्रेण नायिषु । न मेरी शस्त्रवादेषु  
प्रहर्ष्य कथञ्चन ॥ ३२ ॥ एवं ते समयं कृत्वा कुरुपाण्डव सोमका । विस्मय परम्

तदनन्तर उन कौरव पांडव और सोमकोंने नियम करके युद्धके इन धर्मों को  
नियतकिपा कि इस नियत कियेहुये युद्ध के समाप्त होनेपर हम सबकी प्रीति  
परस्परमें होवे, इस निमित्त कि फिर किसीके एक से गिलाप में भिन्नभाव न  
होनेपावे वचन रूप शस्त्रों से सम्मुख होने वालोंको वचनोंहीसे लड़ना योग्य है  
सेना से बाहर होजाने वालोंको कभी न मारना चाहिये रथीरथी से हाथीका  
सवारसे अश्वारूढ अश्वारूढस पैदल पैदल से लड़ने को योग्यहै अर्थात् जैसा कि  
उचित युद्ध होता है वैसाही अपने बलपराक्रम के साथ करना योग्य है और मुख  
से धोळ कर शस्त्र प्रहार करना चाहिये परन्तु विश्वासित और व्याकुल मनुष्य  
पर शस्त्र प्रहार करना अपोग्यहै ३० और एक के साथ भिड़ेहुए शरणमें आगेहुए  
वा ऐसे व्याकुल लोग जो दूटे शस्त्र और बिना बल्लरकं हों उनको कभी न मार  
ना चाहिये इनके सिवाय सोतेहुयों को शस्त्रों के लाने वाले वा बनाने वालोंको  
भी न मारे और मेरी शस्त्र नगाड़े आदि बाजोंपर किसी दशा में भी शस्त्र न  
चलाना चाहिये इसप्रकार वनसव परस्परदेखने वाले कौरव पांडव और सोमकों  
ने नियम करके बड़ा आश्चर्य किया इसके पीछे वह सब महात्मा वीर युद्ध-

ranked should not be slain, a charioteer should have a charioteer for an  
antagonist, an elephant rider with one of his own sort, a horseman  
should engage with a horseman and a foot soldier with a foot soldier  
Guided by considerations of fitness, willingness and courage one  
should give notice to another before striking No one should strike  
another who is unprepared, terrified, engaged with another, seeking  
quarter retreating, having unfit weapons or destitute of armour  
None should slay chariot drivers, beasts, men engaged in carrying  
weapons, beaters of drums or blowers of conchshells Having enter-  
ed into the above-mentioned covenants, the Kaurvas, the Pinda-  
vas and the Somaks gazed at one another with wonder And  
having thus formed themselves into battle array, those great warriors

जम्मु, प्रेक्षमाणाः पश्यन् ॥ ३३ ॥ निर्विन्द्य च महात्मानस्ततस्ते पुरुषर्षभा ।  
कृपाः सुमनसो यभ्यु सहसैनिकाः । ३४ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि जम्बूखण्डविनिर्वाणपर्वण सैन्याशिक्षणे  
प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

वैशम्पायन उवाच । ततः पूर्वापरे सैन्ये समीक्ष्य भगवानृषिः । सवनेदवि-  
वांश्रेष्ठो व्यास सत्यवतांस्तुतः ॥ १ ॥ भविष्यात् रणे घोरे भरतानां पित महः ।  
प्रत्यक्षदर्शी भगवान् भूतभक्ष्यमावस्यावत् ॥ २ ॥ वैचित्रवीर्य राजान स रक्ष्य  
प्रवीदिदम् । शोचन्तमार्तं ध्यायन्त पुत्राणामनय तदा ॥ ३ ॥ व्यास उवाच ।  
राजन् पगीतकालास्ते पुत्राश्चान्ये च पार्थिव । ते हिंसन्तव सग्रामे समासाद्यतरे  
तरम् ॥ ४ ॥ तेषु कालपरीनेषु विनश्यन्त्येव भारत । कालवर्षाण्यमात्राय मात्म  
शोके मन कृपाः ॥ ५ ॥ यदि चच्छसि सग्रामे द्रष्टुमतान् विशास्यते । चक्षुर्देवा  
भूमि में प्रवेश करूँ, अपने पराक्रमी सेना के प्रसन्नचित्त मनुष्यों समेत मनमें  
गहन दुःख ॥ १४ ॥

अध्यायः ॥ २ ॥

वैशम्पायनगोल कि युद्धके नियम होन के पछि सब वेदज्ञों में श्रेष्ठ सन्यस्तों  
के पुत्र भरतवंशियों के पितामह आगे होनेवाले युद्ध के वृत्तान्त के प्रत्यक्षदर्शी  
भूत भविष्य वर्षपान के ज्ञाता सपर्य भगवान् वेदव्यास ऋषि कौरव पाण्डवों  
की सेनाको दानों ओर तैयार देखकर उस शोचग्रस्त अपने पुत्रों के अन्याय के  
ध्यान करने वाले राजाधृतराष्ट्र से गुप्त प्रयोजन के साथ गहनचन वाले कि ह  
राजन् तुम्हारे पुत्र और अन्य तुम्हारे सहायक राजा लोग मृत्यु के पक्षी-  
भूत हैं वह युद्धभूमि में एक दूसरे से सम्मुख लड़कर नाशवा पावेंगे, हे भरत-  
वशी उन मृत्यु के पक्षीभूत और नाश होन वालों में सपर्य की विपरीतता को

and best of men, with their troops betrayed the happiness of their  
hearts from their cheerful faces 34

## CHAPTER II

"Seeing the two armies on the east and west ready to fight," said  
Vishampayana, "Vyasa the holy sage, son of Satyawati, best of men,  
scholar of the Vedas and grandfather of the Bharatas, to whom the  
past, present and future were like the present," spoke the following  
words to Vichitravirya's royal son who was at that time distressed  
and sorrowful for the destructive policy of his own sons. "The days  
of thy sons and of other kings," said Vyasa to Dhritrashtra, "are  
numbered. They will destroy one another in battle and shall perish  
all, because the hour of their death is nigh. Keep in mind the changes  
brought about by Time and do not give yourself up to sorrow. I shall

निने पुत्र युद्ध तन निशागय ॥ ६ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । न रोक्ष्ये ज्ञातेवद्यद्रु  
 ज्ञानिसत्तम । युद्धमतन्नाशयेण शृणुया त्वेव तेजसा ॥ ७ ॥ वैशम्पायन उवाच ।  
 एतस्मिन्नेच्छति द्रुपुः सग्रामं धोतुमिच्छति । वरुणामिश्वरो व्यास सञ्जयाय वर  
 ददा ॥ ८ ॥ पश्यते सञ्जयो राजन् युद्धमेतद्वाक्यमिति । पतस्य सर्वसग्रामेन पराक्ष  
 मविष्यात् ॥ ९ ॥ अश्रुयासजये राजन् दिवेनैव समविष्यति । वधयिष्यति ते युद्ध  
 सर्वज्ञश्च समविष्यति ॥ १० ॥ प्रकाशयाऽप्रकाशं वादिवायायदि वा निशि । मनसा  
 च्यन्ति नमपि सर्वं चेत्स्यति सजय ॥ ११ ॥ नेन शस्त्राणि क्लृप्स्यति नैनं वाधि  
 स्यो ध्रुव । मात्राणि रय जीव युद्धादिस्माद्मोक्षयते ॥ १२ ॥ बहन्तु कीर्त्तिमे  
 तेन कुरुया भरतर्षभ । पाण्डवानाञ्च सर्वेषां प्रदयिष्यामि मा शुचः ॥ १३ ॥

ज्ञानकर मनको शोकग्रस्त महात्मा हे राजा जो वृद्ध होने युद्ध में देखा चाहता है तो  
 मैं हे पुत्र तुम्हारा नेत्र देता हूँ तू उनमें युद्धों को देख । ६ । धृतराष्ट्र बोले कि हे  
 ब्रह्मर्षिों में श्रुत मैं अपने ज्ञाति वंशु और पुत्रों का पारना नहीं देखना चाहता हूँ  
 स्वयं यही चाहता हूँ कि आकर तेज स युद्ध का सब वृत्तान्त सुनाऊँ । वैशम्पायन  
 बोले कि जने वगमनीने जाना कि यह युद्ध देखना नहीं चाहना किन्तु पूरा पूरा  
 वृत्तांत युद्ध का सुनना चाहना है तब महावधायी होकर बन्धों न सजय का  
 वर दिया और राजा से कहा कि हे राजा यह सजय तुमसे सब कष्टों का वृत्तान्त  
 दहेगा १० । दिन में या रात्रि में तुम प्रकट कैसाही वृत्तान्त हो सब तुमसे वर्णन  
 करेगा और यह सजय दूसरे के मन की शोचो हुई बातों को भी जानेगा उसों से  
 इसका घात नहीं होगा और यह परिणाम स कभी म्यदित भी नहीं होगा हे पुत्र  
 धृतराष्ट्र यह गालगनका बेटा इस युद्ध स अलग रहेगा और हे भरतर्षभ मैं इन  
 कौरव पाण्डव और सब राज ओं की कीर्त्तिको क्याओं के द्वारा विरुपात करूंगा

grant thee my son, eyes to see the battle if thou wish to do so  
 Behold the battle! 6 'Best of Brahman sages' replied Dhrit  
 rashtra "I have no desire to see the slaughter of kinsmen, though  
 I would like to hear the minute details of it through thy power"  
 Vaishampayan said that as Dhritrashtra expressed his eagerness to  
 get an idea of the events of the battle without having to see it with his  
 own eyes Vyasa the giver of boons gave him a boon saying "This  
 Sanjaya will describe the battle to thee living Not a single detail  
 of it will escape his notice. Gifted with a divine vision Sanjaya will  
 give thee the details and will have a knowledge of everything 10  
 Sanjaya will know everything connected with the war whether it be  
 by day or night even to the extent of what men think in their minds.  
 He will be swift in weapons and will not be subject to fatigue This son

दिष्टमेतन्नरव्याध नाभिःशोचितुमर्हसि । न चैव शक्य सयन्तु यतो धर्मस्ततो जय ॥ १४ ॥ वैशम्पायन उवाच । एवमुक्त्वा स भगवान् कुरुणा प्रापतामह । पुनरय महाभागो धृतराष्ट्रमुवाच ह ॥ १५ ॥ इह युद्धं महाराज भाविष्यति महान् क्षयः । तपेह च निमित्तानि भयदानुपलक्ष्ये ॥ १६ ॥ इयता मृत्राश्च काकाश्च कशाश्च खड्गितायकैः । सम्पतन्त नगाग्रपु सगवायाश्च कुर्वते ॥ १७ ॥ अभ्यश्रन्च प्रपश्यन्ति युद्धमानन्दिनो द्विजाः । क्रव्यादा भक्षयिष्यान्त मांसाणि गजवाजिनाम् ॥ १८ ॥ निर्दयान्भिषाशन्तो जैरवा नयवेदिनः । कङ्का प्रयान्ति गन्धन दक्षिणा मभितो दिशम् ॥ १९ ॥ वभेर्पूर्वापरे स ध्वे गित्य पश्यामि भारत । उदयास्तमने सूर्य कवचैः परिवारितम् ॥ २० ॥ श्वेतलोहितपयन्ता वृष्णग्रीवा सन्धिधुतः ।

हे नरोत्तम ऐसाही होनेवाला है इस तु मका शाच करना अवश्य नहीं है, यह होनेहार वान रोकने में नहीं आसक्ती जिनपर धर्म है उभरही विजय है । १४ । वैशम्पायन बोले कि यह कुरुनशियों क पितापह महाभाग भगवान् कासजी ऐसा कहकर फिर धृतराष्ट्र से बोल कि हे महाराज यहाँ इस युद्धमें बड़ी हानि होगी क्योंकि मैं यहा भयकारी कारण का देखता हूँ बाज गिद्ध कौवे और कक नाग पक्षी वगलें समेत वृक्षों की डालियों पर एक साथही गिरत हैं और इकट्ठ होजाते हैं यह सगपक्षी बड़ प्रसन्न होकर युद्धका सम्भुरा देवते हैं और कच्चा मांस खानेवाले जीव हाथी घोडों क नाम का खाएंगे, भयानक और भय उत्पन्न करनेवाले जफना । पक्षी निर्दयता क शब्द करते हुये मध्य में से दाक्षणादिशा की ओर चलीचाहें हे भरतवशी मैं पहली और पिठली दोनों संध्याओं में उदय और अस्त होनेवाले सूर्य का सदैव प्रतिदिन गहू से घिरा हुआ देखताहूँ । २० । श्वेत लालाडा रक्त इत्यादि अनक

of Gavdgani will live to see the whole man as on myself I shall spread the fame of the Kuravas and the Pandvas. It is predestined I must not give way to grief and sorrow it cannot be averted. The victory will of course fall on the side where righteousness is. 14. Vairampanyan continued that the blessed and holy grandfather of the Kuravas again addressed Dhritrashtra saying. The carnage at the ensuing battle will be great. O king. I see numerous indications of disaster — Hawks, vultures, herons, crows and cranes are perching in great numbers on the tops of the trees and are looking down on the field well pleased at the prospect of battle. Beasts of prey will feed on the flesh of horses and elephants. Fierce herons foreboding disaster are hovering from the center to the south. I see the rising and the setting sun daily surrounded by the headless trunk. 20. Three coloured clouds with their ends white and red

त्रियर्णाः परिधाः सन्धौ भानुमन्तमवारयन् ॥ २१ ॥ ज्वलिताकैन्दुनक्षत्रं निर्वि-  
शेषदिनक्षयम् द्वि-अहोरात्रं मया दृष्टं तद्व्यायमधिष्यति ॥ २२ ॥ बालहयः प्रभया  
हीनः पौर्णमासीच कार्तिकी । चन्द्रोभूद्गवर्णश्च पद्मवर्णो नभस्तले ॥ २३ ॥ स्वप्-  
नान्तं निहता चीरा भूमिनावृत्य पार्थिवाः । राजानो राजपुत्राश्च शूराः परिघ  
वाहयः ॥ २४ ॥ अन्तरिक्षे वराहस्य वृषदंशस्य चोभयोः । प्रणादं बुध्यतोरात्रौ  
रौद्रं नित्यं प्रलक्षये ॥ २५ ॥ देवताप्रतिमाश्चैव कम्पन्ति च हसन्ति च । वमन्ति  
रुधिरं च्चारस्यैः स्थिद्यन्ति प्रपतन्ति च ॥ २६ ॥ सनाहता दुन्दुभयः प्रणदन्ति  
विशम्भते । अयुक्ताश्च प्रसन्ते क्षत्रियाणां महारथाः ॥ २७ ॥ कोकिला शत  
पत्रश्च चापा भासाः शुक्रास्तथा । सारसाश्च मयूराश्च यच्चो मुञ्चन्ति दारुणाः

रंग धारण करनेवाली विद्युतने संध्या के समय सूर्य को घेर लिया है यह मैं रात्रि  
दिन देखता हूँ यह भगेंदर उत्पान के सूचक लक्षण है और सूर्य चन्द्रमा नक्षत्रादि  
सं आग्नि के कण निकलने में गालूप होते हैं यह भी गडा अशुभ सूचक उत्पात है,  
कार्तिकमास की पूर्णिमासी के दिन आकाश में लालरंग चन्द्रमा प्रभारहित अपने  
कृष्ण चिह्नके बिना आग्नि के समान वर्णवाला दिखाई दिया, इसका फल यह  
दिखाई दे रहा है कि परिघ के समान प्रलम्ब भुजवाले शूरवीर और मृतक राजा-  
लोग वा रागद्वार पृथ्वीको आच्छादित करके सोवेंगे और अन्तरिक्ष में उछल-  
कर लड़ते हुए सुक्र और वृषदंश दोनों के भयकारी महाशब्दों को रात्रि के  
समय नित्य देखना और सुनना है । २५ । और देवताओं की मूर्तियां कांपती  
हैं सती हुई मुखोंसे रुधिर बगलती हैं और पसीनों में तरहे होकर पृथ्वीपर गिरती  
हैं और वे राजन दुन्दुभिर्वा विनादजाये आप अच्छे प्रकार से जगती हैं और सत्री  
लोगों के वृहत् और वचन दिव्य रथ घोड़ों के बिनाही चलते हैं योकेल शतपत्र  
नीलकण्ठ भास और तंगे सास मोर यह सब पक्षी भयानक शब्दोंको करते हैं

and neck black, charged with lightning assume the forms of maces  
and envelop the sun loth at its rising and setting. I have seen the  
sun, the moon and the stars all blazing of an evening simultaneously.  
I have seen this both by day and night. This forebodes consternation.  
On the full moon night of Kartik, the moon became lightless, invisible  
and fiery ( 1 y turns ) and the sky became lotus like in colour. Many  
valliant kings and princes of great bravery and of arms like clubs,  
will be down slain on the earth. Night after night I have been  
noticing in the air the cries of fighting lears and cats. The images  
of gods and goddesses have been seen laughing, trembling, vomiting  
blood from their mouths, sweating or falling down from their  
pedestals. Drums give sound without beating and the great chariots

॥ २८ ॥ गृहीतशस्त्रा क्रोशन्ति चर्मिणो वाजिपृष्ठगा । अरुणोदये प्रदृश्यन्ते  
शतशः शलभप्रजा ॥ २९ ॥ उभ सन्ध्ये प्रकाशते दिशो दाहसमन्वित । पर्जन्य-  
पांसुवर्षा च मासवर्षा च भारत ॥ ३० ॥ या वैषा विश्रुता राजर्षीलोक्ये साधुस-  
म्मता । अरुण्यती तयांष्येव वसिष्ठ पृष्ठत कृत ॥ ३१ ॥ रोहिणीं पीडयन्नेव  
स्थितो राजन् शनैश्चर । व्यावृत्त लक्ष्म सोमस्य भविष्यति महद्भयम् ॥ ३२ ॥  
अनघे च महाघोर स्तनित श्रयते त्वन । बाह्वनाच्च रुद्रतां निपतन्त्यश्रुबिन्दव ॥ ३३ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि जम्बूखण्डविनिर्वाणपर्वणि श्रीवेदव्यासदर्शने  
द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

और घोड़ों की पीठों पर बैठे हुये वाज अगन जहा रूपी शस्त्रों से शब्द रूपी आघातों  
को करते हैं और सूर्य के उदय होने पर दीड़ियों के हगारों समूह-दृष्ट पड़ते हैं हे  
भरतवंशी दिग्दाह युक्त दोनों सभ्या प्रकाशमान होती हैं और बादलों से मांस  
और धूलि की वर्षा होती है । ३० । और यह जा साधुओं की मानी हुई अरुण-  
ती तीनों लोकों में मसिद्ध है उराने भी वसिष्ठजी की ओर पीठरी है और गह  
अनिश्चर रोहिणी नक्षत्रका पीडित करता हुआ वर्चमान है चन्द्रमारा रूप टरु  
गया इन सब उत्पातों से महाभय उत्पन्न हागा और बिना बादलों के आकाश में  
बड़ी भारी भयानक गर्जना सुनी जाती है और रोती हुई सवारियों के अनुपातों  
की दृष्टि पृथ्वी पर होती है ३१ ॥

of the shatryas move without being drawn by beasts Cuckoos, wood-  
peckers, jays coals, parrots and peacocks cry as usual to nos Horse  
men bearing arms and armour cry out of a sudden Hundreds of  
insects are seen in swarms flying in the morning Both morning  
and evening the four quarters are seen ablaze and the clouds pour  
showers of dust and flesh Aundhati celestiated throughout the  
three regions and prused of the righteous keeps her back turned on  
Vashisith dhani the planet is seen harassing Rohini The sign of the  
deer in the moon has changed its proper place All this denotes great  
evil The cloudless sky sends forth peals of thunder, and tears falls  
down from the eyes of beasts 3,



‘व्यास उवाच ॥ खग गोषु प्रजायन्ते रमन्ते मातृभिः सुताः । अनासवं पुंषुकं  
 तं दर्शयन्ति च न द्रुमा ॥ १ ॥ गर्भिण्योऽजातपुत्राश्च जनयन्ति विभीषणान् । कन्यायाः  
 पक्षिभिश्चापि सहाश्रन्ति गम्भारम् ॥ २ ॥ त्रिविषाणाधनुर्नेत्रा पञ्चपादा द्विमहना ।  
 द्विशिर्षाश्च द्विपुच्छाश्च द्वेष्टिणः पञ्चवोऽश्विवाः ॥ ३ ॥ ज वन्ते विवृतास्याश्च व्याहर-  
 न्तोऽश्विवा गिर । त्रिपदाः शिपिनस्तादर्याश्च दुर्दृष्टा विषाणिनः ॥ ४ ॥ तथैवान्याथ  
 दृश्यन्ते स्त्रियोचै ब्रह्मणादिनाम् । नैव ते यान् मयूराश्च जनयन्ति पुंषु त्व ॥ ५ ॥ गोवत्सं  
 यडघा सुते भ्या दृगाल महीपते । कुन्कुरान् करभाश्च शुक्राश्च शुभवादिनः ॥ ६ ॥  
 त्रिषः काचित्प्रजायन्ते चतस्रः पञ्च कन्यकाः । जातमानाश्च नृत्यन्ति गायन्ति च

अध्याय ॥ ३ ॥

‘रामजी बोले कि हे राजा गधे गौओं के साथ विषय करते हैं और पुत्र  
 माताओं के साथ रमण करते हैं और वनकं अनेक वृक्ष बिना श्वत् के फल फूलों को  
 दिखालाने हैं गर्भवती पुत्र उत्पन्न करने वाली स्त्रियां गणकारी बालकों को उत्पन्न  
 करती हैं गधेआदि पशु कधे भांय खाने वाले पक्षियों के साथ मिलकर परस्पर  
 भोजन करते हैं, तीन सींग चार नेत्र पांच पैर दोल्लिगेन्द्री दो शिर दो पूंछ वाले  
 असभ्य अशुभ रूप मांमाहारी निर्गताहारी पशु उत्पन्न होते हैं और तीन पंजे  
 चोटी चार दाढ़ सींग बाण किये गरुड नाग पक्षी अशुभ और भयानक वृद्धों  
 को बोलने हुये उत्पन्न होते हैं । ४ । इसी प्रकार ब्रह्मणादियों की स्त्रियां भी विष-  
 रीत दृष्ट आती हैं तेरे पुरों गरुड पक्षी गों के उत्पन्न करते हैं हे राजा घावू गौ  
 के बछड़े को और दुनियां दृगाल को और ताने अशुभ बोलने वाले कुक्कुट और  
 करभों को उत्पन्न करते हैं काई २ स्त्रियां चार २ पांच २ कन्याओं को एक समय  
 में उत्पन्न करती हैं आश्चर्य यह कि यह कन्या पैदा होनेही नाचगी गानी और

### CHAPTER III

‘Asses,’ continued Vyas, “are born from line; sons have sexual  
 pleasure with mothers, forest trees bear fruits and flowers out of  
 season, pregnant and impregnant women give birth to monsters;  
 birds and beasts of prey feed together; ill omened beasts having three  
 horns, four eyes, five legs two sexual organs, two heads or two tails,  
 are born with fierce teeth, and with gaping mouths utter forth  
 ominous cries. Garuds are born with three legs, with crests, with  
 four teeth or with horns. Brahman women in the city have been  
 found giving birth to garuds and peacock. Mares give birth to  
 calves, bitches give birth to jackals and cocks, and antelopes and  
 parrots utter ominous cries. Some women gave birth to four of five  
 daughters who, as soon as they were born, set about dancing, singing



हसन्ति च ॥ ७ ॥ पृथक्जनस्य सर्वस्य क्षुद्रकाः प्रहसन्ति च । नृयन्ति  
परिगापान्ति वेदयन्तो महद्भयम् ॥ ८ ॥ प्रतिमाश्चालिखन्त्येताः सशस्त्राः कात  
चोदिताः । अन्यायमाभधावन्ति शिशवो दण्डपाणयः ॥ ९ ॥ अन्योन्यमभिमृद-  
न्तिनगराण्य युयुत्सवः । पक्षोत्पलान् दृक्षेपुजायन्ते कुमुदानि च ॥ १० ॥ विश्व  
ग्वाताश्च चान्युग्राः रजो नाप्युपशाम्यति । अभीक्ष्णं कम्पते भूमार्कं राहुरपैत  
च ॥ ११ ॥ भ्येतो प्रहस्तया चित्रां समतिक्रम्य तिष्ठति । अभावाद्दि विशेषेण  
कुरुणां तत्र पश्यन्ति ॥ १२ ॥ धूमकेतुर्महाघोरः पृथक्कम्य तिष्ठति । सेनयो  
रशिरं घारं कारप्स्याम मह प्रहः ॥ १३ ॥ मघास्वङ्गारको वक्रं ध्रुवणे च बृहस्पतिः ।  
भगं नक्षत्रमाकाशे सूर्यपुत्रेण पश्यते ॥ १४ ॥ शुकः प्रोष्टपदे पूर्वं समावह्य

हँसती हैं और सब नीचे मनुष्यों के नातेदार भाई बन्धु जाने कुबड़े आदि भी  
हाकर हाँस्य करते भयको दिखलाते हुये नाचते और गाते हैं यह शस्त्रधारी मूर्ति-  
या काल के विपरीत होनेसे गिरती हैं और बालक लोग हाथों में दण्ड लिये हुए  
परस्पर में एक दूसरे के सन्मुख दौड़ते हैं और युद्धागिलायी हाँकर अपने बनाये  
हुये नगरों को परस्पर विध्वंस करते और स्थानों को ढाते हैं, पक्ष, उत्पल  
कुमुद और सूर्य के उदय में खिलने वाले कमल वृक्षों पर पैदा होते हैं । १० ।  
और संसार में चलने वाले वायु भयानक चलते हैं और धूलोंकी उड़ना शांत  
नहीं होता है, पृथ्वी अत्यन्त प्रकाशित होती है और राहु सूर्य से मिलता है  
। ११ । इसी प्रकार केतु भी चित्रा नक्षत्र को घेरे हुये गियत है यह अधिकतर  
कौरवों के नाशको देखता है और बड़ा घोर धूमकेतु दृश्य नक्षत्र को दबाये  
हुए बसियत है यह महाउग्र ग्रह दोनों सेनाओं के घार अंकल्याण को करेगा  
। १३ । मंगल विरछा होकर मघानक्षत्र में और बृहस्पति श्रवण नक्षत्र में है, और  
सूर्य के पुत्रशर्नर से पूर्वाफाल्गुनी वा उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र दक्कर पीड़ित

and laughing The members of the lowest orders laugh, dance and  
sing and thus indicate the consequences. Infants as if actuated by  
death, draw armed images, run against one another armed with clubs  
and desirous of battle break down the towns ( erected in sport ).  
Lotuses and lilies of sorts blow on trees, strong winds blow and bring  
dust continuously. Earthquakes are frequent and Rahu is coming  
towards the sun. 11. Ketu has stopped its course after passing the  
planet Chitra This in particular foretells the destruction of the  
Kauravas. A fierce comet has arisen to afflict Pusya. It will cause  
great destruction to both the armies. Mars inclines towards Magha  
and Jupiter towards Sravan. Suan the offspring of the sun afflicts  
Phalguni by its approach 11. Shukra shines on Purva-bhadrapad  
and conjointly with Parigh, casts its influence on Uttara bhadrapad.

विरोचते । उत्तरेतु गगिक्म्य सहितः समुदीक्ष्यते ॥ १५ ॥ अथेतो ग्रहप्रज्ञातः  
सधूम इव पावकः । ऐन्द्रं तेजस्वनक्षत्रं ज्येष्ठामाक्रम्य तिष्ठति ॥ १६ ॥ भव  
प्रज्वलितो घोरभयमव्य प्रवर्त्तते । रोहिणीं पीडयत्येव मुमाचशशिमास्करी । चित्रा  
स्वात्पन्तरे चैव विष्टितः परुषत्रः ॥ १७ ॥ वक्रानुवक्रं कृत्वाच श्रवणं पावकप्रभः ।  
ग्रहाराशिं समावृत्य लोहितांगो व्यवस्थितः ॥ १८ ॥ सर्वसंध्यपरिच्छिन्ना पृथिवी  
सत्यमालनी । पञ्चशीर्षा यथाश्चापि शतशीर्षाश्च शतायः ॥ १९ ॥ प्रघातामर्ष  
लोकाय पास्वायन्मिदं जगत् । ता गावः प्रस्तुता वत्सै शोभन्त प्रसृत्युत ॥ २० ॥  
निधेरारिर्विषश्चापन् एन्द्रमाश्च ज्वलिता भृशम् । व्यक्तं पश्यति शस्त्राणि संग्राम

क्रिये जाते हैं और शुक्र पूर्वामाद्रपद नक्षत्रों चदकरउत्तको दवाये हुये प्रकाश  
कता है और परिघ नाम उपग्रह के संग होकर उत्तरामाद्रपद नक्षत्री और  
देखता है । १५ । और कर्कश सधूम आग्नि के सगान जल रहा है और  
गहप्रज्वलित भयकारी राहुन्द्रते संघराखनेवाल तेजस्वी ज्येष्ठा नक्षत्रको ज्वात  
कर के वर्धमान है । १६ । और अपमव्य होकर वर्धमान है वह पाटिन  
ग्रह चित्रा और स्वाती के मध्यमें वर्धमान रोहणी नक्षत्र और दोनों सूर्य और  
चन्द्रमा का पीडा देता है और अग्नि के सगान प्रकाशवान् मंगल वारम्बार  
गिरछा होकर ग्रहस्थानी स दवाये हुये श्रवण नक्षत्र को पूर्ण दृष्टी से वेधे  
हुये वर्धमान है, । १८ । खेती से प्रशंसा पानवाली पृथ्वी सधमकार के  
खेतोंसे आच्छादित होकर पांचगिर वालं जौ और मूँ गिरवालंधानों को उदात्त  
करती है, संसारमें पूज्य और जिनमें यह सधनगत् वर्धमान है ऐसी गाँएं अपने  
बछड़ों के समीप हाकर रुबिरीको छोड़ती हैं । २० । इस का यहफल है कि घनुषों से  
अग्नि निकले और खड्ग अत्यन्त अग्नि रूपों और शस्त्र उद्यक्त होकर संग्राम

15. *Ketu* burns like smoky fire, menacing *Jyeshtha* the bright constellation sacred to Indra. 16. *Dhruva*, blazing fiercely turns towards the right and afflicts *Rohini* as well as the sun and the moon. Fierce *Rahu* is staying between *Chitra* and *Sicati*. Mars of fire-like glory in its oblique course casts a full gaze on *Shravan* which is already under the influence of *Vrahaspati*. The earth which used to produce particular crops at fixed times is covered with the crops of every season—barley and rice at the same time! Cows the best of creatures upon whom all the world depends give out blood when the calves have sucked them. 20. Rays of light come out of bows and swords blaze forth brilliantly. This shows that the weapons themselves are alive to the approach of the great battle which is

गमुपाहितम् ॥ २१ ॥ आग्नवर्णो यथा भास शस्त्राणामुदकस्यच । कचयानां  
 ध्वजानञ्च भावणात् महाक्षय ॥ २२ ॥ पृथ्वी शोणतावर्णो ध्वजोद्भुपसमा-  
 कुला । कुङ्कुमां वैशसे राजन् पाण्डवै सह भारत ॥ २३ ॥ दक्षु प्रज्वलितता  
 स्याथ व्दाहरान्तं मृगाद्वज्रा । अत्याहितं दर्शयन्ता घेदयन्तो महद्भयम् ॥ २४ ॥  
 एकपक्षाक्षिचरणः शकुनः पचरोनिशः । रौद्रं वदति संरब्धः शोणतं छहंपन्निय  
 ॥ २५ ॥ शस्त्राणं चैव राजेन्द्र प्रज्वलन्तीव सप्रति । सप्तर्षीणामुदाराणां सम  
 वच्छाद्यते प्रभा ॥ २६ ॥ सम्बत्सरस्थापिनौ च ग्रहौ प्रज्वलितगुम्भाः । व-  
 शादायाः समीपस्थौ वृहस्पतिश्चनैवौ ॥ २७ ॥ चंद्रादत्वाद्युभौ प्रतापेकाद्वज्रा  
 द्वित्रयोदशौ । अपर्वाणं ग्रहंयतो प्रजासंक्षयमिच्छतः ॥ २८ ॥ अशोभताद्विशः

में धुँधकी एकदं देखें और शस्त्रोंकी चमक का रंग अग्नि के समान है कवच  
 और ध्वजाओंका वड़ा नाशहोगा, हे भरतवंशी राजा धृतराष्ट्र पांडवोंक साथ  
 कौरवोंकी शत्रुता होनेपर पृथ्वीपर खरिर् की नदियां बहेंगी और ध्वजारूप  
 नौकाओं से व्याप्तहोकर बाकूल होंगी और अत्यन्त क्रोध रूप मुख से पशुपत्नी  
 पंडमगको सूचितकरते आर अशुभका प्रकाश करते हुए दिशाओंमें घाम्त हैं  
 । २४ । रावि के समय एक पक्ष एकत्र और एकही चरणका रखनेवाला अत्यन्त  
 नाशी आकाशवारी पक्षी खरिर्का उगलना हुआसा भयकारी शब्दों को करताहै  
 हेराजेंद्र शस्त्रअग्नि के समान वर्धमानहै जिनसे महातेजस्वी सप्तर्षिगों के प्रकाश  
 मंदहोकर दकेहुएगे विदिा होतेहै । २५ । और अत्यन्त तेजस्वी वृहस्पति और  
 चनेश्चर दानोंग्रह वार्षिक गति में निगन होकर विशाखी के सम्मुख निगन दाखते  
 हैं एकही दिन तरस निगिको दानो मूर्ध और चन्द्रगा ग्रंसर्गय और बिना पर्वकेराहु  
 ग्रह से मिले हुे मगाके गाशको चाहते ह, चारों ओर धूलिकी वर्षा से सब दिशा

imminent. The colour of weapons, water, armour and standards is  
 like that of fire. This shows that a great slaughter is at hand. A river  
 of blood will run out of the bodies of the Kauravas and the Pandavas  
 with the banners for its waters. Animals and birds on all sides, with  
 their mouths blazing like fire and with fierce cries, are displaying  
 evil omens and terrible consequences. A bird with one wing, one eye  
 and one leg, hovering over the sky in the night, makes a frightful  
 noise and vomits blood 25. The weapons are blazing like fire and  
 the glory of the constellation known as the seven risus is dimmed.  
 The bright planets, *Prahaspati* and *Shani*, having approached *Visha-  
 kha*, have stopped their annual course. The moon and the sun have  
 undergone an eclipse within thirteen days in the same fortnight.  
 Such a strange coincidence of two eclipses forebodes a great slaughter.

सर्वा पञ्चदशैः समन्ततः । उत्पातमेघा रौद्राश्च राज्ञौ वर्षन्ति शोणितम् २९ ॥  
 कृत्तिकां पीडयन्तीश्चैर्नक्षत्र पृथिवीपते । अभीक्ष्णवाता वायान्ते घूमकेतुमवस्थिताः  
 ॥ ३० ॥ विषमं जनयन्त्येते आक्रन्दजननमहत् । त्रिषु सर्वेषु नक्षत्रेभ्यः । वशा-  
 म्पते । गृध्रः सम्पतते शीर्षं जनयन् भयमुत्तमम् ॥ ३१ ॥ चतुर्दशौ पञ्चदशौ  
 भूतपूर्वाश्च पौडशम् । इमास्तुनाभजानेहभमावस्थात्रयोदशौ । चन्द्रस्यापुमौग्रस्तावेक-  
 मासीं त्रयोदशौ ॥ ३२ ॥ अर्षाणिग्रहेगेतौ प्रजा, सक्षययिष्यतः । मांसवर्ष  
 पुनस्तीव्रमासीः कृष्णचतुर्दशौ । शोणितैर्वैकसम्पूर्णा अतृप्तास्तत्र राक्षसाः ॥ ३३ ॥  
 प्रातःस्रोतो महानद्यः समितः शोणितोदकाः । केनायमानाः कृपाश्च कूर्दन्ति हृषभा  
 इव ॥ ३४ ॥ पनस्तुलकाः सनिघाताः शुक्राश्च निसमप्रमाः । अथ चैव निशां

अशोभितहोगई और रात्रि के समय बड़े भयानक उत्पात और रुधिर को मेघ  
 बरसात है, और हे राजन राहूकृत्तिका को पीटा देता हुआ अपने कटिनरुगों से  
 मरा हुआ देखा गया है, धूमकेतु नाग उत्पात में निपत होकर वायु चरते हैं । २० ।  
 यह वायु महा पुटकारी शत्रुता को उत्पन्न करते हैं, और हे राजा सत्र नक्षत्रों के  
 मध्य रक्षा न करने वाला पापग्रह बड़े भयंकर पैदा करवा हुआ तीनों छत्रों में  
 सबके शिरों के छत्रों कलशों पर गृध्र पक्षी होकर गिरता है, एक गासकी तेरस  
 तिगिको बिना पर्वके चन्द्रमा और सूर्य दोनों राहु ग्रहसे ग्रसेगये हैं । ३२ ।  
 यह दोनों प्रजाका नाश करेंगे इस लिये मैं चौदशपूर्णमासी और व्यतीत प्रतिपदा  
 को गानता हूँ परन्तु अमावास्या और तेरस के याग का नहीं जानता हूँ वहां रुधिर  
 से भरे हुए सुखवाले राक्षस लोगोंकी तृष्णा अधिक शोणित पीनेकी होगी और  
 नदियों में बड़ी नदियां ता रिकद प्रवाह पुक्त होई और छोटी नदियां रुधिर  
 समान जलकी बहने लगीं कृष्ण फेनोंमें भरेहुए बैलों के समान क्रीड़ा करते हैं

The land being overwhelmed in all directions by storms of dust, looks desolate. Fierce and ominous clouds nightly pour forth showers of blood. Fierce Rahu is also afflicting *Krittika*. Rough winds portending ill are constantly blowing. 30 All these portend a dreadful war. One planet or other has shed its evil influence on every one of the three sorts of constellations. A lunar fortnight usually consists of fourteen, fifteen, or sixteen days, but never of thirteen days, yet in the course of the same month there have been lunar and solar eclipses within thirteen days of each other. 32 This will cause a great slaughter of the creatures of the earth. The Rakshases drinking blood by mouthfuls will not yet be satisfied. Great rivers are flowing in opposite directions, their waters have become bloody and the wells foaming up are bellowing like bulls.

व्युष्टामनय समवाप्स्यथ ॥ ३५ ॥ विनि सृत्य महोल्काभिरितिमिर सर्वतो द्दशम् ।  
 अन्यान्यमुपतिष्ठद्भिस्तत्र चोक्त महर्षिभि ॥ ३६ ॥ भूमिपालसहस्राणा भूमिपाल  
 सहस्राणा भूमि पास्यति शोणितम् । कैलासमन्दाराम्यान्तु तथा हिमवताविभो ॥ ३७ ॥  
 सहस्रशोमहाशब्दः शिखराणि च पतन्ति च । महाभूता भूमिकम्पे चत्वार सागरा  
 पृथक् । वेलामुदत्तयन्ती च क्षोभयन्ती वसुन्धराम् ॥ ३८ ॥ वृक्षानुन्मथ्यवान्युप्रा  
 घाता शर्करकर्पिणः । अमग्नाः सुमहाघातैरशनीम समाहता ॥ ३९ ॥ वृक्षा  
 पतन्ति चैत्याश्च ग्रामेषु नगरेषु च । नीललोहितपतिश्च भवत्पग्निरुतो द्विजैः ॥ ४० ॥  
 घामार्चिचर्दुष्टगन्धश्च मुञ्चन्वै दारुणध्वनम् । स्वर्शा गन्ध रसाश्चैव विपरीता  
 गृहीयते ॥ ४१ ॥ धूमध्वजा प्रमुञ्चन्ति कम्पमाना सुहर्मसु । सुञ्चन्त्यङ्गारवर्षव

और इंद्र के वज्र के समान प्रकाशमान महाशब्दावधान उल्कापात होते हैं अब  
 तुम प्रातःकाल अग्नय के फल को पाओगे । ३५ । और महर्षियों ने भी सब  
 दिशाओं में अंधेरा देख मसालें बल घरसे बाहर निकलकर परस्पर में एकत्र  
 होकर कहा है कि पृथ्वी हजारों राजाओं के साथ का पीवेगी और हे सगर्भ  
 इसी प्रकार कैलास मन्दराचल और हिमाचल पर्वतों से हजारों बड़े घोर शब्द  
 शिखरों पर गिरते हैं, और पृथ्वीके कम्प से चारों समुद्र पृथक् २ अपनी २ मर्या  
 दाओं को उल्लंघन और सब संसारको व्याकुल करत हुए बड़ी वृद्धियुक्त हुए हैं  
 और कंकड़ों से भरा हुआ भयानक वायु ऐसा चलता है कि जिसके बगसे बिजली  
 से सजाये हुए अनेक वृक्ष टूट २ कर गांठों की सीमाओं और नगरों के भीतर  
 जाकर गिरते हैं और घातकों से बोधी हुई अग्नि नील रक्त और पीत रंग की हानी  
 है वह दुष्टगंधा वायुर्वा भयानक शब्दको करती विदित हानी है ह राजा स्वर्श  
 गंध और रससचावपीत हैं, बारंबार कावधान हाकर भयानक धूमका छेदीनी है

Meteors effulgent like Indra's thunderbolt fall with loud hisses. Evil  
 consequences will overtake you when this night passes away. Great  
 risals with lighted brands come out of their houses and met together  
 in the thick gloom of the night. After observing these signs they  
 say that the earth will drink the blood of thousands of kings. From  
 the mountains of Kulas Mandar and Himavat thousands of explo-  
 sions are heard and thousands of summits are tumbling down. In  
 consequence of the earth's trembling the four oceans are much swollen  
 and are ready to transgress their bounds and to afflict the earth.  
 Fierce winds charged with sharp pebbles are blowing crushing  
 mighty trees. Odorous and sacred trees in villages and towns are  
 uprooted by fierce winds and lightning. When Brahmans pour down  
 libations on fire, it burns with blue, red or yellow flames bending

मेरुयश्च पटहास्तथा ॥ ४२ ॥ शिखराणां समुद्रानामपरिष्ठात् समन्ततः । वायसाश्च  
 रुचन्मुग्रं चाम मण्डलनाशिता ॥ ४३ ॥ पञ्चापस्येति सुभृश चावाइयन्तेवयां  
 सि च । निलीयन्त ध्वजाग्रेषु क्षयाय पृथिवीक्षिताम् ॥ ४४ ॥ ध्यायन्त प्राकर-  
 न्तश्च व्याला वेपथुसमुता । दानानुरद्धमाः सर्वे वारणा सलिलाधरा ॥ ४५ ॥  
 पतच्छ्रुत्वा मवानत्र प्राप्तकाल व्यवस्यताम् । यथा लोक समुच्छेद नाय गच्छेत  
 भारत ॥ ४६ ॥ वैशम्पायन उवाच । पितुर्वचो निशम्येत् धृतराष्ट्रप्रवीदिदम् ।  
 दिष्टमतत् पुरामन्ये भावयति नरक्षय ॥ ४७ ॥ राजान क्षत्रधर्मेण यद्विवक्ष्य  
 न्तिसंयगे । वीरलोक समासाद्य सुरा प्राप्स्यन्ति केवलम् ॥ ४८ ॥ इह कीर्ति  
 परे लोके दीर्घकाल गृहत् सुखम् । प्राप्स्यन्ति पुरव्याघ्रा प्राणास्त्यक्त्वा महा

और चागोंदिशाओं में अच्छे फूले फले वृक्षों के ऊपर अग्नि पंडल में बैठे हुए काक  
 भयकारी रादन करते हैं और पक्षी पक्षा २ अर्थात् नाश होने वालों का परस्पर  
 युद्ध है ऐसे अत्यन्त शब्द करते हैं और राजाओं के नाश सूचन करने की  
 ध्वजाओं की नोकों में छिपनाश है दुष्ट दायी ध्यान करते हुए मून विष्ठाको  
 करत कंपावमान हैं और गरीब दायी और घोड़े पसीनों में चूर हैं अब हम यहां  
 यह बातें सुनकर समय के अनुसार निश्चय करो जिससे कि हे भरतवंशी यह  
 संसार नाश न होवे । ४६ । वैशम्पायन बोले कि पिताक इन वचनों को सुनकर  
 धृतराष्ट्र यह बोला कि हे पिता व्यासजी मैं इसको सीपही होनेहार मानता हूं  
 और मनुष्यों का नाश होगा, जो राजा लग क्षत्रीधर्मसे युद्ध में मरेंगे वह सब  
 वीरों क लाकों को पाकर मोक्षरूप सुख को पावेंगे, इ शुरुवात्तम भारी युद्ध में

towards the left, yielding stench and accompanied by loud report. Touch smell and taste have lost their powers. The standards tremble and give out smoke drums and cymbals give out showers of coal dust and from the tops of the trees all round, crows wheeling in circles from the left are uttering fierce cries of *pakka*, *pakka* and perching upon the tops of the standards for the destruction of kings Vicious elephants, trembling all over, are running hither and thither giving out urine and excreta. 45 The horses are melancholy and the elephants are resorting to the water Having heard all this do what is needful so that the world may not be depopulated, O King Vaishampayan continued that on hearing these words of his father, Dhritrashtra said, ' I think all this has been ordained of old A great slaughter of human beings will take place. If the kings die, doing the duties of Kshatriyas, they will obtain bliss in the regions of the heroes. These lions among men,

हवे ॥ ४९ ॥ वैशम्पायन उवाच । एवं मुनिस्तथेत्युक्त्वा कवीन्द्रो राजसत्तम ।  
धृतराष्ट्रेण पुत्रेण ध्यानमन्त्रगमत् परम् ॥ ५० ॥ स मुहूर्त्तं तथा ध्यात्वा पुनरेवा  
ब्रवीद्ब्रह्म । असंशयं पार्थिवेन्द्र कालः संक्षयते जगत् ॥ ५१ ॥ सृजते च पुन-  
र्लोकान् नेह विद्यति शाश्वतम् । ज्ञातीनां च कुरुणा च सम्मन्त्रिसुहृद्गन्तथा ॥ ५२ ॥  
धर्मं देशाय पन्थानं समर्थो ह्यास चारणे । क्षुद्रं जगतिवध प्रादुर्मा कुरुधममा  
प्रियम् ॥ ५३ ॥ कालोऽयं पुत्ररूपेण तव जातो विशाम्पते । न वध पूजयेत् वेदे  
हितं नैव कथञ्चन ॥ ५४ ॥ हन्यात् स एन यो हन्यात् कुलधर्मं स्वकांतनुम् ।  
काले नोत्पद्यन्तासि शम्भे सति यथापादे ॥ ५५ ॥ कुलस्थास्य घनाशाय  
तथैव च महीक्षिताम् । अनयो राज्यरूपेण तव जातो विशाम्पते ॥ ५६ ॥ लुप्त

माणोंको त्यागकर यहां तो कीर्ति और परलोक में बहुत काल तक महा सुखको  
पावेंगे । ४९ । वैशम्पायन बोले कि हे राजेन्द्र जनमेजय वह कवीन्द्र वासदेव  
मुनि ऐसाही है यह कहकर अपने पुत्र धृतराष्ट्र के साथ विन्तामें बसितहुये और  
एक मुहूर्त्त पर्यन्त ध्यानावस्थित होकर यह वचन बोले कि हे राजा नरम-देह  
काल जगत् को नाश करताहै और फिर उत्पन्न भी करत है यहां किसीका सदैवता  
नहीं गात है, तुम जानबाले, कोरव, नानेदार और भिन्नो के धर्मरूप मागों को  
उपदेश करो और तुम्हीं उनके राक्षसेभी समर्थहो ज्ञातिबालों का गरना नीचकर्म  
कहाजाताहै इस से इसमेरी अमियपातको मन्कर हेरागन् यह काल तेरेवेदेदुष्योधन  
के कुरसे पकट हुआहै, मारने वाले को बेदमें अच्छानहीं कहतेहैं और किसीदशा  
में भी वह प्रियकारी नहीं है । ५४ जो धर्मों मारताहै वह धर्म उसी का मारताहै  
कुलका धर्म अपना देह है, समर्थ होनेपर इसकुल क और इसी प्रकार अन्य राजाओं  
के नाश के लिये काल से मेरित हाकर तु आपाचिकाल के समान कुगर्भ में चलता

dying in the great battle will gain fame in this world and happiness  
in the next" 49. Vaishampayan continued that on hearing the  
words of Dhritrashtra, Vyasa the prince of poets, concentrated his mind  
in supreme yoga and having accomplished to a short time, he again  
said, "No doubt, it is time that I destroy the world and create it  
again" Nothing is immortal here. It is your duty to preach  
righteousness to the Kuru's, kinsmen and friends as you have the  
power to restrain them. The slaughter of kinsmen is sinful and  
you should not do what I do not like. Death is born in the shape of  
Duryodhan thy son. The destroyer is not applauded in the Vedas  
and is not beneficial to any country 51. He who destroys Dharma  
is destroyed himself by it, for the Dharma of one's own family is one's  
body. Being in authority, thou art made liable to deviate from

धर्मा परेणास धर्मं दर्शय वै सुतान् । क्रिन्ते राज्येन दुर्धनं येन प्राप्तोऽसिद्धिर्वि-  
 पम् ॥ ५० ॥ यशो धर्मश्च कीर्तिश्च पालयन् स्वर्गमाप्स्यसि । लभन्तां पाण्डवा-  
 राज्यं शमं गच्छन्तु कौरवा ॥ ५१ ॥ एनं ब्रुवति । वप्रेन्द्रे धृतराष्ट्र-  
 म्बिकासुतः । आश्लेष्य धान्यं दान्यहो दान्यश्चैवात्रवीत् एन ॥ ५२ ॥  
 धृतराष्ट्र उवाच ॥ यथा मवान् वेत्तितथैववेत्ता मादामाचं । इदं मे यथार्थं ।  
 स्वार्थं हि समुह्यात तात लोको माचापि लोकात्मक मेव विद्धि ॥ ६० ॥ प्रनादयेत्या-  
 मतुलप्रभायं त्वं नो गतिर्दर्शयिताचधीरः । न चापिते मद्वशमा महर्षे नवाधर्मं कर्तुं  
 महार्हि मे मति ॥ ६१ ॥ त्वहि धर्मप्रवृत्तिश्च यशः कीर्तिश्च भाता । करुणां पाण्डवा-  
 नाच मान्यथापि पितामह ॥ ६२ ॥ व्यास उवाच ॥ वैचित्र्यीर्यं नृपते यत्ते मनास

हे, हे राजा तेरा अनर्थ राजरूप से उत्पन्न हुआ है तू अत्यन्त अवर्णी है अपने  
 पुत्रोंको धर्मका उपदेशकर, हे दुर्धर्ष तुमको राज्य से क्या लाभ है जिसके लिये  
 पनेपापको बिताया है अपन यश और धर्मका पालन कर जिससे कि तू स्वर्ग को  
 पावेगा पाण्डवोंको राज्य दो और कौरवों का शान्ती दो । ५८ । यह पिताके  
 वचन सुनकर अम्बिकाका पुत्र वचन का जाननवाला धृतराष्ट्र पिताके इनशिक्षा  
 रूपी वचनों को तिरस्कार करके फिर यहवचन बोला कि जैसा आपजानते है  
 मैंनाही मैंभी जानताहूँ और मुझको अपना और दूसरोंका जीवन वा नाश ठीक २  
 विदिन है हे तात यह लोक अपने प्रयोगन में बड़े २ मोहोंको पाता है आप  
 मुझकोभी लोकरूपी जानो । ६० । हे परा नभाव वाले मे आपको प्रसन्न करता  
 हूँ आप पंडित होकर हमारी गति और उपदेश के करनेवालहा परन्तु हे महर्षी  
 वह पुत्रपेर स्वारीन नहीं है और मैं बुद्धि से अवर्ण करने का नहीं चाहताहूँ आप  
 भरत वंशियोंके यश और कीर्तिके कारण रूपहो और कौरव पाण्डव दानों के पिता-

the path of right in order to cause the destruction of thy family as  
 well as of other kings Thy evil genius clings to thee in the shape  
 of thy kingdom. Thou art very unjust as thou dost not prevent  
 thy sons from doing wrong What is the use of thy being a king,  
 when for the sake of thy kingdom thou art immerging thyself in sin ?  
 Preserve thy fame and virtue so that thou mayst attain heaven Give  
 kingdom to the Pandavas and peace to the Kauravas" 58 : Having  
 heard the words of his father, Dhritrashtra the wise son of Ambika,  
 disregarding the wisdom of Vyas, said in reply, " I know as much  
 as you do about the life and death, but man, in what regards his  
 interests, is unable to use his judgment and I am not an exception to  
 this rule 60 I entreat you, learned and great man, to teach me  
 My sons are beyond my control It is never my intention to lead a



यर्त्तते । अभिघत्स्य यथा काम छेत्तास्मि तव सशयम् ॥ ६३ ॥ धृतराष्ट्र उवाच ॥ यानि  
 लिङ्गानि सप्रामे भवन्ति विजयिष्यताम् । तानि सर्वाणि भगवन्-छ्रोतुं मिच्छामि तत्त्वतः ।  
 ॥ ६४ ॥ व्यास उवाच ॥ प्रसिद्धिमापावक ऊर्ध्वरश्मिप्रदाक्षणावत्त शिखो विधूमः ।  
 पुण्या गन्धाध्वाद्गुतीना प्रघाति जयस्यैतद्भाविनो रूपमाहुः ॥ ६५ ॥ गम्भीर  
 घोषाश्च महास्वगाश्च शस्त्रामृदङ्गाश्च नदन्ति यत्र । विशुद्धरश्मिस्तपनः शशीच  
 जयस्यैतद्भाविनो रूपमाहुः ॥ ६६ ॥ इष्टा वाच प्रसृता वायसनां सप्रस्थिता नाच  
 गमिष्यताच । ये पृष्ठतस्ते त्वायन्ति रजन् ये चाग्रतस्ते प्रति ये घयन्ति । ६७ ॥ कल्याण  
 घाच शकुना राजहसा शुका क्रौंचाः शतपत्राश्च यत्र । प्रदाक्षिणाश्चैव भवन्ति  
 सखेय ध्रुव जयस्तत्र यदन्त विप्राः ॥ ६८ ॥ अलङ्कृतैः कवचैः केतुभिश्च सुख

गह भीने, । ६३ । व्यासजी बोले हे राजा धृतराष्ट्र जो तेरे मन में वर्तमान है उस  
 को तू इच्छा पूर्वक कह मैं तेरे सब सन्देह दूर करूँगा धृतराष्ट्र ने कहा कि युद्ध के  
 बीचमें विजयपान बालोंक जा चिह्न होने हे उन सबको हे भगवन मे आगेसे मूल  
 समेत सुना चाहताहूँ, । ६४ । व्यासजी बोल कि स्वच्छ अग्ने प्रकाशमान लुंकी  
 ज्वालायुक्त प्रदक्षिणावर्ति निर्धूमहा और जिसमें आहुतियोंकी पवित्र सुगंध उठतीहाय  
 ता विजयहान बाल पुरुषका शुभलक्षण है, आर जहां शस्त्रमृदङ्गोंकी बड़ी गम्भीर  
 ध्वनिहा और बड़े शब्दसे बजतेहों और सूर्य चन्द्रमा वी स्वच्छ किरणें पड़नीहों  
 उसका विजयपानका लक्षण जाना । ६६ चलतेहुय वा जाना चाहते काकोंक बोलें  
 हुये चित्तराचक एमे बचन बिदिनहों जाकि पीठकी ओरसे तेरी यात्राको जल्दी  
 करते हैं और आगे से तुझको निषध करते हैं, जिस स्थानपर युद्धभूमिमें राजहंस  
 सोते क्रौंच और शतपत्र नामकी शुभचवन बालतेहुए । ६८ । दक्षिण ओरको होंप

life of sin. You are the cause of fame and greatness to the descendants  
 of Bharat as well as the grandfather of both the Kauravas and the  
 Pandavas" 62 "Open thy mind freely to me and I shall remove  
 all thy doubts" said Vyas. Tell me, Bhagwan, in detail, what  
 occurs to those who are victorious" 64 "It is a sign of victory,"  
 replied Vyas, "that Agni, when libations are poured over it, burns  
 with a bright flame inclining towards the right without smoke, and  
 gives out a sweet odour. The conchshells and cymbals are sonorous  
 and the sun and the moon shed clear light to the victorious. Crows,  
 flying or about to rise on their wings, give out agreeable sounds.  
 Those behind urge you to go on, while those that are before keep  
 you back from doing so. Where swans, parrots, cranes and wood  
 peckers, utter delightful notes to the right of the battle field, the  
 Brahmins predict victory to that side. 68 The Kshatriyas whose

प्रणादहैपितैर्वाहयानाम् । प्राजिष्मन्ती दुष्प्रतयोक्षणीया येयाञ्चमुस्ते विजयन्ति  
 शत्रून् ॥ ६९ ॥ इष्टा वाचस्तथा सत्त्वं योधानां यत्र भारत । न भ्रूयान्त म्रजयैव  
 ते तरन्ति रणोदाधम् ॥ ७० ॥ इष्टा वाच प्रविष्टस्य दक्षिणा प्रविक्षितः । पश्चात्  
 सन्धारयन्त्यधममे च प्रातपेधिकाः ॥ ७१ ॥ शब्दरूपरसस्पर्श गन्धाश्च विकृताः शुभाः ।  
 कदा हर्षश्च योधानां जयतामिह लक्षणम् ॥ ७२ ॥ अनुगा वायवो दान्ति तथा  
 प्राणि पयांसच । अनुस्रुवान्त मेघाश्च तथैवेन्द्रचक्रं पच ॥ ७३ ॥ एतानि जयमानानां  
 लक्षणानि विशम्भत । भवन्ति विपरीतानि समुर्ध्वानां जनाधिपः ॥ ७४ ॥ अल्पायां वा  
 महत्यां वा सेनायाभिमत निश्चयः । हर्षो योधगणस्यैको जयलक्षणमुच्यते ॥ ७५ ॥

सब स्थानपर विजयकाहोना ब्राह्मण वर्णन करते हैं जिनसन्निधियोंकी सेना अलंकारदि  
 और कवच ध्वजा वा घोड़ों के हींसने के सुखदायी शब्दों से आभाषण कष्ट  
 देखने के योग्यहो वह सभी आर्य्य शत्रुओं को विजय करते हैं, हे भरतवंशी जहां  
 शूरवीरों के वचन प्रसन्नता से भरे हुए पराक्रम में तुलंहुये होते हैं और जिनकी  
 माला कुंभकारी नहीं है वह पुरुषरूपरूपी समुद्रको तरजाते हैं । ७० । शत्रुकी  
 सेना में प्रवेश करके देखनेकी इच्छाकरने वाले योद्धाओं के प्रसन्न मन सावधानी  
 से संयुक्त हों इनके वचन विजय का कारण करते हैं और जो सम्मुख निषेध  
 करनेवाले हैं वहभी मृत्युसे विदित करने वाले हैं, रूप, रस, शब्द, गन्ध स्पर्श  
 यह धुंध और रूपान्तर दशासे रहितहो अर्थात् अपने मुख्य रूपों ही नियतां  
 और योद्धाओं में सदैव प्रसन्नताहोय यहभी विजय पानेवालोंके लक्षणविह्वल हैं,  
 अनुकूलवायुहो इसीप्रकार बादल वा पक्षीगी हों अथवा बादल पीछे चलनेहो  
 और इन्द्रधनुषभी इसीप्रकार हो, हे राजा यह सब विजयीलागोंके लक्षण हैं और  
 यही सब लक्षण करने वालोंके लिये विपरीत होते हैं थोड़ी वा बहुत सेनामें योद्धा

armies are embellished with armours, banners and the cheerful neigh-  
 ing of horses, are strong enough to conquer their enemies. Those  
 warriors who speak cheerfully with one another, who are full of  
 prowess and whose garlands do not fade, are able to cross the ocean  
 of war. 10. Those who, having entered in the thick of the battle,  
 utter cheerful shouts, who warn their enemies of the approach of  
 death and to whom the objects of senses appear just as they are,  
 can win victory. 72. The winds, the clouds and the birds as well as  
 the rain-bow appearing after the clouds are favourable to the  
 victorious; the same phenomena occurring unfavourably are a sign  
 of destruction. Whether the army be great or small, the cheerful-

एको दीर्घो दारयात् सेनां सुमहतीमपि । तां दीर्घाभनुदीर्यन्ते योधाः शूरतरा अपि ॥ ७६ ॥ दुर्निर्गता तदा चैव प्रभगा महती चम्पूः । अपामिव महावेगा खरता मृदगणाश्च ॥ ७७ ॥ नैव शक्या समाधातु सन्निपाते महाचम्पूः । दीर्घा इत्येव दीर्यन्ते सुचक्रांसोपि भारत ॥ ७८ ॥ मतिान् भग्रांश्च सम्प्रेक्ष्य भयं भूयोभि चर्जते । प्रभगा सहसा राजन् । दशो विद्रवते चम्पू ॥ ७९ ॥ नैव स्थापयितुं शक्या शूरैरपि महाचम्पूः । सङ्कृत्य महतीं सेनां चतुरङ्गामहोपतिः उपायपूर्वं मेघादीयते- तसततोत्थन ॥ ८० ॥ उपायायजयं श्रेष्ठमः दुर्मेदन मध्यमम् । जघन्य एव विजयो यो युद्धेन विशास्यते ॥ ८१ ॥ महान् दोषः सन्निपातस्तस्याद्यः क्षय उच्यते ।

लोगों की केवल एक प्रसन्नताही विजयनी देनेवाली है । ७५ । एकभी मागाहुआ योद्धा बहुतबड़ी सेना को भी भागां हुईसी कर देता है उस भागे हुएके पीछे बड़े शूरवीर योद्धाभी भागजाते हैं भागे हुई सेना वजी कठिनता से फिर लौट सकती है जैसे कि गलोंके बड़े बेग और डाहुये गृहों के समूह कठिनतासे नहीं लौटसक्ते इसी प्रकार भागाहुई सेना कोभी जानां, हे भारतवंशी बड़ी सेना को सम्मुख नियत करना असम्भव है क्योंकि भागे हुआ में बड़े युद्धिमान् भी भाग जाते है, भयभीत और अलग २ होजाने वाले शूरवीरोंको देखकर और भी भय बढ़जाता है हे राजा अत्यन्त व्याकुल सेना अरुणात् चारों आरों को भागती है ऐसी बड़ी सेना शूरवीरों से भी नियत करनी कठिन है राजा अपनी चतुरांगिणी सेना को अच्छे प्रकार से ध्यान करके युद्ध करे । ८० । युक्तियों से अर्थात् शत्रु के चाहने से वा कुछ धन देन से जो विजय होती है वह उत्तम विजय कही जाती है और शत्रु के मनुष्यों के मध्यमें विरोधता डलवाने से जो विजय होती है वह मध्यम विजय कहाती है और जो विजय युद्ध के द्वारा होती है उसको निकृष्ट

ness of the warriors is the giver of victory 75. The flight of even one soldier can be ruinous to the whole army, for when one soldier turns back the bravest of the army find it difficult to stand their ground, and when once an army is routed, it cannot be checked like the flow of waters or a herd of panic-stricken deer 77. A large army, when once fallen into disorder, is incapable of being rallied, for even the most-skilful in battle run away after the flying. The terror multiplies on seeing brave men turn back and the whole army is then dispersed in all directions pressing out of control. A king should therefore keep a careful watch on his army of four kinds of forces 80. The best kind of victory is that which is achieved by negotiations, the middling one is that which is brought about by

परस्परज्ञाः संहृष्टा व्यचधृताः सुनिविताः ॥ ८२ ॥ अपि पञ्चाशत् शूरा मृदुनन्ति  
महतीं चमूम् । अपिवा पञ्च पटसप्त । वृत्तपन्थनिवर्त्तिनः ॥ ८३ ॥ न धैर्ययोग-  
सङ्गः प्रशंसति महाजनम् । दृष्ट्वा सुपणोऽपन्निति महत्या अपि भारत ॥ ८४ ॥  
न बाहुव्येन सेनाया जया भवति नित्यशः । अध्वो हि जयो नाम देवशत्रुपरायणम् ।  
जयवन्तो हि संग्रामे कृतकृत्या भवन्ति हि ॥ ८५ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि जम्बूखण्डविनिर्वाणपर्वणि निमित्ताख्यानं  
तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

विजय जानो क्योंकि युद्ध में बड़े २ दोष होते हैं उसका प्रथम फल तो  
नाश है । ८२ । परस्पर में ज्ञाना प्रसन्न विच स्त्री आदि में मोह से रहित  
हृद् निश्चय रखने वाले पचास शूरवीर पुरुष भी बड़ी भारी सेना को विध्वं-  
स करते हैं अर्थात् ऐसे लड़ने हैं कि सबको मार कर विजय पाते हैं और  
मुख न फेरने वाले पाँच छः वा सात शूरवीरभी पूरी विजय का करते हैं, हे  
भरतवंशी उत्तम पक्षधारी विनता के पुत्र गरुड़ जी बड़ी सेना से भी हानिको  
देखकर बड़े भारी समूह को अच्छा नहीं कहते हैं सेनाकी आधिक्यतासे बहुधा  
नित्य विजय नहीं होती है निश्चयकरके विजय नाशवान् है इस में मारव्यभी मुख्य  
है क्योंकि मारव्य वालेही पुरुष युद्ध में विजय प्राप्त करके अपने अभीष्टको सिद्ध  
करते हैं । ८५ ।

causing disunion among the enemies and that which is gained by  
bloodshed is the worst For war has many defects of which the  
foremost is destruction. 82 Even fifty warriors, knowing one another,  
cheerful and free from wordly cares, when firmly resolved, can cause  
the destruction of a large army. Even five, six or seven warriors  
may gain complete victory. Vinata's son Garud of beautiful plumage  
has no desire for an army even when he is surrounded by great  
numbers It is not always the great numbers that give victory.  
Victory is uncertain. Fate has much to do in that matter, for it is  
the fortunate who gain victory in battles and accomplish their  
desires. 85.



वैशम्पायन उवाच । एवमुक्त्वा ययौ व्यासो धृतराष्ट्राय धीमते । धृतराष्ट्रो  
पितच्छ्रुत्वा ध्यानमेवान्वपद्यत ॥ १ ॥ समुहूर्त्तमिव ध्यात्वा च निश्चस्य मुहूर्तं ।  
सज्जय संशितात्मानमपृच्छद् भरतर्षभ ॥ २ ॥ सज्जयेमे महीपालाः शूरा युद्धामि  
नन्दिनः । अन्योन्यमभिनिघ्नन्ति शस्त्रैश्चावचैरिह ॥ ३ ॥ पार्थिवाः पृथिवीहेतोः  
समाभ्यव्यज्य ऊहितम् । तथा श्मश्र्यन्ति नान्नन्तो दध्मन्ति यमक्षयम् ॥ ४ ॥ भौम  
मैश्वर्यमिच्छन्तो न मृष्यन्ते परस्परम् । मन्ये बहुगुणा भूमिस्तन्माचक्ष्वसञ्जय ॥ ५ ॥  
चहान्त्य सहस्राणि प्रयुतान्यर्बुदानि च । कोट्यत्र लोकवीराणां समेताः कुब्जाङ्गले  
॥ ६ ॥ देशानां च परीमाणं नगराणां च सञ्जय । श्रोतुमिच्छामि तत्त्वेन यत एत

### अध्याय ॥ ४ ॥

वैशम्पायन बोले कि हे राजा जनमेजय व्यासजी इस प्रकार की अनेक बातें  
बुद्धिमान धृतराष्ट्र से कहकर चल गये और उनकी बातोंका ध्यानकरके धृतराष्ट्रभी  
चिन्ता युक्त हुआ और हे भरतर्षभ उमग एक मुहूर्त्त पर्यन्त ध्याना वस्थितहो  
वारम्बार आसलेकर उस बुद्धिमान संजयसे पूछा कि हे संजय इस स्थानपर  
यह युद्ध में प्रशंसनीय शूरवीर राजा लोग छेद दड़े चर्यों के द्वाग परस्पर में  
मारतेहैं, यह सब जीवनकी आकांक्षा त्याग हुये बुद्धिमान राजा लोग पृथ्वी के  
काटण मारते हुये शान्ती को नहीं पाते हैं और यमलोक को बढ़ाते हैं पृथ्वी  
संबंधी ऐश्वर्योंको चाहत हुये परस्परमें क्षमा संतोष इत्यादि नहीं करते हैं मैं जान-  
ता और मानताहू कि पृथ्वी बहुत गुण धारण करने वाली है हे संजय इसको  
मुझसे दहो । ५ । कुरु और जांगल देशमें संसार के काय्यवधि सत्री इकट्ठे हुये  
सो हेसंजय मैं उनके देश नगर ग्रामोंकी संख्यामूत्र समेत सुनना चाहताहू जहां  
जहां से यह आगे हैं, हुए जनपदोंगस्त्री ब्रह्मण्यपि व्यासजी के प्रभावसे दिव्य

### CHAPTER IV

Vaishampayan continued. Having spoken, as mentioned above, to King Dhritrashtra, Vyas went away and the former reflected on it in silence. During his meditation he heaved deep sighs and asked of wise Sanjaya, "These brave kings of different countries who are so anxious to join the battle, have assembled here to die for the sake of earth and will strike one another with different sorts of weapons. They will not be satisfied till they have filled the region of Yam, and are destitute of mercy and peace of mind after worldly gains. Methinks the Earth must possess many attributes. Tell me, Sanjaya, all about it. 5. Millions of Kshatriyas have assembled at Kurujungle to die, I wish to know in detail the number of their countries, cities and villages from which they have come. By the

समागता ॥ ७ ॥ दिव्यबुद्धिप्रदीपेन युक्तस्य ज्ञानचक्षुषा । प्रभावात्तस्य । त्रयपे  
 र्यामस्यामितनेजस ॥ ८ ॥ सत्रय उवाच ॥ यमप्रत महाप्रत भौमान् दृष्ट्यामिने  
 गणान् । शास्त्रचक्षुरेक्षस्य नमस्तेभरतर्षभ ॥ ९ ॥ द्विविधानीह भूतानि चराणि  
 स्वचराण च । प्रसूतानां त्रिविधा योनिरण्डस्वेदजराजाः ॥ १० ॥ प्रमातां पशु  
 सर्वेषां श्रेष्ठा राजन् जगद्युजा । जगद्युजानां प्रवरा मानवा पशवश्च ॥ ११ ॥  
 नानाकायग गर्जस्तेषा मेदाश्चतुर्दश । वेदोक्ता पृथिवीपालयेषु यज्ञा प्रतिष्ठता ॥ १२ ॥  
 प्रभ्याणां पुरुषाः श्रेष्ठा सिंहाश्चारण्यवासिना । सर्वेषामेव भूतानामन्योन्येनोपजीवन ॥ १३ ॥  
 उद्भूताः स्यान्मृगाः प्रोचस्तेषा पंचचजातय । पृथ्वीमलनाचक्षुर दक्षसाराभूतजातय  
 ॥ १४ ॥ तेषां विंशतिरेको नाम महाभूतेषु पंचसु । चतुर्विंशतिरिह सिंहा नायनीलाकममता  
 ॥ १५ ॥ यत्तां येदगावर्जापुण्यांसर्य गुणान्विता । तत्त्वेन भरतश्रेष्ठ सलाकेन प्रण

बुद्धिरूप दीपक और ज्ञानरूप नेत्रों से संयुक्त हो, संजय बोले कि हे भरतर्षभ  
 महाज्ञानी धृतराष्ट्र मैं अपनी बुद्धि के अनुसार पृथ्वी के गुणों का वर्णन करूंगा  
 तुम भी शास्त्ररूपी नेत्रों का धारण करके विचार करगें मैं आपको नमस्कार करता हूँ  
 यहां दो प्रकारके जीवधारी हैं एकस्थायर दूसरे जंगम अर्थात् नहीं चलने वाले  
 और चलने वाले और सब जीवमानका उत्पत्ति स्थान तीन प्रकारसे है अर्थात्  
 अंडज स्वेदज जरायुजस है । १० । और जंगम जीवों में जरायुज उचपहैं और  
 जरायुजों में मनुष्य वा पशु हैं यह दोनों अत्यन्त उचपहैं वही अनेक प्रकार के  
 रूप धारण करनेवाले हैं उनके प्रकार को बंद में कहेगये हैं यह संख्या में  
 चौदह हैं उन्हीं में यज्ञादि धर्म नियत हैं और ग्राम वा नगर के वासियों में  
 मनुष्य श्रेष्ठ हैं और वनवासियों में सिंह उचप हैं सब जीवों का जीवन निर्वाह

boon of the great Ishi Vyas, you are endowed with the light of  
 wisdom and the eyes of knowledge" "Best of Bharats" replied  
 Sanjaya. "I shall tell you the merits of the earth to the extent of  
 my knowledge. Hear and compare it with your knowledge of books.  
 I bow to you. The creatures of the earth are of two kinds, moveable  
 and immoveable. They are again divided into three sorts according  
 to their system of birth—Oviporous, Viviporous and those born by  
 effect of heat and damp. 10. Of moveable beings those who are  
 born alive are the best and of the latter the foremost are human  
 beings and animals. These appear in various forms which according  
 to the Vedas are fourteen in number and on which sacrifices rest. Of  
 those who live in villages and cities, human beings are the best,  
 while lions are the foremost of those living in forests. They all live  
 with the help of one another. 16. These which come out of ground,

इयति ॥ १६ ॥ अरण्यवासिनः सप्तसत्तैषां ग्रामवासिनः । सिंहाध्याप्रावराहाश्च म  
हिषाचारणास्तथा ॥ १७ ॥ ऋक्षाश्च वानराश्चैव सप्तारण्या स्मृतानृप । गौरजावि  
मनुष्याश्च अश्वाम्बतरगर्दभा ॥ १८ ॥ एते ग्राम्या समाख्याता पशवः सप्तसाधुभिः ।  
एते वै पशवो राजन् ग्राम्यारण्याश्चतुर्दश ॥ १९ ॥ भूमौ च जायते सर्वं भूमौ सर्वं विनश्यति ।  
भूमिं प्रतिष्ठाभूतानां भूमिरेव सनातन ॥ २० ॥ यस्य भूमिस्तस्य सर्वजगत्स्थानावरजगमम् ।  
तत्रातिगृह्णाराजानो विनिघ्नतीतरेतरम् ॥ २१ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि जम्बूखण्ड विनिर्माणपर्वणि भौगण्यकथनं  
चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

परस्पर में है । १६ । पृथ्वी को फोड़कर उत्पन्न होनेवाले वृक्षादिक स्थानर कहे  
जाते हैं उनके पाँच भेद हैं वृक्ष, गुल्म, छता, बरली, त्वचासार और तृणजाति, पंच  
महा भूतों में उनके उन्नीस प्रकार हैं अर्थात् स्थानर जीव ५ और जंगम  
१४ और लोक में गायत्री भी चौबीस अक्षरों को उपदश कीजानी है सो हे  
राजा जो जीवधारियों में से उस सर्वगुणसम्पन्न गायत्री को मूल सभेत्त जानता  
है वह संसार में नाश नहीं होता है, सब पृथ्वी में ही उत्पन्न होते हैं और पृथ्वीपर  
ही नाश होजाते हैं पृथ्वी सब जीवों का निवास स्थान होकर बहुत प्राचीन है  
इनजीवों में सात ग्रामवासी वा सात नगर निवासी हैं सिंह, व्याघ्र, बराह, भैंसा  
हाथी, रीछ, घानर यह सात वनवासी कहे जाते हैं गौ बकरी भेड़ मनुष्य घाड़ा  
खिचूरगधा इन सातोंको साधूलाग ग्रामवासी कहते हैं और यही ग्रामवासी और  
वनवासी चौदह पशु हैं इन्हीं चौदह पशुओं में मनुष्यभी गिनाजाता है जिसकी  
पृथ्वी है उसीका यह सब स्थावर जगम जगत् है उसमें छाभी राजा लाग परस्पर  
में मारते हैं ॥ २१ ॥

such as trees, etc. are immovable They are five in number, viz, trees, shrubs, creepers *vallis* (creeping on ground) and grasses Thus of moveables and immoveables there are nineteen Their constituents are five which with the above make up twentyfour, the same as the letters of *gayatri* He who knows this *gayatri* possessed of every virtue, is free from destruction All who are born on earth die on it The earth being the refuge of all creatures, is of very old standing Of the animals seven live in forests viz, lions, tigers, boars, buffaloes, elephants, bears and monkeys, and seven, viz, cows, goats, sheep, men, horses, mules and asses live in habitations Of these, man is one He who possesses the earth, is the lord of all its moveables and immovables and it is for the sake of the earth that avaricious kings slay one another" 21

धृतराष्ट्र उवाच ॥ नदीनां पर्वतानां च नामधेयानि सञ्जय । तथा जनपदानां च ये  
 चान्ये भूमि माश्रिताः ॥ १ ॥ प्रमाणञ्च प्रमाणज्ञ पृथिव्यामम सर्वतः । निखिलेनसमा  
 चक्ष्य काननानि च सञ्जय ॥ २ ॥ सञ्जय उवाच ॥ पञ्चमनि महाराज महाभूतानि संप्र-  
 दात् । जगतीस्थानं सर्वाणि समान्याहुर्मनीषिणः ॥ ३ ॥ भूमिरापस्तथा वायु रग्निरा  
 काश मेघश्च । गुणोत्तराणि सर्वाणि तेषां भूमिः प्रधानतः ॥ ४ ॥ शब्दः स्पर्शश्च रूपं च  
 रसो गन्धश्च पञ्चमः । भूमेते गुणाः प्रोक्ता ऋषि भिस्तत्त्व वेदिभिः ॥ ५ ॥ चत्वारोऽप्यु  
 गुणा राजन् गन्धस्तत्र न विद्यते । शब्दः स्पर्शश्च रूपं च तेजसोश्च गुणास्तथा । शब्दः  
 स्पर्शश्च वायोऽस्तु आकाशे शब्द पद्यतु ॥ ६ ॥ एते पञ्च गुणा राजन् महाभूतेषु पञ्चसु ।  
 वर्तन्ते सर्वे लोकेषु येषु भूताः प्रतिष्ठिताः ॥ ७ ॥ अन्योन्यं नाभिवर्तन्ते साम्यं भवति

अध्याय ॥ ५ ॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे संजय नदी पर्वत देश और अन्य अन्य जो पृथ्वी पर  
 नियत हैं उन सबके नामोंको वर्णन करो, हे प्रमाण के भी ज्ञाता संजय पृथ्वीका  
 प्रमाण जैसा कि सब ओरसे हे उस सबको मूल समेत भूमि से वर्णन करो,  
 संजय बोले कि हे महाराज पंडित लोगों ने इन सब पञ्च महाभूतों को एकत्र  
 होजाने से ब्रह्माण्डरूप और ब्रह्मरूप वर्णन किया है पृथ्वी जल, वायु, अग्नि,  
 आकाश यह पाँचों क्रमसे एक से दूसरा एक एक गुण अधिक रखनेवाले हैं,  
 मूल जाननेवाले ऋषियों ने पृथ्वी के शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध यह पाँच गुण  
 कहे जलमें चार गुण हैं एक गन्ध गुण नहीं है अग्नि के तीन गुण शब्द स्पर्श  
 और रूप वायु में शब्द वा स्पर्श है आकाश में केवल एक शब्दही गुण है, हे  
 राजा पञ्च महाभूत रूप सब लोकोंमें यही पाँच गुण वर्धमान हैं, उन्हीं में जीव-  
 पारी नियत हैं, निश्चय करके जब मलय सुप्रसि, समाधि, मोक्ष इन चारोंमें ब्रह्म-

## CHAPTER V.

Dhritrashtra desired of Sanjaya to name the rivers, mountains, countries and other things of the earth as well as its dimensions. "The learned, O king," replied Sanjaya, "regard all things of the universe to be of same form on account of the presence of the five great elements in them. Space, fire, air, water and earth are the elements of which each succeeding one possesses the quality of the former ones in addition to its own. Their attributes are sound, touch, vision, taste and scent respectively. The whole world is made up of these five elements or attributes. All the living beings are made up of these. The eater and that which is to be eaten do not come face to face with each other as long as they are united with Brahm in the four states, viz, *Pralaya*, *sushupti*, *samadhi* and



यै यदा ॥ ८ ॥ यदा तु विषयीभाव माविशति परस्परम् । तदा देहे देहवन्तो व्यतिरोहति  
नान्यथा ॥ ९ ॥ आनु पूर्वा इव नश्यन्ति जायन्ते चानु पूर्वाः । सर्वाण्यपरि मेयाणि तदे-  
षोरूप मैश्वरम् ॥ १० ॥ तत्र तत्र हि दृश्यन्ते धातव पांच भौतिका । तेषामनुप्यास्त  
केन प्रमाणानि प्रचक्षते ॥ ११ ॥ अर्चित्याह खलु ये भावा न तास्तर्केण साधयेत् । प्रकृ-  
तिभ्य परं यत्तु तदचित्यस्य लक्षणम् ॥ १२ ॥ सुदर्शन प्रचक्ष्यामि द्वीपंतु कुरुनन्दन ।  
परिमण्डला महाराज द्वीप सौ चक्रसंस्थितः ॥ १३ ॥ नदी जल प्रतिच्छन्नः परतैश्चात्र  
सन्निभैः । पुष्ट्यविचिधान्तरे स्मर्यैर्जनपदैस्तथा ॥ १४ ॥ वृक्षे पुष्पफलोपति सम्पन्नधन  
धान्यधान् । लवणेन समुद्रेण समन्तात् परिवारितः ॥ १५ ॥ यथादि पुरप पश्ये दावर्शं

भाव होता है तब वह भक्ष्य भक्षक परस्पर में सम्मुख नहीं होते और जब वह  
ब्रह्मभावसे गिरकर परस्पर भिन्न २ रूपों में प्रवेश करते हैं तब निश्चय करके  
जीव जीवों पर गिरावें क्रमसे ही उत्पन्न होत हैं और क्रम क्रम से ही नाश  
होजाते हैं और वह सब अमरता है इस कारण इन सबका ब्रह्मरूप है । १० ।  
फिर प्रलय के पीछे पञ्चभूत सम्बन्धी भूगोल आदि भानु जहां तहां दृष्टिगोचर  
होते हैं-उनके प्रमाणों का अनुप्य बुद्धि की तर्कण और स कहने हैं निश्चय करके  
जो ध्यान से भी बाहर हैं उनको तर्कणाओं से कैसे सिद्ध करसकते हैं, जो तीनों  
गुण और पञ्चभूतादि से पृथक् है वह ध्यान भी अदृश्य ब्रह्म का लक्षण  
है, हे कौरवनन्दन अब मैं सुदर्शन नाम जम्बूद्वीप का दर्शन करता हू कि यह  
परिमण्डल नाम द्वीप चारों ओर से देशरूप अथवा चक्र के समान नियत है,  
नदियों के जल से और बादलों के रूप पर्वतों में अथवा गगनापकार के रूपवाले  
पुर ना देशों से ढका हुआ है और फूल फले वृक्ष धन धान्य आदि से समुक्तकारी  
समुद्र से घिरा हुआ है । १५ । जैमि कि अनुप्य दर्पण में अपने मुख का देखता

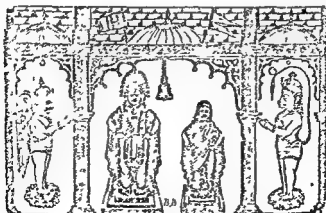
*moksh* But when, disunited from Brahman, they appear on the earth  
in different forms, one living being falls upon another. The living  
beings are born one by one and meet their death in the same order.  
They are innumerable and like Brahman in form. 10. After Pralaya,  
things made of the five elements are seen here and there. People  
try to ascertain their dimensions by the exercise of their reasoning  
powers. But those matters which are inconceivable should never  
be sought to be tried by reason. That which is beyond nature is an  
indication of the inconceivable. I shall now describe to you the  
island of Sudarshan, joy of the Kauravas! This island is circular like  
a wheel. It is covered with rivers, mountains looking like clouds,  
cities and provinces. It is covered with trees bearing fruits and  
flowers and with crops of various kinds and other wealth. It is

मुपमात्मनः । एवं सुदर्शनद्वीपो दृश्यते चन्द्र मण्डले ॥ १६ ॥ द्विरंशे पिप्पलमन्त्र द्वि-  
रंशे च शशो महान् । सर्वोपधि समावायः सर्वतः परिवारितः ॥ १७ ॥ व्यापस्ततोभ्या  
विज्ञेयाः शेषः संक्षेप उच्यते । ततोभ्य उच्यते चाय मेनं सत्तेपतं शृणु ॥ १८ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि जम्बूखण्ड त्रिनिर्माणपर्वणि सुदर्शनद्वीपवर्णने  
पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

है उसी प्रकार सुदर्शन द्वीप ब्रह्माण्ड स्वरूप चन्द्रमण्डल रूपी मन में दिखाई देता  
है, उस चन्द्रमण्डलके एकभाग में दोरूपधारी पीपलका वृक्ष है और दोभाग एक  
घड़े खर के कीर्तिर्है दिखाई देते हैं वह सुदर्शन द्वीप सब औपधोंका रखन बाछा  
सब ओर से समुद्र और अन्य देशों से घिरा है इसका आवृत्ति और जो कुछ है  
उसका संक्षेप से सुना । १८ ।

surrounded by the salt waters of the ocean. The island is seen in  
the lunar disc just as we see our faces in a mirror. Two of its parts  
are seen like a *pipal* tree, while the other two look like a large hare.  
It is overgrown by medicinal herbs and is surrounded by seas and  
countries. I shall, in short describe to you what remains besides  
this." 18.



धृतराष्ट्र उवाच । उक्तोद्धोपस्य सक्षेपो विधिवद्वुद्धिमंस्त्वया । तत्त्वज्ञश्चासि सर्वस्य  
वितरन्मूहि सञ्जय ॥ १ ॥ यावान् मूयचकाशये दृश्यते शशलक्षणे । तस्य  
प्रमाणं प्रवृद्धिं ततो वक्ष्यसिापिपलम् ॥ २ ॥ वैशम्पायन उवाच । एवंराज्ञासपु  
ष्टु सञ्जयो वाक्यमब्रवीत् । सञ्जय उवाच । प्रागायतामहाराज पठेतेवपर्वता,  
अवगाढाह्यभयतः समुद्रौ पूर्वपश्चिमौ ॥ ३ ॥ हिमवान् हेमकूटश्च निपथधनगोचरम् ।  
नीलश्च वैदूर्यमयः श्वेतश्च शशिसन्निभः ॥ ४ ॥ सर्वधातुवचित्रश्च शृङ्गान्नामपर्वतः ।  
एतेषु पर्वता राजन् सिद्धचारणसेविताः ॥ ५ ॥ तेषामन्तरविष्कम्भो योजनानां  
सहस्रशः । तत्र पुण्या जनपदास्तानां वर्षाणि भारत ॥ ६ ॥ वसन्ति तेषु सत्वानि

### अध्याय ६ ॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे बुद्धिमान सञ्जय तुमने अपनी बुद्धि के अनुसार जंबूद्वीप  
का आशय वर्णन किया और तुम मुख्यताके भी जानन बालहो इससे इसको  
मूलतमेत ग्योरेवार वर्णनकरो पहले उस भागका वर्णन करो जा खरंदे की नाई  
दिखाई दता है और फिर उसका वर्णन करना जो पीपल की सदृश दिखाई पड़ता  
है सञ्जय बोल हेराज्ञा अब जंबूद्वीप का सपूर्ण ग्योरेवार वृत्तान्त सुनो छः खड्डों  
के पर्वत दोनों ओरको पूर्व और पश्चिम समुद्रसे मिलेहुयेहैं, हिमवान्, हेमकूट,  
निपथ, वैदूर्यनील, शशिसन्निभश्चेत, सर्वधातुमय शृङ्गानां पर्वत इनछःओं पर्वतों  
पर सिद्ध चारण लोग निवास करतेहैं, हे भरतवर्षी इनपर्वतों के मध्य स्थलका  
विस्तार हजारों योजन है और इन में अनेक पवित्र ६ देशहैं उर्ध्वीका खण्डनाम  
है । ५ । उनखड्डों में नानाप्रकारके जातिवाले लोग निवास करत हैं यहभारतवर्ष  
है इस से दूसरा हेमवत नामखण्डहै, और हेमकूट पर्वत से परे हरिवर्षनाम खण्डहै,

### CHAPTER VI

" Wise Sanjaya," said Dhritrashtra, " You have given a good account of Jambudwip. Tell me all about it in detail. Give me an account of the dimensions of that portion which looks like a hare and then of that portion which resembles a pipal tree. " Hear a full account of Jambudweep," replied Sanjaya, " Touching the eastern and western seas are six ranges of mountains, viz, Himavan, Hemcoot, Nishadh, Vaiduryani, Shashiprabh shwet and Shringwan which is full of all sorts of metals. These six mountains are inhabited by Sidhas and charans. The space between them extends for thousands of miles and several holy cities are situated over those areas. They are known as varshas 5. People of different tribes live in them and the whole land is known as Bharat-varsh. The next portion is

नानाजातीनि स्वयंशः । इदन्तु भार्गव वर्षे ततो ह्यमवत परम् ॥ ७ ॥ हेमकुटात्  
परञ्चैव हरिर्वर्षं प्रचक्षते । दक्षिणेनतु नीलस्य निपद्यस्योत्तरेणतु ॥ ८ ॥ प्रागायतो  
महाभाग मत्स्यवायाम् पर्वतः । ततः परमाल्पवतः पर्वतो गन्धमादनः ॥ ९ ॥  
परिमण्डलस्तयोर्मध्ये मेरुः कान्तपर्वतः । आदित्यतरणाभासा विधूमद्विभाजकः  
॥ १० ॥ योजनानां सहस्राणि चतुरशीतिरुच्यते । अद्यस्ताचतुरशीतिर्योजना  
नामहीपते ॥ ११ ॥ ऊर्ध्वमधश्च तिर्यक् च लोकानवृत्त्य तिष्ठतः । तस्य पार्श्वे  
स्थमी दीप्ताध्यावारः संस्थिता विभो ॥ १२ ॥ भद्राश्वः केतुमालश्च जम्बूद्वीपश्च  
भारतः । उत्तराश्चैव दूरवः कृन्पुण्यप्रतिधिया ॥ १३ ॥ विदग्गः सुमुखोऽप्यसु  
स्पर्शः । अलः स वै । वचिः तया माम् । चोर्णान् चोदय चायगान् ॥ १४ ॥ मेरुः  
चममध्यानामधमानाश्च पक्षिणाम् । आचशेषकरो यस्मात्तस्मादेनं त्यजाम्यहम् ॥ १५ ॥

नील पर्वत के दक्षिण और निपद्य के उत्तर ओरसे पूर्व और पश्चिम समुद्र  
का स्पर्श कान्तवाला माल्यवान् पर्वत है उस माल्यवान्मे आगे गन्धमादन  
पर्वत है और उन दोनों के मध्यमें सुनहरी और चारों ओर से मण्डलवर्धी मेरु  
पर्वत है, बहुतकण सूर्य के समान प्रकाशमान और निर्धूम अग्नि के समान  
है । १० । और चौदासी हजार योजन ऊंचा है और नीचे की ओरभी उतनाही  
है वह ऊंचानीचा त्रिखंडा छोड़ों को व्याप्त करके वर्तमान है, हे समर्थ भरतउशी  
धृतराष्ट्र उम मेरु के अन्तर्गत यह चारद्वीप नियत हैं एकमुख्य जंबूद्वीप और  
तीनउपद्वीप भद्राश्व, केतुमाल, कौरव नाम से पुण्यवान् पुरुषों के रचे हुये आश्रम  
हैं । ११ । निश्चय करके जो सुमुख नाम गरुडपक्षी है उसने सुनहरी कौरवोंको देख  
कर विचार किया है 'जोकि मेरुपर्वत उत्तम और निस्तृत वा छोटे २ पक्षियों की  
भी मुखताको नहीं करनेमाला है इसकारणसे मैं इसको त्याग करताहूँ, मनाशोंका

known as Hemavat and Hirwarsh lies beyond Hemkut To the  
south of Nil and north of Nishadh, touching the eastern and western  
seas, is the range known as Malyavan and beyond it lies Gandhmadan  
Between these two lies the golden Meru which is round in shape,  
shining like the morning sun or smokeless fire. 10 It is eightyfour  
thousand yojans high and is as much below as above. It supports  
the earth on all sides. Besides Meru there are four islands, the chief  
of which is Jambu and the minor ones are Bhadrashwa, Ketumal  
and Kaurav, inhabited by virtuous men. 13 The bird Sumukh,  
son of Suparn, beholding that all the birds on Meru were of golden  
plumage, thought it better to leave that mountain because there  
was no difference there of good, middling or bad. 15 The sun always

तमादित्योनुपर्योते सततं ज्योतिषाम्बर, । चन्द्रमाश्च सनत्तत्रो वायुवैवप्रदक्षिणः  
 ॥ १६ ॥ सपथतो महाराज दिव्यगुणफलाभितः । भयनेरातुत सर्वजाम्बुनदप  
 रिच्छते ॥ १७ ॥ तत्र देवगणाराजन् गन्धर्वा सुरराक्षसाः । अप्सरोगण संयुक्ता शैले  
 कीडन्ति सर्वदा ॥ १८ ॥ तत्र ब्रह्मा च रुद्रश्च शक्रश्चापि सुरश्वरः । समेत्य विविधै  
 र्धनैर्यजन्तेऽनेकदक्षिणैः ॥ १९ ॥ तुम्बुरुनारदश्चैव विश्वावसुर्दहाहुहू । अभिगम्यामर  
 श्रेष्ठोऽस्तुष्टुर्विविधैः स्तवैः ॥ २० ॥ सप्तर्षयो महात्मान कश्यपश्च प्रजापतिः । तत्रगच्छ  
 न्ति भद्रेत सदा पर्वण पर्वणि ॥ २१ ॥ तस्यैव सूर्यन्वुशनाः काव्यो दैत्यैर्महीपते ।  
 इमंनि तस्य रत्नानि तस्यैव मे रत्नपर्वताः ॥ २२ ॥ तस्मात् कुबेरो भगवांधतुर्थ भाग  
 मश्नुते । तत कलांशं विचस्य मनुष्येभ्यः प्रयच्छति ॥ २३ ॥ पार्श्वं तस्योत्तरे दिव्यं

राणी सूर्य सदैव उसकी परिक्रमा करता है और नक्षत्रों समेत चन्द्रमा और  
 वायुभी उसकी परिक्रमा करते हैं, और यह दिव्यफल फलफूलमूलों से संयुक्त है  
 और सब स्वर्णमय स्थानों से व्याप्त है जिसपर देवताओंक समूह गन्धर्व असुर  
 राक्षस अप्सराओं के समूहों संगेत कीड़ा करते हैं, और उसपर ब्रह्मा रुद्र और  
 देवेन्द्र आदि देवता मिलकर पड़े २ यज्ञादिक कहगहैं और तुम्बुरुनाग विश्वावसु  
 हाहाहुहू नाग गन्धर्व उन देवताओं के सन्मुख जाके उनको अनेक स्तोत्रादिकों से  
 प्रसन्न करते हैं । २० । आपका कल्याणसे उस पर्वतपर गहतिगा सप्तऋषि  
 काश्यप प्रजापति सदैव पर्व पर्व में जाते हैं, और उभी पर्वतक मस्तक पर शुक  
 जीभी राक्षसों समेत विशार करते हैं उन शुकजी के यह हेमरत्न हैं उन्हीं रत्नों  
 के पंहाड भी अनेक हैं और कुबेर जी उन के चौथेभग को भांगते हैं उस  
 धन के सोलहवें भागको मनुष्यों के निमित्त देन हैं, उग मरुके उत्तरभाग में  
 कर्णिकार राजपूतों का मन है जो कि दिव्यरूप सब ओरसे प्रफुल्लित मनोहर

goes round Meru the best of luminaries, and the moon with her  
 attendant constellations and the god of wind follows the wake of  
 the sun. That mountain brings forth celestial fruits and flowers and  
 is dotted all over with houses made of gold. There the gods, the  
 Gandharvas, the asuras and the rakshases join in sport with apsaras  
 18. There Brahma, Rudra and Shakra the prince of gods performed  
 many sacrifices with large donations. Tamvuru, Narad, Vishwavyasa  
 Hakra and Huhu go there to adore the king of gods with various  
 hymns. 20. The high minded seven rishis and Kashyap the  
 progenitor of all beings go there on every parva day. On the brow  
 of the same mountain Shakra roams along with the rakshases. To  
 him belong all the jewels and gold as well as the mountains abounding  
 in such commodities. Kuvera enjoys a fourth part of those valuables

सर्वतु सुसुमैधितम् । त्रिभिन्नार वनं रम्य शिलाजालसमुद्गतम् ॥ २४ ॥ तत्र साक्षात्  
पशुपदिभ्यर्च्यते. समावृत । उमासदायो भगवान् रमते भूतभावन. ॥ २५ ॥ कपि  
कारमयीं मालां विव्रतादायलम्बिनीम् । त्रिभिन्नैर् रक्ता द्योतस्त्रिभि सुयै त्रिोदितै  
॥ २६ ॥ तनुप्र तपस. सिद्धा सुवता सत्यरादिन. । गदयन्ति नदि दुर्बुधै. शम्भोऽष्ट  
महेश्वर. ॥ २७ ॥ तस्य शंखाय क्षिप्ररात् क्षीरघारा नरेश्वर । तद्विष्णुरापापामता  
भम निर्यात नि रचना ॥ २८ ॥ पुण्यापुण्यतमैर्जटा गंगा भागीरथी शुभा । प्लवतीप्र  
वेगेन हृद् चन्द्रमस शुभ ॥ २९ ॥ तथा ह्युपदिष्ट पुण्य स प्रद सामरोपम । ता  
घारपापास तदा कुर्यात् पन्नैराणि ॥ ३० ॥ शत यपं नदस्त्राणा शिरसंय पिनाकधृत् ।  
मेरोस्तु पश्चिमे पार्श्वे केतुमाली मदीपने ॥ ३१ ॥ जम्बुद्वीपे तु तत्रैव महाजगपदोत्प ।

शिला जालों से अन्यन्त ऊँचा है उसमें रहने ऊपर जीवों के तत्पन्न कर्ता कपिन्नार  
फूलों के कारण पर्यन्त मालाका पहने हुये सूर्य के समान प्रकाशित तीनैत्रधारी  
साक्षानु शिवजी गङ्गाराज अपनी उमादेवी समेत दिव्य जीवत्रयियों से व्याप्त  
रहते हैं । २६ । उमापी शुद्धरत्न सत्यरक्ता शुद्धलोग जनका दर्शन करसक्त  
हैं वह गङ्गेवाजी कुचाली पुरुषों में देखनेके योग्य नहीं है । २७ । हे राजा उसी  
गङ्गार्जतके शिखरसे दूध के समान घारा रखने वाली विष्णुरूपा भयानक गम्भीर  
शब्दवाली बाधुमे टका खाती हुई धीमगाजी प्रगट हुई, वह पवित्र और पवित्र  
गन्धुओं से सेवित शुभ भागीरथी गंगा घड़ी शीघ्रता और तीव्रतासमय चन्द्रगके  
शुभ हृदयमें विलास करतीहुई मन्दहुई है उसीन वह ससुद्रोंपर पवित्रहृदय अपनी  
तीव्रधारामे उत्पन्न निपाड़े जो पहाड़ों से भी धारण नहीं कीजाती थी ऐसी गंगा  
को शिवजीने एक 'लाव दर्प पर्यन्त अपने शिर में धारण किया और मेरुके  
पश्चिमी कोणमें जम्बुद्वीप के गन्ध केतुमाल नाम खण्डही उसमें बड़ावेष्ट है । ३१ ।

and gives a sixteen h part of it to men The northern part of Meru  
is covered with the forest of Karm / ar trees which bear flowers  
throughout the year It is very high with its network of stone  
There resides the creator of all Le ngs, Shiv the three-eyed, wearing  
a garland of Karm / ar flowers extending to his feet, glorious like the  
sun, accompanied by his goddess Uma and surrounded by g ds 26.  
Great ascetics, observers of vows, the truthful and the pure only can  
see Him, the great Lord cannot be perceived by the wicked. 27  
From the summit of the same Meru flows the Ganges with her milky  
current extending far and wide and raising a tremendous uproar  
when her waters come in contact with the wind. Bhagnathi the  
holy Ganges appears with a tremendous velocity, forming an ocean like  
lake The Ganges whom even the mountains cannot bear, was kept  
by Shiv on his head for a hundred thousand years. In the western

आयुर्दशसहस्राणि वर्षाणि तत्र भारत ॥ ३२ ॥ सुवर्ण वर्णाश्चनरा स्त्रियः अप्सरसोपमा  
अनामया भीतशोका नित्य मुदितमानसा ॥ ३३ ॥ ज यन्ते मानवास्तत्र नानुत्कृतक  
प्रभा । गन्धमादन गृहेषु कुबेर सह राक्षसै ॥ ३४ ॥ सवृतोऽप्सरसा सधर्मोदते  
गुह्यकाधिप । गन्धमादन पार्श्वे तु परे त्वपरगण्डिका ॥ ३५ ॥ एकादशसहस्राणि  
वर्षाणापरमायुष । तत्र दृष्टानरा राजस्तेजो युत्तामहाबल । स्त्रियश्चोत्पल वर्णाभा  
सर्गा सुप्रियदर्शना ॥ ३६ ॥ नीलात्पत्तर श्वेत श्वेताद्वेरण्यक परम् । वर्ष मैरावत  
राजानानाजनपदावृतम् ॥ ३७ ॥ धनु सस्ये महाराज द्वेधर्मे दाशणोत्ते । इलावृत  
मध्यमन्तु पञ्चवपाणि चैव हि ॥ ३८ ॥ उत्तरात्तरमेतभ्या वर्षनुाद्रव्यते गणै ।  
आयु प्रमाणमारोग्य धर्मत कामतोर्थत ॥ ३९ ॥ समन्वितानि भूतान तेषुर्वेषु

उसमें मनुष्यों की अवस्था सतयुगादि में दश हजार वर्षकी है वहाँ के मनुष्यों  
का सुवर्ण के समान वर्णहोता है और स्त्रियाँ अप्सराओं के समान होती हैं वहाँ  
के मनुष्य नीरोग आनंदी सन्देश भित्त स्वर्ण के समान वर्ण रखनवाले सुंदर  
रूपवान् उत्पन्नहोते हैं और गुह्यका के राजा कुबेरजी राक्षसों संगेत अप्सराओं  
के समूहोंसे संयुक्त गन्धमादनके झुके हुए शिखरोंपर आनन्द करते हैं, गन्धमादन  
के दूसरेभागके समीप अपरगण्डिका नामछाटे १ पहाड़ हैं । ३५ । वहाँ के जीव  
ग्यारह हजार वर्षकी उमरके होते हैं, वहाँ के मनुष्य तेजस्वी और गर्वावली हैं और  
स्त्रियाँ उत्पल नामकपल के समान सुन्दर अत्यन्त दर्शनीय हैं, नील पर्वतके आगे  
श्वेतपर्वत है और श्वेतसे आगे द्वेधर्मा नामखण्ड है और मृगवान् पर्वतक आगे अनक  
देशोंसे व्याप्तपरावत खण्ड है और दक्षिणोत्तरों भरतखण्ड और परावत खण्ड यह  
दोनोंधनुष समान अर्थात् त्रिकोणरूप है और बीच में इलावर्त्तादि पाँचखण्डवर्त्त-  
मानहैं, उनसे आगे क खराह गुणों में अधिकहैं और अवस्था बानी रोगताभी

corner of Meru is Ketumal 31 In satyug the people living there  
attained the age of ten thousand years The men are of the colour  
of gold and the women are beautiful like apsaras. The people living  
there are healthy happy free from care and beautiful. Kuver the  
king of Guhyas and yakshes revels with the apsaras on the  
summits of Gandhmadan In the vicinity of Gandhmadan there  
are other smaller hills 35 The people living there attain the age  
of eleven thousand years and are glorious and strong The women  
are beautiful and of the colour of a lotus flower Beyond the blue  
mountains are the white mountains and farther on are the golden ones  
Beyond these are the Anavat hills dotted over with many provinces.  
Anavat in the north and Bhuravish in the south are of the form  
of a bow. These five provinces are in the middle of which the centre

भात । एवमेवा महागज पर्वतेः पृथ्वी चता ॥ ४० ॥ हेमकूटस्तु सुमहान्  
 कैलासो नाम पर्वतः । यत्र वैश्रवणो राजन् गुह्यै सहमोदते ॥ ४१ ॥ अमर्यु  
 तरेण कैलास मेनाक पर्वतं प्रति । हिरण्यशृङ्गं सुमहान् दिव्यो मागमयोगिरिः  
 ॥ ४२ ॥ तस्य पार्श्वे महादिव्यं शुभ्र काञ्चनयालुकम् । रम्यं विन्दुसरो नाम यत्र  
 राजा भगीरथ ॥ ४३ ॥ दृष्ट्वा भागीरथीं गङ्गां मुनिनाम वदता समः । दूषाम  
 णितपास्तत्र चैत्याश्चाप हिरण्यया ॥ ४४ ॥ तत्र दृष्ट्वा तु गतं सिद्धिं सहस्रशोमहा  
 यज्ञाः । सृष्ट्वा भूतपतिर्यत्र सर्वलोकैः सनातनः ॥ ४५ ॥ उपाभ्यने तिग्मतजापत्र  
 भूतेः समन्ततः । नानारायणो ब्रह्मा भनु र्थाण्यु पचम ॥ ४६ ॥ तत्र दिव्या  
 शिपयणा प्रथमन्तु प्रतिष्ठिता । ब्रह्मलोकादपक्रांता सप्तधा प्रातपद्यते ॥ ४७ ॥

एकमे दूमेरे में उचरोत्तरहै उनखण्डों में सद्य जीवधारी धर्म काम अर्थ से संयुक्तहै  
 हे राजा इसप्रकार से यह पृथ्वी पर्वतोंसे व्याप्तहै ४० और वडापर्वत हेमकूटनाम  
 कैलास है जिसपर कुबेरजी गुह्य गह्रों सगेन विजयाम करतहै कैलास पर्वत क उचर  
 मेनाक पर्वत के सम्मुख दिव्य मुनिलोगों से भरा हुआ हिरण्य शृंग नाम बडा  
 पर्वत है, उस क मपीप स्वर्णरज युक्त मनोहर और दिव्य विन्दुसर नामतडाग है  
 जिसपर राजाभगीरथन भागीरथीगंगाको देखकर बहुत वर्षोंतक निवाम कियाथा  
 वहां गणि जटितपङ्क्तंभ और सुवर्णजटितवृक्षही यज्ञकी सीपारहै ४१ वही बडेपञ्चस्वी  
 इन्द्रेभी गङ्गको करके महानसिद्धीको पाया, वहांही सब समारकेस्वामी सबसे प्रथम  
 महातेजसी शिवजी चारोंओर से परित्रात्मायुक्तों से सेवकिये जाते है और नर  
 नारायण ब्रह्माण्ड पाँचवें स्थाणु नाम रुद्रजी भी वर्चमानहै वहांही नथम पृथ्वी

is Elavrita. Of the seven provinces that which is farther north, excels the one to its immediate south in respect of longevity, stature, health, righteousness, happiness and profit. Creatures live together in these provinces and thus the earth is covered with mountains. 40 The huge mountain named Hemcoot, also called Kailas, is the resort of Kuver and his yakshes and guhyaks. To the north of Kailas and opposite Menak is the huge mountain Hiranyashring in the vicinity of which is lake Vindusar, containing gold dust, on the bank of which king Bhagirath stayed for the sake of the Ganges. There the pillars and trees, studded with gold and gems, mark the boundaries of sacrifices. It was there that Indra of great glory won great success by his sacrifices. It is there that Shiva the lord of all the world and the foremost of glorious beings, is attended by persons possessing pure soul. It is the residence of Nar, Narayan, Brahma,



यस्वीकसारा नलिनी पावनी च सरस्वती । जन्मनदी च खीता च गङ्गा सिन्धु च  
सतमा ॥ ४८ ॥ अचिन्त्या दिव्यलक्षणा प्रभोरैव सारिणी । उपासत यत्र  
सत्रमहस्त्रयुगपथये ॥ ४९ ॥ दृष्ट्वाऽदृष्ट्वा च भयातत तत्र सा स्वती । पताद्व्या सतगङ्गा  
क्षिप्रलोकेष्विद्युता ॥ ५० ॥ रक्षासैर्विहमया तदमकूटतुण्डिका । सर्पानामनिघ्नो गोकर्ण  
च तपोवनम् ॥ ५१ ॥ देवासुराणां सर्वेष्वेतर्पयत उच्यते । मन्थर्वानपघेनित्य  
नीले ब्रह्मर्षयस्तथा । अद्भुतास्तु महाराज दयायां प्रति सवरः ॥ ५२ ॥ इत्यतान्  
महाराज सप्त वर्षाणि आगच्छ । भूतान्युपानविष्टानि गतिमान्स्तु ध्रुवाणि च ॥ ५३ ॥  
तेषु सृष्टिर्बहुविधा दृश्यते देवमानुषी । अशस्यापरि सङ्गतु श्रद्धया तनुभृता ॥ ५४ ॥  
यान्तु पृच्छसि मां राजन् दिव्यामेतां शशाङ्कतम् । पार्थ शशस्य द्वे वर्षे उक्ते

पाताल और स्वर्ग के मार्ग में बहने वाली दिव्यनदी श्रीगंगाजी नियत होकर  
ब्रह्मलोकस चली हुई सात प्रकारसे प्रसीक, सारा, नलिनी, पावनी सरस्वती,  
जन्मनदी, खीता गंगा, सिन्धुनामों से ध्यानस अगम्य और दिव्य रूपसे बहती है  
यह गङ्गा ईश्वरकी रचना है हजार वर्षोंके चक्रमें इन्द्र उपासना करते हैं वहीं २  
सरस्वती गुप्त और मरुत होती हैं, यह सातों गंगा दिव्य रूपसे तीनों लोकों में  
वर्तमान है । ५० । दिगचल में राक्षस, हेमकूट में युवक, निषादों, सर्प, गोकर्ण में  
तपोवन आदि लोग हैं, श्वतर्पण सप्त देवता और असुरों का कहा जाता है निषध  
में मन्थर्व और नील पर्वत पर ब्रह्मक्राविलोक सदैव निवास करत हैं, महाराज  
भृगवान् नाम पर्वत देवताओंका निहार स्थान है और यह सातों खण्ड विभाग  
रूपे गये हैं उनका नाम स्यावर और जगज्जीव रहते हैं उनका देव संबंधी और  
मनुष्य संबंधी धन बहुत प्रकार का देखन में आता है । ५४ । महाराज तुम जिस

Manu and Bhrigu It was there that the divine Ganges, flowing  
on earth, between and subterranean regions, issuing out of the region of  
Brahma, first showed herself and then dividing herself into seven  
streams, flows as the Vashoksa the Nalini, the cleansing Saraswati  
the Janunadi, the Sheeta the Ganges and the Sindhu The supreme  
Lord has made this arrangement. Indra has performed thousands of  
sacrifices there. The Saraswati is visible in some parts and invisible in  
others. 50. Himachal is the home of rakshases, white mountain  
of gods and asurs, Hemecoot of Gubhaks, Nishadh of snakes, Golarn  
of asceticishus, Nishadh of Gandharavas, Nil of Brahmrishus and  
Shringvan is the pleasure ground of gods. These are the seven  
divisions over which moveables and immovables are found and  
possess divine and worldly wealth. I cannot count them, although it

ये दक्षिणोत्तरे । कर्णौ तु नागद्वीपश्च काश्यपद्वीप एवच ॥ ५५ ॥ ताम्रपर्ण  
शिलो राजवृद्धिमान् मलयपर्वतः । पतद् द्वितीय द्वीपस्य दृश्यते शशमेस्थितम् ॥ ५६ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि जम्बूद्वीप द्वितीयोऽध्यायः ॥ ६ ॥

धृतराष्ट्र उवाच । मेरोरथोत्तरं पार्श्वं पूर्वं चाचक्ष्वसञ्जय । निखिलेन महा  
बुद्धे मात्स्ययन्तश्च पर्वतम् ॥ १ ॥ सञ्जय उवाच । दक्षिणेन तु नीलस्य मेरोः पार्श्वं  
तथोत्तरे । उत्तराः कुक्ष्यो राजन् पुण्याः सिद्धनिप्रेयिताः ॥ २ ॥ अथ वृक्षामधुफलानि त्वत्पु-  
ष्पफलोपगाः । पुष्पाणि च सुगन्धानि रमयन्ति फलानि च ॥ ३ ॥ सर्वकामफ-  
लास्तत्र कोचद् वृक्षा जनाधिप । अपरे क्षारणां नाम युक्षस्तत्र नगाधिप ॥ ४ ॥

दिव्य निराट् स्वरूप को युक्षते पूछनेहो उमकी संख्याका मणान करना दुममे  
असंभव है परन्तु उसका सुननाही अर्थात् योग्य है विराट् पुरुषके दोनों आर  
दोखण्ड कहे हैं दाहिने में भरतखण्ड अर्थात् कर्मभूमि और बायें में ऐरावत खंड  
अर्थात् योगभूमि दोनों कानों में नग द्वीप और काश्यपद्वीप है । ५६ ।

अध्याय ॥ ७ ॥

धृतराष्ट्रकोले कि हे बुद्धिमान् संजय प्रथम मेरु पर्वत के उत्तरीय भाग के  
मातृवत् पहाड़के मूल समेत वृक्षान्तों को वर्णन करो, संजय बाले कि हे राजा  
नील पर्वत के दक्षिण और मेरु के उत्तरभाग में उत्तर कुक्षदेश हैं जांकि पवित्र  
आर सिद्धियों से शोधित हैं वहांपर वृक्ष अधुर फल फूलों से सदैव शोभित रहते हैं  
आर पुष्प अत्यन्त सुगन्धित और फल महा रमणीय होने हैं, हे राजा वहां कोई  
कोई वृक्षतो सब अभिलाषाओंके पूर्ण करनेवाले हैं और अन्य बहुत से वृक्ष अ-

is good for the believers to hear of them. I have told you about the  
two divisions, that on the right is called Bharatkhand and that on  
the left is Airavatkhand. Nagdwip and Kashyap-dwip are the two  
ears of the hare." 56.

## CHAPTER VII

"Tell me Sanjaya," said Dhritrashtra, "of the regions to the  
North and East of Meru as well as of Maljavat." "On the south of  
the Nil mountain and the north of Meru," replied Sanjaya, "are  
sacred northern Kurus the residence of Sidhas. The trees there bear  
sweet fruits and flowers. The flowers are fragrant and the fruits are  
excellent in taste; some trees give fruits according to desire, while  
others give milk and other kinds of food of six different flavours.

येक्षन्ति सदा क्षीरं पङ्क्तवामृतोपमम् । वस्त्राणि च प्रसूयन्ते कलेश्वाभरणानच ॥ ५ ॥ सर्वा मणिमयी भूमिः सूक्ष्मकावचनालुका । मणिरत्ननिभं रम्यं वज्रवेद्यं सन्निभम् ॥ ६ ॥ भूभागदृश्यते तत्र पद्मरागलभप्रभम् । सर्वसुखसंस्पर्शा तत्पद्मा च जनाधिप ॥ ७ ॥ पुष्करिण्यश्मास्तत्र सखस्पर्शा मनोरमा । देवलोकाव्युता सर्वे जायन्तेतत्मानवा ॥ ८ ॥ शुक्लाम्बजनसम्पन्नाः सर्वसुप्रियदर्शना । मिथुनान च जायन्ते स्त्रियश्चाप्सरसोपमा ॥ ९ ॥ तेषान्ते क्षीरिणां क्षीरं पिबन्त्य मृतमाम्रभम् । मिथुनं जायते काले समन्तच्छ प्रवर्द्धते ॥ १० ॥ तुल्यरूपगुणोपेत समधेश तथैव च । एवमयानु रूपं चक्रपाक समं प्रसो ॥ ११ ॥ निरामयाश्चते लोका निरयं सुदृढमानसा । दशधर्मसहस्राण दशधर्मशतानि च ॥ १२ ॥ जीवन्ति ते महाराज न चान्योन्यं जहात्युत । भारुण्डानाम शकुनास्तीक्ष्णतुण्डा महाबलाः ॥ १३ ॥

मृत सपान स्वादुयुक्त छः रस से युक्त दूधों के देनवाले हैं और फलों में वस्त्राभरणों की उत्पन्न करते हैं । ५ । हे राजा सब पृथ्वी मणियों की बनी हुई और दिव्य सुगंधकी घाल रखनेवाली और सब ऋतुओं में सुख से स्पर्शहोन वाली कीच आदि से रहित है वहाँ पर दालांक से पतित लोग उत्पन्नहोते हैं वह सब विष्णुभक्तों से समकरनेवाले और अत्यन्त स्वर्गवान्होते हैं और अप्सराओं के सपान स्रव्या वहाँ जोड़ों का उत्पन्न करती हैं वह जाड़े उन दूध देनवाले वृक्षों के अमृतरूपी दूधों का पेत हैं समयपर जोड़े उत्पन्नहोते हैं और सदैव बढ़ते हैं और रूप गुणसंयुक्त सदैव एकही पोशाकवान् होते हैं । १० । हे समर्थ वह जोड़ चक्र वाकों के सपान एकसे रूपरात्र भी होते हैं और निरोगतापूर्वक सदैव प्रसन्नमन रहते हैं उनकी अवस्था ग्यारह हजार वर्षकी होती है और समान अवस्था हानिके कारण कोई किसी को नहीं माता है अर्थात् एकही समय में देहोंको त्यागते हैं

They also yield cloths and ornaments, 5 The land abounds with golden sand. One portion of that beautiful land is radiant like rubies, diamonds, or lapis lazuli and other gems. All the seasons are agreeable and the earth is without mire. The tanks are charming, delicious and full of crystal water. People who are born there, come down from among the gods. They are pure of birth and very beautiful. They are born in pairs and the women there are like apsaras in beauty. They suckle on the nectar like milk of these trees and are of equal stature, beauty and virtues, wear the same sort of dress and love each other like chakravaks 11 They are cheerful and free from illness. They live eleven thousand years and never abandon each other. Bharund, a bird with sharp beak and great strength, lifts them up when they are dead and throw them in mountain

ताम्रिहोऽन्तीह मृतान् दरीषु प्राक्षपन्ति च । उत्तम कुरवो राजन् व्याख्यातास्ते समा  
सतः ॥ १४ ॥ मेरोः पार्श्वमहर्ष्यं च द्याम्यगवधातयम् । तस्य मूर्धाभिषेकस्तु  
भद्राश्वस्य विशाम्पते १५ भद्रसालवनं यत्र कालाघ्नश्च महादुमः । कलाघ्नस्तु महाराज  
नित्यपुष्पफल-शुभः ॥ १६ ॥ दुमथ योजनोत्सेधः सिद्धचारणसेवितः । तत्रते पुष्पाः श्वेता  
स्नेजोयुक्ता महावलाः ॥ १७ ॥ स्त्रियः कुमुदचर्णाश्च सुन्दर्य प्रियदशना ।  
चन्द्रभाश्चन्द्रवर्णाः पूर्णचन्द्रान्मानना ॥ १८ ॥ चन्द्रशीतलगव्यश्च नृत्यगीत  
विशारदाः । दशवर्षसहस्राणि तत्रायुर्भरतर्षभ ॥ १९ ॥ कालाघ्नसर्पितास्ते नित्यं  
संस्थितयौवनाः । दक्षिणेन तु नीलस्य निषधस्योत्तरेण तु ॥ २० ॥ सुदर्शनो नाम  
महान् जम्बूवृक्षः सनातनः । सर्वकामफलः पुण्यः सिद्धचारणसेवितः ॥ २१ ॥

यहां वहे पराक्रमी और तीक्ष्ण दंष्ट्राले मारंड नामपक्षी उन पुरुषों को पकड़कर  
शुफामों में डाल देते हैं, इं राजा यह मैंने उत्तर कौरव देशका संक्षेप से वर्णन  
किया । १४ । अब उस मेरुके पूर्वभागके वृत्तान्त का यथावस्थित कहनाहूं  
हे राजा उस भद्राश्वखंडका मूर्धाभिषेक नाम महाराज और भद्रशाळ नाम वन  
और कालाघ्न नाम वृक्ष है वह कालाघ्न नाम शुभ वृक्ष फल फलपुक्त सिद्ध चारणों  
से सेवित एक योजन ऊंचा है, जिस स्थानपर श्वेतवर्ण पुरुष तेजसे भरेहुये  
महावली और स्त्रियां कुमुद कमल के समान सुंदर स्वरूपवान् चन्द्रमा के समान  
प्रभाव और पूर्ण चन्द्रमा सा प्रकाशवान् मुखवाली और चन्द्रमा के ही समान  
शीतल वेह नृत्य गान में मधीन वर्धमान हैं और वहां अवस्था दश हजार वर्षकी  
होती है वह कालाघ्न कतरस पीन से सदैव तरुणरूपही रहते हैं । १९ । नीलपर्वत  
के दक्षिण और निषध पर्वत के उत्तर सुदर्शन नाम बड़ा जंबूवृक्ष सनातन है वह  
सब अभीष्टों का दाता पवित्र सिद्ध चारणोंसे सेवित है अर्थात् मनुष्य उसको

caves This is, O king, a brief description of the northern Kurus  
14 I shall now describe the eastern part of Meru Bhadrashwa is  
the best place there A large forest of Bhadrashals and a tall tree of  
Kalamras yielding good fruits and flowers, are situated there. This  
tree is a yojan in height and is adored by Sidhas and Charans. The  
men of that place are of white complexion very energetic and strong.  
The women are of the colour of lilies, very beautiful and enchanting.  
They possess the radiance and whiteness of the moon and their faces  
resemble a full moon Their bodies are cool like the rays of the moon  
and they are accomplished in singing and dancing. The duration of  
life there is ten thousand years, and the people always remain  
youthful by drinking the milk of the kalamra tree To the south  
of Nil and north of Nishadhi there is a huge Jamvu tree that is

तस्य नाम्ना समाख्यातो जम्बूद्वीपः सनातनः । योजनानां सहस्रञ्च शतञ्च भरत  
 पम ॥ २२ ॥ उत्सेधो वृक्षराजस्य दिवस्पृष्टं मनुजश्वरः । अरुणीनां सहस्रञ्च  
 शतानि दश पञ्च च ॥ २३ ॥ परणाहस्तु वृक्षस्य फलानां रसमेदिनाम् । पत  
 मानानि ताप्युर्थं कुर्वन्त विप्लवं स्वनम् । २४ ॥ सुचान्तं च रस राजस्तस्मि  
 न् रजतसन्निभम् । तस्या जम्वाः फलरसो नदी भूत्वा जनाधिप ॥ २५ ॥ मेहं  
 प्रदाक्षिणं कृत्वा सम्प्रयायुत्तान् कुरुन् । तत्रतेषां मनःशान्तिर्न पिपासाजनाधिप  
 । २६ ॥ तस्मिन् फलरसे पीते न जायवाघते च तान् । तत्र जाम्बूनदं नाम कनकं  
 देवभूषणम् ॥ २७ ॥ इन्द्रगोपकसकाशं जायते भास्वन्तुतत् । तरुणादित्यवर्णाश्च  
 जायन्ते तत्र मानवाः ॥ २८ ॥ तथा माल्यवतः शृङ्ग इदमपि हृष्यवाट् सदा सदा ।

नहीं पासके इसलिये कि वहभी दिव्य है इसी के नाम से यह सनातन से जंबूदीप  
 मसिद्ध हुआ है हे भरतवशियों में अष्ट राजा धृतराष्ट्र उस वृक्षराज जंबूवृक्ष की  
 ऊँचाई आकाश की छूनेवाली ग्यारह सौ योजन है उस वृक्षके पकेहुये फटनवाले  
 फलों का विस्तार द्वादश हजार आस्ती है अर्थात् कोई संख्या विशेष है यह फल  
 जब पृथ्वीपर गिरतेहैं तो बड़ेभारी शब्द को करतेहैं २४ और जहाँ जहाँ गिरतेहैं  
 वहाँ वहाँ चाँदी के समान श्वेत रसका छोटतेहैं हे राजा उगी जंबूफल के रसकी  
 नदी होकर मेरुको मोक्षण करके उच्च कुरु देशों को आती है हे राजा वहाँ  
 पिपासा लगने के कारण उन्होंके चिन्तकी कान्ती नहीं है परन्तु उस फलके रस  
 पीनेसे उनको जायवाघा दुग्धदायी नहीं होनी है वहाँही जाम्बूनद नाम कनक  
 देवर्त्ताओं का भूषण वीरवधुर्जद के समान रक्तवर्ण उत्पन्न होता है उसमें बड़ा  
 तेज होताहै वहाँ मनुष्य तरुण और सुवर्ण उत्पन्नहोते हैं २८ इसीप्रकार माल्यवत  
 के शिखरपर सर्वकर्तृ नाम अग्नि सदैव दिखाई देती है हे भरतर्षभ यह सर्वकर्तृ

eternal It is adored by Sidhas and Chaurans and grants every desire.  
 Jambudwip draws its name from that tree It is, O prince of  
 Bharata, eleven hundred yojans high and its branches touch the  
 very heavens Its circumference measures twenty five hundred cubits  
 and its fruit bursts open when ripe falling on earth with a loud noise  
 and giving out a silvery juice which flows like a river and passing  
 round Meru comes down to northern Kurus If the juice of that tree is  
 quaffed it conduces to the peace of mind and allays thirst Those  
 who drink of it are never weary and weak There is a species of  
 gold called Jambunad which is used for the ornaments of gods and  
 shines like glow worms Men born there are of the colour of the  
 morning sun 28 On the summit of Maljavat is always seen the  
 fire called Samantak which bursts forth at the end of the yug for-

नाम्ना सम्बर्त्तको नाम कालाग्निर्मरुतपर्म ॥ २९ ॥ तथा माल्यवतः श्रुद्धे पूर्व-  
 पूर्वानुगण्डिका । योजनानां सहस्राणि पंचषण्माल्यवानथ ॥ ३० ॥ महारजतसं-  
 काशः जायन्तेतत्र मानवाः । ब्रह्मलोकच्युताः सर्वे सर्वेषु साधवः ॥ ३१ ॥ तपस्तप्यन्ति  
 ते तीव्रं भयन्ति ह्यर्धरेतसः । रक्षणायन्तुभूतानां प्रावशन्ते । द्वाकाम् ॥ ३२ ॥ पष्टि  
 स्तान सहस्राणि पाष्टरेव शतानिच । अरुणस्याग्रतो यागि परिघार्थं दिवाकरम्  
 ॥ ३३ ॥ पष्टियगंसहस्राणि पष्टिमेव शतानिच । आदित्यतापतसास्ते विशन्ति  
 शशिमण्डलम् ॥ ३४ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि जम्बूखण्ड विनिर्णयपर्वणि माल्यवद्वर्णने  
 सप्तमाऽध्यायः ॥ ७ ॥

नाम कालाग्नि है और बनेही माल्यवान् के सिखरपर चारों ओर को छोटे छोटे  
 पर्वत हैं और माल्यवान् पर्वत ग्यारहहजार योजनहै ॥ ३० ॥ वहां ब्रह्मलोकसे गिरनेहुये  
 चांदी के समान भूतवर्ण सब के सब साधू मनुष्य उत्पन्नहोने हैं वह मनुष्य क-  
 ढिग तपस्याओं को करते हुये ऊर्ध्वरेता अर्थात् ब्रह्मचारी होने हैं और जीवोंकी  
 रक्षा के निमित्त सूर्य में प्रवेश करते हैं वह संलग्नमें साठहजार बाल्यखिल्यऋषि  
 सूर्य को घेरेहुये अरुण नाम सूर्य के सारथी के आगे २ चलते हैं वह सब छपासठ  
 हजार वर्ष तक सूर्य की ऊष्मा से गपेहुये होकर चन्द्रमण्डल में प्रवेश करते हैं अ-  
 र्थात् सूर्यलोक में विराट् पुरुष की उपासना करके मन के स्वामी चन्द्रमामें प्रवेश  
 करत हैं और तूनातन भाव को पाते हैं ॥ ३४ ॥

the destruction of the universe. On Malyavat's summit towards  
 the east are many smaller mountains; the former is eleven thousand  
 yojans. 30. People born there are of the complexion of gold. They  
 come down from the region of Brahma and are utterers of Brahma.  
 They perform very severe asceticism and are permanently celebrates.  
 They go up to the Sun for the good of all. They proceed in front  
 of Arun and surround the sun to the number of sixty thousand.  
 After being heated for sixtysix thousand years by the rays of the sun  
 they enter the disc of the moon. 34.



धृतराष्ट्र उवाच । वर्षाणाञ्चैव नामानि पर्वताञ्च धनञ्जय । आचक्ष्वमे यथा तत्त्व ये च पर्वतवासिनः ॥ १ ॥ सञ्जय उवाच । दक्षिणेन तु श्वेतस्य निषधस्योत्तरेण तु । वर्ष रमणक नाम जायन्ते तत्र मानवाः ॥ २ ॥ शुक्लाम्बिजन सम्पन्नाः सर्वे सुप्रियदर्शना । निःसपत्नाश्च ते सर्वे जायन्ते तत्र मानवाः ॥ ३ ॥ दशवर्षसहस्राणि शतानि दशपञ्च । जीवन्ति ते महाराज इत्यमुदत्तमानसा ॥ ४ ॥ दक्षिणेन तु नीलस्य निषधस्योत्तरेण तु । वर्ष हिरण्यमथ नाम यत्र हिरण्यतीनदी ॥ ५ ॥ यत्र च य महाराज पक्षिराट् पतंगोत्तम । यक्षानुगा महाराज धनिनः प्रियदर्शना ॥ ६ ॥ महाबलास्तत्र जना राजन् मुदितमानसा । एकादशसहस्राणि वर्षाणां तेज नाधिप ॥ ७ ॥ आयुः प्रमाणं जीवन्ति शतानि दशपञ्च । शृङ्गाणि च विचित्राणि त्रीण्येव मनुजाधिप ॥ ८ ॥ एकं मणिमयं तत्र यथैकं रौक्ममद्भुतम् । सर्वतन्-

अध्याय ॥ ८ ॥

धृतराष्ट्रगोले हे सजय तुम ने खण्डों और पर्वतों का वर्णन किया अब उन पहाड़ों में जा पास करते हैं उनका मूलसमेत वर्णन करो, सजय ने कहा कि श्वेत पर्वत के दक्षिण और निषधक उत्तर रमणकनाम खण्ड एक पृथ्वीका भाग है वहाँ ऐसे मनुष्य उत्पन्न होते हैं जो कि विष्णुभक्तों के साथ स्नहरखनेवाले अत्यन्त स्वरूपवान् हैं उनमें कोई परस्परमें शत्रु नहीं होता है, नीलपर्वतके दक्षिण और निषधके उत्तरभाग में हिरण्यम नामखण्ड है वहाँ हिरण्यती नाम नदी है । ५ । वहाँहीं पक्षियोंमें श्रेष्ठ गरुडजी हैं उसस्थानके धनवान् स्वरूपवान् मनुष्य यक्षों के सेवक महाबली और मत्स्य विद्युत होन हैं और सदैव प्रसन्नता पूर्वक रहकर साढ़े ग्यारह हजार वर्ष पर्वन्त अवस्था को भोगते हैं और कोई उनमें से साढ़े चारह हजार वर्ष तक भी जीते है उस पर्वतके तीन बड़े विचित्र शिखर हैं उनमें एकतां मणिपोंका शिखर है दूसरा अत्यन्त सुन्दर सुवर्ण का अपूर्व शिखर है

### CHAPTER VIII

"Tell me the name of all varshes, mountains and their inhabitants, Sanjaya." Said Dhritrashtra. "To the south of the white mountains and north of Nishadhi" Said Sanjaya, "is Akomanakvarsh. Men of white complexion are born there. They are of noble birth and handsome appearance. They have no enemies and live happily for eleven thousand five hundred years. On the south of Nishadhi is Hiranyavarsh where the Hiranyati flows. 5 There lives Garud the foremost of birds. The people are the followers of yakshes, wealthy and handsome. They are strong and cheerful and the duration of their life is twelve thousand years. The Shringavat mountains have three beautiful summits, one, made of jewels and

मयवेक भवनेरुपशोमतम् ॥ ९ ॥ तत्र स्वयम्भवा देवी नित्य वसति शण्डिली ।  
 उत्तरेण तु शृङ्गस्य समुद्रान्ते जनाधिप ॥ १० ॥ वपमैरावत नाम तस्माच्छृङ्गमत  
 परम् । न तत्र सूर्यरतपात न जीर्यन्ते च मानवाः ॥ ११ ॥ चन्द्रमाश्च सनज्ञो  
 ज्योतिर्भूतश्चावृतः पञ्चग्रहा पञ्चवर्णा पञ्चपत्रानभेक्षणाः ॥ १२ ॥ पञ्चपत्रसुगन्धाश्च  
 जायन्ते तत्र मानवाः । अनिष्पन्दा इष्टा घा निगहारा जितेन्द्रियाः ॥ १३ ॥ देवलोक  
 व्युता सर्वे तथा धिरजसे नृप । त्रयोदशसहस्राण्यवर्षान्ते जनाधिप ॥ १४ ॥  
 वायु प्रमाण जीवन्ति नरा भरतसत्तम । क्षीरोदस्य समुद्रस्य तथैवोत्तरत प्रभु ।  
 हरिर्वसति चैकुण्ठ शकटे कनकामये ॥ १५ ॥ अष्टचक्र इह तद्यान भूतयुक्तं मनो

और तीसरा शिखर सवरजों से मिश्रित अनेक स्थानों से शोभित है । ९ । वहाँ  
 स्वयं प्रकाशवान् शण्डिली देवी निवास करती है, 'हे राजा शिखरके उत्तर समुद्र  
 के समीप ऐरावत नामखण्ड है इसीकारण यह शृङ्गवान् पर्वत से घिरा हुआ उत्तम  
 खण्ड कहाना है वपमें सूर्य किसीको संतप्त नहीं करते हैं मनुष्य वृद्ध नहीं होते  
 और नक्षत्रों समेत चन्द्रमा ज्योति रूपके समान घिरा रहता है वहाँ के मनुष्य  
 कमल के समान कोमल वा सुन्दर रंगनेत्र और सुगन्ध युक्त उत्पन्न होते हैं  
 । ११ । हे राजन् वह सब देवलोक से मिले हुये मत्स्य से रहित अर्थात् देवता-  
 ओंके समान इष्ट मन्त्रधारी निगहारी जितेन्द्री और रजोगुण से रहित हैं और  
 उनकी अवस्था तेरहजार वर्षतककी होती है इसीप्रकार दूध के समुद्रकी वचर  
 दिशा में अनेक मायाओं के स्वामी ज्योतिरूप श्रीहरि नारायणजी सुवर्ण के शकट  
 पर निवास करते हैं वह सवारी आठ पहियोंकी है जिसमें एक पहिया तो पञ्चमै-  
 त्रिय समूह दूसरा पञ्चज्ञानेन्द्रिय समूह तीसरा मन बुद्धि चित्त अहकार का समूह  
 चौथा पञ्चमाण पाँचवां पाँचों मूर्ख तत्त्व छठां अविद्या सातवां काम अठारं

gems, another is very wonderful, being made of all kinds of gems and adorned with palaces. There the self luminous lady, known as Shandili lives. On the north of Shringvat, extended to the sea shore, is Airavatvarsh which is superior to all on account of its jewelled mountain. The sun gives no heat there and the people are free from old age. The only sources of light are the moon and stars. Beautiful like lotus and having their eyes like lotus petals, the men born there have the fragrance of the lotus. Their eyes donot wink they donot take any food and their senses are under control. They come down there from the region of gods and are free from sin. The duration of their life is thirteen thousand years. On the north of the milky ocean, Lord Hari of boundless prowess dwells on his car of gold. That vehicle having eight wheels, has numerous super-



जयम् । अग्निवर्णं महातेजो जाम्बूनदविभूषितम् ॥ १६ ॥ स प्रभुः सर्वभूतानां  
विभुश्च भरतर्षभ । सक्षेपो वस्तरश्चैव कर्त्ता कागयिता तथा ॥ १७ ॥ पृथिव्या  
पस्तथाकाश वायुस्तेजश्चार्थिव । स यज्ञ सर्वभूतानां मास्य तस्य हुताशन ॥ १८ ॥  
वैशम्पायन उच्यते । एवमुक्तं सजयेन धृतराष्ट्रो महामना । ध्यानमन्वगमद्राजा पुत्रान्  
प्रति जनाग्रिप ॥ १९ ॥ सावचिन्त्य महातेजा पनरेवाब्रवीद्धृच । असंशय  
सूतपुत्र कालं संचिन्त्यतेजगत् ॥ २० ॥ सृजतेच पुनः सर्वं नेह विद्यात शाश्वतम् । नरो  
नारायणश्चैव सर्वज्ञ सर्वभूतहृत् ॥ २१ ॥ देवैश्चकुण्ठमित्याहुर्नरा विष्णुमिति प्रभुम् ॥ २२ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि जम्बूखण्डाविनर्वाणपर्वणि धृतराष्ट्रवाक्ये

ऽष्टोऽध्यायः ॥ ८ ॥

कर्म भारी शुद्ध ब्रह्मयुक्त मनके समान अग्निगामी अग्निवर्ण तेजस्वी जाम्बूनद नाम  
सुवर्ण से शोभायमान है, हे भरतर्षभ वह सब संसार पात्रवा स्वाधी व्यापक  
सबका अपन में लग करनेवाला और मरटकरने वाला जीवरूपसे कर्त्ता और  
ईश्वररूपसे कर्म करनेवाला है हे राजा वही पचतत्त्ववही सबका यज्ञ और मुख  
वसका आग्नि है । १८ । वैशम्पायन बाले कि हे जनमेजय यह सब बातें संजय से  
सुनकर बड़ साहसी राजा धृतराष्ट्रने अपन पुत्रोंकी चिन्ताकरी और फिर भी  
बहुतसा विचारकरके बोला कि हे सजय निश्चन्देह काल जगत्को भक्षण करता  
है, और फिर सबको उत्पन्न करता है यहां कोई भी बिनाश रहित नहीं है नर  
नारायण अर्थात् जीव ईश्वर भी दोनों रूपोंमें अविनाशी नहीं हैं अर्थात् दोनों एक  
रूपहोकर अकेलाही सर्वज्ञ और सर्वभूतोंका मित्र है वसीसमर्थ पुरुषको दबता  
और मनुष्योंने मायावीश और सर्वव्यापी वर्णन किया है ॥ २१ ॥

natural creatures seated on it, and has the speed of the mind. It is  
fiery in colour, is very strong and is adorned with Jambunad gold.  
The lord of all creatures possesses every sort of wealth. 17 The  
universe merges in him and from him it emanates again. He is the  
actor and makes others act. He is the earth, water, space, air and  
fire. He is Sacrifice's self for all creatures and fire is His mouth."   
Vaishampayan continued. "The high minded king Dhritrashtra,  
thus addressed by Sanjaya, became absorbed in meditation about his  
sons and having reflected for a time the powerful king said, "Without  
doubt, Time is the destroyer of universe and Time creates everything  
again. Nothing is eternal. Nar and Narayan the omniscient destroy  
all creatures. The gods call him Vaikunth while men call him  
Vishnu" 21.

धृतराष्ट्र उवाच ॥ यदिद् भारत वर्षं यत्वेदं मुद्दिता वलम् । यत्रातिमात्रं लुब्धो  
 य पुत्रो दुर्योधनो मम ॥ १ ॥ यत्र गृद्धा पण्डुपुत्रा यत्र मे सज्जते मन । एतन्मे तत्त्वं  
 माचक्ष्व त्वहि मे बुद्धिमाग्मत ॥ २ ॥ सज्जय उवाच ॥ न तत्र पाण्डवागृद्धा शृणु  
 राजन् उच्यो मम । गृद्धो दुर्योधनस्तत्र शकुनिश्चापि सौवल ॥ ३ ॥ अग्रे क्षत्रियाश्चैव  
 नागाजनपदेश्वरा । ये गृद्धा भारते वर्षे न मृत्युमिति परस्परम् ॥ ४ ॥ अत्र ते कीर्तिं  
 विप्सामि वर्षे भारत भारतम् । प्रय । मन्द्रस्य द्वयस्य मनार्थैव स्वतस्य च ॥ ५ ॥ पृथो  
 स्तु राजन् वैश्यस्य गधेक्ष्याकोर्महात्मन । ययाते रम्भरीपस्य माघातुर्नृपस्य च ॥ ६ ॥  
 तथैव मुचुकुदस्य शिघ्रे रौक्षी नरस्य च । ऋषभस्य तथैलस्य नृगस्य नृपतस्तथा ।  
 कुशिकस्य च दुर्योधं गाधेक्ष्य महात्मन ॥ ७ ॥ सोमकस्य च दुर्योधं दिलीपस्य तथैव

### अध्याय ॥ ९ ॥

धृतराष्ट्र ने कि यह भरतखण्ड जिसमें यह सबसेना भूली हुई है उस में  
 यह मेरा पुत्र दुर्योधन अत्यन्त लोभी हारहा है और जिसमें पांडव लोभी हैं और  
 मेरा भी मन लग रहा है उसका मुखा वृत्तान्त मुझसे कहो येन तुमको बुद्धिमान  
 माना है । २ । सजय बोले ह राजा मेरे वचनको सुनो उसमें पांडव लोभी नहीं हैं  
 इसमें केवल दुर्योधन और सौवल का पुत्र शकुनी ही लोभी है, नाना प्रकार के  
 दशोंके स्वामी अन्य क्षत्री लोग जो भरतखण्डमें लोभी हाकर परस्पर में ईर्ष्या  
 करते हैं । ४ । इस स्थानपर मैं भरतखण्डका वर्णन तुमसे वर्णन करवाऊँ कि यह  
 भरतखण्ड इन्द्र देवता और सूर्यके पुत्र वैवस्वत मनुका अभीष्ट है हे राजा धृतराष्ट्र  
 इनके विशेष यह भरतखण्ड पृथु, वैश्य तथा महात्मा इक्ष्वाकु, ययाति, अवरीष,  
 औचीनरके पुत्र शिति, ऋषभ, ऐल, नृग, कुशिक, महात्मा गाधि, सोमक दिलीप

### CHAPTER IX

"Give me a detailed account of Bharatvarsh, where these senseless  
 forces have been collected, which my son Duryodhan covets and which  
 is so desired by the Pandavas and myself as well Tell me all this  
 Sanjaya, for, methinks you are very intelligent in this matter" asked  
 Dhritrashtra of Sanjaya. "Listen, king," replied Sanjaya, "The  
 Pandavas do not covet this country, it is thy son Duryodhan and  
 Shakuni the son of Suval that are covetous I shall now tell thee,  
 descendant of Bharat, of the land known as Bharatvarsh This is the  
 favourite land of Indra and of Manu the son of Vivasvat, of Prithu,  
 of Vainya, of Ikshvaku, of Yayati, of Amvarish, of Mandhata, of  
 Nahush, of Muchkund, of Sivi the son of Ushinar, of Rishabh, of  
 Ila, of king Nrig, of Kushik, of Gadhi, of Somak, of Dilip and of



गाम् । गेमनीं धृतपापाश्च वन्दनाञ्च महानदीम् ॥ १७ ॥ कौशिकीं त्रिदिवां कृत्यां  
निचितां लोहितारणीम् ॥ १८ ॥ रहस्यां शतकुम्भाञ्च सरयूञ्च तपेयञ्च । चर्म  
ण्वनीं वेजवतीं हस्तिसोमां दिशं तथा ॥ १९ ॥ शरावतीं पयोष्णीव परां भीम  
रथीमपि । कावेरीं चुलुकांचापि घाणीं शतचलामपि ॥ २० ॥ नीवारा महितां  
चापि सुप्रयोगां जनाधप । पवित्रां कुण्डलीं सिन्धु राजनीं पुरमालिनीम् ॥ २१ ॥  
पूर्वाभिरामा वीरार भीमामोघवतीं तथा । पादाश्विनीं पापहरां महेन्द्रा पाटला  
वतीम् ॥ २२ ॥ करीपिण्मिलिक्ताञ्च कुशचीरां महानदीम् । मकरीं प्रवरां मेनां  
हेम । घृतवतीं तथा ॥ २३ ॥ पुरावतीमनुष्णाञ्च शैव्या कापाञ्च भारत । सदा  
नीरामधृष्याञ्च कुशधरां महानदीम् ॥ २४ ॥ सदाकांतां शिवाञ्चैव तथा वीर  
वतीमपि । वस्त्रासुचस्त्रा गौरीञ्च कम्पनां सहिरण्यवतीम् ॥ २५ ॥ वरां वीरक  
राचापि पञ्चमीञ्च महानदीम् । रथाचित्रां ज्योतिरथां विश्वामित्रां कपिजलाम् । उपेन्द्रां  
बहुलाञ्चैव कवीरा मधुवाहिनीम् । विनदीं पित्रलां वेणां तुङ्गवेणा महानदीम् ॥ २७

इक्षुला, कृपी, करीपिणी, चित्रवाहा नचि चक्रने वाली चित्रसेना, गोगती, धृतपा-  
पा, महानदी, गंडकी, । १७ । कौशिकी, त्रिदिवा कृत्या, निचिता, लोहितारणी,  
रहस्या, शतकुम्भा, सरयू, चर्मण्वती, वेजवती, हस्तिसोमा, दिशनदी, शरावती,  
पौष्णी, वेणा, भीमरथी, कावेरी, चुलुका, वाणी, शतगली, नीवारा, महिता, सुप्र  
योगा, अंजना, पवित्रा, कुंडली, सिन्धु, राजनी, पुरमालिनी, पूर्वाभिरामा, अमोघ  
वती, भीमा, पालाशिनी, पापहरा, महेन्द्रा, पाटलावती, करीपिणी, असिक्ली, कुश  
चीरा, महानदी, मकरी, प्रवरा, मेना, हेमा, घृतवती, पुरावती, अनुष्णा, शैव्या,  
कापी, सदानीरा अधृष्या, महानदी, कुशधारा, सदाकान्ता, शिवा, वरिवती, वस्त्रा,  
सुवस्त्रा, गौरी, कम्पना, हिरण्यवती, वरा, वीरकरा, महानदी, पंचमी, । २७ । २५  
चित्रा, ज्योतिरथा, विश्वामित्रा, कपिजला, उपेन्द्रा, बहुला, कुवीरा, मधुवाहिनी,

Vedavati, the Tridiva, the Ikshula, the Krimi, the Krishni, the  
Chitravaha, the subterranean Chitravana, the Gomati, the Dhoot  
papa, the Mahanadi, the Gandaki, the Kaushiki, the Tridiva, the  
Kritya, the Nichita, the Lohitarani, the Rahasya, the Shatkumbha,  
the Saryu, the Charmanvati, the Vetravati, the Hastisoma, the  
Dishnadi, the Sharavati, the Payoshni, the Vena, the Bhimrathi,  
the Cavery, the Chuluka, the Vau, the Shatruchi, the Neevara, the  
Mahita, the Suprayoga, the Anjana 20, the Javitra, the Kundali,  
the Sindhu, the Rajani, the Purmahni, the Purva'hirma, the  
Amoghvati, the Bhuma, the Palashni, the Paphera, the Mahendra,  
the Patalavati the Karishmi, the Asiki, the Kishchira, the Maha-  
nadi, the Makri, the Pravara, the Meni, the Hema, the Ghrivati,  
the Puravati, the Anushna, the Shruvya, the Kayee, the Sadanira,  
the Adharshya, the Kushidhara, the Sidakanta, the Shiva, the  
Brevati, the Hastri, the Suvasira, the Gouri, the Campana, the

विदिशां कृष्णवेणां च ताम्रां च कपिलामपि । खलु सुवामां वेदाभ्यां हरिश्चापां  
महोपगाम् ॥ २८ ॥ शीघ्रां च पिच्छिलाञ्चैव भारद्वाजीञ्च निम्नगाम् । कौशिकीं  
निम्नगां शोणा वाहुदामथ चन्द्रमाम् ॥ २९ ॥ दुर्गां चित्राशिलाञ्चैव ब्रह्मवेध्यां  
वृहद्वतीम् । यक्षत्तामथ रोहीञ्च तथा जाम्बूनदीमपि ॥ ३० ॥ सुनसां तमसां  
दासीं वसामन्या वराणसीम् । नीलां धृतवतीञ्चैव पर्णाशा च महानदीम् ॥ ३१ ॥  
मानसीं वृषभाञ्चैव ब्रह्मवेध्यां वृहद्वतीञ्चैव । पताञ्जान्याञ्च वह्नीं महानद्योजना  
धिप ॥ ३२ ॥ सदानिरामया कृष्णा मन्दगामन्दवाहिनीम् । ब्रह्माणीञ्च महामौरीं  
दुर्गामपि च भारत ॥ ३३ ॥ चित्रोपलां चित्ररथां मञ्जुलां वाहिनीं तथा । मन्दा  
किनीं वैतरणीं कोशां चापि महानदीम् । भुक्तिमतीमनङ्गाञ्च तथैव वृषकाह्वयाम्  
॥ ३४ ॥ लोहित्यां करतोपाञ्च तथैव वृषकाह्वयाम् । कुमारीमृषिकुल्याञ्च भारि

विनदी, पिञ्जला, वेणा, महानदी, तुंगरेणा, विदिशा, कृष्ण वेणा, ताम्रा, कपिला,  
। २७ । खलु, सुवामा, वेदाभ्या, हरिश्चापा, महोपमा, शीघ्रा, पिच्छला, भारद्वाजी,  
निम्नगा, निम्नगाकौशिकी, शोणा, वाहुदा, चन्द्रमा, दुर्गा, मंत्रशिला, ब्रह्मवेध्या,  
वृहद्वती, यक्षत्ता, अयरोही, जाम्बूनदी, मुनसा, तमसा, दासी, वसा, वह्नी, अमसी, नीला,  
धृतिमती, महानदी पर्णाशा, मानसी, वृषभा, ब्रह्मवेध्या, वृहद्वती इत्यादि सप्त नदियों  
का जल पान करते हैं । ३१ । और हे राजा इनके सिवाय और भी बहुत प्रकारकी  
महानदी है जैसे कि सदानीरा, अया, कृष्णा, मंदगा, मन्दवाहिनी, ब्राह्मणी, महागौरी,  
दुर्गा, चित्रोपला, चित्ररथा, मञ्जुला, वाहिनी, मन्दाकिनी, वैतरिणी, महानदी, कोशा,  
भुक्तिमती, अनिगा, पुष्पवेणी, उत्पलावती, लोहित्या, करतोपा, वृषका नाम नदी,

Huanvati, the Vara, the Virakala, the Panchini 25, the Rath-  
chitra, the Jyotiratha, the Vishwamitra the Kapinjara, the Upendra  
the Bahuli, the Kuvira, the Ambuvahini, the Vinadi, the Pinjala, the  
Vona, the Tungrena the Bidisha, the Krishnavena, the Tamra, the  
Kapila, the Khalu, the Suvama, the Vedishwa, the Harsharva,  
the Mahopama the Shighra, the Pichala the Bharadwaji, the  
Nimnaga, the Nunnaga kaashiki, the Shona, the Vahuda, the Chand-  
rama, the Durga, the Chitrashila, the Brahmabodhya, the Brihad  
wati, the Yavaksha, the Athrohi, the jambundi, the Sunasa, the  
Tamasa, the Dira, the Vasa, the Vas, the Amasi, the Nila, the  
Dhritimati, the Pannisha, the Manasa, the Brashabha, the Brahma-  
medhya, the Vishadvati and others 31. Besides these there are  
other rivers, such as the Sidanira, the Aya, the Krishna, the  
Mandaga, the Mandavahini, the Brahmani, the Mahagauri, the  
Durga, the Chitropala, the Chitraratha, the Manjula, the Valuni, the  
Mandakini, the Vasuni, the Koha, the Muktimati, the Aniga, the

पाच सरस्वतीम् ॥ ३५ ॥ मन्दाकिनीसृणुयांच सर्वा गङ्गाच भारत । विश्वस्य  
मातर सर्वा सर्वाश्चैव महाफला ॥ ३६ ॥ तथा नद्यस्त्यग्नाशा शतशोपस  
हस्रशः । श्रुयेता सरितो राजन् समाख्याता यथास्मृति ॥ ३७ ॥ अत ऊर्ध्व  
जनपदाग्निवोय गदतो मम । तत्रेमे कुरपाचाला शाल्यामात्रे यजाङ्गला ॥ ३८ ॥  
शूरसेना पुलिन्दाश्च वोधा मालास्तर्षेय च । मत्स्या कुशल्या सौगल्या कुन्त  
य कान्तिकोसला ॥ ३९ ॥ चेदिमत्स्यकरुपाश्च भोजा सिन्धुपालन्दका । उत्तमाश्च  
दशार्णाश्च मेकलाश्चोत्कलः सह ॥ ४० ॥ पाचाला कोसलाश्चैव नैवपृष्ठाधुरन्धरा ।  
गोधा मद्रकलिङ्गाश्च काशयोपरन्धराश्च ॥ ४१ ॥ जठरा कुकुराश्चैव सदशार्णाश्च  
भारत । कुन्तयोऽथ तपश्चैव तदेवापरकन्तय । ४२ ॥ गोमता मन्दका सण्डा  
विदर्भा रूपवाहिका । अधमका पाडुराष्ट्राश्च गोपपथ करीतयः ॥ ४३ ॥ आद्य  
राज्यकुशाद्यश्च मल्लराष्ट्रश्च करलम् । वारवास्यापवाहाश्च चक्राश्चक्रातय शका

कुमारी, ऋषिकुल्या, मारिषा, सरस्वती । ३५ । सृणुया, मन्दाकिनी, सर्वा, गंगा,  
यह सम्पूर्ण नदी विश्वकी माता और महाफलकी देनेवाली हैं इसी प्रकार हजारों  
नदी और भी गुप्त है राजा यह नदियों में से स्वरण के अनुसार वर्णन की ३७ । अब मैं देशों का  
वर्णन करता हूँ यहाँ यह कुशदेश, पांचानदेश, शाल्य, माद्रियजांगल, शूरसेनदेश, पुलिन्द,  
वोधा, माला, मत्स्यदेश, कुशादिदेश, मौगल्या, कुन्तीदेश, कान्तिकोशलदेश, चेदि, मत्स्य,  
करुप, भोज, सिन्धु, पुलिन्दक, उत्तम दशार्ण देश, मेकल, उत्कल, । ४० । पाचाल  
कोशन, नैकपृष्ठ, धुरन्धर, वोधा, मद्र, कलिन्द, काशय, परकाशय, जठरा, कुकुरा,  
दशार्ण देशयुक्त, कुर्य, अन्नन्त, अपरकन्तय, गोमन्त, मन्दक, खंड, विदर्भ, रूपवाहिक  
अश्वक, उत्तर, गोपराष्ट्र, करीत, अधिराज्य, कुशाद्य, मल्लराष्ट्र, केवल, वारवास्या,

Pushpveni, the Utpalavati, the Lohita, the Kartoya, the Vrishaba,  
the Kumari, the Rushikulya, the Marisha, the Saraswati 35, the  
Supunya, the Mandakini, the Sarva and the Ganga. All these rivers  
are mothers of the world and a source of great profit. There are thou-  
sands of others unknown. I have given thee, King, all the names that  
I remembered. 37 I shall now mention the names of countries —  
Kuru, Panchal, Satala, Madra, Shursen, Pulmul, Bodha, Mala,  
Matsya, Kush, Soshlaya, Kuntz, Koshal, Chedi, Matsya, Karush,  
Bhoj, Sindhu, Pulundal, Dasharna, Melal, Uttal, 40, Panchal,  
Koshal, Natprisht, Dhunandhar, Bodha, Madra, Kalind, Kashya,  
Parlashya, Jathara, Kukura, Dasharn, Huntia, Atantya, Apar-  
luntia, Gomant, Mandal, Khand Vidarbha, Ruprahik, Ashwal, Uttar,  
Goprashtra, Karit, Adhirajya, Kushadya, Malla Keval, Vartasya,



पार्थ्वी रोमाण. कुशविन्दवः ॥ ५६ ॥ कच्छा गोपालकक्ष जंगल. कुरुवर्णक. ।  
किराता वर्धरा सिद्धा वैदेहास्त्राम्रालम्बकः ॥ ५७ ॥ बाँझम्लेच्छा सैसिगिधाः  
पार्थीयाश्च मारिष । अथापरे जनपदा दक्षिणा भरतर्षभ ॥ ५८ ॥ द्रविडा. के-  
रला प्राच्याभूपका वनवासिकः । कर्णाटका महिषक विरहामूरान्धरा ५९  
जिल्लिका. कुन्तलाश्चैव सौहृदा नभकनना. । कौकुटकर्णितया चोला कौकणा  
मालवानरा ॥ ६० ॥ समंगा. करकाश्चैव कुरुरोगाग्रामाणा. । ध्वजान्युत्सवसंके-  
तास्त्रिगर्चा शाल्यसेनय भूषकाः कोक वका. भ्रोग्ठा समवेगवशास्तथा । तथैवावध्य  
चुलिका पुलन्दा चलकल सह ॥ ६२ ॥ मालवा बहुलाश्चैव तथैवापरवल्लवा  
कुलिन्दाः कालदाश्चैव कण्डला करटास्तथा ॥ ६३ ॥ मूपकास्तनपालाश्च सनी  
पापटसृञ्जयाः । शट्टिदा पशिवाटाश्च तनयाः सुनयान्तथा ॥ ६४ ॥ अष्टपिकावि-  
दम्भाः काकास्तङ्गणा परतङ्गणाः । उत्तराधापरे म्लेच्छाः दूराभरतसत्तम ॥ ६५ ॥  
पयानाधीनकाम्योजा दारुणाम्लेच्छजातय । सङ्गद्विहा कुलथाश्चहूणा पारसिकै

वानायु, दशार्ण, रुम, कुशविन्द । ५६ । कच्छ, गोपालकक्ष, जंगल, कुरुवर्णक,  
किरात, वर्धर, सिद्धा, वैदेह, ताम्रालिप्तक, और, पाँवर, सैसिकत, पार्थीय, मारिष  
इतके विशेष दक्षिणमें । ५७ । द्रविण, केरल, प्राच्य, भूपिक, वनवासिक, कर्णाटक  
माहिषक, अविहल्य, मूपक, जिल्लिक, कुन्तल, सौहृद, नभकानल, कौकुटक, चोल,  
कौकण, मालवानक । ६० । समंग, कारक, कुरुर, अंगार, मारिष, ध्वजान्युत्सवसंकेत,  
स्त्रिगर्च, शाल्यसेन, वक, कोकवक, भ्रोग्ठा, समवेगवश, विन्ध्य, चुलिक, कलकल सहित  
पुलिन्द, मालव, मल्लव, परवल्लभ, कुलिन्द, कालड, कुंडल, करट, मूपक, तनवाल,  
सनीय, घटसृञ्जय, आलिंदाप, शिवाट, तनय, सुनय, अष्टपिक विदर्भ, काक संगण  
परतंगण हे भरतर्षभ इसीप्रकार अन्य उच्च देश वाली कठोरचित और म्लेच्छनाम  
में प्रसिद्ध हैं, यवन, चीनी, कांबोज, सङ्गद्विहा, कुलथ, आहूण, पारसियों समेत  
हूण । ६५ । यह सब म्लेच्छजाति के लोग भयकारी हैं रमण, चीन, दशमालिक

vind 55, Cutch Gopalkuksh, Jangal, Kuruvarnak, Kirat Barlar,  
Sidha, Vardeh, Tamrahptik, Aundra, Paundra, Saisikat, Pavatiya,  
Marish and besides these, in the South, Dravin, Keral, Prachya,  
Bhushuk, Vanvashik, Karnatak, Mahishak, Avikalya, Mushak, Jilbh,  
Kuntal, Sauhrat, Nabhtanan, Kaukuttak, Chol, Concan, Malvanak,  
60 Samang, Karak, Kurat, Angar, Maurish, Dhvajanyutsalsanket,  
Strigart, Shalwasen, Vak, Kokvak, Proskth, Samvegvash,  
Bmdhya, Chuhk, Pulnd with Kalkal, Malav, Mallav, Parvallabh,  
Kuhnd, Kalad, Kundal, Karat, Mushak, Tanval, Saniya, Ghatsrin-  
jaya, Ahndap, Shivat, Tanaya, Sunaya, rishuk, Bidarh, Kal,  
Tangan, Partangan, and others. The northern people are hard-  
hearted Mlechas These are Yavans, Chinese, Kamtojas, Sritgrahs,  
Kalath, Abun, and Persians. 65. The Romans, the Chinese



सह ॥ ६१ ॥ तथैव रमणाश्चानास्तथैव दशमालिका । क्षत्रियो पनिवशाथ वैश्य  
शूद्रकुलानच ॥ ६७ ॥ शूद्राभीराश्च दरदा वाश्मोरा पत्तिभि सह । स्वाशी  
राथा तत्रापाय प हवा गिरिगह्वरा ॥ ६८ ॥ यात्रया सभरद्वाजास्तथैवस्तनपोपका ।  
प्रोपकाथ कालदाश्च किराटागश्च जातय ॥ ६९ ॥ तामरा हन्यमानाश्च तथैव कर  
भजका । एत च न्य जनपदा प्राच्यादीव्यास्तथैवच ॥ ७० ॥ उद्देशमात्रेणमया  
देशा सङ्गीर्णित विभो । यथायग वल्च्चाप त्रिवर्गस्य महाफलम् ॥ ७१ ॥ दुह्यत  
धन कामधुक भूमि सम्यगनुष्ठिता । नस्या शृत्त्वान्त राजान शूरा धर्मार्थदावदा  
॥ ७२ ॥ त त्यजन्याहवे प्राणान् वसुगृह्णास्तारिष्वन । दधम नृपकायाना काम  
भूमि परायणम् ॥ ७३ ॥ अ यान्यस्यावलुम्पन्ति सारमेया यथामपम् । राजानो  
भरतश्रेष्ठ भक्तुमामावसु धाम् ॥ ७४ ॥ नचापि वृत्ति कामाना विघटतघापिकस्य  
चित् । नस्मा परिग्रह भूमेधतन्त करपाण्डवा ॥ ७५ ॥ साम्रामेदेन दानेन

जो कि क्षत्रीयोनिसे उत्पन्न वैश्य और शूद्रों के कुल हैं शूद्र, आभीर, दरद पशुओं  
समेत काश्मीर, स्वाशीर अर्थात् [ खुरासानी ] अन्तचार, पल्हव ( जिनकी भाषा  
पहलवी प्रसिद्ध है ) गिरिगहर, आत्रेय, भरभज, स्तनपोपिक, प्रोपक, कलिग, किराटों  
की जातें, तोमर, हसमार्ग, करभजक यह और अन्य पृथ्वी और उच्चतीय देशहै, हे  
समर्थ धृतराष्ट्र यह मने सप्त देश उद्देशमात्रसे कहे । ६२ । मनोरथों के पूर्णकरने  
वाले कामधेनु रूपी पृथ्वी श्रेष्ठपोषित गुण और बलके समान त्रिवर्ग अर्थात् ( धर्म  
अर्थ काम ) हिरण्यगर्भरूपी फलके भी देनेवाले धर्म और अर्थ में कुशल बुद्धि शूरवीर  
राजालोग उस पृथ्वीकी इच्छापूर्वक लालसाकरते हैं वह शीघ्रता करनेवाले धनके  
लोभी युद्धभूमि में अपने प्राणों को त्यागकरते हैं, यह पृथ्वी इच्छानुसार देवता  
और मनुष्यों की देहोंकी रक्षाका स्थान है हे भरतश्री पृथ्वी के भोगने की इच्छा  
रखनेवाले क्षत्रीलोग परस्पर में एक एक को मारते हे जैसे कि कुत्ते मानके टुकड़े  
करते हैं इसीप्रकार से अवतकभी किसीकी वृष्ण। न्यून नहीं होतीहै हे राजा इसी

and the Dushmaliks who the Vashyas and shudras descend d from  
Kshatryas, are very dreadtul Abhurs, Darads, Kashmere Khashur,  
Antchar, Palhuv Girigahvar, Atreya Bharadwaj, Stanposhik,  
Prashik Kulmg, Kurat, Tomar, Hansmarg and Karbhanyak are other  
eastern and northern tribes and countries. I have now told thee,  
wise Dhritrashtra the names of all the countries. This wonderful  
earth, giver of all desires like the famous Kamdhenu, from which  
virtue profit and pleasure may be obtained is coveted by virtuous  
and powerful kings who rashly lose their lives. The earth is the  
refuge of gods and human beings. It is the bone of contention for  
powerful kshatryas who desire to obtain it and whose avarice is never  
satisfied. It is thus that the Kauravas and the Pandavas are

दण्डेनैव च भारत । पिता आता च पुत्राश्च यन्त्र्याश्च नरापङ्कज । भूमिभयति  
भूतानां सस्यगच्छिद्रदर्शना ॥ ७६ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि जम्बूखण्ड विनिर्माणपर्वणि भारतीगनदीदेशादि  
नायकपणे नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

धृतराष्ट्र उवाच ॥ भारतः स्यास्य ययस्य तथा हेमवतस्य च । प्रमाणगाधुषः सूत  
पलञ्चापि शुभाशुभम् ॥ १ ॥ मनागत मनिश्रान्तं वर्त्तमानं संजय । दाचक्ष्व मे वि  
स्तरेण हरिष्यं तथैव च ॥ २ ॥ सञ्जय उवाच ॥ चत्वारि भारते ययं युगान् भरतर्षभ ।  
कृतं त्रेता द्वापरं च त्रिभ्यं च कल्युधन ॥ ३ ॥ पूर्वं कृतयुगं नाम तत्स्रतायुगं प्रभो । स-  
क्षपाद् द्वापरस्य च तत्स्रितयुगं प्रवर्त्तते ॥ ४ ॥ चत्वारिह सहस्राणि वर्षाणां कल्युधनम् ।  
आयुः संख्या कृतयुगे संख्याता राजसूतम् ॥ ५ ॥ तथा त्रीणि सहस्राणि त्रयायामनुजा  
धिप । द्वे सहस्रे द्वापरे सुवि तिष्ठन्ति साम्प्रतम् ॥ ६ ॥ न प्रमाणस्थितिर्दृष्टिं सिध्य

कारण से कौरव पाण्डव भी साम, दाम, भेद, दण्ड इन चारों नीतियों के द्वारा पृथ्वी  
के विजय करनेमें अनेक उद्योग करते हैं, जिसको अच्छे प्रकार से पूरा छिद्र दर्शन  
है उसीकी पृथ्वी पिता भाई पुत्री आकाश और स्वर्गरूप भी होती है ॥ ७६ ॥

अध्याय ॥ १० ॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे सत संजय इस भरतखण्ड और हेमवतखण्डकी अवस्था-  
ओंकी संख्या बल शुभाशुभ भूत भविष्य वर्त्तमानको भी व्योरेवार कहिये इसी  
प्रकार हरिखण्डको भी कहिये संजयबोले कि हे भरतर्षभ और कौरवों की छद्दि  
चाहनेवाले धृतराष्ट्र भरतखण्ड में चार युग है सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग  
प्रथम सतयुग फिर त्रेता फिर द्वापर और द्वापर के अन्त से कलियुग  
जारी होताहै हे । ४ । कौरवोत्तम राजेन्द्र सतयुगमें चारहजार वर्षकी अवस्था होती  
है त्रेतामें तीन हजारकी द्वापर में दोहजार वर्षकी और हे राजन् कलियुगमें अवस्था  
की संख्या नहीं है इस कलियुग में उत्पन्नहुये बालक और गर्भ में वर्त्तमान बालक

striving to possess by negotiations, disunion, gift and bloodshed It  
stands in the relation of father, mother, daughter, firmament and  
paradise to him who looks well to it. 7.

## CHAPTER X

"Let me know, Sanjaya," said Dhritrashtra, "all about the  
period of life, strength, the good and bad things, the future, past  
and present of Bharat-khand, Hemvat-khand and Harikhand." "Best  
of the descendants of Bharat and desirous of the welfare of the Kaura-  
vas replied Sanjaya, 'there are four yugs, namely, Krit, Treta, Dwapar  
and Kali successively in Bharatvarsh. Four thousand years is the  
duration of life in the first, three thousand in the second and two  
thousand years in the third; but in the last or Kali there is no fixed

ऽस्मिन् भरतपते । गर्भस्थाश्च त्रियतेऽन तथा जाता त्रियन्ति च ॥ ७ ॥ महाबलामहा  
सत्त्वा प्रशान्तासमन्विताः । प्रजायन्ते च जाताश्च शतशोऽय सहस्रशः ॥ ८ ॥ जाताः  
युगमे राजन् धनिनः प्रयदर्शनाः । प्रजायन्तश्च जाताश्च मुनयो वै तपोधनाः ॥ ९ ॥  
महेत्साहा महात्मानो धार्मिका सत्यवादिनः । प्रयदर्शना ययुष्मन्तो महावीर्या धनु  
र्धरा ॥ १० ॥ चरार्हायुध जाय ते क्षत्रिया शूरास्तमाः । त्रेताया क्षत्रिया  
राजन् सर्वे ये चक्रवर्तिनः ॥ ११ ॥ आयुष्मन्तो महावीरा धनुर्धरा युधि ।  
जायन्ते क्षत्रियाः शूरास्त्रयायां वशवर्तिनः ॥ १२ ॥ सर्ववर्णाश्च जायन्ते सदाश्चैव  
च द्वापरे । महात्साहाद्यो ययुष्मन्तः परापरजयौषणः ॥ १३ ॥ तेजसाह्वेन सृष्टा  
क्रोधो पुष्पा नृपः । ह्युघा वनूतकाश्चैव तिष्ये जायन्ति भारत ॥ १४ ॥  
ईर्या मानस्यथा क्रोधो मायाऽस्त्रा तपैश्च । तप्ये भवति भूताना रागोलोभ-  
श्च भारत ॥ १५ ॥ सक्षेपो वृत्तते राजन् द्वापरोऽस्मन्पराधपः । गुणोत्तरं ह्यमघत  
हरिष्यं तत परम् ॥ १६ ॥  
इति महाभारते भीष्मपर्वणि भारतवर्षे कृतं चानुशाधे नायुर्निरुद्धे दशमोऽध्यायः १०  
समाप्तः च जम्बूद्वीपे विनिर्माणपर्वः ॥

भी मरते हैं और सतयुगमें बड़े बलिष्ठ पराक्रमी और युद्धिआदि गुणयुक्त सैद्धों  
वा हजारों मनुष्य उत्पन्नहोकर सन्तानोंको उत्पन्न करते थे और धनी मियदर्शन  
तपोधन मुनि उत्पन्नहोकर सन्ततियों के उत्पन्नकर्त्ता हुये बड़े उस्ताह मन धार्मिक  
सत्यवादी भियदर्शन उद्यम वर्ण महापराक्रमी धनुषधारी वरके योग्य शूरोंमें श्रेष्ठक्षत्री  
उत्पन्न होते हैं और त्रेतामें सब क्षत्री चक्रवर्ती होते हैं । ११ । और बड़े अवस्था  
वान् शूरवीर युद्धमें धनुषधारियों में उत्तम राजाओंके आज्ञावर्णी उत्पन्नहोतेहैं द्वापर  
युगमें सब वर्ण सदैव उस्ताह चित्त पराक्रमी परस्परमें विजयाभिलाषी उत्पन्न  
होतेहैं और कलियुगमें थोड़े पराक्रमी क्रोधी लालची मिथ्यावादी मनुष्य उत्पन्न  
होतेहैं और कलियुग में जीवधारियों में अईकार क्रोध ईर्ष्या छल दूसरे की निन्दा  
और विषयों में प्रीति करनेवाले लालची उत्पन्न होतेहैं और हे राजन् इस द्वापर  
की अशान्ति अब थोड़ी रह गई परन्तु हेमवतगण्ड और हरिखंड सवर्षोंतमहैं ॥ १६ ॥

time of death as soon as they are born while others die in the womb. In Sat yug there were hundreds and thousands of wise, strong and energetic people born who produced children. Wealthy ascetics of handsome features were born in that age and produced children. Energetic, virtuous, truthful and handsome archers of noble birth and great prowess were born among kshatriyas. In the Treta age all the Kshatriya kings were emperors. They lived long and were brave warriors, best of archers and firm on duty. In the dwapar age all the classes are energetic, desirous of victory over one another and full of prowess. Men of Kali age are less warlike, wrathful, covetous and untruthful. In that age we born covetous men full of vanity, anger, jealousy, deceit and malice. The dwapar age is about to come to its close, but Hemvathkhind and Harikhand are better than Bharatvarsh in these respects. 16

## ॥ अथ भूमिपर्व ॥

धृतराष्ट्र उवाच ॥ जम्बूद्वीपस्य यः प्रोक्तो यथादिह संजय । विश्वम्भमस्य प्रमुहि  
परिमाणन्तु तत्त्वतः ॥ १ ॥ समुद्रस्य प्रमाणञ्च सम्यगच्छिद्रदर्शनम् । शाकद्वीपञ्च  
मेव हि कुशद्वीपञ्च संजय ॥ २ ॥ शाल्मलिद्वीप तत्त्वेन क्रौञ्चद्वीप तथैव च ।  
ब्राह्म गावल्गणे सर्वे राहो सोमार्कयोस्तथा ॥ ३ ॥ संजय उवाच । राजन् सुव  
ह्वोः द्वीपा धैरिदं भन्तत जगन् । सप्तद्वीपान् प्रवक्ष्यामि चन्द्रादित्यो ग्रहतथा ॥ ४ ॥  
अष्टादश सद्व्याणि योजनानि विद्यास्पते । पटत्रयानि च पूर्णानि विश्वम्भोजम्बुपर्वतः  
॥ ५ ॥ काचणस्य समुद्रस्य विश्वम्भो द्विगुण स्मृतः । नानाजनपदाक्षीर्णो  
मणिचिद्रुमचिप्रतः ॥ ६ ॥ नैकधातुवाचयैश्च पर्वतरूपशोभितः । सिद्धचारणसकीर्ण  
सागर परिमण्डल ॥ ७ ॥ शाकद्वीपञ्च वक्ष्यामि यथावदिह पार्थिव । धृष्ट

### अध्याय ॥ ११ ॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे संजय तुमने जम्बूद्वीप का वर्णन यथार्थ  
कहा अब इसके केन्द्र और परिधि की संख्या को मूलमपेक्ष वर्णन करो और समुद्र की  
संख्या को भी कहो और सप्त दृष्टिगोचर शाकद्वीप, दक्षद्वीप, शाल्मलद्वीप, क्रौञ्चद्वीप  
इन सबको राहु चन्द्रमा और सूर्यसमेत वर्णन करो । ३ । संजय बोले कि हे राजा  
वहुतमे ऐसे ७ द्वीप हैं जिनमे यह युग बड़ा विस्तार युक्त है अब मैं सूर्य चन्द्रमा  
और राहुसमेत सातों द्वीपों का वर्णन करता हूँ जम्बूद्वीप का केन्द्र और दृष्टफल भगारह  
हजार उासी योजन है । ५ । और सारी समुद्र का विस्तार इससे बूना कहा  
है वह समुद्र नानादेशों से युक्त मणि मृगे आदि से शोभित नानाप्रकार की  
धातुओं से विचित्र पर्वतों से शोभायमान सिद्धचारणों से सेवित चारों ओर  
मे मंडलाकार है । ७ । हे राजा अब मैं शाकद्वीप को यथार्थ वर्णन करता हूँ हे

### CHAPTER XI

Bhumi Parva — "Thou hast duly described Jambukhand to me Sanjaya," said Dhritrashtra; "give me now an accurate idea of its dimensions and extent as well as the extent of the ocean, of Shaka dwip, of Kusha dwip of Shalmalidwip of Kraunchadwip, of Rahu of Soma and of the Sun, without leaving anything" "There are O king," replied Sanjaya, "many islands dotted over the earth. I shall however, describe to thee only seven islands besides the moon the sun and the planet Rahu. Jambudwip extends for eighteen thousand and six hundred yojans. The extent of the salt ocean is said to be twice this. That ocean is covered with many kingdoms and is adorned with gems and corals. It is also decked with many mountains covered with metals of various kinds. The ocean is

मेतद्य यथान्याय प्रवतः कुरुतन्दन ॥ ८ ॥ अम्बुद्वीपप्रमाणेन द्विगुण सनराधिप ।  
 विश्वकम्भेण महाराज स्वागरोपि विभागश्च ॥ ९ ॥ क्षीरोदो भरतश्रेष्ठ येन  
 सम्परिवारितः । तत्र पुण्यजनपदस्तत्र न म्रियते जन ॥ १० ॥ कृतपचाहि  
 दुर्भिक्षं क्षमातेजोयुताहि ते । शाकद्वीपस्य सत्तेपो यथावद भरतर्षभ ॥ ११ ॥  
 उक्तपप महाराज किमन्यत् कथयामिते । धृतराष्ट्र उवाच । शाकद्वीपस्य सत्तेपो यथावदिह  
 सञ्जय ॥ १२ ॥ उक्तस्तथा महाप्राज्ञ विस्तर ब्रूहि तत्त्वतः । सञ्जय उवाच । तथैव  
 पर्वता राजन् सप्तात्र मणिभूषिता ॥ १३ ॥ रत्नाकरास्तथा नद्यस्तेषां नामानिमे  
 श्रुणु । अनीविगुणवत् सर्वं तत्र पुण्य जनाधिप ॥ १४ ॥ देवर्षिगन्धर्वयुतः प्रथमो  
 मेव दृश्यते । प्रागायतो महाराज मलयो नाम पर्वतः ॥ १५ ॥ ततामेघा प्रवर्त्तन्ते

कौरवतन्दन तुम भी न्यायपूर्वक मुझसे सुनो वह द्वीप जंगद्वीप के विस्तार से  
 बूना है और समुद्र भी विभाग के अनुसार क्षीरोदनामी है हे राजन् जिस  
 समुद्र से वह द्वीप चारों ओर को घिरा हुआ है उसमें पवित्र देश हैं वहां  
 मनुष्य नहीं मरते हैं तो वहां दुर्भिक्ष कैसे होसका है वह क्षमावान तेजसारी  
 हैं यह तो शाकद्वीप का संक्षेप ठीक २ वर्णन किया अब दूसरी बात क्या  
 सुनना चाहतेहो ॥ ११ ॥ धृतराष्ट्र बोले कि हे महाज्ञानी तुमने इसशाकद्वीप का  
 संक्षेप तो ठीक कहा परंतु उसको व्योरेवार मूल समेत वर्णनकरो संजयबोले  
 कि हे महाराज इसीमकार के सातपर्वत इसमें मणियों से भूषित वर्तमान  
 हैं औरनदियांभी अनेक रत्नोंकी आकारहैं इनके नाम मैं कहताहूं वहां सत्र लोग  
 पवित्र और गुणवान हैं देवता गन्धर्व और ऋषिलोगों से संयुक्त प्रथम पर्वत  
 मेव कहाजाता है और पूर्व पश्चिमका स्पर्श करनेवाला दूसरा मलय पर्वत  
 है उस पर्वतसे सब बादल प्रकटहोकर कर्ममें महत्तहोते हैं ॥ १५ ॥ हेकौरव्य उस्से

circular in form and thickly peopled by siddhas and charans. I shall  
 now speak of Shaladwip Listen to my description Kauravi Its  
 area is twice that of Jamrudwip and the ocean too is twice that  
 island in area. Shaladwip is surrounded on all sides by the ocean.  
 The people inhabiting it are righteous and free from death 10  
 Famine cannot prevail there. The people are forgiving and energetic.  
 This is a brief account of Shaladwip O king, what more do you  
 desire to hear? "You have given in Sinjaya," said Dhritrashtra,  
 "a brief account of Shakadwip, but I want to hear it in detail, wise  
 man" 12 "That island" replied Sinjaya, contains seven mountains  
 decked with jewels and full of the mines of gems and precious stones.  
 There are many rivers in that island Listen to me as I recount  
 their names. Everything there is excellent and charming The

प्रभवति च सर्वदा । तत परणकौरव्य जलधारा महागिरि ॥ १६ ॥ ततो नित्य  
मुपादत्ते वास्य पश्ये जलम् । ततो वर्षे प्रभवति वर्षकाले जनेश्वर ॥ १७ ॥  
उच्चैर्गिरिरैवतको यत्र नित्य प्रतिप्लुता । रेवतीदार नक्षत्र पतनमहकृतो षाधि  
॥ १८ ॥ उत्तरेण तु राजेन्द्र श्यामो नाम महागिरि । नवमेघप्रभः प्रांशु धी  
मानुज्ज्वलविग्रह ॥ १९ ॥ यत श्यामतमपञ्चा प्रजा जनपदेश्वर । धृतराष्ट्र उवाच ।  
तुमहान्संशयोमेव प्रोक्तोऽस्य सत्यतया ॥ २० ॥ प्रजा कथं सृज्यते सम्प्राप्ता श्याम  
तामिह । सत्य उवाच । सर्वेष्वेव महाराज क्षीपेषु कुरुनन्दन ॥ २१ ॥ गौर  
क्ष्णश्च पतगस्तयोर्धर्मान्तरे नृप । श्यामो यस्मात् प्रवृत्तो वै तस्माच्छ्यामोगिरि

पर्व की ओर एक जलधारा नाम वज्र पर्वत है जहाँपर इन्द्र देवता उत्तम जलको  
ग्रहण करता है उसी जलसे वर्षा ऋतु में पृथ्वीपर वर्षा होती है और उससे भी बड़ा  
पर्वत रेवतक है वहाँस्वर्ग में नियास करनेवाला रेवती नक्षत्र सदैव वर्तमान रहता है  
यह ब्रह्माजी की उत्पन्न की हुई रीति है और उत्तर ओरको श्याम नाम वज्र पर्वत  
है वह नवीन यादल के समान प्रकाशवान ऊँचा शोभायमान उज्ज्वलस्वरूप है  
हे राजा उसीसे मनुष्यों ने श्यामकर्ण को पाया है धृतराष्ट्रवाले हे संजय अब तुम ने  
यह मुझसे बड़ा संदेहयुक्त वचन कहा है मृत पुत्र संसार ने कैसे श्यामवर्ण को पाया  
॥ २० ॥ संजय बोले कि हे राजा सब क्षीपोंमें गौरा नररूप जीव और काला नारायण  
रूप ईश्वर पक्षी है उन दोनों वर्णों में जिस हेतु से नारायण की कलारूप श्यामवर्ण  
प्रकट हुआ इसी से उसका नाम श्यामगिरि विख्यात हुआ और उसमें निवास  
करने व शाक भोजन करने से मनुष्यों ने भी श्यामवर्ण को पाया है कौर-

first of those mountains is Mern, the second is Malaya, stretching towards the east, on which clouds are produced and disperse on all sides. The next mountain is named Jaldhara from which Indra daily takes water of the best quality 16 It is from that water that we get showers in the rainy season Next comes the high mountain known as Ravatak over which permanently shines Revati from the sky by the order of Brahma himself On the north of these is the huge mountain called Shyam which possesses the splendour of the newly risen clouds, and is very high, beautiful and of bright body. The colour of these mountains is dark and therefore the people living there are of dark complexion " " A great doubt " said Dhritrashtra, " rises in my mind from what thou has said, Sanjaya. What causes the complexion of the people there to be dark " 20 " The people " said Sanjaya, " of a place are either fair or dark or a mixed breed of the two, and it is from the people of dark colour inhabiting there that

स्मृतः ॥ २२ ॥ ततः परं कौरवेन्द्रदुर्गशैलो महोदयः । केशर केशरयुतो यनो  
 वातः प्रवर्त्तते ॥ २३ ॥ तेषां योजनविभक्तम्भो द्विगुणः प्रविभागशः । वर्षाणि  
 तेषु कौरव्य सत्तेजानि मनोपिभिः ॥ २४ ॥ महामेरुमहाकाशो जलद कुमुदोत्तरः ।  
 जलधारो महाराज सुकुमार इति स्मृत ॥ २५ ॥ रेवतस्य तु कौमारः श्यामस्य  
 मणिकाञ्चनः । केशरस्याथ मोदाकी परेणतुमहापुमान् ॥ २६ ॥ पारदार्यं तु कौरव्य  
 दैर्घ्यं ह्रस्वत्वमेव च । जम्बूद्वीपेन सहजातस्तस्य मध्ये महादुमः ॥ २७ ॥ शाको  
 नाम महाराज प्रजा तस्य सदानुगा । तत्र पुण्या जनपदा पृथ्यते तत्र शंकरः ॥ २८ ॥  
 तत्र गच्छन्ति सिद्धाश्च चारणा दैवतानि च । धार्मिकाश्च प्रजा राजश्च वारोतीव  
 भारत ॥ २९ ॥ वर्षां स्वधर्मानराता न च स्तेनेन दृश्यते । दीर्घायुषोमहाराज  
 जरामृत्युविचर्जिताः ॥ ३० ॥ प्रजास्तत्र विचर्चन्ते वर्षास्थिव समुद्रगाः । नद्यः

वेन्द्रजुससे आगे बढ़कर महोदय दुर्गशैल केशरी और केशरयुत पर्वत है  
 उसी से वायु उत्पन्न होती है उन दोनोंके बिस्तार की संख्या क्रम से एकसे दूसरे  
 की दूनी है हे राजा इनके मध्यवर्ती ज्ञानियों ने यह सात खण्ड दर्शन कियेहैं जिनके  
 महामेरु, महाकाश, जलद, कुमुद, उत्तर, जनधार, सुकुमार यह सातनाम दर्शन  
 किये हैं, रेवत पहाड़ का खंड कौमार और श्याम गिरि का खण्ड मणिकांचन है  
 । २५ । कैदार पर्वत का खण्ड मोदाकी है उससे परे महापुमान् है जो छोटे बड़ों  
 को घेरहुए है उसद्वीप में एक शकनाम वड़ा दृढ जंबूद्वीप के जम्बू वृक्षकी समान  
 है और सब प्रजा उसकी सेवामें तत्परहैं इस द्वीपमें मूक्ष्म देहधारी होने के कारण  
 सब वर्ण अपने२ धर्मों में प्रीति रखने वाले वही अवस्था वाले जरा मरण से रहित हैं  
 जहां चोरनहीं दिखाई देने हैं वहां प्रजा लोगों की ऐसे दृष्टि होती है जैसे कि वर्षा

the mountains are called black. After this come the large impregnable mountains Keshu and Ke-har over which fragrant breezes constantly blow. Each succeeding one of these is double the size of the former one. That island is divided into seven parts, namely Mahameru, Mahakash, Jalad, Kumud, Uttar, Jaldhar and Sukumar. The portion containing Revat mountains, is called Kaumar and that containing the black mountains, is Manilanchan. The portion containing kedhar hills is called Madaki. Beyond this is Mahapuman which surrounds many large and small ones. That island contains a large tree known as Shak which is as large as the Jamru tree of Jamrukhand. The people of that country adore it. Possessing divine bodies, the people of all classes there are lovers of virtue, long lived and free from old age and death. There are not found there.

पुण्यजलास्तत्र गङ्गा च बहुधा मता ॥ ३१ ॥ सुकुमारी कुमारी शीताशीवेणिका तथा ।  
महानदी च कौरव्य तथा मणज्जलानदी ॥ ३२ ॥ चक्षुर्धातका चैव नदा भरत  
सत्तम । तत्र प्रवृत्ता पुण्यादा नद्य कुरुलोहह ॥ ३३ ॥ सहस्रणा शतान्यपि यतो  
वर्षति यासच । नतासा नामधेयानि परिमाण तथैवच ॥ ३४ ॥ शम्पनपरि  
सख्यातु पुण्यास्ता हि सरिद्धा । तत्र पुण्या जमगदाश्चत्यागे लाङ्गसम्भता ॥ ३५ ॥  
मगाध मशकाश्चैव मानसा मन्दगा तथा । मगा ब्राह्मणभूयिष्ठा स्वर्गर्मानरतानृप  
॥ ३६ ॥ मशकेषु तु राजन्या धार्मिका सर्वकामदा । मानसाध महाराज वैश्यध  
मौणजीविन ॥ ३७ ॥ सर्वकामसमायुक्ता शूरा धर्मार्थनिश्चिता । शूरास्तु मन्दगा  
निरय पुरुषार्थशीलिन ॥ ३८ ॥ न तत्र राजा राजेन्द्र न दण्डो न च दण्डिका ।

ऋतु में नदियों की छादे होती है । ३० । वहां नदियां पवित्र जलवाली हैं और  
बहुत रूपधारी गंगा भी उर्ध्वमान हैं उनके सिवाय सुकुमारी, कुमारी, शीतासी, वेणि  
का, महानदी मणज्जलानदी, चक्षुर्वर्धनका नदी इत्यादि लाखों नदियां पवित्र जल  
वाली हैं जहांसे इन्द्र जलको लेकर वर्षा करता है उनके नाम विस्तार दैव्य इत्यादि  
संख्याकरने के योग्य नहीं हैं वह उद्यम नदियां पवित्रता और पुण्यकी बढ़ानेवाली  
हैं वहां सनलोकों में प्रतिष्ठित पवित्र चारदेश हैं वह मृग, मशक मानस, मन्दग नाम  
से प्रसिद्ध हैं । ३१ । मृगनाम देश में बहुतसे ऐसे ब्राह्मण हैं जो अपने कमों में सुदैव  
पट्ट हैं और मशक देश में ऐसे क्षत्री लोग हैं जो धर्मचारी और सब मनोरथों के देने  
वाले हैं मानस देशवासी वैश्य धर्म से निर्वाह करने वाले हैं मन्दग देश के रहने वाले  
शूद्र लोग धर्मके अभ्यासी हैं वे राजेन्द्र उन देशों में न राजा हैं न दण्ड हैं न दण्डधारी  
हाकिम हैं वहां समजालोग ही धर्मज्ञ होकर अपने धर्मों से परस्पर की रक्षा करते हैं

and the people grow like rivers in the rains 30 The rivers there have  
pure water and Ganga too of many forms flows there Besides these  
there flow the Sukumari, the Kumari, the Sitasi, the Vemba, the  
Mahanadi, the Manjaly, the Chakshubardhanaka and thousands others  
of pure water from which Indra draws water to pour as rain It is  
beyond my power to mention their names The rivers are sin cleans-  
ing and givers of purity That land contains four provinces, known  
as Mrig, Mashak, Manas and Mandag Mrig is inhabited by numbers  
of Brahmans firm on their duty, Mashak is inhabited by Kshatriyas  
that are virtuous and generous, the inhabitants of Manas are Vaishyas  
living by trade and those of Mandag are dutiful Shudras Those  
countries have neither kings nor punishment nor wrongdoers for the  
people know their duties and are firm on them We know only this



स्वधर्मैषैव धर्मव्रतास्ते रक्षन्ति परस्परम् ॥ ३९ ॥ एतावदेव शक्यं तु तत्र द्वीपे प्रमापितुम् । एतदेव च ध्यातव्यं शाकद्वीपे महै जाति ॥ ४० ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भूमिपर्वणि शाकद्वीपपर्वणि

एकादशाऽध्यायः ॥ ११ ॥

सञ्जय उवाच ॥ उत्तरेषु च कौरव्य द्वीपेषु श्रूयते कथा । एव तत्र महाराज द्रुपतश्च निबोधमे ॥ १ ॥ घृततोयः समुद्रोत्र दाघमण्डोदको परः । सुरोदः सागरश्चैव तथा यो जलसागरः । २ ॥ परस्परं द्विगुणः सर्वे द्वीपा नराधिपः । पर्वताश्च महाराज समुद्रैः परिवारिताः ॥ ३ ॥ गौरस्तु मध्यमे द्वीपे गिर्मिर्मान शिलो महान् । पर्वत पथिमे कृष्णो नारायणसखो नृप ॥ ४ ॥ तत्र रत्नानि दिव्यानि स्वयं रक्षति केशवः । प्रसन्न-दद्यामवत्तत्र प्रजाना व्यदधत् सुखम् ॥ ५ ॥ कुशस्तव कुशद्वीपे मध्ये जनपदैः सह ।

उस वड़े प्रकाशवान् शाकद्वीप में इतनाही कह सक्ते हैं और इतनाही सुनने के योग्य है ॥ ४० ॥

अध्याय ॥ १२ ॥

संजय बोले कि हे महाराज वहां पूर्वकहे हुये उत्तर द्वीपोंमें जिस प्रकारसे कथा सुनी जाती है उसको तुम मुझसे सुनो, कि वहां एकतो घृतका समुद्र है दूसरा दधि का तीसरा मदिरा का समुद्र, चौथा मिष्टजलका समुद्र है हे राजा धृतराष्ट्र, सब द्वीप और पहाड़ परस्परमें दूने-२ समुद्रोंसे घिरेहुये हैं और मध्यवर्ती द्वीपमें गौर शिलारूप पर्वत है और पिछले द्वीपमें कृष्ण नाम पर्वत नारायणका सखारूप है वहां आप केशवमूर्ति दिव्यरत्नों की रक्षाकरते हैं और प्रसन्न होकर प्रजालोगोंको सुख देते हैं ५ और कुशद्वीपमें कुशस्तंभ देशोंसे युक्त है और शाल्मलद्वीपमें शाल्मली वृक्ष पूजनकिया

much about the island of Shaka and it is sufficient for you to hear." 40

## CHAPTER XII

"Hear the account of the northern islands, mentioned above," said Sanjaya to Dhritrashtra, One of the seas there has clarified butter for water, another contains curds of milk, the third is full of wine and the fourth contains sweet water. All these islands and mountains are surrounded by seas that are double their size. In the middlemost island is a mountain of red stone and in the next island is the black mountain which is a favourite seat of Narayan who protects the divine jewels there in person and is pleased to deal happiness to his dependents. 5 The Kusha islands consist of the

सम्पूज्य ते शाहमलिश्च द्वीपेशाहमलि के रूप ॥ ६ ॥ कौञ्चद्वीपे महाक्रौञ्चो गिरिस्तत्र  
याकरः । सम्पूज्यते महाराज चातुर्धर्षेण नित्यदा ॥ ७ ॥ गोमन्त पर्वतो गजदं सुम-  
हान् सर्वधातुकः । यत्र नित्यं निवसति श्रीमान् कमललोचन ॥ ८ ॥ मोक्षिभिः समतो  
नित्यं प्रभुर्नारायणो हरिः । कुशद्वीपे तु गजेन्द्र पर्वतो विदुमेदिचतः ॥ ९ ॥ इत्यतः समाप्तम्  
दुर्धर्षो द्वितीयो हेमपर्वतः । धृतिमन्नाम कौरव्य तृतीयः कुमुदो गिरिः ॥ १० ॥ चतुर्थ  
पुष्पवनाम पञ्चमस्तु कुशेश्वरः । षष्ठो हरि गिरिर्नाम षष्ठेते पर्वतात्तमा ॥ ११ ॥ तेषां  
मन्तर विष्कम्भो द्विगुणः सर्वमागच्छ । औद्भिद प्रथम वर्षं द्वितीयं त्रिगुणं मण्डलम् १२  
तृतीयं सुरधाकारं चतुर्थं कम्बलं स्मृतम् । धृतिमत्पञ्चमवर्षं षष्ठ्यवर्षं प्रभाकरम् ॥ १३ ॥ सप्तमं  
कापिलं वर्षं अष्टमे वर्षे लम्बम् । एतेषु देवगन्धर्वा प्रजाश्च जगतीश्वर ॥ १४ ॥

जाता है और कौञ्चद्वीपमें रत्न समूहोंका भंडारमहाक्रौञ्च पर्वतको सदैव सबवर्षा पूजते  
हैं हेराजन् उसमें सब धातुओं का रखनेवाला बहुत बड़ा पर्वत गोमन्त नाम है जिसके  
ऊपर श्रीमान् कमललोचन विष्णु भगवान् सदैव निवास करते हैं वह प्रभु नारायण  
हरि सदैव मुक्त पुरुषोंसे मिले हुये रहते हैं और कुशद्वीप ही में एक पर्वत मुख्य ७  
द्वीपों से आच्छादित है वह दुर्धर्ष पर्वत स्वनाम नामसे प्रसिद्ध है इसमें दूसरा हेम पर्वत  
है तीसरा धृतिमान् कुमुद नाम गिरि है । १० । चौथा पुष्पवान नाम है पाँचवां  
कुशेश्वर नाम है छठा हरिगिरि नाम है यह छत्तावें उच्च पर्वत है इनका मध्यवर्ष  
विस्तार पूर्वक विभाग के अनुसार द्वा है प्रथम खण्ड औद्भिद है दूसरा वैष्णु  
मण्डल है तीसरा रथाकार है, चौथा कंबल है पाँचवां धृतिमत् खंड है छठा प्रभाकर  
नाम खण्ड है सातवां कापिल खण्ड है यह सातों पर्वत खण्डों के विभाग करने

province of kushastambh and Shalmali tree is adored in Shalmali-  
dwip And kraunch mountains, the treasury of all sorts of jewels are  
adored by all classes of people in the kraunch island 7 The islands  
contains the huge mountain called Gomant, containing all sorts of  
metals, which is the permanent residing place of lotus eyed Vishnu  
Lord, Narayan or Hari who mingles with emancipated Leings In  
Kushdwip, there is a mountain, covered with large trees, bearing  
the same name as the island. Next to it are Hem mountains and  
the third is the glorious hill called humud 10 The fourth is known  
as Pushpvan, the fifth is kusheshaya and the sixth is Harigira.  
All these six mountains are the best The intervening space between  
these six increases in the ratio of one to two as they proceed further  
north. The first portion is Audbhid; the second is Venumandal, the  
third is Rathakar; the fifth is Kambal, the fourth is Dhritimat-  
khand, the sixth is Prabhakar and the seventh is Kapilkhand.

विहरन्ते रमन्ते च न तेषु म्रियते जन । न तेषु दृश्यन् सन्ति म्लेच्छजात्योपि  
 वा नृप ॥ १५ ॥ गौरप्रयोजनं सर्वः सुकुमारश्च पार्थिव । अथशिष्टेषु सर्वेषु  
 वक्ष्याम मनुजेश्वर ॥ १६ ॥ यथाश्रुतं महाराज तदन्वयप्रमना शृणु । क्रौञ्चद्वीपे  
 महाराज क्रौञ्च नाम महागरिः ॥ १७ ॥ क्रौञ्चात् परोवायनको वामनादन्धका  
 रक । अन्धकारात् परोराजन् मैनाकः पर्वतोत्तमः ॥ १८ ॥ मैनाकात् पृथ्वाराजन्  
 गोविन्दो गगरीरुत्तमः । गोविन्दात् परतो राजन् निविडो नाम पर्वतः ॥ १९ ॥  
 परस्तु द्विगुणस्तेषां विश्वम्भा वंशवर्धन । देशास्तत्र प्रवक्ष्यामि तभ्यं निगदत,  
 शृणु ॥ २० ॥ क्रौञ्चस्यकुशलो देशो वामनस्य मनोनुग । मनोनुगात् परश्चोष्णो  
 देशः कुक्कुलोद्भवः ॥ २१ ॥ उष्णात् पर प्रावरकः प्राचारादन्धकारक । अन्धका  
 रकदेशस्तुमुनिदेशः पर स्मृत ॥ २२ ॥ मुनिदेशात् परश्चैव प्रोच्यते दुन्दुभि

वाले हैं इनखंडों में देवता गंधर्व और प्रजालोग विहार पूर्वक आनन्द करते हैं उन  
 में मनुष्य नहीं मरता न चोर म्लेच्छ जाति आदि के लोग रहते हैं । १५ । और सय  
 प्रजा गौर वर्ण सुकुमार होते हैं इनके सिवाय शेषद्वीपों काभी तुमसे वर्णन करता हूं  
 इसको आप सावधानीसे सुनो कि द्वीपमें क्रौञ्चनाम वंशपर्वत है और क्रौञ्च से परे  
 वामन है वामनसे परे अन्धकारक है अन्धकारक से परे मैनाकनाम उत्तम पर्वत है और  
 मैनाकसे परे गोविन्दनाम उत्तम पर्वत है गोविन्दसे परे निविड नाम श्रेष्ठ पर्वत है  
 इनकाही विस्तारद्विगुणित है, इनके देशोंकाभी वर्णन करता हूं उसको तुम सुनो  
 । २० । क्रौञ्चद्वीपका देशकुशल है वामनका देश मनोनुग है, मनोनुगसे परे उष्ण  
 देश है उष्णसे परे प्रावरक है प्रावरकसे परे अन्धकारक देश है अन्धकारकसे परे मुनि  
 देश है मुनि देशसे परे दुन्दुभी स्थान बोला जाता है, है राजन् यह सिद्धचारणों का

These seven provinces are divided by mountains and are inhabited  
 by gods, gandharvas and other happy people. They are free from  
 death, thieves and mlecchas 15 The people are of white complexion  
 and delicate I shall now give an account of other islands as I have  
 heard Listen attentively, King In the Kraunch island, O King  
 there is a large mountain of the same name Next to Kraunch is,  
 Vamanak and then comes Andhakarak Next to Andhkar, O King,  
 is Menak the best of mountains Next to Menak is Govind and after  
 the latter, comes the mountain known as Nivida The distance between  
 these mountains increases in the proportion of one to two I shall  
 now tell thee of the countries that lie there Listen to me as I  
 speak of them. 20 The country near Kraunch is called Kushal,  
 while that near Vaman is Manonug Next to Manonug is Ushna;  
 after Ushna comes Pravara and after Pravara is Andhakarak The  
 country next to Andhkar is Munidesh and after Munidesha comes  
 Dundubhistan full of Sadhas and Charans. The people are of white

स्वनः । सिद्धचारणसंकीर्णो गौरप्रायो जनाधिप ॥ २३ ॥ एते देशा महाराज  
 देवगंधर्वसेविताः । पुष्करे पुष्करोत्तम पर्वतो मणिरत्नवान् ॥ २४ ॥ तत्र नित्यं प्रभवति  
 स्वयं देवः प्रजापतिः । तं पठ्युपासते नित्यं देवाः सर्वे महर्षयः ॥ २५ ॥ वाग्  
 भिमनोनुकूलाभः पूजयन्तो जनाधिप । जम्बूद्वीपात् प्रवर्तन्ते रत्नानि विविधान्युत  
 ॥ २६ ॥ द्वीपेषु तेषु सर्वेषु प्रजाणां कुलसत्तम । ब्रह्मचर्येण सत्येन प्रजानां हि  
 दमेनच ॥ २७ ॥ आरोग्यायुः प्रमाणाभ्यां द्विगुणं द्विगुणं ततः । एको जनपदो  
 राजन् द्वीपेभ्येतत् भारत । उक्ता जनपदा येषु धर्मश्रेष्ठः प्रदृश्यते ॥ २८ ॥ ईश्वरो  
 दृषदमुच्यते स्वयमेव प्रजापतिः । द्वीपावेतान् महाराज रक्षतिष्ठति नित्यदा  
 ॥ २९ ॥ स राजा स शिष्यो राजन् स पिता प्रपितामहः । गोपायति नरश्रेष्ठप्रजाः  
 सज्जडपिंडताः ॥ ३० ॥ भोजनञ्चात्र कौरव्यप्रजाः स्वयमुपस्थितम् । सिद्धमेव

निरासस्यान बहुत गोरे वर्षावाले मनुष्यों से पूरित है यह सब देश देवगंधर्वों के  
 निवास और विहार स्थान हैं पुष्करद्वीप में पुष्कर नाम पर्वत मणिरत्नों का रखने-  
 वाला है । २४ । उसमें आप देवदेव ब्रह्माजी निवास करते हैं और हेराजन् उन ब्रह्मा  
 जी को सब देवता और महर्षि योगमनसे पूजन करते हुये सदैव चारों ओरसे उपा-  
 सना करते हैं उन सब द्वीपों में प्रजाओं के अनेक प्रकारके रत्न जंबूद्वीपसे आते हैं  
 ब्रह्मचर्य सत्यता और प्रजाओं की शान्ति से नीरोगता पूर्वक एक से एक द्वीपकी  
 अवस्था दूनीर है इन सब द्वीपोंमें केवल एकही देश है उसी देश में सब देश कहे जाते  
 हैं वह एक धर्मरूप देश दृष्ट पड़ता है अर्थात् धर्म फल भोगने के लिये छत्रद्वीप है और  
 जंबूद्वीप कर्म और योगकी भूमि है हेराजन् आप प्रजापति ईश्वर दण्ड धारण करके  
 इन द्वीपों की रक्षा के लिये नियत रहता है वही राजा है वही शिव है वही पिता पितामह  
 आदि है । ३० । वही सब जड़ चैतन्य प्रजाओं की रक्षा करता है हे कौरव यहां के

colour. All these places are inhabited by gods and Gandharvas. In  
 Pushkar is a mountain, named Pushkar which abounds in jewels  
 and gems. There always the divine Prajapati is adored by the gods  
 and great rishis. The gems of Jamvudwip are used there. In all  
 these islands the proportion of celibacy, truth, and self control as  
 well as the health and longevity of the inhabitants, is double as the  
 place is more and more remote towards north. All these islands  
 together make up one country as one religion is professed throughout.  
 The supreme Prajapati himself dwells there, dealing punishment and  
 protecting those islands. He is the king, the source of bliss, the  
 father, the grandfather ( 30 ) and protector of all moveables and im-  
 moveables. The inhabitants of these places have bowed foot to

महाबाहो न हि भुज्जति नित्यदा ॥ ३१ ॥ ततः परं समानाम् दृश्यते लोकैस्त्रि-  
 तः । चतुरस्रं महाराज त्रयास्त्रिंशत् मण्डलम् ॥ ३२ ॥ तत्र तिष्ठन्ति कौरव्यचत्वारो  
 लोकसम्मताः । दिग्गजाः भूतश्रेष्ठ वामनैरावतादयः ॥ ३३ ॥ सुषतीकाददा  
 राजन् प्रसिद्धकरटासुप्त । तस्याहं पारमाणन्तु न सपथातुमिहात्सह ॥ ३४ ॥  
 असह्यातः स नियं हि तिर्यगूर्ध्वं भवस्तथा । तत्र वै चायवो वांति दिग्भ्यः सं-  
 घाभ्य एवाहि ॥ ३५ ॥ असम्बद्धा महाराज तन्निगृह्णन्ति ते गजाः । पुष्करै-  
 पद्मसङ्काशैर्ध्रुवैः सद्भिर्महाप्रभैः ॥ ३६ ॥ शतधा पुनरेवाशु ते तान् सुधात नित्यशः ।  
 भवसद्भिर्ध्रुव्यमानास्तु दिग्गजैरेहि मारुताः ॥ ३७ ॥ आगच्छन्ति महाप्राजततस्तिष्ठन्ति  
 वै प्रजाः । धृतराष्ट्र उवाच । परो वै विस्तरोऽयं स्थला सत्रयः कीर्तितः ॥ ३८ ॥  
 दर्शितं द्वीपसंस्थानमुत्तरं गृहि सत्रय । सत्रय उवाच । उक्ता द्वीपा महाराजग्रहं  
 वै शृणुतः पतः ॥ ३९ ॥ स्थानानां कौरवश्रेष्ठ यावदेव प्रमाणतः । परिमण्डलोमहा

मजालोग स्वतः सिद्ध प्राप्तहुये भोजनको खाते हैं, इसके पीछे समानाम लोकोंकी नि-  
 वास भूमि, दृष्ट पड़ती है हे राजन् वह चतुर्मुख कमलरूप है और उसका मंडल तैंतीस  
 हजार योजन है हे राजेन्द्र वहां लोकोंके प्रधान चारदिग्गज वामन, और ऐरावत नाम  
 आदिसे नियत हैं और इसीप्रकार तीसरा । ३५ । प्रतीक है चौथा अभिन्नकरट है  
 उसका प्रमाण मैं वर्णन नहीं करसक्ता वह गजसमूह सदैव तिरछा ऊंचानीचा है इसमें  
 गणनासे बाहर है । ३६ । वहां पर सब ओरकी वायु चनती है वही गज उनको  
 वही प्रकाशवान विलेकमलों की समान अयनी मंडोसे पकड़ते हैं और पकड़कर शीघ्रही  
 सो भागकरके छोड़ते हैं वही गजोंके श्वासोंकी छोड़ी हुई वायु यहां आती है उसीसे सब  
 मजालोग जीवते रहते हैं धृतराष्ट्रवाले हे संजय यह तुमने बहुतबड़ा विस्तार वर्णन किया  
 और द्वीपों काभी रूप दिरगाया अब हे संजय इनके विशेष और २ जो भाग है, उन  
 का वर्णन करो संजय वाले हे राजन् मैंने द्वीपोंका वर्णन किया अब ग्रहोंका वर्णन

eat without undergoing any trouble for cooking it. After these  
 regions comes the place known as Sama which, starlike, has four  
 corners and thirty three Mandals. There dwell the four diggnjos  
 [elephants supporting the four quarters of the globe] adored by  
 all. They are named Vaman, Airavat, Pratik and Prabhunakarati. I  
 can not give you an idea of their size as the length, breadth and thick-  
 ness of their bodies are as yet uncertain. 35. The winds blow  
 there irregularly from all sides and being caught by those elephants in  
 their trunks of the colour of lotuses and of great splendour, are let  
 loose again in parts towards us and keep us alive." On hearing  
 this, Dhritishtra said. "You have given Sanjaya an account of  
 the islands in detail, now tell me about others that remain." I  
 have given you an account of islands," said Sanjaya, "now hear from

राज स्वर्गनिः श्रूयते ब्रह्मः ॥ ४० ॥ योजनानां सहस्राणि विष्कम्भोद्वादाशस्य  
 पै । परंपराहं पृथ्विशास्त्रिपुलत्वेन चानघ ॥ ४१ ॥ पृथिवीः शतायस्ययुग्माः  
 पौराणिकास्तथा । चन्द्रमानु सहस्राणि राजश्रेकादशः स्मृतः ॥ ४२ ॥ विष्कम्भेण  
 कुरुश्रेष्ठ त्रयस्त्रिंशत् मण्डलम् । एकैः नपांष्ट्रिविष्कम्भे शतैरदमेमहात्मनः ॥ ४३ ॥  
 सूर्यस्तयष्टौ सहस्राणि ते चान्ये कुरुनन्दन । विष्कम्भेण ततो राजन् मण्डलान्त्रि-  
 शता समम् ॥ ४४ ॥ अष्टपञ्चाशत् राजन् विपुलत्वेन चानघ । श्रूयते परमोदारः  
 पतंगोसौ विभावसुः ॥ ४५ ॥ एतत् प्रमाणमकस्य निर्दिष्टमिह मरग । संराहुश्चादयत्येती  
 यथ काल महत्तया ॥ ४६ ॥ चन्द्रादित्यौ महाराज संक्षेपोयमुदाहृतः । इत्येतत्ते  
 महाराज पृच्छतः शास्त्रक्षेत्री ॥ ४७ ॥ सर्वमकं यथातथं तस्माच्छ्रममवाप्नुहि ।  
 यथोद्दिष्टं मया प्रोक्तं निर्माणमिदं जगत् ॥ ४८ ॥ तस्मादाश्वत्थ कौरव्य पुत्रं दुष्टोघर्षं

मूलसमेत मुनो । ४० । हे कौरवेन्द्र राहुग्रह गोल मुना जाता है उसका व्यास निश्चय  
 करके बारह हजार योजन है और मंडल छत्तीस हजार योजन है और बुद्धिमान पौराणिकों  
 ने उसको मुट्ठाई में छह हजार योजन से अधिक कहा है और चन्द्रमा का व्यास ग्यारह  
 हजार योजन कहा है उसका मंडल तैंतीस हजार योजन है और मुट्ठाई उससे योजन से  
 अधिक है और हे राजन् सूर्यका व्यास दश हजार योजन है परन्तु मुट्ठाई में तेरह सौ  
 योजन से अधिक है इसी हेतु से इकतीस हजार तीन सौ योजनका मण्डल है यह क्षीग्र  
 गामी सूर्य बड़े उदार मुने जाते हैं हे राजन् यह सूर्यका ममाण कहा और बहाराहु अपने  
 बड़े देह से समय पाकर दोनों सूर्य चन्द्रमाओं को ढक लेता है यही संक्षेप से वर्णन किया  
 है महाराज धृतराष्ट्र मैंने शास्त्ररूप दृष्टि से यह सब वृत्तान्त यथावस्थित कहा यह  
 जगत् समेत मैंने जैसा गुरु से मुना है उसके अनुसार तुम से वर्णन किया इसे आप

me, king, about heavenly bodies. 40. We hear that Rahu is globular in form. Its diameter is twelve thousand yojans and the circular measurement is thirtysix thousand yojans. Its thickness as given by the writers of Purans, is more than six thousand yojans. The diameter of the moon is said to be eleven thousand yojans, its circumference is thirty three and its thickness more than fiftynine yojans. The diameter of the sun is ten thousand yojans; but the thickness being more than thirteen hundred yojans, its circumference is, thirty one thousand and three hundred yojans. We hear that this fast-going Sun is very generous. I have given you an account of the dimensions of the Sun who like the moon, is sometimes hidden by the huge body of Rahu. I have told you all as I have read, in books and heard from my teacher. From this you

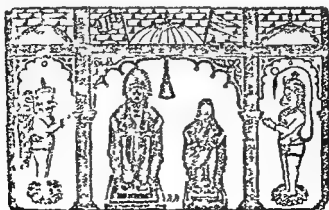
प्रति । धृत्वेदः भग्नश्चेष्ट भूमिपर्व मनोनुगम् ॥ ४९ ॥ श्रीमान् मयाति राजभ्यः  
सिद्धार्थं साधुसम्मत । आयुर्वलञ्च कीर्तिश्च तस्य तेजश्च चर्द्धते ॥ ५० ॥ यः  
धृणोति महीपाल पर्वणीद् यतव्रत । प्रीयन्ते पितरस्तस्य तथैव च पितामहाः  
॥ ५१ ॥ इदन्तु भारत वयं यत्र वर्णमहे वयम् । पूर्वैः प्रवर्तितं पुण्यं तत्  
सर्वं धुनवानास ॥ ५२ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भूमिपर्वणि उच्चरद्दीपादिसंस्थानवर्णने  
द्वादशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

## ॥ समाप्तश्च भूमिपर्व ॥

शान्तीको पाओ इन अनेक कारणों से हे राजन् तुम अपने पुत्र दुर्योधनमें शान्तीको  
पाओ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ इसचिन्तरोचक भूमिपर्व को जो राजा सुनताहै वह धन  
वानहो अभीष्टको प्राप्तकरके साधुओं में प्रतिष्ठाको पाता है और उनकी, आयु वल-  
कीर्ति तेज वृद्धि बढ़ती है और श्रद्धापूर्वक नियम से जो राजा सुनेगा उसके पिता  
पितामहादि तृप्तहोते हैं यह भरतखंड जिसमें हम सब वर्तमान हैं यह पूर्वजोंसे बड़ा  
पुण्यकृ वढ़ाने वाला नियत कियागया है इस सचको तुमने सुनाहै ॥ ५० ॥

may be pleased to obtain peace of mind and may now induce your son Duryodhan, by giving reasons, to become peaceful. Whatever Kshatrya will hear this charming account of the world, will get wealth, respect among righteous men, longevity, power, fame, glory and satisfaction of desires. Whoever hears this portion attentively with observances, gratifies his forefathers. You have heard an account of Bharatvarsh where we live and which has ever been praised by our predecessors, ' 52 "



## अथ भगवद्गीतापर्व ॥

वैशम्पयन उवाच । अथ गावत्सगणिविद्वान् संयुगादेत्य भारत । प्रत्यक्षदर्शी सर्वस्य भूतभग्यभावाभ्यावित् ॥ १ ॥ ध्यायते धृतराष्ट्र्य सहसोत्पत्य दुःखितः । जाचष्ट निहतं भीष्मं भरतानां पितामहम् ॥ २ ॥ सञ्जय उवाच । सञ्जयोऽहं महाराजनमस्ते भरतर्षभ । हतो भीष्मः शान्तनवा भरतानां पितामहः ॥ ३ ॥ ककुदं सर्वयोधानां घाम सर्वघनुष्मताम् । शतल्पगतः सोऽथ शेते कुरुपतामहः ॥ ४ ॥ यस्य धीर्यं समाश्रित्यशूतं पुत्रस्तवाकरोत् । स शेते निहतो राजन् संख्ये भीष्मः शिखाण्डना ॥ ५ ॥ यः सध्वान् पृथिवीपालान् समवेतान् महामृधे । तज्गायैकरथेनैव काशपुर्वी महारथः ॥ ६ ॥ जामदग्न्यं रणे रामं योयुधदपसम्पन्नः त हतो जामदग्नेपन सहतोऽथ शिखाण्डना ॥ ७ ॥ महेन्द्रसदृशः शौर्ये रथैर्येव

## अध्याय ॥ १३ ॥

वैशम्पायनजी बोले हे भरतवंशी इसके पीछे सबका वृत्तान्त प्रत्यक्ष देखने वाले भूतभाविष्य वर्तमान के ज्ञाता बुद्धिमान संजय ने युद्ध भूमि से आकर आकस्मिक ध्यान करनेवाले धृतराष्ट्र के समीप जाकर भरतवंशियों के पितामह का महायास होना वर्णन किया जो सब युद्धकर्त्ताओं में ध्वजारूप और धनुर्धारियों में महातीव्र हैं अब वह कौरवों के पितामह शर शय्यापर सो रहे हैं जिनके पराक्रम के आश्रय को पाकर तेरेपुत्र ने पांडवों से जुवासेला वही भीष्मजी शिखण्डीसे विदीर्ण घायल होकर शरशय्यापर विराजे हैं । ५ । नित्तमहारथी ने काशीपुरी में एकही रथसे महाभारी युद्धमें सब मिले हुये राजाओंको विजय किया और वही महाभयकारी युद्धमें जमदग्नि जी के पुत्र परशुरामजीसे लड़े और उनके हाथसे नहीं मारेगये अबवही

## CHAPTER XIII

Vaishampayan said that having seen with his own eyes all that had passed in the field of battle, wise Sanjaya who knew of present, past and future, returned to Dhritrashtra who was plunged in thought and informed him that Bhishm the grandfather was fatally wounded in battle. 'The foremost of all warriors and archers, Bhishm the grand father of the Kaurvas,' said Sanjaya to king Dhritrashtra "is sleeping on the bed of arrows. He on whose strength thy son engaged in the gambling match with the Pandvas, is lying wounded by the arrows of Shikhandi. 5. The brave warrior who alone conquered a large assembly of kings at Kashi and whom Parashuram the son of Jamadgani could not slay in a duel, has slain by Shikhandi. He



हिमवानिव । समुद्र इव गाम्भीर्ये सहिष्णुत्वे घरासमः ॥ ८ ॥ शरदंष्ट्रो धनुर्व  
 क्र खड्गाजह्वो दुरासदः । नरसिंहः ।पना तेद्य पाचाद्व्येन निपातितः ॥ ९ ॥  
 पांडवानां महासैन्यं यदष्टाद्यतमाह्वे । प्रावेपत भयाद्विग्रं सिंहं दृष्ट्व गोगणः १०  
 परिरक्ष्य स सेनां ते दशरात्र मनीकहा । जगामास्तामवादित्यः कृत्वा कर्म सुदुष्क-  
 रम् ॥ ११ ॥ यः स शक्र इवाक्षोभ्यो वर्षन् घाणन् सहस्रशः । जघान युध  
 योधानामर्धुदं दशभिर्दिनैः ॥ १२ ॥ स शेते निहतो भूमौ घातभग्नवदुमः । तवदु-  
 मान्मते राजन् यथा नार्हः स भारतः ॥ १३ ॥

इति महाभारते भीष्मपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि भीष्ममृत्युश्रवणे

त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

भीष्मजी शिखंडी के हाथ से मारे गये हैं । ७ । जो शूरतामें महा इन्द्र के समान और  
 स्थिरचित्तता में हिमाचल पर्वत के समान और गंभीरता में समुद्रके सदा और जमा  
 में पृथ्वी के तुल्य हैं अत्रवह घाणरूप दंष्ट्रा और धनुष रूप मुख खड्गरूप जिह्वा दुर्धर्ष  
 नरोत्तम सिंहरूप तैरापिता पांचाल देशी शिखण्डी के हाथसे पृथ्वीपर मारागया पांडवों  
 की सेना जिसको युद्धमें शूल लिये उद्यत देखकर भयसे व्याकुल होकर ऐसे कांपती  
 थी जैसे कि सिंहको देखकर गौओंका समूह व्याकुल होकर थरथराता है वह वीरों  
 का मारनेवाला उसतरे पुत्रकी सेना को दशदिन रात्रि रक्षाकरके बड़े कठिनयुद्धों  
 को करता हुआ घायलों के समान अस्त्र होगया । ११ । जोकि हजारों बाणों  
 को बरसाता हुआ इन्द्रके समान महा व्याकुलता से पृथक् है उसने अपने दशदिनके  
 युद्धों में एक अर्जुन सेनाको मार डाला है भरतवंशी वह मेरी वुरीसलाह के  
 होनेसे वायु से गिरेहुये वृक्ष के समान पृथ्वीपर ऐसे सोता है जैसे कि कभी वह  
 सोनेके योग्य न था ॥ १३ ॥

who was brave like Indra, firm like the Himalayas, grave like the  
 ocean and like the earth in forgiveness, who had arrows for his teeth,  
 bow for mouth, and sword for tongue, that invincible father of thine,  
 the best of men, lies dead by the wounds of Shikhandi of Panchal.  
 He at the sight of whose arms the Pandava army trembled like a herd  
 of cows at the sight of a lion, that destroyer of warriors, having  
 protected the army of thy son for ten days and nights and having  
 performed matchless deeds of bravery, has set like the sun 11. He  
 who like India himself, scattering arrows by thousands with great  
 skill, daily slew ten thousand warriors for ten days, lies slain, though  
 he did not deserve it, on the bare ground like a tree broken down by  
 the wind, in consequence of thy evil counsels, O Bharat." 13.

धृतराष्ट्र उवाच ॥ कथं कुरुणामृषमो हतो भीष्मः शिखण्डिना । कथं रथान् स  
न्यतत् पिता मे वासवोपमः ॥ १ ॥ कथमाचक्ष्व मे योधा हीना भीमेण सञ्जय ।  
घलिना देयकवपेन गुर्वर्धे ब्रह्मचारिणा ॥ २ ॥ तस्मिन् हतं महाप्राज्ञं हेष्वासे महाबले ।  
महासत्त्वे नरव्याघ्रे किमु आसीन्ननस्तव ॥ ३ ॥ आसि परम विशति मनः संसासि मे  
हतम् । कुरुणामृषमं धीर मरुत्तं पुरुषपमम् ॥ ४ ॥ केतं यान्तगनुप्राप्तः के वाङ्मयासन्  
पुरोगमाः । के तिष्ठन् केन्यवर्त्तन् केऽन्ववर्त्तन्तसञ्जय ॥ ५ ॥ के शूरास्त्रशार्दूल मदभुतं क्षत्रि  
यपमम् । तथानीकं गाढमानं सहसा पृष्ठतोन्वयुः ॥ ६ ॥ यस्तमोर्क इवापोहन् पालेन्यममि  
यदा । सहस्ररश्मिप्रतिमः पेषो भयमादधत् ॥ ७ ॥ अकरोद् दुष्करं कर्म रणे पाण्डुसु

अध्याय ॥ १४ ॥

धृतराष्ट्रने कहा कि मेरापिता भीष्म कैसे शिखण्डी के हाथ से घायलहुआ और  
कैसे रथसे गिराहे संजय उस पराक्रमी देवता के समान अपन पिता शतनु के लिये  
ब्रह्मचारी होनेवाली गुरुरूप भीष्मजी के बिना मेरे पुत्रों की कौन दशाहुई और  
ऐसे महाबली धनुर्धारी महाज्ञानी शस्त्रवेत्ता नरोत्तम भीष्म के मारेजाने पर तेरा  
चित्त कैसा होगया जिस निर्भय कंपरहित कौरवेन्द्र पुरुषोत्तमधीर भीष्मजी को मृतक  
मुनकर मेराचित्त महापीडा से व्याकुल होताहै हे संजय कौन २ क्षत्री इस के आगे  
और कौन इनके पीछे चलनेवाले हुये कौन स्थिरहुये और कौनलौट आये और कौन  
से क्षत्री सम्मुख वर्त्तमानहुये । ५ और कौन से शूर उस महारथी क्षत्रियोत्तम युद्ध में  
सेनाके दयानेवाले भीष्मजीके पीछे की ओरको चले जिसबड़े मवल सेनाके स्वामी  
सूर्य के समान तेजस्वी शत्रुहंताने शत्रुओंकी सेना के मनुष्योंको मारहाया और

## CHAPTER XIV

"How was Bhishm my father wounded by Shikhandi," asked Dhritrashtra of Sanjaya, "and how did he fall from the chariot? To what state were my sons reduced in the absence of that great elderly warrior Bhishm who was full of prowess like gods and who observed a vow of celibacy for the sake of his father Shantanu? What was the state of your mind at the death of Bhishm the great archer, wise in the use of weapons and best of men? Bhishm was the great intrepid Kaurava chief and best of men at the news of whose death my mind is perplexed with excessive pain. Tell me, Sanjaya, what Kshatriyas were before and after him, which of them stayed there, which returned and which of them faced him. 5. What warriors followed that best of warriors, Bhishm the best of Kshatriyas, destroyer of foes and wonderful archer. While he was engaged in battle, what warriors opposed that slayer of foes, glorious like the

तेषु य । प्रसमानमनीकान य एन पर्यवारयन् ॥ ८ ॥ कृतिनन्त दुराधर्ष सञ्जयास्पत्त्व  
मान्तके । कथ शान्तनव युद्धे पाण्डवा प्रत्यवारयन् ॥ ९ ॥ निकृन्तन्त मनीकानि शर  
दष्ट तरस्विनम् । चापव्यात्तानन घोर भासि जिह्व दुरास्रदम् ॥ १० ॥ अनर्हपुरुषव्याघ्र  
ह्रीमन्तमपराजितम् । पातयामास कौन्तेय कथ तमाजत युधि ॥ ११ ॥ उग्रघवानमुप्रे  
पु वर्त्तमान रथोत्तमे । परेषामुत्तमागानि पश्चिम्बन्तमप्रेषुभि ॥ १२ ॥ पाण्डवानां महत्  
सैन्य य दृष्टवोद्यतमाहवे । कालाग्निमिव दुर्धर्ष समचेष्टत नित्यशः ॥ १३ ॥ परिकृष्य  
स सेनातु दशरात्रमनाकृष्टा । जगामास्त मिवादित्यः कृत्वाकर्म सुदुष्करम् ॥ १४ ॥ य  
स शक्र इवाक्षय्य धर्ष शरमथ क्षिपन् । जघान युधि योधाना मर्षुद दशभिर्दिनै ॥ १५ ॥

शत्रुओं में महाभयको उपजाया और युद्धमें पाण्डवोंके ऊपर महाकठिन कर्मकिया और  
हे संजय तुमने उसके सम्मुखहोने वाले युद्धमें कुशल दुष्पधर्ष महाबली को भी देखा  
है जिसने कि इस सेनाके निगलने वाले महावीर धनुर्धारी भीष्मको मारकर हटाया  
हे संजय पाण्डवा ने युद्धके बीचमें उन भीष्मजी को कैसे प्रकारसे रोका और सेनाओं  
के काटनेवाले बाणरूप दंष्टा रखनेवाले वेगवान चापरूपी मुखफलानेवाले खड्गरूप  
जिह्वाधारी दुर्धर्षइस दशके अयोग्य पुरुषोत्तम सज्जावान अजित जितेन्दी भीष्म  
जीको अर्जुन ने किसप्रकार से गिराया जो भीष्म कि भयानक धनुष बाणयुक्त  
उत्तमरथमें आरुढ़ बाणों से शत्रुओं के शिरों के छेदने वाले होते थे उसकाल अग्नि  
के समान दुर्धर्ष शस्त्र धारण कियेसन्नद भीष्मजी को देखकर पाण्डवोंकी सेनासदैव  
मृतकमायके सदृश चेष्टा करती थीवह शत्रुहन्ता दशरानि सेनाको खिंचकर महाकठिन  
युद्ध कर्मको करके सूर्य के समान अस्तहोगया । १४ । जिसने दशदिन तक इन्द्र  
के समान असंख्य बाणों को छोड़कर युद्धमें एक अर्बुद संख्याके शूरवीरों को मार

sun, who caused great terror to the warriors of the army and accom-  
plished difficult exploits in the ranks of the Pandavas. How did  
the Pandavas oppose the son of Shantanu, that accomplished and  
invincible warrior, when he was engaged in killing their armies?  
Have you seen the man who opposed Bhishm and wounded him in  
battle? How did Arjuna cause the fall of that destroyer of armies  
having arrows for his teeth, the swift bow for his gaping mouth and  
sword for his tongue, invincible, undeserving of such a fate, best of men,  
modest, unconquerable and having control over his organs. Bhishm  
who with his dreadful bow and arrows cut down the heads of the  
enemies from his seat in his chariot, who was invulnerable like the  
fire of yug, who appeared like death to the army of the Pandavas,  
that destroyer of enemies having performed a difficult work in the  
field of battle for ten days, has set like the sun. 14 He who like  
Indra, discharged for ten days an incessant shower of arrows and

स रणे निहतो भूमौ वातमुग्न इन्द्रम् । मम दुर्मन्त्रितेनाजौ यथा नाहति भारत १६॥  
 कथं शान्तनव दृष्ट्वा पांडव नामनीकिनी । प्रहृत्प्रशक्तत्र भीष्म भीमपराक्रमम् ॥ १७ ॥  
 कथं भीष्मेण सग्राम प्रादुर्ध्वं पाण्डुनन्दना । कथं नाजयद् भीष्मो द्रोणे जी-  
 घति सन्नय ॥ १८ ॥ द्रुपे सन्निहिने तत्र भरद्वाजात्मजे तथा । भीष्मः प्रहृतां  
 श्रेष्ठ कथं स निधनं गत ॥ १९ ॥ कथञ्चातिरथस्तेन पाञ्चाल्येन शिष्यपिठना ।  
 भीष्मो विनिहतो युगे द्वैरपि दुरासद ॥ २० ॥ यः स्पन्दते रणे नित्यं जाम-  
 दग्न्यं महाउग्रम् । आजत जामदग्न्येन शक्रतुल्यपराक्रमम् ॥ २१ ॥ त हतं समरे  
 भीष्म महारथकुलोदितम् । सज्जयाच्चरामे चीरं येन शमनं विश्वे ॥ २२ ॥ मामहा-  
 के महेष्वासा नाजद् सज्जयाच्युनम् । दुर्योधनसमादिष्टा के चीरा पर्यवारयन् ॥ २३ ॥

हाला वह भरतर्षभ मेरेदुर्मन्त्रों से युद्ध में पराजय होकर पृथ्वी में दृष्टके समान गिर कर ऐसा वायल होकर सोता है जैसा कि वह कभी होनहीं सक्ता । १६ । ऐसे प्रतापी महाबली भीष्मजी को युद्ध में सन्नद्ध देखकर पांचाल देशियों की सेना किस प्रकार से उनके ऊपर प्रहारकरने व । मर्मर्य हुई और पांडवोंने भीष्मजी के सम्मुख कैसे लड़ाई की और हे संजय द्रोणाचार्यजी के जीनेहुये होनेपर भीष्मजी ने कैसे विजय को नहीं पाया और प्रहार कर्ताओं में श्रेष्ठ भीष्मजी ने भारद्वाज के पुत्र कृपाचार्य और द्रोणाचार्य के वर्तमान होनेपर कैसे मृत्यु को पाया और देवताओं से भी महादुर्धर्ष मति रखी भीष्मजी युद्ध में उस पांचाल देशी शिखण्डी के हाथसे कैसे मारेगये। २०। जिन्होंने महाबली परशुरामजीको युद्धमें प्रसन्नकिया अर्थात् उनसे ईर्ष्यापूर्वक लड़ाई होनेपरभी उनके हाथसे नहीं मारागया इन्द्र के समान प्रबल महा राधियों में मृत्यु रूप महावीर भीष्मजी युद्धमें जैसे मृतक हुए वह सत्र घुड़से वर्णनकरो और हे संजय मेरे कौन कौनसे बड़े धनुर्धारी बाण फेकने वाले पुत्रों ने उसदुराधर्ष

destroyed a hundred thousand warriors, that scion of Bharat race now lies on the bare ground in the field of battle, deprived of life, like a mighty tree uprooted by the wind, as a result of my evil counsels, although he did not deserve this fate 16 Seeing the son of Shantanu ready to fight, how was the army of the Pandavas able to wound him ? How did the Pandavas fight against Bhishm ? How was it that Bhishm did not conquer although Drona is still alive ? How did Bhishm die when both Drona and Kripacharya are alive ? How did Shikhandi of Panchal kill Bhishm who was invincible even by gods ? He pleased mighty Parashuram in battle and was not killed by him. Let me know in detail how that best of warriors was killed in battle What great archers of my army did not

याऽऽपण्डितमुखा सर्वे पाण्डवा भीष्ममभ्यः । कञ्चित्ते कुरव सर्वे नाज्ज्ञः सञ्जयाच्च  
तम् ॥ २४ ॥ अश्मसारमय नून हृदय सुदृढ मम । यच्छ्रुत्वापुरुष-याग्र हन भीष्म नदी  
र्यते ॥ २५ ॥ यस्मिन् सत्यश्चमेवाच नीतिश्च भरतर्षभ । अप्रमेयाण दुर्धर्षे कथं स निह  
तो युधि ॥ २६ ॥ गौर्वीधोपस्तनायितु पृषन् फपृषतो महान् । धनुर्हादमहाशब्दो  
महामेघ इवोन्नतः ॥ २७ ॥ योभ्यवर्षत कौन्तेयान् सपाचालान् ससृज्यन् । निपन्न पर  
रथान् वीरो दानवानिच यज्जभृत् ॥ २८ ॥ इष्यस्त्रसागर घोर वाणप्राह दुरासदम् ।  
कार्मुकोर्मिणमक्षय महीप चलमल्लयम् ॥ २९ ॥ गदासिमकराश हयावर्ष गजाकु  
लम् । पदाति मत्स्यकलिलं शरदु-दुभे नि स्वनम् ॥ ३० ॥ हयान् गज पदातींश्च

को त्याग नहीं किया और दुर्योधन के आज्ञावर्ती कौन २ से वीरोंने शत्रुओंको न  
रोका जिससे कि वह सब पाण्डव जिनमें सब का अग्रगामी शिखण्डीया भीष्मजी  
के सम्मुख आये हे संजय उस आजित वीर को सब कौरवों ने तो त्याग नहीं किया  
मेरा निश्चयकरके यज्ञके समान हृदय है जो ऐसे पिता भीष्म पराक्रमी के मरनेपर  
भी नहीं फटता है । २५ । वह भरतर्षभ दुराधर्ष सत्यवादी उद्ध स्पर्श में सावधान  
शास्त्रों का ज्ञाता होकर युद्ध में कैसे मरा है जिसका धनुषरूप बादल वायुरूप  
जल वाण और धनुषकी टंकारही गर्जनायुक्त घोरशब्दवाले बड़े बादलही के समान  
ऊंचा है और जैसे इन्द्र दैत्यों को मारताहै उसी प्रकार शत्रुके रथियों को मारतेहुये  
जिस वीरने पाण्डव और पांचाल देवीय वा सजय लोगों के पद वर्षाकी उसवारण  
आदि अनेक भयानक अस्त्रों के समुद्र वाणरपी ग्राहघारी दुराधर्ष धनुष रूप तरंग  
वाले आविनाशी निराधार नौकाओं ने रहित गदासङ्ग रूप मकर जीनों से व्याप्त  
घोड़े रूपी आवतों समेत हाथियों से व्याकुल पदातीरूपमीनों से भराहुआ शस्त्र

desert Bhishm? What warriors of my s n's army did not help  
Bhishm in checking the advance of the Pandavas who led by Shikhandi  
were able to free Bhishm. Did the Kauravas desert that warrior?  
My heart must be hard like adamant as it does not break on  
hearing of the death of Bhishm. 25 That irresistible bull of Bharatrace  
was truthful, wise and a great politician. Alas! how was he slain  
in battle? Like a mighty and high cloud he had the twang of his  
bowstring for the thunder and his arrows for showers, and showered  
his shafts on the enemy as Indra does on the Dinvans. What heroes  
resisted that clustser of foes as the shore resists the waves of the sea?  
He was a terrible ocean of arrows and weapons, whose shafts were the  
irre-estible croe dils and loas were the waves. He was a boundless  
ang y ocean without an island, and without a raft to cross it over,

रथांश्च तरसा घृह्णन् । निमज्जयन्तं समरे परवीरापहृषिणम् ॥ ३१ ॥ विदधमानं  
कोपेन तेजसा च परन्तपम् । वेलेषमकरावासं के वीराः पयंवारायन् ॥ ३२ ॥ भीष्मो य  
दकरोत् कर्म समरे सञ्जयारिहा । दुर्योधनहितायां के तस्यास्य पुरोऽभवन् ॥ ३३ ॥  
केरक्षन् दक्षिणं चक्र भीष्मस्यामित तेजसः । पृष्ठतः के परान्वीरानपासेघ्नं यतघ्न-  
ताः ॥ ३४ ॥ के पुरस्ताद्वर्तन्त रक्षन्तो भीष्ममन्तिके । के रक्षन् तुत्तरं चक्रं वीरावीर-  
स्य युध्यतः ॥ ३५ ॥ धामे चक्रे वर्त्तमानाः केऽग्रन्तसञ्जय सञ्जयान् । अग्रतोऽग्रयमनी  
केषु केऽभ्यरक्षन् दुरासदम् ॥ ३६ ॥ पार्श्वतः केऽभ्यरक्षन्त गच्छन्तो दुर्गमां गतिम् ।  
समूहे के परान्वीरान् प्रत्ययुध्यन्तसञ्जय ॥ ३७ ॥ रक्ष्यमाणः कथं वीरैर्गोप्यमानाश्चते

दुन्दुभियों से शब्दायमानयुद्ध में अपने बेगसे बहुतसे हाथीघोड़े पैदलों को डवाने  
वाले शत्रुओं के वीरों के हटानेवाले ओंघसे आग्निरूपतेजसे शत्रुओं के संतप्तकरनेवाले  
को कौन २ से वीरोंने ऐसे रोकालिया जैसे कि समुद्र को उसकी किनारा रूप मर्या  
दा रोकलेती है । ३२ । हे संजय शत्रुहन्ता भीष्मजी ने युद्धमें दुर्योधन के अमीष्ट  
के लिये जो २ कर्म किये उस समय उनके सम्मुख कौन २ हुए और कौन २  
से वीरों ने भीष्मजी के दाहिने पक्षकी रक्षाकरी और पीछेकी ओरसे कौन  
से सावधान वीरोंने शत्रुके वीरों को हटया और कौन २ वीर भीष्मजी के  
समीप में जाकर रक्षा करतेहुए आगे हुए और किन २ वीरों ने भीष्मजी के  
लड़ते समय उत्तरीय भागकी रक्षाकरी । ३५ । और धाम पार्श्व में होकर किस २  
ने सृञ्जय देशियों को मारा और किस २ वीरने उस बुधर्प भीष्मजी की आगेसे  
रक्षाकी और चलते समय में किन २ ने चारों ओरसे उनकी रक्षाकरी है संजय ।

having maces and swords for sharks, steeds and elephants for eddies, the numberless foot soldiers for fishes and the noise of conchshells and drums for its roars. He was an ocean that swallowed horses, elephants and foot soldiers quickly, an ocean that devoured the warriors of the enemy and seethed with wrath and energy as if containing within himself the subterranean fire. 32. When, for the sake of Duryodhan, Bhishma the destroyer of foes achieved feats in battle, who were in his van? Who were those that protected the right wheel of that great warrior of immense energy? Who were they that, with great patience and energy, checked the enemy from his rear. Who were stationed in front to protect him; who protected the fore wheel of that warrior while he was fighting. 35. Who stationed themselves on his left to beat off the Srinjaya. Who were they that protected the front ranks of irresistible Bhi hm? Who were they that protected him on all sides while he was moving with difficulty and who,

नते । दुर्जयानामनीकानि नाजयंस्तरसायुधि ॥ ३८ ॥ सर्वलोकेश्वरस्येव परमेष्ठीप्रजा  
पतेः । कथं प्रहर्तुमपिते नेकः सञ्जय पाण्डवा ॥ ३९ ॥ यास्मिन् द्वीपे समाश्वस्य युध्यन्त  
कुरवः परैः । तं निमग्न नारव्याघ्रं भीष्म शंससि सञ्जय ॥ ४० ॥ यद्य वीर्यं समाश्रित्य  
मम पुत्रो बृहद्वलः । न पाण्डवानगणयत् कथं स निहतः परैः ॥ ४१ ॥ यः पुरा विबुधैः  
खर्वैः सहाये युद्धदुर्मदः । काक्षतो दानवान् क्षत्रिः । पतामम महाव्रतः ॥ ४२ ॥  
यास्मिन्जाते महावीर्ये शांतनुर्लोकं विधृतः । शोक दैन्यञ्च दृष्ट्वा पाण्डवात् पुत्रलक्ष-  
णि ॥ ४३ ॥ प्रोक्त परायणं प्राप्तं स्वधर्मे त्वरतं शुचिम् । वेदवेदांगं तत्पुत्रं कथं शंस

उस समूहमें से शत्रुओं के वीरों से युद्धकरनेवाले कौन २ वीर थे वीरों से रक्षित  
भीष्मजी ने और भीष्मजीसे रक्षित उन वीरोंने युद्ध के बीच वेगसे वा दुःखसे वि-  
जय होनेवाली राजाओंकी सेनाओंको क्यों नहीं विजय किया हे संजय जो सब  
लोकों के ईश्वर भजापति के समान भीष्मके मारने के लिये वह पाण्डवलोग कैसे  
समर्थ हुए, कौरवलोग जिस रक्षाके स्थानपर भरोसा करके शत्रुओं से युद्ध करते  
हैं उस नरोष्ण भीष्मजी को हे संजय तुम दूबाहुमा कहने हो । ४० । जिस के  
बलका आश्रयलेकर बड़ी सेना रखनेवाला मेरा पुत्र पाण्डवों को कुछ नहीं समझ-  
ताया वह ऐसा प्रतापी भीष्म पाण्डवों के हाथ से कैसे मारागया, युद्ध में दुर्मद महा-  
व्रती जिसमेरे पिता भीष्मको सहायता में करके देवतालोग दैत्यों के मारनेके लिये  
उपस्थितहुये और संसार में विदित राजा शन्तनु ने पुत्रों में उत्तम वीरपरा-  
क्रमी जिस भीष्म के उत्पन्न होनेपर शोकभय और दुःखों को अत्यन्त दूर  
किया और उसी पुत्रको रक्षाका स्थान वःश्रान्ती और अपने धर्मों में आते

O Sanjaya, fought with the warriors of the enemy in the general engagement? If he was protected by warriors, and if they were protected by him, why then could he not vanquish at once, the invincible army of the Pandavas? How could the Pandavas destroy Bhishm who was like Parameshthi or Lord and Creator of all creatures. You speak, O Sanjaya, of the disappearance of Bhishm the best of men, on whose strength the Kauravas are making this war on the enemies. 40 How did the Pandavas destroy that great warrior, relying on whose strength, my son Duryodhan looked down upon the Pandavas? My father Bhishm the great warrior of dreadful vows, whose assistance was sought by the gods to destroy the Danavas and on whose birth famous Shantanu laid aside all his griefs and cares and whom he called his refuge, was very wise, firm on his duty, scholar of the Vedas and their branches and of pure soul;

।स मे हतम् ॥ ४४ ॥ सर्वास्त्र विनयो पेतं शान्तं दान्तं मनस्विनम् । हतं शान्तनयं  
 श्रुत्वा मन्ये शोषे हतं बलम् ॥ ४५ ॥ घर्मावधर्मो बलवान् सप्रयात इति मे मातः । यत्र  
 वृद्धे-गुरुं हत्वा राज्यं मिच्छन्ति पाण्डवाः ॥ ४६ ॥ जामदग्न्यः पुराणामः सर्वास्त्रविद  
 नुत्तमः । अश्वार्थं मृगतं संरये भीष्मण ॥ ४७ ॥ तमिन्द्र समकमाण  
 ककुदं सर्वं धन्यनाम् । हतं शस्तसि मे भीष्मे किन्तु दुःखमतः परम् ॥ ४८ ॥ अस्मिन्  
 क्षत्रियघाताः संख्ये येन विनिर्जिताः । जामदग्न्येन वीरेण परवीर निघातिना ॥ ४९ ॥  
 नहतो यो महायुधः स हतोऽद्य शिखण्डिना । तस्मान्न नूनं महावीर्याद् मार्गवायुस्तुम  
 दात् ॥ ५० ॥ तेजो वीर्यं धैर्यं शिखण्डो द्वादशजः । यः शूरं कृतिनं युद्धं सर्वं  
 शास्त्रं विशारदम् ॥ ५१ ॥ परमास्त्रं धर्दं शूरं जघान भरतर्षभम् । के वीरास्तम मित्रान्

प्रवृत्त वेद वेदांग के मूलोका ज्ञाता महापावित्रात्मा वर्णन किया है संजय ऐसे पुरुष  
 को मराहुआ कैसे कहता है उन सब अच्छांसे शिष्यायुक्त शान्तनु जितेन्द्री उदार बुद्धि  
 भीष्मजी को मृतकमुनकर में शोष, बची हुई सेना कोभी मृतकही मानताहूँ । ४५ ।  
 कि जिसस्थानपर पांडव अपने वृद्ध गुरुकोभी मारकर राज्यको चाहतेहैं इससे यह  
 भेरा मतहै कि अधर्म धर्मसे प्रबलतर होता है, पूर्व समय में सब अस्त्रशस्त्रों के ज्ञाता  
 अनुपम युद्ध में सन्नद्ध जमदग्निजी के पुत्र परशुरामजीको युद्ध में भीष्मजीने विजय  
 किया उसइन्द्र के समान कर्मकर्ता सब धनुषधारियों के ध्वजारूपभीष्मजीका मृतक  
 कहाहै इससे अधिककौनसा दुःखदोगा जिन परशुरामजीने अनेक समय क्षत्रियों के  
 समूहों को बारम्बार विजय किया परन्तु बड़ा बुद्धिमान मेरापिता नहीं मारागया  
 सो अब वह शिखण्डी के हाथ से मारागया इन हेतु से निश्चय करके दुपदका पुत्र  
 शिखण्डी बड़ा पराक्रमी युद्ध में परशुराम जीसे भी अधिक तेजस्वी बल पराक्रम में  
 भी अधिक है जिसने शूवीर पांडित महाशास्त्रज्ञ धर्मअस्त्रके ज्ञाता भरतर्षभोंके उत्तम

how can you say, Sanjaya, that he is dead ? Knowing the use of all  
 weapons and having his passions under control the son of Shantanu  
 was modest, gentle and energetic. Alas ! hearing of his death ; I  
 regard the rest of the army as already slain 45. The Pandavas  
 desire to rule by killing their grandsire; from this, I conclude that vice  
 is stronger than virtue. What grief can be greater than that of the  
 death of Bhishma the best of archers and of Indra like prowess, who  
 vanquished Parashuram the son of Jamdagni of matchless prowess  
 and knowledge of arms? My wise father who was not slain by  
 Parashuram the destroyer of Kshatriyas, is now slain by Shikhandi.  
 Indeed Shikhandi the son Drupad must be a greater warrior than  
 Parashuram as he has destroyed the most glorious descendant of



मन्धु शस्त्रससदि ॥ ५२ ॥ शस मेवत् यथा चासायुद्ध भीष्मस्य पाण्डवै । योपेव  
 दतधीरा मे सेना पुत्रस्य सजय ॥ ५३ ॥ अगोपमिव चोद्भ्रान्त गोकुल तद्वल मम ।  
 पौर्य सधे लाफभ्य पर यस्मिन् महाहवे ॥ ५४ ॥ परासक्त चयस्तस्मिन् कथमासीन्  
 मनस्तदा जीविते प्यद्य भगर्थ्य किमि वास्मात् सजय ५५ घातयित्वा महावीर्य पितर  
 लाकधार्मिकम् । अगाधे सलिल मग्ना नौका दृश्य पारगा ॥ ५६ ॥ भीष्मे हते भृश  
 दुःखात् मन्य शोचति पत्रका । आद्रिसारमय नून हृदय मम सजय ॥ ५७ ॥ अष्ट  
 त्वापुरुषप्याग्र हत भीष्म न दीर्यते । यस्मिन् अस्त्राणि मेधाश्च नीतिश्च पुरुषर्षभे ॥ ५८ ॥  
 अग्रमेयाणि दुर्धर्षे कथं स निहतो युधि । न चास्त्रेण न शौर्येण तपसा मेघया न च ५९

प्रतापी धीरको तारा युद्धभूमि में । ५२ । उस शत्रुहन्ता भीष्मजी के पीछे कौन २  
 वीर चले और जैसे पाण्डवों से और भीष्मजीसे लड़ाई हुई यह सब मुझसे विस्तार  
 समेत वर्णन करो हे सजय मेरे पुत्रको वह सेनासूत्री के समान मृतक धीरवाली है  
 और वही मेरी सेना इस प्रकार व्याकुल है जैसे कि विनागोपके गौओं का कुल  
 होता है जिसभारी युद्ध में सबलोगोंकी बड़ी धीरता है अब उस भीष्मजीके मरने के  
 पीछे सबका मन कैसाहोगया, हे सजय अबलोक में धर्मवानवडे पिताको मरवाके  
 हमारे पुत्रोंमें जीवनकी क्या सामर्थ्य है भीष्मजी के मरनेपर मेरे वेदेसदैव दुःखसे  
 ऐसे शोचतेहैं जैसे कि पारपर खडे हुए मनुष्य गहरेजल में डूबी हुई नौका को देख  
 कर शोचतेहैं हे सजय निश्चय करके मेरा ब्रह्मसेभी अधिक कठोर हृदयहै जो ऐसे  
 पुरुषोत्तम भीष्मजीके मरनेपरभी नहीं फटताहै जिसपुरुषोत्तम दुराधर्ष में अस्त्रयुद्धि  
 और नीति अत्यन्तधी वह युद्धमें कैसे मारागया कोई भी मनुष्यअस्त्रश्रुता तपयुद्धि

Bharat of great renown and skill in arms ५२ What warriors  
 followed that destroyer of enemies in the great battles? Tell me in  
 detail how the battle was fought between the Pandavas and Bhishma  
 Our army, in the absence of that hero is like a woman who has lost  
 her protector or like a herd of cows without the herdsman In  
 what state did he leave the army when that warrior of matchless  
 prowess was laid low on the field of battle? What is the use of our  
 life in this world, when we could not save our father from being  
 slain. My sons must be grieved at the death of Bhishma like those  
 who having lost their boat in the midst of a swollen river, are  
 standing on the opposite shore. My heart must be hard as adamant  
 as it does not break at the death of Bhishma the best of men who  
 was endued with immense skill in arms and policy. How has he been  
 killed? No one can escape death by bravery, asceticism, wisdom

नघृत्या न पुनस्त्यागान् मृत्योः कश्चिदिमुच्यते । काले नूनं महावर्षः सर्वं लोकदुरत्ययः ॥ ६० ॥ यत्र शान्तनवं भीष्मं हतं शशास संजय । पुत्रशोकमि सन्तप्तो महद्दुःखमचिन्तयन् ॥ ६१ ॥ आशंसेहं परं त्राणं भीष्माच्छान्तनुनन्दनात् । यदाहृत्य मिघापश्यत् पाततं भुवि सञ्जय ॥ ६२ ॥ दुर्योधनः शान्तनवं कन्तदा प्रत्यगद्यत । नाह स्वेषां परेषां वा वृद्धासंजय चिन्तयन् ॥ ६३ ॥ शेषं किं चत् प्रपश्यामि प्रत्यग्रीके महीक्षिताम् । दारुणः क्षत्रघमोय मृषेभिः सम्प्रदर्शितः ॥ ६४ ॥ यत्र शान्तनवं हत्वा राज्यमिच्छन्ति पाण्डवाः । वयं वा राज्यमिच्छामो घातयित्वा महाव्रतम् ॥ ६५ ॥ क्षत्रघनं स्थिताः पार्था नापराध्यानि पुत्रकाः । एतदार्थेण कर्तव्यं कृच्छा एवापरसंजय ॥ ६६ ॥ पराक्रमः पराशक्तिस्तु तस्मिन् प्रसिद्धितम् । अनीकानि विनश्यन्त हीमन्तमपराजितम् ॥ ६७ ॥ कथं शान्तनवं तातं पाण्डुपुत्रान्यवारयन् । यथा युक्तान्यनीकानि कथं युजं

धैर्य और तपस्या इत्यादिके द्वारा मृत्युसे नहीं छूटता है इससे निश्चयकरके सबलोकों को दुःखसे उल्लंघन करनेके योग्यकाल महावली है । ६० । हेसंजय उन शंतनुके पुत्रभीष्मजीको मृतक कहताहै उनशंतनु नन्दन भीष्मजीसे मैं पुत्रोंके शोकसे दुःखी बड़ेदुःखीको स्मरण करताहुआ रक्षाकी आज्ञा करताया हेसंजय जब सूर्यके समान अस्तहुए भीष्मजीको दुर्योधनने देखा तब मन में क्या विचारकीया और मैं बुद्धिसे चिन्ता करताहुआ सेनाके मध्यमें अपने पुत्रोंको और अन्याराज्योंको इछभी नहीं समझताहूं यह वह भयका कारण क्षत्री धर्म ऋषिलोगोंने दिखायाहै । ६४ । जहां पांडव लोग भीष्मजी को मारकर राज्यको चाहने हैं अथवा हमकौरव लोग महाव्रत वाले भीष्मजीको मरवाकर राज्यको चाहते हैं, क्षत्रीधर्म में मृष्ट भरे पुत्र पांडव भी कुछ अपराध नहीं करते हैं क्योंकि दुःख और आपत्तियों में उत्तम पुरुष को यह पराक्रम और महासामर्थ्य प्रकटकरने के योग्य है उसमेंही वह सबपांडव नियत हैं हेतात, उनपांडवोंने उन, लज्जावान् दुराधर्ष सेना के मर्दनकरनेवाले भीष्मजीको

patience and penances. Surely, Time is too powerful to be transgressed by any one in the world. 60. You say, Sanjay, that Bhishm, the son of Shantanu, is dead. I expected relief from the grief of my sons through Bhishm. What did Duryodhan think when he saw Bhishm setting like the sun ? I fear for my sons and other kings who are engaged in battle. Hard are the duties of kshatryas enjoined by rishis 64. The Pandavas have killed Bhishm for the sake of the kingdom and we desire the same even after his death. My sons the Pandavas are committing no sin as when one is beset with calamities one must show prowess. How did the Pandavas check Bhishm the invincible, modest and destroyer of enemies ? How were the armies

महात्मभि ॥ ६८ ॥ कथं वा निहतो भीष्म पिता सत्रय मे परे । दुर्योधनश्च कर्णश्च  
शकुनिश्चापि सौवल् ॥ ६९ ॥ दुःशासनश्च कितवो हते भीष्मे किमग्रवन् । यच्छरीरैरुपा  
स्तीर्णा नगराण्यवाजिनाम् ॥ ७० ॥ शरशक्त महासङ्ग ते मराणा महाभयम् । प्रा  
पशन् किंवा मन्दः सभा युद्ध विशारदाम् ॥ ७१ ॥ प्राणवृत्ते प्राप्ति मय केऽदीव्यन्त  
नरपंथा । केर्जायन्ते जितास्तत्र कृतलक्ष्यानिपातता ॥ ७२ ॥ अन्ये भीष्माच्छातन  
घातु तन्ममाचक्ष्वसञ्जय । नाहं म शान्तिरस्तीह श्रुत्वा दध्नत हतम् ॥ ७३ ॥ पितर  
भीष्मकर्माण भीष्ममाहवशोभितम् । आर्त्ति मे हृदय रुद्धा महर्ता पुत्रहानजाम् ॥ ७४ ॥  
यद्यहि म सर्पिवेवाग्नि मुहीपयासि सञ्जय । महान्त भारमुद्यम्य बधुत सार्व लौकिकम्

कैसे रौंका और जैसे २ सेनातैयारहुई और सब महात्माओंका युद्धकैसे हुआ और  
मेरापिता भीष्म दूसरों के हाथसे कैसे मारागया, भीष्मजी के मरनेपर दुर्योधन  
कर्ण और सौवल्केपुत्रशकुनी और छली दुःशासन ने क्या कहा, जिन देहों के  
विछौनों से संयुक्त मनुष्यहाथी । ७० । घोड़ोंसमेत बाण बरछी और बड़े खड्ग  
तोमर रूप पाशेवाले महा भयकारी सभा में प्रविष्टहुये और वह युद्ध में कुशल नरो  
चम उस भयकारी प्राणदेवत अर्थात् घूतरूपमेंलेने उनमेंसे कौनसा विजयी जीवनाहै  
और जोभीष्मजीसे युद्धमें मारेगये इनमवको हेतंजय मुफ्ते कहो, यहांपर भयकारी  
कर्म और युद्धमें शोभा पानेवाले महाव्रत पिता भीष्मजीको मृतक सुनकर मेरेहृदय  
में शान्ती नहीं होती, हे संजय तुम पुत्रकी हानि से उत्पन्न महा पीड़ा को मेरे  
हृदयमें ऐसे बढ़ातेहो जैसे घृत्तेअग्निको दढाते हैं, और संघंभीलोग प्रतिद्व महाभार  
को उठाकर और भीष्मजी को मृतक जानकर शोचते हैं और मैं दुर्योधन के उत्पन्न

arrayed and how did the heroes fight ? How was my father Bhishm  
killed by them What did Duryodhan, Karṇa, Shikuni the son  
of Saubal and deceitful Dushasan say at the fall of Bhishm ? The  
dice board is made of the bodies of men, elephants and horses, ( 70 )  
where arrows, javelins, swords and darts form dice, and entering  
that frightful mansion of destruction, were the wretched gamblers  
that staked their lives Who won, who were defeated, who cast  
their dice successfully and who besides Bhishm, were numbered with  
the dead ? Tell me all this Sanjaya, I can have no rest after hear-  
ing of the death of Bhishm of dreadful vows. The thought of the  
death of all my children gives me much pain and thou inflamest the  
fire of my grief as I by pouring over it clarified butter I think, my  
sons must be bewailing the loss of Bhishm the world renowned who  
had taken the burden on himself I shall listen to all the sorrows  
arising from Duryodhan's acts 74 Tell me, Sanjaya, everything

॥ ७५ ॥ दृष्ट्वा विनिहत भीष्मं मन्ये शेचन्ति पुत्रकाः । श्रोष्यामि तानि दुःखानि  
दुर्योधन कृतान्यहम् ॥ ७६ ॥ तस्मान्म सर्व माचक्ष्व यद्वृत्त तत्र सजय । यद्वृत्त तत्र  
सग्रामे मन्दस्याबुद्धि सम्भवम् ॥ ७७ ॥ अपनीतं सुनीतं यत् तन्माचक्ष्व सजय ।  
यत्कृतं तत्र सग्रामे भीष्मेण जय मिच्छता ॥ ७८ ॥ तेजो शुक वृतास्त्रेण दास तत्राप्य  
शेषतः । यथातदभवद्वृद्ध कुरुपाण्डव सैनयो ॥ ७९ ॥ क्रमण येन यस्मिंश्च काले यच्च  
यथा भवत् ॥ ८० ॥

इति महाभारते भीष्मपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि धृतराष्ट्रप्रश्ने

चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

सञ्जय उवाच ॥ त्वद्युक्तोयं मनुप्रश्नो महाराज यथाहंति । नतुदुर्योधने दोष  
मिममासकमहंति ॥ १ ॥ य आत्मनोदुष्टारितादशुभं प्राप्नुयान्नर । एतस्यतेनान्यं  
स इप शाङ्गितुमर्हति ॥ २ ॥ महाराज मनुष्येषु निन्द्य य सर्वमाचरत् । सवध्यः

नियेहुए उन दु खोंको सुनंगा इस कारण हेसंजय वहांका सत्र वृत्तान्त मुझमें कहो  
और जो युद्ध में अल्पबुद्धियों की निर्बुद्धिता से उत्पन्न वृत्तान्त न्याय वा अन्याय  
संबंधी कैनाईहो वह सबमुझ से कहो और युद्ध भूमिमें शस्त्रज और शास्त्रज्ञ विजया  
भिलाषी भीष्मजी ने जो अपने तेजसे कर्मकिया वह भी विस्तारपूर्वक संपूर्ण कहो  
और जय जिन क्रमसे समय पाकर कौरव और पांडवों की मेना से परस्पर युद्धहुआ  
उममें जैसा २ जो काम जिसका हुआ वह सत्र मुझमें कहो ८० ॥

अध्याय ॥ १५ ॥

संजय बोले कि हे महाराज यह मन प्रश्न जो तुम पृछतेहो सब ठीकहै परन्तु  
आप इन दोषों को जो लगाते हैं सो योग्य नहीं है जो मनुष्य अपने बुरे कर्म से  
दुःखादि को पावे वह उसपापकी शंका दूसरेपर करने के योग्य नहीं है । २ । हे  
महाराज जो मनुष्यों के मध्यमें निन्दाके योग्य कर्मको करता है वह निन्दित कर्म

that has happened by the folly of my son. Tell me all, whether good or bad, whatever was done in battle by the energy of Bhishma who was desirous of victory. How the battle was fought between the the Kauravas and the Pandavas and the order and manner of each event as it happened." 80.

#### CHAPTER XV

"This question, great king!" Sud Sanjaya to Dhritrashtra, "is worthy of you. It is not however, proper to impute this fault to Duryodhan. He who incurs evil as the result of his own misconduct should not attribute it to others. He who does injury to others,

सर्वलोकस्य निर्विदितानि समाचरन् ॥ ३ ॥ निःकारो निरुक्तिप्रप्तौ पाण्डवस्त्वत्प्रतीक्षया । अनुभूत सहामात्यै क्षातश्चसुचरं वने ॥ ४ ॥ हयानाञ्च गजानाञ्च राज्ञाभामिततेजसाम् । प्रत्यक्ष यन्मयादृष्ट दृष्ट योगबलेनच ॥ ५ ॥ शृणु तत् पृथिवीपाल मा च शोके मनः कृषा । दिष्टमेतत्पुत्रानूनं मिदमेव नराधिप ॥ ६ ॥ नमस्कृत्वा पितुस्तेह पाणशर्याय धीमते । यस्यप्रसादादिव्यं तत् प्राप्तं तानमनुत्तमम् ॥ ७ ॥ दृष्टिश्चातीन्द्रियाराजन् दुराच्छूयणमेव च । परचित्तस्य चित्तानमतीतानामतश्च ॥ ८ ॥ व्युत्थितोत्पत्तिं चिज्ञानमाकाशे च गतिं शुभा । अखैरसगो युद्धेषु वरदानान्महात्मनः ॥ ९ ॥ शृणुमे विस्तरे णेदं विचित्रं परमाद्भुतम् । भारतानामभूद्युद्धं यथा तत्संलोकं हर्षणम् ॥ १० ॥ तेष्वनीकेषु यत्तेषु व्यूढेषु च विधानतः ।

करनेवाला सबलोकोंसे मारने के योग्य है, छल संयुक्त वुयोंधन आदि ने निरादर किया और पाण्डवोंने मंत्रियों के द्वारा तेरी ओर को ध्यान करके बहुत कालतक वनेके बीच बैठकर उस अपमानको क्षमाकिया और मैंने प्रत्यक्षयें वोड़े हाथी और बड़े तेजस्वी राजाओंकी जो दशादेखी और योगबल से भी जो निश्चयकिया हे राजा उसको तुम मुझसे सुनो । ५ । और शोकसे चित्तको हटाओ यही होनहार प्राचीन हे मैं आपके शुद्धिमान पिता उन व्यासजीको नमस्कार करके कहताहूँ जिन की कृपासे मैंने दिव्यदृष्टि और अनुपम मज्ञाको प्राप्तकिया, हे राजा ध्यानसे पृथक् देखना वा दूरसे बातका सुनना अथवा दूसरे के मनका अच्छे प्रकारसे जानना और भूत भविष्यका ज्ञानहोना, उद्देहुए अस्त्रकी उत्पत्तिका जानना, आकाश में शुभगमन, लड़ाइयों में अस्त्रोंसे वचजाना इत्यादि सब बातें महात्माके वरदानसे प्राप्तहैं इस अपूर्व विचित्र दृष्टान्त को व्याख्यान करके तुम मुझसे सुनो जैसे कि नहभरतवंशियोंका रोमहर्षण करनेवाला युद्धहुआ । १० । हेमहाराज जब व्यूह रचनाकी रीतिसे उस

deserves to be slain by all men for his wickedness. The sinless Pandavas, with their friends and counsellors, bore the injuries and long exile for your sake and forgave them. Hear, O king, what I have seen of horses, elephants and powerful kings by the aid of yog power. 5 All this was predestined before. Having bowed down to thy father, Vyasa the wise, through whose grace I have gained supernatural powers of sight, beyond the range of eyes, hearing from a great distance, knowledge of other people's minds, of past and future, of the effects of weapons thrown, the delightful power of ranging through skies and escape from weapons, listen to me in detail as I recite romantic and wonderful battle that happened between the descendants of Bharat, a battle that makes one's hairs stand on end. 10. When the armies were arranged in phalanxes,

दुर्योधनो महाराज दुःशासन मयाव्रवीत् ॥ ११ ॥ दुःशासन रथास्तूर्णं युज्यन्तःभीष्म  
रक्षिण । वनीकानि च सर्वाणि शीघ्रं त्वमनु चोदय ॥ १२ ॥ अथ समाममिप्रातो  
पर्ययानि धितित । पाण्डवानां ससंयानां कुट्ट्यान्च समागम ॥ १३ ॥ नातः कार्य  
तम मन्ये रणे भीष्मस्य रक्षणात् । हन्याद् युतो ह्यसौ पार्थान् सोमकांश्च ससृजयान्  
॥ १४ ॥ अग्र्यं च विशुद्धात्मा नाहं हन्यां शिखण्डिनम् । श्रूयते स्त्री ह्यसौ पूर्वं तस्माद्  
वज्र्यो रणे मम ॥ १५ ॥ तस्माद् भीष्मो रक्षितव्यो विशेषेण वि मे मतिः । शिखण्डिनो  
पच यत्ता सर्वं तिष्ठन्तु मामका ॥ १६ ॥ तथा प्राच्याः प्रतीच्याश्च दक्षिणात्योत्तराप  
थाः । सर्वथास्त्रेण कुशलात् रक्षन्तु पितामहम् ॥ १७ ॥ अरक्ष्यमाणं हि पृको हन्यात्

भेनाली तैयारियांहई तब दुर्योधनने दुःशासनमे कहा कि हे दुःशासन भीष्मजीके  
रक्षाकरनेवाले रथशीघ्रही तैयारहो और तुरन्त बातका सबसेनाको शीघ्रमुनादो कि  
सेनाके मनुष्यों मे पाण्डव और कौरवोंका वह मिनाप वर्धमान हुआहै जोकि बहुत  
घणों से विचारा गयाहै, मैं युद्धकेभीच इनभीष्मजीकी रक्षामे अधिक कोई बडाकाम  
नही सम्भताहूं क्योंकि जो भीष्मजीकी रक्षाहोगी तो यह अकेलेही पाण्डव सोमक  
और सृजय लोगों समेत सबको मारेंगे । १४ और इन सत्य वक्ता भीष्मजीने कहाहै  
कि मैं शिखण्डिमेर बाण और शस्त्रप्रहार नहीं करुंगा इसका यह हेतु मुनाजाताहै कि  
यह पूर्व मे स्त्रीया इमकारणयुद्धमे उसके ऊपर शस्त्र छोडना क्षत्रियोंको निषेधहै इस  
गुण कारणासे भीष्मजी अधिक करके रक्षा करने के योग्य हैं । १५ । इस मेरेमत  
से हमारी मव सेनाके मनुष्य शिखण्डी के मारने में तावधानी से उद्युक्त होजावें और  
इमीमकार से पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण इन चारों दिशाओं के मव शस्त्रधारी-युद्ध  
मे कुशल राजा लोगोंको भी योग्यहै कि सबमिलकर भीष्मजीकी रक्षाकरें । १७ ।

Duryodhan said to Dushasan, " Order the preparation of chariots  
for the protection of Bhishm. Give at once notice to all the armies  
that the encounter of the Kauravas and Pandavas, which has for  
years been under consideration, is at last about to happen. I donot  
think any duty to be greater than the protection of Bhishm; for,  
alone he will destroy all the Pandavas, the Somaks and the Srinjayas,  
if he is well protected. Bhishm the truthful has already said that  
he would not discharge his arrows and other weapons at Shikhandi  
who is said to have been once a woman and that no Kshatriya ought  
to kill a woman. This is another cause why Bhishm should be  
especially protected. 15 I let all the warriors of our army try their  
best to kill Shikhandi and at the same time protect Bhishm from all  
sides. 17 Let us not allow Shikhandi to kill Bhishm as a lion when

सिंहं महाबलम् । गा सिंहं जम्बुके नेव घातयाम् । शिखण्डिना ॥ १८ ॥ घाम चक्रं  
युधामन्यु रुत्तमौजाश्च दक्षिणम् । गोसांरौ फाल्गुन द्वाप्तौ फाल्गुनोपि शिखण्डिन १९  
स रक्ष्यमाणः पाथेन भीष्मेणच विदर्जितः । यथा न हन्याद् गागेय दुःशासन तथा  
कुरु ॥ २० ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि दुर्योधनदुःशासन-  
संवादे पञ्चदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

संजय उवाच ॥ ततो रजन्यां व्युष्टायां स शब्दः समभवत् महान् । क्रोशतां  
भूमिं पालानां युज्यतां युज्यतामिति ॥ १ ॥ शख दुन्दुभि घोषैश्च सिंहनादैश्च  
भारत । हयहोपतनादैश्च रथनभिस्त्वैतथा ॥ २ ॥ गजानावृहताञ्चैव घोघाना  
चापि गर्जताम् । हथेलितास्फोटितोत्सृष्टैस्तुमुल सर्वतोभघत् ॥ ३ ॥ उद तिष्ठन्

महाबली रत्ता रहित सिंह को जैसे शृगाल मारे इसी प्रकार शृगाल के समान शिखं  
डी के हाथमे हम लोगोंको योग्य है कि सिंहरूप भीष्मजीको नही मरने दें, रथके  
घामभागका रत्तक युधामन्यु और दक्षिण भागका उचमौजा यह दोनों अर्जुनके  
रत्तकहें और अर्जुन शिखंडीका रत्तक हुआ है वह अर्जुनसे रक्षित शिखंडी गंगा  
के पुत्र भीष्मजीको जिस रीति से मारनेको समर्थ नहो हे दुःशासन वही उपाय  
अवश्य करना चाहिये २० ॥

अथाय ॥ १६ ॥

‘संजय बोले कि तदनन्तर रात्रि ध्यतीत होनेपर जोड़ो जोड़ो ऐसे राजा लोगों  
के कहे हुए महान् शब्द होतेहुए और हे भरतर्षभ शंस और दुन्दुभियों के बड़े शब्द  
और वीर पुरुषों के सिंहनाद और घोडा के हीन्ने के शब्द और रथके पहियों के  
महान् शब्दों से और हाथियों की चिंघाडामे वा मल्लों के व्रीडापूर्वक हाथके और  
मुखके अनेक प्रकारके शब्दों के कारण चारों ओरसे महातुमुल भयकारी शब्द हुए

unprotected is killed by jacks's Yudhamanyu protects the left  
wheel and Uttamanuja the right wheel of Arjun who protects  
Shikhandi. Let us so manage Dushasan, that Shikhandi, protected  
as he is by Arjun may not be able to cause the death of  
Bhisma." 20

## CHAPTER XVI

"At the close of the night," said Sanjaya, "there was a great  
uproar of warriors, calling on their men to prepare chariots, mingled  
with the roars of the warriors, the neighing of horses, the rumbling  
of chariot wheels, the noise of elephants and the clapping of wrestlers."

महाराज सर्व युक्तमशेषतः । सूर्योदये महत्सैन्यं कुरुपाण्डवसेनयो ॥ ४ ॥  
 राजेन्द्र तव पुत्राणां पाण्डवानां तथैव च । दुष्प्रभृष्याणि चास्त्राणि सशस्त्रयवानि  
 च ॥ ५ ॥ ततः प्रकाशे सैन्यान् समदृश्यन्त भारत । त्वदीयानां परेषाञ्च  
 शस्त्रयन्ति महान्ति च ॥ ६ ॥ तत्र नागा रथाश्चैव कारवूनदपरिभृताः । विभ्राज  
 माना दृश्यन्ते मेघा इव सविद्युतः ॥ ७ ॥ रथानीकान्यदृश्यन्त नगराणीव भूरिशः ।  
 अताव शुशुभे तत्र पिताते पूर्णचन्द्रवत् ॥ ८ ॥ धनुर्भिर्ऋग्भिः खड्गैर्गदामि-  
 शाक्तोमरैः । योधा ग्रहरणैः शुभ्रैस्तेजनीकैश्च वास्यता ॥ ९ ॥ गजा पदाता  
 रपिनस्तुरगाश्च विशाम्पते । व्यतिष्ठन् धातुराकारा शतशोऽप्यसहस्रशः ॥ १० ॥  
 ध्वजा यद् विधाकारा व्यदधन्त समुच्छिताः । स्वेपाक्षैव परेषां च यति मन्त सहस्र

। ३ । हे महाराज सूर्य के उदय होने पर सब ओरसे तैयार कौरव और पांडवोंकी  
 महाभारी सेना आकर खड़ी हुई और तुम्हारे पुत्रोंके और पांडवों के दुग्धर्पशस्त्र  
 अस्त्र और कवचभी धरी तीव्रता से तैयार हुए इसके पीछे जब ध्वजा प्रकाश  
 हुआ उस समयतेरे पुत्रोंकी और पांडवों की सेना के वह मनुष्य दिखाई दिये  
 जो बड़े महात्मा आर शस्त्रों को धारण कियेहुये थे । ६ । इसके विशेष वहाँपर  
 जंजूनद नाम सुवर्ण से अलंकृत हाथी और रथ भी ऐसे दृष्टपडे जैसे कि विजली  
 समेत बादल दिखाई देते हैं, रथपर सवार बहुतसी सेना नगरोंके समान दिखाईदीं  
 उनसब प्रकारकी सेनाओं में आपके पिता भीष्मजी पूर्ण चन्द्रमासे प्रकाशमान दिखाई  
 देतेथे । ८ । और संपूर्ण सेनाभरमें युद्धकर्ता लोग धनुष पट्टी खड्ग गदा वरखी और  
 तोमर आदि श्वेतनाखों सहित नियतहुए, और हाथी पैदल रथ घोड़े इत्यादि हजारों  
 पशु चारोंओरसे जालके समान घेरेहुए दृष्टि पडते थे । १० । और अपने वृत्ते  
 लोगोंकी हजारों ध्वजा नानाप्रकारके चिह्नोंकी दिखाईदीं, वह सब ध्वजा सुनहरी

४ At sunrise the armies of the Kauravas and the Pandavas stood  
 in battle array. The Kauravas and the Pandavas were armed with  
 irresistible weapons, missiles and armour. After this, when it was  
 broad day light, the faces of the warriors of both the armies were  
 clearly discernible. ५ The elephants and chariots decked with gold  
 trappings looked like clouds and lightning. The army of charioteers  
 looked like a city and in the midst of all those armies was seen  
 Bhishma, your father, glorious like the full moon. ६ The warriors  
 of the army, armed with bows, swords, scimitars, maces, javelins  
 and other well polished weapons, took up their positions in ranks.  
 Elephants, foot soldiers, chariots, and horses by thousands surrounded  
 on all sides, forming a network. १० There were to be seen thousands  
 of ensigns belonging to both parties. The Golden banners shining



श ॥ ११ । काचना मणि चित्रागा ज्वलन्त इव पावका । अर्विमन्तो व्यराचन्त  
 भवजागेहाः सहस्रशः ॥ १२ ॥ महेन्द्रकेतवः शुभ्रा महेन्द्रसदनेधिपः । सन्नद्धास्ते  
 प्रवीराश्च ददृशुर्गुह्यं वांक्षिणः ॥ १३ ॥ उद्यतैरायुधैश्चित्रैस्तलवद्धा कलापिनः । ऋष  
 भाक्षा मनुष्ये द्राघशूमुखगता वसुः ॥ १४ ॥ शकुनिः सौवलः शल्यः आयः त्र्योषः जयद्रथः  
 विन्दानुविन्दौ केकेयाः काम्बोजश्च सुदक्षिणः । १५ ॥ श्रुतायुधः कालिगो जयत्सेनश्च  
 पार्थिवः । वृहद्वलश्च कौशल्यः कृन्वर्माच सात्वतः ॥ १६ ॥ दशैते पुरुष व्याघ्रा गुरा  
 परिघा वाहवः । अक्षौहिणीनां पतयो यज्वानो मूरी दक्षिणाः ॥ १७ ॥ एते चान्येच  
 बहवो दुर्योधन वशानुगाः । राजानो राजपुत्राश्च नीति मतो महारथाः ॥ १८ ॥ सन्नद्धः  
 समदृश्यत स्वेष्टघ्नान्केष्टवस्थिताः । बद्धकृष्णाजिना सर्वे बालनो युद्धशालिनः १९ ॥  
 हंष्टा दुर्योधनस्यायं ब्रह्मलोकायदीक्षताः । समर्था दशबाहिन्यः परिगृह्यन्पवस्थिताः  
 ॥ २० ॥ एकादशी घर्षराष्ट्री कौरवाणां महाचमू । अमृत सर्वसैन्यानां यत्र शातनः

अग्निके समान देदीप्यमान मणियोंसे जटित ऐसी वृष्ट पड़ती थी जैसे कि महाइन्द्र के  
 भवनों में उसी महेन्द्रकी ज्वेत भवजा होती है उन युद्धाभिलाषी शस्त्रोंसे अलंकृत महा  
 बलवानोंने परस्पर में एक एकको देखा । १३ । आयुधोंको उठाये हुये शस्त्रोंसे  
 शोभित नलको बांधने वाले धनुषधारी शुभ्र नेत्रोंसे प्रकाशमान राजा लोग सेनाके  
 मुखपर आकर सुशोभितहुए, सौवलका पुत्र शकुनी, शल्य, अमन्तीका राजा जयद्रथ  
 विन्द, अनुविन्द, केकय देशी राजा काम्बोज सुदक्षिण । १५ । श्रुतायुध, कालि-  
 न्द्र, राजा जयत्सेन यह दशों महा शूरवीर पुरुषोत्तम परिघतमान भुजाधारी वृहदक्षि  
 णा के यज्ञ करनेवाले अक्षौहिणिया के स्वामी, यह सब ओर अन्य बहुतसे नीतिज्ञ  
 महारथी राजा और राजकुमार जो कि दुर्योधनकी स्वाधीनतामें वर्तमानये सब  
 अपनी २ सेनामें सावधानी से नियत भूषण शस्त्रादिकों से अलंकृत काले मृगचर्म  
 धारी महाबली युद्ध म कुशल प्रसन्न और दुर्योधनके निमित्त ब्रह्मलोक के अर्थ

like fire with jewels, looked like the white banners on the palaces  
 of India. The great warriors, armed with weapons and desirous of  
 battle looked at one another. 13 Many glorious kings, armed with  
 arms and armour, great archers with bulging eyes, stood at the head  
 of their armies. Shakuni the son of Suval, Shalya, Jayadrath of  
 Avanti Vind, Anuvind, Kings of Karkya Kamboj and Sudakshin,  
 ( 15 ) Shrutayudh, Kalind and King Jayatsen all these ten warriors,  
 best of men, having arms like clubs, performers of sacrifices with  
 large donations, each a leader of an *akshauhini* of army all these and  
 many other Politicians, Kings and princes under the banner of  
 Duryodhan, stood in the midst of their armies, keeping a careful  
 watch, decked with ornaments and weapons, wearing hides of black  
 deer, of immense strength, skilful in battle, cheerful, ready to lay  
 down their lives for the sake of Duryodhan. They kept their

योऽग्रणीः ॥ २१ ॥ श्वेतोष्णीषं श्वेतहयं श्वेत चर्मणं मच्युतम् । अपह्वाम महाराज  
भीष्म चन्द्र मिथो दितम् ॥ २२ ॥ हेमतालध्वजं भीष्मं राजते भ्यन्दने स्थितम् । श्वेता  
भङ्ग तीक्ष्णांशुं दृष्ट्वा कुरुपाण्डवाः ॥ २३ ॥ सृष्ट्याश्च महेश्वासा धृष्टद्युम्नपुरोगमा ।  
जुष्ममाणं हर्षिहं दृष्ट्वा सद्रसृगा यथा ॥ २४ ॥ धृष्टद्युम्नसुराः सर्वे समु  
द्विचिजिरेमुहुः । एकादशतः शत्रुणावाहन्यस्तत्र पार्थिव ॥ २५ ॥ पाण्डवानां तथा  
सप्त महापुरुषपावताः । उन्मत्तमकरावर्त्तौ महाश्रावसमाकुलौ ॥ २६ ॥ युगं नो  
समयेतो द्वौ दृढयेते सागरपथिव । नैव नस्तदृशो राजन् दृष्टृष्वो न च धृत । अर्नाकानां  
समत नां कौरवाणां तथापि च ॥ २७ ॥

इति भीमहाभारते भीष्मपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि सैन्यवर्णने

षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

दीक्षित और समर्थ दश संख्याकी सेनाको लेकर स्थिर हुए । २० । और ग्यारहवीं  
कौरवी महाभारी दुर्योधनी नाम विख्यात सेना जिसके स्वामी भीष्मजी थे वह सेना  
सब सेनाओं के आगे वर्चमान थी हे राजा ऐसी महा तेजस्वी असंख्य सेनामें हमने  
श्वेत पगड़ी श्वेतछत्र और कवचको धारण किये दुराधर्ष चन्द्रमा के समान उदय  
रूप कौरवेन्द्र भीष्मजी को देखा बड़े धनधारी बाण विद्यामें कुशल छोटे मृगों के  
समान वह संजय देश वासी जिनका आधिपति धृष्टद्युम्न था जम्हाई लेते हुए इन  
महा सिंहरूपी भीष्मको देखकर महाभयभीत हुए । २४ । हे राजा यह तेरी ग्यारह  
अर्द्धाङ्गिणी सेना शोभायमान हुई और इसी प्रकार पाण्डवों की सात अर्द्धाङ्गिणी  
महा पुरुषोंसे रक्षित होकर तयार हुई और दोनों सेना ऐसी दिखाई देती थी जैसे  
कि युगके अन्त वाली प्रलयमें दोनों ओरसे तरंग उठते हुए महा भयानक मदोन्मत्त  
मकरग्राहमादि जीवों से भरे हुए दो समुद्र व्याकुल होते हैं हे राजा हमने कारवों  
की इकट्ठी हुई सेनाका ऐसा युद्ध प्रथम कभी न देखा था न सुना था २७ ॥

station at the head of the ten divisions of the army 20 The eleventh  
division, known as the great army of Duryodhan, led by Bhishm,  
was in advance of all other divisions. In that countless army of  
great glory, I saw Bhishm the leader of the Kauravas, intrepid,  
shining like the moon with his white turban, white umbrella and  
armour on The residents of Srinjaya, under the leadership of  
Dhrishtadyumna, were terrified like a flock of small animals at the  
sight of Bhishm the great and skilful archer who seemed to them  
to be like a yawning lion 24 Thy eleven akshauhinitis looked grand  
and so were the seven akshauhinitis of the Pandavas, also protected  
by great warriors. Both the armies looked like the waves of two  
angry seas with their sharks and crocodiles, coming to meet each  
other at the end of the Yuga I had never seen or heard before a  
battle of two such great armies." 27.

सञ्जय उवाच ॥ यथा स भगवान् व्यासः कृष्णद्वैपायनोवर्तते । तथैव सहिताः सर्वे समजगमुर्महीक्षितः ॥ १ ॥ मघाविषयगः सोमस्तादृशं प्रत्यपश्यत् । दान्प्यमानोऽपि सम्प्रेक्षित्वा सप्त महाग्रहा ॥ २ ॥ द्विधाभूत इवादित्य उदये प्रत्यदृश्यत । ज्वलन्त्या शिष्या भूयो भानुनालुदितो रविः ॥ ३ ॥ चवाशिरे च दीप्तिमां दिशः गोमायुवायसाः । लिप्समाना शरीराणि मांसशोणतभोजनाः ॥ ४ ॥ अहन्यहनिपाथीनां वृद्धः कुरुपितामहः । शरद्वाजात्मजश्चैव प्रातरुत्थाय संयतौ ॥ ५ ॥ जयोस्तु पाण्डुपुत्राणां मृत्युचतुरारन्दमौ । युयुधाते तवार्पाय यथा स समयः कृतः ॥ ६ ॥ सर्वधर्मविशेषज्ञः पिता देवव्रतस्तव । समानीय महीपालानिदं वचनमवर्तात् ॥ ७ ॥ इदं यः क्षत्रियाद्वारं स्वर्गायापावृतं महत् । गच्छध्वं तेन शक्यं ब्रह्मणः सहलोकताम् ॥ ८ ॥

अध्याय ॥ १७ ॥

संजय बोले कि जिसप्रकार उन भगवान् कृष्ण द्वैपायन व्यासजीने कहा है उसी प्रकार सब राजालोग युद्धभूमिमें आपहुंचे । १। उसदिन मघानक्षत्रमें चन्द्रमा मासहुआ और आकाश के मध्यमें सातमहाग्रह राहुकेतु आदि महातेजधारी मासहुए और सूर्य देवता उदयहोने के समय दोरूपसे दिखाई दिये फिर वह प्रकाशवान् सूर्य अग्नि की ज्वाला के समान उदय हुआ और मांस रुधिर भोजन करनेवाले लोथोंके चाहनेवाले काक और शृगालों के चारों दिशाओं में शब्दहोनेलगे । ४। शत्रुओं के विजयकर्त्ता सावधान चित्त सेनाओं के स्वामी कौरवों के पितामह दृढ़ भीष्मजी और भारद्वाज के पुत्र द्रोणाचार्य जीने बारंबार यह कहा कि कुन्तीके पुत्र पांडव लोगोंकी विजय हो और तेरे निमित्त युद्धकरेगे इसप्रकारसे वचनकहकर नियम किया, तब सब धर्मके जाननेवाले देवव्रत नाम आपके पिता सवरामाओंको बुलाकर यह वचन बोले कि हे क्षत्री लोगो तुम्हारे स्वर्ग के निमित्त यह युद्धरूपी बहुत बड़ा द्वार खुलाई उस द्वारके द्वारा तुम सब इन्द्र और ब्रह्माजी की सन्धिकदताको पावो । ८ । यह

### CHAPTER XVII

"The kings of the land," said Sanjaya, "mustered for the encounter, just as Vyas had said. The day on which the battle commenced, Soma had approached the region of Pitrís. The seven large planets as they appeared in the sky, looked like the blazing fire. The sun looked as if divided into two, and shone like fire. Carnivorous jackals and crows, expecting corpses, began to utter fierce cries from all directions which seemed on fire. Every day Bhishm the grandfather and Kripicharya used to say early in the morning, "Victory to the Pandavas," although they fought according to their promise. Thy father Devabrat, firm on duty, summoned all the kings and said to them, "Ye Kshatryas, the door of heaven is open for you. Go through it to the regions of Indra and Brahma. The rishis of old have showed you this eternal path. Honour yourself by engaging

एवमः शाश्वतं पन्थाः पूर्वं पूर्वतैरे कृतः । सम्भावयध्वमा माननव्यग्रमनसो युधि  
॥ ९ ॥ नाभागोद्य ययातिश्च मान्धाता नृप्यो नृपः । संसिद्धा परमं स्थानं गता  
कर्मभिरिदृशैः ॥ १० ॥ अमर्गं क्षत्रियस्यैष यथाधमरणं गृहे । यद्यो निघनं याति  
साध्य धर्मः सनातन ॥ ११ ॥ एष मुक्ता महीपाला भीष्मेण भरतर्षभ । निर्ययु-  
स्थान्यनीकानि शोभयन्तो यथाचमैः ॥ १२ ॥ स तु वैदत्तनः कर्णः सामात्य सह  
यन्धुभिः । न्याम्यत समरेश्वरं भीष्मेण भरतर्षभ ॥ १३ ॥ अपैतकर्णाः पुत्रास्ते  
राजानश्चैष तावका । निर्ययु सिंहनादेन नादयन्तो दिशो दश ॥ १४ ॥ श्वतै-  
रुद्यमैः पताकाभर्ध्यजयारणवाजिभिः । तान्यनीकानि शोभन्ते गजैर्यपदातिभिः  
॥ १५ ॥ भेरीपणयश्चन्द्रैश्च पुन्दुभिर्नाच नि स्थनैः । रथनेमिनिनादैश्च पशून्वा  
पुलितानह्वी ॥ १६ ॥ कावनाङ्गकैर्यैः कर्मुकैश्च महारथाः । आजगतागव्यराज-त

सनातन मार्ग प्राचीन दृष्टोने तुम सन्तोषों के निर्मल नियत किया है तुम युद्ध में प्रह-  
साचित होकर अपनी बड़ी सावधानी से लड़ो, राजा नाभाग, ययाति, मान्धाता आदि  
बहुतसे महात्मा ऐसीही युद्धरूप कर्मों के द्वारा सिद्धरूप होकर उत्तम २ स्थानों को  
गये । १० । वरम रोगादि से जो क्षत्रियों का मरना है वह अमर्ग है और जो  
युद्ध में शस्त्रों के द्वारा मरता है वही क्षत्री का सनातन धर्म है है भरतर्षभ इसी प्रकार  
से भीष्मजी के मनन भाये हुए राजालोग अपनी २ सेना उत्तम रथों से शोभित और  
बाणों से अलंकृत करके मस्थित हुए और वह सूर्यका पुत्र कर्ण अपने यन्त्री और  
भाई यन्धुओं समेत युद्ध में भीष्मजी के कारण शस्त्रों का त्याग कर गया और आप के पुत्र  
और सन राजा लोग कर्ण से पृथक् होकर सिंहनाद करते हुए दशों दिशाओं को  
चले वह सब सेना श्वेत छत्र और ध्वजा पताका हाथी घोड़े रथ और पदातियों से  
शोभायमान थी । १५ । उस समय भेरी पणय पुन्दुभियों के शब्द और रथ के  
चक्रों की ध्वनि से, पृथ्वी महान्याकुल थी और महारथी लोग सुवर्ण के वाजुवन्द

in war with attentive minds Nabhag, Yayati, Mandhata, Nohush and Nrig obtained success and high regions of bliss by such deeds of prowess, 10. "To die of a disease at home is derogatory to a kshatriya, to die under arms in battle is his eternal duty" Thus addressed by Bhishm, the kings occupied their excellent cars and proceeded at the head of their respective divisions. Only Karan the son of Surya went way from the field of battle on account of Bhishm, your sons and other kings separated themselves from Karan and went on roaring like lions. All that army looked beautiful with white umbrellas, banners, elephants, horses, chariots and foot soldiers. 15 The earth was agitated with the sounds of drums, labors, cymbals and the

साग्नय पथेता इव ॥ १७ ॥ तालेन महता भीष्म. पञ्चतारेण केतुना । धिमला  
 दित्यसङ्काशास्तस्थौ कुरुचमूपातिः ॥ १८ ॥ ये त्वदीयामहेष्वासा राजानो भरतर्ष  
 भ । अवर्त्तन्त यथादेश राजन् शान्तनवस्यते ॥ १९ ॥ स तु गोपासन शैव्य  
 सहित सर्वराजामिः । ययौ मातङ्गराजेन राजार्हेण पताकिना ॥ २० ॥ पञ्चवर्ण  
 स्वनीकानां सर्वेषामग्रतःस्थितः । अश्वत्थामा ययौ यत्तः सिंहलाङ्गुलकेतुना ॥ २१ ॥  
 धृतायुधधित्रसेन पुरामित्रो विविंशति । शल्यो भूरिश्रवाश्चैव विकर्णश्च महारथः  
 ॥ २२ ॥ एते सप्त महेष्वासा द्रोणपुत्रपुरोगमा । स्यन्दनैर्वारवर्माणो भीष्मस्थासन्  
 पुरोगमाः ॥ २३ ॥ तेषामपि महोत्सेधा शोभयन्तो रथोत्तमाः । आजमानावरो  
 चन्त जाम्बूनदमयाध्वजा ॥ २४ ॥ जाम्बूनदमया वेदी कामण्डलुविभूषिता । केतु

केयूर और धनुषों से प्रकाशित होकर ऐसे शोभायमान थे मानों ज्वालामुखी पर्वत  
 ही हैं । १७ । और कौरवों की सेना के रत्नक पचताराधारी ताल वृक्ष के समान  
 ऊँचे घड़ी ध्वजा समेत निर्भल मूर्य के समान नियत हुए हे राजा जो बड़े धनुर्धारी  
 शस्त्र के वेत्ता राजालोग तेरी सहायता में आये हैं वह सबभी अपने २ योग्य स्थानों  
 पर भीष्मजी के समीप वर्त्तमान हुए तदनन्तर गोवाशन शैव्य राजाओं के योग्य  
 गजेन्द्र आदि चिह्नधारी ध्वजाओं से शोभित सब राजाओं समेत चला और राजा  
 कमलवर्ण सत्र सेना के आगे चला । २० । और महा सावधान शस्त्रधारी अश्व-  
 त्थामा सिंह लांगूलवाली ध्वजा से संयुक्त होकर गया और धृतायुध, चित्रसेन, पुरु-  
 मित्र, विविंशति, शल्य, भूरिश्रवा, और महारथी विकर्ण यह सातों महारथी वाण  
 प्रहारी उत्तम कवच धारी हैं जिनमें मुख्य अश्वत्थामा रथमें सवार होकर भीष्मजी

rumbling of chariot wheels The mighty warriors decked with brace-  
 lets and armlets of gold and with their bows, shone like hills of fire  
 With his standered, tall as a palm tree, decked with five stars,  
 Bhishm the general of the Kaurav army, was glorious like the  
 sun. Those mighty archers of kingly rank that were on thy side,  
 took up their positions as Chishm ordered them Shuvya the king  
 of Govasans, accompanied by other king, went out on his royal  
 elephants under a banner. 20 Ashwathama of the complexion  
 of lotus went out, ready for every emergency, putting himself at the  
 head of all the divisions, with his standered bearing the device of the  
 lion's tail Shrutayudh, Chitrasen, Purumitra, Vivinshati, Shalya,  
 Bhurihrava and mighty Vikarn, these seven great archers, seated  
 on their chariots and protected by armour, followed Drona's son, in  
 advance of Bhishm The tall standards of these warriors, made of

राचार्यमुख्यस्य द्रोणस्य धनुषा सह ॥ २९ ॥ अनेकशतसाहस्रमनीरुमनुकर्मत ।  
महान् दुर्योधनस्यास्तीष गो मणिमयो वज्रः ॥ २६ ॥ तस्य पौरवकालिङ्ग काञ्चो-  
जा मत्स्यक्षिणाः । क्षेमधन्वाश्च शल्यश्च तस्थुः प्रमुखतोरणा ॥ २७ ॥ स्यन्दनेन  
महाहोमं केतुना वृषभेणच । प्रकपश्रेष्ठ सेनाप्र मागधस्य कृपो ययौ । २८ ॥ तद्गुणपति  
ना गुम कृपेणच मनश्चिना । शारदाबुधरप्रस्थं प्राद्वयानां सुमहद्वलम् ॥ २९ ॥ अनीक  
प्रमुखे तिष्ठन् घराह्णेण महायशाः । शुशुभे केतुमुख्येन राजतेन जयद्रथ ॥ ३० ॥  
शत रथसहस्राणां तस्यासन् घशचत्तिन । अष्टौ नागसहस्राणि सादिनामयुता-

के आगे चला उन सबकी भी जाम्बूनद सुवर्ण की प्रकाशित ध्वजाएं शोभायमान  
हुई और आचार्यों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य की ध्वजा जांबूनद सुवर्णकी बेड़ी और कम-  
एडलुते शोभित धनुष समेन प्रकाशित हुई । २९ । और बहुतसी लाखों अनीकों  
समेत दुर्योधनकी बड़ी भारी ध्वजानाग चिह्न युक्त मणियों से जटित भी शोभित  
हुई और उसके आगे पौरव कालिङ्ग, काञ्चोज, मुदक्षिण, क्षेमधन्वा, शल्य, यह सब  
महारथी नियतहुए और मगध के राजा यडे मूल्य के रथ और दृढम चिह्न वाली  
ध्वजा समेन सेना मुखको खिंचते हुए से चले और पूर्वी राजाओं की बड़ी भारी  
सेना राजा अंग और महा उदार कृपाचार्य से रक्षित शरद ऋतु के बादलों की  
समान शोभायमानहुई । २९ । और बड़ा यशस्वी वाराहके चिह्न वाली श्रेष्ठ ध्वजा का  
रखनेवाला महा प्रकाशवान सेना के मुरसपर शोभित जिस के आज्ञावर्त्ता एक लाख  
रथीथे वह राजा जयद्रथ आठ हजार हाथी और छः अयुत रथों से युक्त होकर सेना

gold, beautifully set up for adorning their excellent cars, looked high-  
ly resplendent The standard of Drona, the foremost of preceptors  
had the device of golden star with a water pot and the figure of a  
bow 25 The standard of Duryodhan guiding many hundreds and  
thousands of divisions bore the device of an elephant decked with  
gems Paurava the ruler of Kalimgas, Sudakshin the ruler of Kamvo-  
ias, Kshemadhanwa and Salya took their position in Duryodhan's  
van On a costly car with his banner bearing the device of a bull  
and guiding the very van, the ruler of Magadh marched against  
the foe. The large force of the East looking like the fleecy clouds  
of autumn was protected by the chief of the Angas and Kripa of  
great energy. Putting himself in the van of his divisions with his  
beautiful standard of silver bearing the device of the boar, the  
famous Jayadriath looked very glorious 30 A hundred thousand  
chariots, eight thousand elephants and sixty thousand horses were

निपट् ॥ ३१ ॥ तत्सिन्धुपतिना राज्ञा पालितः क्षत्रिणामृतम् । स्नानतरपना  
गाधमशोभत महद्वलम् ॥ ३२ ॥ पञ्चा रथसदसूक्तु नमान मृत्युतेन च । पत  
सर्वकालदानां ययौ केतुमतासह ॥ ३३ ॥ तस्यपर्वतसकाशा व्यरोचन् महागजा ।  
यन्त्रतोमरतूणीरं पतानगमे सुशोभिता ॥ ३४ ॥ शुशुभ केतुमत्येन पावकन क-  
लिङ्गक । श्वेतच्छत्रेण निष्केण चापव्यजोच ॥ ३५ ॥ केतमानपि म तङ्गाव वि-  
जयमाकुशम् । आस्थित समरे राजन् मेघस्थ इव भानुम् ॥ ३६ ॥ तजसा  
दीप्यमानस्तु घोरणोत्तममास्थत । भगदत्तो ययौ राजा यथा यज्ञघरस्तथा ॥ ३७ ॥  
गजस्कन्धगतायास्ता भगदत्तेन सम्मितौ । विरानुविदाशव त्वां केतुमन्तमन्त्रतो  
॥ ३८ ॥ सरथानीकयान् द्यूहा हस्त्यद्वौ नृपशपिवान् । चाजिपक्ष पतत्युग्र मह

को शोभा देता था । ३१। और सब कलिंग देशों का ध्वजाधारी राजा साठ हजार  
रथ और दशहजार हाथियों समेत चला । ३२। उस के बड़े रथ पहाड़ के समान  
शोभायमान हुए और वह अपने यन्त्र तोमर तूणीर पताका आदिसे भी महाशोभित था  
और राजा कलिंगक अग्निका चिह्न रखनेवाली उत्तम राजा और श्वेत छत्र माला  
व्यजन चक्र समेत शोभित था । ३३। और हे राजेन्द्र युद्ध में राजा केतुमान भी  
विधेय और महा उत्तम अकुशान हाथी पर सवार ऐसा विदित हुआ जैसे कि वा-  
दल भर चढ़ा हुआ सूर्य दृष्ट पड़ता है और तेजसे प्रकाशमान उत्तम हाथी पर चढ़ा हुआ  
राजा भगदत्त भी ऐसा जाता था जैसे ऐरावत पर इन्द्र जाता हो । ३७। विन्द,  
अनुविन्द अवन्ती के राजा लोग भी हाथियों पर सवार होकर उस वजाधारी भग-  
दत्त के समीपवर्ती और आग्राकारी हुए वह रथा की अनीक रखने वाला भयानक  
द्यूह जिसके अंग रूप हाथी राजा रूप शिर और घोड़े स्त्री पक्ष ह सब ओर को

under his command. The huge division of the van, headed by the  
king of Sindhu containing numerous cars, elephants and cavalry  
looked glorious. The ruler of Kalinga with Ketumat had in his retinue  
sixty thousand chariots and ten thousand elephants looking like hills  
and equipped with machines, lances, quivers and standard, were glori-  
ous to behold. The ruler of the Kalingas with his tall standard shining  
like fire, white umbrella, golden sun shade and chariots shone brilli-  
antly. Ketumat too, riding an elephant with a good and beautiful hook  
was stationed in battle like the sun in the midst of clouds. King Bhag-  
datta of great energy rode his elephant and looked like Indra. Yind  
and Anuvind the two princes of Avanti equal in rank to Bhagdatta  
followed Ketumat on their elephants. Arranged by Drona  
Bhim, Ashwathama, Vahlik and Arjuna, the phalanx of elephants

सन् सर्वतोमुखः ॥ ३९ ॥ द्रोणेन विहितो राजन् राज्ञा शान्तनवेन च । तथैवाचार्यं  
पुत्रेण बाह्लीकेन कृपेण च ॥ ४० ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि सैन्यवर्णने

सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

संजय उवाच । ततोमुहूर्त्तलुमल शब्दो हृदयकम्पनः । अश्रूयत महाराजयो-  
धानां प्रययुस्तताम् ॥ १ ॥ शृङ्खलुभिर्घोषश्च चरणानां च वृंहितः । नेमिघोषैर-  
यानां च दीर्यवीर्यसुन्धरा ॥ २ ॥ हयानां हेषमाणानां योधानाञ्चैव गर्जताम् । क्षणे  
नैव नभोद्गमः शब्देनापूतिस्तदा ॥ ३ ॥ सुप्राणांतव दुर्धर्य पाण्डवानां तथैव च ।  
समकम्पन्त सैन्यानि परस्परसमागमे ॥ ४ ॥ तत्र नागाऽप्यश्वेव जाम्बूनद्विभूषि-  
ताः । आजमाना व्यहृदयन्त मेघा इव साधद्युतः ॥ ५ ॥ ध्वजा बहुविधाकारास्ता

मुख किये हुए हैं मताहुआ उग्ररूप होकर गिरता है उसको द्रोणाचार्य, राजा भीष्म  
अश्वत्थामा, बाह्लीक और कृपाचार्य इन पांचों ने रचा है ॥ ४० ॥

अध्याय ॥ १८ ॥

संजय बोले हे महाराज इसके पीछे युद्धाभिलाषी महा शूरवीरों के कठिन भयं-  
कर शब्द हृदय के कंपाने वाले सुने गये, शृङ्खलुभिर्घोषों के शब्द और हाथियों की  
चिंगाड़ वा रथों पहियों के महा शब्दों से पृथ्वी कंपायमान सी होगई घोड़ों के हिं-  
हिनाह और गर्जना करते हुए महा मल्ल शूरवीरों के शब्दों से पृथ्वी और आकाश  
एक क्षणमात्र में शब्दों से भरगये और वह महा दुर्धर्य आपके पुत्र और पांडवों की  
सेना के मनुष्य परस्पर में सम्मुख होकर कंपायमान हुए वहां जाम्बूनद सुवर्ण से अलं-  
कृत हाथी और रथ ऐसे दिखाई दिये जैसे विजली समेत बादल दिखाई देते हैं । ५ ।

for its body, the Kings for its head and the cavalry for its wings  
With face towards all sides, the phalanx seemed to smile and ready  
to spring 40.

### CHAPTER XVIII

Sanjaya said, " Soon after, a loud uproar, shaking the heart,  
made by the warriors who were ready to fight, was heard The  
earth seemed to rend with the sounds of conchshells, drums, the  
grunts of elephants and the rumbling of chariot wheels. And soon  
the earth and sky were filled with the neighing of horses and the  
shouts of warriors. The troops of thy sons and those of the Pandavas  
trembled at the time of encounter. The elephants and chariots,  
decked in gold, looked glorious like clouds decked with lightning. 5.



यकानां नराधिप । कायनाकादिनरेजुर्वलिता इव पावकाः ॥ ६ ॥ स्वेपाञ्चैव परोपाञ्च  
समदृश्यन्त भारत । महेंद्रकेतव शुभ्रा महेंद्रसदनेधिवा ॥ ७ ॥ काञ्चनैः कवचैर्वीराज्वलनार्क  
समप्रभैः । सश्रद्धाः समदृश्यन्त ज्वलनार्कसमप्रभाः ॥ ८ ॥ कुरुयोधवरा राजन्  
विचित्रायुधकामुकाः । उद्यतैरायुधैश्चैस्तलवद्धाः पनाकिनः ॥ ९ ॥ ऋषभाक्षा  
महेष्वासाश्चसूमुखगनावधुः । पृष्ठगोपास्तु भीमस्य पुत्रास्तव नराधिप । दुःशासनो  
दुर्विपद्हे दुर्मुखो दुःसहस्तथा ॥ १० ॥ विविंशतिचित्रसेनो विकर्णश्च महारथ ।  
सत्यव्रतः पुत्रमित्रो जयो भूरिश्रवाः शलः ॥ ११ ॥ तथा विंशतिसाहस्रास्तथैवाम-  
नुपायिन । अर्भीबाहो शूरसेनाः शश्वथोय चसातयः ॥ १२ ॥ शाब्बा मत्स्यास्तथां

और सुवर्ण के बाजूबंद पहरे हुए आपके पुत्रों की ध्वजाओं में नाना प्रकारके रूप-  
वाली, अग्नि की ज्वाला अग्नि के समान प्रकाशमान हुई इसी प्रकार मव अपने और  
दूसरे लोगों की भी ध्वजा ऐसी दिखाई देती थी जैसी कि महा इन्द्र के भवनों में उस  
की तेजसी ध्वजा वर्तमान हो, अग्नि और सूर्य के समान प्रकाशमान और सुवर्ण  
के कवचों से अलंकृत वीर लोग भी सूर्य और अग्नि के ही समान प्रकाशित दृष्टपडे  
हेराजा कौरवों की सेना में श्रेष्ठ विचित्र आयुध वा धनुष धारी आयुधों समेत उठाये  
हुए छत्र ताल और पिनाक नाम धनुषों के बांधने वाले सुन्दर नेत्रधारी बाणविद्या  
में कुशल सेना के मुख पर वर्तमान होकर शोभायमान हुए और हे राजा आगे कहे  
हुए आपके पुत्रभीष्मजी के रक्तक पीठ के पीछे की ओर हुए अर्थात् दुःशासन, दुर्वि-  
पद्, दुर्मुख, दुःसह, विनिशति, चित्रसेन, महारथी, विकर्ण, ११ । सत्यव्रत, पुत्र  
मित्र, जय, भूरिश्रवा, शल, और इसी प्रकार बीस हजार रथ इन के पीछे चलनेवाले

The banners of different forms belonging to the warriors on thy side, adorned with golden rings, looked resplendent like fire and resembled the banners of Indra on his celestial palaces. The heroic warriors accoutred in golden coats of mail, blazing like the sun were glorious to behold like fire on the sun. The chief Kaurava warriors with their girded bows and weapons upraised and their hands protected with leather guards, leaning lancers, and the mighty archers with eyes as large as those of bulls, placed themselves at the heads of their divisions. Those of thy sons who protected Bhishm from behind were [ 10 ] Dushasan, Durvishah, Durmukh, Dussah, Vivinshati, Chitrassen and valliant Vikarn. 11. With them were Satyavrat, Purumitra, Jaya, Bhurishrava, Shal and twenty thousand charioteers. The Abhushabas, the Shursenas, the Shivis, the Uasatis, the Shwalyas, the Matsyas, the Amvashtas, the Traigartas, the Kekayas, the Sauvira,

चष्टास्त्रैः गताः केकयास्तथा । सौवीराकैतवाः प्राच्याः प्रतीच्योदीच्यवाः सनः ॥ १३ ॥  
 द्वादशैते जनपदाः सर्वे गुरास्तनुयजः । महता रथवेशेन ते वरक्षुः पितामहम् ॥ १४ ॥  
 अनीकं दशसाहस्रं कुञ्जरानां तरन्विनाम् । मागधो यत्र नृपातस्तद्रथानीकमवयात् ॥ १५ ॥  
 रथानाञ्चक्राश्च पादरक्षाश्च दन्तिनाम् । अमवन् याह्नमिमध्ये दशाना-  
 मयुनानि पट् ॥ १६ ॥ पादाताश्चाग्रतो गच्छन् धनुश्चर्मासपाणयः । अनेकशतसा-  
 हस्रान्ध्वजप्रासपोधिनः ॥ १७ ॥ अक्षौहिण्यो दशैकाश्च तत्र पुत्रस्य भारत । अदृश्यं त-  
 महाराज गङ्गेव यमुनान्तरे ॥ १८ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि सैन्यवर्णने  
 अष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥

हुए, अभीपाह, गुरसेन, शिवय, वसातय, शाल्व, मत्स्य, अवष्ट, वैगर्च, केकय, सौवीर,  
 कैतव, और पूर्वी पश्चिमी और उचरीय राजाओं के समूह इन बारह देशों के नाम से  
 विख्यात सब गुरवीर देशों के त्यागने वाले राजाओं ने बहुत से रथों समेत पितामह  
 की रक्षा की, और शीघ्रगामी हाथियों की एकलाख अनीक थी उस रथों की अनीक  
 के साथ मगध का राजा चला और सेना के मध्यवर्ती रथों के पहियों की और हा-  
 थियों के पैरों की रक्षा करने वाले साठलाख धनुष खड्ग बाल धारण किये हुए नख  
 और प्रासनाम आयुधों से लड़नेवाले लाखों पदाती मागे को चले, हे महाराज धृतराष्ट्र  
 इस प्रकार से आपके पुत्र की ग्यारह अर्क्ष हिण्णी सेना ऐसी दृष्टि पड़ी जैसे कि गंगा  
 में यमुना अन्तर्गत होकर दीखती है । १८ ।

the Kitavas and the people of the East, the west and the North; these twelve brave races were resolved to fight reckless of their lives and protected the grandfather with innumerable chariots. With an army consisting of ten thousand swift elephants, the king of Magadhi followed them. Those who protected the elephants and the wheels of chariots, were six millions in number. The foot soldiers that marched in advance, armed with bows swords and shield, numbered many millions. They used also their nails and darts in fighting. The eleven akshauhinis of thy son looked like the Yamuna entering the Ganges." 18.



धृतराष्ट्र उवाच ॥ अक्षौहिण्यो दशैकाश्च व्यूहांश्च वा धिष्ठिरः । कथमल्पेन सैन्ये  
न प्रत्यव्यूहत पाण्डव ॥ १ ॥ यो वेद मानुष व्यूहं दैवं गांधर्व मासुरम् । कथं भीमं  
स कांतेयः प्रत्यव्यूहतसंजय ॥ २ ॥ संजय उवाच ॥ घास्तेषां प्राण्यनीकानि दृष्ट्वा व्यूहा  
नि पांडव । अन्य भापत धर्मात्मा धर्मराजो धनंजयम् ॥ ३ ॥ महर्षेर्वचनात्तान वेद्य  
न्निवृहस्पते । संहतान् योधयेद्व्यान् कामं विस्तारयेत् बहून् ॥ ४ ॥ सूचीमुख मनीकं  
व्या दव्यानां बहुभि सह । अस्माकञ्च तथा सैन्य मल्पीय सुतरां परैः ॥ ५ ॥ एत  
द्वचन मात्राय महर्षेर्व्यूह पांडव । एतत् कृत्वा धर्मराज प्रत्यभापत पांडवः ॥ ६ ॥ एष  
व्यूहामिते व्यूहे राजसत्तम दुर्जयम् । अचलं नाम वज्राख्यं विहितं वज्रपाणिना ॥ ७ ॥

अध्याय ॥ १९ ॥

धृतराष्ट्र बोले कि पांडव युधिष्ठिर ने व्यूह रची हुई ग्यारह अक्षौहिणी  
सेना को देखकर किस प्रकार से अपनी थोड़ी सी सेना से व्यूह की रचना की  
हे संजय जो युधिष्ठिर कि मनुष्य देवता गन्धर्व और असुर सम्बन्धी व्यूहों को  
जानता है उस कुंती के पुत्र ने किस प्रकार से अपने व्यूह को रचा, संजय ने कहा  
कि धर्मात्मा धर्मराज पांडव युधिष्ठिर दुर्योधन की व्यूह रची हुई सेना को देखकर  
अर्जुन से कहा कि हे तात अर्जुन वृहस्पति महर्षी के वचनों से हम जानते हैं कि  
थोड़ी सेना को मिलाकर लड़ाये और बहून्सी सेना को इच्छापूर्वक फटलावे बहुत  
से मनुष्यों से लड़ने में थोड़े मनुष्यों की सेना का सूचीमुख होय इनी प्रकार हमारी  
सेना थोड़ी है । ५ । और शत्रुओं की अधिक है सो हे अर्जुन महर्षी के इस वचन  
का जानकर सेना का व्यूह रच यह मुनकर अर्जुन युधिष्ठिर से कहा कि हे राजेन्द्र मैं  
इस तेरी सेना के व्यूह की वह रचना करना हूँ जो इन्द्र की नियत करी हुई वज्ररूप

## CHAPTER XIX

Dhritrashtra said, "Seeing the eleven akshauhinis arrayed in the order of battle, how did Yudhishtir the Pandav array his smaller army? How did Kunti's son array his army against Bhishm who was acquainted with all kinds of array, human, celestial, Gandharva and Asura?" "Seeing Dhritrashtra's army arrayed in order of battle, the virtuous Pandav, King Yudhishtir the just addressed Arjun, saying, "Vishvaspati tells us that a smaller army when brought against large numbers should be condensed, while a large army may be spread at pleasure. A smaller army arrayed against a large one should be wedge shaped. Our troops compared with that of the enemy is smaller. Bear in mind the words of the great rishi, arrange the army." "I shall arrange the army into the shape of vajra,

यः सगता इमेद्भूत समरे दुःसह परैः । सनः पुरो योत्स्यते वै भीम प्रहरतां  
 वर ॥ ८ ॥ तेजास रिपुसैन्याना मृदन् पुरुषसत्तमः । अमेऽग्रणीयोत्सयात् नोमुद्धो  
 पायविचक्षण ॥ ९ ॥ य इष्ट्वा कुरव सर्वे दुर्योधनपुंगवमाः । निवर्त्तिष्यन्ति  
 स्रजस्ताः सिंहधुदमृगा यथा ॥ १० ॥ त सर्वे सश्रयिण्याम प्राकारमकुतोभयाः ।  
 भीम प्रहरतां भ्रष्ट देवराजमेवामराः ॥ ११ ॥ न हि सोऽस्ति पुमादलोके  
 य सकुड्म वृकादस्य । द्रष्टुमत्युग्ररूपिणं विपहेत नरर्षभम् ॥ १२ ॥ पवमुक्त्वा  
 महाबाहुस्तथा चक्रे घनञ्जय । व्यूह्य तानि घला-वाशु प्रययौ फाल्गुनस्तथा ॥ १३ ॥  
 सम्प्रयातान् कुर्वन् दृष्ट्वा पाण्डवानां मत्तचम् । गद्वय पूर्णास्तिमिता स्पन्दमाना  
 व्यदधत ॥ १४ ॥ भीमसेनोऽग्रगन्तेषा धृष्टद्युम्नश्च वीर्यवान् । नकुल सहदेवश्च  
 धृष्टकेतुश्च पार्थिवः ॥ १५ ॥ विराटश्च ततः पश्चाद् राजाधाक्षोहिणीवृत । भानुभि सह

अचल नाम है जो वह लडाई में बायु के समान उठा हुआ शत्रुओं से असह्यमहार कर-  
 नेवालों में मुख्य और युद्ध के विचारों में कुशल पुरुषोत्तम भीमसेन सम्पूर्ण सेना के  
 पञ्जों को विदीर्ण करना हुआ हमारे आगे आगे चलेगा और सब कौरव लोग जिन  
 का अग्रवर्ती दुर्योधन है वह सब कौरवी सेना भीमसेन को देखकर ऐसे लौटेंगी जैसे  
 कि सिंह को देखकर छोटे छोटे मृगों के युथ भागते हैं हम सब निर्भय होकर उस  
 महारकर्त्ताओं में भेष्ट पर कोटारूप भीमसेन के समीपी होकर ऐसे रत्नालगे जिस  
 प्रकार से देवता-उन्मत्ती रत्ना में होते हैं । ११ । ऐसा मनुष्य इस लोक में कोई नहीं  
 है जो इस क्रौरुप भयकारी भीमसेन को देखकर ऐसा कहकर उस महाबाहु अर्जुन  
 ने इसी प्रकार से किया और बड़ी शीघ्रता से अर्जुन व्यूहकी रचना करके चला  
 गया तिस पीछे गंगाजी के समान पूर्ण और अचल पांडवों की सेना कौरवों को देख  
 कर कुछ चलायमान हुई इस सेना के अग्रपति भीमसेन, पराक्रमी धृष्टद्युम्न, नकुल,  
 सहदेव और राजा धृष्टकेतुयो १५ । उस के पीछे राजा विराट एक अक्षौहिणी सेना और

designed by Indra," replied Arjun Bhim who is like the bursting  
 tempest unbearable by the enemy will lead our army 8 Bhim  
 who is so skilful in fighting will work in the van and will crush  
 the troops of the enemy Bhim the great destroyer of enemies, at  
 whose sight the followers of Duryodhan will run away in terror, as  
 lower animals do at the sight of a lion, while our men will seek his  
 shelter as if he were a wall or as gods seek the refuge of Indra 11  
 No living man can cast his eye on Virhadar of fierce deeds when  
 he is angry." Having said this, Dhananjay of mighty arms did as  
 he had said and quickly arranging his troops in battle array proceed-  
 ed against the foe The mighty army of the Pandavas, seeing the  
 Kaurava army in motion, moved like the rapid current of the  
 Ganges 14 Bhishma, Dhrishtadyum of great energy, Nakul,  
 Sphadev and Dhrishtaketu led the armies 15 King Virat,

पुत्रैश्च सोम्याश्चतुष्टयम् ॥ १६ ॥ चक्राक्षौ तु भीमस्य माद्रीपुत्रौ महाबुधौ । द्रौपदे  
या ससौमद्रा पृष्ठगोपास्तरस्त्रिन ॥ १७ ॥ धृष्टद्युम्नश्च पाञ्चालस्तपसा मोक्षमहा  
रथ । सहितः पूननाशुरैरभ्युदयैः प्रभद्रकैः ॥ १८ ॥ शिखण्डीतुततः पथादर्जुनेना  
भिरक्षितः । यत्तो भोष्मयिनः शयः प्रययौ भरतर्षभ ॥ १९ ॥ पृष्ठतः पृथुनस्यासीद्  
युयुधानो महाबलः । चक्राक्षौ तु पाञ्चाल्यौ युधामन्युश्चमोजर्मा ॥ २० ॥ कैकेयो  
धृष्टकेतुश्च चेकितानश्च वीर्यवान् । भीमसेनो गदा विप्रवज्रस्यसारमयी दहाम् ।  
चान् वेगेन महता समुद्रमपि शोषयेत् ॥ २१ ॥ एते तिष्ठन्ति सामात्या प्रेक्षन्तस्ते  
जनाधिपः । धृतराष्ट्रस्य दायदा इति वीभर्तुः प्रवीत् ॥ २२ ॥ भामसा तदा राजन्  
दर्शयस्वमहाबलम् । युधानन्तु तथा पार्थ सर्वसैन्यानि भारत ॥ २३ ॥ अपूजयस्तदा वा  
गामरजुपूलाभिरादवे । राजा तु मध्वमानीके कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः ॥ २४ ॥ बृहन्नि

भाई बन्धु पुत्रों समेत भीमसेन की रक्षा के निमित्त पीछे की ओर हुए और भीमसेन  
के रथकी रक्षा करने को नकुल और सहदेव दोनों भाई नियत हुए उनके पीछे द्रौपदी  
के पुत्र अभिमन्यु, रक्षा करने को उपस्थित हुए और पाञ्चाल देशी महारथी धृष्टद्युम्न  
शरों की सेनाका और प्रभद्रक नाम रथों का रक्षकहुए और हे भरत वंशिया में गेष्ट  
धृतराष्ट्र इन सबके पीछे अर्जुन से रक्षित भीष्म जी के मारने में कुशल शिखंडी चला  
और अर्जुन के पीछे रक्षा के लिये महाबली युयुधान हुआ और रथके पहियों की  
रक्षा के लिये पाञ्चाल देशी युधामन्यु और उत्तमौजा यह दोनों हुए, केकयदेशवासी  
धृष्टकेतु और पराक्रमी चेकितानभी साथ हुए और भीमसेन वज्रसारमयी दह गदाको  
धारण किये बड़े वेग से चलता हुआ समुद्र को भी शोषण करनेवाला था, ॥ २१ ॥  
हे राजा उसके पीछे अर्जुन भीमसेन से यह वचन बोला कि हे भाई भीमसेन तुम्हारे  
देखने को मंत्रियों समेत धृतराष्ट्रके पुत्र वर्धमान होकर नियतहैं तुम इनको अपना  
अतुल पराक्रम दिखाओ ऐसे वचनाके कहनेवाले अर्जुनको युद्ध भूमि में देखकर सब

surrounded by an abharuhum of army and accompanied by his  
brothers and sons, brought up the rear The two sons of Madri, of  
great glory protected Bhishm's wheels while the sons of Draupadi  
and the son of Subhadra of great energy protected from behind.  
Dhrishadyumn the mighty charioteer prince of Panchal with the  
brave warriors and the foremost of charioteers, the Prabhadraks,  
protected those princes from behind. Behind him was Shikhandi  
protected by Arjun advanced with concentrated attention for the  
destruction of Bhishm Behind Arjun was mighty Yuyudhan, and  
Yudhamanyu and Uttamoujas protected the wheels of his chariot,  
along with them were the princes of Karkaya and Dhrishitaketu  
with Chelitan Bhishmen, wielding his mace of the hardest metal  
and moving with great speed could dry up the very ocean The sons  
of Dhritrashtra with their counsellors were also pointed out by

दुर्योधनस्यैव चन्द्रिचलं विच । अक्षादिपद्याथ पावाटयो यत्र सेना महामना । विराटमन्व  
यान् पश्चात् पाउयार्थं पराक्रमी ॥ २५ ॥ तेषां मादित्यचन्द्रामा ज्वरं उत्तमभूषण ।  
नानाचिह्नद्वयं राजन् मध्येष्वसन् महाभयजा ॥ २६ ॥ समुत्सार्य ततः पश्चात् घृष्टयुगो  
महात्थ । अतः मे मह पुत्रं सैव गच्छत युधिष्ठिरम् ॥ २७ ॥ त्वदीय नापरपाच  
रथेषु । अपल न च राजन् । अभिभूयार्जुनस्यैवो रथे तस्या महापथि ॥ २८ ॥  
पदातात्त्वयतो गच्छ प्रासन्नस्यैव प्रियाण्य । अनेन शतम ह्यहो भीमसेनस्य रक्षिण  
॥ २९ ॥ दारणः दशसाहस्रं प्रमिश्रकरटामता । शुभा हेममयैर्जलिदीप्यमाना इवा-  
चता ॥ ३० ॥ क्षणत इव जीमूता महाहो पद्मगन्धिन । राजानमच्यु पश्चात् जीमूता

सेनाने अपने अनेक उचनों में उसको पूजा और कुन्तीका पुत्र राजा युधिष्ठिर मेना  
के मय में चनायमान पर्वतके समान मनवाने हाथियों में संयुक्त या इन सबके पीछे  
पाज्वालदेशी उड़ा साहसी पराक्रमी यज्ञने राजा एक अक्षादिणी मेना मथे राजा  
विराट के पीछे चला । २५ । जिनके रथों पर मृग चन्द्रना के समान प्रकाशित  
उत्तम मुद्रण के जाभूषणों में अनेक अक्षर मकार की चिह्नानी उड़ी २ नना  
वर्चमान थी तदन्तर महारथी घृष्टयुग्मने सेनाको हटाकर भाई यों मथे युधिष्ठिर  
को रक्षामे किया और हे धृतराष्ट्र तेरे पुत्राके प्रार अन्य राजाओं के रथोंपर जो बड़ी  
बड़ी उज्जयी उन सन्को तिरस्कार करके अर्जुन की श्रवण पर श्रीहनुमान जी  
अपने अनेक भारोंको लिये उर्चमान हुए बरती यष्टी आदि के रखनेवाले लाखों  
पटाती रक्षा करने के लिये भीमसेनके आगे चले । २९ । और गहस्यभोमे मद्र  
हालनेवाले उली महाजली सुनहरी जालों से शोभित प्रकंपी गडल से मद्र वर्मानेवाले  
बहुमूल्य वाले वर्षाकालीन मेयों के रूपकमल कीसी गन्धवाने दगहनारमदोन्मराहायी

Vibhatsu who directed Yudhishtir's attention towards Bhim  
While Parth was saying this, the troops congratulated him with res-  
pect King Yudhishtir, the son of Kunti took up his position in  
the centre of the army, surrounded by huge and furious elephants  
resembling moving hills King Drup d of Panchal of great prowess  
followed Virat with an Akshauhini of troops for the sake of the  
Pandavas. On the chariots of these king were tall standards bearing  
various devices, decked with excellent ornaments of gold and shining  
like the sun and the moon Leading those kings and making room  
for Yudhishtir, the mighty charioteer, Bhishma accom-  
panied by his brothers and sons, protected Yudhishtir from behind.  
But higher than all the standards on the chariots of thy army as  
well as on those of the other side was the one of Arjun bearing  
the device of Hanuman Hundreds of foot soldiers, armed with swords  
spears, and scimitars, went forward for the protection of Bhimsen.

इव धारिणः ३१ भीमसेनो गदाभीमा प्रकुर्यन् परिघापमाम् । प्रचक्ष्य महासेन्य दुराधर्षं  
महमना ॥ ३२ ॥ तमर्कमिव दुष्प्रेक्ष्य तप तमिव वाहनीम् । न शक्नु सवधोवास्त प्रति  
वीक्षितुमन्तिक ॥ ३३ ॥ वज्रो न मेघ स व्यूहा निर्भय सवतामुख । चाप विद्युत्प्रज्वा  
घोरो मुक्तो गाण्डीववनना ॥ ३४ ॥ यः प्रनिव्यूह्य तिष्ठति पाण्डवास्तव वाहिनीम् ।  
अजयो मानुषे लोक पाण्डवै रभिराश्रित ॥ ३५ ॥ स भया तिष्ठत्सुनैःपु सूर्यस्यादया  
प्रति । प्रावात्सपृषतो वायुर्निरश्रे स्तन यित्म न् ॥ ३६ ॥ विध्वंसाताथ विधवुर्नैवै शर्क  
रवर्षिण । रजश्चादूयतमहत्तमआच्छादयज्जगन् ॥ ३७ ॥ पपात महती चोल्का प्रामर्षी  
भरतर्षभ । उद्यन्त सूर्यमाहत्य व्यशीर्यत महास्थना ॥ ३८ ॥ अथ सनहा मानेषु सैन्येषु

राजाके पीछे चले उसकाल महा साहसी दुराधर्ष परिघ के समान भयानक गदाको  
धारण किये हुये बड़े प्रबल भीमसेन ने बड़ी भारी सेनाको खँचा तब उस मृत्यु के  
समान दुःखसे देखने योग्य सेनाके तपाने वाले भीमसेनके सम्मुख आकर वह स  
सेना समीपसे उसके देखने में असमर्थ हुई और वह वज्र नाम निर्भय सब ओरको  
मुख रखनेवाला भयकर व्यूह बड़ी भारी भयंकर रूप विजलीसे समुक्त गाडीव धनुष  
धारी अर्जुनसे रक्षित हुआ हे राजा तेरी सेनाके सम्मुख पाण्डवलोक जिसव्यूह को  
रचकर वर्तमानहै वह व्यूह चारों ओर पाडवासे रक्षित होकर इसलोक में महादुर्धर्ष  
है अर्थात् उनका विजय करने वाला कोई नहीं दिखाई देताहै । ३५ । सूर्योदयी  
स या के समय सब सेना के नियतहोनेपर बिना बारल आकाशीय जल कण रखने  
वाला महा प्रचण्ड वायुका वेग चला ककडा की खचनेवाली पृथ्वी सबधी महावायु  
चली उसके कारण बड़ी भारी धल ऐसी उड़ी कि जिससे सम्पूर्ण संसार आच्छा  
दित होगया उस समय महा शब्दवाले पूर्व को मुखकिये उग्र उल्कापात हुये और

30 Ten thousand elephants, with juice trickling down their cheeks  
and mouths like run drops from clouds possessing great courage  
shining with golden trappings huge as hills costly and emitting  
the fragrance of lotuses followed the king like moving mountains. 32  
The magnanimous and invincible Bhimsen, whirling his fierce mace,  
resembling large parigh or club seemed to crush the large army  
Dazzling the eyes of beholders like the sun, and scorching as it were,  
the hostile army, none of the warriors could look him in the face or  
approach too near him. The intrepid array, with its face towards all  
sides called vira having bows for the sign of lightning and very  
dreadful was protected by the wielder of Gandiv. Disposing their  
troops in this counter array against thy army, the Pandavas waited  
for battle and protected by the Pandava the army was invincible  
by human beings. 36 When both the armies stood at dawn  
waiting for sunrise a wind began to blow with drops of water and  
roll of thunder without clouds. The wind brought with it sharp

भरतर्षभ ! निष्प्रभोऽभ्युद्ययौ सूर्यः सघोषं भृशचालच ॥ ३९ ॥ व्यशीर्यत सनादाच  
भृस्तदा भरतर्षभ । निर्घाता वहवो राजन् दिदुःसर्वासु चाभवन् ॥ ४० ॥ प्रादुरासीद्र  
जन्तीमं न प्रज्ञायत किंचन । ध्वजानां धूयमानानां सहसा मातरिभ्यः ॥ ४१ ॥ किंकि-  
णीजालचद्गानां कांचनस्रग् वराभ्यैः । महतां सपतानामादित्यसम तेजसाम् ॥ ४२ ॥  
सर्वं क्षणक्षणी भूत मासीत्तालवनेष्विव । एवन्ते पुरुषव्याघ्राः पादया पुद्गलनिधिनः ॥ ४३ ॥  
व्ययास्थिताः प्रतिव्यूह्य तच्च पुत्रस्य चाहिनीम् । असन्त इवमज्जानो याधानां भरतर्षभ  
॥ ४४ ॥ दृष्ट्वाग्रतो भीमसेनं गदापाणि मचलितम् ॥ ४५ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि पांडवसैन्यव्यूहे

एकोनविंशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

उदय होनेवाले सूर्यको घातकरके फैल गये इसके पीछे फिर सब सेना के तैयारहोने  
के समय सूर्यका उदय प्रकाश से रहित हुआ और शब्दों के कारण पृथ्वी कंपाय  
मान हुई और अनेक प्रकार से हिलभुल कर जहाँ तहाँ फटभी गई और सब दिशा-  
ओं में हवाओं के परस्पर टक्करखाने से बड़े २ भयानक शब्द हुये ऐसी भारी  
कठिन धूल उड़ानी कुछ भी नहीं जानपड़ता था फिर अकस्मात् वायुसे कम्पायमान  
सुनहरी माला वा उत्तम वस्त्रों समेत सुद्रव्यंतिकावाले जालों से मंडित प्रकाशमान  
ध्वजाओं का ऐसा भ्रमणा शब्द हुआ जैसा कि ताल हलके वन में होता है हे  
भरतर्षभ इस प्रकार से वह युद्धको शोभा देनेवाले पुरुषोत्तम हाथ में गदा लिये  
हुए भीमसेनको आगे नियत देखकर आपके पुत्रकी सेना सम्मुखमें व्यूहको रचकर  
हमारे धीरोंकी मज्जाको निगल जानेवालोंके समान नियतहुई ४५ ॥

pebbles and a thick dust arose covering the world with darkness  
Largo meteors shot eastwards against the rising sun and broke into  
pieces with a loud noise In the meantime the sun rose without  
splendour, the earth shook with loud reports and cracked in many  
places The tall standards furnished with bells and decked with  
ornaments, flowers and rich drapery, shining like the sun, being shaken  
by the wind, gave a loud jingling noise like that of a forest of palm  
trees It was thus that the Pandavas who loved battle, arrayed  
their army against our own and the very appearance of Bhishma  
driving away the life out of our warriors with terror." 45.





धृतराष्ट्र उवाच सूर्योदयसंजय केन पूर्वं युयुत्सवो दृश्यमाणा इवासन् । मामकाश्च भीष्मनत्रा समीप पाण्डवाश्च भीष्मनेत्रास्तदानीम् ॥ १ ॥ केषां जगन्पुत्रो सोमसूर्यो स वायुः केना सेनाश्चापदाश्चाभयन्त । कया दूना मुखवर्णाः प्रसन्नाः सर्व मेव ग्रहि मेव यथावन् ॥ २ ॥ सञ्जय उवाच ॥ उभे सेन तुल्य मिश्रपथाते उभे व्यूहे दृष्टरूपेनरेद । उभ चित्र वनराजप्रकाशे तथैवोभे नागरवाश्वपूर्ण ॥ ३ ॥ उभे सेने बृहत्पौ भीमरूपे तथैवोभे भारत दुर्विषह । तथैवाभे स्वर्गजयाय सृष्टे तथैवाभे सत्पुरुषोपजुष्टे ॥ ४ ॥ पथ न्मुखाः कुरवो धार्तराष्ट्रा स्थिता पार्था प्रासुखा यास्यमानाः । दैत्यन्द्र सेनेवच क्षौरवणा देवेन्द्र सेनेवच पाण्डवानाम् ॥ ५ ॥ चक्रे वायु पृष्ठत पाण्डवाना धार्तराष्ट्रान्

अध्याय ॥ २० ॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे संजय सूर्योदय होनेपर भीष्मजी के आज्ञावर्ती मेरे पुत्र अथवा भीष्मसेने से रहित पाण्डव लोगोंमेंसे युद्धाभिलाषी सेनाके सन्मुख लड़नेको कौन ? प्रसन्नमन हुए किसके पीड़ितो वायुसमेत सूर्य और चन्द्रमा हुये और कि नकी सेनाको फाड़नेवाले ज्ञान आदि पशुओंने भ्रूसा और कौन से धीरों का प्रसन्न मुख था यह सब यथातथ्य संपूर्णताके साथ मुझ से कहौ, संजयबोले हेमहाराज भरतवंशीयरार सन्मुख जाने वाली दोनों बृद्धित सेना प्रसन्नरूप चित्रित वनकी पत्तिकाँ समान प्रकाशित हाथी घोड़े रथों से युक्त महाभयानक और क्षमारहित क्रोधाग्नि रूप स्वर्गके विजय केलिये उत्पन्न सत्पुरुषों से सेवित अर्थात् सत्पुरुषों के निवास स्थान थीं उस समय धृतराष्ट्र के पुत्र कोरव तो पांडेवमाभिमुख और युद्धाभिलाषी पाण्डव लोग पूर्वाभिमुख नियतहुए नदीनोंमें कोरवोंकी सेनाता सेनाके समान थी और पाण्डवों की सेना देवेन्द्रकी सेनाके समान थी । ६ । उतनयम पाण्डवों

## CHAPTER XX

Dhritrashtra said,—“When the sun rose, O Sanjaya, of my army led by Bhishma and the Pandava army led by Bhishma, which first cheerfully approached the other, desirous of fight? To which side were the Sun, the Moon, and the wind hostile, and against whom did the beasts of prey utter inauspicious sounds? Who were those young men, the complexions of whose faces were cheerful? Tell me all this truly and duly.” Sanjaya said—“Both armies, when arrayed, were equally joyful O king! Both armies, looked equally beautiful, assuming the aspect of blossoming woods, and both armies were full of elephants, cars, and horses. 3. Both armies were vast and terrible in aspect, and so also, O Bharata, none of them could bear the other. Both of them were arrayed for conquering the very heavens, and both of them consisted of excellent persons. The Kauravas belong”

स्वापदा व्याहरन्त । राजेन्द्राणां मद्गन्धाश्रितं द्वात्र संहरे तव वृत्रस्य नागा ॥ ६ ॥  
 दुर्योधनो हस्तिनं पञ्चार्जुनं सुवर्णकक्षं जालकन्तं प्रभिन्नम् । समाहिता मध्यागतं कुरुणां  
 सन्त्यमानो यन्दिभिर्भागधैव ॥ ७ ॥ चन्द्रपथं श्वेतमथातपत्रं सौर्यं रम्यभ्राजसि व्योम  
 मागे । तं सरितं शकुनिः पार्यणीये सार्द्धं गान्धारं रथाति गान्धारराजः ॥ ८ ॥ भाष्मो  
 ग्रतः सर्वे सन्वक्ष्य वृद्धः श्वेतच्छत्रः श्वेतधनुः सद्यद्ग ॥ श्वेनोष्णीषः पाण्डुरेण्डवजन  
 श्वेतरथैः श्वेतशालग्रकाशैः ॥ ९ ॥ तस्य सन्ध्ये घाताराष्ट्रं च सर्वे यादृशीकानामेकदेश

के तो पीछेकी अनुकूल वायुचली और धृतराष्ट्रके बेदोंकी सेन को कुत्ते भोंकते थे और  
 हे धृतराष्ट्र तुम्हारे पुत्रोंके हाथीगजेन्द्रोंकी उत्कट मदवाली गंधको न सहतके और  
 कौरवोंके मध्य में बन्दीमागथों से स्तुतिमान कमलवर्ण रूपं सुनहरी श्वारी और  
 जालवाले मद्रोन्त व हाथीपर दुर्योधन सवार हुआ, जिसके शिरपर चन्द्रमाके समानमका  
 गित छत्र और सुवर्णकी माला प्रकाशमानथी और गन्धारकाराजा शकुनी सब  
 गन्धारियों और पहाड़ियासमेत उसको सबभोरसे घेरे हुए जाताया, और श्वेत छत्र  
 श्वेत धनुष श्वेतखड्ग और श्वेतही पगड़ी पहरेहये श्वेतपर्वत के समान श्वेतही  
 घोड़ों समेत पांडु वर्ण की ध्वजायुक्त होकर वृद्ध पितामह भीष्मजी सब सेना के

ing to the Dhrishat a party stood facing the west, while the  
 Parthas stood facing the east, ready for fighting. The troops of the  
 Kauravas looked like the army of the chief of the Danavas, while  
 that of the Pandavas looked like the army of celestial gods. The wind  
 began to blow from behind the Pandavas (against the faces of the  
 Dhanitarashtras), and the beasts of prey began to yell against the  
 Dhritarashtras. The elephants belonging to the Kauravas could not  
 bear the strong odour of the temporal juice emitted by the huge  
 elephants (of the Pandavas) 6. And Duryodhana rode on an elephant  
 of the complexion of the lotus, with rent temples, graced with a  
 golden *Kusha* [on its back], and cased in an armour of steel net-  
 work. And he was in the very centre of the Kauravas and was ad-  
 dressed by eulogists and bards. 7. And a white umbrella of lunar effulgence  
 was held over his head graced with a golden chain. Raja Shikhan  
 the ruler of the Gandharas followed with mountaineers of Gandhara  
 placed all around 8. And the venerable Bhishma was at the head  
 of all the troops, with a white umbrella held over his head, armed  
 with a white bow and sword, with a white head gear, with a white  
 banner (on his car), and with white steeds (yoked thereto), and  
 altogether looking like a white mountain 9. In Bhishma's division  
 were all the sons of Dhrishashtra, and also Cala who was a country

शलश्च । ये चांविष्टाः क्षत्रियाश्च सिन्धे स्था सौवीरा पञ्चनदाश्च गूरा ॥१०॥ शोणै-  
 ह्यैरुक्मराथोमहात्मा द्रोणो धनुष्पाणिस्वीनसन्धः । आस्ते गुरुः प्रायशः सर्वे राज्ञां प-  
 श्वाच भूमीन्द्र इवाभिधाति ॥ ११ ॥ चार्द्धश्चात्र सर्वं सै यस्व मध्ये भूरिश्रवाः पुष्पमित्रा  
 जयश्च । शत्वाप्तस्या केकयाश्चेति सर्वे गजानोकैर्घातरो योत्तवमाना ॥ १२ ॥  
 शाक्यद्वन्द्वोत्तरधूमहात्मा महेष्वास गौतमश्चित्रयोधी । शकैः किरातैर्यवनैः पण्डुवैश्च  
 सार्धं चमूमेत्तरतोभिधाति ॥ १३ ॥ \*महारथैर्वृष्णिभोजैः सुगुप्तं सुराष्ट्रकैर्विदितैः राक्षश-  
 र्षः । वृहद्वलं कृतवर्माभिः गुप्तं चलं त्वदीयं दक्षिणे नाम याति ॥ १४ ॥ सशक्तकानाम-  
 युतं रथानां मृत्युर्जयो वार्जुन इत्येतं मृष्टा । येनार्जुनमतेन राजन् कृतास्त्राः प्रयातारस्ते

मार्गे जाते थे उनकी सेनामें आप के सभसे बहालीकों का एक देश, शल, अम्वष्ट,  
 सिन्धु के राजा लोग, सौ वीर और पञ्चनदके सब शूरवीर थे ॥१०॥ और महावली  
 धनुष हाथ में लिये महात्मा गुरु द्रोणाचार्यजी लाल घोड़े के लालही रथपर सवार  
 पर्वतकेसमान अचलकौरव पांडव और अन्य बहुधा राजाओंके गुरु पीछे रजातेथे  
 और सब सेनाके मध्यमें वार्धक्षजी, भूरिश्रवा, पुष्पमित्र, जय, शाल्व, मत्स्य, और केकयदेश  
 वासी सबभाई और युद्धाभिधापी सेना हाथिया समेत चली, तब महात्मा धनुषारी  
 चित्रयोधी गौतम कृपाचार्यजी शकजाति, किरात, यवन अर्थात् यूनानी राजालोगों  
 समेत सेनाके उत्तर ओरको रक्षाकरते हुए जातेथे और संसप्तकनाम दशहजार रथी  
 जो कि मृत्युना धिजय करने के लिये उत्पन्न किये थे वह त्रिगर्भ देशी अस्तत्र  
 शूरवीर लोग जिधर की ओर अर्जुन था उस दिशाकी ओर जाते हुए, हे भरतवंशी

man of the Valhikas, and also all those Ashatriyas called Amvastas,  
 and those called Sindhus, and those also that are called Saviras, and  
 the heroic dwellers of the country of the five rivers. 10 And on a  
 golden car unto which were yoked red steeds, the high souled Drona,  
 bow in hand and with never failing heart, the preceptor of almost all  
 the kings, remained behind all the troops, protecting them like Indra.  
 11 And so the midst of all the forces were Yudhakshatras, and  
 Bhurisravas, and Paramitra, and Jaya and the Shalvas, the Matsyas,  
 and all the Kekaya brothers fighting with their elephant divisions. 12  
 And Caradatta's son, that fighter in the van, that high souled and  
 mighty bowman, called also Gautama, conversant with all modes of  
 warfare, accompanied by the Kurus, the Kiratas, the Yavanas, and  
 the Pathivas, took up his position at the northern point of the army.  
 13 That large force which was well protected by mighty car-warriors  
 of the Vrishni and the Bhoma races, as also by the warriors of Su-  
 shtra well armed and well-acquainted with the use of weapons, and  
 which was led by Kritvarman, proceeded towards the south of thy  
 army. 14 Ten thousand cars of the Saucaptakas, who were erected

त्रिगुणार्थं दूराः ॥ १५ ॥ स अं शतसहस्रान्तु नागानां तव भारत । नागे नागे रथशतं शत  
मद्वारं रथे रथे ॥ १६ ॥ अश्वेऽश्वे दशघानुका घानुके शश चर्मिणः । एवं दृष्ट्वा न्यनी  
कान् भीष्मेण तव भारत ॥ १७ ॥ संव्यूहं मानुषं व्यूहं देवं गांधर्वं मासुरम् । दिवसे दिव  
से प्राप्ते भीष्मः शान्तनवो व्रगीः ॥ १८ ॥ महारथौघ विपुलः समुद्र इव घोषवान् ।  
भीष्मेण पार्श्वराट्प्राणां व्यूहः प्रत्यंमुखो युधि ॥ १९ ॥ अनगतकृपा द्यजिर्नीलरेन्द्र ममिव  
दीया ननु पाण्डवानाम् । तांच वमन्त्ये वृहतां दुष्प्रघर्षां यस्यानेता केशवश्चार्जुनश्च २० ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि सैन्यवर्णने

त्रिंशोऽध्यायः ॥ २० ॥

आपके हाथीभी एकलाखसे ऊपरथे और हर एक हाथी के साथ सौ रथ और प्रत्येक  
रथके साथ सौ २ घोड़े और हर घोड़े के पीछे दश दश धनुषधारी और हर एक  
धनुष धारी के साथ दश दश मनुष्य थे, हे भरतवंशी इस प्रकार से भीष्म जीने  
आपकी सेना को तैयार किया, शन्तनु के बेटे प्रभु भीष्मजी ने प्रतिदिनकी विघ-  
मानता में मानुष, देव, गान्धर्व, आसुर नाम चारों प्रकार के व्यूहोंको अच्छी रीति  
से रचकर युद्धके बीच धृतराष्ट्र के पुत्रोंका व्यूह बड़े २ रथों के समूहोंमें समुद्र के  
समान विस्तृत और शब्दायमान पूर्व की ओर को रचा, हे महाराज आपकी सेना  
बहुत रूप और ध्वजा संयुक्त होनेसे ऐसी महा भयानकहै जिसको मैं केशवजी  
और अर्जुनकी सहायता वाली पांडवों की सेना से भी बड़ी कठिनतासे धर्षणा के  
योग्य समझताहूँ ॥ २० ॥

for the death or fame of Arjun, went in the direction where Arjun was. Your elephants amounted to a hundred thousand. Each elephant was followed by a hundred chariots, each chariot by a hundred horses, each horse by ten archers and each archer by ten men. Thus O Bharat, Bhishm arrayed your army. Lord Bhishm the son of Shantanu, did, each day of his career, arrange the army in human celestial, gandharv or Asur way. Your army consisting of many warriors, extended and roaring like the ocean, was arrayed by Bhishm towards the East, Your army containing numberless warriors and banners was too formidable to be easily intimidated by the Pandava army assisted by Arjun and Keshav." 20.



सञ्जय उवाच । बृहती धार्तराष्ट्रस्य सेना दृष्ट्वा समुद्यताम् । विषादमगमद्राजा  
कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिर ॥ १ ॥ व्यूह भीष्मेण चाभेद्य कलित प्रेक्ष्य पाण्डव । अभेद्यमि  
व सप्रेक्ष्य विचर्णोऽर्जुनमब्रवीत् ॥ २ ॥ घनत्रय कथं शन्यमरमाभिर्योद्धु माहव ।  
अर्चराईर्महाबाहो येनो योद्धा पतामह ॥ ३ ॥ अक्षाभ्योयमभद्यश्च भीष्मेणामित्रक  
पिणा । फलित शास्त्रदृष्टेन विधिना भूरिचर्षसा ॥ ४ ॥ ते वयं सशय प्राप्ता ससैन्या  
शत्रुर्घषण । कथमस्मान् महाव्यूहादुत्थ न नो भविष्यति ॥ ५ ॥ अथ ज्ञानोद्योतार्थ  
युधिष्ठिरममित्रहा । विषयगमित सप्रेक्ष्य तव राजननोक्तिनीम् ॥ ६ ॥ प्रह्वान्यधिकान्  
शूरान् गुणयुक्तान् बहून्पि ॥ जयन्त्यल्पनरा येन तन्निग्रोह विशाम्पते ॥ ७ ॥ तत्र ते  
कारणं राजन् प्रघक्ष्याम्यनसूयव । नारदस्तमृषिर्वेद भीष्मद्रोणौ च पाण्डव ॥ ८ ॥

अध्याय ॥ २१ ॥

संजय बोले कि कुन्ती के बड़े बेटे राजा युधिष्ठिर ने दुर्योधन की बड़ी सेना  
को अत्यन्त उग्रत जानकर बड़ी व्याकुलताको पाया, और भीष्मजी के रचे हुये  
अभेद्य व्यूह को यह जानकर कि यह अभेद्य है महाभयभीत रूपान्तर दशा में  
होकर अर्जुन से कहा कि हे महाबाहु अर्जुन युद्धमें धृतराष्ट्र के पुत्रों के साथ हम  
लोग युद्ध करने को कैसे समर्थ होसके हैं जिनकी ओर से युद्ध करने वाले भीष्म  
पितामह है इन महातेजस्वी शत्रुहन्ता भीष्मजीने शास्त्रोक्त देखीहुई विधिके अनुसार  
बड़ी सावधानी से इस अभेद्य व्यूहको रचाहै हे शत्रुहन्ता अर्जुन हम सब सेना समेत  
व्याकुल होते हैं इस महाभारी व्यूह से हमारी कैसे विजय होगी हे राजा धृतराष्ट्र  
आपकी सेना के देखनेसे व्याकुल हुए युधिष्ठिर की इस बात को सुनकर अर्जुन  
बोला कि हे राजा युधिष्ठिरयोडे से भी बुद्धिमान् शूरीर गुणीपुरुष दहृतभारी सेना  
को विजयकरते हैं ऐसा निश्चय जानो हे राजा बड़ा एक एक के छिद्रों को देखता  
है । ७ । इसका भेद मैं तुम्हें कहूंगा इस कारणको नारद ऋषि, भीष्मपितामह,

## CHAPTER XXI

Sanjaya continued " Knowing Duryodhan's army ready for  
battle, King Yudhishtir the eldest son of Kunti, was much distress-  
ed, and being terrified at the sight of the impregnable phalanx  
arranged by Bhishm, he said to Arjun, ' How shall we cope in  
battle with the sons of Dhritrashtra who have Bhishm the grand  
father for their warrior? Glorious Bhishm the destroyer of enemies  
has carefully organised according to Shastris this impregnable  
phalanx. I and my army are much perplexed. How shall we be able  
to conquer this formidable army? ' Having heard the words of  
Yudhishtir who was distressed at the sight of your army, Arjun  
replied as follows — " A small company of wise and skilful warriors  
can surely win a large army, Yudhishtir. Each warrior sees the  
weakness of his enemy. 7 I shall tell you all about it which none

एवमेवार्थं मांश्रित्य युद्धे देवासुरेऽग्रजोत् । पितामहः किल पुरा महेंद्रादीन् दि-  
 यौरुतः ॥ ९ ॥ न तत्र चलतीत्यर्थाभ्यां जयन्ति त्रिजिगीषवः । यथा सत्यानुरं  
 स्याभ्यां धर्मैषोद्यमेनच ॥ १० ॥ ब्रत्वा धर्ममधर्मं च लोभबोत्तम मास्थिताः ।  
 युध्वाधमनहद्वारा यतो धर्मस्ततो जयः ॥ ११ ॥ एवं राजन् विजानीहि ध्रुवो  
 स्माकं रणे जयः । यथा तु नारदः प्राह यतः कृष्णस्ततो जयः ॥ १२ ॥ गुणभूतो  
 जयः कृष्णपुत्रो भ्यात माधवम् । तत्रथा विजयश्चास्य सधृतिश्चापरो गुणः ॥ १३ ॥  
 अनन्तजा गायिन्द्र शत्रुश्रेष्ठे निर्व्ययः । पुण्य सनातनमयो यतः कृष्णस्ततो  
 जयः ॥ १४ ॥ पुनः ह्येव हरिर्भूत्वा त्रिकुण्डः सायकः । संसारागवस्फू-  
 लं नम्रोत्तु के जयन्ति ॥ १५ ॥ कथं कृष्ण जये मेति यैवक तत्र तैर्जितम् । तत्

द्रोणाचार्य जी यह तीनों जानते हैं कि निष्पाप युधिष्ठिर पूर्ण समय में देवता और  
 असुरों के युद्ध में ब्रह्माजीने इस प्रयोजन को मानकर महाइन्द्र आदि देवताओं से  
 कहा है कि विजय के चाहने वाले पराक्रमी पुरुष वच पराक्रम से ऐसी विजय नहीं  
 कर सकते जैसी कि सत्यता दया और एक धर्म से विजय करते हैं । १० । धर्म अधर्म  
 और लोभ को जाकर उभय धर्म उक्त अङ्कार रहित होकर युद्ध को करो जहाँ धर्म  
 है वहाँ ही विजय है हे राजा जैसा कि नारदजीने कहा है उसी प्रकार चित्त में सदैव  
 जानो कि हमारी ही विजय होगी अर्थात् नारदजीने कहा है कि जियर श्रीकृष्णजी हैं  
 उधर ही विजय होगी क्योंकि विजय श्रीकृष्णजीके पाम दास रूप होकर पीठकी  
 ओर से सम्मुख होकर स्तुति करनी है जिसरीति से इनकी विजय है उसी प्रकार नम्रता  
 आदि उनके दूसरे गुण हैं श्रीगोविन्दजी अत्यन्त तेजस्वी शत्रुओं के समूहों से अघर्ष संपूर्ण  
 ब्रह्माण्ड में व्यापक सनातन सच्चिदानन्द रूप हैं इससे जियर श्रीकृष्ण हैं उधर ही  
 विजय निश्चय है पूर्व समय में यह माया से पृथक् अछेय आयुष हरिरूप प्रकट  
 होकर देवता और असुरों को अपनी वज्रसमान बाणों से चेतकर यह वचन बोला

but Narad, Bhisma the grandfather and Droacharya knows In  
 former times when the war between the gods and asurs was raging,  
 Brahma who knew the secret, said to Indra and other gods that  
 warriors desirous of conquest could not achieve victory so easily by  
 mere physical force as by truth, mercy and union 10 Knowing the  
 consequences of dharma, adharma and avarice, and being free from  
 vanity, let us fight, for where there is dhrm, there is victory. You  
 must remember, King the words of Narad who said that victory  
 would fall on the side where Krishna is Victory follows Krishna  
 wherever he goes Victory and humility are the two attributes of  
 Krishna He possesses infinite energy. He cannot be intimidated by  
 any number of foes He is eternal and victory follows his wake.  
 Indestructible and invulnerable by weapons, Hari of old said to  
 gods and Asurs "Who amongst you will be victorious?" 15.

प्रसादाद्धि त्रैलोक्यं प्राप्तं शक्रादिभिः सुरैः ॥ १६ ॥ तस्य ते न व्यथां कांचि दिह  
पश्यामि भारत । यस्य ते जय माशास्ते विश्वं नुक त्रिदिवेश्वर ॥ १७ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि युधिष्ठिरार्जुन संवादे  
एकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥

सञ्जय उवाच ॥ ततो युधिष्ठरो राजा स्वां सेनां समनो दयत् । प्रति व्यूहन्नीका  
नि भीष्मस्यभरतर्षभ ॥ १ ॥ यथोद्दिष्टान्यनाकानि प्रत्यव्यूहन्त पाण्डवा । धर्मं परम  
मिच्छन्तः सुयुद्धेन कुरुव्रद्धाः ॥ २ ॥ मध्ये शिखण्डिनोऽनीकं रक्षितं सध्यसाचिना । धृष्ट  
द्युम्नश्चरन्नग्रे भामसेनेन पालितः ॥ ३ ॥ अनीकं दक्षिण राजन् युयुधानेन पालितम् ।  
श्रीमतासात्वताग्रयेण शक्रे णेव धनुष्मता ॥ ४ ॥ महेन्द्रयानप्रतिमं रथन्तु सोपस्कं  
था किं कौन विजय करता है । १६ । उसके उत्तरमें जिन्हों ने यह कहा कि  
श्रीकृष्ण, जी की सहायता से विजय करते हैं वहाँ उन्हीं लोगों ने विजयकी और  
इन्द्रादि देवताओंने उसकी कृपा से सीनालोकों को पाया, हे भरतवंशी वैसी  
पीड़ामें तुझमें नहीं देखनाहूँ जिसकी विजय को विश्वका भोक्ता और स्वर्ग का  
ईश्वर चाहता है । १७ ।

अध्याय ॥ २२ ॥

संजयबोले कि हे भरतवंशियोंमें श्रेष्ठ इसके पीछे भीष्मजीके सम्मुख राजा  
युधिष्ठिर ने अपनी व्यूहितसेना को उपास्थित किया, फिर धर्मयुद्ध से उत्तम स्वर्गके  
चाहनेवाले कौरवोंके पोषणकरनेवाले पाण्डवोंने गुरुकी आज्ञाके अनुसार सेना को  
यथायोग्य स्थान पर नियत किया मध्यमें अर्जुन से रक्षित शिखंडीकी सेनाहुई और  
आगे चलताहुआ धृष्टद्युम्न भीमसेन से रक्षितहुआ और इन्द्रके समान धनुषधारी  
श्रीमान् युयुधान से दक्षिण की सेना रक्षित हुई और राजायुधिष्ठिर हाथियोंकी

and they conquered who said that the party which had Hari for  
its leader was sure to win. By his grace India and other gods won  
victory over the three worlds. I see no cause for fear when  
the Lord of the world as well as of Swarg, himself desires your  
victory." 17.

## CHAPTER XXII

Sanjaya continued " When king Yudhishtir had arrayed his  
armies against those of Bhishm, the latter said, " The Pandavas  
have arrayed their forces against us in the manner laid down in the  
shastras. Fight fairly, ye sinless ones for the sake of entering heaven!"  
In the centre of the Pandava army was Shikhandi with his army,  
protected by Arjun, Dhushtadyuma, protected by Bhishm was in the  
van; the southern part was led by Yuyudhan, the mighty archer of  
the Satwata race, resembling Indra himself 4. Yudhishtir was  
seated on a chariot worthy of carrying Indra himself, adorned with

हाटककृत चित्रम् । युधिष्ठिर काचन आण्डयोन्त्र समास्थितो नागपुत्रस्य मध्ये ॥ ५ ॥  
 समुच्छिन्न दन्तशलाकमस्य सुषाण्डुर छत्र मतीव भाति । प्रदक्षिण चैनमुपाचरन्त मह  
 र्पय सस्तुति भिर्महेन्द्रम् ॥ ६ ॥ पुरोहिता दानुप्रघ वदन्तो ब्रह्मर्षि सिद्धा, धनुषन्त  
 एनम् । जप्यैश्च मन्त्रैश्च महौपधीमि समन्तत स्थस्य यन युवन्त ॥ ७ ॥ ततः सध-  
 स्त्राणि तथैव गाश्च फलानि पुष्पाणि तथैव निःकृत् कुरुत्तमो ब्राह्मणसाम्नाहात्मा कु-  
 र्वन् ययौ शक्र इवामरेश ॥ ८ ॥ सहस्र सूर्य शत किंकिणीक परादर्यजाम्नादहमे  
 चित्र । रघोर्जुनस्याग्निरिवाग्निचिह्नमास्ती चित्र जते श्वेत हय सुचक्र ॥ ९ ॥ तमास्थि  
 त केशव समूहीत कपिध्वजो गाण्डववाणपाणः । धनुर्वहो यस्य सम पृथग्या न  
 धियते नोभयिता कदाचित् ॥ १० ॥ उद्धर्त्त विन्ध्यस्तथ पुत्रसेना मतीवर्गात् स विमर्षि  
 सेनाम महेन्द्रकी सवारीके स्वरूप सुन्दर सामग्री वाले सुवर्ण और रत्नोंसे जाडित  
 मुनहरी कलशपुक्त रथपर नियतहुआ । इसका श्वेत छत्र हाथीदांतकी यष्टीपरशोभित  
 अत्यन्त ऊँचा देदीप्यमान था महर्षीलोग स्तुति करते हुये इसमहाराज के दक्षिण  
 चलनेवाले हुये पुरोहित लोग और शास्त्रज्ञ ब्रह्मर्षि अथवा सिद्ध पुरुष मन्त्र जप  
 और वहीपदी औपधियों समेत इसका स्वस्त्ययन पढ़तेहुये शत्रुके पराण को उच्चा-  
 रण करतेहे तदनन्तर वह कौरवों में श्रेष्ठ युधिष्ठिर सुन्दर वस्त्र, गौ, फल, फूल  
 और सुवर्ण मुद्राको ब्राह्मणोंके अर्थ दान और भेटोंको करताहुआ देवदेवर इन्द्रके  
 समान चला, आर अर्जुन का रथ मणियों के जाडित होने से हजारों सूर्य के समान  
 प्रकाशमान और सैकड़ों घंटालियोंसे चिह्नित उत्तम जांबूनद नाम सुवर्णसे मद्रा  
 अग्निकेसमान किरणोंसे युक्त श्वेत घोड़े और सुन्दर पहियों से शोभित है वह गाँदीव  
 धनुषधारी हाथ म बाण, रखनेवाला कपिध्वज जिसकी समान धनुषधारी पृथ्वीमें न  
 कोई है न होगा वह अर्जुन केजवजी को पकड़ेहुये रथपर विराजमान है । १० ।  
 वह तेरेपुत्र की सेनाको मर्दन करताहुआ बड़े भयकारी रूपको धारण करता है,

an excellent standard, decorated with gold and gems, with gold  
 traces, in the midst of his army of elephants 5 His pure white  
 umbrella with white ivory handle, raised over his head, looked very  
 beautiful Many a great rishi walked round the king, chanting  
 hymns in his praise Many priests, Brahmanushis and Siddhas, singing  
 praises and benedictions, prayed for the destruction of his enemies by  
 means of aphorisms, drugs and ceremonies The magnanimous prince  
 of Kurus gave cows, fruits, flowers, gold pieces and clothes to Brah-  
 mans and proceeded like Indra the chief of gods Arjun's chariot,  
 furnished with many bells, decked with burnished gold, having good  
 wheels, shining like fire and drawn by white horses looked brilliant  
 like a thousand suns The chariot whose reins were held by Keshav,  
 was furnished with the standard bearing the figure of Hanuman and  
 was occupied by Arjun the wielder of Gandiv and matchless archer  
 He who assumes the most awful form for the destruction of thy



रूपम् । अनायुधो यः सुभुजो भुजाभ्यां नगाद्व नागान् युधि भस्म कुर्यात् ॥ ११ ॥ स भीमसेन साहसो यमाभ्या वृकोदरो वीर रथस्थ गोप्ता । त तत्र सिंहर्षभमत्तखेल लोके महेन्द्रप्रतिमान कल्पम् ॥ १२ ॥ समीक्ष्य सेनाप्रगत दुरासदं संविध्यधु. पंक गतः यथा द्विषा. । वृकोदरं वारणराजदर्प योधास्त्वदीया भयविग्नस्त्वा ॥ १३ ॥ अनिक मध्ये तिष्ठन्त राजपुत्र दुरासदम् । अग्रवीन्द्रस्तथेष्टं गुडाकेशं जनार्दनः ॥ १४ ॥ वासदेव उवाच ॥ य एषरोषात् प्रतपन् यलस्थो योनि सेना सिंह इवेक्षतेच । स एष भीष्म. कुरुवश केतुर्धेनाहतास्त्रिशत वाजि मेघा ॥ १५ ॥ एतान्यनीकानि महाभावा गहान्तेमेघ इव रश्मिमन्तम् । एतानि हत्वा परुषप्रवीर कात्तस्वयुद्ध भरतर्षभेण ॥ १६ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि युधिष्ठिरार्जुनसंवादे

द्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥

और जो कि अशस्त्र भी सुन्दर भुजदण्ड युक्त युद्धके मध्य में अपनी महाभुजाओं सेही मनुष्य और हाथियों को मर्दन करता है वह वृकोदर भीमसेन अपने छोटेभाई नकुल सहदेव समेत शूरवीर अर्जुन के रथका रत्नक है, ऐसे महातिहरूप चाल चल नेवाले लोकमें महाइन्द्र के समान दुराधर्प सेना के आगे वर्तमान महाबली भीमसेन को देखकर तुम्हारी सेनाके मनुष्य ऐसे कम्पायमान हुये जैसे कि कीचमें फँसे हुये हाथीभयभीत होते हैं उस गजेन्द्र के समान गर्भ से भरेहुये भीमसेन को देखकर आप के शूरवीर लोग विचित्र भयभीत होकर मनसे हारगये, और हे राजा तब सेना में वर्तमान दुराधर्प अजेय राजहमार अर्जुन से जनार्दन श्रीकृष्णजी यह वचन बोले, कि हे अर्जुन जिस भीष्म ने अपने क्रोध से सेना को संतप्त किये हुये बलमें नियत सिंहरूपहोकर हमसे वचायाहै वह भीष्म कौरव कुलकी ध्वजाहै जिसने कि तीनसौ अश्वमेध यज्ञ किये, यह सब सेना इस को ऐसे घेरे हुएहै जैसे कि सहस्र किरण वाले सूर्यको बादल घेर लेते हैं हे पुरुषोंमें बड़े वीर अर्जुन तुम इन सेनाओं को मारकर भरतवंशियों में श्रेष्ठ भीष्मजीके साथ युद्ध करने की इच्छा करो । १६ ।

sons and thy armies and brings to dust horses and elephants without weapons, that strong armed Bhimsen, known as Virkodai, accompanied by the twins, became the protector of the Pandav ghaatoteers. Like a sportive lion or like India herself in lordly form, the sight of the invincible Virkodai like a leader of a herd of elephants, stationed in the van of the warriors, frightened and weakened thy warriors like elephants sunk in mire 13 To the invincible Gudakesh (Arjun) standing in the midst of his troops, Janardan said, "Yonder is the banner of Bhishm who has performed three hundred sacrifices, who burns us with his wrath and who stands in the midst of his troops ready to attack us like a lion His soldiers surround him on all sides like the clouds round the moon Slay those armies and seek battle with that bull of the Bharat race." 16

सञ्जय उवाच ॥ घातैराद्य बल दृष्ट्वा युद्धाश्च सम्प्राप्तितम् । अर्जुनस्य हितार्थाय  
 कृष्णो वचन ममयैत् ॥ १ ॥ श्रीमगवानुवाच ॥ द्वाचर्भृत्वा महाय हो सप्रामाभिमुखे  
 स्थित । पराजयाय शङ्कां दुर्गास्तत्र मुदीरय ॥ २ ॥ सञ्जय उवाच । एवमुक्तोऽर्जुनः  
 स ह्येवाबुद्धेन भीमना । अत्रनीदृश एवाहं पार्थः स्तात्रमाह कृताञ्जलिः ॥ ३ ॥ अर्जुन  
 उवाच । नमस्ते सिद्धसन्तानि अथैव मन्दरावासिनि । कुमारिकाल कापालि कपिले कृष्ण  
 पिङ्गले ॥ ४ ॥ भद्रकालि नमस्तुभ्य महाकालि नमोऽस्तुते । चाण्ड चण्डे नमस्तुभ्य तारिणि  
 वरपाणिनि ॥ ५ ॥ कात्यायनि महाभाग करालि विजयेजये । शिखिपिण्डध्वजधुरे नानाभर  
 णभूषणे ॥ ६ ॥ अटशूलप्रहरणे खड्गखेटकधारिण । गोपेन्द्रस्यानुजे ज्येष्ठे नन्दगोप-  
 कलोद्भवे ॥ ७ ॥ महिषासुरह्रापयेनित्यं कौशिकि पीतासिनि । अटहासे कोकमुखे

अध्याय ॥ १३ ॥

संजय बोले कि हेराजा युद्धके निमित्त सम्मुख वर्तमान, दुर्योधनकी सेना  
 को देखकर श्रीकृष्णजी अर्जुन के अभीष्ट सिद्ध करनेकेलिये यह वचन बोले कि  
 हे महाबाहू अर्जुन तुम युद्ध के सम्मुख वर्तमान होकर बड़ी पाँववृत्तासे शत्रुओंकी  
 पराजय के लिये भीदुर्गाजीके स्तोत्रका पाठकरो, संजय बोले कि इस प्रकार  
 वासुदेवजीकी आज्ञाको सुनकर पाण्डव अर्जुनने रथसे उतरकर हाथ जोड़कर युद्ध  
 भूमिमें आगेनिखे हुए दुर्गाजीके स्तोत्रको पढ़ा, । ३ । हे निज सेनावाली, आर्ये,  
 मन्दार वासिनि, कुमारि, कालि, कापालि, कपिले, कृष्णपिङ्गले तुम्हको नमस्कारहै ।  
 हे भद्रकालि, महाकालि, चण्डि, तारिणि, वरपाणिनि तुम्हको नमस्कारहै । कात्यायनि,  
 महाभाग, करालि, विजये, जये, मोरकेपरी की ध्वजावासी और नाना प्रकार के आ-  
 भूषणों से भूषित तुम्हको नमस्कारहै । शूल, खड्ग और दल धारण करने  
 वाली, गोपेन्द्र की बहिन, ज्येष्ठे, नन्दगोप के कुल में उत्पन्न तुम्हको नमस्कार  
 है । महिष के खरि को नित्य निय रसन वाली, कौशिकि, पीताम्बर धारण

### CHAPTER XXXIII

Sanjaya continued " Seeing the army of Duryodhan ready to  
 fight, Shree Krishna spoke these words to the benefit of Arjun  
 ' Mighty Arjun ! having cleansed thyself, stand with thy face  
 towards the field of battle and sing hymns in the praises of Durga  
 for the defeat of thy foes " Sanjaya continued that being thus  
 advised by Vasudev, Arjun the Pandav came down from the chariot  
 and with joined hands recited the following hymn in the field of  
 battle.— I bow to thee leader of Sidhas, good goddess living in the  
 forest of Mandar, Kuma, Kali, Kapali, Kapila, Krishna pingala,  
 Bhadrakali, I bow to thee, Mahakali, I bow to thee I bow to thee  
 Chandi, Tarini, Babarmini, Katyaayini, Mahabhaga, Karali, Vijya,  
 Jaya, bearer of the binner of peacock's feathers, decked with orna-  
 ments, bearer of awful spear, sword and shield, younger sister of

नमस्तेस्तु रणाग्रये ॥ ८ ॥ उमे शाकम्भारभवेते कृष्णे कैटभनाशिनि । हिरण्याक्षि विरूपाक्षसु धूम्राक्षि नमोऽनुते ॥ ९ ॥ वेदधृतिमहापुण्ये ब्रह्मण्ये जातवेदास । जम्बूकटकुचेत्यप्यनन्य सग्राहतालये ॥ १० ॥ तूग्रहाविद्याविद्यानां महानिद्रा च देहिनाम् । स्कन्दमातर्भगवात दुर्गा कान्तारवासिनि ॥ ११ ॥ स्वाहाकार स्वधाचैव कला काष्ठा सरस्वती । सावित्री वदमाता च तथा वेदान्त उच्यते ॥ १२ ॥ स्तुतास त्वमहादेवि । व शुद्धेनान्तरात्मना । जयामवतमोनन्य त्वत्प्रसादाद्गणाजिगेऽश्का-तारमयदुर्गेषु भक्तानां चालयषु च । नन्य घसास पाताले युद्ध जयास दानयान् ॥ १४ ॥ त्वजम्भनी माहिनी च मायाही श्रीस्तथैव च । सन्ध्या प्रभावताचैव सावित्री जननी तथा ॥ १५ ॥ ताष्टुः पुष्टिधृतिर्दक्षिण्यद्रादित्यविवर्दिनी । भूतभूतमना सह्ये वीक्ष्यसे । सद्धचारजैः ॥ १६ ॥ सज्जय उवाच । ततः पार्थस्य विज्ञाय भार्क्ये मानवसल्ला । अन्तरिक्षगतोवाच गाविन्द करने वाली, दुरुमुख धारण करके असुरों को मारने वाली रणाग्रिये तुम्हको नमस्कार है । वेदधृति, अतिपण्डित, ब्रह्मण्य, जात वेदसि जम्बूखंड के चैत्य में निवास करनेवाली तूग्रहाविद्याओं और महानिद्रा की देनेवाली स्कंद की माता, भगवाति, दुर्गा, कठिन स्थानों की रहने वाली, स्वाहा, स्वधा, कला, काष्ठा, सरस्वती, सावित्री, वेद और वेदान्त की माता है । हे महादेवि, विधुद्धों की अन्तरात्मा में तेरी स्तुति करता हूं हे रणाग्रिये तेरे प्रसाद से मेरी सदाजय हो तू सदा भयानक दुर्गम स्थानों और पाताल में निवास करती है भर्षोंका पालन करती है और युद्ध में जयदेती है तू जम्भनी, मोहिनी, मायाही, श्री, सन्ध्या, प्रभावती, सावित्री और जननी भी है, तू पुष्टि, पुष्टि, धृति और चंद्रवर्षकी भभावदाने वाली है तू धनियोंको धन देनेवाली और सिद्ध चारणोंको दिसई देनेवाली है । सजयनेकहा कि दुर्गा अर्जुनकी भक्ती को जान

Gopendia, Jyeshtha born in the race of Nand the cowherd, fond of buffalo's blood, haushmi, fond of yell w clothes, Attahasi, hoh mukha, I bow to thee warrior goddess Uma, Shakambhari of white or black colour, destroyer of Asatabh, Hi anyakshi, Viroopikshi, Sudhumrakshi, I bow to thee. Thou art Vedic hymn of great holiness, Brahmanya, jatvedasi, always living in the shrines of Jamvu, learned in the knowledge of Bahm, giver of profound sleep, mother of Chand, Bhagwati, Durga, dweller in inaccessible places, Swaha, Swadha, Kala, Kashtha Savitri, Vedmata and Vedant. I praise thee Mahadevi, soul of saints May victory ever fall to my lot by thy grace on the field of battle In inaccessible places where there is fear, in difficulties in the abodes of thy worship pers, in nether regions thou always dwellest Thou art Jambhani, Pushti, Pushti, Dhriti, Dipti giving light to the moon and the sun, giver of prosperity and seen by Siddhas and Charans" Sanjaya continued that knowing the devotion of Arjun, Durga the protector,

स्याप्रतः सिधता ॥ १७ ॥ देव्युगत्त । स्वर्गमेव तु कालेन शत्रून् जेभ्यसि पाण्डव ।  
 नरस्त्वमसि दुर्धरे नारायणसहायवान् ॥ १८ ॥ अजे यस्त्वं रणे ऽङ्गीग मपि वज्रभृत्तः  
 स्वयम् । इम्ये मुक्त्वा वादाः क्षणेनान्तरं घायित ॥ १९ ॥ लब्ध्वा वरन्तु कौन्तेयो मने  
 विजयमात्मनः । शङ्करोह ततः पार्थो रथ परमसम्पत्तम् ॥ २० ॥ कृष्णार्जुना देकरथौ दिव्यौ  
 शस्त्रौ प्रदध्मतुः । य इदं पठते स्तोत्रं कथ्य मुत्पाय मानवः ॥ २१ ॥ यश्चाक्षः पिशाचेभ्यो  
 न भयं विद्यते सदा । नचापि रिपवस्तेभ्यः सर्गाद्या ये च दर्शयिष्याः ॥ २२ ॥ न भयं  
 विद्यते तस्य सदा राजकुलादपि । विवादे जयमाप्नोति वद्धो मुच्यति वन्द्यनात् ॥ २३ ॥  
 दुर्गा तरति चावश्यं तथा चौरैर्विमुच्यते । संग्रामं विजयोनित्यं लक्ष्मीं प्राप्नोति केशवला ॥ २४ ॥  
 नारोयवत्सम्पन्नो जीवेद्भयंशतं तथा । एतद् दृष्टं प्रसादात्तु तथा व्यासस्य

कर और मनुष्योंपर कृपालु होकर अन्तरिक्ष से वहाँ आई जहाँ गोविन्द थे देवी ने  
 कहा कि योदीदेर में शत्रुओंपर विजय पावेगा हे पाण्डव तू अजय है क्योंकि नारा-  
 यण तेरे सहायक हैं तुम्हको इन्द्रभी जयनहीं करसकता यहकहकर वरदायिनी देवी  
 चलीगई अर्जुन ने वरपाकर अपने को युद्ध में विजय पायाहुआ जाना और अपने  
 रथपर फिरचढ़ा श्रीकृष्ण और अर्जुन ने रथपर चढ़ेहुए अपने शस्त्र बजाये जो  
 कोई इसस्तोत्र को मातःकात्त पड़ेगा उसका यत्नो, राक्षसों और पिशाचों से कदापि  
 भय नहोगा न उसको सर्पों अथवा राजकुल से भयहोगा वह विवाद में जय पावेगा  
 और वन्दनसे छुटजायगा उसको चौरों और दुर्गम जगहों से कुछभय नहोगा संग्राम  
 में उसकी विजय होगी और लक्ष्मी मिलेगी वह सौर्वर्षिक आरोग्य और बलवान  
 रहेगा ॥ २२ ॥ मैंने बुद्धिमान् व्यासजीकी कृपा से यह देखा है लोग अपने मोह से इन  
 दोनों नरनारायण ऋषियोंको नहीं जानतेहैं आपके सबपुत्र दुरात्मा औरअभिमानीहैं  
 यह वचन समयके अनुसारहै कि वह गदकात्क फन्देमें फँसेहुएहैं, व्यासजी, नारद,

of mankind, appeared in the air and stood before Govind. The goddess:  
 "Shortly thou shalt conquer thy foes, Pandav. Thou art invin-  
 cible, because Narayan helps thee. Thou art invincible even by the  
 wielder of thunderbolt." Having said this, the giver of boons  
 disappeared. Arjun, having got the boon, regarded himself as already  
 successful and remounted his chariot. Krishna and Arjun seated  
 on the same chariot, blew their celestial conchs. He who reads the  
 above hymn every morning has no fear from yakshes, rakshases and  
 pishaches. He has no fear from toothed serpents and kings, gains  
 victory in discussions and is freed from the bonds of confinement.  
 Difficult places and thieves give him no trouble; he gains victory in  
 battles and gains wealth. He lives for a hundred years free from  
 diseases and becomes strong. I have known all this through the  
 grace of Vyasa. People from ignorance do not know the two rishis  
 Nar and Naryan. All your sons are wicked and proud; their time

धर्मत ॥ २५ ॥ मोहादेतौ न जानति नर नारायणाद्युषी । तव पुत्रा दुरात्मान सधे  
गन्धशास्त्रा ॥ २६ ॥ प्राप्तकालमिदं वाक्यं कालपाशनं गुण्ठितम् । द्वैपायनो नादक्ष  
कण्वो रामस्तथानघ ॥ २७ ॥ अचार्यस्तव सुत न चासौ तदगृहीतवान् । यत्र धर्मो  
एति, कान्तिर्यत्रही श्रीस्तथा मति । यतो धर्मस्ततः कृष्णो यतः कृष्णस्ततो जय २८ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि दुर्गास्तोत्रे

त्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥

धृतराष्ट्र उवाच । वेपा प्रहृष्टास्तत्राप्रे योधा युधामन्युः संजय । उदग्रमनस के  
पा केपादीनां धिक्चेतसः ॥ १ ॥ केपूय प्राहरस्तत्र युद्धे हृदयकम्पनम् । मामका  
पाण्ड्येयावातश्ममाचक्ष्व सत्रय ॥ २ ॥ कस्य सेनासमुद्भवे गन्धमादयसमुद्भवा । धात्र  
प्रदक्षिणाधैष सोघानामभिगर्जताम् ॥ ३ ॥ संजय उवाच । उभया सेनयोस्तत्र

करण, परशुराम, नभ इनसत्र ऋषियोंने आपके पुत्रको बहुत निषेध किया परन्तु इसने  
उमवातको स्वीकार नहीं किया जहाँ धर्म है वही तेजकी कान्ति है और जहाँ नम्रता है  
वहाँ लक्ष्मी है इसीप्रकार जिधर मुनिलोग हैं उधरही धर्म है और जिधर भीकृष्ण हैं  
उधरही विजय है २८ ॥

अध्यायः ॥ २४ ॥

• धृतराष्ट्र बोले कि हे संजय उस युद्धभूमि में किसके शूरवीर अति प्रसन्न  
मनहोकर लड़ते हुये स्थिर चित्त और किधरके ३ लौ मनहोकर उद्भिन्न चित्त हैं  
और युद्ध के बीच मेरेपुत्रों में से अथवा पाण्डवा में से प्रथम किसने हृदय का  
कंपानेवाला प्रहार किया हे सत्रय इसको मुक्त से वर्णन करो और किसकी सेना  
ओं में सुगन्ध युक्त पुष्प मालाओं के उदय में अत्यन्त गर्जना करने वाले शूरोंके

of death is near and they are already entangled in the meshes of  
death Vyas Narad Hanwa Parashuram and Nabh have all  
prevented thy sons but they gave none to their counsels. Glory  
and beauty go hand in hand with dharma and prosperity is attached  
to destiny Dharma goes with munis and victory is on the side  
where Krishna is 23

## CHAPTER XXIV

'The warriors of which side asked Dhritrashtra of Sanjaya  
'advanced cheerfully in the field of battle' Who were confident and  
who were despondent? Who struck the first blow in that dreadful  
battle mine or those belonging to the Pandavas? Tell me all this  
O Sanjaya. Whose warriors adorned with garlands of sweet scented  
flowers uttered loud shouts indicative of prowess? The warriors,

योधाः  
फानां व  
शब्दस्तु  
सेनयो  
राणांच

। सुगन्धानामुभयत्र समुद्भवः ॥ ४ ॥ संहतानामनी-  
र्गात् समुदीर्णानां विमर्दः सुमहानभूत् ॥ ५ ॥ यादित्र  
। शूराणां रणशूराणां गर्जतामितरेतरम् ॥ ६ ॥ उभयोः  
वत् । अन्योन्यं घोह्यमाणानां योघानां भरतर्वरम् । कुत्र  
दृश्यताम् ॥ ७ ॥

पर्वणि भगवद्गीतापर्वणि धृतराष्ट्र संजय संवादे  
विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥

वचन  
वीर  
भरत  
ओं व  
और  
में फै

नेवाले हैं संजय बोले कि वहां दोनों सेनाओंके शूर  
ला हैं और दोनों सेनाओंमें सुगन्धता फैल रही है हे  
मिलीहुई मिलाप से बडारूप धारण करने वाली सेना  
और शस्त्र और भेरियों से मिलेहुये परस्पर के शब्द  
पर गर्जने वाले शूरवीर पुष्पों केभी शब्द सबस्थान  
सेनाओं के बीच परस्पर देखने वाले शूरवीर और  
गर्जने वाले हाथी और मसन्न चिच सेना के चिचोंमें बड़ा खेद हुआ ॥ ७ ॥

of both the armies," replied Sanjaya, "are cheerful. The flower  
garlands of both sides give forth equally sweet smell. Both the  
formidable armies met in a fierce combat and fought bravely, filling  
the whole place with the sounds of conchshells and drums and the  
fierce roars of the warriors. Fierce was, O king, the encounter of  
the warriors, staring at one another, and of the roaring elephants,  
giving much trouble to the cheerful warriors." 7.





## ॥ श्री मद्भगवद्गीता ॥

धृतराष्ट्र उवाच । धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सव । मामका पाण्डवाश्चैव  
 किमकुर्वत सज्जय ॥ १ ॥ सज्जय उवाच । दृष्ट्वा तु पाण्डुपुत्राणामाचार्यं महतीं  
 आचार्यमुपसङ्गम्य राजा वचनमब्रवीत् ॥ २ ॥ पश्यैतां पाण्डुपुत्राणामाचार्यं महतीं  
 श्रमम् । व्यूढां द्रुपदपुत्रेण तव शिष्येण धीमता । ३ ॥ अत्र दूरा महेश्वरसा भीमानुतसमा  
 युधि । युयुधानो विराटश्च द्रुपदश्च महारथ ॥ ४ ॥ धृष्टकेतुश्चेकितान काशिराजश्च  
 वीर्यवान् । पुरुजित् कुन्तिभोजश्च शैब्यश्च नरपुंगव ॥ ५ ॥ युधामन्युश्च विक्रान्त उत्त  
 मोजाश्च पाण्डवान् । सौमद्रो द्रौपदेयाश्च सर्व एव महारथाः ॥ ६ ॥ शकुनिकस्तु  
 विशिष्टा ये तान्नियोज्य द्विजोत्तम । नायका मम सैन्यस्य सन्नयं तान् प्रधीमि ते ॥ ७ ॥

अध्याय ॥ १ ॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे संजय धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्र में मिलेहुए युद्धाभिलाषी मेरेपुत्रों  
 ने और पाण्डवों ने क्या २ काम किये । १। संजय बोले कि हे राजा धृतराष्ट्र उस  
 समय राजा दुर्योधन पाण्डवों की व्यूह-रची हुई सेनाको देखकर द्रोणाचार्यजी से  
 यह वचन बोला । २। कि हे आचार्यजी द्रुपद के बेटे अपने शिष्य धृष्टकुम्भ से व्यूह  
 रची हुई पाण्डवोंकी बड़ी सेनाको देखो । ३। इस सेनामें बड़े धनुषधारी युद्धमें कुशल  
 भीमसेन और अर्जुन के समान जो २ धीर हैं उनके नाम यह हैं युयुधान, विराट,  
 महारथी द्रुपद । ४। धृष्टकेतु, चेकितान पराक्रमी काशिराज, पुरुजित, कुन्तिभोज  
 नरोत्तम शैब्य । ५। पराक्रमी युधामन्यु विक्रान्त तथा उत्तमौजा सुभद्राकापुत्र अभि-  
 मनु द्रौपदी के पांचोपुत्र यह सब महारथी हैं । ६। हे शास्त्रज्ञों में श्रेष्ठ हमारे जो विशिष्ट

THE BHAGAVAD-GITA

LECTURE I

Dhritrashtra said— "Tell me, O Sanjaya what the people of my  
 own party, and those of the Pandavas, who are assembled at Kuruk-  
 shetra resolved for war, have been doing" 1 Sanjaya replied—  
 "Duryodhan having seen the army of the Pandavas drawn up for  
 battle, went to his Preceptor, and addressed him thus"—2. "Behold  
 O master," said he, "the mighty army of the sons of Pandu drawn  
 up by thy clever pupil, the son of Drupada 3 In it are heroes,  
 such as Bhishm or Arjuna; there is Yudhishthira and Virata and  
 Drupada (4) and Dhishhtaketu and Chakranta, and the valiant  
 prince of Kasi, and Purujit, and Kuntibhoja and Shubhya a mighty  
 chief (5) and Yudhamanyu and Vikranta, and the daring Uttama-  
 ja, so the son of Subhadra, and the sons of Drupadi all of them  
 great in arms. 6 Know also the names of those of our party who



भवान् भीष्मश्च कर्णश्च कृपाश्च स मतिश्च । अश्वत्थामा विकर्णश्च सैमिदात्तज्जयद्रथ ॥ ८ ॥ अये च बहव दुरा मर्त्ये त्यक्तजीविता । नानाशस्त्रप्रहरणा सधै युद्धविशारदा ॥ ९ ॥ अपत्यास्त तद्दत्ताक वल भीष्माभिरक्षितम् । पटपान्त त्वदिमेतया वल भीष्माभिरक्षितम् ॥ १० ॥ अयनेषु च सर्वेषु यथाभागमवास्थता । भीष्ममेवाभिरक्षन्तु भवत सर्वे पय हि ॥ ११ ॥ तस्य सञ्जनयन् हर्ष कुरवृद्ध पितामह । सिंहनाद विनयोच्चै शय १२ ॥ प्रतापवान् ॥ १२ ॥ तत शङ्खाश्च मेढर्यश्च पणवानकगामुख । सह खेपाद्यश्विन्यन्त स शब्दस्तुमुलोऽभवत् ॥ १३ ॥ तत श्वेत्तर्हयैर्युक्त महति स्यन्दने स्थिता । माधव पाण्डवश्चैव दिव्यौ शङ्खौ प्रध्वज ॥ १४ ॥ पाञ्चजन्य हृषीकेशो देव

लोगहैं उनके भी नामों को सुनो । ७ । आप, भीष्म, कर्ण युद्धके विजय करने वाले कृपाचार्य, अश्वत्थामा, विकर्ण, सोमदत्तका पुत्र आदि । ८ । अनेक शूरहैं वह सबमेरे निमित्त जीवनके त्यागने वाले नानाप्रकार के शस्त्रों के धारण करने वाले सबके सब युद्ध में बड़े कुशल हैं । ९ । भीष्मजी मे रक्षित हमारी सेना अधिक होनेके कारण दुराधर्ष है और भीमसेन से रक्षित पांडवों की सेना न्यून होनेके हेतुसे धर्षणा के योग्यहै । १० । सब लोग अपने २ मोरचों पर यथा विभाग स्थितहोकर भीष्मजीकी चारों ओर से रक्षा करें । ११ । और कौरवोंमें वृद्ध प्रतापवान भीष्म जीने दुर्योधन को प्रसन्न करने के लिये सिंहनाद के समान शङ्ख बजाने को किया । १२ । तदनन्तर शङ्खधेरी ढोल, आनन, गोमुख आदि बाजे चारों ओर से बजे और महा शब्दहुए । १३ । उसके पीछे श्वेत घोड़ोंसे जुतेहुए बड़े रथ पर सवारहोकर माधवजी और पाण्डव अर्जुन ने दिव्यशस्त्रों को बजाया । १४ । अर्थात् हृषीकेश

are the most distinguished. I will ment on (a few of) my generals. 7 Thyself, Bhishma, Karna and Kripa, the conqueror in battle, and Aswatthama, and Vikarna, and the son of Drona datta, with others (8) in vast numbers who for my service have forsaken the love of life. They are all of them practised in the use of arms and experienced in every mode of fight. 9 Our innumerable forces are commanded by Bhishma, and the inconsiderable army of our foes is led by Bhishma. 10 I let all the generals, according to their respective divisions stand in their posts, and one and all resolve to support Bhishma. 11 The ancient chief Bhishma the grand-uncle of the Kurus then shouting with a voice like a roaring lion, blew his shell to raise the spirits of the Kuru chief, (12) and instantly innumerable conch shells, and other warlike instruments, were struck up on all sides, so that the clangour was excessive. 13 At this time Krishna and Arjuna seated in a splendid chariot drawn by white horses, sounded their conch shells which were of celestial form. 14 the name of the one which was

दत्तं घनजयः । पौण्ड्रं बभौ महामुह्य ममकर्मा वृकोदाः ॥ १५ ॥ दन्ताघेजय  
 राजा कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः । नकुल, सहदेवश्च सुघोषमाणपुष्पकौ ॥ १६ ॥ काश्यपश्च  
 परमेष्वासः शिखण्डी च महारथः । धृष्टद्युम्नो विराटश्च सात्यकश्चापराजितः ॥ १७ ॥  
 द्रुपदो द्रौपदेयाश्च सर्वशः श्रुघीषते । सौमद्रश्च महाबाहुः शङ्ख नृ दध्नुः पृथक् पृथक्  
 ॥ १८ ॥ स घोषा धातैराघृणां हृदयानि व्यदारयत् । नमश्च पृथिवीश्वर्य तुमुलो-  
 म्यनुनादयन् ॥ १९ ॥ अथ व्यचारुतान् दृष्ट्वा धातैराघृणन् कणिध्वजः । प्रवृत्ते  
 शस्त्रसम्गाते वनरुधम्य पाण्डवः ॥ २० ॥ हृषीकेश तदा बाष्प्य ममदमाह महीपते ।  
 अर्जुन उवाच । सेनयोद्धमयोर्मध्ये रथं स्थापय मेच्युत ॥ २१ ॥ यावदेतान् । नरीक्षेहं योद्धु

( श्रीकृष्णजी ) ने पांजजन्य नाम शंख और अर्जुन ने देवदत्त नाम शंखको बजाया  
 और भीमने पौंड्र । १५ । कुन्ती पुत्र राजा युधिष्ठिर ने अनन्त विजयनाम शंखको  
 और नकुल सहदेव सुघोष और मणिपुष्पक नाम शंखोंको बजाया । १६ । और  
 बड़े धनुषधारी काशिराज, महारथी शिखंडी, और धृष्टद्युम्न, विराट और विजयी  
 सात्यकी, । १७ । द्रुपद और द्रौपदी के पांचों पुत्र, महाबाहु अभिमन्यु इन सबोंने  
 सब ओरने पृथक् २ शंखों को बजाया । १८ । इन सब शंखों के महा शब्दों से  
 धृतराष्ट्र के पुत्रों के हृदय निदीर्ण मे होगये और पृथ्वी से आकाश पर्यन्त शब्द  
 व्याप्त होगया । १९ । तदनंतर वानरध्वज अर्जुन धृतराष्ट्र के पुत्रों को व्याकुल  
 और अचंछे प्रकार से नियत देख कर शस्त्रों के महार होनेके समय धनुष को उठा-  
 कर । २० । सब जगत् के सामी हृषीकेश श्रीकृष्णजी से यह वचन कहने लगा  
 कि हे अग्निनाशी कृष्ण मेरेरथको दोनों सेनाओं के मध्य में नियत करो । २१ ।  
 प्रथम में इन युद्ध में स्थिरगुरुवीरों को देखूं कि इस युद्ध के आरंभ में हमको किस

blown by Kri-hna was Panchajanya, and that of Arjuna was called  
 Devadatta. Bhim of dreadful deeds blew his capacious shell  
 Paudra and Yudhishtira the royal son of Kunti sounded Ananta-  
 Vijaya, Nakula and sahadeva blew their shells also; the one called  
 Sughosha, the other Manipushpaka 16 The prince of Kasi of  
 the mighty bow, Sikhandi, Dhritadyumna, Vnata, Satyaki the  
 invincible, Drupada and the sons of his royal daughter, Krishna,  
 with the son of Subhadra, and all the other chiefs and nobles, blew  
 also their respective shells; 18 so that their shrill sounding noise  
 pierced the hearts of the Kurus and re echoed with a dreadful noise  
 from heaven to earth. 19. In the mean time Arjuna, perceiving  
 that the sons of Dhritarashtra stood ready to begin the fight, and  
 that the weapons began to fly abroad, having taken up his bow,  
 [ 20 ] addressed Krishna in the following words Arjuna — " I pray  
 thee, Krishna, cause my chariot to be driven and placed between the  
 two armies, [ 21 ] that I may behold who are the men that stand

कामान वस्थितान् । वैर्गया राह योद्धव्यमभिमन्त्रणसमुद्यमे ॥ २२ ॥ योत्सयमानातये-  
 चेहं ॥ एतेऽन सम गता । धार्तराष्ट्रस्य दुर्धृद्व्युद्धे प्रियाचिकीर्षयः ॥ २३ ॥ सञ्जय  
 उवाच । परमुक्तो हृषीकेशो गडाकेशेन भासत । सेनयोरुभयोर्मध्ये स्थापयित्वा रथो-  
 त्तमम् ॥ २४ ॥ भीष्मद्रोणप्रमुखतः सर्वेषां च महर्षिस्तथा । उवाच पार्थ पश्यैतान्  
 समवेतान् कुरुनिति ॥ २५ ॥ तत्रापश्यत् स्थितान् पार्थ पितृनप पितामहान् ।  
 आचार्यान् मातुलान् भ्रातृन् पत्रान् पौत्रान् सखींस्तथा ॥ २६ ॥ श्वशुरान् सुहृद्वैव  
 सेनायोरुभयोरपि । नानुसमीक्ष्य सकौन्तेयः सर्वान् बन्धून्वस्थितान् २७ कृपया परवाधिष्ठे  
 विषादिभिर्दमघ्नोत् । अर्जुन उवाच । दृष्ट्वेमं स्वजनं कृष्ण युयुत्स समुपस्थितम् ॥ २८ ॥  
 सीदान्तममगन्नाणि मुखस्य परिश्रयति । वेपथुश्च शरीरे मे रोमहर्षश्च जायते । २९ ॥  
 गाण्डीवं संसते हस्तात् त्यक्त्वैव परिदह्यते । नच शोकोऽप्यवस्थातु भ्रमतीत्य च मे मनः

से वा किस को मुझ से लड़ना उचित है । २२ । जो यह राजा लोग इस दुर्बुद्धी  
 दुर्योधनकी सहायता करने को यहां आये हैं इन सब युद्धाभिलाषियों को मैं देखूं  
 । २३ । संजय बोले कि इस प्रकार से अर्जुन के वचनों को सुनकर श्रीकृष्णजी  
 अर्जुन के रथको दोनों सेनाओंके मध्य में नियतकर । २४ । भीष्म द्रोणाचार्य आदि  
 सब राजाओं के सम्मुखकर यह वचन बोले कि हे अर्जुन इन भिले हुए कौरवों को  
 देखो । २५ । वहां अर्जुनने पिता पितामह आचार्य मामा भाई पुत्र और मित्रोंको और कृतवर्मा  
 आदि श्वशुर और सुहृदों को दोनों सेनाओंके मध्यवर्ती इनसब बांधवादिको । २६ ।  
 अपने नेत्रों से देखकर यह बड़ी करुणा से वचन बोला कि हे श्रीकृष्णजी इन  
 युद्धाभिलाषी सुजन सुहृद पिता पितामह गुरु भाई बन्धु और पुत्र पौत्रादिकों को  
 अपने सम्मुख युद्ध करनेके निमित्त नियत देखकर । २८ । मेरे अंग शिथिल होते  
 हैं मुख में शुष्कता होकर शरीर में कंप और रोमांच खड़े होते हैं । २९ । हाथ से  
 गांड़ीव धनुष गिरा पड़ता है और शरीर की त्वचा भस्म हुई जाती है यहां खड़े

ready, anxious to commence the bloody fight; and with whom it is  
 that I am to fight in this ready field; [ 22 ] and who they are that  
 are here assembled to support the vindictive son of Dhritiashtra in  
 the battle." [ 23 ]. *Sanjay* :—" Krishna being thus addressed by  
 Arjuna, drove the chariot in the midst of the two armies, [ 24 ] and  
 bade Arjuna cast his eyes towards the ranks of the Kurus 25 He  
 looked at both the armies, and beheld, on either side, none but grand-  
 sons, uncles, cousins, tutors, sons, and brothers, near relations or  
 bosom friends. 26. And when he had, gazed for a while, and  
 beheld such friends as these prepared for the fight, he was seized  
 with extreme pity and compunction; and uttered his sorrow in the  
 following words: Arjun—"Having beheld O Krishna! my kindred  
 thus standing anxious for the fight, ( 28 ) my members fail me,  
 mouth dries up, the hair stands on end and all my frame trembles,

॥ ३० ॥ निमिगानि च पदयामि विपरीतानि केशव । नच श्रेयोनुपदयामि हृत्वा  
 स्वजन मादये ॥ ३१ ॥ न काङ्क्षे विजयं कृष्ण न च राज्यं सुखानि च । किन्तो राज्येन  
 गोविन्द किं भोगैर्जीवितेन वा ॥ ३२ ॥ येषामर्थे काङ्क्षितं नो राज्यं भोगाः सुखानि च ।  
 तद्मेऽवस्थिता युद्धे प्राणांस्त्यक्त्वा घनानि च । तद्मेऽवस्थिता युद्धे प्राणांस्त्यक्त्वा  
 घनानि च ॥ ३३ ॥ आचार्याः पिताः पुत्रास्तथैव च पितामहाः । मातुलाः  
 श्वशुराः पौत्राः श्यालाः सम्बन्धिनस्तथा ॥ ३४ ॥ एतान् हन्तुमिच्छामि  
 प्रतेपि मधुसूदन । क्षपि त्रैलोक्य राज्यस्य हेतोः किन्तु मर्हानृते ॥ ३५ ॥ निहत्य  
 धार्तराष्ट्रं त्रः का प्रीतिः श्याञ्जनार्दन । पापमेवाश्रयेदस्मान् हृत्वेतानाततायिनः ॥ ३६ ॥  
 तस्मात्तर्ह्ययं हन्तुं धार्तराष्ट्रान् सवान्धवान् । स्वजनं हि कथं हृत्वा सुजितः स्याम

होनेको भी असमर्थ होकर मेरा विष चलायमान होता है । ३० । और हे कृष्ण  
 मैं विपरीत शकुना कोभी देखना हूँ, युद्ध में अपने सुजन लोगों को मारकर पीछे  
 से अपना कल्याण नहीं देखना हूँ । ३१ । हे श्रीकृष्ण मैं विजय करके राज्य  
 सम्बन्धी सुखों को नहीं चाहताहूँ, राज्य से हमको क्या लाभ है और जीवनकरके  
 भोगों से क्याफल होगा । ३२ । हम जिन लोगों के लिये राज्य सुख और भोगों  
 को चाहतेहैं वही सब लोग अपने शत्रुघ्न आदि सुखों को त्याग करके इस युद्ध  
 में वर्तमान हैं । ३३ । अर्थात् आचार्य, पिता, पितामह, मामा, श्वशुर, पोतेसाल  
 बहनोई इत्यादि अनेक नातेदार लोग । ३४ । हे मधुसूदन मैं त्रिलोकी  
 के भी राज्य के लिये इन मारने वालोंको भी नहीं मारना चाहताहूँ तो क्या पृथ्वी  
 के लिये इनको मारूंगा । ३५ । हे जनार्दन धृतराष्ट्र के भी पुत्रों को मारकर हमको  
 क्या सुख होगा इन आतनायियोंकाभी मारनेसे हमको पापही होगा । ३६ । इसकारण

29. Even Gandiva, my bow, slips from my hand, and my skin is parched and dried up. I am not able to stand; for my head swims.

30. I behold inauspicious omens on all sides. When I shall have destroyed my kindred shall I longer look for happiness? 31.

I wish not for victory, Krishna; I want not pleasure; for what is dominion, and the enjoyments of life, or even life itself, 32. when those, for whom dominion, pleasure, and enjoyment were to be

coveted, have abandoned life and fortune, and stand here in the field ready for the battle? 33. Tutors, sons and fathers, grandsires and

grandsons: uncles and nephews, cousins, kindred, and friends! 34. Although they would kill me, I wish not to fight them, no, not even

for the dominion of the three regions of the universe, much less for this little earth! 35. Having killed the sons of Dhritrashtra,

what pleasure, O Krishna, can we enjoy? Should we destroy them,

माधव ॥ ३७ ॥ यद्यप्येते न गम्यन्ति लोभोपहतचेतसः । कुलक्षयकृत दोष मित्रद्रोहं  
 च पातकम् ॥ ३८ ॥ कथं न क्षयमास्माभिः पापादस्मान्निवातितुम् । कुलक्षयकृत दोष  
 प्रपद्याद्भिर्जनैर्न ॥ ३९ ॥ कुलक्षये प्रणश्यन्ति कुलधर्मा सनातन । धर्मे नष्ट  
 कुले कस्त्वमधर्माभिभवत्यतः ॥ ४० ॥ अवर्माभमवात् दृष्ट्वा प्रदुष्यान्त कुलस्त्रिय ।  
 स्त्रीषु दुष्टसु घातैष्य जायते वर्णसङ्करः । ४१ ॥ सङ्करो नरकपथे कुलघ्नानां  
 कुलस्य च । पतन्ति पितरा दद्यात् क्षुत्पिण्डोदकाश्रया ॥ ४२ ॥ दापोरैतं कुलघ्नानां  
 वर्णसङ्करकारकैः । उन्नाद्यन्त जातिधर्मा कुलधर्माश्च शाम्भवा ॥ ४३ ॥ उत्सन्नकु  
 लधर्माणां मनुष्याणां जनार्दन । नरके नियतं वासो भवतीत्यनुशुभम् ॥ ४३ ॥ अहो

हम अपने बांख धृतराष्ट्र के पुत्रोंके मारने को योग्य नहींह हेमाधवजी हम मुंजनोंको  
 मारकर कैसे सुखी होंगे । ३७ । यद्यपि लोभा कर्षित चित्त होकर लोग कुलके नाश  
 रूप दोषको और मित्रों के साथ शत्रुता करने के पातक को नहीं देखते हैं, । ३८ ।  
 हे जनार्दन कुल के नाश होनेसे उत्पन्न दोषों को देखने वाले हम लोगों को इस पाप  
 से अलग रहना क्यों नहीं चाहिये । ३९ । कुल के नाश में कुल के परम्परा सम्बन्धी  
 कुल धर्म भी नष्ट होतेहैं और धर्म के नष्ट होनेसे सम्पूर्ण कुल अधर्मी होजाता है  
 । ४० । और अधर्म अधिक होनेसे कुलकी स्त्रियां दोषयुक्त होजाती हैं, हे दृष्टि  
 वंशी दुष्ट स्त्रियोंमें वर्णसंकर उत्पन्नहोताहै । ४१ । कुल के नाश करनेवालोंके घरानेका  
 वर्णसंकर नरकही के लिये है उनके पितृ लोग पिंड जल आदि क्रिया के गुप्त होजाने  
 से स्वर्ग से गिरते है । ४२ । कुलके नाश करने वाले पुरुषों के इन वर्णसंकर करने  
 वाले दोषों के कारण नाचीन कुलधर्म जाते रहते हैं । ४३ । हे श्रीकृष्ण जिनके

tyrants as they are sin would take refuge with us 36 It therefore  
 behoves us not to kill such near relations as these. How, O Krishna,  
 can we be happy hereafter, when we have been the murderers of our  
 race? 37 What if they whose minds are depraved by the lust of  
 power see no sin in the extirpation of their race, no crime in the  
 murder of their friends (38) is that a reason why we should not  
 resolve to turn away from such a crime we who abhor the sin of  
 extirpating the kindred of our blood? 39 In the destruction of a  
 family, the ancient virtue of the family is lost Upon the loss of  
 virtue, vice and impiety overwhelm the whole of a race. 40 From  
 the influence of impiety the females of a family grow vicious, and  
 from women that are become vicious are born the spurious brood called  
 Varna-mixtures 41 The Sanskrit provides Hell both for those which  
 are slain and those which survive, and therefore if theirs being depriv-  
 ed of the ceremonies of cakes and water offered to their manes, sink  
 into the infernal regions 42 By the crimes of those who murder their  
 own relations, is the cause of contamination and birth of Varnas mixtures,

यत्त महापातं कर्तुं व्यवसिता वयम् । यद्राज्यसुखलभेने हन्तुं भवजनमुद्यताः ॥४४॥  
 याद् गानपतीकारमहास्र शस्त्र पाणयः । धात्तैराद् भ्यै हन्तुस्तन्मे श्वेमत र भवेत् ॥४५॥  
 सहाय उवाच । एवमुक्त्वाऽर्जुन सहायो रणेपस्य उपाविशत् । विद्यज्ज मशरं चाप शोक  
 संविग्नमानसः ॥ ४७ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि श्रीकृष्णार्जुन विषाद  
 योगोनाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

कुल धर्म लोप होगये हैं उन मनुष्यों को सदैव नरक का निवास होता है यह वदे  
 लोग कहने आये हैं । ४४ । वदे दुःख और पश्चात्ताप की बातें कि हम उनवदे  
 प प करने के निश्चय करने वाले हुये जो राजमुखके निमित्त अपने मुजनोंको  
 लोभसे मारने को उद्यत हुये । ४५ । जो धृतराष्ट्र के पुत्र शस्त्रधारी होकर मुक्त  
 अशस्त्रधारी सम्मुखता से रहित को मारें तो मेरा बड़ा कल्याण होवे । ४६ । संजय  
 बोले कि इसप्रकार शोकग्रस्त चित्त अर्जुन युद्ध में ऐसे करुणा पूर्वक वचनोंको  
 कहकर धनुषबाणको रखकर रथ में बैठ गया ॥ ४७ ॥

the family virtue, and the virtue of a whole tribe is for ever done  
 away with. 43. And we have been told, O Krishna, that the  
 habitation of those mortals whose generation has lost its virtue,  
 shall be in Hell. 44. "Woe is me ! what a great crime are we prepa-  
 red to commit ! Alas ! that for the lust of the enjoyments of  
 dominion we stand here ready to murder the kindred of our own  
 blood ! 45. I would rather patiently suffer that the sons of Dhrita-  
 rashtra, with their weapons in their hands, should come upon me,  
 and, unopposed, kill me unguarded in the field." 46. *Sanjaya*—  
 "When Arjuna had ceased to speak, he sat down in the chariot  
 between the two armies; and having put away his bow and arrows,  
 his heart was overwhelmed with affliction." 47.



संजय उवाच । तन्तया कृपया विष्टमभ्युपार्णां कृलेक्ष्यम् । विपीद तमिदं पांशु  
 लुवाच मधुसूदन ॥ १ ॥ आभगवानुवाच । कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुपस्थितम् ।  
 अनार्य्यजुष्टमभ्युपार्णं मकीर्त्तिकरं रज्जन ॥ २ ॥ क्लैव्यं मात्सर्यं गमं पार्थ  
 नेतृवर्य्यपपाद्यत । क्षुद्र हृदयदैर्घ्यं त्यक्त्वा सद्य परतप ॥ ३ ॥ अर्जुन उवाच ।  
 कथं भाष्ममहं सख्यं द्राणश्चमधुसूदन । इषुभिः प्रातयोत्स्याम पूजाहारिस्त्वन ॥ ४ ॥  
 गुरुन हत्वा हि महानुभावान् श्रेयो भोक्तुं भैक्षमपीह लोके । हत्वार्थकामास्तु गुरुनिहैव  
 भुञ्जीय भोमान् रुधिरप्रादिघ्नान् ॥ ५ ॥ न चैतद्विद्मः कतरन्नो गरीयो यद्वा जयमयदि

अथाय ॥ २ ॥

संजय बोले कि स्नेहयुक्त कृपासे भरेहुये अभ्युपार्ण समेत व्याकुल और दुखी  
 अर्जुन को जानकर मधुसूदन श्रीकृष्णजी यह वचन अर्जुन से बोले । १ । कि हे  
 अर्जुन इस युद्धमें ऐसा मोह तुझको काहेसे उत्पन्न हुआ यह मोहस्वर्ग रोकनेवाला  
 और अपकीर्त्तिका प्रकट करने वाला है ऐसे मोहको नपुंसकलोग करते हैं इससे  
 हे अर्जुन तू नपुंसक मतहो यह तुझको उचित नहीं है हे शत्रुहन्ता अर्जुन हृदयकी  
 इस क्षुद्र दुर्बलताको त्यागकर सदाहोजा । ३ । यहमुन कर अर्जुन बोले कि हे  
 मधुसूदनजी मैं युद्धमें द्रोणाचार्य्य और भीष्म पितामह के सम्मुख उनसे शस्त्रोंके  
 द्वारा कैसे लड़ूँ हे शत्रुघ्न कृष्ण वह दोनोंमेरे पूज्यतम हैं । ४ । वड़े प्रभाववाले गुरुओं  
 को न मारकर इसलोक में भिक्षाकाही अन्न खाना उगम है और अर्थ के चाहने  
 वाले गुरुओंको मारकर इस लोक में रुधिरसे भरेहुए भोगोंको भोगेंगे । ५ । और यह  
 भी हम नहीं जानते कि हम गुरुओंको विजय करेंगे वा गुरु हमको विजय करेंगे

## LECTURE II

( The nature of the soul )

*Sanjaya*—" Krishna beholding him thus influenced by compunc-  
 tion, his eyes overflowing with a flood of tears, and his heart  
 oppressed with deep affliction addressed him in the following words"  
 1 Krishna—" Whence O Arjuna comes unto thee, this folly  
 and unmanly weakness? It is disgraceful contrary to duty and  
 the foundation of dishonour 2 Yield not thus to unmanliness,  
 for it ill becomes one like thee Abandon this despicable weakness  
 of thy heart, and stand up" 3 Arjuna—" How, O Krishna, shall  
 I resolve to fight with my arrows in the field against such as  
 Bhishma and Drna, who of all men are most worthy of my respect.  
 I would rather beg my bread about the world, than be the murderer  
 of my preceptors to whom such awful reverence is due Should I  
 destroy such friends as these, I should partake of possessions, wealth,  
 and pleasures polluted with their blood 5 We know not whether  
 it would be better that we should defeat them, or they us for those,

वा नो जयेयुः । यानेव हत्या न जिजीविष्य मस्तेवाम्भ्याः प्रमुणे धार्तराष्ट्राः ॥ ६ ॥  
 कार्यण्यदेपोपहतस्वभावाः पृच्छां गित्वा धर्मसंप्रवृत्तताः । यच्छ्रेयः स्यात्तावन्तं श्रद्धि-  
 तन्मे शिष्यस्तेऽहं शशि मां त्वां प्रपन्नम् ॥ ७ ॥ नाहं प्रपन्न्यामि मिमांशुनात् यच्छो-  
 कमुच्छोषणमिन्द्रियाणाम् । अवाप्यभूमावसगत्तन्मृदं राज्यं सुराणामपि चाधिपत्यम् ।  
 सत्रय उवाच । एवमुक्त्वा हृषीकेशं गुडाकेशः परस्मयः । न योत्स्य इति गोविन्दमु-  
 क्त्वा तर्षणीं यभूव ह ॥ ९ ॥ तमुवाच हृषीकेशः प्रदसाधय भागत । सेनयोद्धम-  
 योर्मध्ये विपादन्तमिदं वचः ॥ १० ॥ श्रीमद्भगवानुवाच । अशोक्यामन्वशोचस्त्व-  
 मज्ञावादांश्च आपसे । गतास्नगतास्सूत्र नानुशोचान्त पाण्डताः ॥ ११ ॥ नत्वेवाहं

और हम जिनको मारकर जीवन के इच्छवान् नहीं हैं वह धृतराष्ट्र के बेटे सम्मुख  
 वर्त्तमान हैं । ६ । हे कृष्ण मैं दीनता युक्त दूषित प्रकृतिवाला धर्म में असावधान  
 चित्त होकर आपसे पूछताहूँ कि जो आपने मेरे निमित्त कल्याण निश्चय किया  
 है उसको कृपाकरके मुझ से कहिये क्योंकि मैं आपका शिष्यहूँ आप अपनी  
 शरणागततामें मुझको उपदेश कीजिये । ७ । पृथ्वीपर यदियुक्त निर्विभाग शत्रु-  
 ता रहित अथवा धन आदि से परिपूर्ण राज्यको और देवताओं की प्रभुता को  
 भी पाकर इन्द्रियोंका सुखाने वाला जो मेरा शोकहै उसके दूरहोने का मैं कोई  
 भी उपाय नहीं देखता हूँ । ८ । शत्रुओं का संतप्त करने वाला अर्जुन श्री कृष्ण  
 जी से यह वचन कहकर कि युद्ध नहीं कल्याण मीन होगया । ९ । यहदशादेखकर  
 दोनों सेनाओं के मध्य में हंसनेहुए श्रीकृष्णजी अर्जुनको अत्यन्त दुखी जानकर  
 यह वचन बोले । १० । कि अर्जुन जो शोक के योग्यही नहीं हैं उनको तू शोचता है  
 और पंडितोंके वचनों को कहता है परन्तु पंडित लोग उन पुरुषोंको जिनके कि  
 शरीर छूटगये अथवा शरीर में प्राण नियत हैं अर्थात् आत्मा के अविनाशी होने

whom having killed, I should not wish to live, are even the sons and  
 people of Dharma-shastra who are here drawn up before us. 6. My  
 compassionate nature is overcome by the dread of sin. Tell me truly  
 what may be best for me to do. I am thy disciple, wherefore instruct  
 me in my duty. 7. For my understanding is confounded by the  
 dictates of my duty, and I see nothing that may assuage the grief  
 which dries up my faculties, although I were to obtain a kingdom  
 without a rival upon earth, or dominion over the hosts of heaven "8.  
 Sanjaya — " Arjuna having thus spoken to Krishna, and declared  
 that he would not fight, was silent. 8. Krishna smiling, addressed  
 the afflicted prince, standing in the midst of the two armies, in the  
 following words. 10. Krishna — " Thou grieveest for those who are  
 unworthy to be lamented whilst thy sentiments are those of the  
 wise men. The wise neither grieve for the dead nor for the living. 11



जातु नास त्व नेमे जनाधिपा । न चैव न भविष्यामः सर्वे वयमतः परम् ॥ १२ ॥  
 देहिनाऽस्मिन् यथा देहे कौमरं यौवनं जरा । तथा देहान्तरमा सर्धारस्तत्र न मुह्यति  
 ॥ १३ ॥ मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय शीतोष्णसुखदुःखदाः । जगमापायिनो निश्वास्तां-  
 स्तितिक्षस्व भारत ॥ १४ ॥ यं हि न व्यथयत्येतं पुरुषं पुरुषभ । समदुःखसुख  
 घोरं स्यात्पुनराय कल्पते ॥ १५ ॥ नासने विद्यत भावो नाशायो विद्यते सतः ।  
 उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वनयस्तत्त्वदर्शिनः ॥ १६ ॥ अविनाशितु तद्वाद्द येन सर्वमि-  
 द्रुततम् । अनाशमव्ययस्यास्य न कश्चित्कर्तुमर्हति ॥ १७ ॥ अन्तवन्त इमे देहा  
 नित्यस्योक्ताः शरीरिणः । अनाशनोऽप्रमयस्य तस्मादुध्यस्व भारत ॥ १८ ॥ य एनं

से नहीं शोचते हैं १२। मैं कभी नहीं हुआ और तुझसमेत यह सब राजा लांगभी  
 कभी नहीं हुए न इसक पीछ हम सब उत्पन्नहोंगे यहवात नहीं है १२। जैसे कि स्थूल  
 शरीर में बाल्यावस्था, तरुणावस्था और वृद्धावस्था यह तीनों दशाहंती हैं इसी  
 प्रकार अन्य शरीर की प्राप्ति है, वहाँ ज्ञानी पंडित माहको नहीं पाता १३। हेकुन्ती  
 पुत्र अर्जुन इन्द्रियों की वृत्तियों के शब्दादि विषय देखना खाना सूंघना और  
 शीतोष्णता आदि सुख दुःख के देने वाले उत्पत्ति नाशयुक्त सब विनाशवान् हैं  
 इससे हे भरतर्षभ तू इनको सहनकर १४। हे भरतवंशियोंमें श्रेष्ठ जिस सुख दुःख  
 में एकसे रहनेवाले ध्यानी और योगी पुरुषको यह पीड़ा नहीं देते हैं वह मोक्षके  
 योग्य समझा जाता है, १५। अभावरूपी वास्तुका भावभी नहीं है और सतरूप ब्रह्मका  
 अभाव वर्तमान नहीं है १६ । उस सत अर्थात् सत्यको जिससे कि यह जगत्  
 व्याप्तहोरहा है अविनाशी जानो इस न्यूनता रहित आत्माके नाशकरनेको कोई भी  
 समर्थ नहीं है १७ । अति प्राचीन निरवाधि अविनाशी आत्मा के यह सब शरीर

I myself never was not, nor thou, nor all the princes of the earth; nor shall we ever hereafter cease to be. 12. As the soul in this mortal frame finds infancy, youth, and old age; so, in some future frame, will it find the like. One who is confirmed in this belief, is not disturbed by any thing that may come to pass 13. The sensibility of the faculties gives heat and cold, pleasure and pain; which come and go, and are transient and inconstant. Bear them with patience, O son of Bharata. 14. For the wise man, whom these disturb not and to whom pain and pleasure are the same, is formed for immortality. 15. A thing imaginary has no existence whilst that which is true is a stranger to nonentity. 16. By those who look into the principles of things, the design of each is seen. Learn that he by whom all things were formed is incorruptible, and that no one is able to effect the destruction of this thing which is inexhaustible. 17. These bodies, which envelope the souls which inhabit them are eternal incorruptible, and surpassing all conception, are declared to be finite

वेत्ति हन्तार यथैन मन्यते हतम् । उभौ तौ । विजानीतो नाय हन्त न हन्यते १९ ॥  
 न जायते । म्रियते वा कदाचिन्नाय भूत्वा भावता वा न भूय । अजा । नित्य शाश्वताय  
 पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥ २० ॥ चेदपरिनाशन नित्यं य एवमजमन्ययम् ।  
 कथं ह्य पुरुषं पार्थ कं घातयात हान्तवम् ॥ २१ ॥ वासांश्च जीर्णानि यथा  
 विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि । तथा शरीराण्य विहाय जाणम्यनानि स  
 याति नवानि देही ॥ २२ ॥ नैन छिन्दन्ति शस्त्राण्य नैन दहति पावकः । न चैन  
 क्लम्यत्यापो न शोषयति माकतः ॥ २३ ॥ अकूटोऽयमदहायमवलेपोऽशोष्य  
 एवञ्च । नित्यं सर्वगतः स्थाणुरचलोऽसनातनः ॥ २४ ॥ अव्ययायमाचिन्त्यो

नाशवान् कहे हैं इसकारणते हे अर्जुन तुम युद्ध में प्रवृत्त हो । १८ । जो पुरुष इस  
 आत्माको मारनेवाला समझता है और जो इसको मरा हुआ मानता है वह दोनों अज्ञानी  
 है, यह कभी न मरता है न कोई इसका मारनवाला है । १९ । यह आत्मा न कभी  
 उत्पन्न होता है न मरता है और न पहले उत्पन्न हुआ है न पीछे उत्पन्न होगा यह  
 अजन्मा आत्मा नित्य और प्राचीनता के कारण सदैव एक रूप है यह अनित्य देहों  
 के मरनेमें नहीं मरता है । २० । जो इस आत्माको आविनाशी और नित्य अजन्मा और  
 न्यूनतासे रहित जानता है वह सब शरीरोंमें पूर्ण आत्मारूप पुरुष कसे किसीको  
 मारेगा और किस को मरवावेगा । २१ । जैसे कि मनुष्य पुराने वस्त्रोंको त्यागकर  
 नवीन वस्त्रोंको धारण करता है इसीप्रकार आत्माभी पुराने देहोंको त्यागकर दूसरे  
 नवीन शरीरोंको प्राप्त करलेता है । २२ । इस आत्माको न शस्त्र छेद सक्त न अग्नि  
 जलामक्ती न जल गन्नासक्ता न वायु सुखा सक्ती है । २३ । क्योंकि यह आत्मा  
 न छंदनेके योग्य न जलाने के योग्य न गलानेके न सुखाने के योग्य है यह नित्य  
 रूप सर्वत्र वर्तमान सदैव एक दशा में अवलरूप प्राचीन सनातन और अव्यद

beings wherefore O Arjun, resolve to fight 18 He who believes that it is the soul which kills and he who thinks that the soul may be destroyed, are both alike deceived, for it neither kills nor is killed. 19 It is not a thing of which a man may say, it has been it is about to be, or is to be hereafter, for it is a thing without birth, it is ancient, constant, and eternal and is not to be destroyed like the mortal frame. 20 How can the man who believes that this thing is incorruptible eternal, inexhaustible and without birth think that he can either kill or cause it to be killed ? 21 As a man throws away old garments and puts on new even so the soul, having quitted its old mortal frames enters into new ones. 22 The weapon divides it not, the fire burns it not, the water corrupts it not, the wind dries it not away, ( 23 ) for it is indivisible inconsumable, incorruptible and is not to be dried away it is eternal universal, permanent immovable ( 24 ) it is invisible, inconceivable

यमविकारयोऽयमुच्यते । तस्म देव विदित्वैनं नानुशोचितुमर्हसि ॥ २५ ॥ अथ  
 चैनं नित्यजातं नित्यं वा मन्यसे मृतम् । तथापि त्वं महाबाहो नैनं शोचितुमर्हसि  
 ॥ २६ ॥ जन्तस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुव जन्म मृतस्य च । तस्मादपरिहार्येण न त्वं  
 शोचितुमर्हसि ॥ २७ ॥ अयत्तादीनि भूतानि व्यतमन्यानि भारत । अव्यक्तं  
 निघनान्यथ तत्र का परिदेवता ॥ २८ ॥ आश्चर्यवत् पश्यति कथिदेनमाश्चर्यवत्  
 वेदति तथैव चान्य । आश्चर्यवच्चैनमन्यं शृणोति श्रुत्वाप्येन वेद ॥ चैवकथितं  
 ॥ २९ ॥ वेदो नित्यस्त्वद्यो यं वेदे सर्वस्य भारत । तस्मात् सर्वाणि भूतानि  
 न त्वं शोचितुमर्हसि ॥ ३० ॥ स्वयमेवापि चावेक्ष्य न विकम्पितुमर्हसि । धर्म्यादि  
 पुण्यपद्मैर्योऽन्यत् क्षत्रियस्य न विद्यते ॥ ३१ ॥ यद्वच्छया चोपपन्नं स्वर्गद्वारमपावृतम् ।

है । २४ । यह गुप्तरूप भ्यान स अगम्य और रूपान्तर दशासे पृथक् कहा जाता है  
 इन हतुओंस इसका ऐसा जानकर तुम शाचकरन के योग्य नहीं हो । २५ । तू इसको  
 सदैव मरन वला और जन्मलने वाला मानता है तौभी सोचनकर । २६ । ह महा  
 बाहु जन्म लेनेवालेकी मृत्यु भी अवश्य है और मरनमालेका जन्मभी निश्चय है इस  
 कारण अब भावी है इस का कोई भी उपाय नहीं है इसमें तेरा शोच करना ब्याधा है  
 । २७ । हे भरतवंशी जीवोंका प्रादि विदित नही होता म य विदितहाता है और अन्तभी  
 विदित नहीं है एसीदशा में विलाप क्यों करना चाहिय । २८ । कोई तो उसका  
 माश्र्यरूप से मानता है और कोई आश्चर्यके समान देखता और कहता है और  
 कोई उसका आश्चर्यकेही समान मुनकर नही जानता है अर्थात् वह आत्मा देखने  
 मुनने और कहनेम नही आता है । २९ । हे अर्जुन यह आत्मा सब के शरीरोंमें नित्य  
 और अमर है इसकारण हेतातुमसब जीवधारियोंके शोचनके योग्य नहीं हो । ३० ।  
 अपने धर्म को देखकर कांपना छाडो क्योंकि धर्मशुद्ध के सिवाय क्षत्रीका दूसरा

and, unalterable, therefore believing it to be thus thou shouldst not  
 grieve. 25 But whether thou believest it of eternal birth and dura-  
 tion, or that it dies with the body still thou hast no cause to lament  
 it. 26 Death is certain to all things which are subject to birth, and  
 regeneration to all things which are mortal, wherefore it does not  
 behove thee to grieve about that which is inevitable. 27 The former  
 state of beings is unknown, the middle state is evident, and their  
 future state is not to be discovered. Why then shouldst thou trouble  
 thyself about such things as these? 28 Some regard the soul as a  
 wonder, whilst some speak, and others hear of it with astonishment,  
 but no one knows what it is. 29 This spirit being never to be  
 destroyed in the mortal frame which it inhabits, it is unworthy  
 for thee to be troubled for all these mortals. 30 Cast but thy eyes  
 towards the duties of thy particular tribe, and it will all become thee  
 to tremble. A soldier of the Kshatriya tribe has no duty superior

सुखिनः क्षत्रियाः पाथं लभन्ते युद्धं मोहशम् ॥ ३२ ॥ अथ चेत्वमिमं धर्म्यं संग्रामं  
न करिष्यसि । ततः स्वधर्मं कौर्त्तव्यं हित्वा पापमवाप्स्यसि ॥ ३३ ॥ अनीतिं वापि  
भूतानि कथायिष्यन्ति तेऽप्यहम् । सम्भावितस्य चाकीर्त्तिर्मरणदातारुच्यते ॥ ३४ ॥  
अयादृशादुपरतं संस्यन्त त्वां महारथाः । येषाञ्च त्वं बहुमतो भूत्वा यास्यसि ताघ-  
वम् ॥ ३५ ॥ अवाक्यवादांश्च बहुन् वदिष्यन्ति तवाश्रिताः । निन्दन्तस्तव साम-  
र्थ्या ततो दुःखतरन्तु किम् ॥ ३६ ॥ हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जिता वा भोक्ष्य से  
महीम् । तस्तादुच्छ्रयः कौन्तेय युद्धाय कृतनिधयः ॥ ३७ ॥ सुखदुःखे समे कृत्वा  
लाभालाभौ जयाजयौ । तनो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि ॥ ३८ ॥ एषा

कल्याणकारी नहीं है । ३१ । हे अर्जुन बिना इच्छा किसे स्वर्गका द्वार खुला हुआ  
वर्तमान है स्वर्ग का सुख पानेवाले क्षत्रा ऐसे युद्ध का पाते हैं । ३२ । जो तू इस  
धर्मरूप युद्ध का नहीं करेगा तो अपने धर्म और कीर्तिको त्यागकर पाप का भागी  
होगा । ३३ । बहुत समय तक सब जीव तेरी अपकीर्ति को कहेंगे और मतिघावान्  
पुरुषकी अपकीर्ति मरण सेभी अधिक दुखदायी होती है । ३४ । और सब महारथी  
लोग तुझका भयके कारण युद्धसे हटा हुआ मानेंगे उन सब लोगोंके आगे तू महान्  
स्तुतिमानहाकर निन्दायुक्त छुड़ाई और तुच्छताको पावगा ३५ और तेरे शत्रु तेरे पराक्रम  
की निन्दा करते हुए कहनेके अयोग्य अनेक अनुचित बातोंको कहेंगे लज्जावानको इस  
से अधिक और क्या दुःख होगा । ३६ । मरकर तो स्वर्गका और विजय करके पृथ्वी  
के भोगोंको भोगेगा हे अर्जुन इस कारण तू युद्धके निमित्त निश्चयकरके उठ खड़ा हो  
। ३७ । हानि लाभ जय विजय समानकरके युद्धके निमित्त तैयारीकर इसलिये कि

to fighting. 31. Just to thy wish the door of heaven is found open before thee. Such soldiers only as are the favourites of Heaven join such a glorious fight as this. 32; But, if thou wilt not perform the duty of thy calling, and fight out the field, thou wilt abandon thy duty and thy honor, and be guilty of a crime. 33. Manifold will speak forever of thy disgrace. Disgrace to a man of honour is worse than death. 34. The generals of the armies will think that thy retirement from field arose from fear, and thou wilt become despicable even amongst those by whom thou wert wont to be respected. 35. Thy enemies will speak of thee in words which are unworthy to be spoken, and depreciate thy courage and abilities; what can be more dreadful than this! 36. If thou art slain thou wilt obtain heaven, if thou art victorious thou wilt enjoy a world for thy reward; wherefore son of Kunti, arise and be determined for the battle. 37. Make pleasure and pain, gain and loss, victory and defeat, the same, and then prepare for battle, then thou shalt

तेभिहिता स्वांश्चे बुद्धियोगे त्विमां ऋणु । बुद्ध्या युक्तो यथा पार्थ कर्मबन्धं प्रहास्यसि ॥ ३९ ॥ नेहाभिक्रमनाशोऽस्त प्रत्यवायो न विद्यते । स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रयते महतो भयात् ॥ ४० ॥ व्यवसायात्मिका बुद्धिरंकेह कुरुनन्दन । यदुशाखा एनन्ताथ बुद्धयोऽव्यवसायेनाम् ॥ ४१ ॥ याममां पुष्पितांवाचं प्रचक्ष्यत्यधिपश्चित । वेदवादरताः पार्थ नान्यदस्तीति चादिन ॥ ४२ ॥ द्यामात्मानः स्वर्गपरा जन्मकर्म फलप्रदाम् । क्रियाविशेषवद्भुलां भोगैश्वर्यमार्तिं प्रात ॥ ४३ ॥ भोगैश्वर्यप्रसक्तानां तयापहतचेतसाम् । व्यवसायात्मिका बुद्धिः समाधौ न विधीयते ॥ ४४ ॥ त्रैगुण्य युद्ध में तू कभीपापका भागी नहीं होगा । ३८ । हे अर्जुन यह धैर्ये उपनिषद् और सांख्य सम्बन्धी ब्रह्मज्ञान तुझ से कहा अरु इसी ज्ञान को कर्म योग में वर्णन करता हूं इस ज्ञान में प्रवृत्त होकर हे अर्जुन तू कर्म बन्धा को त्याग करेगा । ३९ । इस कर्म योग में शारम्भ कर्म का नाश नहीं है और पाप भी नहीं है इस फल की इच्छा रहित कर्म रूपी धर्म का थोड़ा भी करना बड़े भारी संसारी भयसे रक्षा करता है । ४० । हे कौरव नन्दन इस कर्म योग में तत्त्व के नियम करनेवाली बुद्धि एकही है और जिनको तत्त्व का निश्चय नहीं है उनकी बहुत शाखा रखनेवाली अनेक बुद्धियां हैं । ४१ । हे अर्जुन वह तत्त्व निश्चयसे रहित वेद वाद में मीति रखने वाले इच्छा से जीते हुए चित्त से स्वर्ग को उत्तम जाननेवाले अज्ञानी लोग पुष्पित वचनों के समान चित्तरोचक भोग ऐश्वर्य की प्राप्ति में साधन रूप जन्म कर्म और फल के देनेवाले अथवा अग्निहोत्रादि की एल क्रियाको अधिक रखने वाले वेद के वचनों को कहते हैं और यह भी कहनेवाले हैं कि कर्म से उत्तम दूसरा मोक्ष और ज्ञान नहीं है । ४३ । भोग और ऐश्वर्य में प्रवृत्त चित्त और उस वचन से दूरे हुये चित्त उन पुरुषों की समाधि में तत्त्व की निश्चयात्मिका बुद्धि

incur no sin 38 This knowledge is based on Sankhya's shastras; hear what it is in the practical, so that thou mayst be free from the bonds of action 39. In this no effort fails, nor is there any harm. A very small portion of this duty delivers a man from great fear. 40 In this there is but one judgment, but that is of a definite nature; whilst the judgment of those of indefinite principles are infinite and of many branches 41 The unwise delighting in the rewards praised in the Vedas, tainted with worldly lusts, and preferring a transient enjoyment of heaven to eternal absorption, whilst they declare there is no other reward, pronounce, for the attainment of worldly riches and enjoyments, flowery sentences, ordaining innumerable and manifold ceremonies, and promising rewards for the actions of this life. 42. The determined judgment of such as are attached to riches and enjoyments, and whose reason is led astray by this doctrine, is not so much upon mature consi-

विषया वेदा विश्वैर्गुण्यो मयाजुन । निर्द्वन्द्वो नित्यसत्यम्यो निर्योगक्षेम सा मयान् ॥ ४५ ॥ यावानर्थ उदपाने सर्वतः संप्लुतोदके । तावान् सर्वेषु वेदेषु ब्राह्मणस्य विजानत ॥ ४६ ॥ कर्मण्येवाधिक्कारस्तं मा फलेषु कदाचन । मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ॥ ४७ ॥ योगस्य कुरु कर्माणि सङ्ग त्यक्त्वा धनञ्जय । सिद्धय-सिद्धयोः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते ॥ ४८ ॥ दूरेण ह्यारं कर्म बुद्धियोगाद्-नञ्जय । दुर्यौ शरणमन्विच्छ कृपणाः फलहेतवः ॥ ४९ ॥ बुद्धियुक्तो नदातीह जमे सुहृत्सुहृते । तस्माद्योगाय युज्यस्व योग कर्मसु कौशलम् ॥ ५० ॥ कर्मजं

नहीं होती है । ४४ । तीनों गुणों को कहनेवाले वेद हैं हे अर्जुन तू तीनों गतियों से विरक्त है । मुक्त दुःख आदि द्वन्द्व गुणों से पृथक् सर्वत्र सम बुद्धिवाला होकर सर्वत्र धैर्यवान् वा शुद्ध सत्त्वगुण वृत्ति हो और मनोरथों की प्राप्ति धार रक्षासे पृथक् होकर आत्मसाद हो । ४५ । जिन्ना कि बड़ी नदी वा सरोवर आदि में किसीका प्रयोजन होता है उतनाही प्रयोजन मित्रानी ब्राह्मणका सब वेदों में होता है । ४६ । ब्राह्मणानी कर्म में ही तेरा अधिकार है कर्म के फलों में कभी तेरा अधिकार न हो और तू कर्मफल का कारण भी मत हो और कर्म न करने में भी तेरा मन न हो । ४७ । कर्मों की सिद्धी और आसिद्धी में समान बुद्धि होकर तू योग में नियत हो और और अकर्मियों के भंगोंको छोड़कर कर्म को कर ऐसी समता को योग कहते हैं । ४८ । हे अर्जुन फल की इच्छामें क्रियाश्रुता कर्मज्ञान योग में अत्यन्त लघु है, बुद्धि में रक्षा वा शरण को चाहो जिनके जन्म मरण का कारण कर्मों का फल है वह दान अर्थात् दुखी होते हैं । ४९ । इस लोके में बुद्धि में संयुक्त होकर मनुष्य पुण्य और पाप को त्याग करता है इस हेतु से समतारूप बुद्धि योग में उपाय कर

deration and meditation. 44. The object of the Vedas is of a threefold nature. Be thou free from a threefold nature, be free from duplicity, and stand firm in the path of truth, be free from care and trouble, and turn thy mind to things which are spiritual. 45. The knowing divine requires as little out of the whole Vedas collectively, as are from a reservoir flowing with water. 46. Thou hast a right in the deed, and not in the fruit of it. Be not one whose motive for action is the hope of reward. Let not thy life be spent in inaction. 47. Depend upon application, perform thy duty, abandon all thought of the consequences, and make the event equal, whether it terminate in good or evil; for such equality is called Yoga. 48. Actions are far inferior to the application of wisdom. Seek an asylum in wisdom. Poor are the fruit seeking. 49. Men who are endued with true wisdom cast off good or evil deeds in this world. Study then to obtain this application of thy understanding, for such application

बुद्धियुक्ता हि फले त्यक्त्वा ननीषिण । जन्म बन्धविनिमुक्ता पदगच्छन्त्यनामयम् ॥५१॥  
 यदा ते मोहकलिलं बुद्धिर्ध्याततरिष्यति । तदा गन्तासि नर्वेद श्रोतव्यस्य श्रुतस्य  
 च ॥ ५२ ॥ श्रुतिविप्रतिपक्षा ते यदा स्याद्व्यति निश्चला । सम धावचला बुद्धिस्तदा  
 योगमवाप्स्यसि ॥ ५३ ॥ अर्जुन उवाच । स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव ।  
 स्थितधीः किं प्रभाषेत किमासीत ब्रजेत किम् ॥ ५४ ॥ श्रीभगवानुवाच । प्रजहाति  
 यदा कामान् सर्वान् पार्थ मनोगतान् । आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते ॥५५॥  
 दुःखेष्वनुद्विग्नमना सुखेषु विगतस्पृहः । वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मानसकृपवै ॥५६॥  
 यः सर्वत्रानाभनेहस्तत्तत् प्राप्य शुभाशुभम् । नाभिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रातः-

क्योंकि ज्ञान योग ही कर्मों में चातुर्यता है बुद्धि से संयुक्त पुरुष कर्म जन्य फलोंका त्यागकरके जन्म बंधन से छूटता है और निरुपाधि मोक्षपद को पाता है । ५१ । जब तेरी मोहकपी बुद्धि शुद्ध होगी तब तू सुनेहुए और सुनने के योग्य शास्त्रों से वैराग्य पावेगा । ५२ । और नानाप्रकार के शास्त्रों को सुनकर संदेहों से भरी हुई तेरी बुद्धि असाध्य ब्रह्म में नियत होकर निर्विकल्प समाधि में अचल वर्तमान होगी तब योग को पावेगा । ५३ । अर्जुन बोले कि हे केशवजी जिसकी बुद्धि शुद्ध ब्रह्म में नियत है और समाधि में वर्तमान है उसको लोग क्या कहते है और वह बुद्धि में नियत होकर कैसे बोलता है और कहाँ बैठता है और कैसे विषयों को भोगता है । ५४ । श्री भगवान् बोले हे अर्जुन जब यह योग मन में वर्तमान होता है और सब इच्छाओं को त्याग करता है और आत्मा करके अपनेही में तृप्त होता है तब स्थिर बुद्धि कहा जाता है । ५५ । दुःखों में व्याकुलता रहित मन, और सुखों में अनिच्छावान्, राग भय क्रोध से पृथक् स्थिर बुद्धि, मुनि कहा जाता है । ५६ । जो सर्वत्र में प्रीति न रखने वाला जो शुभ पदार्थ को पाकर उसकी हर्ष से

in business in cleverness 50 Wise men, who have abandoned all thought of the fruit which is produced from their actions, are freed from the chains of birth, and go to the regions of eternal happiness. 51 When thy reason shall get the better of the gloomy weakness of thy heart, then shalt thou have attained all knowledge which has been or is worthy to be taught. 52 When thy understanding, by study brought to maturity, shall be fixed immoveably in contemplation, then shall it obtain true wisdom. 53 Arjuna,—“What O Krishna, is the distinction of a wise and steady man who is fixed in contemplation? Where does he dwell? How does he act?” 54 Krishna,—“A man is said to be confirmed in wisdom, when he forsakes every desire which enters into his mind and is contented in himself. 55. He whose mind is undisturbed in adversity, unclated in prosperity, and who is stranger to anxiety, fear and anger, is called a man. 56. The wisdom of that man is

पठता ॥ ५७ ॥ यदा संहरते चार्थं कूर्मं ज्ञानं च सर्वशः । इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तन्मयं  
 प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ ५८ ॥ तत्र यदा चिन्तयति सत्त्वं निराहारस्य चैतन्यं । रसवज्जलं रसो  
 व्यस्य परं दृष्ट्वा निर्वर्त्तते ॥ ५९ ॥ यततो ह्यपि कोऽप्येव पुरुषस्य विर्भावतः । इन्द्रि-  
 याणि प्रमाथीनि हरति प्रसन्नं मनः ॥ ६० ॥ नाना सर्वाणि संयम्य युक्तमासीत्  
 सत्परः । वशेहि यस्थेन्द्रियाण्य तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ ६१ ॥ प्रापतो विषयान् पुंसः  
 सङ्कल्लेषज्जायते । सङ्घातं सञ्जायते कामः कामात् क्रोधोभिजायते ॥ ६२ ॥  
 क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात् स्मृतिवध्रमः । स्मृतिव्रंशो बुद्धिनाशो बुद्धिना-  
 शात् प्रणश्यति ॥ ६३ ॥ रागद्वेषविषुक्तैस्तु विषयानिन्द्रियैश्चरन् । आत्मवद्द्वैविध्यं

प्रशंसा नहीं करता है और अशुभको पाकर दुःखी होकर निन्दा नहीं करता है  
 उसकी बुद्धि स्थिर अर्थात् निश्चल है । ५७ । जब यह पुरुष सब प्रकार से इन्द्रियों  
 को विषयों से कछुपके भ्रमों के समान खिंचता है तब उसकी बुद्धि स्थिर समझी  
 जाती है । ५८ । इन्द्रियों से विषयों को न ग्रहण करने वाले देहाभिमानी से सब  
 विषय होजाते हैं परन्तु उन के विषयों का अनुराग निवृत्त नहीं होता विषय संबंधी  
 मीति भी परब्रह्म को देखकर दूरहोती है । ५९ । हे अर्जुन ज्ञानी मनुष्यकी इन्द्रियां भी  
 लुटेरोंके समान चिन्तको अत्यन्त चुराती हैं । ६० । उन सबको अपने वशीभूत कर के  
 विद्यानमनने मुक्त जगत् के आत्मा को अत्यन्त प्रियतम माने और इन्द्रियोंको आधीन  
 करे उसकी बुद्धि स्थिरहै । ६१ । विषय वासना वालों के विषय ध्यान करने का संग  
 इन्द्रियों पर होताहै उसी संगसे काम उत्पन्न होताहै कामसे क्रोध क्रोध से मोह मोह  
 से विभ्रम, स्मृति के भ्रंश से बुद्धि का नाश और बुद्धिके नाश से मरण होजाता  
 है । ६३ । मनको स्वाधीन रखने वाला योगी उन रागद्वेषों से पृथक् मनके स्वा-

established, who in all things is without affliction; and having  
 received good or evil, neither rejoices at the one, nor is cast down  
 by the other. 57. His wisdom is confirmed, when like the tortoise  
 he can draw in all his senses, and restrain them from their wonted  
 purposes. 58. The hungry man loses every other object but the  
 gratification of his appetite, and when he is become acquainted with  
 the Supreme, he loses even that. 59. The tumultuous senses  
 hurry away, by force, the heart even of the wise man who strives  
 to restrain them. 60. The inspired man, trusting in me may quell  
 them and be happy. The man who has his passions in subjection  
 is possessed of true wisdom. 61. The man who attends to the  
 inclinations of the senses, is united with them; from this union  
 are created passions, from passions anger, from anger is produced  
 folly, from folly a depravation of the memory, from the loss of  
 memory the loss of reason, and from the loss of reason the loss of  
 all? 63. He who has control over his senses, who despises delights



यात्मा प्रसादमधिगच्छति ॥ ६४ ॥ प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते । प्रसन्न  
चेतसो ह्याशु बुद्धिं पर्यवतिष्ठते ॥ ६५ ॥ नास्ति बुद्धिरशुक्तस्य न चायुक्तस्य  
भावना । न चाभावयत शान्तिरशान्तस्य कुत सुखम् ॥ ६६ ॥ इन्द्रियाणां हि  
चरता यमनोबुद्धिधीयत । तदस्य हरति प्रज्ञा चायुर्नाविमिवाग्भासे ॥ ६७ ॥ तस्मा  
द्यस्य यद्वासादा निवृत्तीकृतानि सर्वशः । इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता  
॥ ६८ ॥ या निश्चा सर्वभूतानां तस्या जगति स्वयमी । यस्या जायति भूतानां सा  
निश्चा पश्यती मुने ॥ ६९ ॥ आपूर्यमाणमचलप्रतिष्ठं समुद्रमापः प्रविशति यद्वत् ।  
तद्वत् जगता यः प्रविशति सर्वं स शान्तिमाप्नोति न कामवासी ॥ ७० ॥ अध्याप

धीन होने वाली इन्द्रियों से विषयों के समीप धृपता है वह अपने संकल्प विरुद्ध-  
रूपी कीचड़ के धोने से चिन्ही शुद्धी को पाता है । ६४ । उस शुद्धी के होने से  
उसके सप्त दुःखोंका नाश होता है और उस शुद्ध चिन्हाली बुद्धि से वह ज्ञानको  
पाता है । ६५ । संशय और विचार से रहित पुरुषको ज्ञान नहीं होसकता ज्ञान-  
हीन पुरुष ध्यान नहीं कासकता बिना ध्यानके चिन्हावधान नहीं होसकता और  
बिना चिन्हाथिर हुये उसको सुख कने होसकता है । ६६ । जिसका मन विषयों में  
जाने वाली इन्द्रियों के पीछे २ चलताहै उसकी ब्रह्मसंरंधी बुद्धिको बेमेहर लेताहै  
जेसे कि जलमें नौका को बापु हरलेता है । ६७ । हे महाबाहू इस कारणसे जिस-  
को इन्द्रियां सब प्रकार करके विषयों से पृथक् होती है उसकी बुद्धि स्थिर कहाती  
है ६८ । रात्रिमें जितेन्द्री ज्ञानी जागता है और दिनमें जब सप्त अज्ञानी जीव  
जागते है ब्रह्मत्त्व के देखने वाले मुनि लोगों की रात्रि है । ६९ । जेसे कि अचल  
रहने वाले समुद्र में जल प्रवेश करते है इसी प्रकार सप्त प्रकारकी इच्छा जिस ब्रह्म-  
ज्ञानी में प्रवेश करती है । वह शान्तिको पाता है परन्तु विषयोंका चाहने वाला

and whose mind is in his bidding obtains happiness surpeme  
64 In his happiness is born to him an exemption from all his  
troubles, and his mind being thus at ease, wisdom soon flows to  
him from all sides 65 The man who attends not to this is  
without wisdom or the power of contemplation The man who  
is incapable of thinking, has no rest What happiness can he enjoy  
who has no rest? 66 The heat, which follows the dictates of the  
moving passions, carries away the reason, as the storm, does the  
lab in the raging ocean 67 The man, therefore, who can restrain  
all his passions from their inordinate desires, is endued with true  
wisdom 68 Such a one wakes but in the night when all things  
go to rest The contemplative Manu sleeps but in the day time  
when all things wake 69 The man whose passions enter his heart  
as waters run into the unswelling passive ocean, obtains happiness

कामान्यः सर्वान् पुमान्धरति निःस्पृहः । निर्ममोऽनरहद्वारः स शान्तिमाधिगच्छति ७१॥  
एषा ब्रह्मीत्यतिः पार्थ नैनां प्राप्य विमुह्यति । स्थित्वास्थामन्त कालेऽपि ब्रह्म निर्वाण  
मृच्छति ॥ ७२ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि भगवद्गीतापर्वणि सू० सांख्य योगोनाम

द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

अर्जुन उवाच । ज्ञायसी मेस् कर्मणस्ते मत्तः शुद्धिर्जन ईन । तन् किं कर्मणि  
ज्ञानेन शुद्धिं मोक्षयस्य मे । तदेकं  
वाच । सांकेतिकं द्विविधानम् ।

इच्छाओं को त्यागकर ममता और  
पाव केवल देहके निर्वाहके निमित्त  
को पाता है । ७१ । हे अर्जुन यह  
। नहीं भूलता है इसमें नियत होकर

॥

मे से बुद्धिकी उन्नमता आप मानतेहैं  
मेमें क्यों लगातेहो । १ । आपकभी  
मैंको त्यागकरके जानी और त्यागीहो  
मन्तेहो सो आप इनदोनोंमें से एकको  
। २ । श्रीभगवान् बोले हे निष्पाप

he man who having abandoned  
ordinate desires, unassuming  
& 71. This is divine depen-

dance. A man being possessed of confidence in the Supreme goes  
not astray: even at the hour of death, should he attain it, he shall  
mix with the incorporeal nature of Brahm." 72.

### LECTURE III

*Arjuna*,—"If according to thy opinion, knowledge be superior  
to work, why then dost thou urge me to engage in an undertaking  
so dreadful as this? 1. Thou, as it were, confoundest my reason  
with a mixture of sentiments; wherefore choose one amongst them  
by which I may obtain happiness, and explain it unto me." 2  
*Krishna*—"It has already been observed by me, that there are

प्रोक्तामयानव । ज्ञानयोगो सांख्यना । कर्मयोगेन योगगताम् ॥ ३ ॥ न कर्मणा गता  
रम्भाः श्रेयस्य गुरुयादनुते । ॥ च सन्ध्यानादव सिद्धे समाधिगच्छति ॥ ४ ॥ न हि  
कश्चित् क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकम् । कार्यतस्तथा कर्म सर्वं प्रकृतिजैर्गुणै ॥ ५ ॥  
कर्मैन्द्रियाणि सयस्य य आस्ते मनसा स्मरन् । इन्द्रियार्थान् निमृष्टात्मा मिथ्याचारः  
स उच्यते ॥ ६ ॥ यास्त्येन्द्रियाणि मनसा नियम्यामतेर्जुन । कर्मोद्भवे कर्मयोगम  
सक्तः स धिरोपयते ॥ ७ ॥ नियतं कुरु कर्म त्व कर्मज्यायो लोकं । शरीरयात्राप च  
ते न प्राप्स्येदकर्मण ॥ ८ ॥ यज्ञार्थात् कर्मणोऽन्यत्रलोकाय कर्मवन्धनः । तदर्थं कर्म  
कौन्तेय मुक्तसङ्ग समाचर ॥ ९ ॥ सदयज्ञाः प्रजा सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापति । अनेन

भैनेप्रथम अयायमें कही है निष्ठा इनलोकमें दोषकारकी है सांख्य वालोंकी निष्ठा  
ज्ञानयोगहै और योगियोंकी निष्ठा कर्मयोग है । ३। क्योंकि यज्ञादि कर्मोंका प्रारंभ  
करनेसे पुरुष ज्ञान निष्ठाको नहीं पाता है और कर्मयोग से उत्पन्न चित्त शुद्धी के  
बिना केवल त्याग अर्थात् सन्याससेही मोक्षरूप सिद्धीको नहीं पाताहै । ४। कर्मजोन  
सिद्धी के बिना मनका न जीतने वाला कोई पुरुष समाधि में भी बुरी वासनाको  
करके एक क्षणमात्र भी नियत नहीं रहसक्ता है निश्चयकरके सबलोग योग प्रकृति  
क सरादि गुणोंसंक्रम करनहीं । ५। जो रागादि भरेहुये चित्त स कर्मेन्द्रियोंको स्वामीन  
करके मनमें इन्द्रियोंके विषयोंका स्मरण करता हुआ ध्यान के बहाने से एकान्तम  
पैठाहै वह मिथ्या आचारवाला कहाजाता है । ६। हे अर्जुन जो पुरुष मनस ज्ञाने-  
न्द्रियोंको स्वामीन करके निष्काम कर्मोंसे कर्मेन्द्रियोंसे कर्मयोग का प्रारंभ करता  
है वह पूर्वसेभी श्रेष्ठनरहै । ७। तू नियम करके कर्मोंका कर सब कर्मेन्द्रियोंसे रोकने  
और कर्म के बिना चित्त शुद्धी न होनेसे कर्मही श्रेष्ठ है और चित्त शुद्धी न पेर  
भी तुम्हकर्म न करने वाले क्षत्रीकी शरीर यात्राभी सिद्धनहीं होसक्ती । ८। एक  
मामेश्वरके पूजनके लिये जो कर्म किया जाता है उससे स्वर्गादिकी इच्छारूपी

two paths. That of those who follow the Sankhya, is the gyan yog, and the practical, or the karm yog is for the yogis. ■ The man enjoys not freedom from action, from the non- commencement of that which he has to do, nor does he obtain happiness from a total inactivity. 4 No one ever rests a moment inactive. Every man is involuntarily urged to act by those principles which are inherent in his nature. 5 The man who restrains his active faculties and sits down with his mind attentive to the objects of his senses, is called one of an astrayed soul and the practiser of deceit. 6 So the man is praiseworthy, who having subdued all his passions, performs with his active faculties all the functions of life, unconcerned about the event. 7. Perform the settled functions action is preferable to inaction. The journey of thy mortal frame may not succeed from inaction. 8 The busy world is engaged from

प्रसविष्यन्मेषवोद्विष्यकामधुक ॥ १० ॥ देवान् भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः ।  
परस्परं भावयन्तः श्रेयःपरमंवाप्स्यथ ॥ ११ ॥ इष्टान् भोगान् हि यो देवा दास्यन्ते  
यज्ञभाविताः । तैर्दत्ता न प्रदायैभ्यो यो भुंक्तेस्तेन एव सः ॥ १२ ॥ यज्ञशिष्टाशिनः  
सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः । भुञ्जते त्वर्घपापा ये पचन्त्यात्मकारणात् ॥ १३ ॥  
अन्नाद् भयन्तिः मृतानि पर्जन्त्याद्भ्रसम्भवः । यद्याद्भयति पर्जन्त्यो यज्ञः कर्मस-  
मुद्भवः ॥ १४ ॥ कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि ब्रह्माक्षरसमुद्भवम् । तस्मात्सर्वगतं ब्रह्म  
नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम् ॥ १५ ॥ एवं प्रवर्त्तितं चक्रं नानावर्चयतीहयः । अघामुरि-

अन्यकर्मों में प्रवृत्त होकर यह लोककर्मबंधनमें फँसनेवाला है हे अर्जुन उस ईश्वर  
के आराधनके लिये तू निष्काम कर्मोंको करके वर्णाश्रम के योग्य बातोंको अच्छी  
रीतिसे कर । ९ । पूर्व समय में ब्रह्माजीने सब सृष्टिकों यज्ञों समेत उत्पन्न करके  
कहा कि इसयज्ञ कर्मको तृप्तकरो और वह तुम्हारीसिद्धिकरे और तुम परस्परमें दृढ़ि  
पाते हुए परम कल्याण को पाओगे । १० । निश्चय करके यज्ञों से पृजित और  
तृप्त किये हुए देवता तुमको तुम्हारी सूचके योग्य भोजन वस्त्रादि देंगे, जो पुरुष  
उन देवताओं के दियेहुये भोगोंको उन देवताओं के अर्पण न करके भोगताहै वह  
निश्चय चोर है । ११ । वैश्वदेव आदि यज्ञोंमें शेषबचेहुये अन्नादिको भोजनकरते  
हुए सब इत्यारूपपापोंसे छूटजातेहैं और ओं केवल अपनेहीनिमित्त भोजनको बनातेहैं  
वहंपापी अपनेपापोंको भोजन करतेहैं । १२ । अन्नसे जीव उत्पन्नहोतेहैं, अन्नकी  
उत्पत्ति वर्षासेहै और वर्षा यज्ञोंसे होतीहै और यज्ञ कर्मोंसे पैदा होनेवालाहै । १३ ।  
कर्मबन्धसे और वेद अविनाशी ईश्वरसे उत्पन्न जानो इसहेतुसे सबदेश काल में  
वर्तमानरूप ईश्वर में सब मियमों समेत वेद और यज्ञ नियतहै । १४ । इस प्रकार

other motives than the worship of the Deity. Abandon then, O son of Kunti, all selfish motives, and perform thy duty. 9. When in ancient days Brahma created beings along with yajnas, he said: " With this, multiply; verily it is all desire giver. 10. With this serve the gods, that the gods may save you. Serve one another, and ye shall obtain supreme happiness. 11. The gods being remembered in worship will grant you the enjoyment of your wishes. He who enjoys what has been given to him by them, and offers not a portion to them, is a thief. 12. Those who eat not but what is left of offerings, shall be purified of all their transgressions. Those who dress their meat but for themselves, eat the bread of sin. 13. All beings come from food; food is produced from rain; rain from yajna, and yajna is the result of actions. 14. Know that works come from body (Brahma,) whose nature is incorruptible; wherefore the omnipresent Brahma is present in the worship. " 15. The sinful mortal, who delights in the

न्द्रियारामो मोघ पार्थ सजीवति ॥ १६ ॥ यस्त्वाभ्यतिरेचस्या दात्मतुष्टश्च मान  
व । आत्मन्येव च सन्तुष्टस्तस्य कार्यं न विद्यते ॥ १७ ॥ नैव तस्य कृतेनार्थो नावृतेनेह  
कथन । नचास्य सर्वभूतेषु पश्चिदर्शव्यपाश्रय ॥ १८ ॥ तस्मादसक्त सततं कार्यं  
कर्मसमाचर । असक्तो ह्याचरन् कर्म परमाप्नोति पूरुष ॥ १९ ॥ कर्मणैव हि ससिद्धि  
र्माप्स्यता जनकादय । लोकसंग्रहमेवापि संपद्यन् बन्तुमर्हसि ॥ २० ॥ यद्यदाचरति  
श्रेष्ठस्तत्तद्वेत्तरो जनः । स यत् प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ॥ २१ ॥ नमेषा  
र्यास्ति कर्त्तव्यं त्रिषु लोकेषु किञ्चन । नानवाप्तमवाप्तव्यं वर्त्तएवचकर्मणि ॥ २२ ॥

से सदैव जारी रहनेवाले चक्र में जो नियत नहीं होता अर्थात् यज्ञादि कर्म नहीं करता है हे अर्जुन वह पापरूप जीवनसे इन्द्रियों में क्रीड़ा करनेवाला निरर्थक जीवता है । १६ । परन्तु जो मनुष्य आत्मा में प्रीति रखनेवाला आत्मा में वृत्त और आत्माही में संतुष्ट है उसको कोई दूसरा कर्म करने के योग्य नहीं है । १७ । उस आत्मामें प्रीति रखनेवाले ज्ञानीको प्रयोजन कियेहुए कर्मों से कुछ भी नहीं है और इसके विपरीत कर्म सेभी उसको कुछ प्रयत्न नहीं है और उसके सुखभोग रूप प्रयोजनका कोई सम्बन्ध किसी जीवमात्र से नहीं है । १८ । इसी हेतुसे तू कर्म फलों से पृथक् होकर सदैव करने के योग्य कर्मोंको कर, फलकी इच्छा रहित कर्म करनेवाला पुरुष अन्तःकरण की शुद्धता से मोक्षपदार्थको पाता है । १९ । कर्मकेही द्वारा जनकादि ने सिद्धी को पाया अर्थात् धर्म में लोककी संग्रहको देखता हुआ कर्म करनेको योग्य है । २० । क्योंकि उत्तम पुरुष जो जो कर्म करतेहैं उसी कर्म को दूसरे मनुष्यभी करतेहैं और वह श्रेष्ठ पुरुष जिस बातको प्रमाण करतेहैं उसी को सार करता है । २१ । हे अर्जुन तीनों लोक में मुझको कोई बात करने के योग्य नहीं है अयत्न प्राप्त और अप्राप्त होनेके भी योग्य नहीं है परन्तु तौभी मैं

gratification of his passions, and follows not the wheel, thus revolving in the world, lives but in vain 16 But the man who is self-delighted, self-satisfied, and happy in his own soul, has nothing to do 17 He has no interest either in that which is done, or that which is not done, and therefore not in all things which have been created, any object on which he may place dependence. 18 Wherefore, perform thou that which thou hast to do, at all times, unmindful of the event, for he who does his duty, without affection, obtains the Supreme. 19 JANAKA and others have attained perfection even by works. Thou shouldst also observe what is the practice of mankind, and act accordingly. 20 The man of low degree follows the example of him who is above him, and does that which he does. 21 I myself, Arjuna, have not, in the three regions of the universe, any thing which is necessary for me to perform, nor any thing to obtain which is not obtained, and yet

पादिहं नवर्त्तयं जातुकर्मण्यतन्द्रितः । मम यत्मानवर्त्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः ॥ २३ ॥ उत्सिद्धेयुरिमे लोका न कुर्व्यां कर्म चेदहम् । सङ्करस्य च कर्त्ता स्यात् पद्म्यामिसाः प्रजाः ॥ २४ ॥ सजाः कर्मण्यविद्वांसो यथा कुर्वन्ति भारत । कुर्याद्विद्वांस्तथासक्तधर्म्मिर्लोकसंग्रहम् ॥ २५ ॥ न बुद्धिभेदं जनयेदज्ञानां कर्मसङ्गिनाम् । जेययेत् सर्वे कर्माणि विद्वान् युक्तः समाचरन् ॥ २६ ॥ प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वशः । अहंकार विमूढात्माकर्त्ताहमिति मन्यते ॥ २७ ॥ तत्त्वविस्तमहाबाहो गुणकर्मविभागयोः । गुणागुणेषु वर्त्तन्त इति मत्वा न सज्जते ॥ २८ ॥ कर्महीको करताहं । २२ । जो कदाचित् मैं आलस्यसे कर्मोंको न करूं तो हे अर्जुन सब मनुष्य सब रीति से मेरेही अनुसार चलनेलगें अर्थात् कर्मकरना छोड़ दें । २३ । जो मैं कर्मोंको नहीं करूं तो यह सब लोक अप्रहोजार्थ और मैंभी वर्णसंकरोंका ईश्वर कहलाऊं और इनसब प्रजाओंका नाश करदूं । २४ । हे भरतवंशी जैसे कि कर्मफल के चाहने वाले अज्ञानी लोग कर्मको करने हैं उसी प्रकार कर्म फलके न चाहने वाले ज्ञानीलोग लोक संग्रह अर्थात् संसारको धर्म में नियत करनेके लिये कर्म को करें । २५ । विद्वान् लोग कर्म में प्रवृष्ट पुरुषोंकी बुद्धिको कर्म से पृथक् न करें योगीश्वर अच्छी रीतिसे आचरण करता हुआ सब कर्मों को करे और दूसरेसे करावे । २६ । सब प्रकार से प्रकृतिके सत्त्वगुण रजोगुण तमोगुणसे किये हुए कर्म होते हैं जो अहंकारसे अज्ञान बुद्धीहै अपनेकोही कर्त्ता मानता है । २७ । हे महाबाहु जो पुरुष गुण और कर्मके विभागकी मुख्यताका जानने वाला है और यह मानकर कि इन्द्रियां विषयों में वर्त्तिनी हैं इस से वह अपनेको कर्मका

I am engaged in work. 22. If I were not vigilantly to attend to these duties, all men would presently follow my example. 23. If I were not to perform actions this world would fail in their duty; I should be the cause of spurious births, and should drive the people from the right way. 24. As the ignorant perform the duties of life from the hope of reward, so the wise man, out of respect to the opinions and prejudices of mankind, should perform the same without motives of interest. 25. He should not create a division in the understandings of the ignorant, who are inclined to outward works. The learned man, by industriously performing all the duties of life; should induce the vulgar to attend to them. 26. The man whose mind is led astray by the pride of self-sufficiency, thinks that he himself is the executor of all those actions which are performed by the principles of his constitution. 27. But the man who is acquainted with the nature of the two distinctions of cause and effect, having considered that principles will act according to their natures, gives up

प्रकृतेर्गुणसमूहाः सज्जन्ते गुणकर्मसु । तानवृत्तस्त्वविदो मन्दान् कृत्स्नविश्वं विचालयन् ॥ २९ ॥ मयि सर्वाणि कर्माणि संन्यस्याध्यात्मचेतसा । निराशीर्निर्ममो भूत्वा युध्यस्व विगतज्वरः ॥ ३० ॥ येमे मतमिदं नित्यमनुतिष्ठन्ति मानवा । श्रद्धावन्तो न स्यन्तो मुच्यन्ते तेषां कर्मभिः ॥ ३१ ॥ ये त्वेतदभ्यसूयन्तो नानुतिष्ठन्ति मे मतम् । सर्वज्ञानविमूढास्तान् विद्धि नष्टानचेतसः ॥ ३२ ॥ सदृशं चेष्टते स्वस्याः प्रकृतेर्ज्ञानवानपि । प्रकृतिं याति भूतातिं निग्रहः । किं कारिष्यति ॥ ३३ ॥ इन्द्रियस्येन्द्रियस्यार्थे रागद्वेषौ व्यवस्थितौ । तयोर्ध्वं घशमागच्छेत्तौ ह्यस्य परिपन्थिनौ ॥ ३४ ॥ श्रेयान् स्वधर्मो विगुण परधर्मात् स्वनुष्ठितात् । स्वधर्मे निधनश्रेयः

कर्त्तानही मानता है । २८ । प्रकृति के अहंकारादि गुणोंसे अज्ञानी पुरुष शरीरादिक गुण और कर्मोंमें आसक्त है उन आत्मज्ञानसे रहित अल्पज्ञ पुरुषों को आत्मज्ञानी कर्मनिष्ठा से न हटावे । २९ । मोक्षका चाहनेवाला विवेक बुद्धि से सब कर्मोंको मुक्त सब के अन्तर्गामी में अर्पण करे इस से ह अर्जुन तू कर्मफल में आशा रहित और प्राप्तवस्तुको अपनी न माननेवाला होंकर शोकस विगत होकर युद्धकर । ३० । जो मनुष्य मेरे इस मत पर काम करते हैं और श्रद्धावान् होकर उस में दोष दृष्टि नहीं करते वह धर्म अर्धर्म रूप कर्मों से छूट जाते हैं । ३१ । जो दोष लगाने वाले इसमे मतपर कर्म नहीं करते हैं उनको ब्रह्मज्ञान में अत्यन्त अज्ञानी विवेक रहित स्वर्ग और मोक्षसे भ्रष्ट हुए जानो । ३२ । ज्ञानवान् भी अपने अनुसार चलाकरते हैं सब जीवमात्र अपने स्वभाव के अनुसार कर्म कर्षा होते हैं और मै भी पूर्वकर्म के अनुसार उन स कर्म करता हूँ । ३३ । परन्तु यह बात संभव है कि जो दोनों प्रकार की इन्द्रियों के निषयो में राग द्वेष अधिकृता से नियत है तो उन दोनोंके स्वाधीन न होने निश्चय है कि वह दोनों राग द्वेष इस मोक्ष चाहने वाले के शत्रु है । ३४ । अपने धर्मश्रम के अनुसार

attachm nt. 28, Men who are led astray by the principles of their nature, are interested in the works of the faculties. The man who is all informed should not disturb the mis-informed ignorant. 29 Throw every deed on me and with a heart, over which the soul presides, be free from hope, be unpresuming be free from, trouble, and resolve to fight 30 Those who with a firm belief, and without reproach, shall constantly follow this my doctrine, shall be released from works 31 But those who, holding it in contempt, follow not this my counsel, be astrayed from all wisdom, deprived of reason, and be lost 32 The wise man acts upon the inclination of his own nature All things act according to their natures, what can restraint avail? In every purpose of the senses we find affliction and dislike A wise man should not put himself in their power, for both of them are his opponents. 31 A man's

पराधर्मो भयावहः ॥ ३५ ॥ अर्जुन उवाच । अद्य भेन प्रपुत्रोऽयं पापंचरति पूरुष ।  
अनिच्छतपि घाघ्णेय बलादिव नियोजित ॥ ३६ ॥ भगवानुवाच ॥ काम  
एवक्रोध एवाले गुणसमुद्रव । महाशनो महापाप्मा विद्ध्येनमिह धरिणम् ॥ ३७ ॥  
धूमेनात्रयतेऽह्नियथा दूर्धो नले न च । यथोल्बेवाग्नौ गर्भस्तथा तेनेदमावृतम्  
॥ ३८ ॥ आवृतं ज्ञानमतेन ज्ञानिनो नित्यजेरेण । कामरूपेण कौन्तेय दुष्पूरेणान-  
लेन च ॥ ३९ ॥ इन्द्रियाणि मनोबुद्धिः स्याच्छिष्टानमुच्यते । एतेर्विमोहकत्वेपे ज्ञानमा-  
वृत्य देहिनम् ॥ ४० ॥ तस्मात्त्वमिन्द्रियाण्यादौ नियम्यभक्तसर्वम् । पाप्मानं प्रज्ज्वाह-

अपना धर्म और गुण भी अच्छीरीति से क्रियेहुए दूसरों के धर्म से भेष्ट है अपने  
युद्धादे कर्मों में मरना बहुत उत्तम है और दूसरे का धर्म महाभयकारी  
है । ३५ । अर्जुन बोले है श्रीकृष्णजी फिर किस से संयुक्त कियाहुआ यह  
पुरुष पापों को करता है और अनिच्छावान् होकर अपने बल से कर्म में प्रवृत्त  
हुआ मालूम होता है, । ३६ । श्री भगवान् बोले कि यह इच्छा रजोगुणसे उत्पन्न  
है यही क्रोधरूप होजाती है और यही इच्छारूप काम महाभोक्ता वा उग्ररूप भय-  
कारी है इसको उसदेह में महाशत्रुरूपही जानो । ३७ । जैसे कि अग्नि धुएँ से और  
दर्पण में से टकजते हैं और गर्भ जेर से टका रहता है इसीप्रकार इस इच्छारूप  
कामसे यह ज्ञान भी टकाहुआ है । ३८ । हे अर्जुन इस ज्ञानियों के पुराने शत्रु और  
अग्निके समान पूर्णहोने के अयोग्य इच्छारूप काम से ज्ञान टकाहुआ है । ३९ ।  
इस इच्छाका निवासस्थान इन्द्री मन बुद्धि है और यह इच्छारूपी काम उन सब के  
साथ ज्ञानको टककर देहाभिमानी पुरुषको अत्यन्त मोह और भ्रान्ति में डालता है  
। ४० । इसकारण हे अर्जुन तुमप्रथम इन्द्रियोंको स्थाधीनकरके इस अत्यन्त भयंकारी

own religion, though contrary to, is better than the faith of an  
other, let it be ever so well followed. It is good to die in one's own  
faith, for another's faith is dangerous 35 ARJUNA, By what, O  
Krishna is man propelled to commit offences? It seems as if, con-  
trary to his wishes, he was impelled by some secret force 36  
KRISHNA— Know that it is the enemy lust, or passion, off-  
spring of the carnal principle, insatiable and full of sin, by which  
this world is covered as the flame by the smoke, as the mirror by  
rust, or as the fetus by its membrane 38 The understanding  
of the wise man — obscured by this inveterate foe, in the shape  
of desire, who rages like fire, and — hard to be appeased 39 It is  
said that the senses, the mind and the understanding are the  
places where it delights most to rule. By the assistance of these it  
overwhelms reason, and stupefies the soul 40 Thou shouldst, there-  
fore, first subdue thy passions, and get the better of this sinful



ह्येन ज्ञानावन्न नानाशनम् ॥ ४१ ॥ इन्द्रियाणि पराण्यादुरिन्द्रियेभ्य पर मन । मन  
सस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्ध परतस्तु ॥ ४२ ॥ एव बुद्ध परबुद्ध्या सस्त-यात्मान  
मात्मना । जाह शत्रु महाबाहो कामरूप दुरासदम् ॥ ४३ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे  
श्रीकृष्णार्जुन संवादे कर्मयोगोनाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

श्रीभगवानुवाच । इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम् । विवस्वान् मनवे  
प्राह मनुरिक्ष्वाकवेद्यवोत् ॥ १ ॥ एव परम्पराप्राप्त मिम राजर्षयोऽपिबु । स कालेनेह  
महता योगेनष्ट परन्तप ॥ २ ॥ स एवाय मया तेन योगं प्रोक्तं पुरातन ।  
भक्तोसि मे सखाचेति रहस्यह्येतदुत्तमम् ॥ ३ ॥ अर्जुन उवाच । अपरं भवतो

ज्ञान निज्ञानके नाश करने वाले कामको मूलसे नाशकरो । ४१ । इन्द्रियोंको  
उत्तम कहा है, इन्द्रियोंसे उत्तम मन, मनसे उत्तम बुद्धि और जो बुद्धिसे भी उत्तम  
है वह काम कहा जाता है । ४२ । इसप्रकार परमात्माको बुद्धिमें श्रद्धा जानके बुद्धि  
के द्वारा मनको नियत करके कठिनातासेभी नाश न होनेवाले कामरूप शत्रुको  
मार डाल ॥ ४३ ॥

अध्याय ॥ ४ ॥

श्री भगवान् बोले हे अर्जुन यह दो प्रकारवाला अविनाशी ज्ञान मैंने सूर्यदेवता  
से कहा था और सूर्य ने मनुजी से कहा और मनुने इक्ष्वाकुसे कहा । १ । इसप्रकार से  
परंपरापृर्वक प्राप्त हुए इस योग को राजर्षियों ने जाना है हे शत्रुहन्ता योग इसलोक  
में बहुत कालसे गुप्त है । २ । उसी प्राचीन योग को अब मैंने तुझसे कहा है क्योंकि  
तू मेरा भक्त और सखा है निश्चयकरके यह उत्तम योग गुप्त करने के योग्य है

destroyer of wisdom and knowledge 41 The organs are es-  
teemed great, but the mind is greater than they Resolution  
is greater than the mind, and desire is superior to resolution 42  
When thou hast recognised what is superior to resolution and kept  
thy mind under control, determine to abandon the enemy in  
the shape of desire 43.

## LECTURE IV

OF THE FORSAKING OF WORKS

*Krishna*—This never failing discipline I formerly taught to  
Vivasvan Vivasvan communicated it to Manu, and Manu made it  
known to Ishwaku Being handed down successively, it was studied  
by the Rishis, but in the course of time, the yoga was lost 2 It is  
the same discipline which I have this day communicated to thee,  
because thou art my devotee and my friend It is an ancient and a

जन्म परं जन्म विद्यस्वतः । कथमेतद्विजानीयां त्वंगादौ प्रोक्तवानिति ॥ ४ ॥  
 श्रीमद्व्यासमुखात् ॥ बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन । तान्यहं वेदसर्वाणि  
 नत्वं वेत्थपश्यतः ॥ ५ ॥ अजोपि सन्नव्ययात्मा भूतानामीश्वरोपि सन् । प्रवृत्तिं  
 स्वामधिष्ठाय सम्भवाम्यात्ममायया ॥ ६ ॥ यदायदाहं धर्मस्य ग्लानिं भवति भारत ।  
 अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् । ७ ॥ परित्राणाय साधूनां विनाशाय च  
 दुष्कृताम् । धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥ ८ ॥ जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं  
 यो वेत्ति तत्त्वतः । त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामांत सोऽर्जुन ॥ ९ ॥ चांतरागम-  
 यन्नोपा मन्मया मामुपाश्रिताः । बहवो ज्ञानतपसा पूता मद्भावमागताः ॥ १० ॥

। ३ । अर्जुन बोले कि हे कृष्णजी आपका जन्म तो पीछे हुआ है और सूर्यका  
 जन्म बहुत पहले हुआ है तो मैं यह कैसे जानूं कि आपने सृष्टीकी उत्पत्ति के मारम्भ  
 में कहा । ४ । श्री भगवान् बोले कि हे अर्जुन मेरे और तेरे अनेक जन्म हुए हैं  
 उन सब को मैं जानता हूं तू नहीं जानता है । ५ । मैं अजन्मा अविनाशी सबजीव मात्तों  
 का आत्मा और ईश्वर भी होकर अपनी प्रकृतिको स्वाधीन कर के अपनी ही माया  
 के साथ प्रकट होता हूं । ६ । हे भरतवंशी जब जब धर्मकी न्यूनता और अधर्म की  
 उत्थि होती है तब मैं अपनेको प्रकट करके । ७ । साधुओंकी रक्षा और कुकर्मी पापा-  
 त्माओंका नाश और धर्मके नियतकरण को प्रत्येक युग में प्रकट होता हूं । ८ । मेरा  
 जन्म और कर्म दिव्य है अर्थात् बनावट का नहीं है जो इस प्रकारसे मूल समेत जान-  
 ता है हे अर्जुन वह पुरुष शरीर को त्यागकर फिर जन्म नहीं लेता है अर्थात् मुझको  
 प्राप्त होकर मुझीमें लय होता है । ९ । और जिन लोगोंकी विषयोंमें प्रीति वा अपने  
 मरणाका भय, अपने पराये दुःख के क्रोध इत्यादि बातें दूर होगई हैं और मुझीको  
 श्रेष्ठ मानकर मेरी शरणागत होकर ज्ञानरूप तपसे पवित्र हैं ऐसे अनेक योगी मेरे भाव

supreme mystery. 3. Arjuna.—Seeing thy birth is posterior to that of Vivaswan, how am I to understand that thou hadst been formerly the teacher of this doctrine? 4. Krishna.—Both I and thou have passed many births. Mine are known to me, but thou knowest not of thine 5. Although I am not in my nature subject to birth or decay, and am the lord of all created beings; yet, having command over my own nature, I am made evident by my own power. As often as there is a decline of virtue, and an insurrection of vice and injustice, in the world, I make myself evident. 7. Thus I appear, from age to age, for the preservation of the just, the destruction of the wicked, and the establishment of virtue. 8. He, O Arjuna, who, from conviction, acknowledges my divine birth and actions to be even so, does not upon his quitting his mortal frame enter into another, for he enters into me. 9. Many who were free, from affection, fear, and anger, and, filled with my spirit, depend-

ये यथा मां प्रदधन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम् । मम वर्मानुवर्त्तन्ते मनुष्याः पार्थसर्वशः ॥ ११ ॥ वांक्षन्तः कर्मणां सिद्धिं यजन्त इह देवता । क्षिप्रं हि मानुषे लोके सिद्धिर्भवति कर्मजा ॥ १२ ॥ चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः । तस्य दत्तां रमणि मा । वदस्व कर्त्तारमव्ययम् ॥ १३ ॥ न मां कर्माणि बलम्यान्ते न मे कर्मफतो स्पृहा । इति मां योभिजानाति कर्माभिरनं स उच्यते ॥ १४ ॥ एवं ज्ञात्वा कृतं कर्म पूर्वैराप मुमुक्षुभिः । कुरु कर्मैव तस्मात्त्वं पूर्वं पूर्वतरं कृतम् ॥ १५ ॥ किं कर्म किमकर्म्मैति वचसोप्यग्र मोहिता । तत्तत्कर्म प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वा मोक्षयसेऽनुभात् ॥ १६ ॥ कर्मणोऽपि चोद्भव्यं चोद्भव्यञ्च विकर्मण । अकर्मणश्च चेद्भव्यं महता कर्मणो गति ॥ १७ ॥

को प्राप्त हुए हैं अर्थात् मुझमें लयहोगये हैं । १० । जो पुरुष मुझ सर्वव्यापीको भिन्नता या शत्रुताके भावसे प्राप्तहोते हैं मैंभी उनको उसीरीति से सम्मुख होता हूँ । ११ । इस नरलोका में कर्मोंसे उत्पन्न लक्ष्मी धन पुत्रादि सिद्धी शीघ्रहोती है इस निमित्त यहां कर्मोंकी सिद्धिजाननेवाले पुरुष जो देवताओंको पूजते हैं वहभी मेरेही भक्त हैं । १२ । मैंने चारोंवर्णों को उनके गुण विभागों समेत उत्पन्न किया मया के योगसे मुझको उनकाभी स्मयी जानो और वास्तरमें अविनाशी और अकृत्ता जानो । १३ । क्योंकि कर्म मुझको स्पर्श नहीं करते हैं और न मेरी कर्मफल में इच्छा है जो पुरुष मुझको इस प्रकारसे जानता है वह कर्मबंधनको नहीं पाता है । १४ । पूर्व समय क मोक्षचाहने वाले शानियोंने इसीप्रकार से जानकर कर्मोंको किया है इस कारण है अर्हत्तन तुम्ही इस मार्गान् वृद्धों के किये हुए कर्मको कर । १५ । कर्म क्या है और अकर्म क्या है इसके जानने में पंडितलोग भी मोहका प्राप्न होते हैं उन दोनों कर्म और अकर्मोंको मैं तुझसे कहता हूँ जिनके जाननेमे तू इस अधुन संसार मे छुटजायगा । १६ । शास्त्रोक्त कर्म की गति भी जानने के योग्य है और शास्त्र में निरुद्ध

ed upon me, having been purified by the power of wisdom have entered into me. 10 I assist those men who in all things walk in my path, even as they serve me. 11. Those who wish for success to their works in this life, worship the Devas. That which is achieved in this life, from works, speedily comes to pass. 12. Mankind was created by me of four kinds, distinct in their principles, and in their duties. Know me then to be the creator of mankind, uncreat-

कर्मण्यकर्मयः पश्येदकर्मणि च कर्मयः ॥ स बुद्धिमान् मनुष्येषु स युक्तः कृतस्नकर्मकृत् १८ ॥  
 पश्यसर्वसंगारम्भाः कामसङ्कल्पवर्जितः ॥ ज्ञानाग्निदग्धकर्माणस्तमाहुः पण्डितं बुधाः १९ ॥  
 त्यक्त्वा कर्मफलासङ्गं नित्यतृप्तो निराश्रयः ॥ कर्मण्यभिप्रवृत्तोऽपि नैव किञ्चित् करोति  
 सः ॥ २० ॥ निराशीर्षतच्चित्तात्मा त्यक्तसर्वपरिग्रहः ॥ शरीरं केवलं कर्म कुर्वन्ना-  
 प्रोति किञ्चिदपम् ॥ २१ ॥ यदृच्छालाभसन्तुष्टो द्वन्द्वार्तीतो विमत्सरः ॥ सप्रः  
 सिद्धावसिद्धौ च कृत्यापि न निबध्यते ॥ २२ ॥ गतसङ्गस्य मुक्तस्य ज्ञानावास्थित  
 चेतसः ॥ यथायाचरतः कर्म समग्रं प्रयित्तीयते ॥ २३ ॥ यद्वाप्येणं ब्रह्म हविर्ब्रह्मा

कर्म भी जानने उचित हैं और अकर्म अर्थात् न करने की भी गति जाननी चाहिये  
 क्योंकि कर्म की गति कठिन है । १७। जो पुरुष कर्म में अकर्म और अकर्म में कर्म को  
 देखता है वह मनुष्यों में बुद्धिमान् महायोगी और सबकर्मों का करनेवाला है  
 । १८। जिसके स्वपारम्भ कर्म इच्छा और संकल्पसे रहित हैं और ज्ञानरूप अग्निसे  
 कर्मोंको भस्म कर दिया है उसको ज्ञानीलोग पण्डित कहते हैं । १९। कर्मफल को  
 त्यागकरके सदैव आत्मलाभ से संतुष्ट अहंकारादि से रहित है वहकर्म में अत्यन्त  
 प्रयत्नभी कुछ नहीं करता है । २०। जो पाप ऐश्वर्यों को नहीं चाहता देह मन  
 बुद्धि और सषड्न्द्रियोंका जीतनेवाला है वह केवल शरीर संबन्धी कर्मोंको करता  
 हुआ पापमें रहितहोता है । २१। बिना याचनाके मिस्रेणुए से संतुष्ट हर्षशोकसेरहित  
 दूसरेकेलाभमें प्रसन्नहोनेवाला और सिद्धी असिद्धी में रूपान्तर दशाके बिना कर्म  
 करके भी धन का नहीं माग्न होता है । २२। असंग अर्थात् अपनेको अकर्षा  
 मानने वाला कर्म फल की इच्छासे रहित यज्ञादिक कर्मों को ईश्वरार्पण करनेवाले  
 ज्ञान निष्ठ लोगों के संपूर्णकर्म नष्ट होजाते हैं । २३। अर्पणके साधनमंत्रादिक

action, improper action and inaction. The path of action is full of darkness.

17. He who may behold, as it were, inaction in action, and action in inaction, is wise amongst mankind. He is a perfect performer of all duty. 18. Wise men call him a Pandit, whose every undertaking is free from desire, and whose actions are consumed by the fire of wisdom. 19. He abandons the desire of a reward of his actions; he is always contented and independent; and although he may be engaged in a work, he, as it were, does nothing. 20. He is unsolicitous, of a subdued mind and spirit, and exempt from every perception; and, as he does only the offices of the body, he commits no offence. 21. He is pleased with whatever he may by chance obtain; he has got better of duplicity, and he is free from envy. He is the same in prosperity and adversity; and although he acts he is not bound. 22. The work of him, who has lost all anxiety for the evens, who has renounced all and stands with his mind subdued by spiritual wisdom, and who performs sacrifices has nothing else to do. God is the

ग्नौ ब्रह्मणा हुतम् । ब्रह्मैव तेन गतव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना ॥ २४ ॥ दैवमेवापरे  
यज्ञं योगिनः पश्येवासते । ब्रह्माग्नावपरे यत्नं यज्ञैर्धोषजुहति ॥ २५ ॥ श्रेत्रादी  
नाम्निद्रियाण्ये ये संयमाग्निषु जुह्वतः । शब्दादीन् विषयानन्ये इन्द्रियाग्निषु जुह्वति  
॥ २६ ॥ स्पर्शान्द्रियकर्माणि प्राणकर्माणि चापरे । आत्मसंयमयोगाग्नौ जुह्वत  
ज्ञानक्षीपिते ॥ २७ ॥ द्रव्ययज्ञस्तपोयज्ञा योगयज्ञस्तथा परे । स्वाध्यायज्ञानयज्ञाश्च  
यतयः साशितव्रता ॥ २८ ॥ अपाने जुह्वति प्राणं प्राणे पानं तथा परे । प्राणा  
पानगतीं हृत्वा प्राणायामपरयणा ॥ २९ ॥ अपरे नियताहाराः प्राणान् प्राणेषु

ब्रह्मरूपही है और अर्पणके हव्य घृतादिक भी ब्रह्म है जो होम किया गया है वह  
ब्रह्म मेही है जो अग्नि में होमा है वह ब्रह्म में है होम करनेवाला और करानेवाला  
दोनों ब्रह्म है जो यजमानने हवन किया वह ब्रह्मनही किया है, जो ब्रह्म कर्म रूप  
समाधिकेद्वारा उस कर्मका फल मिलनेवाला है वह भी ब्रह्मही है । २४ । कोई  
योगी देव यज्ञकी उपासना करते है कोई जीव यज्ञ को निरुपाधि रूप के द्वारा  
ब्रह्मरूप अग्नि में हवन करते है यह उत्तम ज्ञान यज्ञ है कोई योगी श्रेत्रादि इन्द्रियों  
को संयम रूप अग्नियोंमें हवन करते हैं कोई शब्दादि विषयों को इन्द्रिरूप अग्नियों  
में हवन करते है । २५ । कोई योगी इन्द्रियों के सबकर्मों को वा प्राणों के सब कर्मों  
को मन और बुद्धिकी उस संयमरूप अग्निमें जो ब्रह्मज्ञानसे प्रकाशमान है हवन करते  
है । २६ । इसीप्रकार द्रव्य यज्ञ तपोयज्ञ और योगयज्ञ है और सदैव वेदपाठन पठन में  
प्रीति रखना स्वाध्याय यज्ञ है और वेदके अर्थको अच्छी रीति से समझकर ब्रह्म  
में तदाकार रहना यह ज्ञान है इन यज्ञों के करने वाले अथवा उपाय करनेवाले  
तेजःव्रत है । २८ । इसीप्रकार कोई योगी अपान में प्राण को हवन करते है  
अर्थात् रेचक करते है और प्राण अपानकी गति को रोक कर प्राणायाम में प्रवृत्त  
है विषयों को स्वाधीन करने वाले अर्थात् विषयों के आधीन न होने वाले कोई

gift of charity, God is the offering God is in the fire of the altar, by  
God is the sacrifice performed and God is to be obtained by him who  
makes Him alone the object of his worship 24 Some of the devout  
attend to the worship of the Devatas others with offering, direct  
their worship unto God in the fire others sacrifice their ears, and  
other organs, in the fire of constraint, whilst some sacrifice sound  
and the like, in the fire of their organs 26 Some again sacrifice  
the action of all their organs and faculties in the fire of self con-  
straint, lighted up by the spark of inspired wisdom 27 Some sacrifice  
wealth some sacrifice asceticism, some sacrifice yoga some sacri-  
fice self study, and some yatis (fixed resolve) perform sacrifices of  
wisdom 28 Some there are who practice pranayam, observing food  
restrictions, sacrifice prana in apana and apana in prana, and restraining

जुवति । सर्वेष्वेते यज्ञविदो यज्ञक्षपितस्त्वया ॥ ३० ॥ यज्ञशिष्टाश्रितभुजां याति  
 ब्रह्म सनातनम् । नाय लोकोऽस्त्वयज्ञस्य कृतो य कुरुसत्तम ॥ ३१ ॥ एव च हवि  
 षा यज्ञा विगता ब्रह्मणोमुखे । कर्मजान् सिद्धिं तान् सर्वां नेत्र प्राप्या विमोक्षयते ॥  
 ॥ ३२ ॥ श्रेयान् द्रव्यमयाचाराज्ज्ञानयत्न पर-नय । सर्व कमाक्षिल पार्थ ज्ञाने  
 परिसमाप्यते ॥ ३३ ॥ तद्विद्धि प्रणिपातेन परिश्रमेन सेवया । उपदेक्ष्यति ते  
 ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः ॥ ३४ ॥ यज्ञघ्रात्या न पुनर्गोष्ठं मेन यास्यासि पाण्डव ।  
 येन भूता-वशेषण द्रव्यस्यात्मन्यवो गमि ॥ ३५ ॥ अपि चेदमि पापे-व, सर्वेभ्य

योगी मन इन्दी को मन चित्त अहंकार में भ्रम पृथक् दहन करते हैं तब इनकी  
 समाधि सिद्धी होती है इन सब यज्ञोंके प्राप्त करनेवालेभी अपने यज्ञों के द्वारा  
 पापों में निरुक्त होते हैं अर्थात् इन यज्ञोंका फल पापों से पृथक् होना है । ३० ।  
 पञ्चमहायज्ञ में शेष वचेद्युये अपृत नाम यज्ञ के भोजन करने वाले चित्त शुद्धी के  
 द्वारा सनातन ब्रह्मणो पाते हैं, हे कोरवों में श्रेष्ठ अर्जुन यज्ञ न करनेवाले पुरुषका  
 जबयही लोक नहीं है तो परलोक कहाँसे होसके है । ३१ । इस प्रकार करके वेद  
 के मुख से फैलेहुए अनेक यज्ञ हैं उनसबको कर्मा से उत्पन्नहुआ जानकर तत्त्व  
 ज्ञानके द्वारा नू मुक्तिको पावेगा । ३२ । हे शत्रुतापी जो द्रव्य मय यज्ञ होते हैं  
 उनसे ज्ञानयज्ञ बड़ा श्रेष्ठ है क्योंकि सबकर्म अपने फलोंसमेत संपूर्णता पूर्वक ज्ञान  
 मेंही समाप्त होजाने है । ३३ । उस ब्रह्मज्ञान को जानकर आसन्न जाननेवाले वा  
 अनुभव करनेवाले ज्ञानी तेरी दरइवद वा सेवा और पूरेप्रदत्नके द्वारा उपदेश करेंगे  
 । ३४ । हे पाण्डव उसे ब्रह्मज्ञानको जानकर फिर इसप्रकार मोहको नहीं-पावेगा  
 तदनन्तर उसब्रह्मज्ञान के द्वारा ब्रह्मामे लेकर तुल्यपर्यंत जीव मात्रको अपने में

both the currents ( pran and apan ) sacrifice pran in pran All these  
 different kinds of worshippers are by their particular modes of wor-  
 ship, purified from their sins 30 He who enjoys but the Amrita  
 which is left of his offerings, obtains the eternal Brahma. This  
 world is not for him who does not worship, and where, O Arjuna, is  
 there another? 31 A great variety of modes of worship emanate from  
 the mouth of God I learn that they are all the offspring of action  
 Being convinced of this, thou shalt obtain an eternal release 32  
 The spiritual wisdom is far better than the worship with offer-  
 ings of things In wisdom is to be found every work without ex-  
 ception 33 Seek then this wisdom with postulations with ques-  
 tions, and with attention that those learned men who know its  
 principles may instruct thee in its rules 34 Having learnt it,  
 thou shalt not again, O son of pandu fall into folly and shalt

पापहृत्तमः । सर्वं ज्ञानप्लवेनैव मज्जिन स-तरिष्यसि ॥ ३६ ॥ यथैषांसि समिद्धाग्नि  
भस्मसात् कुष्ठतेजुनः । ज्ञानाग्निं सर्वकर्माणि भस्मसात् कुष्ठते तथा ॥ ३७ ॥ न  
हि ज्ञानेन सदृश पवित्रमिह विद्यते । तत् स्वयं योगसाधनः कालेनात्मनि विन्दति  
॥ ३८ ॥ श्रद्धापूर्वमते ज्ञानं तत्परः सयतेन्द्रियः । ज्ञानं लब्ध्वा परा शान्तिमाप्ति  
रेणाधिगच्छति ॥ ३९ ॥ श्रद्धाश्रयाश्रद्दधानश्च सदायात्मा विनश्यति । नायं  
लोकोऽस्ति न परो न सुखं सशयात्मनः ॥ ४० ॥ योगसंन्यस्तकर्माणं ज्ञानसंछिन्न  
सशयम् । आत्मयन्तं न कर्माणि निबध्नन्ति धनंजय ॥ ४१ ॥ तस्माद्द्वान्छम्भूत

और फिर मुझ में देखेगा । ३६ । जो सब पापों से भी अधिक पाप का करनेवा-  
ला है तौ भी ज्ञानरूपी नौका के द्वारा पापरूपी सब समुद्रों को तर जायगा । ३७ ।  
जैसे महामयल अग्नि इंधन को भस्मकर देती है उसी प्रकार ज्ञानरूपी अग्नि सब  
कर्मोंको भस्म कर डालती है । ३८ । इसलोक में ज्ञानके सिवाय कोई पवित्रता वर्तमान  
नहीं है निष्काम यज्ञों से पूरी शुद्धता पाकर योगी उस ज्ञानको बहुत समय में अपने  
में पाता है । ३८ । श्रद्धायान् अच्छा जितेन्द्री उभ ज्ञानको पाता है और ज्ञानको पाकर  
पारव्यादि कर्मों के समाप्त होनेमें कैवल्य मात्सर्य परा शान्ती को पाता है । ३९ ।  
अज्ञानी श्रद्धा से रहित मन में सन्देह रखने वाले नाशको पाते हैं चित्त में सन्देह  
रखने वालों का न यह लोक है न परलोक है और न सुख है । ४० । हे अर्जुन  
योग से कर्मफल के त्यागने वाले अथवा कर्मको ही त्यागने वाले ज्ञान संशय से रहित  
शम दमादि के करने वाले आत्मान का कर्म बंधन नहीं करसके है । ४१ । हे भरत

behold all nature in thyself and then in me 35 Although thou  
wert the greatest of all offenders, thou shalt be able to cross the  
gulf of sin with the bark of wisdom 36 As the natural fire, O  
Arjuna, reduces the wood to ashes, so may the fire of wisdom re-  
duce all immoral actions to ashes 37 There is not any thing in this  
world to be compared with wisdom for purity. He who is per-  
fected by practice, in due time finds it in his own soul 38 He  
who has faith finds wisdom, and, above all, he who has got the  
better of his passions, and having obtained this spiritual wisdom he  
shortly enjoys supreme peace 39 The ignorant, and the man with-  
out faith, whose spirit is full of doubt, is lost. Neither this world  
nor that which is above, nor happiness, can be enjoyed by the man  
of a doubting mind. 40 The human actions have no power to  
confine the spiritual mind, which by study, has forsaken work, and  
which, by wisdom, has cut asunder the bonds of doubt. 41 Where-

हृत्स्थं ज्ञानासि नात्मनः । छिन्नैर्न संशयं योगमातिष्ठोत्तिष्ठ भारत ॥ ४२ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि श्रीभगवद्गीता गृपनिपत्सुब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे

श्रीकृष्णार्जुन संवादे यज्ञविभागयोगोनाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

अर्जुन उवाच ॥ संन्यास कर्मणां कृष्ण पुनर्योगञ्चयंसासि । यच्छ्रेय एतयो रेकं तन्मे ब्रूहि सुनिश्चितम् ॥ १ ॥ श्रीभगवान्वाच ॥ संन्यासः कर्म योगश्च निःश्रेयसकरा बुभौ । तयोस्तु कर्म संन्यासात् कर्मयोगो विशिष्यते ॥ २ ॥ ज्ञेयः स नित्यसंन्यासी यो न द्वेष्टि न काङ्क्षति । निर्वन्दो हि महाबाहो सुखं यन्धातु प्रमुच्यते ॥ ३ ॥ सांख्ययोगो पृथग्याताः प्रवदन्ति न पण्डिताः । एकमप्यास्थितः सम्यग्भूयोर्विदते फलम् ॥ ४ ॥

बंशी इसीकारण इस अज्ञान से उत्पन्न हृदय में नियत अपने संशयको ज्ञानरूपी खड्ग से काटकर निष्काम कर्म योग में नियतहो ॥ ४२ ॥

अध्याय ॥ ५ ॥

अर्जुन बोले कि हे श्रीकृष्णजी आप कर्मोंके त्यागको कहकर फिर योगकर्म करने को कहतेहो इनदोनों में से कौनसा आपने श्रेष्ठतम निश्चय कियाहै उसको मुझे समझाइये । १ । श्रीभगवान् बोले कि कर्मों का त्याग और कर्मों का करना यह दोनों ज्ञानकी उत्पत्ति के कारण हैं परन्तु इनदोनों में कर्म करना कर्मके त्याग से श्रेष्ठ है । २ । हे महाबाहु वह सदैव नियत रहने वाला संन्यासी जानने के योग्य है जो न इच्छा करता है न अलग होताहै और विभाग वा द्वन्द्वों से पृथक् है वह सुख पूर्वक मायाके बंधनसे छूटताहै । ३ । अज्ञानी पुरुष ब्रह्मज्ञानरूप सांख्य और कर्म के अनुष्ठानरूप योगको पृथक् २ कहते हैं पंडित नहीं कहते हैं क्योंकि एकमेंभी नियत दोनोंके फलोंको अच्छी रीतिसे पाताहै । ४ । जो मोक्षरूप

fore, O son of Bharata, resolve to cut asunder this doubt, offspring of ignorance, which has taken possession of thy mind, with the sword of wisdom, arise and practise yog. 42.

### LECTURE V

#### Renunciation of Works

*Arjuna*—Thou now speakest, O Krishna, of the forsaking of works, and now again of performing them. Tell me positively which of the two is better. 1. **KRISHNA**—Both the renunciation and the practice of works are equally the means of extreme happiness; but of the two the practice of works is to be distinguished above the desertion. 2. The perpetual recluse, who neither longs nor hates, is worthy to be known. Such a one is free from duplicity, and is happily freed from the bond of action. 3. Children only, and not the learned, speak of the speculative and the practical doctrines as two. They are but one, for both obtain the self-



यन् सांख्ये प्राप्यते स्थानं तद्योगेऽपि गम्यते । एतं सांख्यञ्च योगञ्च यः पश्यति स पश्यति ॥ ५ ॥ संन्यासस्तु महाशब्दो दुःखनाशुभयोगतः । योगयुक्तो मुनिर्ब्रह्म न चिरेणाधि गच्छति ॥ ६ ॥ योगयुक्तो विशुद्धात्मा विजितात्मा चित्तद्रियः । सर्वभूतात्मभूतात्मा दुर्बन्धाय नालप्यते ॥ ७ ॥ नैव किंचित् करोमीति युक्तो मन्येत नत्त्वदित् । पश्यन् शृण्वन् स्पृशन् जिघ्रस्नन् गच्छन् स्वप्नन् श्वसन् ॥ ८ ॥ प्रलपन् विस्मजन् गृह्णन् निमिषमिमिषमपि । इन्द्रियार्थान्द्रियार्थेषु वर्तन् इति धारयन् ॥ ९ ॥ यद्व्याघ्राद्यायुक्तमाणि सङ्गं त्यक्त्वा करोति यः । लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रमिवाम्भसा ॥ १० ॥ कायेन मनसा बुद्ध्या केशलै रिन्द्रियैरपि । योगिनः कर्म कुर्वति सङ्गं त्यक्त्वात्मशुद्धये ॥ ११ ॥

स्थान शान्तियोंको प्राप्त होताहै वह ज्ञानके द्वारा कर्म योगियोंकोभी प्राप्त होताहै ब्रह्मज्ञान और कर्मयोग यह दोनों एकही हैं जो देवताहै वही अच्छी रीतिसे समझताहै । ५ हे अर्जुन बिना कर्मयोगके संन्यास होना बड़ा कठिनहै और कर्म योगमें मृत्त हुआ मुनि थोड़ेही समयमें ब्रह्मको पाता है । ६ । जो योग में संयुक्त है और जिमकी चैतन्य आत्मा छाने साग्न्य दोन से रहित है और जिमने मनको जीतरर इन्द्रियोंको जीताहै और सब जड़चैतन्य जीव मात्रोंका आत्मारूपहै वह कर्मोंको करता हुआभी उनसे अलग औरनिर्लेप करताहै । ७ । तत्त्वज्ञ योगी देखता, सुनता, स्पर्श करता भूयता स्वात्ता चलता मोता ज्ञासनेता योजता त्याग करता ग्रहण करता आँसोंको सोभता मचिताभी यही मानताहै किमें कुछनहीं करताहै । और जो ज्ञानी कर्मों को वहाँमें धारण करके अथवा फलों को त्यागकर कर्मोंको करता है वहभी पापोंसे संयुक्त ऐसे नहीं होताहै जैसे कि कपलका पत्ता पानीमें नहीं भीगता । १० । योगी कर्मफलको त्याग कर चित्त शुद्धी के निमित्त मगनामें

same end 4. The place which is gained by the followers of the one, is gained by the followers of the other. That man sees, who sees that the speculative doctrine and the practical are but one. 5. To be a *Sanyasee*, or recluse, without application, is difficult, whilst the Muni, who is employed in the practice of his duty, presently obtains Brahma, the Almighty. 6. He who, employed in yoga, is pure minded and has control over his mind and passions, and whose soul is the universal soul, is not troubled though he works. 7. The attentive man, who is acquainted with the connection of senses with their objects, thinks that he does nothing although he is engaged in seeing, hearing, touching, smelling, eating, walking, sleeping, breathing, grasping, talking, opening and closing his eyes. 8. The man who, performing the duties of life, and quitting all interest in them, ascribes them to Brahma, is not troubled by sorrow; but remains like the leaf of the lotus unaffected by the water. 10. Yogis perform the offices of life with their bodies, minds, understandings, and senses

युक्तः कर्मफलं त्यक्त्वा शान्तमाप्नोति नैष्ठिकीम् । अयुक्तः कामकारेण फलैस्सक्तो  
 निबध्यते ॥ १२ ॥ सर्वकर्माणि मनसा संन्यस्यास्ते सुखं वशी । नवद्वारे पुरे देही  
 नैव कर्ष्यन्नकारयन् ॥ १३ ॥ न कर्तृत्वं न कर्माणि लोकस्य सृजति प्रभ । न कर्मफल  
 संयोग स्वभावस्तु प्रवर्तत ॥ १४ ॥ नादत्ते कस्याचित् पापं न चैव सुष्ठु तदिदं ।  
 अतानेनावृतं ज्ञानतेन मुह्यन्ति जन्तव ॥ १५ ॥ ज्ञानेन तु तदाज्ञानयथा नाशितमात्मनः । तपामा  
 दिव्यवज्ज्ञानं प्रकाशयति तत्परम् ॥ १६ ॥ तद्वबुद्धयस्तदात्मानं तांश्छादयन् परा  
 यथा । मच्छन्त्यपुनरावृत्तिं ज्ञानानिर्धूतकल्मषा ॥ १७ ॥ विद्याविनयसम्पन्ने ब्रह्मणे

रहितमनः यागीदेहः और इन्द्रियों के द्वारा भी कर्म को करते हैं । ११ । योगी कर्म  
 फलको छोड़कर शान्तीको पाता है और अयोगी चित्तकी इच्छाके अनुसार, कर्मफल  
 में प्रवृत्तचित्त हाकर बारंबार बंधन में पड़ता है । १२ । चित्तका जीतनेवाला देहा  
 धीश आत्मा नवद्वारवती पुरीमें न करता न कराना हुआ सबकर्मों को मनसे त्यागकर  
 सुखपूर्वक बैठा है । १३ चैतन्यात्मा मनु लोक के कर्तृत्व वा कर्मत्व और कर्म फलक  
 संगको उत्पन्न नहीं करता है किन्तु जिसका जैसाभाव है वह उसीप्रकार से कर्मों  
 को करता है । १४ । वह व्यापक ईश्वर किसीके पाप पुण्यको नहीं लेता है अज्ञान  
 से ज्ञान ढका हुआ है इसी कारण जीव मोहको पाते हैं । १५ । जिन लोगो के आत्मा  
 का वह अज्ञान ज्ञानके द्वारा दूरहोगया है उनका ज्ञान सृष्टि के समान प्रकाशमानहोकर  
 परम आत्म तत्त्वको प्रकाशित करता है । १६ । उस परम वल में बुद्धि वा आत्माको  
 लगानेवाले उसीम निष्ठावान् और आश्रय करनेवाले योगी जिनके कि पाप ज्ञानसे  
 नाशहुए हैं वह मोक्ष का पाते हैं । १७ । जो ब्रह्मज्ञानी पंडित हैं वह विद्या और

and forsake the consequences for the purification of their souls\* 11. Although employed, they forsake the fruit of actions and obtain infinite happiness, whilst the man who is unemployed, being attached to the fruit by desire, remains bound 12 The man who has his passions in subjection, and with his mind forsakes all works, his soul sits at rest in the nine gated city ( body ), neither acting, nor causing to act 13. The Almighty creates neither the powers nor the deeds of mankind, nor the application of the fruits to action nature prevails 14. The Almighty receives neither the vices nor the virtues of any one Mankind are led astray by their reasons being obscured by ignorance 15 But when that ignorance of their souls is destroyed by knowledge, their wisdom shines forth again with the glory of the sun, and causes the Deity to appear 16 Those whose understandings are in him, whose souls are in him, whose confidence is in him, and whose asylum is in him, are by wisdom purified from all their offences and go from whence they shall never return 17, The learned behold him alike in the Brahmans, per-

गवि द्दस्तिनि । शुनि चैवश्वपाके च पाण्डिताः समदर्शिनः ॥ १८ ॥ इहैव तैर्जितः सर्गो येषां साम्येस्थितं मनः । नर्दोपं हि समं ब्रह्म तस्मात् ब्रह्मणि ते स्थिताः ॥ १९ ॥ न ब्रह्मयेत् प्रिय प्राप्य नोद्विजेत् प्राप्य चाप्रियम् । स्थिरबुद्धिरसंमूढो ब्रह्मविद् ब्रह्मणि स्थितः ॥ २० ॥ चाक्ष स्पर्शश्चस्पर्शकामा तन्मन्त्यात्मानि यत्पुत्रम् । स ब्रह्मयोगयुक्तः त्मासुखमक्षयमश्नुते ॥ २१ ॥ ये हि संस्पृशंजामोगा दुःखेनययवते । आद्यन्तवन्तः कौन्तेय न तेषु रमते बुधः ॥ २२ ॥ शक्नोतीहैव यः सोढुं प्राक्शरीरविमोक्षणात् । कामक्रोधोद्वेगं वेगं स युक्तः स सुखी नरः ॥ २३ ॥ योऽतः सुपातारामस्तथातज्योतीरे

नम्रता से भरेहुए ब्राह्मण गौ हाथी श्वान और चांडालमें समान ब्रह्मके देखने वाले हैं । १८ । जिनका मन सब जीवमात्रों में ब्रह्मभाव रूपी समता से नियत है वह इसी लोकमें अपने जन्म को सफल करते हैं, निश्चय ब्रह्म दोष से रहित सम बुद्धी है इस समता बुद्धि से वह ब्रह्ममें ही नियत हैं । १९ । अभीष्टको पाकर भी प्रसन्न न होय और दुःखदायी को पाकर व्याकुल न होजाय ब्रह्ममें नियत बुद्धि और ध्यानके द्वारा उत्पन्न होनेवाले मोहसे रहित ब्रह्मज्ञ और ब्रह्ममें नियत होजाय । २० । बाहर उत्पन्न होने वाले स्पर्श अर्थात् विषय में चिच न लगानेवाला पुरुष जो मुख आत्मा में पाता है वह ब्रह्म योग में प्रवृत्त बुद्धि अर्थात् ब्रह्म ज्ञानी मोक्षरूप अविनाशी सुखको पाता है, । २१ । वह अर्जुन विषयों के योग से उत्पन्न होनेवाले जो भोग हैं वह दुःखके उत्पाति स्थान हैं क्योंकि आदि अन्त अर्थात् उत्पात्ते नाश रखनेवाले हैं उनमें ज्ञानी पुरुष नहीं रमता है । २२ । जो मनुष्य इसलोकमें देह त्याग से गयभी इच्छासे वा क्रोधसे उत्पन्न होनेवाले वेगको सहता है वही योगी है और सुखी है, । २३ । जो आत्मामें सुख माननेवाला विषयोंसे वैराग्यवान है अथवा आत्माही में क्रीड़ा करने

affected in knowledge, in the ox, in the elephant, in the dog, and in him who eats of the flesh of dogs. 18. Those whose minds are fixed on this equality, gain eternity even in this world. They put their trust in Brahma, the Eternal, because he is everywhere alike, free from fault. 19. The man who knows Brahma confines in Brahma, whose mind is steady and free from folly, should neither rejoice in prosperity, nor complain in adversity. 20. He whose soul is unaffected by the impressions made upon the outward feelings obtains pleasure in his own mind. Such a one, whose soul is thus fixed upon the study of Brahma, enjoys pleasure without end. 21. The enjoyments which proceed from the feelings are as the womb of future pain. The wise man who is acquainted with the beginning and the end of things, delights not in these. 22. He who can bear up against the violence which is produced from lust and anger in this mortal body is a Yogi who is

वय । स योगी ब्रह्मानर्वाणं ब्रह्ममृतोधिगच्छति ॥ २४ ॥ लभन्ते ब्रह्मनिर्वाणस्ययः  
 क्षीणकल्मषाः । डिघट्टेवा यतात्मान सर्वभूताहिने रता ॥ २५ ॥ कामक्रोधविषकानां  
 यतीनां यतचेतसाम् । अभितो ब्रह्मानर्वाणं वर्तते विदितात्मनाम् ॥ २६ ॥ स्पर्दान्  
 कुर्यादहिर्वाह्यभ्रक्षेत्रान्तरेभुवोः । प्राणायामौ समौ कृत्वा नासाभ्यन्तरचारिणौ  
 ॥ २७ ॥ यतोन्द्रियमनोबुद्धिर्मुनिर्बोद्धपरायणः । विगतेच्छामयक्रोधो यस्तदामुक्त  
 एवसः ॥ २८ ॥ भोकारं यद्वतपसां सखलोकमहेश्वरम् । सुहृदं सर्वभूतानां  
 आत्मायां शान्तवृत्तुति ॥ २९ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि श्रीमद्भगवद्गीतापर्वणि संन्यासयोगोनाम

पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

वाचा स्त्री आदि से रहित है और उसकी क्रीड़ा से सामानभी आत्मारूप है वह जीरन्मु-  
 क्तयोगी देवयान पित्रयान संबंधी ब्रह्मको पाता है । २४ । जो पापों से और  
 संगियों से रहित सब जीवों के हितकारी है वह ब्रह्मज्ञानी श्रुति ब्रह्मनिर्वाण को पाते  
 हैं । २५ । और काम क्रोध से रहित चित्त के जीतनेवाले ब्रह्मज्ञानी संन्यासी सबद-  
 शाओं में मोक्षको वरतने हैं । २६ । आत्मा से बाहर उत्पन्न होनेवाले विषयोंको  
 बाहर करके और नाभिका के भीतर रहनेवाले प्राण और अपानको समान कर के  
 अर्थात् प्राणायाम करके, जो मुनि इन्द्रियमन और बुद्धिका जीतनेवाला वा मोक्षको  
 उत्तमस्थान जाननवाला इच्छाभय क्रोध से रहित है वह सदा मुक्त है इस प्रकार  
 सावधान चित्तज्ञानी को क्या जानना चाहिये उसको कहते हैं—उपाधि युक्त स्वामी  
 देवरूप से यत्न और तपोंके भोक्तासबलोकों के पितामह मुक्तमन्तर्यामी को जान  
 कर अर्थात् मात्तात्कारकरके मेरेभावको पाकर कैवल्य मोक्षरूप शान्तीको पाता है । २९ ।

within, attains Brahma-Nirvan. 24 Such Rishies as are purified from their sins freed from doubt, of subdued minds, and interested in the good of all mankind, obtain the incorporeal Brahma 25. The incorporeal Brahma is everywhere for such as are free from lust and anger, of humble minds and subdued spirits, and who are acquainted with their own souls 26 Shutting out all outward contact, with eyes fixed between his brows, who makes the breath to pass through both his nostrils alike in expiration and inspiration, who is of subdued faculties, mind and understanding, and has set his heart upon salvation, and who is free from lust, fear and anger, is for ever blessed in this life, and being convinced that I am the cherisher of religious zeal, the lord of all worlds, and the friend of all nature, he shall obtain me and be blessed. 29

श्री भगवानुवाच ॥ अनाश्रित- कर्म फल कार्यं कर्म करोति यः । स संन्यासी च योगी च न निरग्निर्नचाक्रियः ॥ १ ॥ यः संन्यासमिति प्रादुर्योगन्तं शिद्धिं पाण्डव । न ह्यसंन्यस्तसंक्रुणो योगी भवति कश्चन ॥ २ ॥ आरुरुक्षोर्मुनेर्योगं कर्म कारणमुच्यते । योगारूढस्य तस्यैव शमं कारणमुच्यते ॥ ३ ॥ यदाहि नेन्द्रियाधेषु न कर्मस्वनुपज्जते । सर्वं संकल्पसंन्यासी योगारूढस्तदोच्यते ॥ ४ ॥ उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत् । आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुं रात्मैव विपुलात्मनः ॥ ५ ॥ बन्धुरात्मात्मनस्तस्य येनात्मेयात्मना जितः । अनात्मनस्तु शत्रुत्वे वर्त्तेतात्मैव शत्रुवत् ॥ ६ ॥ जितात्मनः प्रशो

ध्याय ॥ ६ ॥

श्रीभगवान् ने कहा कि जो कर्म फलका आश्रय न करने वाला करने के योग्य कर्मको करता है वही संन्यासी है वही योगी है यद्यपि वह वेद और स्मृति संबंधी अग्नि को और मनवाणी देहकी क्रियाओंको त्याग करनेवाला नहीं है । १ । जिसको कि संन्यास कहते हैं हे पांडव उसको योगज्ञान संकल्पको त्यागन करने वाला कोई योगी नहीं होता है । २ । ज्ञान योगपर चढ़नेकी इच्छा रखनेवाले मुनिका साधन कर्म कहा है और उमीक्षण योगपर चढ़ेहुएका साधन कर्मोंका त्याग रूप संन्यास कहा है । ३ । जब सब संकल्पोंका अच्छी रीतिसे त्याग करनेवाला कर्म योगी इन्द्रियोंके विषय और कर्मोंमें लड़ाकार नहीं होता है तब ज्ञान योगपर चढ़ाहुआ कहा जाता है । ४ । आत्माके द्वारा आत्माको उद्धारकर कभी आत्माका विनाश न करे क्योंकि आत्माही आत्मा का बन्धु और शत्रु है । ५ । आत्माका धंधुमन है जिसने मन के द्वारा चित्तको जीता है, और जिसने चित्तको नहीं जीता उसका मन शत्रु के समान शत्रुता में नियत होता है । ६ । जीतोष्णता मुख दुःख

## LECTURE VI

Of the exercise of soul

*Arishna* - He is both a *Yogee* and a *Sanyasee*, who performs work as a duty, independent of its fruit, not he who lives without the sacrificial fire and without action. 1 I earn, O son of *Pandu* that what they call *Sanyas*, or a forsaking of the world, is the same as *Yoga*. He cannot be a *Yogee*, who, in his actions, has not abandoned all intentions. 2 Works are said to be the means for a *yogee*, so rest is called the means for him who has attained devotion. 3 When the all contemplative *Sanyasee* is not engaged in the objects of the senses, nor in works, then he is called one who has attained devotion. 4 He should raise himself by his mind he should not suffer his soul to be depressed. Self is the friend as well as the enemy of self. Self is the friend of him who has subdued it, but a foe to him who has not conquered the mind. 6 The soul of the proud

न्तस्य परमात्मा समाहितः । शीतोष्णसुखदुःखेषु तथा माना पर्मानयोः ॥ ७ ॥ ज्ञान  
विज्ञानतृप्तात्मा कूटस्थो विजितेंद्रियः । युक्तइत्युच्यते योगी समलोष्टाश्मकांचनः ॥ ८ ॥  
सुहृन्मित्रार्युदासीन मध्यस्थ द्वेष्य बन्धुषु । साधुश्चपिच पापेषु समबुद्धिर्विशिष्यते ९  
योगी युजात सततमात्मानं रहासि स्थितः । एकाकी यतचित्तात्मा निराशीरपरिग्रहः  
॥ १० ॥ शुचौ देशे प्रतिष्ठाप्य स्थिरमास नमात्मनः । नात्युच्छ्रितं नातिनीचं चैला जिन  
कुशोत्तरम् ॥ ११ ॥ तत्रैकाग्रं मनः कृत्वा यतचित्तेन्द्रिय क्रियः । उपविश्यासने युञ्ज्या  
योगमात्म निशुद्धये ॥ १२ ॥ समं कायशिरोग्रीवं धारयन्नचलं स्थिरः । सम्प्रेक्ष्य ना-

मानापमानमें निर्विकार चित्त महाशान्त योगी का मन बड़ी समाधिको पाता है  
। ७ । वह शास्त्रोपदेश से उत्पन्न बुद्धिरूपज्ञान और विज्ञानसे तृप्तचित्त मोक्ष के  
अधिकारसे ढिगायमान न होनेवाला अर्थात् निर्विकारहोकर इन्द्रियों का जीतने  
वाला सब लोहा सोना पत्थर आदिको समान जाननेवाला योग सिद्ध पुरुष योगी  
कहा जाता है । ८ । प्रतीकार बुद्धि बिना उपकार करने वाला शत्रु मित्र में सम  
भाव प्रिय अप्रिय और साधु असाधु इन सब में समान बुद्धि रखने वाला इन्द्रियों  
समेत देह मनका जीनेवाला निरपेक्ष योगाभ्यासी एकान्तमें बैठा हुआ सदैव  
बुद्धीको आत्मामें लगावे । ९ । पवित्र स्थान में अपना ऐसा अचल  
आसन बिछाकर जो न बहुत ऊंचा न नीचा कुशाका बनाहुन्ना अथवा कुशाके  
ऊपर मृगचर्म उसके ऊपर सूत्रबन्ध बिछाहो । ११ । चित्त की क्रिया और इन्द्रियों  
की क्रियाओं को विजय करनेवाला योगी उस आसन पर बैठकर मनको एकाग्र  
करके अन्तःकरण की अत्यन्त पावित्र्यता के लिये योग का अभ्यास करे । १२ ।  
और सलाधारसे मस्तक तक सीधा और निश्चल नियत होकर अपने नासाग्र को  
देखना हुआ दिशाओं को न देखतावैडे । १३ । और उस आसन पर बैठकर ब्रह्म-

conquered spirit is uniform in heat and cold, in pain and pleasure, in  
honor and disgrace. 7. The man whose mind is replete with divine  
wisdom and learning, who is constant and has subdued his  
passions, is said to be devout. To the *Yogi*, gold, iron, and stones,  
are the same. The man is distinguished who regards impartially  
his companions, friends, enemies strangers, neutrals, foreigners, kins-  
men, saints or sinners. 9. Let the *Yogee* constantly exercise self-  
concentration, alone and in secret, checking the thoughts of the  
mind and free from hope and greed. 10. In a pure place, on the firm  
ground, neither too high nor too low, let him prepare a seat made  
of Kusha grass covered with deer skin and a cloth. There having  
made the mind one pointed, restraining all activities of the mind  
and the senses, let him practise concentration for the purification  
of his soul. 12. Keeping his head, his neck, and body, steady with-  
out motion, his eyes fixed on the point of his nose, looking at no

। स कृत्वा स्व दिशश्चान्वलोकयन् ॥ १३ ॥ प्रशांतात्मा । वगतमीर्द्धाचारिव्रते स्थितः ।  
मनः सयस्य मचित्तो युक्त आसीत् तत्परः ॥ १४ ॥ युञ्जन्नेव सदात्मानं योगो नियत  
मानसः । शान्तिं निर्वाणपरम् । मत्संस्थामावगच्छति ॥ १५ ॥ नात्यश्नतस्तु योगास्ति न  
चैकात्मनश्नतः । न चाति स्वप्नशीलस्य जाग्रतो नैव चार्जुन ॥ १६ ॥ युक्ताहार विहार  
स्य युक्तचेष्टस्य कम्पसः । युक्तस्वप्नावबोधस्य योगा भवति दुःखहा ॥ १७ ॥ यदा  
विनियतचित्ततात्मन्वेवावतिष्ठते । न स्पृह सर्वकामेभ्यो युक्त इत्युच्यते तदा ॥ १८ ॥  
यथा दीपो निवातस्थो नेङ्गते सोपमा स्मृता । योगिनो यत्चित्तस्य युज्यते योगमा  
त्मनः । १९ ॥ यत्रोपरमते चित्तं निरुद्धं योगसेवया । यत्र चैवात्मनात्मानं पश्यन्ना  
त्मनि तुष्यति ॥ २० ॥ सुखमात्मान्तकं यत्तद्वुद्धिप्राप्तमतीन्द्रियम् । घेत्ति यत्र न

चर्यं व्रतं में नियत योगी संन्यासी मुक्तं में चित्त लगानेवाला अपने मनको स्वाधीन  
करके मुक्तको सर्वोत्तम जानने वाला होवे । १४ । वह अत्यन्त शान्त चित्त सदैव  
मनको जीतने वाला योगी इस रीतिसे आत्मा को परमात्मामें एकता को करता हुआ  
मोक्ष निष्ठावाली शान्ति जोकि मुक्त में वर्तमान है उसको पाता है । १५ । हे  
अर्जुन बहुत भोजन करने वाले का भी योग नहीं होता और बहुत कम खाने वाले  
का भी नहीं होता और अत्यन्त सोने और जागने वाले का भी नहीं  
होता । १६ । जिसका कि आहार विहार योग्य रीति से है और कर्मों में भी चेष्टा  
योग्य है सोना जागनाभी योग्य है उसका योग दुःखो का दूर करनेवाला होता है  
। १७ । जब प्रच्छी रीतिसे जीता हुआ चित्त आत्मा में ही नियत होता है और सब  
कामनाओं से इच्छा रहित होता है वह योगी निर्विकल्प कहा जाता है । १८ । जैसे  
कि दीपक निर्वात स्थान में रखा हुआ नहीं झिलता है वैसे ही चित्त जीतनेवाले  
और सप्तापे का अनुष्ठान करनेवाले योगीको जानो । १९ । एकाहुआ एकाग्र चित्त  
जिस दशामें लय होता है अथवा जहां चित्त से आत्माको निर्विकल्प देखता हुआ आत्मा ही  
में लय होता है बाहर उत्पन्न होनेवाले विषयोंमें नहीं होता जो बड़ा ब्रह्मानन्द रूप

o her place around 13 The peaceful soul, fearless, firm in the vow  
of Bhishmcharya, he should restrain the mind, and, fixing it on  
me, depend on me alone 14 The Yogee, ever uniting his mind in  
me, becomes mind disciplined and obtains happiness incorporeal and  
supreme in me 15 Meditation cannot be for him arjuna, who eats  
much or fasts much, him who is addicted to excessive sleeping or  
excessive waking 16 Meditation destroys pain to him who is moder  
ate in eating, and recreation, whose inclinations are moderate in ac  
tion, and who is moderate in sleep and waking 17 A man is called  
harmonised when his mind is fixed within himself, and he is exempt  
from every lust and desire 18 The Yogee of a subdued mind,  
thus employed in the exercise of his devotion, is compared to an  
undisturbed flame, standing in a place without wind 19 That  
(308) when the restrained mind finds delight, that when

धेवाय स्थितश्चलति तत्त्वतः ॥ २१ ॥ य लब्ध्वा चापरं लाभं मन्यते नाधिकं ततः ।  
यस्मिन् स्थितो न ह्येन मुमुक्षापि विचाल्यते ॥ २२ ॥ तं विद्याद्बुधः पश्यामविद्योगं  
योगसंज्ञितम् । स निश्चयनं योक्तव्यं योगो निर्दिष्टश्चेतसा ॥ २३ ॥ सङ्गद्वेषममान्  
कामास्त्यक्त्वा सर्वानशेषम् । मनसैवेन्द्रियग्रामं विनियम्य मनःततः ॥ २४ ॥  
शनैः शनैरुपरमेद् बुद्ध्या ध्यातुं ह्यतीतया । आत्मसंस्थं मनं कृत्वा न किञ्चिदपि चिन्तयेत् ॥ २५ ॥ यतो यतो निश्चरात् मनश्चञ्चलमस्मिन् ॥ ततस्ततो नियमैर्दात्मन्येव  
वशं नयेत् ॥ २६ ॥ प्रशा तमतसं मनं यागिनः सखमुत्तमम् । उषैति शान्तरजस  
ब्रह्मभूतमकल्पयन् ॥ २७ ॥ युञ्जन्मयं सदात्मानं योगा विगतकम्पम् । सुखेन ब्रह्मसं

मुख इन्द्रियों से बाहर ब्रह्म ज्ञानरूपी बुद्धि के द्वारा प्राप्त करने के योग्य है और  
इस मुख में निपत है वह ब्रह्म के सिवाय दूसरी वस्तु को नहीं जानता है और तत्त्व  
से पृथक् नहीं होता है । २१ । इस बड़े लाभ को पाकर उससे अधिक लाभ को  
नहीं मानता है और इस में प्रवृत्त चित्त होकर पुरुष बड़े दुःखों के कारण से भी  
पृथक् नहीं किया जाता है । २२ । उसको दुःखों के संग से पृथक् करने वाला योग  
नाम जाने जिसका चित्त वैराग्य के द्वारा बुद्धि सुखादिका सहनेवाला है उस से वह  
योग निश्चय समेत अनुष्ठान करने के योग्य है । २३ । संकल्प से उत्पन्न हुई सब  
इच्छाओं का सब वासनाओं समेत त्याग करके और चित्त के द्वारा इन्द्रियों के  
समूह को चारों ओर से रोककर । २४ । अथवा धृति से स्वाधीन की हुई बुद्धिके  
द्वारा धीरे २ निमित्त करे और उस मनको आत्मा में नियत करके कुछ भी चि-  
न्तन न करे । २५ । यह चंचल और अस्थिर मन जहां जहां विषयों में जावे वहां उहां  
से रोककर उसको आत्मा के स्वाधीन करे । २६ । इस अत्यन्त शान्तचित्त रजो-  
गुण रहित धर्माधर्म से पृथक् ब्रह्मरूप योगी को ही उत्तम सुखकी प्राप्ति होती है

mind perceiving self rests content in self, 20 that, wherein one  
feels infinite intellectual supreme bliss, wherein once established,  
no one would retire from reality, 21 which having obtained, he  
respects no other acquisition so great as it, in which depending,  
he is not moved by the severest pain 22 This disunion from the  
conjunction of pain may be called Yoga spiritual union or devotion  
It is to be attained by resolution, by the man who knows his own  
mind 23 When he has abandoned every desire that arises from  
the will, and subdued with his mind every inclination of the senses,  
(24) he may, by degrees, find rest, and having, by a steady resolu-  
tion, fixed his mind within himself, he should think of nothing else  
25 Whosoever the unsteady mind roams, he should subdue it,  
bring it back, and place it under the control of self 26 Supreme  
happiness attends the Yogi whose mind is at peace, whose passions  
are subdued, who is Brahma like, and free from sin 27 The Yogi



स्पर्शम यत् स्रुतमदनुते ॥ २८ ॥ सर्वभूतस्थमात्मान सर्वभूतानि चात्मनि । इह ते  
योगयुक्त त्मा सर्वत्र समदर्शनः ॥ २९ ॥ यो मा पश्यति सर्वत्र सर्वञ्च मयि पश्यति ।  
तस्याह न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्याति ॥ ३० ॥ सर्वभूतस्थित यो मां भजत्येक  
त्वम स्थित । सर्वथा वर्त्तमानोपि स योगी मयि वर्त्तते ॥ ३१ ॥ आत्मौपम्येन  
सर्वत्र सम पश्यति योर्जुन । सुख वा यदि वा दुःख स योगी परमो मतः ॥ ३२ ॥  
अर्जुन उवाच । योय योगस्त्वया प्रोक्त साम्येन बहुदुद्बुध । एतस्याह न पश्यामि  
चञ्चलत्वात् स्थितिं स्थिराम् ॥ ३३ ॥ चञ्चलहि मन कृष्ण प्रमाथि बलवद्दृढम् । तयाहं  
निग्रहमन्ये धार्योरेव सुदुष्करम् ॥ ३४ ॥ श्रीभगवानुवाच । असंशय महाबाहो

। २७ । अविद्या आदि क्लेशों से रहित योगी इस रीति से मनको स्वाधीन करता  
हुआ सुख पूर्वक ब्रह्मानन्द रूप अनन्त सुखको पाता है । २८ । योग से सावधान  
चित्त सब जीवोंमें ब्रह्मका देखनेवाला योगी सब जीवों में वर्तमान अखण्ड ब्रह्मरूप  
आत्माको और सब जीव मात्रों को आत्मा में देखता है । २९ । जो मुझको सब  
जीवमात्र में देखता है और सबको मुझमें देखता है मैं उससे कभी परोक्ष नहीं  
होता हूँ और वह भी मेरा परोक्ष नहीं है । ३० । जो योगी जीव ब्रह्मकी एकता  
में नियत होकर सब जीवोंमें वर्त्तमान मुझको निर्विकल्प समाधि के द्वारा भजता है  
वह योगी सगुणकार के व्यवहारों को कहता हुआ भी मुझ में वर्त्तमान है । ३१ ।  
जो योगी आत्माकी समता के कारण सबजीवों में सुख और दुःखको समान देखता  
है वह योगी उत्तम कहाता है । ३२ । अर्जुन बोले हे मधुसूदनजी आपने जो यह समता  
पुनः योग वर्णन किया सो मैं मनकी चञ्चलता से उसकी बड़ी स्थिरताको नहीं  
देखता हूँ । ३३ । हे श्रीकृष्णजी यह चञ्चल मन बड़ा पराक्रमी और दृढ़ है उस  
मनका रोकना मैं वायुके समान महाकठिन मानता हूँ । ३४ । श्रीभगवान् बोले कि

who is thus constantly vowed to soul, and free from sin, enjoys eternal  
happiness of contact with Brahma. 28 The man whose mind is  
absorbed in meditation and who looks on all things alike, sees the  
supreme soul in all things in the supreme soul. 29 He who sees me  
everywhere, and sees all this in me, I forsake not him, and he forsakes  
not me. 30 The Yogee who believes in unity and worships me  
present in all things, dwells in me in all respects, even whilst he  
lives. 31 The man, O Arjuna, who from what passes in his own  
breast, whether it be pain or pleasure, beholds the same in others, is  
esteemed a supreme Yogee. 32 Arjuna—From the restlessness of  
our natures, I conceive not the permanent duration of this doctrine  
of equality which thou hast told me. 33 The mind O Krishna, is  
naturally unsteady, turbulent, strong, and stubborn. I esteem it as  
difficult to restrain as the wind. 34 Krishna—The unsteady mind.

मनो दुर्निग्रहं चलम् । अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते ॥ ३५ ॥ असंयता-  
त्मना योगो दुष्प्रापः शस्त्रेण मतिः । वश्यात्मना तु पतताश्च यो वाप्नुमुपायतः ॥ ३६ ॥  
अर्जुन उवाच । अयतिः श्रद्धयापेतेन योगाद्यालतमानसः । अप्राप्य योगसंसाधकां  
गतिं कृष्ण गच्छति ॥ ३७ ॥ कश्चिद्वाभयविभ्रष्टश्चिद्वाभ्रमिव नश्यति । अप्रतिष्ठो  
महाबाहो विमूढो ब्रह्मणः पथि ॥ ३८ ॥ एतन्मे संशयकृष्ण छेत्तुमर्हस्यशेषतः । त्वद्वयः  
संशयस्यास्य छेत्ता न ह्युपपद्यते ॥ ३९ ॥ श्रीभगवानुवाच । पार्थ नैवेह नामुत्र  
विनाशस्तस्य विद्यते । न हि कल्याणकृत् कश्चिद्दुर्गतिं तात गच्छति ॥ ४० ॥ प्राप्य  
पुण्यकृतां लोकानुपित्वा शाश्वतीं समाः । शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभद्रो भिजायते ४१ ॥

हे महाबाहु अर्जुन निस्सन्देह यहमनवदाचंचल है इसका स्वार्थान होना बड़ा कठिन  
है हे अर्जुन इस मनको अभ्यास और वैराग्य के द्वारा स्वाधीन करना योग्य है  
। ३५ । जिसने चित्तको अच्छी रीति से न जीता उसको योगका मिलना बड़ा  
कठिन है यह मेरा मत है और मनको स्वाधीन करनेवाले वा उपाय करनेवाले को  
अभ्यास वैराग्यादिक उपायों से उसका प्राप्तकरना सम्भव है । ३६ । अर्जुन बोले  
हे श्रीकृष्णजी कर्म योग से मनको हटाकर श्रद्धापुक्त योगमार्ग में पृष्ठत थोड़ा  
उपाय करनेवाला योग सिद्धी को न पाकर मृतक होके कौनसी गतिको पाता है  
। ३७ । और हे महाबाहु वामुदेवजी वह कमयोग और ज्ञानयोग का  
आश्रय न करनेवाला अज्ञानी ब्रह्मप्राप्ती में नियत कर्मयोग ज्ञानयोग इन दोनोंसे  
गिराबुझा दूरेहुये बादल के समान नाशदशाको तो नहीं पाता है । ३८ । हे श्री  
कृष्णजी अब इन मेरे सम्पूर्ण सन्देहोंको आप दूरकरिये क्योंकि आपके सिवाय  
इस संशयका दूर करनेवाला कोई नहीं विदितहोता । ३९ । श्रीभगवान् बोले हे  
अर्जुन इसलोक परलोक में उमका किसीप्रकार से नाशनहीं है और हे तात कोई  
शुभकर्मी मनुष्य दुर्गती को नहीं पाता है । ४० । योग से भ्रष्टहुये अपने पुण्य

O valiant youth, is undoubtedly difficult to subdue; yet it may be restrained by practice and temperance. 35. In my opinion, Yoga is hard to be attained by him who has not his mind in subjection; but it may be acquired by him who takes pains, and has his mind in his own power. 36. Arjuna—Whither, O Krishna, does the man go after death, who, though ardent has his mind moved away from yog for want of application? Does he who is found not standing in the path of Brahma fall between good and evil, like a broken cloud? Thou, Krishna, canst entirely clear up this my doubts; none except thee can remove this doubt. 39. Krishna—His destruction is neither here nor in the world above. No man who has done good goes the evil way. 40. A man fallen from Yog having enjoyed for long

अथवा योगिनामेव क्लेशमवाप्त धीमताम् । एतादृि दुर्लभतर लोकेज्जन्म यदीदृशम् ४१ । तत्र त बुद्धिसंयोग लभते पौर्बदहिकम् । यततेचततो भूय सखिर्द्धौ कुरनन्दन ॥४३॥ पूवाभ्यासेन तेनैव द्वियते ब्रवशोपिस । जिज्ञासुःपि योगस्य शब्दब्रह्मातयत्तै ॥४४॥ प्रयत्नाद्यतमानस्तु योगी सशुद्धकिल्बष । जनेरुज्जन्मसखिर्द्धस्ततो पाति परागतिम् ॥४५॥ तपस्विभ्योधिरो योगी ज्ञानिभ्योप मतोधिक । कर्मिभ्यश्चाधिको योगी तस्माद्योगीमवाजुन ॥ ४६ ॥ योगिनामाप सर्वेषां मद्गतेनान्तरात्मना । श्रद्धावान् भजतेयो मां स मे युक्ततमो मत ॥ ४७ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि श्रीमद्भगवद्गीतापर्वणि अध्यात्मयोगोनाम

पष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ पर्वणितुर्निशोऽध्यायः ३० ॥

से उत्पन्न लोको को पाकर बहुत वर्षनक निवास कर के धनी लोगों के यहां उत्पन्न होता है । ४१ । प्रया वह पुरुष बुद्धिमान् योगियों के घराने में पैदाहोता है परन्तु लोक में ऐसा जन्महाना दुर्लभ है । ४२ । ह कौरवनन्दन वहां पूर्ण दह सम्झनी उस बुद्धि संयोगको पाता है उसकें पीछे वह बड़ी शुद्धी के निमित्त अनेक उपाय करता है । ४३ फिर वह पिछले अभ्यासके कारण से संचा जाता है क्योंकि योग जाननेका इच्छामान शब्द ब्रह्मको उल्लंघन करके कर्म कर्त्ता होता है । ४४ । बड़े-माणायामादि उपाय करने से पापोंसे छूटाहुआ योगी बहुत से जन्मों में मोक्षके योग्य होकर परम कल्याणरूप मोक्षको पाताहै । ४५ । योगी बड़े-तपस्वियोंसे भी अधिक है क्योंकि वह शास्त्रज्ञ ज्ञानियो और कर्मकरनेवालों से भी अधिक मानागया है हे अर्जुन इसकारण से तू योगीहा । ४६ । सब कर्म योगियों में भी जा श्रद्धावान् मुझ वामुदेव में लगेहुये मनके द्वारा मुझको भजता है उसको मैं बड़ायोगी मानताहूँ ॥ ४७ ॥

years the rewards of his virtues in the regions above, at length is born again in some well-to-do family, or perhaps in the house of some learned Yogee. But such a regeneration into this world is the most difficult to attain. 42 Here he recovers the memory of his former body and begins again to labour for perfection in devotion. 43 By the former practice he is attracted involuntarily into Yog, he who desires to know it, passes beyond Shabd Brahman. 44 The Yogee who labouring with all his might, is purified of his sins, and, after many births, made perfect, at length goes to the supreme abode. The Yogee is more exalted than Tapaswees, he is superior to the Karmies and the wise ( Jnatis ), wherefore, O Arjuna, resolve thou to become a Yogee. 46 Of all Yogees, I respect him as the most devout, who has faith in me, and who serves me with a soul possessed of my spirit. 47

श्री भगवानुवाच । मय्यासक्तमनाः पार्थ योगं युञ्जन् मदाश्रयः । असंशयं स-  
मग्रं मां यथा ज्ञास्यासि तच्छृणु ॥ १ ॥ ज्ञानन्तेऽहं न विद्वानमिदं चक्ष्याम्यशेषतः ।  
यज्ञज्ञात्वा नेह भूयोऽन्यज्ञं ज्ञातव्यमवशिष्यते ॥ २ ॥ मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चिद्यतति  
सिद्धये । यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः ॥ ३ ॥ भूमिरारोहो वायुः  
स्वमनो बुद्धिरेव च । यद्द्वार इतीयं मे मित्रा प्रकृतिरष्टधा ॥ ४ ॥ अपरं यमि  
तत्त्वानां प्रकृतिं विद्धि मे पराम् । जीवभूतां महाबाहो ययेदं धार्यते जगत् ॥ ५ ॥  
एतद्योनीनि भूतानि सर्वाण्यप्युपधास्य । अहं कृत्स्नस्य जगतः प्रभवः प्रलयस्तथा  
॥ ६ ॥ मत्तः परतरं नान्यत् किञ्चिदस्ति धनञ्जय । मयि सर्वमिदं प्रोक्तं सूत्रे मणिगणा

अध्याय ॥ ७ ॥

श्रीभगवान् बोले हे अर्जुन मुझ में मनलगानेवाला और योगसमाधिका  
करनेवाला मेरे आश्रित होकर मुझपर्यन्त ब्रह्मको जैसे जानेगा उसको भवण करो  
। १ । मैं इसज्ञान विज्ञानको सम्पूर्णतासमेत तुझसे कहनाहूँ जिसको जानकर जान  
ने के योग्य दूसरा कोई विद्वान् शेष नहीं रहता है । २ । हजारों मनुष्यों में कोई  
मोक्षरूप सिद्धियोंके लिये उपाय करता है और उनउपाय करनेवाले सिद्धिमें कोई  
पुरुष मुझको मूलसमेत जानना है । ३ । पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, त्वं,  
मन, बुद्धि और अहंकार यह आठ भाग मेरी प्रकृति के हैं । ४ । परन्तु यह  
प्रकृति अनुत्तम (अपर) है इससे उत्तम मेरी दूसरी प्रकृति जीवहै जिसे हे मुहा  
बाहु यह जगत् धारण किया जाताहै । ५ । यहप्रकृति सब जीवोंकी उत्पत्तिस्थान  
और नाशकरनेवाली है इसीसे मैं संसार की उत्पत्ति स्थान और लय होनेका स्थान  
हूँ । ६ । हे कुन्ती पुत्र मुझ से उत्तम दूसरा कोई नहीं है यह सब प्रपंच मुझही में

## LECTURE VII

### Of Supreme saintly wisdom

Krishna.—Hear, O Arjuna, how having thy mind attached to me, engaged in devotion, and relying on me, thou wilt, without doubt, know me. 1. I will instruct thee in this wisdom and learning with out reserve; knowing which there remains nothing more to be known. 2. Few amongst thousands of mortals strive for perfec- tion; and of those who strive and become perfect, scarcely one knows me truly. 3. My nature is divided into eight distinctions: earth, water, fire, air, nether, mind, understanding, and Ahankar, (self-conscious- ness) 4. But besides this, know that I have another nature superior to this, and by which this world is supported. 5. Learn that these two are the nouns of all beings. I am the origin and the dissolution of the whole universe. 6. There is nothing greater than I; all things

इय ॥ ७ ॥ रसोऽहमस्मि कौन्तेय प्रभास्मि शशिसूर्ययोः । प्रणवः सर्ववेदेषु ॥ ८ ॥  
 खे पौरुषं नृपु ॥ ८ ॥ पुण्यो गन्ध पृथिव्या च तेजश्चास्मि विभावश्चौ । जीवनं  
 सर्वभूतेषु तपश्चास्मि तपस्विषु ॥ ९ ॥ बीजं मां सर्वभूतानां विद्धि पार्थ सनातनम् ।  
 बुद्धिर्बुद्धिमतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम् ॥ १० ॥ बलं बलवतांश्चाहं कामरागवि-  
 चर्जितम् । धर्माधिपद्भ्यो भूतपुत्र कामास्मि भरतर्षभ ॥ ११ ॥ ये चैव सात्त्विका मा-  
 या राजसास्तामसाश्च ये । मत्त एवेति तान् विद्धि न त्वहं तेषु ते मयि ॥ १२ ॥  
 त्रिभिर्गुणमयैर्भावैरेभिः सर्वमेदं जगत् । मोहितं नाभिजानाति मागेभ्यः पामव्ययम्  
 ॥ १३ ॥ वैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया । मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेता-  
 तरन्ति ते ॥ १४ ॥ न मां दुष्कृतिनो मूढा प्रपद्यन्ते नराधमाः । माययापहतज्ञाना

एसे पुहा हुआ है जैसे कि सूत्रमें मणि पुरी होती है । ७ । हे अर्जुन जलमें मैंही  
 रस हूं और सूर्य चन्द्रमा दोनों में प्रकाश रूप मैं हूं और सब वेदों में प्रणव  
 मैंहूं आकाश में शब्द मैंहूं सब पुरुषों में पुरुषार्थ मैं हूं । ८ । पृथ्वी में पवित्र  
 गंध मैं हूं अग्नि में तेज मैंहूं सबजीवों में जीवनरूप मैंहूं तपस्वियों में तप मैंहूं  
 । ९ । हे अर्जुन मुझको सब जीवों का प्राचीन बीजरूप जान, बुद्धिमानोंमेंबुद्धि  
 मैं हूं तेजस्वियोंमें तेज । १० । बलजानों में काम राग विचर्जित बल मैं हूं हे  
 भरतर्षभ जीवोंमें धर्म से आविरुद्ध काम मैंहूं जो सात्त्विक राजस तामस भावहै उन  
 सब कोभी मुझसेही हुआ जान वह सब मुझ मे है परन्तु मैं उनमें नहीं हूं । १२ ।  
 सत्त्व रज तम इन तीनों गुणों की तीन रूपान्तर दशाओं के भावोंसे यह सब संसार  
 भूलाहुआ मुझको नहीं जानताहै कि मैं अविनाशी रूपान्तर दशासे रहितहूँ । १३ ।  
 यह मेरीमाया दुःखसे उल्लंघन करनेके योग्य है, जो मुझ को शच्छी रीतिसे जानते  
 है वह पुरुष इसमायाको तरतेहै । १४ । परन्तु जो पापात्मा आत्मा अनात्मा के विरेक

hang on me, as gems on a string I am serenity in water, the  
 light in the sun and moon, *pranava* ( Om ) in the *Vedas*, sound in the  
 firmament, and virility in men 8 I am the fragrance of earth,  
 glory in fire, in all things I am life, and I am the austerity of the  
 ascetic 9 I know, O Arjuna, that I am the eternal seed of all nature.  
 I am the understanding of the wise, the glory of the proud, the  
 strength of the strong, free from lust and passion, and in beings I  
 am desire not contrary to dharma 11 But know that I am not in  
 those natures which are of the three qualities called *Sattva*, *Rajas*  
 and *Tama*, although they proceed from me yet they are not in me  
 12 The whole of this world being bewildered by the influence of  
 these three-fold qualities, I know not that I am above these and  
 imperishable 13 Thus my divine and super-natural illusion is hard  
 to be overcome except by those who come to me as their refuge.  
 14. The wicked, the foolish, and the law-abiding, devoid of wisdom in

आसुर भावमाश्रिता ॥ १५ ॥ चतुर्विधा भजन्ते मां जना सुहृत्सिनोर्जुन । मा  
 तौ जिज्ञासुरर्थायी ज्ञानी च भरतर्षभ ॥ १६ ॥ तेषां ज्ञानी नित्ययुक्त परमक्ति  
 विशिष्यते । प्रियो हि ज्ञानिना त्वर्थं मह स च मम प्रिय ॥ १७ ॥ उदरा सर्प  
 एवैते ज्ञानी त्वात्मैव मे मतम् । आस्थित स हि युक्तात्मा मामेवानुत्तमा गातम् ॥ १८ ॥  
 यद्वा जन्मनामन्ते ज्ञानवान् मा प्रपद्यते । वासुदेव सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभ  
 ॥ १९ ॥ कामैस्तैस्तैर्हृतज्ञानं प्रपद्यते न्यवेद्यता । त त न्यममास्थाप मष्टया  
 नियता स्वया ॥ २० ॥ यो या या या तनु भक्त श्रद्धयाधितुमिच्छति । तस्य  
 तस्याचला श्रद्धा तमिव सिद्धाश्रयम् ॥ २१ ॥ स तथा श्रद्धया युक्तस्त्वाराधन  
 माहते । लभते च तत कामान् गमैव विहिताद् दितान् ॥ २२ ॥ अन्तवत् फल

से रहित मनुष्योंमें नीच मायाके कारण ब्रह्मज्ञान से शुन्य आसुरी ज्ञान में आश्रित  
 है वह मुझको न श्रेष्ठ रीतिसे जानते हैं न प्राप्त होते हैं । १५ । हे भरतवंशी दुखी,  
 ब्रह्मज्ञानक आकांक्षी, धनाकांक्षी, ज्ञानाकांक्षी यह चारों प्रकारके भूभक्तों पुरुष  
 मुझको भजते हैं, इनचारोंमें ज्ञानीउत्तमह वह सदैव मुझमें अनुरक्तहोकर एक भक्तिसे  
 भजन करनेवाला है क्योंकि मैं ज्ञानी का अत्यन्त प्यारा हूँ और वह मेरा प्यारा है । १७ ।  
 यह सबउत्तम हैं परन्तु ज्ञानी मेरा आत्मा है क्योंकि वह मुझजगद्वात्मा में मन को  
 नगानेवालाहोकर मुझ उत्तमगति रूपमें ही नियत है । १८ । वह पुरुष बहुत जन्मोंके पीछे  
 सब संसारको वासुदेवरूप जानकर मुझको पाता है । १९ । जो कामनाओं से ज्ञान  
 भ्रष्टहोकर अपने स्वभावके द्वारा नियमोंमें पित्तहोके अन्य देवताओं को भजते हैं  
 । २० । यह भक्त जिसने देवता को श्रद्धा पूर्वक पूजते हैं मैं उन अचल श्रद्धाको नियत  
 करता हूँ । २१ । फिर वह श्रद्धामें भरे हुये उसका आराधन करते हैं और उसीसे अभीष्टोंको

by illusion, and men of demoniac nature do not come to me 15 I  
 am, O Arjuna worshipped by four classes of men who are good  
 the distressed, the inquisitive, the wishers after wealth, and, the  
 wise 16. Of these the wise man who is constantly united and  
 single loving is the best. I am extremely dear to the wise man,  
 and he is dear to me. 17 All these are exalted, but I esteem  
 the wise man even as myself, because he is my sole devoted and  
 depends on me as his ultimate resource 18 The wise man  
 proceeds to me after many births for the exalted one who believes  
 that, Vasudeva is all, is hard to be found 19 Deprived of wisdom  
 by desires and impelled by nature, people worship other gods, impos  
 ing on themselves various observances. 20 Whatever image a  
 devotee wishes, desirous to worship in faith, that very faith in  
 him I render him 21 Possessed with that faith, whoever devotes  
 himself to that worship, obtains his wishes but they are granted

तेषां तद्भवत्यल्पमेधसाम् । देवान् देवयजो याति मज्जता यान्ति मामपि ॥ २३ ॥  
 अव्यक्तव्यक्तिमापन्नमव्यन्तमामहुर्द्वय । परमावमजानन्तो ममाव्ययमनुत्तमम् ॥ २४ ॥  
 नाहं प्रकाश सर्वस्य योगमायासमावृत । मूढस्य नाभिज्ञानात् लोका  
 मामजमव्ययम् । २५ । चेदाहं समतीतानि वर्त्तमानानि चाक्षुः । भविष्याणि च  
 भूतानि मा तु यद् वदस्व न ॥ २६ ॥ इच्छाद्वयसमुत्थं न द्वन्द्वमाहेन भात । यद्य  
 भूतानि सम्मोहं सर्गे यान्ति परन्तप ॥ २८ ॥ येषां त्वन्तर्गतं पपं जनं ना पुण्यकर्म  
 णाम् । ते ह्यदमोहनिर्मुक्ता भजते मां दृढव्रता ॥ २८ ॥ जरा मरणमोक्षाय मामा  
 श्रित्य यतन्ति ये । ते ब्रह्मा तद्विदुः कृत्स्नमध्यात्मं कर्म चाश्रितम् ॥ २९ ॥ साधि

पातेहै जो कि मेरेही उत्पन्न कियेहुयेहै। २३। उन निर्बुद्धियोंका फल विनाशवान् होताहै  
 देवताओंके पूजनेवाले देवताओंको पातेहै और मेरेभक्त मुझ अनन्तको पातेहै। २४।  
 निर्बुद्धी लोग मुझ अविनाशी अनूपम अव्यक्त पुरुषको संसारी जीवों के समान  
 देहवारी मानते हैं। २५। क्योंकि योग माया से ढकाहुआ मैं सब को नहीं देखाई  
 दताहूँ यह अज्ञानी लोग मुझ अविनाशी को नहीं जानता है। २६।  
 उपाधि रहित होनेसे मैं भूत भाविष्य वर्त्तमान इन तीनोंकाल के जीवधारियों को  
 जानताहूँ परन्तु कोईभी मुझको नहीं जानता है। २७। हे शत्रुहन्ता अर्जुन सब  
 जीवधारी इच्छा और अनिच्छा आदि मोह द्वन्द्वोंसे इस संसारके विषयमें आविर्भूतोंको  
 पाते हैं। २८। जिन पवित्रकर्मी पुरुषोत्तम पापनाश हुआहै वह मोहके द्वन्द्वोंसे छुटे  
 हुये ये शम दमादि त्रणोंमें दृढ़ होकर मुझको भजते हैं। २८। जो मुझमें समाहित  
 स्थित होकर जरा मृत्यु से छूटनेके निमित्त उपाय करते हैं, वह ब्रह्म आत्मा और  
 संपूर्ण कर्मों के ज्ञाता हैं। २९। जिन पुरुषों ने अधिभूत अधिदेव अधियज्ञ समेत

by me But the reward of such short sighted men is finite. Those  
 who worship the Devatas only to them and those who worship me  
 alone join me. The ignorant being unacquainted with my supreme  
 infinite and exalted nature believe me who am invisible, to exist in  
 the visible form. 24 I am not visible to all because I am conceal  
 ed by yog mayas. The ignorant world don't know that I am not  
 subject to birth or decay. 25 I know Arjuna, all the beings  
 that were me, and will I but there is no one amongst them  
 who knows me. 26 All beings in birth find their reason fascinated  
 and perverted by the influence of contrary sensations arising from love  
 and hatred. 27 Those men of regular lives, whose sins are done  
 away, being free from the fascination arising from those contend  
 ing passions worship me. 28 They who put their trust in me,  
 will liberate for a deliverance from decay and death I know Brahma,  
 the whole Adhyatma and every Karma. 29 The devout souls who

मृताधिदैव मा साधियन्न ये विदुः । प्रयाणकालेपि च मा ते विदुर्भुवचेतसः ३० ।  
इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि श्रीमद्भगवद्गीतापञ्चसूत्रोपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे

श्रीकृष्णार्जुन संवादे ज्ञानयोगो नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

अर्जुन उवाच । जित्द्रुहं किमध्यात्मं किद्रुमं पुरुषोत्तम । अधिभूतञ्च किं प्रोक्तं  
मधिदैव किमुच्यते ॥ १ ॥ अधियज्ञं कथं चो न ब्रह्मिन् मधुच्छन । प्रयाणकाले च  
कथं ते योसि नियतात्मा ॥ २ ॥ श्रीभगवानुवाच । उत्तरं ब्रह्म परमं स्वभावोऽध्यात्म  
मुच्यते । भूतभावोद्भवकरो विसर्गं कर्मसंज्ञितं ॥ ३ ॥ आभूतं क्षरोभावं पुरुषश्चा  
धिदैवतम् । अधिपज्ञाहमेवान् ब्रह्म देहं भूताम्बरं ॥ ४ ॥ अन्तकाले च मामेव स्मरन्  
मुरुषा कलेवरम् । यः प्रयाति समद्राघं याति नारयणं सदाय ॥ ५ ॥ यः यत्नात्  
स्मरन् भाव्यं त्यजत्य ते फलेवरम् । तं तर्षति कौतयं सदा तद्भवमावितं ॥ ६ ॥

मुझको जाना है अर्थात् उपासनाकी है वह मुझमें चित्त लगाने वाले पुरुष शरीर  
त्यागके समय में भी मुझको ही जानते और देखते हैं ॥ ३० ॥

अथाय ॥ ८ ॥

अर्जुनवाले हे पुरुषोत्तम वह राजा न्याहे अथात् न्या है कर्म दया है और अधि  
भूत अधिदैव और अधियज्ञ कौन कहाता है । १ । और किस रीतिमें इस शरीर में  
नियत है और आपसमागानचिष पुरुषोंको शरीर त्यागके समय कैसे जाने जाते  
हो । २ । श्रीभगवान् बोले हे अर्जुन जो परमब्रह्म है वह ब्रह्म है और जो पदार्थ है  
वह अध्यात्म है और जो त्यागरूपमय है वह जीवों का उत्पन्न करने वाला कर्म नाम  
है । ३ । जो विनाशवान् कर्म है वह अधिभूत है पुरुष अधिदैव है देहेधारियोंमें श्रेष्ठ  
अर्जुन इस शरीर में अधियज्ञ भैह अन्तकालमें मुझको स्मरण करना हुआ शरीर  
को त्यागकर निस्सन्देह मेरे ही भावको पाता है । ४ । हे अर्जुन जिस २ भावको  
स्मरण करता हुआ अन्तमें शरीरको त्याग करता है वह सदैव उस भाव से भावित

know me to be the Adhibhuta, the Adhidava and the Adhiyajna,  
I now see also in the time of their departure 30

### LECTURE VIII

Arjuna—What is that Brahma? What is Adhyatma? What is  
Karma? O first of men! What is Adhibhuta called? What Adhi  
dava? 1 How and who is Adhiyajna in this body! How art  
thou known in the hour of departure by men of subdued  
minds? 2 Krishna—Brahma is that which is supreme and indes  
tructible. Adhyatma is Svabhava or nature, Karma is that em  
anation which causes the birth of being, 3 Adhibhuta is of perish  
able nature, Adhidava is Purush and Adhiyajna, O best of men,  
I myself in this body. 4 At the time of death he, who having  
abandoned his mortal frame departs thinking only of me without  
doubt unites me. Whatever idea is uppermost at the time of death,



तस्म त् सर्वेषु फलान् गामनुस्मर सुध्यच । मर्त्यानि तमनो रुद्धिर्मागैवैष्यस्य सशय ॥ ७ ॥  
 अभ्यासयोगयुक्तेन चेतसा नान्यगामिना । परम पुरुष दिव्य याति पार्थानु चित्त  
 यन् ॥ ८ ॥ षड्विपुर णमनुशासितारमणोरणीया समनुस्मरेद्य । सर्वभ्य धातात्मा च-  
 न्त्वरूपमादित्यवर्णं तमस परस्तात् ॥ ९ ॥ प्रयाणकाले मनसा चलेन भक्त्या युक्तो  
 योगबलेन चैव । भ्रुवोर्मध्य प्राणमावेश्य सम्यक् स त पर पुरुषमुपैति । दिव्यम् ॥ १० ॥  
 पदक्ष्णं वेदविदो वदन्ति विद्वन्ति यद्यनयो वतिरागा । यादच्छन्तो ब्रह्मचर्यं  
 चान्तिं तत्ते पदं सप्रहेण प्रवक्ष्य ॥ ११ ॥ सर्वद्वे राणि सयस्य मनो हृदा निरुप्य

होकर उसीभावको पाता है । ६ । इसकारण सब समय परमुक्ती को स्मरण कर  
 के तू पुद्गले मृच्छहो मुक्तजगदात्मा में मन और बुद्धिका लगाने वाला अथवा लय  
 करने वाला तू मुक्तीको पावेगा इसमें कुछभी सन्देह नहीं है । ७ । हे अर्जुन अभ्यास  
 और अभ्यासजन्य योग समाधि इन दोनोंसे संपुक्त अनन्य दृष्टीचित्तके द्वारा अन्त  
 र्यामी परम पुरुषको पाता है । ८ । अर्थात् सबके जानने वाले परारूप जगत्के  
 अन्तर्गामी सूक्ष्मसेभी सूक्ष्म सबकर्म फलके विभाग करनेवाले ध्यानसे अगम्य मूर्त्य  
 के समान प्रकाशमान अर्थात् सब जगत्के प्रकाशक अविद्या से रहित को स्मरण  
 करे । ९ । शरीर त्यागने के समय मनकी दृढ़ता पूर्वक योगबल से अथवा रामुदेव  
 भगवान्की भक्तिमें मृच्छहोके दोनों भूकृष्टियों में प्राणको चढ़ाकर उस हिरण्य  
 गर्भनाम दिव्य परमपुरुषको पाता है । १० । जिसप्रमाण अक्षरको वेदज्ञ लोग कहते  
 हैं और जिसमें वैरागी यती लोग भवेश करते हैं अर्थात् उसको शरण लेते हैं और  
 जिसको इच्छा करते हुए ब्रह्मचर्य को करते हैं उसपदको तुम्हण व्योरे समेत  
 कहता हूँ, सय इन्दी रूपद्वारों को अपने स्नाधान करके मनको हृदयमें रोक कर अपने  
 प्राण को सुषुम्ना नाड़ी के मार्ग से मरतक में धारण करके योग शास्त्र की निखी

in the mind of a man, he goes to it 6 Wherefore at all times think  
 of me alone and fight. Let thy mind and understanding be set on  
 me alone, and thou shalt, without doubt, go unto me 7 He who  
 longs after the Divine and Supreme Being, with his mind  
 intent upon the practice of devotion, goes to him 8 He who in  
 the last hour thinks on the ancient, the Omniscient, the Ruler,  
 minuter than the atom, the preserver of all, of form unimaginable  
 refulgent like the sun, beyond darkness, with a steady mind fix-  
 ed in devotion by the power of yoga, and with Pran well drawn  
 in between his brows, reaches the Supremo Being 10 I will now  
 summarily make thee acquainted with that path which the learned  
 in the Vedas, call neverfailing, which the men of sublimed minds  
 and conquered passions enter, and which, desirous of knowing they  
 live the lives of Bramhacharis 11 He who, having closed up all  
 the doors locked up his mind in his own breast, and fixed his life

यः । मूर्धन्यां धायामनः प्राणमास्थितो योगधारणाम् ॥ १३ ॥ शोभित्येकाक्षरं ब्रह्म  
 व्याहरन्मामृत्स्मरन् । यः प्रयातः त्यजन् देहं स याति परमां गतिम् ॥ १३ ॥ अनन्य  
 चेनाः सततं यो मं स्मरति नित्यशः । तस्याहं सुलभं पार्थ नित्यशुक्तस्य योगिनः  
 ॥ १४ ॥ मामुपेत्य पुनर्जन्म दुःखालयमशाश्वतम् । नाप्नुवन्ति महात्मानः सन्तिर्द्धिपरमा  
 गताः ॥ १५ ॥ आब्रह्मजुषनाहोकाः पुनरावर्तिनोऽर्जुन । मामुपेत्य तु कोन्तेऽपुन  
 र्लभन्त निश्चये ॥ १६ ॥ सहस्रयुगार्धन्तमहर्ष्यद् ब्रह्मणो बहु । रात्रिं युगसदृशांतां  
 तेऽहोरात्रादिदोषाः ॥ १७ ॥ अव्यक्ताद् व्यक्त्य सर्वा प्रभवन्त्यहराम्भे । रात्र्या  
 गमे प्रलीयन्त तत्रैवाव्ययसन्नके ॥ १८ ॥ भूतग्रामः स एवायं भूत्वा भूत्या प्रलीयते । रात्र्या  
 गमेऽव्ययं पार्थ प्रभवत्यहराम्भे ॥ १९ ॥ परस्तस्मात्तु भावोऽन्यो व्यक्तोऽव्यक्तं च सनातनम् ।

हुई धारणामें अच्छी रीतिमें नियत होकर, जोय इस एक अक्षर ब्रह्मको कहता  
 और मुक्तको स्मरण करता हुआ देहको त्यागकर जो जाता है वह ब्रह्म लोककी  
 प्राप्तिके द्वारा मोक्ष रूप परमगतिको पाता है । १३ । जो अनन्य बुद्धि से सदैव  
 मेरा ही स्मरण और कीर्त्तन करता है हे अर्जुन उस योग्य अक्षर विहार और यम  
 नियम आदि में प्रवृत्त योगीको मैं बड़ा सुलभ हूँ । १४ । मुक्तको पाकर दुःखके  
 आलय विनाशयान् पुनर्जन्मको नहीं पाता है । १५ । हे अर्जुन ब्रह्मात्मिकसे लेकर  
 सब संसारीलोक इस पृथ्वीपर फिर लौटकर आने वाले हैं और मुक्तको प्राप्त होकर  
 पुनर्जन्म नहीं होता है । १६ । जिन लोगोंने सहस्रयुगों का ब्रह्माका एक दिन जाना  
 है और इतनीही रात्रिभी मानी है वह दिनरात्रिके जाननेवाले भविष्य हैं । १७ । दिनके  
 होते ही सब अत्यन्त पदार्थ स्वप्न दशावस्था अव्यक्तसे विदित होते हैं और रात्रिआने  
 पर उसी अव्यक्त नाम में सब अत्यन्त लय हो जाते हैं । १८ । हे अर्जुन यही यह  
 सृष्टि समूह चारों तरफ प्रकट होकर रात्रिके आने पर अविद्या और कर्म फल के  
 स्वाधीन होकर लय हो जाता है और दिनके आने पर प्रकट हो जाता है । १९ ।

breath in his head, firm in yoga, and silence thinks of the one-syllabled  
 Om, the Bramha, quits this mortal frame, calling upon me, goes  
 to the Supreme State 13 To the yogi who thinks constantly of me  
 with his mind undiverted by any other object, I will at all times be  
 easily found 14 By attaining me those elevated souls, are no more  
 born in the finite mansion of pain and sorrow. 15 Know, O Arjuna  
 that all the regions between this and the abode of Bramha afford  
 but a transient residence, but he who finds me, returns not again,  
 to mortal birth 16 They who are acquainted with day and night  
 know that the day of Bramha is a thousand Yugas, and that  
 his night extends for a thousand more On the coming of that  
 day, all things proceed from invisibility to visibility, so, on  
 the approach of night they disappear and become invisible  
 18 The universe, is repeatedly dissolved and reproduced

॥ स सर्वेषु भूतेषु नश्यत्तु न दिनमयति ॥ २० ॥ अन्यत्तोक्षर इत्युक्ततनाह परमा गतिम् । य प्राप्य न निवर्त्तन्ते तद्धाम परम मम ॥ २१ ॥ पुरुष स पर पार्थ भक्त्यालभ्य रत्ननयया । यस्यात्स्थाने भूतानि येन सर्वमिदतमम् ॥ २२ ॥ यत्र काले वनावृत्तिमावाप्त श्रेययोगिनः । प्रयातावाप्ति त कारो वक्ष्यामि भरतपथ ॥ २३ ॥ अग्निज्योतिरह शुक्ल पण्मासा उत्तरायणम् । तत्र प्रयाता गच्छन्त ब्रह्म ब्रह्मचिदो जनाः ॥ २४ ॥ धूमो रात्रि स्तथा कृष्णः पण्मासा दक्षिणायनम् । तत्र चान्द्रमस ज्योतियोगिप्राप्य निवर्त्तते ॥ २५ ॥ शुक्लकृष्णगेत ह्येने जगत शाश्वतेमत । एकया यापनावृत्तिमन्ययावर्त्तते पुनः ॥ २६ ॥ नैले खती पार्थ जानन् योगी मुह्यति कश्चन । तस्मात् सर्वेषु कालेषु योगयुक्तो भव

उस अव्यक्त से अन्य सत्तावान् अरूप उपाधि रहित नित्य एकरूप जो सब संसार के नाशहोने पर नाशनी होता है वह गुप्त अविनाशी कहा जाता है जिसको कि पाकर फिर नहीं लौटकर आते हैं वही मेरी ब्रह्मज्योति है । २१ । हे अर्जुन अनन्य भक्ती से जो पाने के योग्य है वह शुद्ध ब्रह्मा है जिससे सब जीवमात्र ऐसे नियत हैं जैसे बीज में वृत्तिनियत होता है और जो जन्म में व्याप्त है । २२ । हे भरतर्षभ कर्मयोगी जिस समय शरीरको त्याग कर चले हुये अनाद्य और आवृत्तिको पाते हैं उस समयको वर्णन करता हूँ । २३ । अग्नि, ज्योति और दिन शुभलपक्ष और उत्तरायण इनके उदय प्रताप में ब्रह्मकी उपासना करनेवाले पुरुष शरीरको त्यागकर ब्रह्मलोक को पाते हैं । २४ । धूमरात्रि कृष्णपक्ष छः महीने दक्षिणायन इनचारों के उदय में योगी चान्द्रमस ज्योति को पाकर फिर लौट आता है । २५ । संसारकी यह शुक्ल और कृष्ण नामगति प्राचीन मानी गई है एकसे तो अनाद्यत्ति अर्थात् लौटकर न आना और दूसरी से आवृत्ति अर्थात् लौट आता है । २६ । हे अर्जुन इन दोनों

at the approach of night and day, 'y Divine order 19 That which upon the dissolution of all things else, is not destroyed, is superior and of another nature from that visibility, it is invisible and eternal 20 That invisible and incorruptible is called the Supreme Abode, they who reach it never more return to earth, that is my mansion 21 That Supreme Being is to be obtained by him who worships Him alone in whom all beings live and who pervades all 22 I will now speak to thee of that time in which departing the yogis return and that when they do not. 23 Those holy men who know Brahma, departing in fire, light, day time, the bright fortnight, the six months of the sun's northern course, go to him, but those who depart in smoke night, the dark fortnight and the six months of the southern path of the sun, ascend for a while into the regions of the moon and again return to mortal birth 25. Light and darkness are the world's everlasting paths, by the one he goes who returns not, by the other he who returns again 26 A Yogee, who is acquainted with these

जुन ॥ २७ ॥ वेदेषु यज्ञेषु तपःसु चैव दानेषु यत् पुण्यफलं प्रदिष्टम् । अत्येतितत् सर्वमिदं विदित्वा योगी परं स्थानमुपैति चाद्यम् ॥ २८ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ पर्वणितुद्वात्रिंशोऽध्यायः ॥ ३२ ॥

श्री भगवानुवाच ॥ इदन्तुते गुह्यतमं प्रवक्ष्याम्यनसूयवे । ज्ञानं विज्ञानसाहेतं पञ्ज्ञात्वा मोक्षयसेऽनुमात् ॥ १ ॥ राजविद्याराजगुह्यं पवित्रमिदमुत्तमम् । प्रत्यक्षाव गमं धर्म्यं सुसुखं कर्तुमध्ययम् ॥ २ ॥ अग्रद्वानाः पुरुषा धर्मस्यास्य परन्तप । अप्राप्य मां निवर्त्तन्ते मृत्युसंसारवर्त्मनि ॥ ३ ॥ मया ततमिदं सर्वं जगद्व्यक्तमूर्तिना ।

मार्गों को जानता हुआ कोई ज्ञान योगी नहीं भूलता है इस कारण हे अर्जुन सदैव योग में प्रवृत्त हो । २७। वेदों में यज्ञों में दानों में शास्त्रानुसार जो पुण्य फल कहा गया है उस सब पुण्यफलको योगी जल्लंगन करके इस विषयका ज्ञाता होकर ब्रह्मलोकको जाकर स्वयं सिद्ध श्रेष्ठस्थानका पाता है ॥ २८ ॥

अध्याय ॥ ९ ॥

श्रीभगवान् बोले कि मैं इस अत्यन्त गुप्त रखने के योग्य ज्ञान को अपने विज्ञानके द्वारा तुम्हें अनमूया रहित से वर्णन करता हूँ जिसके जानने से तू इस अशुभ संसारसे मुक्त होगा ! यह विद्याओंका और गुप्त देवताओं का राजा महा उत्तम पवित्र कर्त्ता अपरोक्ष ब्रह्मका प्राप्त करनेवाला धर्म में हितकारी अनुष्ठान करने में सुखरूप और अविनाशी है । २ । हे शत्रुओं के संतप्त करने वाले अर्जुन इस ज्ञानधर्म के अज्ञान रखनेवाले पुरुष मुझको अप्राप्त होकर जन्म मृत्युरूपी संसार मार्ग में घूमाकरते हैं । ३। मुक्तबुद्धि से परे सच्चिदानन्दरूप सगुण रूपधारी से

two paths of action, will never be deluded; wherefore, O Arjuna, be thou at all times employed in devotion. 27. The fruit of virtue pointed out in the Vedas to sacrifice, to mortifications and also to charity, the Yogee who knows this, shall surpass all, and shall obtain a supreme and prior place. 28.

## LECTURE IX

of the chief of secrets and Prince of sciences:

Krishna.—I will tell thee, who findest no fault, a most mysterious secret, accompanied by profound learning, which having studied thou shalt be delivered from misfortune. 1. It is a sovereign art, a sovereign mystery, sublime and immaculate; clear to the sight, virtuous, inexhaustible, and easy to be performed. 2. Those who are infidels to this faith, not finding me, return again into the mortal world. 3. This whole world is pervaded by me in my

मत्स्थानि सर्वभूतानि तच्चाहं तेष्ववस्थित । ४ ॥ न च मत्स्थानि भूतानि पश्यमे  
योगमैश्वरम् । भूतभृन्नृच भूतस्थो मात्माभूतमाचन ॥ ५ ॥ यथाकाशस्थितो नित्य  
वायु सर्वत्रगो महान् । तथा सर्वाणि भूतानि मत्स्थानानि तेषु पधारय । ६ ॥ सर्व  
भूतानि कोन्तेय प्रवृत्तिं यान्त मामिदम् । कल्पक्षये पुनस्तानि कल्पादौ विस्तृजा  
म्यहम् ॥ ७ ॥ प्रवृत्तिं स्वामवष्टभ्य विस्तृजामि पुनः पुन । भूतग्रामानिम कृत्स्न  
मवश प्रवृत्तेर्वशात् ॥ ८ ॥ न च मा तानि कर्माणि निबध्नन्ति धनञ्जय । उदासी  
नवदासीनमसक्त तेषु कर्मसु ॥ ९ ॥ मया दृश्यक्षेण प्रकृति सृयते सचराचरम् । हेतुना  
नेन कौन्तेय जगद्विपरिवर्त्तते ॥ १० ॥ अवजानन्ति मां मूढा मानुषीं तनुम धितम् ।

भिन्न परमात्मा से यह सब जगत् व्याप्त है मुझ परमात्मा में यह सब स्थावर जंगम  
जीव नियत है परन्तु मैं उनमें नियत नहीं हूँ । ४ । जीवमुझ एकाकी में नियत नहीं  
है जीवोंके साथमेरे योगको अथवा ईश्वरता संबन्ध रखनेवाले को देख कि मेरा  
परमानन्द रूप आत्मा अपने आनन्द से जीवों की दृष्टि करने वाला और धारण  
करनेवाला है परन्तु आप उनजीवों में नियत नहीं है । ५ । महान् वायु सर्वत्र वर्त्त-  
मान होकर आकाश में सदैव नियत है इसी प्रकार चैतन्यरूप सवप्राणी मुझमें नि-  
यत है ऐसा तू समझ । ६ । कल्पके अन्तमें सब जड़ चैतन्य शरीर मुझ मायोपहित  
ईश्वर की प्रकृति में प्रवेश करते हैं मैं कल्प के प्रारंभ में फिर उनको अनेकप्रकारके  
रूपों से उत्पन्न करता हूँ । ७ । अपनी प्रकृति के आश्रय में होकर मैं इस सम्पूर्ण देह  
समूहों को बारम्बार नानाप्रकारका बनाकर उत्पन्न करता हूँ वह देह समूह स्वभाव  
के आधीन होनेसे अवश है । ८ । हे अर्जुन वह कर्म मुझ को बंधनमें नहीं डाल  
सके हैं । ९ । हे अर्जुन मुझप्रत्यक्ष रूप के कारण से प्रकृति सज्जड़ चैतन्यों समेत  
जगत्को उत्पन्न करती है इसीकारण मे जगत् जन्मादे दशाश्रमों भ्रमना है । १० ।  
अज्ञानीलोग मेरेउच्चम तत्त्व पदार्थको न जानकर मुझ मनुष्य देहमें नियत होनेवालेको

invisible form. All things are dependent on me, but I am not de-  
pendent on them. 4 Behold my divine connection My creative  
spirit is the keeper of all things not the dependent. 5 Understand  
that all things rest in me, as the mighty are suspended in space pas-  
sages everywhere. 6 At the end of a Kalpa all things, O son of Kun-  
tee, return into my primordial source and at the beginning of an-  
other Kalpa, I create them all again 7 Resorting to my nature,  
I create, again and again, this assemblage of beings from the power  
of nature without power 8 These works confine not me, because I  
am like one who sits aloof uninterested in those works 9 By  
my supervision nature produces both the movable and the im-  
movable. It is from this O Arjuna, that universe revolves 10  
The foolish, being unacquainted with my supreme nature, as lord

परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम् ॥ ११ ॥ मोघाशा मोघदर्शनो मोघज्ञाना विचेतसः । राक्षसीगालुराश्चैव प्रकृतिं मोहिनीं श्रिता ॥ १२ ॥ महत्मानस्तुमा पापं देवो प्रकृतिगदिधना । मज्जत्यनन्यमेनसा ज्ञात्वा भूतदिग्भ्ययम् ॥ १३ ॥ सततं कीर्तयन्तो मां यत तश्च दृढव्रता । जगत्स्य-तश्चमाश्रय या नित्ययुक्ता उपासते १४ ॥ ज्ञानयत्नेन चाप्यन्य यजन्तो नामुपासते । एकत्वेन पृथक्त्वेन बहुधा विदधतो मुखम् १५ ॥ अहं कतुरहं यज्ञं स्वधाहमहमौषधम् । मन्त्राहमहमवाप्य महमग्निरहं व्रतम् ॥ १६ ॥ पिताहमस्यजगतो माता धाता पितामह । वेद्यं पवित्रं माँदारं मृत्सामं यजुरेदेव १७ ॥ गतिर्भर्ता प्रभु साक्षात् निवास शरणं सुहृत् । प्रभव प्रलय स्थान निधान वाज्रमन्य

अपमान करते हैं और मे जीवधारियोंका महेश्वर हूँ ॥ ११ ॥ मेरा अपमान करने से वह अज्ञानी निरर्थक आशा और निष्फल ज्ञानी विवेकसे रहित रान्तसी आसुरी चित्त अर्थात् रजोगुण तमोगुण प्रधान स्वभावों में आश्रय लेनेवाले हैं । १२ । परन्तु जो बड़े उदारचित्त देव स्वभाव सतोगुण में आश्रय लगानेवाले हैं वह पुरुष मुझको सब ममार का आदि अविनाशी जानकर एकाग्र चित्त मेरा भजन करने हैं । १३ । वह ज्ञानाचिष दृढव्रत जितन्त्री शम दम आदि में उपाय करनेवाले सदैव मुझी में बुद्धिसे तट्टाकार होकर मेरा कीर्तन करनेवाले नमस्कार पूर्वक बड़ी भक्ति से मेरी उपासना करते हैं । १४ । और कोई २ निर्द्विकल्प समाधिरूप ज्ञान यज्ञ करने से भी मुझको पूजतेहुए उपासना करने हैं कोई मुझको एकही जानकर और कोई मुझको अनेक रूपवाला मानकर उपासना करते हैं । १५ । कतुह मैंही यज्ञ हूँ मैंही स्वरा रूप पितरोंका अन्न हूँ मैंही औषधी हूँ और जिमके द्वारा दानादिक दियेजाते हैं वह मन्त्र भी मैंही हूँ मैंही हव्य मैंही अग्नि मैंही हवनकरनेकी क्रिया हूँ । १६ । मैंही जगत्का पिता माता धाता पितामह ज्ञेय और पवित्र करनेवाला तप इत्यादि हूँ मैंही अंकार और चारों वेद हूँ । १७ । मैंही गति हूँ, मैंही कर्म फल का देनेवाला,

of all things, despise me in this human form 11 Having evil, diabolic and deceitful nature they are of vain hope, of vain endeavours of vain wisdom and void of reason 12 But men of great minds trusting to divine natures discover that I am before all things and incorruptible and serve me with unwavering mind 13 Men of firm resolve come before me humbly bowing down, glorifying my name they are constantly employed in my service 14 Others worship me with the worship of wisdom and meditate on me as One and manifold in various shapes 15 I am the sacrifice, the worship, the spices the invocation, the swadha the butter, the fire and the victim 16 I am the father and the mother of this world the grandaure, and preserver I am the holy one worthy to be known, the mystic Om, the Riti the Sama and Yajur Vedas 17 I am the path, the comforter, the creator the

यम् ॥ १८ ॥ तपाम्यहमह वर्षविशृङ्खलाम्युत्सृजामिच । अमृतञ्चैव मृत्युय सदसञ्चाह  
मर्जुन ॥ १९ ॥ त्रैविद्या मा सोमपा पूतपापा यज्ञे रिष्ट्वा स्वर्गतिं प्रार्थयन्ते । ते पुण्य  
मासाद्य सुरेन्द्रलोक मश्नति विद्यान् द्विधि देव भोगात् ॥ २० ॥ ते न भुक्त्वा स्वर्गलो  
क विशाल क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति । एव त्रयीधर्ममनुत्पन्ना गतागत कामका  
मालभन्ते ॥ २१ ॥ अनन्याश्रितयन्तो मा ये जनाः पर्युपासते । तेषां निवामिष्ठकानां  
योगक्षेम षडाम्यहम् ॥ २२ ॥ येष्वन्य देवता भक्ता यजन्ते श्रद्धयान्विता । तेषामामे  
व कौन्तेय यजन्य विधि पूर्वकम् ॥ २३ ॥ अहं हि सर्वं यज्ञानां भोक्ताच प्रभुरेव च ।

पोषण करनेवाला, अन्तर्गामी साक्षी, निवासस्थानरूप प्रभु यजमान आदि  
रक्षक प्रतीकार रहित परोपकारी कर्म फल अर्पण करनेका स्थान संसार का वीन  
रूप आविनाशीहूँ । १८ । मैही सूर्य रूप होकर संसारका तपाताहूँ और अपनी  
किरणोंसे वर्षाको ग्रहणकरताहूँ और वर्षाऋतुमें अपनी किरणों सेही जलसरमाता  
हूँ, हे अर्जुन मैही जीवन मरण और साधु असाधु हूँ । १९ । ऋगृ यजु सामवेद  
रूप निपावाले यज्ञों में सोमपान करनेवाले निष्पाप पुरुष यज्ञों से मेरा पूजन  
कराहुए स्वर्गगतिको चाहते है वह पावित्रात्मा इन्द्रलोकमें जाकर स्वर्ग में देवताओं  
के दिव्य भोगोंको भोगते है । २० । उस दड़ेभारी स्वर्ग के भोगोंको भोगकर  
कर्म फल समाप्त होजाने पर वह फिर इसी मर्त्यलोक में आते है इस प्रकारसे  
वेदोक्त सफल कर्मों के द्वारा निषयों के चाहनेवाले पुरुष आवागमनको पाते है  
। २१ । जो पुरुष इस रीति से चिंतन करते है कि मैही भगवान् वामुदेव उपा-  
सना के योग्यहूँ दूसरा नहीं है ऐसी एकत्वताके द्वारा मेरी उपासना करते है उन  
सदैव योगकी उपासना करने वाले भक्तों के स्थान भोजनान्छादन की मैं आप  
रक्षा करताहूँ । २२ । और जो अन्य देवताओं के भक्त है और उनका पूजन  
करते है हे अर्जुन वह पुरुष भी बुद्धिके विपरीत मुझीको पूजते है । २३ । क्योंकि

witness the abode, the asylum and the friend I am the seat, of  
generation and dissolution, deposit and the inexhaustible seed. 18  
I give heat, I send and hold back rain, I am death and immortality,  
I am entity and nonentity. 19 The followers of the three Vedas,  
who drink Soma, being purified of their sins address me in sacri-  
fices, and petition for heaven. Those obtain the regions of Indra and  
feast upon celestial food and divine enjoyments. 20 When they  
have partaken of that spacious heaven, they sink again, merit  
exhausted in this mortal life. Thus those followers of the three Vedas,  
pursuers of desire, obtain a transient reward. 21. To those who  
thinking of no other, serve me, alone and are desirous of eternal  
union with me, I secure permanent union. 22 They also who  
serve other Gods with a firm belief, in an informal manner, wor-  
ship me. 23 I am the partaker of all sacrifices and the sole Lord.

यत्तु मामभि जानन्ति तत्त्वेनातश्च्यवन्ति ॥ २४ ॥ यांति देवव्रता देवान् पितॄन्प्राणि  
पितृव्रताः । भूतानि यांति भूतज्यायांतिमद्या जिगोऽपि माम् ॥ २५ ॥ पत्रं पुष्पं फलं तोयं  
यमे मे भक्ष्यमाश्रयच्छति । तद्दत्तं भक्ष्युपहत मग्न मि प्रयतात्मनः ॥ २६ ॥ यत् करोप यद्  
आसि यज्जुहोपि ददासि यत् । यत्तपस्यासि कौन्तेय तत् कुरुष्व मदर्पणम् ॥ २७ ॥  
शुभाशुभ फलै रेवं मोक्ष्य से कर्म बन्धनैः । संन्यासयोगशुक्तात् । विमुक्तो मामु पश्य  
सि ॥ २८ ॥ समोहं सर्वं भूतेषु न मे द्वेष्योस्ति न प्रियः । ये भजन्ति तु मां भक्त्या मायि  
ते तेषु चाप्यहम् ॥ २९ ॥ अपि चेत् सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक् । साधुरेव स

मैंहीं सब देवताओं के रूप से सब यज्ञों का भोक्ता फल का देनेवाला प्रभु हूँ परन्तु  
मुझको मुख्यता के साथ अच्छी रीति से नहीं जानते हैं इस हेतुसे वह फिर गिरते  
हैं । २४ । देवताओं के उपासक देवताओं को और पितरों के उपासक पितरों  
को पाते हैं और भूतों के उपासक भूतों को प्राप्त होते हैं और एक भविनाशी के  
पूजनेवाले मुझको पाते हैं । २५ । जो भक्तिपूर्वक पत्र फूल फल और जलभी  
मुझको देता है उस शुद्ध अन्तःकरण के दिये हुए को मैं ग्रहण करता हूँ । २६ ।  
इस कारण जो कुछ काम करे उसको मेरे अर्पण कर जो कुछ खाता है या हवन  
करता है वा दान करता है वा तप करता है हे अर्जुन उसको मेरेही अर्पण  
करे । २७ । इस प्रकार से शुभाशुभ कर्म फलों के बंधनों से छूटेगा उसकर्म  
फल के त्यागरूप संन्यास योगसे सावधान चित्त कर्म बंधनों से अत्यन्त छुट्टा  
हुआ वह पुरुष मुझपरमात्माको पावेगा । २८ । मैं सबजीवों में बराबर हूँ न मेरा  
कोई मित्र है न शत्रु है परन्तु जो भक्ती के साथ मुझको भजते हैं वह मुझमें हैं  
और मैं उनमें हूँ जो अत्यन्त दुराचारी भी है और मेरे विवाय दूसरे में मनका नहीं  
लगाने वाला है और मुझको भजता है उसको साधु समझना चाहिये क्योंकि

But because they know not my nature, they fall. 24. Those who worship the Devas go to the Devas, the worshippers of the Spirits go to the Spirits; the servants of the Bhutas go to the Bhutas, but my worshippers come to me. 25. I accept and enjoy the offerings of the humble soul, who in his devotion presents leaves, flowers, fruit, water to me. 26. Whatever thou doest, O Arjuna; whatever thou eatest, whatever thou sacrificest, whatever thou givest, whatever thou doest of tapas, do it as an offering to me. 27. Thou shalt thus be free from good and evil fruits and the bonds of works. Thy mind being joined in the practice of a Sanyasce, thou shalt come unto me. 28. I am the same to all beings: there is none hateful to me nor dear. They who serve me with adoration, I am in them, and they in me. 29. If one whose ways are ever so evil, serves me alone, he is esteemed as virtuous; for he is going on the



मन्तव्यः सन्त्यग्यवसितो हिंस ॥ ३० ॥ क्षिप्रं भवति धर्मात्मा शब्दच्छान्तिं निगच्छति । कौन्तेय प्रतिजानीहि नमो भक्तः प्रणश्यति ॥ ३१ ॥ मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य योपस्थं पापयोनय । क्षियां वैश्यास्तथाशूद्रस्तेपि यांत परांगतिम् ॥ ३२ ॥ किं पुनर्ब्राह्मणाः पुण्या भक्ता राजर्षयस्तथा । अनित्यमसुखं लोकं धिमप्राप्य भजस्व माम् ॥ ३३ ॥ मन्मता भव भद्रको मया जीर्णो नमस्कृतः । मामे वक्ष्यसि युक्त्वैव मात्मानं मत्परायणः इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि श्रीमद्भगवद्गीता सूरराज विद्याराज गुह्ययोगो नाम नवयोऽध्यायः ॥ ९ ॥ पर्वणितुत्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३३ ॥

श्री भगवानुवाच ॥ भूय एव महाबाहो नृणु मे परम वचः । यत्तेहं प्रीयमाणाय पद्व्यामि हितकाश्यया ॥ १ ॥ नम विदुः सुरगणाः प्रभवं न महर्षयः । अहमादिहि देवा

वह दृढ़ निश्चय करने वाला है । ३० । वह पुरुष शीघ्र ही धर्मात्मा होता है और सदैव मोक्ष रूपगति को पाता है हे अर्जुन तू मेरी आज्ञासे प्रण कर के इस बात को दृढ़जानले कि मेरे भक्तका कभी नाश नहीं होता । ३१ । हे तात यह बात प्रकट है कि जो स्त्री वैश्य शूद्र भी पापात्मा होयें वह भी मेरी आज्ञा को लेकर मोक्ष रूप परमगतिको पाते हैं । ३२ । तो क्या पवित्र ब्राह्मण और राजर्षिलोग मेरे भक्त होकर मोक्षरूप परम गतिको नहीं पायेंगे हे अर्जुन इसनाशवान् सुखसे रहित लोकका पाकर तू मुझ को भज । ३३ । अर्थात् मुझी में मनको लगानेवाला हो मेरा भक्त हो और मरेही निमित्त यज्ञ करनेवाला हो मुझी को नमस्कार इत्यादि रीतिसे योग का करके मुझी उत्पत्ति के स्थानमें भक्ति रखने वाला मुझजगदात्मा परमात्मा मेही लय हागा ॥ ३४ ॥

अध्याय ॥ १० ॥

श्रीभगवान् बोले हे महाबाहु तू फिर मेरे इस उत्तम वचन को सुन जो तेरे भलाईके लिये तुझप्रीति मान से कहताहूँ । १ । कि देवताओंने और महर्षियों ने

right way, he soon becomes of a virtuous spirit, and obtains eternal happiness. Recollect, O son of Kunti, that my devotees never perishes. 31. Those even who may be of the womb of sin, women, Vnsyas, or Sudias, shall go on the supreme journey by trusting me 32. How much more holy and devoted Brahmans, and Rajarshis. Consider this world as a finite and joyless place, and worship me. 33. Fix thy mind on me, be my beloved, my adorer, and bow down before me Unite the soul to me, make me thy asylum and thou shalt come to me. 34.

## LECTURE X

Of divine nature

Krishna.—Hear again, O valliant youth, my supreme words which, for thy good, I will speak to thee, who art beloved. 1. Nei-

नां महर्षीणाञ्च सर्वशः ॥ २ ॥ यो मामजगन्ना द्विधं वेत्ति लोकमहेश्वरम् । जगन्मूढ स  
मर्थेषु सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ ३ ॥ बुद्धिस्तान् ममस्मोह क्षमा सत्य दम दाम । सुप्त  
दुःख भयो भावो भयक्षामय मेवच ॥ ४ ॥ आर्द्रसासमता तुष्टिस्तपोदान वशोऽयशः ।  
भवन्ति भावा मूढानां मत्त एव पृथग्विधाः ॥ ५ ॥ महर्षयः सप्त पूर्वं च वारो मनवन्त  
था । मद्भावामानत्वाज्जाता येषां लोक इमा प्रजा ॥ ६ ॥ एतां विमुक्तं योगज्ञ मम यो  
वेत्ति तत्पतः । सोऽविवक्ष्येन योगेन ज्य ते नान्न सशयः ॥ ७ ॥ नह सर्वस्य प्रभवो  
मत्तः सर्वं प्रवर्त्तते । इति मत्वाभजन्ते मां युषाभ्यां समन्विता ॥ ८ ॥ मच्चित्तमद्भु  
ताश्रया बोधयन्त परस्परम् । कथयतश्च मां नि य तुष्यन्ति च रमन्ति च ॥ ९ ॥ तेषां च

भी मेरे ऐश्वर्य को नहीं जानाहै इसकारणसे कि मैं मम देवता और महर्षियोंमे भी  
प्रथम हूँ जो ज्ञानी है बहुभुक्त अनादि रूप अजन्ता और सब लोकों के स्वामी को  
जानता है और वही मरने वालों में सब पापों में मुक्त होताहै । २ । बुद्धि, ज्ञान,  
असम्मोह, क्षमा, सत्य, दम, दाम, सुख, दुःख, उत्पत्ति, मृत्यु, भय, निर्भयता, आर्द्र  
सा, समता, सन्तोष, तप, दान, यज्ञ भयश्च यह जीवधारियों के बीसोंभावनाना  
प्रकारोंके द्वारा मुझसे उत्पन्न होतेहैं । ३ । सब सृष्टिमें प्रथम भृगु मरीच्यादि  
महर्षि और सनकादिक ऋषि वा चौदह मनु मुझ हिरण्यगर्भ रूपके मनसे उत्पन्न  
हुए हैं जिनसे कि यहसब प्रजा और लोक उत्पन्नहुए है । ४ । जो वत्तमाग मेरी  
विभूति और योग को मूल समेत जानते हैं वह निर्विकल्प योग समाधि के द्वारा  
अचलहोकर निस्संदेह तदाकार होता है । ५ । मैं सब संसार को उत्पत्तिका कतरग  
हूँ बुद्धि आदि के द्वारा जो कुछ कर्म होता है वह मुझसेही संबंध रखनेवाला होता  
है ऐसा मानकर ज्ञानीलोग भक्तिसे मुझको भजते हैं । ६ । जिनके मनमें मैंही वर्त्त-  
मान हूँ और जिनकी इन्द्रियां भी मुझी में मग्न है वह परस्पर में श्रुतियों और  
शुक्तियों के द्वारा मुझको प्रकट करते हैं और सदैव मुझी को रक्षते हुए वृत्तीको

than the host of Suras, nor the Maharshis, know of my greatness because I am before all the Devas and Maharshis. 2 Whoso free from folly, knows me unborn, beginningless and the mighty ruler of the universe, is delivered from all sins. 3 Reason, knowledge, non illusion, patience, truth humility, meekness, pleasure and pain, birth and death, fear and courage, harmlessness, equanimity, austerity, charity, zeal, renown and infamy, all distinctly, come from me. 5 In former days the seven Maharshis and the four Manus were born of my mind, of them are descended all the inhabitants of the earth. 6 He who knows thus my power and my connection, is without doubt endued with an unerring yog. 7 I am the creator of all things, and all things proceed from me. The wise believe this and worship me. 8 Their thoughts and life are in me, they rejoice amongst themselves, and delight in speaking of

तत पुक्तानां भजता प्रीयते पूर्वकम् । ददामि बुद्धियोगं त येन मानुषं याति ते ॥ १० ॥  
 तेषां मेयानु कर्मार्थं महमज्ञानजं तम । नाशयास्यात्मभावस्थो ज्ञानदीपेन भास्वता ॥ ११ ॥  
 अर्जुन उवाच ॥ परं ब्रह्म परं धाम पवित्रं परमं भवाम् । पुरुषं शाश्वतं दिव्यमादरेण  
 भजं विभुम् ॥ १२ ॥ आहस्वामृषयः सर्वे देवर्षिर्गौरवस्तथा । असितो देवलो  
 व्यास स्वयम्बुधं प्रचोपिम ॥ १३ ॥ सर्वं मेतद्वत् मन्ये यन्मां वदसि केशव ।  
 न हि ते भगवन् व्यक्तिं विदुर्देवा न दानवा ॥ १४ ॥ स्वयमेवात्मनात्मानं वेत्थत्वं  
 पुरुषोत्तम । भूतमाघनं भूतेश द्रवदेव जगत्पते ॥ १५ ॥ वस्तुमहर्ष्यशेषेणरि-  
 व्याह्वातविभूतयः । यामिर्विभूतिभिर्लोकानिमास्व व्याप्यातिष्ठसि ॥ १६ ॥ कथं  
 विद्यामहं योगिंस्त्वा सदा परिचिन्तयन् । केपु केपुश्च भावेषु चिन्त्योसि भगवन्

पाकर मुझी में रमण करतेहैं । ९ । उन सदैव उत्साह युक्त प्रीतिसे भजन करनेवाले  
 महात्माओंको मैं उस बुद्धि योग को देताहूँ जिसके द्वारा वह मुझको पातेहैं । १० ।  
 उनके ऊपर दया दृष्टि करने के लिये मैं अन्तःकरणवर्त्ती होकर प्रकाशरूप ज्ञान  
 दीपकके द्वारा उनके अज्ञानसे उत्पन्न हुए मोहरूपी अंधकार को दूर करताहूँ । ११ ।  
 अर्जुन बोले हे परब्रह्म परमज्योति पवित्रात्मा शरीररूप पुरियों में वर्त्तमान हृदया  
 काश में प्रकट होनेवाले सबके आदिरूप व्यापक अजन्मा श्रीकृष्णजी, आपि देव-  
 र्षि नारद असित देवल व्यासजी इनसब ऋषियों ने तुमको उत्तम २ गुणों से संयुक्त  
 किया और आप अपने श्रीमुख से भी वर्णन करतेहो । १२ । सो हे केशवजी आपके  
 ऐश्वर्य की देवता और दानवों में से कोई नहीं जानता है इस बातको मैं सत्यही  
 मानता हूँ । १३ । हे जीवों के उत्पन्न करनेवाले ईश्वर, देवदेव जगत्पति, पुरुषोत्तम  
 तुम अपने को आपही जानतेहो । १४ । हे भगवन् आप अपनी उन दिव्य विभू-  
 तियों को मूल समेत वर्णन कीजिये जिनसे कि आप इन लोकों को व्याप्तकरके  
 निपट रहते हो । १५ । हे पंडितेश्वर्य के स्वामी मैं अपने धर्म चक्षु से ध्यान करता

me. They are content and joyful 9 I gladly inspire those who are,  
 constantly thirsty for union, with that use of reason, by which they  
 come to me. 10 In compassion I dissipate the darkness of their ig-  
 norance with the light of wisdom 11 Arjuna—All the Rishis, the  
 Devasishis, Narada, Asit, Deval, Vyes ( etc ) call thee the supreme  
 Bramha, the supreme abode, the most holy, the eternal Purusha,  
 the Divine, the First Lord, the birthless, the omnipresent And  
 thou thyself hast told me so 12 I firmly believe, O Keshava, all  
 thou tellest me. Neither the Devas nor the Danavas under-  
 stand, O Lord, thy manifestation 14 Thou alone knowest thyself,  
 O Purushottam! Source of Leings, God of gods, Lord of Leings,  
 Ruler of the world! 15 Thou alone art able to tell Thine own  
 glories by which thou pervidest and dwellest in this world. 16  
 How can I, thy votary, by constant meditation know thee? In

मया ॥ १७ ॥ विस्तरेणात्मनो योगं विभूतिव जनाह्नय । भूयः कथय तृतिर्हि  
 धृष्यतो नास्ति मेऽमृतम् ॥ १८ ॥ श्रीभगवानुवाच । हन्त ते कथयिष्यामि । द्रव्या  
 ह्यात्मविभूतयः । प्राधान्यतः कुरुश्रेष्ठ नास्त्यन्तो विस्तरस्य मे ॥ १९ ॥ अहमात्मा  
 गुडाकेश सर्वभूताशयस्थितः । अहमादिश्च मध्यञ्च भूतानामन्त एवच ॥ २० ॥  
 आदित्यानामहं विष्णुर्ज्योतिषां रविर्जुमान् । मरीचिर्माहतामसि नक्षत्राणामहं  
 शशी ॥ २१ ॥ वेदानां सामवेदोऽस्मि देवानामसि वासवः । इन्द्रियाणां मनश्चात्मि  
 भूतानामसि चेतना ॥ २२ ॥ रुद्राणां शङ्करश्चास्मि भित्तेशो यत्तरत्नसाम् । वसूनां  
 पायकश्चास्मि मेघः शिखरिणामहम् ॥ २३ ॥ पुरोधसाञ्च सूर्यं मां विद्धि पार्थ

शुभा आपको कैसे जानूं आप कौन २ से भावों में मेरे देखने के योग्य हैं । १७ ।  
 हे जनार्दन आप अपने विश्वरूप योग और ध्यान के योग्य विभूतियों को फिर  
 विस्तार युक्त वर्णन कीजिये क्योंकि इन मोक्ष साधन युक्त अमृत रूप वचनोंसे मेरी  
 तृप्ति नहीं होती है । १८ । श्रीभगवान् बोलें कि हे अर्जुन बहुत श्रेष्ठ है मैं अपनी  
 उत्तम दिव्य विभूतियों को तुम्हसे कहता हूं मेरी विभूतियों के विस्तार का अन्तनहीं  
 है । १९ । हे गुडाकेश मैं व्यापक आत्मा सब जीवों का आश्रय रूप अंचल हूं मैं  
 सबका आदि मध्य अन्त हूं । २० । मैं अद्विती के पुत्रों में विष्णु हूं, ज्योतिरूपों  
 में सूर्य मैं हूं, मरुद्गणों में मरीचि मैं हूं, नक्षत्र और तारागणों में चन्द्रमा मैं हूं  
 । २१ । मनोहर गानयुक्त वेदों में सामवेद मैं हूं, देवताओं में इन्द्र मैं हूं, इन्द्रियों  
 में मन मैं हूं, जीवों की बुद्धिकी वृत्ति मैं हूं, । २२ । ग्यारह रुद्रों में शंकर मैं हूं,  
 यत्न राक्षसों में घनाचप कुंभ मैं हूं, अष्ट वज्रों में अग्नि मैं हूं, शिखर और  
 रत्न धारी पर्वतों में सुमेरु नाम उत्तम पर्वत मैं हूं, । २३ । और हे अर्जुन पुरो-

what way art thou to be found ? 17. Tell me in full, Janardan, thy connection, and thy power; for I am never satisfied with drinking of the living water of thy words. 18. Krishna: Blessings be upon thee! I will tell thee my sovereignty, as the extent of my nature is infinite. 19. I am seated in the bodies of all beings. I am the beginning, the middle, and the end of all things. 20. Of the Adityas I am Vishnu, of the luminous orbs, the radiant sun; I am Marichi amongst the Maruts and of the stars I am the moon. 21. Of the Vedas I am the Sam, and I am Vasava amongst the Devas. Amongst the faculties I am the mind, and amongst animals I am life. 22. I am Shankara amongst the Rudras, and Vitesha amongst the Yakshas and the Rakshasas. I am Pavaka amongst the Vasus and Meru amongst the mountains. 23. Amongst teachers know that I am their chief Brihaspati

बृहस्पतिम् । सेनानीनामह स्कन्द सरसामस्मि सागर ॥ २४ ॥ महर्षीणां  
भृगुरह गिरामस्थेकमक्षरम् । यज्ञाना जपयज्ञोस्मि स्वाचराणा हिमालय ॥ २५ ॥  
अथर्व सध्वृक्षाणा देवर्षीणाञ्च नारद । गन्धर्वाणां चित्ररथ सिद्धानाकपि  
लोमुनिः ॥ २६ ॥ उच्चध्रुवसमश्वाना विद्धिमाममृतोद्भवम् । ऐरावत गजेन्द्राणां  
नराणाञ्च नराधपम् ॥ २७ ॥ आयुधानामह वज्रं धेनून् मामि कामधुक् । प्रजन  
श्चास्मि कन्दर्प सर्पाणामस्मि वासुकि ॥ २८ ॥ अनन्तश्चास्मि नागाना वरुणो  
यादसामहम् । पितृणामर्यमा चास्मि यम सयमतमहम् ॥ २९ ॥ प्रह्लादश्चा  
सिद्दैत्यानाकालः कलपतामहम् । मृगाणाञ्च मृगेन्द्रोह वैनतेयश्च पाक्षिणाम् ॥ ३० ॥  
पवन, पयतामस्मि रामः शङ्खभृतामहम् । शृपाणा मरुद्वास्मि सोतसामस्मिजा

धसों में बृहस्पति मैं हूँ, सेनापातियों में स्कन्द मैं हूँ, नदी आदि जलाशयों में समुद्र  
मैं हूँ, १२४। महर्षियों में भृगु मैं हूँ, वाणियों में ओंकार अक्षर मैं हूँ, यज्ञों में जपयज्ञ मैं  
हूँ, नियत स्थानों में हिमालय पर्वत मैं हूँ, १२५। सब वृक्षों में पीपल का वृक्ष  
मैं हूँ, देवर्षियों में नारद ऋषि मैं हूँ, गन्धर्वों में चित्ररथ गन्धर्व मैं हूँ, सिद्धों में कपिल  
मुनि मैं हूँ १२६। घोड़ों में उच्चैश्चर्या मैं हूँ, गजेन्द्रों में ऐरावत नाम हाथी मैं हूँ, मनुष्यों में  
राजा मैं हूँ, १२७। आयुधों में वज्र मैं हूँ, गौओं में कामधेनु मैं हूँ सन्ततिका उत्पन्नकर  
ने वाला कामदेव मैं हूँ सर्पों में वासुकी सर्प मैं हूँ, १२८। नागों में अनन्त शेषनाग  
मैं हूँ जलजीवों में और जलके स्वामियों में वरुण मैं हूँ, पितृगणों में अर्यमा पितर  
मैं हूँ दंड देनेवालों में यम मैं हूँ, १२९। दैत्यों में प्रह्लाद मैं हूँ, संरक्षा करनेवालों में  
काल मैं हूँ, मृगों में मृगेन्द्र अर्थात् सिंह मैं हूँ, पक्षियों में गरुड़ मैं हूँ १३०। पवित्र करने

amongst various I am Skanda and amongst floods I am the  
ocean. 24 I am Bhrgu amongst the Maharshis and I am the  
monosyllable (Om) amongst words I am amongst worships  
the *Jaya* (silent to ship) and amongst immovables *Himalaya*  
25 Of all the trees I am the *Asvattha*, and of all the  
*Devarshis* I am *Narada* I am *Chitravata* amongst *Gandharvas*  
and the *Muni* *Kapila* amongst the saints. 26 Know that amongst  
horses I am *Uchchishrava* the nectar born, amongst elephants  
I am *Airavata*, and the sovereign amongst men 27 Amongst  
weapons I am *Vajra* and amongst cattle, *Kamadhuk* I am the  
prolific *Kandarpa* (the God of love), and amongst serpents I  
am *Vasuki* 23 I am *Ananta* amongst the *Nagas*, and *Varam* a  
amongst the inhabitants of the waters. I am *Aryama* amongst the  
Pitris, and *Yama* among all those who rule. 29 Amongst the  
Duties I am *Prahalada*, and *Kala* (time) amongst computations.  
Amongst beasts I am the lion, and *Vamdevya* amongst the birds 30

हन्त्री ॥ ३१ ॥ सर्गाणामादिरन्तश्च मध्यञ्चैवाहमञ्जुन । अथाऽमाविद्या विद्यानां  
 बन्धः प्रवृत्तामहम् ॥ ३२ ॥ अक्षराणामकारोऽस्मि ब्रह्म साक्षात्कृत्य च । ब्रह्मे  
 वाक्ष्यः काला घाताहं विश्वतोमुखा ॥ ३३ ॥ मृत्युं सर्वहरश्चाहमुद्रवश्च भवि-  
 ष्यतम् । कीर्तिः श्रोत्राहं च नारीणां स्मृतिर्मेधा धृतिः क्षमा ॥ ३४ ॥ बृहत्साम  
 तथा साक्षां गायत्री छन्दसामहम् । मासानां मार्गशीर्षोऽहमृतानां कुबुजाकरः ॥ ३५ ॥  
 पृथं छलयतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम् । ज्योतिर्मध्यवसायोऽस्मि सत्यसत्त्ववतामहम्  
 ॥ ३६ ॥ वृष्णीनां घासुदेवोऽस्मि पाण्डवानां घनश्रवः । मुनीनामप्यहं व्यासः कवी-  
 नामशुभा करिः ॥ ३७ ॥ दण्डो दमयतामस्मि नीतिरस्मि राजगीयताम् । मौनञ्चै

वाल्लोमें अथवा शशि गतिवाल्लो में वायु मैहं, शस्त्रधारियों में राम मैहं, मत्स्यादिकों  
 में मगर मैहं, नदियों में गंगा मैहं, ३१। हे अर्जुन संपूर्ण संसार का आदि मध्य  
 अन्त मैहं, विद्याओं में अथाऽमा विद्या मैहं, बितंडा इत्यादि में सिद्धान्त रूप मैहं  
 । ३२। सय अक्षरों में अकार अक्षर मैहं मिलेहुएशब्दों में ब्रह्म मैहं, मैं अविनाशी  
 कालहं, मैंही कर्म फलका देनेवालाहं, मैं विश्वतो मुख हूं । ३३। मैही सयका  
 मारनेवाला मृतहूं, प्राप्त होनेवाले कल्याणों में ऐश्वर्य की महत्त्वता और कीर्ति  
 मैहं, स्वभाव, वृद्धभाषण, मेधा, धैर्यता, सन्तोष मैहं, मामंदकी । ३४। ऋचाओंमें  
 बृहत् नाम ऋचा मैहं, छन्दोंमें गायत्री मैहं, महीनोंमें मार्गशीर्ष मैहं, ऋतुओंमें वसन्त  
 ऋतु मैहं । ३५। छन करने वालोंमें जुवा मैहं, तेजस्वियोंमें तेज मैहं, विजय मैहं,  
 निश्चय वा उपाय मैहं, सतोगुणी पुरुषों में सतोगुण मैहं । ३६। यादवों में वासु-  
 देव मैहं, पांडवों में अर्जुन मैहं, मुनियोंमें व्यासमुनि मैहं, कवियों में शुक कवि  
 मैहं । ३७। राजाओं में दण्ड रूप मैहं, विजयाभिलाषी पुरुषों में नीतिरूप-मैहं

Amongst purifiers I am Pavana, and Rama amongst those who  
 carry arms. Amongst fishes I am the Makar, and amongst rivers I  
 am Ganga. 31. Of creation I am the beginning, the middle, and the  
 end. Of sciences I am the *Atihyatma Vidya*, and of speakers I am  
 the argument. 32. Amongst letters I am the letter a, and of all  
 compound words I am the Dvandva. I am also never-fail time; the  
 preserver, whose face is turned on all sides. 33. I am all-grasping  
 death; and the origin of all to come. Amongst females I am fame,  
 fortune, eloquence, memory, understanding, fortitude, patience. 34  
 Amongst harmonious measures I am the Gayotree, and amongst  
 Sams I am the *Brhat Sama*. Amongst the months I am the month  
 Margashirsha, and amongst seasons Kusumakara, (spring) 35.  
 Amongst frauds I am gambling; and of all things glorious I am the  
 glory. I am victory, I am industry, and I am the essence of all  
 qualities. 36. Of the *Trishnis* I am Vasudeva and amongst the  
 Pandavas, Dhananjaya. I am Vyasa amongst the Munis, and  
 amongst the sages I am Ushana. 37. Amongst rulers I am the rod, and

यास्मि गुह्यानां ज्ञानं ज्ञानवतामहम् ॥ ३८ ॥ यच्चापि सर्वभूतानां बीजं तदहम-  
जुन । न तदस्ति चिना यत्स्थानमया भूतस्रावरम् ॥ ३९ ॥ नान्तोस्ति मम द्रव्या  
नां विभूतानां परन्तप । यद्यद्देशतः प्रोक्तो विभूतेर्विस्तरो मया ॥ ४० ॥ यद्यद्वि-  
मृतिमत्सत्त्वं श्रीमद्वर्जितमेव च । तत्तद्देवाद्यगच्छत्वं मम तेजोऽसम्भयम् ॥ ४१ ॥  
अथवा ब्रह्मैतनेन किं ज्ञातेन तवाजुन । दिष्टम्याहमिदं कृतस्त्रमेकांशेन स्थितोऽजगत् ॥ ४२ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि श्रीमद्भगवद्गीतासूपानि० विभूतियोगोनाम

दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ पर्वणितुचतुस्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३४ ॥

अर्जुन उवाच । मदनप्रहाय परमं गुह्यमभ्यात्मसंश्रितम् । यत्त्वयैकं वचस्तेन  
मोहोऽयं विगतो मम ॥ १ ॥ भवाप्ययोह भूतानां श्रुतौ विस्तरशो मया ।

गुप्त वस्तुओं में मौनता मैं हूँ, ज्ञानियों में ज्ञान मैं हूँ । ३८ । हे अर्जुन जो सब जीव  
धारियों का तेज है वह मैं हूँ, अर्थात् सबमें ही विभूति है । ३९ । हे शत्रुहन्ता अर्जुन  
मेरी दिव्य विभूतियों का अन्त नहीं है यह मैंने अपनी असंख्य विभूतियों का संक्षेप  
तुमसे वर्णन किया, । ४० । जो जो प्राणी ऐश्वर्यमान लक्ष्मीवान् शोभावान् और  
पराक्रम आदिमें भी अत्यन्त युक्त है उसउसको तुम मेरी चैतन्य शक्तिकी अग्निमें  
उत्पन्न हुआ जानो । ४१ । हे अर्जुन इसब्रह्मसे ज्ञानसे तुमको क्या प्रयोजन है मैं  
इस संपूर्ण जगत्को अपने एक अंशमें व्याप्त करके निपत हूँ । ४२ ।

अध्याय ११ ॥

अर्जुन बोले कि जो आपने भेरुपर अनुग्रह करने की दृष्टि से अत्यन्त गुप्तरूप और  
गुप्तरी करने योग्य आत्मज्ञान को अर्थात् आत्मा अनात्मा के विवेकरूप वचनको  
वर्णन किया उसके द्वारा यह मेरा अविवेकरूपी मोह अत्यन्त दूर हो गया । १ । इसके  
विशेष हे कमलदललोचन मैंने जीवोंकी उत्पत्ति नाश और आपका महा अविनाशी

amongst those who seek for conquest I am policy. Amongst the  
secrets I am silence, amongst the wise I am wisdom 38. I am, in  
like manner, O Arjuna, that which is the seed of all things; and there  
is nothing animate or inanimate that is without me. 39. My divine  
distinctions are without end, and the many which I have mentioned  
are by way of example. 40 And learn, O Arjuna, that every being  
which is worthy of distinction and pre eminence, is the produce of the  
portion of my glory 41. But what, O Arjuna hast thou to do with  
this manifold wisdom? I pervade this whole universe with a portion  
of myself 42.

## LECTURE XI

### Visvarup Samdarshan

Arjuna—This supreme mystery of Adhyatma which, out of  
loving kindness, thou hast disclosed to me, has dissipated my delusion.

1. I have heard from thee a full account of the creation and

त्वत्तः कमलपद्माक्ष महात्म्यमणि स्वाव्ययम् ॥ २ ॥ एवमेतद्यथा त्वमात्मानं परमे  
 श्वर । द्रष्टुमिच्छामि ते रूप मैश्वरं पुरुषोत्तम ॥ ३ ॥ इत्यसे यदितच्छब्दं मया  
 द्रष्टुमिति प्रभो । योगेश्वर ततो मे त्वं दर्शयात्मानमव्ययम् । ४ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥  
 पश्यमेवार्थं कृपाणि शनशोय सहस्रशः । नानाविधानि दिव्यानि नानावर्णाकृतानि च  
 ॥ ५ ॥ पद्मादित्यान् च सूनू रुद्रानश्विनौ मरुतस्तथा । चन्द्रवदृष्टपूर्वाणि पद्माश्र-  
 र्याणि आरत ॥ ६ ॥ इहैकस्थं जगत् कृतं पद्माद्य सच्चिदानन्दम् । ममदेहे  
 गुहाकेन्द्रा पञ्चाग्नय द्रष्टुमिच्छामि ॥ ७ ॥ न तु मां शक्यसे द्रष्टुमनेनैव स्वचक्षुषा ।  
 इदं दद्यामते चक्षुःपद्मं योगमैश्वरम् ॥ ८ ॥ सञ्जय उवाच । एवमुक्त्वा ततो राजन्  
 महा योगेश्वरो हरिः । दर्शयामास पार्थाय परमं रूपमैश्वरम् ॥ ९ ॥ अनेकवक्त्रनयन

महात्म्य भी आपक मुखारविन्दसे सुना रहा है ईश्वर जैसा आपने अपनेको कहा आप  
 पार्थ में बैठेही हैं परन्तु हे भगवन् आप के विराट् रूप देखनेकी मुझको बड़ी  
 अभिलाषा है । हे मधु योगेश्वर जो आप ऐसा समझे होय कि उस रूपको मैं देखने  
 योग्य हूँ तो आप उस अपने आवेनाशी आत्माको मुझे दिखाइये । ४ । श्रीभगवान्  
 बोले हे अर्जुन मेरे सैकड़ों हजारों दिव्यरूप जो नानामकारोंसे अनेकरंग रूप के हैं  
 उनको देखा । हे भरतवंशी उसीस्वरूपमें सूर्य वसु रुद्र दोनों अश्विनीकुमार वायु इसी  
 प्रकारकी अन्य बहुतसी अद्भुत बातोंको जोतूने प्रथमकभी नहीं देखी हैं, उसको भी देख,  
 हे गुहाकेन्द्रा अवयवों मेरे शरीरके एकअंशमें वर्तमान सब स्थावर जंगमसाहित  
 जगत्को और जो २ भूत भविष्य स्थूल सूक्ष्म देखना चाहता है उनको भी देख  
 । ७ । परन्तु तू इन नेत्रोंसे मेरे देखनेको समर्थ नहीं है तुझे दिव्यनेत्र देता हूँ इन  
 नेत्रों से ईश्वरता संघंधी मेरे योगको देख । ८ । संजय बोले कि हे राजा । धृतराष्ट्र  
 बड़े योगेश्वर हरिने इस प्रकारसे प्रवचन करनेवाले अर्जुनको अपने ऐश्वर्य संघंधी  
 उन दिव्य उत्तम रूपोंको दिखाया । ९ । जो अनेक मुख नेत्र और अद्भुत दर्शन

destruction of all things, and also of thy eternal greatness 2. As  
 thou hast described thyself, Parmeshwara ! I wish to see thy omni-  
 potent form. 3. If, Prabhu ! thou thinkest it may be seen by me,  
 show thyself to me, Yogeshwara. 4. Krishna.—Behold, O Arjuna,  
 my million forms divine, of various species, shapes and colours. 5.  
 Behold the Adityas, and the Vasus, the Rudras, the Aswins and  
 Maruts. Behold many wonders never seen before. 6. Behold, in this  
 my body, the whole world animate and inanimate, and all things  
 else thou hast a mind to see. 7. But as thou art unable to see me  
 with these thy eyes, I give thee a heavenly eye; See my sovereign  
 yog. 8. Sanjaya—The great Lord of yog, Hari, having, O Rajan,  
 thus spoken, showed to Arjuna his supreme sovereign form of many  
 a mouth and eye, many a wondrous sight; many a heavenly ornament;



मनेकद्वन्द्वदर्शनम् । अनेकदिव्याभरणं दिव्यानेकोद्यतांयुधम् ॥ १० ॥ दिव्यमा-  
ल्याभरणधरं । नन्द्यगन्धानुलेपनम् । सर्वाश्चर्यमयं देवमनन्त विश्वतोमुखम् ॥ ११ ॥  
दिवि सूर्यसहस्रस्य भवेद्युगपदुत्थिता । यदि भाः सदृशी सा स्याद्भाःस्तस्यम-  
हात्मनः ॥ १२ ॥ तत्रैकस्थं जगत् कृतस्त्वं प्रावभक्तमनेकधा । अपद्यदेव देवस्य  
शरीरे पाण्डवस्तदा ॥ १३ ॥ ततः स विश्वमाविष्टो हृष्टगोमा घनऽजयः । प्रणम्य  
शिःसा देवं कृताञ्जलिर्भाषत ॥ १४ ॥ अर्जुन उवाच । पश्यो मे देवास्तव देव  
देहं सर्वास्तथाभूतविशेषसंघान् । ब्रह्माण्ममिदं कमलासनस्थमृषींश्च सर्वानुरगांश्च  
दिव्यान् ॥ १५ ॥ अनेकबाहूद्वचक्रनेत्र पश्यामि त्वासर्वतान्तैरुपम् । गान्ते न  
मभ्यं न पुनस्तर्हि पश्यामि च विश्वेश्वर विश्वरूपम् ॥ १६ ॥ किरीटिनं गदितञ्च

ममेव बहुतसे दिव्यभरण वस्त्र और उत्तम शस्त्रों से अलंकृत मुगन्धित पुष्पमालाओं  
से शोभित तब औरको हजारों सूर्य के समान देदीप्पमान थे । १२ । तद्  
नन्तर अर्जुनने उस देवदेव वासुदेव श्रीकृष्णजी के उस शरीरके भीतर एक  
अंशमें नियत नानाप्रकारके रूपों समेत संपूर्ण जगत्को देखा । १३ । यह देखकर  
अर्जुन आश्चर्य युक्तहुआ और शरीरमें रोमांच खड़े होगये तब उसने हाथ जोड़  
कर उनको प्रणाम करके यह वचन कहा । १४ । कि हे प्रकाशमान आपके  
शरीरमें देवता और चारों प्रकार के सवजीवोंकी और कमलासनपर विराजमान  
ईश्वर ब्रह्मा जिकी और सबमृषि मुनि यक्ष राक्षस गन्धर्व किन्नर उरगराजों को  
भी देखताहूँ । १५ । हे विश्वरूप अखिलेश्वर आपको सब ओर अनेकरूप भुजा  
उद्गार मुरनेत्र कान नाकोंमें शोभित देखताहूँ फिर आपका आदिमध्य अन्तभी  
नहींदेखताहूँ । १६ । और आपको मुहुट गदा चक्र धारण किये तेज समूहोंसे कठिनता

many an upraised weapon; adorned with celestial robes and chaplets;  
anointed with heavenly unguents; all marvellous, brilliant, infinite  
and all faced. 11. The splendour of that mighty being resembled  
that of a thousand suns blazing out together in the sky. 12. The  
Pandava beheld within the body of the Deva of Devas, the whole  
universe divided forth into its vast variety. 13. He was overwhelm-  
ed with wonder, and every hair was raised on end. He bowed down  
his head before the Deva, and thus addressed him with joined hands:  
14. Arjuna.—I see, Lord! in thy form all the Devas, and every  
specific tribe of beings. I see *Brahma* sitting on his lotus throne; all  
the *Rishis* and heavenly *Uragas*. 15. I see thyself, on all sides of  
infinite shape, with countless arms, breasts, mouths, and eyes, but I  
can neither discover thy beginning, thy middle, nor again thy end,  
O universal Lord, of form infinite! 16. I see thee with a crown  
and armed with club and *Chakra*, a mass of glory, dazzling every-

क्रियते तेजोराशिं सर्वतोदीप्तिमन्तम् । पद्याम त्वां दुर्निरीक्ष्य समन्ताद्दीप्तानलां  
 शुक्तिममेयम् ॥ १७ ॥ त्वमक्षरं परमं वेदितव्यं त्वमस्य विश्वदय परं निधातम् ।  
 त्वगव्ययः शाश्वतधर्ममोक्षो सनातनस्त्वं पुरुषोत्तमो मे ॥ १८ ॥ जनादिमध्यान्त  
 मनन्तवीर्यमनन्तचातुःशशिसूर्यनेत्रम् । पश्यामि त्वां दीप्तहृताशुवक्त्रं स्वतेजसा विश्व  
 तमदं तपन्तम् ॥ १९ ॥ द्यावापृथिव्योऽग्निदमन्तरं हि व्याप्तं त्वय्येकेन । दशश्च सर्वाः ।  
 दृष्ट्वाद्भुतं रूपमुग्रं तवेदं ताकत्रय प्रव्यथितं महात्मन् ॥ २० ॥ अग्नीं हित्वाऽसुरसंघा  
 यिषन्ति केचिद् भीताः प्राञ्जलवो षृण्वन्ति । स्वस्तीत्युक्त्वा महर्षिः सिद्धसंघाः स्तुयन्ति  
 त्वां स्तुतिभिः पुष्कलाभिः ॥ २१ ॥ रुद्रादित्या वसवो यं च साध्या विश्वेऽश्विनौ  
 मरुतश्चोष्मणाश्च । गन्धर्वयक्षासुरसिद्धसंघा चीक्षन्ते त्वां । वसिन्मताश्चैव सर्वे ॥ २२ ॥

पूर्वक देखने के योग्य चारों ओरसे प्रकाशित अग्नि सूर्य के समान देदी  
 प्यमान अमयेय देखताहूँ । १७ । आप अविनाशी शुद्ध ब्रह्मदेवान्त सेही जानने  
 के योग्यहैं आपही इससंसारके कारण ब्रह्महो और माचीनधर्मों के रत्नकहो  
 तुम्हीं को सबने सनातन ब्रह्मपुरुष मानाहै । १८ । मैं आपका आदि मध्य अन्त  
 रहित महा पराक्रमी बहुत मुजाधारी चन्द्र सूर्य रूपनेत्रयुक्त प्रकाश मान अग्निरूप  
 मुख, अपने तेजसे इस विश्वका संतप्त करनेवाला देखताहूँ । १९ । हे महात्मा  
 स्वर्ग पृथ्वी और इन दोनों के मध्यवर्ती आकाश दिशा विदिशाओंकोभी मैं तुम्हीं  
 अकेले से व्याप्त देखताहूँ इस तेरेअद्भुत भयकारी रूपको देखकर तीनों लोक भयभीत  
 होते हैं । २० । सुर समूह आपकी रक्षामें आतेहैं आपकी कोई भयभीतहोकर स्तुति  
 करते हैं और महर्षि सिद्ध गणयोग कल्याण शब्दकहकर स्तोत्रादिकों से आपकी  
 स्तुति करते हैं । २१ । रुद्र, सूर्य, वसु, और साध्यविश्वेदेवा, दोनों अश्विनीकुमार  
 मरुत और उष्णभोजी पितरादे यक्षगन्धर्व अमुर सिद्धगण यह सब आश्चर्यित

where and on all sides dazing, the sight; shining with light immea-  
 surable like the ardent fire or glorious sun. 17. Thou art the  
 Supremo Being, incorruptible, worthy to be known! Thou art prime  
 supporter of the universal orb! Thou art the never-failing and  
 eternal guardian of religion! Thou art the Primal Puruṣa. 18. I  
 see thee, beginningless, middleless, and endless, of valour infinite; of  
 arms innumerable; the sun and moon thy eyes; thy mouth a flaming  
 fire, and the whole world shining with thy reflected glory! 19. The  
 space between the heaven and the earth in all directions is filled by  
 thee alone, the three regions of the universe, O mighty spirit! behold the wonders of thy awful countenance with troubled minds.  
 20. Of the celestial bands, some I see fly to thee for refuge; whilst  
 some, afraid, with joined hands sing forth thy praise. Maharshis,  
 holy bands, hail thee, and glorify thy name with adoring praises.  
 21. The Rudras, the Adityas, the Vasus, and those Sadhyas the

रूप महत्ते बहुवक्त्रनेत्रं महाबाहो बहुबाहुरुपादम् । बहुदर बहुदंष्ट्राकराल दृष्टालोका  
प्रव्यायतास्तथाहम् ॥ २३ ॥ नमः \*पृथं दीप्तमनेकवर्णं व्याप्ताननं दीप्तनिशालनेतम् ।  
दृष्ट्वा हित्वा प्रव्यथितान्तरात्मा धूर्तं न विदामि शमत्र विष्णो ॥ २४ ॥ दंष्ट्र करालानि  
च ते सुपानि दृष्ट्वैव कालानलसन्निभानि । दिशो न जानेन लभेच शर्म प्रसीद  
देवेश बगान्निवास ॥ २५ ॥ अमी चत्वा धृतराष्ट्रस्य पुत्रा सर्वे सहैवावनिपाल  
संघे भ्रामिन्मो द्रोणः सूतपुत्रस्तथासौ सहस्रमदीयैराप योधमुख्यैः ॥ २६ ॥ वक्राणि  
ते स्वामाणा विशन्ति दंष्ट्राकरालानि भयानकानि । केचिद्विलग्ना दशनन्तरेषु  
सन्ददयन्ते चूर्णितैरुत्तमाङ्गैः ॥ २७ ॥ यथा नदीना बहवोऽम्बुधेगाः समुद्रमेवा

होकर आपको देखते हैं । २२ । हे महाबाहु बहुभुज जंघा चरण पीठकराल  
दंष्ट्रायुक्त महारूपधारी आपके रूपको देखकर सबलोक पीड़ामान है और मैं भी  
पीड़ामान हूँ । २३ । हे सर्वव्यापी आपको आकाश में व्यापक प्रकाशमान अनेक  
वर्णों से शोभित, दिशःओंमें विस्तृत, प्रकाशमान नेत्रवाला देखकर अन्तःकरण मे  
अत्यन्तपीड़ामान होकरमुझे धैर्यता नहीं होती है । २४ । हे देवेश्वर कालाग्निके  
समान आपके मुख और कठिन दंष्ट्राओं को देखकर मारे भयके किसी दिशाको  
भी नहीं पहिचानता महा दुःखी हूँ, हे विश्वरूप प्रसन्नहोकर सुख दीजिये । २५ ।  
यहसब धृतराष्ट्र के दुर्योधनादि पुत्र सबसाथी राजाओं समेत आप के शरीरमें  
प्रवेश करते हैं और इसीप्रकार भीष्म द्रोणाचार्य मृतका पुत्र कर्णभी हमारे उचम  
योधाओं समेत अनेक वीरता करने वाले आप के मुखों में प्रवेश करते हैं जो मुख  
तीक्ष्ण दंष्ट्रा और भयानक रूपके हैं उनमें कोई तो दातों में चिपटे हुये ऐसे दिखाई  
देते हैं जिनके शिर चूर्ण होगये है । २७ । जैसे कि नदियोंके जलोके अनेक समूह

Viswas, the Aswins, the Maruts and the Ooshmapas; the Gandhar-  
vas and the Yakshas, asuras and Sidhas, all stand gazing on thee  
'and all alike amazed! The worlds, alike with me, are terrified to  
behold thy wondrous form gigantic, with many mouths and eyes,  
with many arms, and legs and breasts, with many bellies, and with  
rows of dreadful teeth! 23 As I see thee, touching the heavens,  
effulgent, of various hues, with widely-opened mouths, and bright  
expanded eyes, I am disturbed within me, my resolution fails me, O  
Vishnu! and I find no rest! 24 Having seen thy dreadful teeth,  
and gazed on thy countenance, emblem of Time's last fire, I know  
not where I am! I find no peace! Have mercy O God of gods!  
thou refuge of the universe! 25 The sons of Dhritarashtra, with  
all those rulers of the land, Bhishama, Drona, the son of Suta, and  
even the fronts of our army, seem to be precipitating themselves  
hastily into thy mouths having such frightful rows of teeth; whilst  
some appear to stick between thy teeth with their bodies sorely

भिमुक्ता द्रवन्ति । तथा तवामी नरलोकवीर्य विशन्ति घक्राप्यभिचिञ्चलन्ति ॥ २८ ॥ यथा प्रदीपं ज्वलनं पतङ्गा विशन्ति नाशाय समुद्रवेगाः । तथैव नाशाय विशन्ति लोकाश्च वापि चक्राणि समुद्रवेगाः ॥ २९ ॥ लोलह्रस्वे प्रसमानः समन्ताल्लोकान् समग्रान् घटनैर्ज्वलद्भिः । तेजो भिरापूर्णं जगत् समग्रं भासस्तघोघ्राः प्रतपन्ति विष्णो ॥ ३० ॥ आर्याहि मेको भवानुग्ररूपो नमोस्तुते देवघरप्रसीद । धित्वा तु मिच्छामि भवन्त मायं नहि प्रजानामि तवप्रवृत्तिम् ॥ ३१ ॥ श्री भगवानुवाच ॥ कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्प्रवृद्धो लोकान् समाहर्तुं मिहप्रवृत्तः । श्रद्धेने पितृवाननविष्यन्ति सर्वे येऽघश्चिन्ताः प्रत्यनीकेषु योधाः ॥ ३२ ॥ तस्मात्त्वमुचिष्ठयशो लभस्व जित्वा शत्रू

वेगसे समुद्रकी ओर दौड़ते हैं इसी प्रकार यह नरलोकके वीर पुरुष सब ओर से आप के अग्नि मुखों में प्रवेशकरते हैं । २८ । जैसे कि अत्यन्त शीघ्रगामी पतंग अपने नाशके लिये यड़ी प्रकाशमान अग्नियों में दौड़कर गिरते हैं इसीप्रकार बड़े वेगवाले लोक अपनेनाशके निमित्त आपके मुखोंमें प्रवेशकरते हैं । २९ । आप सबलोकों को अपने अग्निघुक्त मुखोंमें निगलतेहो हे विष्णु व्यापक आपका भयानक प्रकाश अपनेनेत्रोंसे सबसंसारको चारोंओर पूर्णकरके अत्यन्त संतप्तकरताहै । ३० । ऐसे भयानक रूपवाले आपकौन हैं यह मुझे समझाइये हे देव आपको नमस्कार है आप प्रसन्न हजिये मैं आपको सबका आदि कर्चा जानता हूं और आपकी चेष्टाओंको नहीं जानताहूं । ३१ । श्रीभगवान् बोले हे अर्जुन मैं लोकोंका नाश करने वाला महाकाल नाम परमेश्वर हूं इस युद्धमें लोगों के भक्षण करने को प्रवृत्त हूं जो योधा लोग कि शत्रु की सेना में नियत हैं वहतेरे सिवाय नहीं रहेंगे इसकारण तू युद्धमें खड़ा होकर यशका भागी हो और शत्रुओं को मार धन और राज्य से पूर्ण होकर वृद्धि युक्त राज्य को भोग हे सव्यसाची अर्जुन यह सब जो तू देख रहा है यह

mangled. 27. As the rapid streams of full flowing rivers roll on to meet the ocean's bed, so do these heroes of the human race rush on into thy flaming mouths. 28. As insects, with increasing speed, seek their own destruction in the flaming fire so do these people, with swelling fury, seek their own destruction. 29. Thou involvest and swallowest all the worlds within thy flaming mouths; whilst the whole world is filled with thy glory, as thy awful beams, O Vishnu, shine forth on all sides ! 30. Reverence be unto thee, thou most exalted ! Deign to make known to me who is this God of awful figure ! I am anxious to learn thy source, and ignorant of thy work. 31. Krishna — I am Time, the destroyer of world, come to destroy the world. Except thyself none of all these warriors in these hostile ranks, shall live. Wherefore, arise ! seek honor and renown ! defeat the foe, and enjoy the full-grown kingdom ! They are already, as it were, destroyed by me. Be thou

न भुङ्क्ष्वराज्यं समुद्धम् । मयैवैते निहताः पूर्वं मेव निमित्तमात्रं भव सध्यसाचिन् ३३  
द्रोणञ्च भीष्मञ्च जयद्रथञ्च कर्णं तथा न्यायानि योधवीरान् । मया हतास्त्वं जहि मा  
व्यधिष्ठा युष्मस्य जेतासि रणे सपत्नान् ॥ ३४ ॥ संजय उवाच ॥ एतच्छ्रुत्वावचनं  
केशवस्य कृताञ्जलिर्वैपमानः किरीटी । नमस्कृत्याभूय एवाह कृष्ण सगददं भीतभीतः  
प्रणम्य ॥ ३५ ॥ अर्जुन उवाच ॥ स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या जगत् प्रहृष्यत्यनुरत्येतत् ।  
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्तिसर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंघाः ॥ ३६ ॥ कस्माच्च ते न  
नमस्कृत्य महात्मन् गरीयसे ब्रह्मणोप्यादिकर्त्रे । जनन्त देवेश जगन्निवास त्वमहं सद  
सत् तत्परं यत् ॥ ३७ ॥ त्वमादि देव पुरुष, पुराणस्त्वमस्याविश्वस्य पर निधानम् ।  
वेत्तासिवेद्यच्च परम धाम त्यायाततं विश्वमनन्तरूप ॥ ३८ ॥ चायुर्धर्मोर्निर्घटणः शशां

प्रथमही मुझसे मारे गये हैं तू केवल इनके मारने में कारणही रूप होगा । ३३ ।  
तू मुझ से मारेहुये द्रोणाचार्य, भीष्म, जयद्रथ, कर्ण को और इसीप्रकार अन्य  
उत्तमवीरों को भी मारहाल दुखी मतहो युद्ध कर तू युद्ध में शत्रुओं को विजय  
करेगा । ३४ । संजय बोले कि हे धृतराष्ट्र मुकुटधारी अर्जुन केशवजीके इनवचनों  
को सुनकर कांपताहुआ हाथजोड़ अत्यन्त भयभीतहुआ और अत्यन्त झुककर  
नमस्कारपूर्वक फिर गद्गदकरतेसे श्रीकृष्णजीसे बोला । ३५ । हे हृषीकेश अन्त  
र्यामी तुम्हारा नामनेनेसे सबसंसार अत्यन्त प्रसन्नहोता है और प्रीतिकरता है और  
तुम्हारी कीर्ति होनेसे राक्षसलोग महाभयभीत होकर इधर उधरको भागते हैं और  
सर्वसिद्धलोगोंके समूह नमस्कार करते हैं । ३६ । हे महात्मा ब्रह्माजीके भी पितारूप  
आपको वह लोग क्यों नहीं नमस्कार करें क्योंकि हे अनन्त देवदेवर हे जगद के  
व्यक्ति स्थान अविनाशी कार्यकारणरूप आदि देव सर्व शरीरवर्ती पुराण पुरुष  
संसारके लय स्थान ज्ञानगम्य ज्योतिस्वरूप अनन्ततुम्ही से सब जगद व्याप्त है । ३८ ।

alone the immediate agent 33 Be not disturbed ! Kill Drona, Bhishma, Jayadratha, karan, and all the other heroes already killed by me. I fight and thou shalt defeat thy rivals in the field. 34 Sanjaya — When the trembling Arjuna heard this from Krishna, he saluted him with joined hands and addressed him in broken accents 35 Arjuna Hrishikesha ! the universe rejoices and revel at thy glory. The rakshasas are terrified and flee on all sides; whilst the hosts of siddhas salute thee 36 And wherefore should they not, O mighty Being ! bow down before thee, who, greater than Brahma, art the prime Generator ! eternal God of gods the world's mansion ! Thou art the incorruptible, the effect and the cause, distinct from all things transient ! Thou art before all gods, the ancient Purusha, and the supreme supporter of the universe ! Thou knowest all things, and art worthy to be known, the supreme mansion, and by thee, O infinite form ! the universe is filled. 38

फ प्रजापतिर्यथ प्रपितामहश्च । नमो नमस्तेस्तु सहस्रहृद्य पुनश्चभूयोपिनमोनमस्ते ॥ ३९ ॥ नम पुरस्तादर्थं पृष्ठदस्ते नमोस्तुते सर्वं पय सर्व । अनन्तधीर्षी मितविक्रम  
स्व सर्वं समामोषि ततोसि सर्व ॥ ४० ॥ सखेति मत्वा प्रसन्नं यदुक्तं हेहृण  
हे यादव हे सखेति । अज्ञानतामहिमानं तवेदं मया प्रसादात् प्रणयेनवापि ४१ ॥  
यच्चयासाधर्मसङ्गतोसि विहारशय्यासननोजनेषु । यकोष वाप्यन्युत तत्तममत्त  
तत् क्षामयेत्क्षामहमप्रमेयम् ॥ ४२ ॥ पितासि लोकस्य चराचरस्य त्वमस्यपूज्यश्च  
गुरुगरीयान् । नत्वत्समोऽस्त्यज्यधिकं कुतोऽन्यो लोकप्रयेयप्रतिनममाय ॥ ४३ ॥  
सस्मात् प्रणम्य प्रणिवाय काय प्रसादय त्वामहमीशमीड्यम् । एतेव पुत्रस्यस

आपही वायु, यम, अग्नि, वरुण, चन्द्रमा, प्रजापति, ब्रह्मादि देवतार्थों के पिताहो  
आपके अर्थ बारम्बार नमस्कार है हे सर्वरूप हे महापराक्रमी आप अतुल्यबलहो  
और अपनी ऐश्वर्यता से सब को व्याप्तकरते हो इस कारण तुम्हीं सर्वरूप होकर  
कर्मों के प्रारंभ और अन्त हो आप सब प्रकार से नमस्कार करने के योग्य है  
। ४० । आप की महिमाको न जानकर अज्ञान से वा प्रीति से मैंने अपना भाई  
और मित्र मानकर हे कृष्ण हे यादव हे मित्र इत्यादि शब्दों को जो रुझाई और  
विहार शय्या भोजन के समय अकेले में वा मित्रों के सम्मुख भी हास्य के निमित्त  
असह्यकारी जो वचन कहा है हे अविनाशी उन अपराधों को मैं आप से क्षमा  
कराना चाहता हूँ । ४२ । तुमइस स्थावर जंगम लोकके स्वामी पूजनीय और गुरुहो  
आपके समानअप्रमेय प्रभाववाला कोई नहीं है तो तीनोंलोकोंमें आपसेअधिक कहाँ  
से होगा । ४३ । इस हेतुमे मे आपको साष्टांग प्रणामकरके स्तुतिके योग्य आपको  
प्रसन्न करता हूँ जैसे कि पिता पुत्रकाअपराध और मित्र मित्रका अपराध और पति

Thou art Vayu, Agni, Varuna, the moon, Prajapati, and Prapita-  
maha. Reverence ! Reverence to thee a thousand times repeated !  
Again and again Reverence ! Reverence to thee ! Reverence be  
to thee before and behind ! Reverence to thee on all sides O all  
in all ! Infinite is thy power and thy glory ! Thou includedst  
all things, so thou art All things ! 40 Thinking thee friend, I  
habitually called thee Krishna, Yadava, Friend ! I was ignorant  
of thy greatness, because I was blinded by my affection and pre-  
sumption. 41 Thou hast, at times, also in sport been treated  
ill by me, in thy recreations, in thy bed, on thy chair, and at thy  
meals, in private and in public for which, O Being in conceivable !  
I humbly crave thy forgiveness. 42 Thou art the father of all  
things animate and inanimate, thou art the sage instructor of the  
whole, worthy to be adored ! There is none like to thee, nor  
superior in the three worlds. 43 Wherefore I bow down, and with  
my body prostrate upon the ground, crave thy mercy, adorable

येदस्यैव प्रियः प्रियायाहंसि देव सोऽदुम् ॥ ४४ ॥ अदृष्टपूर्वं दृष्टितोऽस्मि दृष्ट्वा  
भवेन च प्रवृत्तं मनो मे । तदेव मे दर्शय देव रूपं प्रसीद देवेश जगन्निवास ४५  
किरीटिनं गन्धिनं चक्रहस्तं मिच्छामि त्वां द्रष्टुमहं तथैव । तेनैव रूपेण चतुर्भुजेन  
सहस्रबाहो भवविश्वमूर्ते ॥ ४६ ॥ श्रीभगवानवाच ॥ मया प्रसन्नेन तवार्जुनेन रूपं  
परं दर्शितमात्मयोगात् । तेजोमयं विश्वमनन्तमाद्यं यन्मे त्वदन्येन न दृष्टपूर्वम् ॥ ४७ ॥  
न चेदप्लाध्य यन्नैर्न दानैर्न च क्रियाभिर्न तपोभिर्गमैः । एवं रूपं शक्यं अहं नृलोके द्रष्टुं  
त्वदन्येन कुरुप्रवीर ॥ ४८ ॥ मा ते व्यथा मा च विमूढभावो दृष्ट्वा रूपं शोभनी  
दृष्ट्वा मे दम् । व्यपेतभीः प्रीतमना युनस्त्वं तदेव मे रूपं मिदं प्रपश्य ॥ ४९ ॥

अपनी स्त्रीका अपराध क्षमाकरता है इसी प्रकार हे देवदेवेश्वर आप मेरे अपराधों को  
क्षमा करने के योग्य हैं । ४४। मैं पूर्व में नहीं देखे हूँ इस रूप को देखकर प्रसन्न हूँ परन्तु  
मेरा चित्त मारे भय के पीड़ा मान है हे परमेश्वर आप अपने उसी रूप को मुझे दिखाइये  
हे देवदेव जगत् के उत्पत्ति स्थान आप बारंवार प्रसन्न हो । ४५। हे सहस्रभुजधारी विश्वरूप  
मैं तुमको मुकुटगदा चक्रहाथों में धारण किये हुये दर्शन करना चाहता हूँ इस से आप  
अपने चतुर्भुजी रूप का दर्शन दीजिये । ४६। श्रीभगवानवाले हे अर्जुन मुझ प्रसन्न रूप ने  
अपनी सामर्थ से यह उत्तम चैतन्य तेजोमय आदि अन्तरहित विश्वरूप दर्शन  
तुम्हें दिखाया इस स्वरूप को तेरे सिवाय किसी दूसरे ने कभी न देखा था । ४७।  
हे कौरवों में बड़े धीर नरलोक में तेरे सिवाय इस रूप के देखने को वेद यह  
जप दान क्रिया तप व्रतादिकों से भी कोई दूसरा पुरुष योग्य नहीं है । ४८ ।  
मेरे इस प्रकार इस भयानक रूप को देखकर तुम्हें न पीड़ा होगी न कोई प्रकार का  
मोह होगा निर्भय और प्रसन्न चित्त होकर फिर उसी पूर्वरूप को देख । ४९ ।

Lord ! for thou shouldst bear with me, as father with the  
son as friend with friend, as lover with the beloved. 44.  
At the sight of what I never saw before, I am glad and terrified.  
Have mercy, then, O heavenly Lord ! O mansion of the universe !  
and show me thine other form 45 I wish to behold thee with  
diadem on thy head, and armed with club and Chakra; assume  
then, O God of a thousand arms, image of the universe ! thy four  
armed form. 46 Krishna,—Well pleased, O Arjuna, I have shewn  
thee, by my Divine power, this my supreme form, the universe,  
in all its glory, infinite and eternal which was never seen by any one  
except thyself. 47 For no one, O valliant Kuru ! in the three  
worlds, except thyself, can obtain such a sight of me; nor by the  
Vedas nor sacrifices, nor profound study, nor by charitable gifts,  
nor by deeds, nor by the most severe austerities. 48. Having  
seen my form, thus awful, be not disturbed, nor let thy faculties  
be confounded. Cast away fear and let thy mind rejoice, behold

समय उवाच ॥ इत्यर्जुनं वासुदेवस्तपोनत्वा स्वकं रूपं दर्शयामासभूयः । आश्वासयामास च भीतसेनं मृत्वा पुनः सौम्यवर्णमहात्मा ॥ ५० ॥ अर्जुन उवाच । दृष्ट्वेदं मानुषं रूपं तव सौम्य जनार्दन । इदानीमस्मि संवृत्तः सचेता प्रकृतिगमः ॥ ५१ ॥ श्रीभगवानुवाच । सुदुर्दर्शमिदं रूपं दृष्टवानासि यन्मम । देवाप्यस्य रूपस्य नित्यं दर्शनकाक्षिणः ॥ ५२ ॥ नाहं चेदेनं तपसा न दानेन न चेज्यया । शक्यं पद्मावधो द्रष्टुं दृष्टवानसि मां यथा ॥ ५३ ॥ भक्त्या त्वनन्यया शक्यमहं मेधाविधोर्जुन । स्नातुं द्रष्टुं तत्त्वेन प्रवेष्टुञ्च परन्तप ॥ ५४ ॥ माकर्महन् मत्परमो मद्भक्तः सद्ब्रह्मविजितः । तर्हि तः सर्वभूतेषु यः स मामेति पाण्डव ॥ ५५ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि श्रीमद्भगवद्गीतामू० विश्वरूपदर्शनाय  
नामैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ पर्वणितुपंचविंशोऽध्यायः ॥ ३५ ॥

संजय ने कहा है राजा वासुदेवजी ने इस प्रकार अर्जुन को समझाकर फिर अपने रूपको दिखाया और भयभीत अर्जुन को आश्वासन दिया । ५० । अर्जुन ने कहा है जनार्दन आपके इस सौम्य नररूपको देखकर अब मैं सचेतहुआ और प्रकृति में स्वस्थताहुई । ५१ । श्रीभगवान् बोले जो तुमने इममेरे रूपको देखा है वह बड़ी कठिनता से दृष्टि आनेवाला है इस रूपके देखने को देवतालोग भी सदैव इच्छा करते हैं । ५२ । जैसे तुमने मुझको देखा है उस रीति से वेद यज्ञ तप दान व्रत आदि के द्वाराभी कोई पुरुष मेरेदर्शन करने का मर्म नहीं है । ५३ । हे शत्रुओं को संताप देनेवाले अर्जुन इस प्रकार के रूपसे मैं अखण्ड भक्तीके द्वारा दर्शन के योग्यहूँ । ५४ । जो मेरे निमित्त कर्म करनेवाला और मुझी को सर्वोत्तम माननेवाला मेराभक्त सब संग्रहों से पृथक् शरीरी मात्रों में आत्मभाव माननेवाला है वह मुझ शुद्ध ब्रह्मको पाता है ॥ ५५ ॥

this my familiar form again. 49. SANJAYA—Vasudeva having thus spoken to Arjuna, shewed him again his wonted form; and having re-assumed his mildor shape, he presently assuaged the fears of the affrighted Arjuna. 50. Arjuna Having beheld thy placid, human shape I am again collected, and am restored to my natural state. 51. KRISHNA— This form of mine which thou hast seen, is difficult to be seen; even Devas are constantly anxious to see it. 52. I am not to be seen as thou hast seen me, by the Vedas, by mortifications, by sacrifices or by gifts. 53. But I am to be seen, known, and obtained by means of bhakti alone. 54. Doing work for me, having me as aim, being my votary, having abandoned all consequences, free from hatred, one comes to me. 55. .



अर्जुन उवाच : एवं सततयुक्ताये भक्तास्त्वां पर्युपासते । ये चाप्यक्षरमभ्य-  
 क्त तेषां के योगवित्तमा ॥ १ ॥ श्री भगवानुवाच : मय्यर्पित्य ततो ये मा नित्ययुक्ता  
 उपासते । अक्षया परये पैतास्तस्मै युक्ततमा मता ॥ २ ॥ ये त्वक्षरमनिर्देयमभ्यक्त  
 पर्युपासते । सर्वभ्रमचिन्त्यञ्च कूटस्थमचलं भुवम् ॥ ३ ॥ सन्नियम्येन्द्रियग्रामं  
 सर्वत्र समबुद्धयः । ते प्राप्नुवन्ति मामेव सर्वभूतहिते रता ॥ ४ ॥ क्लेशोधिक  
 तरस्तेषामभ्यक्तास्तु चेत्तसाम् । अव्यक्ता हि गतिर्दुःख देहवद्विरवाप्यते । ५ ॥  
 ये तु सर्वाणि कर्माणि मयि सन्त्यज्य मत्पराः । जनन्येनैव योगेन मां ध्यायन्त उपा-  
 सते ॥ ६ ॥ तेषामहं समुद्धर्ता मृत-संसारसागरात् । भवामि चिरात् पार्थ

### अध्याय १२ ॥

अर्जुनबोले इसप्रकार सदैव सावधान चित्त भक्तभोग समुणव्रह्मरूप आप को  
 उपासन करते हैं और अक्षर अर्थात् अप्रिनाशी अव्यक्त शुद्ध ब्रह्मको उपासना  
 करते हैं उन दोनों में योगके जाननेवाले कौन है । १ । श्रीभगवान् बोले हे अर्जुन  
 जो मुझ में मनको प्रवेशकरके सदैव उपाय करने वाले मेरेभक्त मेरी उपासना करते  
 हैं और भद्रावान् हैं उनको मैं मुक्ततम मानता हूँ, और जो इन्द्रियोंको मनसमेत स्वा-  
 धीन करके अर्थात् आत्मामें लयकरके अविनाशी मन बुद्धिसे परे सर्वव्यापी निर्विकार  
 अवलरूपकी उपासना करते हैं वह दृढ बुद्धि सबजीवों के प्यारे हैं और इच्छावान्  
 होकर पुनर्निर्गुण ब्रह्मको प्राप्त होते हैं अर्थात् मुक्तीमें हैं मुझसे जुड़े नहीं हैं फिर  
 उनके विषयमें योगवित्त यह शब्द कब नियत होसकता है । ४ । निर्गुण ब्रह्ममें  
 चित्तलगाने वालों को अधिकतर दुःख है क्योंकि निर्गुण पदकी प्राप्ति अभिमानी  
 पुरुषों को कठिनतासे मिलती है । ५ । और जो सब कर्मोंको मेरेअर्पण कर के  
 मुक्ती को लय स्थान समझके अद्वैत बुद्धिसे मेरेही ध्यानमें प्रवृत्त मन होकर मुझ

### LECTURE XII

*Of serving the deity in his visible and invisible forms*

ARJUNA—Of those of thy servants who are always thus employed, who know their duty best? those who worship thee as thou now art, or those who serve thee in thy invisible and incorruptible nature? 1 KRISHNA Those who, having placed their minds in me, serve me with constant zeal, and are endued with steady faith, are esteemed the best devoted. They, too, who, delighting in the welfare of all, serve me in my incorruptible, ineffable, and invisible form omnipresent, incomprehensible, standing on high, fixed and im-movable, with subdued passions and understandings, - the same in all things, shall also come unto me. 4 Those whose minds are attached to my invisible nature have the greater labour to encounter, because an invisible path is difficult to be found by corporeal beings. 5 Them whose minds are thus attached to me, who leave

मध्यावेदितचेतसाम् ॥ ७ ॥ मध्येष मन आघतस्व मयि बुद्धिं निवेशय । निद-  
 रासप्यासि मध्येष अत ऊर्ध्वं न शशय ॥ ८ ॥ अयं चित्तं समाधातुं न शक्नोषि मयि  
 स्थिरम् । अश्यासयोगेन ततो मामिच्छाप्तुं धनत्रय ॥ ९ ॥ अभ्यासेत्यसमर्थोसि  
 मत्कर्मपरमो अयं । मर्दयमसि कर्माणि कुर्वन् सिद्धिमवाप्स्यसि ॥ १० ॥ अयं  
 तदप्यशक्नोसि कर्तुं मद्योगमाश्रितः । सर्वकर्मफलत्यागं ततः कुरुष्व नात्मवान्  
 ॥ ११ ॥ श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासाज्ज्ञानाध्यानं विशिष्यते । ध्यानात्कर्मफलत्यागस्त्या-  
 गाच्छान्तिरनन्तरम् ॥ १२ ॥ अद्वैतासर्वभूतानां मैत्रं करुणमक्षयं । निर्ममो निरहङ्कारः  
 समदुःखलघुः क्षमा ॥ १३ ॥ सत्गुण सत्तत योगी यतात्मा हृदनिश्चयः । मत्परिपतमनो

को ध्यानकरते हुए उपासना करते है, हे अर्जुन मैं उनमनमें उपासना करने वालों  
 को थोड़ेही काल में जन्मपरणरूपी समुद्रसे उद्धार करताहूं । ७ । मुझ विद्वत्प  
 ईश्वर में संकल्प विकल्पात्मक मनको नियत करके मुझी में बुद्धि को लगायेहुए  
 जो पुरुष मेरेही रूपमें निवास करेगा वह निस्तदेह मुझी में ऐश्वर्यता पावेगा । ८ ।  
 जो तू मुझ विद्वत्पमें मन लगानेको समर्थ नहीं है तो हे अर्जुन उपासना मे मनको  
 हृदकरके मुझको प्राप्तहो और जो उपासनामें अममर्थ है तो मेरेनिमित्त कर्मोंको करता  
 हुआ चित्तशुद्धीको पावेगा । १० । और जो मेरी निष्ठाकेभी करने में अममर्थ है तो  
 सन कर्मों के फलों को त्याग कर दे । ११ । विचार के अभ्यास से ज्ञान श्रेष्ठ है  
 और ज्ञान मे ध्यान उत्तम है और ध्यान से कर्म फलों का त्याग करना शुभ  
 है और कर्म फल के त्यागसे पीछे मोक्षरूप शान्ती । १२ । शत्रुता रहित सबजीवों  
 का मित्र, दयावान् शरीरादि में निरभिमानी अहंबुद्धिमेरहित रागद्वेष में समभाव  
 क्षमावान्, यथा लाभ संतोषी, थनखादि में सदैव मन खगानेवाला इन्द्रियों समेत  
 देहको स्वाधीन करनेवाला आत्मतत्त्व में हृद निश्चय रखनेवाला और मुझ शुद्ध

all works for me, and, free from the worship of all others, contem-  
 plate and serve me alone, I presently raise up from the ocean of  
 this region of mortality, 7. Place then thy heart on me, and  
 penetrate me with thy understanding, and thou shalt, without  
 doubt, hereafter enter unto me ॥ But if thou be unable to fix  
 firmly thy mind on me, endeavour to find me by means of  
 practice. 9. If after practice thou art still unable, devote thyself  
 to my works, for by performing works for me, thou shalt attain  
 perfection 10. But shouldst thou find thyself unequal to this  
 task, control thyself and forsake the fruit of actions. 11 Know-  
 ledge is better than devotion, meditation is better than know-  
 ledge, forsaking the fruit of actions than meditation, for peace is  
 derived from such forsaking 12 That bhakt is dear to me who is  
 free from enmity, benign, merciful, exempt from pride and selfish-  
 ness, the same in pain and pleasure, patient, constantly devout,  
 of subdued passions, firm in faith, and whose mind and understanding

बुद्धियों में भक्त समे प्रिय ॥ १४ ॥ यस्माद्भोद्धिजते लोको लोकाद्भोद्धिजते च य ।  
 हर्षामर्षभयोर्द्वैर्गैर्युक्तो य सच मे प्रिय ॥ १५ ॥ अनपेक्ष शुचिर्दत्तउदासीनोगतः प्रियः ।  
 सर्वारम्भपरित्यागी योगमद्भक्त समे प्रिय ॥ १६ ॥ यो न हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति  
 न पांक्षति । शुभाशुभपारत्यागी भक्तिमान् य समे प्रियः ॥ १७ ॥ सम शत्रौ  
 च मित्रे च तथा मानापमानयो । शीतोष्णसुखदुःखेषु सद्बुद्धिर्जितः ॥ १८ ॥  
 तुल्यनिन्दास्तुतिर्मानो स तुष्टो ये केनाचत् । आनकत स्विस्वमात्मभक्तिमान् मे प्रियो  
 नरः ॥ १९ ॥ ये तु घम्माश्रितामिदं यथोक्तं पर्युपासते । अद्वाद्या मत्परमा भक्ता  
 स्तेतीवमे प्रियाः ॥ २० ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भगवद्गीताद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

पर्वणितुपद्वित्रिशोऽध्यायः ॥ ३६ ॥

ब्रह्म में मन बुद्धिको लयकरनेवाला जो मेरा भक्त है वह मेरा प्यारा है । १४ ।  
 जिससे लोक नहीं डरता है और जो लोकसे नहीं डरता है जो भक्तभजन असन्तोषता,  
 भय और व्याकुलता से रहित है वह मेरा प्यारा है । १५ । सुखकी प्राप्ति और  
 दुःख के निवृत्तहोने में आनन्दितवान् बाहर भीतर से पवित्र भगवत् भजन आदि में  
 आलस्यरहित उदासीन अर्थात् भक्तिष्ठा अग्रतिष्ठा को समान जाननेवाला क्लेशरहित  
 सब कर्मों के भारम्भों का त्यागनेवाला जो मेरा भक्त है वह मेरा प्यारा है । १६ । जो  
 प्रिय प्राप्तिमें प्रसन्न नहीं होता और अभियता में दुखी नहीं होता और प्रियवस्तु के  
 प्रियोगमें शोच नहीं करता और शुभाशुभ को भी नहीं चाहता हुआ भक्तिमान् है  
 वह मेरा प्यारा है । १७ । जो शत्रुमित्र में औरमाना पमान में अथवा शीतोष्ण  
 सुख दुःखों में समान होकर संगोंका त्यागनेवाला है और निन्दास्तुतिमें तुल्यभाज  
 मानी संतोषी त्यागी स्थान से रहित है और हृदबुद्धि से भक्तिमान् है वह पुरुष  
 मेरा प्यारा है । १९ । जो अद्वाद्यान् मुक्त को अपना लयस्थान जानते हैं और इस  
 अविनाशी मोक्षसाधन का अत्यन्त अनुष्ठान करते हैं वह मुक्तको अतिशय प्यारे हैं २० ॥

are fixed on me alone. 11 He also is dear to me of whom mankind  
 are not afraid, and who of mankind is not afraid, and who is  
 free from the influence of joy, impatience, and the dread of harm.  
 That bhakt of mine is dear to me who is unexpected, pure, pro-  
 ficient, unconcerned, unafflicted and who has forsaken every en-  
 terprize. 16 He also is worthy of my love, who neither rejoices  
 nor finds fault, who neither laments, nor covets, and has for-  
 saken both good and evil. 17 That bhakt is dear to me who is  
 same in friendship and in hatred, in honor and in dishonor, in cold  
 and in heat, in pain and pleasure, who is free from attachment, to  
 whom praise and blame are as one, who is of little speech, pleas-  
 ed with any thing, is not home tied, and who is of a steady mind.  
 18 They who seek this Amrita of religion even as I have said,  
 and serve me faithfully before all others, are my dearest bhaktas. 20

अर्जुन उवाच । प्रकृतिं पुरुषं चैव क्षेत्रं क्षेत्रज्ञमेव च । एतद्वेदितुमिच्छामि ज्ञान  
क्षेत्रञ्च केशव ॥ १ ॥ श्रीभगवानुवाच । इदं शरीरं कौन्तेय क्षेत्रमित्यभिधीयते ।  
एतद्योर्वोक्तं ते प्राहुः क्षेत्रज्ञांते तद्विदः ॥ २ ॥ क्षेत्रज्ञापिमां विद्धि सर्वक्षेत्रेषु भारत ।  
क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोर्ज्ञानं यच्च ज्ञानं मतं मम ॥ ३ ॥ तत् क्षेत्रं यच्चादृक् च यद्विकारि यतश्च  
यत् । सच यो यत्प्रमाणञ्च तत् समासेन मे शृणु ॥ ४ ॥ ध्रुवोऽपि भवद्गुणातीतं छन्दो  
भिर्विविधैः पृथक् । महासूत्रपदैश्चैव हेतुमद्भिर्विनिश्चितैः ॥ ५ ॥ महामृतान्यह-  
ङ्कारो बुद्धिरव्यक्तमेव च । इन्द्रियाणि दशैकञ्च पञ्चचेन्द्रियगोचराः ॥ ६ ॥ इच्छा

### अध्याय १३ ॥

अर्जुन बोले हे केशवजी प्रकृति और पुरुष और क्षेत्रज्ञ क्षेत्रज्ञ और ज्ञान वा क्षेत्र  
इन सबको मैं जानना चाहता हूँ, श्रीभगवान् बोले हे अर्जुन यह शरीर क्षेत्रज्ञ है जो इस क्षेत्रको  
जानता है क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ के जानने वालों ने आत्मा रूप क्षेत्रज्ञ कहा है । १ । हे भारत  
पंथ सब क्षेत्रों में मुझीको क्षेत्रज्ञ जानो क्षेत्र और क्षेत्रज्ञका जो ज्ञान है वह मुझसे ही  
सम्बन्ध रखनेवाला ज्ञान है इसको ब्रह्मज्ञानियों ने निश्चय किया है । २ । वह क्षेत्र  
जैसे रूपका है और जैसे प्रकारका है और जिन जिन विकारों से युक्त है और जिस  
जिस विकार से जो जो उत्पन्न होता है और जो वह क्षेत्रज्ञ है अथवा जैसे प्रभाव  
वाला है उसको मूलसमेत मैं कहता हूँ । ३ । जिसको ऋषियों ने अनेकरीतों से  
गाया और जो अनेक प्रकार के छन्द वेद और मन्त्रों से अत्येक शास्त्राओं में सिद्ध  
किया गया बहुत निश्चय युक्त हेतुवान् ब्रह्मके जतलानेवाले वेदके भागरूप ब्राह्मणों  
के वचनों से निश्चय किया हुआ । ४ । पंचमहाभूत अहंकार बुद्धि इन्द्रियां और  
पाँचसूत्र विषय । ५ । इच्छा, द्वेष, सुख, दुःख, यह विकारों सहित क्षेत्रका मिला हुआ वर्णन

### LECTURE XIII.

#### Matter and Spirit

Arjuna—I. desire, to know O Keshava, about matter and spirit, the field and the knower of it, wisdom and that which ought to be known. Krishna.—Learn that by the word field is implied this body, and that he who knows it is called the knower of it by the sages. 10. Know that I am that knower in every field. The knowledge of the field and the knower of it is by me esteemed wisdom. 2. Now hear what that Kshetra or field is, its nature, its origin, its purpose, its knower and his power. 2. Each has been variously sung by the Rishis in various measures, and in verses containing Divine precepts, including arguments and proofs. 4. The elements, Ahankara, Budhi, Avyakta (invisible spirit), the eleven Indriyas (organs), and the five sensibles. 5. Love and hatred, pleasure and pain, constitute Kshetra and its

द्वेषः सुखं दुःखं संघातश्चेतना घृतिः । एतत् क्षेत्रं समासेन सविकारं मुदाहृतम् ७॥  
अमानित्वमदं मित्रत्वमहिंसा क्षान्तिराज्ज्वलम् । आचार्य्योपासनं शौचं स्थैर्यमात्म  
धितिग्रहः ॥ ८ ॥ इन्द्रियार्थेषु वैराग्यमनहङ्कार एवच । जन्ममृत्युजराव्याधि दुःख  
दोषानुदर्शनम् ॥ ९ ॥ असीक्तरनभिचङ्क पुत्रदारगृहादिषु । नित्यं समचित्तत्वं  
मिष्टानिष्टोपपात्तिषु ॥ १० ॥ मयि चानन्ययोगिन आकरव्यभिचारिणी । विावकदेश-  
सेवित्वमरतिर्ज्जनसंसदि ॥ ११ ॥ अध्यात्मज्ञाननित्यत्वं तत्त्वज्ञानार्थदर्शनम् । पतञ्  
ज्ञानमिति प्रोक्तमज्ञानं यदुतोऽन्यथा ॥ १२ ॥ ज्ञेयं यत्तत् प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वा मृतम-  
श्नुते । अनादिमत्परं ब्रह्म न सत्तन्नासदुच्यते ॥ १३ ॥ सर्वतः पाणिपादतत् सर्वतो

दुष्प्रा । ६ । अपनी प्रतिष्ठा न चाहना देह मन वाणी से किसी जीव को दुःख न  
देना, अपकार होनेपर चिंचको न बिगाड़ना, सरल प्रकृतिहोना, उपासना, भीतर  
बाहरसे पवित्रता, मोक्ष नियतबुद्धि रहना इन्द्रियों के विषयमें वैराग्यहोना निरहंका  
रता, जरा जन्म रोगके दुख और दोषोंको अच्छे प्रकार देखना । ८ । पुत्र स्त्री और  
घरों में ममता न रखना और उनके सुख दुखों में सुखी और दुखी न होना मिय  
अभियके मिलनेमें सदैव एकभाव रहना । ९ । इष्ट अनिष्टकी उपपत्तिमें सदैव सम  
चित्तरहना एकान्त स्थानमें बैठना मनुष्योंकी सभामें भीति न करना । १० । अध्यात्म  
शास्त्रजन्य ज्ञानमें सदैवनियत रहना तत्त्वज्ञानके प्रयोजनको देखना यह ज्ञान अर्थात्  
ज्ञानका साधन कहा जो इसके विपरीतहै वही अज्ञानहै । ११ । जो इसज्ञानसे जान  
ने के योग्यहै उसको कहताहूँ जिसको जानकर मोक्ष को पाता है आदि रखने  
वाला जो कार्य्य कारण है उस से श्रेष्ठ जो ब्रह्म है वह न सदा कहाजाता है न  
असदा कहाजाता है । १२ । वह सब दिशाओंमें बाल्हाभ्यन्तर हाथ पैर नेत्र मुख  
शिर कान रखनेवाला है और लोकमें सबको व्याप्तकरके नियत है । १३ । बिना

changes. Thus have I briefly described this aggregate or basis  
of the soul. 6. Humility simplicity, harmlessness, forgiveness,  
rectitude teacher's service, chastity, faith, self control, disaffection for  
the objects of the senses, freedom from pride, insight into the evils  
of birth, death, decay, sickness and misery, 8. Unattachment, ab-  
sence of affection for son, wife and home; a constant evenness of tem-  
per in good or bad events, 9. Exclusive devotion to me, resort to  
sequestered places, and a dislike to the society of man; 10. a con-  
stant study of the superior spirit, and the study of the knowledge  
of truths. This is declared to be the wisdom; all against it is igno-  
rance. 11. I will declare that which ought to be known, know-  
ing which one enjoys immortality, the beginningless Bramha, who  
can neither be called Sat (ens) nor Asat (non ens). 12. All hands  
and feet, all faces, heads, and eyes and all ears, dwells in the world  
encompassing all. 13. Shining with all sense faculties, without

क्षिशिरोमुखम् । सर्वतः श्रुतिमहोके सर्वमावृत्य तिष्ठति ॥ १४ ॥ सर्वेन्द्रियगुणा  
भासं सर्वेन्द्रियविवर्जितम् । असक्तं सर्वभूतैव निर्गुणं गुणभोकृच्च ॥ १५ ॥ बाह्य-  
रन्तश्च भूतानामचरं चरमेवच । सूक्ष्मत्वात्तदविज्ञेयं दूरस्थञ्चान्तकेचतत् ॥ १६ ॥  
अविभक्तञ्च भूतेषु विभक्तमिव च स्थितम् । भूतभर्तृच्च तज्ज्ञेयं प्राप्तिष्णुप्रमवि-  
ष्णुच ॥ १७ ॥ ज्योतिषामपि तज्ज्योतिस्तमसः परमुच्यते । ज्ञानज्ञेयं ज्ञानगम्यं ह्यदः सरस्य  
चिष्टितम् ॥ १८ ॥ इति क्षेत्रं तथा ज्ञानं क्षेत्रज्ञोक्तं समासत । मद्भक्तं पताञ्जलाय मद्भावा  
योपपद्यते ॥ १९ ॥ प्रकृतिं पुरुषश्चैव विद्वद्यनादी उभावापि । विकाराश्च गुणांश्चैव विद्धि  
प्रकृतिं सम्भवान् ॥ २० ॥ कार्यकारणकर्तृत्वेहेतुः प्रकृतिरुच्यते । पुरुषः सुखदुःखानां  
भोक्तृत्वेहेतुरुच्यते ॥ २१ ॥ पुरुषः प्रकृतिश्चोह भुंक्ते प्रकृतजान् गुणान् । कारण गुण-

इन्द्रियों के वह सब इन्द्रियों के कार्य करता है सब से पृथक् और सबका धारण कर  
ने वाला, निर्गुण सब गुणों का भोगने वाला । १४ । जीवों के बाहर और भीतर  
चलायमान और अचल, सूक्ष्म, जानने के अयोग्य, दूर और निकट । १५ ।  
विभाग रहित प्राणियों में बहुत रूप वाला भूतोंका धारण करने वाला वह क्षेत्रज्ञ  
जाननेके योग्य है नाश करने वाला और फिरउत्पन्न करने वाला । १६ । वह  
प्रकाशमानमिथी ज्योतिरूप है, और अज्ञान से पृथक् कहाजाता है और सब के  
हृदय में नियत ज्ञानरूप जाननेके योग्य विज्ञान से प्राप्त होने के योग्य है । १७ ।  
यहक्षेत्रज्ञ और ज्ञान विज्ञान से जानने के योग्य मिला हुआ क्षेत्रज्ञ वर्णन हुआ  
इनको जान कर मेरा भक्त मेरे भाव के योग्य होता है । १८ । प्रकृति और पुरुष  
इन दोनों को अनादि जानो और इच्छा आदि विकार और गुणों को प्रकृति  
से उत्पन्न जानो । १९ । कार्य कारण के कर्तृत्व में प्रकृतिही कारण रूप है,  
और सुख दुःख के भोगने में पुरुष कारण कहा जाता है । २० । प्रकृति में नियत  
पुरुषही प्रकृति से उत्पन्न होनेवाले गुणों को भोगता है उच्च अनुचम योनियों

any senses; unattached, supporting all things; and without quality, enjoying every quality. 14. Without and within all beings, moveable and immoveable, subtle and inconceivable, stands far and yet near. 15. Undivided in things, it stands as the supporter of all things, it is to be known; it destroys and produces. 16. It is the light of lights and is declared to be free from darkness. It is wisdom and obtained by wisdom; and it presides in every breast. 17. Thus have been described Kshetra, knowledge and knowable. My bhakta who knows this, is fitted for my state. 18. Learn that both prakriti and Purusha are without beginning. Know also that modifications and qualities are matter-born. 19. Prakriti is the cause of the occurrence of causes and effects. Purusha is the cause of the enjoyments of pain and pleasure. 20. The purusha residing in Prakriti, partakes of the qualities of Prakriti; attach

सद्गोस्य सदसद्योनिजन्मसु ॥ २२ ॥ उपद्रष्टुमन्ता च भर्ता भोक्तामहेश्वर । पर  
मात्मेति चाधुक्तो देहेस्मिन् पुरुष पर ॥ २३ ॥ य एव चेत्ति पुरुष प्रवृत्तिञ्च  
गुणे सह । सर्वथा वर्त्तमानोपि न समुयोर्भिजायते ॥ २४ ॥ ध्यानेतात्मनिपश्य  
गितिकेचिदात्मानमात्मना । अन्यैर्सारथेन योगेन कर्मयोगेन चापरे ॥ २५ ॥ अन्येऽपि  
यमजावन्तः । श्रुत्वान्येऽप्य उपासते । तेषु चाततरन्येव मृत्युश्रुतिपरायणा ॥ २६ ॥  
यावत् सञ्जायते किञ्चित् सत्त्वं स्यात्परजङ्गमम् । क्षेत्रक्षेत्रज्ञसयोगात्तद्विद्धि भर्त  
र्षभ ॥ २७ ॥ समं सर्वेषु भूतेषु तिष्ठन्त परमेश्वरम् । विनश्यत्स्वविनश्यन्त य

के जन्मों में इस के गुणोंका संगही कारण है । २१ । दृष्टा, साक्षी अनुमन्ता और  
भोक्ता, महेश्वर और परमात्मा इस शरीर में भी परम पुरुष काहा जाता है । २२ ।  
जो इस रीति से पुरुष को और गुणयुक्त प्रकृतिको जानता है वह कर्मों में कैसाही  
प्रवृत्त हो तौभी फिर जन्मनही लेताहै । २३ । कोई कोई तो शरीर में बुद्धि और  
ध्यानके द्वारा परमात्माको देखते हैं और कोई सांख्य योग अर्थात् ब्रह्मज्ञान से  
और कोई कर्मयोगी पुरुष कर्म फलको ईश्वरके अर्पण करनेसे परमेश्वरको देखते  
हैं । २४ । और कितनेही पुरुष इस प्रकारको न जानकर दूसरे आचार्यों से  
सुनकर उपासना करते हैं वह गुरुसे सुनेहुये उपदेश में पूर्ण विश्वास रखनेवालेभी  
संसारको अवश्यतरते हैं । २५ । जितने जड़ चैतन्यजीव उत्पन्न होते हैं हे  
भरतर्षभ उनका पैदाहोना क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ के योगसे जानो । २६ । जो सब  
सृष्टि में सदैव नियत नाशहोने वालों में नाश न होनेवाले परमेश्वरको देखता  
है वही देखने वाला है, । २७ । अपने शरीरके समान सब शरीरोंमें अच्छे प्रकार  
से नियत ईश्वरको समानता पूर्वक देखता हुआ शरीरादिक के सम्बंध हेतुसे

ment to the qualities is the cause of birth in a good or evil body 21  
In this body the superior soul who is called Maheshwara, is  
the observer, the director, the protector, the partaker 22  
He who conceives the Purusha and Prakriti, together with  
the Guna or qualities, whatever mode of life he may lead, he is  
never born again. 23 Some men, by meditation, behold the  
spirit within themselves, others by Sankhya yog and others by  
karma yoga 24 Others again who are not acquainted with this  
but have heard it from others these also, by adhering to what  
they have heard, pass beyond the gulf of death 25 Know, O chief  
of Bharatas, that every creature, whether animate or inanimate is  
produced from the union of Kshetrajna and Kshetrajnyam, matter  
and spirit. He who sees the Supreme Being alike in all things,  
indestructible within destructible, sees in reality 27 By conceiv-  
ing that God in all things is the same, one does not of himself

प्रदयतिसंप्रदयति ॥२८॥ समंप्रदयन् हिसर्वत्र समवस्थितमोक्षरम् । न हिनस्त्यात्मनात्मानं  
ततोऽवातिपराङ्मतिम् ॥२९॥ प्रकृत्यैव च कर्माणि क्रियमाणानि सर्वशः । यः प्रदधाति तथात्मान-  
सकर्तारं स प्रदयति ॥ ३० ॥ यदा भूतपृथग्भावमेकस्थमनुपश्यति । तत एव च  
विस्तारं ब्रह्म सम्पद्यते तदा ॥ ३१ ॥ अनादित्वान् निर्गुणत्वात् परमात्मायमव्ययः ।  
शरीरस्थोऽपि कौन्तेय न करोति न लिप्यते ॥ ३२ ॥ यथा सर्वगतं सौहृद्यादाकाश  
नोपलिप्यते । सर्वत्रावस्थितो देहे तथात्मानोऽपि लिप्यते ॥ ३३ ॥ यथा प्रका-  
शयत्येकः कृत्स्नं लोकमिमं रविः । क्षेत्रक्षेत्री तथा कृत्स्नं प्रकाशयति भारत ॥३४॥  
क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोरेवमन्तरं ज्ञानचक्षुषा । भूतप्रकृति मोक्षय पे विदुर्यान्ति ते परम् ॥ ३५ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि श्रीमद्भगवद्गीतापर्वणि मू० क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभाग  
योगो नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥१३॥ पर्वणितु सप्तत्रिंशोऽध्यायः ॥३७॥

आत्मारूप ईश्वरको पीडानहीं देताहै वहभीअन्त में मोक्षको पाताहै।२८। जो कर्मोंको  
प्रकृति से किया हुआ देखता है और इसी प्रकार आत्माको अकर्ता देखताहै वह  
देखताहै।२९। जबजीवोंको एकआत्मामें लयहोताहुआ देखताहै औरउसीएकआत्मासे  
विस्तारको देखताहै तब ब्रह्मको प्राप्तहोताहै।३०। हे अर्जुन यह अविनाशी परमात्मा  
आदि रहित और गुणोंमें पृथक् होनेसे शरीरमें वर्तमान होकरभी कर्म नहीं करताहै  
और न लिप्त होताहै।३१। जैसे कि सर्वव्यापी आकाश असंग स्वभावसे लिप्त  
नहीं होताहै इसीप्रकार देहके भीतर सर्वत्र निपत आत्माभी लिप्तनहीं होताहै।३२।  
हे भरतवंशी जैसे कि सूर्य इस संपूर्ण लोकको प्रकाशित करता है उसी प्रकार  
क्षेत्रज्ञ आत्मा नानाप्रकारका रूप धारण करने वाले क्षेत्ररूपशरीरको प्रकाशित  
करताहै,।३३। जिन्होंने इसप्रकारसे क्षेत्र और क्षेत्रज्ञके भेदको जानकर ज्ञानरूप  
नेत्रकेद्वारा अथवा आकाशादि भूतोंकी मूलरूप जो त्रिगुणात्मिका अविद्या है उसके  
विद्यारूपसे मोक्षको जानाहै वह मोक्षको पातेहैं।३५।

injure his own soul, and goes to the supreme goal. 28. He who sees all actions performed by Prakriti ( matter ), sees that Atma is inactive. 29. When he sees the different species in nature centred in unity, and proceeding from it, he then reaches Brahma. 30. This supreme and incorruptible Spirit, even when it is in the body, neither acts nor is affected, because it is without beginning and without quality. 31. As the all pervading ether, being subtle, is not affected, even so the omnipresent spirit remains in the body unaffected. 32. As a single sun illumines the whole world, even so does the spirit illumine the whole body. 33. They who, with the aid of wisdom, perceive the body and the spirit to be thus distinct, and that there is a final release from the animal nature, go to the Supreme. 34.



श्री भगवानुवाच । परं भूय प्रवक्ष्यामि ज्ञानानां ज्ञानमुत्तमम् । यजत्रात्वा  
 मुनयः सर्वे परां सिद्धिमिमो गताः ॥ १ ॥ इदं ज्ञानमुपाश्रित्य मम साधर्म्यं मागता ।  
 सर्गेऽपि नोपजायन्ते प्रलये न व्यथन्ति च ॥ २ ॥ मम योनिर्महद्ब्रह्म तस्मिन् गर्भं  
 दद्याम्यहम् । सम्भव सर्वभूतानां ततो भवति भारत ॥ ३ ॥ सर्वे योनिपुङ्गवोऽप्ये-  
 मूर्त्तयः सम्भवन्त याः । तासां ब्रह्म महद्योनिरहं वज्रिप्रदः पिता ॥ ४ ॥ सर्वरज-  
 स्तम इति गुणाः प्रकृतिसम्भवाः । न वध्नान्ति महाबाहो देहे देहिनमव्ययम् ॥ ५ ॥  
 तत्र सत्यं निर्मलत्वात् प्रकाशकमनामयम् । सुखसङ्गेन बध्नाति ज्ञानसङ्गेन चानघ  
 ॥ ६ ॥ रजो रागात्मकं च विद्धि तृष्णासङ्गसमुद्भवम् । तावन्न वध्नाति कौन्तेय कर्मस-

### अध्याय १४ ॥

श्रीभगवान् बोले कि हे अर्जुन अब मैं महाउत्तम ज्ञानको कहूंगा जिसको  
 जानकर सब मुनि लोगों ने इस संसार में पृथक् होकर मोक्षरूपा महासिद्धि को पा-  
 या है । १ । जिन्होंने इस ज्ञानको आश्रय करके मेरे भावों को पाया है वह सृष्टि के  
 उत्पत्ति काल में भी उत्पन्न नहीं होते हैं और प्रलय में भी कालाग्नि से पीड़ित  
 नहीं होते हैं । २ । मेरी योनि महत्त्व की आदिभूतामाया है उसमें गर्भको मैं  
 धारण करता हूँ हे भरतवंशी उसीसे सब भूतों की उत्पत्ति होती है । ३ । हे अर्जुन  
 सब योनियों में जो जीव उत्पन्न होते हैं उनकी योनि महत् ब्रह्म है और मैं वीर्य  
 का देनेवाला पिता हूँ । ४ । हे महाबाहु यह सत्त्व रज तम तीनों गुण उसमाया से  
 उत्पन्न हुए हैं वह गुण रूपान्तर दशा रहित आत्मा को भी देहमें बन्धन करते हैं । ५ ।  
 हे निष्पाप अर्जुन उन गुणों में सतोगुण निर्मलता होनेसे तो सबका प्रकाश करने  
 वाला होता है और सुख और ज्ञानके संग से बन्धन करता है । ६ । और तृष्णा  
 और संगसे उत्पन्न रजोगुण को राग स्वरूप जानो हे अर्जुन यह रजोगुण

### LECTURE XIV.

of the three gunas or qualities.

Krishna—I will now reveal to thee the superior wisdom which  
 having learnt, all the Munis have passed hence to the supreme per-  
 fect on. Those who embrace this wisdom, attain to my state and  
 are not born at evolution nor suffer at dissolution. 2 The great  
 Brahma is my womb In it I place the germ from which all  
 beings are produced. 3 The great Brahma is the womb of all the  
 forms which are born of every womb, and I am the father who  
 sows the seed. 4 *Satwa, Rajas, and Tamas* are matter born quali-  
 ties which confine the incorruptible spirit in the body. 5 The  
*Satwa*, because of its purity, is luminous and painless and links  
 (souls) to bliss and wisdom. 6. *Rajas* is of a passionate nature

ज्ञेन देहिनाम् ॥ ७ ॥ तमस्त्वज्ञानजं विद्धि मोहने सर्वदेहिनाम् । प्रमादालस्यानि  
 प्राप्तिश्चान्निवृत्तिरिति भारत ॥ ८ ॥ सत्त्वं सुखे सञ्जयातरजः कर्मणि भारत । ज्ञानमा  
 वृत्यतु तमः प्रमादे सञ्जयस्युत ॥ ९ ॥ रजस्तमश्चाममूष सत्त्वं भवति भारत ।  
 रजः सत्त्वं तमश्चैव तमः सत्त्वं रजस्तथा ॥ १० ॥ सर्वद्वारेषु देहेस्मिन् प्रकाशवप  
 जायते । ज्ञानं यदातदा विद्याद्विवृद्धं सत्त्वं मित्युत ॥ ११ ॥ लोभः प्रवृत्तिरारम्भः  
 कर्मणामशमः स्पृहा । रजस्येतानि जायन्ते विवृद्धे मातर्पम ॥ १२ ॥ अप्रकाशो  
 ऽप्रवृत्तिश्च प्रमादो मोह एवञ्च । तमस्येतानि जायन्ते विवृद्धे कुरुनन्दन ॥ १३ ॥  
 यदासत्त्वे प्रवृद्धेतु प्रलयं याति देहयत् । तदोत्तमविद्यां लोकानमलान् प्रतिपद्यते  
 ॥ १४ ॥ रजास प्रलयगत्या कर्मसङ्गिषु जायते । तथा प्रलीनस्तमसि मूढयोनिसु

अभिमानि शरीर को कर्मों के कर्म फलकी इच्छा से बन्धन करता है । ७ । और  
 सत्त्व-अभिमानि शरीरोंको मोह करने वाले तमोगुण को अज्ञान रूपमाया की आ-  
 वरण शक्ति से उत्पन्न जानो हे भरतवंशी वह तमोगुण प्रमाद, आलस्य, निद्रा,  
 इत्यादि से बन्धन करता है । ८ । हे अर्जुन सतोगुण सुख में प्रवृत्त करता है,  
 रजोगुण कर्म में और तमोगुण ज्ञानको ढककर प्रमाद में लगाता है । ९ । हे भरत  
 वंशी रजोगुण तमोगुण को स्वाधीन करने से सतोगुण की छद्दि होती है और  
 सतोगुण तमोगुण को शांत करने से रजोगुण की छद्दि होती है और सतोगुण रजो-  
 गुण को आधीन करनेसे तमोगुण छद्दि पाता है । १० । जबइस देह के भीतर  
 वाष्पाभ्यन्तरकी इन्द्रियरूपद्वारों में प्रकाशरूपज्ञान और सुख उत्पन्न होता है तब  
 सतोगुण की छद्दि जानो ११ और हे अर्जुन रजोगुणकी छद्दि होनेपर लोभ प्रवृत्ति प्रारम्भ  
 अशांति इच्छा इत्यादि सबवातें उत्पन्न होती हैं १२ और तमोगुणकी अतिशय छद्दि  
 होनेपर अप्रकाशता, कर्मोंका न करना प्रमाद मोह इत्यादि सब वस्तु उत्पन्न होती  
 हैं । १३ । जब सतोगुण की अतिशय छद्दि होनेपर किसी का मरना होजाता है  
 तब देवताओं के निर्मल क्षेत्रशरित लोकों को पाता है । १४ । रजोगुण में शरीर

arising from desire and attachment; it ties the embodied to work. 7. Tamas begets ignorance and deludes all the embodied beings and by heedlessness it binds one to sloth and sleep. 8. Satwa prevails in felicity, Rajas in action, and Tamas, having clouded wisdom, prevails in intoxication. 9. Overcoming Tamas and Rajas, Satwa prevails; Rajas over Satwa and Tamas; and Tamas over Satwa and Rajas. 10. When wisdom, shines through all the avenues of this body, then shall it be known that Satwa is prevalent. 11. Greed, unrest, undertaking works, disquiet and desire, are produced from the prevalence of the Rajas. 12. The tokens of the Tam are gloominess, idleness, sloth, and distraction of thought. 13. If the body is dissolved whilst Satwa prevails, the soul proceeds to the spotless regions of the blest. 14. When the

जायते ॥ १५ ॥ कर्मण सुवृत्तस्याह सात्त्विक निर्मल फलम् । रजस्तुफलदुःख  
मज्ञान तमसः फलम् ॥ १६ ॥ सत्त्वात् सञ्जायते ज्ञान रजसो लोभपवच ।  
प्रमादमोहा तमसो भवतश्च नमेवच ॥ १७ ॥ ऊर्ध्वं गच्छन्ति सत्त्वस्था मध्येतिष्ठन्ति  
राजसा । अधो गच्छन्ति तामसाः ॥ १८ ॥ नान्य गुणेष्व  
कर्तारं यदाद्रष्टानुपश्यति । गुणेष्वथ परं वेत्ति मद्भावं सोऽधिगच्छति ॥ १९ ॥  
गुणानेतानतीत्यशौन् देहो देहसमद्भवान् । जन्ममृत्युजरादु खौर्वेषुकोमृतमश्नुते २० ॥  
अर्जुन उवाच । कैलिदैस्त्रीन् गुणानेतानतोतो भवति प्रभो । किमाचारं कथञ्चै  
तास्त्रीन् गुणानतिवर्त्तते ॥ २१ ॥ श्रीभगवानुवाच । प्रकाशञ्च प्रवृत्तिञ्च मोहमेवच

त्यागहोने पर कर्मफल चाहने वाले पुरुषों में उत्पन्न होता है इसीप्रकार तमोगुण में  
परनेवाला चांडाल आदि में वा पशु पक्षियों में उत्पन्न होता है । १५ । अच्छी  
रीति से कियेहुये सतोगुणी कर्म का फल दुःख और अज्ञान से रहित निर्मल और  
ज्ञान वैराग्य आदि युक्त सात्त्विक धर्म है रजोगुणी कर्म का फल दुःख है और तमो  
गुणी कर्म का फल अज्ञान है । १६ । सतोगुण से ज्ञान उत्पन्न होता है रजोगुण से  
लोभ पैदा होता है और तमोगुण से प्रमाद मोह और अज्ञान पैदा होते हैं । १७ ।  
सतोगुणी पुरुष ऊपर जाते है अर्थात् देवभावको पाते है रजोगुणी मध्य में नियत  
होते है अर्थात् मनुष्य शरीर को पाते है और नीचगुणोंकी दृष्टी में नियत तामसी  
पुरुष नरक को जाते है अर्थात् पशु पक्षी आदि में उत्पन्न होते है । १८ । जब  
द्रष्टारूप जीव सिमाय गुणों के किसी दूसरेको नहीं देखता है और जो गुणों से  
परे मुक्तको जानता है वह मेरेरक्षभावको पाता है । १९ । जीवात्मा इन तीनगुणों  
को जिनसे कि स्थूल शरीर की उत्पत्ति है उल्लंघन करके जराजन्म मरणके दुःखों  
से रहित होकर मोक्ष को पाता है । २० । अर्जुन बोले कि हे मधु कौनसे विद्वानों से  
इन तीनों गुणोंको उल्लंघन करनेवाला होता है उसका कैसा आचार है और किस

body finds dissolution whilst Rajas is predominant, one is born amongst those who are attached to action. Likewise dying when Tamas is prevalent, one is born in the wombs of irrational beings. 15 The fruit of good works is called pure and holy, the fruit of the Rajas is pain, and the fruit of Tamas is ignorance. 16 From Satwa is produced wisdom, from Rajas covetousness, and from Tamas madness, distraction, and ignorance. 17 Those fixed in Satwa, mount on high, those of the Ryas stay in the middle, whilst those abject followers of Tamas sink below. 18 When the seer perceives no other agent than these qualities, and knows what is beyond them, he enters my state. 19 Surpassing these three qualities, co-existent with the body, the soul is delivered from birth and death, old age and pain, and drinks of the water of immortality. 20 ARJUNA—By what token is it known that a man has surpassed these three qualities?

च पांडव । न ह्येष्टा सम्प्रवृत्तान नानवृत्तानि कांक्षति ॥ २२ ॥ उदासीनवदा  
सांतो गुणैर्धो न विचाल्यते । गुणा यत्तन्तइत्येव योवातप्रात नंगते ॥ २३ ॥ समदु खे  
सुखे च सत्य समलोष्टाश्मकांचन । तुल्यप्रियाप्रियो धीरस्तुल्यनिन्दात्मसन्तुति  
॥ २४ ॥ मानापमानयोस्तुल्यतुल्यो मित्रारिपक्षयो सर्वारम्भपरित्यागी गुणातीत-  
स उच्यते ॥ २५ ॥ माच योऽव्यभिचारेण भक्तियोगेन सेवते स गुणान् समतीत्यैतान्  
ब्रह्मभूयाय कलते ॥ २६ ॥ ब्रह्मणा हि प्रतिष्ठाहममृतस्यानप्यस्य च । शाश्वतस्य च  
धर्मस्य सुखस्यैकान्तकस्य च ॥ २७ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि श्रीमद्भगवद्गीतापर्वणि सू० गुणत्रयविभाग  
योगोनाम चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥ पर्वणितु अष्टविंशोऽध्यायः ॥ ३८ ॥

रीति से इन तर्कों गुणों को उल्लंघन करके वर्तव करता है । २१ । श्रीभगवान्  
बोले हे पाण्डव प्रकाश, प्रवृत्ति, मोह यह तर्कों सत्त्वादि गुणों के कार्यरूप है जो  
वह अन्तःकरण आदि में वर्तमान होयें तो उन से शत्रुता नहीं करता है । २२ ।  
जो उदासीनके समान नियत होकर गुणों से चलायमान नहीं होता है अर्थात् ऐसा  
जानता है कि यह गुणों का वर्तव है उस बुद्धि में नियत होकर जो स्थिरता से  
नियत है वह चलायमान नहीं होता है । २३ । सुख दुःखको समान जाननेवाला  
वा अपनी इच्छा से नियत लोहे पत्थर सुवर्ण को बराबर समझनेवाला अथवा मित्र  
अभिय वा निन्दा स्तुति में समबुद्धि धैर्यमान मानापमान रहित शत्रु मित्रमें समभाव  
होकर जो प्रारम्भ कर्मों का त्याग करनेवाला है वह गुणातीत कहा जाता है । २४ ।  
जो मुक्तको भक्तिमे ध्यान करता है वह इन गुणों को उल्लंघन करके ब्रह्मभाव के  
योग्य होता है । २५ । मैं वेदका वा अविनाशी मोक्ष साधन का अथवा प्राचीन  
धर्म का और मोक्षरूपी सुखका अन्त स्थान हूँ । २७ ।

What is his practice? How does he overcome them. 21 Krishna—He  
O son of Pandu, who despises not lucidity, activity and delusion  
when they come upon him, no longer for them when they disap-  
pear, 22 who, sitting unconcerned, is unagitated by the qualities, who,  
whilst the qualities are present, stands still and moves not, 23  
who is self dependent and the same in ease and pain, and to  
whom iron, stone, or gold are as one, firm alike in love and dislike,  
and the same whether praised or blamed, 24 the same in honor and  
disgrace, the same towards the friend and the foe, and who for  
sakes all enterprize, such a one has surmounted the influence of  
the qualities. 25 And he, my servant, who serves me alone with  
due attention, overcomes the qualities and is fit to be absorbed in  
Brahma. 26 I am the emblem of the immortal and of the incorrupt-  
ible, of the eternal justice, and of endless bliss. 27

श्री भगवानुवाच ॥ ऊर्ध्वं मूलमथ शाख मध्यस्थ प्राहुरव्ययम् । छन्दांसि यस्य  
पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित् ॥ १ ॥ अधश्चोर्ध्वं प्रसृतान्तस्य शाखा गुणप्रवृद्धा  
विषयप्रवाला । अधश्च मूलान्यनुसन्ततानि पर्मानुपधीनि मनुष्यलोक ॥ २ ॥  
न रूपमस्येह तपोपुलक्यते नातो न चादिर्ध्वं च सम्प्रतिष्ठा । अश्वत्थमेव सुविकृत  
मूलमसङ्गशस्येण दृढेन छित्वा ॥ ३ ॥ तत् पदं तत् परिमार्गितव्यं यस्मिन् गता  
न निवर्त्तन्ति भूयः । तमेव चाद्य पुरुष प्रपद्ये यत् प्रवृत्तिं प्रसूताधराणी ॥ ४ ॥  
निर्मानहो जितसङ्गदोषा अभ्यात्मनित्या विनिवृत्तकामा । इन्द्रार्धिसुक्ता सुप्रदुःख

अ. १५ ॥

श्रीभगवानुवाच कि ऊपरको मूल रखनेवाला और नीचेकी ओर शाखा रखने  
वाला वृक्ष अविनाशी वर्णन कियागयाहै उसवृक्षके पत्ते वेद और यज्ञहैं उस वृक्षको  
जो जानता है वह वेदका जाननेवाला है । १ । उसकी शाखा नीचे और ऊपरको  
फैलरही हैं और सतोगुणआदि गुणों से महावृद्धि युक्त विषयरूपी पत्तों से व्याप्त  
हैं और नीचे उस वृक्षकी जड़ें जिनसे कि कर्म बंधेहुये हैं फैलीहुई हैं । २ । उसका  
रूप नहीं पायाजाता है इससे यहवृक्ष आदि अन्त में रहित है और उसके लप  
होनेका भी स्थान नहीं है ऐसे अत्यन्त दृढ मूलवाले वृक्षको असंगरूप दृढशस्त्र में  
काटकर वह ब्रह्मपद निश्चय करने के योग्य है जिस में प्राप्त होनेके पीछे पुरुष  
फिर नहीं लौटते हैं उस सत्यके आदिरूप और घटप्रवामकी शरणा होताह कि  
आदिरहित संसारी मत्तत्त्वता रूपी मटात्ति निकले । ४ । मोह मान और कर्मों के  
संगों समेत रागादि दोषोंको जीतनेवाले आत्मानिष्ठ सर्वद्वन्द्वीन्द्रिर्हर्षशोक रहित

## LECTURE XV

### Of purushottama

Krishna.—With roots above and branches below, they speak  
of Ashwattha indestructible, whose leaves are the Vedas. He  
who knows that, is acquainted with the Vedas. 1 Its branches  
nourished by the Gunas spread upwards and downwards, its buds  
are the objects of senses. The roots which spread below, in the  
regions of mankind, are restrained by action. 2 Its form is not un-  
derstood here, neither its beginning, nor its end nor its source.  
When a man has cut down this Ashwattha with the strong axe  
of disinterest, that place is to be sought after from whence there is  
no return for those who find it. Let us seek the first Purusha  
from whom is produced the ancient progression of all things. 4  
Those who are free from pride and ignorance, who have prevail-  
ed over the evils of attachment the soul absorbed, freed from

सङ्गैर्गच्छन्त्यमृताः पदमव्ययन्तत् ॥ ५ ॥ न तद्भासयते सूर्यो न शशाङ्को न पावकः ।  
यदागच्छान्ति तिष्ठन्त्यन्ते तद्विमपरमं यम ॥ ६ ॥ ममैवांशो लब्धलोके जयिभूतः  
सनातनः । मनःपष्ठान्नान्द्रियाणि प्रकृतिस्थानि कर्षति ॥ ७ ॥ शरीरं यदवाप्नोति  
यथाप्युत्क्रामसीध्वरः । गृहीत्वैतानि संयाति वायुर्गन्धानिवाशयत् ॥ ८ ॥ श्रोत्रं  
चक्षुः स्पर्शनञ्च रसनं घ्राणमेव च । अधिष्ठाय मनश्चायं विषयानुपसेदते ॥ ९ ॥  
उत्क्रामन्ते स्थितं चापि भुञ्जानं वा गुणान्वितम् । विमूढा नानुपदयान्त पदयन्ति  
ज्ञानचक्षुषः ॥ १० ॥ यतन्तो योगिनश्चैव पदगत्यात्मन्यवास्थितम् । यतन्तोऽप्यक-

और विशा के द्वारा अविद्या बुर करनेवाले पुरुष उसअविनाशी पदको पाते हैं । ५।  
उस पदमें न सूर्य प्रकाश करता है न चन्द्रमा प्रकाशित होता है अग्नि प्रकाश  
नहीं करसक्ता है जिसको जानकर नहीं लौटने हैं वही मेरी परमज्योति है । ॥ ६ ॥  
इस जीव लोकमें जीवरूप मेराही अंश और सनातन है वह अपने विषय रूप स्वभाव  
में नियत होकर छेड़मन समेत पाँचों इन्द्रियों को अपनी ओर आकर्षण करता है  
॥ ७ ॥ और जाग्रत उत्पत्ति और पाननके समय इन इन्द्रियोंको अपने सय स्थानसे  
विषय के स्थानपर लेजाकर ऐसे प्राप्तहोता है जैसे कि गंधको लेकर वायुप्राप्त होती  
है । ८। यह श्रोत्र, चक्षु, स्पर्श, रसना, घ्राण, इनपाँचों ज्ञानइन्द्रियोंको और मनको  
व्यापारवान् करके विषयोंको प्रकाश करता है । ९ । उनमन संयुक्त इन्द्रियों की  
देहान्तर करने वाली इन्द्रियों के नियत होनेपर आपसी नियतहोकर इन्द्रियों के  
भोक्ताहोने पर भोगनेवाले और गुणोंसे संयुक्त होनेवालेको अज्ञानी लोगनहीं देखते  
हैं परन्तु ज्ञानरूप नेत्ररखने वाले उनको देखते हैं । १०। उपाय करनेवाले योगी इस  
असंग आत्माको बुद्धिमें नियतदेखते हैं और जिन्होंने यज्ञादिकर्मोंके करनेसे मनको  
शुद्ध करके अपने आधीन नहीं किया वहउपाय करते हुएभी इसपरमात्मा को नहीं

lustre and the pairs of pleasure and pain, tread, undeluded, that en-  
during path. 5. Neither the sun nor the moon nor the fire enlight-  
en that place from whence there is no return, and which is the  
supreme mansion of my abode. 6. It is a portion of myself that in  
this animal world is the universal spirit of all things. It draws to-  
wards itself the matter-seated senses and the mind, which  
is the sixth. 7. Whichever body the lord (soul) enters or quits, it  
takes them (senses) and goes, as the breeze (takes) the fragrance  
from the flower. 8. It (soul) presides over hearing, seeing,  
feeling, tasting and smelling, and the mind and the sense  
objects. 9. The foolish see it not, attended by the Guna or  
qualities, in expiring, in being, or in enjoying; but those who are  
endued with the eye of wisdom behold it. 10. The persistent yogis  
perceive it planted in their own breasts, while those of unrefined  
minds and weak judgments, labouring, find it not. 11.

तात्मानो नैन पश्यन्त्यचेतस ॥ ११ ॥ यदादित्यगत तेजो जगद्भासयतेऽखिलम् ।  
यच्चन्द्रमासि यच्चामी तत्तेजो विद्धि मामकम् ॥ १२ ॥ गामाविश्य च भूतानि  
धारयाम्यहमोजसा । पुष्णामि चौपधीः सर्वा सोमो भूत्वा रसात्मकः ॥ १३ ॥  
अह वैश्वानरो भूत्वा प्राणिना देहमाश्रित । प्राणापानसमायुक्त पचाम्यन्नं चतु  
र्विधम् ॥ १४ ॥ सर्वस्य चाह हृदिसन्निविष्टो मत्तः स्मृतिज्ञानमपोहनञ्च ।  
येदैश्च सर्वे रहमेव वेद्यो वेदान्तहृद्वेदविदेव चाहम् ॥ १५ ॥ द्वाविमौ पुरुषौ लोके  
क्षरश्चाक्षर एव च । क्षरः सर्वाणि भूतानि कूटस्थोक्षर उच्यते ॥ १६ ॥ उत्तम  
पुरुषस्त्यन्यः परमात्ममेत्युदाहृत । योलोक्त्रयमाविश्य विमर्त्यव्ययईश्वरः ॥ १७ ॥  
यस्मात्क्षरमतीतोऽहमक्षरादपि चोत्तम । अतोऽस्मिलोके वेदे च प्रथित पुरुषोत्तम

देखते है । ११ । जो तेज सूर्य में वर्धमान होकर संपूर्ण संसारको प्रकाशित करता  
है और जो तेज चन्द्रमा और आग्नि में है उसको तुम मेराही तेज जानो । १२ ।  
मैं पृथ्वी में प्रवेश करके अपने तेजसे संसार को धारण करता हूं और जल रूप  
चन्द्रमा होकर सब औषधियों को रससयुक्त करके पुष्टकरता हूं । १३ । मैंही वैश्वानर  
नाम अग्नि होकर सब जीवोंके शरीर में नियत होकर प्राण अपान से संयुक्त भक्ष्य  
भोज्य चूष्य लेख इनचारों प्रकारके पदार्थोंको पचाता हूं । १४ । मैं सबके हृदयमें  
वर्धमान आत्मा हूं मुझ आत्मा रूपसे स्मृतिज्ञान और अज्ञान है और मैंही सब  
वेद द्वारा जानने के योग्य हूं और वेदान्तका कर्त्ता और वेदार्थका ज्ञाता हू । १५ ।  
लोकमें यह क्षर अक्षर नाम दोही पुरुष है सब संसार क्षर नाम है और रूपान्तर दशा  
रहित अक्षर नामसे प्राप्ति है । १६ । उपाधि से रहित उत्तम पुरुष परमात्मानाम  
तीनों लोक वालोंके शरीरों में प्रवेश करके रूपान्तर दशासे रहित सबका पोषण  
करता है । १७ । जोकि मैं क्षरसे पृथक् और उपाधियुक्त जीवसे भी उत्तम हूं

Know that the light in the sun which illumines the whole world,  
and the light which is in the moon, and in the fire, is mine 12  
Permeating the earth, I support all things by my vigour and be-  
coming the juicy moon I nourish all the plants 13 I am the fire  
residing in the bodies of all living beings, and joined with Prana and  
Apana, I digest the four fold food 14 I penetrate into the  
hearts of all, from me proceed memory, knowledge, and the loss  
of both I am to be known by all the Vedas and I am he who  
knows the Vedas 15 There are two kinds of Purusha in the  
world, the one corruptible and the other incorruptible The corrup-  
tible Purusha is the body of all things, the incorruptible one is  
constant 16 There is another Purusha most high, the Para-  
matma or supreme soul, who pervades and sustains the three  
worlds, the incorruptible Ishwara 17 Because I am above corrup-  
tion and superior to incorruption, wherefore in this world, and in

॥ १८ ॥ यो मामेवमसंभूतो जानाति पुरुषोत्तमम् । ससर्ववित् भजतिमां सर्वभावेन भारत ॥ १९ ॥ इति गुह्यतमं शास्त्रं मिदमुद्दिष्टं मुक्तं मयानघ । एतद्विद्वद्वावुदिमान् स्यात् कृतकृत्यश्च भारत ॥ २० ॥

इति श्रीमद्वाभारते भीष्मपर्वणि श्रीमद्भगवद्गीतामू० पुरुषोत्तमयोगोनाम्  
पञ्चदशोऽध्यायः ॥१८॥ पर्वणितु ऊनचत्वारिंशोऽध्यायः ॥३२॥

श्री भगवानुवाच । अमयं सत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः । दानं दमश्च  
यज्ञश्च स्वाध्यायस्तपआर्जुनम् ॥ १ ॥ अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरपैशुनम् ।  
दयाभूतं च लोभं माद्वेषह्रीरचापलम् ॥ २ ॥ तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो

इसी कारण से लोक और वेदमें पुरुषोत्तम कहा जाता है । १८। जो मुझको संशय  
आदि रहित होकर पुरुषोत्तम जानता है वह सर्वज्ञ है और हे अर्जुन वही मुझको सब  
भाव और रीति से भजता है । १९। हे निष्पाप भरतवंशी अर्जुन मैंने यह अत्यन्त  
गुप्त शास्त्र तेरे आगे वर्णन किया इसको जानकर बुद्धिमान् ब्रह्मज्ञानी कर्मों से  
निवृत्त मोक्षको पाता है ॥ २०॥

अध्याय १६ ॥

श्रीभगवान् बोले कि भय न करना, चिचकी निर्मलता, ज्ञानयोगके निष्ठावान्,  
जितेन्द्री, श्रौतस्मार्त्तयज्ञ, वेद पढ़ना, तप, सरलभाव । १। अहिंसा, सत्य, क्रोध न करना,  
त्याग, शान्ति, चित्तकी शान्ती, पराये दोषों को न कहना, दुखी जीवोंपर दयाकरना,  
विपरीत दशासे रहित होना, मृदुता, लज्जा, नाचि कर्मों में किसी अंगको प्रवृत्त न  
करना । २। तेजसे प्रगल्भता, क्रोधयुक्त न होना, धैर्यता, पवित्रता, शत्रुतारहित होना,

the Vedas, I am called Purushottama. 18, The man of a sound judgment, who knows me as the Purushottam, knows all, and serves me in every principle. 19. Thus, O Arjuna, have I made known to thee this most mysterious Shastra; he who understands it shall be wise and shall have accomplished all that is fit to be done. 20.

## LECTURE XVI

### Of good and evil Destiny

Krishna.—The man who is born with Divine destiny is endowed with the following qualities: Fearlessness, purity of heart, settlement in the yug of wisdom, charity, self-restraint, sacrifices, study, penance, rectitude; (1) harmlessness, veracity, absence of anger, resignation, temperance, freedom from slander; universal compassion, uncovetousness, mildness, modesty, fickleness, (2) lustre, patience, fortitude, chastity, unrevengefulness, and free-



नातिमानिता । भवन्ति सम्पद् देवीमाभिजातस्य भारत ॥ ३ ॥ दम्भोदपोऽभि  
मानश्च क्रोध पाश्व्यमेवच । अज्ञ नचाभजातस्य पार्थसम्पद्मातुरीम् ॥ ४ ॥  
देवी सम्पद्धिमोक्षाय नियन्त्रायामासुरीमता । माशुच सम्पद् देवीमाभिजानोसि  
पण्डय । ५ ॥ ह्यभूतसर्गो लोपेस्मिन् देव आसुर एवच । देवो विस्तरा  
प्रोक्त आसुर पार्थमे नृणु । ६ । प्रवृत्तिञ्च निवृत्तिञ्च जना न विदुरासुरा । नशौचनापि  
द्याचागो ॥ सत्य तेषावद्यते ॥ ७ ॥ असत्यमपतिष्ठन्ते जगदापुरनीश्वरम् । अप  
रस्परसभूत किमन्यत्कामहेतुकम् ॥ ८ ॥ एता हाष्टमवष्टभ्य नष्टमानोऽवबुध्य ।  
प्रभवन्त्युग्रकर्माणि जयाय जगतेऽहिता ॥ ९ ॥ कामताश्रय दुष्पू दम्भमान

अभिमान न करना, हे भरतर्षभ देवी सम्पत्तिके आगे जन्मलेने वालोंको यह गुण  
होते है। ३। पाखण्ड, धनका गर्व इत्यादि अपनी महत्ता चाहना, क्रोध, कठोर बचन,  
अज्ञ न, यह गुण आसुरी सम्पत्ति के उदय होनेवाले के है । ४। देवी सम्पत्ति मोक्ष  
के निमित्त है और आसुरी सम्पत्ति सदैव बन्धन करनेवाली कही जाती है सो  
हे अर्जुन तू देवी सम्पत्तिके सम्मुख उत्पन्न हुआ है इस्ते शोकमत्कर । ५ । हे  
अर्जुन इस लोकमें जीवों के स्वभाव दो प्रकारके है एक देव दूसरा आसुर इनदोनों  
में देव स्वभावको तो ब्योरेवार कहा अब आसुर स्वभाव को कहता हूं । ६ । आसुर  
मनुष्य प्रवृत्ति निवृत्ति को नही जानकर अपवित्रहोते है और आचार सत्यता आदि  
से रहित होकर वह पुरुष संसारको भी यथार्थ रहित धर्माधर्म और मतिप्राप्ति खाली  
कहते हैं और यहभी कहते है कि इस का कोई ईश्वर नही है यह पुरुष छी के संग  
से उत्पन्न हुआ है इसका हेतु कामदेव है । ८ । ऐसे निर्बुद्धी भयानक कर्मों दुष्ट  
लोग जिनके धैर्यादि नष्ट होगये है वह ऐसे प्रमाणको आश्रयकरके जगत्के नाशके  
लिये उत्पन्न होते है । ९ । वह कपटी मानी भ्रष्टरती कठिनता से पूर्ण होने वाली  
कामनाओं को आश्रय करके अज्ञानतासे नीच कर्मों को अंगीकार करके संसारके

dom from vain glory, these are his who is born with the divine  
properties, O Bharat 3 He who is born with asur properties,  
is distinguished by hypocrisy, pride, presumption, anger, harsh-  
ness of speech and ignorance, 4 The divine character is for Moksha  
and the asur for bondage. I fear not, Arjuna for thou art born of the  
divine kind. 5 There are two kinds of beings in the world The divine  
nature has been fully explained. Hear what the evil nature is. 6  
Asuras know neither activity nor abstinence, nor is purity, veracity,  
or morality found in them. They say the world is unreal, without  
prop and without lord, brought about by mutual union and having  
lust for its cause. 8 Holding this view the lost soul, small-  
witted, of cruel deeds, vile beings become the ruin of the world. 9.  
Surrendering themselves to insatiable desires, seizing unlawfully  
by delusion, associated with hypocrisy, pride and passion and prac-

मद्विचिताः मोहाश्रुहीवाऽसदग्राहान् प्रवर्त्तन्तेऽनुचिप्रताः ॥ १० ॥ चिन्तामपरिमेयांच  
प्रलयान्तमुपाश्रिताः । कामोपभोगपरमा एतावदिति निश्चिताः ॥ ११ ॥ आशा  
पाशशतैर्वद्धाः कामक्रोधोपरायणाः । ईहन्ते कामभोगार्थमन्यायेनार्थसंचयान् ॥ १२ ॥  
इदमद्यमयालब्धमिदं प्राप्न्ये मनोरथम् । इदमस्तावमपि मे भावयन्त पुनर्धनम्  
॥ १३ ॥ असी मया हतः शत्रुर्हनिष्ये चापरानपि । ईश्वरोहमहं भे जी । सखोह  
बलवान्सुयो ॥ १४ ॥ अत्र्योगिजनवानस्मि कोन्योन्ति सदशोभया । यक्ष्येदा-  
स्याम मोक्षिये इत्यज्ञानविमोहिताः ॥ १५ ॥ अनेकचित्तविभ्रान्ता मोहजालस  
मावृताः । प्रसक्ता कामभोगेषु वतन्ति नरकेऽद्युचौ ॥ १६ ॥ अत्ममग्भाविताः  
स्तब्धा धनमानमद्वान्विताः । यजन्तेनाम यज्ञैस्ते दम्भेनावधिपूर्वकम् ॥ १७ ॥

नाशके लिये कर्मकर्षा होतेहैं । १० । वह लोग मृत्युकारी महा चिन्ताओंमें डूबे  
हुए हैं और कायादि भोगोंको जीवनका फल मानने वाले हैं । ११ । और जो कुछ इष्ट  
मान है उसको निश्चयकरके वहीमानतेहैं और आशाकूपी हजारों वन्धनों से बँधे हुए  
काम क्रोधहिको मुख्य स्थान समझने वाले कामभोग के लिये अनर्थों के द्वाराधन  
समूहों को चाहते हैं । १२ । यह प्राप्तहुआ इस मनोरथ को पाजंगा यह है और  
फिर यह सब मेरा धन होगा । १३ । यह शत्रु मैंने मारा और उन शत्रुओंको भी  
मारंगा मैं समर्थ हूँ भोगी हूँ श्रद्धात्मा हूँ बली हूँ और सुखी हूँ । १४ । धनी हूँ कुलवान्  
हूँ मेरे समान कौन है यज्ञादि करूंगा दान करूंगा आनन्द करूंगा ऐसे अज्ञानोंमें  
भूलाहुआ है । १५ । बहुतसे विषयोंमें प्र ग होने से चित्त से व्याकुल मोहकूपी वन्धन  
में बँधा हुआ काम और भोगों में मग्न चित्त पुरुष मझायेर नरकों में गिरने हैं  
। १६ । आनेको बड़ा मानने वाले स्तब्ध अहंकारी धनके मदमें भरे हुए मनुष्य

tising unholy vows, they prevail. 10. Because of their folly they  
adopt false doctrines, and continue to live the life of impurity, indul-  
ging in sensual appetites as the supreme good. 11. Fast bound  
by the hundred cords of hope, and given up to lust and anger, they  
seek by injustice to hoard wealth for the gratification of their  
inordinate desires. 12. This, today, has been acquired by me. I  
shall obtain this object of my heart. This wealth I have, and  
this shall I have also. 13. This foe have I already slain and others  
will I forthwith vanquish. I am Ishwara, and I enjoy; I am con-  
summate, I am powerful, and I am happy. 14. I am rich, and  
well-born; where is there another like unto me? I will make pre-  
sents at the feasts and be merry." Thus talk those who are infatua-  
ted by ignorance. 15. Confounded with various thoughts, entangled  
in the net of folly, and attached to the gratification of their lusts,  
they sink at length into the Naraka of iniquity. 16. Being  
self-concerted, stubborn and puffed up with wealth and pride, they  
perform nominal sacrifices for show and not according to divine

बलद्वार बल दर्प काम क्रोधश्च सञ्चिता । मामात्मपरदहेषु मद्रिप तोषयस्व  
 पका ॥ १८ ॥ तानह इद्विपित कूरान् ससारेषु नराधमान् । सप्तान्मयजन्मगु  
 भातासुरोन्वेय योनयु ॥ १९ ॥ आसुरीं येनिमापन्ना मूढा जन्मनि जन्मनि । ममा  
 प्राप्तेव कौन्तेय ततोऽप्यवमागतिम् ॥ २० ॥ त्रिविध नरकस्यद् द्वार नाशगमात्मन ।  
 काम क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्रय त्यजेत् ॥ २१ ॥ पतैर्विमुक्त कौ तेय तमौद्धारै  
 स्त्रिभर्नर । आचरत्यात्मन धेयस्ततो यातिपरागतिम् ॥ २२ ॥ य शास्त्र विधि  
 मनुष्य्य वत्तते कामकारत । न स सिद्धमवाप्नोति न सुख न परा गतिम् ॥ २३ ॥ तस्मा  
 च्छ्रुत्वा प्रमाणं ते कार्यार्थकार्येण्यवस्थितौ । ज्ञात्वाशास्त्रविधानां कर्मकर्तुं मिहार्हसि २४

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भगवद्गीता० देवामुरसम्पाद्विभागयोगोनाम

षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥ पर्वणितुचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४० ॥

पाखण्ड करके बुद्धिके विपरीत नाममात्र यज्ञों से पूजन करते हैं, १७ । अहंकार  
 बल दर्प काम क्रोध इत्यादि को आश्रय करके वा घातादिक कर्मों से अपने शरीर  
 से दूसरे शरीरोंमें मुक्त जगदात्मासे शत्रुता करते हैं । १८ । हे अर्जुन मैं अन्तरात्मा  
 उन शत्रुता करनेवाले निर्दयी सप्तसे अगम पापात्माओं को सदैव आसुरी योनियों  
 में डालताहूँ । १९ । फिर वह अज्ञानी आसुरी योनियों में पड़े हुए जन्मजन्मान्तर में  
 भीमुक्तको न पाकर अगम पशु पक्षी वृत्त आदिके शरीरों को पाते हैं । २० । यह  
 काम क्रोध लोभरूपी नरकके तीनों द्वार नाश करने वाले हैं इसकारणइन तीनोंको  
 त्यागकरे । २१ । हे अर्जुन इनतीनों नरकके द्वारोंसे अत्यन्त अलगहोकर भगवत्  
 भजन आदि कल्याणों को कर्षाहै तब परमोत्तम रूप भाते को पाताहै । २२ ।  
 जो मनुष्य शास्त्रबुद्धि को त्यागकर मनके इच्छारूपी कर्मों में प्रवृत्त होता है वह  
 मनकी शुद्धी को और सुखपूर्वक मोक्षको नहीं पाता है । २३ । इसहेतु से कर्तव्य  
 अकर्तव्य व्यवस्थाओं में तू शास्त्र को प्रमाणकर अर्थात् जिसकी जैसी विधिशास्त्र  
 में कही हुई है उसको ठीकही जानकर कर्मों को करना योग्य है । २४ ।

ordination. 17 Placing all their trust in pride, power, ostentation,  
 lust, and anger, they maliciously hate me in themselves and others  
 18 I cast down upon the earth those furious, abject wretches  
 those evil beings, in demoniacal wombs 19 Entering the wombs  
 of Asuras from birth to birth, at length not finding me, they go  
 to the infernal region 20 There are these three passages to Nara  
 ka lust, anger, and avarice, which are the destroyers of the soul  
 wherefore a man should avoid them. 21 Being freed from these  
 dark gates of sin, he advances his own happiness, and at length  
 he goes to the Highest end. 22 He who abandons the dictates of  
 his lusts, attains neither perfect happiness, nor the highest goal.  
 23 Wherefore, O Arjuna, thy authority is Shashtra, in determin  
 ing what is fit and unfit to be done, thou shouldst perform those  
 works which are declared by the commandments of the Shashtra. 24

अर्जुन उवाच । ये शास्त्रविधिमुत्सृज्य यजन्ते अद्वयान्विताः । तेषांतिष्ठान्तु  
 काकण सन्वमाहो रजस्तमः ॥ १ ॥ श्रीभगवानुवाच । विविधा भवति भद्रा  
 देहिनां सास्वभावजा । सात्त्विका राजसी चैव तामसी चेति तां शृणु ॥ २ ॥  
 सत्त्वानुरूपो सर्वस्य भद्रा भवति भारत । अज्ञागमोयं पुरुषो यो यच्छृणुः स  
 एव सः ॥ ३ ॥ यजन्ते सात्त्विका देवान् यक्षरक्षांसि राजसाः । प्रेतान् भूत-  
 गणांश्चाप्ये यजन्ते तामसाजनाः ॥ ४ ॥ अज्ञास्त्रविहितं धोरं तप्यन्तेऽप्ये तपो जनाः ।  
 दम्भाहङ्कारसंयुक्ताः कामरागद्वेष्टान्विताः ॥ ५ ॥ कर्मायन्तः शरीरस्था भूतप्राणम-  
 चेतसाः । माञ्जैवान्तःशरीरस्था तान् विद्यायात्तुर निश्चयान् ॥ ६ ॥ अहारस्त्वपि सर्वस्य

अध्याय ॥ १७ ॥

अर्जुन बोले हे श्रीकृष्णजी जो भद्रावान् पुरुष शास्त्रादिको त्यागकरके  
 ईश्वरका भजन पूजन करते हैं उनकी कौन निष्ठा है सतोगुणी वा रजोगुणी अथवा  
 तमोगुणी है, । १९ । श्रीभगवान् बोले कि अभिमानी पुरुषों की स्वभावसे उत्पन्न  
 होने वाली भद्रा पूर्व जन्म के धर्माधर्म से उत्पन्न है वह सतोगुणी रजोगुणी और  
 तामसी इनतीन प्रकारकी है इनतीनों प्रकारकी भद्राको कहता हूँ । २ । हे भरतवंशी  
 पूर्वकर्म संस्कार के अनुसार जो बुद्धिबल है उसीके अनुरूपसबकी भद्रा बनी हुई  
 रहती है यह भद्रा है जो जैसी भद्रावाला है वह उसी भद्रा के गुणोंसे प्रसिद्ध होता है  
 सतोगुणा पुरुष देवताओं को पूजते हैं रजोगुणी मनुष्य यज्ञ राजाओं को और  
 तमोगुणी लोग भेत भूतादिकों को सेवन करते हैं । ४ । वेदादि शास्त्रोंके विरुद्ध  
 धोरतपोंको जो मनुष्य करते हैं और पाखंड पूर्वक अहंकारमें भरे हुए पित्ता विचार  
 किये विषयकी इच्छा से बुरी वासना करके विषय साधन में संयुक्त हैं । ५ । वह  
 अज्ञानी शरीरकी इन्द्रियों को निबल करने वाले मुक्त शरीरवर्धी को भी अप्रसन्न

### Chapter XVII

#### The threefold division of Faith

Arjuna—How is that sacrifice characterised, Krishna, which is performed in faith, against the precepts of the Shashtra? Is it one of Satwa, Rajas, or the Tamas? 1. Krishna.—The faith of mortals is of three kinds, denominated after the three Gunas, Satwik, Rajasce, or Tamasee. Hear what these are. 2. The faith of every one accords with his nature; man is saturated with faith; he is that which his faith is. 3. Sattwic man worships the Devas; Rajasic the Yakshas and Rakshasas; the Tamasic worship the Pretas and the tribe of Bhutas. 4. Those who perform severe mortifications not authorized by the Shashtra, wedded to hypocrisy, pride, lust, passion, and strength, 5. Those fools torment the elements in the body, and are also planted in it. Know them to be of demon

त्रिविधो भवात् प्रिय । यज्ञस्तपस्तथा दानं तपः भेदं मिमंशुः ॥ ७ ॥  
 आयुः स्वचला रोग्यपुत्रप्रीतिविद्यर्घता । रस्यां स्निग्धा स्थिरा हृद्या आहारा  
 सात्त्विकप्रिया ८ ॥ कटुचम्ललवणात्युष्ण तीक्ष्णरुक्षविदाहिनः । अहारा राज  
 सत्त्वेषा दुःखशोकप्रयमदा ॥ ९ ॥ पातयाम गतरसं पूति पथ्युपितञ्च यत् ।  
 उच्छिष्टमपि चामेध्यं भोजनं तामसाप्रियम् ॥ १० ॥ अफलाकाङ्क्षाभयहो विधि  
 दृष्टो य इज्यते । यष्टव्यमेवेति मनः समाधाय स सात्त्विकः ॥ ११ ॥ अभिसन्धाय  
 तु फलं दम्भार्थमपि चैव यत् । इज्यत अरतश्रेष्ठ त यज्ञं विद्धि राजसम् ॥ १२ ॥  
 विधिहीनमसृष्टान्नं मन्त्रहीनमदक्षिणम् । अन्नाविरहितं यज्ञं तामसं परिचक्षते ॥ १३ ॥  
 देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजनं शौचमार्जवम् । ब्रह्मचर्यमहिंसा च शरीरतप उच्यते ॥ १४ ॥

करनेवाले हैं उनको असुरों में निश्चय करनेवाला जानो । ६। अन्नादि भोजन भी  
 सबको तीन प्रकार का प्यारा है इसी प्रकार यज्ञ तप दान भी तीनही प्रकार का  
 प्यारा है इनका विभाग सुनो । ७ । जीवन, उत्साह, सामर्थ्य, निरोगता, सुख,  
 प्रीतिदायक वस्तु, रसीले कोमल स्थिर अर्थात् शरीर में रसके द्वारा विलम्बतक रहने  
 वाले, देखने में सुन्दर हृदयको प्रसन्नकरनेवाले, ऐसे गुणयुक्त भोजन सात्विकी  
 पुरषोंको प्यारे होते हैं । ८ । कड़ुप, नोनके, खट्टे, अति उष्ण, चर्परे, रुखे, अ-  
 त्यन्त जलन करनेवाले, दुःख शोक और रोगोंके उत्पन्नकरनेवाले भोजन रजोगुणी  
 को प्यारे हैं । ९ । दुर्गन्ध युक्त, वासी, उच्छिष्ट, अभक्ष्य भोजन तामसी लोगोंको  
 प्यारा है । १० । यज्ञही करनेके योग्य है इसप्रकार अपने मनको समाधान करके  
 फल के न चाहनेवाले पुरषोंसे जो आवश्यकताके लिये रचाहुआ यज्ञ कियाजाता  
 है वह सात्विकी कहाजाता है । ११ । हेभस्तर्पण, फलकी इच्छा मनमें धारण कर  
 पाखण्ड और कपट के निमित्त जो यज्ञ कियाजाता है उस यज्ञको राजसी जानो  
 । १२ । शास्त्रकी रीति अन्नदान और मन्त्रदाक्षिणा रहित श्रद्धा से निहीन यज्ञको  
 तामसी यज्ञजानो । १३ । देवता ब्राह्मण और माता पिता आचार्य इत्यादि गुरु वा

nature. 6 There are three kinds of food which are dear to all men. So are sacrifice, austerity and charity. Hear what are their distinctions. 7 The food dear to Sattwik men is such as increases life, energy, vigour, health, joy and relish. It is tasteful, nourishing, substantial and agreeable. 8 The food dear to Rajasic, is bitter, sour, saltish, over hot, pungent, dry and burning, producing pain, grief and sickness. 9 The food dear to Tamasic men is that which is stale, changed, putrid, refuse and impure. 10 That law sanctioned sacrifice is Sattvic, which is done without the desire of reward, with a firm belief that it is a duty. 11 The sacrifice offered with a view to fruit, and with hypocrisy, is of the Rajas. 12 That sacrifice is Tamas which is contrary to law, without the distribution of food, without mantras, gifts and faith. 13 Body

अनुद्वेगकरं धान्यं सत्त्वं त्रिधाहितञ्च यत् । स्वाध्यायाम्यसनश्चैव बालमयं तप उच्यते ॥ १५ ॥ मन प्रसाद सौम्यत्वं मौनमात्मविनिग्रहः । भावसमुद्धारित्वे तत्तपो मानसमुच्यते ॥ १६ ॥ श्रद्धया परया तप्त तपस्तत्पञ्चविधं नरैः । एकला कांक्षामियुक्तैः सात्त्विकं परिचक्षते ॥ १७ ॥ सत्कारमानपूजार्थं तपो दम्भेनैव यत् । क्रियते तादृशं प्रोक्तं राजस चलनभुजम् ॥ १८ ॥ मूढग्राहेणात्मनो यत् पादया क्रियते तपः । परस्पो रसादनार्थं वा तत्तामसमुदाहृतम् ॥ १९ ॥ दातव्यं मतिं तद्दानं दीयते तु तप कारिणे । देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्त्विकं स्मृतम् ॥ २० ॥ यत्तु प्रयुषकारार्थं फलमुद्दिश्य

ब्रह्मज्ञानियों का पूजन, पावित्र्यता, सरलता, सत्यता, ब्रह्मचर्य, अहिंसा यह सब देह क तपकहे जाते हैं । १४ । जो वचन दूसरेका सुखदाई, सत्यता, स्नेहता सहित सबका हितकारी है वह और वेदका अभ्यास यह वाणीकी तपस्या कही जाती है । १५ । प्रमत्तता चित्तशुद्धी सौम्यता वचनको आशीन रखना मनका रोक्ना व्यवहार में औरोंके साथ निश्ठलता यह मानसीतप कहाता है । १६ । फलकी इच्छा न करनेवाले सावधान चित्तपुरुष देह मनवाणी स जो तीन प्रकारकी तपस्या श्रद्धा पूर्वक करते है वह सात्त्विकी कहाजाता है । १७ । जो तपस्या अपनेमान सत्कार और पूजनके निमित्त कपटसे कीजाती है वह तपस्या इसलोकमें फलसे रहित, नाशवान् रजोगुणी कही जाती है । १८ । अपनेके से उत्पन्न दुराग्रहसे अपने शरीर की पीड़ा अथवा दूसरेके नाशके निमित्त जो तप किया जाता है वह तामसी कहाता है । १९ । यह दानके योग्य है इस बुद्धि से फलकी इच्छा रहित जो दान अनुपकारी पात्रको देशकालके विचारसे पुण्य क्षेत्रादिमें दिया जाता है वह सात्त्विकी दान कहा जाता है । २० । जो दान बदले के लिये अथवा फलको ध्यान

austerity consists in the worship to the Devas, the twice born, the teachers and learned men, in chastity, rectitude and freedom from injury. 14 Oral austerity consists in gentleness, justness, kindness, and benignity of speech and attention to the religious studies 15 Mental austerity consists in good temper, benevolence quietude, self restraint, and purity of purpose 16 This threefold austerity done by men, being warm in fervid faith, regardless of the fruit, and with devotion, is Satwic. 17 The zeal which is shown by hypocrisy, for the sake of the reputation of sanctity, honor, and respect, is said to be of the Rajo Guna, and is inconsistent and uncertain 18 The austerity which is exhibited with self torture, by the fool, without examination, or for the purpose of injuring another, is of the Tamo Guna. 19 That charity which is bestowed, with the idea of duty, on one who is unable to return it, in due place and season, and to proper objects, is of the Satwic. 20 That which is given in expectation of a return, or for

चा पुन । दयितेच परिविलष्ट तद्दान राजसंस्मृतम् ॥ २१ ॥ अदेशकाले यद्दानमपात्रे  
 श्यश्च दीयते । असत्कृतमथवात तत्तामसमुदाहृतम् ॥ २२ ॥ औतस्सदिति  
 निर्देशो ब्रह्मणस्त्रिविध स्मृत । ब्राह्मणास्तेन वेदाश्च यज्ञाश्च विहिता पुरा ॥ २३ ॥  
 तस्मादोमित्युदाहृत्य यज्ञदानतप क्रिया । प्रयत्नन्ते विधानोक्ता सतत ब्रह्मवादिनाम्  
 ॥ २४ ॥ तदित्यनभिः स्याद्य फल यज्ञतप क्रिया । दानक्रियाश्च विविधा क्रियते  
 मोक्षकाक्षिभिः ॥ २५ ॥ सद्भावे साधुभावे च सदित्यतत् प्रयुज्यते । प्रशस्तेकर्म  
 णि तथा सच्छब्द पार्थयुज्यते ॥ २६ ॥ यज्ञ तपसि दान च स्थिति सदितिचोच्यते ।  
 कर्म चैव तदर्थं सदित्येवाभिधीयते ॥ २७ ॥ अथ यथादुतदत्त तपस्तप्तं दत्तं च

करके धन व्ययहोनेकीचिन्ता समेत कियाजाता है यह रामसी कहाताहै । २१ । जो दान  
 देशकालकेविपरित अपात्रोंकोअपतिष्ठा और अनादरसेदियाजाताहैउसको तामसीकहते  
 है । २२ । ओप्ततस्त यह ब्रह्मकानाम तीन प्रकारका हाताहै पूर्वकालमें उसीब्रह्मके  
 नामसे ब्राह्मण वा चारोवेद और यज्ञप्रकट किये गये । २३ । इसकारण ओप्तका उ-  
 च्चारण करके ब्रह्मवादी अर्थात् वैदिक लोगों के यज्ञदान तपमादि सवाक्रिया जो  
 कि वेदविधि में कही है सदैव होती रहती है । २४ । कर्मफल को अंगीकार न कर  
 के तब कहकर मोक्षके चाहने वालं नानाप्रकारके यज्ञ तप दान आदिकी क्रिया  
 ओंको करतेहै । २५ । हेमर्जुन यहसत्तनाम श्रेष्ठहै जैसे वेदभाव और साधुओं के भाव में  
 संयुक्त कियाजाता है इसी प्रकार उत्तम कर्ममेंभी सत्वशब्द संयुक्त कियाजाता है  
 । २६ । यज्ञतप और दान में जो निष्ठा है वह सत् नाम कही है और ईश्वरकी  
 प्राप्ति के निमित्त जो कर्म है वहभी सत्तनाम कहाजाता है । २७ । श्रद्धा रहित जो

fruit and with reluctance, is Rjasic 21 That which is given  
 out of place and season, and to unworthy objects, ungraciously  
 and unskillfully, is pronounced to be of the Tamo-Guna. 22 ओम् Om  
 तत् Tat गत् Gat, are the three mystic characters used to denote  
 the Duty. By him in the beginning were created the Bramhans,  
 the Vedas and sacrifices. 23 Hence the Vedic sacrifices, gifts  
 and austerities of the expounders of the word of God, constantly  
 begin with the word Om ! 24 With Tat begin the acts of  
 sacrifices and of gift, performed by aspirants of moksh, not wish-  
 ing for fruit. 25 The word Sat is used for reality and goodness.  
 Sat is also applied to deeds which are praiseworthy. 26 Steadfast-  
 ness in sacrifices, austerity and gifts is called Sat. Deeds which  
 are performed on that account are also named Sat. 27 What  
 ever is performed without faith, whether it be sacrifices, deeds of

यत् । असदित्युच्यते पार्थ न च तत् प्रेत्यनो इह ॥ २८ ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ  
इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि श्रीमद्भगवद्गीतापर्वणि सू० श्रद्धात्रयविभाम  
योगोनाम सप्तदशोऽध्यायः ॥१७॥ पर्वणि एकचत्वारिंशोऽध्यायः ॥४१॥

अर्जुन उवाच ॥ संन्यासस्य महाबाहो तवमिच्छामि वेदितुम् । त्यागस्यच  
दृष्टीकेश पृथक् केशिनिपूदन ॥ १ ॥ श्रीभगवानुवाच । काम्यानां कर्मणां न्यासं संन्यासं  
कवयो विदुः । सर्वकर्मफलत्यागं प्राहुस्त्यागं विचक्षणाः ॥ २ ॥ त्याज्यं दोषवदित्येके  
कर्म प्राहुर्मनीषिणः । यज्ञदानतपः कर्म न त्याज्यमिति चापरे ॥ ३ ॥ निश्चयं शृणु मे तत्र  
त्यागो भरतसत्तम । त्यागो हि पुरुषभ्यामत्र त्रिविधः सम्प्रकीर्तितः ॥ ४ ॥ यज्ञदानतपः

दान तप यज्ञादिक किये जाते हैं हे अर्जुन वह असत् है वह न इसलोक में न परलोक  
में गिने जाते हैं । २८ ।

अध्याय १८ ॥

अर्जुन बोले हे महाबाहु दृष्टीकेश केशी मूढ़न में त्याग और संन्यास को मूल  
समेत जानना चाहता हूँ । १ । श्री भगवान् बोले कि जिनमें किसी प्रकार की  
इच्छा है ऐसे कर्मों के त्याग को सूक्ष्म पदार्थदर्शी पुरुषोंने संन्यास कहा है और  
पंडित लोगों ने सब कर्म फलों के त्यागको त्याग कहा है । २ । चिन्तके जीतने  
वालों ने केवल कर्मोंहीका त्याग दोषयुक्त रागादिके समान त्याज्य कहा है और  
परमात्मा के चाहने की इच्छा करने वालों ने यज्ञ दान और तपको नहीं त्यागने  
के योग्य कहा है । ३ । हे भरतवंशियों में अष्ट अर्जुन उस कर्म के त्यागने में  
धैर्यभी निश्चयको तू सुन हे पुरुषोत्तम त्यागतीन प्रकारका कहा है । ४ । यज्ञ दान तप

charity or mortifications, is called Asat; it is neither for this world  
nor for the next. 28.

## LECTURE XVIII

### OF SALVATION

Arjuna.—I wish, O strongarmed ! to know the principle of  
Sanyasa and of Tyaga, O Keshi-slayer. 1. Krishna.—Sages know  
that Sannyasa means the forsaking of all actions; the wise say  
that Tyaga is the forsaking of the fruits of every action. 2.  
Certain philosophers declare that work should be abandoned as evil,  
whilst others say that deeds of sacrifice, mortification and charity  
should not be forsaken. 3. Hear from me, O best of Bharats, the  
truth about this Tyaga. Tyaga, O tiger of men, is pronounced to  
be of three natures. 4. Yajna, Dana and Tapas are not to



कर्म न त्याज्य कार्य मेव तत् । यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम् ॥ ५ ॥  
 एतान्यपि तु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा फलानि च । कर्तव्यानीति मे पार्थ निश्चित  
 मतमुत्तमम् ॥ ६ ॥ नियतस्य तु सन्यास कर्मणो नोपपद्यते । मोहात्तस्य परि  
 त्यागस्तामसः परिकीर्तितः ॥ ७ ॥ दुःखमित्येव यत् कर्म कायकलशमयात्तद्य  
 जेतुः । स कृत्वा राजस त्याग नैव त्यागफलं लभेत् ॥ ८ ॥ कार्यमित्येव यत्  
 कर्म नियतं कुरुतेऽर्जुन । सङ्गं त्यक्त्वा फलञ्चैव सत्यागः सात्त्विको मतः ॥ ९ ॥  
 न द्रष्टव्यः कुशलं कर्म कुशले नातु पज्जते । त्यागी सत्त्वसद्भाविष्ठो मेधावी छिन्नस  
 शयः ॥ १० ॥ न हि ददभृता शक्यं त्यक्तुं कर्माण्यशेषतः । यस्तु कर्मफलत्यागी  
 त्यागीत्यभिधीयते ॥ ११ ॥ अनिष्टमिष्ट मिश्रञ्च निवर्धय कर्मणः फलम् । भवत्य

और कर्म यह चारों त्यागके योग्य नहीं है वह अवश्य करनेके ही योग्य है क्योंकि  
 यज्ञ दान तप बुद्धिमानों के मनको पवित्र करनेवाले हैं । ५ । संगको और कर्म  
 फलों को त्याग करके यज्ञ दान तपादिक कर्म करने के योग्य हैं यह मेरा संमत  
 अत्यन्त निश्चय किया हुआ उत्तम है । ६ । करने के योग्य कर्मोंका त्याग उचित  
 नहीं है मोह से उसका त्याग करना तामसी कहा गया है । ७ । यह कर्म दुःख रूप  
 है ऐसा मानकर शरीरके क्लेशके भयसे जो त्याग करता है वह इस राजसी त्याग  
 के चिह्न श्रुद्धी रूपफलको नहीं पाता है । ८ । हे अर्जुन कर्मको करने के ही योग्य  
 मानकर संगफलको त्यागके जो कर्म किये जाते हैं उसको सात्त्विकी त्यागमाना है  
 । ९ । दुःखदाई कर्म को बुरानही कहता और सुखदायी कर्ममें प्रीति नहीं करता राग  
 द्वेष से रहित सतोगुण से भरा हुआ त्यागी अर्थात् संन्यासी है बुद्धिका स्वामी  
 होकर छिन्न संशय कहा जाता है । १० । देहाभिमानी से सर्व कर्म त्यागकरने महा  
 काठिन और असंभव है जो कर्मोंके फलोंका त्यागी है वही त्यागी कहा जाता है । ११ ।  
 जो त्यागी नहीं है उन के कर्मों का फल मरने के पीछे तीनप्रकारका होता है अर्थात्

for so long they should be performed, for Sacrifices, charity, and mortification are purifiers of the philosopher 5 It is my ultimate opinion and decree that such works as those ought to be done forsoaking attachment and fruit 6 Renunciation of works which are prescribed, is improper The forsaking of them through delusion is considered as Tamasa 7 The forsaking of a work because it is painful, and from the dread of bodily affliction is Rajas and he who thus leaves it undone, derives no benefit from it 8 The work which is performed as a duty, forsaking attachment and fruit, that forsaking is deemed Satwic 9 The conqueror imbued with Satwa wise and free from doubt, is neither vexed at adversity nor exults in success 10 No corporeal being is able totally to restrain from works He is denominated a Tyger, who forsakes the fruit of action 11 The fruit of action is threefold good, evil

त्यागिनोऽप्येत्य न तु सन्न्यासिनां वाच्यम् ॥ १२ ॥ पञ्चैतानि महाबाहो कारणानि  
निषोषमे । सांख्ये कृतान्ते प्रोक्तानि सिद्धये सर्वकर्मणाम् ॥ १३ ॥ अधिष्ठानं तथा  
कर्त्ताकरणञ्च पृथक्निषण्डम् । विविधाश्च पृथक् चेष्टा दैवं चैवान्न पञ्चमम् ॥ १४ ॥ शरीर  
वाङ्मनोऽभिर्यत् कर्म प्रारभते नरः । न्याय्यं वा विपरीतं वा पश्येत् तत्स्यहेतवः  
॥ १५ ॥ तत्रैवं सति कर्त्तारमात्मानं केवलन्तुयः । पश्यत्यकृन्तुदित्यात्र स पश्यसि  
दुर्मतिः ॥ १६ ॥ यम्य नाहंकृतो भावो बुद्धिर्यस्य न तप्यते । हृत्पाप स  
इमोल्लोकात्त हान्त न निवध्यते ॥ १७ ॥ ज्ञानं ज्ञेयं परिज्ञाता त्रिविधा कर्मचो  
दना । करणं कर्म कर्त्तेति त्रिविधा कर्मसंग्रहः ॥ १८ ॥ ज्ञानं कर्मश्च कर्त्ता च  
विधेय गुणभेदतः । प्रोच्यते गुणसंस्थाने यथावच्छृणुष्वान्यथे ॥ १९ ॥ सर्वभूतेषु  
अच्छा दुरा और मध्यम परन्तु संन्यासियों का कुछ नहीं होता है । १२ । हे महा-  
बाहु सबकर्मों के सिद्धी के लिये यह पांचकारण सांख्य शास्त्रों में कहे हैं । १३ ।  
स्थूल शरीर, कर्त्ता और दशोंइन्द्री और नानाप्रकारकी पृथक् २ चेष्टा और इन में  
पांचवें दैव हैं । १४ । मनुष्य जो कर्म धर्मरूप वा अधर्मरूप मनवाणी और देहके  
द्वारा प्रारंभ करता है उसी के यह पांचों हेतु हैं । १५ । ऐसी दशा होने पर जो  
बुद्धिकी म्लानता से केवल आत्माको कर्त्ता देखता है वह पाप रूप बुद्धिरखने  
वाला नहीं देखता है । १६ । मैं कर्म का कर्त्ता हूँ जिसको कि यह अहंकार नहीं है  
और जिसकी बुद्धि उस में लिप्तनहीं होती है इनलोकों कोभी जीतकर नहीं मारता  
है और न वन्दनमें होता है । १७ । ज्ञान ज्ञेय और परिज्ञाता यहतीन प्रकारवाले  
कर्मों की चेष्टा होती हैं इन्द्रियां कर्म और कर्त्ता यह तीन प्रकार के कर्मों के निवास  
स्थान हैं । १८ । ज्ञान कर्म कर्त्ता गुणों के विभागसे सांख्यशास्त्र में तीन प्रकार  
के कहे जाते हैं इनकी भी व्यवस्थाको सुन । १९ । जिस ज्ञान से पृथक् रूपवाली

and mixed, which befalls, after death to the non relinquisher, but never to the relinquisher. 12. Learn, O Arjuna, these five causes for the accomplishment of all actions, declared in the Sankhya system. 13. The body, the actor, the implements of various sorts, several contrivances, and fifthly Providence. 14. The work which a man does, either with his body, speech or mind, whether lawful or unlawful, has these five causes. 15. He then who after this because of the imperfection of his judgment, beholds no other agent, than himself, is of unsound mind and sees not. 16. He who is free from pride, and whose judgment is not affected, although he should destroy those people, neither kills nor is lound. 17. Knowledge, knowable and knower are the three motives to action; the means, the action and the agent are the factors of action. 18. Knowledge, action, and agent are each distinguished in the category of qualities by the influence of the three Gunas. Hear their true nature

येनैक भावमव्ययमाश्रते । अविभक्तं विभक्तेषु तज्ज्ञानं विद्विषात्त्विकम् ॥ २० ॥  
 पृथक्त्वेन ॥ यज्ज्ञानं नानाभावात् पृथग्विधान् । वेत्ति सर्वेषु भूतेषु तज्ज्ञानं  
 विद्विषात्त्विकम् ॥ २१ ॥ यत्तु कृतस्नवदेकस्मिन् कार्ये सकलहेतुकम् । अतत्त्वार्थं  
 धद्वेष्य तत्तामसमुदाहृतम् ॥ २२ ॥ नियतं सङ्गरहितमरागद्वेष्यतः कृतम् । अफलप्रे-  
 मसुता कर्म यत्तत् सात्त्विकमुच्यते ॥ २३ ॥ यत्तु कामेष्वनाकर्म साहङ्कारेणवापुन ।  
 क्रियते बह्विधापास तद्राजसमुदाहृतम् ॥ २४ ॥ अनुबन्धं हर्षं हिंसाभनप्रेक्ष्यच  
 पौरुषम् । मोहादारभ्यतके मर्थत्तत्तामसमुच्यते ॥ २५ ॥ सुकसंगो नहं वादी  
 धृत्युत्साहसमान्वतः । सिद्ध्यासद्वयोर्निर्विकारः कर्त्ता सात्त्विक उच्यते ॥ २६ ॥  
 रागी कर्मफलप्रेप्सुर्लुब्धो हिंसाभक्तोऽशुचिः । हर्षयोकान्वतः कर्त्ता राजसः

छाष्टि में न्यूनाधिकता रहित विना भेद एक चिन्मात्र रूपको देसता है उस ज्ञानको सात्विकी जानो । २० । जिसज्ञान से सब छाष्टि में अनेक भाव भिन्न प्रकार के जानता है वह ज्ञानराजसी है । २१ । और जो ज्ञान एक कार्य में परिपूर्ण के समान प्रवृत्त है वह हेतु से रहित परमार्थ सिद्धान्त नहीं है वह ज्ञानतामसी है । २२ । कर्म फल न चाहने वाले पुरुषसे जो शास्त्रोक्त कर्म सदैव संग और राग द्वेषसे रहित किया जाता है वह सात्विकी कहाजाता है । २३ । फिर फलकी इच्छा रखने वाले जो अत्यन्त परिश्रम का कर्म अहंकार युक्त होकर करते हैं वह राजसी कहाता है । २४ । जो परिणाम फल और धनका स्वर्च वा दूसरेका कष्ट वा अपनी सामर्थ्यके बल का विचार न करके मोहसे कर्म किया जाता है वह तामसी है । २५ । संग रहित अपने को कर्त्ता न मानने वाला धैर्य और उत्साहसे पूर्ण कर्मों की सिद्धी वा असिद्धी में विपरीत दशासे रहित है ऐसा कर्त्ता सात्विकी कहाता है । २६ । विषयों में भीति रखनेवाला दूसरेके धनका लोलुप पर पीड़ा

19 That knowledge is satwik by which one indestructible being is seen in all beings, indivisible in the divisible 20. That knowlege is Rajas, which regards among all beings, plurality in substance, and variety in quality, as distinct 21 That knowledge is Tamas, which clings to a single object as if it were the whole, without reason, without grasping the reality and narrow 22. That action is Satwik which is done as duty by one who does not desire for fruit, without attachment, love or hate 23 That action is Rajas which is performed to gratify desire by selfishness with great effort 24 The action is Tamas, which is undertaken through ignorance and folly, and without any fore sight of its fatal and injurious consequences. 25 The actor is Satwik, who is free from attachment, pride and arrogance, is endued with fortitude and resolution, and is unaffected by success or failure 26 That actor is Rajas, who is ambitious,

परिकीर्तित ॥ २७ ॥ अयुक्त प्राकृत स्वच्छ शठो नैकृति कोऽलस । विषादीर्षीर्ध  
 सूत्रीश्च कर्त्ता तामस उच्यते ॥ २८ ॥ दुस्संभेदं घृतेष्वैव गुणतस्त्रिविधं गुणु । प्रोच्य  
 मानमशेषेण पृथक्त्वेन धनंजय ॥ २९ ॥ प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च कार्यं कार्यं भयामये ।  
 बन्ध मोक्षञ्च या वेत्ति बुद्धिः सा पार्थ सात्विकी ॥ ३० ॥ यथा धर्ममधर्मं च कार्यं चा  
 कार्यं मेव च । अथवा घट् प्रजानां तु बुद्धिः सा पार्थ तामसी ॥ ३१ ॥ अधर्मं धर्मं मिति पा  
 मन्यते तमसावृता । सर्वाणाम् विपरीतांश्च बुद्धिः सा पार्थ तामसी ॥ ३२ ॥ धृत्यापया  
 धारयते मनप्राणेंद्रिय तक्रया । योगेनाव्यभिचारिण्या धृतिः सा पार्थ सात्विकी ॥ ३३ ॥  
 यथातु धर्मं कामार्थान् धृत्या धारयते ज्ञेन । प्रसङ्गेन फलाकांक्षी धृतिः सा पार्थ राजसी

देनेवाला अपवित्र भिय अभिय मिलने में प्रसन्न और सुख दुःख से संयुक्त कर्त्ता  
 राजसी कहा जाता है । २७ । असावधान, प्राकृत, किसी का आदर न करनेवाला,  
 शठ, छली, दूसरे का अपमान करनेवाला, कार्यासक्त, आलसी, विषादी, दीर्घमूत्री  
 ऐसा कर्त्ता तामसी कहा जाता है । २८ । हे अर्जुन गुणों से बुद्धि और धैर्य के  
 तीन प्रकारके भेद मैं तुमसे पृथक् २ करके कहता हूँ उन सबों को सुनो । २९ ।  
 जो बुद्धिमान प्रवृत्ति निवृत्ति कार्य अकार्य भय निर्भयता कर्म संबंध बंधन और  
 मोक्षको जानते है वह सात्विकी होते हैं । ३० । जिस बुद्धिसे धर्मधर्म और का-  
 र्यकार्य को खदित और संदिग्ध जानता है उसकी राजसी बुद्धि कहाती है । ३१ ।  
 हे अर्जुन जो अज्ञानसे ढकी हुई बुद्धिसे अधर्म को और मय अर्थों को छुटा मानते  
 है उनकी बुद्धि तामसी कहाती है । ३२ । जो चित्तवृत्ति के रोकने के द्वारा जिस  
 समाधि में प्रवृत्त होकर धैर्यता से मनप्राण और इन्द्रियों की क्रियाओं को द्रुतक  
 नियत करता है वह धैर्य सात्विकी है । ३३ । हे अर्जुन जिस धैर्य से धर्म अर्थ  
 कामों को करता है, अथवा धर्मादि के संबंध से फल का आकांक्षी है वह राजसी

who longs for the fruit, who is avaricious, cruel, impure, and a  
 slave to joy and grief 27 The agent is Tamas who is inattentive,  
 vulgar, stubborn, dissembling, mischievous, indolent, melancholy,  
 and dilatory 28 Hear Dhananjaya! the threefold divisions of  
 understanding and firmness, according to the Gunas, which are  
 about to be explained to thee distinctly and without reserve 29  
 The understanding which can determine action and inaction  
 duty and non-duty, fear and non fear, liberty and bondage, is  
 Satwic 30 That understanding is Rajas, O Partha! which does not  
 conceive justice and injustice, duty and non-duty 31 That understand-  
 ing is Tamas which, overwhelmed in darkness, mistakes injustice  
 for justice, and sees all things subverted. 32. That is Satvik  
 firmness of unerring yog by which one restrains the activity of the  
 mind and organs. 33. That interested firmness is Rajas by which  
 a man, from views of profit, persists in Dharm, pleasure and

॥ ३४ ॥ यथा स्वप्न भयं शोकं विषादं मदमेव च । न विमुञ्चति दुर्मैघा मृतिः सा गार्ध  
तामसी ॥ ३५ ॥ सुखं त्विदानीं त्रिविधं शृणु मे भरतर्षभ । अभ्यासाद्रमते यत्र दुःखं  
स्तच्च निगच्छति ॥ ३६ ॥ यत्तदग्रं विषमैव पारणामेऽमृतोपमम् । तत् सुखं सात्त्विकं  
प्रोक्तमात्मबुद्धिप्रसादजम् ॥ ३७ ॥ विषयेन्द्रियसंयोगाच्च तदग्रंऽमृतोपमम् । परिणामे  
विषमिषं तत् सुखं राजसंभूतम् ॥ ३८ ॥ यदग्रे चानुबन्धे च सुखं मोहममात्मनः ।  
निद्रालस्यप्रमादोत्थं तत्तामसमुदाहृतम् ॥ ३९ ॥ न तदस्ति पृथिव्यां वा दिवि देवेषु  
चापुनः । सत्त्वं प्रकृतिजैर्मुक्तं यदेभिः स्यात् त्रिभिर्गुणैः ॥ ४० ॥ ब्राह्मणक्षत्र  
यदिशां शूद्राणाञ्च परन्तप । कर्माणि प्रविभक्तानि स्वभावाप्रभवैर्गुणैः ॥ ४१ ॥

धैर्य है । ३४ । जिसकी बुद्धि विगड़ी हुई है वह जिस धीरज से स्वप्न, भय, दुःख  
व्याकुलता और चिन्तकी अस्वाधीनता को धारण करता है वह धैर्यता तामसी  
कही जाती है । ३५ । हे भरतवंशी अर्जुन अब उन तीन प्रकारके सुखोंको कहता हूँ जिन  
सुख समाधियों में अभ्यास करके रमता है और दुःखके अन्त होनेपर मोक्षको पाता  
है । ३६ । जोकि वह सुख प्रथम विष के समान अन्तमें अमृत के समान होता है वह  
बुद्धि की निर्मलता से उत्पन्न हुआ सात्त्विकी सुख कहलाता है । ३७ । जो विषय  
इन्द्रियों के योगसे आदि में अमृत के समान है और अन्त में विष के तुल्य है उस  
सुखको राजसी कहते हैं । ३८ । जो स्वप्न आलस्य और भूल से उत्पन्न हुआ  
सुख है वह आदि में और अन्त में बुद्धिको भ्रान्तनेवाला है वह तामसी है । ३९ ।  
वह पृथ्वी के जड़ चैतन्य जीवों में और स्वर्ग के देवताओं में भी नहीं है जोकि  
तीनों गुणों से रहित प्रकृतिनाले होय । ४० । हे शत्रुहन्ता अर्जुन स्वभाव अन्य  
गुणों के कारण ब्राह्मण क्षत्री वैश्य और शूद्रों के पृथक् २ कर्म होते हैं । ४१ ।

wealth 34 That firmness is Tamas by which a fool departs not from  
sloth, fear, grief, melancholy, and folly 35 Now hear from me,  
Bharatarshabh, the three kinds of pleasure That pleasure which  
a man habitually enjoys, wherein he finds the end of his pains, that  
which in the beginning is as poison, and in the end as nectar  
and which springs from the blissful knowledge of self, is called  
Sattvik 37 That pleasure is Rajas which arises from the conjunction  
of the organs with the objects, which in the beginning is as nectar  
and in the end as a poison. 38 That pleasure is Tamas which in  
the beginning and the end stupefies the soul, and which arises  
from drowsiness, idleness, and heedlessness 39 There is no-  
thing on earth or amongst the hosts of heaven, which is free from  
these three Gunas born of matter 40 The respective duties of Brah-  
mans, Kshatriyas, Vashyas, and Shudras, are also deter-  
mined by the qualities which are in their constitutions. 41

शमो दमस्तपः शौचं क्षान्तिरार्जवमेव च । ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं ब्रह्मकर्मस्वभा-  
वजम् ॥ ४२ ॥ शौर्यं तेजो धृतिर्हाद्वयं युद्धे चाप्यपलायनम् । दानमीश्वरमायुध-  
क्षेत्रं कर्म स्वभावजम् ॥ ४३ ॥ क्षेमो रक्षणं दण्डयानिष्यं वैश्यकर्म स्वभावजम् ।  
परिचर्यात्मकं कर्म शूद्रस्यापि स्वभावजम् ॥ ४४ ॥ स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः  
संतिष्ठि कर्मते नरः । स्वकर्मोन्निरतः सिद्धिं यथा विन्दति तच्छृणु ॥ ४५ ॥  
यतः प्रवृत्तभूतानां येन सर्वमिदं ततम् । स्वकर्मणा तमश्चर्यं सिद्धिं विदति  
मानवः ॥ ४६ ॥ श्रेष्ठान् स्वधर्मां विगुणः परधर्मान् स्वनुष्ठितात् । स्वभावनि-  
यतं कर्म कुर्वन्नाप्नोति किञ्चिदपम् ॥ ४७ ॥ सहजं कर्म कौन्तेय सदोपमपि न  
त्यजेत् । सर्वारम्भाभि दोषेण धूमेनाग्निरिषावृताः ॥ ४८ ॥ असक्तबुद्धिः सर्वध-

शम, दम, तप, शौच, क्षान्ति, आर्जव, ज्ञान, विज्ञान, अद्वय, यह पूर्व कर्म के संस्कार  
से उत्पन्न हुये ब्राह्मण के कर्म हैं । ४२ । पराक्रम, तेज, धैर्य, चातुर्यता, युद्ध के  
सम्मुख होकर न भागना, ईश्वरभाव अर्थात् अपराधियों को दण्ड देना यह  
क्षत्रियों के पूर्वजन्म संस्कार और स्वभावज कर्म हैं । ४३ । खेती गौकी रक्षा  
पोषण वनज यह वैश्य के स्वाभाविक कर्म हैं और सेवा करना आदिक शूद्र के  
स्वाभाविक कर्म कह जाते हैं । ४४ । अपने अपने कर्म में प्रीति करनेवाला मनुष्य सिद्धि  
को पाता है और जैसे अपने कर्म में प्रीति रखनेवाला मुख्य सिद्धि को पाता  
है उसको भी मैं कहता हूँ । ४५ । जिस अन्तर्धर्मी है जीवों की प्रशंसा है और  
जिससे यह सब जगत् भी व्याप्त है उसको मनुष्य अपने कर्मों से पूजन करके  
मोक्षरूपी सिद्धि को पाता है । ४६ । दूसरे के उत्तम धर्म से अपना धर्महीन  
भी श्रेष्ठतम है स्वभाव जन्य कर्मों के करने से पापका भागी नहीं होता है । ४७ ।  
है अर्जुन स्वाभाविक दोषों से युक्त कर्मकाभी त्यागनकर क्योंकि सब कर्मों के मारम

duties of the Brahmins are peace, self-restraint, austerity, purity, patience, rectitude, wisdom, learning, and theology. 42. The natural duties of the Kshatriya are bravery, glory, fortitude, rectitude, not to flee from the field, generosity, and princely conduct. 43. The natural duties of the Vaishya are agriculture, cattle-farming, and commerce. The natural duty of a Shudra is service. 44. Each man devoted to his own duty obtains perfection. Hear, how that perfection is to be accomplished. 45. One who makes an offering of his own works to that Being from whom all beings proceed, and by whom the whole universe is pervaded, obtains perfection. 46. One's own duties, destitute of merit, are preferable to the duty of another however well pursued. One following the duties which are appointed by his birth, incurs no sin. 47. One's own calling, with all its faults, ought not to be forsaken. Every

क्षितात्मा विगतस्पृहः । नैकर्म्यसिद्धिं परमां संन्यासेनाधिगच्छति ॥ ४९ ॥  
 सिद्धिं प्राप्नोति यथा ब्रह्म तथाप्नोति निबोध मे । समासेनैव कौन्तेय निष्ठाज्ञानस्य  
 चापरा ॥ ५० ॥ पुद्गला विशुद्धया युक्तो धृत्वात्मानं नियम्य च । शब्दादीन् वि-  
 पद्यास्त्यक्त्वा रागद्वेषौ व्युदस्य च ॥ ५१ ॥ विविक्तसेवी लज्जाली यतवाक्काय  
 मानसः । ध्यानयोगपरो नित्यं वैराग्यं समुपाश्रितः ॥ ५२ ॥ अहङ्कारं बलं द्वेषं  
 कामं क्रोधं परिग्रहम् । विमुच्य निर्ममः शान्तो ब्रह्मभूयाय कल्पते ॥ ५३ ॥  
 ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न कांक्षति । समः सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिं लभते  
 पराम् ॥ ५४ ॥ भक्त्या मामभिजानाति यावान् यश्चास्मि तत्त्वतः । ततो मां

दोषों से ऐसे आच्छादित हैं जैसे कि अग्नि धुँसे । ४८ । सब पदार्थों में बुद्धि न  
 लगाने वाला शान्त चित्त अत्यन्त लोभ और इच्छा से रहित संन्यास के द्वारा उस  
 परम सिद्धि को पाता है जो कर्म के त्याग और ब्रह्मज्ञान से सम्बन्ध रखने वाली है  
 । ४९ । हे अर्जुन जैसे कि वैराग्य सिद्धि को पाने वाला ब्रह्म को पाता है उसका  
 वृत्तान्त मुझसे सुनो वह वृत्तान्त ज्ञानकी परानिष्ठा है । ५० । अत्यन्त शुद्ध बुद्धि के  
 द्वारा धैर्यतासे शरीर और इन्द्रियों के समूह को भाखों समेत स्वाधीन कर के अर्थात्  
 दृढ़ आसन से शब्दादि विषयों को त्यागकर रागद्वेष रहित हो और अहंभाव को दूर  
 करके सदैव एकान्त वासी अल्पाहारी मन को जीतनेवाला वैराग्य युक्त सदैव ध्यान  
 योग में प्रवृत्त, अहंकार बलक्रोध इच्छा और आत्म भावरूपी परिग्रह को छोड़कर  
 शान्तरूप होकर ब्रह्मभाव के योग्य होता है । ५३ । ब्रह्मरूप योगी प्रसन्नचित्त  
 होकर न शोच करता है न इच्छा करता है और सबजीवमात्रों में समदर्शी होता है  
 वह मेरी पराभक्तिको पाता है । ५४ । उस भक्ति के द्वारा ज्ञानी पुरुष जैसा मैं

तस्यतो ज्ञात्वा विशते तदनन्तरम् ॥ ५५ ॥ सर्वकर्माण्यापि सदा कर्वाणो मद्वया  
 भयः । मत्प्रसादाद्वाप्नोति शाश्वतं पदमव्ययम् ॥ ५६ ॥ चेतसासर्वकर्माणां  
 मयि संन्यस्य मत्परः । बुद्धियोगमवाश्रित्य मच्चित्तः सततं भव ॥ ५७ ॥  
 मच्चित्तः सर्वदुर्गाणि मत्प्रसादात्तरिष्यसि । अथ चेत्त्वमहङ्काराग्रश्रोण्यासि शिनेह्यसि  
 ॥ ५८ ॥ यदहंकारमाश्रित्य नयोरस्यद्वि मन्थसे । मयैव व्ययसायस्ते प्रकृति  
 स्त्वानियोह्यति ॥ ५९ ॥ स्वभावेन कौन्तेय निबद्धः स्वेन कर्मणा । कर्तुनेच्छसि  
 यन्मोहात्कारिष्यस्यशोपि तत् ॥ ६० ॥ ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति ।  
 भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया ॥ ६१ ॥ तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन

वास्तव में हूँ वैसाही ठीक जानता है तदनन्तर मुझको मूल समेत जानकर मुझ में  
 ही समाता है । ५५ । उसप्रकारका ज्ञानी मुझ में निवास करने वाला सदैव सब  
 कर्मों को भी करता हुआ मेरी कृपासे आविनाशी सनातन मोक्षपदको पाताहै । ५६ ।  
 विवेकबुद्धि से सब कर्मोंको मुझमें अर्पणकरके मुझको उत्तमलय स्थान जाननेवाला  
 बुद्धि-योगमें प्रवृत्त होकर सदैव मुझी में चित्तका लगानेवालाहो । ५७ । मुझ में  
 चित्त लगाकर तू सब कठिनताओं से तरगा और जो तू अहंकार से मेरे वचनको  
 नहीं मुनेगा तो नाश पावेगा । ५८ । जो अहंकार में प्रवृत्त होकर तू मानता है कि  
 मैं नहीं लड़ूंगा यह तेरा निषय करना मिथ्याहै तेरा स्वभाव तुझको युद्ध में  
 प्रवृत्त करेगा । ५९ । हे अर्जुन स्वभाव से उत्पन्न होने वाले अपने कर्मों से बंधा  
 हुआ तू जो अज्ञान से युद्ध नहीं करना चाहता है तो तू पराधीन के समान अवश्य  
 उसको करेगा । ६० । हे अर्जुन ईश्वर सब मृष्टि के हृदयस्थानमें निगिदेहनाम यन्त्र  
 पर आरूढ़ होनेवाला अपनी मायासे सबजीवों को ऐसे घुमाताहै जैसे कुम्हार चाक  
 को । ६१ । हे भरतवंशी सब भाव से उसी ईश्वरकी शरणमें जाओ उसकी कृपा से तू

knows well who and what I am; having thus discovered who I am  
 he at length is absorbed in my nature. 55. Doing all works, with  
 trust in me alone, he shall by my grace, obtain the eternal and infi-  
 nite state; 56. With thy heart dedicate all thy works to me;  
 and resorting to Buddhi-yog, think constantly of me. 57. Think-  
 ing of me, thou shalt, by my grace, surmount every difficulty. But if  
 from egoism thou wilt not listen, thou shalt perish 58. If from self-  
 sufficiency thou resolvest that thou wilt not fight, vain will be thy  
 determination, for nature will impel thee. 59. Being bound, Kaun-  
 teya! to action by the duties of thy natural calling, thou wilt in-  
 voluntarily do that which thou wantest, through ignorance, to avoid.  
 60. Ishwara resides in the breasts of all beings, revolving with his  
 maya all beings, as if mounted on a potter's wheel. 61. Take sanctuary



अविता नच मे तस्मादन्त्य-प्रियतरो भुवि ॥ ६९ ॥ अद्योप्यहं खय इमं धर्मसंवादं  
 मयाः । ज्ञानयत्नेन तेनाहं मिष्टः स्वर्गमिति मे मतिः ॥ ७० ॥ अथावागन्तुं पञ्च  
 कृपापादपिबो नराः । सोऽपि मुक्तः शुभाहोकात् प्राप्नुयात् पुण्यकर्मणाम् ॥ ७१ ॥  
 कश्चिदेतच्छ्रुत्वा पार्थ त्वयैकाग्रैरेतसा । कण्ठिदक्षानसम्मोहः प्रनष्टस्ते घनञ्जय ७२ ॥  
 अर्जुन उवाच । नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मया क्लृप्ता । स्थितोऽस्मि मत्त-  
 त्तत्वेन करिष्ये धर्मं तव ॥ ७३ ॥ सञ्जय उवाच । इत्यहं ब्राह्मदेवस्य पार्थस्य  
 च महात्मनः । संवादिमिममर्थोक्तं श्रुत्वा लोमहर्षणम् ॥ ७४ ॥ व्यासप्रसादाच्छ्रुत्वा  
 मानेन गुह्यमहं परम् । योगो योगेश्वरात् कृष्णात् साक्षात् कथयतः स्वयम् ॥ ७५ ॥

अधिक सुमको प्यारा पृथ्वीपर कोई नहीं होगा (६९) जो हमदोनोके इस धर्मरूप  
 उपारूपान को पढ़ेगा ये उस ज्ञानपत्र निर्विकल्प समाधि के द्वारा उससे पूजित  
 होगा (७०) अथावा न अन्य के गुणों में दोष न लगानेवाला जो मनुष्य इस गीता  
 के श्लोकों को सुनेगा वही मुक्तहोकर पवित्रात्मा पुरुषों के शुभ लोकोंको पावेगा  
 (७१) हे अर्जुन तूने प्रकाश चित्त होकर इस गीत शास्त्रको सुना और हे अर्ज-  
 नय तेरा मोह जनिता तव अज्ञान अब नष्ट होगया (७२) अर्जुन बोले हे भवि-  
 नाशी आपकी कृपासे मेरा मोह नष्ट हुआ और स्थिति प्राप्त हुई अब मैं सन्नेह से  
 रहित हूँ इससे आपके पवनोको कर्बंगा (७३) सञ्जय बोले कि मैंने महात्मा बामु-  
 देवजी और अर्जुन के इस अपूर्व लोमहर्षण संवाद को सुना (७४) मैंने व्यासजी  
 की कृपासे यह अत्यन्त गुप्त योग निज योगेश्वर श्रीकृष्णजी के मुख से सुना  
 (७५) हे राजन ! केशवजी के और अर्जुन के इस अपूर्व पुण्यकारी

service than he, nor shall there be in all the earth one dearer to me  
 69. He also who shall read these our religious dialogues, by him I  
 shall be worshipped with the sacrifice of wisdom. This is my resolve.  
 70. That man too who hears it without doubt, and with due faith, is  
 released and shall obtain the blessed abodes of the righteous. 71  
 Hast thou heard this O Arjuna! with thy mind fixed to one point?  
 Is the distraction of thought, which arose from thy ignorance, removed?  
 72. Arjun.—By thy grace, Achyuta! my delusion is destroyed  
 and I have gained wisdom. I am now settled and freed from all  
 doubts; I will do thy bidding." 73. Sanjaya.—In this manner  
 I heard the astonishing and miraculous conversation between  
 Vasudeva, and the magnanimous son of Pandu, 74. I heard  
 this supreme and miraculous doctrine even as revealed from the mouth  
 of Krishna himself, the lord of Yog, by the favor of Vyasa. 75. As,  
 O mighty Prince! I recollect again and again this holy and wonder-

भारत । तत्प्रसादान्पराशान्तिं दधानं प्राप्यासि शाश्वतम् ॥ ६२ ॥ इति ते ज्ञान  
मारयात् गुह्याद्गुह्यतरमया । विमृश्यैतदशेषेण तथेच्छति तथा कुरु ॥ ६३ ॥ सर्वगुह्यतमं  
भूयः शृणु मे परमं यच्च । इष्टोऽस्य मे ददमिति ततो वक्ष्यामि ते हितम् ॥ ६४ ॥  
मन्मनाभवमद्भक्तो मद्याज्जी मां नमस्कुरु । मामेवैष्यासि सत्यन्ते प्रतिजानेमिदोसिमे  
॥ ६५ ॥ सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज । अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि  
मा शुच ॥ ६६ ॥ इदन्तेनात्रपस्काय नाशकाय कदाचन । नचाशुभ्रपदेवाच्यं  
नचमां योज्यसूयति ॥ ६७ ॥ यद्वदं परमं गुह्यं मद्भक्तैर्वाभिधाह्वयति । भक्तिमयि  
पाङ्कज्या मामेवैष्यत्यसशयः ॥ ६८ ॥ नच तस्मान्मनुष्येषु काश्चमेभिधकृतमः ।

अविनाशी पराशान्ती मोक्ष को पावेगा । ६२ । मैंने यह गुह्य से गुह्य ज्ञान तुम से  
कहा इस सबको अच्छी रीतिसे विचारकर जैसा चाहो वैसा करो । ६३ । फिर सब  
से गुह्यतम मेरे उत्तम वचनोंको सुनो तू मेरा बड़ाप्यारा है इसकारण मैं तेरेपरमहित  
को कहूंगा । ६४ । मुझ मेंही चित्तसे लगा हुआ तू मेरा भक्त होकर मेरे ही निमित्त कर्मका  
करने वाला होकर मुझको नमस्कारकर मुझमेंही लय होगा यह मैं सत्यही प्रतिज्ञा  
करता हूँ क्योंकि तू मेरा बड़ाप्यारा है । ६५ । सब धर्म और कर्म और सुख दुःखादि  
को अत्यन्त त्यागकर मुझ अकेले की शरण को प्राप्तकर मैं तुझको सब पापों से  
मोक्ष करूंगा किसी बातका शोक मतकर । ६६ । जो तपसे रहित और भक्तिसे  
शून्य हैं अथवा गुह्यकी सेवासे बहिर्मुख होकर मेरी निन्दा करते हैं उन से कभी यह  
मेरा गुप्त ज्ञान कहनेके योग्य नहीं है । ६७ । जो इस मेरे गुप्तज्ञान को मेरे भक्तों  
में प्रचार करेगा वह मुझमें पराभक्ति को प्राप्त होकर निश्चय मुक्ति को पावेगा  
। ६८ । मनुष्यों में इसगीता पढ़ानेवालेसे अधिक मेरा कोई प्यारा नहीं है और उससे

with Him alone, O Bharata, for, by His divine pleasure thou shalt obtain supreme happiness and eternal abode. 62. Thus have I taught thee wisdom which is a superior mystery. Ponder it well in thy mind and act as thou wilt. 63. Attend now to my supreme and most mysterious words, which I will for thy good reveal to thee, because thou art dearly beloved of me. 64. Be of my mind, be my devotee, my worshipper, and prostrate before me, and thou shalt come to me; in troth I pledge thee; thou art dear to me. 65. Forsake all duties, and fly to me alone. Grieve not for I will deliver thee from all transgressions. 66. This is never to be revealed by thee to any one who is non-austere and loveless; nor to the undutiful, nor to him who despises me. 67. He who shall teach this supreme mystery to my devotees, will love me deeply and shall undoubtedly come to me. 68. There is not one amongst mankind who does me a greater

मविता मयमे तत्समादन्यः प्रियतरो भुवि ॥ ६९ ॥ ज्ञाप्येयते च य इम धर्म्यसंवाद  
 मावधोः । ज्ञानयज्ञेन तेनाह मिष्टः स्वात्मति मे मतिः ॥ ७० ॥ अज्ञावाननसूयश्च  
 शृणुयादपि यो नरः । सोऽपि मुक्तः शुभोक्तिकान् प्राप्नुयात् पुण्यकर्मणाम् ॥ ७१ ॥  
 कच्चिदेतच्छ्रुतं पार्थ त्वयैकाग्रेण चेतसा । कच्चिदज्ञानसम्मोहः प्रनष्टस्ते धनञ्जय ॥ ७२ ॥  
 अर्जुन उवाच । नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मया व्युत । स्थितोऽस्मि गत  
 सन्देहः करिष्ये वचनं तव ॥ ७३ ॥ सञ्जय उवाच । इत्यहं वासुदेवस्य पार्थस्य  
 च महात्मनः । संवादिममश्रौषद्भुतम् लोमहर्षणम् ॥ ७४ ॥ व्यासप्रसादाच्छ्रुत  
 वातेतद्गुह्यमहं परम् । योगं योगेश्वरात् कृष्णात् साक्षात् कथयतः स्वयम् ॥ ७५ ॥

अधिक शुभको प्यारा पृथ्वीपर कोई नहीं होगा । ६९ । जो हमदोनोंके इस धर्मरूप  
 व्याख्यान को पढ़ेगा मैं उस ज्ञानयज्ञ निर्विकल्प समाधि के द्वारा उससे पूजित  
 होगा । ७० । अज्ञावान् अन्य के गुणों में दोष न लगानेवाला जो मनुष्य इस गीता  
 के श्लोकों को सुनेगा वहभी मुक्तहोकर पवित्रात्मा पुरुषों के शुभ लोकोंको पावेगा  
 । ७१ । हे अर्जुन तूने एकाग्र चित्त होकर इस गीता आत्मको सुना और हे धन-  
 जय तेरा मोह जानित सब अज्ञान अब नष्ट होगया । ७२ । अर्जुन बोले हे भवि-  
 नाशी आपकी कृपासे मेरा मोह दूर हुआ और स्थिति प्राप्त हुई अब मैं सन्देह से  
 रहित हूँ इससे आपके वचनोंको करूँगा । ७३ । सञ्जय बोले कि मैंने महात्मा वासु  
 देवजी और अर्जुन के इस अपूर्व लोमहर्षण संवाद को सुना । ७४ । मैंने व्यासजी  
 की कृपासे यह अत्यन्त गुप्त योग निज योगेश्वर श्रीकृष्णजी के मुख से सुना  
 । ७५ । हे राजन् ! केशवजी के और अर्जुन के इस अपूर्व पुण्यकारी

ser vice than he, nor shall there be in all the earth one dearer to me  
 69.—He also who shall read these our religious dialogues, by him I  
 shall be worshipped with the sacrifice of wisdom. This is my resolve.  
 70. That man too who hears it without doubt, and with due faith, is  
 released and shall obtain the blessed abodes of the righteous. 71  
 Hast thou heard this O Arjuna ! with thy mind fixed to one point ?  
 Is the distraction of thought, which arose from thy ignorance, removed ?  
 72. Arjun.—By thy grace, Achyuta ! my delusion is destroyed  
 and I have gained wisdom. I am now settled and freed from all  
 doubts ; I will do thy bidding." 73. Sanjaya.—In this manner  
 I heard the astonishing and miraculous conversation between  
 Vasudeva, and the magnanimous son of Pandu, 74. I heard  
 this supreme and-miraculous doctrine even as revealed from the mouth  
 of Krishna himself, the lord of Yog, by the favor of Vyasa. 75. As,  
 O mighty Prince ! I recollect again and again this holy and wonder-

राजन् संस्मृत्यसंस्मृत्य संवाद्मिममद्भुतम् । केशवार्जुनयोः पुण्यं हृष्यामिच मुहु-  
मुहुः ॥ ७६ ॥ तच्च संस्मृत्य संस्मृत्य रूपमत्यद्भुतं हरेः । विस्मयो मे महान्  
राजन् हृष्यामिच पुनः पुनः ॥ ७७ ॥ यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्रपार्थो धनुर्धरः । तत्र  
श्रीर्विजयो भूतिर्धुवा नीतिर्मतिर्मम ॥ ७८ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि श्रीमद्भगवद्गीतापर्वणि सू० ब्र० श्रीकृष्णार्जुनसंवादे  
संन्यासयोगोनाम अष्टदशोऽध्यायः ॥ १८ ॥  
पर्वणितु द्विचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४२ ॥

## ॥ समाप्तं भगवद्गीतापर्वं ॥

संवाद को बारम्बार प्रसन्नता पूर्वक स्मरणकर आनन्द में मग्न होता हूँ । ७६ ।  
हे राजन् हरि के उस अपूर्व रूपको बारम्बार स्मरण करके मुझको बड़ा  
आश्चर्य है और बारम्बार प्रसन्न होता हूँ । ७७ । जिधर योगेश्वर श्रीकृष्णजी  
और जिधर धनुषधारी अर्जुन हैं उधरही लक्ष्मी जय ऐश्वर्य और नीति है यहमेरा  
निश्चय मत है ॥ ७८ ॥

ful dialogue of Krishna and Arjuna, I continue more and more to  
rejoice. 76. And as I recall the miraculous form of Hari, my astonish-  
ment is great and I marvel and rejoice again and again! 77. Wherever  
Krishna the lord of yog may be, wherever Arjuna the mighty bow-  
man may be there shall eternally dwell fortune, power, victory, and  
virtue. This is my firm belief. 78.



## ॥ अथ भीष्मवधपर्व ॥

सञ्जय उवाच । ततो घतत्रयं दृष्ट्वा घाणगांडीयधारणम् । पुनरेव महानादं  
 व्यसृजन्त महारथाः ॥ १ ॥ पाण्डवाः सोमकाश्चैव येचैषामनुयायिनः । दध्मश्च  
 सुदिताः खंखान् धीराः सागरसम्मवान् ॥ २ ॥ ततो भैरवश्च पेश्यश्चक्रकचा गोवि-  
 पाणिनाः । सहसैवाभ्यहन्यंत ततःशब्दोमहान् भून् ॥ ३ ॥ तदा देवाः समन्धर्वाः  
 पितरश्च जनाधिपः । बिभ्रुचारणसंश्च समीपुस्तोदिदृक्षुः ॥ ४ ॥ ऋषयश्चमहा  
 आगाः पुरस्कृत्य शतक्रतुम् । समीपुस्तत्र सहिता द्रुपुं वद्वैशसं महत् ॥ ५ ॥  
 ततो युधिष्ठिरो दृष्ट्वा युद्धाय समवाहिषते । तं सेने सागरप्रस्थे मुहुः प्रचालते  
 नृप ॥ ६ ॥ विमुन्य कवचं धीरो निसिप्य च पराधुघम् । जघत्तारण्याक्षिप्रं  
 पद्भ्यामेव कृताञ्जलिः ॥ ७ ॥ पितामहमाभिप्रेक्ष्य धर्मराजो युधिष्ठिरः । वाग्यतः

अध्याय ४३ ॥

संजयबाले कि तदनन्तर महारथियों ने बाणों सेपत गांडीव धनुषधारी  
 अर्जुन को देखकर महाशब्द करना प्रारम्भ किया । १। पाण्डव वा संजय अथवा जो  
 इनके पीछे चलनेवाले महाधर्मी वीर लोग थे उनसबों नेभी बड़े प्रसन्न चित्तहोकर  
 समुद्रोत्पन्न उत्तम २ शंखोंकी ध्वनिकी । २। और इसीप्रकार भेरी कृकच गोविपाणक  
 नाम सब-वाजे एकसाथही बजनेलगे और महानुमूल शब्द हुआ, तदनन्तर हे राजा  
 घृतराष्ट्र देवता पितर सिद्ध चारण आदि गन्धर्वों सेपत सब देवता युद्ध देखनेकी  
 इच्छासे आपहुँचे,और महाभाग ऋषिनोगभी इन्द्रको अग्रभागमेंकरकेउस महाभारी  
 नाशकेदेखने को वर्तमान हुये । ३। तदनन्तर हेराजन् वीर राजा धर्मराज युधिष्ठिर इन  
 युद्धोंके लिये अच्छे प्रकार सन्नद्ध होकर सागरके समान बारम्बार चलायमान दोनों  
 सेनाओं को देखकर, कवचको उतार धनुष को त्याग शीघ्रही रथसे उतरकर पैदल  
 हो हाथजोड़ेहुए पितामहकी ओर देखकर मौनता साथहुये पूर्वाभिमुखहोकर

## CHAPTER XLIII

Sanjaya continued:- Having seen Arjun, the great archer, once again with his Gandiv bow and arrows, the warriors raised a tremendous cry. The Pandavas, the Srinjayas and the other warriors who followed them, sounded their sea-born conch shells in great glee. Other musical instruments followed suit and the noise was great. Thereupon all the gods accompanied by Pitars, Sidhas, Charans and Gandharvas, came there to see the battle. The fortunate rishis too, preceded by Indra, were present to witness that great destruction. Then the brave warrior prince, Yudhishtir the just, seeing those two armies like the waves of the ocean, put off his coat of mail and leaving the good bow on his chariot, he stood on foot looking towards the grandfather with joined Palms and then turning his face eastward,

[ 4458 ]

प्रपथी येन प्राङ्मुखो दिग्वाहिनीम् ॥८॥ तं प्रयान्तमभिप्रेक्ष्य कुन्तीपुत्री धनंजय । अथ  
 तीर्थं रथा वर्णं भ्रातृभिः सहितोऽवयात् ॥९॥ वासुदेवधर्मगदाय पृष्ठतोऽनुजगामतय  
 तथा सुसदाया राजानस्तथेत्ता जम्भूयस्तुका ॥ १० ॥ अर्जुन उवाच । किंते व्यवास  
 संयजन् यदभ्यासपक्षायवे । पश्यामेव प्रयातोसि प्राङ्मुखो दिग्वाहिनीम् ॥११॥  
 भीमसेन उवाच । इदमभिप्रास राजेन्द्र निहिमकवचायुग । दशितेध्वारसैन्येषु  
 भ्रातृनुत्सुज्य पार्थिव ॥ १२ ॥ नकुल उवाच । एव गते त्वयि ज्येष्ठे ममज्ञातार  
 भारत । भीमे हुनोति हृदयं हृदि गता भवान्स्वयम् ॥ १३ ॥ सहदेव उवाच ।  
 अस्मिन् रणसमूहे वै वर्तमाने महाभये । उत्सुज्यस्वन् गन्तासि शत्रूनाममुखो  
 ज्ञेय ॥ १४ ॥ संजय उवाच । एवमभिप्रासमापोपि भ्रातृभिः कुरुनन्दन । गोवाच

शत्रुकी सेना में घुसाहुआ चला । ८ । उन धर्मराज को जाते हुए देखकर कुन्ती  
 का पुत्र अर्जुन शीघ्रही रथसे उतरकर भाइयों सपत उसके पीछे चला और हे  
 राजा वासुदेव जी उसके पीछे चले, तिस पीछे सब पृथ्वी के राजा अपने २ मनो-  
 रथ सिद्ध करने की इच्छा से उसके पीछे चले । १० । अर्जुन बोले हे युधिष्ठिर  
 आपका क्या निश्चय है जो हम लोगों को त्याग करके पैदल होकर पूर्वाभिमुख  
 शत्रुओं की सेना में जाते हो, भीमसेन बोले हे राजेन्द्र राजा युधिष्ठिर आप कवच  
 और शस्त्रों को त्यागकर भाइयों को छोड़ कर शस्त्रोंसे सन्नद्ध शत्रुओं की सेना के  
 मनुष्यों में कहां को जाओगे, नकुल बोले हे भरतवंशी आप सरीकें मेरे बड़ेभाई  
 को इसप्रकार से जानेपर बड़ा भारी भय मेरे हृदय को पीड़ित करता है चाहिये  
 आप अब कहां जाओगे सहदेव बोले हे राजा इस महा भयकारी युद्ध करने के  
 योग्य शत्रुकी सेनाके समूह के सम्मुख होकर कहां जातेहो । १४ । संजय बोले कि हे  
 कौरव नन्दन धृतराष्ट्र भाइयों के इस प्रकार से कहने परभी मैंन इस अवाक् होकर

he walked to enter the forces of the enemy. 8. Seeing him thus pro-  
 ceeding onward, Arjun the son of Kunti at once leaped from his  
 chariot and with the other brothers followed him. Vasudev too follow-  
 ed Arjun's example and was followed by other kings who were intent  
 on doing their duty 10 "What do you intend to do, that you  
 are so leaving us and going eastward on foot amongst the enemy!"  
 said Arjun to Yudhishtir. "Where will you go, prince Yudhishtir,  
 the prince of princes! leaving your armour, weapons and brothers and

यागुयतः किञ्चिद् गच्छत्येव युधिष्ठिरः ॥ १५ ॥ तानुवाच महाप्रज्ञो वासुदेवो महामनाः ।  
 अभिप्रायोऽस्य विज्ञातो मयेति प्रहसन्निव ॥ १६ ॥ एषभीमं तथाद्रोणं गौतमशर्य  
 मेवच । अनुमान्य गुरुन् सर्वान् योत्स्यते पार्ष्णिपारिभिः ॥ १७ ॥ श्रूयते हि पुरा  
 कलेशुगुरुननुमान्ययः । युष्मते समवेद्यक मपध्यातोमहत्तरैः ॥ १८ ॥ अनुमान्य  
 रथाशस्त्रं यस्तु युध्येन्महत्तरैः । ध्रुवस्तस्य जयो युद्धे भवेदिति मतिर्मम ॥ १९ ॥  
 एवं भवति कृष्णेन धार्तराष्ट्रघ्नं प्रति । हाहाकारेन हानासीन् निःशब्दास्त्यपरे-  
 भयन् ॥ २० ॥ दृष्ट्वायुधिष्ठिरं दूराद्धार्तराष्ट्रस्य सैनिकाः । मिथःसंकथयामाकुरेपो  
 हि कुलपांसवः ॥ २१ ॥ व्यक्तं भीतश्वाभ्येति राजासौ भीष्ममान्तकम् । युधि-  
 ष्ठिरः ससौदर्यः शरणार्थं प्रयाचकः ॥ २२ ॥ धनञ्जये कथं नाथे पांडवेच वृको

चला जाता था, तबतो यड़े साहसी वासुदेवजी ने बड़े मसन्न होकर कहा कि मैंने इस के चित्तकी इच्छा को जाना, यह युधिष्ठिर भीष्म द्रोणाचार्य कृपाचार्य और शल्य आदि सब गुरुओं की प्रतिष्ठा पूर्वक परिक्रमा करके उनसे आज्ञाको मांग कर युद्धमें शत्रुओं से लड़ेंगे ॥ १७ ॥ प्राचीन शास्त्र में सुनाजाताहै कि जो बांधवोंसमेत गुरु वृद्धों को शास्त्रके अनुसार मतिष्ठा देकर अपने से बड़ों के साथ युद्ध करे निश्चय करके युद्धमें उनकी विजय होती है यह मेरामत है, श्रीकृष्ण जी के इस प्रकार कहनेपर शत्रुओं की सेना में बड़ा हाहाकार शब्द हुआ और पाण्डव-लोगों के पक्षी राजा लोग चुप होगये दुर्योधन की सेना के वीरों ने युधिष्ठिर को देखकर परस्पर में वार्त्तालाप की कि यह कुलकाकलंक है, प्रकट है कि यह राजा युधिष्ठिर भाइयों समेत भयभीत के समान भीष्मजी की शरण लेनेके निमित्त आता है ॥ २१ ॥ पांडव युधिष्ठिर अर्जुन भीमसेन नकुल सहदेव चारों भाइयों समेत किस प्रकार से भयभीतता होकर सम्मुख आना है निश्चय है कि यह पृथ्वीपर मसिद्ध

without giving any reply. Thereupon Vasudov of great energy said in excess of cheer, "I know what passes in his mind. Yudhishtir, will pay his respects to and take the permission of his elders, Bhishm Kripa and Shaiya, before the fight begins. 17. We see in old books that he who fights against his elders after paying his respect to them according to the shastras, will surely win victory, and I am of the same opinion." At these words of Shree Krishn, the warriors of the enemy raised cries of grief and the followers of the Pandavas were silenced. At the sight of Yudhishtir, the warriors of Duryodhan's army began to talk with one another, saying, "Yudhishtir is a discredit to the family! He is surely coming with his brothers, like a terrified man to throw himself on the mercy of Bhishm. 21. How does the Pandav Yudhishtir come like a terrified man, followed by his brothers Arjun, Blim, Nakul and Sahadev? Surely

दरे । नकुले सहदेवेच भित्तिरप्येतिषाण्डवम् ॥ २३ ॥ ननुर्न क्षत्रियकुले जातः  
संप्रथितेभुवि । यथास्य हृदयं मीतमल्पसत्वस्य संयुगे ॥ २४ ॥ ततस्ते सैनिकाः  
सर्वे प्रशंसन्तिस्म कौरवान् । दृष्ट्वा सुमनसो भूत्वा चैलानि दुष्टुवुःश्रुत्वा ॥ २५ ॥  
व्यतिन्द्वं ततः सर्वे योधास्तव विशास्यते । युधिष्ठिरं समोदयं सहितं केशधेनाहि  
॥ २६ ॥ ततस्तव कौरवं सैन्यं धिक्कृतवातु युधिष्ठिरम् । निःशब्दगभवत् तूर्णः  
पुनरेव विशास्यते ॥ २७ ॥ किंनुवक्ष्यति राजसौ किं भीमः प्रतियक्ष्यति । किं  
भीमः समरव्याधी किं नुरुष्णार्जुनविराट् ॥ २८ ॥ विचिन्तितं किमभ्योत संशयः सुमहानभूत् ।  
उभयोः सेनयो राजन् युधिष्ठिरकृते तदा ॥ २९ ॥ सोवगाद्यचमू शत्रोः शस्त्र-  
किसमाकुलाम् । भीममेवाभ्ययात् तूर्णं आतुमिः परिवारितः ॥ ३० ॥ तमुवाच

क्षत्रियों के कुल में उत्पन्न नहीं हुआ काहेसे कि इस अल्प बलरत्नने वाले का  
हृदय युद्ध से मयाकुल है, तदनन्तर उन प्रतिपक्षी मनुष्यों ने वह प्रसन्न हृदय से  
कौरवों की प्रशंसा की । २४ । और पृथक् चैलों को अर्थात् कमालों को घुमाया,  
हे राजा तिसके पीछे वहां सब के धीर उनके शत्रुजी और सगे भाइयों समेत  
युधिष्ठिर की ओरको गये हे राजा फिर वह कौरवों की सेना युधिष्ठिर को बुद्ध  
करके शीघ्रही भवाक् होगई और सब विचारने लगे कि यह राजा क्या कहेगा  
और भीमसेन क्या कहेगा और युद्ध में प्रशंसनीय भीष्मजी क्या कहेंगे और  
भीकृष्ण वा अर्जुन क्या कहेंगे । २८ । हे धृतराष्ट्र इन विचारों के कारण युधिष्ठिर के  
जानेसे दोनों ओरकी सेनामें बड़ाभारी संशय उत्पन्न हुआ कि राजा युधिष्ठिरको  
क्या करने की इच्छा है, वह राजा युधिष्ठिर भाइयों समेत शत्रुकी सेना के बाण  
घरछियों से व्याकुल सेना के पारहोकर भीष्म जीके सम्मुख आया, तदनन्तर  
शतनु के पुत्र युद्धोत्सुकपितामह भीष्मजी के दोनों चरणों को युधिष्ठिर ने हाथों  
से दाबकर कहा । ३० । हे दुर्जय पितामह मैं आपसे पृच्छताहूं कि इस युद्ध में हम

he is not born of kshatryas of world wide renown as he seems to be  
afraid of war." With such remarks the warriors of the enemy praised  
the Kauravas 24 They waved their handkerchiefs and roared at Keshav  
the bravest of warriors and at Yudhishtir and his brothers, and say-  
ing "FIE on Yudhishtir," kept quiet. They began to think within  
themselves what Yudhishtir and Bhim will say and what Bhishm  
the best of warriors will say in reply. They wondered as to what  
Krishn and Arjun would say. 28. Thus there was a great suspense in  
both the armies on account of Yudhishtir as they did not know what  
he was going to say. In the meantime Yudhishtir with his brothers  
crossed the enemy's army, amidst spears and arrows, and coming  
before Bhishm, he touched with his hands both the feet of Bhishm the  
grandfather the son of Shantanu, and said, 30. "Invincible grandfather!



ततः पादौ कराभ्यां पठ्य पांडवः । भीष्मं शान्तनवं राजा युद्धायसमुपास्थितम् ॥ ३१ ॥ युधिष्ठिर उवाच । आमन्त्रये त्वां दुर्धर्पं त्वया योत्स्यामहे सह । वनुजानीहि मां तात आशिषश्च प्रयोजय । भीष्म उवाच । यद्येवं नाधिगच्छेथा युधिर्मा पृथिवीपते । शपेयं त्वां महाराज पराभावाय भारत ॥ ३३ ॥ प्रीतोऽहंपुत्रगृध्रस्य जय प्राप्तुहि पांडव । पशेमिलापतं चाग्यत् तदवाप्नुहि संयुगे ॥ ३४ ॥ प्रियतां च वरः पार्थ किमस्मत्तोऽभिकांक्षसि । एवं गते महाराज न तवास्ति पराजयः ॥ ३५ ॥ अर्थस्य पुरुषो दासो दासस्त्वर्थो न कस्य चित् । इति सत्यं महाराज यद्वोस्म्यर्थेन कौरवैः ॥ ३६ ॥ अतस्त्वापत्नीयवद्वाक्यं मयीमि कुरुनन्दन । भृतोऽभ्यर्थेन कौरव्य युद्धादग्यत् किमिच्छसि ॥ ३७ ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ मन्त्रयस्य महापादो हितैषी मम

आपके साथ लड़ेंगे सो आशा दो और आशीर्वाद भी दो, भीष्मजी बोले हे भरत वंशी महाराज राजा युधिष्ठिर जो तुम इसयुद्धमें इसरीति से मेरेपासन आते तो मैं तुमको पराजयहोने का शाप देता, हे पुत्र मैं प्रसन्न हूं हे पाण्डव युद्ध कर विजय की प्राप्तिको और युद्ध में जो तेरी दूसरी इच्छा है उसको भी तुम पाओगे, हे राजा युधिष्ठिर वरमांग तू मुझसे क्या चाहता है हे राजा इस प्रकारके तेरे आचरणों से तेरी पराजय नहीं है, पुरुष धन रूपादि अर्थोंका दास है परन्तु अर्थ किसीका दास नहीं है हे महाराज यह सत्य है मैं कौरवों की ओर से अर्थद्वारावशीभूत कियागया हूं, हे कौरवनन्दन मैं इस कारण से कायर के समान तुझ से वचन कहता हूं कि मुझको कौरवों ने धनके द्वारा पोषण किया है-सो इनके लिये युद्ध तो अवश्य कहंगा तू युद्ध के सिवाय क्या चाहता है । ३६ । युधिष्ठिर बोले हे महाहानी मेरा हित चाहनेवाले तुम सदैवमेरे अन्तको विचारो और दुर्योधनादि कौरवों के निमित्त युद्धकरो और आपका दियाहुआ वर सदैव नियत रहै, भीष्म जी बोले हे कौरव

I beg your permission to fight with you in the ensuing battle and invoke your blessing. "To this Bhishma replied," I should have wished your defeat, if you had not come to me at this time, King Yudhishtir, the descendant of Bharat! I am pleased with you, go. Gain victory in the battle, Pandav. You will also gain your second desire in battle. You may ask of me any boon you desire, King Yudhishtir: with such a conduct you cannot suffer defeat. Man is a slave to wealth, while wealth is nobody's slave. It is true, King, that I am under the influence of the wealth of the Kauravas. It is therefore like a coward that I say to you that I am maintained by the wealth of the Kauravas and must fight for them; but you may ask of me any other boon except this." "May you always think well of me, wise man!" said Yudhishtir, "Fight for Duryodhan and others, but always bear in mind the boon you have just given me," "What help can I render

नित्यशः । युध्यस्व कौरवस्यार्थे ममैव सततं धरः । ३८ ॥ भीष्म उवाच ॥ राजन् किमग्र  
साह्यान्ते करोमि कुरुनन्दन । कामं योत्स्ये परस्यार्थे ब्रूहि यत्ते विवक्षितम् ॥ ३९ ॥  
युधिष्ठिर उवाच ॥ कथं जयेयं संग्रामे भवन्त मपराजितम् । एतन्मे मन्त्रपहितं यदि  
श्रेयः प्रपद्यसि ॥ ४० ॥ भीष्म उवाच ॥ नैनं पश्यामि कौन्तेय योमां युध्यन्तमाहवे ।  
विजयेत पुमान् कश्चित् शास्त्रादपि शतक्रतुः ॥ ४१ ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ हन्त पृच्छामि  
तस्मात्तयां पितामह नमोस्तुते । यद्योपायं ब्रवीद्विद्वान्मात्मनः समरेपरैः ॥ ४२ ॥ भीष्म  
उवाच ॥ नहमते तात पश्यामि समरे ये जयेतमां । न तावन्मृत्यु कालोपि पुनराग मनं  
कुह ॥ ४३ ॥ संजय उवाच ॥ ततो युधिष्ठिरो घान्नयं भीष्मस्य कुरुनन्दन ।

नन्दन युधिष्ठिर इस स्थान पर मैं तेरी कौनसी सहायता करूं दूसरे के लिये अपनी  
इच्छा के समान लड़ूंगा और जो तेरी इच्छा है उसको भी कह, युधिष्ठिर बोले हे  
तात पितामह आपको नमस्कार है मैं आपसे पूछता हूं हे अजेय मैं युद्ध में आप  
को कैसे विजय कर सका हूं इस विषय में मेरे लिये श्रेष्ठ हितकारी शिक्षा दो, भीष्म  
जी बोले कि हे कुन्ती के पुत्र मैं ऐसा किसी को नहीं देखता हूं जो कोई पुरुष  
वा साक्षात् देवता इन्द्रभी मुझ युद्ध में लड़ते हुए को विजय करे । ४० । युधिष्ठिर  
बोले हे पितामह तुम्हारे अर्थ नमस्कार है मैं आपसे यह हेतु पूछता हूं कि आप  
युद्ध में अपने विजय करने के उपाय को कहो भीष्मजी बोले हे तात जबतक मेरी  
मृत्यु का समय न होय तबतक कोई मुझको युद्ध में जीतनेवाला नहीं दिखाई देता है,  
संजय बोले इसके पीछे कौरवनन्दन युधिष्ठिर ने भीष्मजी के वचन को शिरसे  
अंगीकार किया और फिरभी नमस्कार करके वह महाबाहु युधिष्ठिर भाइयों समेत  
शत्रुकी सेना के सब मनुष्यों के देखते हुए सेना के मध्य में से निकलकर गुरु आचार्य  
द्रोणाचार्य जीके रथके पास गया, वहां कठिनतासे विजय होनेवाले द्रोणाचार्यजीको  
परिक्रमापूर्वक नमस्कार करके बाणी से अपने कल्याणकारी वचन को बोला, हे

you, son Yudhishtir? I shall fight with all my heart for Duryodhan, but you must speak out plainly what you desire." said Bhishm. "I bow to you, grandfather," said Yudhishtir, "may I ask you how I can conquer you in battle? Give me proper advice in this matter." "I donot see," replied Bhishm, "any man or even Indra the prince of gods that can overpower me in fight." 40. "I bow to you, grandfather and ask you the manner of your being overcome in battle" said Yudhishtir. "I cannot be overcome in battle," said Bhishm, "but when the time of my death approaches." Sanjaya said that Yudhishtir having heard these words, bowed down to Bhishm and having departed from the middle of the army he went on looking at the warriors of the enemy to the place where Dronacharya the preceptor's chariot was. And having paid his respects to the invincible Dronacharya,

शिरसाप्रति जग्राह भूयस्तमामिवाद्यच्च ॥ ४४ ॥ प्रायान् पुनर्महाबलुराचार्यभ्य  
 रथं प्रति । पश्यतां सर्वे सैन्यानां मध्येन आवृत्तेः सह ॥ ४५ ॥ स द्रोणमभि  
 वाद्याय कृत्वाचामि प्रवक्षिणम् । उवाच राजा दुर्धनं मातमनिः श्रेय संवचः ॥ ४६ ॥  
 आमन्त्रयेत्यां भगवन् योत्स्ये विगतकल्मष- । कथं जये िपून्सर्वाननुज्ञातस्त्वया । ब्रूज  
 ॥ ४७ ॥ द्रोण उवाच ॥ यदि मां नामि मच्छेद्या युद्धाय कृतनिश्चयः । शपेयं त्वां महा  
 राज परामावाय सर्वशः ॥ ४८ ॥ तद्यधिष्ठिरः तुष्टोभिर्न पूजितश्च त्वयानघ । अनुज्ञाना  
 मि बुध्यस्य विजयं सम वान्नुहि ॥ ४९ ॥ करवाणि च ते कामं महित्वमसि कांक्षितम् ।  
 पथं गते महाराज युद्धादन्यत् किमिच्छसि ॥ ५० ॥ अर्थस्थपुरुषो दासो दासस्त्वर्थो  
 न कस्य चित् । इति सायं महाराज वस्रोस्मर्यधेन कौरवैः ॥ ५१ ॥ प्रवीम्येतत् कलीय

भगवन् गुरुदेव मैं आपका पूजनकरता हूं और पूछताहूं कि मैं पापसे युद्धकलंगा  
 या पापसे रहित युद्धकलंगा इसको आप कहिये हे विभेन्द्र आपकी आज्ञासे मैं किस  
 प्रकारसे सवशत्रुओंको विजयकरूंगा । ४४ द्रोणाचार्य बोले कि जो युद्धके निश्चय  
 करने के लिये तू मुझको नहीं मिलता तो हे महाराज सब प्रकार से पराजयहानेके  
 लिये तुमको शाप देदेता हे निष्पाप अधिष्ठिर मैं तुम से पूजित होकर मतन्नहूं  
 मैं आज्ञादेताहूं कि युद्धकरो और विजय को पाओ, तेरे मनोरथको सिद्ध करूंगा जो  
 तेरी इच्छाहोय सो कहो हे महाराज तुम ऐसी दशामें युद्ध के विशेष अन्य कौनसी  
 बात चाहतेहो, पुरुषअर्थका दास है परन्तु अर्थ किसी का दास नहीं है हे अधिष्ठिर  
 यह सत्यही बातहै कि मैं कौरवों की ओर से अर्थ से वशीभूत कियागया हूं, इस  
 हेतुसे असमर्थों की समान मैं तुम्ह से कहताहूं कि युद्धतो इनके अर्थ हम करेंगे इस  
 के सिवाय दूसरी बात क्या चाहता है मैं कौरवों के निमित्त लड़ूंगा परन्तु तुम्हारी  
 विजय होनेका आशीर्वाद देताहूं । ५२ अधिष्ठिर बोले हे गुरुदेव मेरी विजय होने

he said, "I salute you, Bhagwan! and ask you whether my fighting will be in good cause or not so. I beg to ask of you, best of Brahmins, how I shall be able to conquer all the enemies by your grace." 44 "I should have caused your defeat by all the means in my power and had cursed you, if you had not come to me to ascertain about the propriety of war. I am pleased, Yudhishtir, by your respectful behaviour. I allow you to make war and gain victory. What more do you want besides this war? Man is a slave to wealth, but the wealth is nobody's slave. I tell you truly that I have been influenced by the wealth of Kauravas and it is therefore that I tell you like a weakling that fight I must, but is there aught that I can do for you? I shall fight for the Kauravas, but shall pray for your victory."

यत्वा युद्धादन्यत् किमिच्छसि । योत्स्येह कौरवस्यार्थं तवाशास्यो जयोमया ॥ ५२ ॥  
 युधिष्ठिर उवाच ॥ जयमाशास्तमे प्रह्वन् मन्त्रयस्व च मान्दतम् । युध्यस्वकौरवस्यार्थं  
 परं पप वृतो मया ॥ ५३ ॥ द्रोण उवाच । ध्रुवस्तोविजयो राजन् यस्य मन्त्री हरिस्तय ।  
 महत्त्वामभिजानामि रणे शत्रून् । धर्मोक्षयसे ॥ ५४ ॥ यतो धर्मस्ततः कृष्णो यतः कृष्णस्ततो  
 जय । युध्यस्व गच्छ कौन्तेय पृच्छ मार्कं प्रब्रवीमि ॥ ५५ ॥ युधिष्ठिर उवाच ।  
 पृच्छामित्वा द्विजधेष्ट शृणुयन्मेऽभि काक्षतम् । नर्थ जयेयं सप्रामे भवन्तमपरा  
 जितम् ॥ ५६ ॥ द्रोण उवाच । न तेऽस्त विजयस्तावचावयुद्धघम्वह रणे । ममानु  
 निघने राजन् यतस्वसह सोदरे ॥ ५७ ॥ युधिष्ठिर उवाच । हन्त तस्मान् महाबाहो गधो  
 पाय घदात्मनः । आचार्यं प्रणिपत्यैव पृच्छामित्वा नमोस्तुते ॥ ५८ ॥ द्रोण उवाच ।

का आशीर्वाद दो ओर मेरे हितकारी सलाह दो और आप कौरवों के निमित्त  
 युद्ध करिये मुझे वरदो द्रोणाचार्य बोले हे राजा तेरी अवश्य विजय है क्योंकि  
 तेरे मन्त्री हरि हैं मैं तुम्हको अच्छी रीति से जानता हूँ कि तू युद्ध में शत्रुओं को  
 जीवनसे मुक्त करेगा जहाँ धर्म है वही श्रीकृष्णजी है जहाँ धर्म है वहीं विजय है  
 इससे हे कुन्तीनन्दन जाओ युद्ध करो तुम्हारी विजय होगी अब मुझ से तू क्या  
 पूछना है । ५५ । युधिष्ठिर बोले हे ब्राह्मणवर्य मैं अपनी इच्छा के अनुसार आप से  
 पूछता हूँ हे अजेय मैं युद्ध में आपको कैसे विजय करूँगा, द्रोणाचार्य बोले कि  
 हे राजा जबतक मैं युद्धभूमि में लड़ूँगा तबतक तेरी विजय नहीं होगी मेरे मरने  
 के पीछे तुम अपने भाइयों समेत शीघ्र उपाय करो, युधिष्ठिर बोले हे महाबाहू  
 बड़े कष्टकी बात है कि मैं आपको नमस्कार करके प्रार्थना करता हूँ कि आप अपने  
 मरने के उपाय को नताइये, द्रोणाचार्य बोले हे तात मैं उस अपने शत्रु को संसार में  
 नहीं देखता हूँ जो धूम क्रोधाग्नि में भरे हुए बाणों की वर्षा करते हुए युद्ध में मारे,  
 हे राजा इसके विशेष मरने के निमित्त निश्चय करनेवाले योग बलसे देह त्याग

52 "Pray for my victory and give me salutary advice. Give me this boon and fight on the side of the Kaurava," said Yudhishtir  
 "Your victory is certain, for you have Hari for your adviser," said  
 Drona "I know well that you will destroy the enemies. Where there  
 is Dharma there Krishna and victory are Go, son of Kunti, fight and  
 you will win What more do you ask of me?" 55 "Best of  
 Brahmans!" said Yudhishtir, "I wish to ask of you, unconquer-  
 able one how I shall be able to conquer you" To this Dronacharya  
 replied that Yudhishtir could not gain victory as long he was alive  
 and that after his death the Pandavas were sure of it. At this Yudhis-  
 thir respectfully asked of Drona the manner of his death, and Drona

न शत्रुं तात पश्यामि योमां हन्वाद्रणे स्थितम् । युध्यमानं सुसंरम्भं शरवर्षैर्घवर्षिणम् ॥ ५९ ॥ श्रुते प्रापगतं राजन् न्यस्तशस्त्रमचेतनम् । हन्यान्मां युधि योधानां सत्य मे तद्भवीमिमे ॥ ६० ॥ अल्लञ्चाहं रणे जह्यां युत्वा सुमहदप्रियम् । श्रेयवाक्यात्पुपा देतत्सभ्यं ब्रवीमिमे ॥ ६१ ॥ सन्नय उवाच ॥ एतच्छ्रुत्वा महाराज भारद्वाजस्यधीमतः । अनुमान्य तमाचार्यं प्रायाच्छास्त्रतं प्रति ॥ ६२ ॥ सोऽभिवाद्य कृपं राजा कृत्वाचापि प्रदक्षिणम् । उवाच दुर्धर्यं तमे वाक्यं वान्य विदांवरः ॥ ६३ ॥ अनुमान येत्वां योत्स्ये हं गुरो विगत कल्मषः । जयेयन् रिपुन् सर्वां नृजातस्त्वयानघ ॥ ६४ ॥ शृणु उवाच ॥ यदि मां नाभिगच्छेथा युद्धाय कृत निश्चयः । शपेयंत्वां महाराज पराधायसर्वशः ॥ ६५ ॥

करनेवाले मुक्तको युद्ध में कोई वीर मारने वाला नहीं दखिता है यह मैं निश्चय करके कहता हूँ, मैं युद्धमें विश्वासित पुरुष से बहुत बड़े अभिय और असत्य वचन को सुनकर शत्रुओंका त्याग करूंगा यह तुमसे मैं सत्यर कहता हूँ । ६० । संजयबोले हे धृतराष्ट्र धर्मराज राजा युधिष्ठिर द्रोणाचार्य के इस वचनको सुनकर उन

चत्वां युद्धादन्यन् किमिच्छसि । योऽस्येह कौरवस्यार्थे तवाशास्यो जयोमया ॥ ५२ ॥  
 युधिष्ठिर उवाच ॥ जयमाशास्यमे ब्रह्मन् मन्त्रयस्व च माद्धतम् । युध्वस्वकौरवस्यार्थे  
 धर एव वृत्तो मया ॥ ५३ ॥ द्रोण उवाच । ध्रुवस्तेविजयो राजन् यस्य मन्त्री हरिस्तव ।  
 अहत्वाभिमजानाभि रणे शत्रून् यमोक्ष्यसे । ५४ ॥ यतोधर्मस्तत कृष्णो यत कृष्णस्ततो  
 जय । युध्वस्य गच्छ कौन्तेय पृच्छमांकिं ब्रवीमि ते ॥ ५५ ॥ युधिष्ठिर उवाच ।  
 पृच्छामित्वां द्विजश्रेष्ठ शृणुयन्मेऽभि काक्षतम् । नय जयेयं संग्रामे भवन्तमपरा  
 जितम् ॥ ५६ ॥ द्रोण उवाच । न तेऽस्त विजयस्तावद्यावद्युद्धयाम्यह रणे । ममाशु  
 निधने राजन् यतस्त्वसह सोदरे ॥ ५७ ॥ युधिष्ठिर उवाच । हन्त तस्मान् महाबाहोरथो  
 पाय घदात्मनः । आचार्य्यं प्रणिपत्यैव पृच्छामित्वां नमोस्तुते ॥ ५८ ॥ द्रोण उवाच ।

का आशीर्वाद दो और मेरे हितकारी सलाह दो और आप कौरवों के निमित्त  
 युद्ध करिये मुझे वरदो द्रोणाचार्य्य बोले हे राजा तेरी अवश्य विजय है क्योंकि  
 तेरे मन्त्री हरि है मैं तुम्हको अच्छी रीति से जानता हूँ कि तू युद्ध में शत्रुओं को  
 जीवनसे मुक्त करेगा जहाँ धर्म है वही श्रीकृष्णजी है जहाँ धर्म है वही विजय है  
 इससे हे कुन्तीनन्दन जाओ युद्ध करो तुम्हारी विजय होगी अब मुझ से तू क्या  
 पूछना है । ५५ । युधिष्ठिर बोले हे ब्राह्मणवर्य्य मैं अपनी इच्छा के अनुसार आपसे  
 पूछता हूँ हे अजेय मैं युद्ध में आपको कैसे विजय करूँगा, द्रोणाचार्य्य बोले कि  
 हे राजा जबतक मैं युद्धभूमि में लूँगा तबतक तेरी विजय नहीं होगी मेरे मरने  
 के पीछे तुम अपने भाइयों समेत शीघ्र उपाय करो, युधिष्ठिर बोले हे महाबाह  
 बड़े कष्टकी बात है कि मैं आपको नमस्कार करके प्रार्थना करता हूँ कि आप अपने  
 मरने के उपाय को बताइये, द्रोणाचार्य्य बोले हे तात मैं उस अपने शत्रु को संसार में  
 नहीं देखता हूँ जो मुझ क्रोधाग्नि में भरे हुए बाणोंकी वर्षा करते हुए को युद्ध में मारे,  
 हे राजा इसके विशेष मरनेके निमित्त निश्चय करनेवाले योग बलसे देह त्याग

52 "Pray for my victory and give me salutary advice. Give me this boon and fight on the side of the Kauravas," said Yudhishtir  
 "Your victory is certain, for you have Hari for your adviser," said  
 Drona "I know well that you will destroy the enemies. Where there  
 is Dharma there Krishna and victory are Go, son of Kunti, fight and  
 you will win What more do you ask of me?" 55 "Best of  
 Brahmins!" said Yudhishtir, "I wish to ask of you, unconquer-  
 able one, how I shall be able to conquer you" To this Dronacharya  
 replied that Yudhishtir could not gain victory as long he was alive  
 and that after his death the Pandavas were sure of it. At this Yudhis-  
 thir respectfully asked of Drona the manner of his death, and Drona

न शत्रुं तात पश्यामि योमां हन्याद्गणे स्थितम् । गुंध्यमानं सुसंरम्भं शरवर्षाधिवापिणम् ॥ ५९ ॥ ऋते प्रायगतं राजन् न्यस्तशस्त्रमचेतनम् । हन्यान्मां युधि योधानां सत्य मे तद्भयमिति ॥ ६० ॥ अस्त्रञ्चाहं रणे जह्यां भुत्वा सुमहदभियम् । भद्रेषवाक्यात्पुत्रा वेतत्सत्यं भयमिति ॥ ६१ ॥ संजय उवाच ॥ पतच्छ्रुत्वा महाराज मारद्वाजस्यधीमत । अनुमाय तमाचार्यं प्रायाच्छास्त्रतं प्रति ॥ ६२ ॥ सोऽभिवाच कृपं राजा कृत्वाचापि प्रदक्षिणम् । उवाच दुर्धर्ष तमं वास्यं वाक्यं विदांबरः ॥ ६३ ॥ अनुमान योवां योत्स्ये हं गुरो विगत कल्मषः । जयेयश्च रिपुन् सर्वां तुष्टातस्त्वयानघ ॥ ६४ ॥ कृपउवाच ॥ यदि मां नाभिगच्छेद्य युद्धाय कृत निश्चयः । शपेयंत्वां महाराज परमावायसर्वशः ६५

करनेवाले मुक्तको युद्ध में कोई धीर मारने वाला नहीं दीखता है यह मैं निश्चय करके कहता हूँ, मैं युद्धमें विश्वासित पुरुष से बहुत बड़े अभिय और असत्य वचन को सुनकर शत्रुओंका त्याग करूँगा यह तुमसे मैं सत्य कहता हूँ । ६० । संजयबोले हे धृतराष्ट्र धर्मराज राजा युधिष्ठिर द्रोणाचार्य के इस वचनको सुनकर उन आचार्यजी की मतिष्ठाकरके नमस्कार कर कृपाचार्य जीके पास आया और वह वक्ताओं में श्रेष्ठ युधिष्ठिर उस बड़े दुर्जय कृपाचार्यजी को प्रणाम और प्रदक्षिणा करके यह वचन बोला कि मैं गुरुजी को प्रणामादिक करके पापसे प्रयत्न हुआ लड़ूँगा या पापसे हे निष्पाप मैं आपसे आज्ञा पाकर सब शत्रुओंको विजयकरूँ कृपाचार्य बोले हे महाराज जो युद्धके निमित्त निश्चय करने वाला तू मुझसे नहीं मिलतातो मैं तेरेपराजयके निमित्त कठिन शाप देता, पुरुषही अर्थ का दास है परन्तु अर्थ किसी का दास नहीं है हे महाराज यह सत्यही है कि मैं कौरवों की ओरसे अर्थके द्वारा आधीन किया गया हूँ उनके निमित्त युद्ध करना योग्य है हे

replied that he would give up arms on hearing an untruth which was very disagreeable, from one in whom he had a trust." 60. Sanjay continued that having heard the words of Dronacharya, Yudhishtir bowed down to the preceptor and then came to Kripacharya. Yudhishtir the best of speakers saluted the unconquerable Kripacharya and said, "Having bowed down to you shall I fight in a good cause or not? Having got your permission, sinless one, may I conquer my foes?" "Had you not come to me, king, to ascertain about war," said Kripacharya, "I would have cursed you and caused your defeat. Man is a slave to wealth, but wealth is a slave to nobody. It is true that I am bound to the Kauravas for their supply of wealth and shall have to fight for them. This is my opinion and therefore

अर्धस्य पुरुषो दासो दासस्त्यर्थो न कस्यचित् । इति सत्यं महाराज वदोऽस्म्यर्धेनकौ  
 रवैः ॥ ६६ ॥ तेषामर्थं महाराज योजय्य मिति मेमतिः । अतस्त्वां क्लीबदृष्ट्या युद्धा  
 दन्यत् किमिच्छसि ॥ ६७ ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ हन्त पृच्छाम ते तस्मा दाचार्य नृपु  
 मे वचः । इत्युक्त्वा व्यधितो राजा नोवाच गतचेतन ॥ ६८ ॥ संजय उवाच ॥ त  
 गौतम प्रत्युवाच विज्ञायास्य विवक्षितम् । अवध्योह महीपाल युध्यस्व जयमाप्नुहि ६९  
 प्रातस्तेऽभि गमेनाहं जयन्तवनराधिप । आशासिष्ये सदोत्थाय सत्य मेतद् प्रधीमि ते  
 ॥ ७० ॥ एतच्छ्रुत्वा महाराज गौतमस्य विशाम्पते । अनुमान्य कुरं राजा प्रययौ येन  
 मद्राद् ॥ ७१ ॥ स शल्य मभिवाधाय कृत्वा चाभिप्रदक्षिणम् । उवाच राजा दुर्धर्ष

महाराज मेरा यह मत है इसी हेतुसे मैं असमर्थ के समान तुम्हसे कहता हूँ कि युद्ध  
 के विशेष दूसरी जो बात चाहे वह मुझ से कह । ६६ । युधिष्ठिर बोले हे आचार्य  
 जी बड़े कष्टकी बात है मैभी इसी हेतुसे आपसे पूछता हूँ आपमेरे वचन को सुनो  
 यह कहकर पीड़ावान् और व्याकुल चिन्हीकर कुछ न बोला, संजयबोले कि  
 गौतम कृपाचार्य जी उसके अभिप्राय को अच्छी तरह जानकर यह वचन बोले हे  
 महाराज मैं तो अवध्यही हूँ आपयुद्ध करो और विजयको पाओ मैं तेरेआनेसे  
 प्रसन्न हूँ हे राजा मैं सदैव प्रातःकाल उठकर तेरे विजयहोनेका आशीर्वाद दूंगा  
 यह तुम्हसे सत्य २ कहता हूँ, यह गौतम कृपाचार्य जीके वचनोंको सुनकर उनको  
 प्रदक्षिण पूर्वक नमस्कार करके वहाँको चले जहाँ मद्रदेशके राजाशल्य वर्त्तमानथे  
 । ७० । उस दुर्जय राजा शल्यकी नमस्कार पूर्वक परिक्रमा करके अपने कल्याण  
 कारी वचन को बोला, हे कठिनता से विजय होनेवाले राजा शल्य मैं आपकी  
 प्रतिष्ठा करता हुआ प्रणाम करता हूँ कि मैं निष्पाप होकर युद्ध करूंगा हे राजा

like a weak man I say that you may ask of me anything except what  
 pertains to war" 66 "It is a painful subject to me," said Yudhisht-  
 thir, "that I am constrained to speak about Hear me." Having  
 said this, Yudhishtthir in the excess of grief could speak no more and  
 remained silent Sanjaya continued that Kripacharya, knowing the  
 purpose of Yudhishtthir full well, said to him, "None can kill me.  
 You may fight and gain victory I am much pleased with your  
 coming here I shall pray every morning for your victory and what  
 I say is true" Having heard the words of Kripacharya and having  
 respectfully saluted him, Yudhishtthir moved on to the place where  
 Shalya the king of Madra was 70 Having paid respect to the  
 invincible king Shalya, Yudhishtthir said, "Invincible Shalya! I res-  
 pectfully salute you that I may fight a sinless battle. I shall conquer



मात्मनिः श्रेयसे यच्च ॥ ७२ ॥ अनुमानये त्वां दुर्घर्षे योत्स्ये विगतकल्मषः । जये यन्तु  
 परान् राजन् ननुशतस्त्वया रिपून् ॥ ७३ ॥ शब्द उवाच ॥ यदि मां नापि गच्छेद्य  
 युद्धाय कृतनिश्चयः । शपेयं त्वामिहाराज पराभावापयै रणे ॥ ७४ ॥ तुष्टोऽस्मि पूजितश्चामि  
 यत् कांक्षसि तदस्तुते । अनुजानामि चैवत्वां युध्यस्वजयमान्निहि ॥ ७५ ॥ ब्रूहिचैवपरं  
 धीर केनार्थः किं ददामिते । एवं गते महाराज युद्धादन्यत् किमिच्छसि ॥ ७६ ॥ अर्थ  
 स्य पुरुषोदासो दासस्तयर्थो न कस्य चित् । इति सत्यं महाराज वज्रोऽस्म्यर्थेन कौरवैः  
 ॥ ७७ ॥ करिष्यामिहि ते कामं भार्गवेण यथेष्टितम् ॥ प्रवीम्यतः क्लीपयत्प्रां युद्धा  
 दन्यत् किमिच्छसि ॥ ७८ ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ मन्त्रयस्य महाराज नित्यं मद्रितमुच

आपकी आज्ञासे मैं बड़े बलवान् शत्रुओं को विजय करूँगा शल्य बोले हे महाराज  
 युधिष्ठिर जो युद्धके निश्चय करने को आप मेरे पास नहीं आते तो मैं तुम्हारे  
 परानय के निमित्त महाबाप देता, मैं तुमसे पूजित होकर बड़ा प्रसन्न हुआ हूँ जो  
 इच्छा में होय वह मुझसे माँगो और जो वृत्ति चाहता है वही लेता मनोरथ सिद्ध होगा  
 और मैं तुमको आज्ञा देता हूँ कि युद्धकरो और विजय प्राप्त करो हे वीर इसके सिवाय  
 अपने अभीष्ट को कहो जिसको मैं दूँ हे युधिष्ठिर ऐसी दशा में युद्ध के भिन्न दूसरी  
 बात क्या चाहता है, पुरुष अर्थ का दास है और अर्थ किसी का दास नहीं है यह  
 वचन सत्य २ कहता हूँ कि मैं कौरवों की ओरसे अर्थ के आधीन किया गया हूँ,  
 हे इच्छवान् मैं तेरी अभीष्ट इच्छा को पूर्ण करूँगा इस हेतुसे मैं असमर्थों के समान  
 कहता हूँ कि तुम युद्धके विशेष कौनसी बात चाहते हो ७७। युधिष्ठिर बोले हे महा-  
 राज सदैव सुखदायी मेरे अभीष्ट के विषय में सलाह दो और कौरवों के निमित्त आप  
 युद्ध करो यही मैं वरमांगता हूँ । ७८ । शल्य बोले हे राजेन्द्र यहाँ मैं तेरी कौनसी

the answer by your permission." "I should have prayed for your  
 defeat, had you not come to me," said Shalya, "I am much pleased  
 by your respectful behaviour. Ask of me what you desire and it  
 shall be fulfilled. I give you permission to fight and to conquer.  
 Tell me if you want anything else besides battle. Man is a slave to  
 wealth, but wealth is slave to none. I tell you truly that I have  
 been overpowered by the wealth of the Kauravas. I would fulfil  
 your desire and therefore like a weakling I say that except my joining  
 in battle you may ask me anything you desire." 77. "Give me good  
 advice king," said Yudhishtir, "and fight on the side of the Kauravas.  
 This is all I want." 78. "What help can I render you here, prince."  
 said Shalya, "I have promised the Kauravas to fight against you  
 and shall, therefore, fight for them." "It is sufficient for me," said

मम् । काम युद्धपरस्यार्थे वरमेतं वृणोम्यहम् ॥ ७९ ॥ शल्य उवाच ॥ किमत्र ब्रूहि साहजन्ते करोमि नृपसत्तम । काम योत्स्य परस्यार्थे वद्धो रम्यर्थेन कौरवै ॥ ८० ॥ युधिष्ठिर उवाच । स एव मे वरः शल्य उद्योगे यस्तत्त्वपाकृतः । सुतपुत्रस्य सप्रामे कार्यस्तेजोवधस्तवया ॥ ८१ ॥ शल्य उवाच । सम्पत्स्यत्यंशं ते कामं कुन्तीपुत्र पथे प्लितम् । गच्छ युध्यस्व विश्रब्ध प्रतिजानेवचस्तव ॥ ८२ ॥ संजय उवाच । अनुमान्याप कौन्तेयो मातुलं मद्रकेश्वरम् । निर्जङ्गामं महासैन्याय धातुभिः परिचारितं ॥ ८३ ॥ पाशुदेवस्तु राघेयमाहवेमिज्जगामवै । ततः पनमुवाचेद् पण्डितार्थं गदाग्रजः ॥ ८४ ॥ धृतं मे कर्णं भीष्मस्य द्वेधात् किल न यातिस्वसः । मस्मान् वरपराघेयं यावद् भीष्मो न हन्यते ॥ ८५ ॥ हतं तु भीष्मं राघेयं पुनरप्यासि संपुगम् ।

सहायताकर्ण मैं तेरे प्रतिपत्नी कौरवलोगोंकी ओरसे युद्धके लिये वचन बद्धहोगयाहूं इससे उनकेही निमित्तलड़ंगा, युधिष्ठिरबोले कि हेशल्य तुझे वहीवर आपका दियाहुआ उचितहै जो आपने युद्धके उपाय में मुझसे प्रणयकिया है आपको युद्धमें कर्ण के तेजका नाश करना चाहिये । ८० । शल्य बोले हे कुन्तीके पुत्र युधिष्ठिर यह तेरा मनोरथ सिद्धहोगा तुम इच्छा पूर्वक युद्धकरो तुम्हारी विजयहोगी । ८१ । संजयबोले कि इसप्रकार महावीरों से ऐसे २ वरदान लेकर भाइयों समेत युधिष्ठिर अपने मामाशल्यको नमस्कार करके वही सेना मेंत बाहर को निकले इसके पीछे गदके वड़े भाई वामदेवजा युद्धभूमि में कर्ण के पासगये और पाण्डवोंके निमित्त उससे यह वचन बोले, हर्कर्ण मैंने सुना है कि तुम निश्चय करके भीष्मकी विरुद्धता से युद्ध नहीं करोगे हे कर्ण हमारेसाथरहो और जबतक भीष्मजी नहीं मारेजायें तबतक आपयुद्ध न करोगे भीष्मजीके मरनेपर युद्धके निमित्त संग्राम भूमिमें आकर जो तुमचाहातो दुर्योधनकीसहायताकरो । ८५ । कर्णबोले हे केशवजी मैंदुर्योधन

Yudhishtira, "if you will keep your promise about your share in the war, namely, that you will have to destroy the vigour of Karan" 80 "This desire of thine shall be fulfilled," said Shalya, "fight with a light heart for thou shalt win, son of Kunti." Sanjaya continued that having got the above mentioned boons from the warriors named above, and having respectfully taken leave of his maternal uncle, Yudhishtira came out of the army. Then, Vasudeva, the elder brother of Gada, went to Karan in the field of battle and for the good of the Pandavas, spoke to him as follows: "I hear, Karan," said he, "that you will not take up arms on account of your quarrel with Bhishma. Come and stay with us as long as he is not killed. After Bhishma's death you may again come into the field of battle to fight in Duryo-

घातंराष्ट्रस्य साहाय्यं यदि पश्यासि चेत्समम् ॥ ८६ ॥ कर्ण उवाच । न विप्रियं  
कारिष्यामि घातंराष्ट्रस्य केशव । त्यक्तप्राणाह मां विजि दुर्त्योघन हितैषिणम् ॥ ८७ ॥  
तच्छ्रुत्वा वचनं कृष्णः सन्यवर्त्तत भारत । युधिष्ठिरपुरोगैश्च पाण्डवैः सह सङ्गतः  
संजयउवाच ॥ ८८ ॥ अथ सैन्यस्य मध्यतु प्राक्रोशत् पाण्डवाग्रज । योस्मान्बृणोतितमहं  
वत्ये साह्यकारणात् ॥ ८९ ॥ अथ तान् समाममेक्ष्य युयुत्सु रिदमब्रवीत् । प्रीतः  
त्याघमेराजान् कुन्तीपुत्रं युधिष्ठिरम् ॥ ९० ॥ अहं योस्त्वानि मञ्जतः संयुगे धृत  
राष्ट्रजान् । युष्मदर्थं महाराज यदमां बृणुषेऽनघ ॥ ९१ ॥ युधिष्ठिर उवाच ।  
यहोहि सर्वे योस्त्वामस्तव भ्रातृनपाण्डवान् । युयुत्सो वासुदेवश्च वयञ्च प्रम सर्वशः  
॥ ९२ ॥ बृणोमिस्वां महाबाहो युत्थ्यस्वममकारणात् । त्वयि पिण्डश्च तन्तुश्च

का अग्निष्ट नदीं कङ्गा युष्मको आपदुर्योघनका अभीष्ट चाहनेवाला और उसके  
मिमिच अपुने प्राणोंकाभी त्यागनेवाला जानो, हेभरतवंशी धृतराष्ट्र श्रीकृष्णजी  
उसके वचनको सुनकर युधिष्ठिरादि पांडवोंसमेत वहांसेलौटे, तदनन्तर राजा युधिष्ठिर  
सेना में आकर बड़े उच्चस्वर से पुकारे कि जो हमको वरताहैं मैं उसको सहायताके  
कारण धरताहूं तदनन्तर धृतराष्ट्रके पुत्र युयुत्सुने इनको अच्छे प्रकार से सच्चादेखकर  
बड़े प्रसन्नचित्त होकर कुन्ती के पुत्र धर्मराज राजा युधिष्ठिर से यह वचन कहा कि  
हे महाराज मैं आपके मिमिच युद्धभूमि में धृतराष्ट्रके पुत्रों से लड़ंगा हेनिष्पाप जो  
तुम युष्मको वरतेहो । ९० । युधिष्ठिर बोले हे युयुत्सु आओ हम सब तेरेअज्ञानी  
भइयों से लड़गे वासुदेवजी समेत हमसबप्रकार से कहते हैं, हे महाबाहु मैं तुम्हको  
वरताहूँ मेरेकारण से युद्धकर लूँही धृतराष्ट्र के पुत्रों के पिण्डों का सूत्र दिखाई देता  
है हे बड़े तेजस्वी राजकुमार तुमहम सब चाहने वालोंको चाहो नू निश्चय करके

dhan's cause." 85. "I shall do nothing, said Karan that may be injurious to Duryodhan as I am his staunch well-wisher and can lay down my life for him." On hearing these words, Krishn and the Pandvas returned from that place. Then king Yudhishtir called out in a loud tone, "I accept him for my ally who accepts me." At this Yuyutsu the son of Dhritrashtra, finding the Pandavas true men, spoke cheerfully the following words to Yudhishtir:- "I shall, said he, "fight for you with the sons of Dhritrashtra, if you take me with you." 90. "Come, come, Yuyutsu!" said Yudhishtir in reply, "we shall all fight against thy unwise brothers. Vasudev and I say this. I accept you, brave man, fight for me. Methinks thou art the thread of the cakes that shall be offered to the manes of the sons of Dhritrashtra. Come, glorious prince, to us who accept thee. Know

धृतराष्ट्रस्य दृश्यते ॥ ९३ ॥ भजत्वास्मान् राजपुत्र भजमानान् महाद्यते । न  
 भविष्यति दुर्बुद्धिर्धातिरष्ट्रस्त्यमरणे ॥ ९४ ॥ सञ्जय उवाच ॥ ततो युयुत्सुः कौरव्यान्  
 परित्यज्य सुतांस्तन । जगाम पाण्डुपुत्राणां सेनां चक्राव्य दुन्दुभाम् ॥ ९५ ॥  
 ततो युधिष्ठिरो राजा संप्रहृष्टः सहानुज । जग्राह कवचं भूयो दीप्तिमत् कनको  
 ज्ज्वलम् ॥ ९६ ॥ प्रत्यपद्यन्त ते सर्वे स्वस्थान् पुरुषर्षभाः । ततो व्यूहं यथापूर्वं  
 प्रत्यव्यूहन्तते पुनः ॥ ९७ ॥ अवाद्यन् दुन्दुर्भ्यश्च शतशश्चैव पुष्करान् । सिंह  
 नादांश्च विविधान् ध्वनेः । पुरुषर्षभाः ॥ ९८ ॥ रथस्थान् पुरुषय्याघ्रान् पाण्ड-  
 वान् प्रेक्ष्य पार्थिवाः । घृष्टघुम्नादयः सर्वे पुनर्जहृषिरे तदा ॥ ९९ ॥ गौरवं  
 पाण्डुपुत्राणां मान्यान् मानयताञ्जितान् दृष्ट्वा महीक्षितस्तत्र पूजयाचक्रिरे भृशम्  
 ॥ १०० ॥ सौहृदञ्च कृपाञ्चैव प्राप्तकालं महात्मनाम् । दयाव्रतानिपु परांकथया  
 चक्रिरे नृपाः ॥ १०१ ॥ साधुसाधिविति सर्वत्र निश्चेरुः स्तुतिसांहताः वाचः पुण्याः

जान कि निर्बुद्धि दुर्योधन माराजायगा । ९३ । संजय बोले तबतो युयुत्सु कौरवों  
 और तेरेपुत्रोंको त्यागकरके नगाड़ा बजाकर पांडवोंकी सेनामें गया तदनन्तर बड़े  
 प्रसन्न चित्त उत्साह युक्त राजा युधिष्ठिर ने अपने स्वर्णमय प्रकाशमान महातेजस्वी  
 कवच को धारण किया । ९४ । और वह सब उसके साथी पुरुषोत्तमभी अपने २ रथोंपर  
 सवार होकर उसके रथके पीछे हुये और सबोंने पूर्वके समान अपनेव्यूहको सभद्ध किया,  
 और सैकड़ों दुन्दुभी वा पुष्करनाम अनेक वाजोंको बजाया और नानाप्रकारके सिंह  
 नादभी उन पुरुषोत्तमोंने किये, तब घृष्टघुम्न आदि सब राजालोग पुरुषोत्तम पांडवोंको  
 रथोंपर सवार देखकर फिर प्रसन्न हुये, और उन प्रतिष्ठा के योग्य पुरुषोंको  
 प्रतिष्ठा देनेवाले पांडवों के समूह को देखकर राजालोगों ने बड़ी प्रशंसा की, और  
 समय के अनुसार उन महात्माओंकी जात वालोंपर बड़ी मुहूर्तता और कृपालुता  
 को वर्णन किया, उन कीर्त्तिमानों की प्रशंसासे युक्त पवित्र चिन्तों के हृदय आकर्षण  
 करनेवाले बहुत अच्छा बहुत अच्छा कह श्रेष्ठ वचन चारोंओर को फैल गये, जिन

for certain that Duryodhan shall die." Sanjaya said that at this  
 Yuyutsu left the army of the Kauravas and joined the Pandavas  
 amidst beat of drums Yudhishtir with a cheerful heart put on  
 his bright armour. 95 All the followers of Yudhishtir got on  
 their chariots again and arrayed themselves as before. Hundreds of  
 musical instruments sounded and the warriors roared like lions.  
 Dhrishtadyumn and other princes, best of men, seeing the Pandavas  
 mounted on their chariots, were glad and praised the respectable  
 Pandavas in songs expressive of their merciful deeds of charity. At  
 the praises of the famous Pandavas the cry of "Well and good"

कीर्तिमतामनोहृदयहृषणाः ॥ १०२ ॥ म्लेच्छाश्चाटयोश्च ये तत्र ददृशुः शुश्रुवस्तथा ।  
 वृत्तं तत् पाण्डुपुत्राणां रुद्ररुस्ते सगद्गदाः ॥ १०३ ॥ ततो जघ्नुर्महाभेरीः शतरथस-  
 हस्रशः । शंखाश्च गोक्षीगनिमान दध्मुर्दृष्टा मनास्वनः ॥ १०४ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि भीष्मादिसंमानने  
 त्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४३ ॥

धृतराष्ट्र उवाच ॥ एवं व्यूढेध्वनीकेषु मामकेष्वितरेषु च । के पूर्वं प्राहरंस्तत्र कुण्डः  
 पाण्डवानुक्तिम् ॥ १ ॥ संजय उवाच ॥ आरुभिः सहिता राजन् पुत्रो दुःश सनातन ।  
 भीष्मं प्रमुषतः कृत्वा प्रययौ सहसेनया ॥ २ ॥ तथैव पाण्डवाः सर्वे भीमसेनपुरोगमाः ।  
 भीष्मेण युद्धमिच्छन्तः प्रवृद्धेष्टमानसाः ॥ ३ ॥ ह्येडा किलकिटाशब्दाः कृकचा गो

म्लेच्छ और आर्य पुरुषों ने पाण्डवों के उस चलनको देखा और सुना वह गद्गद  
 कण्ठों से रुदन करनेलगे तदनन्तर प्रसन्न चिन्ता साहसी सेना के मनुष्यों ने सैकड़ों  
 भेरी और पुष्करादि अनेक वाजे और दुग्ध समान महाश्वेत उत्तम उत्तम शंखों  
 को बजाया १०४ ॥

अध्याय ॥ ४४ ॥

धृतराष्ट्र बोले कि मेरे पुत्रोंकी और पाण्डवों की सेना के इस रीति पर  
 तैयार होनेपर पहले किन लोगों ने अर्थात् कौरव पाण्डवों में से पहले किस ने  
 प्रहार किया । १ । संजय बोले कि आपका पुत्र दुःशासन भाई के उम. वचन  
 को सुनकर भीष्मजी को प्रागे करके सेनाके साथ चला, इसीप्रकार भीमसेन  
 आदि सब प्रसन्न चित्त पाण्डव लोगभी भीष्म जीसे युद्ध करने की इच्छा करके  
 चले । २ । शंखध्वनि और कलकला शब्द पूर्वक कृकच, गोविपाक, भेरी, मुदंग, मुरज,  
 इत्यादि वाजों के और घोड़े हाथियों के अनेक प्रकारके शब्द होने लगे, हे राजा

spread all round. All the mlechas and Aryans who heard of the  
 conduct of the Pandavas, wept for excess of joy. The cheerful and  
 ambitious warriors of the army sounded hundreds of musical instru-  
 ments and milk-white conch-shells. 104.

#### CHAPTER XLIV

"Which side was the first to strike a blow, when the two armies  
 were thus prepared for battle?" asked Dhritrashtra. "Your son,  
 Dushasan," replied Sanjaya, "went forward, led by Bhishm, at the  
 order of Duryodhan; Bhim and other Pandavas, cheerful at heart,  
 proceeded to meet Bhishm in combat. Conch shells were sounded,  
 warriors roared, various musical instruments were beaten and blown.

विषाणिका । भेरीमृदङ्गमुरजा ह्यकुन्नरनि स्वना ॥ ४ ॥ उभयोः सेनयोर्ह्रासस्ततश्चे  
 ऽपान्ममाद्रघन । घय तान् प्रति नर्दन्ततदासीत्तुमुलमहत् ॥ ५ ॥ महान्त्यनीकानि  
 महासमच्छ्रये समागमे षण्ढवघातैराष्ट्रयो । चक्राग्निरे शङ्खमृदङ्गनि स्वनैः प्रकम्पिता-  
 नास्त चनानि वायुना ॥ ६ ॥ नरेन्द्रनागाश्वरथाकुलानामभ्यागतानामशिवे सुहृत् ।  
 वभूव घोषस्तुमुलश्चमना वातोद्भुतानामिव सागराणाम् ॥ ७ ॥ तामन् समुत्थिते शब्दे  
 तुमुले लोमहर्षणे । भीमसेनोमहाबहु प्राणदद्गोवृषो यथा ॥ ८ ॥ शखदुन्दुभि निघो  
 प धारणानाच्च वृहितम् । सिंहनादश्चसैन्यानां भीमसेन रघोऽभ्यभूत् ॥ ९ ॥ हयानाहेप  
 माणानामनीके पुसहस्रशः । सर्वानभ्यभयच्छब्दान् भीमस्यनदत् स्वन ॥ १० ॥ तद्भुवा  
 नितद् तस्य सैन्यास्तव षतत्रसु । क्षीभूतस्येव नदत् शक्राशनि समस्वनम् ॥ ११ ॥

तदनन्तर वह दोनों सेनाओंके वीर लोग परस्पर में एक दूसरे पर महार करने को  
 महा गर्जनाओं को करके ऐसे दौड़े कि जिनके शब्दों से महातुमुलशब्द होगया  
 । ५ । पाण्डवों और दुर्योधनादि कौरवों की महापुञ्ज करने वाली सेना समागम  
 के समय शंख और मृदंगोंके शब्दों से ऐसी महा कम्पायमान हुई जैसे कि वायु से  
 सब वन कम्पायमान होते हैं, फिर राजा लोगों से और हाथियों से समाकुल और  
 अशुभ मुहूर्त्त में आनेवाली सेनाओं क ऐसे कठोरशब्द हुए जैसे कि वायुसे  
 चलायमान समुद्रों के शब्द होते हैं । ७ । शरीर के रोमहर्षण करनेवाले उस  
 तुमुल शब्दक उठने पर महाबाहु भीमसेन ऐसा गर्जा कि जिसकी गर्जना के  
 कारण शंख दुन्दुभियों के शब्द और हाथियोंकी चिंघाड़ वा सेनाके मनुष्यों  
 से सिंहनादभी तिरस्कार होगये, इस भीमसेनके शब्द ने सेना के मध्यवर्त्ती  
 हजारों घोड़ों के दिनहिनाहट आदि अनेक शब्दों को दबादिया । १० । उसके  
 उस महावज्र के समान शब्द को सुनकर तेरी सेना के मनुष्य अत्यन्त भयभीत हुए  
 उस वीर के शब्द से सब सरारियों के बाहनों ने ऐसे भूज विष्टा को डाला जैसे

and the noise of all these, mixed with the neighing of horses and the grunting of elephants, was excessive. The warriors on either side rushed on to fight with tremendous roars. 5 The armies of the Pandavas and Kauravas shook with the noise of conch shells and drums as forests shaken by the wind. The uproar from the warriors and elephants of the army was like that of the ocean in a storm of wind. 7 Above that fearful din rose Bhim's war cry which was heard above the sounds of conch shells, trumpets, elephants and warriors and subdued the neighing of thousands of horses. 10 The people of thy army were afraid to hear the thunder like sound of

घाहनानिच सर्वाणि शङ्खमूर्धं प्रसृजुतुः । शब्देन तस्म वीरस्य सिंहस्येवेतरेभृगाः  
 ॥ १२ ॥ दर्शयन् घोरमात्मान महाभ्रमिव नावयन् । विभीषयन्तवसुतान् भीमसेनः  
 समभ्ययात् ॥ १३ ॥ तमायान्तं महेष्वासं सोदर्याः पश्यन्वारयन् । छाद्यन्तःशर  
 ब्रातैर्मघा इव दिवाकरम् ॥ १४ ॥ दुर्योधनश्च पुत्रस्ते दुर्मुखो दुःसहःशलः । दुःशा  
 सनश्चातिरथस्तथा दुर्मर्षणो नृपः ॥ १५ ॥ विविशतिश्चित्रसेनो विकर्णश्चमहारथः ।  
 पुरमित्रो जयो भोजः सौमदत्तिश्च वीर्यवान् ॥ १६ ॥ महाचापानि ध्रुवन्तो मेघा इव स  
 विद्युतः । आददानाश्च नाराचाधिर्मुक्ताशीविषोपमान् ॥ १७ ॥ अथ ते द्रौपदीपुत्राः  
 सौमद्रश्च महारथः । तकुलः सहदेवश्च धृष्टद्युम्नश्च पार्वतः ॥ १८ ॥ घातं राष्ट्रान्प्रति  
 यपुरदंयन्तः शितैःशरैः । धञ्जैरिव महावेगैः शिखराणि घराभूताम् ॥ १९ ॥ तस्मिन्

कि सिंह के शब्द को सुनकर अन्य जंगल के पशु विष्ठा मूत्रको डालते हैं । १२ ।  
 वहाँ भीमसेन अपने शरीर को महा भयानक दिखाता और बड़े धनके समान  
 गर्जता तेरेपुत्रों को डराता हुआ फिर उन्हींके सम्मुख आया, तबतो उस आते  
 हुए बड़े धनुषधारी भीमसेनको दुर्योधन के सहोदर भाइयों ने चारों ओर से बाणों  
 की वर्षा से ऐसा ढक दिया जैसे कि सूर्य को बादल ढकदेता है, हे राजा आपके  
 पुत्र दुर्योधन, दुर्मुख, अतिरथी दुःशासन, दुस्तह, दुर्मर्षण, विविशति, चित्रसेन,  
 महारथी विकर्ण, पुरभिन्न, जय, भोज, पराक्रमी सौमदत्त यह सब वीर जैसे बादल  
 विजली को धारण किये हुए होते हैं उसी प्रकार धनुषों को चढ़ाये हुए कांचली  
 रहित सर्पों के समान नाराच नाम बाणों को हाथों में लिये हुए सम्मुख आये  
 । १७ । तदनन्तर द्रौपदी के पुत्र और सुभद्राका पुत्र महारथी अभिमन्यु नकुल  
 सहदेव पार्षदका पुत्र धृष्टद्युम्न यह सब बड़े तीक्ष्णशरों से ऐसे पीड़ित करते हुए  
 शत्रुओंके सम्मुख गये जैसे बड़े वेगवान् वज्रों से शिखरों को पीड़ित करते हुए  
 इन्द्र पर्वतों के सम्मुख जाय, उस पहले युद्धमें तेरेपुत्रोंके और पांडवों के धनुषों की

Bhim, and the animals were so terrified as if they had heard the roar  
 of a lion. 12. Bhimsen, with his formidable appearance, roaring  
 like thunder and terrifying thy sons, came again in front, and the  
 great archer, Bhimsen was covered on all sides by the arrows of  
 Duryodhan's brothers as the sun by the clouds. Your sons  
 Duryodhan, Durmukh, valiant Dushasan, Dussah, Durmarshan,  
 Vijinshati, Chitrasen, valiant Vikarn, Purumitra, Jaya, Bhoj  
 and warlike Somdatta, with their bows bright like lightning  
 and arrows deadly like the serpents who have cast their skins, came  
 to the front. The sons of Draupadi, Abhimanyu the son of Subhadra,  
 Nakul, Sahadev and Dhrishtadyumna the son of Parshad came in  
 front of the enemy, shooting their sharp arrows as Indra strikes his

प्रथमसंग्रामे भीमज्यातुलनि स्वने । ताववानापरोपाच नासीत्कथित् पराद्मुख २०  
 लाघव द्रोणाशिक्ष्याणामपश्य भरतर्षभ । निमित्तयेधिना चैव शत्रुनुत्सृजतां भृशम्  
 ॥ २१ ॥ नोपशाम्यति निर्घोषो धनुषाकूजता तथा । विनिश्चेष्ट शरादीप्ता ज्योतीषीव  
 नभस्नलात् ॥ २२ ॥ सर्वे त्वग्ये महीपाला प्रेक्षका इव भागत । ददृशुर्दर्शनीयं तं माम्  
 ज्ञातिसमागमम् ॥ २३ ॥ ततस्ते जातिसरम्भा परस्परकृतागतः । अग्न्योन्यस्पर्धया  
 राजन् व्यायच्छन्तमहाराथा ॥ २४ ॥ दुर्योधनवसेने ते हस्त्यश्वरथसकुले । शुशुभते  
 रणेऽतीवपटे चित्रार्पितेऽिव ॥ २५ ॥ ततस्त पार्थिवास्तत्रै प्रगृहीतशरासना । सह  
 सैन्या समापेतु पुत्रस्यतव शासनात् ॥ २६ ॥ युधिष्ठिरेण चादिष्टा पार्थिवास्ते

ज्या प्रत्यंचाओं के भयानक शब्दों से दोनों पक्षवालों में से कोईभी परांमुख नहीं  
 हुआ अर्थात् किसीने मुख न फेरा । २० । हे भरत वंशियों में श्रेष्ठ राजा धृतराष्ट्र  
 मैंने बाणोंको बराबर छोड़ते और सत्तों को बेधते हुए द्रोणाचार्य के शिष्यों की  
 हस्तलाघवता को देखा, उस समय शब्दायमान धनुषों के शब्द बन्द नहीं होते थे  
 और प्रकाशित बाणभी बराबर ऐसे चले जैसे कि आकाश से नक्षत्रों के पतन  
 बराबर होते हैं । २२ । हे भरतवशी अन्य सब राजाओं न कुतूहल देखनेवालों  
 के समान उस दर्शनीय और भय उत्पन्न करने वाले जात भाइयों के युद्धको देखा,  
 तदनन्तर हे राजा उन क्रोधों में भरेहुए परस्पर में अपराधी महा शयियों ने अग्न्यो-  
 न्यकी ईर्ष्या से परस्पर वीरताकी, कौरव और पांडवों की वह दोनों सेना हाथी घोड़े  
 और रथों से व्याप्तहोकर युद्धमें ऐसी शोभायमान हुई जैसे चित्र पटों से विचित्र  
 दो वस्त्रहोते हैं । २५ । तदनन्तर धनुषबाण हाथमें लिये सब राजा लोग आपके  
 पुत्रकी आज्ञासे सेनाके मनुष्यों समेत चारों ओरसे आटूटे उनचारों ओरसे दौड़ने  
 वालों के व्याकुल शब्द उस समुद्रकी गर्जना से मुनाई दिये जिस समुद्र में हाथी

bolts at a mountain None of the warriors turned back from the  
 arrows of the Pandavas or those of thy sons in that first encounter  
 20 I saw, O king Dhritrashtra ' the dexterity of the pupils of Dro-  
 naoharya in discharging arrows and hitting the mark The twang  
 from their bows was continuous and the bright arrows looked like the  
 fall of meteors from the sky 22 Other kings only looked on at the  
 awe inspiring encounter of those brothers and kinsmen Then, O king  
 those angry warriors eager to destroy one another, made use of their  
 skill in fighting The armies of the Kuravas and the Pandavas,  
 with their elephants, horses and chariots looked as beautiful as the  
 pictures on a canvass 25 Then all the kings with bows and arrows  
 in their hands rushed on all sides by the order of your son The  
 hubbub caused by the assulants was like the roar of the ocean having



सहन्त्रश । विनदतः समपेतु पुत्रस्य तव वा द्विनाम् ॥ २७ ॥ उभयोः सेनयोस्तीव्रः  
 सैन्यानां समसमागमः । अतर्धायनचादित्य सैन्येन राजसावृण ॥ २८ ॥ प्रयुद्धानां प्रभक्तानां  
 पुनरावर्तिनामपि । नाशस्वेया परेषां विशेष समदृश्यत ॥ २९ ॥ तस्मिन्नुत्तुमुले सुखे  
 यत्तमाने महामये । अतिसर्वाण्यनीकानि पितावेषमिच्यरोचत ॥ ३० ॥

इति श्री महामारते भीष्मपर्वणि भीष्मवचनपर्वणि युद्धारम्भे  
 चतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४४ ॥

समप उवाच । पूर्वाह्णे तस्य रौद्रस्य युद्धमहानोविशाम्पते । प्रावर्त्तत महाघोर  
 राज्ञो देहादकर्त्तव्यम् ॥ १ ॥ कुरुणा खड्गयानां च जिमोष्णापरस्परम् । सिंहा

घोड़ों के शब्द सिंहाद से मिश्रित वार धेरी से व्याकुल शब्दापमान बाण-प  
 ग्राहवाला धनुष हाथी और खड्गरूप कटु रत्न के बाला और चारों ओर से घोड़ों  
 की चाल रूपवायु का आगे रखनेवाला था, और युधिष्ठिर की आज्ञा पायेहुए  
 हजारों राजानों अपनी सेना के मनुष्यों समेत आपके पुत्रकी सेनापर पड़े उस  
 समय दोनों ओर के वीरों में पासपर ऐसा कठिन युद्धहुआ जिसकी धूलिमे सूर्य  
 भी आन्डावृत होगया, धूमिसे दोनों ओर के वीरोंका अत्यन्त लड़ना वा मुरफेरना  
 भयवा लौटना वा किसी की मुख्यता दिखाई नहीं दी इस बड़े भयकारी तुमुल  
 युद्ध के वर्त्तमान होने पर आपके पिताभीष्म जी सब मेना को उल्लंघनकर के  
 अत्यन्त शोभायमानहुए ॥ ३० ॥

अध्याय ४५ ॥

संजयोति कि हे राजा उनभयकारियों के प्रथमभाग में राजाओं के शरीरोंको  
 काटनेवाला महामारी घोर युद्ध आरंभहुआ, युद्धमें विजया कांक्षी कौरवों के और  
 धृजिर्षों के सिंहाद रूपी शब्दों ने पृथ्वी और आकाशको शब्दापमान कर दिया,

the noises of elephants and horses mixed with the roars of warriors and  
 swords for crocodiles and tortoises and the tramp of horse, hoof, for  
 wind storm At the order of Yudhishtir, thousands of lings with  
 their attendant warriors fell on the army of thy son. The battle on  
 both sides was severe and the sun was hidden by the dust storm  
 raised by them, the feats of warriors, their turning back, the supre-  
 macy of one warrior over the other were not distinguishable in that  
 great battle and your father Bhishm was glorious above all 32

#### CHAPTER XLV

Sanjay continued "Thus commenced the greatest war, destructive  
 of kings The war cries of the Kauravas and Srinjayas, desirous of

नामैव संहारो दिवमुर्वीक्षनादयन् ॥ २ ॥ आसीत् किलकिलाशब्दस्तलशहरवै  
सह । जज्ञिरे सिंहनादाश्च शूराणां प्रतिगर्जताम् । तलत्राभिहताश्चैव ज्याशब्दाभरत  
पम । पत्नीनां पादशब्दश्च बाजिनांच महास्वनः ॥ ४ ॥ तोषाङ्कुशनिपतश्चआ-  
युधानांच निस्वनः । घण्टाशब्दश्च नागानामन्योन्यमभिधावताम् ॥ ५ ॥ तस्मिन्  
समुदिते शब्दे तुमुले लोमहर्षणे । धमूच रथनिर्घोष पञ्जर्जननिदोषमः ॥ ६ ॥  
ते मनः क्रमाघाय समभित्यक्तजीविताः । पांडवानभ्यवर्त्तन्त सर्वपञ्चोद्धृतध्वजाः ७  
अथ शान्तनवो राजश्रभ्यधावदन्तजयम् । प्रयुह्य कामुकं घोरं कालदण्डोपमरणे ॥ ८ ॥  
वर्जुनोपि धनुर्गृह्य गाण्डीवं लोकविश्रुतम् । अम्यधावत तेजस्वी गाङ्गेयं रणमूर्धनि  
॥ ९ ॥ तावुमौ कुरुशाईलौ परस्परवधौषिणौ । गांगेयस्तु रणे पार्थं विध्वानाकम्प

और धनुषधारियों के धनुषों की टंकारों समेत शंखों की महा ध्वनियों से अत्यन्त  
कलकला शब्द उत्पन्न हुआ और परस्पर में सम्मुख गर्जनेवाले मनुष्यों के सिंहनाद  
उत्पन्न हुये, हे भरतर्षभ हस्तत्राण से टक्कर खाई हुई भर्त्यचात्रों के शब्द और  
पदातियों आदि घोड़ों के चरणोंके शब्दों से और गिरिहुये अंजुश वा भस्त्रों के  
शब्दों से अथवा परस्पर में सम्मुख दौड़ने वाले हाथियों के घंटोंके शब्दों से, इस  
युद्धमें शरीर के रोमहर्षण करने व ले तुमुल शब्द उत्पन्न हुये और रथों के शब्द  
वादलों की गर्जना के समान हुये । ६ । वह सबलोग जिनकी ध्वजा उन्नतथीं  
और जो जीवनकी आशाको अत्यन्त त्यागकरके कठोर चित्त निर्दय और दूसरों  
से शत्रुता करनेवाले बनकर पांडवों के सम्मुख लड़ने को उपस्थितहुये हे राजा  
आप भीष्मपितामहजी कालदण्ड के समान भयानक रूप धारण किये अपूर्व  
भयकारी धनुष को हाथ में लेकर अर्जुनके सम्मुख दौड़े और संसारमें विदित  
धनुषमारी महाहस्त लाघव जानने वाला तेजस्वी अर्जुनभी अपने गांडीव धनुषको  
लेकर भीष्मजी के सम्मुख दौड़ा, कौरवों मे महा श्रेष्ठ वह दोनों परस्पर में मारने  
की इच्छा में मूढत हुये परन्तु महाबली भीष्मजी ने अर्जुनको बाणों से भेदकर

victory echoed through the earth and sky, and the noise was great from  
the twangs of bows, the blasts of the conch-shells and the roar of war-  
riors. From the twangs of bows, the tramp of the soldiers and horses,  
the fall of goods and other weapons and the ringing of the bells of the  
moving elephants, the noise was tremendous, and the rambling of  
the chariot wheels was like thunder. 6. I shall mention those who  
with banners upraised, fought desperately and fearless of life, encoun-  
tered the Pandavas. Bhishm the grandfather, dreadful as the rod  
of Death, armed with the most dreadful bow, rushed upon Arjūn.  
That world-renowned archer too, of very great dexterity of hand,  
Arjun, armed with the Gandiv bow rushed upon Bhishm and the two  
best of Kauravas, met each other in combat, wishing to strike each  
other. But Bhishm of great prowess could not quell Arjun with his

यद्गली ॥ १० ॥ तथैव पांडवो राज्ञः भीष्मं नाकम्पयन्नाथ । सात्वकिस्तु महेश्वरा  
 वृत्तवर्माणमभ्ययात् ॥ ११ ॥ तयोः समं भवत्युद्धं तुमुललोमहर्षणम् । सात्वकिः वृत्तवर्मा  
 णंवृत्तवर्मा च सात्वकिम् ॥ १२ ॥ यानच्छेत्तु शङ्घोरस्तक्ष्माणौ परस्परम् । तीक्ष्ण-  
 चित्तसर्वाङ्गौ शत्रुभाते महाबली ॥ १३ ॥ वसन्तेपुष्पशरलौ पुणितगिघ्रि किङ्गुका ।  
 अभिमन्युर्महेश्वरासं वृहद्वलमयोधयत् ॥ १४ ॥ ततः कासलराजासावभिमन्यो  
 र्विशाम्पते । ध्वजचिच्छेदं समरे सात्विक्यपातयत् ॥ १५ ॥ सौमद्रस्तुततः  
 क्रुद्धः पातिते रथसारथौ । वृहद्वलं महाराजं विव्याध नवाभिः शरैः ॥ १६ ॥ सद्यः  
 परान्यामंश्लान्या शिताम्यामरिमर्वनः । ध्वजमेकेनचिच्छेद्व्याधिमेकेन सारथिम् ॥ १७ ॥  
 अन्योन्यञ्च शरैः कुक्षौ ततश्चातेपरस्परम् । मानिनः समरे हतः कृतवैरं महारथम् ॥ १८ ॥  
 भीमसेनस्तपसुतं दुर्योधनं योधयत् । तावुमौ नरशार्ङ्गौ कुरुक्षेत्रे महारथौ ॥ १९ ॥

कंपायमान नहीं किया । १० । इसी प्रकार अर्जुनने भी भीष्मजी को बाणों से  
 भेदकर कंपायमान नहीं किया और शत्रुपगारी सात्विकी कृतवर्माके सम्मुख गया,  
 इनदोनों काभीरोमहर्षण महातुमुल युद्धदुआ सात्विकानेकृतवर्माको मरैकृतवर्मने  
 सात्विकीको घायल किया, दोनों ने बड़े-शङ्खोंको कहकरपरस्परमें घायल किया,  
 तदनन्तर वहदोनों यादवबाणों से भरेहुये अंगोंसमेत ऐसे शोभायमान विदित-हुये  
 जैसे कि वसन्तऋतु में फूलों से आच्छादित विचित्र किङ्गुक होते हैं उससमय  
 बड़ाशत्रुधारी अभिमन्यु वृहद्वल से युद्धकरने लगा । १४ । हेराजा तिसपीठे युद्ध  
 में राजा कोसलने अभिमन्यु की ध्वजा को गिराकर उसके सारथी को गिराया  
 ध्वजाकेकाटने और रथसारथीके गिरानेसे अभिमन्युने महाक्रोधाम्भिरूप होकर  
 वृहद्वलको नौबाणों से घायल किया, अर्थात् एक बाणमे तो ध्वजाको और एक  
 बाणसे पीछे के रक्षक और सारथी को मारा, शत्रुमेंके विजय करने बान्ने, दोनों  
 ने परस्पर में तीक्ष्ण बाणों से घायल किया और महामानी युद्ध में प्रकाशित  
 शत्रुता करनेवाले महारथी आप के पुत्र दुर्योधनसे भीमसेन युद्ध करने लगा, उन

arrows 10 Nor could Arjun shake Bhishm by his arrows. Sat  
 with the great archer encountered Krtvarma, and the two warriors  
 fought furiously and wounded each other while they spoke high-  
 sounding words. The two Yadavas, with their bodies wounded by  
 arrows looked like Kinshuks (a tree with red flowers) in bloom in  
 spring season. Abhimanyu the great archer fought with Vrihadval  
 14 The king of Kosal felled the banner of Abhimanyu and killed  
 the driver. Being infuriated by the fall of his banner and chariot  
 driver, Abhimanyu wounded Vrihadval with nine arrows. With  
 one arrow he cut down his banner, with another he killed the driver  
 and the rear guard. The two conquerors of enemies wounded each  
 other. Your proud son Duryodhan of great glory in battle, valiant  
 and resentful, met with Bhimsen in combat. Both these Kauravas

जन्योन्यं शरवर्षाभ्यां वनृपाते रणाजितं । तौ वीक्ष्यहुर्महामानौ कृतिनौ चित्रयो-  
धिनी ॥ २० ॥ विस्मय सर्वभूतानां समपद्यतभारत । दुःशासनस्तु नकुलं प्रत्यु-  
घाय महाबलम् ॥ २१ ॥ अविध्यन्निशितैर्बाणैर्बहुभिर्मर्मभेदिभिः । तस्य माद्रीसुत  
केतुः सशरञ्च शरासनम् ॥ २२ ॥ विच्छेद निशितैर्बाणैः प्रहसन्निध भारत । अथैनं पंच  
विंशत्या क्षुद्रकाणां समारपयत् ॥ २३ ॥ पुत्रस्तुतवदुर्धर्षां नकुलस्य महाहवे ।  
तुरङ्गाश्चिच्छिदेवागैर्ध्वजञ्चैवाभ्यपातयत् ॥ २४ ॥ दुर्मुखः सहदेवं च प्रत्युघाय महाबलम् ।  
विध्याध शरवर्षेण यतमानं महाहवे ॥ २५ ॥ सहदेवस्ततो धीरो दुर्मुखस्य  
महारणे । शरेण भृशतीक्ष्णेन पातयामास सारथिम् ॥ २६ ॥ तावन्न्योन्यं समा-  
साद्य समरे युद्धदुर्मदौ । त्रासयेतां शरैर्घोरैः कृतप्रतिकृतैर्पिणौ ॥ २७ ॥ युधिष्ठिरः  
स्वयराजः मद्राजानमभ्ययात् । तस्य मद्राधिपञ्चापं विधा विच्छेद मारिप ॥ २८ ॥

दोनों नरोत्तम और कौरवोत्तम महारथियों ने । १९ । युद्धभूमि में अपने २ बाणों की  
वर्षा से परस्पर में एकने दूसरेको ढक दिया, हे भरतवंशी उन युद्ध में कुशल दोनों  
महात्मा चित्रयोधियों को देखकर सब जीवों को आश्चर्य उत्पन्न हुआ । २० । और  
दुःशासन ने महारथी नकुल के सम्मुख जाकर बड़ी प्रसन्नता से तीक्ष्ण बाणों से नकुल  
को घायल किया और इसी प्रकार हे राजा हँसते ही हुये नकुल ने भी अपने तीव्र  
बाणों से दुःशासन की ध्वजा और धनुषबाणको काट डाला और पच्चीस लुटक  
नाम बाण उमपर छोड़े । २१ । फिर तो पुत्र दुःशासन ने नकुल के घोड़ों को  
मारकर उसकी ध्वजा को गिराया, और दुर्मुख ने महाबली सहदेव के सम्मुख  
जाकर उपाय करने वाले सहदेवको अपने बाणोंकी वर्षा से पीड़ामान किया । २५ ।  
तिसपीछे बड़ेवीर सहदेव ने उसी युद्ध के बीच बड़े तीक्ष्ण तीरों से दुर्मुख के  
सारथीको गिराया उन दोनों दुर्मद घात के बदले घात करने के इच्छावान् वीरों  
ने अपने भयकारी बाणों में युद्ध में भय उत्पन्न कर दिया, और आप राजा युधिष्ठिर  
मद्रदेश के राजा के सम्मुख गये उसको देखते ही मद्रदेश के राजाने युधिष्ठिर के

are the best of men 19 With the shower of their arrows they  
covered each other and the lookers on wondered to see the fighting  
of those two warriors 20 Dushasan met Nakuland, with a cheer-  
ful heart, wounded him by his arrows Likewise, Karan too, with  
a smiling face, cut down with his arrows Dushasan's banner, bow and  
arrows, and shot twentyfive arrows of small heads at him 23 Then  
thy son Dushasan killed the horses of Nakul and cut down his  
banner. Durmukh encountered Sahadev of great valour and wounded  
him with his arrows 30 The great warrior, Sahadev struck  
Durmukh's chariot driver down by his sharp arrows. The two  
dreadful warriors, with their plots and counterplots, caused a great  
alarm in the field of battle King Yudhishtir himself encountered

तदपास्य धनुर्दिष्ठं कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः । अन्यत्कार्मुकमादाय वेगवद्बलवत्  
रम् ॥ २९ ॥ ततो मद्रेश्वरं राजा शरैः सन्नतपर्वभिः । छाद्यामास संकुदस्ति-  
ष्ठितिष्ठेति चाग्रवीत् ॥ ३० ॥ धृष्टद्युम्नस्ततो द्रोणमन्यद्रयत भारत । तस्य द्रोणः  
सुसंरुद्धः परासुकरणं दृढम् ॥ ३१ ॥ त्रिधाचिच्छेद् समरे पांचाल्यस्तु कार्मुकम् ।  
शरञ्चैव महाघोरं कालदण्डमिवायम् ॥ ३२ ॥ प्रेषयामास समरे सोमदत्तः सैन्य-  
मञ्जत । अघायद्वनुरादाय सायकांश्च चतुर्दश ॥ ३३ ॥ द्रोणं द्रुपदं प्रतप्तप्रतिविष्याथ  
सयुगे । तावन्वायं ससंकुशौ चक्रतु सभृशं रणम् ॥ ३४ ॥ सोमदत्तिं रणशङ्को-  
रमसं रमसोयुधि । प्रत्युद्ययौ महाराज तिष्ठतिष्ठेति चाग्रवीत् ॥ ३५ ॥ तस्य वै दक्षिणं  
घाते निर्भिभद् रणे भुजम् । सौमदत्तिस्ततः शङ्खं जनुदेशे समाहणत् ॥ ३६ ॥  
तयोस्तदशयद्युद्धं घोररूपं विशास्यते । हतयोः समरे पूर्वं कृत्रवासवघोरित्य ॥ ३७ ॥

धनुष को काट डाला । २८ । तब कुन्ती के पुत्र वेगवान् युधिष्ठिर ने उस कटे हुए  
धनुष को डालकर दूसरे दृढ़धनुषको धारण किया, तिसपीछे अत्यन्त क्रोधपुक्त होकर  
राजा युधिष्ठिर ने दक्षिण बाणों से मद्रदेशाधिपति को आच्छादित किया और  
तिष्ठतिष्ठ करके अनेक वचनोंको कहा । ३० । हे भरतवंशी इसके पीछे धृष्टद्युम्न  
द्रोणाचार्य के सम्मुख दौड़ा उससमय महा क्रोध में भरे हुए द्रोणाचार्य ने युद्ध में  
उस महात्मा पांचाल के दृढ़ धनुष को जोकि मारनेका साधन था काटडाला और  
महा भयानक काल दण्ड के समान अपने बाणको युद्धमें फेंका वह उसके शरीर  
में घुस गया तिसपीछे द्रुपदके पुत्र धृष्टद्युम्न ने दूसरे धनुष में शायक नाम चौदह  
बाणों को धारण करके युद्धमें द्रोणाचार्य को घायल किया और दोनों क्रोधरूपों  
ने परस्पर में बड़ा युद्ध किया । ३४ । हे महाराज युद्ध में शीघ्रता करने ज्ञाला  
शेर अपने समान गुणवाले सोमदत्त के सम्मुख गया और निष्ठतिष्ठ शब्दको बोला  
तब बड़े धीर सोमदत्तने युद्धमें उसके दक्षिण भुजा को घायल करके अत्यन्त ही  
व्याकुल किया, हे राजा उन दोनों अहंकारियों काभी युद्ध ऐसा महा भयकारी

the king of Madra, who cut down Yudhishtir's bow as soon as he saw  
him. 28. Then Yudhishtir the son of Kunti dexterously threw  
away that bow and took up another, a hard one, and in great anger  
covered the king of Madra with his arrows, saying "Stay, stay" 30.  
Dhrishtadyumna rushed upon Dronacharya who cut down the hard  
bow of the Panchal prince with which the latter had come to fight.  
Dronacharya discharged his arrows like the staff of death which  
pierced the body of the Panchal prince Dhrishtadyumna the son of  
Drupad thereupon discharged fourteen arrows from another bow and  
wounded Drona. Both these enraged warriors fought valiantly. 34.  
Shakuni the dexterous in battle, faced Somadatta who was his equal,  
and said, "Stay, stay." Somadatta wounded his right arm which  
smarted and upset his mind. The encounter between those two

वाहलीकन्तुरणे कुडं क्रुद्धरूपो विशाम्पते । अश्वद्रवदमेयात्मा धृष्टकेतुमहारथ ॥ ३८ ॥ वाहलीकन्तु रणेराजन् धृष्टकेतुमर्मण । शरैर्वहुभिरानच्छत् सिंहनाद मघानदत् ॥ ३९ ॥ चेदिराजन् सक्रुद्धो वाहलीक नवभिः शरैः । विव्याध समरे तूर्णं भक्तो मत्तमव द्विगम् ॥ ४० ॥ तौतत्र समरे क्रुद्धौ नर्दन्तौ च पुन पुन । समीयतु सुसक्रुद्धाचङ्कारवबुधाविच ॥ ४१ ॥ राक्षस रौद्रकर्माणं क्रूरकर्माघटोत् कच । अलम्बुप प्ररुगुदियाद्वल शक्रदवाहवे ॥ ४२ ॥ घटोत्कचस्ततः क्रुद्धो राक्षसं तं महाबलम् । नवत्या सायकैस्तीक्ष्णैर्दारयामास भारत ॥ ४३ ॥ अलम्बुपस्तु समरे भैमसेनि महाबलम् । बहुधा दारयामास शरैः सध्रतार्वाभिः ॥ ४४ ॥ व्यभ्राजेतां ततस्तौ तु संयुगे शरविस्तृतौ । यथा देवासुरे युद्धे बलशक्नोमह बलौ ॥ ४५ ॥ शिखण्डी समरे राजन् द्रौणिमश्रुययौ बलौ । अश्वत्थामा ततः क्रुद्ध

हुआ जैमा देव दानवों का युद्ध होता है । ३७ । तिस पीछे वड़ा साहसी महारथी युद्ध में क्रोध रूप धृष्टकेतु वाहलीक राजा के सम्मुख गया, तब वाहलीक ने उमत्तमा से रहित धृष्टकेतु को बहुत से बाणों से आच्छातिद करके महा सिंहनाद किया फिर उस महाक्रोधरूप चेदिराज धृष्टकेतु ने भी युद्ध में बड़ी शीघ्रता से नौ बाणों से वाहलीक को घायल किया और ऐसा युद्ध किया जैसे मत्त और उनमत्त हाथी लड़ते हैं । ४० । और युद्धमें महा क्रोधाग्निरूप दोनों बारंबार शब्दों का करते हुये मंगल और बुधके समान बड़े पराक्रम से लड़े, महा कठिन कर्मी घटोत्कच उसी के समान कठिनकर्मी अलंबुपनाम राक्षस के सम्मुख ऐस गया जैसे कि युद्ध में बलिके सम्मुख इन्द्र जाता है, हेभरतवंशी फिर घटोत्कच ने उस महाक्रोध रूप महावक्ती राक्षस को तीक्ष्ण नौ तीरों से घायल किया । ४३ । और अलंबुप ने भी युद्ध में भीममेन के पुत्र घटोत्कच को गुप्त ग्रन्थि वाले बाणों से अनेक रीतिसे घायल किया तदनन्तर वह दोनों बाणों से भिदेहुए युद्ध में अत्यन्त शोभाय मान हुए । ४५ । हे राजा महा पराक्रमी शिखण्डी उस युद्ध में अश्वत्थामा से

proud warriors was like that between the gods and the danavas. 37. Next, the great warrior Dhrishtaketu of immense prowess, the very Rage in person, faced king Vahlik. The latter covered the former with a shower of arrows and roared like a lion. Dhrishtaketu the king of Chedi, in his turn, wounded Vahlik with nine swift going arrows. The two heroes fought like mad elephants. 40. The two warriors spoke loudly in a rage and fought like Mangal and Budh. Valiant Ghatotkach faced the rakshas Alamvush of equal prowess with him, as Indra faced Bali, and wounded him with nine sharp arrows. Alamvush too, wounded Ghatotkach the son of Bhimsen with his arrows having hidden knots, and the two, wounded by arrows, looked glorious. 45. Shikhandi of great prowess faced Ash-

शिखण्डिनमुपस्थितम् ॥ ४६ ॥ नाराचेन सुतीक्ष्णेन मृशं विध्वाह्यकं पयत् । शिखण्ड्य  
पि ततो राजन् द्रोणपुत्रमताडयत् ॥ ४७ ॥ सायकेन सुपीतेन तीक्ष्णेन निशिते नच ।  
तीक्ष्णस्तुनन्दान्योन्ये शरैर्वहुवैभवेभ्यः ॥ ४८ ॥ भगदत्तं रणे शरं विराटोवाहिनीपतिः ।  
अभ्यधाध्वरितोराजंस्ततोयुद्धमवर्त्तत ॥ ४९ ॥ विराटो भगदत्तन्तु शरवर्षेणमारत ।  
अभ्यवर्षःसुसंकुद्रो मेघोवृष्टाद्वाचलम् ॥ ५० ॥ भगदत्तस्ततस्तूर्णं विराटं पृथिवीप-  
तिम् । छादयामास समरे मेघः सूर्यं मिवादितम् ॥ ५१ ॥ बृहत्क्षत्रंतुकैकेयं कृपःशार-  
द्वतोययौ । तं कृपः शरवर्षेण छादयामास मारत ॥ ५२ ॥ गौतमं कैकयः कुक्षः शरव-  
ृष्टपाश्वपूरयत् । तावन्वोन्यं हयान् हत्वा धनुश्छिन्वा च मारत ॥ ५३ ॥ विरथावासि

युद्ध करने के लिये उनके सम्मुख गया तब तो क्रोधाम्निष्प अश्वत्थामा ने सम्मुख  
वर्तमान होनेवाले शिखण्डो को बड़े तीक्ष्ण नाराच नाम बाणों से अत्यन्त घायल  
करके महा कंपावमान किया, तिस पीछे हे राजा शिखण्डो ने भी बड़े तीक्ष्ण  
पुंखवाले पीतर्णके शायकों से अश्वत्थामा को घायल किया । ४७ । और युद्ध  
भूमि में परस्पर बहुत प्रकार के बाणोंसे संग्राम किया और सेनापति राजा विराट  
संग्रामभूमि में राजा भगदत्त के सम्मुख गया तिसपीछे युद्ध होना मारम्भहुआ  
और राजा विराटने महा क्रोधित होकर भगदत्त के ऊपर बाणों की ऐसी वर्षाकी  
जैसे बादल अपने जल से पर्वतपर वर्षा करता है फिर भगदत्त ने भी बड़ी शी-  
घ्रता से उस राजा विराट को संग्रामभूमि में बाणों के मारे ऐसा आच्छादित कर-  
दिया जैसे बादल सूर्य को आच्छादित करते हैं । ५० । और शारद्वत कृपाचार्य  
जी केकय देशीय बृहच्छत्र के सम्मुखगये, हे भरतवंशी कृपाचार्य जीने बाणों की  
वृष्टि से उसको ढक दिया और बृहच्छत्र ने भी महा क्रोध युक्त होकर गौतम  
कृपाचार्य जी को बाणों की वर्षासे व्याप्तकरादिया तदनन्तर हे राजा वह दोनों  
परस्पर में धनुष को काट घोड़ों को मारके विरथ होकर महाक्रोधों में भरेहुए खड्ग  
युद्ध करनेलगे । ५३ । उन दोनों का वह युद्ध भयानक रूप देखनेवालों को भी

wathama in battle. He was wounded and shaken by the sharp arrows of furious Ashwathama and wounded him with his own. 47. Both heroes fought bravely with various weapons. King Virat the commander of the army, faced king Bhagdatta in battle. The battle between them was furious. King Virat, in anger, showered his arrows on Bhagdatta as the clouds drop rain over a mountain. King Bhagdatta too covered king Virat with a shower of arrows and hid him like the sun under clouds. 50. Shardwat Kripacharya faced king Vrihachal of Kaikaya and covered him with arrows. King Vrihachal too, in great anger, covered Kripacharya with his own arrows. Both cut down each other's bows, killed the horses, and being deprived of chariots, fought furiously with swords 53. Their furious battle

युद्धाय समीपतुरमर्षणौ । तयोस्तदभवद्युद्धं घोररूपं सुदारुणम् ॥५३॥ द्रुपदस्तु ततो राजन् सैन्धव धै जयद्रथम् । अभ्युद्ययौ दृष्टरूपो दृष्टरूप परन्तप ॥ ५५ ॥ तत सैन्धव को राजा द्रुपद विशिखैस्त्रिभिः । ताडयामास समरे सच तं श्रुत्य विभ्रत ॥ ५६ ॥ तयोस्तदभवद्युद्धं घोररूपं सुदारुणम् । ईक्षणां प्रति जननं पुत्रांगारकयोरिव ॥ ५७ ॥ धिक्पर्णस्तुतस्तुभ्यं सुतसोमं महाबलम् । अभ्ययाज्जवनैर्भ्यस्ततो युद्धमवसंत ॥ ५८ ॥ विकर्णं श्रुतसोमस्तु विष्ट्वा नाकम्पयच्छरैः । श्रुतसोमा विकर्णं तदद्भुतमिवाभवत् ॥ ५९ ॥ सुशर्माणं नरव्याघ्रश्चेकितानो महारथः । अभ्यद्रवत् सुसंतुद्ध पाण्डुवार्षं पराक्रमी ॥ ६० ॥ सुशर्मा तु महाराज चेकितानं महारथम् । महता शरवर्षेण धारयामास सयुगे ॥ ६१ ॥ चेकितानोपि संरब्धः सुशर्माणं महाहवे । प्राच्छादयत्त मिषुमिर्महामेघ

भयकारी विदित होताथा, तिसपीछे शत्रु संतापी महा क्रोधाग्नि रूप राजाद्रुपद सिंधु के राजा जयद्रथ के सम्मुखगया तब जयद्रथ ने द्रुपद को तीन विशिखों से युद्ध भूमि में घायल किया और इसी प्रकार द्रुपद ने भी जयद्रथ को फिर उन दोनोंका युद्ध भयानक ५६ दुःख से प्राप्त होने के योग्य देखने पर लों को प्रसन्नता देने वाला ऐसा हुआ जैसा कि मंगल और शुक्र का युद्ध होताथा तिसपीछे आपका पुत्र विकर्ण वडेशीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा भीमसेन के पुत्र महा पराक्रमी सुतसोमके सम्मुखगया और युद्ध होनेलगा विकर्ण ने सुतसोम को और सुतसोम ने विकर्ण को बाणों से वेधित करके कंपायमान नहीं किया इसमें बड़ा आश्चर्य सा हुआ, नरोत्तम महारथी पराक्रमी पाण्डवों पर अत्यन्त क्रोधरूप चेकितानसुशर्मा के सम्मुख गया, हे महाराज युद्ध होनेलगा और सुशर्मा ने युद्ध में चेकितान को बाणों की बड़ी वर्षा करके रोका तब तो चेकितान ने भी महाक्रोधरूप होकर बाणों की वर्षा से सुशर्मा को ऐसा आच्छादित कर दिया जैसे कि बड़ा बादल पहाड़को आच्छादित कर लेता है । ६१ । हे राजा इसके पीछे पराक्रमी शत्रुने

frightened the lookers on Furious King Drupad the destroyer of enemies, faced Jayadrath the king of Sindhu The two heroes wounded each other with their arrows and the battle between them was dreadful 56 Difficult to be seen, pleasing the hearts of the lookers on, the encounter was like that between Mangal and Shukra. Your son, Vikarn rode his swift horses to meet Sutsoma the son of Bhimsen and began fighting The two wounded each other with their arrows but none could shake the other It was a wonderful sight Chekitan the best of men valiant and infuriated against the Pandavas, faced Susharma The two began to fight Susharma checked the volley of chekitan's arrows, but the latter in great anger covered him with the shower of his arrows as a great cloud covers a mountain 61 Valiant Bhakum proceeded against powerful Prati



इवाचलम् ॥ ६२ ॥ शकुनिः प्रति विन्ध्यन्तु पराक्रान्तं पराक्रमी । अभ्यद्रवत राजेन्द्र  
मघः सिंह इव द्विगम् ॥ ६३ ॥ यौधिष्ठिरस्तुसंकुदः सौवर्हं विशितैः शरैः । व्यदारयत  
संग्रामे मघया निव दानवम् ॥ ६४ ॥ शकुनिः प्रतिविन्ध्यन्तु प्राति विध्यं तमाहवे । व्य-  
दारयन् मदाप्रातः शरैः सन्नतपर्वभिः ॥ ६५ ॥ सुदक्षिणन्तु राजेन्द्र काम्योजानामहार-  
यम् । श्रुतकर्मा पराक्रान्त मभ्यद्रवतसंयुगे ॥ ६६ ॥ सुदक्षिणन्तु समरे साहदेवं गहा-  
रयम् । विख्या नाकशयन वै मैनाक मिव पर्वतम् ॥ ६७ ॥ श्रुतकर्मा ततः क्रुद्धः काम्यो  
जानामहारयम् । शरैर्विदुर्मिरानच्छदारयन्निव सर्वशः ॥ ६८ ॥ इरावानय संक्रुद्धः श्रुता-  
युपमर्दिनम् । प्रतुद्ययौ रणे यत्तो यत्तरुणं परन्तपः ॥ ६९ ॥ आर्जुनिस्तस्य समरे  
हयान् हवा महारथः । ननाद वलवान् नादं तत् सैन्यं प्रत्य परयत् ॥ ७० ॥ श्रुतायुस्तु  
ततः क्रुद्धः फाल्गुनेः समरे हयान् । निजयाग मदाग्नेय ततो युद्धं मघर्तत ॥ ७१ ॥

महावली प्रतिविन्ध्य के सम्मुख इम तीव्रता से गया जैसे कि सिंह मतवाले हाथी के  
सम्मुख जाता है, यौधिष्ठिर के पुत्र प्रतिविन्ध्य ने महा क्रोधित होकर सुबल के पुत्र  
शकुनि को तीव्र बाणों से ऐसा अत्यन्त घायल किया जैसे कि इन्द्र दैत्यों को  
करता है और शकुनि ने भी बड़े शानी महावली प्रतिविन्ध्य को अत्यन्त सपत्तयाणों  
से विदर्षि कर दिया । ६४ । और श्रुतकर्मा कांबोज के महारथी पराक्रमी राजा  
सुदक्षिण के सम्मुख गया, हे राजा सुदक्षिण ने सहदेव के पुत्र को घायल करके  
मैनाक पर्वत के समान कंपायमान नहीं किया, इसके पीछे श्रुतकर्मा ने भी कां  
बोज के महारथी सुदक्षिण को बाणोंसे अनेक रीति करके आच्छादित कर दिया  
तदनन्तर शत्रुसंतापी युद्ध में कुशल अत्यन्त क्रोध युक्त अर्जुनका पुत्र इरावान  
श्रुतायु के सम्मुख गया, और महारथी बलवान इरावान ने युद्ध में उसके घोड़ों  
को मारकर बड़े वेगसे दौड़ किया जिससे कि संपूर्ण सेना में शब्द भगया,  
और अत्यन्त क्रोधयुक्त श्रुतायु ने भी अर्जुनके पुत्र इरावान के घोड़ों को गद्गलों  
से मार डाला फिर युद्ध होने लगा । ७० । फिर आंवत्य देशके राजाविन्द अनुविन्द

vindh like an infuriated lion against a mad elephant. Prativindh the  
son of Yudhisbthir wounded Shakuni with his sharp arrows as Indra  
does the daityas, and was wounded by the arrows of Shakuni. 64.  
Shrutkarma faced the valiant Sudakshin the king of Camboj.  
Sudakshin wounded the son of Sahadev, but could not shake him  
like the Menak mountains. Shrutkarma too covered the valiant  
Sudakshin of camboj on all sides. Then Arjun's son Irawan, the  
destroyer of enemies and dexterous in battle, angrily faced Shruta-  
yush. Irawan roared loud after killing his horses and the noise of it  
filled all the armies. The enraged Shrutayush too, killed the horses  
of Irawan with his mace and the battle continued. 70. Vindh and  
Anuvindh the two princes of Avanti, faced valiant Kuntibhoj. I saw

विद्वानुविन्दाघायन्यौ कुन्तिभोज महारथम् । ससैनं ससुतंवीरं ससज्जतुराहवे ७२  
तत्राद्भुत मण्ड्याम तयोर्घोर पराक्रमम् । अयुध्यतां स्थिते भूत्वा महत्या सनयासह  
॥ ७३ ॥ अनुविद्वस्तु गदया कुन्तिभोज मताहयत् । कुन्तिभोजश्च तूर्णं शरघातैरवा  
किरत् ॥ ७४ ॥ कुन्तिभोजसुतश्चापि विदं विव्याध सायकै । सचत प्रति विव्याध  
तद्भुतमिवाभवत् ॥ ७५ ॥ केकयाग्रातर पञ्च गांधारान् पञ्चमारिष । सैन्यास्तं स  
सैन्याश्च बोधयामासुराहवे ॥ ७६ ॥ वीरबाहुश्चते पुत्रो वैराटि रथ सत्तमम् । उत्तरं  
बोधयामास विव्याध निशितै शरैः ॥ ७७ ॥ उत्तरश्चापितं वीरं विव्याधनिशितैः शरैः ।  
चेदिराट् समरे राजन् नुलूक सम मिद्रवत् ॥ ७८ ॥ तयैव शरचर्येण उलूक सम वि  
द्धयत् । उलूकश्चापि तं घातनिशितैर्लोमघादिभिः ॥ ७९ ॥ तयोर्धुज समभवत् घोर  
रूप विशम्पते । दारयेतासुसकुदा घन्यान्यमपराजितौ ॥ ८० ॥ एष द्वन्द्व सहस्राणि  
दोनो महावीर कुन्तिभोजके सम्मुख युद्ध में उपस्थित हुये, हे राजा वहां हमने उन  
दोनो के अपूर्व भयानक पराक्रमों को देखा अर्थात् वह दोनों बड़ी सेना समेत युद्ध  
करने में प्रवृत्त हुये ७२ अनुविन्दने गदा से कुन्तिभोज को घायल किया और कुन्तिभोज  
ने शीघ्र ही अपने बाण समूहों से उसको ढका दिया, फिर कुन्तिभोज के पुत्र ने भी शाय-  
कों से विन्दको पीड़ा मान किया और उसने उसको पीड़ित किया यह भी आश्चर्य सा  
हुआ, हे धृतराष्ट्र केकयदेशी पांचों भाइयों ने सेनाओं समेत संग्रामभूमि में नियत होकर  
गांधारियों के सम्मुख होकर महायुद्ध किया । ७५ । फिर आपका पुत्र वीरबाहु राधि-  
यों में श्रेष्ठ विराट के पुत्र उत्तर से युद्ध करने लगा और नौ बाणों से उसको घायल  
किया, उत्तर ने भी अपने तीन बाणों से उस वीर को घायल किया और उलूक ने  
भी बड़ी तजिता से शीघ्र गति वाले बाणों से उसको विदीर्ण किया । ७८ । हे  
राजा उन दोनों का युद्ध भी महाघोर भयकारी हुआ और क्रोधित होकर दोनों  
ने परस्पर एकने दूसरे को घायल किया, इस प्रकार तेरे पुत्र और पांडवों के रथ  
राज अश्वों से संकुलित युद्ध में हजारों योधा सौगों के द्वन्द्व युद्ध हुए । ८० । हे

the prowess of the two dreadful warriors in the midst of the armies.  
72 Anuvind wounded Kuntibhoj with his mace and was himself  
covered by the shower of his arrows. Kuntibhoj wounded Vind with  
his arrows and the encounter of those warriors was wonderful. The  
princes of Kaikya, with their armies, faced the Gandhars and fought  
bravely. 75 Your son Birvahan faced the best of charioteers, Uttar  
the son of Virat and wounded him with nine arrows. Uttar too  
wounded him with his arrows. The king of Chedi encountered Uluk  
and wounded him with his sharp arrows. Uluk also wounded him with  
his sharp arrows. 78. The encounter between those two warriors was  
dreadful, as they wounded each other. Thus thousands of warriors  
who rode on chariots, elephants and horses in the armies of your son  
and those of the Pandavas, fought duels. 80 For a short time their

रथवारणवाजिनाम् । पदातीनांच समरे तव तेषांच संकुले ॥ ८१ ॥ मुहूर्त्तं मिव तद्युद्धं  
मासीन् मधुरं दर्शनम् । तत उन्मत्तचक्राजन् नम्रं प्रायत किंचन ॥ ८२ ॥ गजोगजेन  
समरे रथिनश्चरथी ययौ । अश्वोश्च सममिमायात् पदातिश्चपदातिनम् ॥ ८३ ॥ ततो  
युद्धं सुदुर्धर्षं व्याकुलं समपद्यत । शूराणां समरे तत्र समासाद्य तरेतम् ॥ ८४ ॥ तत्र  
देवर्षयः सिद्धाश्चारणाय समागतः । प्रैक्षन्त तद्रणं घोरं देवासुर समभुवि ॥ ८५ ॥  
ततो दन्ति सहस्राणि रथानांचापि मारिष । अश्वौघाः पुरुषौघाश्च विपरीतं समाययुः  
॥ ८६ ॥ तत्र तत्र प्रदृश्यन्ते रथवारण पत्तयः । सादि नक्ष नरव्याघ्र युध्यमाना मुहु-  
र्मुहुः ॥ ८७ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि द्वंद्वबुद्धे

पञ्चवत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४५ ॥

राजा एकं मुहूर्त्तक तो उनका युद्ध अच्छा देखने के योग्य हुआ फिर उन्मत्तोंके  
समान हुआ उस समय वहाँ कुछभी नहीं जाना गया अर्थात् ध्यानकरके देखा तो  
युद्धभूमि में गजावृद्ध गजावृद्ध के साथ रथी रथी के साथ अश्वारूढ़ अश्वारूढ़ों के  
और पदाती पदातियों के सम्मुख हुए तिसपीछे परस्पर युद्ध में सम्मुख होकर  
शूरावीरों का महा कठिन युद्ध हुआ और सब महा व्याकुल होगये । ८१ । वहाँ  
युद्ध देखने को आयेहुये देव ऋषियोंने और सिद्धचारणों ने देवता और असुरोंके  
युद्ध के समान महा भयकारी युद्ध को देखा, हे धृतराष्ट्र तिसपीछे हजारों हाथी  
रथ और घोड़ों के सवारों के समूह और पुरुषों के समूह मर्यादा रहित होकर  
परस्पर में युद्ध करनेलग और जहाँ तहाँ रथ हाथी और घोड़ों के सवार चारम्बार  
लड़ते हुए दृष्टि पड़े ॥ ८७ ॥

fighting was worthy to be seen, but after that they fought like mad men, so that there was no order kept. The elephant riders faced the elephant riders, the charioteers faced the charioteers, the horsemen rode against horsemen and the foot soldiers fought the footsoldiers. The warriors on either side fought bravely and were much distressed. 84. The rishis, Sidhas, charans and gods that had come to see the fighting, found it to be like the encounter of gods of asura. Then there was no order maintained in the battle and the soldiers of various denominations mixed together and fought in confusion." 87.



सञ्जय उवाच । राजन्शत सहस्राणितत्र तत्र पदातिनाम् । निर्मथ्यादिं प्रयुद्धानि  
 तत्ते वक्ष्यामि भारत ॥ १ ॥ न पुत्र पितरं जज्ञे ॥ पिता पुत्रमौरसम् । न धाता  
 धातरं तत्र स्वस्त्रीयं न च मातुलम् ॥ २ ॥ न मातुलश्च स्वस्त्रीयो न सखायं सखा तथा ।  
 श्राविष्टा इव युष्मन्ते पांडवाः कुरुभिः सद्यः ॥ ३ ॥ रथानीकं न रथ्याघ्राः केचिद्भ्य  
 पतन् रथैः । अनज्यन्त युगेरव युगानि भरतर्षभ ॥ ४ ॥ रथेषाश्च रथेषाभिः क्वरा  
 रथकवरे । सङ्गतैः सद्भिना केचित् परस्पर जिघांसवः ॥ ५ ॥ न शकुन्धलितु केचित्  
 सन्निपत्य रथारथैः । अभिघ्रास्तु महाकायाः सन्निपत्य गजगजैः ॥ ६ ॥ बहुधादारयन्  
 कुद्धा विपाणैरितरेतरम् । सतीरपताकैश्च घारणावरवारणैः ॥ ७ ॥ अभिसृत्यमहा-  
 राज येगवद्भिर्महागजैः । दन्तैरभिहतास्तत्र चुकुशुः परमातुराः ॥ ८ ॥ अभिनीताश्च

अध्याय । ४६ ।

संजय बोले हे राजा जहां तहां लाखों पदाती मर्यादा से विरुद्ध लड़ने में  
 मर चुके उसका वृत्तान्त मैं तुमसे कहता हूं, उस युद्ध में पुत्र ने अपने पिता को  
 न जाना और पिता ने पुत्र स्त्री को नहीं जाना और भाई ने भाई को न जाना और भानजे  
 ने मामा को और मामा ने भानजे को और मित्र ने मित्र को नहीं जाना भूतादि के  
 अवेश युक्त पुरुषों के समान वह सबलोग कौरव और पांडवों के पक्ष में एक एकसे  
 लड़ते थे । १ । हे भरतर्षभ कोई २ नरोत्तम शूरवीर रथों में सवार हो होकर सेना  
 के और भागों पर जा दूँ और रथों हींसे रथों के जुआँको तोड़ डाला, रथाधीश रथा  
 धीशों से और कूवर रथकूवरों से खंडित हुए और कोई २ परस्पर में मारने की इच्छा से  
 सम्मुख आने वालों से युद्ध करने लगे । ५ । कोई रथ तो रथों से ही टक्करें खाकर चल  
 नके याग्य नहीं रहे और बड़े डीलडौल के रथ आदि बड़े २ हाथियों से मिल कर  
 टुकड़े २ हो गये, हे महाराज वहां बहुत से क्रोधभरे हाथी दांतों से घायल करते हुए  
 भंवारी और पताकावाले युद्धक महागजेन्द्र हाथियों से मिल कर अत्यन्त पीड़ा से

### CHAPTER XLVI

Sanjaya continued, "Here and there, foot soldiers fought against  
 rule I shall tell you how:—The father, in that battle, did not know  
 the son; the son did not spare the father; the brother did not know  
 the brother; the maternal uncle did not know his sister's son and  
 friends fought with one another in confusion. All the Kauravas and  
 Pandavas fought like those possessed of spirits. 3. Some brave  
 charioteers fell on portions of the armies and broke the shafts of  
 chariots with their own. All parts of their chariots were thus  
 crushed and broken. Others fought with those who opposed them.  
 5. Some of the chariots were disabled by dashing against others,  
 while others of large size, were broken into pieces by coming in  
 contact with large elephants. Many elephants shrieked there,  
 wounding with their teeth huge war elephants bearing howdahs and

शिक्षामिस्तात्राकुशसमाहता । अनभिघ्ना प्रभिघ्नाना सम्मुखामिमुखाययु ॥९॥ प्रभि  
 घ्नैरपि समत्ता केचित्तत्र महागजा । क्रौञ्चवन्निनदरत्वा दुदुः सर्वतो दशम् ॥१०॥  
 सम्यक् प्रणीतानामाश्च प्रभिघ्नकरटामृता । ऋष्टितामरनाराचैर्निरुद्धावरवारणा ॥११॥  
 प्रणेदुर्भिघ्नमर्माणो निपेतुश्चगतास्रच । प्राद्वतादश केचन् नदन्तामेरवानुरचान् ॥१२॥  
 गजाणा पादरक्षास्तु व्यूहोरत्ना प्रहाराण । ऋष्टिनाश्च चतुर्भिश्च विमलैश्चपर  
 ऋषे ॥ १३ ॥ गदाभ्युसलैर्वैव मिन्दिपालैः सतोमरैः । आयस्य पारवश्चापनिहि  
 दैर्विमलैः क्षितैः ॥ १४ ॥ प्रवृद्धैः सुसज्जैः द्रुमाणास्तनस्ततः । व्यूहद्वयन्तमहाराज  
 परस्परजिघासुः ॥ १५ ॥ राजमानाश्च निह्निता ससिक्ता नष्टागणैः । प्रपद्यन्त त  
 शराणामन्योन्यमाभिघातनाम् ॥ १६ ॥ अवक्षिताऽधूना मसीना वीरवाहुभिः । सवन्ने

पुकारते य । ८ । शिक्षाओं से सीखे हुए चातुक और अशुओं से घायल विना  
 मदबाले हाथी मदों के चूनेवाले उन्मत्त हाथियों के सम्मुख हुए, और कोई २ म  
 चूने वाले बड़े २ हाथी हाथियों से भिड़े हुए क्रौंचक समान शब्दोंका करत हुए  
 जहां तहां भागे । १० । इस प्रकार अच्छे हमला करने वाले गंडस्थाना  
 से मदभारनेवाले उत्तम हाथी लड़ी तोमर और नाराचों से रकगये, मर्मस्थलोंमें  
 मदभारनेवाले उत्तम हाथी लाठी तोमर और नाराचों से रकगये मर्मस्थलों से  
 विंचे हुए बिस्कारें मारतेहुए पृथ्वीपर गिरकर मृत्यु वशहुए और कोई २ हाथी  
 महाभयानक शब्दोंको करत हुए चारोंओर को टांडे हमाराज हाथियों के चरण  
 रक्षक शरीर लोग जो कि बड़े २ वृत्तस्थल युक्त मिले हुए और महार करने  
 वाले ये वह हाथकी यष्टी धनुष और निर्भय परसे गदाभूमल गोफन तोमर परिघ  
 और स्वच्छतीक्ष्ण खड्ग, इनसब शस्त्रोंको अच्छे प्रकार से धारण किये हुए अत्यन्त  
 क्रोधमें भरे परस्परमें एक दूसरे के मारने की इच्छा करते हुए जहां तहां दोड़ते  
 दृष्टपेडे । १५ । परस्परमें एक एक क सम्मुख दोड़ते हुए शरीरों के खड्ग  
 मनुष्योंके रविर्गों से भरेहुए शोभायमान हाथि में आये, वीरोंकी भुजाओंसे अंगो

banners 8 The trained ones wounded by whip and goads, though  
 not themselves musty, were made to encounter others mad ones,  
 while others in rut, huge ones, ran hither and thither shrieking like  
 cranes 10 Thus many good fighting elephants from whose temples  
 dropped juice, were checked by clubs and javelins and being wounded  
 in vital parts shrieked loudly and fell down dead on earth Some  
 elephants, making a dreadful noise ran in all directions The men  
 who guarded the feet of the elephants and who with broad chests,  
 dexterous in the use of great warlike weapons armed with bows,  
 shining battle axes maces catapults, clubs and sharp swords angrily  
 wishing to kill one another, were seen running hither and thither 15  
 The swords of the encountering combatants reeking in human blood,  
 looked glorious to behold Falling flat or prone the enemies were

तुमुल. शब्द पततां परममसु ॥ १७ ॥ गदासुखलक्षणां भिन्नानां च घरासिभिः ।  
 दन्तिदन्तायभिन्नानां मृदितानां च दन्तिभिः ॥ १८ ॥ तत्र तत्र नरैर्घाणां क्रोशतामितरे  
 तरम् । शुभ्रबुद्धिरुणावाचः प्रेतानामिव भारत ॥ १९ ॥ हयैरपि हयारोहाधामरापीड-  
 धारिभः । हंसैश्च महावेगैर्न्योन्यमभिविदुताः ॥ २० ॥ तैर्विमुक्तमहाप्रासाजम्बू  
 नदावभूषणा । आनुगावमलास्तक्षणा. सरोत्तुर्जगोपमा. ॥ २१ ॥ अश्वैरप्रयजवैः  
 केचिदाप्लुय महतीरधान् । शिरांस्पाददिरे घोरारपिनामभ्यसादनः ॥ २२ ॥ बहूनि  
 हयारोहान् मल्लैः सन्नतपरांभिः । रथी जघान सम्प्राप्य वाणगोचरमागतान् ॥ २३ ॥  
 नवमेघप्रतीकाशाश्च क्षिप्य तुरगान् गजाः । पार्श्वैरेव विमृदयन्ति मता कनकभूषणाः  
 ॥ २४ ॥ पाठ्यमानेषु कुम्भेषु पाशैश्चापचकारणा । प्रासैर्विनिहताः कोचद्विनेदु-  
 परमातुराः ॥ २५ ॥ साश्वारोहान् हयान् कादिच्छदुःमध्यवरवारणाः । सहसा चित्ति-

मृत और ऊर्ध्वमुख गिराये हुए शत्रुओं के मगों पर पड़े हुए खड्गों का तुमुलशब्द उत्पन्न  
 हुआ । १७ । गदा और मूसलों से दूटे हुए अंग और उत्तम खड्गों से कटे हुए  
 हाथियों के दांतों से घायल हाथियों से ही खुदे हुए मनुष्यों के जहां तहां परस्पर एकारे  
 हुए भयकारी ऐसे वचन सुने गये जैसे कि प्रेतों के शब्द सुनने में आते हैं, अश्व-  
 रुद्ध मनुष्यों से और अन्य तीव्रगामी अश्वों की सवारी से परस्पर में सम्मुखता हुई २०  
 उन के छोड़ हुए शीघ्रगामी निर्मल सपों के समान जांबूनद सुवर्ण से अलंकृत भाले  
 उन अंगों पर परस्पर में पड़े कितने ही वीरोंने उत्तम गतिवाले घोड़ों से बड़े रथों को  
 संयुक्त करके घोड़ों समेत रथों को और सवारों के शिरों को काटा, और रथों के  
 सवारों ने ध्रुत से अश्वारूढ़ों को पाकर बड़े झुके हुए पर्ववाले भालों से उन  
 बाणों से भिदे हुएों को मारा, मदोन्मत्त मुनहरी भूषण वाले हाथियों ने नवीन  
 बादल के समान रंगीन घोड़ों को तिरस्कार करके अपने पैरों से मर्दन किया । २४ ।  
 बड़े भयानक कितने ही हाथी मस्तक और देह में कवच आदि सभी अलंकृत भालों  
 से मारे हुए बड़े पीड़ामान शब्दों को करते थे फिर वहां महा युद्ध होने पर कितने ही

wounded in vital parts by the warrior's swords which made a great  
 noise. 17 Soldiers with broken limbs by the maces and clubs of  
 warriors, wounded by swords and elephant's tusks and trampled un-  
 der the feet of elephants, raised, here and there, hideous cries like  
 those of the sprites. Horsemen encountered horsemen or others who  
 rode on swift beasts. 20 They slew one another with their swift  
 arrows shining like serpents and their darts decked with pure gold.  
 Many warriors, mounted on large chariots drawn by swift horses  
 cut down the chariots, the horses and the heads of soldiers. Charioteers  
 killed horsemen with their numerous darts having hooked points. Mad  
 elephants decked with gold ornaments trampled down the horses  
 under their feet. 24. Many formidable elephants whose foreheads  
 and bodies were protected by mail, pierced by darts, shrieked with

पुनश्चसंकुले भैरवेसति ॥ २६ ॥ साश्वारोहान्विषाणाग्रैर्वृक्षिष्य तुरगान्मजाः ।  
 रथौघानमिन्दन्तः सध्वजानामिचक्रम् ॥ २७ ॥ पुंसादतिमत्याच्य कैवत्तत्रमहागजाः ।  
 साश्वारोहान्बुध्यान् जघ्नुः फरैः सचरणैस्तथा ॥ २८ ॥ अश्वारोहैश्च समरे हस्ति-  
 सादिमिरेव च । प्रतिमानेषु गात्रेषु पार्श्वेष्वामि च चारणान् । आश्रुगा विमलास्तीक्ष्णः  
 सम्पेतुर्भुजगोपमाः ॥ २९ ॥ नराश्वकष्याग्रिमिद्य लोहानि कवचानि च । निपेतुर्वि-  
 मलाः शक्त्योघोरबाहुभिरपिपात्राः ॥ ३० ॥ महोल्काप्रतिमा घोरास्तत्र तत्रविदा-  
 भूते । द्वीपिचर्मामनङ्गैश्च व्याघ्रचर्मच्छदैरपि ॥ ३१ ॥ विकीर्णैश्चिमलैः ध्वजैरभि-  
 सन्तुः पराङ् रणे । अभिप्लुतमभिकुलमेकपाश्वार्धद्वारतम् ॥ ३२ ॥ विदर्शयन्तः  
 सम्पेतुः सङ्घाचर्मपरम्भयैः । केचिदाक्षिप्य करिणः क्षाश्वन्तपि रथान् करैः ॥ ३३ ॥  
 विकरन्तोदिशःसर्पाः संपेतुःसर्वशङ्कनाः । शङ्कुभिर्दारिताः केचित् क्षमिन्नाक्षपरम्भयैः

उत्तम हाथियों ने सवारों समेत घोड़ों को मथकर वा उठाकर फेंक दिया हाथी  
 अपने दातों की नोक से सवारों समेत घोड़ों को ऊँचेको उठाये ध्वजाधारी रथ  
 समूहोंको मर्दनकरने हुए चारोंओर घूमनेलगे और कितनेही बड़ेहाथियोंने बड़ीवीरता  
 और मश्रोमत्तासे अपनी मूँड और चरणोंके द्वारा सवारोंसमेत घोड़ों को मारा,  
 चारों ओर से हाथियों के मस्तक वा अंग वा पसमी और जंघाओं पर बड़े शीघ्र  
 गामी सर्पोंके समान तीक्ष्ण बाण गिरे, और हे राजा जहाँ तहाँ धीरोंकी भुजाओं  
 मेमारीहुई बरछियां मोहे के कवचोंको काटकर मनुष्य और घोड़ों के शरीरों पर  
 पड़ीं वह बरछियां महाभयानक डल्काओं के रूपर्षी । ३० । और इसी संग्राम में  
 चित्र व्याघ्र चर्मसे बँधेहुए और व्याघ्रकेही चर्म में रहनेवाले पियान से बाहर स्व-  
 ल्ल खड्गों से शत्रुओंको मारा, निर्भय मनुष्य के सम्मुख जाना और कंदना  
 आदिक सब कर्मों को करना और बाई ओर को सवारी करना इत्यादि चेष्टाओं  
 को दिखलाते खड्ग हाथ और परशु नाम शस्त्रों समेत गिरे, कितनेही हाथी मूँडों

pain. During the battle many elephants trampled or hurled the horses and their riders. Lifting up the horses and riders on the points of their tusks, trampling the bannered chariots, the elephants roamed; and bravely and madly crushed the horses and their riders under feet. Sharp and swift arrows fell serpent like from all sides on the heads, lodies, sides and legs of the elephants. Here and there, sharp darts hurled by the warriors, pierced through the steel armour and entered the lodies of men and horses like sparks of fire. 30. Swords were drawn out of the scabbards made of tiger's hide to kill the enemies. Going fearlessly before the enemy, killing and doing deeds of horsemanship, the warriors fell in spite of their swords, shields and battle axes. Some elephants dragged the chariots and horses with their trunks and all those who heard their cries dispersed in different directions. Many men were killed by the wheels and axes, while

॥ ३४ ॥ हस्तिभिर्मृदिताः केचित्शुष्णान्मान्ये तु रङ्गमै । रथने भिनिरुक्ताश्च निरुक्ताश्च  
परश्वधै ॥ ३५ ॥ व्याक्रोशन्त नरराज स्तत्रतत्रस्मयान्ववान् । पुत्रानप्येपितृनन्ये  
भ्रातृश्च सहन्धुभिः ॥ ३६ ॥ मातुलान्मागनेयांश्च परानापचसयुगे । विर्कीर्णांश्च सुबहवो  
भग्नतपश्चाथमारुत ॥ ३७ ॥ यादृमिच्छापरं छिद्यै पार्श्वेषु च विदारिता । क्रन्दन्त सम  
दृश्यन्त तृपिताजीवितेऽप्यस्य ॥ ३८ ॥ तृपापरिगता केचिदल्पसत्त्वाविशाम्पये । भूमौ  
निपतिता सख्ये मृगयाञ्चाकरे जलम् ॥ ३९ ॥ रुधिरौघपरिक्लिन्नाः । क्लिश्यमानाश्च  
भारत । व्यनिन्दन्भृशमात्मानं तव पुत्राश्च सङ्गतान् ॥ ४० ॥ अपरे क्षत्रिया शूराः  
कृतघैराः परस्परम् । नैव शस्त्रं विमुञ्चन्ति नैव क्रन्वन्ति मारिष ॥ ४१ ॥ तर्ल्ययन्ति  
च सहृष्टास्तत्रतत्र परस्परम् । आदव्यदशनैश्चापिकोपात् स्वरदनच्छदम् ॥ ४२ ॥ प्रकुटां

से घोड़ों समेत रथोंको खँचते थे और खँचनेवाले हाथियों के शब्दों को सुनकर सबके  
सब चारों ओर को गये, कितनेही मनुष्य डंडोंकी कीलों से कटे हुए और परशुओं  
से मारे हुए थे और बहुत से हाथियों से मर्दित हुए और कितनेही घोड़ों से अत्यन्त  
घायल हुए हे महाराज जहाँ तहाँ कितनेही मनुष्य बांधवों को पुकारते हुए रथों  
के पहियों से दबकर परशुओं से कट गये । ३५ । और कहीं संग्राममें अपने पुत्रों  
को कोई भाइयों को और मामा वा भानजो को अथवा अन्य लोगों को पुकारते  
हुए घायल होकर मारे गये, हे भरतवंशी जिनकी आँतें फैल गई और जंघा दूगई  
ऐसे सब मनुष्य हाँ गये और बहुत से कटा हुई भुजाओं समेत अंगों से रहित हुए,  
और अनेक मनुष्य जीवनकी इच्छा करते हुए अत्यन्त रोदन करते दृष्टपड़े बहुतेरे  
प्यासे और धैर्य को छोड़ि हुए जल को खोजते थे, हे राजा उन रुधिरों से भरे  
हुए दुखियों ने आप समेत आपके पुत्रों की निन्दा की, हे धृतराष्ट्र अच्छे शूरवीर  
क्षत्रिय न तो शस्त्रको छोड़ते हैं न रोते और पुकारते हैं । ४० । हे राजा जहाँ  
तहाँ अत्यन्त प्रसन्न चित्त शूरवीर लोग क्रोधसे अपने दाँतों के द्वारा ओठोंको  
काटकर निन्दा युक्त वचनों का कहते हैं, कोई २ धैर्यवान् महाबली बाणों से

others were crushed by elephants Some were wounded by the horses  
and others calling on their kinsmen were crushed under the wheels  
35 Some calling upon their sons and others calling upon their  
brothers, maternal uncles, nephews and others, were wounded and  
slain Their entrails came out of their bodies, their thighs were  
broken and their arms and other limbs were cut off Many men,  
wishing to live longer were seen weeping, others, thirsty and forlorn,  
searched for water . The blood stained wretches cursed you and  
your sons, O king! But good soldiers did not let the weapons go out  
of their grasp, and neither wept nor cried 40 Here and there  
cheerful warriors, biting their lips in anger, uttered words of blame-  
Some tenacious warriors, though mortally wounded, bore the pain in



कुटिलैर्वक्रैः प्रेच्छन्ति उपरस्परम् । अपरे निलिख्यमानास्तु शरार्त्ता व्रणपीडिताः ॥४३॥  
 निष्कृजाः समपद्यन्त दृढसंवाग्महावलाः । अन्येच धिरथा शूरा रथमग्न्यस्पर्शयुगे  
 ॥ ४४ ॥ पार्थयानानिपतिताः संश्रुष्णावरवारणैः । अशोभन्त महाराज सपुत्राह्व  
 किंशुक्ताः ॥ ४५ ॥ सम्बभूवुरनीकेषु घटवो जैरवस्थिताः । वर्त्तमाने महामौमेतस्मिन्  
 चीरवरक्षये ॥ ४६ ॥ निजवानपितापुत्रं पुत्रश्चापितरं रणे । स्वस्त्रायो मातुलश्चापि  
 स्वस्त्रियश्चापि मातुलः ॥ ४७ ॥ सखासखायचतथा सम्बन्धीवान्धवंतथा । एवं  
 युयुधिरे तत्र कुरवः पाण्डवैः सह ॥ ४८ ॥ वर्त्तमाने तथा तस्मिन् निर्मर्यादिमपा  
 नके । आप्तमासाद्य पार्थानां चाहिनीं समकम्पत ॥ ४९ ॥ केतुनापञ्चतारेण  
 तालेन भरतर्षभ । राजतेन महाबाहुदक्षिणेन महारथे । धर्मोभीष्मस्तदा शकं  
 अग्रदृष्ट्वा हवमेकणा ॥ ५० ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वोऽङ्ग भीष्मपर्वणि संकुनपुद्गे

पदचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४६ ॥

महा क्पाकुल और घावों से पीड़ित होकर महाकष्टसे मौन होगये, कितनेही शूरवीर  
 युद्ध में रथमें बिहीन और उत्तम हाथियों से अत्यन्त घायन दूमरे के रथों की  
 इच्छा करते हुए मार्ग में गिरपड़े, हे महाराज वह फूलेहुए किंधुक दृढ के समान  
 शोभायमान हुए ॥४४॥ और इसके विशेष सेनामें भयकारी अनंक शब्द मकटकरते  
 हुए, इस बड़े भयानक और उत्तम वीरों के नाश करने वाले युद्धके होनेपर संग्राम  
 भूमि में पिता ने पुत्रको और पुत्र ने पिताको मारा, मामाने भानजेको और भानजे  
 ने मामा को मित्रने मित्रको इसी प्रकार बांधवों ने बांधव आदि संबंधियों को भी  
 मारा, इस रीतिसे पांडवों ने और कौरवों से उस भयानक रूप मर्यादासे रहित  
 बड़े भयकारी युद्ध के होनेपर यह सर्व संहार हुआ । ४५ । हे भरतर्षभ पांच  
 नक्षत्रवाले तालध्वजा ममेत भीष्मजी के सम्मुख होकर पांडवों की सेना अत्यन्त  
 कंपायमान हुई उससमय वह महाबाहु भीष्मजी सुवर्ण निर्मित उत्तम ध्वजा समेत  
 विस्तृत रथ में घेठेहुए ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि मेरु पर्वत पर चन्द्रमा  
 शोभित होता है ॥ ५० ॥

silence. Many warriors, deprived of their chariots in the field of battle and wounded by elephants, fell down dead in the way, de-iring to get other chariots. They looked glorious like Kinsbuk plants in bloom. 44. Besides these there were other dreadful noises in the armies. During this dreadful war destructive of warriors, fathers and sons, maternal uncles and nephews, friends and kinsmen killed one another. All such atrocities occurred in that dreadful war of the Kauravas and Pandavas which was without rule. 47. Bhishm, with his ensign of the palm tree and five stars, shook the armies of the Pandavas with his golden ensign, and mounted on a large chriot, looked glorious like the moon on mount Meru. 49.

सत्रय उवाच । गतपूर्वाह्णमृषिष्टे तस्मिन्बहनि दारुणे । वर्त्तमाने तथा रौद्रे  
महावीर पराक्षये ॥ १ ॥ दुर्मुखः कृतवर्माच कृपः शल्यो विविंशतिः । भीष्मं जुगु  
परासाद्य तव पुत्रेणचोदितः ॥ २ ॥ एतैरतिरघैर्मुक्तः पञ्चभिर्भरतर्षभः । पाण्डवा  
नामनीकानि विजगाद्वै महारथः ॥ ३ ॥ चेदिकाशिरूपेषु पञ्चालेषुचभारत । भीष्म-  
स्यचक्षुषा तालश्चलत्केतुरदृश्यत ॥ ४ ॥ स शिरांसिरणेऽरीणां रथांश्चसयुगध्वजान् ।  
निचकृत्तमहावेगैर्भक्तैः सन्नतपर्वतैः ॥ ५ ॥ नृत्यतो रथमार्गेषु भीष्मस्यभरतर्षभ ।  
भृशमात्तस्वरं चक्रुर्नागा मर्मणि ताडिताः ॥ ६ ॥ अभिमन्युः क्षुब्धकुदः । पशून्-  
स्तुरागोत्तमैः संयुक्तं रथमास्थाय प्रायादभीष्मरथं प्रति ॥ ७ ॥ जाम्बूनदविचित्रेण  
कर्णिकारेण केतुना । नभ्यवर्त्तत भीष्मञ्च तांश्चैव रथसत्तमान् ॥ ८ ॥ सतालके

अध्याय ॥ ४७ ॥

संजयपोले हे राजा उस महा भयानक दिनके मध्याह्न व्यतीतहोने और इस  
रीति से उषम लोगों के नाश वर्त्तमान होनेपर, आपके पुत्रकी आह्लासेकर दुर्मुख  
कृतवर्मा कृपाचार्य शल्य और विविंशति ने भीष्मजी के पास आकर उनकी रक्षा  
की, हे भरतर्षभ इनपांच अतिरथी धीरों से रक्षित महारथी भीष्मजी ने पाण्डवों  
की सेना में प्रवेश किया, और हे धृतराष्ट्र चेदि काशि कुरुप और पांचाल देशकी  
सेना के मध्य में भीष्मजी की तालरूप ध्वजा बहुत सुन्दर दृष्ट पड़ी, उस वैरिणी  
युद्धमें बड़े वेगवान् अतिशय ऊँकेहुए भल्लनाम बाणों से भीष्मजी ने शिरों और  
ध्वजायुक्त रथों को रथ के जुए आदि अंगों समेत काटा । ५। हेभरतर्षभ, नक्षत्र के  
समान भीष्मजी के घूमने पर मर्मस्थलों से घायत कितनेही हाथियों ने पीड़ा के  
शब्द किये, उस समय अभिमन्यु अत्यन्त क्रोधमें भराहुआ पिंगल वर्ण उत्तम घोड़ों  
के रथ में बैठकर भीष्मजी के रथ के सम्मुख आया, और जाम्बूनद सुवर्णसे रचित  
कर्णिकार दृढ़के चित्रवाली ध्वजा समेत भीष्मआदि उन उत्तम पाँचों रथियों के

### CHAPTER XLVII

In the afternoon of that dreadful day," said Sanjaya, "when those good men were thus being destroyed, Durmukh, Kritvarma, Kripa, Shalya and Vivishati went to Bhishm by the order of your son and protected him. Protected by those five great warriors, Bhishm entered the army of the Pandavas. Bhishm's ensign of the palm tree looked very glorious in the midst of the armies of Chedi, Kashi, Kurush and Panchal. In that destructive war Bhishm cut down the heads and the yokes of harnessed chariots by his hooked arrows. 5. When Bhishm was thus circling like a meteor, many elephants wounded in the vital parts shrieked with pain. Then Abhimanyu in a rage drove his good steeds of yellow colour and brought his chariot face to face with that of Bhishm. He encoun-

तोऽस्तीक्ष्णेन केतुमाहत्य पत्रिणा । भीष्मेण युयुधे पीरस्तस्य चानुरधैः सह ॥ ९ ॥  
 कृतवर्माणमेकेन शल्यं पञ्चाभराश्रुगैः । चिध्वानवभिरानच्छिच्छिताग्नेः प्रपितामहम्  
 ॥ १० ॥ पूर्णायतविष्ट्रेण सस्यं कं प्रणिहितेन च । ध्वजमेकेन विध्वाघ जाग्रून्वप-  
 रिष्कृतम् ॥ ११ ॥ दुर्मुखस्य ॥ भलेन सर्वावरणभेदिना । जहारसारधैः कायाच्छिरः  
 सश्रतपर्वणा ॥ १२ ॥ धनुश्चिच्छेद भलेन कार्तस्वरविभूषितम् । कृपस्य निशि  
 ताग्रेण तांश्च तांश्चनयुधैः शरैः ॥ १३ ॥ जघान परमकुक्षौ नृत्यन्निवमहारथः ।  
 तस्य लाघवमुद्रीक्ष्यतुनुपुर्वैचता अपि ॥ १४ ॥ लब्धलक्षत्वा कार्णौ सर्वे भीष्म  
 मुखारथाः । मन्वघन्तममन्यन्त साक्षादिव धनञ्जयम् ॥ १५ ॥ तस्य लाघवमार्गस्थ  
 मलातसदृशप्रभम् । दिशः पर्यपतन्नापं गाण्डीवमिव धोषधत् ॥ १६ ॥ तमासाद्य महा

सम्मुख हुआ, फिर वह धीरे भीष्मजी की ताल ध्वजा को तक्षिण बाणों से छेदकर  
 उनके पीछे चलनेवाले पाँचों रथियों से युद्ध करने लगा, एक बाणसे कृतवर्मा को  
 और पाँच बाणों से शल्य को और नौ उत्तम बाणों से पितामह को घायल  
 किया । १० । और जाग्रून्द सुवर्ण से शोभित एक उत्तम शायक से उनकी ध्वजा  
 को काटा, और सब पदों के भेदन करनेवाले झुके हुए पर्ववाले एक भल्ल नाम  
 बाण से दुर्मुख के सारथी का शिर देह से पृथक् करा दिया, सुवर्ण से बने हुए महा  
 शोभायमान कृपाचार्य जी के उत्तम धनुष को तीक्ष्ण नोकवाले भल्ल से काटा  
 और महा क्रोधरूप होकर उस महारथीने अपने तीव्र बाणों से उन सब को भी  
 घायल किया देवता लोग भी आकाश से उस शीघ्र हस्तलाघवता को देखकर  
 मसन्न हुए, और भीष्मआदि सब रथियों ने उस अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु के लक्ष  
 भेदनेसे उसको साक्षात् अर्जुन के समान पराक्रमी माना । १५ । और घुमाये  
 हुए उल्लसक के समान प्रकाशित निर्विघ्न मार्ग में निरत उसका मण्डल दिशाओं  
 में गिरा और गाँदीव धनुषके समान उसको शब्दायमान किया, तब शत्रुओं के

tered the five great warriors beginning with Bhishm of the ensign of golden palm. Having pierced the palmyra ensign of Bhishm with his sharp arrows, he began to fight with the five warriors who rode behind him and wounded Kritvarma with one of his arrows, Shalya with five and the grand father with nine. 10. And with one of his gold-bedecked arrows he cut his bannerstaff. He cut down the head of Durmukh's chariot driver with one of his piecing, hooked arrows. He cut the good gold bow of Kripacharya with one of his sharp pointed darts and wounded all those warriors. The gods in the sky were pleased to see the dexterity of his hand and Bhishm and other warriors judged him to be as good in hitting marks as Arjun himself. 15 Shining like a circle of fire, of unceasing motion, his bow sent round its shower of arrows and its twang was heard like that of the Gandiv.

घेगैर्भीमो नवभिराशुमे । विधाघसमरे तूर्णमाज्जुर्नि परवीरहा ॥ १७ ॥ ध्वजञ्जाय  
 त्रभिभल्लोभच्छद् परमौजस । साराधिञ्च त्रिभिवाणेराजघान यतव्रत ॥ १८ ॥ तपैव  
 कृतवर्माचकृप शल्यश्च मारिष । विध्वानाकम्पयत् कार्णि मैनाकमिव पर्वतम् ॥ १९ ॥  
 सतं परिघृत शूरा घातेराष्ट्रमहारथै । वधयं शरवर्षणि कार्णि पञ्चरथानुप्रति ॥ २० ॥  
 ततस्तेषा सहस्राणि निवार्यशरवृष्टिभ । ननादवलवान् कार्णिभीमाय विसृजन्  
 शरान् ॥ २१ ॥ तत्रास्यसुमहद्राजन् वाह्वार्यल दृश्यत । यतमानस्यसमरे भीष्ममर्हयत  
 शरै ॥ २२ ॥ पराक्रान्तस्य तस्यैव भीष्मोपिप्राहिणाच्छरान् । सताक्षिच्छेदसमरे  
 भीष्मचापच्युतान्शरान् ॥ २३ ॥ ततो ध्वजममोघेपुर्भीष्मस्य नवभि शरै । चिच्छेदसमरे  
 धीरस्तत उच्चुकुशुर्जुना ॥ २४ ॥ स राजतो महास्कन्धस्ताला हेमविभूषिता ।

मारनेवाले भीष्मजी ने शीघ्रता पूर्वक उससे आगे होकर युद्धभूमि में शीघ्र गति  
 वाले नौशर्यों से तत्कालही उस अर्जुन के पुत्रको घायल किया, और बड़े पराक्रमी  
 दृढव्रत सावधान भीष्मजीने उसकी ध्वजा को तीन भल्लों से काटा और उसके  
 सारथी को तीन बाणों से मारा, हे राजा इसीप्रकार कृतवर्मा कृपाचार्य और  
 शल्यनेभी अर्जुनके पुत्र को घायलकरके ऐसे कंपायमानही किया जैसे मैनाक  
 पर्वतका कंपायमाननही करसके । १९ । फिर उन महाराथियोंसे घिराहुआ अर्जुन  
 कापुत्र अभिमन्युपाचों रथियों के ऊपर बाणों की वर्षा करके पांचोंके अश्वोंको अप  
 ने बाणों ने रोककर भीष्मजीके ऊपर बाणों को छोड़ताहुआ बड़े वेग से गजा  
 । २१ । उससमय हे राजा वहां उस युद्ध में उपाय करने वाले और बाणों से  
 भीष्मको मारने वाले अभिमन्युका बड़ाभारी भुजबल विदित हुआ, तब भीष्मजी  
 ने भी उस पराक्रमी के ऊपर बाणों को छोड़ा फिर उसने युद्ध में भीष्मजी के  
 घनुरूप से छुड़ेहुए बाणोंको काटा, तिसपीछे उस सफल बाणवाले धीरने भीष्मजी  
 की ध्वजाको फिर नौशर्यों से काटा इस कारण सयलोग बड़े शब्द से पुकारे

Then Bhishm the destroyer of enemies fired the son of Arjun in great  
 haste and wounded him at once with nine swift arrows. And wise  
 Bhishm of great prowess and firm vow, cut his banner with three  
 darts and killed his driver with three others. Kritvarma, Kripacharya  
 and Shalya too wounded the son of Arjun, but could shake him no  
 more than they could mount Menak. 19 Then surrounded by  
 those warriors, Arjun's son Abhimanyu showered his arrows over the  
 five warriors, and checking their weapons with his own, he wounded  
 Bhishm with a tremendous roar. 21 Trying hard in that battle  
 and hitting Bhishm with his arrows, Abhimanyu displayed his  
 great prowess. Bhishm too discharged arrows at the warrior and  
 Abhimanyu cut them down with his own. Then the marksman cut  
 the banner of Bhishm with nine arrows and at this there was a great

सौमद्रविशयै इडध पपातभुविमरत ॥२५॥ ततु सोमद्र विशयै पातितमरतपंभ ।  
 दृष्ट्वाभीमोननादोच्चं सोमद्रमभिहर्षयन् ॥ २६ ॥ अथ भीष्मो महास्त्राणि । दद्यान्नु  
 वहान च । प्रादुष्यके महारौट रणे तास्मन्महायल ॥ २७ ॥ तत शरसहस्रण  
 सौमद्र प्रपितामह । अवाकिरदमेयात्मा तदद्भुतमिवामवत् ॥ २८ ॥ ततो दश  
 महेष्वासा पाण्डवानां महारथा । रक्षार्थमग्न्याचन्त सौमद्र त्वारता रथे ॥ २९ ॥  
 विराट सह पुत्रेण धृष्टद्युम्नश्चपार्षत । भीमश्च केकपाश्चैव सात्यकिश्च विशाम्पते  
 ॥ ३० ॥ तेषाञ्जेचनपतता भीष्म शान्तनवोरण । पाषाट्यत्रिमिरानर्च्छत् सात्यकि नवाम  
 शरी ॥ ३१ ॥ पूर्णायतविस्त्रेण चुरणनिशितनच । ध्वजमकेन चिच्छद्भीमसेनस्य पणिना  
 ॥ ३२ ॥ जाम्बूददमय भीमान् केसरी सनरोत्तम । एपात मामसेनस्य भीष्मेण

। २४ ॥ हे भरतवशी वह उड़ी शाखा युक्त सुवर्ण से शोभित सुवर्णित ताल वृक्ष  
 अभिमन्यु के विशिखनाम बाणों से कटा हुआ पृथ्वीपर गिरा, हे भरतर्षभ अभि-  
 मन्यु के विशिखों से घिरी हुई भवजाको देखकर भीमसेन ने महा प्रसन्न होकर उस  
 अभिमन्यु को प्रसन्न करके बड़ी गर्जना की । २६ । इसके पीछे महापत्नी भीष्मजी  
 ने उस महाभयकारी युद्ध में बहुत से दिव्यमहा अस्त्रों को प्रकट करके सुभद्रा के  
 पुत्र अभिमन्यु को सहस्र बाणों से दका दिया यह आश्चर्यसा हो गया । २८ । यह  
 देखकर हे राजा पांडवों के दस महारथी बड़े धनुषगारी रथों में सवार होकर  
 शीतही अभिमन्यु की रक्षा के लिये दौड़े उनके नाम यह है । अपने पुत्र उत्तरभमेत  
 राजा विराट, पृषतका पुत्र धृष्टद्युम्न, भीमसेन, केकय और सात्यकी, शत्रु के पुत्र  
 भीष्मजी ने युद्ध में उनकी आनेवालों के मध्य में धृष्टद्युम्न को तीन बाणों से  
 और सात्यकी को नौ बाणों से घायल किया, और कर्ण पर्यन्त खिचकर छोड़े हुये  
 तीक्ष्णधार वाले एक बाणसे भीमसेन की भवजाको काटा । ३० । हे नरोत्तम भीम  
 सेन की भवजा सिंह के चित्रकी स्वर्णमयी भीष्म से गिराई हुई पृथ्वीपर गिरी

shout of the people 24 The golden palm, discovered by Abhimanyu's arrows fell to the ground and at the sight of it Bhim uttered a great war cry to cheer Abhimanyu Then Bhishma of immense prowess made use of his celestial weapons and covered Abhimanyu at once with a thousand arrows, making it appear as a wonder 28 Upon this, ten warriors of the Pandavas at once drove in their chariots to help Abhimanyu King Virat with his son Uttar, Dhishhadyumna the son of Irishat, Bhim, Kaikaya and Satyaki were among those who came to help him In the midst of those warriors, Bhishma the son of Shantanu, wounded Abhimanyu with three arrows and Satyaki with nine He cut Bhim's banner with one arrow, shot from the bow which was drawn to the ear 30 Bhim's banner, having the figure of a lion wrought in gold, cut down by

मधितोरथात् ॥ ३३ ॥ ततो भीमस्त्रिभिर्विधा भीमं शान्तनवं रणे । कृपमेकेन  
विधाय कृतवर्माणमष्टभिः ॥ ३४ ॥ प्रगृहीताग्रहस्तेन चैराटिरपि दन्तिना ।  
अभ्यद्रघत् राजानं मद्राधिपानमुत्तरः ॥ ३५ ॥ तस्य वारणराजस्य जयेनापततो  
रथे । शल्यो निघारयामास वेगमप्रतिमं शरैः ॥ ३६ ॥ तस्य क्रुद्धः स नागेन्द्रो  
वृहत् साधुवादिन । पदा युगमाघृष्टाय जघानचतुरो हयान् ॥ ३७ ॥ सहताभ्ये  
रणे तिष्ठन् मद्राधिपतिरायसाम् । उत्तरान्तकरीं शक्तिं चक्षेप भुजगोपमाम् ॥ ३८ ॥  
तपाभिन्नतनुराणं प्रविश्यविपुलंतमः । सपपातगजस्कन्धात् प्रमुकांशुकतोमरः ॥ ३९ ॥  
असि दाप्य शल्योपि अवप्लुय रथोत्तमात् । तस्य वारणराजस्य चिच्छेदापमहा  
करम् ॥ ४० ॥ भिन्नमर्मा शरशतैश्छन्नहस्तः स वारणः । भीममार्शस्वरंकृत्वा

तदनन्तर भीमसेनने शतनु के पुत्र भीष्मजी को बाणों से घायल करके एक बाण  
से कृपाचार्य को और आठबाणों से कृतवर्मा को घायल किया । ३४ । और  
उत्तरनाम विराट्का पुत्र अग्रभाग में मूंडकी कुंडली बनाने वाले हाथी पर सवार  
होकर मद्रदेश के राजा शल्य के सम्मुख दौड़ा, शल्य ने बड़ी तीव्रता से रथपर  
गिरने वाले उसगजेद्र के महावेगको रोका, फिर उस क्रोधित गजेन्द्र ने चरणों से  
रथके जुयेको दबाकर उसके चारों उत्तम सवारी के घोड़ों को मारा, ३७ ।  
मृतक घोड़े वाले रथपर नियत राजा मद्रने सर्प के समान और उत्तर के नाश करने  
वाली लोहेकी बरछी को फेंका, उसबरछीसे जिसका कवच कटगया ऐसा वह  
उत्तर विस्मरणा में आकर हाथी के ऊपरसे नीचे गिरपड़ा और गिरतेही उस  
के हाथ से अंकुश और तोमर छूटपड़े, फिर शल्य ने अपने रथसे उतर खड़े हाथ  
में लेकर बड़े पराक्रम से उसके गजेन्द्र की यड़ीभारी मूंडको काटडाला, वह हाथी  
बाण समूहों से भिदाहुआ कवचट्टा कटीहुई मूंड से भयानक शब्द करता हुआ

Bhishm, fell on earth Thereupon, Bhim wounded Bhishm with  
his arrows and pierced Kripacharya with one arrow and Kritvarma  
with eight. 34 Uttar, the son of King Virat, rode the elephant  
which had formed a circle of its trunk and encountered Shalya the  
king of Madra. Shalya speedily checked the elephant which was  
advancing towards his chariot, but the elephant trampled the yoke  
of his chariot under foot and killed the four horses which drew it. 37.  
Seated on the chariot of which the horses were slain, the king of  
Madra hurled his serpent like iron spear to kill Uttar. Uttar with  
his armour cut by the spear, fell down in a swoon from the elephant  
and all the weapons fell down from his grasp. Shalya then leaped  
from his chariot and with great bravery cut down the trunk of the  
huge elephant, which already pierced by the arrow through the

पपात च ममार च ॥ ४१ ॥ एतदीदृशके कृत्वा मद्राजो भराधिप । आहरोह रथं  
 तूर्णं भास्वरं कृतवर्मणः ॥ ४२ ॥ उत्तरं वै हतं दृष्ट्वा वीरादिभिरंतरं ददा । कृतवर्मणा च  
 सहितं दृष्ट्वा शल्यपञ्चरिधतम् ॥ ४३ ॥ श्वेत क्रोधात्प्रज्ज्वालहविषाहृष्यपाडिप ।  
 सविस्कार्यमहृषापंशक्रचापोपमं वली ॥ ४४ ॥ अन्यथावाञ्छिघांसग्वै शल्यं मद्राधिपं वली ।  
 महृत्तारथवेशेत सममंतात्परिवाहितः ॥ ४५ ॥ सुधन्वाणमयं वर्णं प्रायाच्छल्यरथं प्रति ।  
 तमापतंतं संप्रेक्ष्य मत्तवारणा विक्रमम् ॥ ४६ ॥ तावकान्तरथाः सप्तसमंतात्पर्यवारयन् ।  
 मद्राजमभीक्ष्णतो मृत्योर्दृष्टान्तरगतम् ॥ ४७ ॥ बृहद्वलश्चकौ सल्योजयत्सेनश्चमागम्यः ।  
 तथा रुक्मरथो राजन् शल्यपुत्रं प्रतापवान् ॥ ४८ ॥ विंदानुविंदावावंत्यौ कां वोजश्च  
 सुदक्षिणः । बृहद्वलश्चकौ सल्योजयत्सेनश्चमागम्यः ॥ ४९ ॥ नानावर्णविचित्राणि

महादुःखों से पृथ्वीपर गिरकर मर गया । ४१ । हे राजा ! शल्य ऐसा कर्म करके  
 शीघ्र ही कृतवर्मा के प्रकाशवान् रथ पर चढ़ गया, तब वीराद्रका पुत्र श्वेत भाई  
 उत्तरको मृतक देखकर और साथ में बड़े वीरलों को जानकर क्रोधकी आग्नि में  
 ऐसा प्रज्वलित हुआ जैसे आग्नि घृतढालने से प्रज्वलित हो वह वीर इन्द्रके धनुष  
 की समान अपने धनुषको कानतक लेंचकर मद्रपति शल्य के मारने को दौड़ा और  
 बाणोंकी वर्षा करता हुआ वह बहुत से रथियों सहित शल्य के रथकी ओर चला  
 पुरुषार्थ में वेगवान् हाथीकीनाई उसको रण के लिये दौड़ता देख सातमहारथियों ने उसे  
 सब ओरसे घेर लिया और काल के मुखमें आये हुए मद्रपति की सहायता की । ४७ ।  
 उन सातमहारथियोंके नाम ये हैं कोशलराज, बृहद्वल, मगधका राजा जयत्सेन,  
 शल्यका पुत्र रुक्मरथ अवन्तिके विंद और अनुविंद काम्बोजराज, सुदक्षिण और  
 सिंधुराज जयद्रथ और बृहच्छत्र का सम्बन्धी इन वीरों के धनुष विचित्र रंगों से

armour fell down shrieking on earth with the wounds. Having done  
 this brave deed, Shalya soon mounted the chariot of Kritvarma.  
 Then Shwet the son of Vnat, seeing that Uttar his brother was  
 slain and that his destroyer was surrounded by brave warriors, burnt  
 with anger like a flame of fire fed with clarified butter. And drawing  
 his bow, like the bow of Indra, to his ear, he ran to kill Shalya the  
 king of Madra. Accompanied with many charioteers, he advanced  
 towards the chariot of Shalya, showering his arrows upon him.  
 Seeing him advancing like a furious elephant, the warriors surrounded  
 Shalya on all sides, desiring to protect him who was then like one  
 about to fall in the jaws of death. The warriors who helped Shalya  
 were Vrihadbal the king of Kosl, Jayatsen of Magadh, Shalya's  
 son Rukmarath, Vind and Anuvind of Avanti, the king of Camboj,  
 Sudakshin, Jayadrath the king of Sindhu and Vrihadbal's kinsmen.

धनुषिचमहारमनाम् । विस्फारितानिहृदयतेतोयदेविवारेद्युतः ॥५०॥ तेतुवाणमयवर्ष  
 श्वेतमूर्धन्यपातयन् । निदाघातेऽनिलोद्धृतामेघाद्भवनगेज्जलम् ॥५१॥ ततः कृदोमेहध्वसः  
 सप्तमह्य सुतेजसः । धनुषितेषामाच्छिद्यममर्दपूतनापतिः ॥ ५२ ॥ निरुक्तान्येधतानि  
 स्मसमदृश्यन्तमारतः । ततस्ते तु निमेषार्धात् प्रत्यपचन् धनुषिच ॥ ५३ ॥ सप्त  
 ध्वेयः पृथक्कांश्च श्वेतस्योपदर्यपातयन् । ततः पुनरमेयात्माभलैः सप्तभिराशुभिः । निच  
 कप्त महायाहुस्तेषां चापानि घञ्चिनाम् ॥ ५४ ॥ ते निरुक्तमहाचापास्तघरमाणामहा  
 रथाः । रथशक्तीः परासृज्य विनेदुर्भरवान् रथान् ॥ ५५ ॥ अन्यथुर्भरतश्रेष्ठ सप्तश्वेत  
 रथप्रातिः । ततस्ताज्ज्वलिताः सप्तमहद्वा शनिनिस्थनाः ॥ ५६ ॥ अघोस्ता सप्तभिर्महै  
 धिच्छेद परमास्त्रयित् । ततः समादाय शरसर्भकाय विदारणम् ॥ ५७ ॥ प्राहणोद्भ  
 रतश्रेष्ठ श्वेतो रुक्म रथप्रातः । तस्य वेद निपतितो वाजो वज्राति गामहान् ॥ ५८ ॥

विद्युत की समान चमकते थे । ५० । उन सप्त ने श्वेतके शिरपर बाणोंकी वर्षा की  
 मानो बादल गर्मी के अन्त में पहाड़पर जलकी वर्षा करतेहैं उससेनापति धनुषधारी  
 ने क्रोधयुक्तहोके गुप्तग्रन्थी वाले बाणों से उनके धनुषोंको काटा, हे भरतवंशी वह  
 धनुष कटेहुये दीखपड़े तदनन्तर उन्होंने मर्द निमेषों मेही अपने सवधनुषों को  
 तैयार करके सातग्राण श्वेत को मारे तदनन्तर अपारयुद्धि श्वेत ने सप्त भल्लों से  
 उन धनुषधारियों के धनुषों को काटा । ५४ । वह धनुष कटेहुये महारथी दिव्यपर  
 छोंको हाथ में लेकर भयकारी शब्दोंको करनेलगे और सातोंवरछोंको उन्होंने श्वेत  
 के रथपर छोड़ा तिसपीछे परम अस्त्रों के जाननेवाले श्वेत ने उन ज्वालारूपप्रका-  
 शित उल्का और वज्रके समान शब्दायमान सातों वरजोंको अपने सातभल्लों से  
 पीचहीमें काटडाला, तदनन्तर हेभरतवंशियों में श्रेष्ठ श्वेतने सब शरीर के छेदनेवाले  
 बाणको रुक्मके रथपर चलाया, वहग्राण उसके हुत्तकों उल्लंघन करके बड़ी शीघ्रता

The bows of these warriors, of many colours, shone like lightning 50  
 All these showered arrows over Shwet like rain falling on a moun-  
 tain at the hot weather That great archer and leader of armies  
 was filled in a rage and cut down their bows with his arrows. We  
 saw their bows cut down, but all the warriors soon refitted their  
 bows and shot seven arrows at Shwet The wise archer, Shwet  
 again cut down their bows 51 When the bows of those warriors  
 were cut, they took up bright spears and with dreadful noises hurled  
 the seven spears at Shwet, but the latter, adept in the use of arrows,  
 cut down with his darts, in the mid air, the seven spears shining like  
 sparks and hissing like vajra Then, O Lord of Bharata I Shwet shot  
 at Rukmarath an arrow which could pierce all the parts of the body.



ततो रुक्म रथो राजन् सायकेन दृढाहतः । निपसाद् रथोपस्थे कदमलञ्चाविशाम्भहतः ॥ ५९ ॥ तं विसंतां विमनसं स्वामाणस्तु सारथिः । क्षपोवाहनसंभ्रान्तः सर्वलोकाभ्य  
पश्यतः ॥ ६० ॥ ततोऽप्यान्वपट् समादाय श्वेतो ऐमविभूषितान् । तेषां वर्णा महाबाहुर्ध्वज  
शीर्षाण्यपातयत् ॥ ६१ ॥ हयांश्च तेषां निर्मिथं सारणींश्च परतपः । शरैश्चैतान् समा  
कीर्य प्रायाच्छत्यरथं प्रति ॥ ६२ ॥ ततो हलहलाश्वदन्तः सैन्येऽनुभारत । दृष्ट्वा सेनाप  
तिं तूर्णं यान्तं शनयस्यं प्रति ॥ ६३ ॥ ततो भीष्मं पुस्त्युत्पत्य सप्त पुत्रो महाबलः । नृत्तस्तु  
सर्वं सैन्येन प्रायाच्छवेत् रथं प्रति ॥ ६४ ॥ मृत्योराभ्यमनुप्राप्तं मद्राजमर्माचयत् ।  
ततो युद्धं सप्तमचत् तुमुले सोमहर्षणम् ॥ ६५ ॥ तावन्तानां परेषां च ध्यतिपकारथ द्विप  
म् । सोमद्रे भीमसेनश्च सात्यकीश्च महारथे ॥ ६६ ॥ कैकेये च विरोटे च धृष्टपुत्रे च ।

से उसके शरीर में भवेक करगया । ५८ । इस के पीछे हे राजा रुक्म रथी शायक  
नाम वाणसे धायन होकर रथ के बैठने के स्थान में बैठ गया और वही अचेतता में  
प्रष्टत हुआ परन्तु शीघ्रता करनेवाला उसका सावधान सारथी उसको अचेत जानकर  
सबको देखते हुये बहुत दूर ले गया । ६० । तदनन्तर महाबाहु श्वेनने सुवर्ण से शो-  
भित दूसरे घोड़ोंको-लेकर, उनछत्रोंकी ध्वजाओंकी नोकोंको गिराया फिर हे राजा  
घहश्चेत शेषवचे हुये, घोड़ोंको वाणों से आच्छादित करके शल्य के रथपर गया, हे  
भरतवंशी इस के अनन्तर शल्य के रथपर जाते हुये सेनापति श्वेतको देखकर आप  
की सेनाके मनुष्यों में बड़ा हलचलका शब्द हुआ । ६३ । फिर आपका पुत्र महा  
बली भीष्मजीको आगेकर के सप्त सेनाके मनुष्यों समेत श्वेत के रथपर गयी और  
मृत्यु के मुखमें फैते हुये मद्र के राजा शल्यको बचाया, इस के पीछे आपके पुत्र और  
प्रीतिपत्नियों में महारामहर्षण करनेवाला तुमुल युद्ध हुआ जिस में रथ और हाथी सं-  
युक्त थे, कौरवोंके पितामह दृढ भीष्म ने अभिमन्यु भीमसेन महारथी सात्विकी केकय

and it entered his mouth and passed into his body. 58. Wounded by that arrow, Rukmarath swooned in his chariot and succumbed in his seat. But his wise chariot driver, knowing this, took him farther away from the sight of all. 60. Then the warrior Shwet took other horses decked with gold and cut the banner heads of those six warriors; and covering their horses with his arrows, came forward against Shalya. Seeing Shwet falling on Shalya, there was a great commotion in your army. 63. Then, your son, preceded by valiant Bhishma and followed by his soldiers, encountered Shwet and thus rescued the king of Madra from the jaws of death. Then there was a severe fighting between your sons and the other side. The chariots and elephants got mixed together. The old grandfere of the Kurus showered his arrows on Abhimanyu, Bhimsen, Valiant Satwika,

पार्षते । एतेषु नरसिंहेषु चेदि मत्स्येषु चैवह । चवर्षे शर वर्षाणि कुरु वृद्धः पिता  
मह ॥६७॥ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवर्षवर्षणि श्वेतयुद्धे

सप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४७ ॥

धृतराष्ट्र उवाच ॥ एव श्वेते महेष्वासे प्राप्ते शल्यस्य प्रति । कुरव पाण्डवेप्राप्त  
किमकुर्वत सञ्जय ॥ १ ॥ भीष्मः शान्तनव किंवा तन्ममाचक्ष्व पृच्छत ॥ सञ्जय  
उवाच ॥ राजन् शत सहस्राणि तत क्षत्रियपुंगवा ॥ २ ॥ श्वेत सेनापति शूर पुरस्कृत्य  
महारथा । राक्षो वल दशयन्तस्तत्र पुत्रस्य भारत ॥ ३ ॥ शिखण्डिनं पुरस्कृत्य भ्रातु  
मैच्छन् महारथाः । अभ्यवर्तन्त भीष्मस्य रथ हेम परिष्कृतम् ॥ ४ ॥ जिघासन्त युधा  
थेष्टं तदासीत् तुमुल महत् । तत्तेहं सम्प्रवक्ष्यामि महावैद्यासमन्वृत ॥ ५ ॥ तावकाना

विराट् धृष्टद्युम्न पर्यन्तकापौ च इननरोचमौ पर और राजाचंदेली की सेनाके पुरुषों  
पर बाणोंकी दृष्टिकी ॥ ६७ ॥

अध्याय ॥ ४८ ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय इसमकार शल्य के रथ के पास बड़े धनुषधारी श्वेत  
के वर्त्तमानहोनेपर कौरव और पाण्डवों ने क्या क्या कर्म किये और शान्तनु भीष्म  
जीने क्या किया उसको मेरेआगे वर्णन करो, संजयबोले हे राजा इस के पीछे  
लाखों उत्तम शूरवीर और महारथी सत्री उससेनापति श्वेतको आगे करके आपके  
पुत्र राजा दुर्योधनको अपना पराक्रम दिखलाते हुये शिखण्डी को आगे कररत्ता  
करनेकी इच्छा करके, युद्धकर्त्ताओं में उत्तम भीष्मजीको मारने की अभिलाषा  
करते हुये उनके सुवर्ण जटित रथ के समीप उनकी सम्मुखता में आकर वर्त्तमान  
हुये उससमय बड़ाभारी युद्धहुआ । ४ । अब मैं उसयुद्ध को कहताहूँ जिसरीति से  
तुम्हारे पुत्र और दूसरे लोगोंका युद्ध प्रचलितहुआ उसयुद्धमें भीष्मजीने रथीलों

Kakaya, Virat, Dhrishtadyumna the grandson of Parshat and on  
the armies of the king of Chandel 67.

#### CHAPTER XLVIII

Dhritrashtra asked of Sanjaya — "When Shalya and the great  
archer Shwet were thus facing each other, what did the Kauravas  
and the Pandavas do? What did Bhishm the son of Shantana do?  
Let me know all this." Sanjaya replied, "Then hundreds of thousands  
of warriors and charioteers, led by their general Shwet, showed their  
prowess to Duryodhan. They made Shikhandi to face Bhishma the best  
of warriors and protected the former from all sides in order to bring  
about the destruction of Bhishm. On their approaching the gold  
lode-locked chariot of Bhishm, a severe fight ensued. 4. I shall now  
describe to you how they fought. Bhishm killed numbers of chariot

परेपांच यथायुद्धं मवर्तत । तत्राकरोद्रघोपस्थान् शय्यान्शातनघो यद्गन् ॥ ६ ॥ तत्राह  
 मुतं महश्चे शरैराच्छेदयमान् । समानृणोच्छरैरकं मर्कतुष्य प्रतपधान् ॥ ७ ॥ तुदन्  
 समन्तात् समरे रवि स्थन् यथा तमः । तेनाजौ प्रेषिता राजन् शराः शतसहस्रशः ८ ॥  
 क्षत्रियांतकराः संख्ये महावेगा महाबलाः । शिरांसि पातयामासुर्धाराणां शतशोरणे ९ ॥  
 गजान् कण्टकसम्राहान्वज्रेणैव शिलोच्चयान् । रथा रथेषु संसक्ता व्यदृश्यन्त  
 विशाग्नपते ॥ १० ॥ एकेरथेपर्यवहंतुरगाः स दुरङ्गमम् । युधानं । नाहंतं धीरं लग्नमानं  
 सकर्मुकम् ॥ ११ ॥ उर्ध्वाणां ह्ययाराजन् बहंतस्तत्रतत्रह । बद्धखड्गनिपद्वाश्च विध्व  
 स्तशिरसोहताः १२ शंतशः पतिताभूमौ धीरशय्यासुशरते । परस्परं धावन्तः पतिताः  
 पुन कृत्यताः ॥ १३ ॥ हत्यायच्च प्रधावन्तो द्रुमयुद्धमवाप्नुवन् । पीडिताः पुनरन्यान्

के स्थानोंको खाली करके उनके शिरों को काटा, सूर्य के समान प्रतापी युद्धमें चारों  
 ओर से पीड़ित करतेहुये भीष्मजीने बाणों से सूर्यको ऐसेटकदिया जैसे उदयहोकर  
 सूर्य अंधेरेकोटक देता है । ७ । हे राजा उन्होंने युद्धके बीच क्षत्रियों के नाश  
 करने वाले बड़े शीघ्रगामी लाखों तीव्र बाणोंकी वर्षा की, युद्ध में अनेक शूरोंके  
 शिरोंको गिराया हे राजा भल्ल और बाणों से युक्त शिरसे रहित बहुतसे रथी रथ  
 में बैठेहुये दिखाई दिये रथी रथीके ऊपर अश्वपति अश्वपति के ऊपर वर्त्तमानहुये  
 । १० । और सेनाके साथ मरे हुये धनुर्धरों समेत रथमें पड़ेहुये वीरोंको उनके रथों  
 के घोड़े इधर उधर लेजाते हुए टपटपड़े, खड्ग और तृणीर के बांधनेवाले कटेहुए  
 शिरोंसे वर्त्तमान हुए और सैकड़ों पृथ्वीपर पड़ेहुए वीरोंकी शय्याओंपर सोते हैं,  
 और परस्पर में दौड़ते गिरते हुए और उठकर अत्यन्त दौड़नेवालों ने द्रुमयुद्ध को  
 मचाया, फिर परस्पर में पीड़ित होकर युद्धभूमि में फिरन लगे मतवाले हाथी चारों

cars and cut down their heads. Glorious like the sun, spreading  
 destruction on all sides, Bhishm covered the sun with his arrows as  
 the sun covers the darkness by his appearance. 7. He showered  
 millions of kshatrya killing arrows and cut down the heads of many  
 brave warriors. Many charioteers with their bodies pierced through  
 with darts and their heads chopped off, were to be seen in their  
 chariots. Charioteers fell upon charioteers and horsemen upon horse-  
 men. 10. Killed in the midst of the army, pierced by arrows in  
 their chariots and lying on their seats, the warriors were seen  
 carried hither and thither by the horses. The wielders of swords  
 and quivers were deprived of their heads and hundreds of warriors  
 lay dead on the field of battle. Running against one another, falling  
 and rising again, the warriors fought duels. Wounded by one  
 another, the mad elephants in the field of battle fell down dead in all  
 directions. Other elephants and horses were killed because they had  
 no riders to guide them. 14. The charioteers met the charioteers all

हृष्टोत्तोरणमूर्धान ॥ १३ ॥ स्वध्यापा सनिपगाश्च औत्तरूपपरिष्कृताः । विच्छेद्यद्वयधी-  
राश्च शतशः पारपीडिताः ॥ १५ ॥ तेनैनाभ्यघातं विवृजतश्चभारम् । मत्सोगजः पर्य-  
घतं दयाश्च हतसादिन ॥ १६ ॥ सरथारोपनधाणि विमृद्भूत समेतान् । रथे दनादपतकं  
अभिहृत्ताभ्येनसायकैः ॥ १७ ॥ इतसारधिरप्युच्चैः पपातकाष्टवद्रवः । युध्यमानस्यसे  
ग्रामे व्यूढेऽजमिच्छास्थिते ॥ १८ ॥ धनु कूजत विज्ञाने तत्रास्ति प्रतिबुद्धमतः । गात्रापशेन  
योघानां व्यज्ञास्तपरिपथिनम् ॥ १९ ॥ युद्धयमानं शरैराजन् सिंहाजनीध्वजिगीरवात् ।  
अभ्योन्मथारं शब्देनाश्रयनमर्द्धकृतः ॥ २० ॥ शब्दायमाने संग्रामे गदहकण्डारिणि ।  
युध्यमानस्य संग्रामे कुर्वतः पौरुषं स्वकम् ॥ २१ ॥ नाशोपनामगोत्राणि कीर्तनं च परस्परम् ।

और से गिर और जिनके सारथी मारे गये वह भी हाथी घोड़े गिर पड़े । १४ । रथों  
के साथ रथालाग चारों ओर से मर्दन करने लगे और कोई किसी के बाखसे मरा  
हुआ रथसे गिरा, और जिनका सारथी मारा गया वह बड़ा रथभी काष्ठ के समान  
गिरा और द्रुह युद्ध में धूलके उठने पर, लड़नेवालों का विज्ञान और सम्मुख युद्ध  
करने वालों के शब्द ध्वंस हुये युद्ध करनेवालों का शरीर छूने से शत्रुका ज्ञान होता  
था । १७ । हे राजा धनुषकी ज्या के शब्दों पर वाणों से लड़नेवालों ने वाण मारे  
और धारों के कहे हुये धीर शब्द परस्पर में सुनाई नहीं दिये, युद्धके शब्दायमान  
होने और कर्ण फाड़नेवाले पट्टशब्द होने पर युद्ध करने हुये अपनी शूर धीरता  
करने का परस्पर में पिछ्छा शूरताओं का वर्णन करना भी नहीं सुना गया  
भीष्मजी के धनुष से निकले हुये वाणों से पीड़ित और युद्धमें लड़नेवालों का  
भी वर्णन नहीं सुनाई दिया, एकने दूसरे धीरोंके मनोको कंपित किया उस बराबर  
व्याकुल करनवाले रोमहर्षण तुमुन युद्धमें, कोई पिता अपने निज पुत्र को  
नहीं जानता था । २० । रथके पहिये और जुए दूट गये और एक भारवाहक घोड़ा  
मारा गया, जुए के और पहिये के टूटने और रथ को रथधीन रहित होने पर

round and destroyed one another. Some fell down on earth from their  
chariots pierced through by arrows. The huge chariots, whose drivers  
were killed, fell down on earth like logs of woods. In the fury of  
the battle the dust storm rose so thick that the fighters could not  
distinguish the faces and voices of their adversaries and the only  
source of knowledge to them was the contact of their bodies 17.  
The archers, O king! shot arrows at the sound of bowstring; the  
heroic words of the warriors were not heard. In the midst of this  
tremendous uproar of battle and the account of the former exploits of  
the warriors could not be heard. Wounded by the arrows shot from the  
bow of Bhishma, the warriors uttered inaudible sounds. The warriors  
shook the minds of one another. During that terrible battle the  
father, could not distinguish the son 20. The wheels and the yokes  
of the chariots were broken and the horses were slain. On the chariots

भीष्मचापपुतैर्वीरैरार्तानां युध्यतां मृधे ॥ २२ ॥ परस्परं दांवीराणां मनांसि सतकं पथम् ।  
 तस्मिन् प्रयासु लयद्रे दारुणलोमहर्षणे ॥ २३ ॥ पिता पुत्रच समरे नाभिर्जातातिवश्चन ।  
 चक्रं मे युगैश्चिद्रेपकं धुर्यै हयै हतः ॥ २४ ॥ आक्षितः स्वपद्माक्षीरः सस रथिः जिह्वगः ।  
 पवंच समरं सर्वैर्वीराश्च विरथीकृताः ॥ २५ ॥ तेन तेन मम दृश्यते घाघमाना समतत ।  
 गजो हतः । शरदिष्टं मर्ममिथ हयो हतः ॥ २६ ॥ अहतः । शोपि नैवासीद्भीष्मोऽप्रतिशत्रवान् ।  
 श्वेतः कुरुणामकरोत्तयंतस्मिन् महाहवे ॥ २७ ॥ राजपुत्रान् रणे दारुणवर्धयिष्यत सघश ।  
 चिच्छेद रथिनां यानि शिरांसि मरतर्पय ॥ २८ ॥ सांगदावाहवश्चैव धनुः पथ समतत ।  
 रथे पारं चक्राणि नृपराण पुमानि च ॥ २९ ॥ छत्राणि च महार्हाणि पताकाश्चावरापते ।  
 हयैश्चाश्चरथो घाघनरीघाघैश्च भारय ॥ ३० ॥ धारणाः शतशश्चैव हताः श्वेतनभ्रात ।

सारथी समेत वीर लोग मृधे चलनेवाले घाघों के द्वारा रथों से गिराये गये, और परस्पर में लड़ने लगे दृष्टपदे जो मारागया वह शिरसे रहित हुआ कोई मर्मस्थलों में घायल होकर मरा, भीष्मजी के हाथ से शत्रुओं के मनुष्यों को मारते हुये के ईभी बिना घायल के नहीं बचा कौरवों के उस बड़े युद्ध में आप श्वेतने, राजकुमारों को और सैकड़ों समूहवाले बड़े २ पुरुषों को मारा और हजारों समूह युक्त रथियों के शिरोंको काटा । २४ । हे भरतवंशी उस युद्ध भूमि में चारों ओर से वाजुवृन्दों समेत भुजा वा धनुष और रथी पदाती रथवारथों में सवार छोटी बड़ी पताका अथवा घोड़ों के और रथों के समूह वा मनुष्यों के समूह सैकड़ों हाथियों समेत श्वेत गुरवारके हाथों से मारेगये उसके पीछे हमभी श्वेत के भयंसे भयभीत होकर अपने उत्तम रथ को छोड़कर दूर चलेगये और यहां आपकी बिन्ताको देखते हैं सो हे कौरवनन्दन हमसब कौरव लोग घाघोंकी झड़ीको बचाकर वहां पर नियत, शान्तनु भीष्मजी को देखनेजगे वह नरोत्तम बड़े उदार प्रतापी हमारे युद्ध पितायह भीष्मजी भयके समय बड़े भारी युद्धमें निश्चल मेरु पर्वतके समान अर्केनेही नियत

being thus disabled, the warriors and the chariot drivers were slain by the arrows which came in straight lines. The heads of some warriors were cut off and others died of receiving wounds in vital parts. No individual of the enemy's army escaped unhurt while Bhishma was fighting. In that war of the Kauravas, Shwet killed hundreds of princes and warriors of renown and beheaded thousands of charioteers. 24. In that battle, O descendant of Bharat! numerous jewelled arms, bows, charioteers, foot soldiers, banners and bannerets, horses and chariots with men and elephants were cut down by the great warrior Shwet. I myself, being afraid of Shwet, left my good chariot and went farther off and thus was able to see you once more plunged in grief. So all the Kauravas stood removed from the shower of arrows and looked on Bhishma. That best of men, of great prowess, our grandfather Bhishma, firm like mount Meru at the time of danger, in the thick of battle, stood alone. 30. And as in

घये श्वेतमया द्रिता विहाय रथसत्तमम् ॥ ३१ ॥ अपयातास्तथापञ्चाद्विभुषयामधृष्णव ।  
 शरपातमाति क्रम्य कुरुवः कुरुनन्दन ॥ ३२ ॥ भीष्मं शातनयं युद्धे स्थिताः पश्यामसर्वशः ।  
 अर्दानोर्दानसमये भीष्मोऽस्माकं महाहवे ॥ ३३ ॥ एकस्तस्थौ नरत्वाद्रोगिरिर्महारवाचलः ।  
 आददान इव प्राणान्संविताशशिरात्पये ॥ ३४ ॥ गमस्तिभिरवादिशस्तस्थौ शरमरी-  
 चिमान् । समुच्चमहेष्वास शरसंघानेन कशः ॥ ३५ ॥ निघ्नमभिघ्नान्समरे वज्रपा-  
 निरिवाधुरात् । तेव स्पमाना भीष्मेण प्रजहुस्तमहाबलम् ॥ ३६ ॥ स्वयूपादिष्वेत्युधामुकं  
 भूमिपुदारुणम् । तमेवमुपलक्ष्यैकोदृष्टः पुष्टः परतप ॥ ३७ ॥ दुर्योधनप्रिये युक्तः पांडवान्परि-

हुए । ३० । और जैसे चैत्र वैशाख में मूर्य अपनी किरणों से पृथ्वी के रसादिकों को आकर्षण करता हुआ नियत होता है उसी प्रकार वह शीतल किरणों वाला भीष्मभी शत्रुओंके प्राणोंको खींचता हुआ नियत हुआ युद्धमें शत्रुओंको मारते हुए उस धनुष धारी ने बहुत प्रकार से बाणों के समूहोंको ऐसे छोड़ा जैसे कि चक्रधारी त्रिंशु असुरों पर छोड़ते हैं तब भीष्मजी से घायल हुए वीर लोगों ने भीष्म को त्याग किया और अपने सब समूहों कोभी काष्ठ से छुटी हुई अग्नि के समान शत्रुओंके समूहों से पृथक् किया प्रसन्न चित्त देखते प्रफुल्लित शत्रु संतापी दुर्योधन के प्रयोजन करनेमें प्रवृत्त चित्त अकेले भीष्मजी ने उस अकेले श्वेतको अपने सम्मुख देखकर पांडवोंको बहुत शोषण किया । ३४ । हे राजा जीवनको और उससे उत्पन्न हुए भयको त्यागकर उस महा युद्ध में पांडवों की सेना के मनुष्यों को मारकर गर्दमर्द किया फिर आपके पितादेवव्रत भीष्मजी उस सेनाओं के मारनेवाले सेनापति को देखकर बड़ी शीघ्रगति से सम्मुख हुए उस समय उस श्वेतने बाणों के महाजालों से भीष्मजी को आच्छादित कर दिया, इसीप्रकार भीष्मजी नेभी बाणोंके समूहों से श्वेतको ढक दिया । ३७ । और फिर वह दोनों वैलोंके समान गर्जते हुए

summer, the sun stands drawing humidity from out of the earth, so did Bhishm of cool rays stand attracting the life out of the enemies. Killing the enemies in the field of battle, that archer let go his shower of arrows—as does Vishnu the wielder of discus discharge his arrows at asuras. Wounded by Bhishma's arrows, the warriors removed themselves away from Bhishm and went away with their men out of the field of battle as fire does when it is separated from wood. Cheerful of body and mind, the destroyer of enemies, Bhishm stood alone for the sake of Duryodhan and seeing Shwet before him he killed many warriors of the Pandavas. 34. Leaving all care for his life and body, O king! your father Devabrat Bhishm destroyed the Pandava army; and seeing their leader of the army coming towards him, he at once faced him. Shwet covered Bhishm with the network of his arrows and Bhishm did the same. And then

शोचन् । जीवितदुःखजल्ययं वामयचक्रमहादधे ॥ ३८ ॥ पातयामासैसैन्यानि  
पांडवानाविशापते । प्रहरतमनीमानिपिताद्वेचनतत्तव ॥ ३९ ॥ दृष्ट्वासेनापतिमास्म  
स्त्वरित भेतगम्ययात् । सभास्मशरखालेनमहतासमवाकिरत् ॥ ४० ॥ श्वेतचापि  
तथाभीष्म शरीरं समवाकिरत् । तौज्याविचनद्वैतीमत्ताविचमहाद्विषी ॥ ४१ ॥ व्याघ्रा  
विचक्रुस्संख्यापन्योऽयमभिलक्षतु । अस्त्ररक्षाणिसचार्यतस्तौपुरुषपंथौ ॥ ४२ ॥  
भीष्म भवेत्तश्चपुत्रेपरस्परचघे पणौ । एकद्वेनानिर्देहेऽप्यौ पांडवानामनीकिर्नौ ॥ ४३ ॥  
शरैः परमसदुद्धोपाद्विभेनो न पाळयेत् । पितामहततो दृष्ट्वा भवेतेन विमुग्धीकृत ॥ ४४ ॥  
प्रहृषेपाडयाजमु पुनस्तेधिगनामवत् । ततो दुर्व्योधन क्रुद्ध पार्थिवं परिचारित ॥ ४५ ॥  
ससैन्य पाडयानिकमभ्यव्रजतसपुगे । दुर्मुख कृतवर्माचक्रपः शल्योविशापति ॥ ४६ ॥

वहे मतलालेहाथी और व्याघ्रके समान अत्यन्त दौध में भरे परस्परमें आघात करने  
लगे, तदनन्तर वहदोनों पुरुषोत्तमअस्त्रोंसे अस्त्रोंको रोककर, परस्परमारनेके इच्छा  
वान युद्धमें मृत्तुहृष्ट अत्यन्त क्रौर्यरूप भीष्मजी पांडवों की सेनाकोएकही दिन्में  
भस्मकर डालते जो श्वेत रत्ना न करता । ४० । तिस पीछे श्वेतसे मुख फेरहुए  
पितामह की देखकर पांडवोंने बड़ाहर्ष मनाया, और आपका पुन उदास हुआ  
तदनन्तर क्रोधमें भराहुआदुर्व्योधन अपनेसाथी राजाओं समेत सेनाके मनुष्योंको  
साथ लिये युद्धमें आकर पांडवों की सेनाके सम्मुख दौड़ातब श्वेतने गंगाके पुत्र  
भीष्मजीको छोड़कर बड़ी तीव्रतासे आपके पुत्रकी सेना का ऐसे नाशकिया  
जैसेबाघ अपने वनसे वृत्तों का नाशकगताह, वह क्रोध से भराहुआ विराट् का  
श्वेतनाम बड़ा पुत्र दुर्व्योधनकी सेनाका नाशकरके वहां से लौट कर फिद वही  
आपहुँचा जहां भीष्मजी नियतये । ४४ । देराजन वह दोनों प्रकाशमान महाबली  
महात्मा परस्पर में फिर ऐसे युद्ध करने लगे जैसे कि वज्राक्षर और इन्द्र लड़तेथे  
और परस्पर मारनेकी इच्छाकरतेथे श्वेतने अपने धनुषको हाथ में लेकर भीष्मजी को

both roaring like bulls they fought with each other like two angry  
elephants or lions And each checking the weapons of the other and  
desiring to kill each other, they engaged in combat The enraged  
Bhishm would have extirpated the army of the Pandavas in one  
day, were there no Shwet to protect it 40 Then seeing the  
grandfather turn back on Shwet, the Pandavas raised a great cry of  
joy. Your son was grieved at this and accompanied by kings and  
armies, rushed upon the army of the Pandavas Shwet then left  
Bhishm the son of Gangā and began swiftly to destroy your army  
as the wind destroys trees by its force The enraged son of Vrat,  
Shwet, having routed Duryodhan's army returned to the place where  
Bhishm was 41 Both glorious warriors of great renown fought  
with each other like Vratasur and Indra and desired to kill each

भीष्मजुगुपुरासायतयपुत्रेणनोदिता । दृष्ट्वातुपार्थिवै सर्वैर्दुर्योधनपुरोगमै ॥ ४७ ॥  
 पांडवानामनीकानि घृण्यमानानसद्युगे । श्वेतोर्गांगेयमुत्सृज्यतवपुन्यवाहिनीं ॥ ४८ ॥  
 नाशयामासवेगेनययुर्वृत्तानिवौजसा । द्रावयित्वाचमराजन्वैराटि क्रोधमूर्च्छित ॥ ४९ ॥  
 आपतत्सहस्राभूयोयत्रभीष्मोव्यवस्थित । तौतनोपगतौराजन् शरद सौमहायली ॥ ५० ॥  
 अयुष्येतामहात्मानौययोभौवृत्रवासवौ । अन्योन्यंतुमहाराजपरस्परवधेभिणौ ॥ ५१ ॥  
 निवृद्धकामुं कथ्येतोभाष्मविश्याघसप्तभि ॥ पराक्रमेततस्तस्यपराक्रम्यपराक्रमी ॥ ५२ ॥  
 तत्साधारयामासमत्तौमत्तमिवद्विपम् । श्वेत शतनवभूय शरै सश्रतपर्वोम ॥ ५३ ॥  
 विज्याधपचविशत्या नदद्भुतमिवाभनन् । तं प्रत्यविध्वंशभिर्भीष्म शतनवस्तदा ५४ ॥

सात बाणों से विदीर्ण किया इसके पीछे इस पराक्रमी ने उसपराक्रमी को बड़े पराक्रम से ऐसेहटा दिया जैसे कि मतवालाहाथी मतवाले हाथी को हटादेता है । ४७ । फिर क्षत्रियों के प्रसन्न करनेवाले विराट्के पुत्र श्वेतने क्रोध करके युद्धमें धनुषको खेंच कर भीष्मजीको घायल किया, इसी प्रकार शतनु भीष्मजी ने भी उसको दश बाणों से निह्वल करादिया, वह पराक्रमी भीष्मजीसे घायल होकर भी पर्वत के सामान कम्पायमान नहीं हुआ तदनन्तर फिर श्वेतने गुप्त ग्रन्थि वाले पच्छिम बाणों से भीष्मजी को घायल किया, यह आश्चर्यसा हुआ और युद्धमें होठ को चानने वाले श्वेतने अत्यन्त हँसकर, दश बाणों से भीष्मके धनुषको दश खण्ड कर दिये तिसपीछे बाणोंकेभी छेदनेवाले विशिखों को चढ़ाकर, उन महात्मा भीष्मजी की ताल-जवा के शिर को मथन किया फिर आपके पुत्रोंने भीष्मजी की ध्वजाको गिरा हुआ देखकर भीष्मजी को श्वेत के आधीन वर्त्तमान मृतक रूप माना और प्रसन्न चित पाण्डवोंने भी चारों ओर शिखोंको बजाया । ५३ । महात्मा भीष्मजी की ताल-जवा को गिरा हुआ देखकर दुर्योधन ने बड़े क्रोध से

other. Shwet pierced Bhishm with seven arrows and was himself repulsed with equal force by Bhishm, as one mad elephant repulses another 47. Then Virat's son Shwet, the joy of Kshatryas, drawing his bow in great anger, wounded Bhishm. In the same manner Bhishm also wounded him with ten arrows. The brave man, wounded by Bhishma's arrows, remained unshaken like a mountain and again wounded Bhishm with swift sharp arrows. His deed was a wonder. And biting his lips in the field of battle, with a smile on his face, Shwet cut the bow of Bhishm into ten pieces with ten arrows. Then he discharged more arrows and cut down the banner of Bhishm with the figure of palm tree on it. Your sons, seeing the banner of Bhishm down, thought that he was vanquished and slain by Shwet and the Pandavas cheerfully blew their conch shells. 53. Seeing the Palm ensign of great Bhishm struck down, Duryodhan



सविद्धस्तेनघलपाशाकपतयेष्टाऽचलः । धैराटि समरेकुक्षोभुशमायम्यकार्युक्तम् ॥५५॥  
 आजघानतताभीमंभ्वेत क्षत्रियनन्दनः । संप्रहस्यततःश्वेतःसुकिणीपरिसंलिहन् ॥५६॥  
 यनुश्चिच्छेदभीमस्यनयभिर्दशघाशरैः । संघायविशिष्यंचैवशरलामप्रवाह्णम् ॥५७॥  
 उन्ममाधततस्तालंघ्यजशोपमहात्मनः । केतुानपतितंदृष्ट्वाभीष्मस्यतनयास्तव ॥५८॥  
 हतंभीमममन्यंतश्वेतस्यवशमागतम् । पांडवाश्चापिहंष्टदृष्ट्वाऽप्युत्थायमुवाचुतः ॥५९॥  
 भीष्मस्यपतितंकेतुंदृष्ट्वातालंमहात्मनः । ततोपुय्योघनःक्रोधात्स्यमनीकमनोदयन् ॥६०॥  
 यत्ताभीमंभरीपस्यंरक्षमाणाःसमंततः । गानप्रवश्यमानानांश्वेतान्मृत्युमवाप्स्यात् ॥६१॥  
 भीष्मःशांतनवःशूरस्तथासत्यंघोमिवः । राक्षस्तुवचनंश्रुत्वात्यरमाणांमहारथाः ॥६२॥  
 बलेनचतुरंगेणगांतेपमंघपालयन् । बाह्लीकःकृतवर्माचशाल शल्यश्चभारत ॥६३॥

अपनी सेनाको जताया कि उन देसनेवालोंको भी श्वेत मारेगा तब शान्तनु भीष्मजी भी मारे जायेंगे इसलिये मैं तुम लोगों से कहता हूँ कि बड़े उपाय से भीष्मजी के जीवनकी इच्छा से तुम चारों ओर से उनकी रक्षा करो यहवात मैं सत्य सत्यही कहताहूँ राजा दुर्योधनके वचनको सुनतेही शीघ्रता करनेवाले महाराथियोंने चार भ्रम वाली सेनासमेत गंगा के पुत्र भीष्मकी रक्षाकी, बाह्लीक कृतवर्मा कृपाचार्य शल्य जरासन्धकापुत्र विकर्ण चित्रसेन विविशानि हे भरतवंशी उन सब शीघ्रता करने वालों ने चारों ओर से भीष्मजी को मध्य में करके श्वेत के ऊपर अश्वों की वर्षाकी, हस्त साघवताके दिखानेवाले और शीघ्रता करनेवाले महाबली बड़े बुद्धिमान श्वेतने उन क्रोध भरेहुओं को अपने तीव्रबाणोंसे रोका, जैसेकि सिंह हाथियोंको रोकता है उसीप्रकार श्वेतने उन सर्वोंको रोककर बाणों की बड़ी वर्षासे भीष्मजीके धनुषको काटा, तदनन्तर हे राजन् युद्ध भूमिमें शांतनु भीष्मजी ने दूसरे धनुषको लेकर कंकपक्ष युक्त शिलापर तीक्ष्ण किये हुए बाणों से श्वेतको घायल किया, तिस पीछे हे राजन् लड़ाई में सबलोगों के देखते बड़े क्रोधयुक्त श्वेतने भीष्मजी को बड़े २ लोहेके बाणों से विदीर्ण किया, इसके अनन्तर राजा

in anger ordered his warriors not to let Shwet destroy Bhishm as long as they lived. He directed them to guard Bhishm on all sides with great care as he said that Shwet was sure to kill all the warriors if he got victory over Bhishm. At his command the warriors guarded Bhishm the son of Ganga on all sides. Vahlík, Kritvarma Kripacharya, Shalya, Vikarn the son of Jarasandh, Chitrasen and Vivinshati at once stationed themselves round Bhishm and showered their weapons on Shwet. Dexterous in the use of arms, the wise Shwet checked those angry ones with sharp arrows, as a lion checks elephants. Having checked those warriors with a shower of his arrows, he cut down Bhishma's bow. But Bhishm at once took up another bow and wounded Shwet by his arrows sharpened by grinding on stone and fitted with quills. Then, within sight of all,

जलसघोषिध्वजश्च चित्रसन्निविष्टशक्तिः । त्वरमाणास्त्वरिकां लो परिवार्य समतत ॥६४॥  
 रात्र्यवृष्टिसुमुल्लास्यैतस्योपर्यपातयन् । तान्कुक्षोर्नाशितैर्वाणैस्त्वरमाणामहारथ ॥६५॥  
 अवारयद्मेघात्मादर्शयन्पाणि लाघवम् । सन्निवार्यन्तान्स्वर्णान्कैसरीकुजराजिष ॥६६॥  
 महताशरवर्षेणभीष्मस्यधनुराच्छिनत् । ततो-यद्धनुरादायभीष्म शान्तनवोयुधि ॥६७॥  
 श्वेतैर्विन्धाघराजैर्द्रुककणैश्चितैश्चरैः । तत सेनापति क्रुद्धोभीष्मदहुरिरावसे ॥६८॥  
 विधाघसमरराज सर्वलोकस्यपश्यत । तत प्रव्यधितो राजाभीष्मदृष्टान्निवारित ॥६९॥  
 प्रधीरसर्वलोकस्यश्वेतैनयुधपैतदा । निष्ठानकधसुमहास्तवसैन्यस्यचामयत् ॥७०॥  
 तंवीरधारितदृष्ट्वाश्वेतैनशराचक्षतम् । हतश्वेतनमन्यतश्वेतस्यवशमागतम् ॥७१॥  
 तत प्राधवशप्राप्त । पतादेवप्रतस्तव । ध्वजमुन्माथनदृष्ट्वाताञ्छेनानिधारिताम् ॥७२॥

दुर्योधन उन सत्र लोगो के आगे बड़े वीर भीष्मजी का युद्ध में श्वेत से रुका हुआ देखकर बड़ा दुःखी हुआ, आपकी सेनाका बहुत देर तक निवासरहा । ६४ । और श्वेतके बाणोंसे विदीर्ण उस वीर भीष्मको देखकर श्वेतके आधीन वर्तमान होकर उसके हाथसे मृतकरूप माना इसपीछे आप के पिता देवप्रत भीष्मजी क्रोधके प्रशीभूत हुए, हेमहाराज ध्वजाको मथितकरके उस सेनाको रोके हुए देखकर श्वेतके ऊपर अनेक शायकों की वर्षा की, फिर राधियोंमें श्रेष्ठ श्वेतने बाणों को रोककर फिरभी आपके पिता भीष्मके धनुषको भल्लोंसे कान्डाला, हे राजन् क्रोधमें भरे हुए भीष्मजी ने धनुष को त्यागकर दूसरे अत्यन्त दृढ़ धनुषको लेकर शिलको तीक्ष्ण किये हुए सात भल्लों को चढ़ाकर चार बाणोंसे तो श्वेतके चारों घोंडोंपर मारा और दोबाणों से ध्वजाको काटा और सातवें भल्ल से सारथीके शिरकोकाटा । ७० । फिर वह महारथी श्वेत जिसके सारथी और घोड़े मरगयेथे रथसे कूदकर क्रोधसे व्याकुलहुआ पितामह ने राधियोंमें श्रेष्ठश्वेतको रथसे बिहीन देखकर बड़े तीक्ष्ण बाणों से उसको चारों ओरसे घायल किया, युद्धमें भीष्मजिके बाणों से

Shwet pierced Bhishm with long non arrows Seeing Bhishm thus checked in little by Shwet Duryodhan was much grieved Your army stood there long 64 And seeing Bhishm wounded by Shwet arrows and checked they took him already for dead Then your father Devalrat was beset with anger and seeing his banner broken and his army checked he showered many arrows at Shwet Then Shwet the best of charioteers again checked his arrows and cut his bow in twain Then filled with anger Bhishm left that bow and taking another and stronger one shot seven arrows at him With four arrows he killed the four horses of Shwet with two he cut down his standard and with the seventh he beheaded the driver 70 The great warrior Shwet being thus deprived of the driver and horses leaped from his chariot and was much agitated with anger The Grandfather seeing Shwet the best of warriors deprived of the use

श्वेतप्रतिमहाराजस्यसृजतस्यैकान्वहृन् । तानाचार्यरणेश्वेतोमी'मस्वरधिनारः ॥ ७३ ॥  
 धनुश्चिच्छेदमहेनपुनरेषापितुस्तथ । उत्सृज्यकामुकंराजजगामिवःक्रोधमूर्च्छितः ॥ ७४ ॥  
 अन्यत्कामुकमादायदिपुलक्यलक्ष्मणम् । तत्रसंघायिपुलान्मृदुन्सप्तशिलाशितान् ७५ ॥  
 चतुर्भिश्चजघानाश्वान्श्वेतस्यपूतनापतेः । ध्वजंद्वाभ्यांताचच्छेत्सप्तमेनचसारथेः ॥ ७६ ॥  
 शिराश्चच्छेदमल्लेनसंकुटोऽलघुविक्रमः । हताश्वस्तान्त्सर्थादवच्छृत्यमहादलः ॥ ७७ ॥  
 अमर्षवशमापन्नोऽप्याकुलःसमपद्यत । चिरचरयिनांश्रेष्ठंश्वेतंदृष्ट्वापतामहः ॥ ७८ ॥  
 ताडयामासनिशितैःशरसंधैःसमततः । सताड्यमानःसमोभीष्मचापच्युतैःशरैः ॥ ७९ ॥  
 श्वरथेधनुर्गसृज्यशक्तिजग्राहकांचनी । ततःशक्तिरणेश्वेतोजग्राहोप्राप्तमहामर्या ॥ ८० ॥  
 कालदंडोपमांघोरांमृत्योर्जिह्वामिवश्वसन् । अग्रवीचतदाश्वेतोभीष्मंशतनधरणे ॥ ८१ ॥  
 तिष्ठेदानींस्वसंरक्ष्यःपश्यतांपुरुषोमय । पप्रमुक्त्वामहंयासोभीष्मंयुधिगिराकनी ॥ ८२ ॥

घायल हुए श्वेतने अपने रथपर धनुषको छोड़कर दिव्य मुवर्णित बरछीको धारण किया; तदनन्तर युद्धमें घोर भयानक उग्र कालदण्ड के समान नाश करने में महा समर्थ अपनी बरछी को लेकर, महा क्रौर्यरूप बुद्धिमान श्वेत ने भीष्म भीष्म ऐसा कहकर सर्प के समान बरछी को फेंका; हे राजन उससमय आपके पुत्रों ने बड़ा हाहाकार किया कि पांडवों के निमित्त पराक्रम करने वाला श्वेत आपका अनर्थ करना चाहताहै । ७७ । ऐसी सर्पाकार रूप वाली नाश घातक श्वेत की छोड़ी हुई बरछी को देखकर आपके पुत्रों में बड़ा हाहाकार हुआ । ७८ । हेराजन् उसकी फेंकीहुई बरछी एकाएकी उत्क्रांतात के समान आकाशसे गिरी तब भ्राता से युक्त आपके पिता देवव्रतने उस पृथ्वी और आकाशके बीच, प्रकाशवान् किरणों से युक्त बरछी को आठ घाणोंसे काटकर नौटुकड़े किये वह उत्तम मुवर्णवाली बरछी तीक्ष्णवाणों से कटगई इस के पीछे हे भरतर्षभ आपके सबपुत्र बड़े शब्दों को कर के पुकारे, तब क्रोधसे भरे काल से विदग्धि चिच श्वेतने उसबरछीको खंड

of his chariot, pierced him with sharp arrows on all sides. Shweta was wounded in battle by the arrows of Bhishma, left his baring his chariot and took up his celestial golden spear. The staff of a spear, dreadful in battle and capable of destroying and hurled it to death; wise Shwet said in anger "Bhishma, Bhishma, O king, fell down suddenly like a serpent. Your sons then raised a grievous injury to your cause. Seeing that destructive spear of Shwet, your sons expressed signs of grief. 78. The spear hurled by Shwet, O king, fell down suddenly like a meteor from the sky; but you, father Devabrat, cut that spear of Shwet into eight parts in the midst of the earth and sky with luminous rays with eight parts. That good golden spear was cut and divided it into eight parts. That good golden spear was cut down by sharp arrows and at this, O best of Bharats! all your sons cried for joy. Shwet, agitated by anger and broken hearted at the

तन शक्तिमयेयात्माचिक्षेपभुजगोपमां । पांडवाद्यैपगक्रांतस्तथानयैचिकीर्षुकः ॥ ८३ ॥  
 हाहाकारोमहागासात्पुत्राणांतेविशांपते । दृष्ट्वाशार्किमहःघोरांमृत्योर्दंडसमप्रभाम् ॥ ८४ ॥  
 श्वेतस्यकरनिर्मुक्तानिमुकोरगसाप्रभाम् । अपतत्सहसाराजन्महात्कचनभस्तलात् ॥ ८५ ॥  
 उज्ज्वलीभतरक्षतांज्यालाभिरवसंवृताम् । असंप्रांतस्तदाराजन्पितादेवव्रतस्त्वच ॥ ८६ ॥  
 अष्ट भनवभिर्भ्रमःशक्तिचिच्छेदगविभिः । उत्कृष्टहेमाचिकृतांनरुतांनशितैः शरैः ॥ ८७ ॥  
 उच्चुकुधुस्वनःसर्वेतायकाभरतपत्र । शक्तिविनिहतांदृष्ट्वावैराटि क्रोधमूर्च्छितः ॥ ८८ ॥  
 \*लोपहतचेतास्तकर्तव्येनाभ्यजानत । क्रोधसमूर्च्छिताराजन्वैराटिःप्रहसाश्रिय ॥ ८९ ॥  
 गदांजग्रहसहष्टौभीष्मस्यनिधनप्रति । क्रोधेनरक्तनयनोर्दंडगणिंरवांतकः ॥ ९० ॥  
 भीष्मममभिदुद्रावजलैर्घटवपर्वतम् । तस्यवेगमसवार्यमत्वाभीष्मःप्रतापान् ॥ ९१ ॥  
 प्रहारावेप्रमोक्षार्थसहस्राधरण्यगतः । श्वेत क्रोधसमावष्टोभ्रामयित्वातुतांगदां ॥ ९२ ॥

हुई जानकर करने के योग्य कर्म को नहीं जाना, फिर क्रोधयुक्त और प्रसन्नपूर्ति श्वेतने भीष्मजी के मारनेके लिये गदाको हाथ में लिया, और क्रोधसे अत्यन्त रक्त नेत्र दूसरे काल के समान भीष्मजी के ऊपर ऐसा दौड़ा जैसे कि बादल पर्वतपर दौड़ता है, प्रभाव के जानने वाले भीष्मजी उसके वेगको नरोकने के योग्य मान कर अपने बचाव के लिये शीघ्रही पृथ्वीपर उतरपड़े, क्रोधके आधीनहोकर श्वेत ने अपनी उसगदा को घुमाकर भीष्मजी के रथ पर ऐसा फेंका जैसे कि धनेश कुबेर अपनी गदाको फेंकताहै, उसभयानक घात करनेवाली गदाने घोड़ोंसमेत रथसारथी और ध्वजाको भस्मकर दिया फिर महारथी भीष्मजी को रथसे विहीनदेखकर रथियोंमें श्रेष्ठ शल्य आदिक महारथी एकसाथ दौड़े तदनन्तर महादुःखी भीष्मजी दूसरेरथमें बैठकर धनुषको टंकारकर हँसतेहुए धीरेसे श्वेतके निकटआये । ९० । इसी अन्तरमें भीष्मजी ने आकाश से उत्पन्न वा अपना भला करनेवाली इस दिव्य घाणी को सुना, कि हे भीष्म हेमहाबाहु इसके विजयकरने में शीघ्र उपाय कर यह समय ईश्वर

of his spear, did not know what to do. Then the enraged Shwet eyes cheerful face, took up his mace to destroy Bhishm and with a cloud of anger rushed upon him like a second Death or like knowing his way over a hill. Knowing the fury of the onset and ed from his chariagability to bear the attack, Bhishm at once alight- of Bhishm as Kuver the Shwet in anger hurled his mace at the chariot ful destructive mace destrd of wealth hurls his own. That dread horses and banner. Seeing the chariot together with the driver, his chariot, Shalya and other great warriors Bhishm deprived of with a heavy heart, mounted upon his chariot and twanging his low approached Shwet with a smiling face. 90. In the meantime, Bhishm heard from the sky these celestial words of great benefit to him:— "Bhishm of great arms! make haste to conquer him. This is

स्येभीष्मस्यचिक्षेपयवादेवोघनेश्वरः । तयामीष्मनिपातिन्यासारथोभरमसाकृतः ॥ ९३ ॥  
 सध्वजःसहसूनेनसाध्व-सयुगवधुरः । चरधराचनान्ध्रं भीष्मदध्वारशोभनाः ॥ ९४ ॥  
 भव्यघातंतसांहिताःशत्रुप्रभृतयोरथाः । ततोऽन्यरेणमास्यायधनुर्विस्फार्थदुर्गताः ॥ ९५ ॥  
 शनैरभ्यपारुष्येत्तंगंगेयप्रहसाभव । एतस्मिन्नंतरेभीष्मःशुभावाविपुलांगम् ॥ ९६ ॥  
 आकाशादीरतांदन्यामामनोहतसंभयाम्भीष्ममोग्रमहाबाहोःशत्रिघ्नंनृकुरुष्ववे ॥ ९७ ॥  
 एषहस्यजयेकाशोनर्दिष्टोविषयोनिना । एतच्छ्रुत्वातुयचनंदेवदूतंनभापतम् ॥ ९८ ॥  
 संप्रहृष्टमनाभूत्वाध्वेतस्यमनोदधे । धिरधरविनांश्रुं श्वेतदृष्ट्वापदातिनम् ॥ ९९ ॥  
 सहिताःशत्रुपवर्चतरपीप्सितोमहारथाः । सात्यकिभीमसेनश्चधृष्टद्युम्नश्चपार्पतः ॥ १०० ॥

से कहाहुआहै, देवदूत के कहेहुए आकाशसे उस वचन को सुनकर अत्यन्त मसन्नचित्त हो भीष्म जी ने उसके मारने में मनको लगाया, सात्विकी भीमसेन पार्पतकापोता धृष्टद्युम्नकेकय धृष्टकेतु पराक्रमी अभिमन्यु यहसब महारथी उत्तरथियोंमें श्रेष्ठ श्वेतको रथसे बिहीन देख कर एकसाथ ही चारोंओरको देखतेहुए लौटे उनको चारों ओर से घात हुये देखकर बड़े बुद्धिमान भीष्मजी ने द्रोणाचार्य शल्य और कृपा चार्यको साथ लेकर उनको ऐसे रोका जैसे कि वायु के वेगोंको पर्वतरोके, महात्मा पाण्डव और सबकेरुक्मिनेपर श्वेतने खड्गको खैचकर भीष्मके धनुषको काटा, फिर शीघ्रता करने वाले पितामहने उस दृष्टेहुए धनुषको छोड़कर और देवदूत के वचनको याद करके उसके मारनेमें मनको प्रवृत्त किया, इसके पीछे आपके पिता महारथी शीघ्रता करनेवाले देवव्रत भीष्मने दूसरे धनुषको लेकर उस इन्द्रायुध के समान प्रकाशित धनुष को सखमात्र मेंही तैयारकिया । ९९ । फिर हे भरतवंशियोंमें श्रेष्ठ फिर आपके पिता भीष्मजी उन भीमसेन आदि पुरुषोत्तमों से चाहाहुआ उस महारथी श्वेतको देखकर उसके मारने में प्रवृत्तहुए, इसके पीछे

the time fixed by God." Having heard the word of the divine messenger from the sky, Bhishm, with a mind full of cheer, set his heart on killing Shwet. In the meantime, seeing Shwet destitute of chariot, Satwika, Bhimsen, Dhrishtadyumna the grandson of Parshat, Kakaya, Dhrishtaketu and valiant Abhimanyu ran at once to his help. But wise Bhishm, when he saw them coming, checked their advance with the help of Dronacharya, Shalya and Kripacharya, as a mountain resists the fury of the winds. When the Pandavas were thus checked in their advance, Shwet drew forth his sword and cut into pieces the bow of Bhishm. The grandfather left the broken bow and remembering the words of the celestial messenger, set his heart on killing him. After this, your valiant father, Devabrata Bhishm, took up another bow and prepared it in an instant like the weapon of Indra. 99. Then, O best of Bharats seeing that Shwet was protected by Bhima and other warriors, your father prepared to kill him. Seeing,

केकेयोधृष्टकेतुश्च अभिमन्युश्च वीर्यवान् । एतामापततः सर्वान्द्रोणशल्पकृपैः सह ॥ १०१ ॥  
 अवारयद्मेपाताचारिवेगानिवाचलः । खनिरुद्धेषु सपैपुर्पाङ्घ्रिचेषु महात्मसु ॥ २ ॥  
 श्वेतः सङ्गमपाङ्घ्र्यभीष्मस्य घनुराच्छिनत् । तदपास्य घनुरिच्छिन्नं त्वरमाणः पितामहः ॥ ३ ॥  
 देवदूतचचः श्रुत्वा च धेतस्य मनोद्वेगः । ततः प्रचरमाणस्तु पिता देवव्रतस्तथ ॥ ४ ॥ अन्यत्  
 फामुक्त्वा दाययावरत्राणमेहहारयः । क्षणेन सज्जमकरोच्छक्रचापसमप्रभम् ॥ ५ ॥  
 पिता ते भरत धेष्टश्वेतं हृष्टवामहारथैः । वृत्तं तं मनुजव्याघ्रैर्ममिसेन पुरोगमैः ॥ ६ ॥ अथ वर्त  
 तर्गागेयः श्वेतसेनापतिदुतम् । आपतंतं ततो भीष्मो भीमसेनप्रतापवान् ॥ ७ ॥ आजग्नेधि-  
 शितैः पश्यासेनाग्यैः समहारथः । अभिमन्युं च समरे पिता दैवव्रतस्तथ ॥ ८ ॥ आजग्ने भरत  
 धेष्टस्त्रिभिः स व्रतपर्वभिः । सात्यकिं च शतनाजौ भरतानां पितामहः ॥ ९ ॥ धृष्टद्युम्नं च

प्रतापवान् महारथी भीमसेनने उस बढ़ते हुए सेनापति भीष्मको देखकर साठवाणों से घायल किया फिर तो आपके पिता देवव्रत ने भी युद्ध के बीचमें अपने घोरवाणों से अभिमन्यु आदि सयमहारथियोंको रोककर, उसी युद्धमें, गुप्तग्रन्थीवाले तीन वाणों से श्वेतको घायल किया । १०१ । और एकसौ वाणों से सात्विकी को और बीसवाणों से धृष्टद्युम्नको और पांचवाणों से केकय को और बहुतसे वाण समूहोंसे शेष सयराजाओं को घायन करके रोकदिया जब सबरुकगये तब श्वेत के सम्मुखदाँड़े तिसपीछे भीष्मजीने मृत्युके समान कोठनता से आर्ध्र होनेवाले वाण को तरकससे खेचकर चढ़ाया, उसवज्रअस्त्रसे युक्त चक्रकोभी काटनेवाले वाणको देवता गन्धर्व पिशाच सर्प और राक्षसों ने देखा वहवाण अग्निके समान प्रकाशित और महावज्रके समान ज्वलित श्वेतके कवचको काटकर उसकी नाभिमें ऐसे समागया जैसे अस्तगतहोता हुआ सूर्य शीघ्रही अपने प्रकाश को लेकर चलाजाताहै इस रीतिसे वह वाण श्वेत के जीवन को लेकरगया हमने इस प्रकारसे युद्ध में उस नरोत्तम को भीष्मजी के हाथ से मराहुआ पृथ्वीपर गिरताहुआ ऐसादेखा जैसे

the advance of general Bhishm, Bhishm wounded him with sixty arrows. But your father Devabrat checked the advances of Abhimanyu and others with his arrows and wounded Shwet with three of his dreadful darts having hidden joints. 103. He checked and wounded Satwik with a hundred arrows, Dhrishtadyumna with twenty, Kalaya with five and all the other kings with numerous arrows. When he had thus checked them all, he rushed upon Shwet and out of his quiver he put on his bow an unerring and fatal arrow. The gods, gandharvas, pisachas, serpents and rakshases saw that arrow united with Brahmastra, fit to pierce vajra itself. That arrow, luminous like fire and burning like the great vajra, pierced the armour of Shwet and entered his navel, and as the setting sun takes with him his own light, it took away the life out of Shwet. We saw that host of men killed in the field of battle by Bhishm and fallen

विशत्या कैकेयचापिपंचभिः । तांश्चमर्चान्महेष्वासान् पितादेवग्रतस्तव ॥ १० ॥ चारयित्वा  
 शरैर्घोरैः श्वेतमेवाभ्यदुधे । ततः शरंमृत्युसमे भारसाधनमुत्तमम् ॥ ११ ॥ विकृष्यल  
 वान्भीष्मं समघचकुरासदम् । ब्रह्मास्त्रेणसु संयुक्तं तं शरंलोमवाहिनम् ॥ १२ ॥ दृष्ट्वा  
 देवगंधर्वाः पिशाचो रगराक्षसाः । सतस्य कवचंभित्वा हृदयचामिताजसः ॥ १३ ॥  
 जगाम घर्षणीवाणो महाशोनिरिवज्जलन् । अस्तं गच्छन्ध्यादित्यः प्रभामादायसत्वरः  
 ॥ १४ ॥ पंचजीवितं मादाय श्वेतदेहाज्जगामह । तंभीष्मेणतरुव्याघ्रं तथा धिनिहतंयुधि  
 ॥ १५ ॥ प्रतप्तंनपदयामागरे गुंगमित्रच्युतम् । अशोचन्पीडवास्तत्र क्षत्रियाश्च  
 महारथाः ॥ १६ ॥ प्रहृष्टाश्च सुतास्तुभ्यं कुरवंश्चापि सर्वशः । ततो दुःशासनोराजन्  
 श्वेतंदृष्ट्वानिपातितम् ॥ १७ ॥ यादत्र निनर्दधौ रैर्नृपयतिस्मसमेततः । तस्मिन् हते  
 महेष्वासे भीष्मेणाहवशोभिना ॥ १८ ॥ प्रावेपेतमहेष्वासाः शिखाण्ड प्रमुधारथाः ।  
 ततो घर्षजयो राजन् चाप्येवश्चापि सर्वशः ॥ १९ ॥ अवहारे शमेश्चकुर्मिहतेवाहिनीपते ।  
 ततोवहारः सैन्यानां तवतेषां च भारत ॥ २० ॥ तावकानां परोषां च नर्दतांच मुहुर्मुहुः ।  
 पार्था विमनसोसृष्ट्वा श्ववर्तेतुमहारथाः । धितयंतोवधं घोरं हिरणेन परतपाः ॥ २१ ॥  
 इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवर्णनणि श्वेतवधे

अष्टाचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४८ ॥

पर्वतसे गिरता हुआ शिखरहोता है उस स्थान में पाण्डव आदि जो महारथी  
 थे वह सब उसे देखकर युद्ध करने से थकहुए और आपके पुत्रों समेत सब कौरव  
 प्रसन्न हुए, तदनन्तर हे राजा दुःशासन स्वतःको गिराहुआ देखकर, बड़े बड़े  
 वार्जोसे घोर शस्त्रों को करके चारों ओरको घूमने लगा युद्धमें शोभा पाने वाले  
 भीष्मजी के हाथसे उस बड़े धनुषधारी के मरनेपर शिखण्डी आदि रथी अत्यन्त  
 कम्पायमान हुए हे राजा इस सेनापतिके मरनेपर अर्जुन और श्रीकृष्णजी नेभी  
 सब रीतियों से धीरे धीरे युद्धका विश्राम किया, तदनन्तर आपके पुत्रों के और  
 पांडवों के गर्जने और प्रसन्न होनेपर दोनों सेनाओंका विश्राम हुआ, हे शत्रु  
 सन्तापी धृतराष्ट्र महारथी पाण्डव कौरवों के घोर मरणको शोचते उदास मन  
 होकर स्थित हुए ॥ २१ ॥

like a mountain peak. 116. The Pandavas and other warriors present  
 there stopped fighting at the horrible sight to the joy of the Kaurav-  
 as and your sons. Seeing the fall of Shwet, Dushasan caused a  
 tremendous noise to be made from the musical instruments and  
 turned round and round. Shikhandi and other warriors shook with  
 fear when that great archer was killed by glorious Bhishm and at  
 the death of that commander of the army Shree Krishna and Arjun  
 gradually caused the fighting to cease and the two armies retired.  
 mid roars of your sons and those of the Pandavas. The Pandava  
 warriors returned with heavy hearts, devising the destruction of the  
 Kauravas." 121.

वृतराष्ट्र उवाच । श्वेतसेना पतौतात संग्रामे निहतपरै । किमकुर्वन् महेश्यासा  
 पांचाला पाडवै सह ॥ १ ॥ सेनापतिं सम वर्ण्यं श्वेत युधि निपातितम् । तदर्थं यतता  
 चापि परेषां प्रपलायनाम् ॥ २ ॥ मा प्रीणाति मेवाक्यं जयं सजयं गृणवत ।  
 प्रत्युपायं चिंतयत सज्जना प्रसवतिमे ॥ ३ ॥ सहिषीरो नुरक्तश्च वृक्षं कुरुपतिस्तदा ।  
 हतवै सदातेन पितु पुत्रेण धीमता ॥ ४ ॥ तस्योद्वेगं मयाचापि सञ्चितं पाडवान्  
 पुरा । सर्वे बलपरित्यज्य दुर्गं सञ्चि यत्तथा ॥ ५ ॥ पाडवानां प्रतापेन दुर्गदेश  
 निवेश्य च । सपत्नान् सततवाघघातयन्ति मनुष्यैः ॥ ६ ॥ आश्चर्यं वै सदा तेषां  
 पुराराज्ञा सुदुर्मति । ततो युधिष्ठिरमकं कथं सजयं सूदितं ॥ ७ ॥ प्रसिद्धं समत  
 क्षुद्रं पुष्पमपुरपाधम । गुरुं रोचयेद्भीष्मो नचाचाय कथञ्चन ॥ ८ ॥ नरूपो  
 न च गाधारी नाहं सजयरोचय । न वासुदेवा वाष्पेयो धर्मराजश्च पाडव ॥ ९ ॥

अध्याय ॥ ४१ ॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे तात युद्ध में दूसरों के हाथ से श्वेत सेनापति के मरने पर  
 पांचालों ने पाडवों के साथ क्या किया, हे सजय युद्ध में गिराये हुए सेनापति श्वेत  
 को और उसके लिये उपाय करनेवाले वा अहंकार करनेवाले दूसरों को भी विजय  
 करने के बन्धनों को मुनकर मेरा चिन्त मसन्न होता है और मानसी पापों को भी  
 विचारता हुआ मेरा मन लज्जा युक्त नहीं होता है । ३ । हे सजय पाण्डव लोग  
 विराट के घर में जाके बड़े सुख पूर्वक रहिये उस विराट के दोनों पुत्रों को युद्ध में  
 मरवा डाला इससे उनको कुछ लज्जा भी आई या नहीं आई अब हमारे विचार को  
 तुमसत्य सत्यमनो कि अब महा अनर्थकामूल उत्पन्न हुआ कि इसी श्वेतके मरने के  
 हेतु पार्थ और भीमसेन महा क्रोध में होकर अनेक धीरों को मारकर इस पृथ्वी को  
 रुधिर से भर देंगे देखो इस दुर्योधन को हमने गाधारी ने श्रीकृष्णजी ने और कृपा  
 चार्य भीष्मजी द्रोण, राम, विदुर, व्यास इत्यादि अनेक गुरुदृष्टिभिर्ज्ञो ने समझाया

## CHAPTER XLIX

‘What did the Panchals and the Pandavas do’ asked Dhritrashtra of Sanjaya ‘when Shwet the commander of the armies was slain? I like to hear of the fall of Shwet of his allies and his proud conquerors. I am not ashamed of my own mental sins. How were the Pandavas, who had once taken refuge in the house of King Vunt, effected by the death of his two sons within their very sight. Methinks truly we have exposed ourselves to greater danger, for enraged at the death of Shwet Arjun and Bhim will fill the earth with blood. I myself, as well as Gandhari, Shri Krishna, Kripachar, Bhishm,



नमोमोतार्जुनश्चैव नयमौपुष्यपमौ । धार्यमाणो मयानित्यं गांधार्याविदुरेणच ॥१०॥  
 जामदग्नयेन रामेण व्यासेनच महात्मना । दुर्योधनोयुध्यमानो नित्यमेवाहं संजय ॥११॥  
 कर्णस्य मतमास्थाय सौवल्लभ्यच पापकृत् । दुःशासनस्यच तथा पांडवाग्रान्य  
 चिंतयत् ॥१२॥ तद्व्याहं व्यसन धीरं मन्येप्राप्तंतु सजय । श्वेतस्य च धिना  
 शेन भीष्मस्य विजयेनच ॥१३॥ संकुब्धः कृष्णसहितः पार्थः किमकरोद्युध ।  
 अर्जुनाच्च भयंभूयस्तन्मे तातनशम्यति ॥१४॥ सहि शूरश्च कौंतेयः क्षिप्रकारीध  
 नंजयः । मन्येशरैः शरीराणि शत्रूणां प्रमथिष्यति ॥१५॥ पेंद्रिमिद्रानुज समं-  
 हेंद्र शस्त्रे बले । अमोघ क्रोध सकृपं दृष्ट्वावः किमभून्मनः ॥१६॥ तथैव नेद  
 विच्छूरो ज्वलनाकंसमयतिः । इन्द्रास्त्रावदमेयात्मा प्रपतन्सामितिंजयः ॥१७॥ यत्र

पान्तु इस निर्बुद्धिने किसीकाभीकहना नहींमाना औरसंस्पर्षाड्यों केभी मनमें परस्पर  
 स्नेह रखने कीही इच्छाथी तौभी दुर्योधन ने इउकरके इससंश्रामको रचा देखिये  
 अब ईश्वर क्या करता है हे संजय वह पापकर्मो दुर्योधन कर्ण और शकुनि के मन  
 में नियत होकर दुःशासन का साथी बनके पांडवों की निन्दा करने लगा । १२ ।  
 मैं उसका फल उसके धीर दुःखका होना अवश्य वर्चमान देखताहूं श्वेत के नाश  
 होने से महा क्रोध रूप होकर अर्जुनने भीष्मजी के विजय करनेके हेतु श्रीकृष्णजी  
 से क्या विचार किया अर्जुनही से पुष्पको बड़ा भयहै हे तात वह मेराभय दूरनहीं  
 होताहै; वह संसारके सवपदार्थोंका विजय करने वाला कुन्ती का पुत्र अर्जुन अत्यन्त  
 हस्तलाघव करनेवाला प्रतापी शूर है मैं निश्चय जानता हूं कि वह बाणों से शत्रुओं  
 के शरीरों को मर्दन करेगा । १५ । उस इन्द्रके पुत्र और इन्द्रके छोटे भाईके बरा  
 बर युद्धमें बिष्णु के समान क्रोध और संकल्प में सफल बलि अर्जुनको देखकर  
 तुमसब लोगोंका कैसा चित्त होता है, वह शूरवीर वेदज्ञ और प्रतापमें सूर्य और  
 अग्निके समान इन्द्रके अश्वों का ज्ञाता बड़ा बुद्धिमान युद्धमें कुशल महा विजयी

ably, but Duryodhan would not consent to anything but war. Let us see how God disposes. This sinful Duryodhan, O Sanjaya, acted upon the advice of Karan, Shakuni and Dushasan and made enemies of the Pandavas. 12. I fore see that as a result of this he will come to grief. Arjun and Shree Krishna will put their heads together to devise some plan for killing Bhishm because he has killed Shwet. I am very much afraid of Arjun and cannot shake off this feeling. Kunti's son, Arjun the world conquerer is a warrior of great prowess and dexterity of hand. I believe he will pierce the bodies of his enemies with his sharp arrows. 15. How do all of you feel at the sight of Arjun the son of India and of equal prowess to Vishnu the younger brother of Indra. That brave man, scholar of the Vedas, glorious like the sun or Agni, skilful in using the weapons of Indra, very

संस्पर्शरूपाणामस्त्राणांच प्रयोजकः । सखद्गाक्षेप हस्तस्तु धीर्य चक्रेमहारथाः ॥१८॥  
 ससंजय महाप्राज्ञो हुषदस्यात्मजोबली । धृष्टद्युम्नः किनकरोच्छ्रये ते युधि तिपातिते  
 ॥ १९ ॥ पुराचैवापराधेन चधेनचचमूषतेः । अन्येभ्यः प्रजज्वाल पांडवानां हात्मनाम्  
 ॥ २० ॥ तेषां क्रोधं चित्तमस्तु शङ्खसुचानिशासुच । नशांति मधिगच्छामिदुर्यो  
 धनकृतेनहि । कथंचाभून्महायुद्धं सर्वमाचक्ष्व संजय ॥ २१ ॥ संजय उवाच ।  
 गृणुराजन् स्थिरोभूषा तयापनयनो महान् । नचदुर्योधने दोष मिममाधातुमर्हसि  
 ॥ २२ ॥ गतोदकेसेतुघ्नो या दत्तादृङ्मतिस्तव । संदीप्तेभ्यनेयद्रक्षूपस्यघ्ननं  
 तथा ॥ २३ ॥ गतपूर्वाह्ण भूयिष्ठे त्विमज्जहनि दारुणेः । तावकानां परेषांच पुनर्बुद्ध  
 मयर्तत ॥ २४ ॥ श्वेतैस्तु निहतैर्दृष्ट्या त्वरादस्यचमूषति । कृतवर्मणाञ्च सहितैर्दृष्ट्वा

बुद्ध करने को उपस्थित, जो वह कुन्तीका पुत्र महारथी वज्रके समान स्पर्श वाला  
 अनेकरूप वा अस्त्रोंको शत्रुओं के ऊपर जलाने वाला है, हे संजय उसदुपद के  
 पुत्र बड़े ज्ञानी बलवान्, धृष्टद्युम्न ने युद्धमें श्वेतके मरनेपर क्या किया, पूर्व समय  
 के अपराधों से और श्वेतके मारेजाने से मैं मानताहूँ कि महात्मा पांडवों का  
 हृदयक्रोध से अग्निरूप होगया । २० । मैं रात्रिदिन उनके क्रोधों को शोचता  
 हुआ दुर्योधनके कारण शान्ती को नहीं पाताहूँ, इसके सिवाय यह बड़ाभारी युद्ध  
 कैसे हुआ हे संजय उस सबको मुझ से कहो । २१ । संजय बोले हेराजा स्थिर चित्त  
 होकर सुनो कि इसमें आपकाही बड़ा भारी अन्याय है-यहदोष आप को दुर्योधन  
 में लगाना योग्य नहीं है जैसेविना जलके नदी में पुन और अग्निसे जलते हुए  
 घरमें पानी के निमित्त कुएंका खोदना निरर्थक है, उसी प्रकारकी आपकी बुद्धि  
 है, हे भरतवंशी दिन के तीसरे भाग में भीष्मजी के हाथ से श्वेत सेनापति  
 के मरजाने पर, कृतवर्मा के साथ शल्य को नियत देखकर शत्रुकी सेनाको  
 मारने वाला युद्ध में विजयरूपी कीर्ति वाला विराटका पुत्र शंखनाम शीघ्रही ऐसा

wise in battle, conquerer of wars, ready to fight, hard to touch like  
 vajra, uses different sorts of weapons. What did brave and wise  
 Dhrishtadyumna, the son of Drupad, do at the death of Shwet! With  
 the former wrongs and the death of Shwet, I believe that the Pandavas  
 must be enraged like fire. I donot find peace of mind and constantly  
 fear for Duryodhan. Tell me how this great war is going on, San-  
 Jaya!" 21 "Hear me, king, attentively," said Sanjaya, "the main  
 fault lies in you. It is useless to attribute it to Duryodhan, for your  
 wisdom is as vain as a bridge over a waterless place or digging a well  
 when a house is on fire. In the third quarter of the day, when Shwet  
 the commander had been slain by Bhishm, seeing Shalya stationed  
 with Kirtvarma, Shishu the son of Virat, destroyer of foes and con-  
 querer in battle, was enraged like blazing fire when libation is poured

शल्यमवस्थितम् ॥ २५ ॥ शंस क्रोधात्प्रज्ज्वाल हविषाहव्यवदिव । रुत्रिष्ठा  
यमहचारं शक्रचापोवमला ॥ २६ ॥ अभ्यधावज्जिघासन् शल्यमद्राधिपयुधि ।  
महतारणसेधेन समंतात् पारिच्छित ॥ २७ ॥ वृजन्वाण मय वर्षं प्रायच्छ-वरथ  
प्रति । दम्भापततसंभ्रम्य मत्तवारण विक्रमम् ॥ २८ ॥ तावकानारथा सप्तसम  
तात्पर्यवारयन् । मद्राज परीक्षितो मृत्योर्दृष्टांतरगतम् ॥ २९ ॥ वृद्धद्वलक्षकांस  
व्योजयत्सेनश्च मागध । तथादक्वमरधोर जन्पुन शल्यस्यमानित ॥ ३० ॥ विद्वान्  
विदाचारैर्यौ कांयोजश्च सुदाक्ष्ण । वृहत्क्षत्रस्यदाय द सैवयश्च जयद्रथ ॥ ३१ ॥

क्रोधरूप होगया जैसे कि हम्य से अग्निकी प्रचण्डता होती है वह वसमान् शंस  
इन्द्रधनुष के समान बड़े धनुष को टंकारकर मद्रदेश के राजा के मारने की इच्छा  
से चारों ओरको बड़े रथों से रक्षित होकर सम्मुख दौड़ा । २७ । आरं बड़े वारणों  
की वर्षा करता हुआ शल्य के रथके समीप आया उस मनवाले शयी के समान  
पराक्रमी शक्रको आताहुआ टेसकर मृत्युके मुख में फंसे हुए राजा मद्रकी रक्षाकरने  
के लिये तुम्हारे पुत्रों के साथ इन रथियों ने उसको चारों ओर से रोका कौशल  
वृद्धद्वल जयत्सेन मागध उसी प्रकार शल्यका पुत्र रुक्मरथ बिंद अनुविन्द और  
आवन्तिका के राजालोग सुदाक्षिण कांयोज वृहच्छत्रका पुत्र जयद्रथ सिंधुका राजा  
इन सब लोगों के धनुष नानाप्रकारकी धातुओं से जड़ित ऐसे दृष्टि पड़े जैसे कि  
बादलों में बिजली दिखाई देती है, उन वीरों ने बाणरूप वर्षा शंस के मस्तक पर  
ऐसी की जैसे कि वर्षाऋतु में वायु से प्रकट बादल आकाशी जलको बरसाते हैं,  
इसके पीछे बड़ा धनुषधारी सेनापति शंस महाक्रोधित होकर उन लोगों के धनुषों  
को अपने सातभन्नों से काटकर महा ध्वनि से गर्जा, तदनन्तर महाराहु भीष्मजी  
बादल के समान गर्जते तालटल के समान धनुष को लेकर उसयुद्ध में शल्य के  
सम्मुख दौड़े, उस बड़े धनुषधारी महाबली को उदयरूप देखकर पांडवों की सेना

over it, and twanging his bow which was like that of Indra, he  
rushed upon Shalya, accompanied with many charioteers, in order  
to kill him 21 He approached the chariot of Shalya, showering  
arrows Seeing Shankh coming like a mad elephant and desiring to  
rescue Shalya from the jaws of death, your sons checked his advance  
with the assistance of Kāsala, Vrihadval, Jayatsen, Magadh, Rukm  
rath the son of Shalya, Vinḍ, Anavind, the princes of Avantī,  
Sudakshin, Camboj, Jayadrath the son of Vrihadrastra and the king  
of Sindhū The bows of all these warriors, decked with various  
metals, looked like lightning in the midst of clouds They showered  
their arrows over the head of Shankh Then the archer Shankh, the  
commander of armies, cutting the bows of all those warriors with  
seven of his darts, roared a loud roar Then Bhishm of great arms,

रथाचूर्णं मुत्पतन्तिपतत्रिणः । यैन्तरिक्षं भूमिश्च सर्वतः समवस्तृता ॥ ४१ ॥  
 पञ्चालानथ मत्स्यांश्च केकयांश्चप्रभद्रकान् । भीष्मः प्रहरतांश्रेष्ठः पानयामासपत्रिभिः  
 ॥ ४२ ॥ उत्सृज्यसमरे राजन् पाण्डवंसस्य सगुचनम् । अग्नयद्रथतपांचाल्यं दुपदमेन  
 यावृतम् ॥ ४३ ॥ प्रियंसंबंविन राजन् शरानवाकरन्बहून् । अग्निनेयप्रदधानियना  
 निशि शिरात्यये ॥ ४४ ॥ शरदग्धान्यदृश्यत सैन्यातदुपदस्यह । अग्नयतिष्ठद्रुणेभीमांवि  
 धमद्वयपाचकः ॥ ४५ ॥ मध्याह्ने यथा दित्यं तपतमिवतेजसा । नरोक्षुपाण्डवेपस्य  
 योधाभीमानरीक्षितुम् ॥ ४६ ॥ वीहांचक्रुः समंतात्तेपाण्डवाभयपीडिताः । आतारंता  
 भ्यगच्छन्तगावःशतादिताम्र्य ॥ ४७ ॥ सातुयौधेष्ठरीसेना गांगेयशरपीडिता ।  
 सिंहेनचविनिमिश्रानुपलगागुरिचगोपतेः ॥ ४८ ॥ हनोचप्रदुर्नेसम्ये निरुसादेविमदिते ।  
 हाहाकारोमहानासीत् पांडुसैन्येषुभारत ॥ ४९ ॥ ततोभीमाःशान्तनवो नित्यमंडल  
 कामुकः । सुमोक्षयाणान् दीप्ताग्रानहोनासींचपानिव ॥ ५० ॥ शरैरेकायनीकुर्वन् दिशः  
 सद्योपतप्रतः । जवानपाण्डवरथानादिदयाद्वयभारत ॥ ५१ ॥ ततःसैन्येषु भग्नेषु

की सेना बाणों से भरमहुई दृष्टपड़ी और भीष्मजी अग्निके समान दिखाई दिये,  
 जैसेकि मध्याह्नके समय संतप्त करनेवाले महामचण्ड सूर्य के देखने को लोग अस  
 मर्थ होते हैं उसी प्रकार पाण्डवों के युद्ध में भीष्मजी के देखने को कोई समर्थ नहीं  
 हुआ । ४६ । पाण्डव लोगों की सेना भयसे पीड़ित होकर चारों ओर को अपना  
 कोई रक्षक ऐसे नहीं देखती थी जैसेकि जाड़े से दुःखी गौएं अपना कहीं रक्षक  
 नहीं देखती, हे राजा फिर वह युधिष्ठिरकी सेना भीष्मजी के बाणों से ऐसी पीड़ा  
 मान हुई जैसेकि निहसे भयभीत हुई श्वेत गौएं, हे भरतवंशी सेना के मरने भागजाने  
 सहस्र छोड़ने और मर्दन होनेपर पाण्डवों की सेना में बड़ा हाहाकार हुआ, फिर  
 सदैव मण्डलरूपी घनूपधारी भीष्मजी ने विषमें बुझेहुये सर्प के समान तक्षिणबाणों  
 को छोड़कर अपने बाणों से सब ओरकी सफाई करके राधियों को तिष्ठतिष्ठ शब्द  
 करके मारा, जब सेनाके इधर उधर भागने और मर्दन होने वा सूर्यके अस्त होनेपर

dearly loved brother-in-law Drupad as fire does in a dry wood in summer. Drupad's army seemed consumed by the arrows of Bhishma who looked like fire. No warrior of the Pandavas could look Bhishma in the face like the noonday sun. 46. The army of the Pandavas, shaking with fear, could find no one to protect them on all sides and was distressed like cows in winter. The army of Yudhishthir was so distressed by Bhishma's arrows as cows are by a lion. With the death, flight, terror and destruction in the Pandav army there arose a terrible cry of distress. Bhishma, circling his bow and discharging his arrows like poisonous serpents, destroyed many warriors, saying 'stay, stay!' At the set of sun nothing was discernible except des-

नानाधातु विचित्राणि कामुकाणि महात्मनाम् । विस्फारितान्य हृद्यततोयदोष्पवि-  
 पुत ॥ ३२ ॥ तेषुचाणमरं चरं शंखम् धिन्-यपातयन् । निदाघातं नलोद्गतामेघा  
 ह्यनगेजलम् ॥ ३३ ॥ ततःकुदोमहेष्वाखः सप्तमहै सुनेजनै । धनुर्पतेप माच्छि  
 चननर्पूगनापातः । ३४ ॥ ततोभीष्मोमह बाहुर्विनयजलदेयया । तालैमात्रधनुर्  
 ह्यशयमभ्यद्रवद्रणे ॥ ३५ ॥ तनुद्यंत मुदोदयाधमहेष्वातं मह यलम् । सत्रस्तापां  
 ढवीसेनापातधेगहतेवनौ ॥ ३६ ॥ ततार्जुन सखात्तः शंखश्चासात्पुरःसरः ।  
 भीष्माद्रस्योपमयेति ततोयुद्धमवर्तत ॥ ३७ ॥ हाहाकारोमहानासीघोधानांमुषिपु-  
 ष्यताम् । सेजस्तेज सिलपूकं मरयेषं यस्मययु ॥ ३८ ॥ मयशस्योगदापाण  
 रयतीर्यमहारथान् । शंखस्य चतुरावाहानहनद्भरतपम ॥ ३९ ॥ सहताभ्यद्राक्षर्ण  
 रगगादाय विभुनः । योमरसोश्चरथं प्राप्यपुनः शांतिमविंदत ॥ ४० ॥ ततोभीष्म

ऐसी भयभीत हुई जैसेकि वायु के वेग से टक्कर खाई हुई नौका डामा डोल होती है,  
 उस युद्ध में अर्जुन भी यह शोचकर शंख के आगे चलने वाला हुआ कि अब यह  
 भीष्मजी से रक्षा करने के योग्य है युद्ध में लड़ने वाले युद्धकर्त्ताओं का बड़ा  
 हाहाकार हुआ । ३८ । तदनन्तर गदाधारी शल्य ने बड़े रथ से उतरकर शंख के  
 चारों घोड़ों को मारा वह भृत्यक घोड़ों के रथ से शीघ्र ही उतरकर खड्ग लेकर दौड़ा  
 और अर्जुन के रथ को पाकर फिर शान्त होगया इसके अनन्तर भीष्मजी के रथ से  
 शीघ्र ही बाण ऐसे उछलने लगे जिनसे पृथ्वी और आकाश व्याप्त होगये । ४१ ।  
 प्रहार करनेवालों में श्रेष्ठ भीष्मजी ने बाणों से पांचाल, मत्स्य, केरल और मभद्रक  
 नाम अनेक वीरों को गिराया । ४२ । हे राजा भीष्मजी युद्ध में अर्जुन को छोड़कर  
 सेना समेत बहुत बाणों को फेंकते हुए अपने प्यारे-समधी द्रुपद के सम्मुख ऐसे  
 दौड़े जैसेकि चैत्र वैशाख के महीने में वनका जलाने वाला अग्नि दौड़ता है द्रुपद

thundering like clouds, rushed upon Shangk with his bow like the  
 palm tree Seeing the great archer come forth, the Pandava army  
 shook with fear like a boat in a storm of wind. Arjun came between  
 Shangk and Bhishm to protect the former from the latter, and the  
 warriors shouted loudly 38. Then Shalya the Learner of mace,  
 coming down from his huge chariot, killed the four horses of Shangk's  
 chariot Shangk jumped, sword in hand, from his horseless chariot  
 and found shelter in Arjun's chariot. Then there came out a shower  
 of arrows from the chariot of Bhishm, covering the heaven and earth  
 41. Bhishm the best of warriors killed with his arrows many a  
 warlike man of Panchal, Matsya, Keral and Prabhadrak armies. 42.  
 Bhishm, accompanied by his army, left Arjun and rushed upon his

रथात्तूर्णं सुत्पतन्ति गताग्निः । यैरन्तरिक्षं भूमिश्च सर्वतः समवस्तृता ॥ ४१ ॥  
 पञ्चालानथ मरुतोश्च केकयाश्च प्रभद्रकान् । भीष्मः प्रहरतांश्रेष्ठः पानयामास पत्रिभिः  
 ॥ ४२ ॥ उत्सृज्य समरे राजन् पाण्डवं सस्य सगुचनम् । अश्वयद्रवत पांचाल्यं द्रुपदसेन  
 यावृत्तम् ॥ ४३ ॥ प्रियं संबंधिनं राजन् शरानवाकरन्वहून् । अग्निनेव प्रदग्धानिघना  
 निशि शिरास्थये ॥ ४४ ॥ शरदग्धान् दृश्यत मेन्यान् द्रुपदस्य ह । अत्यतिप्रदग्ने भीमो वि  
 घ्नमद्वयपायकः ॥ ४५ ॥ मध्याह्ने यथा दित्यं तपतमिव तेजसा । नरोक्षु पाण्डवेष्वस्य  
 योधा भीमानरक्षितुम् ॥ ४६ ॥ यस्मिन् चक्रुः समं तात्ते पाण्डवा भयपीडिताः । आतारं ना  
 भ्यगच्छन्त गावः शतादिता इव ॥ ४७ ॥ सातु यौधेयिष्ठरीसेना गांगेयशरपीडिता ।  
 सिंहेन च विनिभिन्ना नुक्लगागारिच गोपतेः ॥ ४८ ॥ हृत्वा च प्रदुते सैन्ये निरुत्साहे विमर्दिता ।  
 हाहाकारो महानासीत् पाण्डुसैन्येषु भारत ॥ ४९ ॥ ततो भीष्मशान्तनवो निर्यमं बल  
 कामुकः । सुमोक्षयाणान् दीप्ताग्निनाहीनाशी विघ्नय ॥ ५० ॥ शरैरेकायनी कुर्वन् दिशः  
 सघोषतमतः । जयानपांडवयानादिदृशा दृश्य भारत ॥ ५१ ॥ ततः सैन्येषु भग्नेषु

की सेना बाणों से भरभरुई टपटपी और भीष्मजी अग्निके समान दिखाई दिये,  
 जैसेकि मध्याह्नके समय संतप्त करनेवाले महाम्बरणद सूर्य के देखने को लोग अस  
 मर्थ होते हैं उसी प्रकार पाण्डवों के युद्ध में भीष्मजी के देखने को कोई समर्थ नहीं  
 हुआ । ४६ । पाण्डव लोगों की सेना भयसे पीड़ित होकर चारों ओर को अपना  
 कोई रक्षक ऐसे नहीं देखती थी जैसेकि जाड़े से दुखी गौएं अपना कहीं रक्षक  
 नहीं देखती, हे राजा फिर वह युधिष्ठिरकी सेना भीष्मजी के बाणों से ऐसी पीड़ा  
 मान हुई जैसेकि सिंहसे भयभीत हुई खेत गौएं, हे भरतवंशी सेना के मरने भागजाने  
 सादस छोड़ने और मर्दन होनेपर पाण्डवों की सेना में बड़ा हाहाकार हुआ, फिर  
 सदैव मण्डलरूपी घनूषधारी भीष्मजी ने विषमें बुझेहुये सर्प के समान तीक्ष्णबाणों  
 को छोड़कर अपने बाणों से सब ओरकी सफाई करके राधियों को तिष्ठतिष्ठ शब्द  
 करके मारा, जब सेनाके इधर उधर भागने और मर्दन होने वा सूर्यके अस्त होनेपर

dearly loved brother-in-law Drupad as fire does in a dry wood in summer. Drupad's army seemed consumed by the arrows of Bhishma who looked like fire. No warrior of the Pandavas could look Bhishma in the face like the noonday sun. 46. The army of the Pandavas, shaking with fear, could find no one to protect them on all sides and was distressed like cows in winter. The army of Yudhishthir was so distressed by Bhishma's arrows as cows are by a lion. With the death, flight, terror and destruction in the Pandav army there arose a terrible cry of distress. Bhishma, circling his bow and discharging his arrows like poisonous serpents, destroyed many warriors, saying 'stay, stay!' At the set of sun nothing was discernible except des-

मथितेषुच सर्वेशः । प्राप्तंचास्त दिनकरेनप्राक्षायताकिंचन ॥ ५२ ॥ भीष्मंचसमुदीर्य  
त दृष्ट्वा पाथो हाहवे । अवहारममुर्धेत सैन्यानांमरतर्पम ॥ ५३ ॥ ॐ ॐ ॐ

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवपर्वणि शङ्खयुद्धे प्रथमदिवसःवहारे

एकौनचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४२ ॥

सञ्जय उवाच । कृतेऽवहारेसैन्यानां प्रथममरतर्पम । भीष्मेचयुद्धसंरम्भेदृष्ट्वा  
धनेतया ॥ १ ॥ धर्मराजस्ततस्तूर्णमाभिगम्य जनार्दनम् : प्रातुमि.साहृत सर्वं सर्वं  
क्षेत्रं जनेश्वरैः ॥ २ ॥ शुचापरमयापुर्काश्वतयानः पराजयम् । वार्ष्णेयमप्रचिद्राजन्तृष्ट्वा  
भीष्मस्य चिक्रमम् ॥ ३ ॥ कृष्ण पश्य महेष्वासं भीष्मं भीमपराक्रमम् । शङ्ख-  
दन्तसैन्यं मे भीष्मेकक्षमिवानलम् ॥ ४ ॥ कथमेन मर्हतामानं शङ्खपातः । प्रतिघोस  
मुम् । ले ललमानं सैन्यं मे हायमन्ते मिचानलम् ॥ ५ ॥ एतं हि पुरुषध्वाघ धनुर्मन्तं  
महयलम् । दृष्ट्वा विबुधैः सैन्यं समरे मर्गणाहतम् ॥ ६ ॥ शङ्खो जेतयमः

कुछ नहीं जाना गया तबतो पांडवों ने उस महायुद्ध में भीष्मजीका आग्नि वरसाता  
हुआ देवप्रकर सेनाका विश्राम किया ५३ ॥

अध्यायः ॥ ५० ॥

• सञ्जय बोले हे भरत वंशियों में श्रेष्ठ उस प्रथम दिन में सेना के यन्त्रियों के  
विश्राम करने और युद्ध में भीष्मजी के क्रोध रूप होने अथवा दुर्योधन के मसन  
होने पर, धर्मराज ने सब भाइयों और राजाओं सबेते जनार्दनजी के पास जाकर  
बड़े शोक युक्त होकर अपनी परजय को शीघ्र भीष्मजी के पराक्रमको देख कर  
श्रीकृष्णजी से कहा । ३ । कि हे श्रीकृष्णजी इसबड़े धनुषधारी भयानक पराक्रमी  
भीष्मजी को देखिये कि यह बाणों के मारे मेरी सेना को ऐसे भस्म किये डालते हैं  
जैसे कि ऊष्मन्तु में अग्नि वन और वन की मूखी घास को, हव्य भोजन करने  
वाले अग्नि के समान मेरी सेना को चाटने वाले इस महात्मा की ओर देखने को  
भी हम कैसे समर्थ होसके हैं, इसी धनुषधारी महाबली पुरुषोत्तम को देखकर  
बाणों से महाव्याकुल हमारी सब सेना इधर उधर को भाग गई, युद्धमें क्रोधाग्नि

fructious air and the Pandavas still seeing Bhishm showering  
his fiery arrows, ordered their armies to retire. 49.

## CHAPTER L

Sanjaya continued, "After the retreat of his army from before  
the enraged Bhishm and cheerful Duryodnan, Yudhishtir the just  
went with his brothers and kings to Janardan, and fearing defeat  
by the prowess of Bhishm, he said to Krishn. "Look at that dreadful  
archer Bhishm. With his arrows he consumes my army as fire does  
a dry forest in summer. How can we face that great man who con-  
sumes our armies as fire does the libations. Our soldiers run away  
at the sight of that great warrior. We may conquer angry Yammj.

कुक्षोवज्रपाणिश्चसंयुगे । वरुणःपाशभृद्वापि कुक्षेरोत्तागदाघरः ॥ ७ ॥ मनुभीष्मो  
महातेजाः शक्योजेतुमहाबलः । सोहमेधंगतेमग्नौ भीष्मागाधजलेऽप्युवे ॥ ८ ॥ आत्मनो  
बुद्धिर्दीर्घत्याद्भीष्मासाद्यकेशव । वनंयास्यामि घाष्ण्यश्रेयोमे तत्रजीवितुम् ॥ ९ ॥  
नवतान्पृथिवीं पालान् दातुंभीष्मायमृत्यवे । क्षपायिष्यतिसेनांमे कृष्णभीष्मोमहास्त्र  
चित् ॥ १० ॥ यथाऽनलंप्रज्वलितंपतंग समभिदुताः । विनाशायोपगच्छंति तथामे  
सैनिकोजनः ॥ ११ ॥ क्षयंतीतोस्मिन्वाष्ण्य राज्यहेतो पराक्रमी । आतरक्ष्यमेवीराः  
कर्षिता शरपीडिताः ॥ १२ ॥ मत्कृतेप्रातृहार्देनराज्याद्वप्रास्तथा सुखात् । जीवितं  
बहुमग्येहर्जयित्वापदुर्लभम् ॥ १३ ॥ जीवितस्यच शेषेण तपस्तपस्यामि दुस्करम् ।  
नघात यिष्यामि रणे मित्राणीमतिकेशव ॥ १४ ॥ रथान् मे बहुसाहस्रान् द्विधैरक्षै

रूप यमराज वा वज्रधारी इन्द्र वा पाशधारी वरुण या गदाधारी कुवेरको भी चाहें  
विजय करना संभव है परन्तु महाबाहु अति पराक्रमी भीष्मजी को विजय करना  
असंभव है । ७ । सो मैं ऐसी दशा में भीष्मरूपी अयाह जलमें बिना नौका के  
डूबा जाता हूं, हे श्रीकृष्णजी मैं अपनी बुद्धिकी निर्वलतासे भीष्मजी के सम्मुख  
होकर बनको चला जाऊंगा अथवा हे वृष्णिवंशी मेरे जीवन में कल्याण नहीं है,  
परन्तु इन राजाओं को भीष्मरूपी मृत्यु के वश करने को मैं योग्य नहीं हूं, हे श्री  
कृष्णजी महाबली भीष्मजी मेरी सेनाको नाश करडालेंगे जैसे कि पतंग ज्वलित  
अग्निकी ओर दौड़ते हुए अपने नाशके निमित्त जाते हैं इसी प्रकार मेरी सेनाके  
मनुष्य भीष्मजी की ओर को जाने वाले हैं । ११ । राज के निमित्त मैं पराक्रम  
करने वाला नाश होता हूं और मेरे वीरभाई लोगभी धार्यों में पीड़ित होकर महो  
दुर्वलांग हैं, वह मेरे कारण अथवा भाई विरादरी की शुभचिन्तकता के कारण अपने  
राज्य सुखों को त्यागने वालेहुए मैं जीवनको बहुत मानता हूं अब जीवनहोना कठिन  
मालूम होता है, दोप जीवन से तपस्या करूंगा हे केशवजी मैं युद्ध में इन मित्रों को

Indra the wielder of Vajra, Varun the bearer of noose or Kaver the wielder of mace; but to conquer braver Bhishm is impossible. I am about to be drowned in the bottomless ocean of Bhishm for want of a boat. Being unable to withstand Bhishm, I shall go away to live in forest; for I see no good in living here, Krishna! I donot like to give up these kings to be slaughtered by Bhishm. The great warrior, Bhishm will destroy my army. My men run into the jaws of death by going before Bhishm, like insects falling into fire 11. I shall die fighting for the sake of kingdom and my brave brothers are getting weaker in body with the wounds of the arrows. They have forsaken all pleasure for my sake and for the good of the kinsmen. It appears that I shall lose the life which I hold so dear. I intend practising penance during the rest of my life and shall no long-



महाबलः । घातयत्यनिशं भीष्मः प्रघराणां प्रहारेणाम् ॥ १५ ॥ किमुकुवाहितमे-  
 स्थाद्वाहि माघव माचिरम् । मध्यस्थ मिव पश्यामि समरे सन्ध्य साचनम् ॥ १६ ॥  
 एकोभीमः परंशक्त्या युध्यत्येव महाभुजः । केवलं बाहुदीर्घेण क्षत्रधर्ममनुस्मरन्  
 ॥ १७ ॥ गदयावीर घातिन्याययोत्साहं महामनाः । करोत्यनुकूलं कर्म रथाभ्यन्तरं  
 तिष्ठ ॥ १८ ॥ नालमेव क्षयं कर्तुं परसैन्यस्य मारिष । आर्जवेनैव युद्धेन घातयेत्  
 शतैरपि ॥ १९ ॥ एकोऽस्त्रावतसखातेऽयं सोप्यस्मान् समपेक्षते । निर्दह्यमानान्  
 भीष्मेण द्रोणेन च महात्मना ॥ २० ॥ दिव्यान्यस्त्राणि भीष्मस्य द्रोणस्य च  
 महात्मनः । घक्षयन्ति क्षत्रियान् सर्वान् प्रयुक्तानि पुनः पुनः ॥ २१ ॥ कृष्णभीष्मः  
 सुसंरक्ष्यः सहितः सर्वे पार्थिवैः । क्षपयिष्यात नो नूनं यादृशोत्पराक्रमः ॥ २२ ॥  
 सत्यं पश्य महाभाग योगेश्वरमहारथम् । भीष्मस्य शमयेत्संख्ये दावाग्निं जलदो

नहीं भरवाजंगा, महाबली भीष्मजी अपने दिव्य अस्त्रों से मेरे हजारों उत्तम शूरवीर  
 रथियों को बराबर मारते हैं । १५ । तो आप शीघ्रता से कृपाकरके बतलाइये कि  
 कैसे मेरा कल्याण हो मैं इस युद्ध में अर्जुनकोभी उदासीनके समान देखता हूँ, यह  
 महाबाहु अकेला भीमसेन क्षत्री धर्म को स्मरण करता केवल भुजा द्वारा बड़ी सा-  
 मर्थ्य से लड़ता है, यह बड़ा साहसी अपने साहस के अनुसार वीरोंकी मारने वाली  
 गदासे स्थगोदे हाथी और मनुष्यों के मध्य में कठिन कर्मको करता है, हे श्रेष्ठ वह  
 वीर सत्ययुद्ध के द्वारा वपोंमें भी शत्रुकी सेना के नाशकरने को समर्थ नहीं है, यह  
 आपका एक मित्र (अर्जुन) अस्त्रों का जाननेवाला है वहभी महात्मा द्रोणाचार्य और  
 भीष्मजी के हाथ से बराबर भस्मीभूत होता हुआ देखकर हम लोगोंको कुछ नहीं समझ-  
 ता है । २० । महात्माभीष्मजी और द्रोणाचार्य के यारम्बार चलायेहुये दिव्यअस्त्र  
 सब क्षत्रियोंको जलाते हैं, हे कृष्णजी निश्चयकर के क्रोधरूप भीष्मजी सब  
 राजाओं समेत हमको मारेंगे ऐसा इनका पराक्रम है, हे योगेश्वर तुम उसमहाभाग  
 महारथीको देखो और विचारो जो युद्धमें भीष्मजीको ऐसे शान्त करे जैसे बादल

or cause the destruction of my friend in battle. Brave Bhishm is  
 killing thousands of my warriors with his celestial weapons. 15. Pray  
 let me know without delay in what lies my welfare. This brave  
 Bhishm alone is firm on his duty and fights very diligently. He  
 performs very hard task with his warrior destroying mace in the  
 midst of chariots, elephants, horses and men; but by his own bravery  
 alone he cannot, even in course of years, destroy all the armies of the  
 enemy. Your friend Arjun alone knows how to use weapons, but  
 he does not care in the least to save us from being destroyed by  
 great Dronacharya and Bhishm. 20. The celestial weapons of Dro-  
 nacharya and Bhishm burn all the warriors again and again; the  
 enraged Bhishm will surely destroy us along with all the kings by  
 his matchless prowess. You Lord of yeg! know the warrior who can

यथा ॥ २३ ॥ त्वमसादागोविन्द पांडवा निहतद्विषः । स्वराज्य मनुसंप्राप्तमो-  
दिष्येने सर्वांधवाः ॥ २४ ॥ एवमुक्त्वा ततः पार्थो ध्यायन्नास्ते भहामनाः । चिरमर्तमं  
नाभूत्वा शोकोपहतचेतनः । शोकार्ततमघोषात्वा दुःखोपहतचेतसम् ॥ २५ ॥ अत्र  
वीरसगोविन्दो हर्षयन् सर्वं पांडवान् । माधुचोभरत श्रेष्ठ नत्वं शोचितुमर्हसि ॥ २६ ॥  
मस्यते आतरःशूराः सर्वलोकेषु घन्विनः । अहंचामियकृद्राजन् सात्यकिश्च महायशाः  
॥ २७ ॥ विराट्द्रुपदौचेमौ धृष्टद्युम्नश्च पार्यतः । तथैव सबलाश्रमे राजानो राज  
सत्तम ॥ २८ ॥ त्वत्प्रसादं प्रतीक्षते त्वद्भकाश्च विशांपते । पश्यते पार्यतो नित्यं हित  
कामःप्रियरेतः ॥ २९ ॥ सेनापत्य मनुपासो धृष्टद्युम्नो महाबलः । शिखंडीश्च  
महादाहो भीष्मस्य निधनं किल ॥ ३० ॥ एतच्छ्रुत्वा ततो धर्मो धृष्टद्युम्नमहारथम् ।  
अब्रवीत्सामिततैस्त्वां वासुदेवस्यवृषभतः ॥ ३१ ॥ धृष्टद्युम्ननिषेधेदं पत्न्यां वक्ष्यामि

दावानल अग्नि को, हे गोविन्दजी आपकी कृपासे पांडव शत्रुओंको नाशकर के  
अपने राज्य से मिलेहुए बांधवों समेत आनन्द करेंगे, तदनन्तर बड़ा साहसी युधि-  
ष्ठिर इस प्रकारकी बातें कहकर शोक से पीड़ित चिच देरतक मनको हृदय में  
नियत करके ध्यान करता हुआ बैठा । २५ । फिर गोविन्दजी पांडवों को दुःख  
शोक से पीड़ित और उदास रूप देखकर सब पांडवों को गसन्न करते हुये यह  
वचन बोले, हे भरतवंशियों में उत्तम तू शोच मतकर और तू शोच करनेके योग्य  
नहीं है क्योंकि तेरेभाई तो महा शूरवीर हैं और वह सब संसार में विख्यात हैं, हे  
राजा धर्म में और महावीर सात्विकी विराट् द्रुपद और धृष्टद्युम्न आपके पनोरथ  
पूर्ण करनेवाले हैं, हे राजेन्द्र युधिष्ठिर इसी प्रकार सब राजा लोगभी अपनी २  
सेना समेत तेरी प्रसन्नता कीई वांछदेखते हैं और आपके परमभक्त हैं । २९ ।  
सदैव भक्त ई चाहनेवाले आपके प्यारे प्रीतिमान मशरयी धृष्टद्युम्न ने सेनाध्यक्षी के  
अधिकारको पाया, निश्चयकरके यह महाबाहु शिखण्डी भीष्मका नाशकरनेवाला  
हे राजा युधिष्ठिर यह कृष्णके वचन को सुनकर उसी सभा में वासुदेवजी के

subdue Bhishma in little as rain does the flames of a forest. By your  
grace, Govind, the Pandavas can destroy their enemies and enjoy  
their kingdom with their kinsmen." Having said this, Yudhishtir  
of great prowess, distressed with grief, meditated a long while in  
silence. 25. Seeing the Pandavas full of distress and sorrow, Govind  
said, "Donot be grieved, best of the descendants of Bharat! Having  
such brave brothers of world wide renown you need not be anxious  
for your victory. You have, king, on your side Dharm, myself,  
brave Satwiki, Virat, Drupad and Dhrishtadyumna. The other  
kings, likewise, are solitous to please you, Prince Yudhishtir! 29.  
Your ever well wisher and dear friend Dhrishtadyumna is the com-  
mander of your armies! Surely, brave Shiklandi is the destroyer  
of Bhishma!" Having heard these words of Shree Krishna, Yudhishtir

मारिप । नातिक्रम्यं भवेत्तच्च वचनं ममभाषितम् ॥ ३२ ॥ भवान्सेनापतिर्मह्यं  
वासुदेवेन संमितः । कार्तिकेयो यथा नित्यं देवानाम् भवत्पुत्र ॥ ३३ ॥ तथात्वम्  
पिपाद्वानां सेनानां पुरुषर्षभ । सत्यं पुरुषशार्दूल विक्रम्य जाहि कौरवान् ॥ ३४ ॥  
अहं च तेनुयास्यामि भीमः कृष्णश्चमारिप । माद्रोपुत्रौ च साहती द्रौपदेयाश्च दंशिताः  
॥ ३५ ॥ ये चान्ये पृथिवीपालाः प्रधानाः पुरुषर्षभ । तत उद्धर्षयन् सर्वान् धृष्टद्युम्नोऽप्य  
भाषत ॥ ३६ ॥ अहद्रोणांतकः पार्थं विहितः शंभुनापुरा । रणे भीष्मं कृप द्रोणं तथा  
शल्यं जयद्रथम् ॥ ३७ ॥ सर्वानघरणे हतान् प्रतियोत्स्यामि पार्थिव । अथोत्कृष्टं  
महेष्तासैः पांडवैर्युद्धमुन्दैः ॥ ३८ ॥ समुद्यने पार्थिवेन्द्रे पार्यते शत्रुसूत्रे । तमग्रवी  
त्ततः पार्थः पार्यत पृतनापतिम् ॥ ३९ ॥ व्यूहः कौंचारुणो नाम सर्वशत्रु निवहण ।

आगे धृष्टद्युम्न से बोला कि हे धृष्टद्युम्न जो मैं आपसे कहता हूँ उसको अच्छी रीति  
से समझो वह मेरा वचन उल्लंघन करने के योग्य नहीं है आप वासुदेवजी के  
विचार से मेरी सेना के सेनापतिहो, पूर्वसमय में जैसे कार्तिकेय देवताओं की सेना  
के सेनापति हुये इसी प्रकार से आप पांडवों के सेनापतिहो हे पुरुषोत्तम तुम अपने  
पराक्रमको करके कौरवों को मारो और बड़भागी मैं व भीमसेन और श्रीकृष्णजी  
तेरे पीछे चलेंगे एक साथ दोनों नकुल और सहदेव और द्रौपदी के शत्रुघारी पुत्र  
और अन्य सब राजा लोगभी तुम्हारे साथ पीछे चलेंगे । ३६ । यह सुनकर धृष्ट  
द्युम्न सबको प्रसन्नकरके बोला कि हे राजा पहले समय में शिवजीकी ओर से मैं  
द्रोणाचार्य के नाश करनेवाला नियत हुआ था इसी हेतु से हे राजा अब मैं इस  
युद्ध में भीष्म, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, शल्य और जयद्रथ आदि सब अहंकारियों से  
अवश्य लड़ूंगा तदनन्तर शत्रुसंतापी धृष्टद्युम्न के अच्छी रीतिसे सन्नद्ध होनेपर  
युद्ध में आकर महादुर्मद और धनुषधारी पांडवों ने उच्चस्वर से शब्द किया,  
फिर युधिष्ठिर ने सेनापति धृष्टद्युम्न से कहा कि सब शत्रुओं का नाश करनेवाला

thir said to Dhrishtadyumna in the midst of that assembly and in  
the presence of Vasudev — "Hear Dhrishtadyumna what I say to  
you and attend to it carefully without fail You are the commander-  
in-chief of my armies as Vasudev says:—You are the commander of  
the Pandavas, armies as Karlikeya was of those of gods. Kill the  
Kauravas with your prowess and I as well as Bhishma and Krishna  
will follow you along with Nakul and Sahadev, the brave sons of  
Draupadi and other kings" 36 On hearing this, Dhrishtadyumna  
pleased the audience by the following reply — "I am born, O king,"  
said he, "to destroy Drona by the order of Shiva, and therefore, I  
shall face Bhishma, Drona, Kripa, Shalya, Jagadhrath and other proud  
warriors in the field of battle." When Dhrishtadyumna had made  
his preparations, he stood in the field of battle and the brave  
Pandavas raised a loud war cry. And Yudhishtir thus addressed

यद्वहस्पतिरिन्द्रायतदा देवास्तुर्वीत् ॥ ४० ॥ तयथावत्प्रतियूहं पराणीकविनाशनम् ।  
 अट्टपूर्वराजातः पश्यंतुकुरुभिः सह ॥ ४१ ॥ यथोक्तः सन्देहेन विष्णुर्वज्रभृता  
 यथा । प्रभाते सर्वे सैन्यानामग्रे चक्रे घनंजयम् ॥ ४२ ॥ आदित्यपयःकेतुस्तस्या  
 ह्युत्तमनोरमः । आसनात्पुरुद्वतस्यानर्मितो विश्वकर्मेणा ॥ ४३ ॥ इंद्रायुधसवर्णाभिः  
 पताकामिरलंकृतः । आकाशगद्गदाकाशे गंधर्व नगरोपमः ॥ ४४ ॥ नृत्यमान इवामा  
 तिरपचर्यांशुमारोप । तेनरत्न वतापार्थः सचर्मांडीय घन्वना ॥ ४५ ॥ वभूधपरमो  
 पेतः सुमेरु रिध मानुजा । शिरोमूढदुपदो राजा महत्या सेनया वृतः ॥ ४६ ॥ कुति  
 भोजय चैद्यश्च चक्षुर्मर्यातांजनेश्वरौ । दाशार्णकः प्रभद्राश्च दाशरकगणैः सह ॥ ४७ ॥  
 अनूपकाः किराताश्च ग्रीवायां भरतर्षभ । पटचरैश्च पौंड्रैश्च राजन् पौरवर्कस्तथा ॥ ४८ ॥

क्रौंचारुण नाम व्यूह जिसको देव दानवों के युद्धमें दृष्टापाति जीने देवेन्द्र से कहा  
 था उसी शत्रुहन्ता व्यूहको आप विधि के अनुसार रचो । ४१ । उस अपूर्व व्यूहको  
 राजाओं समेत कौरव लोग देखें घृष्ट्युम्न से राजा धर्मराज ने इस प्रकार से यह  
 वचन कहा जैसे कि वज्रधारी इन्द्रने विष्णुजी से कहाया, प्रातःकाल के होतेही  
 सब सेना के आगे अर्जुनको किया उससमय प्रकाशित और मनको प्रसन्न करने  
 वाली अपूर्व ध्वजा सूर्य के मार्ग में वर्तमान थी उस ध्वजा को इन्द्रकी आज्ञा  
 से विश्वकर्मा ने बनाया इन्द्र वज्रके समान पताकाओं से अलंकृत, आकाश  
 में गन्धर्व नगर के समान नियत थी हे राजा वह ध्वजा रथके भ्रमण करने  
 में नाचती हुई प्रकाशमान थी । ४५ । और वह युधिष्ठिर उस रत्नवान गांडीव  
 धनुषधारी श्रेष्ठ पुरुषके कारण ऐसा शोभित हुआ जैसे कि सुमेरु पर्वत  
 सूर्य से सुशोभित होता है हे राजा बड़ी सेना संयुक्त राजा द्रुपद तो किर  
 हुआ और कुन्तिभोज और चन्देल राजा आँखें हुये हे भरतर्षभ प्रभद्रक शार्नक  
 और अशीरक नाम समूहों के साथ अनूपक किरात ग्रीवा में वर्तमान हुआ । ४८ ।

Dhrishtadyumna the commander in chief:—"Array the armies in the Krauncharun array, explained to Indra by Vriha-pati in the war of the gods and danavas. 41. Let the Kaurava princes see the matchless array." These words were addressed to Dhrishtadyumna by Yudhishtir as they were done by Indra to Vishnu. Early in the morning Arjun led the army. The bright banner, cheering the heart, shone like the sun. It was made by Vishwakarma by Indra's order. It was decked with banners like Indra's vajra and stood in air like the city of Gaudharvas. It danced with the advance of chariots 45. Yudhishtir, in company with the best of men the bearer of Gandiv bow decked with jewels, looked glorious like Sumera with the sun shining upon. Of that array king Drupad with his army became the head; kings Kuntibhaja and Chandel were the eyes; Anupad the Kirat with the Parbhadras, the Sharnaks and the Ashiraks stood

निपादं सहितथापि पृष्ठमासीद्युधिष्ठिर । पत्नीतुर्ममसेनश्च धृष्टद्युम्नश्चपार्षत ॥४९॥  
 द्रौपदेयामभमन्युश्च सात्यकिश्च महारथ । पिशाचद रदाश्च पुन कुडीविपै सह ॥५०॥  
 माकता घेनकाश्चैव तगणा परतगणा । वालिकास्तत्तिराक्षैव षोढा पाण्ड्याश्च  
 भरत ॥ ५१ ॥ पतजनपदाराजन् दक्षिण पक्षमाधिता । अग्निवेश्यास्तु हुडाश्चमाल  
 यादानमारय ॥ ५२ ॥ दारराजन्मसाक्षैव चासाश्च सहवाकुलै । नकुल सहदेवश्च  
 चामपक्षसमाधिता ॥ ५३ ॥ स्थानामयुत पत्नी शिरस्तु नियुततथा । पृष्ठमधुदमेवासीत्  
 सहस्राणिच विशति ॥ ५४ ॥ ग्रीवाया नियुतचाप सहस्राणि च सप्तति । १३५  
 कटि प्रपक्षेषु पक्षातपुञ्च वारणा ॥ ५५ ॥ जम्बु पारवृता राजश्चलत इवपर्वता ।  
 जघन पालयामास पिगाट सहकैकयै ॥ ५६ ॥ काशिराजश्च शैम्यश्च स्थानामयुतै

और राजा युधिष्ठिर पटश्चर पोंडर और निपादों के साथ उसकीपीठ हुआ  
 और भीमसेन, पर्वत का पौत्र धृष्टद्युम्न द्रौपदी के पुत्र व अभिमन्यु औरमहारथी  
 सातिवही पक्षवने, और कुण्डी व ऋषियों समेत पिशाच दारद पौडू पवन, धेनुक  
 तगण परतगण वाल्हीक तित्तिर चोल पाण्ड्य इन देशोंके निवासी दक्षिणपक्ष में  
 नियत हुए, अग्निवेश्य गजतुण्ड मलद आश्कारव शवर कुम्भस मालुकोंसमेत वत्स  
 नकुल सहदेव यह सवगार्ये पक्ष में नियत हुए एक अर्जुन रथ पक्षमें रह और इसी  
 प्रकार रथोंका एक नियुत शिर हुआ और एक अर्जुन और बीसहजारकी पृष्ठहुई  
 और सत्तरहजार ग्रीवामें हुये । ५४ । हे राजा ऐसे पत्नी रूपी न्युहके आगे वा  
 पक्ष और पूंछके स्थानों पर चलनेवाले पर्वतोंके समान चारों ओरसे रत्ताकरते हुए  
 हाथी चले, राजा विराट न केकय लोगोंके साथ और काशीराज शैवीने तीनअयुत  
 रथोंके साथ जघन स्थानकी रत्ता करी हे राजा वह सब पांडव इसमकार से इस

in the place of neck 48 King Yudhishtir with the Poundras and  
 the Nishadas represented the back Bhimsen with the grandson of  
 Arshal (Dhrishtadyumna) the sons of Draupadi, and Abhimanyu  
 and bravo Satwila represented the wings. And Kundi with the  
 Ishachies, the Nishas, the Daridas, the Laundras, the Yavanas, the  
 Dhenuks the Tanganas the Partaugans, the Vahliks, the Tittirs, the  
 Cholns and the Landyas stood on the right wing, and the Agnivesh  
 yas the Gajatanudus the Maladis, the Ashkaravas, the Shabars,  
 the Kumharases and Nakul and Sahadev with the Malukas and the  
 Vatsas stood on the left. A thousand millions of chariot occupied  
 the wing, ten thousand occupied the head, a thousand millions and  
 twenty thousand occupied the back and seventy thousand stood on  
 the neck 51 Elephants moved all round, before, on the wings  
 and on the tail of that array to ming a bird King Virat with the  
 Kakayas and the Shris king of Karhi with thirty, thousand chariots  
 protect the hip and the loins Thus, O king, did the Pandavas

स्त्रिभिः । एवमेव महाव्यूहव्यूहभारत पांडवाः ॥ ५७ ॥ सूर्योदयतद्दृष्टतः शिवायुद्धा  
यदशिताः । तेषामादित्यवर्णानि विमलानि महोत्तम ॥ श्वेतच्छत्राण्य शोभन्  
धारणेयु र्येषुच ॥ ५८ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि कौचव्यूहनिर्माणे

पंचाशच्चमोऽध्यायः ॥ ५० ॥

संजय उवाच । कौचं दृष्ट्वा ततोऽप्यूह मभेद्यं तनयस्तव । रह्यमाणं महाघोरं  
पार्थनामिततेजसा ॥ १ ॥ आचार्यमुपसंगम्य कृपाशल्यं च पार्थिव । सौमदस्त्रि-  
विकणं च सोऽथ्ययामानमेव च ॥ २ ॥ दुःशासनदीन् भ्रातृन् सर्वानेव च भारत ।  
अन्यांश्च सुवहून् शूरान् युद्धाय समुपागतान् ॥ ३ ॥ ग्राह्यं दृष्ट्वा च न कालं हर्षयंत न  
यस्तव । नानाशस्त्र प्रहणा सर्वे युद्धावधारदाः ॥ ४ ॥ एकैकशः समर्था हि ययंसर्वे  
महारथाः । पांडुपुत्रान् रणे हंतुं तस्यैवान् किमु संहताः ॥ ५ ॥ अगर्वांत तदस्माकं यत्नं

यह उत्तमव्यूह को रचकर बड़ी राज धनके साथ शस्त्रों को धारण किये सूर्योदय  
को चाहते हुए युद्धके निमित्त नियत हुए, उन लोगोंके छत्रजो सूर्य वर्ण निर्मल  
और अत्यन्त श्वेतरूप थे वह हाथी और रथोंके ऊपर दिखाईदिये ॥ ५८ ॥

अध्याय ॥ ५१ ॥

संजयबोले हे श्रेष्ठभरतवंशी राजा धृतराष्ट्र इस के अनन्तर आपका बड़ा बेटा  
यह तेजस्वी पाण्डवोंके रचेहुए घोर और अभेद्यमहाव्यूहको देखकर आचार्य द्रोणा  
चार्यजी के पास जाकर कृपाचार्य राजाशल्य सोमदत्त विकर्ण अश्वत्थामा, दुःशा-  
सनआदि सबभाइयों और युद्धके निमित्त समीप आयेहुए अन्य बहुत से राजाओं  
को, समयपर प्रसन्नकरताहुआ यह बचनबोला कि तुम सबनानाप्रकारके शस्त्रधारि  
और अस्त्रों के अर्थ में पंडितहो, आप सबमहारथी एकाही युद्ध में पांडवों के मारने  
में समर्थहोतो साथियोंके मिले हुये होनेसे क्यों नहीं समर्थहोगे, हमारी सब सेना  
भूमिआदि की रक्षासे अजेय है और यह उनकी सेना भीमआदि से रक्षितपराजय

array their army and stood in great glory, armed with weapons, waiting for the sunrise. Their shining sunshades, pure white in colour, were seen above elephants and chariots." 59.

### CHAPTER LI

Sanjaya continued thus, addressing Dhritrashtra:— Seeing the dreadful and impregnable phalanx the glorious Pandavas, your eldest son went to Dronacharya and thus spoke out, cheering Kripacharya, King Salva, Somdatta, Vikarna, Ashwathama, Dushasan and other brothers and kings assembled there for fighting with his words:— All you warriors! wielders of different weapons adept in the art of fighting and capable of destroying singly all the Pandavas, are surely able to defeat them when put together. Our army is incon-

भीष्माभिराक्षतम् । पर्यातामिदमेतेषां चलंभीमाभिरक्षितम् ॥ ६ ॥ संस्थानाः शूरसे  
नाथ वेत्रिका ककुरास्तथा । आरोचकास्त्रिगर्ताश्चमद्रकाश्च यनास्तथा ॥ ७ ॥  
राजुजयेन सहितास्तथा दुःशासनेन च । विकर्णेन च घोरैः तथा नदीपनदकैः ॥ ८ ॥  
चित्रसेनेन सहिता सहिता पारिमद्रकैः । भीष्ममेवामि रक्षन्तु सहसैन्य पुरस्कृता  
॥ ९ ॥ तना भीष्मश्च द्रोणश्च तव पुत्राश्चमारिषः । अग्र्यं महाव्यूह पांडूनां प्रतिवाचकम्  
॥ १० ॥ भीष्म सैन्येन महता समतात्पारवारितः । ययौ प्रकर्षन् महतीं बाहिनीं सुग्राहिव  
॥ ११ ॥ तमन्वयान्महोपासो भारद्वाजः प्रतापवान् । कुतलैश्च दशार्णवमागधैश्चावशांपते  
॥ १२ ॥ विदर्ममेकलक्षैश्च कर्णप्रावरणै रपि । सहिता सर्वसैन्येन भीष्ममाह्वय शोभितम्  
॥ १३ ॥ गांधारा सिंधु सौवीरा इशवयोग्यवसातय । शकुनिश्च स्वसैन्येन भारद्वाज  
मपालयत् ॥ १४ ॥ ततो दुर्योधनो राजा साहितः सर्वसोदरैः । अश्वातकैर्विकर्णैश्च  
तथा चांघ्रिकोसलैः ॥ १५ ॥ दग्दैवशकैश्च तथा भृदकमालैश्च । अम्परक्षतसेनैश्च

होनेके योग्य है, संस्थान विकर्ण शूरसेन कुट रेचक त्रिगर्त मद्रक यवन शत्रुजय  
दुःशासन बड़े धीर विकर्ण नन्द उपनन्द भाणिभद्रको समेत चित्रसेन सेना के मनु-  
ष्योंसमेत सम्मुख होकर भीष्मकी रक्षाकरो, हे श्रेष्ठ इस के पीछे आप के पुत्रों ने  
पांडवों के रोकने के लिये बड़े भारी व्यूहको रचा, भीष्मजी तो चारों ओर सेना  
से रक्षित देवराज के समान बड़ी सेना समेत चले, और बड़े धनुषधारी प्रतापी भार-  
द्वाज द्रोणाचार्यजी कुन्तल मागध और दशार्ण के साथ भीष्मजी के साथ चले  
और विदर्म मेकलकर्ण प्रावरकभी सब सेनासमेत भीष्मजी के ही साथ चले, गांधार  
भिंधु सौवीर शैव्य विशातय और शकुनीने सेनासमेत भारद्वाज द्रोणाचार्यजीको  
रक्षित किया, तदनन्तर राजा दुर्योधन और सब सगे भाई अश्वातक विकर्ण वामन

querable, well protected as it is by Bhishma. Let Samasthanas, the  
Surnasens, the Kuklars, the Rechaks, the Trigartas the Madrikas,  
the Yavanas, with Satruujaya, Dussahasans, that excellent  
hero Vikarna, Nanda, Upandaka, ( 8 ) and Shilasena, along  
with the Manibhadra, protect Bhishma with their troops 9  
O sire, Then Bhishma and Drona and thy sons formed a mighty  
array for resisting that of Parthas. 10 And Bhishma surrounded  
by a large body of troops advanced leading a mighty army, like chief  
of the celestials himself 11 And that mighty Lowman, the son of  
Bharadwaja, endued with great energy, followed him, with the  
Kuntalas, the Dasharnas, and the Magadhas, O king, and with the  
Vidarbhas, the Melas, the Karnas and the Pravaranas also. And  
the Gandharas, the Sindhusnaviras, the Shivas, and the Vastis, with  
all their combatants also ( followed ) Bhishma that ornament of  
battl. And Shakuni, with all his troops, protected the son of  
Bharadwaja. 14 And that king Duryodhan, united with all his

सौवलेयस्य वाहिनीम् ॥ १६ ॥ भूरिश्रवाः शलः शल्यो भगदन्तश्च भारिष । विंदातु  
 विंदा वावन्तौ वामं पार्श्वं मपालयन् ॥ १७ ॥ सौमदक्षिः सुशर्मा च काञ्चोजसुद-  
 क्षिणः । श्रुतायुधा श्रुतायुध दक्षिण पक्षमास्थिताः ॥ १८ ॥ अश्वत्थामा कृपायैव कृत-  
 वर्मा च सारथतः । महत्या संनया सारथ्ये सेनापृष्टे व्यचस्थिताः ॥ १९ ॥ पृष्ठगोपास्तु त-  
 स्यासन् जनादेशपाजनेश्वराः । केतुमान् वसुदानय पुत्रः काश्यपस्य च मिभूः ॥ २० ॥  
 ततश्चे तावकाः सर्वे दृष्ट्वा युद्धाय भारत । दम्भुः शंखान् मुवाणुकाः सिंहनादांस्तथो-  
 नदन् ॥ २१ ॥ तेषां श्रुत्वा तुष्टानां वृद्धः कुरु पितामहः । सिंदनादं विनघोषैः शंसं  
 दम्भी प्रतापवान् ॥ २२ ॥ ततः शंखाथ भैरवश्च पेदयवविबिधाः परैः । आनकाधाम्य  
 हन्यन्त स शब्दस्तुमुलोभवत् ॥ २३ ॥ ततः श्वेतैर्हयैर्युक्तं महति स्पन्दने स्थितौ । प्रव-

कोसल दरद वृक और वालिवलोगों के साथ जुटकर पांडवलोगों की सेना के सम्मुख  
 दौड़ा हे राजा भूरिश्रवा शैल शल्य भगदन्त और विन्द अनुविन्द अवान्ति देश  
 के राजालोगोंने बायें भागको रक्षित किया, १७. सौमदक्षि सुशर्मा काञ्चोज सुदक्षिण  
 श्रुतायुध श्रुतायुध यह सब दक्षिण ओर नियत हुए, अश्वत्थामा कृपाचार्य कृतवर्मा  
 यादव यह सब बड़ीसेना समेत पीछेकी ओर को नियत हुए उसके पीछे से रत्नक  
 अनेक देशों के राजा केतुमान वसुदान और काशीके राजाका पुत्र इत्यादि हुए ॥ २० ॥  
 हे भरतवंशी इसके अनन्तर आपके उन सब पुत्रों ने जोकि युद्धके लिये बहुतमस्तन  
 चिह्न थे शंखोंको बजाकर सिंहनादों को किया, कौरवों के हृदयपितामह प्रतापवान्  
 भीष्मजीने उन मस्तनचिह्नों के सिंहनादोंको सुनकर बड़े शब्दमे सिंहनादकरके  
 अपने शंखको बजाया तदनन्तर दूसरी ओर के शंख भेरी आदि अनेकवाजे चारों  
 ओरसे बजे और तुमुलशब्द हुआ तिसपीछे श्वेत घोड़ों से युक्त बड़े रथपर वर्षमान

brothers and with Ashwatah, Vikarn, Kosal, Darad, Vrik and Balav  
 warriors, advanced against the Pandav armies. Bharishrava, Shal,  
 Shalya, Bhagdant with Vind and Anuvind the princes of Avanti,  
 guarded the left flank. 17. Soudatti, Susharma, Kamtoj, Sudak-  
 shin Shatayush and Shrutayu stood on the right; and Ashwathama,  
 Kripacharya, Kritvarma and the Yadavas with a large army stood on  
 the rear and were themselves guarded by Ketuman, Vasudev, the  
 son of the king of Kasi and others. 20. Then, O descendant of Bhar-  
 at; your sons cheerfully blew their conch shells in the field of battle.  
 At this the other side too, blew their conch shells, trumpets and  
 other musical instruments and the noise was tremendous. Then riding  
 their huge chariot drawn by white horses, Krishna and Arjun blew  
 their conch shells decked with gold and jewels. Krishna the lord of



धनुः शंसवरो हेमरत्नपरिष्कृतौ ॥ २४ ॥ पांचजन्यं हृषी केशो देवदत्तं धनजयः ।  
 पौंड्रं दध्नी महाशखं भीमकर्मा वृकोदरः ॥ २५ ॥ अनन्त विजयं राजा कुन्तीपुत्रो युधि-  
 ष्ठिरः । नकुलः सहदेवश्च सुघोषमाणि पुष्पको ॥ २६ ॥ काशिराजश्च शैव्यश्च शिशुगंडो-  
 च महारथः । धृष्टमुनो विराटश्च सात्यकिश्च महारथः ॥ २७ ॥ पांचाद्र्याश्च महोवासा-  
 द्रौपद्याः पञ्चचात्मजाः । सर्वे दध्नुर्महाशयान् सिंहनादांश्च नेदिरे ॥ २८ ॥ स घोष-  
 समहोस्तश्च धीरस्तैः समुदारितः । नमश्च पृथिवीचैश्च तुमुलो ध्यनुनादयत् ॥ २९ ॥ एव-  
 मेते महाराज प्रहृष्टाः कुरुपाण्डवाः । पुनर्युद्धाय संजग्मुस्तापयानाः परस्परम् ॥ ३० ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मयधपर्वणि कौरवव्यूहरचनायां  
 एकविंशोऽध्यायः ॥ ५१ ॥

श्रीकृष्णजी और अर्जुनने, सुवर्ण और रत्नों से जटित उत्तम शंखों को बजाया  
 फिर इन्द्रियोंके स्वामी जगदात्मा श्रीकृष्णजी ने तो पांचजन्य नाम शंखको और  
 अर्जुनने देवदत्त नाम अपने शंख को बजाया, और भयकारी भीमसेन ने पौण्ड्रनाम  
 महाशंखको बजाया औरकुन्तीकेपुत्र राजायुधिष्ठिरने अनन्त विजयनाम शंखको बजाया  
 और नकुल सहदेवने सुघोष और माणिक्यपुष्पकनाम शंखको बजाया और शैव्यकाशि-  
 राज और महारथी शिशुगंडी धृष्टमुन विराट महारथी सात्विकी बड़ापनुर्धर पांचाल  
 द्रुपद और द्रौपदीके पांचोपुत्रोंने सिंहनादकोकरके अपने महाशंखोंको बजाया सब  
 वीरों ने अन्धेभकार उत्तम शब्दकिये, तुमुलशब्द से आकाश और पृथ्वी शब्दा-  
 यमान होगई हे महाराज इमरीति से यह कौरव और पांडव परस्पर में संतप्त करते  
 हुए फिर युद्ध के निमित्त गये ॥ ३० ॥

who senses and soul of the world, blew his Panchjanya conch and  
 Arjun blew his Devadatta. Bhim- sen the dreadful, blew Paundra,  
 and Prince Yudhishtir the son of Kunti blew Anantvijaya. Nakul  
 and Sahadev blew Sugosh and Manipu- hpik. Shairya the prince  
 of Kashi, Shikhandi the great warrior, Dhrishtadyuman, Virat,  
 brave Satyaki, Drupad the great archer of Panchal and the five sons  
 of Draupadi roared like lions and blew their conchshells. The loud  
 sounds of the war rang through the earth and sky. Thus, O  
 Prince, did the Kauravas and the Pandavas advance against each  
 other with dreadful noise." 30.



धृतराष्ट्र उवाच । एवं व्यूढं धनीकेषु मामकेष्वितरेषु च । कथं प्रहरतां श्रेष्ठाः  
सम्प्रहारं प्रचक्रिरे ॥ १ ॥ मञ्जय उवाच ॥ समं व्यूढं धनीकेषु सप्रदशवारध्वजम् ।  
अपारमिव संहृद्य मार्गप्रतिमं बलम् ॥ २ ॥ तेषामध्ये स्थितो राजन् पुत्रे दुष्यो  
धनस्तव । श्रेष्ठिवात् तावकान् सर्वान् युद्धार्थमिति दांशताः ॥ ३ ॥ तेमनः क्रूरमाघाय  
समामित्यक्तजीविताः । पाण्डवानम्यवर्त्तन् सर्व एवोच्छ्रितध्वजाः ॥ ४ ॥ ततो युद्धं  
समभवत्तुलं लोमहर्षणम् । तावद्गानां परेषाञ्च व्यातिपकरघट्टिणम् ॥ ५ ॥ मुक्तास्तु  
रिभिर्विषाणां शिरःपुराः सुनेजसः । सन्निपेनुरङ्गाण्डया नागेषु च हयेषु च ॥ ६ ॥ तथा  
श्रुत्वे संग्रामे धनुस्त्वम्यवर्त्तित । अमिषस्य महाबाहोर्भीष्मो भीमपराक्रमः ॥ ७ ॥  
सामग्रे भीममेवे च तावत्कौचं महारथे । कैकेये च विराटे च धृष्टशुम्भे च पापते ॥ ८ ॥

अथाय ८२ ॥

धृतराष्ट्रवाले है मंजय इस रीति में मेरेपुत्र और पांडवोंकी सेना के व्यूह रच-  
नेपर प्रहार करनेवालोंमें उत्तम गूरोंने परस्परमें कर्मे कर्मे प्रहार किये । ? । संजय  
बोले कि इस रीति से सेनाके व्यूहिनहोनेपर मनुष्य मेना को अपार देखते हुए  
उनवीरों के कवच तैयार हुए जिनकी ध्वजा महासुन्दर और मनोहर थी, है राजा  
उन मय में नियतहोकर आपका पुन दुर्योधन आप के सबपुत्रों को बुलाके कहने  
लगा कि तुम सब अस्त्रधारण करके युद्धकरो वह जीवनको त्यागे हुए ध्वजाको ऊंची  
करनेवाले सब मन में निर्हयरूपहोकर पांडवों के सम्मुख लड़नेको उपस्थितहुए तद-  
नन्तर आपके पुत्र और दूहरोंका युद्ध जिस में रथ और हाथी संयुक्त थे गेमदर्पण  
और तुपुलं शब्दों से व्याप्तहुआ । ५ । सुवर्ण पंख और अत्यन्त प्रकाशित और  
तीक्ष्णबाण रथीलोंके हाथोंमें झूटहुये हाथी और घोड़ों पर गिरे इसीप्रकार युद्ध  
प्रारम्भहोनेपर भयकारी पराक्रमी अस्त्रधारी पितामह भीष्मजी ने धनुष को उठाये

## CHAPTER LII

"Having thus formed an array of their armies, how did the warriors of my sons and those of the Pandavas fight with one another?" asked Dhritrashtra of Sanjaya 1. "Having arrayed their armies in the manner mentioned above," replied Sanjaya, "that boundless ocean of the armies, shining with panoply and excellent banners, looked glorious to behold. In the midst of those armies your son Duryodhan collected his brothers and said to them, "Take up your arms for fighting." And regardless of their lives all your sons, with cruel hearts, faced the Pandavas in battle. The battle between your sons and the other party, with chariots and elephants mixed together raged furiously with tremendous noise. The sharp arrows, with bright golden feathers, discharged by charioteers, fell upon the elephants and horses. At the commencement of the battle, Bhishma the great archer of dreadful prowess faced with his bow, brave Abhi-

एतेषु नरवीरेषु चेदिमत्स्येषु चाभिभूः । ध्वर्यं शरवर्षाणि वृद्धः कुरुपितामहः ॥ ९ ॥  
 अभिधत्त ततो ब्यूहस्तस्मिन् चरिस्समागमे । सर्वेषामेव सैन्यानामासिद्धिपतिकरोमहान् ॥ १० ॥  
 सादिनो ध्वजिनश्चैव हत प्रवरवाजिनः । विप्रद्रुतरथानांकाः समपद्यन्त पांडवाः ॥ ११ ॥  
 अर्जुनस्तु नरव्याघ्रो दृष्ट्वाभीष्मं महारथम् । बाष्पेयमघ्रधीत् कुद्धो याहि यत्र गितामहः ॥ १२ ॥  
 एष भीष्म-सुसंकुद्धो बाष्पेय-मम वाहिनीम् । नाशयिष्यति सुव्यक्तं दुर्योधनहिते रतः ॥ १३ ॥  
 एष द्रोणं कृप-शत्रून् विकर्णश्च जनाईन । धार्तराष्ट्रं सहिता दुर्योधनपुरोगमाः ॥ १४ ॥  
 पंचालाग्निहनिष्याति रक्षिता दृढधन्विना । सोऽहं भीष्मं वधिष्यामि सैन्यहेतोर्जनाईन ॥ १५ ॥  
 तमग्रवीद् बासुदेवो यत्तो भवधनञ्जय । एषत्वां प्रापयिष्यामि पितामहरथं प्रति ॥ १६ ॥  
 एवमुक्त्वा

हुए सम्मुख आकर, महारथी अभिमन्यु भीमसेन अर्जुन, केकय, विराट, धृष्टद्युम्न, चेदि, मत्स्य, विभु इन नौवीरों पर बाणोंकी वर्षा करी । ९ । उस बड़े वीर के सम्मुख बड़ी सेना अत्यन्त कम्पायमान हुई और सब सेना के लोगोंको बड़ा खेद उत्पन्न हुआ, और वह अत्यन्त उत्तम घोड़ों के रथोंके सवार मारे गये जिनकी सेना हट गई थी ऐसे अकेले पांडव वर्तमान हुए नरों में उत्तम क्रोधरूप अर्जुन महारथी भीष्मको देखकर श्रीकृष्णजी से बोले कि वहां चलो जहां पितामह हैं । १२ । हे दृष्टिमान्शी यह निश्चय है कि यह अत्यन्त क्रोधरूप भीष्म दुर्योधन के अभीष्ट में प्रवृत्त मेरी सेनाको अवश्य मारेंगे, हे जनार्दनजी यह द्रोणाचार्य कृपाचार्य शल्य विकर्ण और सब धृतराष्ट्रके पुत्र जिनमें अग्रगामी दुर्योधन है, वह सब धनुषधारियों से रक्षित होकर पांचाल देशियों को मारेंगे सो हे जनार्दनजी मैं भी सेना समेत भीष्मजीको मारुंगा । १५ । बामुदेवजी बोले कि हे अर्जुन सावधान हो मैं तुम्हको अभी पितामह के रथके पास पहुंचाता हूं, हे राजा ऐसा कहकर बामुदेवजी ने उसको शीघ्र ही भीष्मजी के रथके पास पहुंचाया, वह पाण्डव अर्जुन बगले के समान झेत

manyu, Bhishma, Arjun, Karkaya, Virat, Dhrishtadyumna, Chedi, Matsya and Vibhu, and showered his arrows on them. 9. The great army trembled before that great warrior and was much distressed. The riders of very excellent horses were slain and the armies of the Pandavas were dispersed. When the Pandavas were left alone, brave Arjun enraged at the sight of Bhishma asked Krishna to lead him in the vicinity of the grandfather. "Surely," said he to Krishna, "Bhishma in his rage will destroy my armies for the good of Duryodhan. Dronacharya, Kripacharya, Shalya, Vikarna and all the sons of Dhritrashtra being Duryodhan at their head and protected by all the good archers, will destroy the Pandavas. I wish therefore, O Janardan, to destroy Bhishma and his army." 15. "Be wide awake, Arjun," said Vasudev, "I shall forthwith take you to the vicinity of Bhishma's chariot," and drove the chariot close to that of Bhishma.

सतः शीरी रथं तं लोकविश्रुतम् । प्रापयामास भीष्मस्य रथं प्रति जनेश्वर ॥ १७ ॥  
 चलद्गुपताकेन धलाकार्यवाजिना । समन्वितमहाभीम नदद्धानकेतुता ॥ १८ ॥  
 महतःमेघनादेन रथेनामततेजसा । विनिघ्नन् कौरवानां कं शूरसेनांश्च पाण्डवः ॥ १९ ॥  
 आयाच्छरणदः शीघ्रं सुहृदांश्चैव यत्नैः । तमापतन्त वेगेन प्रभिममिव धारणम् ॥ २० ॥  
 आसयन्त रणे दृग्गन् मर्दयन्तश्च सायकैः । सैन्यवप्रमुखं गुप्त प्राप्य सौवैरकेकैः ॥ २१ ॥  
 सहसा प्रत्युदीयाय भीष्मः शान्तनवांजुनम् । कोहि माण्डोवघन्वानमग्न्यः क्रूरपितामहात् ॥ २२ ॥  
 द्रोणवैकृत्तनाभ्यां चारथी संपातु मर्हति । ततो आत्मा महाराज सूर्यलोकमहारथः ॥ २३ ॥  
 अर्जुनं सतसत्त्वा नाराजानां समाचनोत् । द्रोणश्च पञ्चविंशत्या कृपञ्चाशताश्वरैः ॥ २४ ॥  
 दुर्योधनश्चतुःषष्ट्या शन्यथ नवभिः शरैः । सैन्येषो नवामध्ये च शत्रुनिश्चापि पञ्चभिः ॥ २५ ॥

घोड़ों के रथपर सवार बड़ी ऊंची प्रकाशमान ध्वजाको फहराता बड़े वादळ के समान गरजता हुआ सूर्य के समान प्रकाशित रथके द्वारा कौरवों की सेना और शूरसेनों को संहार करता हुआ, मित्रों के उत्साहोंका बढ़ाने वाला शीघ्रशी युद्ध भूमि में आया उस मदोन्मत्त हाथी के समान महा वेग युक्त आतेहुए युद्धमें गुरोंको कंपाते और अपने बाणों से प्रहार करके गिराते हुए अर्जुनको देखकर पूर्वी सौवैर केकय जय-द्रय और सिन्धु आदि के राजाओं से रक्षित, भीष्मजीएकाएकी सम्मुख वर्तमान हुए कौरवों के पितामह भीष्म द्रोणाचार्य और कर्ण के सिवाय दूसरा कौनरही है जो गांडीवधनुषधारी अर्जुन के सम्मुख जासके तदनन्तर हे महाराज कौरवों के पितामह भीष्मजी ने तो सतत्तर बाणोंसे अर्जुनको खूबपीड़ामान किया और द्रोणाचार्य व कृपाचार्य ने पच्चीस २ बाणों से । २४ । दुर्योधनने चौंसठ बाणोंसे शल्यने नौबाणोंसे और नरोत्तम अश्वत्थामाने साठ बाणोंसे विकर्ण ने तीनबाणों से और आर्च्यायनिने तीनभल्लबाणों से पांडव अर्जुन को खूब घायल किया वह

Arjun the Pandava rode on the chariot drawn by horses white as heron, over which fluttered gloriously the high banner, and roaring like thunder and destroying the Kauravas and Shursenas from his chariot, he entered the army to the great joy of his friends. Seeing him coming like a mad elephant and shaking and killing the warriors with the shower of his arrows, Bhishm, protected by the Sauvirs of the East, the Kaikayas, Jayadrath and the princes of Sindha and other places, turned upon him. Who else except Bhishm the grandfather of the Kauravas, Dronacharya or Karan could face Arjun the bearer of Gandiv ! Then, O king ! Bhishm the grandfather wounded Arjun with seventy seven arrows and Dronacharya and Kripacharya each of them wounded him with twenty five. 24. Duryodhan shot sixty four arrows; Shalya nine; Ashwathama, the best of men, sixty; Vikarn three and Artayani too, hit and wounded Arjun the Pandava

विकर्णोद्देशमिर्भले राजन् विद्यापपाण्डवम् । स तैर्विक्रो महेष्वासः समन्तानि शितैः शरैः ॥ २६ ॥ न विष्यथे महाबाहुर्मिद्यमान इवाचलः । स भीष्मं पञ्चविंशत्या कृपञ्च नवभिः शरैः ॥ २७ ॥ द्रोणे पृथ्वा नरक्याद्यो विकर्णवश्रिभः शरैः । शङ्खं चैव अभिर्घाण राजानञ्चैव पञ्चभिः ॥ २८ ॥ प्रयविध्वदमेयात्मा किरीटीभरत-पुत्रम् । तं सात्यकिर्विराटश्च धृष्टद्युम्नश्च पार्थ ॥ २९ ॥ द्रौपदेयामिमं युध्म परिननुर्ध्वं नञ्जयम् । ततो द्रोणे महश्वास गङ्गेयस्य प्रिये रतम् ॥ ३० ॥ अभ्यधत्त पावाहपः संयुक्तः सह सोमकैः । ओष्मस्तु राधेनां श्रेष्ठो राजन् विद्याप पाण्डवम् ॥ ३१ ॥ अश्रोतया नशिर्गणैस्ततः ऽक्रुपेत् तावकाः । तेषु निनर्दं श्रुत्वा स हतानां प्रहृष्ट यत् ॥ ३२ ॥ प्रविशेश ततो मध्यं नरसिंहः प्रतापवान् । तेषां महारथानां मध्यं प्रावरघनतयः ॥ ३३ ॥ चिक्रीड धनुरा राजेन्द्रलं कृत्यामहारथान् । ततो दुष्टयो

महाबाहु अर्जुन उनके चारोंओर की बाणग्रीष्ट से पर्वत के समान आच्छादित और घायल भी होकर पीड़ामान नहीं हुआ फिर उस नरोत्तम अर्जुनने भीष्मजी को पच्चीस बाणों से कृपाचार्य को नौबाणों से द्रोणाचार्य को साठ बाणों से विकर्ण को तीन बाणों से आर्तायानि को भी तीनबाणों से और राजादुर्योधन का भी पांच बाणों से घायल किया, जो कि अर्जुनबड़ा साहसी और मुकुटधारी था तो भी हे भरतर्षभ सात्विकी विगाट धृष्टद्युम्न, द्रौपदी के पांचो पुत्र और अभिमन्यु इन सबने आकर अर्जुन को चारोंओर से रक्षितकिया तदनन्तर राजाद्रुपद भीष्म के अनभीष्ट में उत्त द्रोणाचार्य के सम्मुख उास्थित हुआ फिर रथियों में श्रेष्ठ भीष्मजी ने शीघ्रही पांडव अर्जुन को । ३१ । तस्मिन् अस्मी-बाणों से घायल किया उसने आपके पुत्र प्रसन्न हुए तदनन्तर रथियों में उत्तम प्रतापी अर्जुन उन प्रसन्न चित्तों की गर्जनाको सुनकर बड़े प्रसन्न चित्त के समान सेनामें घुसा हे राजा, वह अर्जुन उन उत्तम रथियों के मध्यको पाकर महारथियों को चिह्नितकर

with three of his broad pointed arrows. But though Arjun was covered with arrows like a mountain with clouds, he did not shake in spite of the wounds he had received. Arjun the best of men pierced Bhishm with twenty five arrows, Kripacharya with nine, Dronacharya with sixty, Vikarn with three, Artyaman with three and prince Duryodhan with five. Arjun the learner of dardem, of great prowess, was assisted by Sitwika, Virat, Dhrishtadyumna, the five sons of Draupadi and Alhumanyu who guarded him on all sides. Then Drupad, intent on doing harm to Bhishm, faced Dronacharya and Bhishm the best of charioteers faced Arjun the Pandva (31) and wounded him with eighty arrows to the great joy of your sons. Then Arjun of great prowess, hearing their cheerful cries, entered the army with a cheerful mind and roared in the midst of the charioteers.

घनो राजा भीष्ममाह जरेभ्यः ॥ ३४ ॥ पश्यमानं स्वर्क सैन्यं दृष्ट्वापार्थेन सद्युगे ।  
 एष पाण्डुमुतस्तात कृष्णेन सहितो वली ॥ ३५ ॥ यत्तत्सर्वं सैन्यानां मूलं नः परि  
 कृन्तति । स्वयिर्जीव त गाङ्गयद्रोणे च रथिनां वरे ॥ ३६ ॥ स्वत्कृते चैष कर्णोऽपि न्यस्त  
 शस्त्रो विशागते । न युध्यात् रणे पार्थ द्विनकामः सदा मम ॥ ३७ ॥ सतथा  
 कुरु गाङ्गेय यथा हृष्येत फाल्गुनः । पञ्चमुक्तस्ततो राजन् पिता देवव्रततप ॥ ३८ ॥  
 धिक् क्षात्रधर्ममिरयुक्त्वा प्रायात् पार्थरथप्रति । उर्मौ श्वेतह्वयो राजन् संसर्तुमिष्टय  
 पार्थिवः ॥ ३९ ॥ सिंहनादान्भृशंचक्रुः शंसन् दध्मन्श्च भारिप । द्रौणिदुर्योधनश्चैष  
 विकर्णश्च तवः समजः ॥ ४० ॥ परिचार्य रणे भीष्मं स्थिता युद्धाय माणिप । तर्धैव  
 पाण्डवः सर्वे पारदार्यं घनव्रजम् ॥ ४१ ॥ स्थिता युद्धाय महते ततो युद्धमसंसत ।

के धनुषलिये हुए घूमने लगा तदनन्तर राजा दुर्योधन युद्ध में अपनी सेनाको अर्जुन  
 के हाथ से पीड़ामान देखकर भीष्मसे बोला होतात यह वनवान् पांडव श्रीकृष्णजी  
 के साथ । ३५ । सब सेनाओंको मारता गिराताहुआ रथियों में श्रेष्ठ गांगेय और  
 द्रोणाचार्य के जीवते होनेपर हमारे मूलको काटे डालता है हे राजा आपहीके कारण  
 सदैव मेरा हित चाहने वाला यह कर्ण भी बेसलाह होकर युद्धमें पांडवों से नहीं  
 लड़ता है । ३७ । हे भीष्मजी सो तुम ऐसाही करो जिससे अर्जुन नाशको पाये  
 तदनन्तर हे राजा इसप्रकार कहे हुए आपके पिता देवव्रत भीष्मजी क्षत्री धर्मको  
 धिक्कार है ऐसा शब्द कहकर अर्जुन के रथके समीप आये हे श्रेष्ठ राजा धृतराष्ट्र  
 राजाओं ने उनदोनों महावली श्वेत घोड़े वालों को मिलाहुआ देखकर अत्यन्त  
 सिंहनादक शंसों को बनाया अश्वस्थामा और आपका पुत्र दुर्योधन और विकर्ण  
 । ४० । यहसब युद्ध में भीष्मजी को चारों ओर से रक्षित करके युद्धके निमित्त  
 नियत हुए और हे राजा इसी प्रकार से सब पश्यद्व लोग अर्जुनको चारों ओर  
 से घेरकर बड़े युद्ध करने के निमित्त नियतहुए इसके पीछे युद्ध प्रारंभ हुआ फिर

hitting the loat of them. Seeing his army thus destroyed by Arjun, Duryodhan said to Bhishm, "Father, this brave Pandav, assisted by, Shree Krishna, (35) is destroying my armies in the presence of you and Dronacharya the best of charioteers and will thus uproot us. Having quarrelled with you, Karan will not fight against the Pandavas. 37. Cause the destruction of Arjun in some way or other." Hearing this, Devabrat Bhishm cursed the kshatriya duties and came near Arjun's chariot. Seeing those two great warriors face to face, the kings roared like lions and blew their conch shells Ashwathama and your sons Duryodhan and Vikarn (40) guarded Bhishm on all sides and prepared for fighting. In the same manner all the Pandavas surrounded Arjun and stood ready to fight. Then

गाङ्गेयस्तु रणेपार्थ मानच्छत्रवाभिःशरैः ॥ ४२ ॥ तमर्जुनःप्रत्याघिष्यत् दशभिर्मर्मभेदिभिः ।  
ततः शरसहस्रेण सुप्रयुक्तं पाण्डव ॥ ४३ ॥ अर्जुनः समरक्षार्था भीष्मस्यावार  
यद्विदशः । शरजालं ततस्तच्च शरजालेन मारिष ॥ ४४ ॥ वारयामास पार्थस्य  
भीष्मः शान्तवस्तदा । उभौ परमसहस्राभौ युद्धाभिनन्दिनौ ॥ ४५ ॥ निर्विशेष  
मयुष्येतां कृतप्रतिकृतौपिणौ । भीष्मचापविमुक्तान् शरजालानि संघशः ॥ ४६ ॥ शीर्य  
माणान्यदृश्यन्त । मघान्यर्जुनसायकैः । तथैवार्जुनमुक्तानि शरजालानि सर्वशः ॥ ४७ ॥  
गाङ्गेयशरनुष्ठानि प्रापतन्तमहहितले । अर्जुन पञ्चार्विशत्याभीष्ममाच्छच्छितैःशरैः ४८ ॥  
भीष्मोपि समरे पार्थ विन्याघ निशितैः शरैः । अन्योन्यस्यहयान् । वध्वाध्वजौ च  
सुमहाघलौ ॥ ४९ ॥ रथेषां रथचक्रेच चिक्रीडतुरण्दिमौ । ततः कृद्धो महापज  
भीष्मः प्रहरतांवरः ॥ ५० ॥ वासुदेवं । प्रभिर्वाणं राजधानं स्तनाग्नरे । भीष्मचाप  
वपुतैस्तैस्तु निर्विजो मधुसूदनः ॥ ५१ ॥ धिरराज रणे राजन् सपुत्र इव किंशुकः ।

गंगापुत्र भीष्मजी ने युद्धमें नववाणों से अर्जुनको घायल किया । ४२ । फिर  
अर्जुनने मर्मभेदी दशवाणों से उनको घायल किया तदनन्तर युद्ध में प्रशंसनीय  
पाण्डव अर्जुनने अच्छे प्रकार से चलाये हुए हजार वाणों से भीष्मजी की दिशाओं  
को रोका, तदनन्तर भीष्मजी ने अपने वाणों से अर्जुनके उनवाणों के जालोंको  
रोका, दोनों युद्ध में प्रसन्न चित्त और उत्साह मानने वाले प्रहार के बदले प्रहार  
करने की इच्छावाले युद्ध में अतिशयता पूर्वक प्रवृत्त हुए, भीष्मजी के धनुष से  
छूटेहुए वाणजालों के समूह अर्जुन के वाणों से कटे हुए टूटपड़े, इसीप्रकार अर्जुन  
के छोड़े हुए वाणजाल भीष्मजीके वाणों से टूटकर पृथ्वीपर गिरपड़े फिर अर्जुन  
ने पच्चीस तीक्ष्ण शरोंसे भीष्मजीको व्यथित किया । ४८ । भीष्मजी नेभी नव  
वाणों से अर्जुन को घायल किया वह दोनों महाबली शत्रुओं के जीतनेवाले युद्ध  
में घोड़ों को और रथोंको परस्पर घायल करके, क्रीड़ा करने वाले होगये तदनन्तर  
हे राजा महाक्रोध रूप महाप्रहारी भीष्मजी ने, तीन वाणों से वामुदेवजी को  
स्तनान्तर में घायल किया, उन भीष्मजी के धनुष से निकले हुये वाणों से घायल

the fighting began. Bhishm wounded Arjun with nine arrows and recieved ten from him. Then Arjun the best of warriors, spread a thousand well aimed arrows round Bhishm and both the warriors returned each other's blows with great skill. The network of arrows was cut down by those of Bhishm. Arjun then wounded Bhishm with twenty five arrows. 48. Bhishm too wounded Arjun with nine arrows. The two great warriors, conquerers of enemies, wounded the horses of each other's chariot and delighted in their work. Then Bhishm the great warrior struck Vasudev in the middle of the breast with three arrows. Wounded by the arrows of Bhishm, Madhusudan looked like a Kinshuk tree in bloom. Seeing Madhav wounded by

ततोर्जुनोभृशक्रुद्धो निर्विद्धं प्रेक्ष्यमाधवम् ॥ ५२ ॥ सारथिं कुम्बुक्षस्य निर्विमिश्रशैतः  
 शरैः । धत्तमानोतुतौ घोरान्न्योन्यस्य घघप्रति ॥ ५३ ॥ नशक्नुतां तदान्योन्य  
 मभिसंघातु माहवे । तौमंडलान चित्राणि गतप्रत्यागतामिच ॥ ५४ ॥ यदशयेतां  
 बहुधा सूतसामर्थ्यं छाघवात् । अंतरं च प्रहारेषुतर्कयंतौ परस्परम् ॥ ५५ ॥ राजन्ने  
 तमार्गस्थौ स्थितावास्तांमुहमुहः । उभौ सिंहस्वेनिमित्रं शंखशब्दं च चक्रतुः ॥ ५६ ॥  
 तथैव चापनिर्योयं चक्रतुस्तौ महारथौ । तयोः शंखाननादेन रथनेमिस्थानमच ॥ ५७ ॥  
 दारिता सहसा भूमिश्चकंपच ननादच । मोमयोरंतरं कश्चिद्दृशे भरतर्षभ ॥ ५८ ॥  
 बालनौ युद्धं दुर्धर्षां धन्योन्यसदृशाबुभौ । चिह्नमात्रेण भीष्मं तु प्रजब्रुवन्त प्रकौरवाः  
 ॥ ५९ ॥ तथा पाण्डुसुताः पार्थं चिह्नं मात्रेण जज्ञिरे । तयोर्निघ्नयोर्दृष्ट्वा तादृशं तं  
 पराक्रमम् ॥ ६० ॥ विस्मये सर्वं भूतानि जग्मुर्भारतसंयुगे । नतपेयिर्विक्रंश्चिद्वणे पश्य

मयसूदनजी, युद्धमें फूले हुये किणुक, वृत्तके समान शोभायमान हुए तदनन्तर  
 माधवजीको घायल देखकर अत्यन्त क्रोधित होकर अर्जुन नेभी भीष्म के सारथी  
 को तीन चारोंसे घायल किया तब युद्धमें एक दूसरे के रथपर उपाय करने वाले  
 दोनों वीर, परस्पर में गिरानेको समर्थ नहीं हुए फिर उन्होंने ने सूतके बलकी तीव्रता  
 से बारंबार विचित्र मंडलोंको दिखलाकर, अवकाश के मार्ग देखने में नियत दोनों  
 वीरों ने बारंबार महारथों के बीचमें अवकाश को तकने हुए सिंहनाद पूर्वक शंखों  
 के शब्दों को किया । ५६ । और इसीप्रकार दोनों महारथियों ने धनुषों के भी  
 शब्दों को किया, उन दोनों के शब्दोंसे और रथोंके शब्दोंसे अकस्मात् पृथ्वी  
 फटगई और कंपायमान होकर गन्दायमानभी हुई हे भरतवंशिष्यों में श्रेष्ठ उनदोनों  
 के अन्तरको किमीनेभी नहीं देख। दोनों युद्धमें बलवान् शूरीर परस्पर में समान  
 थे वहां कौरव लोग केवल चिह्नों को देखकर भीष्म जीके पासगये, इसीप्रकार  
 पाण्डवों ने भी केवल चिह्नही मात्र से अर्जुनकोपाया हेराजाधृतराष्ट्र उन दोनों

those arrows Arjun too, in great anger, wounded the chariot driver of Bhishma with three arrows. Thus wounding each other, the two warriors could not defeat each other and with the skill of their charioteers described circles of their arrows again and again. Watching an opportunity to gain advantage over each other, they blew their conchshells and roared like lions. 56- Both the warriors twanged their bows. The earth cracked and shook with a noise at the sound of those warriors and rumbling of their chariot wheels. None could see any distinction between the two warriors; both were strong, brave and of equal prowess. The Kauravas could approach Bhishma by seeing his banner and the Pandavas came near Arjun by the same means. All beings were amazed to see the great prowess of those



तिभारत ॥ ६१ ॥ धर्मोऽस्मिन्त्यस्य हि यथानकश्चिद्वृजिनं कंचचित् । उभौ च शरजा  
 लेन तावद्वयौ बभूवतुः ॥ ६२ ॥ प्रकाशौ च पुनस्तूर्णं बभूवतु रभौरणे । तत्र देवाः  
 स गंधर्वाश्चारणाश्चरिभिः सह ॥ ६३ ॥ अन्योन्यं प्रत्यभार्पन् तयोर्दृष्ट्वा पराक्रमम् ।  
 गन्धर्वौ युधि संरन्ध्रौ जेतुमेतौ कथंचन ॥ ६४ ॥ स देवासुर गंधर्वैर्लोकैर्गणमहा  
 रणौ । आश्चर्यमृतं लोकेषु युद्धमेतन्महाद्भुतम् ॥ ६५ ॥ नैत दृशानि युद्धानि भवि  
 ष्यति कथंचन । न हि शक्यो रणे जेतुं भीष्मः पार्थेन धर्मिता ॥ ६६ ॥ सधनुः सरयः  
 साध्वः प्रचपन् सायकान् रणे । तथैव पांडवं युद्धे देवैरपि दुरासदम् ॥ ६७ ॥ न वि  
 जेतुं रणे भीष्म वरसहेतु धनुर्धरम् । आलोकादाप युद्धो ह सममेतद्भाविष्यति ॥ ६८ ॥  
 इति स्मृत्वा चोऽध्ययन् प्रोचरायस्वतस्ततः । गांगयाऽर्जुनयोः संख्ये इतव युक्ता विशांपते  
 ॥ ६९ ॥ त्वदीयास्तुतदायोधाः पांडवेयाश्च भारता । अन्योन्यं समरे जघ्नुस्तयोस्तत्र

नरोत्तमों के उस महापराक्रम को देखकर युद्धमें सब जीवमात्रों ने आश्चर्य किया  
 और कोई भी उन दोनों के अन्तरको ऐसे नहीं देखसक्ता था जैसे कि धर्मवान् पुरुष  
 का कोई पाप कहीं दिखाई नहीं देता वह दोनों बाणजालों में गुप्त हो गये । ६१ ।  
 इस के पीछे दोनों शीघ्र ही प्रकट हो गये वहां गंधर्वों समेत देवताओं ने और महर्षियों  
 समेत चारण लोगों ने इन दोनों के पराक्रमको देखकर परस्पर में वार्त्तालाप की  
 कि यह युद्धमें क्रोध रूप दोनों महाबली देवता असुर और गंधर्वों से भी किसी दशा  
 में लोकमें जीतने के योग्य नहीं है यह बड़ा भारी अपूर्व युद्ध इसलोक में हो रहा है  
 ऐसा युद्ध कभी नहीं होगा । ६२ । धनुपरय और स्योहों समेत युद्ध भूमि में शायकों  
 को छोड़ते हुए भीष्मजी युद्धमें युद्धिमान् अर्जुन को विजय करने के योग्य नहीं  
 हैं इसी प्रकार युद्ध में देवताओं से भी अजेय धनुषधारी पांडवोंकी विजय करने को  
 भीष्मजीभी उत्साह नहीं करते देखने से भी यह युद्ध बराबर का होगा, हे राजा  
 भीष्म और अर्जुनकी प्रशंसा के यह वचन जहांतहां फैले हुए सुने गये । ६३ । तदनन्तर  
 उन दोनों के पराक्रम होने पर आपके शूरवीर और पांडवों ने परस्पर में युद्ध किया

two host of men and could find no distinction in either as one does not find a sin in a virtuous man. Both were hid within the network of arrows. 62. They appeared again in a short time. The Gandharvas, the gods and the maharshis with the Charans, present there, saw their prowess and talked with one another as follows:—"These enraged warriors are not to be conquered in battle by gods, asurs and gandharvas. The world has not seen such a fight nor is likely to see it again. 65. Discharging arrows with the help of his bow, chariot and horses, Bhishm cannot conquer Arjun nor does he aspire to conquer the Pandava archers who are unconquerable even by gods. Both the warriors are equal in prowess." Such words of the

पराक्रमे ॥ ७० ॥ शितवारैस्तथा स्रद्धगैर्विमलैश्च परश्वर्यैः । शरैरग्यैश्च बहुमिश्रैश्च  
नाताविधैरापि ॥ ७१ ॥ उभयोःसेनयोः शूरान्यकृतंत परस्परम् । वर्तमाने तथाघोरेत-  
स्मिनयुद्धे सुदारुणे । द्रोणपांचल्ययोराजन् महानासीत् समागमः ॥ ७२ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि भीष्मार्जुनयुद्धे  
द्विपंचाशत्तमोऽध्यायः । ५२ ॥

धृतराष्ट्र उवाच । कथं द्रोणो महेश्वरः पांचाल्यश्चापि पार्षतः । उभौ समीपतुर्ध  
सौतन्ममाचक्ष्व संजय । १ ॥ द्रिष्टमेव परमग्ये पौरुषादिति मेमतिः । बभ्रुशत  
मथो भीष्मो नातरद्युषि पांडवम् ॥ २ ॥ भीष्मोहि समरे क्रुद्धो हृष्याल्लोकांश्चरा  
न् । सकय पांडवे युद्धेनातर संजयौजसा ॥ ३ ॥ संजय उवाच । धृतराजन्  
स्थितोभूत्वा युद्धेन तत्सुदारुणम् । नशक्याः पांडवाजंतु देवैरपि सयासदैः ॥ ४ ॥

इभीषकार तीव्रधार स्रद्ध और निर्मल परशे वाण और अन्य २ प्रकार के अनेक  
शस्त्रों से दोनों ओरके शूरीरों ने परस्पर में एकने दूसरेको महार किया हे राजा  
इभी रीति से उत्तरोर और महा भयानक युद्धहोनेपर द्रोणाचार्य और द्रुपदकी  
बड़ी भारी लड़ाई हुई ॥ ७२ ॥

अध्याय ॥ ५३ ॥

धृतराष्ट्रबोले हे संजय बड़े धनुषधारी द्रोणाचार्य और धृष्टद्युम्नदोनों बुद्धिमान  
कैसे युद्धमें परस्पर सम्मुख हुए उसका वृत्तान्त मुझ से कहो, हे संजय मैं उद्योग से  
प्रारब्धकों बड़ा मानताहूँ जहां युद्ध में क्षान्तनु भीष्मजी ने पांडव अर्जुनको विजय  
नहीं किया जो भीष्म रण में क्रुद्धहोकर सबस्थावर जंगमजीवों कोभी मारसक्ता है  
उस महावीरने किस हेतु से युद्धमें पराक्रमकरके पांडव अर्जुनको नहीं मारा । ३ ।  
संजय बोले कि हे राजा तुम स्थिरचित्त होकर इस बड़े भारी भयानक युद्धको सुनो  
कि पांडव अर्जुन इत्यादि देवताओं सेभी विजय करने के योग्य नहीं हे द्रोणाचार्य

praises of Bhishma and Arjun were heard on all sides. 69. Your sons  
and the Pandavas then fought with bright axes and other weapons.  
The fighting between Dronacharya and Drupad was very furious." 72

### CHAPTER LIII

"Describe the encounter between Dronacharya and Dhrishtadyumna, Sanjaya. I believe fate to be superior to prowess; for Bhishma did not conquer Arjun the Pandav in battle, though he could destroy all the moveables and immoveables. How it was that he did not kill the Pandav Arjun in spite of all his prowess," asked Dhrishtrashta of Sanjaya 3. "Hear attentively, king" replied Sanjaya "about the dreadful war. Arjun the Pandav is inconquerable even by gods. Dronacharya wounded Dhrishtadyumna with many arrows

द्रोणस्तु निशतैर्याणैर्धृष्टद्युम्नमबिध्यत । सारथिं चास्य भलेन रथी डाद पातयत् ॥ ५ ॥ तथास्य चतुरो चाहाभ्यनुभिः सायकोत्तमैः । पीडयामास सकुटो धृष्टद्युम्नस्य मारिष ॥ ६ ॥ धृष्टद्युम्नस्तता द्राण नवत्यानिशतैः शरैः । अथ याव प्रहसन्धीरस्तिष्ठतिष्ठेति चाब्रवीत् ॥ ७ ॥ ततः पुनरमयात्मा भारद्वाजः प्रतापवान् । शरैः प्रच्छादयामास धृष्टद्युम्नममर्षणम् ॥ ८ ॥ आददन् शरधारं पार्षताताचकीर्षया । शक्राशनि समस्पर्शं कालदण्डमिवापरम् ॥ ९ ॥ हाहाकारो महान् सीत् सर्वे सैन्ययु भारत । तमिषु संचितदृष्ट्वा भारद्वाजन सयुगे ॥ १० ॥ तथा बभूवुत मपद्याम धृष्टद्युम्नस्य पौरुषम् । यदङ्कं समरे वीरस्तस्यै गिरिर्वाचल ॥ ११ ॥ तच्च दीप्तं शरधारं मायातं मृगमाशनम् । चिच्छदशरवृष्टिं च भारद्वाज सुमोचह ॥ १२ ॥ तत उच्चकुशु सधैः पञ्चाला पादवै सह । धृष्टद्युम्नेन तत्कर्म कृतं दृष्ट्वा सुदुःकरम् ॥ १३ ॥ ततः शक्तिं महाधुगां

ने नाना प्रकार के बाणों से धृष्टद्युम्नको घायल किया और भल्लों से उसके सारथी को रथके नीचे से नीचे गिरा के महाक्रोधित होकर उस धृष्टद्युम्न के घोड़ोंको भी चार शायकों से महापीडित किया; ताभी बड़े वीर धृष्टद्युम्न ने द्रोणाचार्य को नव्वे तीक्ष्ण शरों से घायल किया और तिष्ठतिष्ठ शब्दों का भी किया तदनन्तर बड़े प्रतापी द्रोणाचार्य जीने उस धृष्टद्युम्नको मारे बाणों के आच्छादित कर दिया । ८ । और उसके मारने के लिये इन्द्रजित के समान स्पर्श वाले मृत्युदण्डके समान घोर बाणको हाथ में लिया, हे राजा उस युद्ध में द्रोणाचार्य के चढ़ाये हुए उस शराको देखकर सब मेना में हाहाकार हुआ, उस स्थान में हमने धृष्टद्युम्न के अपूर्व पराक्रमको देखा कि अकेला ही शूरवीर युद्धमें पर्वतके समान अचल होकर नियत खड़ा रहा । ११ । और उस प्रकाशित घोर मृत्युरूप आये हुए बाणको अपने बाणोंसे कटवाला और द्रोणाचार्य के ऊपर बाणोंको बरसाया तदनन्तर धृष्टद्युम्नके किये हुए उस कठिन कर्मको देखकर पारद्वों समेत पांचाल

and killed his chariot driver who fell down from his seat. Then in great anger he wounded Dhrishtadyumna's horses with four broad pointed arrows. Dhrishtadyumna pierced Dronacharya with ninety sharp arrows and challenged him with the cry of 'stay, stay'. Then Dronacharya, of great prowess, covered Dhrishtadyumna with a shower of arrows. He took up a hard arrow like vajra or the staff of Death to destroy Dhrishtadyumna. All the warriors of the army who saw that arrow in the bow of Dronacharya expressed signs of grief. We saw there the matchless prowess of Dhrishtadyumna who stood in battle immovable like a mountain. And seeing that dreadful arrow coming towards him like Death himself, cut it with his own arrows and showered his arrows over Dronacharya. The Pandavas with the Panchals cried loudly at the sight of Dhrishta-

स्वर्णवैद्युर्यभूयिताम् । द्रोणस्यनिषनाकांक्षी चित्तेपसपराक्रमी ॥ १४ ॥ तामापहतं  
 सहसा शक्तिं कनकभूयिताम् । त्रिधावच्छेद समरे भारद्वाजोदसप्रिय ॥ १५ ॥  
 शक्तिं चिनिहतां दृष्ट्वा धृष्टद्युम्नः प्रतापवान् । वयस्य शरवर्षाणि द्रोणे प्रति जनेश्वर १६ ॥  
 शरवर्षं ततश्चतसृ सन्निवार्य महायशः । द्रोणो ह्युप पुत्रस्य मध्ये चिच्छेद कान्तुकम् ॥ १७ ॥  
 सच्छिन्नं घन्वा समरे गदांशुर्वी महायशः । द्रुपदस्य प्रेययामास गिरिहार  
 मयीं बली ॥ १८ ॥ सा गदावेगवन्मुखा प्रायाद्द्रोणं जिघांसया । तत्राद्भुतमपश्याम  
 भारद्वाजस्यपौरुषम् ॥ १९ ॥ छाद्यवाद् व्यसयामास गदां हिम विभूयिताम् । व्यसयित्वा  
 गदांतां च प्रेययामास पार्यतम् ॥ २० ॥ मल्लान् सुनिशितान् पीतान् दन्तम् सुखान् मुदा  
 कणात् । ते तस्य कवचं भित्त्वा पपुः शोणितं माहवे ॥ २१ ॥ अयान्पद्मनुरादाय धृष्टद्यु  
 म्नो महायशः । द्रोणं युधिपराक्रम्य शरैर्विध्यावपव्यामिः ॥ २२ ॥ रुधिराक्तौ ततस्तौ नु

देही लोग उच्चशब्द को पुकारे । ११ । तदनन्तर द्रोणाचार्य के मारने की इच्छा  
 करनेवाले उस पराक्रमी ने बड़ी वेगवान् मुदर्य वैद्युर्य जटित महाघोर बरछी को  
 मारा इस बरछी को आता देखकर भस्मचित्त द्रोणाचार्य ने शीघ्रही अपने बाणों  
 से मार्ग में काटकर गिरा दिया । १५ । हे राजा तब उस धृष्टद्युम्न प्रतापी ने अप  
 नी उग्रबरछीको कटा हुआ जान के द्रोणाचार्य के ऊपर अनेक बाणोंको बरसाया  
 फिर महायशस्वी द्रोणाचार्य ने धृष्टद्युम्नकी बाणोंकी बरसाको रोककर उसके  
 धनुष को मध्य मेंसे काटहाला, फिर उस कटे हुए धनुष वाले महामतापी ने अपनी  
 एक भारीलोहे की गदाको फिराकर द्रोणाचार्य के ऊपर फेंका, उसके हाथकी  
 छूटी गदा द्रोणाचार्यके मारनेको शीघ्रही आई तो वहां हमने द्रोणाचार्यके अपूर्व  
 पराक्रमको देखा । १९ । कि उससुश्रुति घोरगदाको खण्ड २ करके अत्यन्त  
 तीक्ष्ण पीतांग सुनहरी शिलापर तीक्ष्ण किये हुए बाणको धृष्टद्युम्नके ऊपर फेंका  
 उसबाण ने उसके कवचका काटकर उसके रुधिर को पिया, तदनन्तर बड़ेवीर  
 धृष्टद्युम्नने दूसरे धनुषको लेकर युद्धमें महा पराक्रमकरके पांचबाणों से द्रोणाचार्य

dyumna's deed & prowess 18. Then wishing to kill Dronacharya,  
 he hurled at him his swift spear, adorned with gold and gems.  
 Seeing the dreadful dart coming towards him, Dronacharya,  
 with a cheerful mind, cut it down with his arrows 15. Seeing his  
 good spear thus cut down by Drona, Dhrishtadyumna showered his  
 arrows on him. Dronacharya checked the shower of Dhrishtadyu-  
 mna's arrows and cut his bow from the middle. The brave warrior,  
 with his bow cut asunder, hurled his iron mace at Dronacharya. We  
 saw the matchless prowess of Dronacharya when the mace was  
 coming on to kill him. 19. He cut down the golden dreadful mace  
 into pieces and discharged a sharp arrow of golden colour at him. The  
 arrow pierced through the armour and drank his blood. Brave  
 Dhrishtadyumna then took up another bow and with great prowess

शुशुभाते नारपंभो । वसन्तसमये राजन् पुष्पिताविष किंशुकौ ॥ २३ ॥ अमपितस्ततो  
 राजन् पराक्रम्य चमूमुखे । द्रोणोदुपपु पुत्रस्य पुनश्चिच्छदकामुकम् ॥ २४ ॥ अथैन  
 छिन्नघन्वानं शरैः सन्नतपर्वामः अभ्यवर्षदमे यात्मा वृष्ट्यामेघ इवाचलम् ॥ २५ ॥  
 सारथिं चास्य भलेन रथनीडां पातयत् । अयास्य चतुरो बाहांश्चतुर्भिर्निशितैः शरैः  
 ॥ २६ ॥ पातयामास समरे सिंहनादं ननादच । ततो परेण भलेन हस्ताच्चाप  
 मथाच्छिनत् ॥ २७ ॥ सच्छिन्न घन्वा विरथो हताश्वो हतसारथिः । गदापाणि  
 रवारोहत् ख्यापयन् पौरुषं न हत् ॥ २८ ॥ तामस्य विशिखैस्तूर्णं पातयामास  
 भात । रथादनयकूटस्य तदद्भुत मिवाभवत् ॥ २९ ॥ ततः स विपुलं व्यर्म शत  
 चंद्रैश्च भानुमत् । खड्गच । वपुल दिव्य प्रगृह्य सुमुजो बली ॥ ३० ॥ आभदु  
 द्राघ वेगेन द्रोणस्य वधकांक्षया । आमिपार्थी यथा सिंहो वनेमचामवह्विपम् ॥ ३१ ॥

को घायल किया, तदनन्तर वह दोनों रुधिरसं भरेहुएवीर ऐसेशोभायमानहुये जैसे  
 किं वसंतऋतुमें लालफूलवाले किंशुक वृक्षशोभादेते हैं । २३ । हेराजा तदनन्तर  
 युद्धभूमि में महाक्रोधरूप द्रोणाचार्य ने बड़े पराक्रम से धृष्टद्युम्नके धनुष को काट  
 कर उसको मारे बाणों के ऐसे ढक दिया जैसे बादल वरसाकरके पर्वत को ढक  
 देता है, फिर भल्लों से इसके सारथी को रथ के नाद से गिरादिया और चारों  
 घोड़ोंकोभी चार तीक्ष्ण बाणों से पृथ्वीपर गिरा दिया, और सिंहनाद कर के दूसरे  
 बाणसे उसके दूसरे धनुषको भी गिराया । २७ । वह धनुष रथ और घोड़े सारथी  
 मृतकवाद्या धृष्टद्युम्न गदाको हाथ में लेकर अपनी वीरताको प्रकटकरता हुआ रथसे  
 उतरा उससमय द्रोणाचार्य ने बड़ी शीघ्रता से रथ से उतरनेभी नहीं पाया या कि  
 उसकी गदाको एक विशिष्ट बाणसे काटकर गिरादिया यह बड़ा अश्चर्यसा हुआ  
 तदनन्तर वह सुन्दर भुजाधारी महाबली सुवर्णकी सूर्य चन्द्रमावाली बड़ी डाल और  
 दिव्य खड्गको लेकर द्रोणाचार्य के मारनेकी इच्छासे बड़े वेग युक्तहोकर सम्मुख  
 ऐसे दौड़ा जैसे कि मांसका चाहनेवाला सिंह वन में मत्तवाले हाथीके ऊपर दौड़ता है ।

wounded Dronacharya with five arrows. Then the two bleeding  
 warriors looked like Kinshuk trees in bloom in the season of spring.  
 23 Then Dronacharya, in the excess of rage, cut down Dhrishtadyumna's bow and covered him with arrows like a hill with clouds.  
 Then he killed his chariot driver who dropped down from his seat,  
 killed all the four horses with sharp darts and with a lion's roar cut  
 down his second bow. 27. Destitute of bow, chariot, horses and  
 driver, Dhrishtadyumna leapt down from his chariot, mace in hand,  
 showing his prowess; but as soon as he had come down from his chariot,  
 Dronacharya cut the mace down from his hand with a sharp arrow.  
 All this was a work of wonder. Then that brave warrior of hand-  
 some arms, took up his huge golden shield bearing the sun and the

तत्राद्भुतमपह्याम आरुह्यजस्य पौरुषम् । लाघवंचास्त्र योमंच बलवाहोश्च भारत  
॥ ३२ ॥ यदेन शरचरैश्च वारयामास पार्यतम् । न शशाकततो गतं बलवाणां सयुगे  
॥ ३३ ॥ निवारितस्तु द्रोणेन धृष्टद्युम्नो महारथः । न्यवारयच्छरैर्घां रतांश्चमगा  
कृतहस्तपद् ॥ ३४ ॥ ततो भीमोमहाबाहुः सहस्राभ्यपतद्बली । साहाय्यकानि स  
मरे पार्यतस्य महारथिनः ॥ ३५ ॥ सद्रोणनिशितैर्वर्णै राजन् विध्यद्य सतभिः ।  
पार्यतश्च रथे तूर्णं स्वकमारो हयतदा ॥ ३६ ॥ ततो दुर्योधनो राजन् भानुमंतमचो  
व्यव । सैन्येन महतायुक्तं आरुह्यजस्य रक्षणे ॥ ३७ ॥ ततः सामहतीसेनाक  
लिंगानां जनेश्वर । भीममयुधयो तूर्णं तव पुत्रस्य शासनात् ॥ ३८ ॥ पांचाय  
मथस्तैर्यज्यद्रोणोपि रथिनां वरः । षण्णद्विपक्षी वृद्धो वारयामास संयुगे ॥ ३९ ॥  
धृष्टद्युम्नोपि समरे धर्मराजानमभ्यात् । ततः प्रयवृते युद्धं तुमुललामहर्षणम् ॥ ४० ॥

। ३१ । हे राजा वहाँ हमने द्रोणाचार्य की वीरता और अस्त्रयोग से हस्तलाघवता  
अपूर्व प्रकारकी देखी कि अकेलेनेही बाणोंकी बरसा कर के धृष्टद्युम्न को रोक  
दिया तदनन्तर उस महायुद्ध में कोई महाबली भी जाननेको समर्थ नहीं हुआ, वहाँ  
हमने बड़े रथके समीप नियत और बाण विद्यामें कुशलके समान बाणसमूहों को  
ढाकसे रोकते हुये धृष्टद्युम्न को देखा । ३४ । तदनन्तर महाबाहु पराक्रमी भीमसेन  
युद्धमें महात्मा धृष्टद्युम्न की सहायता करने वाला अकस्मात् आकूटा, हे राजा उस  
ने आतेही अकस्मात् सात बाणों से द्रोणाचार्य को घायल किया और शीघ्रही  
धृष्टद्युम्न को दूसरे रथपर सवार किया इस के पीछे राजा दुर्योधन ने बड़ी सेना  
समेत राजा कलिंगको द्रोणाचार्यजी की रक्षा के निमित्त भेजा । ३७ । तदनन्तर  
हे राजा आपके पुत्रकी आज्ञासे कलिंग देशियों की बड़ी भारी भयानक सेना  
भीमसेन के सम्मुख आई, रथियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य भी धृष्टद्युम्न को छोड़कर  
मिले हुए वृद्ध विराट् और राजा द्रुपद से युद्ध करने लगे और धृष्टद्युम्नभी युद्धमें  
धर्मराज युधिष्ठिरके पास गया तिस पीछे उस युद्धभूमि में कलिंग देशियों से और

moon, and with his celestial sword ran upon Dronacharya like a raven-  
ous lion upon a mad elephant. 31. Then we saw the matchless prowess  
and dexterity of Dronacharya's hand. He alone checked the advance  
of Dhrishtadyumna with his arrows. No warrior could enter the  
field of battle at that time. We saw Dhrishtadyumna stationed like  
a skilful warrior near his chariot, receiving the shower of arrows on  
his shield. 34. Then Bhimsen of great prowess came suddenly in the  
field of battle to help Dhrishtadyumna and wounded Dronacharya  
with seven arrows. He made Dhrishtadyumna ride another chariot.  
Duryodhan sent the king of Kaling to the help of Drona and the  
dreadful army of Kaling faced Bhim. Dronacharya too left Dhrishta-  
dyumna and faced the old kings Virat and Drupad. Dhrishtadyumna

कलिगानां च समरे भीमस्य च महात्मन । जगतः प्रक्षयकर घोररूपभयावहम् ॥४१॥  
इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि धृष्टद्युम्नद्रोणयुद्धे  
त्रिपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५३ ॥

धृतराष्ट्र उवाच ॥ तथाप्रणि समादिष्टः कालिगो घाहिनीपतिः । कथमद्भुत  
कर्माण भीमसेन महाबलम् ॥ १ ॥ चरंत गदयावीर दंडहस्तमिवांतकम् । योधया  
मास समरे कालिगः सहसेनया ॥ २ ॥ सञ्जय उवाच । पुत्रेण तव राजेंद्र सतपो  
कोमहाबलः । महत्या सेनया युक्त प्रायान्मिरथ प्रति ॥ ३ ॥ तामापततीं महतीं क-  
लिगानां महाचमू । रथाश्वनाग कलितां प्रवृहीतमहायुधाम् ॥ ४ ॥ भीमसेनः  
कलिगानाम च्छेद्धारतघाहिनीं । केतुमंतश्च नैपादि मायात सहचंदिभि ॥ ५ ॥  
तत युतापु सनुदो राजा केतुमता सह । आसन्नदरणे भीम व्यूढ नीकेषु चेंदिषु ॥ ६ ॥  
रथैरन्तक साहसै कलिगानां नराद्यप । अयुतेन गज नाच निपादैः सह केतुमान् ॥ ७ ॥

महात्मा भीमसेन से महाघोर रोमहर्षण संसारका मृत्युकारी घोररूप भयानक  
युद्ध हुआ ॥ ४१ ॥

अध्यय ॥ ५४ ॥

धृतराष्ट्र बोले कि उस आज्ञा पाने वाले कलिगके राजा ने अपनी सेना समेत  
युद्धभूमि में आकर उस अपूर्वकर्मि महा बलिष्ठ मृत्यु दण्ड समान गदा हाथ में लिये  
वीर भीमसेन से युद्ध करने को मन किया, संजय बोले हे राजेन्द्र इस रीति से  
आपके पुत्र से आज्ञा पाकर वह कलिग देशका राजा भीमसेन के रथ के पास  
माया, हे भरतवंशी भीमसेन ने घोड़े हाथी और रथों से युक्त उत्तम शस्त्रधारी  
कलिगों की बड़ी सेनाको चेदिदेशीय लोगों के साथ आते हुए देखकर केतुमान  
निपादों के राजा को घायल किया । ५ । तदनन्तर व्यूहित सेना समेत शस्त्रों  
को धारण किये अत्यन्त क्रोधयुक्त श्रुतायु केतुमान नाम निपादों के राजा के साथ  
उस युद्धमें भीमसेन के सम्मुख आया, हे महाराज कलिग देशों के राजा केतुमान ने

went to Yudhishtira and the battle between Bhim and the Kaling  
warriors was dreadful to the extreme" 41

#### CHAPTER LIV

"How did the king of Kaling, ordered by your son, come into the  
field of battle, followed by the army? How did he fight with  
Bhim the mighty warrior of matchless strength and bearer of mace?"  
said Dhritrashtra to Sanjaya, "Having got the permission of your  
son, replied Sanjaya, 'the king of Kaling approached the chariot of  
Bhim, who, seeing him approach with horses, elephants, chariots  
and the soldiers of Chedi, wounded Ketuman the king of Nishadas. 5  
Then with his army of armed soldiers, Shrutayu, accompanied with  
Ketuman the king of Nishadas, faced Bhimsen in battle Ketuman  
the king of Kalingas surrounded Bhimsen with his army consisting

भीमसेनं रणे राजन् समन्तात्पर्यवारयन्त । चेदिमास्य करुपाश्च भीमसेनपदानुगाः  
 ॥ ८ ॥ अभ्यधायेत समरे निपादान् सहराजभिः । ततः मध्वृतेयुद्धं घोरं रूपं मया  
 बहम् ॥ ९ ॥ न प्राजानन्तयोधाः स्वान्परस्परजिघांसया । घोरमासीत्ततो युद्धं  
 भीमस्यसहस्रापरैः ॥ १० ॥ यथेन्द्रस्य महाराज महत्यादैत्य सेनया । तस्य सैन्य  
 स्यसंग्रामे युध्य मानस्यभारत ॥ ११ ॥ बभूव सुमहान्शब्दः सागरस्यैव गर्जितः । अन्यो  
 न्यैरमतदायोधा धिक्पर्यतोविश्रापते ॥ १२ ॥ मर्द्दोचकुक्षितां सर्वां शय लोहितं सन्नि-  
 भाम् । योधाश्च स्वान् परान्वापि नाम्यजानन् जिघांसया ॥ १३ ॥ स्थानप्या ददत  
 स्वाथशूराः परमुज्जयाः । विमर्दःसुमहानासदिष्णानां बहुभिः सह ॥ १४ ॥ कलिगैः  
 सहचेदीनां निपादैश्च विश्रापते । कृत्वा गुरुवकारं यथाशक्त महाबलाः ॥ १५ ॥  
 भीमसेनं परित्यज्य संन्यततचेद्यः । सर्वैः कलिगैरासन्नः सन्निवृत्तेषु चेदिषु १६ ॥

बहुत हजार रथ और दश हजार हाथियों और निपादों को साथ में लेकर चारों  
 ओर से भीमसेन को घेर लिया, और भीमसेन के आगे चलने वाले चेदिमत्स्य  
 और करुप देशोंकी वासी धीर राजाओं समेत एकाएकी निपादों के सम्मुख आकर  
 वर्त्तमान हुए तिस पीछे घोर रूप भयानक युद्ध जारी हुआ, फिर एकाएकी परस्पर  
 में एक दूसरे को मारने की इच्छासे दौड़ते हुए वीरों का और शत्रुओं के साथ  
 भीमसेन का घोर युद्ध जारी हुआ, हे राजा जैसे कि इंद्रका युद्धदैत्यों की सेनाके  
 साथ होता है इसी प्रकार हे भरतवंशी युद्ध में लड़ने वाले बहुत बड़े शब्दों से  
 गर्जना करते हुए सागरके समान हुए, हे राजा इसके पीछे परस्परमें महार और घात  
 करने वाले युद्ध कर्त्ताओं ने सब पृथ्वी को मांस और रुधिर से पूरित करके शोभित  
 किया और मारने की इच्छासे अपने और पराये युद्ध कर्त्ताओं को नहीं पहिचाना  
 । १३ । फिर युद्ध में दुर्जय शूरवीरों ने अपनी सेनाके लोगों को भी शत्रुओं से मारा  
 घोड़ों का बहुतों के साथ बड़ा भारी युद्ध हुआ, हे राजा चेदि देशवाले शूरवीरोंका  
 युद्ध कलिग और निपादों के संग हुआ तब चेदिदेशी अपनी सामर्थ्य के अनुसार  
 वीरता को करके । १५ । उस भीमसेन को त्यागकर असल होगये चेदिदेशियों

of thousands of chariots, myriad of elephants and Nishadas. The  
 soldiers of Chedi, Matsya and Krosch countries with brave princes, faced  
 the Nishadas all of a sudden and a dreadful fight ensued. Bhimsen  
 fought bravely with the warriors who ran to fight and kill one an-  
 other. The descendants of Bharat roared like the ocean and the  
 fighting was as dreadful as that between the gods and asurs. The  
 brave fighters filled the land with flesh and blood and did not dis-  
 tinguish friends from foes in the heat of encounter. 13. The uncon-  
 querable warriors killed with their weapons the people of their own  
 army and the battle was furious. The soldiers of Chedi fought against  
 those of Kaling and Nishad, and having done their best the people



स्ववाहुवलमास्थाय सैन्यवर्ततपांडवः । नचञ्चाल रथोपस्थाङ्गीमसेनो महाबलः ॥ १७ ॥  
 शितैरवाकिरद्वाणैः कलिगानां वरूथिनी । कालिंगस्तु महेष्वासः पुत्रवास्यामहारथः ॥ १८ ॥  
 शक्रदेववति श्यातो जघ्नतु पांडवं शरैः । ततो भीमो महावानुर्विधुन्व नरुचिरजम् ॥ १९ ॥  
 घोषयामास कालिंगं स्ववाहुवलमाश्रितः । शक्रदेवस्तु समरे विसृजन्सायकान्वहृत् ॥  
 बभ्रान् जघान समरे भीमसेनस्य सायकैः । तं दृष्ट्वा विरथ तत्र भीमसेन मरिदमम्  
 ॥ २१ ॥ चक्रदेवोऽपि दुद्राच शरैरवाकिरन् शिवैः । भीमस्योपरि राजेन्द्र शक्र दधो महा  
 बलः ॥ २२ ॥ घवर्षं शरधर्याणि तपति जलदो यथा । इताभ्येतु रथे तिष्ठन् भीमसेनो  
 महाबलः ॥ २३ ॥ शक्र देवाय चित्तोप सर्वं शैक्याय ७१ गदाम् । स तयानिहतो राजन्  
 कालिंगं तनयो रथात् ॥ २४ ॥ विरथः सहस्रतेन जगाम धरणीतलम् । इतमारमसुतं  
 दृष्ट्वा कलिगानां जगधिपः ॥ २५ ॥ रथैरनेकसाहस्रैर्भीमस्याधारयद्दिशः । ततो भीमो

के अलग होजानेपर सब कलिंग देशियों के सम्मुख होकर पांडव भीमसेन अपने भुजावल में स्थिर होकर खड़ा रहा अर्थात् वह महाबली भीमसेन अपने रथ से नहीं हटा । १७ । और कलिंग देववासियों को भी अपने तीव्रबाणों से दक दिया तब बड़े धनुषधारी कलिंग के राजा और उसके पुत्र महारथी शक्रदेवने बाणों से भीमसेन को घायल किया तदनन्तर अपने भुजवल से रचित सुन्दर धनुष को हिसाते हुए महाबाहु भीमसेन ने राजा कलिंगको लड़ाया और युद्ध में अनेकबाण छोड़ते हुए शक्रदेवने भीमसेन के चारों घोड़ों को मारा फिर शक्रदेव उस शत्रुहन्ता भीमसेनको विरथ देखकर अपने तीक्ष्ण बाणों से दकता हुआ उसके सम्मुख दौड़ा फिर महाबली शक्रदेवने भीमसेन के ऊपर बाणों की ऐसी बरसाकरी जैसे वर्षा ऋतु में मेघ जल को बरसाता है मृतक घोड़ों के रथपर चढ़े हुए महाबली भीमसेन ने । २३ । अपनी लोहेकी गदाको शक्रदेव के ऊपर फेंका हे राजा कलिंग के राजा का पुत्र उस गदासे मरकर ध्वजा और सारथी समेत रथसे पृथ्वी पर गिरा कलिंग देशके महारथी ने अपने पुत्रको मरा हुआ देखकर । २५ । हजारों रथों समेत

of Chedi left Bhimsen to fight alone. At this, Bhimsen the Pandav faced the armies of Kaling and stood firmly fighting in his own chariot. 17. He covered the Kalingas with his arrows. Then the great archer king of Kaling and his brave son Shakra dev wounded Bhimsen with their arrows. Bhim, protected by the strength of his own arms alone, fought with the king of Kaling. Shakra dev killed all the four horses of Bhimsen with his arrows and seeing him destitute of the use of his chariot covered him with his arrows like a shower of rain. Bhimsen, mounted on his chariot with the horses dead, hurled his mace at Shakra dev. The son of the king of Kaling, struck by that mace, fell down dead upon earth together with the banner and driver. Then the warrior king of Kaling, seeing his son dead, 25, checked

महावेगां द्युःखायुगीं महागदम् ॥ २६ ॥ निर्लियु माददे घोर चिकीर्षुः कर्म  
 वारुणम् । अर्म व्याप्रतिमं राजन् न र्पमं पुरुषर्पम् ॥ २७ ॥ नक्षत्रैर्द्वन्द्वैश्च दातकुम्भ  
 भयैश्चितम् । कालिमस्तु ततः कुदो घनुर्ज्यामघमृज्यच ॥ २८ ॥ प्रगृह्य च शरघोर मेकं  
 सर्पं विषोपमम् । प्राहिणोद्गोमसेनाय वधाकांक्षी जनेश्वरः ॥ २९ ॥ तमापतन्तं धेगेन  
 प्रेरितं निशितं शरम् । आमसतो द्विधाराजं विच्छेद विपुलासिना ॥ ३० ॥ उदकोदावच  
 सेहृष्टासयानो वरुधिनीम् । कालिमोपततः कुदो भीमसेनाय संयुगे ॥ ३१ ॥ तोमरान्  
 प्राहिणोच्छोर्ध्वं घनुर्देश शिला शितान् । तानप्राप्तान महाबाहुः खगतानेव पाण्डवः ३२ ॥  
 विच्छेदसहसाराजन् मसघ्रातो वरासिना । निहृत्य तु रणे भीमस्तोमराग्नौ चतुर्दश ३३  
 भानुमन्तं ततो भीमः प्रादवत् पुरुषर्पम् । भानुमांस्तु ततो भीमं शरवर्षेण च्छादयन्  
 ॥ ३४ ॥ ननाद बलवद्भादं भादयन् नो नभस्तलम् । न च तं मम्ये भीमः सिंहनादं महाह  
 ये ॥ ३५ ॥ ततः शब्देन महता विनन द महास्पनः । तेन नादेन विप्रत्ता कलिगानां

भीमसेनकी दिशाओं को रोका तदनन्तर हे राजा पुरुषोत्तम भीमसेन ने गदाको  
 छोड़कर अनुपम खड्ग और दानको हाथमें लिया वह दान सुनहरी नक्षत्र और अर्धचन्द्रों  
 से जड़ित थी तदनन्तर क्रोधमें आकर राजा कालिंग ने घनुषकी ज्याकी चढ़ाकर सर्पके  
 विषके समान एक महाघोर बाणको लेकर मारनेकी इच्छाकरके भीमसेनके ऊपर फेंका  
 । २९ ॥ हे राजा उस गिरतेहुए विष संयुक्त बाणको भीमसेनने अपने खड्गसे दो खण्ड  
 कर दिये । ३० ॥ और आपकी सेनाको भयभीत करता हुआ बड़ा मसन्नचित्त बड़े  
 शब्द से पुकारा तदनन्तर राजा कालिंग ने महाक्रोधित होकर शीघ्र ही भीमसेनके  
 ऊपर शिलासे तीक्ष्ण कियेहुए चौदह तोमरोंको फेंका तब भीमसेन ने अपने उत्तम  
 खड्ग से समीप में न पहुँचने वाले उन तोमरों को बीचही में काट दहे पुरुषोत्तम वह  
 भीमसेन उस पुष्टमें चौदह तोमरों को काटकर समीप आपे हुए भानुमन्तके सम्मुख  
 दौड़ा तदनन्तर भानुमन्त तीरों की वर्षासे भीमसेन को ढककर आकाश  
 और पृथ्वी को शब्दायमान करके महाशब्द का करनेवाला हुआ तब भीमसेन उस  
 सिंहनादको न सहकर अपनी महागर्जना करके गर्जा कलिग देशों की सेना उस

Bhimson, on all sides with thousands of chariots. Then Bhim the  
 best of men left his mare and took up the matchless sword and the  
 shield decked with gold stars and half moons. The king of Kaling,  
 in great anger, shot from his bow an arrow dreadful like a venomous  
 serpent, but Bhimson cut it down with his sword. 30. And causing  
 fear in your army he uttered a loud roar with a cheerful heart. Then  
 the king of Kaling, in the excess of anger, shot Bhim with fourteen  
 sharp arrows, but Bhimsen cut them all with his sword before they  
 had touched him. Having cut those fourteen arrows, Bhim attacked  
 Bhanumant who was near. The latter covered Bhim with arrows and  
 filled the earth and firmament with his roar. Unable to bear that roar,

पृथ्विनी ॥ ३६ ॥ नभसि समरे मेने मानुष भरतर्षभ । ततो भीमो महाबाहुर्नर्दित्वापि  
 पुल इव नम ॥ ३७ ॥ सातवैगयदाप्लुत्य दन्ताभ्यागारणोत्तमम् । आरुरोह ततोमन्य  
 नागराजस्य मुरिष ॥ ३८ ॥ ततो मुमोच कालिंग शक्तिमकरोद्गच्छा । खड्गेन  
 पृथुनामध्ये मानुमन्त मधाच्छिनत् ॥ ३९ ॥ सौतरायुधि न हत्वा राजपुत्रमर्दिम । मुह  
 भारसह स्कन्धे नागस्यासि मपातयत् ॥ ४० ॥ छिन्नस्कन्ध सविनन्दन् पपातगजेष्व  
 प । आरुण सिंधु धेगेन सानुमानिव पर्वत ॥ ४१ ॥ ततस्तस्मादवप्लुत्य गजान्द्वारतं  
 भारत । खड्गपाणरदनात्मा तस्थौ भूमौ सुदक्षित ॥ ४२ ॥ सचञ्चलवह्नन्मार्गो नभि  
 त पातयन्गजान् । अग्नि चक्र मिवाविद्ध सर्वतः प्रत्यदृश्यत ॥ ४३ ॥ अथ वृद्धेपुनागे  
 पुरधानीकेषु चा भिम् । पदातीनाञ्च सधेषु त्वनिघ्नश्शोणितो हित ॥ ४४ ॥ इत्येवम्

शब्द से भयभीत हुई । ३६ । हे पुरुषोत्तम धृतराष्ट्र युद्ध में सर्वों ने भीमसेन को  
 मनुष्य नहीं माना इसके पीछे भीमसेन बड़े उच्चशब्द को करके, खड्ग समेत  
 महावेगसे दौड़कर हाथी के दांतों के द्वारा उत्तम हाथीपर चढ़ गया और शीघ्र ही,  
 हाथीकी पीठपरहोगया, फिर बड़ेखड्गसे भानुमन्तकी कमरको काटकर उस  
 शत्रुहन्ताने युद्धभूमि में उस राजकुमार को मारकर बड़े भारी खड्ग को हाथीके कंधेपर  
 गिराया उसके महारसे वह गजराज हाथीपृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा ॥ ४० ॥ जैसे कि रत्नों  
 से प्रकाशित पहाड़ समुद्र के वेग से टूटकर गिरपड़ता है हे भरतवंशी वह महाबली  
 भीमसेन गिरते हुए हाथी से कूदकर हाथ में खड्ग लिये महा अलंकृत बाणयुक्त  
 प्रसन्न मन होकर पृथ्वी पर नियत हुआ और निर्भय होकर अनेक हाथियों को  
 गिराता हुआ बहुतसे मार्गों में घूमा । ४१ । फिर वह समर्थ घोड़ों के हाथियों के  
 और रथोंके समूहों में सब ओर से गोल अग्नि के समान दिखाई दिया, महाबली  
 भीमसेन उस युद्धभूमि में पक्षीरूप पदातिर्यों के समूहों में बाज पक्षी के समान सब  
 को मारता और घूमता दृष्ट पड़ा, फिर वह बड़ा वेगवान् भीमसेन तीक्ष्ण धार वाले

Bhim roared a louder roar and terrified the Kalingas 36. From the  
 prowess of Bhim in battle people regarded him as superhuman.  
 Having uttered the dreadful roar, Bhim ran sword in hand, and  
 mounting the elephant by the tusks cut asunder the body of  
 Bhanumant at the waist. And having killed the prince in the field  
 of battle Bhimsen let his sword fall over the elephant's shoulder.  
 With that blow the elephant fell to the ground (10) like a gem  
 bedecked mountain by the action of the sea. Bhim of great prowess  
 leapt down from the shoulder of the falling elephant and sword in  
 hand stood on earth with a cheerful mind. He fearlessly cut down  
 several elephants and roamed through many paths. 12° That capable  
 warrior, roaming through horses, elephants and chariots seemed like  
 a circle of fire. Bravo Bhimsen looked like a hawk entering and

अथचरन्नीमो रणेऽरिपुत्रलोकटः । छिदस्तेषांशराणि शिरांसिच महाबलः ॥ ४५ ॥  
 खड्गेन शितघरेण संयुगे गजयोधिनाम् । पदातिरेकः संकृद्धः शत्रूणां भयवर्द्धनः ४६ ॥  
 संमोहया मास खतान् कालांतक यमोपमः । मूढाश्च ते तमे वाजौ विनदन्तः समाद्र-  
 वन् ॥ ४७ ॥ सास मत्तम वेगेन त्वचरन्तं महारणे । निहृत्य रथिनां चाजौ रथेषाथयुगा-  
 निच ॥ ४८ ॥ जघान रथिनश्चापे बलवान् रिपु मर्दनः । भीमसेनश्चरन्मार्गान् सुगहन-  
 प्रायदृश्यत ॥ ४९ ॥ भ्रांतमाविद्ध मुहुर्भ्रांतं माप्लुतं प्रयत्नं प्लुतम् । संपातं समुदीर्घं च  
 दशयामास पाण्डवः ॥ ५० ॥ क्रेचिदग्रासिनाच्छिन्नाः पांडवेन महात्मना । विनेदुर्भिन्न-  
 मर्माणो निपेतुयगतासवः ॥ ५१ ॥ छिन्नदन्ताग्रहस्ताश्च भिन्नकुम्भास्तथा पर । वियोधाः  
 स्वान्यर्ताकानि जघनुर्भारतयारणाः ॥ ५२ ॥ निपेतुं रुध्यां च तथा विनदन्तो महारथान् ।

खड्ग से उन युद्धकर्त्ता हाथियों के सवारों के शिर और देहोंको काटता हुआ  
 देखने में आया । ४५ । शत्रुओंके भय उत्पन्न करनेवाले अत्यन्त क्रोधरूप मृत्युके  
 समान पदाती अकेले भीमसेनने उन सब शूरवीरोंको मोहितकिया, उसमहाभारी युद्ध  
 में हाथमें तीक्ष्ण खड्ग को लिये वड़े वेगवान् भीमसेनको घूमता हुआ देखकर सब  
 लोग अत्यन्त व्याकुल और अचेत होकर पुकारते हुए भागे, फिर शत्रुहन्ता पराक्रमी  
 भीमसेन ने युद्ध में रथियों के रथ जुए आदि को काटकर रथियों को भी मारा  
 । ४८ । ओह बहुत मार्गों में घूमता हुआ दिखाई दिया हे भरतवंशी फिर भ्रांत उर्-  
 भ्रांत आविद्ध आप्लुत प्रम तेस्त्य संपात समुद्ररण अर्थात् घुमाना जंवाघुमानां देहा  
 घुमाना शरीर में लपकरना झुकेपर झुकाना सब खड्ग का महार वड़े बलसे मारना  
 क्रमसे इन सब दशाओं को दिखाया हे राजा कितनेही शूरवीर भीमसेन के खड्ग  
 के अग्रभाग से कटगये और दूटे कचवाले गर्ज २ कर मरगये इसीप्रकार से हे  
 राजा दांत और मूठों की नोक दूटे मस्तक फटे चोट खायेहुए शूरवीरोंसे रहित हाथियों  
 नेभी अपनी ही सेनाको मारा और वड़े भारी शब्दोंको कांके वह सब पृथ्वीपर गिरपड़े  
 । ५२ । और हे राजा कटेहुए तोमर वा वड़े भारी शिर वा सुवर्णसे जाटित परशे वा सुवर्ण से

killing the foot soldiers like a flight of birds. Then he was seen  
 cutting asunder the heads and bodies of the elephant riders. 45.  
 Terrifying the enemy, that angry figure like Death, Bhimsen alone  
 made all the warriors insensible. With the sharp sword in his hand,  
 in the field of battle, Bhimsen was the terror of all the warriors.  
 They ran away from him crying for fear. Bhimsen of immense  
 prowess cut asunder the yokes of chariots and killed the charoteers.  
 48. Roaring through many paths and performing various feats with  
 his sword, Bhimsen cut down numerous warriors who fell dead  
 crying, pierced through their armour. The elephants with their tusks,  
 trunks and heads cut and broken and destitute of their riders fell  
 upon their own army and fell down on earth with hideous cries. 52.  
 We saw the weapons, heads, golden axes, the gem bedecked trappings

छिन्नाश्वतोमरान् राजन् महामात्रशिरांसि च ॥ ५३ ॥ परिस्तोमोन्विचिन्नाश्व कक्ष्या  
 श्वकनकोज्ज्वलाः । प्रैवेयाण्यथ शक्तीश्च पताकाः कणपास्तथा ॥ ५४ ॥ तूणीरानुप  
 यंत्राणि विचित्राणि धनुषि च । मिदिपालानि शुभ्राणतोत्राणि चांकुशैः सह ॥ ५५ ॥  
 घटाश्च विविधैः राजन् ह्रमगभान्सरूनि च । पततः पातताथैव पश्यामः सहसादिभिः  
 ॥ ५६ ॥ छिन्नगात्राश्च करैर्निहतैश्चापि चारणैः । आसीद्भूमः समास्तीर्णापतितैश्चरैः  
 रव ॥ ५७ ॥ विमृष्टैव महान् गान् ममर्दान्याग्महाबलः । अश्वारोहवरांश्चैव पातया  
 मास संयुगे ॥ ५८ ॥ तद्घोरमभवयुद्धं तस्य तेषां च भारत । खलूनाभ्यय योक्ताण  
 कक्ष्याश्वकनकोज्ज्वलाः ॥ ५९ ॥ परिस्तोमाश्च प्रासांश्च ऋष्टयधमहाघनाः । कवचा  
 न्ययधर्ममाण चित्राण्यास्तरणानि च ॥ ६० ॥ तत्र तत्रापविद्धानि षष्टदंष्टमहाह्वे ।  
 प्रासैर्यत्रैर्विचित्रैश्च शस्त्रैश्च विमलैस्तथा ॥ ६१ ॥ सचक्रेवसुधांकीर्णो शयलैः कुसुमैरिव ।  
 आप्लु-यरापतः कांथत्पराभूदथ महाबलः ॥ ६२ ॥ पातयामास गङ्गेन सध्वजानपि

जटित स्वच्छभूलें वा ग्रीवाके भूषण हाथियों की भूषणों समेत पताका वा तूणीर यन्त्र  
 विचित्र धनुष वा श्वेत वर्ण के अग्निदण्ड वा अंकुशों से युक्त चावकोंको वा  
 नानाप्रकारके घंटे और सुनहरी खड्गों की मूठोंको भी, सवारों समेत गिरेहुए और  
 जहां तहां पड़ेहुओं को देखताहूं जिनके अंग और आगे की संह के भाग कटगये  
 और जो मरभी गये उन हाथियों से वह पृथ्वी ऐसी होगई जैसी कि गिरेहुए पहाड़ोंसे  
 होजाती है, उस नरोत्तम ने इसप्रकार बड़े २ हाथियों को मारकर घोंड़ोंको भी  
 मर्दन किया । ५७ । और घोंड़ों के उत्तम २ सवारों को भी मारकर गिराया है  
 भरतर्षभ तेरे पुत्रों का और पाण्डव लोगों का वह महा घोर युद्ध हुआ, विचित्र  
 लगाम और उत्तम मुखर्य से मीढत भूलें परसे तोमर प्रास दुधारेखड्ग कवच दालें  
 और अनेक रत्नवाले विस्तर यह सब उस महायुद्ध में जहां तहां कटेहुए बहुभूल्यके  
 दिखाई दिये । ६० । इसके विशेष उसने विचित्र पोथयन्त्र और स्वच्छ खड्गोंसे  
 भी पृथ्वी को ऐसा न्यास करदिया कि जैसे कमलोंसे शवल न्यास होताहै, महाबली  
 पांडव भीमसेनने सेनामें जाके कितनेही रथियोंको मर्दनकरके खड्ग से ध्वजाधारियों

and neck ornaments of elephants, banners, quivers, machinery bows  
 of sorts, fire weapons, goads, whips, bells, swords with gold  
 handles and riders fallen down on earth here and there. With the  
 carcasses of elephants the ground looked as if it was strewn over with  
 hills That best of men cut and killed the elephants and horses. 57.  
 He killed the best riders as well. Thus the battle was dreadful bet-  
 ween your sons and the Pandavas. Various sorts of bridles, golden trap-  
 pings, battle axes, tomars, prases, double edged swords, arrows, shields  
 and gem bedecked beds of great value were seen lying cut and mangled  
 here and there. 60. Besides these the ground was strewn with  
 other weapons and bright swords like lilies on a tank. The Pandav  
 Bhimsen of great prowess entered the lists and cut down the chariot-

पांडवः । मुहुःकपतनो दिशुषावतथ यशस्विनः ॥ ६३ ॥ मार्गोद्यचरतधिप्रोध्यस्मयंत-  
 रणेजनाः । ससधानपदाकांषेद्व्याक्षिप्यान्यानपोद्यत् ॥ ६४ ॥ सद्यगे गाण्यावक्षिण्डे  
 दनादेनाग्वांश्च भीषयन् । ऊरुवेगेन व्याप्यन्यान्पातयामास भूतले ॥ ६५ ॥ अपरचैनमा  
 लोक्य भयात्पञ्चैव मागताः । एवंसा बहुला सेना कलिगानां तराह्वनाम् ॥ ६६ ॥  
 परिधाय रणे भीष्म भीमसेन मुपादधत् । ततः कालिंग सैन्याणां प्रमुखे भरतर्षभ ६७ ॥  
 श्रुतायुष मभिप्रेक्ष्य भीमसेनः समभ्ययात् । तमायांत मभिप्रेक्ष्य कालिंगो नवमिः शरैः  
 ॥ ६८ ॥ भीमसेन ममेयात्मा प्रत्यविष्यस्तनांतरे । कालिंगाणां मि हतस्तोत्रादित  
 इवाक्षयः ॥ ६९ ॥ भीमसेनः प्रजज्वाल क्रोधेनाग्निर्धैधितः । अभाशोकः सनादाय  
 रण्येभ्य परिहृतम् ॥ ७० ॥ भीमसेनादयामास रथेन रथसारथिः । तमाह्वय रथं तर्ण  
 कौतियः शत्रुसदनः ॥ ७१ ॥ कालिंगमामं दुद्राव तिष्ठतिष्ठेति चाग्रवीत् । ततः श्रुतायु  
 कौभी गिराया, युद्ध में उस उग्र रूपके बारम्बार इधर उधर दिशाओं में गिरते  
 दौड़ते और विज्रमार्गों में घूमतेहुये जो देखके मनुष्य बड़े आश्चर्य में हुये, कितनोंको  
 तोचरणोंहीसे मारा किलीको खेंचकर मारा । ६३ । किसीको खड्गसे मारा किसी  
 को शब्दसे भयभीत किया, किसीको जंघाओंके वेगसे पृथ्वीपर गिरायाइन सब बातोंको  
 देखतेहुये अन्यलोग बड़े भयातुर होकर भागगये, इसरीतिसे मरीकुट्टेविगवन्त्रकलिगदेशि  
 योंकी बड़ीसेना युद्धमें भीष्मजीको मध्यवर्ची करके भीमसेन के सम्मुख दौड़ी, तदनन्तर  
 भीमसेन कलिगक्री सेनाके आगे श्रुतायुषको देखकर उसके सम्मुख गया उस बड़े  
 बुद्धिमान् कलिगदेशीने भीमसेनकी आताहुआ देखकर नवतीरोंसे हृदयके मध्य में  
 घायल किया, अंकुशसे पीड़ित हाथीके समान बाणोंसे घायल भीमसेन क्रोधसे  
 ऐसा अग्निरूप होगया जैसे कि इंधनसे अग्नि प्रज्वलित होती है, तदनन्तर रथियों  
 में श्रेष्ठ अशोकने सुनहरी अंगवाले रथको सायनेकर भीमसेनको सवार करवाया  
 शत्रुहन्ता भीमसेन बड़ी शीघ्रता से उसरथ पर चढ़कर । ७० । श्रुतायुषके सम्मुख  
 दौड़ा और तिष्ठतिष्ठ शब्दको कहा, तदनन्तर अपनी इस्तलाघवताको दिखातेहुये

ceers and banners with his sword. Seeing that dreadful form again and again falling, running and roaming in various paths, the people were much amazed. Some he killed with his feet, others he dragged down to death. 63. Some he killed with his sword, others he frightened with his roar. Some he hurled down with the velocity of his legs, others fled in terror at the sight of these atrocities. Thus destroyed and cut down, the large army of the Kalingas, with Bhishma at their head, rushed upon Bhim. Seeing Shrutayush in front of the Kaling army, Bhim came upon him. That wise Kalinga, seeing Bhimsen coming towards him, wounded him in the middle of the breast. Like an elephant wounded by goad, Bhimsen wounded by the arrows, flew into a rage, as fire burns with dry wood. Then Ashok the best of warriors caused Bhimsen to mount a golden chariot.

धैर्यवान्भीमपनिशितान् शरान् ॥ ७२ ॥ प्रपंथा मास संक्रुद्धो दर्शयन् पाणिलाघवम् ।  
सकार्मुकवरोत् सृष्टेः चभिर्निशिनैः शरैः ॥ ७३ ॥ समाहतो महाराज कालिंगेन महा-  
त्मना । संचुक्रुशे भृशं भीमादेऽदाहतश्वांगः ॥ ७४ ॥ क्रुद्धश्चापमायम्य पलपद्मलिनां  
धरः । कालिंगमवधीत् पापं भीमः सप्तभि रायसैः ॥ ७५ ॥ क्षुराश्यां चक्ररक्षौ च  
कालिंगस्य महावली । सत्यदेवं च सत्यचक्राहणोद्यमसादनम् ॥ ७६ ॥ ततः पुनरमे-  
यात्मा नाराचैर्निशितैस्त्रिभिः । केतुमंतरणे भीमो गमयद्यमसादनम् ॥ ७७ ॥ ततः कलि-  
गाः संक्रुद्धा भीमसनममर्षणम् । जनीकैर्वहसाहसैः क्षत्रियाः समवारयन् । ७८ ॥  
ततः शक्तिगदा खड्गतोमरार्ष्टि परश्वधैः । कालिंगाश्च ततो राजन् भीमसेनमवाकिरन्  
॥ ७९ ॥ संनिवार्य सतां घोरांश्चरवृष्टिं समुत्थिताम् । गदामादाय तस्मात्सनिपत्य महा-  
बलः ॥ ८० ॥ भीमः सप्तशतान् घोराननयद्यमसादनम् । पुनश्चैव द्विसाहस्रान् कालिंगान्

महाक्रोध रूप बलवान् श्रुतायुषने वड़े तीक्ष्णबाणोंको भीमसेनके ऊपर फेंका, हेराजा  
श्रुतायुषके उत्तमधनुषसे छुटेहुये तीव्रनवबाणोंसे घायल महावली भीमसेन ऐसामहाक्रो-  
धितहुआ जैसे कि लकड़ीसे घायल सर्प क्रोधित होता है, पराक्रमियोंमें भेष क्रोधित  
भीमसेन ने वड़े भारी धनुषको चढ़ाकर, सातलोहेके बाणोंसे श्रुतायुषको मारा ७४। और  
बाणों सेही श्रुतायुषके दोनों महावलीपायोंके रक्षकसत्यदेव और सत्यको यमलोक  
भेजा । ७५ । इसके पीछे महा साहसी भीमसेन ने तीव्रनाराचोंसे केतुमन्तको यम  
लोकमें पहुंचाया फिर कलिग देशी क्षत्रियों ने अत्यन्त क्रोधित होकर हजारों  
सेनाओं से उस क्रोधित भीमसेन को लड़ाया तदनन्तर हे राजा सैकड़ों कलिग  
देशियोंने घरछी गदा खड्ग तोमर दुधाराखड्ग और परशों के डारां भीमसेन को  
रोका, तब भीमसेन ने उनको और उनके बाण समूहों को बहुत अच्छी रीति से  
रोककर, गदाहाथ में छिये बड़ी तीव्रतासे दौड़कर सातसौ वीरोंको यमलोक में  
पहुंचाया । ८० । फिर उंसी शत्रुहन्ताने कलिग देशियों के दोहजार वीरों को

Bhim attacked Shrutayush with a cry of 'stand stand' Then showing  
his skill of hand Shrutayush in great anger wounded Bhimsen of great  
prowess with his arrows. This made Bhimsen angry like a serpent  
hit by a stick. Bhimsen of great prowess in the excess of anger, pi-  
erced Shrutayush with seven steel arrows shot from his huge bow. 74.  
With two arrows he killed Satyadev and Satya the two powerful  
guards of Shrutayu. 75. Then with three sharp arrows Bhimsen  
of great prowess killed Ketumant. The kshatriyas of Kaling attacked  
Bhimsen in great numbers and hurled at him hundreds of spears,  
maces, swords, tomars, double edged swords and axes. Bhimsen checked  
the shower of their weapons and arrows very bravely and rushing  
upon them, mace in hand, killed seven hundred of the Kaling warriors  
in a short time. 80. Then the destroyer of enemies killed two

रिमर्दनः ॥ ८१ ॥ ग्राहिणेन्मृत्यु लोकायतवृद्धसुत मित्रमवयत् । एवं सतान्यनीकानि  
कलिगानां पुनः पुनः ॥ ८२ ॥ विभेदसमरे तूर्णं प्रेक्ष्यभीम महारथम् । हतारोहा-  
श्चमातंगा पाङ्क्तेन कृतारणे ॥ ८३ ॥ विप्रजग्मुरनीकेषु मेघाघात इताश्च । मुदन्तः  
स्थान्यनीकानि विनन्दत शरातुरा ॥ ८४ ॥ ततो भीमो महागडः खट्वगहस्तोमहाभुजः ।  
संप्रहृष्टो महाघोरे शस्त्रप्राभापयद्वली ॥ ८५ ॥ सर्वं कालिग सैन्यानां मनीसि समकंप-  
यत् ॥ मोहश्चापि कलिगानामा विवेशपरंतप ॥ ८६ ॥ प्राकपतच्च सैन्यानि चाहता  
निचसर्वश ॥ भीमेन समरे राजन् गर्जेद्रेण्यसर्वश ॥ ८७ ॥ मार्गान् बहून् विचरता  
वाचताञ्च ततस्ततः । मुदुरपतन्मयैव संमोहः समपद्यत ॥ ८८ ॥ भीमसेन भयप्रदं

कालवश किया। यह बड़ा आश्चर्यसा हुआ, इसप्रकार उसभयानक पराक्रमी महावीर  
भीमसेन ने कर्लिंग देशियों की उन सेनाओंको युद्धमें बारंबार भगाया, और  
अतृप्त हाथियों की सवारों से रहित किया फिर वह हाथीभी वारों से पीड़ित  
होकर अपनी सेना को मारते खंदते अत्यन्त गर्जते हुए सेनाके मध्य में से ऐसे भाग  
गये जैसे कि वायु से टक्कर खाये हुए बादल इधर उधर होजाते हैं । ८३ ।  
तदनन्तर खट्वगहाथ में लिये महाबली, अत्यन्त प्रसन्न चित्त भीमसेन ने बड़े घोर  
शस्त्रको बजाकर सब कर्लिंग देवी सेना के हृदयको कंपाया, हे परन्तप धृतराष्ट्र  
कर्लिंग देशियों में मोह पैदाहुआ और सवारियों समेत सब सेना के लोग अत्यन्त  
भयभीतहुए, युद्धमें सब ओर से गर्जेंद्र के समान मार्गमें घूमते और जहाँ तहाँ सब  
दौड़ते अथवा बारम्बार उछलते भीमसेन के देखने से बड़ामोह अर्थात् बिहलता  
प्राप्तहुई । ८७ । वह सेना भीमसेन के भयसे ऐसी अत्यन्त कम्पायमान हुई जैसे  
बड़े ग्राहसे पीड़ित सरोवरहोताहै, भीमसेन से कौरवोंके भयभीत होनेसे और चारों  
ओरमे उनकर्लिंग देशियों के लौटने और भागजाने पर पाण्डवों के मेना पति ने

thousand warriors of the Kalingas, causing wonder to all. Thus, Bhimsen of dreadful deeds, again and again, routed the Kaling army and made numerous elephants riderless. The elephants, wounded by arrows, fled through the midst of the army trampling down the soldiers and shrieking, and vanished like clouds propelled by the wind. Then, sword in hand, that great warrior blew his conch in the excess of cheer and shook the hearts of the Kalingas. They became faint hearted and all the people of the army with their beasts were much frightened. Roaming like the prince of elephants in the way and running hither and thither, with occasional jumps and bounds, Bhimsen was the cause of uneasiness to all. The army trembled with the fear of Bhimsen like a lake agitated by a large crocodile. When the Kauravas were so awestruck by Bhim and the Kalingas were running away or turning back, the leader of the Pandav army



सैन्यं च समकंपत । क्षोभ्यमाणमसंवाधं ग्राहेणेव महत्सरः ॥ ८९ ॥ प्राप्तिपुत्र  
सर्वेषु भीमनाद्भुत कर्मणा । पुनरावर्तमानेषु विद्वत्सु च सद्यः ॥ ९० ॥ सर्वकालिग  
योधेषु पांडूनां च जनीपतिः । अत्र वीत् स्वान्यनीकानि युध्यध्वमिति पार्षतः ॥ ९१ ॥  
सेनापति वचः श्रुत्वा शिखण्डि प्रमुखागता । भीममेवाम्यवर्तत रथानीकैः प्रहारिभिः  
॥ ९२ ॥ धर्मराजश्च तान् सर्वां नृपजग्राह पांडवः । महतामेव वर्णेन नागानिकेन पृष्ठतः  
॥ ९३ ॥ एवं सेनायसर्वाणि स्वान्यनीकानि पार्षतः भीमसेनस्य जग्राह पार्षिं सत्यु  
र्यैवृतः ॥ ९४ ॥ नाह पंचालराजस्य लोके कश्चन विद्यते । भीम सात्यकयोऽन्यः  
प्राणेश्वरः प्रियकृत्तमः ॥ ९५ ॥ सोपश्य च कालिगेषु च रतमारसूदनः । भीमसेनं महाबाहू  
पार्षतः परवीरहा ॥ ९६ ॥ न नर्द बहुधा राजन् दृष्ट्वा सात्पत्तं रथः । शङ्खध्वौ च समरे  
सिंहनादं ननाद च ॥ ९७ ॥ सच पारावतो भवस्य रथे हेम परिप्लुते । कोविदारभ्यं च दृष्ट्वा  
भीमसेनः समाभवत् ॥ ९८ ॥ दृष्ट्वा पुनस्तुत दृष्ट्वा कालिगैः समभिदुतम् । भीमसेनम्

आज्ञादी किं तुमभी लड़ो । ९० । हे भरतवंशी शिखण्डा जिनमें उत्तमहैं वह भीमना  
सेनापति के वचन को सुनकर, प्रहारकर्त्ता रथियों समेत भीमसेन के पास वर्त्तमान  
हुई, और धर्मराज युधिष्ठिर ने मेवर्ण हाथियों की बनी सेना समेत पीछे की  
ओर से उन सबको रक्षित किया इस रीतिसे धृष्टद्युम्न सेनापति ने अपनी सव सेना  
को चलाकर अच्छे पुरुषों समेत भीमसेन के पृष्ठभाग को रक्षित किया इस लोक  
में भीमसेन और सात्यकी के सिवाय पंचालेश राजा धृष्टद्युम्न को कोई अन्य प्राणी  
से प्यारा नहीं है वह शत्रुहन्ता धृष्टद्युम्न कालिगों के मध्यमें धमते हुए महाबाहु भीमको  
देखकर सब ओर को गर्ज कर महा प्रसन्न हुआ । ९६ । फिर उनसे युद्धमें शत्रुको  
बर्जाकर महा सिंहनाद को किया तब वह भीमसेन उस कपोत के समान घोड़ों से  
युक्त सुवर्णसे मंडित रथपर कचनार वृक्षकी ध्वजा धारी को बैठा हुआ देखकर विस्वास  
युक्त हुआ और बहसाहसी धृष्टद्युम्न उन कालिग देशियोंको भीमसेन की ओर दौड़ते  
देखकर उसकी रक्षा के लिये युद्धमें घुनकर उसके पास आया तब उन महासाहसी धृष्टद्युम्न  
और भीमसेन दोनों वीरों को कालिग देशकी सेना दूरमे युद्धमें वर्त्तमान देखकर

ordered his men to make an assault. 90 The army led by Shikhandi  
the best of leaders approached Bhimsen and his fighting charioteers.  
Yudhishtir the just, with a large army of elephants, protected the  
rear. Thus Dhrishtadyumna moved his whole army and protected  
Bhim from the back. The prince of Panchal Dhrishtadyumna loved  
none so dearly as he did Bhimsen and Satyaki. Seeing Bhim the  
great warrior, roaming in the midst of the kalingas, Dhrishtadyumna  
the destroyer of enemies roared loudly with a cheerful heart. 96 He  
blew his conch in the field of battle and roared a loud roar. Bhimsen  
took courage at the sight of that warrior seated on his golden chariot  
drawn by horses of the colour of pigeons with his banner lifted high  
on a Kachnar tree. Seeing the Kalingas with Bhimsen running in

मेघात्मा आणायाजो समन्वयात् ॥ ९९ ॥ तौ दूरात् सात्यकिं वृष्ट्वा धृष्टद्युम्नं वृकोदरो ।  
 कलिगान् समरेवीरो योधयेतामनन्विनौ ॥ १०० ॥ स तत्र गत्वा शैनेया जघेनजयतां  
 चर । पार्थपार्यतयोः पार्णि जग्राहपुरुषपर्म ॥ १०१ ॥ स कृत्वा दारुणं कर्म प्रगृहीत  
 शरासन आस्थितो रौद्र मात्मानं कलिगानन्ववैक्षत ॥ २ ॥ कलिगं प्रमथाच्चैव मांसशो  
 णितकर्दमा- । रुधिरस्येदिनीं तत्र भीमं प्राजतयन्नदी ॥ ३ ॥ अन्तरेण कलिगानां पाद  
 बामांश्च याहिनीं । तासस्तत्वारुदुस्तरां भीमसेनोः महाबल ॥ ४ ॥ भीमसेन तया वृष्ट्वा  
 माक्रोरास्तापकानृप । कालौघं भीमरूपेण कलिगैः सह युद्धयते ॥ ५ ॥ तत शान्तवो  
 भीष्मः सुखात् निनदरणे । अभ्यधात्वारितो भीमव्यूहानीकं समततः ॥ ६ ॥ तंसात्य  
 किर्भीमसेनो धृष्टद्युम्नश्च पार्षित । अभ्य द्रवत भीमस्य रथं हेमपरिष्कृतम् ॥ ७ ॥

महा-अभूति हुई फिर उस शीघ्रगामियों में भेष्ट सात्यकि ने वहां जाकर भीमसेन  
 और धृष्टद्युम्नकी पृष्ठकोरासेत किया और वही धनुषधारी सेना को मारकर भयानक  
 रूपमें नियतहुआ और भीमसेन ने कलिग देशियों से उत्पन्न रुधिर रूपकीचसे भरी  
 हुई, रुधिर के बहने वाली नदीको जारी किया इसी अन्तर में महाबली भीमसेन  
 कलिगदेशीयऔरपांडवोंकी महादुर्गम सेनाको अच्छेप्रकारसे तरगया ॥ १०१ ॥ हेराजा  
 तब तुम्हारी सेना के लोग भीमसेनको देखकर पुकारे कि यह काल पुरुष भीमरूप  
 से कलिग देशियों के साथ छड़ता है तदनन्तर शान्तनु भीष्मजी युद्धमें उस शब्दको  
 सुनकर सेनाको चारों ओरसे तयार करके वही शीघ्रता से सेना के सम्मुख आये  
 उनको आते हुये देखकर सात्यकी व भीमसेन और धृष्टद्युम्न भीष्मजी के रथके  
 सम्मुख दौड़े और सबो ने वही शीघ्रता से गंगा पुत्र भीष्मजी को चारों ओरसे  
 घेरकर तीन शीघ्रगामी बाणोंसे घायल किया ॥ १०२ ॥ फिर आपके पिता देवव्रतभीष्मजी  
 ने उन सब उपाय करनेवाले बड़े धनुष धारियों को सीधे चमने वाले तीन बाणों

their midst, brave Dhrishadyumna entered the list of warriors and came to the help of Bhim. The Kalng army was exceedingly terrified at the sight of those two great warriors, Bhim-en and Dhrishadyumna. Satyaki, the foremost of agile warriors, protected the two warriors on the back and stood there killing the enemies from behind. Bhim produced a stream of blood from the bodies of the Kalinga warriors and crossed over the impregnable armies of the Pardavas and Kalingas, 102. Then the people of your army cried out, "This dreadful warrior Bhim brings death to the Kaling warriors." Hearing these words in the field of battle, Bhishma rallies his forces from all sides and led them there. Satyaki, Bhim-en and Dhrishadyumna ran on to meet the chariot of Bhishma as soon as they saw him. With great rapidity they surrounded the son of Ganga on all sides and each of them pierced him with three sharp arrows. 106. Then your father

परिचायितु ते सर्वे गांगेय तरसारणे । त्रिभास्रभिः शरैर्घोरैर्भीममानर्जुनो जसा ॥ ८ ॥  
 प्रत्यधिभ्यत तान् सर्वान् पितादेव व्रतस्तव । यतमानान्महेष्वासंखिभिर्हिमतीजह्मैः  
 ॥ ९ ॥ ततः शरसहस्रेण सखिवार्यं महारथान् । हयान् कांचनसन्नाहान् भीमस्य  
 न्यहनच्छरैः ॥ १० ॥ हताश्वे सरये विष्टन् भीमसेनः प्रतापवान् । शक्तिचित्तोप  
 तरसागांगेयश्च रथं प्रति ॥ ११ ॥ अप्राप्तामथ तां शक्तिं पितादेवं व्रतस्तव । त्रिधाचि  
 च्छेदस्मरे सापृथिव्यामशीर्यत ॥ १२ ॥ ततः शैक्यायसीमुखीं प्रगृह्य बलवान्गदाम् ।  
 भीमसेनस्ततस्तूर्णं पुष्ट्युवे मनजर्पभ ॥ १३ ॥ सात्यकोपि ततस्तूर्णं भीमस्य प्रियं का  
 म्यया । गांगेय सारथि तूर्णं पातयामास सायकैः ॥ १४ ॥ भीमस्तु निहतैस्त्रिभ्यः  
 सारथी रथिनां वरः । चाताय मानैस्तैर श्वैरपनीतो रणाजिरात् ॥ १५ ॥ भीमसेन  
 स्ततो राज्ञपयाते महाव्रते । प्रज्ज्वाल यथा वह्निर्देहन्कक्षामघोषितः ॥ १६ ॥

से घायल किया तिसके पीछे हजार वाणों से उन महारथियों को रोककर सुनहरी कवचरूप वस्त्रों से अलंकृत भीमसेन के घोड़ों को वाणों से मारा, फिर मृतक घोड़े वाले रथपर नियत मतापवान् भीमसेन ने बड़ी तीव्रतासे भीष्मजी के रथपर उग्रवरछी को फेंका ॥ १०९ ॥ फिर आपके पितादेवव्रतने उस न पहुंची हुई वरछीको बीचही में दो खंड करके पृथ्वी में गिरा दिया तदनन्तर पुरुषोत्तम भीमसेन बड़ी तीव्रता से शक्या यशी बड़ागदाको लेकर रथसे कूदा ॥ ११० ॥ और महारथी धृष्टद्युम्न उसको अपने रथपर सवार करके सब सेनाके देखते हुए दूर ले गया तदनन्तर सात्यकी ने भी भीमसेन के अभीष्ट के लिये शीघ्रही शायकों से कोरवों के पितामह भीष्मजी के सारथीको रथमें गिराया उस सारथी के मरने पर रथियों में श्रेष्ठ भीष्मजीभी वन वायु के समान शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा युद्धभूमि से दूर चले गये तदनन्तर हे राजा उस महारथी भीष्मके वरचने जाने पर भीमसेन को ऐसा महाक्रोध उत्पन्न हुआ जैसे कि वनको जलाने वाली अग्नि प्रचंडहोती है और सब कर्त्तव्य देशियों को

Devabrāt Bhīṣma wounded each of them with three sharp arrows and checking them all with a thousand arrows he killed Bhīma's horses decked with gold armour and trappings. And from his horseless chariot Bhīma hurled a dreadful spear at Bhīṣma 109. 'Your father Devabrāt cut the spear in two pieces before it had reached him. Thereupon Bhīma jumped down from the chariot with the mace in his hand. Dhṛiṣṭadyumna took Bhīma on his own chariot and went away with him farther away. To please Bhīma Satyaki killed the driver of Bhīṣma's chariot and Bhīṣma drove his horses, swift as the wind, far from the field of battle. After the departure of that great warrior, Bhīma flew into a rage like fire in a burning forest and entered the Kāṇḍya army intending to destroy all. None of your warriors could face Bhīma at that time. 116. Then Bhīma the best of the descend

सहत्वा सर्वं कालिगान् सेनामध्ये व्यतिष्ठत । नैनमभ्युत् स हन् केचित्तायकामरतपंम  
॥ १७ ॥ धृष्टद्युम्नस्तमारोऽप्य स्वस्थे रायनोवरः । पश्यतां सर्वं सैन्यानामपोवाहयत  
स्थिनम् ॥ १८ ॥ संपूज्यमानः पांचाल्यैर्मत्स्यैश्च भरतर्षभ । धृष्टद्युम्नप्रीत्युज्य समे  
यादय सात्यकिः ॥ १९ ॥ अयाग्रवीर्द्धीम सेनं सात्यकिः सत्यावक्रमः । महर्षयन्  
यदुष्माग्रो धृष्टद्युम्नस्य पश्यतः ॥ २० ॥ दिष्ट्या कालिंगः राजश्च राजपुत्रश्च केतुमान् ।  
शक्रदेवश्च कालिंगः कालिंगश्च मूचेहताः ॥ २१ ॥ रथदाडु बलघोर्येण नागाश्वरथ  
शकुलः । महापुरुष भूयिष्ठो घोरयोध निषेधितः ॥ २२ ॥ महाव्यूहः कालिंगना  
मेकेनमृदितस्त्वया । एवमुक्त्याग्निनेतादीर्घबाहुर्हृदिम् ॥ २३ ॥ रथाद्रपमाभिद्रुप्य  
पर्यव्यजत पांडवम् । ततः स्वरथमास्थाय पुनरेवमहारथः । सायकान घर्षात्कुक्षो  
भीमस्य धलमादधत् ॥ २४ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधप० द्वितीययुद्ध दिवसे कलिग रामवधे  
चतुर्पंचा शतवोऽध्यायः ॥ १२४ ॥

भारकर सेना में आगया, हे भरतवंशी आपका कोई वीर इसके सम्मुख होनेको समर्थ  
नहीं हुआ ॥ १२६ ॥ फिर भरत वंशियोंमें अष्ट भीमसेन पांचाल और मत्स्यदेशियोंसे अच्छी  
रीति प्रशंसित धृष्टद्युम्न को छोड़कर सात्यकी से मिला तदनन्तर यादवों में अष्ट  
सत्य पराक्रमी सात्यकि धृष्टद्युम्न के देखते हुए भीमसेनकी प्रशंसा करके यह  
वचन बोला कि भारव्यसे राजा कलिग और राजकुमार केतुमान् और कलिगदेशी  
शक्रदेव और अन्य सब कलिगदेशी लोग युद्धमें मारे गये सो तुम अकेलेनेही अपने  
भुजबलके पराक्रम से कलिग देशियों के घोड़े हाथी और रथोंसे संकुल महाबली  
शरवीरोंसे सेवित महाव्यूहको मरदन ॥ २२० ॥ किया, शत्रुओंका जीतनेवाला और लम्बी  
भुजावाला सात्यकी इस प्रकार कहकर उस रथपर नियत पांडवों के पास जाकर  
मिला, तदनन्तर उस क्रोधसे भरे सात्यकि ने भी आपकी सेना के मनुष्योंको मारा  
और भीमसेनकी सेना को रक्षित किया ॥ १२४ ॥

ants of Bharat, praised by the people of Matsya and Panchal,  
left Dhrishtadyumna and came to Satyaki. Satyaki of true prowess,  
the best of the Yadavas, praised Bhim in the presence of Dhrishtadyumna and said, "It was by fate that the king of Kaling, prince  
Ketuman and Shakradev and other Kalingas were killed in the field  
of battle. You alone have by the prowess of your arms killed all the  
Kalingas together with the chariots, horses and elephants." 120. Hear-  
ing this, Satyaki of long arms drove in his chariot to the Panda-  
vas and he too, destroyed the people of your army in a great rage and  
protected the army of Bhimsen. 124.

संजय उवाच । गतपूर्वाह्ण मृगिष्ठे तस्मिन्नहनि भारते । रथनागोश्च पसे नाना  
 दिनांच महाक्षये ॥ १ ॥ द्रोण पुत्रेण शल्येन कृपेणच महात्मना । समसज्जतपां  
 चाव्य स्त्रिभरतैर्महारथैः ॥ २ ॥ संलोक विदिताभ्यां प्रजिघांस महाबलः । द्रोणे  
 पांचालदायादः शितैर्वंशभिरनुगैः ॥ ३ ॥ ततः शल्य रथतूष्णे माध्याय इतवाहनः ।  
 द्रौणिपांचालदायाद मथ्यध्वं दधेपुभिः ॥ ४ ॥ धृष्टद्युम्नस्तु संयुक्त द्रौणिनावाव्य  
 भारते । सौभद्रेभ्यपतत्तूष्ण विकिरन्निशितान् शरान् ॥ ५ ॥ स शल्यं पंचविंश-  
 त्याहुणंच नवभिः शरैः । अश्वत्थामान मष्टाभिर्यव्याघ्रं पुरुषपम् ॥ ६ ॥ आर्जुनितु  
 ततस्तूष्णं द्रौणिर्विव्याघ्रं पञ्चिणो । शल्योप दशभिश्चैव कृपश्चानशितैस्त्रिभिः ॥ ७ ॥

अध्याय ॥ ५५ ॥

संजयजीसे हे भरतवंशी उस मध्याह्न के अन्त होने पर रथघोड़े हाथी और  
 सवार पैदलों के बड़े नाश होने पर धृष्टद्युम्न अकेला ही अश्वत्थामा शल्य और  
 महात्मा कृपाचार्य इन तीनों महाबलियों के सम्मुख हुआ, और बड़ी शीघ्रतासे तीव्र  
 और शीघ्रगामी बाणों से अश्वत्थामा के मसिद्ध घोड़ों को सारा तदनन्तर मृतक  
 घोड़ेवाला अश्वत्थामा बहुत शीघ्र शल्य के रथ पर चढ़कर उसी रीतिसे बाणसंयुक्त  
 होकर धृष्टद्युम्न के सम्मुख हुआ, हे भरतवंशी सुभद्रा का पुत्र अभिमन्यु अश्वत्थामा  
 से भिड़े हुए धृष्टद्युम्न को देखकर बड़े तीव्र बाणों को फेंकता हुआ शीघ्र ही सम्मुख  
 दोड़ा, और यहाँ जाकर उस अभिमन्यु ने शल्य को पच्चीस बाणों से कृपाचार्य की नौ  
 बाणों से और अश्वत्थामा को आठ बाणों से घायल किया, ६। इसके पीछे अर्जुन के  
 पुत्र अभिमन्यु को अश्वत्थामा ने एक बाण से शल्य ने बारह बाणों से और कृपाचार्य

## CHAPTER I.V

"In the afternoon," said Sanjaya, "after the great destruction of cha-  
 riots, horses, elephants and soldiers Dhrishtadyumna alone faced Ash-  
 wathama, Shalya and great Kripacharya and with great dexterity  
 destroyed the famous horses of Ashwathama. Ashwathama, when  
 his horses were killed, mounted the chariot of Shalya and faced Dhris-  
 tadyumna. Abhimanyu the son of Subhadra saw Dhrishtadyumna  
 fighting with Ashwathama and at once came there shooting sharp  
 arrows. He wounded Shalya with twenty five arrows, Kripacharya  
 with nine and Ashwathama with eight. Then, Abhimanyu, the

लक्ष्मणस्तवपात्रस्तु, सौमद्रसमवस्थितम् । अभ्यवर्तत सह एस्ततो युद्धमवर्तत ॥८॥  
 दुर्योधनि, सुसंयुद्ध, सौमद्र परवीरहा । चिन्त्यन् समरे राजंस्तद्वधुन भिवाभवत् ॥९॥  
 अभिमन्युःससंकुद्धो आतुरं भरतपंथम् । शरं पंचाशते राजन् क्षिप्रहस्तोऽभ्यवि-  
 ध्यत ॥१०॥ लक्ष्मणोपि पुनस्तस्य धनुश्छेदपुनर्णा । सुप्रवेशं महाराजततस्त-  
 चुक्रुजुजना ॥११॥ तद्विहाय धनुश्छेदं सौमद्र परवीरहा । अग्न्यादित्तैर्वाधि-  
 कामैकवेगवत्तराम् ॥१२॥ तौ तत्र समरे युक्तौ कृतप्रात कृतौपिणौ । अग्न्याग्न्यादिशि-  
 खैस्तीक्ष्णैर्जघ्नतुः पुरुषपमौ ॥१३॥ ततो दुर्योधनो राजा दृष्ट्वा पुनर्महारथम् ।  
 पीडितं तत्र योजेण प्रायात्तत्र प्रजेश्वरः ॥१४॥ सन्निवृत्तेतवसुते सर्वे एवजना-  
 वधवा । आर्जुनिर्यधंशेन समन्तार्यधवारयम् ॥१५॥ सतैःपरिवृतःशरैः शरारो-  
 यः

ने तीन, तीक्ष्णबाणों से घायल किया, फिर आपका पोता लक्ष्मण उस सम्मुख  
 आये हुये अभिमन्यु को देखकर महाकोपित होकर उसके आगे वर्तमान हुआ और  
 उन दोनोंका बड़ा युद्ध हुआ। हे राजा इसके पीछे महाक्रोधि दुर्योधन के पुत्र ने  
 युद्ध में उस सुभद्रा के पुत्रको तीव्रबाणों से घायल किया, यह आश्चर्यसा हुआ  
 हे भरतवंशिनों, मैं श्रेष्ठ फिर-उस क्रोधरूप अभिमन्यु ने अपनी इस्तलावतता से  
 क्षिप्रहीमाचसौ बाणोंसे भाई-लक्ष्मणको घायल किया ॥१०॥ फिरलक्ष्मणनेभी एकबाण  
 से उसके धनुषको सुष्ट, देश-से काटा, इसकारण से मनुष्यों ने बड़ा शब्द किया,  
 फिर वीर शत्रुहन्ता, अभिमन्युने उस दृष्टे हुए धनुषको छोड़कर बड़े वेगवान् जड़ाऊ  
 धनुषको हाथमें लिया, फिर युद्धकर्म में मृत्त दन्द्रशुद्ध करने वाले दोनों पुरुषोत्तमों  
 ने तीक्ष्णधार वाले बाणों से परस्पर एकको एकने घायल किया, इसके पीछे महा  
 राजा दुर्योधन अपने महाबली पुत्रको आपके-पोतेसे पीड़ामान-देखकर वहाँ आया  
 फिर-आपके पुत्र के अलग होजाने-पर-सब राजालोगों ने रथोंके समूहों समेत  
 अर्जुनके पुत्र अभिमन्युको रोका ॥१५॥ हे राजा युद्ध में अनेय श्रीकृष्णजी के समान

son of Arjuna was hit by one arrow of Ashwathama's, twelve of Sha-  
 lya's and three sharp ones of Kripacharya. Your grandson Laksh-  
 man, seeing the advance of Abhimanyu attacked him in great anger.  
 Both the warriors fought bravely. The enraged son of Duryodhan  
 wounded the son of Subhadra with sharp arrows and did wonders.  
 Abhimanyu was thereupon much enraged and wounded his cousin  
 Lakshman by dexterously shooting five hundred arrows at him. 10  
 Lakshman cut down the bow of Abhimanyu by an arrow to the  
 acclamation of the people. Brave Abhimanyu dropped that bow  
 and took up another, decked with gems. Both the warriors wound-  
 ed each other in battle. Prince Duryodhan, seeing his son in trouble  
 at the hands of Abhimanyu, came there and with innumerable  
 chariots the kings checked Abhimanyu the son of Arjuna. 15.

धिषुदुर्जयैः । नरुमप्रव्ययते राजन् कृष्णतुल्य पराक्रमः ॥ १६ ॥ सौमद्रमथसंकटदृवा  
तत्र धनंजयः । अभिवुद्राववेगेन प्रातुकामः स्वमात्मजम् ॥ १७ ॥ ततः सर्वनागा  
भ्यामीमद्रोणपुगेगता । अभ्यवर्तत राजानः सहिताः सव्यसाचिनम् ॥ १८ ॥  
उद्धत सहसा भीमं नागाभ्यरथपक्षिभिः । दिवाकररथं प्राप्य रजस्तोममदृश्यत ॥ १९ ॥  
तानिनाग खड्गाण भूमपाल शतानिच । तस्य बाणपथं प्राप्य नाभ्यवर्ततसर्वशः  
॥ २० ॥ प्रणेदुः सर्वभूतान वधूवुस्तिमिरादिशः । कुरुणां चानपस्तीव्रः समदृश्यत  
वारुणः ॥ २१ ॥ नाप्यं तरिक्षं नदिशो नभूमिनचमास्करः । प्रज्ज्वलेभरतश्रेष्ठ शस्त्रसंघैः  
किरीटिनः ॥ २२ ॥ सादिता रथनागाश्च हताभ्यारयिनोरणे । विप्रदुतरथाः केचि  
दृश्यते रथयूथपाः ॥ २३ ॥ विरवा रथिनश्चान्ये धावमानाः समेततः । तत्रतत्रैव  
दृश्यते सापुधाः सांगदैर्भुजैः ॥ २४ ॥ हयारोहाहयांस्त्यक्त्वा गजागोहांश्च दतितः ।

पराक्रमी शूरवीर अभिमन्यु उनंशूरों से धिरा हुआ भी व्याकुल नहीं हुआ, तदन  
न्तर अर्जुन वहाँ अभिमन्युको भिड़ा हुआ देखकर अत्यन्त क्रोधित होकर अपने पुत्रकी  
रक्षा करनेको सम्मुख दौड़ा तदनन्तर रथ घोड़े और हाथियों समेत वह राजा लोग  
जिनमें अग्रगामी भीष्म और द्रोणाचार्य थे अकस्मात् आकर अर्जुन के सम्मुख  
वर्त्तमान हुए । १८ । मनुष्य घोड़े और रथोंके चलनेसे एका एकी पृथ्वी से धूल उड़ी  
और सूर्य के मार्गको पाकर तेज दिखाई दी वह हजारों हाथी और राजा लोग उस  
अर्जुनके बाणों के मार्गको पाकर सबरीतों से सम्मुख वर्त्तमान नहीं रहे । २० । सब  
जीवजन्तु एकारे और दिशाओंमें अन्धकारहुआ और कौरवोंका अन्यायरूप भयानक  
फल उत्पन्न हुआ हे नरोत्तम मुकट धारी अर्जुनके बाणों से अन्तर्हित अर्थात् पृथ्वी  
और आकाश के मध्य में दिशा पृथ्वी और सूर्य नहीं दिखाई दिये हाथी ध्वजाओं  
से रहित हुए और असंख्यों रथी मृतक घोड़े वाले हुए और कोई महारथी ऐसे  
दृष्ट पड़े कि जिनके रथी भाग गये कहीं रथी लोग अपने रथों से रहित शस्त्र और  
वाज्यून्धों समेत इधर उधर दौड़ते हुए जहाँ तहाँ दिखाई देते थे हे राजा अर्जुनके

querable in battle, like shree Krishn in prowess brave Abhimanyu, surrounded by those warriors, did not lose heart. Seeing his son so surrounded, Arjun hastened to protect him. With chariots, horses and elephants the kings led by Bhishm and Dronacharya, opposed Arjun. 18. Men, horses and chariots, moving together, caused a storm of dust which rose to the sun. The kings with all their army of elephants could not withstand Arjun's arrows. 20. All the creatures cried out with fear and there was darkness in all directions, showing the fruit of the injustice of the Kauravas. The earth and firmament was covered with Arijun's arrows; the elephants became destitute of banners and numerous chariots lost their horses. Some warriors lost their chariot drivers others lost chariots and were seen roaming this way or that, with weapons and armour on. The riders of

अर्जुनस्य मया राजन् समंताद्विप्रदुद्बुधः ॥ २५ ॥ रथेभ्यश्च गजेभ्यश्च हथेभ्यश्च  
नराधिपाः । पतिताः पात्यमानाश्च दृश्यन्तेऽर्जुनसायकैः ॥ २६ ॥ स गदानुद्यतान्  
पाहन् स खड्गाश्च विधांपते । स प्रासांश्च स तूणीरान् स शरान् स शरासनान्  
॥ २७ ॥ सांकुशान् स पताकांश्च तत्र तत्रार्जुनो नृणां । निचक्रे शरैश्चै रौद्रं च पुरोधार  
यत् ॥ २८ ॥ परिघाणां प्रदीप्तानां मुद्गराणांच मारिष । प्रासानां भिदिपालानां  
निष्प्रिधानांच संयुगे ॥ २९ ॥ परश्वधानां तीक्ष्णानां तोमराणांच भारत । घर्मेणां  
चापविद्धानां कांचनानांच भूमिष ॥ ३० ॥ ध्वजानांच मर्माणांचैव व्यजनानांच सर्वशः ।  
छत्राणां हेम दंडानां तोमराणांच भारत ॥ ३१ ॥ प्रतोदानांच घोक्राणां कशानांचैव  
मारिष । राशयः समावृश्यन्ते चित्तिकीर्णारणक्षितौ ॥ ३२ ॥ नासीत्तत्र पुमान्क-  
वित्तश्च सैन्यस्य भारत । योऽर्जुनं समरे शूरं प्रयुधायात्कथंचन ॥ ३३ ॥ यो यो हि  
समरे पार्थ प्रयुधातिविधांपते । स संख्ये विशिष्ये स्तीक्ष्णैः परलोकापनीयते ॥ ३४ ॥

भयसे घोड़े के सवार घोड़ों को और हाथी के सवार हाथियों को त्याग करके  
चारों ओरसे भागे । २५। और बहुतसे राजासौग अर्जुनके बाणोंमें रथहाथी और घोड़ों  
से गिराये वा गिरते हुए दृष्ट पड़ते थे हे राजा अर्जुन ने जहां तहां गदा समेत उठाये  
हुए और खड्ग पराश, तूणीर बाण घनुष इत्यादि को उठाये हुए अथवा अंकुश  
और पताकाओं समेत उठाये हुए मनुष्यों की भुजाओं को अपने कराल बाणों से  
काटकर रुद्ररूप धारण किया । हे भरतर्षभ धृतराष्ट्र युद्ध में कटे हुए परिघ, मुद्गर  
प्राश, भिदिपाल खड्ग तीक्ष्ण परसे तोमर और घनुषसे काटे हुए सुनहरी कवचभी हजारों  
पृथ्वीपर पड़े हुए दृष्ट आये और सत्रप्रकारकी ध्वजा ढाल पंखे और सुनहरी दंडवाले  
छत्र तोमर चापुक कोड़े और रस्सियों के ढेरोंके ढेर युद्ध भूमि में फैले हुए दिखाई दिये  
३२। हे श्रेष्ठ आपकी सेनाका कोई मनुष्यभी ऐसा न हुआ जो युद्धमें उसगूरवीर अर्जुन  
के सम्मुख जाय हे राजा युद्ध में जो २ अर्जुनके सम्मुख जाता है वह बाणों के द्वारा  
यमपुर को भेजा जाता है सब रीति से आपके शूरों के भागजाने पर अर्जुन और बासु

elephants and horses lost their beasts and fled in different directions. 25. And many kings, hit by Arjun's arrows, were seen falling from their chariots, horses or elephants. Arjun assumed dreadful form as he cut down the hands which were in the act of raising maces, swords, quivers, arrows, bows, goads or lanners. There were seen on the field of battle thousands of dyls, maces, swords, sharp arrows and golden armour pierced through by Arjun's arrows. All sorts of banners, shields, fans and umbrellas with gold handles, whips and ropes were seen in heapson the field of battle. 32. Not a single warrior of your army could face Arjun in the field of battle. Whoever came in Arjun's way, was sent to the region of Yam by Arjun's arrows. When your army was thus routed, both Shree Krishn and Arjun sounded their good Conch shells. Your father Devabrat, seeing



तेषुविद्रवमाणेषु तवयोषेषुसर्वशः । अर्जुनो वासुदेवश्च दध्मन्तुर्वारिजोत्तमौ ॥ ३५ ॥  
 तत्प्रभमंत्र्यं दृष्ट्वा पिनादेवप्रतस्तव । अग्रवीरसमरे गूरु भारद्वाजश्मयश्रियः ॥ ३६ ॥  
 पपपांडु सुतोवीर कृष्णनसहितोवली । तथा करोति सैन्यानि यथाकुर्याद्धनजयः ।  
 ॥ ३७ ॥ गहोप समरे शत्रयो विजेतुर्हि कथंचन । यथास्यदृश्यतेरुण कालातकयमोपम  
 ॥ ३८ ॥ ननिवर्तयितुं चापि शत्रुष्य महतीचमू । अन्योन्य प्रेक्षयापश्य द्रवतीयं  
 वरुधिनी ॥ ३९ ॥ पप चास्तं गिरिध्रेष्ठ भानुमान् प्रतिपद्यते । चक्षुषि सर्वलोफस्य  
 संहरशिव सर्वथा ॥ ४० ॥ तत्रावहार सप्राप्त मन्येह पुरपरमभ । आताभिताश्च  
 नोयोधानयोत्स्यतिकथंचन ॥ ४१ ॥ एवमुक्त्वा ततो भीष्मो द्रोणमाचार्यसत्तमम् ।  
 अवहारमधोचक्रे तावकानां महारथः ॥ ४२ ॥ ततोऽवहारः सैन्यानां तवतेपाचभा  
 रतः । अस्तगच्छति सूर्येऽध्यासंध्याकालेच घर्तते ॥ ४३ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि द्वितीययुद्ध दिवसा बहारे

पंचपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५५ ॥

देवजी ने उत्तम शंखोंको बजाया फिर आपके पिता देवव्रत उस सेनाको भागाहुआ देखकर बड़ा आश्चर्य करके युद्ध में महा शूरवीर द्रोणाचार्यजी से बोले कि यह पांडु का बेटा वीर बनवान् श्री कृष्णजी के साथ में होकर उसी प्रकार सेनाओंको मारकर काटे डालताहै जैसे कि संसारी धनका विजय करने वाला करताहै अरु यह किसी प्रकारसे भी युद्ध में जीतने के योग्य नहीं है, इसका रूपशालवा अन्तक वा यमनाम मृत्युके समान दृष्ट आता है और यह वही सेनाभी नाश करवाने के योग्य नहीं है देखो, यह सेना परस्परकी सहायता से निर्बल है यह सूर्य सव रीति से सबलकों की दृष्टि को हरता हुआ पर्वतों में श्रेष्ठ अस्तचन को प्राप्त होता है हे पुरपोत्तम ऐसी दशमें मैं सेनाके विश्रामको चाहताहूँ, जो युद्धकर्त्ता भयभीत हुए थकाये हैं वह कभी नहीं लड़ेंगे महारथी भीष्मजी ने आचार्यों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य से इस रीति से कहकर आपकी सेनाओं का विश्राम किया हे श्रेष्ठ सूर्यके अस्तगत होनेपर आपसी और पांडवोंकी सेनाका विश्राम हुआ और सन्ध्यावर्त्तमान हुई ॥ ४३ ॥

the defeat of your armies made in great amazement the following remark with a hearing of brave Dronacharya — "Thus son of Pandu, accompanied by Shro Krishna, kills and destroys the armies like a winner & with death. He is in no way conquerable in battle. He looks like Yama or death in bodily form. We should not leave this large army to be thus destroyed by him. The soldiers are tired and the sun is setting down, depriving people of the use of their sight. Under these circumstances I desire the retreat of the army. The warriors who are tired or afraid will fight no longer." Having said this to Dronacharya, Bhishm sounded the retreat of the army, and as it was nearly dark, the two armies retired for the night "43.

संजय उवाच । प्रभातायांच शर्वेयी भीष्मः शांतनवस्तदा । धनीकान्यनुसयाने  
 व्यादिदेशाथभारत ॥ १ ॥ गरुडं च महाव्यूहं चक्रे शांतनवस्तदा । पुत्राणां तेजया  
 कांक्षी भीष्मः कुरुपितामहः ॥ २ ॥ गरुडस्य स्थयं तुंडे पितादेव प्रतस्तव । चक्षु  
 पीच शरद्वाजः कृतवर्मा च सात्वतः ॥ ३ ॥ अश्वत्थामा कृपाश्चैव शीर्षमास्तां वश  
 स्थिनौ । वैशम्पैयकेकेपैवाटिष्ठनैश्च संयुगे ॥ ४ ॥ भूरिश्रवाः शल शल्यो मगदस्तश्चमारिप ।  
 मद्रकाः सिंधु सौवीरास्तथा पंचनदाश्च ॥ ५ ॥ जयद्रथेन सहिता ग्रीवायां सन्निवेशिताः ।  
 पृष्ठे दुर्योधनो राजा सांदैर्यः सानुगैर्वृतः ॥ ६ ॥ विन्दानुविंदावाचन्त्यौ काम्बोजशकैः  
 सह । पुच्छ मासन्महाराज शूरसेनाथ सर्वशः ॥ ७ ॥ मागधाथ कलिगाश्च दासेरकग  
 णैः सह । दक्षिणं पक्षमास्ताथ स्थिता व्यूहस्य दंशिताः ॥ ८ ॥ कारुपाथ विकुञ्जाथ

अध्याय ॥ ५६ ॥

संजय बोले कि इसके पीछे शत्रु संतापी भीष्मजी ने प्रातःकाल के समय  
 चढ़ाई करने के निमित्त सेनाओं को आज्ञाकरी तब आपके पुत्रों की विजय चाहने  
 वाले कौरवोंके पितामह हृदय भीष्मजी ने गरुडनाम महाव्यूहकी रचा, उसमें आपके  
 पिता देवव्रत-सो गरुडकी चोंच पर हुए और भारद्वाज द्रोणाचार्य व कृतवर्मा  
 यादव यहद्वोनो नेत्रों के स्थानमें हुए और यशस्वी अश्वत्थामा और कृपाचार्य  
 शिरके स्थान में हुए और जो भूरिचर्मस्थ व केकय यह सब वारधानों में युक्त  
 थे और भूरिश्रवा शल शल्य भगदत्त मद्रक सिंधु सौवीर और पंचनदवासी लोग  
 यह सब जयद्रथके साथ ग्रीवामें नियत हुए और राजा दुर्योधन अपने सगे भाइयों  
 समेत अपने पीछे चलने वाले शूरवीरों से युक्त पीछेकी ओर नियत हुए विंद और  
 अनुविन्द अवन्तिके राजा लोग और कांबोज यह सब शकलोगों वा शूरसेन देशी  
 वीर लोगोंके युक्त गरुड की पूँछकी ओर नियत हुए । ७ और मगध देशी व कलिग  
 देशी व अक्षुर लोगोंके समूह यह सब गरुड के दक्षिण पक्षपर नियत हुए और

### CHAPTER LV1

Sanjaya continued. "Bhishma the destroyer of enemies, led his  
 armies at the break of day and desirous of the conquest over your sons  
 he arrayed the forces in the form of a bird. Your father devabhat  
 stationed himself in the place of the beak; Bharadwaj, Dronacharya  
 and Kripavarma the Yadav represented the eyes; glorious Ashwathama  
 and Kripacharya with the Trigarts, the Matsyas, the Kaikayas and  
 the Vaidhans stationed themselves at the head; Bhurishrava, Shal,  
 Shalya, Bhagdatta, and the people of Madrak, Sindhu, Sauvira and,  
 Panchand led by Jayadrath, stood at the neck. Prince Duryodhan  
 and his brothers with their attendant warriors stood on the back.  
 Vind, Annvind the princes of Avanta and Kamboj with the Shakas  
 and Shursenas stood at the tail. The armies of Magadh and Kaling

मुण्डाः कुण्डी वृषास्तथा । बृहद्वलेन सहिता धामपार्श्वं मयस्थिता ॥ ९ ॥ व्यूह  
 दृष्टातु तत् सैन्यं सव्यसाची परन्तप । धृष्टद्युम्नेन सहितं प्रय्यूहतस्युने ॥ १० ॥  
 अर्द्धचन्द्रेण व्यूहेन व्यूहं तमति दारुणम् । दाक्षिणं शूङ्गं मास्थाय भीमसेनो व्यरोचत ॥ ११ ॥ नानाशस्त्रौघं सम्पन्नैर्नादैर्द्वैर्नृपैर्वृतं । तदन्धेव विराटश्च दुपदश्च महारथ ॥ १२ ॥  
 तदनन्तरं मेघासीधीलोनीलाशुधै सह । नीलादनन्तरं च धृष्टकेतुर्महाबल ॥ १३ ॥ चेदि  
 काशिकरूपैश्च पौरवैरपि सवृतं । धृष्टद्युम्नं शिखण्डीच पञ्चालाश्च प्रभद्रका ॥ १४ ॥  
 मध्ये सैन्यस्य महतः स्थिता युद्धाय भारत । तत्रैव धर्मराजोऽपि गजानीकेन सवृतः ॥ १५ ॥ ततस्तु सात्वकी राजन् द्रौपद्या पञ्चचात्मजा । अभिमन्युस्ततः शूर इराया  
 च ततः परम् ॥ १६ ॥ भैमसेनिस्ततो राजन् केकयाश्च महारथाः । ततोभूद् द्विपदां  
 श्रेष्ठो वामपार्श्वं सुपाश्रितः ॥ १७ ॥ सर्वस्य जगतो गोप्ता गोप्ता यस्य जनार्दनः । पयः

कारुण्यं विकुंजं मुंडं कौंडी वृषं यह सब बृहद्वलसमेत वार्यें पक्षपर उपस्थित हुए ॥ ९ ॥ उस  
 युद्धभूमि में शत्रुहन्ता परन्तप अर्जुनने उस व्यूहित सेना को देखकर धृष्टद्युम्नकी  
 सलाह से उसकी समानताका अपनी सेनाकाभी व्यूहरचा अर्थात् सब पाण्डवों ने  
 आपके उसव्यूह को देखकर अर्द्धचन्द्राकार व्यूहसे अपनी भयानक सेनाको सुशो-  
 भित किया ॥ ११ ॥ और नानाप्रकार के शस्त्रोंके समूह और अनेक देशी राजा लोगों  
 से युक्त भीमसेन दाहिने गृणपर नियतहोकर शोभायमानहुआ, उसीके पीछे महारथी  
 विराट और दुपद नियतहुए फिर उनके पीछे अपने नीले आयुधों समेत राजानीन  
 और नील के पीछे चंदेरी व काशी व करुणदेशी व पौरवदेशी इन सबको साथ  
 लिये राजा धृष्टकेतु वर्तमानहुए और हेमरतर्पण धृष्टद्युम्न शिखण्डी पांचालदेशी और  
 प्रभद्रक यह सब अत्यन्त सेना समेत युद्धकरने के लिये बीचमें नियतहुए ॥ १५ ॥ और  
 उसीस्थानमें हाथियोंकी सेना समेत राजा धर्मराज युधिष्ठिरभी वर्तमानहुये और उस  
 के पीछे सात्वकी व द्रौपदीके पाँचों पुत्र थे उन से पीछे अभिमन्यु अभिमन्यु के

stood at the right wing, and Karush, Vikunj, Mund, Kaundi, Vrish and Vrihadval were on the left wing 9 In that field of battle, glorious Arjun the destroyer of enemies, seeing that array of the Kaurava army, arrayed his own army with the advice of Dhrishtadyumna. The Pandava army was arrayed in the form of a crescent moon. 11 Bhimsen with a collection of weapons and princes of different places, stood at the right horn in great glory. Kings Virat and Drupad stationed themselves behind Bhimsen. Behind them, with blue arms and armour, stood king Nil, and on his back stood the warriors of Chanderi, Kashi, Karush and Paurava countries led by Dhrishtaketu, Dhrishtadyumna and Shikhandi of Panchal and the Prabhadraks with a large army stood in the middle 15. Near them was king Yudhishtira with a large number of elephants, and on his back were

मेतं महाव्यूहं प्रत्यव्यूहन्त पाण्डवाः ॥ १८ ॥ च धार्यतव पुत्राणां तत्पक्षं ये च संगताः । ततः  
प्रवृत्ते युद्धं व्यतिपत्कर्षद्भिः ॥ १९ ॥ ताघकानां परेषाञ्च निघ्नतामितरेतरम् ।  
हाथीघाथ रथौघाश्च तत्र तत्र विशम्पते ॥ २० ॥ सम्गतन्तो व्यदृश्यन्त निघ्नन्तस्ते  
परस्परम् । घावताञ्च रथौघानां निघ्नताञ्च पृथक् पृथक् ॥ २१ ॥ घभूय तुमुलः  
शब्दो विमिश्रो दुन्दुभिस्थनैः । दिवस्पृष्टं नखीराणां निघ्नतामितरेतरम् । सम्प्रहा  
रेण तुमुले तव तेषाञ्च भारत ॥ २२ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि तृतीययुद्ध दिवसे परस्पर

व्यूहरचनायां पट्पचा शतमोऽध्यायः ॥ ५६ ॥

पीछे इरावान और उसके पीछे भीमसेनका पुत्र घटोत्कच और महारथी केकयदेशी  
उसके पीछे नरोत्तम सब जगत् का रक्षक जिसके रक्षक जनार्दन थे वह अर्जुन  
हुआ ॥ १९ ॥ इसरीतिसे पांडवोंने आपके पुत्रों के और उन के सहायकों के मारनेके  
निमित्त इस बड़ेभारी व्यूह को रचा, तदनन्तर आपके पुत्र और पांडवों में परस्पर  
बह युद्ध जिसमें हाथी घोड़े और रथ संयुक्त थे जारीहुआ, हे राजा जहां तहां वह  
हाथी और रथोंके समूह परस्परमें मारते और गिरते हुये दृष्ट पड़ते थे, और दौड़ते  
वा पृथक् ॥ लड़नेवाले रथ के समूहों के महाकठिन शब्द दुन्दुभियों के शब्दों से  
मिलेहुये सुने जाते थे, हे भरतवंशी उसतुमुलयुद्ध में परस्पर में मारतेहुये आपके  
और दूसरों के शूरीरोंके शब्द आकाशतक व्याप्तहुये २३ ॥

Satyaki, the five sons of Draupadi and Abhimanyu. Behind Abhi-  
manyu was Iravan and Ghatotlach the son of Bhimsen was on the back  
of Iravan. Behind them were the warriors of Kaikeya with the best  
of men, Arjun who was himself protected by Janardan the protector  
of all. 19. Thus the Pandavas arrayed, that formidable army to  
destroy your sons and their allies. Then the two armies consisting  
of elephants, horses and chariots, mixed together, met in combat.  
The groups of elephants and chariots were seen destroying one an-  
other, and the rumbling of chariot wheels, which were constantly  
rolling in the field of battle, was dreadful. The noise made by the  
chariot wheels; mixed with that from the horns was tremendous;  
and the cries of the warriors on both sides rang through the  
firmament, 23.



सञ्जय उवाच ॥ ततो व्यूढेष्वनीकेषु तावकेषु पौपुच । घनङ्गयो रथानीरु  
मवधत्तिवभारत ॥ १ ॥ शरैरतिरथो युद्धे दारयन् रथयूथपान् । ते वध्यमाना पाथेन  
कालेनेन युगक्षये ॥ २ ॥ धार्तराष्ट्र रणे यत्नं त्वाण्डवान् प्रत्ययो वगन् । प्रायेयाना  
यशोदीप्तं मृत्युहृत्या निवर्त्तनम् ॥ ३ ॥ एकाग्रमनसो भूत्वा पाण्डवाना वरुधिनीम् ।  
वमञ्जुर्दृशो राजस्ते चासञ्जन्त सयुगे ॥ ४ ॥ द्रुपद्विष्य भगैश्च परिवर्त्तंश्चैर्वच ।  
पाण्डवै कौरवेयैश्च न प्राप्तावत किञ्चन ॥ ५ ॥ उदतिष्ठद्रुजो भौमन् छ दयान दिवा  
करम् । न दिशः प्रदिशोवाति तत्र हन्युः कानरा ॥ ६ ॥ अनुमानेन सत्तामित्रात्मगोत्रैश्च  
सयुगे । शर्त्तते च तथा युद्धं तत्र तत्र विशास्यते ॥ ७ ॥ न व्यूहो मिद्यते ततः कौर  
वाणा कथञ्चन । रक्षितः स यस्येन भारद्वाजेन सयुगे ॥ ८ ॥ तथैव पाण्डवानाश्च रक्षित  
सन्ध्यासन्धिना । नाभिद्यत महाव्यहो जीभेन च सु रक्षित ॥ ९ ॥ सेनाप्रादपि निष्पत्य

अध्याय ॥ ५७ ॥

संजय बोले हे भरतवंशी हमके अनन्तर आपके पुत्रों की और पाण्डवों की सेना के  
व्युहित होने पर बाणों से महारथियों को गिराते हुए अति रथी अर्जुन ने रथके युध्पों  
को इस रीतिसे मारा जैसे कि युग के अन्तमें काल सवकानाश करता है, इस रीति  
से अर्जुन से घायल और पीड़ित उन धृतराष्ट्र के पुत्रों ने युद्ध में महा कुशल पाण्डव  
लोगों से युद्ध किया है राजा अपनी कीर्त्ति के चाहने वाले उन कौरवों ने मृत्युको  
न लौटने वाली मानकर चित्तको स्थिर करके पाण्डवों की सेनाको अनेक रीतों से  
छिन्न भिन्न करके आपभी युद्धसे छिन्न भिन्न होगये, फिर भागते और छिन्न  
भिन्न होते अपना लौटते समय में कौरव पाण्डवों की धूमधाम में कुछ नही जाना  
गया और धूल ऐसी उठी कि जिससे पृथ्वी और सूर्य ढक गये और अन्धकार ऐसा  
मच गया जिसमें दिशा विदिशाका कुछ भी ज्ञान न रहा, हे राजा उस समय वहाँ  
संग्राम भूमि में ध्यान और नाम गोरों के द्वारा युद्ध जारी रहा, हे श्रेष्ठ राजा धृतराष्ट्र

## CHAPTER LVII

Sanjaya continued, "When the armies of your sons and those of the Pandavas were thus arrayed Arjun began to destroy the great warriors and charioteers as Kai destroys all the living beings at the end of the yug. Wounded and distressed by the arrows of Arjun, the sons of Dhritrashtra fought against the Pandav warriors. The Kauravas desirous of fame, knew that death was inevitable and fought steadily, killing others and being killed themselves. Nothing was discernible in the fury of the battle and the dust arising from the two armies covered the whole firmament, so that neither the sun nor the earth could be distinguished. The warriors fought with their adversaries by distinguishing their voices and asking their names. Protected by Dronacharya the Kuruv armies could not be

प्रायुर्ध्वस्तत्रमानवाः । उभयोः सेनयो राजन् व्यतिपत्करयद्विषः ॥ १० ॥ हयारो  
हैहयारोहाः पात्यन्तेस्म महाहवे । ऋष्टिमिर्विमलामिश्च प्रासैरपि च संयुगे ॥ ११ ॥  
रथी रथिनमासाद्य-शरैः कनकभूषणैः । पातयामास समरे तस्मिन्प्रतिभयङ्करे ॥ १२ ॥  
गजारोहा गजारोहान् नाराच शरतोमरैः । संसक्तान् पातयामासुस्तव तेषांच सर्वशः  
॥ १३ ॥ पत्तिसंधारणे पत्तीन् मिदिपालपरश्वधैः । न्यपातयत संहृष्टाः परस्पर  
कृतागस्तः ॥ १४ ॥ रथीच समरे राजद्रासाद्य गजवृषपम् । स गजं पातयामास गजं  
च गधिनं चरम् ॥ १५ ॥ रथिनेन हयारोहः प्रासेन भरतर्षभ । पातयामास समरे  
रथीच हयसादिनम् ॥ १६ ॥ पदातीरथिनंसंख्ये रथीचापिपदातिनम् । न्यपातय-  
च्छ्रितैः शस्त्रैः सेनयोरुभयोरपि ॥ १७ ॥ गजारोहाहयारोहान् पातयांचक्रिरेतदाः ।  
हयारोहागजस्थाश्च तदद्भुतमिवाभवत् ॥ १८ ॥ गजारोहघ्नैवापि तत्र तत्र पदानयः ।

वहाँ भारद्वाज द्रोणाचार्य से रक्षित वह कार्यों का बूढ़-छिन्न भिन्न नहीं होता  
था और इसी प्रकार अर्जुन से रक्षित पांडवों का बड़ा बूढ़भी भीमसेन से आश्रित  
होकर पराजय नहीं होता था फिर वहाँ रथ हाथियों से संयुक्त दोनों सेनाओं के  
मनुष्य सेना के आगे से निकल कर युद्धकरने लगे तब उस महा युद्धके बीच तक्षिण  
भार वाले दुधारा खड्ग और परशों के द्वारा घोड़ों के सवारों के हाथसे घोड़ों के  
सवार गिराये गये फिर उस अत्यन्त भयकारी सेना में मुनहरी बाणों से रथीने  
रथीको सम्मुख होकर गिराया फिर आपके और उनके हाथियों के सवारों के  
समूहों ने नाराच शर और तोमरों के द्वारा सम्मुख होकर हाथियों के सवारों को  
गिराया और उस रण में पत्तिसिंह नाम सेना के भागने भिरुडपाल और परशों  
के द्वारा पत्तियों को गिराया और रथी ने हाथी के सवार को सम्मुख होकर मारा  
और हाथी के सवारने इसी प्रकार से रथी को जागिराया हे भरतर्षभ घोड़ों के  
सवारों ने परशों के द्वारा रथी को और रथी ने घोड़ों के सवारको और दोनों

routed and the armies of the Pandavas remained firm under the  
protection of Arjun and Bhimsen 9. Then the warriors of the two  
armies broke the lines and advanced to fight. Then in that great  
battle horsemen were killed by the double-edged sharp swords and  
battle axes of horsemen. Amid those dreadful armies charioteers  
slew charioteers with their golden arrows. The elephant riders of the  
two armies fought with arrows and slew one another. The foot sol-  
diers fought with battle axes and other weapons. Charioteers faced  
elephant riders and slew one another. The horsemen and charioteers  
slew one another with sharp arrows. Some horsemen and elephant  
riders met in combat and destroyed one another in a wonderful way.  
18. The foot soldiers were seen destroyed by elephant riders who  
were sometimes killed by the foot soldiers. Horsemen and foot

पातिताः समदृश्यंत तैश्चापिगजयोधिनः ॥ १९ ॥ पस्तिंघाह्यारोहे. स दिंसेघाश्चप-  
त्तिभिः । पात्यमानाव्यदृश्यंत शतशोयसहस्रशः ॥ २० ॥ ध्वजैस्तत्रापविद्धैः कामुके  
स्तोमरैस्तथा । प्रासैस्तथा गदाभिश्च परिघैःकंपनैस्तथा ॥ २१ ॥ शक्तिमि कवचै-  
धित्रै कणपैरंकुशैरपि । निस्त्रिशैर्विमलैश्चापि स्वर्णपुंखैः शरैस्तथा ॥ २२ ॥ परिस्तो  
मैःकुषाभिश्च कथलैश्चमहाघनैः । भूर्भातिमरतश्रेष्ठ स्रग्दमैरिवचित्रिता ॥ २३ ॥ नरा  
भ्रकायैः पतितैर्दंतिभिश्च महाहवे । अगम्य रूपापृथिवी मांसशोणितकर्मदा ॥ २४ ॥  
प्रशशामरजं भौमं व्युत्तिंतरणशोणितैः । दिशश्च विमलाः सर्वाः संवभुवुर्जनेश्वर ॥ २५ ॥  
उत्थितान्य गणेशानि कथंघानि समंततः । चिह्नभूतानि जगती विनाशार्थंभारत  
॥ २६ ॥ तस्मिन् युद्धे महारौद्रे वर्तमानेसुदारुणे । प्रत्यदृश्यंतरिणो घावमानाःसमंततः  
॥ २७ ॥ ततो भीमश्च द्रोणश्च सेंघवश्च जयद्रथः । पुरुमित्रोजयोभोजः शल्यश्चापि स

सेनाओं के हाथी के सवारों ने तीक्ष्ण शस्त्रों से घोड़ों के सवारों को और घोड़ों के  
सवारों ने हाथी के सवारों को विध्वंस किया यह भी आश्चर्य सा हुआ और जहां तहां  
अच्छे २ हाथी के सवारों के हाथ से पदाती भी मारे हुए दृष्ट पड़े और उनके पदा-  
तियों के हाथ से हाथियों के सवार मरे हुए देखने में आये घोड़ों के सवारों से  
पतियों के समूह और पतियों से सवारों के समूह गिराये हुए दिखाई दिये हजारों  
गिरते हुए हजारों ध्वजा और धनुषों समेत और हजारों तोमर परिस्तोम और कुशों  
समेत और बहुतेरे बहु मूल्य कवचों को ओढ़े हुए प्रास गदा परिघ कंपन शक्ति  
और विचित्र कवचों को धारण किये भूमि में गतप्राण देखे हे भरतर्षभ हजारों  
कुणप अंकुश और सुवर्ण पुंखवाले बाणों से भूमि ऐसी शोभायमान थी जैसे कि  
माळाओं से पूरित होकर शोभित होती है और उस महायुद्ध में मनुष्य घोड़े और  
हाथियों के गिरे हुए शरीरों से ढकी हुई पृथ्वी मांस रुधिर रूपी कीच से महा  
दुर्गम और देखने के अयोग्य थी और मनुष्यों के रुधिरों से छिड़की हुई पृथ्वी

soldiers fought and slew one another. Thousands were seen falling, with their banners and bows cut down Other weapons by thousands, precious wrappers, maces, spears and armour of sorts were seen on those who had fallen in battle. Thousands of' goads and arrows with golden feathers beautified the field as if strewn with flower chaplets 22. In that great battle men, horses and elephants covered the field with their flesh, blood and corpses, and the scene was dreadful to behold The dust, sprinkled over with human blood, subsided; the directions cleared up and innumerable headless bodies sprang up all round indicating destruction of the world. 26. And in that dreadful battle charioteers were seen running away in all directions Then Bhishm, Drona, Jayadrath the ruler of Sindhu. Purumitra, Vikarn and Sha-kuni the son of Suval, all those warriors invincible in battle and

स सौधलः ॥ २८ ॥ पतेसमरदुर्धर्षाः सिंहदुष्यपराक्रमाः । पांडवातामनीकानि  
 घमुंहुःस्मपुनःपुनः ॥ २९ ॥ तथैव भीमसेनोपि राक्षसश्च घटोत्कचः । सात्यकिश्चेकिता-  
 नश्च द्रौपदेयाश्च भारत ॥ ३० ॥ तावकास्तवपुत्राश्च सहितान् सर्व राजभिः । द्वाप  
 यामासुराजैते त्रिदशादानवानिव ॥ ३१ ॥ तथाते समरेण्योर्ध्वं निघ्नंतःक्षत्रियर्षमाः ।  
 रक्तोक्षिता घोररूपा विरेजुर्दानवाइव ॥ ३२ ॥ विनिर्जित्य रिपून्वीराः सेनयोद्धमघोरपि ।  
 द्यपदंघतमहामात्रा प्रह्लादवनमस्तले ॥ ३३ ॥ ततो रथसहस्रेण पुत्रोदुर्योधनस्तव ।  
 अभ्ययात् पांडवं युधे राक्षसं च घटोत्कचम् ॥ ३४ ॥ तथैव पांडवाः सर्वे महत्पा  
 सेनयासह । द्रोणभीमौ रणे यत्तौ प्रयुधयुरीरदमौ ॥ ३५ ॥ किराटीच ययौकुदः

की घूल अत्यन्त शान्त होगई हे राजा सब दिशा शुद्ध हुई और कवन्ध अथांत बिना  
 शिरके रूपड चारों ओर से असंख्य उत्पन्न होकर सब संसारके नाशकारक हुए  
 फिर उस बड़े भारी भयानक युद्ध जारी होनेपर चारों ओरसे दौड़ते हुए अनेक  
 रथी दृष्ट पड़े इसके पीछे भीष्म द्रोणाचार्य जयद्रथ राजा सिंधु पुरुमित्र विकर्ण  
 शकुनि सौधल यह सब युद्धमें दुर्धर्ष सिंहके समान पराक्रमी पांडवोंकी सेना के मारने  
 को उपस्थितहुए, ॥ २९ ॥ इसी प्रकारहे भरतवंशी भीमसेन घटोत्कच राक्षस सात्यकी  
 चेकितान द्रौपदी के पांचों पुत्र इन वीरों ने भी सब राजाओं समेत युद्धभूमि में  
 नियत होकर आपके शूरवीरों समेत सब पुत्रों को ऐसे छिन्न भिन्न कर दिया जैसे  
 कि देवता लोग दानवों को करते हैं इसीप्रकार से वह सब क्षत्री परस्पर में युद्ध  
 प्रहार करते हुए रुधिर भरे हुए शरीरोंसे घोररूप किंशुक वृक्षों के समान शोभाय-  
 मान दिखाई देनेलगे ॥ ३० ॥ हे राजा दोनों ओर की सेनाके शूरवीर अपने २ शत्रुओं  
 को विजय करके ऐसे देखने में आते थे जैसे कि आकाश मंडल में सूर्यादि बड़े  
 ग्रह दिखाई देते हैं इसके उपरान्त आपका पुत्र दुर्योधन हजार रथों के साथ उस  
 युद्ध में पांडव और घटोत्कच राक्षस के सम्मुख आया बैसेही सब पांडवभी अपनी  
 बड़ी सेना समेत भीष्मजी और द्रोणाचार्य के सम्मुख गये यह सब पांडव आदि  
 युद्ध में शूरवीर शत्रुओं के विजय करने वाले हैं इसके पीछे दिव्य मुकुटपारी क्रोध

Possessing the strength of lions, broke the ranks of the Pandavas. 29. In the same manner Bhimsen, Ghatotkach, Satyski, Chekitan, the five sons of Draupadi and other warrior princes beat your sons and warriors, as gods did the danavas. Thus all those warriors fighting against one other looked glorious like Kinshuk trees in bloom with their blood stained bodies. 32. The warriors on both sides, conquering their enemies, looked as if they were suns on high. Then your son Duryodhan, accompanied with a thousand chariots, faced the Pandav Ghatotkach of rakshas blood, and the Pandavas, with their armies, faced Bhishm and Dronacharya. All these Pandavas are brave warriors and conquerers of foes. Then Arjun, with his celestial dia-



समंतात्पार्थिवोत्तमान् । आर्जुनि सात्याकिश्चैव ययतु सौवलंवलम् ॥ ३६ ॥ ततः  
प्रवृत्तेभूयः संप्रामोलोमहर्षणः । तावकानांपरेषांच समरेविजयैविणाम् ॥ ३७ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि तृतीययुद्ध दिवसे संकुलयुद्धे  
सप्तपंचाशत्तयोऽध्यायः ५७ ॥

सञ्जय उवाच । ततस्तेपार्थिवाः क्रुद्धा फाल्गुनवीक्ष्य संयुगे । रघैरनेकसाहसैः  
समंतात्पर्यं धारयन् ॥ १ ॥ अथैनं रथयुदेन कोष्ठकीकृत्यभारत । शरैः सुवद्भुसाहसैः  
समंतादक्षयधारयन् ॥ २ ॥ शकीश्च विमलास्तीक्ष्णा गदाश्च परिषे सह । प्रासान्तर  
भ्रष्टार्थैव मुद्गरान् मुसलानपि ॥ ३ ॥ चित्तिः समरेक्रुद्धाः फाल्गुनस्परथप्रति ।  
शस्त्राणामथतां वृष्टिं शलभानामिवापति ॥ ४ ॥ वरोध सर्वतः पार्थः शरैः कनकभूषणैः ।  
तत्र तद्वाघवे दृष्ट्वा पीभत्सोराति मानुषम् ॥ ५ ॥ देव दानव गंधर्वाः पिशाचो रगरा

में भरा अर्जुन सब ओरके राजाओं के सम्मुख गया और अर्जुन का पुत्र अभिमन्यु  
व सात्यकी यह दोनों शकुनी की सेना के सम्मुख गये तिसके पीछे परस्पर में  
विजय की इच्छा रखने वाले आपके पुत्रों का और दूसरों का रोमहर्षण करने  
वाला महायुद्ध फिर जारी हुआ ॥ १७ ॥

आध्याय ॥ ५८ ॥

संजय बोले कि फिर उन क्रोधरूप राजाओं ने अर्जुन को युद्ध में देखकर  
हजारों रथ समेत उसको आनकर घेर लिया तदनन्तर हे भरतवंशी उसको रथ  
समूहों से घेरकर चारों ओर से हजारों बाणों से भी रोका फिर युद्ध में  
क्रोधरूप उन लोगों ने स्वच्छ बरछी तीक्ष्ण गदा प्राश परस्वध मुद्गर और मूशनों  
को परिधों समेत अर्जुन के रथपर छोड़ा और अर्जुनने भी अपने मुनहरी बाणों  
से उस टीढ़ी के समूहके समान राजाओं की शस्त्र और बाणोंकी वर्षा चारोंको ओर  
से रोका हे राजा इस युद्ध में अर्जुन की हस्तलाघवता जो कि दृष्टि से वाहरणी  
उसकी देव दानव गन्धर्व पिशाच उरग और राक्षसों ने देखकर अर्जुनकी बड़ी

dem on, encountered all the princes, while his son, Abhimanyu  
together with Satyaki, faced Shakuni's army. Then a dreadful fight  
ensued between your sons and the Pandavas." 37.

#### CHAPTER LVIII

Sanjaya continued. "The enraged princes, seeing Arjun in the  
field of battle, surrounded him on all sides with thousands of chariots,  
and while he was thus surrounded they checked him from all direc-  
tions with thousands of arrows. And the enraged warriors in that  
battle hurled at Arjun bright spears, maces, clubs and other weapons.  
Arjun too, with his golden arrows, checked the locust like flight of  
the weapons and darts of those princes. The gods, danavas, gandhar-

क्षसाः । साधु साधिवति राजेंद्र फाल्गुनं प्रत्यपूजयन् ॥ ६ ॥ सात्यकिश्चाभि मनुष्य  
महत्या सेनयावृत्तौ । गांधारान् समरे दूरात् जग्मतुः सहसौयलान् ॥ ७ ॥ तत्र  
सौयलकाः कुदा याष्णोर्वस्य रथोत्तमम् । तिलशथिच्छिद्रुः क्रोधाच्छस्त्रैर्नानाविधै-  
र्युधि ॥ ८ ॥ सात्यकिस्तुरगं त्यक्त्वाघर्तमानेभवावहे । अभिमन्योरघं नृणं मादरोह  
परंतपः ॥ ९ ॥ तथैकरथ संयुक्तौ सौयले यस्य वाहिनीः ध्वजमेतां त्रितैश्चतुर्ण  
शरैः समतपवामिः ॥ १० ॥ द्रोणभीष्मोरणे यत्तौ धर्मसत्रस्यवाहिनीम् । नाशयेतां  
शरैस्तीक्ष्णैः कंकपत्रपरिच्छदैः ॥ ११ ॥ ततो धर्म सुतो राजा माद्री पुत्रौचपांडवौ ।  
मित्रतां सर्वं सैन्यानां द्रोणानीकमुपाद्रवन् ॥ १२ ॥ तत्रासीत्सुमहद्युद्धं तुमुललामह-  
र्षणम् । यथा देवासुर युद्धं पूर्वं मासीत्सुदाकणम् ॥ १३ ॥ कुर्वाणौ सुमहत्कर्ममी-  
मसेनचटोत्कचौ । दुर्योधनस्ततोभ्येत्यतावुभावाप्यचारयत् ॥ १४ ॥ तत्राद्भुतमपश्याम

मशंमा धन्य धन्य शब्दोंसे की । ६। और सात्यकी और अभिमन्युने बड़ी सेना वाले  
युद्ध में शूरवीर गांधारियों को सौयल के पुत्रों समेत युद्ध में रोका दिया, इसके पीछे  
क्रोध में भरे हुए सौयलके पुत्रों ने दृष्टिगंधी सात्यकी के उत्तम रथको नाना  
प्रकार के शस्त्रों से तिलके समान टुकड़े २ कर डाला, हे शत्रु सन्तापी धृतराष्ट्र फिर  
तो सात्यकी उस महाभारी युद्ध के होनेपर उस रथको त्याग शीघ्र ही अभिमन्यु  
के रथपर चढ़ा फिर एक ही रथपर सवार । १०। उन दोनोंने बड़ी शीघ्रता से गुप्त ध्वनी  
वाले वाणों से शकुनी की सेनाको मारा, और युद्ध में कुशल द्रोणाचार्य और  
भीष्मजी ने कंकपल वाले तीक्ष्ण वाणों से धर्मराज युधिष्ठिर की सेना का विध्वंस  
किया इसके अनन्तर धर्मराज युधिष्ठिर माद्रीनन्दन नकुल सहदेव आदि पांडवों की  
सब सेनाके देखते हुए द्रोणाचार्य की सेनाके सम्मुख दौड़े फिर वहां रोमहर्षण करने  
वाला बहुत भारी ऐसा तुमुल युद्ध हुआ जैसे कि पूर्व समय में देवता और असुरों  
का महा भयानक युद्ध हुआ । १३। फिर भीमसेन और घटोत्कच ने बड़ा कर्म किया

vas, pishaches, Uragas and rakshases who saw the unseen dexterity of Arjun's hand, praised his skill in loud words. 6. Satyaki and Abhimanyu checked the gandhars together with the sons of Shakuni in that great battle, and thereupon they broke into very minute pieces the chariot of Satyaki. At this dreadful mutilation of his chariot, O invincible Dhritrashtra, Satyaki shared the chariot of Abhimanyu. Then both those warriors, seated on the same chariot, began to destroy the army of Shakuni with a swift discharge of their arrows. 10. Dronacharya and Bhishm. adept in the art of war, destroyed the army of Yudhishtir with their feathered arrows. Thereupon, Yudhishtir with Nakul and Sahadev the sons of Madri and the Pandav army, rushed upon the army of Dronacharya, and the fight was so furious as that between the gods and danavas of old. 13. Bhimsen and Ghatot-

हेडिंस्यपराक्रमम् । अतीत्यपितरयुद्धे यद्युध्यतभारत ॥ १५ ॥ भीमसेनस्तु संकुटो  
 दुर्योधनममर्पणम् । हृद्यविध्यत्पृष्केन प्रहसन्निवपाडव ॥ १६ ॥ ततो दुर्योधनो राजा  
 प्रहारचरपीडित । निपसादरथोपस्थे कश्मलचञ्जगामह ॥ १७ ॥ तं विसन्नं विदित्वा तु  
 त्वरमाणोऽस्य साधये । अपोवाहरणाद्राजस्ततः सैन्यमभ्यजयत ॥ १८ ॥ ततस्ताकौ  
 रवीसेना द्रवमाणा समतत । निघ्नन्भीमं शरैस्तीक्ष्णै रनुवद्राजपृष्ठत ॥ १९ ॥ पार्यत  
 अरथश्रेष्ठो धर्मपुत्रश्चपाडव । द्रोणस्य पश्य सैन्यं गागेयस्य च पश्यत ॥ २० ॥ जघ्नतु  
 विशिष्टैस्तीक्ष्णैः परानीकचिनाशनैः । द्रवमाणस्तु तत्सैन्यं तव पुत्रस्य सयुगे ॥ २१ ॥  
 नाशयन्तुता चारयितुं भीष्मद्रोणौ महारथौ । चार्यमाणञ्च भीष्मेण द्रोणे नच महात्मना  
 ॥ २२ ॥ विद्रवत्येव तत् सैन्यं पश्यतो द्रोणभीष्मयोः । ततो रथ सहस्रेषु विद्रवत्सुतत  
 स्तत ॥ २३ ॥ तावास्थितावेकरथ सौमद्रं शिनिं पुङ्गवौ । सौबलीं समरे सेनां शात

तवतो दुर्योधन ने सम्मुख आकर उन दोनों को भी रोका, हे भरतवशी वहां हमने  
 हिडिंबा के पुत्र घटोत्कचका अपूर्व पराक्रम देखा कि युद्ध में पिता कोभी उल्लंघन  
 कर गया । १५। फिर अत्यन्त क्रोध भरे अशातरूप भीमसेन ने हँसकर प्रशस्तनाम बाण  
 से दुर्योधन के हृदय में महार किया तब उस महारथी के वज्ररूप महार से  
 पीडामान राजा दुर्योधन रथके बैठने के स्थान में बैठ गया, हे राजा फिर उस का  
 सारथी उसको अचेत जानकर बड़ी शीघ्रता पूर्वक युद्ध भूमि से दूर ले गया इस  
 के पीछे सेना इधर उधर बिखर गई, फिर भीमसेन जहां तहां से भागने वाली उस  
 कोरवी सेनाको तक्षिण बाणोंसे मारता हुआ पीछे की ओरसे चला । १९ हे भरतवशी  
 युद्ध में कुशल धृष्टद्युम्न और धर्मपुत्र युधिष्ठिर ने द्रोणाचार्य और भीष्मजी के देखते  
 हुये शत्रुहन्ते वाले विशिष्टों से उस सब सेनाको मारा और सेना ऐसी भागी कि  
 जिसके रोकने को भीष्म और द्रोणाचार्यभी समर्थ नहीं हुये और हे परतप जहां  
 तहां हजारों रथके दूनपर उन एक रथपर बैठने वाले अभिमन्यु और सात्यकी नेभी

each did prodigies of valour and Duryodhan himself came round to  
 check them. There we saw the extraordinary prowess of Ghatotkach  
 the son of Hidimba who surpassed his father in deeds of valour 15 Then  
 Bhimsen enraged and dissatisfied hit Duryodhan's breast with an  
 arrow which he shot smiling. Wounded by that dreadful weapon hard  
 like a tree, prince Duryodhan became motionless in his seat. His coach  
 man, seeing him senseless carried him farther away from the army.  
 At this the army broke up. Bhimsen chased the army of the Kaurava  
 and shot many a sharp arrow from behind 19 Dhrishtadyumna the  
 skilful warrior and Yudhishtira the son of Dharm killed the Kaurava  
 warriors within sight of Dronacharya and Bhishma. There was a  
 total defeat of your armies and even Dronacharya and Bhishma could  
 not check the soldiers from flight. Thousands of chariots were seen  
 broken here and there by Abhimanyu and Satyaki seated in the

येतां समन्ततः ॥ २४ ॥ शुश्रुमाते तदातौ तु क्षेनेयकुटुम्बका । अमावास्यांगतौ यवन्  
सोमसूर्यौ नभस्तले ॥ २५ ॥ अर्जुनस्तु ततः क्रुद्धस्तव सैन्यं विशाम्पते । घर्षेण शर  
घर्षेण धारागिरिव तोयदः ॥ २६ ॥ वध्यमानं ततस्तत्र शरैः पार्थस्य समुमे । दुद्राव  
कौरव सैन्यं विषाद मय कम्पितम् ॥ २७ ॥ द्रव्यतरतान् समालक्ष्य भीमद्रोणौ महा  
रथौ । न्यचार येतां संरक्ष्यौ दुर्योधन द्वितैषिणौ ॥ २८ ॥ ततो दुर्योधनो राजा समा  
भ्यास्य विशांपते । न्यवर्तयत तत् सैन्यं द्रवमाणं समन्ततः ॥ २९ ॥ यत्र यत्र सुतः शु  
भ्यं यं यं पश्यति भारत । तत्र तत्र पश्यत्सेनं क्षत्रियानां महारथाः ॥ ३० ॥ तान्निवृत्ता  
समीक्ष्येव ततोऽप्येवतरे जनाः । अन्योन्यं स्पर्धयाराजन् तज्जयाचावतस्थिरे ॥ ३१ ॥  
पुनरावर्त्ततां तेषां वेग आसीद् विशाम्पते । पूर्वतः सागरस्थेव चन्द्रस्यो दयनं प्रति ॥  
सन्निवृत्तास्ततरतास्तु दृष्ट्वा राजासुर्योधनः । अग्रवीत् स्थिरतो गत्वा भीष्मं शान्तनु

शकुनि की सेना का नाश कर दिया । २४ । इसके पीछे वह दोनों अभिमन्यु और सात्यकि  
ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि अमावास्याके दिन आकाश मंडलमें वर्त्तमान सूर्य और  
चन्द्रमा शोभित होते हैं, हे राजा इसके अनन्तर क्रोधयुक्त अर्जुनने आपकी सेना पर  
ऐसी बाणों की वर्षा की जैसेकि धारों से बादल जलको वरसाता है, फिर इसके  
पीछे युद्धके बीच अर्जुनके बाणोंसे घायल और भयसे विह्वल और कंपायमान होकर  
वह कौरवी सेना युद्धसे भाग गई, फिर दुर्योधनके अभीष्ट चाहनेवाले महाबली भीष्म और  
द्रोणाचार्यने उस भागीहुई कौरवी सेनाको बड़े क्रोधसेरोका हे राजा इसके पीछे राजादुर्यो-  
धनभीने अच्छी रीतिसे विश्वास देकर उस भागीहुई अपनी सेनाको चारों ओरसे लौटाया  
हे भरतवंशी जहां जहां जिस जिसने आपके पुत्रको देखा वहां २ से वह क्षत्रिय  
महारथी लौटे । ३० । इसके पीछे हे राजा उनलौटेहुओंको देखकर अन्य मनुष्यभी परस्पर  
की ईर्ष्यासे व लज्जा से लौटकर नियत हुए फिर उन लौटनेवालों का ऐमा वेग  
हुआ जैसे कि चन्द्रमाके उदय में पूर्ण होते हुए समुद्र का वेग होता है इस के पीछे  
राजा दुर्योधन उन लौटेहुओंको देखकर बहुत शीघ्रही शान्तनु भीष्मजीके पास

same chariot, who brought about the destruction of Shakuni's army.  
24. The two warriors looked glorious like the sun and the moon in the  
sky on the day of *Amarasya*. Then the enraged Arjun showered his  
arrows like rain from clouds on your army. Wounded by Arjun's arrows  
in the field of battle, terrified and shaking, the Kaurav army fled from  
the field. The well wishers of Duryodhan, valliant Bhishm and  
Dronacharya checked the Kaurav army in great anger. Prince  
Duryodhan too, encouraged the army by his presence and brought  
them back from all sides. Whatever soldiers saw your son, returned  
to the field of battle. 30. Seeing the brave warriors returning to their  
duty, others too, by example or shame, returned and stationed them-  
selves on their posts. The returners rallied with a force like the  
ocean tide at the full moon. Seeing his soldiers return, prince Duryo-

यच्च ॥ ३३ ॥ पितामह निरोधेदे यत्वा वक्ष्यामि भारत । नानुरूपमह मन्ये त्वयिजीव  
ति कैरव ॥ ३४ ॥ द्रोणे चास्त्र विनाशेष्टे सपुत्रे समुहजने । कृपे चैव महेश्वासे द्रवते  
यद् वरुणिनी ॥ ३५ ॥ न पांडवान्प्रतिबलास्तचमन्ये कथञ्चन । तथा द्रोणस्य सप्रामे  
द्रोणेश्वैव रूपस्यच ॥ ३६ ॥ अनुग्राह्या पाण्डुसुतास्तच नून पितामह । पथेमाक्षमसेवीर  
वध्यमाना वरुणिनीम् ॥ ३७ ॥ सोस्मि वाच्यस्त्वया गजन् पूर्व मेव समागमे । न योत्  
स्ये पांडवान् सख्ये नापि पार्षस सात्यकी ॥ ३८ ॥ श्रुत्वातुवचन तुभ्य माचापयस्वरूप  
स्यच । कर्णेन सहित कृत्य चिन्तयानस्तदैवहि ॥ ३९ ॥ यदिनाह परित्याज्यो युवाभ्या  
मिह सपुत्रे । विक्रमेणानु रूपेण युध्येता पुरपपमौ ॥ ४० ॥ एतच्छ्रुत्वा वचो भीष्म  
प्रहसन्त्यं मुहुर्मुहुः । अग्रणीत् तनय तुभ्य क्रोधादुद्वृत्स्य चक्षुषी ॥ ४१ ॥ बहुशोसिमया

जाकर यह वचनबोला ॥ ३३ ॥ हेभरतवंशी पितामह आप मेरे इस वचनको समझिये हे  
कौरवों में श्रेष्ठ मैं यह उचित नहीं समझता हू कि आपके और सकल शस्त्र विद्याके  
ज्ञाता द्रोणाचार्य जी और उन के पुत्र अश्वत्थामा और मरायनुर्धर कृपाचार्य व  
उनके मित्रों के विद्यमान रहतेहुए सेना भागती है, मैं किसी दशा में भी किसी को  
आपके समान पराक्रमी नहीं जानता हू इसी प्रकार द्रोणाचार्य कृपाचार्य और  
अश्वत्थामा के भी समान युद्ध में पांडव लोग नहीं है ॥ ३६ ॥ हे पितामह निश्चयकरके  
पांडव लोग आपकी कृपा के योग्य है हे वीर इसीसे इस घायल और मारी कृपी  
हुई सेनापर आप क्षमा करतेहो सो हे राजा आपको प्रथमही सम्मुखता में कहना  
योग्य था कि मैं इस युद्ध में पांडव लोगों से व सात्यकी और धृष्टद्युम्न से  
नहीं लड़ूंगा हे भरतवंशी जो मैं आपके और आचार्यजी के वचनों को सुनता तो  
उसी समय कर्णसे कर्म करवाने के विचार को करता आप दोनों को इस युद्ध में  
मेरा त्प्रागता योग्य नहीं है, आप दोनों पुरुषोत्तम अपने योग्य पराक्रम के द्वारा  
युद्धकरो ॥ ४० ॥ भीष्मजी उस की बातोंको सुनकर बारम्बार हँसते हुए क्रोध से दोनों

dhan came to Bhishm and said 33 "Descendant of Bharat! grandfather,  
give ear to my words. I donot understand why soldiers should run  
away from battle when you, Dronacharya the master of the science  
of arms, his son Ashwathama valliant Kripacharya and your friends  
are present here I never think anyone else to be stronger than you  
nor are the Pandavas a fit match for Dronacharya, Kripacharya and  
Ashwathama 36 There is no doubt, grandfather, that the Pandavas  
are worthy of your love and this is the reason why you donot punish  
them for the mutilation of your army, but you should have told me  
before, that you would not fight against the Pandavas, Satyaki or  
Dhrishtadyumna. Had you and Dronacharya told this to me before,  
I could have asked Karan to do battle for me. You two should not  
leave me in the lurch now Fight therefore and show a prowess worthy  
of you" 40 Bhishm laughed at these words, and opening wide his eyes

राजस्तथ्यमुक्तो हिनं वचः । अजेयाः पांडवा युद्धे देवै रपि सवासवै ॥ ४२ ॥ यत्तु  
 शक्यं मया कर्तुं वृद्धे वाच नृपोत्तम । करिष्यामि यथा शक्तिं प्रेक्षेदानीं सथांपयः ४३ ॥  
 अथ पाण्डु सुता नेकः ससैन्यान् सह वन्धुभिः । सोह निवारयिष्यामि सार्थलोकस्य  
 पश्यतः ॥ ४४ ॥ एवमुक्तेन भीष्मेण पुत्रास्तवजनेश्वर । दध्मुः शंखान् मुदा मुक्ता भेरीः  
 संजघ्निरेभृशम् ॥ ४५ ॥ पांडवाहि ततो राजन् श्रुत्वातं निनदं महत् । दध्मु शंखांश्च  
 भेरीश्च मुरजांश्चाप्यनादयन् ॥ ४६ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि तृतीययुद्ध दिवसे भीष्मदुर्योधन  
 सम्यादे अष्टपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५८ ॥

नेत्रों को अच्छी रीति से खोलकर आपके पुत्र से बोलें कि हे राजा मैंने बहुत बार  
 तुम से तुम्हारा हितकारी वचन कहा है, कि पांडव लोग युद्ध में इन्द्र समेत देवताओं  
 से भी अजेय हैं हे राजाओं में भेष जो मुझ हृदय से करने के योग्य है उसको मैं  
 अपनी सामर्थ्य के अनुसार करूंगा तू अब बांधवों समेत देख कि मैं सेना समेत पांडवों  
 को तेरे और सब लोकों के देखते हुए हटाऊंगा हे राजा भीष्म से कहे हुए ऐसे  
 वचनों को सुनकर आपके आनन्द भरे पुत्र ने शंख और भेरी को बजाया इसके पीछे  
 पांडवों ने भी इस बड़े शब्द को सुनकर शंखों को बजाकर भेरी मुरजादिकों को  
 अच्छी रीति से बजाया ॥ ४६ ॥

in anger, spoke these words to your son:—"I have often given you  
 good advice, king," said he, "and told you that the Pandavas were  
 invincible even by the gods including Indra. I do my duty to the  
 best of my ability and age. You and your kinsmen will now  
 see how I make the Pandavas and their army give way."44. Hearing  
 these words from Bhishm, your son sounded his conch and bugle in  
 glee. The Pandavas heard the loud sound and blew their conchs and  
 bugles in reply. 46.



धृतराष्ट्र उवाच । प्रतिज्ञाते ततस्तस्मिन् युद्धे भीष्मेण दारुणे । क्रोधितो मम पुत्रेण दुःखितेन विशेषतः ॥ १ ॥ भीष्म- किमकरोत्तत्र पाण्डवेषु मात । पितामहे वा पशालास्तन्ममाचक्ष्व सञ्जय ॥ २ ॥ सञ्जय उवाच ॥ गतपूर्वाह्न भूयिष्ठे तस्मिन्नहनि भारत । पश्चिमां दिशमास्थाय स्थितेचापि दिवाकरे ॥ ३ ॥ जयं प्रक्षेपु दृष्टेऽनु पाण्डवेषु महात्मसु । सर्वधर्म विशेषज्ञ पिता देवव्रतस्तव ॥ ४ ॥ अभ्ययाज्यनैरश्वैः पाण्डवानामनीकिनीम् । महत्या सेनया गुप्तस्तव पुत्रैश्च सर्वशः ॥ ५ ॥ प्रावर्त्तत ततो युद्धं तुमुल लोमहर्षणम् । अस्माकं पाण्डवैः सार्धं मनयात्तव भारत ॥ ६ ॥ धनुषां कूजतां तत्र तलानांचामि हन्यताम् । महान् समभवच्छब्दो गिरिणामिव दीयताम् ॥ ७ ॥ तिष्ठ स्थितोऽभि वित्थ्वैनं निवर्त्तस्व स्थिरोमथ । स्थिरो-स्मिन्नहरस्येति शब्दोभूयति सर्वशः ॥ ८ ॥ कांचनेषु तनुत्रेषु किरीटेषु वजेषु च ।

### अध्याय ॥ ५९ ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय इसके अनन्तर उस भयानक युद्ध में मेरे पुत्र के कहने से भीष्मजी के कांप युक्त होकर मरण करने पर, भीष्म जीने पांडवों के ऊपर और पांडाल देशियों के पितामह के ऊपर क्या २ काम किये वह मुझ से आप बर्णन कीजिये, संजय बोले कि हे भरतवंशी उस दिन के मध्याह्न समय के व्यतीत होनेपर सूर्य के पश्चिम ओर होने के काल में और महात्मा पांडवोंके विजयी होकर प्रसन्न होनेपर सब धर्मों के ज्ञाता आपके पिता देवव्रत भीष्मजी सब रीति से आपके पुत्र और सेनाओं से रक्षित होकर बड़े शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा पांडवों की सेनाके सम्मुख गये, हे भरतवंशी इसके पीछे आपके अन्याय के कारण पांडवों से हमारा रोम हर्षण करने वाला महातुमुल युद्ध हुआ, अर्थात् धनुषों के शब्दों से और तालों के चने से ऐसा तुमुल शब्द हुआ जैसे कि पर्वतों के फटनेका हुआ करता है, तिष्ठ तिष्ठ खड़ाहूं खड़ाहूं इसको देख, लौट लौट नियतहो, नियतहूं, महार कर

### CHAPTER LIX

"Being asked by my son in the field of battle, what did Bhishm, who had made the promise in his rage, do to the Pandavas and the Pandavas to Bhishm? Pray tell me all, Sanjaya," said Dhritrashtra. "In the afternoon of that day," replied Sanjaya, "when it was nearly evening time and the Pandavas were making merry at their conquest, your father Devabrat Bhishm, acquainted with all dharmas, being protected by your son's armies from every side, faced the army of the Pandavas on very swift horses. Then, on account of your injustice, we fought a dreadful fight with the Pandavas. 6. The sounds made by bows and beating of palms caused a noise like that of the rending of mountains. 'Stand, Stand; I stand; look here; return, return; keep standing; begin etc.' were the words heard

शिलानामिष शैलपु पतितानाममृतध्वनिः ॥ ९ ॥ पतिताश्वत्तमाङ्गानि चाहवध्ववि  
मृपताः । व्यचेष्टत महर्षि प्राप्य शतशोथ सहस्रशः ॥१०॥ दृष्टोत्तमाङ्गाः केचित्तु तथैवो  
घतकानुकाः । प्रगृहीतायुधाश्चापि तस्युः पुरुषसत्तमा ॥ ११ ॥ प्रायश्चित्तमहाचेगो  
नदी रुधिरयाहिनी । मातङ्गाङ्गशिलारौद्रा मांस शोणितकर्दमा ॥ १२ ॥ वराध्वनर  
नागानां शरीरप्रमदातदा । परलोकार्णवमुखी गृध्रगोमायु मोदनी ॥ १३ ॥ न दृष्टं न श्रुतं  
वापि युद्धमेतादृशं नृप । यथा तव सुतानाञ्च पांडवानाञ्च भारत ॥ १४ ॥ नास्ती  
द्रव्यमस्तत्र योर्ध्वेयुधि निपातितैः । गजैश्चपतितैर्नैर्गिरिगृध्रैरियावृतः ॥ १५ ॥  
विश्रोणैः कवचैश्चित्रैः शिरस्त्राणैश्च मारिष । शुभ्रमे तद्रथस्थानं शरदीयमस्तलम्  
॥ १६ ॥ विनिर्मिता शरैः केचिदग्रापीडप्रकर्षिणः । असीताः समरे नानून्यथावन्त

इत्यादि अनेक प्रकार के शब्द सुनाई दिये, सुनहरी कवच कमठ और ध्वजाओं पर  
ऐसे महा शब्द हुए जैसे कि पर्वतों पर शिलाओं के गिरने से शब्द होते हैं, हजारों  
भूषणों से अलंकृत शिर और भुजा पृथ्वीपर गिरकर नानाचेष्टा करने लगे, कितनेही  
शिर कटे हुए पुरुषोत्तम धनुष उठाये हुए वा शस्त्रों को धारण किये हुए उसी दशा में  
नियत हुए तब रुधिरमे जारीहोनेवाली घोर नदी हाथियोंके अंगरूप शिला और मांस  
रुधिररूप कीचड़ से भरी हुई बड़े वेगवान् उत्तम घोड़े हाथी और मनुष्यों के शरीरसे  
प्रकट गिद्ध सृगालोंकी प्रसन्नता देनेवाली परलोक सप्तरूपा घोरनदी बड़े प्रवाहसे  
वही १३। हे राजा जैमा कि आपके पुत्रोंका और पांडवोंका युद्ध हुआ वैसा आज  
तक देखागया न सुनागया, उस युद्धमें गिराये हुए शूर वीरों के कारण कहींभी र्यों  
के जानेका मार्ग नहीं रहा और हाथियों के गिरने से वह पृथ्वी नीले पहाड़ों के  
गिरसों के समान दिखाई दी, हे श्रेष्ठ सुवर्ण निर्मित कवचों के और शिर त्राणों के  
फले हुए होने से वह युद्धभूमि ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि शरद ऋतु में आकाश  
मयङ्गन शोभित होता है। १६। कोई मनुष्य अत्यंत घायल आत वा पैरसेभी

from different sides. 8. The din of the fall of golden coats of mail and helmets was tremendous like that of stones on mountains. Thousands of heads and arms decked with jewels, falling on earth, trembled and shook in various ways. Many warriors remained in the posture they were before—raising up their bows or other weapons when their heads were cut off their bodies. Then the river of blood, having the bodies of elephants for its stones and flesh and blood for its mire, sprang from the bodies of warrior horses, elephants and men, pleasing the vultures and jackals, flowed with great velocity like the ocean of the other world. 13. The world has not yet seen or heard a battle like that between the Pandavas and your sons. On account of the carcasses of warriors there was no way left for the chariots to pass over. From the bodies of the elephants fallen over the plain the ground looked as if strewn over with blue eggs. From the



द्वितीया ॥ १७ ॥ सात भात सखे वन्द्यो वयस्य मम मातुल । मामा परित्यजे  
त्यये चुक्रुशु पतिता रणे ॥ १८ ॥ अधाभ्येहित्वमागच्छ किं भीतोसि वयसायसि ।  
स्त्रिपतोह समरे मामै गिति चान्ये विचुक्रुशु ॥ १९ ॥ तत्र भीष्म शान्तनयो नित्य  
गण्डलकामुक । मुमोच चाणान् दीप्ताग्रानहीनाशीविषानिव ॥ २० ॥ शौरैकायभी  
कुर्न्व विश सर्वा यतव्रत । जघान पाण्डवरधानादिश्य भरतर्षभ ॥ २१ ॥  
स नृत्यन्वैरधोपस्थे दर्शयन् पाणिनाधावम् । अलातचक्रवद्राजस्तत्र तत्र स्मदृश्यते  
॥ २२ ॥ तमेक समरे शूर पाण्डवा सुख्यै सह । अनेकशतसाहस्र समपश्यन्तलाघ  
वात् ॥ २३ ॥ मायावृतात्मातमिव भीष्म तत्र स्म मेनिरे । पूर्वस्या दिशित दृष्ट्वा प्रती  
व्याददृशुर्जना ॥ २४ ॥ उदीच्याचेव मालोक्य दक्षिणस्या पुन प्रभो । एष समरेश्वरा

कटेडू मनु से अर्दीन और अर्दकारी होकर उस युद्धमें शत्रुओं के सम्मुख टाटे,  
कोई है पिना है भार्द है मित्र है वांश्च है समान अवस्थावाले है मामा है काका  
मुझको मतसताओ मतसताओ ऐसा कहकर पुकारे, और कोई सम्मुख वर्तमानहो  
तुम आओ क्या भयभीत है कहा जायगा मैं युद्ध में नियतहू भय न कर इत्यादि  
सतें कहकह कर पुकारने थे, उस युद्ध में शान्तनव भीष्मजी न जिनका धनुष  
गण्डल के समान था विषके बुकेडू तीननोरु के सर्पाकार वाणों को छोड़ा, है  
भरतवशी वाणों से सत्र दिशाओं को बराबर करने वाले सावधान घत भीष्मजी  
रथ के मार्गों में नृत्य करने और हस्तलाघवता से दिखाने हुए दृष्टका के समान  
जहा तहाँ फिरने और चमकते हुए दृष्टि पड़े, पाद्यों ने सृज्यों समेत युद्ध भूमि में  
उस अकेले शूरवीरकी हस्तलाघवता के कारण लाखों के समान जानकर भीष्मजी  
को महा मायावी के सदृश माना, क्योंकि उसको अभी पूर्व में देखकर फिर पश्चिम  
दिशा में देखा, इसी प्रकार उत्तर में देखकर दक्षिण दिशा में भी देखा, इस गीति

fillets of mail and turbans fallen here and there the field of battle  
looked like the sky in cold weather. 16 Some men, mortally wounded  
with their entrails and legs cut down, cheerfully and proudly rushed  
on the enemy. Other cried, 'Father, brother, friend, kinsman, com-  
panion, maternal uncle, do not abandon me, do not kill me!' Some  
cried out, 'Come and face me! Come! Art afraid? Where goest? Don't  
be afraid I am here!' etc. Bhishm the son of Shantanu whose bow  
moved like a snake shot sharp pointed arrows like venomous serpents.  
20 Discharging an equal number of arrows in all directions. When  
of old vows, slew the Kaurava warriors a tall calling out their names.  
Bhishm was so endued his elixir in all directions, and exhibiting  
the delectable of his Land and looked like sparks of fire in all direc-  
tions. The Pandavas with the Duryodhan regarded him as though  
he was a myriad of warriors in one by magical power. He was seen  
now in the East, now in the South and then in the

गाङ्गेयः प्रत्यहं द्रवत । २५ ॥ न चैवं पाण्डवेयानां कश्चित् शक्नोति वीक्षितुम् । विशि-  
 खानेव पश्यन्ति भीष्म चापव्युतान्बहून् ॥ २६ ॥ कुर्वाणं समरे कर्म सृष्ट्यान्व-  
 चाहिनीम् । व्याक्रोशन्त रणे तत्र नराध्वं विधावहु ॥ २७ ॥ अमानुषेण रूपेण चरन्तं  
 पितरं तथ । शूलभा इव राजानः पतन्ति विधिचोदिताः ॥ २८ ॥ भीष्माग्निमभिसेनुद्धं  
 विनाशाय सहस्रशः । न हि मोघः शरः कश्चिदासीद् भीष्मस्यसमुगे ॥ २९ ॥ नरनागाव-  
 कायेषु बह्व्याह्वयुषोऽपिनः । भिनत्येकेन बाणेन सुमुक्तेन पतन्निषा ॥ ३० ॥ गजकण्टक-  
 सन्नद्धं यज्ञेणैव शिलोच्चयम् । द्वा व्रीनपि गजागोहान् पिण्डितान् वर्मितानपि ३१ ॥  
 नाराचेन सुमुक्तेन निजघानं गितातथ । यो यो भीष्मं नरव्याघ्रमभ्येति युधि कथन-  
 ॥ ३२ ॥ मुहूर्त्तदृष्टः समया पतितो मुवि दृश्यते । एवंसा धर्मराजस्य धर्मनामानमहा-

से वह गांगेय भीष्मजी युद्ध में महायुद्ध करते हुए दौड़ाये । २५ । पांडवों का कोई शूरवीर उनके युद्धके देखनेको समर्थ नहीं हुआ इन भीष्मजी के धनुष भेगिरे हुए अनेक विशिख नाम बाणही दिलाई पड़ते थे, उस संग्राम में उस कर्म करनेवाले सेनाको मारते देवरूप धर्मते हुए आपके देवव्रत पिताको देखकर युद्धमें लोग अनेक रीतों से पुकारते थे, और अत्यन्त मोहित हजारों राजा लोग उसभीष्मरूप अग्नि में सक्तभाओं के समान गिरकर काल वशहुए, युद्धभूमि में उसहस्तनायवनामे लड़ने वाले भीष्मजी का कोईभी बाण मनुष्य हाथी घोड़े आदि के शरीर में लगकर निपटन नहीं गया, वह भीष्म युद्धमें मुकेहुए पर्ववाले एकही बाण से दन्तमगड़ल धारि हाथी को ऐसे मारडालने थे जैसे कि वज्र से पर्वतको इन्द्रमारता है आपके पिताने अत्यन्त तीव्र नाराच नाम बाणमे मिले हुए पर्वतों के समान दो वांतीन हाथियों के सवारों कोभी मारा । ३१ । जो कोई युद्धमें इस नरोत्तम भीष्मके सम्मुख आता था वह भयमे एक मुहूर्त्तक पृथ्वीपर गिराहुआ दृष्टपड़ता था, इस रीति से अतुल बल भीष्मजी से घायल हुई युधिष्ठिरकी सेना हजारों प्रकार से दुखी और

North. The son of Ganga was thus seen fighting in battle. 25. None of the Pandav warriors could face Bhishm in battle. The sharp arrows shot from Bhishm's bow were seen here and there. Seeing your father Devabrat doing that difficult work killing the warriors and rowing like a god, the people uttered various cries. Thousands of kings lost their senses and fell into the Bhishmic fire like so many insects. None of the arrows shot by dexterous Bhishm was ineffectual on man elephant or horse. With single hooked arrows Bhishm killed elephants having large tusks as Indra beat's down mountains with his vajra. Your father killed with his sharp pointed arrows many an elephant side by twos and threes at a time. 31. Whoever faced Bhishm the best of men fell on earth with fear and remained insensible for a while. Thus wounded by Bhishm of immense prowess Yudhishtira's army was distressed and frightened. That army

चम् ॥ ३३ ॥ भीष्मेणातुलवीर्येण व्यशीर्यंतसहस्रधा । प्राकृतमहासेना शरवर्षेण  
 तापिता ॥ ३४ ॥ पश्यतोवासुदेवस्य पार्थस्याथ शिखण्डिन । यतमानापिनेधोराद्रघ  
 माणान्महाराथान् ॥ ३५ ॥ नाशस्तुधन्वारयितु भीष्मबाणप्रपीडितान् । महेंद्रसमवीर्येण  
 धृष्टमानामहाचम् ॥ ३६ ॥ अमन्यतमहाराज न च द्वौसहघावत । आविद्धनरनागाश्च  
 पतितध्वजकृचरम् ॥ ३७ ॥ अनीक पाण्डुपुत्राणां हाहाभूतमचेतनम् । जघानाप्रपितापुत्र  
 पुनर्धपितरतथा ॥ ३८ ॥ प्रियसखायचाक्रदे सखादैवदलाकृत । विमुच्यकवचा  
 न्यन्ये पाण्डुपुत्रस्य सैनिका ॥ ३९ ॥ विमुक्त केशाघावत प्रत्यदृश्यतभारत । तद्गो  
 कुलमिधोदभातमुद्रातरघृष्यपम् ॥ ४० ॥ ददृशे पाण्डुपुत्रस्य सैन्यमार्तस्वरतदा । प्रम  
 ज्यमान सैन्यंतदृष्ट्वा यादवनन्दन ॥ ४१ ॥ उवाचपार्थ वीभत्सु निगृह्यारघसुतमम् ।

भय भीतहुई, वह पांडवों की बड़ी सेना भीष्मजी के बाण ममूहों से पीड़ित होकर  
 वासुदेवजी और महात्मा अर्जुनके देरसते हुए बड़ी कम्पायमान हुई, उपाय करनेवाले  
 वीरलोगभी भीष्मजी के बाणों से अत्यन्त पीड़ामान भागतेहुए महाराथियों के लौठाने  
 को समर्थ नहीं हुए हे महाराज महाइन्द्र के समान पराक्रमी भीष्मसे उच्छिन्न पांडवों  
 की बड़ीभारी सेना पराजय को प्राप्त हाहाकार रूप होकर अचेत होगई और रथमें  
 हाथी घोड़े भी घायल होकर ध्वजाओं समेत पृथ्वी पर पड़ेहुए थे । ३७ । वस  
 युद्धमें पिताने पुत्रको और पुत्रने पिताको वा मित्रने प्रियमित्रको मारा हे भरतवंशी  
 पाण्डवोंकी सेनाके मनुष्य कवचोंको त्याग गिर के बालोंको फैलाकर दौड़ते हुए  
 दृष्टपड़े, तब पाण्डवों की वह सेना जिसके महारथी भ्रान्ति से युक्त थे व्याकुल दुःखी  
 और भयकारी शब्दों को करते हुये दिखाई दिये फिर यादवों के प्रसन्न करनेवाले  
 श्रीकृष्ण जी सेनाको पराजय में प्राप्त देखकर अपने उत्तम रथको रोककर अर्जुनसे  
 बोले कि हे अर्जुन अब यह समय आगया है जो तेरा अभीष्ट है हे नरोत्तम जो तू

army of the Pandavas, hit by the arrows of Bhishma, was much shaken  
 within sight of Krishna and Arjun. Even the bravest of men could  
 not keep the soldiers from running away. Routed by Bhishma of  
 Indra like prowess the Pandava army suffered defeat and became in  
 sensible with cries of ah and alas. Chariots, elephants and horses too,  
 fell down on ground. 37 The father struck son the son struck  
 father, and the friend struck friend in that great battle. The people  
 of the Pandava army, leaving their armour were seen running away  
 with dishevelled hair. Then the army of the Pandavas, whose war  
 riors had lost their wits, distressed and frightened were seen uttering  
 frightful sounds. Shree Krishna the joy of the Yadavas seeing the  
 army of the Pandavas in the act of suffering defeat, checked his  
 chariot and thus spoke to Arjun — 'The time has now come, Arjun  
 which you were so long wishing for. Attack Bhishma, if you have

मयंसकालः संप्राप्तः पार्थयस्तेऽभिकाक्षितः ॥ ४२ ॥ प्रहृष्टचनरध्याघ्न नचेन्मोहा  
 द्विमहासे । यत्तथाकथितं वीर पुगात्तानांसमागमे ॥ ४३ ॥ भीष्माद्रेण मुखात्सर्धान्धार्य  
 गच्छस्य सैनिकान् । सानुवंचान् इतिभ्यामि येमांयोत्स्यन्ति संयुगे ॥ ४४ ॥ इतिनरकुरु  
 कौतेय सत्यंवाच्यमर्द्धम । धीमत्सोपदय सैन्यंस्वभज्यमान तत्सम्मतः ॥ ४५ ॥ द्रवतथ  
 महीपालान्पश्ययौधिष्ठिरवले । दृष्ट्वाहि भीष्म समरे व्यात्ताननमिवांतकम् ॥ ४६ ॥  
 मयार्ता प्रपलायंते सिंहातुक्षुद्रमृगादय । एवमुक्तः प्रत्युवाचबाहूदेवं धनंजय ॥ ४७ ॥  
 नोदयाभ्वान्यतो भीष्मो विगार्हतद्वलार्णवम् । नातयिभ्यामि दुर्वयं वृद्धकुरुपितामहम्  
 ॥ ४८ ॥ सञ्जय उवाच । ततोभ्वान् रजतप्रख्याप्तो द्यामासमाधव । पतोभीष्म  
 रथो राजन् दुष्टेष्टयोरक्षिमवानिव ॥ ४९ ॥ तनस्तत्पुनरावृत्तं युधिष्ठिर्यत्नमहत् । दृष्ट्वा  
 पार्थ महाबाहु भीष्माद्योद्यनमाहवे ॥ ५० ॥ ततो भीष्मः कुरुधेष्ठ सिंहवद्विनदन्मुहुः ।

मोहमे अज्ञान नहीं है तो इनके ऊपर मड़ार कर । ४२ । हे महावीर पूर्व समयमें राजा  
 अर्जुन के मिलाप में जो तुमने कहा है, कि दुर्योधनकी सेना के भीष्म द्रोणाचार्य आदि  
 लोगों को उन के सहायकों सपेन मारुंगा जो कि मुझ से युद्धको करेंगे, हे  
 शत्रुंजय अर्जुन तू अपने उस वचनको सत्यकर तू इधर उधर छिन्न भिन्न हुई अपनी  
 सेनाको देख, युधिष्ठिर की सेनामें युद्ध कुशल मृत्यु के समान भीष्मको देखकर इन  
 भागते हुये राजाओं को देखो । ४६ । यह सब भयसे पीड़ित होकर ऐसे नाश हुए  
 जाते हैं जैसे कि छोटे मृगतिहको देखकर भयसे मरजाते हैं यह कृष्ण के वचन  
 सुनकर अर्जुन ने वासुदेव जीको उत्तर दिया, कि आप घोड़ोंको उधर चलाओ  
 जहां भीष्मजी हैं मैं अब इस सेना रूपी समुद्रको उतरकर इस अजेय और वृद्ध  
 कौरवों के पितामहको गिराऊंगा हे गंगा तबतो माव्यजी ने चांदी के समान श्वेत  
 रंगके घोड़ोंको उधरहीको चलाया जिधर सूर्य के समान कठिनता से देखने के  
 योग्य भीष्मजी थे, इस के अनन्तर भीष्मके निमित्त युद्ध में महत् महाबाहु अर्जुन  
 को देखके युधिष्ठिरकी वह बड़ी भारी सेना फिर लौटआई, । ५० । तदनन्तर

not lost your senses 42. You said in the presence of kings that  
 you would destroy Bhishma Drona, and other warriors of the Kau-  
 ravas with their allies in battle Fulfil your promise, destroyer of  
 foes! Look at your army scattered here and there and look at bravo  
 Bhishm roaming like Death and causing the kshatryas, flight. 46  
 They die with fear like lower animals in the presence of a lion." To  
 these words of Vasudev Arjun gave the following reply:—"Lead  
 the horses to the place where Bhishm is I shall cross the ocean of  
 the army and shall destroy the old grandfather of the Kauravas. At this,  
 Madhava drove the silvery horses towards Bhishm who stood in great  
 glory and could not be gazed at like the sun Seeing Arjun ready  
 to fight with Bhishm, the army of Yudhishtir came back. 50. Then

धनंजयः शीघ्रं शरैर्वैरवाकिरत् ॥ ५१ ॥ क्षणेन सरयस्तस्य सद्यः सहस्रारविः ।  
 शरवर्षणं महता संछन्नो न प्रकाशते ॥ ५२ ॥ वासुदेन स्य सप्रतो धैर्यमास्थाय सत्त्व  
 यन् । चोदयामास तान् श्वान् विचिंतान् भीष्मसायकैः ॥ ५३ ॥ ततः पापार्थं धनुर्गृह्य  
 दिव्यं जलदग्निं स्वनम् । पातयामास भीष्मस्य धनं छित्त्वा त्रिभिः शरैः ॥ ५४ ॥ सल्लिख  
 धन्वा कौरव्यः पुनरप्यमहदनु । निमिषांतरमात्रेण सज्जं चक्रे पिता तव ॥ ५५ ॥  
 पिचकपिततो दोषार्थं धनुर्जलदग्निं स्वनम् । धय स्यतदा पितुः क्षिच्छेद्धनुर्जुन ॥ ५६ ॥  
 तस्य तत्पुत्रायामास लाघवं शान्तना सुत । साधुगार्धमहाबाहो साधुभो पाण्डुनन्दन ॥ ५७ ॥  
 त्वय्येवैतद्युक्तां मह्यं कर्म धनं जय । प्रीतोऽस्मि सुभृशं पुत्रं कुरुपुत्र भयासह ॥ ५८ ॥  
 इति पार्थ प्रशस्यान प्रगृह्यान्महदनु । समोच समरे क्षीरः शरान् पार्थं प्रति ॥ ५९ ॥  
 अदशेयं वासुदेवो हययानि परं चलन् । मोक्षान् कुर्वन् शरास्तस्य मण्डलाः ॥

सिंहसमान गर्जने कौरवों में भेष्म भीष्मजी ने शीघ्रही बाणोंकी वर्षा से अर्जुनको  
 ऐसा ढकदिया कि उसकारण ध्वना सारथी समेत क्षणभर में बाणों से आच्छादित  
 होकर दिखाई नहीं दिया, फिरतो भ्रान्त से रहित युद्धिमान वासुदेवजी ने धैर्यतामें  
 नियत होकर भीष्मजी के शायकों से ऊर्ध्व के धनुषको काटकर पृथ्वीपर गिरा  
 दिया, फिर उसटूटे हुए धनुष वाले पितामह भीष्मने शीघ्रही दूसरे बड़े भारी धनुषको  
 लेकर एक निमिषमें ही तैयार कर लिया ॥५५॥ तदनन्तर उसवादलके सामान गर्जने  
 व ले धनुषको भीष्मने दोनों हाथों से खेंचा फिर क्रोधयुक्त अर्जुनने उनके उसधनुष  
 कोभी काटा, अर्जुनकी इस हस्तलाघवताको देखकर भीष्मजीने प्रशंसाकी कि हे महा  
 बाहु अर्जुन धन्य है हे पांडवनन्दन तुमको धन्य है, हे संसारके धनोंके विजय करतवाने  
 यह बड़ा कर्म तुम्हींमें है योग्य है योग्य है हे पुत्र मैं तेरे इसकर्मसे अत्यन्त प्रसन्न हूँ तू  
 मेरेसंग युद्धकर इसरीतिसे इसरीरने अर्जुनकी प्रशंसाकरके फिर दूसरे बड़े धनुषको  
 लेकर अर्जुनके रथपर बाणोंकी वर्षाकरी, फिर वासुदेवजीने भीष्मके बाणों को

roaring like a lion, Bhishm the test of the Kauravas soon covered  
 Arjun with the shower of arrows so that neither the chariot nor the  
 coach man or standard was discernible. Then wise Vasudev with  
 great skill caused the bow of Bhishm to be cut down by his own  
 arrows. Bhishm the grandfather then took up another large bow  
 and prepared it for action in a trice. 55 Bhishma drew with both  
 hands the bow which roared like thunder, but Arjun cut this second  
 bow too. At this dexterity of Arjun's hand Bhishm praised him, say-  
 ing, "Well done, brave Arjun! Well done son of Pandu! It was  
 worthy of you Dhananjaya! I am much pleased with this work of  
 thine, my son! Fight with me! Having thus given praise to Arjun,  
 Bhishm took up another large bow and showered his arrows on him.  
 Vasudev turned the horses of chariot, now this way now that way,

न्याचरलुपु ॥ ६० ॥ ततः तु भीष्मः सुदृढं वासुदेव धनञ्जया । विव्याध निशिनैर्वाणैः  
सर्वगात्रेषु भारत ॥ ६१ ॥ शुश्रुमते नरव्याघ्रौ तौ भीष्मशरविश्रतौ । गोवृषाविव सं-  
र्षौ विषाणैर्दिल्लितांक्षिनौ ॥ ६२ ॥ पुनश्चापि सुसंमुखः शूरैः शन सहस्र । कृष्णयो-  
रुधि संरब्धो भीष्म आवार यद्विशः ॥ ६३ ॥ वाष्णोवच्च शरैस्तीक्ष्णैः कम्पयामास रो-  
पितः । मुहुर्भ्युत्तमयन् भीष्मः प्रहृष्य स्ववचत्तदा ॥ ६४ ॥ ततः कृष्णस्तु समरं दृष्ट्वा  
भीष्मपराक्रमम् । सग्नेह्यच्च महाबाहू पार्थस्य मृदुयुद्धताम् ॥ ६५ ॥ तं भीष्मं शर-  
पाणिं सृजन्त मनिशं युधि । प्रपतन्मिवादिन्य मध्यमाभापत्तेनयोः ॥ ६६ ॥ यान्  
घरान् विनिघ्नन्त पाण्डुपुत्रस्य सैनिकान् । यगांतमिव कुर्वाणं भीष्मं पाण्डिष्ठिरे वले ६७ ॥  
अमृष्यमाणो भगवान् केशवः परवीरहा । अर्चिदयद्गोपात्मा नास्तिर्योधिष्ठिरं दत्तम् ६८

निष्कल करके तेजमंडलों में घुमने हुये घोड़ोंके चमने में बड़ा पराक्रम दिखाया ६०  
इसके पीछे भीष्मजीने अपने तीक्ष्ण वाणों से वासुदेवजी को और अर्जुन को बहुत  
घायल किया। उनवाणों से अत्यन्त घायल वह दोनों पुरुषोत्तम ऐसे शोभायमान  
हुए जैसे कि गजों और शारवाओं के घातसे चिह्नित दो उत्तम बैल होते हैं, इसके  
पीछे अत्यन्त क्रोध में भरे हुए भीष्मजीने लाखों वाणों से इनदोनों कृष्ण अर्जुन की  
दिशाओं को रोक दिया, फिर बारम्बार अत्यन्त अहंकार और क्रोधयुक्त भीष्मजी  
ने बड़े ऊंचे शब्द से हँसकर तीव्र वाणों से छिपिबंशी श्री कृष्णजी को कंपाय-  
मान कर दिया । ६४ । इस के अनन्तर महाबाहु श्रीकृष्णजी युद्ध में भीष्मजी के  
महा पराक्रम को देखकर और अर्जुन के मृदु युद्ध को अच्छी रीति से विचार  
और युद्धमें बारम्बार वाणोंको छोड़ते हुए दोनों सेनाओंके बीचको पाकर पांडवोंकी  
उत्तम सेनाको और सेनाके उत्तम शूरवीर पुरुषों को सूर्यके समान संतप्त करते  
वा, मारने, युधिष्ठिर की सेनामें प्रलय मचातेहुए भीष्मको देखकर उस बड़े ब्रानी  
शत्रुओं के मारनेवाले लज्जाशील भगवान् केशवजीने, यह विन्ताकी कि युधिष्ठिरकी  
सेना नहीं रहेगी क्योंकि भीष्मजी एकही दिन में युद्धके बीच दैत्य दामवों कोभी

and made the downpour of Bhishm's arrows futile. Then Bhishm wounded much Vasudev and Arjun with his sharp arrows. Wounded with those arrows the two best of men looked glorious like two bellowing bulls wounded with the horns of each other. Then Bhishm in great rage checked Krishna and Arjun with thousands of his arrows, and they could not move in any direction. Bhishm, full of pride and anger, with loud laughs shook Krishna of the Vrishni family by his arrows. 64 Then brave Krishna, seeing the great prowess of Bhishm and seeing also the mildness of Arjun's fighting and seeing the continuous downpour of Bhishma's arrows over the Pandav army and the consequent destruction, the wisest of men, destroyer of enemies Bhagwan Keshav of forgiving nature thought that Yudhishtir's army would be extirpated as Bhishm could destroy all the gods and

एकाहनाहिरणे भीष्मो नाशयेद्देव दानवान् । किन्तुपाण्डुस्तान् युद्धे सबलान् सपदा  
 नुगान् ॥ ६९ ॥ द्रवतेच महासैन्यं पांडवस्य महात्मनः । एतेच कौरवास्तूर्णं प्रभगन्वी  
 ह्यसोमकान् ॥ ७० ॥ प्राद्वयंति रणे दृष्ट्वा हर्षयन्त पितामहम् । सोऽहं भीष्मं निहन्म्य  
 च पांडवाणीयं देशिनः ॥ ७१ ॥ आरमेत विनेष्यामि पांडवानां महात्मनाम् । अर्जुनोहि  
 अर्जुनोहि शरैस्तीक्ष्णैर्बध्ममानोऽपि संयुगे ॥ ७२ ॥ कर्तव्यं नाभि जानाति रणे भीष्मस्य  
 गौरवान् । तथा चित्तयतस्तस्य भूय एव चित्तमहम् । प्रेषयामास हृदयशरान् पार्थ  
 रथं प्रति ॥ ७३ ॥ तेषां बहुवाचु भृशशराणां दिशश्च सर्वाः पिहिताय भूयः । न चांत  
 रिक्षं न दिशो न भूमिर्न भास्करो दृश्यतश्चिममासी ॥ ७४ ॥ घबुक्षवातास्तमुलाः  
 सधूमादिशश्च सर्वाः क्षुभिताश्च भूयः । द्रोणोऽतिकर्णोऽप्यजयद्रथश्च भूतिश्रवाः कृतवर्मा कृपश्च  
 ॥ ७५ ॥ श्रुतायुश्च द्रुपतिश्च राजा विदा विदौ च स दक्षिणश्च । प्राच्याश्च सौधैरगणय

नाश करनेवाले हैं तो सेना और सहायकों समेत पांडवों का मार डालना उनको  
 कितनी बड़ी बात है । ६९ । और इन महात्मा पांडवोंकी सेना भागीभी जाती है, और  
 यह कौरव लोग सोमकों को युद्धसे भागे हुए देखकर बड़े प्रसन्न चित्त पितामहको  
 आनन्द देते हुए चारों ओर से दौड़े चले आते हैं तो अब मैं भी शस्त्र धारण करके पां  
 डवों के निमित्त भीष्मको मारके महात्मा पांडवों के इस महाभारको दूर करूंगा,  
 और अर्जुन भी युद्ध में तब वाणों से पीड़ा मान है वह इस युद्ध में भीष्मजीकी महत्ता  
 से करनेके योग्य कर्मको नहीं जानता है, इसप्रकार उन श्रीकृष्णजी के विचार कर  
 ते ही मैं फिर अत्यन्त क्रोधरूप भीष्मजीने अर्जुन के रथपर वाणोंको फेंका । ७३ ।  
 उनवाणोंकी अत्यन्त आधिययतासे सब दिशादक गई, उस समय आकाश और दिशा  
 कुछ भी दिखाई नहीं देते थे और न किरणमयूह धारी सूर्य दिखाई देता था वायु महा  
 तुल्य हुआ सब दिशाओं में धुआं सा व्याप्त होकर महा व्याकुलता मच गई द्रोणाचार्य  
 विश्वं जपद्रथ भूरिश्रवा कृतवर्मा कृपाचार्य श्रुतायुश्च द्रुपति विन्द अनुविन्द मुदक्षिण  
 पश्चिमी राजा सौर्यारोंके गण सर्वविशानगण तुद्रकमालव यह सवराजालोग शीघ्र ही

danavas in a day and therefore the destruction of the Pandavas and  
 their allies was no great work for him. 69. The army of the great  
 Pandavas is running away, and the Kauravas, seeing the flight of the  
 Samaks, are swarming from all sides to the joy of the grandfather.  
 So I shall take up arms for the good of the Pandavas and shall re-  
 lieve them from this danger by killing Bhishm. Arjun too is wound-  
 ed by sharp arrows and does not know what to do out of respect for  
 Bhishm. When Shro Krishn was thus thinking, Bhishm again show-  
 ered his arrows over the chariot of Arjun. 73. The thick shower of  
 arrows covered all the directions of space, and neither the sky nor  
 earth was visible. The rays of the sun were hidden with those arrows;  
 the wind blew a gale. There was an uneasiness on all sides and there  
 was something like smoke spread all over. Dronacharya, Vikarn,

सधे वशातयः सुद्रकमालवाश्च ॥ ७३ ॥ किरीटिनं त्वरमाणा विसृष्टिदेशगा शान्त  
नवक्षयराज्ञः । तवाजिपादातरथौघजालैरनेकसाहस्रशतैर्दृशं ॥ ७४ ॥ किरीटिनं संप-  
रिवार्यमाणं शिनेनैता घारणव्यूहैश्च । ततस्तुष्टयैर्बुधनवासुदेधौ पदंति नागाभ्यरथैः  
समताम् ॥ ७५ ॥ अभिद्रुतो शूल भृतांवरिष्ठो शिनिप्रवीरः सहस्राभित्य ॥ ७६ ॥ स्वकारसाहाय्यम-  
याजितस्य विष्णुर्पया मृदुनिवृद्धस्य । विशीर्णनागाश्च रथश्चजौघं भीष्मेणविनासित  
सर्वपोषम् ॥ ७७ ॥ युधिष्ठिरानोकमभिद्रुतं प्रोवाच सदृश्यशानि प्रवीरः । पश्य  
त्रियायास्यथनैपथ्यम् : सतांपुरस्तात्कथितः पुराणैः ॥ ७८ ॥ मास्वःप्रतितांत्य जतप्र-  
धीराः स्वधीरघमैः परिपालयस्वम् । ताभ्यां स घानं तरजौ निशाम्य नरेन्द्रमुत्पान्  
द्रवतःसमेताम् ॥ ७९ ॥ पार्थस्य दृष्ट्वा मृदुबुद्धतां च भीष्मं च संखे समर्प्यमाणम् ।  
नवभ्रमाणः सततोमहारमा यशस्विनं सयं दराहंभर्ता ॥ ८० ॥ उवाचहीनयमसि

भीष्मजी के आज्ञावर्त्ती होकर अर्जुन की ओरको दौड़े जब सात्यकि ने उसअर्जुन  
को घेरे हाथी रथ और पदातियों के लाखों जालों से और हाथियों के स्वाभियों  
से घिरा हुआ देखा वहाँजाकर उसशूरवीर धनुषधारी सात्यकिने उन सेनाओंके  
सम्मुख पहुँचकर ॥ ७८ ॥ अर्जुनकी ऐसीसहायता की नैसी कि विष्णु भगवान्  
इन्द्रकी सहायता करते हैं फिर वह महाबली सात्याकी युधिष्ठिर की रथहाथी घेरे  
और पदातियों सेवेत उत भागनेवाली सेनाका भित्तकी सवधनों गिरी हुई और  
शूरवीर भीष्मजी से भयभीत हुए देखकर यह वचन बोला कि हे सत्रिया कहाँ  
भागो पुराणों ने यहधर्म श्रेष्ठपुरुषोंका नहीं कहा है ॥ ८१ ॥ हे श्रेष्ठवीर लोगो  
अनेक मणों की मत्स्यगोत्राने वीरधर्मों से पुरुषार्थ करो तुमअर्जुन को मृदु बुद्ध  
कर्त्ता और भीष्म को भयंकर बुद्ध कर्त्ता और चारों ओरसे गिरते हुए कौरवोंको

Jayadrath, Bhurisrava, Kritvama, Kripacharya, Shrutayu, the ruler  
of Amvāhta, Vind, Anuvind, Sudakshin; the princes of the West, the  
armies of Sauvirs, the Vishats and the Kshudraks attacked Arjun by  
Bhishma's order. When Satyaki saw Arjun surrounded by thousands  
of horses, elephants, chariots, foot soldiers and elephant riders, he came  
at once to the rescue. When there the brave warrior helped Arjun  
as Vishnu helped Indra. The brave warrior Satyaki, seeing the cha-  
riots, elephants, horses and foot soldiers of Yudhishtir in a state of  
disorder, their banners fallen and the whole army terrified by the  
brave deeds of Bhishma, he cried out:—"Where are you going Ksha-  
tryas? This has never been the practice of good men in ancient times. 81.  
Do not lose your lives, good warriors. Do your duty manfully. You  
think Arjan to be mild in fight and Bhishma to be a dreadful fighter,  
and therefore you are running away at the sight of the Kauravas.



प्रशंसन्द्वा कुरुनापततः समग्रान् । येयांति ते यांति शिनि प्रवीर्येपि स्थिता साध  
 ततेपियांति ॥ ८४ ॥ भीष्मरथात्पदयानिगत्यमानं द्रोणं च संयथे स गणं मयाप ।  
 न मे रथी सात्यत कौरवाणां कुहस्यमुदेतरणेद्य कश्चिन् ॥ ८५ ॥ तस्मादहं  
 गृह्यार्षांगमुग्र प्राणहरिष्यामि महाव्रतस्य । निहत्य भीष्मं स गणं तथाजौ द्रोणचरैरेव  
 रथप्रवीरौ ॥ ८६ ॥ प्रीतिकरिष्यामि घनं जयस्य राज्ञवर्धनस्य तथाभिनोक्ष । निह  
 त्य सर्वानधूत राष्ट्रपुत्रांस्तत्पत्तिणो ये च नो द्रमुख्याः ॥ ८७ ॥ राज्ये न राजानमजातशत्रु  
 संपादयिष्याम्यहमद्यहम् । ततः सुनामं वसुदेवपुत्र । सूर्यप्रभं वज्रसमप्रभाधम् ॥ ८८ ॥  
 क्षुरांतमुद्यम्य भुजेन चक्रं रथादवप्लुत्य विसृज्य बाहान् । संकपयन् गान्धर्वैर्महाभाम्

देखकर भागे जाते हो यह वचन सुनकर सब यादवों के भर्त्ता महात्मा श्रीकृष्णजी  
 बड़ी प्रशंसा करके उस यशस्वी सात्यकि से बोले कि हे सेनापतियों में बड़े वीरजो  
 जाते हैं वह चले जायें और जो नियत हैं वहभी चाहे चले जायें । ८४ । अब युद्ध  
 के बीच रथ हाथी घोड़े और सब सेना समेत भीष्म को और द्रोणाचार्य को  
 मेरे हाथ से गिरे हुए देखो हे यादव सात्य के कौरवों की सेना में कोई ऐसा नहीं  
 है जो अब युद्ध में मुझ क्रोधयुक्त हस्तोंय युद्ध करने को समर्थ हो, इस कारण अब मैं  
 महाव्रतभीष्म के प्राणों को हूँ । हे सात्यकि रथियों में बड़े वीर भीष्म और द्रोण  
 चार्य को सेना के समूहों समेत इस युद्धभूमि में मारकर, राजा युधिष्ठिर अर्जुन  
 भीमसेन नकुल और सहदेवकी मसन्नता को कहेगा अब मैं मसन्न मन होकर धृतराष्ट्र  
 के सब पुत्रोंको और जो उनके सहायक राजा हैं उनको मारकर । ८७ । अजात  
 शत्रु राजा युधिष्ठिर को राज्यसे युक्त करेगा, यह कहकर वासुदेव श्रीकृष्णजी  
 सुन्दर रूपमूर्त्य के समान प्रकाशित हज्जरवज्र के सदृश कठोर 'छुरे' के समान  
 तीक्ष्ण घेरारखने वाले चक्रको ऊंचा घुमाकर और घोड़ोंको 'छोड़' रथसे उतर चरणों

advancing on all sides!" At this, Krishna the lord of the Yadavas praised  
 Satyaki and said, "Bravest of commanders, let them go who are  
 unwilling to stay. I care not if the remaining ones also leave us. 84  
 You will now see the fall of Bhishm and Dronacharya with the  
 chariots, elephants, horses and soldiers by my hands in the field of  
 battle. There is none, O Satyaki, in the midst of the Kauravas that  
 can withstand me in my rage. I shall therefore deprive Bhishm of  
 his life. Having killed brave Bhishm and Dronacharya with all the  
 hosts in the field of battle, I shall please king Yudhishtir, Arjun,  
 Bhishm, Nakul and Sahadev. I shall, with great pleasure destroy  
 all the sons of Dhritrashtra and their allies 87. I shall install prince  
 Yudhishtir on the throne." Having said this, Vasudev Shree Krishna  
 turned on high his discus of beautiful form, glorious like the sun,  
 a thousand times as hard as the vajra and having a sharp edge all

वेगेन दृष्ट्वा प्रससारभीष्मम् ॥ ८९ ॥ मदांघमाजौ समुदर्णदौर्ग सिंहाजिघासत्रिय  
धारणेन्द्रम् । सोमिन्द्रवन्भीष्ममनीकमध्ये कुदोमहेंद्रावरज प्रमाथी ॥ ९० ॥ ध्यालंवि-  
गितात पट्यकाशे घनोपधयेतद्वितावनद । सुदर्शनचाक्षरराजशारेस्तच्चक्रपद्म  
सुभुजोरुनालम् ॥ ९१ ॥ यथादिग्गतकणाकं वर्णरगजनारायणनाभिजातम् । तत्पृष्णको  
पोदयसूर्यबुद्ध भुराततीक्ष्णप्रसृजातधनम् । ९२ ॥ तस्यैव देहोदसं प्रकटराजना  
रायणबाहुनालम् । तमात्तचक्रमणदतमसै कुदमहेंद्रावरजसमीक्ष्य ॥ ९३ ॥ सर्वाणि  
भूतानि भूदिवनेदु क्षय कुरुणमिव चितयित्वा । स चास्त्रेव प्रगृहीतचक्र संपतयिष्य  
त्रियसर्वलोकम् ॥ ९४ ॥ अयुधतन्त्रलोकां गुरुरासे भूतानिघक्ष्यान्निवधूमकेतु ।

से पृथ्वी को अत्यन्त कंपायमान करने हुए महात्मा भीष्मकी ओरको ऐसे चले  
जैसे कि युद्धभूमि में महामदन्यत्र अहकारी गजेन्द्र के मारनेको सिंह दौड़े । ९० ।  
उत्तममयगरीर में वर्त्तमान उत्तम पीताम्बर ऐमा प्रकाशमान हुआ जैसे कि आकाश  
में सुन्दर अलंकारों से युक्त बादल विजयीसहित हो, और इन श्रीकृष्णजी का वह  
सुदर्शनचक्र रूप कमल जिनकी यही नालही सुन्दर भुजा थी ऐमा शोभायमान  
विदित हुआ जैसे कि नारायण की नाभि से उत्पन्न तरुणसूर्यके समान वर्णवाला  
नवीन कमल शोभायमान हुआ था यह कमल श्रीकृष्णजी के कपोलरूप सूर्य के  
उदय से खिलाहुआ और दुराओं से युक्ततीव्रनोकक्षपत्तेवाला उनके शरीररूपी  
बड़े तड़ागमें निपुत शोभायमान हुआ ऐसे चक्रगारी उच्चस्वर से गर्जना करने  
वाले महाइन्द्रके छोटे भाई श्रीकृष्णजीको देखकर सबभीष यह चिन्ता करके  
अत्यन्त पुकारे कि यह कौरवों की मलय वर्त्तमानहुई फिर यह चक्रगारी लोकों के  
स्वमी जीवलोक के नाश करनेको सम्मुख गिरते हुए ऐसे प्रकाशमान हुए  
जैसे कि सबजीवमात्रों का भस्म करनेवाला अग्नि देदीप्यहोता है ऐसे पृथोत्तम

round like that of a razor. He left the reins of the horses and jump-  
ing down from his chariot, ran towards Bhishma, shaking the earth  
under his feet, like a lion assaulting an elephant. 90 At that time  
the yellow cloth which he had on his body, shone like lightning in the  
midst of clouds. The Sudarshan chakra (discus) of Shree Krishna,  
having his arm for its stem, looked like a new lotus arising out of the  
navel of Narayan, like the sun in all its vigour. That lotus flower  
opening at the rise of the sun of Shree Krishna's anger and provided  
with sharp edges for its petals, looked very handsome over the lake of  
Shree Krishna's body. Seeing Krishna the Learner of discus and  
younger brother of Indra, roaring loudly, all creatures cried in terror  
and thought that the end of the Kuravas was nigh. Then that  
wielder of the discus, the lord of the world, ready to destroy the  
world, looked glorious like fire the destroyer of all things. Seeing

तमाद्रवंतंप्रगृहीतचक्रं दृष्ट्वादेवशांतनयस्तदानी ॥ ९५ ॥ असंभ्रमंतद्विचक्रपदेभ्यो  
महाधनुर्गांडिवस्तस्यधोपम । उवाचभीष्मस्तमनंतपौरुषं गोविंदमाजायविमुदचेतः  
॥ ९६ ॥ पश्योहिदेवेशजगन्निवासनमोस्तुने माधवचक्रपाणे । प्रसह्यमां पातयलोक  
नापरयोत्तमात्सर्वशरण्यसख्ये ॥ ९७ ॥ त्वयाइतस्यापि ममाश्रुणश्रेयः परमिषि  
हचैवलोके । संभावितोस्म्यधकवृष्णिनाथलोकैस्त्रिभिर्वीरैश्चतुर्भिः ॥ ९८ ॥  
रथादवप्लुत्यततस्त्वेराधान् पाथोप्यनुदुत्य यदुप्रवीरम् । अग्राहपीनोत्तमलघवाहुंवाहो  
हंरिष्यायतपीनबाहुः ॥ ९९ ॥ निगृह्यमाणश्च तदादिदेवो भृशंसरोपः श्लिषास  
योगी । आशययोगेन जगामविष्णुर्जिष्णुमहाबातइवैकवृक्षम् ॥ १०० ॥ पाथेऽनुवि-

देव देव चक्रधारी को आता देखकर, धनुष बाण हाथ में रखनेवाले रथारूढ़  
भीष्मजी निर्भयता से बोले कि हे देवेश्वर हे जगन्निवास हे शार्ङ्गधन्वा गदा खड्ग  
धारी आओ मैं तुमको नमस्कार करता हूँ हे लोकनाथ हे जीवों के आश्रय और  
रक्षा के स्थान तुम युद्ध में हठकरके मुझको इसउत्तम रथसे गिराओ हे श्रीकृष्णजी  
अब तुम्हारे हाथसे मुझपरे हुएका इसलोक और परलोकमें कल्याण है । ९७ ।  
हे अन्यक दृष्णी क्षत्रियों के नाथ मैं तीनों लोकों में प्रसिद्ध मभाववाला होकर  
अंगीकार हुआ हूँ वड़े वेगसे दौड़ते हुए श्रीकृष्णजी भूमिके इस वचन को सुन  
कर उन से बोले कि अब तुम्हीं इस संसारके नाश के मूलहो सो तुम अबदुर्योधन  
का नाश देखोगे क्योंकि दुष्टदूतका खेलने वाला राजा धर्ममार्ग में नियत मंत्री से  
निवारण करने के योग्य है अथवा जो काल से विपरीत बुद्धी होकर धर्मको  
उल्लंघन करके चले वह कुलका कलंकी है वह त्यागही करने के योग्य है इस बात  
को सुनकर वह राजा देवव्रत भीष्मजी यादवों में बड़ेवीर परम देवदेव श्रीकृष्णजी  
से यह वचनवाले कि देव भवस है यादवों ने अपने प्रयोजन के सिद्धकरने

that best of men, the god of gods and wielder of mace, Bhishm, armed  
with bow and arrows, said fearlessly from his seat in the chariot:-  
" Lord of gods ! asylum of the world ! Wielder of Sharang bow, mace  
and sword ! welcome. I bow to you Lord of the world ! refuge of  
being ! you may well make me fall from this good chariot. It will  
be good for me in this world and the next, if I fall by your hand. 97.  
Lord of the Andhaks and the Vrishnis ! I shall deem myself fortunate  
above the three worlds, if I am accepted by you." Hearing the words  
of Bhishm, Shree Krishna who was coming towards him in great  
haste, replied, "You are at the root of all this bloodshed and will see  
the destruction of Duryodhan; for honest ministers should check a  
king from the wickedness of gambling, and he who acts unjustly  
without regard for time and place, is a curse to the family and worthy  
of being abandoned." Having heard this, Devabrata Bhishm, gave the  
following reply to the greatest warrior of the Yadavas, Shree Krishna

हृषयलेनपादौ भीष्मानिकर्तृममिद्वचनम् ॥ यत्प्रजिज्ञाहर्षिर्गिरिपदेन राजन्दशमे  
कञ्चित् ॥ १ ॥ अथस्वित्तं धर्मिणः पापकृष्णं प्रतीक्षुनाकाञ्चनचित्रमालः ॥ वयाचको  
पप्रतिसंहरति गतिर्मनान्केशवपांडवानां ॥ २ ॥ नृणां स्यते कर्मयया शतितपुत्रैः शपेक्षताय  
सोद्वेष्ट ॥ अंतर्करिष्यामि यान् कुरुक्षेत्रां ययाहर्षिद्रानुजसं प्रयुक्तः ॥ ३ ॥ ततः प्रतिसां  
समयं च तस्य जनार्दनः प्रोतमनानि शम्प । स्थितः प्रिये कोरयसत्तमः शरयश्चक्रः पनराहरं ह  
॥ ४ ॥ सतान् भीष्मपुत्रमराददानः भगवत्शस्त्रप्रियां निहन्ता । विनश्यतां मां सतोदिताय  
स पांचजन्यस्य रवेण शोभिः ॥ ५ ॥ व्याघ्रिदन्ति कां गच्छेत्कुललतरजं विकीर्णचितपध  
नेत्रम् । विशुद्धं द्रष्टुं गृहीतशस्त्रं विचक्रुः प्रेक्ष्य कुलपतिराः ॥ ६ ॥ मृदगेभेरी पणव

के लिये कंसको मारा वह राजा भी मरमाने से नहीं सम्झता मारव्य मे दुख के  
लिये जिनकी विपरीत पुदि है उसको अभीष्ट मुनाने वाला कोई नहीं है, इसके पीछे  
सम्बे और मोटे भुजावाले शीघ्रता करने वाले अर्जुन ने रथसे कूदकर पैदल चलकर  
मोटे ऊँचे और सम्बेभुजा वाले यादवों में बड़े वीर हरिको दोनों भुजाओं से  
पकड़ लिया, तब आदिदेव आत्मयोगी और अत्यन्त क्रोध रूप पकड़े हुए  
विष्णुजी अर्जुन को लेकर ऐसी शीघ्रतासे चले जैसे कि बड़ा बायु अनेक  
वृक्षों को लेकर चलता है । १०० । हेराजा फिर महात्मा अर्जुन ने वससे दोनों चरणों से  
पकड़कर बड़ी शीघ्रतासे भीष्मजी की ओर दौड़ते हुए १० दशवें पाद चिह्न पर बड़ी  
सुगमता पूर्वक चलते पकड़ लिया, सुनहरी जड़ाऊ मालाधारी ममन चित्त अर्जुन  
उन ठहरे हुए श्रीकृष्णजीको दृष्टवत् करके बोले कि आप क्रोधको दूर करिये हे  
कृष्ण आपही पांडवोंकी गतिहो । १०२ । आप अपने प्रणके अनुसार कर्मको मन  
छोड़ो, ॥ केशवजी में पुत्र और भाइयोंकी शपथ खाता हूँ हे इन्द्रके छोटे भाई मैं  
अवश्य आप के साथ में हाँकर कौरवों का नाश करूँगा तदनन्तर उसके प्रण और

the god of gods:—"Fate is very powerful. The Yadavas, for their own good, destroyed Kars who was dead to all good advice. No one can bring him to right path whose understanding is weak because he is fated to fall in misery." In the meantime, Arjun of long and thick arms jumped down from his chariot and caught the bravest of the Yadavas in both his arms. But the ancient god, atma-yogi, Vishnu, in the excess of rage, rushed on along with Arjun as a storm of wind carries away with it a lonely tree. 100. Arjun thereupon held both his feet fast before he had gone ten paces towards Bhishma. And bowing before Krishna, Arjun decked with gold necklace, thus addressed him:—"Subdue your wrath, Krishna. You alone are the refuge of the Pandavas. 102 Remember your promise and act accordingly. I swear by my brothers and sons. O younger brother of Indra, that in company with you I shall destroy all the Kauravas." Hearing his pro-

प्रणाशनेमिस्वनाहुं दुर्भितिः स्वनाश । स सिंहनादाश्च यधुपुत्राः सधैर्यनीकेषु  
 ततः कुरुणां ॥ ७ ॥ गांडीवघोषस्तनयितुक्लृप्तो जगन्मपाधेस्य गमोदिशश्च ।  
 जग्मुश्चवागा धिमला प्रसन्नाः सर्वादिशः पांडवचापमुक्ताः ॥ ८ ॥ तं कौरवागामधिपो  
 येन भीष्मेण भूश्रवसाच्चसार्द्धम् । अश्रुययावद्यतवाणपाणिः कक्षादिघोषं ध्वजं धूमके  
 तुः ॥ ९ ॥ अयाजुमाथ प्रजिघासमानेन भूरिश्रवाः सतस्रध्वजं ध्वजान् । दुर्योधनस्तोम  
 सप्रवेगं शब्दयोगदाशांत नधधशक्तिं ॥ १० ॥ स सप्तभिः संतर्शाप्रवेकान् संघार्थम्  
 श्रवसाधिपुष्टान् । शितेन दुर्योधनबाहुमुक्तं घृणेतसोमममुन्ममाय ॥ ११ ॥ ततः  
 शुभामपतती स शक्तिं विद्युत्प्रभां शांतनयेनमुक्ताम् । गेदांश्च मद्राधिप इमुक्तां ग्राभ्यां  
 शराभ्या निचकर्तवीरः ॥ १२ ॥ ततो युजाभ्यावलचद्विक्रयं क्षिप्रं धनुर्गांडिवमप्रसेयम् ।

नियमको मुनकर जनार्दनजी महा प्रसन्न होकर उस कौरवों में श्रेष्ठ अर्जुनके अभीष्ट  
 सिद्धकामने में प्रवृत्त हुए और चक्र समेत रखपर सवार हुए फिर उन जगामको हाथ  
 में लेनेवाले शत्रुओं के मरने वाले उन श्रीकृष्णजी ने हाथमें पांचजन्य शंखको  
 लेकर ऐसी ध्वनिकी कि जिसके कारण सब दिशाओं समेत आकाश शब्दायमान  
 होगया उस निष्कवाजबंद और कुंडलों से अलंकृत रजसे भरे पद्मनेत्र विभूद  
 दंप्रायुक्त शंख को धारण कियेश्री केशवमूर्तिको देखकर महाधर्सी कौरवलोग पुकारे  
 तदनन्तर मृदंग भेरी पटहाओंके व रथकेचक्रों के और दुन्दुभियों के भयकारी शब्द  
 शंखध्वनियों समेत कौरवोंकी सेनामेंभी होनेलगे । १०७ । और अर्जुनके गांडीव  
 धनुषका शब्द बादलकी गर्जना के समान आकाश और दिशाओं में व्याप्तहुआ  
 तदनन्तर पांडव अर्जुनके धनुषसे निकले हुए बहुत निर्मल और प्रकाशित वाण सब  
 दिशाओं में चले तब कौरवों का राजादुर्योधन जिसनेवाण हाथ में ऊंचाकररक्ता  
 था वह अपनी सेना व भीष्म भूरिश्रवाको साथ में लेकर अर्जुनके सम्मुख ऐसे गया  
 जैसे कि वनको जलाताहुआ अग्निजाताहै इसकेपीछे भूरिश्रवाने मुवर्ण धुलवाले सात

mise and condition, Janradan was much pleased and engaged himself  
 in doing what Arjun desired. He mounted the chariot together with  
 his discus. And taking the reins in his hand, Krishna the destroyer  
 of enemies blew his conch, known as Panchjanya, so loudly that the  
 sky with all the directions rang with the echo. The Kauravas cried  
 in dismay at the sight of Krishna decked with bracolets and earrings  
 and having eyes like lotus. Then the sounds of drums, trumpets,  
 horns, chariot wheels and bugles rose loud from the army of the  
 Kauravas. 107. But the sound of Arjun's Gandiv bow rose like a  
 peal of thunder above all the din. The arrows shot from Arjun's  
 bow were to be seen in all directions. Duryodhan the prince of the  
 Kauravas with his arms raised up, accompanied by Bhishm and  
 Bhurishmana and followed by a large army, faced Arjun like fire, burn-

माहेद्रमस्त्रेविधिवत्सुघोरं शूद्रयकाराद्भुतमं तरिक्षे ॥ १३ ॥ तेनोत्तमास्त्रेण तनो  
महात्मा, सर्वाण्यनिकानि महाधनुष्मान् । शरीरजालैर्विमलमिधर्गनिवारयामास  
किरीटमाली ॥ १४ ॥ शिलीमुखान्पार्श्वधनुः प्रसृज्यमान्ध्वजाग्रामि घ्नन्धियाहन् ।  
निकृष्य देहान् विविशुः पशेषां नरेन्द्रनागैर्द्रुतुरगमागाम् ॥ १५ ॥ ततो दिशः सोऽनु दिश  
ध्वजार्धः शरैः सुधरैः समरे वितत्य । गांडीव द्वादेन मनांसि तेषां किरीटमाली ध्वजार्ध  
चकार ॥ १६ ॥ तस्मिंस्तथाघोरातमे प्रवृत्ते शयस्त्वनाहुं दुभि नि स्वनाम् । संतर्हितागां

मल्ल अर्जुनके ऊपरफेंके, और दुर्योधनने बड़े शीघ्रगामी भयकारी तोमरको और  
शल्यने गदा को और भीष्मजी नंबरछीको मारा फिर अर्जुनने अपनेसात बाणोंसे  
भूरिश्रवक चलाये तीव्र सातों बाणोंको काटकर क्षुरमनाम बाणसे दुर्योधनके छोड़े  
हुए तोमरको काटा तिस पीछे भीष्मजी की विजय के समान तीव्र वरछी को, और  
शल्यकी फेंकी हुई गदा को अपने दोबाणों से काट कर ॥ ११२ ॥ महा कठिन  
और अतुल प्रभाववाले अपने गांडीव धनुष का दोनों भुजाओंसे खेंचकर बुद्धि  
के अनुसार महाघोर अर्ध माहेन्द्र अस्त्रको अन्तरिक्षमें प्रकट किया इसके पीछे  
बड़े धनुषधारी महात्मा मुकुटमालाधारी ने उस उत्तमधनुष के द्वारा निकले हुए  
बड़े स्वच्छ और तीव्र बाणों के समूहों से सब सेना को हटाया फिर उसके गांडीव  
से निकले हुए शिलीमुख बाण रथ हाथी घोड़े और ध्वजाओं के शिरोंको वा  
धनुषोंको और भुजाओं को काटकर शत्रुपक्ष के गजगजेन्द्र और राजाओं के शरीर  
में प्रवेश करगये फिर उस मुकुट मालाधारी अर्जुन ने उत्तमधारवाले तीव्रबाणों से  
दिशा और विदिशाओं को पूर्णरूपके गांडीव धनुषके शब्दों से उन सबके हृदयों  
को महापीडित किया इस प्रकार उस बड़े भयानक अस्त्रों के युद्ध में शत्रु दुन्दुभि-

ing a forest. Bhurishrava shot at Arjun seven golden darts with feathers;  
Duryodhan hurled his Tomar, Shalya his mace and Bhishm his spear.  
Arjun cut down the seven arrows of Bhurishrava with his own. With  
one arrow he cut down the weapon of Duryodhan and with two more  
he cut down the spear of Bhishm and the mace of Shalya 112. Draw-  
ing his Gandiv bow of immense strength with both his arms, he care-  
fully shot in the air the weapon given him by Indra. And then that  
great archer, decked with diadem and garlands, with his numerous  
bright arrows shot from the bow made all the warriors turn their  
faces. The sharp edged arrows shot from his bow, cut asunder the  
chariots, elephants, horses, banner heads, bows and arms and pierced  
through the bodies of the elephants and the princes of the enemy.  
Then Arjun decked with diadem and garlands filled all the directions  
with his sharp arrows and shook the hearts of the enemies with the  
twang of the Gandiv bow. Thus in that war of dreadful weapons  
the peals from conchs and trumpets were subdued by the twang of

डिव निःस्वनेन यभ्युहमाश्वध्वजप्रणादाः ॥ १७ ॥ गांडीव शब्दंत मथे विदिश्या विराट  
राजममुखः वधीतः । पांचालराजो द्रुपदश्च विराट् तद्देशमाजगमुर्दीनसत्त्वाः । १८ ॥ स  
र्वाणि सैन्यानि तु तावकानि यतो यतो गांडिवजः प्रणादः । ततस्ततः सन्नति मेघजग्मुर्नंतं  
प्रतीपोभिससारकधित् ॥ १९ ॥ तस्मिन्सुघोरेनुपसप्रहारे हताः प्रवीरा सरपाश्वस्ताः ।  
गजाधनाराच निपातता महापताकाः शुभकम्पकक्षाः ॥ २० ॥ परीतसत्त्वाः सहस्रा  
निपतुः किराटिनाभिघ्नतनुत्रकायाः । दृढहनाः पत्रिमिरुप चेगैः पार्थेन मवलैर्धिमलैः शिता  
धैः ॥ २१ ॥ निरुत्तयन्त्रानि हतेन्द्र कीला ध्वजामहांतो ध्वजिनी मुखेषु । पदातिसबाप  
रणाधसंख्ये हवाध नागाध धनजयेन ॥ २२ ॥ बाणादतास्तूर्णं गपेतसत्त्वा विष्टम्भगात्राणि

पों के शब्द, गांडीव धनुष के शब्दों में छुपगए और रथों के भी महाभयानक शब्द  
मन्दहोगये । ११.७। इसके पीछे उस गांडीव के शब्दों को जानकर नरोंमें वीर राजा  
विराट् आदि और पांचाल और द्रुपद यह महापराक्रमी उसस्थानपर आये और आपके  
पुत्रोंकी भी सब सेना वहां आई जहां कि गांडीवके बड़े शब्द हो रहे थे और सबों ने  
अपने को न्यूनही समझा कोई प्रतिपत्नी उसके सम्मुख नहीं गया हे राजा उसबड़े  
भयानक युद्ध में रथ वासूतों समेत बड़े २ शूरवीर मारे गये और सुनहरी जड़ाऊ  
मूलों से अलंकृत बड़ी पताका रखने वाले हाथी भी नाराचोंके आघात से झुलझुप  
से होकर अर्जुनके हाथ से कटे हुए शरीर से निर्जीव होकर अकस्मात् गिरपड़े,  
सेनाओं के मुखों पर राजा लोगों की ध्वजायें अर्जुन के भयानक वेग तीक्ष्ण धार  
युक्त निशित फलवाले बाणों से अत्यन्त विध्वंस होगई और यन्त्र कटेहुये हजारों  
इन्द्रजाल भी बारंबार नाशको प्राप्तहुए और युद्धमें रथ हाथी घोड़े और पदातिपों  
के समूहभी उस अर्जुन के बाणों से घायल और असामर्थ अंगोंको बिना साधे शीघ्र  
ही पृथ्वीपर गिरपड़े, हे राजा ऐत बड़े युद्धमें उस ऐन्द्रनाम उत्तम अस्त्र से कबचट्टे  
और शरीर जर्जरी भूतहोगये । १२.३। तदनन्तर अर्जुन के तीव्रबाण समूहों से

the Gandiv and the rumbling of chariot wheels was heard no more.  
117. Then hearing the sound of the Gandiv, the best of warriors,  
king Virat and others, with the Panchals and Drupad, came there.  
The whole army of your sons came there where the twang of the  
Gandiv proceeded from. None of the enemies dared approach Arjun.  
In that great battle, the warriors with their chariots and coachmen  
were destroyed and the large elephants bearing large banners  
and decked with gold trappings fell down wounded by the hand of  
Arjun. The banners of the princes at the heads of the armies, cut  
down by the arrows of Arjun, fell down on earth and thousands of  
machines were destroyed. The elephants horses and foot soldiers  
wounded in large numbers by Arjun's arrows fell down on earth.  
Coats of mail as well as the bodies of the warriors were pierced through  
and through by the weapon of Indra. 123. Then by Arjun's sharp

निपेतुं कथं । पेंद्रेजतेगास्त्र वरेण राजन् महाइवेभिन्नतनुप्रदेहाः ॥ २३ ॥ ततः शरीरैर्नि-  
शितैः किरिटिनः नृदेहश्चलत्तलोहितोदा । नदी लघोऽनारमेदफेनाप्रवर्तित तत्र प्रणाजिरे  
वे ॥ २४ ॥ वेगेन सातीव पृथुः स्वाहापरेत नागाश्च शरीररेषाः । नरेन्द्रा लोच्छिन्नमांसपेदा  
प्रभूत रक्षो गणभूत सेविता ॥ २५ ॥ शिरः कपाल फल केशशाङ्गला शरीर संघात  
सहस्र पाहिनी । जिगीर्षनाना कवचोर्मि सङ्कुला नराश्वनागादिषु निरुक्तशरैरा  
॥ २६ ॥ श्वकंकशास्त्रा बृकगृध्रकाकैः क्रव्यादसंघैश्च तरधुमिश्च । उत कृतादृहशु-  
र्भन्तुष्याः क्रामदावेतरणि प्रकाशाम् ॥ २७ ॥ प्रवर्तितामर्जुन बाण संधर्मदोवसा  
सुकप्रवहोऽभिप्राम् । हतप्रधीः च तथैष दृष्ट्वा सेनाकुक्कुणासफादगुणेन ॥ २८ ॥  
तेजोदिपांचाल कम्पनस्तथाः पार्यान् सर्वे सहसाः प्रगेहुः । जयप्रगल्भ्याः पुरुषप्रदीराः  
संप्रासयंतः कुरुवीर्योधान् ॥ २९ ॥ हतप्रधीराणि घलानि दृष्ट्वा किपीदिनाशमुभ-

मनुष्यों के देहों शरश्रों से निकले हुए रुधिररूपी जलवाली नदी वहाँ बह निकली  
उस नदीमें मनुष्योंकी वसा तो जलका फेनया वह नदी तीव्रतासे बड़ी मवादवाली और  
मृतक हाथी और घोड़ोंके शरीरों के किनारेवाली मनुष्यों के आंत भेजने उत्पन्न मान  
रूप कीचकी धारण कियेहुएथी और बहुत से राक्षसों के अवताररूप राजाही उस के  
दृक्षये । १२५ । और शिरों के कपालों से व्याकुल मृतक वलरूप घाससे शोभित  
देशों से युक्त शरीरों के समूहों से हजारों माला रखनवाली हजारों प्रकारकी कवच  
रूपी लहरों से व्याकुल और मरेहुए मनुष्य हाथी घोड़े और मनुष्यों के हाड़रूप  
उत्तम कंकड़ और रत्नवर्तमान थे । १२६ । मनुष्यों ने उस शृगालकंक गिद्ध और  
कच्चेमांस खनिवाले राक्षस पशुक्षी आदिके समूह वा छोटे व्याघ्रों से संयुक्त  
किनारेवाली कठिन वंतरणीरूपीनदी को देखते, अर्जुन के बाण समूहों के द्वारा  
कटेहुए कपालरत्ना रुधिर से बहनेवाली अत्यन्त भयानक नदीको देखकर अथवा  
इतीनकार अर्जुन के हाथसे मृतक शरीरों वाली धोरणी सेनाको देखकर वह चंदेरी

arrow the blood flowed from the bodies of warriors a river of blood, having  
foam for its foam, the carcasses of elephants and horses for its banks, the  
flesh and remains of men for its mire and the rakshases in the guise  
of princes for its trees. 125. Full of human skulls, with the hair  
of the dead for its weeds, garlanded with human bodies of various  
countries, having the dead bodies of men and elephants and their  
bones for its pebbles and sand, that river was difficult to be crossed  
like the Baitarni and its banks were seen to be full of jackals, herons,  
vultures, carnivorous rakshases and tigers. At the sight of those  
heads cut down by Arjun's arrows, the dreadful river of blood and  
the Kaurava army whose warriors were destroyed by Arjun, the  
warriors of Chanderi, Panchal and Matsya as well as all the Pandavas  
desirous of victory, raised a dreadful war cry terrifying the Kauravas.



पावहेन । धिवाश्य सेनांश्च जिनी पतीनां सिद्धो मृगाणामिव यूथसंघान् ॥ ३० ॥  
 विनेदतुस्तावति हर्मयुक्तौ गतीय धन्याश्च जनार्दनश्च । ततो रथिसंवृत्तश्चिन्मया  
 दृष्ट्वा भृशशस्त्रपरिक्षतांगाः ॥ ३१ ॥ तदैदमस्त्र विततं च घोरमस्रं मुक्षीक्ष्य युगं  
 तत्फलम् । अथापयान कुरुषः क्षमीभ्या स द्रोणतुष्योपधन बाह्विह्वलम् ॥ ३२ ॥  
 चकनिशांसंचि गतां समीक्ष्य विभावसोर्बोद्धितमप्रयुक्तम् । अवाप्यकीर्त्तिञ्च यशश्च  
 लोके विजित्यशशूश्च धर्मजयोति ॥ ३३ ॥ ययौनर्द्धे सहस्रोदरेण समाप्तकर्माणि  
 विरनिशायाम् । ततः प्रजितुमुलः कुरुणां निशामुखे घोरतम प्रणादः ॥ ३४ ॥ रणे  
 रथानामयुतं निहप्य हतागजा क्षतशताहुनेन । प्राच्याश्च सांवीरगणाश्च सर्वे निपा-  
 तिताः क्षुद्रकमालवाश्च ॥ ३५ ॥ मद्भक्तं कर्म धर्मजयेन कर्तुं यथा मार्हितं  
 क्षिप्रम् । सुतापुत्र्यष्टपतिश्च राजा तथैव दुर्मर्षण चित्रसेनो ॥ ३६ ॥ द्रोणकृपा

पांचाल और मत्स्यादिक देशीवीर और सब दूरवीरपणवद् विजय में बुद्धि  
 करने और पुरुषों में बढ़ेधीर उनकौरवी सेनाके बढ़ेधूवीरोंको डराते हुए सब एक  
 साथही मशगर्जना करते हुए, शत्रुओं को भय उत्पन्न करने वाले उड्डधारी  
 अर्जुन के हाथसे मृतक वीरावासी सेनाको देखकर और जैसे कि मृगोंके यूथों को  
 सिंह भयभीत करे वसी प्रकार सेनापतियों की सेनाको भयभीत करके वह अति  
 प्रसन्नमन गांडीवधनुधारी और जनार्दनजी अत्यन्तता से गर्जे तदनन्तर शस्त्रोंसे  
 अत्यन्त घायल भंग भीष्म व द्रोणाचार्य व द्रुपद धन बाह्वीक आदि कौरवों ने  
 निशाकी सन्धिको देखकर और उस प्रलय के समान अस्र और घोर फैले हुए  
 ऐन्द्रास्त्रको देखकर अथवा सूर्य की अरुणा से युक्त संधिगतरात्रिको देखकर युद्ध  
 से निवृत्ती की और नरैका इन्द्र अर्जुनभी लोक में यश्री और कीर्त्तिमान होकर  
 शत्रुओं का मर्दन करके युद्ध कर्मको समाप्त करनेवाला अपने निज भाईयों समेत  
 रात्रिके समय अपने डेरको गया इसके पीछे रात्रिके प्रारंभमें कौरवोंके बड़े घोर  
 शब्द उत्पन्न हुए । १३४ । अर्जुन ने दश हजार रथियों को मारकर सातसौ

Seeing the warriors of the army destroyed by Arjun, who wore  
 diadem on his head and who was the terror of the enemies they  
 terrified the leaders of your army with their roars as a lion does a herd  
 of deer. The cheerful welder of Gandiv bow and Janardan too,  
 roared very loud roars. Then Bhishm, Dronacharya, Duryodhan,  
 Vahlik and other Kauravas, much wounded, seeing the approach  
 of night and the dreadful havoc done by the weapon, of Indra prepared  
 to retire. Arjun the best of men having won the honour and fame  
 of that day's victory and having destroyed many enemies, retired to  
 his camp along with his brothers. During that night a dreadful howl-  
 ing was heard from the camp of the Kauravas, 134. Arjun des-  
 troyed on that day ten thousand charioteers and seven hundred

संभववाहिकौचं भूरिधैर्यं शल्यशलोचराजर्जः । अग्रेख्योधाः शतशः समेताः कुन्देन  
पाथेन हनन्त्यमथ ॥ ३७ ॥ स्वधाह्वयेण जिताःसंभीष्माः किरीटिनालोपमहा  
रथेन । इतिश्रुत्वा शिबिगाविजम्बुः सन्मग्नमासतयैवदीयाः ॥ ३८ ॥ बह्मसाह्वयेन  
सुसम्पत्तिर्विभ्राजे मानमन्तथाप्रदीपे । किरीटिविभ्रासितं सर्वं योधाचक्रे निवेद्यध्वजि  
मीकुङ्कणम् ॥ ३९ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि तृतीयदिवसावहारे

एकीनपठितमोऽध्यायः ॥ ५९ ॥

सेजेय उवाच । दृष्ट्वा निशामारुत मारुतानां मनीं किनीतां प्रमुक्षेमहात्मा । यद्यौ  
स परमान् प्रतिजातकांशो वृत्तः सममेन वतेरमिष्म ॥ १ ॥ तद्रोगं दुर्योधनपादिह  
काच तथैव दुर्योधनं चित्रसेनौ । जयद्रथवाति बलीयलैर्घृणास्तथान्ये प्रययुःसमताम्  
हाथी वीरे और सब पूर्वदेवी शूरीर सौवीरगणों समेत कुट्टक मालवों को मारा  
यह अर्जुन ने ऐसा बड़ाभारी कर्म किया जैसा कि दूसरा कोई भी नहीं करसला  
हे राजा श्रुतायु और अन्वष्टपति दुर्योधनं चित्रसेन द्रोणाचार्य कृपाचार्य सैधव बाहलीक  
भूरिभवा शल्य शल और भीष्मजी समेत सैकड़ों योद्धाओंको युद्ध में उस हस्त  
बाधवी महाबली लोक महावी कोपित अर्जुन ने विजय किया हे भरतवंशी राजा  
घृतराष्ट्र आपके सब शूरीर हजारों मसाने दमकाके उस बातको कहते हुए कि  
किरीटी अर्जुन से सब शूरीर भयभीत हुए हैं कौरवों की सेना के डेरों में गये १,३९।

अध्याय ॥ ६० ॥

संजय बोले हे भरतवंशी इस के अनन्तर प्रातःकाल के समय महात्मा भीष्मजी  
जिनका क्रोध शत्रुओं के ऊपर उत्पन्न हुआ वह सब सेना समेत भरतवंशीयों की  
सेनाके आगे गये द्रोणाचार्य दुर्योधन बाहलीक दुर्योधन चित्रसेन महाबली जयद्रथ  
और अन्य राजा लोग मेनाओं के समूहों समेत चारों ओरसे भीष्मजी के पास

elephants including the Sauvirs, the malavas and the Kshudraks  
of the east. Arjun's deed of prowess was matchless. Shrutay  
and Durnarshan the ruler of Amvasht, Chitrassen, Dronacharya  
Kripacharya, Sandhav, Vahlik, Bhurishrava, Shalya Shal, and Bh  
ishma with hundreds of other warriors suffered defeat at the hands of  
Arjun the bravest and most dexterous warrior of the world. Thou  
sand of your warriors with burning torches returned to their camp  
ing. "The bravest of the warriors are afraid of Arjun the wearer  
of the diadem." 139. "

## CHAPTER LX

"Early the next morning," said Sanjaya to Dhritrashtra, "Bh  
ishma, the great, whose anger upon the enemies was intense, led all  
the army of the descendants of Bharat. 'Dronacharya, Duryodan,  
Vahlik, Durnarshan, Chitrassen, valiant Jayadrath and other 1. 39."

यद्भानुमृगमेणसत्वे । कपिभजं प्रेक्ष्य विप्रेदुराजो सर्वं युवैसायकांवेय ॥ ९ ॥  
 प्रकर्षतामग्नं मदाध्वेन किरीटिनाटोक्महाश्वेन । दृष्ट्वा राजं दृष्ट्वा त्वदीयाश्चक्षुः  
 र्यालसहचर्यम् ॥ १० ॥ यथादिपूर्वं हनि धर्मं राजा व्यूहं तत्र कौरवसत्तमेन । तथा  
 नभूतो भुविमानपेय नदृष्ट्वा गच्छस्युतस्य ॥ ११ ॥ ततो यथा दशमुखेन तान्  
 पाचालमुच्यते सहचेदिमुच्यते । ततः समा देश समाहृतानि भेदि सहस्राणि विनेदुराजो  
 ॥ १२ ॥ शृंगैर्वनारत्नैश्च रथैश्च तथा सर्वैश्च नीकेषु च सिद्धवादाः । ततः सगणानि  
 महास्वानि । परस्परार्थमाणानि धनुषिविरे ॥ १३ ॥ क्षणेन मेरीणः प्रणादा नतर्दष्टु  
 शयमहास्वनात् । तच्छृत्वा तन्वृत्तमतस्मिन्मदुतरेणुजालम् ॥ १४ ॥ ॥ इति  
 वितानायततप्रकाशं माळोप्यधीतं सहस्राभिपेतु । रथैश्च रथैर्नाभिहतं ससूतं पपात

शोभित कपि-रज अर्जुन की और यादवपति श्रीकृष्ण मारथी से ऊचेकी ओर बांधे हुए  
 पेनवाले रथको युद्धभूमि में देखकर महा व्याकुल हुए आपके पुत्र और सवशूरवीरों  
 ने लोक महारथी गजपारी मेनाको विच्यंत करने वाले मुकुटगारी अर्जुन से रक्षित  
 चार सहस्रनक्त हाथियों से संयुक्त जंत व्यूह राजको देखा । १० । जैसे कि प्रथम  
 दिन में कौरवों में श्रेष्ठ धर्मज्ञ ने व्यूह को बनाया था उस प्रकार का व्यूह इन लोकमें  
 मनुष्यों ने प्रथम कभी न देखाया न मुना था, इसके पीछे सत्रसैनाके बीच युद्धभूमि में बड़े  
 बठने वजाडहुई हजारों मेरी शब्दायमानहुई और शंखों के व हजारों त्यों के शब्द भी बड़े वेग  
 से हुए, इससे पीछे धीरो के छोड़े हुए वाणों के शब्दों से संयुक्त चलाये हुए धनु-  
 र्यों के ओर शंखों के बड़े शब्दों ने सगुनात्र मेरी भेरी और ढोलों के कठिन शब्दों  
 को गुप्त कर दिया, शंखों के उन शब्दों से सब अन्नरिक्त व्याप्त होगया और शी-  
 प्रही पृथ्वी से धनों के समूह आकाशकी ओर उड़े तदनन्तर बड़े वितानों से प्रकाश  
 को देखकर धीरलोग अकस्मात् दौड़उड़े, रथीरथ से भिड़कर घोड़े समेत रथी भवना

great array 8 Then all the kauravas, accompanied by your sons, seeing Arjun with his banner or the ensign of monkey and Shree Krishna the prince of Yadavas as driver, were much perplexed. Your sons and their warriors, saw that brave of charioteers, Arjun, the destroyer of foes, protected by four thousand elephants. None of the people of this world had seen or heard an array of armies like the one formed on the previous day by that host of men, Yudhishtir the just. Then from the midst of all that army, rang through all the battle-field thousands of trumpets and conchs with loud peals, but the sounds made by the discharge of arrows and the conchs of warriors surpassed the noise made by trumpets and drums. All the air was filled with the blasts of conchs and soon the sky was overcast with dust. The warriors rushed to battle as soon as the light was strong. Charioteers met charioteers in combat and fell down together.

॥ २ ॥ सतैर्महद्भिश्च महारथैश्च तेजस्विभिर्वीर्यं धद्भिश्चराजन् । रराजैरजा सतुरा-  
जमुख्यैर्वृतः सदैवैरिवचक्रपाणिः ॥ ३ ॥ तस्मिन्प्रतीकप्रसूते विपकादोद्भूयमानाश्च  
महापताकाः । सुगन्धीतासित पांडुराभा महामग्नस्कंध गताविरेजुः ॥ ४ ॥ सावा-  
हिनीशासनवेग युता महारथैर्वारणवाजि भिक्ष । वभौ स विद्युत्स्तनयिनुरत्नजालाग-  
मेद्यौरिवजातमेघा ॥ ५ ॥ ततोरणायाति मुखीयतां प्रत्यर्जुनं शान्तवामिमुता ।  
सेनामहोम्रा सहसा कुरुणा जेगोयथा श्रीम इयापमाया ॥ ६ ॥ तद्व्याल नानाभि-  
घ्नगूढपादं गजाश्वपादात् रथैश्चगत्तम् । द्यूहं गृहा मेव समं महात्मा वदशं दुरात्मा ।  
राजकेतुः ॥ ७ ॥ विनिर्ययी केतुमता रथेन नारपम् श्वेद्वयेनपीर । कश्चिना  
सैन्यमुत्तमहात्मा ध्वजेधृतं रावं स पत्नयुताम् ॥ ८ ॥ सुगन्धसोत्तरवधुरेपयत्त

आये । २ । हे राजेन्द्र धृतराष्ट्र वह भीष्मजी उन महापुरुष महारथी तेजस्वी पराक्रमी  
राजाओं के बीच मैं ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि देवताओं के मध्य में देव के  
इन्द्रशोभित होता है, उस सेना के आगिलगी हुई बड़े २ हाथियों के कंधों पर वर्त-  
मान लाल पीली काली श्वेत कम्पायमान पताकाभी शोभित हुई और वह सेना  
राजा भीष्म व महारथी वा हाथी घोड़े से विद्युद्गारी बादलके समान ऐसी शोभाय-  
मान हुई जैसे कि जलके आगमनमे बादलों में भर हुआ आकाश होता है । ५ । इसके  
पीछे भीष्मजी ने रक्षित राजा लोग युद्ध के निमित्त अर्जुन के सम्मुख गये और  
कौरवी सेनाभी अकस्मात् ऐसे चली अमे कि गंगाजी का भयानक वेग चलता है,  
किर कपि-वज महात्मा अर्जुन ने दूरही से उन हाथीघोड़े रथ रथी और पदातियों  
समेत बड़े वेग मे भरे हुए बादल के समान नानाप्रकार के पत्तों समेत द्यूहको  
देखा, और सेनाओं के आगे खड़ा हुआ दोनों सेनाओं से संयुक्त महात्मा वीर  
अर्जुन श्वेद घोड़े और ध्वजाधारी रथकी सब रा में सुशोभित होकर सब शत्रुओंकी  
सेना के ओर चला । ८ । तब आपके पुत्रों समेत सब कांरपलोग उस सब सामान से

at the head of armies came round Bhishm 2 Surrounded by those  
great warriors and the glorious kings of great prowess, Bhishm looked  
like Indra the prince of gods in the midst of the gods. In the front  
of that army, on the shoulders of elephants, fluttered red, yellow,  
black and white banners. That army of princes, warriors, elephants  
and horses, led by Bhishm, looked like the sky overcast with clouds  
with flashes of light. Then the kings protected by Bhishm,  
came face to face with Arjun, ready for fighting, and the Kaurav  
armies followed them like the waves of the Ganges with dreadful  
velocity. Arjun with his banner bearing the figure of Hanuman  
saw from a great distance that large army consisting of elephants,  
horses, chariots, charioteers and foot soldiers, coming on in great force  
like clouds. Brave Arjun, mounted on his bannered chariot, drawn  
by white horses and advanced at the head of his army towards that

यद्वाप्तुमेषेणसम्ये । अपिपुत्र मेइय विषेदुराजा संदंय त्रैसात्रर्वाधेय ॥ ९ ॥  
 प्रहर्षनामुन मदावुधेन किरीटिनाटोक्महाभेन । द्यूह न द्यूह त्वदीयाद्वृत्त  
 र्यालसहस्रवर्णम् ॥ १० ॥ यद्विपूर्वे हनि धर्म रत्ना व्यूह त्वन करिषसत्तमेन । तथा  
 नमूने भुविमानयेन नदृष्टपूर्वो नजसंश्रुतश्च ॥ ११ ॥ ततो यथा दशमेत्य तमु  
 पाचालमुत्पा सहचेदिमुर्ये । तत समा देश समाहताभि मेरि सप्तप्रागिनिगुराजो  
 ॥ १२ ॥ शयस्वनास्त्व रघस्वताथ सवपनकेषु स सिद्धिभदा । तत सप्तप्राभि  
 महास्वानि पस्कार्यमाणानि घन्विपिरै ॥ १३ ॥ क्षणेनमेरिगणधमणादा नतर्दधु  
 दास्वमहास्वनाथ । तच्छतशब्दघृणमतस्मिन्मद्वतमामतुरेणुजालम् ॥ १४ ॥ इहा  
 वितानायततप्रकाश मालोप्यधारा सहस्राभिरेणु । रथेनभिहत ससून पपात

शोभिन कपिपुत्र अर्जुन की और यादवपति श्रीकृष्ण मारग्री मे ऊचेकीओर यायेहुए  
 पनवाल रयको सुद्धभूमि में देखकर महा व्याकुल हुए आपके पुत्र और सवशरवीरों  
 ने लोक महारथी शस्त्रगारी मेनाको विरत करने वाले मुकुटगारी अर्जुन से रतित  
 चार सहस्रवत्त हाथियों मे संयुक्त उत व्यहराजरो देखा । १० । जैसे कि प्रथम  
 दिन में सौरवर्मे श्रेष्ठ धर्मगान ने व्यहको बनाया था उनप्रकार का व्यूह इनलोकमें  
 मनुष्याने प्रथम कभी न देखाया नसुना था, इसके पीछे मरुसिनाके बीच युद्धभूमिमें बड़े  
 रथे बनाडहुई हजारोंमेरी शब्दायमानहुई औरशस्त्रोंके ब हजारों तूफाँके शब्दभी बडेवेग  
 मे हुए, इससे पीछे वीरों के छोडे हुए राणों के शब्दों से संशक्त चलाये हुए धनु-  
 र्यों के और शस्त्रों के बडे शब्दों ने सप्तप्राभ मेही मेरी ओर दोनों के काठिन शब्दों  
 को गुन कर दिया, शस्त्रों के उन शब्दों से सब अन्नारिभ व्याप्त होगया और शी-  
 प्ररी पृथ्वी से धन्रोंके समूह आकाशकी ओर उडे तदनन्तर बडे वितानों से प्रकाश  
 को देखकर वीरलोग अकस्माद दीडउडे, स्थिरसे भिडकर घोडे समेत रथी ध्वजा

great array 8 Then all the kauravas, accompanied by four sons  
 seeing Arjun with his banner or the ensign of monkey and Shree  
 Krishna the prince of Yadavas as driver, were much perplexed. Your  
 sons and their warriors saw that bravest of charioteers, Arjun,  
 the destroyer of foes protected by four thousand elephants. None of  
 the people of this world had seen or heard an array of armies like the  
 one formed on the previous day by that best of men, Yudhishthir the  
 just. Then from the midst of all that army, rang through all the  
 battle-field thousands of trumpets and conchs with loud peals but the  
 sounds made by the discharge of arrows and the conchs of warriors  
 surpassed the noise made by trumpets and drums. All the air  
 was filled with the blasts of conchs and soon the sky was overcast  
 with dust. The warriors rushed to battle as soon as the light was  
 strong—Charioteers met charioteers in combat and fell down together

सांभ स रथ सकेतः ॥ १५ ॥ गजो गजेनाभिहतः पदाति माघाभिहत पदातिः ।  
 आवर्तमानाभ्यभिहतमार्गघोरी कृतान्यदुसुतदर्शनानि ॥ १६ ॥ प्राप्तेष्वख्यैश्च  
 हतानि सद्यश्चकृतानि सद्यश्चकृतैः । सुवर्ण तागांगण भूविनामि सूर्यमभामिश्रा  
 घराणि ॥ १७ ॥ विदार्य मानानि परम्बधैश्च प्राप्तेष्वख्यैश्च निगेतुं हृद्यैः । गजेर्विषाणे  
 घटहस्तकणा केचिन्मस्तारपिन प्रवेतु ॥ १८ ॥ गजैर्धमाब्धेऽपि स्वर्धमननि  
 पातितांगणहता पूषिष्याम् । गजौघवेगाद्वर्तसादितानां भुत्वाविवेदुः संहसीमनुष्याः  
 ॥ १९ ॥ आर्चस्वने सादिपदातिपूनां विषाणगात्रावरताडितानाम् । संप्रांतनागाश्च  
 रथेमुद्धतं प्रहाक्ष्ये सादिपदातिपूनाम् ॥ २० ॥ महारथैः सपरिबाधमाप्नो ददर्शभी-  
 ष्म कपिराजकेतुम् । तपंचतालोच्चिह्नित तालेनितु सद्यश्चवेगादुभुतवीर्यपामः ॥ २१ ॥

को भी लेकर गिरा और हाथी से मारा हुआ हाथी गिरा इसीप्रकार पदाती से मारा  
 हुआ पदाती गिरा । १५ । और घोड़े के सवार परस्परमें परसे और खड्गों से  
 लड़कर पृथ्वी पर मारे गये, और सुनहरी ताराओं के समूहों से शोभायमान सूर्य  
 की समान प्रकाशित ढालें परस्पर मांस और खड्गों से खरब २ होकर पृथ्वी पर  
 गिरीं, और कितनेही रथी हाथियों के दांतों से चबाये हुए पृथ्वीपर गिरे और  
 रथी के बाण से रथी पदाती के बाण से पदाती पृथ्वीपर गिरे, हाथियों के समूहों  
 के वेग से कंपायमान व सवारों और हाथियों के दांत व अंग व जंघाओं से प्रा-  
 यल सवार और पदातियों के आक्रंदित शब्दों को सुनकर मनुष्य अनेक प्रकार  
 से व्याकुल हुए जिस में हाथी घोड़े और रथों की व्याकुलता और सवार पदाती  
 धारोंकी विध्वंसतायी ऐसे बृहत् में महारथियोंसे घिरे हुए भीष्मजीने हनुमानजीकी  
 ध्वजा धारण करने वाले अर्जुन को देखा । २० । पंचनाल की उन्नत ध्वजा  
 धारण करने वाले भीष्मजी उन उत्तमयोद्धाकी तीव्रतासे बड़े भारी अक्षकोलिये

with their horses, the chariots and the banners Elephants were killed  
 by elephants and foot soldiers by foot soldiers 15. The horsemen  
 fighting against horsemen, were cut down by axes and swords. The  
 shields, decked with gold stars and shining like the sun, were cut  
 down into pieces by the blows of swords and clubs. Many a chariot-  
 eers mangled by the tusks of elephants, fell down on earth Chariots  
 fell down by the arrows of charioteers and foot soldiers by the arrows  
 of foot soldiers. Shaking with the velocity of elephants, the horsemen  
 were wounded by horsemen and by the tusks of elephants, in their  
 limbs and thighs, were perplexed with the cries of horsemen and foot-  
 soldiers. Elephants, horses, chariots, horsemen and foot soldiers were des-  
 troyed in large numbers. At that time, Bhishm surrounded by warriors,  
 saw Arjun with his banner of the figure of Hanuman. 20. Bhishm  
 the bearer of the high standard over which blazoned the five palm

महात्मा बाणाशनिर्विशिष्टः किञ्चित् शीतलवयोऽभ्यधावत् । तद्येषाशक्यति ममभाष  
मिद्रात्मकं द्रोणमुखाविसृष्टः ॥ २२ ॥ कृपयशस्यश्च विपिननिध दुर्योधनः सोमवत्तिथ  
राजन् । ततो रथानां प्रमुखादुत्पद्य सर्वास्त्रविहङ्गाश्च विप्रधर्मा ॥ २३ ॥ ज्वेन  
शरोभि स सास्त्रसर्वोत्तमार्जुन स्यात्प्रसुतोऽभिमन्युः । तेषां महात्मानां महापातामस  
ह्यकर्मो विनिहृत्य काष्णिः ॥ २४ ॥ वसौ महामन्त्रदुतार्चि माली सङ्गेतः सन्मग  
धानिवाभिः । ततः सत्तूर्णं चविरो दूकेनां कृत्वानदीमाशुरणेरिष्याम् ॥ २५ ॥ जगामसो  
मद्रमतीपयवीभो महारथेपार्थ मदीनसत्त्वः । ततः प्रहृष्टपादुभुत विक्रमेणार्जुनीव  
मुक्तेन शिलाशितेन ॥ २६ ॥ विषडज्जलेन महास्रज्जालं विनाशयामास किण्ट  
माली । तमुत्तमं सर्वं धनुर्धराणां मसक्तकर्माकिराजकेतुः ॥ २७ ॥ भीष्ममहात्मा

विजली से चमकपर अर्जुन के सम्मुख दौड़े और इसीप्रकार कृपाचार्य शल्य विवि-  
धाति दुर्योधन सोमदत्त वद सवयी द्रोणाचार्यजी को प्रागे करके इन्द्र के समान  
महावली इन्द्र पुत्र अभिमान के सम्मुख गये, इसके पीछे सर्व अस्त्रोंका ज्ञाता सुवर्ण  
का जड़ाक कवच पहरेन वाला महाशूर अर्जुन का पुत्र अभिमन्यु रथके सेनामुखसे  
निकल कर बड़े वेगसे उन सबके सम्मुख चला, फिर वह असहिष्णु शील कभी  
अभिमन्यु उनमहावलवानों के बड़े अस्त्रोंको काटकर ऐसे शोभायमान हुआ जैसे  
कि महामन्त्रब्राह्मणे से संयुक्त महाज्वालामान सभा में वर्चमान अग्नि देवता होता  
है तदनन्तर वह महापराक्रमी भीष्मजीप्रहरी युद्धमें शत्रुओं के हाथिरूपी जलसे  
उसनदी को पूर्णकरके महारथी अर्जुन और अभिमन्यु कोभी उल्लंघन कर गया  
॥ २५ ॥ फिरमुकुट मालाधारी अर्जुनने बड़े हठकोकरके गाँडीवधनुषके शब्दसे महा  
शब्दायमान विषडनाम बाणोंके जालसे उन सब शत्रुओं के जालोंको नाशकिया,  
फिर कर्मफलके चाहनेवासे इन्मानुषी की ध्वजारत्नेन वाले महात्मा अर्जुनने बड़े  
तीव्रचारवाले शस्त्र भस्त्रोंसे उस सर्व धनुर्धारियों में भेद्यभीष्म जीके ऊपर वर्षा

trees, rode on his swift horses, with weapons upraised, to meet Arjun with the speed of lightning. In the same manner Kripacharya, Shalya Vivinshati, Duryodhan and Somdatta led by Dronacharya, faced Arjun the son of Indra. Then the adept in the use of all sorts of weapons, clad in gold bedecked armour, Arjun's son Abhimanyu the bravest of warriors, came out of the lists and encountered all those warriors, And cutting their weapons with his own, he stood in glory like Agni fed with libations in the midst of a court. Then Bhishma of great prowess, making a river to flow with the blood of the enemy surpassed Arjun and Abhimanyu in bravery. 25. Then Arjun the wearer of diadem and garland with his hissing arrows shot from the Gandiv bow, dispersed the net work of his adversary's arrows. Wishing to gain success, the bearer of the standard with the monkey's brand, showered his sharp and bright

निघर्षन्तूर्गं शनैश्चजालैर्विमलैश्चमहे । तथैव भीष्माहतमग्निते महात्रजालकपि  
राजकैतो ॥ २८ ॥ विशीर्षमाणं ददृशुस्त्वदीया दिशोकरेणैव तमोभिभूतम् । एष  
विष कासुक भीमताद मदीनयत्सपथोत्तमाश्रयाम् । ददर्शलोकं कुहलजपाथ  
तद्वरेण भीष्म धनजयाश्रयाम् ॥ २९ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मपर्वणि भीष्मार्जुनद्वैरथे

पठितमोऽध्यायः ६० ॥

सञ्जय उवाच । धौनिर्भरिश्रवा शल्यश्चित्रसेनश्च मणिष । पुत्र सायमनेनैव  
सौमद्रूपवधारयन् ॥ १ ॥ संसकनति तेजाम्भितमके ददृशुर्जना । पञ्चभिर्मनुज  
व्याघ्रगजे सिंह शिथुयथा ॥ २ ॥ नातिलक्ष्य तथा कविशशीर्येन पराक्रमे । पश्य  
सदृश कार्पण्यतोले नपिचलाघवे ॥ ३ ॥ तथा तमात्मज युद्धे विक्रम तमर्दिमम् ।

की इसी प्रकार आपके पुत्रों ने भी अन्तरिक्ष में अर्जुनके वह अस्त्र जालों का  
भीष्मजालके हथमे ऐसे टटे और व्यर्थहुए देखा जैसे कि सूर्य से तिरस्कार किया  
हुआ अस्त्रकार होता है, इस रीतिसे प्रसन्नचित्त कौरव संजय आदि सबलोगोंने  
उन सत्पुरुषों में श्रेष्ठ भीष्म और अर्जुन दोनोंके इस प्रकार द्वैरयुद्धका जो कि  
भयकारी धनुषों के शब्दोंसे संयुक्तया देखा ॥ २९ ॥

अध्याय ॥ ६१ ॥

संजय बोले हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र उन अश्वत्थामा व भूरिश्रवा शल्य चित्रसेन  
और सायमन के पुत्र इन सब ने अभिमन्यु से युद्ध किया, मनुष्यों ने उस  
अकेले अभिमन्यु को इन पाँचों व्याघ्ररूपों से लड़ता हुआ ऐसा देखा जैसे  
हाथियों से लड़ता हुआ एक सिंह का बच्चा होता है, बड़ी लक्ष भेदन पूर्ण  
शरता और अस्त्रों के कारण पराक्रम और हस्तलाघरता में अभिमन्यु के  
समान कोई भी नहीं हुआ, इसके पीछे युद्धमें सावधान अर्जुन ने अभिमन्युको परा

arrows over Bhishm the best of archers In the same manner your  
sons saw the network of Arjun's weapons, broken and dispersed by  
Bhishm like darkness at sunrise Thus the cheerful Brinjayas and  
other Kauravas saw those best of men, Bhishm and Arjun, fighting  
with one another and making dreadful noise with their bows" 29

## CHAPTER XI

Sanjaya continued "Ashwathama Bhurishrava, Shalya, Chitrasena and the son of Saumyan attacked Abhimanyu People saw  
brave Abhimanyu fighting alone against those five warriors like a  
lion fighting against elephants Hitting the marks with great  
precision, Abhimanyu surpassed them in deeds of prowess and dex-  
terity of hand The skilful warrior, Arjun seeing the deeds of  
prowess done against the enemies by Abhimanyu roared like a lion



हृदयार्थ. सुसं यत्ते सिंहादमयानदत् ॥ ४ ॥ पीडयानतु तत्सैन्यं पौत्रं तथयिशा  
पते । हृत्वात्वदीयाराजेंद्र समसात्पय वारयन् ॥ ५ ॥ ध्वजिर्गोघातराष्ट्रगां दीन  
शत्रुदीनवत् । प्रभुपुत्रो स सै भद्रतेजसा च बलेन च ॥ ६ ॥ तस्य लाघवमार्गस्य  
मादित्य सदृशप्रभम् । व्यदश्यतमहृच्चापं समरे युध्यत. परै. ॥ ७ ॥ सद्राणि  
निघुणं केन विध्वाशुन्यं च पञ्चभिः । भ्रजं सायमनेदीव सोऽष्टमिधिविच्छिदेत ॥ ८ ॥  
कृममंडाभ्रहा शक्ति प्रेषितां सोमदत्तिना । शितनोरगसंवाद्या पश्चिणापजहाताम्  
॥ ९ ॥ शूलस्य च महावेगा नश्यत. समरेदारान् । निवायार्जुनद्रायादौ जघनचतुरो  
हयाम् ॥ १० ॥ मूर्ध्निवाय शल्यश्च द्रुणि सायमनि. शूल । नाशयतेत सारथा का-  
ष्ठीबाधुपलोदयम् ॥ ११ ॥ ततस्त्रिगतां राजेंद्रमद्राव सहकेकयैः । पञ्चयिंशति  
साहस्रास्तत्र पुत्रेन चोदिता. ॥ १२ ॥ धनुर्वेद विदामुत्था अजेयाः शत्रुभिर्दुग्धि ।

क्रम करने वाले शत्रुओंका ऐसा मर्दन करनेवाला देखकर पड़े वेगसे सिंहाद  
किया, हे राजेन्द्र आपके पुत्रोंने इसरीति से सेनाको पीड़ामान करता आपके पोते  
अभिमन्युको देखकर चारों आरने आकर रोक लिया । ५ । फिर शत्रुभंतापी अर्जुन  
बहुत हर्षित मन के समान अभिमन्यु सपेन वधपराक्रम युक्त आपके पुत्रोंकी सेना  
के सम्मुख गया, युद्धमें शत्रुओंसे संग्राम करनेवाले उस अर्जुन का बड़ा धनुषहस्त  
लांघवता के मार्ग में नियत होकर शूल के समान प्रकाशमान दिखाई दिया, उस ने  
एकत्राण से अश्वत्थामाको और पांचबाणों से शल्यको घायल करके आठबाणों  
से सांयपन के पुत्रकी ध्वजाको गिराया, और सोमदत्तकी फेंकी हुई सुनहरी दंड वाली  
सर्पाकृति शक्तिकी तीव्रबाणों ने काटा, फिर अर्जुन के पुत्रनेत्राण के फेंकनेवाले  
शल्यके महाघोर लेकड़ों बाणों को रोककर उसके चारों घोंड़ों को मारा । १० । फिरता  
अत्यन्त क्रोधमें भरेहुए मूर्ध्निवा शल्य अश्वत्थामा सांयपनका पुत्र और शूल उस अभि-  
मन्युके महाप्रबलपराक्रमके अगेतहर न सके, इस के पीछे हेराजा आपके पुत्रके कहनेसे

Seeing you grandson Abhimanyu thus destroying your armies,  
your sons checked him on all sides. Then Arjun the destroyer of  
enemies, with a cheerful heart, accompanied Abhimanyu to try his  
strength on your armies. Arjun's bow looked like the sun on account  
of the dexterity of his hand in shooting arrows. He wounded  
Ashwathama with one arrow and Shalya with five, and cut down  
the banner of Damayanta's son with eight. He cut down the ser-  
pent like spear of Dandata with his arrows. Arjun's son checked  
the shower of Shalya's thousands of arrows and lured all the four  
horses of his chariot. Then Baurishava, Saalya, Ashwathama,  
Damayanta's son and Dandata could not stand against that great war-  
rior Abhimanyu. Then at the request of your son, the skillful  
archer, unconquerable warrior with, twenty five thousand Trigaitas,

सहपुत्रं जिघांसतं परिवर्धुः किरीटिनम् ॥ १३ ॥ तैस्तु तत्र शितापुत्री परिक्षितो महा  
 रथौ । ददर्श राजन् पांचाल्यः सेनापतिरिदम् ॥ १४ ॥ सवारणरथीयानां सहस्रैर्ब  
 हुभिर्धृतः । घाजिभिः पक्षिभिश्चैव धृतः शतसदृशशः ॥ १५ ॥ धनुर्विस्फार्य संकुण्डानो  
 दधिरवाच घाहिनीम् । ययौ त मद्रफानिकं कंकयांश्च परंतप ॥ १६ ॥ तेन कीर्त्तिम  
 ताशुभ्रत मनीकंदहधम्बना । संस्पर्धयनागाभ्यं योत्स्यमानमशोमत ॥ १७ ॥ सोऽर्जुन  
 प्रमुखेपांतं पांचाल कुलवर्धनः । त्रिभिः शारद्वतयाणं जनुदेशे समापयत् ॥ १८ ॥  
 ततः समद्रफानहत्वा दर्शयदशभिः शुरैः । पृष्टरक्षजघानाशुमलेन कृतवर्मणः ॥ १९ ॥ दमनं  
 चापि द्वायाद् पौरवस्यमहात्मन । कृपान्विमलाग्नेन नाराचने परंतप ॥ २० ॥  
 ततः सायमनेः पुत्रः पांचाल्यं युद्धं दुर्मदम् । अधिपत्यात् त्रिशिता वागैर्दशभिश्चास्य

धनुर्वेदके ज्ञाता युद्धमें अजेय पञ्चीस हजार त्रिगर्तदेशी और मद्रदेशियों ने केकय देशियों  
 समेत उस पुत्र समेत अर्जुन के मारनेकी इच्छा से चारों ओर से उनको घेरा लिया । १५ ।  
 हे राजा वहाँ सत्रुंजयी सेनापति धृष्टद्युम्न ने उनापिता पुत्रों को रथों से चारों ओर को  
 घिरा हुआ देखा तदनन्तर वह शत्रुसंतापी सेनापति महा क्रोधित होकर हजारों  
 घोड़े रथ हाथियों के पतियों से युक्त अपने धनुषको चढ़ाकर सेनाको आगा देकर  
 और मद्र के कय देशियों के सम्मुख गया, उस कीर्त्तिमान् दृढ़ धनुषधारी से रथित  
 रथहाथी घोड़े से युक्त बहुयुद्ध करनेवाली सेना शोभायमान, हुई पांचालकुलवर्त्त  
 उस धृष्टद्युम्न ने तीन वाण से अर्जुन के सम्मुख जानेवाले कृपाचार्य्य को घायल  
 किया, फिर दश तीक्ष्ण वाणों से मद्रकोंको घायल करके शीघ्र ही एक ध्वस्त से  
 कृपाचार्य्य के सारथी को मारा, फिर उस शत्रु संतापी ने बड़े तीक्ष्ण नाराचों से  
 पौरवके पुत्र दमन को मारा । २० । इसके पीछे चित्रसेनने दुर्मद धृष्टद्युम्न को दश  
 वाणों से और उसके सारथीको भी दश वाणों से घायल किया फिर उस महा

Madras, and Karkayas, surrounded Arjun and his son on all sides in  
 order to kill them. Dhrishtadyumna, the commander of armies and des-  
 troyer of enemies, saw Arjun and his son surrounded by the enemies,  
 and with thousands of horses, chariots and elephants he advanced  
 against the armies of Madra and Karkaya, shooting his arrows against  
 them. Protected by that glorious archer, the chariots, elephants and  
 horses of the army looked glorious. Dhrishtadyumna the descendant  
 of the Panchals wounded with three arrows Kripacharya who was  
 advancing to attack Arjun, and having shot ten arrows at Shalya,  
 killed the chariot driver of Kripacharya with one arrow. Then with  
 sharp arrows, that destroyer of enemies killed Daman the son of  
 Paurav. 20. Chitrasen wounded brave Dhrishtadyumna with ten  
 arrows and his chariot driver with ten more. - Wounded with those

सारथिम् ॥ २१ ॥ सोति विद्वो महेष्वासः सुविक्रणी परिं छलिहन् । भलेनपुशतीदणेन  
 निष्कृतास्त्यकार्षकम् ॥ २२ ॥ अथैतं पञ्चविंशतया क्षिप्रमेव समाधिपत् । अश्वभास्या  
 चपीद्राजन् नभोतोपाणिं सारथी ॥ २३ ॥ सहताभ्ये रथे निष्ठुन् ददर्श भरतर्षभ । पुत्र-  
 सौवर्णेः पुत्र पाञ्चालस्यमहात्मनः ॥ २४ ॥ अप्रगृह्य महाघोरं निक्षिप्यश्वमापसम् ।  
 पदातिस्तूर्णं मानछेदं दृष्ट्वा पुरुषर्षभः ॥ २५ ॥ तं महोद्य मिवायांत आत्पतन्त मिघोरग-  
 म् । प्रोताधरणं निक्षिप्यं काकोत्सुष्ट मिवांतकम् ॥ २६ ॥ दीप्यमानं मिथा दित्यं मत्तथा-  
 रण विक्रमम् । अपदपन्पांडवास्तत्र घृष्टघुम्नश्च पार्षतः ॥ २७ ॥ तस्य पांचाल दयादः  
 प्रतीपममि पावतः । शितं निक्षिप्य हस्तस्य शङ्खधरणधारिणः ॥ २८ ॥ बाणवैगमती-  
 तस्य तथा भ्यास सुपेयुवः । श्वरस्त्रेनापतिः कुड्यो विभेदं गदया शिरः ॥ २९ ॥ तस्य  
 राजन् स निक्षिप्यं सुप्रमञ्च शरा वरम् । हनस्यपततो हस्ताद्वेगेन स्यपतद्भुवि ॥ ३० ॥  
 तं भिक्षस्य गदाप्रेण सलेभेपरमांमुदम् । पुत्रः पांचाल राजस्य महात्मा भीम विक्रमः

घायत्र घृष्टघुम्न ने होठोंको चबाकर बड़े तीक्ष्ण पल्लसे इसके घनुषको काटा,  
 हे राजा इसी प्रकार इसको भी पच्चीस बाणों से पीड़ामान करके उसके घोड़ों  
 को दोनों सारथियों समेत मार डाला, हे भरतर्षभियों में भेष्ट फिर उस मृतक घो-  
 ड़ेवाले रथमें बैठे हुए चित्रसेन ने उस द्रुपद के यशस्वी पुत्रको देखा, और देखतेही  
 रथसे उतर पैदल होकर शीघ्रही महाघोर खड्गको धारण करके रथपर बैठे हुए  
 घृष्टघुम्न की ओरको चला । २५ । उस महा भयानक खड्गधारी को आता  
 हुआ देखकर पाण्डव और घृष्टघुम्न ने उसको सूर्यके समान मकाशित और  
 पतवाले शरीरके समान महाबली रूप देखा, फिर शीघ्रता करने वाले सेनापति  
 घृष्टघुम्न ने उस महा कालरूप सम्मुख आनेवाले घोर खड्गधारी के शिरको गदा  
 से तोड़ा, हे राजा वह अपने खड्ग और दाल समेत मरकर पृथ्वी पर गिरा । ३० ।  
 राजा घृष्टघुम्न ने उसको गदा की नोकसे मारकर बड़े बल को पाया, हे भेष्ट

arrows, Dhrishtadyumna bit his lips, and with a sharp arrow cut his  
 bow from the middle. He then wounded Chitrassen with twenty five  
 arrows and killed his horses with the drivers. Then, O best of the  
 descendants of Bharat, Chitrassen seated in the chariot with dead  
 horses, saw the glorious son of Drupad and leaping down from his  
 chariot, sword in hand advanced towards him. 25. Seeing the  
 dreadful sword bearer coming towards him like the sun in glory and  
 like a mad elephant in the pride of power, the skilful commander of  
 armies Dhrishtadyumna broke with his mace the head of that advanc-  
 ing warrior of dreadful sword, and caused him to fall down with his  
 shield and sword. 30. King Dhrishtadyumna gained great fame  
 by killing that warrior with the point of his mace. At the death

॥ ३१ ॥ तस्मिन् दृष्टे मद्देवासे राजपुत्रे महागणे । हाहाकारो महानासीत्तवसेन्यस्य  
मारिष ॥ ३२ ॥ ततः सांयमनि युद्धो दृष्ट्वा निहत मात्मजम् । अग्निं दुद्राक्ष वेगेन पां  
चाक्ष्यं युद्धदुर्मदम् ॥ ३३ ॥ तौ तत्र समरे शूरो समेतौ युद्ध दुर्मदौ । दृष्टुः सर्वं रा  
जान् करच पांडवास्तथा ॥ ३४ ॥ ततः सांयमनि युद्धो पापनं परधीरहा । आजघान  
त्रिभिर्बाणैस्तोत्रे रिचं महाद्विषम् ॥ ३५ ॥ तथैव पापंत शू शल्यः खनिति शोभन ।  
आजघानो रसिकुक्षरतो युद्धं मवर्तत ॥ ३६ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि चतुर्थयुद्धादिवर्गे सांयमनिपुत्रवधे  
एकपष्ठितमोऽध्यायः ६१ ॥

धृतराष्ट्र उवाच दैवमेव परमं पौरुषादापि संजय । परसैम्यं मम पुत्रस्य पाण्डुसै-  
म्येन बाध्यते ॥ १ ॥ नित्यं हि मां कांस्ततः हतानेव हि शसति । अयमप्राज्ञः प्रहृष्टांश्च नि-

धृतराष्ट्र उस बड़े धनुषमारी महारथी राजकुमार के मरने पर आपकी सेना में  
बड़ा हाहाकार हुआ, इसके अनन्तर क्रोध में भरा हुआ सांयमनी अपने पुत्रको  
मृतक देखकर बड़े वेगसे धृष्टद्युम्न के सम्मुख दौड़ा तब सब राजा व कौरव और  
पाण्डवोंने युद्धमें जुटे हुए उत्तम रथों समेत दोनों शूरवीरों को देखा, इसके पीछे  
शत्रु विजयी सांयमनी ने महा क्रोधित होकर तीन बाणों से धृष्टद्युम्न को ऐसा  
घायल किया जैसे कि अंकुश आदि से बड़े हाथीको काते हैं इसी प्रकार युद्ध-  
भूमिमें शोभन करने वाले क्रोधरूप शल्य ने उस शूरवीर धृष्टद्युम्नको छातीमें  
घायल किया इस पीछे युद्ध होना जारा हुआ ३६ ॥

अध्याय ६२ ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय मैं प्रारब्ध को उपायसे भी बड़ा मानता हूँ जो मेरे  
पुत्रकी सेना पाण्डवों की सेनासे मारी जाती है हे सून तू सदैव हमारे शूरवीरों को  
मृतक कहता है और पाण्डवोंको सदैव अत्यन्त असज और असत कहा करता है

of that great warrior prince there was a great cry of distress raised  
in your army. Samayamani, enraged at the death of his son, rushed  
against Dhrishtadyumna. Then all the warriors of the Kauravas  
and Pandavas saw those brave charioteers engaged in combat.  
Samayamani the destroyer of foes wounded Dhrishtadyumna with  
three arrows like a large elephant with goads. In the same manner,  
Shalya the pride of the field of battle, wounded Dhrishtadyumna in  
the breast and the battle continued." 36

## CHAPTER LXII

"Saying that my son's armies are destroyed by those of the Pan-  
davas, I hold fate to be superior to expellents," said, Dhrishashtra  
to Sanjaya, "You always say that such and such warriors of my army

अशसिपांडवान्-॥ २ ॥ नैनं नृपुण्यं कार्मेय-मायकानमस्य-जय । पालितान्पा-  
त्यम नांश्च हतानेव च शससि ॥ ३ ॥ युध्यमानान् यथाशक्ति घटमानान्जयमिति ।  
पाण्डव हि जयत्येव जीयते चैव मायका ॥ ४ ॥ सोदरं माणिदुःखानि दुर्योध हता  
निच । आप्यामि सतततात दुःखानि बहुनिच ॥ ५ ॥ तमुपाय न पश्यामि जीये  
रन्येन पाण्डवान् । मायक विजय युद्धे प्राप्नुयुर्न सजय ॥ ६ ॥ सजय उवाच ।  
क्षयमनुष्य देह नां गजघाति रयस्यम् । शृणु जन् विद्योभूवा तदेवापनयामहान्  
॥ ७ ॥ धृष्टद्युम्नस्तु शल्येन पीडितो न वमि शि । पीडपाससकृदो मद्राधिपति  
मायसे ॥ ८ ॥ तथादमुतमपश्याम पापेतस्य पराक्रमम् । श्ववारयतपन्तु श-  
समिति शोभनम् ॥ ९ ॥ नातर इदमेव गव तयोद्वारयितोस्तदा । मूर्ध्नि विवतदुद्ध  
तयो सममिधामघत् ॥ १० ॥ तत शल्यो महाराज धृष्टद्युम्नस्य सयुधे । धनुर्दिष्टे

हे संजय अब हमारे शूरवीरों को गिरते गिरते दोनों भकरसे पराक्रम से रहित  
कहता है इसी से पाण्डव लोग सामर्थ्य के अनुसार लड़ते विजय में उपय करते  
हुए जबको पाते है और मेरे बेटेपर जय को पाते है, हे तात सो मैंने दुर्गोधन से  
उत्पन्न हुए दुःखके सहनेके योग्य अनेक दुःखों को बरम्बार सुना, हे संजय मैं  
उस उपाय को नहीं देखता हूँ जिसके द्वारा पाण्डवों की हार होय और मेरुपुत्रों  
की विजय होय । ६ । संजय बोले कि हे राजा तुम सावधानी से सुनो कि यह  
मनुष्यों का और रय घोड़े हाथी आदि का नाश होना तुम्हारेही अ-ग्रायका फल  
है, शल्य के नौ बाणों से पीडा । अत्यन्त क्रोधयुक्त धृष्टद्युम्न ने सोढेके तीरमे मद्र  
देश के राजाको पीडा मान किया, वहाँ हम ने धृष्टद्युम्न के अपूर्वपराक्रम को देखा  
जो युद्ध में शोभा पानेवाले शल्य को शीघ्रही हटादिगा, कितीने इसयुद्ध में इनदो-  
नों मोघ युक्तों के अन्तर को नहीं देखा दोनों का युद्ध एक मुहूर्त तक अच्छा  
हुआ । १० । इसके पीछे हे महाराज शल्यने युद्धभूमिमें पीले सत्रवार वाले

are dead, while you represent the Pandav warriors to be indestruc-  
ble and cheerful. You say that killing or falling, our warriors are  
destitute of prowess and consequently the Pandavas are again and  
again victorious, while our side is the loser. I am tired of hearing  
the troubles of Duryodhan. I see no expedient Sanjaya how to cause  
the defeat of the Pandavas and the victory of my sons' 6 'Hear  
O king patiently," said Sanjaya in reply "The destruction of men,  
chariots, horses, elephants and others is the result of your own injus-  
tice." Wounded by the iron arrows of Shalya Dhishhtadyumna, much  
enraged, wounded the king of Mdras with iron arrows. There we  
witnessed the great prowess of Dhishhtadyumna who soon made  
Shalya turn back. Both the warriors fought for a time with out  
any distinction. 10 Then Shalya with one sharp arrow cut asunder

धमलेन पीतेन निशितेन च ॥ ११ ॥ अथैन शरवर्षेण छद्वाद्यामास संपुये । गिरिजला  
गमेयद्वज्जलदाजल वृष्टिभि ॥ १२ ॥ अभिमन्युस्तत कुदो घृष्टघुम्नचपीडिते ।  
पीडिते । अभिद्रुद्राव वेगेन मदराजरथं प्रति १३ । ततो मद्राधिपस्ये कार्त्ति  
प्राप्प्याति कोपन । आर्त्तायनिममे यामा विव्याघनिशिते शरे ॥ १४ ॥ तत  
भुतायका राजन् परीप्सतोऽर्जुनिणे । मद्राजरथतूर्णे परिघार्थावतस्त्रिधरे ॥ १५ ॥  
दुर्योधने विकर्णश्च दुःशासनविंशति । दुर्मर्षणो दुःसहश्च चित्रसेनोऽप्युदुम्ब  
॥ १६ ॥ सत्यव्रतश्च भद्रते पुरुमित्रश्च भारत । एतेमद्राधिपस्य पाळयत स्थिता  
रणे ॥ १७ ॥ तान्भीमसेन सकुदो घृष्टघुम्नश्च धार्यत । द्रौपदेयाभि सम्पुशमा  
द्रौपुत्रो च पांडवो ॥ १८ ॥ चार्तराष्ट्रान् दशरथान् दशोय प्रत्यवाग्यम् । ताना  
कपाणि शस्त्राणि विचुजठो विशापते ॥ १९ ॥ अभ्यवर्तत सहस्र परस्परवधे

भरल से घृष्टघुम्न के धनुषको काटकर इनको बाणों की वर्षा से ऐसे दक दिया जैसे  
कि वर्षा ऋतु में जन भरे हुए बादल पर्वत को दक देते हैं, फिर घृष्टघुम्न के पीड़ा मान  
होने पर अत्यन्त क्रोधरूप अभिमन्यु बड़े वेग से राजामद्र के रथकी ओर दौ-  
ड़ा, तदनन्तर महासाहसी क्रोधमें भरे हुए अभिमन्युने राजा मद्रके रथको पाकर  
आर्त्तायानि को तीन पैंने तीरों से घायल किया हे राजा फिर तो अभि-  
मन्यु दवानेकी इच्छासे आपके पुत्र शीघ्रही राजामद्रके रथके चारों ओर आकर  
नियत हुए । १५ । दुर्योधन विकर्ण दुःशासनविंशति दुर्मर्षण दुःसह चित्रसेन  
सुदुम्ब सत्यव्रत पुरोमित्र महारथी विकर्ण यह सब राजामद्र के रथकी रक्षा करते  
हुए युद्धमें नियत हुए, इनको देखकर हे राजा महाक्रोधित भीमसेन घृष्टघुम्न द्रौपदी  
के पांचोपुत्र अभिमन्यु और माद्रीके पुत्र नकुल और सहदेव इननाना प्रकारके  
शस्त्रोंके महार करनेवाले दशों शूरवीर धृतराष्ट्रके महारथी दशोपुत्रोंको रोककर  
परस्परमें मारनेके इच्छावान् अत्यन्त क्रोधरूप सम्मुख वर्त्तमान हुए हे राजा निश्चय

the bow of Dhrishtadyumna and covered him with the shower of his  
arrows like a hill with the clouds of rains. When Dhrishtadyumna was  
thus wounded, Abhimanyu in great rage rushed against the chariot  
of Shalya. The brave warrior Abhimanyu, full of prowess, wounded  
Artayani with the sharp arrows. Your sons soon came round the  
chariot of the king of Madra to punish Abhimanyu Duryodhana,  
Vikarna, Dushasana, Vivinshati, Durmarshana, Dussahi, Chitrasena,  
Sudurmukha, Satyabrata Puromitra and the great warrior Vikarna  
protected the chariot of the king of Madra. Seeing them thus  
stationed, Bhishma, Dhrishtadyumna the five sons of Drupadi,  
Abhimanyu and the sons of Madri—Nakul and Sahadeva discharging  
various sorts of weapons, checked the ten warriors of the Kauravas  
and the two sides fought for life and death. All this was the result

विणः । तैर्वसमेयुः संप्रभिराजन् दुर्मित्रेनतय ॥ २० ॥ तस्मिन्देशरथे कुक्षेवर्तमाने  
महाभये । तावकानां परेषांवा प्रेक्षकादिनो मवन् ॥ २१ ॥ शस्त्राण्यनेकवर्णानि  
विखंडतो महारथाः । अन्योन्यन्यमभिनर्दतः संप्रहार प्रचक्रिरे ॥ २२ ॥ ते तदाजात  
संरमाः सर्वेभ्योग्ये जिघांसवः । अन्योन्यमभिनर्दतः स्वर्धमानाः परस्परम् ॥ २३ ॥  
अभ्योन्यस्पर्धया राजन् हातयः सगताभिः । मह स्त्राणि विमुञ्चतः समोपेतुरमपिङ्गः  
॥ २४ ॥ दुर्योधनस्तु संकुद्धो धृष्टद्युम्नं महारथे । विव्याध निशितैर्वाणिश्चतुर्भिः  
समवेदुतम् ॥ २५ ॥ दुर्योधेणश्च विशत्या चित्रसेनश्च पञ्चभिः । द्रुपुस्त्रेनवमिर्याणे  
दुःसहस्राणि सप्तभिः ॥ २६ ॥ विविशतिः पञ्चभिश्चत्रिभिर्दुःशासनस्तथा । तान्प्रत्य  
चिप्यद्वाजैर्द पयतः शत्रुतापनः ॥ २७ ॥ एकैकपथविशत्यादर्शयन् पाणिनाघवम् ।  
साप्रव्रतं च समरे पुन मिश्रचभारत ॥ २८ ॥ अभिमन्युरविश्वसुदशभिर्दशभिः शैः ।

कल्ले आपकी बुरीसलाह करनेपर वह लोग युद्ध करने में अत्यन्त प्रवृत्त हुए । २०।  
उन दशौरथियों के और बड़े भयके वर्तमान होनेपर आपके पुत्र और पाण्डवों के  
रथीयुद्ध क्रीड़ा देखनेवाले हुए वह सब नाना प्रकारके शस्त्रोंको चसाने हुए परस्परमें  
एक-एकके सम्मुख गर्जते हुए महारथी लोगोंने अच्छेमकारसे युद्ध किया तबतो वह  
सब अत्यन्त क्रोधमें भरे हुए परस्पर मारनेके इच्छावान् सम्मुख होकर गर्जना करते  
हुए एक-एकसे ईर्ष्याकरनेलगे हेराजा ज्ञातिके लोग अपने ज्ञातिवालोंसे परस्परकी ईर्ष्या  
के द्वारा युद्ध करते हुए क्रोध से पूर्ण बड़े प्रह्वोंको त्यागते हुए सम्मुख दौड़े, फिर  
अत्यन्त क्रोधयुक्त दुर्योधनने चार गीक्ष बाणों से धृष्टद्युम्नको घायल किया । २५।  
दुर्योधनने भीमबाणसे चित्रसेनने पांच बाणसे द्रुपुस्त्रेन नौ बाणसे दुस्सहने सात  
बाणोंसे विविशतिने पांच बाणोंसे दुःशासनने तीन बाणोंसे घायल किया हेराजा  
उस शत्रुतास्ततापी हस्तलाघव दिखानेवाले धृष्टद्युम्नने उन प्रत्येकको पच्चीस २  
बाणोंसे घायल किया हेमरतवंशी फिर अभिमन्युने सत्यव्रत और पुरोभिन्नको  
दश २ बाणों से घायल किया फिर माताको प्रसन्न करनेवाले माद्रीनेदन नकुल

of your evil policy. 20. When the ten warriors were thus fighting  
bravely, your sons and the Pandav warriors looked on the scene of  
battle. Discharging various sorts of weapons and roaring at one  
another, the great warriors fought bravely. They tried to kill one  
another and roared fearfully. The kinsmen, envious of one another  
fought in great anger and leaving their missiles aside, rushed upon  
one another. „Duryodhan in great rage wounded Dhrishtadyumna with  
four arrows. 25. Durmarshan shot twenty arrows, Chitrasen five,  
Durmukh nine, Dussah seven, Vivinshata five and Dushasan three.  
Dhrishtadyumna the destroyer of enemies wounded each of them with  
twentyfive arrows shot dexterously. Abhimanyu wounded Satya-  
brat and Purumitra with ten arrows each. Then Nakul and Sahadev,

माद्रिपुत्रीतु समरे मातुर्जमातुर्नदनौ ॥२९॥ अविचेतांशौस्त्रीद्वौस्तदद्भुतमिवःश्वत् ।  
 ततः शल्यो महागज स्वस्त्रीयो रथिनां चरौ ॥ ३० ॥ शैब्यं भिरानुल्लङ्घ्यति हितैषिणो  
 छाद्यत नो ततस्तौतु माद्रिपुत्रौ नचेलतु ॥ ३१ ॥ अथ दुर्योधनं दृष्ट्वा भीमसेनो महा  
 बलः । विषित्तु कलहस्यां त गदां जग्राह पांडवाः ॥ ३२ ॥ तम्यतगद दृष्ट्वा कैलास  
 मिवशृंगिमम् । भीमसेनं महाबाहुं पुत्रस्त प्रादधन्मयात् ॥ ३३ ॥ दुर्योधनस्तु सकुट्टा  
 मागमं समचारयन् । अनीक दश साहस्र कुंजराणां तस्विनाम् ॥ ३४ ॥ गजानीकनस्र  
 हितस्तेन राजासयाधनः । भागव पुत्त कृत्वा भीमसेन समम्भयात् ॥ ३५ ॥ आपतंत  
 तं दृष्ट्वा गजानीक वृकोदरः । गदापाणि रघांगह द्रथात् सिंह इवोन्नदन् ॥ ३६ ॥ अद्रि  
 सा मयीं गुनीं प्रहृष्टमहतीं गदम् । अभ्यध वदगजानीक व्यादितास्वयं तं क ॥ ३७ ॥  
 स गजान् गदयति निघ्नन् स्वचरत्समवेली । भीमसेनो महाबलः सनश्च हव

और सहदेवने युद्धमें अपने मामा शल्यको वींत्र बाणोंसे ढक दिया यह आश्चर्य  
 सा हुआ इसके पीछे हेराजा शल्यनेभी उन रथियोंमें श्रेष्ठ प्रहारकोंपर प्रहार कर्म  
 करनेके इच्छावान् दानोंभानजों को बहुत से बाणोंसे ढका दिया इसके पीछेबाणों  
 से आच्छादित होकरभी वह दोनों निकल सहदेव व्याकुल नहीं हुए । ३१ । फिर  
 महाबली भीमसेनने दुर्योधनको देखकर युद्धके अत करनेकी इच्छासे, अपनी  
 गदाको हाथमें लिया कैलाश पर्वत की समान उस गदाके उठानेवाले भीमसेन  
 को देखकर अपने पुत्र भयभीत होकर भागे फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त दुर्योधन ने  
 राजा मगधको चेताया और वेगमान हाथियों की दश हजार सेनाको आज्ञाकी  
 राजा दुर्योधन उस हाथियोंकी सेना समेत राजा मगधको आगेकरके भीमसेन  
 के सम्मुख गया । ३५ । भीमसेन उस हाथियोंकी सेनाको चारों ओरसे गिराता  
 हुआ देख कर सिंहके समान उच्चस्वरसे गजेता हुआ हाथमें गदा लिये रथसे उतरा  
 और उस मह भारी लोहे की गदाको पकड़कर उस सेनाको अपना भक्षपदाथे समझकर  
 हाथियोंकी सेनाक सम्मुख दौड़ा आर वहां जाकर अपनी गदासे हाथियों को

the joy of their mother Madri, covered their maternal uncle Shalya with the shower of their arrows. The whole was a wonder. Shalya too covered his sister's sons with his arrow, but being overwhelmed with the shower of his arrows they did not lose heart. 31. The great warrior, Bhimisen, seeing Duryodhan and wishing to end the war, took up his mace. With that mace like the Kanash mountain, Bhimisen was the terror of your sons. Then Duryodhan in great anger ordered the king of Magadh with an army of ten thousand of elephants to advance against Bhimisen and himself followed that army. 35. Seeing that array of elephants coming from all sides Bhimisen roared like a lion, and dismounting from his chariot with mace in his hand he ran against them, thinking them to be his prey. Killing the elephants with his mace he roamed amidst that army like



वासवः ॥ ३८ ॥ तस्य नादेन महतानमोहदयकं विना । शययलेष्टेन संद्वयगजा  
भीमस्य गर्भतः ॥ ३९ ॥ ततस्तु द्रुपदी पुत्राः सौमद्रश्च महारथः । नकुल सहदेव  
घृष्टयुष्मन् अपारितः ॥ ४० ॥ घृष्टभीमस्य रक्षन्ः शरवर्षे ॥ शरणात् शययलेष्टेन  
घातन्तो मेघा इव गिरिन्पथा ॥ ४१ ॥ क्षुरैः सुरभ्रैर्मनुजैः पीतैश्चाजलैः क्षिते ।  
रथहस्तैस्तु स मातानि पादव्या गजदोषिणाम् ॥ ४२ ॥ क्षितेभिः प्रपतद्भिश्च पादभिश्च  
विभ्रूयितैः । अश्वमृष्टैरपि मातानि पाणिमिथ सहङ्कृतैः ॥ ४३ ॥ हतोत्तमागारक  
भ्येष्ट गजानां गजयोधिनः । जहत् पन्थावलाघ्रेषु ह्यमाम्यन शिखारथ ॥ ४४ ॥ अष्ट  
युग्महूतानन्यान्पदयामसह गजान् । पततः पतयमानाश्च पार्षतेन महारथना ॥ ४५ ॥ साग  
धो व महीपल्लो गजमेवावणोपमम् । प्रेयवमास समरे सौमद्रस्य रथ प्रति ॥ ४६ ॥  
तमापतंतस्तमेव मागधस्य सह गजम् । जघान भेषुणा धीरः सौमद्रः परधीरहा ॥ ४७ ॥

भारता हुआ ऐसा घुमा जैसे दानवोंके बीच यज्ञधारी इन्द्र गर्जताहुमा दौड़ते है  
हृदयके कमरेवाले भीमतेन के बड़े शब्दसे सब मिलेहुए हाथी अतन्त चलायमान  
हुए फिर द्रुपदीके पांचों पुत्र और महारथी अभिमन्यु, नकुल सहदेव घृष्टयुष्मन् यह  
सब भीमतेन के घृष्टबाग की रक्षा करतेहुये बाणोंकी वर्षाको करकर हाथियों के  
सन्मुख पेने दोड़े जैसे कि पर्वतों पर बंदल दाढ़ते हैं । ४१ । तीव्र बिजली  
के समान भूतों से पादवोंने युद्धमें हाथीवानोंके और हाथीके सवारोंके विरोंको  
काट्य फिर तो हाथियों से गिनेवाले मृतकों की शोभापापाय्य दृष्टीसी मात्र भू हो गी  
थी और हाथियों के कन्धों पर बिना शिके सवार ऐसे दृष्टिपड़े जैसे कि चलने  
हुए पर्वतोंपर चोटी कटे हुए दृष्ट होते हैं इनके आतिरिक्त घृष्टयुष्मन् के मोरेहुए वा  
गिनेहुये पड़ेहुए दूसरे बड़े हाथियों को देखा । ४२ । इसके पीछे मगधक राजा  
ने ऐरावतके समान हाथीनोयुद्ध में अभिमन्यु के रथपर भेजा उसहाथी को जाता  
हुमा देसके शत्रुमा के बिजयी अभिमन्युने उसको बाणों से ना कर सुवर्ण के पुत्र

Indra the wielder of Vajra in the midst of the Danavas. The elephants  
were much terrified by the roar of Bhishma. Then the five sons of  
Draupadi with Abhimanyu, Nakul, Sahadev and Bhishmadyumna  
protected Bhishma from behind and rushed upon the elephants, showering  
their arrows on them like clouds showering rain over hills. 44. The  
Pandavas cut down the heads of the drivers and riders of elephants  
with sharp arrows bright as lightning and then they dropped big stones  
from their backs. The headless riders on the backs of elephants looked  
like trees on mountains with their tops chopped off. We saw  
elephants also cut and killed by Bhishmadyumna's arrows. 45. Then  
the king of Magadh sent his elephant, huge as Airavat, on the  
chariot of Abhimanyu, who as soon as he saw it coming towards him  
killed it with his arrows of golden feathers and beheaded the king

तस्यापि क्षितनागस्य वार्ष्णि परपुरञ्जय । राक्षोरजतपुत्रेण महेनापाहरच्छिष्टः ॥ ४८ ॥  
 विगाह्यतप्तजानीकं भीमसेनोऽपि पादव । इयच्छरत्समरे मूढनन् गजानिद्रोगिरीनिष  
 ॥ ४९ ॥ एकमहार निहता भीमसेनेन दत्तिन । अपश्चात्तरणे तस्मिन् गिरिः पश्चात्ता  
 निष ॥ ५० ॥ मृगदन्तान् जगत्कटान् जगत्सफरांश्च धारणान् । जगत्पृष्ठत्रिकान्त्याग्नि  
 हतान् पर्वतोपमान् ॥ ५१ ॥ न दत्त सोदतश्चान्द्यान् विमुञ्चान् समरे गतान् । वि  
 तान् भयस्य विग्नस्तथा विद्रुक्तोपरान् ॥ ५२ ॥ भीमसेनस्य मार्गेऽपि पतिताः पर्व  
 तोपमान् । अपश्यन्निहताद्यागान् राजजिह्वावतोपमान् ॥ ५३ ॥ चमत्तो रुधिरक्षान्ते  
 भिक्षुकं मामहागजा । विह्वलस्ततो गताभूमिं शैलाद्बधरातले ॥ ५४ ॥ मेवो रुधिरि  
 श्वागोयसामज्जा समुत्तिष्ठ । इयच्छरत्समरे भीमो बद्धपाणि रियातक ॥ ५५ ॥ गजा  
 मां रुधिरनिलभा गदा विधवदृकोदर । घोरं प्रतिभ्रपञ्चासं त्रिपाकीय पिताकघृक् ॥ ५६ ॥

वाले भल्लसे उर हाथी के न रोकने वाले राजा के शिरका भी काटा, फिर  
 भीमसेन भी उस हाथियों की सेना को ब्यथित करता हुआ ऐसा घमा जैसे कि इन्द्र  
 पर्वतों को घमन करता घूमता है, हमन उर युद्ध में भीमसेन के एकही महार से  
 मरे हुए हाथियोंको ऐसा देखा जैसे कि यत्र से महारिव पर्वतदीखते हैं । ५० ।  
 भाल दांत गंडस्थन जघा पीठ और कपर दृढ़कर मरे हुए पर्वतवाकार हाथियों को  
 और कितनेही भागडालकर मर हुए हाथियों को भी हमने देखा, कितनेही बड़े हाथी  
 कुंभ दृष्टे रुधिरको घमन करते भयसे विकट पृथ्वीपरपसे गिरे जैसे कि पर्वतपृथ्वी  
 पर गिरते हैं, रुधिर मज्जासे मिले हुए अंग और कपालोंकी मज्जासे छिड़का हुआ  
 भीमसेन दंढधारी मृत्यु के समान युद्धमें घमा हाथियों के रुधिर से भीजा हुआ  
 गदाको धारण किये हुए भीमसेन पिनाक धारी शिवजी के समान घोर और भयानक  
 रूपहुया । ५४ । क्रोधयुक्त भीमसेन के हाथ से मरे हुए कृष्टि हाथी अकस्मात्  
 आपकी सेना को दबाते हुए भागे । ५५ । अभिमन्यु आदि बड़े २ घनुषधारी राधियों  
 ने उम युद्ध करनवाले धीर भीमसेन की चारों ओर से ऐसी रत्नाकी जैसे इन्द्रकी

who was seated on its back Bhim-en too, was seen roaming hither  
 and thither, destroying the elephants as Indra destroys hills. 50. We  
 saw elephants destroyed by the single blow of Bhima, falling down  
 like mountains destroyed by lightning. We also saw, elephants huge  
 as mountains dying of wounds received in their eyes, tusks, cheeks,  
 thighs and loins, and dropping foam from their mouths. Many  
 elephants fell down on earth wounded, vomiting blood and falling  
 like mountains. Bhim-en with his bloodstained body roamed there  
 like Death the bearer of staff. Bathed in the blood of elephants  
 Bhim the bearer of mace looked as dreadful in appearance as Shiv  
 the bearer of Pinak. Wounded by the blows of Bhim-en, the ele  
 phants ran away crushing your armies. 55. Abhimanyu and other  
 great archers and warriors protected Bhim on all sides as the gods

संमप्यमानाः क्रुद्धे भीमसेनेन दत्तिनः । सहस्राष्ट्रयन् दिल्लघामुद्गन्तस्तपयाहिनीम् ॥ ५७ ॥ तद्विचारे महेष्वासं सौमद्रममृगार्याः । पर्वरक्षन्ते युध्यन्ते यज्ञायुधमिधामराः ॥ ५८ ॥ शीणिताकांग्वां विप्रवृत्तिगजशोभितैः । कृतांतश्चरीद्रात्मा भीमसेनो ब्यवहस्यत ॥ ५९ ॥ व्यापच्छमानं गंद्या दिक्षुसर्पांश्च भारत । अपदयामरणेभीमं नृत्यन्त मित्रशंकरम् ॥ ६० ॥ यमदंडोपमां गुर्वेन्द्रिद्राशनिसमस्यनाम् । अपदयाम महाराज गौद्रविशसर्गगदाम् ॥ ६१ ॥ विमित्रां केशमज्जामिः प्रदिग्वाहधिरण्य ॥ पिनाक मित्रकद्रय कुर्क्षस्यामिप्रत-पशून् ॥ ६२ ॥ यथापशूनां संघातं यद्यापालः प्रका ल्येत । तथाभीमो गजानां गदयासमेकाद्रयत् ॥ ६३ ॥ गंद्यावध्यमानांस्ते मागजैश्चमनतः । स्वान्यनीकामि मृद्नन्तः प्रादधन्कुंजरास्तथ ॥ ६४ ॥ महा धांतद्वाध्राणि विपमिद्यासधारणान् । कतिष्ठत्सुलेभीमः दमयानइयशूलमृतम् ॥ ६५ ॥

इति भी महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि चतुर्थदिवसे भीमयुद्धे विप्राहितमोऽध्यायः ६२ ॥

रत्नादेवता करते हैं, रक्तसे भरे हुए और हाथियों के रुधिर से छिड़की हुई गदा को धारण किये भीमसेन मृत्यु के समान रदात्माही दृष्टिपट्टा, हे भरतवंशी हमने गदा युक्त भीमसेन को सब दिशाओंमें गाँवताहुँचा शंकरजी के समान देखा, फिर हम ने चमराज के दण्डकी समान और इन्द्रके यज्ञ की समान शब्दापमान नाशकी कर ने वाली रौद्रीरूप महामारी गदाकां देखा वह गदा केशोभे युक्त कपाल और रुधिरसे ऐसी भरी हुई थी जैसे कि क्रोध युक्त शिवजी के हाथमें पशुओं का मारने वाला पिनाक धनुष होता है, और जैसे गाय चराने वाला अपनी यष्टी से पशुओं के समूहों को हटात है इसीप्रकार भीमसेन ने भी अपनी गदासे हाथियोंको हटाया, इसके पीछे गदा और बाणोंमें घायल बहुराई अपने रक्तोंको दबाते सोहेते हुए इधर उधर को भागे, जैसे कि वायु बादलों को इधर उधर तिर्रिर्कर देता है उसीप्रकार युद्ध से भिन्न २ हाथियोंको करके भीमसेन युद्ध भूमि में ऐसे निर्यते हुआ जैसे कि श्मशान भूमि में रुड़जी नियत होते हैं ६६ ॥

protect Indra. Reeking in blood with the blood-stained mace, Bhim looked as ferocious as the god of Death. We saw Bhimsen the bearer of mace dancing in all directions like Shankar. Then like the staff of Death or the vajra of Indra, we saw his mace dealing hard sounding blows with blood and hair of heads on it like the bow of Shiva the destroyer of beasts. Bhimsen beat back the elephants with his club, as a herdsman drives cattle with his staff. Then wounded by the mace and arrows, the elephants rushed hither and thither, crushing the chariots on their own side. Dispensing the elephants as the wind disperses the clouds, Bhimsen stood in great glory like Rudra standing on the cremation ground "63.

सञ्जय उवाच । हतैस्मिन् गजानीके पुत्रोदुष्येधनस्तथा । भीमसेनं जनेत्येव  
 सर्वं सैन्याप्यचोदयत् ॥ १ ॥ ततः सर्वोपयुक्तानि नवपुत्रस्य शं सनात् । अभ्यद्रव  
 भीमसेनं नदने भरवान् रवान् ॥ २ ॥ त्वत्तोषमप्यर्थं देवैरपि सुदुःसहम् । अपतंतं  
 सुदुःपारं समुद्रमिव पर्वणि ॥ ३ ॥ रथनागाश्वपटिलं शंसदुन्दुभिनादितम् ।  
 अनन्तरथपादाते नैर्द्रुतिमितहृदम् ॥ ४ ॥ तं भीमसेनः समरे महोदधिं मिवापाम् ।  
 सेनासागरं मक्षोभ्यं वेलेव समचारयत् ॥ ५ ॥ तदाश्चर्यं मपद्याम पंडितः स महात्मनः  
 भीमसेनस्य समरे राजन् वीर्यं गतम् ॥ ६ ॥ उदीर्णान् पार्थिवान् मदीन् सञ्चा-  
 रय कृत्वा । लसन्तं भीमसेनं मद्यासमययत् ॥ ७ ॥ स संघायं पल्लवास्तान्  
 नदीया रविनादः । अतिष्ठत्समुने श्रीमो गिरिमैत्रिवाचलः ॥ ८ ॥ तस्मिन्समुल्लेखे  
 काले परमं दाहणे । प्रातरश्च पुनश्च दृष्टुम्नश्च पार्थिवः ॥ ९ ॥ द्रौपदेर्भीमस्य पुत्र

अध्याय ६३ ॥

संजय बोले कि उम हाथियों की सेना के मारे जाने पर आपके पुत्र  
 दुष्यधन ने सब सेनाको चैतन्यकिया और आज्ञा दी कि भीमसेन को मारो-  
 तदन तर आपके पुत्रकी आज्ञा से सब सेना महाभयकारी शब्दोंको करती हुई  
 भीमसेन के सम्मुख दौड़ी, फिर उम अत्यन्त देवनाओं सेभी कठिनता से सरने  
 योग्य समुद्रके समान अत्यन्त दुस्तर रथ हाथी घोड़ों समेत कवचधारी शंसभोरियों से  
 शब्दायमान असंख्य रथ हाथी पद ती जोगों से भी हुई सब ओरसे धूल उड़ाती हुई  
 भारी समुद्र के समान अव्य कुल सेनाको भीमने ने रोकदिया । ५ । हे राजा हम  
 ने उसे महारना भीमसेन के उस अद्भुत कर्मको देखा, अर्थात् भीमसेन ने बड़ी  
 निर्भयता से घोंड़े हाथी और रथों समेत उन सब राजाओं को अपनी गदा से  
 हँसादिया, वह पराक्रमियों में श्रेष्ठ भीमने तुमल युद्धमें उन सेनाओं के समूहोंको  
 गदा से हट कर मरुपर्वतके समान निडबलहोकर नियत हुआ, उसघोर और मा-  
 भवोत्तक युद्धमें भय के उत्पन्न होनेपर भाई बेटे धृष्टयुम्न द्रौपदिके पाँचपुत्र अभि-

### CHAPTER LXIII

"When that army of elephants was destroyed," continued San-  
 jaya, "your son, Duryodhan, addressing all the army, ordered them  
 to kill Bhim. And all the army with a tremendous noise rushed  
 against Bhimsen. Then that warrior, unlearned even by gods,  
 checked that army roaring like the ocean, consisting of numerous  
 chariots, elephants and foot soldiers and raising a storm of dust. 5. We  
 saw then the wonderful prowess of Bhimsen who fearlessly defeated  
 all those princes with their armies of horses, elephants and chariots.  
 With his mace, and himself remained immovable like a mountain.  
 During that dreadful fighting, in spite of the presence of great danger  
 Bhimsen was not deserted by his brothers, sons, Dhishhtadyumna

शिखंडी चापगजितः । मंत्राजहन् भीमसेनं मये जले महाबलम् ॥ १० ॥ ततः रुक्मया  
 धूर्त्वा शुवीं प्रगृह्य महतीं गदाम् । अघावन्नाथ कान् घोघान् दण्डपाणि रियातकः ॥ ११ ॥  
 घोषयन् रथवृन्दानि घाजिवृन्दानि अभिभूः । कैपयन् रथवृन्दानि घाहृष्येतागादयः ॥ १२ ॥  
 विनिघ्नन् रथवृन्दान् रथैः युगानि काल घटिभूः । केशवेमेतसं कर्णन् यशालं नि पाण्डवः  
 ॥ १३ ॥ बलैः नि समर्मदांशु महयत् नीत्र कुञ्जरः । मृदुनन् रथयोः भिन्नो गजेयो गज  
 घोषिनः ॥ १४ ॥ सादिनश्चाभ पृष्ठेभ्यो भूमौ स्त्रावि गदातिनः । गर्दयाभ्यघमासघान्  
 घातौघ्ना निघाजसं ॥ १५ ॥ भीमसेने महापुष्टवपुत्रस्य वै दले । सागिगज्जाघ  
 सामांसैः प्रदिग्धाहधिरजस्य ॥ १६ ॥ अहदयत महावीर्यः । गदामाग्राभ्य पाशनी । तत्र तत्र  
 हतैश्चापि मनुष्याणां वज्रिभिः ॥ १७ ॥ रणांगं सममर्षन् मृत्योरावाप्त संनिभम् ।

मृत्यु और महा विजयी शिखण्डी ने उस महाबली भीमसेन को त्याग नहीं किया  
 । १० । इसके पीछे दंडधारी मृत्यु के समान उस लोहेकी गदाको लेकर महाबली  
 भीमसेन भीमके शूरावीरों पर दौड़ा, और रथ घोड़े हाथियों के समूहोंको मारता  
 हुआ ऐसा घूमा जैसे युगके अन्त में अर्थात् प्रलय काल में अग्नि दौड़ती है, जैसे  
 कि प्रलय के समय में काल सबको मारता है उसी प्रकार युद्धभूमि में कालरूप  
 भीमसेन शूरावीरोंको मारता हुआ अपनी जंघाओं के वेग से रथके जालोंको खिंचता,  
 शीघ्रही सेनाको ऐसे मर्दन करने लगा जैसेकि हाथी नलों के जंगलोंको मर्दन करता  
 है रथोंको रथोंसे वा युद्ध करनेवाले हाथियों के सवारोंको हाथियोंसे मर्दन करता  
 हुआ सवारों को घोड़ों की पीठसे पदातियों को पृथ्वीपर मर्दन करता हुआ घूमने  
 लगा, फिर उस महाबाहु भीमसेनने अपने पुत्रकी सेनामें जाकर गदा से सबको  
 ऐसा मारा जैसे किवायु देवता अपने बलसे वृत्तों को गिराता है । १५ । फिर वह  
 भीमसेनी कराल भयंकर गदा मांस रुधिर से भरी हुई हाथीघेड़ोंकी मारनेवाली  
 रौंद्री रूप से दृष्टि पड़ी और स्थानर में मरे हुए हाथी घोड़े और सवारोंसे वह युद्ध  
 भूमि संशारभूमि के समान होगई, चारों ओर से वर्णभय रहित पशुओं के समान

the five sons of Draupadi, Abhimanyu and Shikhandi the last of  
 conquerers. 10. Then Bhimsen, with his mace like the staff of Death  
 rushed upon your army, and destroying the horses, chariots and ele-  
 phants, he ran like Agni at the end of a yug. As Kal destroys every-  
 thing at the end of the yug, so did Bhim destroy your armies, killing  
 the warriors and dragging the nets of chariots along with his thighs. He  
 roamed crushing chariots with chariots, killing elephant riders, horse-  
 men and foot soldiers as an elephant crushes the forest of reeds. Then  
 Bhimsen of long arms, entering the lists of your' eots destroyed the  
 warriors with his mace as the wind destroys the trees of the forest. 15.  
 Bhimsen's mace of dreadful form, filled in flesh and blood of elephants  
 and horses, looked like the weapon of Rudra. The field of battle  
 was strewn with the dead bodies of elephants, horses and the riders.

पिनाकमिवर्द्धस्य कुलस्याभिघ्नतः पशून् ॥ १८ ॥ यमवैडोपमांभुषां भिदाशानिसमं  
 ह्वनाम् । ददशुर्भूमिं सेनस्य रौद्रीं विशसनीगदाम् ॥ १९ ॥ आधिप्यतागदा  
 तस्य कौंतेयस्य महात्मनः । यमोरुप महाघोरं कौलपिव युगलये ॥ २० ॥ तन्मर्षा  
 महतींसेनां द्रावयंत पुनः पुनः । दृष्ट्वाभ्युपु मियापान्तं सर्वे विमृन्तोभवन् ॥ २१ ॥  
 यतो यतः प्रेक्षतेऽमगदा मुद्यम्य पाण्डव । तेन तेनस्मर्षीयते सर्वं सन्धानिमात ॥ २२ ॥  
 प्रदारयन्तं सन्धानि यलेनामित विक्रमम् । प्रसमानमनीकानि ध्यादिताभ्यामिवातकम्  
 ॥ २३ ॥ तन्तथा ममिकमाणं प्रयुक्षीतमहागदम् । दृष्ट्वावुकोदर भीमः सहसेव  
 समभ्ययात् ॥ २४ ॥ महतारथधारेण रथेनादित्यवर्चसा । छादयन् शरवर्षेणपञ्च  
 न्यदववृष्टिमान् ॥ २५ ॥ तमापान्त तथा दृष्ट्वाध्यात्मानं मिवातैर्कम् । भीष्मभीमो

मनुष्यों को मारने वाले क्रोधरूप रुद्रजी के पिनाक धनुष के समान यमदण्ड के  
 सदृश भयानक और इन्द्र वज्र के समान प्रकाशित नाश करने वाली रौद्री भीम  
 सेन की गदा को हमने देखा, गदाको मारते हुए उस महात्मा भीमसेन का रूप  
 महा प्रकाशित और घोररूप ऐसा हो गया जैसे कि संसार के नाश में महाकालका  
 रूप होता है । २० । इसरीति से उस बड़ी सेना को बारम्बार भगाते हुए मृत्युके  
 समान भीमसेन को आता हुआ देखकर सबलोग चित्त से महा व्याकुल हुए हे  
 भरतवंशी उस भीमसेनने गदा को उठाकर जिशर २ को देखा उधर उधरकी सेना  
 व्याकुल होकर छिन्न भिन्न होगई जैसे कि सेनाओंको छिन्न भिन्न करते हुए  
 सेना समूहोंसे अजेय अत्यन्त भक्षण करनेवाली मृत्यु के समान सेनाओंको निगुन-  
 ते भयकारी कर्म करते बड़ी गदा के उठाने वाले उस भीमसेन को देखकर सूर्य के  
 समान प्रकाशमान बादल से शब्दायमान रथपर सवार होकर भीष्मजी बाणोंकी  
 वर्षा करते हुए अकस्मात् उसके सम्मुख आये । २५ । इस रीति से उस मृत्युरूप  
 भीष्मजीको आता देखकर महाबाहु भीमसेन बड़ा क्रोधरूप अग्नि के समान होकर

Killing the people of all orders like beasts, the destroyer of men, like  
 the bow of Shiva, the staff of Yama or the vajra of Indra, Bhimsen's  
 mace was seen shining dreadfully. Bhim's form, when he was using  
 his mace, looked bright and dreadful like Death himself at the time  
 of the destruction of the world. 20. Thus setting that large army  
 again and again to flight, Bhimsen was seen there frightening the look-  
 ers on. The warriors were scattered in disorder, in whatever direction  
 he looked with his mace raised on high. Dispersing the armies, indefat-  
 igable by large numbers, like Death devouring all, doing dreadful  
 deeds of valour, wielder of the huge mace, Bhimsen was seen and  
 encountered by Bhishma, showering arrows from his chariot bright like  
 the sun and rolling like thunder, 25. At the sight of Bhishma  
 coming like Death, Bhim was enraged like fire and rushed at once to

महाबाहुः प्रमुदीपादमर्षितः ॥ २६ ॥ तस्मिन् क्षणेसात्याकिः सत्यसंघः त्रिनिघ्नी  
 रोम्यपतपितागहम् । निघ्नमग्निघ्नान् घनुषाददेन संकम्पयंस्तव पुत्रस्यसैन्यम् ॥ २७ ॥  
 तेषां तं मध्ये जतवक्राक्षैः शरान् क्षिपन्ति निशितान् सुपुष्पान् नाशकनुपन् घातितुं  
 त्वरानां सर्वे गणाभारत येत्वर्द्धायाः ॥ २८ ॥ अविध्यदेन दशभिः पृथक् रत्नपुत्रो  
 राज्ञोः सौतदानीम् । घनञ्जलिं प्रतिविद्यद्यतञ्च नताग्निरेभ्यपतदधेन ॥ २९ ॥  
 अन्वागतम् वृष्णिवरम् निशुम्यतम् शत्रुमध्ये परिचर्तमानम् । प्रद्रावयन्तं कुरुपुंगवाम्  
 पुनः पुनश्चमणवन्तमाजौ ॥ ३० ॥ योवास्त्वर्द्धायाः शरवर्षैर्वर्षन् तेद्यायथाभूयान्बुधैः ।  
 तव पितृमृशारयितुम् नरोकुर्मध्यम् दिनेसूर्यमिवातपतम् ॥ ३१ ॥ न तत्र कथिन्न धिपण  
 आसीदते राजन्मोदस्य पुत्रात् । सर्वेसमादाय घनुर्महात्मा भूयिष्याभातसामदक्षिः

इनके सम्मुख गया, उस समय महावीर सत्यसंकल्प सात्मकी बड़े बड़े धनुषसे शत्रुओं  
 को मारता हुआ। आपके पुत्रकी सेनाको कंपाता पिनामह के सम्मुख जाभिड़ा, हे  
 भरतवंशी आपके सब मनुष्य उस चाँदी के समान श्वेतयोद्धों के रथपर चढ़े हुए  
 सुन्दर पंखवाले बाणों के प्रहार करने वाले सात्यकी के रोकने को समर्थ नहीं हुए,  
 तब अलंजुष नाम राक्षस ने प्रपक्त नाम दश बाणों से उसको घायल किया फिर  
 सात्यकी भी उसको चार बाणों से घायल करके रथके द्वारा सम्मुख दौड़ा, फिर  
 दृष्टी वीर सात्यकी को समीप आया हुआ और शत्रुओं में घूमने वाला उत्तम  
 कौरवों का नाशकर्त्ता युद्ध में बारम्बार गर्जता हुआ देखकर, आपके शूरवीर लोग  
 उस पर ऐसी बाणों की वर्षा करने लगे जैसे कि बादल जलों के वेगसे पहाड़  
 पर वर्षा करते हैं, मध्याह्न समय के सूर्य के समान तपाने वाले पिनामह भी  
 उस सात्यकी के रोकने को समर्थ नहीं हुए, हे राजा वहाँ सोमदत्त के लड़के  
 के सिवाय कोईभी स्थिर चित्त नहीं हुआ, हे भरतर्षभ वह सोमदत्त का पुत्र

meet him. Then that bravest of warriors of true sons, Satyaki came on destroying and shaking the armies of your sons by his hard bow and encountered Bhishm the grandfather. All your people, O descendant of Bharat, were unable to withstand Satyaki who rode on his chariot drawn by silver white horses, discharging arrows of beautiful plumage. Then the rakshas named Alamvush wounded him with ten arrows. Satyaki replied him with four arrow wounds and rushed on to meet him. Seeing Satyaki the warrior of the Vrishni race, roaming among the enemies and destroying the Kauravas with continuous roars, your warriors covered him with showers of arrows as clouds do a mountain. Even the grandfather, glorious like the mid-day sun could not withstand Satyaki. None except the son of Somdatta could remain firm there. Bhurishrava the son of

॥ ३२ ॥ दृष्ट्वा रथान् स्वान् व्यपनीयमानान् । प्रत्युद्ययौ सात्यकिं योद्धुमिच्छन् ॥ ३३ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवपर्वणि सात्यकि भूरिश्रवःसमागमे

त्रिपट्टितमोऽध्यायः ६३ ॥

सञ्जय उवाच । ततो भूरिश्रवा राजन् सात्यकिं नवाभिः शरैः । प्राविध्यद्भृशं  
 संकुशस्तोत्रै र्विषमहाद्विषम् ॥ १ ॥ श्रीधं सात्यकिवैव शरैः सञ्जयपर्वणि ।  
 अघारयद्मे धात्मा सर्वं लोकस्थपश्यतः ॥ २ ॥ ततो दुर्योधनो राजा सोदयैः परिवा-  
 रितः । सोमदायै रणेयत् । समन्तात्पुण्यचरयत् ॥ ३ ॥ तं वैवपाण्डवाः सर्वे सात्यकिं  
 रभसरणे । परिवार्यस्थिताः । सख्ये समन्तात्समहौजसः । भीमसेनस्तु संकुशो गदा  
 मुद्यम्यभारत । दुर्योधनमुखान् सर्वान् पुत्रान्ते यं वारयत् ॥ ४ ॥ रथरत्ने कसाहसै क्रो-  
 धामयत्सन्निवितः । नन्दकस्तपुवत्सु भीमसेनं महाबलम् ॥ ५ ॥ विषाघनिशितः  
 पृथुभिः कंकणै रशिलागितैः । दुर्योधनश्च समरे भीमसेनं महारथम् ॥ ६ ॥ आजघानो

भूरिश्रवा अपने रथी लोगों को दूरहटा हुआ देखकर महा भयानक वेग युक्त धनुष  
 को हाथ में लिये युद्ध की इच्छासे सात्यकी के सम्मुख गया ॥ ३३ ॥

अध्याय ६४ ॥

संजय बोले हे राजा इसके पीछे अत्यन्त कोपयुक्त भूरिश्रवाने नौ बाणों से  
 सात्यकी को इस रीतिसे घायल किया जैसेकी अकुश से बड़े हाथी को घायल  
 करते हैं, फिर उस महा साहसी सात्यकी ने भा सक्के देखते हुए गुप्त ग्रन्थी वाले  
 बाणों से भूरिश्रवाको रोका, फिर अपने निज भाइयों समेत दुर्योधन ने युद्धमें  
 उपाय करने वाले भूरिश्रवाकी चारों ओरसे रक्षाकी इसी प्रकारसे महा पराक्रमी  
 सब पाण्डवसंग भी युद्धभूमि में चारोंओर से सात्यका को रक्षितकर के नियत  
 हुए हे भरतवंशी भीमसेन को गदाचढाये कोप में देखकर आपके सब क्रोधी और  
 अतन्तोपी दुर्योधनादिक पुत्रोंने बहुत से अतस्ख्य रथों को साथ लेकर उसकी  
 चारों ओरसे रोका फिर आपके पुत्रनन्दकने उत्तमहावली भीमसेनको शिवापर  
 निक्षेप किये हुए तीव्र और तेजनोक वाले बाणोंसे घायल किया इसके पीछे क्रोध

Somdatta, seeing his charioteers give way advanced to meet Satyaki with his bow of dreadful velocity.

#### CHAPTER LXIV

Sanjaya continued: "Then, O king, Bhurishrava in great rage, wounded Satyaki with nine arrows like an elephant with goods. Satyaki too, of great prowess, checked Bhurishrava with his arrows of hidden knots. Du yodhan and his brothers protected Bhurishrava. Seeing Bhim-en with his mace upraised in anger, your enraged and dissatisfied sons, Duryodhan and others, with numerous chariots, checked him from all sides. Then your son Nandak wounded Bhim-



रसिकुक्षो मार्गणेनचभिः शितः । ततो भीमी महाबाहुः स्वरथे समहायलः । ८ । बाह  
 रोह रथश्रेष्ठं विशोकं श्रेष्ठमब्रवीत् । एते महारथाः शूरा धार्तराष्ट्रः समागताः ॥ ९ ॥  
 मामेवभृशसंकुदा हंतुमशुच्यतायुधि । मनोरथं हुमोस्मार्कं चितितो पशुपार्पिकः ॥ १० ॥  
 सफलः स्रुत चाधेह योह पश्यामि सोदरान् । यथाशाकसमुच्छिस्ता रेणवैरथनेमिभिः  
 ॥ ११ ॥ प्रयाकृत्यत्यन्तरिक्षं हि शरवृद्धैर्दिगन्तरे । तत्र तिष्ठति सन्नद्धः स्पर्ध राजासुयो  
 धनः ॥ १२ ॥ भ्रातरथास्यसन्नद्धः क्लृप्तपुनानशोक्तदाः । यस्तानघदनिष्यामि पश्यतस्तेन  
 संशय ॥ १३ ॥ तस्मान्ममाश्वान् संप्राप्ते यत्त संयच्छसारथे । यद्यमुपस्था ततः पार्थ  
 सद्यपुत्रं विशास्यते ॥ १४ ॥ विव्याध निशितेऽतीक्ष्णैः शरैः वनकभूषणैः । नन्दकश्च  
 त्रिभिर्बाणै रभ्यविध्यत्कृतातरैः ॥ १५ ॥ तंतु दुर्योधत पश्या विध्याभीमं महाघटम् ।  
 त्रिभिर्नयैः सुनिशिनैर्विशोकं प्रत्य विध्यत ॥ १६ ॥ भीमस्यञ्च रणे राजन् घनुश्चिच्छेद्य

युक्त दुर्योधनने उस बड़ेयुद्धमें बड़ेतीक्ष्ण बाणोंसे छातीपर घायल किया इसकेपीछे  
 महारथनी महाबाहु भीमसेन बड़े उत्तम रथपर सवार होकर विशोकसे बोला कि  
 यह धृतराष्ट्र के पुत्र बड़े शूर और महाबली अत्यन्त क्रोधित युद्धमें मेरे मारने की  
 तैयारं हुए हैं इनको निस्सन्देह मैं तेरेदेखतेही में मारूंगा । १० । इस हेतु से हे  
 सारथी तू इसयुद्धमें बड़ी सावधानी से मेरेघोड़ों को सम्हाल ऐसा कहकर हे राजा  
 भीमसेन ते तेरे पुत्रको बड़े तीक्ष्ण सुनहरी भूषित दश बाणों से अत्यन्त घायल  
 किया और नन्दकको तीन बाणों से स्तनों के मध्य में विदीर्ण किया फिर दुर्योधन  
 ने सातबाणों से उस महाबली भीमसेन को घायल किया और अत्यन्त तीक्ष्ण  
 तीन बाणों से विशोक सारथी को घायल किया फिर युद्धभूमि में हँसतेहुए दुर्यो-  
 धन ने तीन महा पने बाणोंसे भीमसेन के उस धनुषको गूठ के स्थानपर से काट  
 डाला । १४ । हे महाराज तब भीमसेन ने आपके धनुषधारी पुत्र के त्रिभिर्बाणों से  
 महापीडामान अपने विशोक सारथी को देखकर, असहनशील और महा क्रोधित  
 होकर आपके पुत्रके मारने के लिये दिव्य धनुषको धारणाकिया और क्रोधमें भर

son with sharpened and piercing arrows. Duryohan in his rage wound  
 ed Bhimsen on the breast. Bhim, mounted on his goodly chariot,  
 said to Bishok: "These have sons of Dhritrashtra are ready to  
 kill me in battle, but you will see how I make their death secure.  
 10 You should therefore keep my horses steady." Having said  
 this Bhimsen wounded your son with ten golden arrows. He wound-  
 ed Nandak with three arrows in the middle of the breast. Duryo-  
 dhan wounded that brave warrior, with seven and Bishok the  
 driver with three arrows, and with a smile, he cut down the bow of  
 Bhim from the place where he was grasping it 14 Bhimsen severely  
 wounded by the arrows of your son and seeing the condition his  
 coachman was in, took up his divine bow to kill Duryadhan. He put

भासुरम् । मुष्टि देवे मृशं तीक्ष्णै स्त्रिभिर्महैर्हसन्निय ॥ १७ ॥ समरे प्रेक्ष्य यतार विशो  
कन्तु वृकोदर । पीडित विशिखैस्तीक्ष्णैस्तव पुत्रेण धन्यिना ॥ १८ ॥ अमृत्युमात्रं सर  
स्यो धनुर्विष्य परा मशत् । पुत्रस्य ते महाराज वधार्थं भरतपते ॥ १९ ॥ समावृष्टास्तस  
कुक्ष्य क्षुद्र लोमबाहिनम् । तेन चिच्छेद् नृपतेर्भीमः कर्मक मुत्तमम् ॥ २० ॥ स्तोपि  
ष्यधनुर्द्विभन्त पुत्रस्ते क्रोधमूर्छित । अन्यत्कर्मक मावृत्त सत्वर वेगवत्तरम् ॥ २१ ॥  
सदये विशिखघोर कालभृत्युसमप्रभम् । तेनाजघान सकुक्षो भीमसेनस्तनातरे ॥ २२ ॥  
सगाढ विद्धो व्यथित स्य दनौरस्य विशत् । सनिपद्योत्थो पश्ये मूर्छामभिजगा  
मह ॥ २३ ॥ तद्दृष्ट्वा व्यथित भीम मा मनु पुत्रोत्तमा । नामृष्यन्तमहं व्यासा पाण्डवा  
ना महारथा ॥ २४ ॥ ततस्तत्तुमहावृत्तं शस्त्राणां तिम्रतेजसात् । पातयामासुरव्यग्राः  
पुत्रस्य तप मूर्धनि ॥ २५ ॥ प्रतिक्रान्तं सत्त्वा भीमसेनो महाबल । दुर्योधनं त्रिभि  
र्विधा पुनर्विध्यापयच्छनि ॥ २६ ॥ शल्यञ्च पञ्चविंशत्या शरेर्विधाय पाण्डव । शक्य  
पुनैर्महोत्थासः सविद्धो व्यपयाद्गणात् ॥ २७ ॥ प्रत्यद्युस्ततो भीमं तव पुत्राश्चतुर्विंशः ।

कर बाणों के काटनेवाले क्षुरप्र बाणको धनुषमें चढ़ाकर उसमें दुर्योधनके उत्तम  
धनुषको पीछेकी ओर को काटा, फिर महाक्रोध में भरे हुए तुम्हारे पुत्रने उस कोट्टे हुए  
धनुषको डाल कर शीघ्रही बड़े वेगवान् दूसरे धनुषको लेके काल भृत्युके समान प्र-  
काशित बड़े भयानक विशिख बाणको चढ़ाकर बड़े क्रोध से भीमसेन के स्तनों के  
मध्यस्थान को घायल किया, फिर वह महा घायल और पीड़मान् रुपये बैठने के  
स्थान में बैठकर महा अचेत होगया, । २० । फिर पाण्डवों के उन महाराथि-  
योंने जिनका अग्रगामी अभिमन्यु था उस पीड़ितमान भीमसेनको देखकर महा क्रोधित  
होकर आप के बेटेके मस्तकपर महाउग्र तीक्ष्ण बाणोंकी तुमल वर्षा की इसके पीछे  
महाबली भीमसेन ने सचेत होकर दुर्योधन को तीन बाणों से घायल कर के  
फिर पांच बाणों से व्यथित किया और पन्चीस बाणों से शल्यको घायल किया  
इन बाणों से घायल होकर वह महाधनुषधारी शल्य युद्ध से हटगया । २४ । इसके पीछे  
आपके यह चौदह १४ पुत्र इस वीरके सम्मुख गये सेनापानि, सुपेण, जलसन्ध, सुलो-

very sharp arrows to his bow and cut down his bow from the back. Then your son in great rage threw down the bow which was cut asunder and taking up another strong one, he put up a dreadful arrow like Death's stroke and wounded Bhishma in the breast which caused him to fall back in his place 20 The great warriors of the Pandavas, headed by Abhimanyu, finding Bhishma in a swoon, showered a heavy shower of arrows on the head of your son Then the great warrior Bhima came to himself and wounded Duryodhan with eight arrows. He wounded Shalya with twentyfive arrows and made him turn his back much wounded 24 Then fourteen of your sons, namely Senapati, Sushen, Jalsandh, Sulochan, Ugra, Bhimrath, Bhim,

सेनापतिः सुपेणव जलसन्धः सुलोचनः ॥ २८ ॥ उग्रो भीमरथो भीमो वीरबाहु रलो-  
लुपः । दुर्मुखो दुष्प्रधर्षश्च विषित्सुर्धिकटः समः ॥ २९ ॥ दिशुजन्तो बहून् धानान् क्रोध  
संरक्त लोचनाः । भीमसेन मभिदुष्य विन्ध्यघुः सहिता भृशम् ॥ ३० ॥ पुत्रास्तुतवसंमे  
द्वय भीमसेनो महाबलः । रुद्रिकणी विलिहन्वीरः पशुमध्ये यथा वृकः ॥ ३१ ॥ अग्नि  
पत्यमहाबाहुर्गङ्गानिव धेमितः । सेनापतेः पुत्रेण शिरधिच्छेद पाण्डवः ॥ ३२ ॥ सं-  
प्रहस्य च दृष्ट्वात्मा त्रिमूर्धनिमहाभुजः । जलसन्धं विनिर्मित्य सौम्यं मसादनम् ॥ ३३ ॥  
सुरेणवततो हत्वा प्रेषयामास मृत्यवे । उग्रस्य मरिचिच्छायां शिरश्चन्द्रोपमं भुवि ॥ ३४ ॥  
प तयामास भल्लेन कृपदस्तायां विधुनिनम् । वीरबाहुवसतत्या सायकेशु ससारविम्  
॥ ३५ ॥ निनाय समरेवीरः परलोकं पाण्डवः । भीमभीमरथौ चोगौ भीमसेनो हस-  
न्निव ॥ ३६ ॥ पुत्रौ ते दुर्मदौ गजान् ननयद्यमसादनम् । ततः सुलोचन भीमः पुत्रेणम  
हामुधे ॥ ३७ ॥ मिवतां सर्वं सेन्यानां मगधयमसादनम् । पुत्रास्तुतवसं दृष्ट्वा भीमसेन

वन, उग्र, भीमरथ, भीम, वीरबाहु, अलोलुप, दुर्मुख, दुष्प्रधर्ष, विषित्सु, विकट,  
सम, इन सब क्रोधमें भरे हुए बाणोंके वरमाने वालोंने, एक साथही भीमसेन के  
सम्मुख जाकर अत्यन्त घायल किया फिर महाबली महाबाहु भीमसेन ने आपके  
पुत्रों को अच्छी रीतिसे देखकर भेड़िये के समान होंठोंको चाटकर गरुड़ के समान  
वेग से सम्मुख दौड़कर अपने जुरम बाणसे सेनापतिके शिर को काटा फिर उस  
महाबाहु मसन्न विच ने अत्यन्त आनन्दित होकर तीन बाणोंसे जलसिन्ध को  
विदीर्ण करके यमलोकको पठाया । ३० । फिर सुपेणको पार कर मृत्यु के पास  
पहुँचाया, फिर एक भल्लसे उग्रके मुकुट समेत चन्द्रमा के समान कुंडलों से शोभित  
शिर को पृथ्वीपर गिराया, फिर सत्तर बाणोंसे छोड़े ध्वजा और सारथी समेत  
वीरबाहु को मारा, फिर हँसते हुए भीमसेनने भीम और भीमरथ दोनों वेगवान्  
माइयोंको भी यमपुरको पठाया, इससे अनन्तर सब सेनाके देखते हुए सुलोचन

Birvahu, Alolup, Durmukh, Dushpradhatsh, Vivitsu, Vikat and Sam  
faced Bhimsen and all those enraged warriors showered their arrows  
at once on him with effective aim. Then Bhimsen of long arms and  
great strength, looking attentively at your sons and licking his lips  
like a wolf, rushed upon them in great force. He beheaded Senapati  
with his sharp arrow and then with a cheerful mind wounded jal-  
sandh with three sharp arrows and sent him to the region of Yam. 30.  
Having killed Sushen he cut down with a single dart the head of  
Ugra decked with diadem and earrings. With seventy arrows he  
killed Birvahu and cut down his banner with the horses and the  
driver. Then with a smile Bhimsen sent the two brothers Bhim and  
Bhimrath to the region of Yam. Then within sight of the whole  
army, he killed Sulochan with one sharp arrow. Then the rest of

पराक्रमम् ॥ ३८ ॥ शेषा येन्ये भवेत्तत्र हे भीमस्य भयार्दिताः । विप्रद्रुतादिशोराजन्  
 वध्यमाना महामना ॥ ३९ ॥ ततोऽमर्षाच्छान्तनय सर्वा नेष महारथान् । एषभीमी  
 र्णो वृद्धो धार्तराष्ट्रमहारथान् ॥ ४० ॥ यथाप्राप्रणान् यथा ज्येष्ठान् यथा दूरांश्चसगतान्  
 निपात यत्पुत्र धन्या त प्रमृदणीत माक्षिरम् ॥ ४१ ॥ एवमुक्त्वा तत सर्वे धार्तराष्ट्रस्य  
 सैनिया । अभ्यद्रवन्त संक्रुद्धा भीमसेन महाबलम् ॥ ४२ ॥ अगदत्त अभिघ्नेन कुम्भ  
 रेण विशाम्यते । अभ्ययात्सप्तसा तत्र यंत्रभीमो व्यवस्थितः ॥ ४३ ॥ आपतन्नेष चरणे  
 भीमसेन शिलीमुखे । अट्टय समरे चक्रे जीमूतद्वयमास्करम् ॥ ४४ ॥ अभिम-पुमुखा  
 स्तस्तु नामृष्यन्तमहारथा । भीमस्यच्छादन सख्ये स्ववाहुयलमाधिता ॥ ४५ ॥ तपनं  
 शरघर्षेण रतं तात्पर्यं धारयन् । गज च शर वृष्ट्यानु विभिदुस्ते संमै रत ॥ ४६ ॥ स

को क्षुरप्रमाण मे मारा, हे राजा तब यहाँ जो आपके शेषत्रे हुए पुत्र थे वह  
 भीमसेन के वल्लको देखकर डमने पायल और भयभीत होकर युद्ध से भागे । ३९ ।  
 इसके पीछे भीष्मजी सब महारथियों ने बोले कि यह युद्धमें क्रोधरूप भयानक  
 धनुषधारी भीमसेन जो धृतराष्ट्र के महा शर्वार बुद्धिमान पुत्रोंको गिराता और  
 मारता है उसको पकड़ो, इसके पीछे दुर्योधन की सेनाके सयस्रोंग इस आश्रितों  
 पाकर अत्यन्त क्रोध में भरकर उस महाबली भीमसेन के सम्मुख दौड़े, हेराता  
 राजाभगदत्त मन्त्राले हाथी की सवारी पर अकस्मात् वहाँ आदृष्ट जहाँ भीमसेन  
 नियतथा । ४० । और युद्धभूमि में मिरतेही शिपाके घिमेहुए थाणों से भीमसेनको  
 हाथ से ऐसा गुप्त करदिया जैसे कि बादल सूर्यको करला है यहाँ अपने मुनवबमें  
 नियत और रक्षित अभिमन्यु आदि महारथी भीमसेनके - - - को न ताहके।

शस्त्रवृष्ट्याभिहतः सैन्यैस्तैर्महारथैः । प्रयथोत्तिष्ठ गजो राजन् नाना सिंगे सुतेजनः ॥ ४७ ॥ संजात रुधिरोदीर्घैः प्रेक्षणीयो भवद्वेषे । ममस्ति निरिवाक्यस्य सम्पत्तो जल दौ मंहान् ॥ ४८ ॥ सचोदितो मदवावी भगदत्तेन चारणः । अभ्यधावत तान् सर्वान् कालोत्सृष्ट इवांतकः ॥ ४९ ॥ द्विगुणं जय मास्वाय कम्प्यं चरणैर्मदीम् । तद्यतः सुमह द्रुप दृष्ट्वा सर्वे महोरथाः ॥ ५० ॥ असह्यं मन्यमानाश्च नीतिप्रमनसो भवत् । ततस्तु नृप निः कुड्रो भीमसेनस्तनोतरे ॥ ५१ ॥ आजर्घ्यान् मंहाराज शरेणानर्तं पर्वणा । सोति धि- खो महेश्वासेनेन रातामहारथः ॥ ५२ ॥ मूर्ध्वगमि परितारणा ध्वजवर्धे समाधयत् । तांस्तु भीर्तान्समालोक्य भीमसेनश्च मूर्छितम् ॥ ५३ ॥ ननाद बलवकाद् भगदत्त प्रता पवान् । मतो घटोत्कचो राजर्षे प्रेक्ष्य भीमं तथा गतम् ॥ ५४ ॥ स कुड्रो राजसो घोररुत प्रेक्षांतर्धीयते । सक्तुयाद्वक्त्रां मांयां और्ध्वा मय घर्चिर्नामि ॥ ५५ ॥ अदृश्यत निमे

सीव भीमों से घायल रुधिर के धोतों से युद्धमें ऐसा देखने के योग्य हुआ जैसे कि सूर्यकी किरणों से व्याप्त बड़ावादल होलाहे ॥४४॥ फिर वह मदीयमत्त कालरूप मृत्यु के समान राजा भगदत्तका पला हुआ हाथी अत्यन्ततीव्र होकर पृथ्वी को अपने चरणों से कँपाता हुआ उन सब वीरों के सम्मुख दौड़ा उसके उस बड़े रूपको देखकर वह सब महारथी, उसको सहनेके योग्य न समझकर भयभीत हुए हे नरोत्तम फिर उसके अनन्तर राजा भगदत्तने महा क्रोधित होकर गुप्तग्रन्थी के बाणों से भीमसेन के वक्षस्थलको व्यथित किया उस राजा से अत्यन्त घायल किया हुआ वह बड़ा धनुषधारी, महारथी मूर्च्छा युक्त होकर ध्वजकी ध्वज के सहारेसे नियत हुआ फिर उनको भयभीत और भीमसेनको मूर्च्छा युक्त देखकर, वह प्रतापी भगदत्त बड़े शब्दको करता हुआ गर्जा । ५० । हे राजा इसके पीछे घटोत्कच उस मूर्च्छावान् भीमसेन को देखकर अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर उसीस्थान में गुप्त होगया और फिर घोररूप महाभयकारी मायाको रचके घोरहीरूप में नियत होकर के

wounded by the sharp and bright arrows of the various warriors, dropped streams of blood and looked like a cloud over which the sun's rays fall 44 Then the mad elephant, urged by Bhagdatta and assuming the form of Death in his fury, rushed upon those warriors, shaking the earth with his feet All the warriors seeing his great size and thinking themselves unable to withstand his fury were much frightened. Then King Bhagdatta in great anger, with his sharp arrows, wounded Bhimsen who fainted with the loss of blood and held fast the staff of his banner to keep himself from falling down off his seat. Seeing those warriors terrified and Bhimsen in a swoon, Bhagdatta roared a loud roar. 50. Seeing Bhimsen in this state, Ghatotkach was much enraged and disappeared in the very place where he was standing. He reappeared in a short time on his own

परिक्रमम् ॥ ३८ ॥ शेषा येन्ये भवंस्तत्र ते भीमस्य मयादिताः । विमद्रुतादिशोराजन्  
 वधमार्ता महात्मना ॥ ३९ ॥ ततोऽमयीच्छान्तनय सर्वा नेव महारथान् । पयभीभी  
 र्णे कुक्षो घातैराश्वमहारथान् ॥ ४० ॥ यथाप्राप्रथान् यथा ज्येष्ठान् यथा शूरांश्चसगतान्  
 निपतन् यद्युग्र धन्या त प्रमृष्टभीत माचिरम् ॥ ४१ ॥ एवमुक्त्वा तत सर्वे घातैराश्व  
 सैनिकाः । अभ्यद्रवन्त संकुक्षा भीमसेन महाबलम् ॥ ४२ ॥ भगदत्त प्रभिन्नेन कुम्भ  
 रेण विशाम्पने । अभ्यधात्सहसा तत्र यंत्रभीमो व्यवस्थितः ॥ ४३ ॥ आपतन्नेव चरणे  
 भीमसेन शिलीगुनैः । अदृश्य समरे चक्रे जीमूतद्वयमास्करम् ॥ ४४ ॥ अभिमन्युमुखा  
 स्तनु नामृष्यभूमहारथाः । भीमस्याच्छादन सव्ये स्वबाहुयलमाधिता ॥ ४५ ॥ तपनं  
 शरचरणेन सम तात्पर्यं धारयन् । गर्जन् च शर वृष्ट्या तु विभितुस्तेऽसमं तत ॥ ४६ ॥ स

को दुरप्रवाण मे मारा, हे राजा तब वहाँ जो आपके शेषवचे हुए पुत्र थे वह  
 भीमसेन के बलको देखकर उससे घायल और मयभीत होकर युद्ध से भागे । ३९ ।  
 इसके पीछे भीष्मजी सब महारथियों ने बोले, कि यह युद्धमें क्रोधरूप मयानक  
 धनुषधारी भीमसेन गो धृतराष्ट्र के महा शूरवीर बुद्धिमान पुत्रोंको गिराता और  
 मारता है उसको पकड़ो, इसके पीछे दुर्योधन की सेनाके सबलोग इस आशको  
 पाकर अत्यन्त क्रोध में भरकर उस महाबली भीमसेन के सम्मुख दौड़े, हे राजा  
 राजाभगदत्त मतवाले हाथी की सवारी पर अकस्मात् वहाँ आदृष्ट जहाँ भीमसेन  
 नियतथा । ४० । और युद्धभूमि में गिरतेही शिसाके घिसेहुए बाणों से भीमसेनको  
 दृष्टि से ऐसा गुप्त करदिया जैसे कि बादल सूर्यको करता है वहाँ अपने भुजवर्क  
 नियत और रक्षित अभिमन्यु आदि महारथी भीमसेनके दकजानेको न सहसके  
 और क्रोधित होकर उन्होंने चारों ओरसे उसको अपने बाणोंकी वर्षासे रोककर  
 चारों दिशाओंसे मारे बाणों के उसकेहाथीको घायल किया, हे धृतराष्ट्र वह राजा  
 प्रागज्योतिषका हाथी उन सब महारथियों के नाना प्रकार के चिह्नधारी प्रकाशित

your sons seeing the great strength of Bhishma fled from the battle  
 field wounded and frightened : 36 Thereupon Bhishma, addressing  
 all the warriors, said, "This enraged and dreadful archer, Bhim who  
 is killing and felling the brave and wise sons of Dhritarashtra,  
 must be checked." All the warriors of Duryodhan's army, having  
 received these orders rushed upon Bhishma in a great rage, and  
 King Bhagdatta, mounted upon a mad elephant, pounced upon  
 him : 40 And as soon as he came there he hid Bhishma with  
 the shower of his arrows as clouds do the sun. Then, Abhimanyu,  
 firm in and protected by the strength of his own arms, could not  
 bear the hiding of Bhishma and in a great rage, Abhimanyu and his  
 companions wounded Bhagdatta's elephant with the shower of their  
 arrows and checked him. The elephant of the king of Pragjyotish,

शक्रवृष्ट्यामिश्रितः सिमस्रैस्त्वैर्महारथैः । प्रमथ्योत्थिप गजो राजन् नाना तिम्रं सुतेजसः ॥ ४७ ॥ संजात रुधिरोत्पीड्यं प्रेक्षणीयो भवद्गणे । भीमस्तिमिरिवार्कस्य सम्प्लुतो जल-  
दो महान् ॥ ४८ ॥ सचेदितो मदराशो भगदत्तेन वारणः । अश्वधावत तान् सर्वान्  
काले त्वष्ट इवांतकः ॥ ४९ ॥ द्विगुणं जय मास्थाय कम्पयन्वरजैर्महीम् । तद्यन्तस्त्रुमह-  
दपं दृष्ट्वा सर्वे महारथाः ॥ ५० ॥ असह्यं मन्यमानाश्च नैतिप्रमनसो भवत् । ततस्तु नृप-  
तिः क्रुद्धो भीमसेनस्तर्जितो ॥ ५१ ॥ आजर्घ्यान् महाराज शुरेभ्यस्तर्पयन् । सोति धि-  
खो महेष्वासंस्तेनराज्ञामहारथः ॥ ५२ ॥ मूर्च्छयामि परितारमा ध्वजवाष्टिं समाधायत् ।  
तांस्तुभीर्तन्निस्समालक्ष्य भीमसेनञ्च मूर्छितम् ॥ ५३ ॥ ननाद् यत्नवक्राद् भगदत्तः प्रता-  
पवान् । मतोघटोत्कचो राजर्षे महेयमीमं तथा गतम् ॥ ५४ ॥ स्रुद्धो राज्ञसो घोररुत-  
ज्ज्वातरंधीयत् । स्रुष्ट्वाकाशघ्नां मयिं अक्षिणां मय धर्चिनीम् ॥ ५५ ॥ अदृश्यत तिम्रे

सीत्र क्रौणों से घायल रुधिर के थोठों से युद्धमें ऐसा देखने के योग्यहुमा जैसे कि सूर्यकी फिरणों से व्याप्त बड़ाबादल होताहै । ४४। फिर वह मद्गमत्त कालरूप मृत्यु के समान राजा भगदत्तका पेला हुआ हाथी अत्यन्ततीव्र होकर पृथ्वी को अपने चरणों से कँपाता हुआ उन सब वीरों के सम्मुख दौड़ा उसके उस बड़े रूपको देखकर वह सब महारथी, उसको सहनेके योग्य न समझकर भयभीत हुए हेनरोत्तम फिर उसके अनन्तर राजा भगदत्तेन महा क्रोधित होकर गुप्तग्रन्थी के बाणों से भीमसेन के बलस्थलको व्यथित किया उस राजा से अत्यन्त घायल किया हुआ वह बड़ा घनुषधारी, महारथी मूर्च्छा युक्तहोकर ध्वजकी यष्टी के सहारेसे नियत हुआ फिर उनको भयभीत और भीमसेनकी मूर्च्छा युक्त देखकर, वह प्रतापी भगदत्त बड़े शब्दको करता हुआ गर्जा । ५० । हे राजा इसके पीछे घटोत्कच उस मूर्च्छावान् भीमसेन को देखकर अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर उसीस्थान में गुप्त होगया और फिर घोररूप महामयकारी मायाको रचके घोरहीरूप में नियत होकर के

wounded by the sharp and bright arrows of the various warriors, dropped streams of blood and looked like a cloud over which the sun's rays fall. 44. Then the mad elephant, urged by Bhagdatta and assuming the form of Death in his fury, rushed upon those warriors, shaking the earth with his feet. All the warriors seeing his great size and thinking themselves unable to withstand his fury were much frightened. Then King Bhagdatta in great anger, with his sharp arrows, wounded Bhimsen who fainted with the loss of blood and held fast the staff of his banner to keep himself from falling down off his seat. Seeing those warriors terrified and Bhimsen in a swoon, Bhagdatta roared a loud roar. 50. Seeing Bhimsen in this state, Ghatotkach was much enraged and disappeared in the very place where he was standing. Hereappeared in a short time on his own

पार्थाद्विधोरूप समादिषतः । ऐरावतं समारुढः सवै गायकृतं स्वयम् ॥ ५६ ॥ तैष  
 चान्येपि दिनागा यभूवृत्तपायिनः । अजनो यामनधैव महापद्मसुप्रभः ॥ ५७ ॥ त्रयं  
 एते महानागा रक्षसैः सम विष्टिताः । महाकायास्त्रिधाराजन् प्रसूयन्तो मर्द्दं यद् ॥ ५८ ॥  
 तेजोवीर्यं बलोपेता महाबल पराक्रमा । घटात्कचस्तुस्त्वं नाग चादयामास ततवा ५९  
 सगतं भगदत्तं हतक्रामः परंतपः । ते चान्ये चोदितानागा गच्छसेस्तैर्महाबलैः ६० ॥  
 परिपेतु सुसंरब्धाश्चतुर्दंष्ट्राश्चतुर्दिशम् । भगदत्तस्येत नाग विषण्णैर्भ्यषीडयन् ॥ ६१ ॥  
 सपीड्यमानस्तैर्नागैर्वेदनार्तः शराहतः । अनयत्सुमहानाग मिश्राशनिर्लभस्त्वनम् ॥ ६२ ॥  
 हस्यतं नदतो मादं सुघोर भीमनि स्वयम् । सुत्वाभीर्माप्रधीर्द्रोण राजानंचसुयोधनम् ॥ ६३ ॥  
 एतद्युष्मति संप्राप्ते द्वेद्विन्देन दुरात्मना । भगदत्तो महेष्वासः कृच्छ्रेण गरि

अपने रचे हुए माय रूपी ऐरावत पर चढ़कर आये हैं। निमेष में दृष्टिगोचर हुआ और महा सुन्दर मंभावी अंजन, यामन, महा पद्मनाम दूसरे दिग्गज उसके पीछे चलने वाले हुए । ५४ । हे राजा वह बड़े शरीर वाले सब अंगों से मद चुने वाले नीनों महा गजराज राक्षसों समेत नियत हुए, जोकि तेजी से पराक्रम युक्त बड़े भेगवाले थे फिर घटोत्कच ने अपने हाथीको युद्ध में भेजा, है शत्रुसन्तापी धृतराष्ट्र वह हाथी भगदत्त के मारनेको उपस्थित हुआ और वह दूसरे महाबली हाथीभी राक्षसों के घेरित अत्यन्त क्रोधित चार २ दांतों से महा भयानकरूप दिशाओं में पहुँचे और भगदत्त के हाथीको अपने दांतों से महापीड़यमान किया तबतो इन हाथियों से महापीड़ित दुःखों से व्याकुल और बाणों से घायल उस हाथी ने इन्द्रके यज्ञ के समान महाघोर शब्द किया उसके महाघोर शब्दको सुनकर, भीष्मजी द्रोणाचार्य और राजा दुर्योधन से बोले : ६० । कि यह बड़ा घनुपधारी भगदत्त युद्धमें दुरात्मा घटोत्कचके साथ लड़ताहै और आपत्तिमें फँसा है । ६१ । यदरात्मन यड़े शरीरशाला है और राजाभी बड़ाक्रोधकरनेवाला है निश्चय करके कालमृत्यु

elephant followed by Anjan, Baman, Mahapadma and other elephants of great beauty and prowess. The e huge princes of elephants with juices dropping down from their limbs were ridden over by rakshases of great velocity and strength. Ghatokach then urged forward his own elephant which was soon ready to kill Bhagdattra. The other powerful elephants too, urged by the rakshases rushed in a great rage in different directions and with their sets of four tusks wounded the elephant of Bhagdattra. Wounded and harrassed by those elephants, the elephant of Bhagdattra made a tremendous noise like that of thunder. Hearing that noise Bhishm said to Dronacharya and Duryodhan. 60 "This great orcher Bhagdattra fighting with ill-natured Ghatokach is fallen in great trouble. The rakshas is very buze of body and the King is much enraged, surely these two warriors



वर्तते ॥ ६५ ॥ राक्षसश्च महाहायः सचराज्जाति कोपनः । एनी समेतौ समरे कालमृत्यु  
समाधुमौ ॥ ६५ ॥ द्यूतेचैव ह्येतां पांडवानां महाम्वनः । इस्तिनश्चैव सुमहान् भीत  
स्य रुदितस्त्वनिः ॥ ६६ ॥ तत्र गच्छाममद्रंघो राजानं परिरक्षिषुम् । अक्षयमागः समरे  
क्षिप्तं प्रणान् विमोहयति ॥ ६७ ॥ तेत्वारण्यं महावीर्याः किंचिरेण प्रथमहे । महान् हि  
वर्तते रौद्रः संग्रामो लोमहर्षणः ॥ ६८ ॥ भक्तश्चकुलपुत्रश्च शूराश्च प्रतापवतिः । युक्तं  
तस्य परित्राणं कर्तुमस्माभि रज्युत ॥ ६९ ॥ भीष्मस्य तद्वचः श्रुत्वा सर्वे एव महारथाः ।  
द्रोणभीष्मौ पुरस्कृत्यभगदत्तप्रीप्सया ॥ ७० ॥ उत्तमं जव मास्थाय प्रययुर्व्रजसोऽम  
चत् । तान्प्रयातान् समालोक्य युधिष्ठिर पुरोगमाः ॥ ७१ ॥ पंचालाः पांडवैः सार्धं पृष्ठ  
तोवु ययुः परान् । तान्यनीकान् यथा लोक्य राक्षसेन्द्रः प्रतापवान् ॥ ७२ ॥ ननादसुम

के समान दोनों युद्ध में जुटे हुए हैं और पांडवों के प्रसन्नता के बड़े शब्द सुने  
जाते हैं, और उसभयभीत हाथों के व्याकुलता के भी बहुतसे शब्द सुने जाते हैं आप  
लोगों की भलाई के लिये हम राजा की रक्षा के लिये वहाँ पर चले, नहीं तो युद्ध  
में भरलितहोकर वह शीघ्रही माणोंको त्यागेगा हे बड़े पराक्रमियो इस हेतुसे शीघ्रता  
करो विलम्ब मतिकरो, यह रोमहर्षण करनेवाला महारुद्र रूप युद्ध वर्तमान है यह  
सेनापति भगदत्त भक्तकुल पुत्रहोकर बड़ागुरू है हे विजयीलोगो हमलोगों को उसकी  
रक्षाकरनी योग्य है ॥ ६६ ॥ भीष्मजीके इसवचनको सुनकर सब राजा लोग द्रोणाचार्य  
को आगे करके भगदत्त पर भीति करके बड़ी तत्रिणासे उसके समीपगये उन जाते  
हुए शत्रुओं को देखकर पांडवों समेत पांचाल देगी अपने आगे राजा युधिष्ठिर  
को करके पीछेकी ओरसे चले, फिर राक्षसोंका राजा प्रतापी यदोत्कच उन सेना  
ओं को देखकर आकाशको शब्दायमान करता हुआ बड़े शब्दसे गर्जा, उसके  
शब्दको सुनकर और लड़ते हुए हाथियों को देखकर भीष्मजी द्रोणाचार्य से  
बोले, कि मुझको इस महासाहसी यदोत्कच के साथ में युद्ध करना अच्छा नहीं

are engaged in mortal combat and it is therefore that we hear the  
cheerful cries of the Pandavas at the terrified noise of that elephant.  
Let us go to the help of the king, for in so doing lies our welfare.  
Unprotected in battle the king will soon lose his life. Hasten thither,  
warriors! The fight is very thick and dreadful. Bhagadatta the  
commander of our armies is a very brave man of a noble family. It is  
our duty to protect him 66. At these words of Bhishma all the  
princes led by Dronacharya, hastened to the battle field out of com-  
passion for Bhagadatta, and seeing them advance the Pandavas with  
the Panchalas led by Prince Yudhishtir followed in their wake,  
Brave Ghatotkash the prince of rakshases, filled the firmament with  
his roars at the sight of those warriors. On hearing his war cry and  
at the sight of those fighting elephants, Bhishma said to Dronacharya

हानाद् विस्फोटमश्ने रिव । तस्य ॥ निनद ध्रुत्वा हृष्टवानागांश्च सुध्यत ॥ ७३ ॥ भी  
ष्म शातनघो भूयो भागद्वाज ममाश्रित । गरीच तेमे सप्रानो हैर्दिवेन दुरात्मता ॥ ७४ ॥  
यत्तवीर्य समाधिष्ट सप्तहायस्य सास्रतम् । नैदशक्यो युधाजेतु मपि वज्रभूतास्वप  
॥ ७५ ॥ लघ्व लक्ष प्रहारीच घषच ध्रान्त दाहना । पचाले पाडवेयैश्च दिवस क्षन  
विजिता ॥ ७६ ॥ तत्रमेरोचते युद्ध पाडवैर्विजित काशिमि । धुष्यतामवहारोद्य श्वोपो  
त्स्याम परे सह ॥ ७७ ॥ पितामह चच. ध्रवा तथा चक्रु स्मकौरवाः । उपायेभ्य  
यानते घटोत्कच गयार्दिता ॥ ७८ ॥ कौरवेषु निवृत्तेषु पाडवाजित काशिन । सिंह  
नाद नभृश चक्रु शस्त्रान् दध्मश्च भारत ॥ ७९ ॥ पच तद् भवयुद्ध दिवस मत्तपम् ।  
पाडवानां कुरुणाच परसहस्यघटोत्कचम् ॥ ८० ॥ कौरवास्तुततो राजन् प्रययु शिबिर  
स्थवम् । प्रौढमाना निशाफाले पाडवेय पराजिता ॥ ८१ ॥ शरविक्षत गात्रास्तु पाड

विदित होता है क्योंकि वह इस समय बल पराक्रम से भरा हुआ महामद वाला है,  
यह इन्द्रमे भी विजय करने के योग्य नहीं है, और सत्तमेदी होकर महार करने  
वाला है और हम यलकी सवारी वाले है, पांचाळ और पांडवों से सब दिन घायन  
हुए इसी हेतु से विजय से शोभा पानेवाले पांडवों के साथ युद्ध करना अच्छा  
नहीं ज्ञात होता है, अब विभ्राम करो प्रातःकाल शत्रुओं से लड़ेंगे । ७४ । अत्यन्त  
प्रसन्न चित्त शरवीरों ने इस पितामह के वचनको सुनकर बैसाही किया, फिर वह  
घटोत्कच के भयसे महापीडित युक्ति के द्वारा युद्ध से हटगये कौरवों के हटजाने पर  
विजय से शोभापाने वाले पांडवों ने, शंख और घंशियों के शब्दों समेत सिंहनाद  
रुपे दे राजा इस रीति से कौरव और पांडवोंका यह युद्ध घटोत्कच को आगे कर  
के दिन भर हुआ तदनन्तर शत्रुही कौरव लोग पांडवों से पराजित-याणों से  
घायन लज्जा में भरे रात्रि के समय अपने २ डेरों को गये हे महाराज धृतराष्ट्र  
फिर महारथी पांडवभी युद्ध में प्रसन्न चित्त भीमसेन और घटोत्कच को आगे कर

We donot like to fight against Ghatotkach for he is at this time full  
of prowess and strength and unconquerable by Indra himself. He  
has the marks precisely, while we are mounted on earthly cars.  
Being wounded at the hands of the Panchals and the Pandavas  
thoroughout the day it is not well to fight against the conquering  
Pandavas. Let us retire to rest now. We shall fight the enemies in  
the morning" 74. The warriors with a cheerful mind acted upon the  
advice of the grandfather and being much afraid of fighting against  
Ghatotkach, they retired from battle. At the retreat of the Kauravas  
the conquering Pandavas mixed their roars with blasts from the  
conchs and trumpets. Thus the Kauravas and the Pandavas fought  
the whole day under the leadership of Ghatotkach, and the Kauravas  
were quashed and wounded by arrows slunk away in shame to their

पुत्रामहारथाः । युद्धे सुमनसो भूत्वा जग्मु स्व शिविरं प्रति ॥ ८२ ॥ पुरस्कृत्य महा  
राज भीमसेन घटोत्कचौ । पूजयतस्तदान्योन्यं मुदापरमया युताः ॥ ८३ ॥ नन्दतो  
विविधानादांस्त्वंस्वनादीर्भीषिताम् । सिंहनादांश्च कुर्वतो विभिन्नान् शब्दानि स्वतः  
॥ ८४ ॥ विनन्दतो महात्मानः कम्पयन्तश्च मेदिनीम् । घट्टयन्तश्च मर्माणि तच्चपुत्रस्य  
मारिण ॥ ८५ ॥ प्रयाताः शिविरापैव निशाकाले परन्तप । दुर्योधनस्तु नृपतिर्दानो  
भ्रातृवधेनच ॥ ८६ ॥ महर्त्तं चिन्तयामास वाष्पशोक समाकुलः । ततः कृत्वा विधि  
सर्वं शिविरस्य यथाविधि । प्रदध्या शोकसन्तप्तो भ्रातृव्यसनकर्षितः ॥ ८७ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि चतुर्थं दिवमावहारे  
चतुःषष्टितमोऽध्यायः ३४ ॥

के अपने डेरों में गये, और वहाँ जाकर वह शत्रुमंतापी महात्मा वही प्रमन्नतासे  
युक्त प्रशंसा करते हुए तुरीय बाजे बजाते शोभा युक्त होकर नानामकार के शब्दों  
से गर्ने और सिंहनाद युक्त शंखों को बजाते गर्जनाओं से पृथ्वी को कंपायमान  
करते, और आपके पुत्रों के मर्मों को चलायमान करते हुए सायंकाल के समय  
डेरों में गये, फिर अश्रुपात युक्त चिन्ता और शोकसे व्याकुल भाई विरादरियों के  
मरणसे दुःखित राजा दुर्योधन एक मुहूर्त्त पर्यन्त चिन्ता में मग्न हुआ, तदनन्तर  
बुद्धि के अनुसार डेरों के सब भवन्धकों काके शोकसे खिन्न भाइयों के शब्दसे  
निर्व्वल होकर बड़े विचार में मग्न हुआ ॥ ८७ ॥

camp for the night. The Pandaras, preceded by Bhimsen and  
Ghatotkach went cheerfully to their tents and there they blew their  
horns and roared in glee, giving praises to their warriors. With the  
sounds of musical instruments and roars they shook the hearts of  
your sons as they entered their tents for the night. Prince Dur-  
yodhan, careworn, shedding tears for the loss of his kinsmen,  
remained plunged in grief for some time, and having made arrange-  
ments about the comforts of his army he was again plunged in grief  
for the death of his brothers." 83.



धृतराष्ट्र उवाच । अयंमे सुमहज्जातं विस्मयश्चैवसञ्जय । ध्रुवा पांडुकुमाराणां  
 कर्मदेवैः सुदुष्करम् ॥ १ ॥ पुत्राणाञ्च पराभावं । श्रुत्वा सञ्जय सर्वदाः । चिन्ता  
 मेमहती स्तम्भयिष्यति कथयिष्यति ॥ २ ॥ ध्रुव विदुरवाक्यानि घटयति हृदयमम ।  
 यथाहि दृश्यते सर्वं दैवयोगेनसञ्जय ॥ ३ ॥ यत्र भीष्म मुखान् सर्वान् शस्त्रैश्च  
 योयसत्तमान् । पांडवानामनीकेषु योधयति प्रहारिण ॥ ४ ॥ केनावध्यामहात्मानः  
 पांडुपुत्रमहाबलाः । केनदत्तवरास्नात किंवाज्ञानं विद्वति ॥ ५ ॥ येनक्षयनगच्छति  
 दिवितारागणादिव ॥ पुनःपुनर्नमृष्यन्निहतसैन्यपुण्ड्रवै ॥ ६ ॥ मध्येघददपतनिदै  
 घातरमदारणः ॥ यथाऽवध्या पांडुमुतायथावध्याश्वमेधुताः ॥ ७ ॥ एतन्मेसर्वं  
 मान्दक्षयाथातथ्येनसञ्जय ॥ नहिपारश्रपदयामिदुःखस्यास्यकथंचन ॥ ८ ॥ समद्र

अध्याय ॥ ६५ ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय देवताओंसे भी कठिनता से करने के योग्य पांडवों के  
 कर्मको सुनकर मुझको बड़ाभय और आश्चर्य उत्पन्न होता है हे संजय सब  
 प्रकार से अपने पुत्रोंकीही पराजयको सुनकर मुझको यही चिन्ता है कि परिणाम  
 कैसा होगा, निश्चय विदुरजीके वचन मेरेहृदय को जलाते हैं हे संजय दैवयोग से  
 उन्हीं का कहना सत्यहोता दिखाई देता है जहां कि पांडवों की सेना के वह दूर  
 धीरे उन युद्ध कर्त्ताओं से जिन में शस्त्रवेत्ता महामतापी भीष्म जी मुख्यहैं युद्ध  
 करतेहैं, उन महाबली महात्मा पांडवों ने कौनसी तपस्या की है वा किसमे कौनमा  
 वरदान पाया है अथवा वह किस ज्ञान को जानते हैं, जिस कारण से कि वा  
 नाशको नहीं पाते हैं हे संजय पांडवोंसे बारम्बार मारे हुए सेना के मनुष्यों को मैं  
 नहीं सह सकताहूं, दैवमुझ को ऐसा कठिन दंड देता है कि पांडव निर्विघ्न हैं और  
 मेरे पुन धायल हैं, हेसंजय इसका हेतुमुझसे मल समेत वर्णन करो मैं किसी दशमेंभी  
 इस दुःखका अन्त ऐसे नहीं देखताहूं जैसे कि भुजाओं से तिरता हुआ मनुष्य म-

### CHAPTER LSV

I am awed and amazed," said Dhrit ashtra to Sanjaya," to hear  
 the brave hard deeds of the Pandavas. Hearing the defeat of my sons  
 on all occasions, I am afraid of the result. Surely the words of Vidur  
 burn my breast. It appears that the words of Sanjaya are fated to  
 be realised. The Pandav warriors fight against those warriors who  
 have for their leader Bhishm the master of the use of weapons, and  
 of immense prowess. I donot know what penances the great Pandas  
 have performed, what boon they have received or what knowledge  
 they are master of that they donot die. I cannot bear the continuous  
 destruction of my armies by the Pandavas. Gods gives me a severe  
 punishment in as much as the Pandavas are safe and sound and my  
 sons are wounded. Tell me the reason of all this in detail, Sanjaya.  
 I donot see the end of my miseries like one swimming in the midst

स्वेवमहर्तो मुजांश्यां प्रतरन्नरः ॥ पुत्राणां न्यसनं न्यये ध्रुवं प्राप्त सुदाहणम् ॥ ९ ॥ घात  
 विपतिने सर्वं न पुत्रान् भीमो न सदायः ॥ न हि पश्यामि तं वीर्यो मे रक्षस्तु तान् रणे ॥ १० ॥  
 ध्रुव विनाशः सर्वप्राप्त पुत्राणां मम संजय । तस्मान्मेकारणं मृतं नास्ति चेव विशे  
 पतः ॥ ११ ॥ पृच्छतो वै यथा तत्त्वं सर्वं प्राप्यातु मर्हसि । दुर्योधनश्च यच्च हृद्यास्त्वा  
 न् विमुख न रणे ॥ १२ ॥ भीष्मद्रोणौ कृपाचार्यौ सौवल्ह्य जयद्रथः । द्रौणिर्वापि महे  
 चानो विकर्णो वा महाारतः ॥ १३ ॥ निद्रयोदापि कस्तेषां तदाह्वासीन् महात्मनाम् ।  
 विप्रदेव महाप्राज्ञ तमपुत्रेषु संजय ॥ १४ ॥ संजय उवाच ॥ दृष्टुं राजन् न वहितः श्रुत्वा  
 चैवावधारय । नैव मन्त्र कृतं किञ्चिन् नैव प्रायंतया विधाम् ॥ १५ ॥ न वै विभीषिकी  
 काञ्चि प्राजान् कुर्वति पांडवाः । युष्मन्ति ते यथा न्याय शक्तिमतव संयुगे ॥ १६ ॥ धर्मेण  
 सर्वं कार्याणि जीयिष्यतादीनि आरतं । आत्मने सदा पार्थाः प्रार्थयान्ति मे हृद्यशः ॥ १७ ॥

मुद्रका अन्तर्गत पाता है मैं निश्चय करके मानता हूँ कि मेरे पुत्रों को महाभयानक  
 दुःख वर्तमान हुआ मैं निश्चयपूर्वक जानता हूँ कि भीमसेन मेरे सब पुत्रों को मारेगा,  
 मैं ऐमावीर किसीको नहीं देखता हूँ जो युद्ध में मेरे पुत्रों को बचावे । १० । हे संजय  
 युद्ध में मेरे पुत्रों का नाश निश्चय होता दीक्षता है हे मृत इम हेतुने तुम सब हेतु  
 पूर्वक हृत्तान्त मुझ से वर्णन करो और दुर्योधन ने युद्ध में अपने युद्धकर्त्ताओं  
 को विमुख देखकर जो जो किया अथवा भीष्म द्रोणाचार्य कृपाचार्य शकुनि  
 जयद्रथ महायनुषारी अश्वत्थामा और महापराक्रमी विकर्ण ने जो २ किया, उस  
 को और हे महाज्ञानी मेरे पुत्रों के उदासीन होने पर इन महात्माओं ने जो निश्चय  
 किया उन सब बातों को ध्योरे समेन यथार्थ मुझ से वर्णन करो । १४ । संजय  
 बोला कि हे राजा सावधान होकर सुनो और सुनकर निश्वास करो कि पाण्डवों  
 का न तो कुछ अनुष्ठान है न किसी प्रकार की माया है, न वह किसी प्रकार की भया-  
 नकता करते हैं वह केवल युद्ध में समर्थ होकर न्याय के अनुसार लड़ते हैं, हे भरत  
 वंशी बड़े यशको चाहने वाले पाण्डव जीवन आदिमत्र कर्मों को सर्व धर्मपुक्त हो-

of the ocean with the help of his arms alone. -Surely I believe that  
 my sons are in great trouble. I know for certain that Bhishma will  
 destroy all my sons. I see no warrior that can save the life of my sons.  
 10. I am sure of the destruction of my sons in battle. Tell me the  
 reason of all this, Sut! Tell me all that Duryodhan did on finding his  
 warriors turn back. Tell me of the deeds done by Bhishma, Drona-  
 charya, Kripacharya, Shakuni, Jayadrath the great archer, Ashwatha-  
 ma and Vitarn of immense prowess. Tell me all that these warriors  
 resolved to do when my sons were in distress" 14 "Hear atten-  
 tively and believe me king I said Sanjaya "that the Pandavas have  
 not their recourse to aphorism nor to deception or cruelty; but they are  
 endowed with strength and fight according to law. The Pandavas

नते युद्धा निघर्त्तते घमोपेता महाबला । श्रियापरमया युक्ता यतो घमस्ततो जयः ॥ १८ ॥ तेनावधारणे पार्था जययुक्ताश्च पार्थिव । तद्युक्ता दुरात्मान पापेभ्यमिरता सदा ॥ १९ ॥ निष्ठुगाहीन कर्माणस्तेनहीयन्ति सयुगे । सबहूनि नृशंसानि पुत्रैस्तव जगेश्वर ॥ २० ॥ निहृताभीह पांडूनां नीचै रिव यथा नरैः । सर्वच्च तदनाहत्य पुत्राणांतव किलिबपम् ॥ २१ ॥ सापह्नवा सदैवासन् पांडवा पांडुपूर्वज । नचैतान् बहु मन्यते पुत्रास्तव विशागते ॥ २२ ॥ तस्य पापस्य सतत क्रियमाणस्य कर्मण । सांप्रतं सुमहदघोर फल प्राप्त जगेश्वर ॥ २३ ॥ सत्त्व मुक्षु महाराज सपुत्र ससुहृज्जन । नायुभ्यसि यद्राजन् पार्यमाणो सुहृज्जनैः ॥ २४ ॥ विदुरेणाथ भीष्मेण द्रोणेनच महात्मना । तवामयाचाप्यसहस्रायमाणो नमुष्यसे ॥ २५ ॥ वाक्यं हितञ्च पथ्यथ मेर्यं पथ्य मिवौ

कर प्रारंभ करते हैं वह धर्मवान् महाबली बड़ी शोभा पूर्णक युद्ध से मुख नहीं मोड़ते । जियरधर्म है उधरही विजय होती है, इस हेतुसे पाण्डव लोग युद्ध में निर्भिन्न होकर विजयको पाते हैं और आपके निर्बुद्धी पुत्र सदैव पार्थों में मीतिकरनेवाले, कठोरवक्ता और दुष्कर्म्म हैं इसी हेतुसे युद्ध में पराजयको पाते हैं हे राजन् आपके पुत्रों ने पाण्डवोंके ऊपर हिंसायुक्त ऐसे अनेक दुष्कर्म किये जैसे कि नीच मनुष्य करते हैं हे पाण्डुके बड़ेभ्राता धृतराष्ट्र पाण्डव आपके पुत्रों के उनसब आप अपराधोंको क्षमा करके वैसेही निश्ठान् बने रहे आपके पुत्र इनको अच्छे प्रकारसे नहीं मानते हैं । २५। उसवारंवार किये हुये पाप कर्मों का बड़ाघोर फल किंपाक वृत्तफलके समान वर्त्तमान हुआ है, हे महाराज आपने अपने सुहृदों के निषेध करने से भी नहीं माना इस हेतुसे आप अपनपुत्र सहायकों समेत उसफल को भांगेगे, विदुरजी भीष्मजी द्रोणाचार्यजी और अन्य श्रेष्ठ लोगों समेत भेजे भी वारंवार आपको समझाया परंतु आपनमाने नहीं अस्सावधान हुए, और परिणाममें आनन्द देखेवाले वचनोंकेभी ऐसे नहीं सुनते हो जैसे कि निर्बुद्धी मनुष्य पथ्य और गुणदायी औषधी को नहीं

desirous of fame begin all their work in life with honesty. These brave warriors do not turn back from fighting in a just cause and victory is sure to fall on the side of justice. For these reasons the Pandavas gain victory without any mishap, while your sons, foolish lovers of sin, are cruel in words and deeds and suffer defeat. Your sons were cruel and harsh to the Pandavas like low born men but the Pandavas forgive all the faults of your sons and remained free from deep sorrow, yet they are not respected by your sons. The dire fruit of all these sinful deeds, committed again and again, is about to become ripe. You did not heed king, the advice of your friends, and therefore you will reap the fruit of your so doing together with your sons and friends. Vidur, Bhishm, Dronacharya and other good men, as well as myself remonstrated with you again and again, but you neither heeded to us before nor you would wake even now

पथम् । पुत्राणां मतमाज्ञाय जितान् सन्यसि पांडवान् ॥ २६ ॥ द्रुपमुद्योगयातव्यं यस्मिं  
 त्व परिपृच्छसि । कारण भरतश्रेष्ठ पांडवानां जय प्रति ॥ २७ ॥ तत्तेहं कथं विप्रमि  
 यथाश्रुतं मरिदम् । दुर्योधनेन संपृष्ट एतमर्थं पितामहः ॥ २८ ॥ दृष्ट्वा भ्रातृनुराणे संधानं  
 निर्जितं स्तु मंहारथान् । शोकसंमूढं हृदयो निशाकाले स्म कौरव ॥ २९ ॥ पितामहं  
 महाप्राज्ञं विनये नोपगम्य ह । यद्वैश्वी सुतस्तेसौ तेऽस्मि द्रुप जनेश्वर ॥ ३० ॥ दुर्योधन  
 उवाच ॥ द्रोणश्च शल्यश्च कृपो द्रौणिस्तथैव च । कृतवर्मा च हार्दिक्यः काव्योजश्च  
 सुदक्षिणः ॥ ३१ ॥ भूरिश्रवा विकर्णश्च भगदत्तश्च वीर्यवान् । महारथा समाव्यताः  
 कुलपुत्रास्तनूयजः ॥ ३२ ॥ अयानामपि लोकानां पर्याप्तमिति मे मतिः । पांडवानां सम  
 स्ताश्च नातिघ्नन् पराक्रमे ॥ ३३ ॥ तत्र मे सशयो जातस्तन्ममाचक्ष्व पृच्छत । यं समा  
 धित्व कौन्तेया जयं त्यज्मान् क्षणे क्षणे ॥ ३४ ॥ भीष्म उवाच ॥ द्रुप राजन् वचोमध

पाता तुम अपने पुत्रों के मतमें नियत होकर पाण्डवोंको विजयी देखते हो । २६ ।  
 और हे भरतर्षभ जो पाण्डवोंकी विजयका हेतु तुम पृच्छते हो, उसकोभी मैं कहता हूँ  
 हे राजन् जैसा कि मैंने सुना है और उसी को दुर्योधनने भीष्मजी से पूछा है,  
 अर्थात् युद्धमें पराजित सब महारथी माइयोंको देखकर शोक से व्याकुल मन आ-  
 पका पुत्र दुर्योधन रात्रि के समय बड़ी नम्रता से महाज्ञानी भीष्म पितामह के पास  
 जाकर जो वचन बोला वह सब मैं तुमसे कहता हूँ । ३० । तात्पर्य यह है कि दुर्यो-  
 धन ने कहा कि द्रोणाचार्य और तुम व शल्य व कृपाचार्य अश्वत्थामा व कृतवर्मा  
 व हार्दिक्य व कम्बोज सुदक्षिण व भूरिश्रवा व विकर्ण व पराक्रमी भगदत्त यह सब  
 महारथी और सब कौरव लोग शरीर के त्यागने वाले, तीनों लोकों में सामर्थ्यवान्  
 मसिद्ध हैं मेरी बुद्धि से यह सब लोग पाण्डवों के पराक्रम में नियत नहीं होते हैं यह  
 मुझको बड़ा सन्देह है कि ऐसं हमारे महायुद्धोंके होनेपरभी पाण्डव लोग हमको पद

You do not give ear to advice which may bring you good in the  
 end. Your case is like that of a foolish patient who takes neither  
 wholesome food nor good medicine. Acting upon the opinion of your  
 sons you see the Pandavas again and again victorious 26. "I shall tell  
 you the cause of the Pandavas' victory if you are inclined to hear it. I  
 quote the words which Bhishma said in reply to Duryodhan's question  
 to the same effect. Finding all his brothers defeated in battle, Dur-  
 yodhan, uneasy of mind and much humiliated, went to wise Bhi-  
 shma the grandfather. I shall tell you the import of what he said 30.  
 "You and Dronacharya, Shalya, Kripacharya, Ashwathama, Krit-  
 varma, Hardikya, Camboj, Sudakshin, Bhurishrava, Vikain and  
 valliant Bhagdatia, all these warriors and Kauravas," said Duryodhan,  
 are ready to die for me. They are famous throughout the three worlds  
 for their great strength and yet they do not equal in prowess to the  
 Pandavas I have a grave doubt in my mind, for having such celebrated

यथा वक्ष्यामि कौरव । बहुशस्त्रमयोऽस्मि न च मे तत्त्वयाकृतम् ॥ ३५ ॥ क्रियतां पांडवैः साधे शमो भरत सत्तम । एतद्वत्तमं महं मत्प्रे पृथिव्याल्लेख्यं विभो ॥ ३६ ॥ भुक्त्वा मां पृथिवी गजन् भ्रातृ मे सहित सुखी । दुर्द्ध्वस्तापयन् सर्वान् नदयश्चापि बांधवान् ॥ ३७ ॥ न च मे कोशतस्तात श्रुतवानसि वै पुत्र । तदिदं समनुप्राप्तं यत्पादं न च मन्यसे ॥ ३८ ॥ पश्च हेतुवधप्रे ते पापविलकृतकर्मणाम् । तं शूश्रूष्वमीहोवाहो तम कीर्तयत प्रभो ॥ ३९ ॥ न क्षित लोकेऽपि तद्भूत भवितानो भविष्यति । योजयेत्पांडवान् सर्वान् पालितान्छास्त्रं धनवान् ॥ ४० ॥ यत्तु मे कथितं तान् मुनिभिर्भावितात्मभिः । पुराणगी त धर्मज्ञ वदन्तुस्व यथा तथम् ॥ ४१ ॥ पुराकिल सुरा सर्वे ऋषयश्च समागताः । पितामहं मुपसेदु पर्वते गन्धमादने ॥ ४२ ॥ तेषामध्ये समासीनः प्रजापतिरपश्यत् । विमानं प्रज्वलद्भासास्थितं प्रधरेर्मधरे ॥ ४३ ॥ ध्यानेना वेद्यतद्ब्रह्मावृत्त्या

पदपर विजय करते है । ३४ । भीष्मजी बोले हे कौरवों के राजा मेरे कहनेको सुन भैने तुम्हको बहुतभार समझाया परन्तु तैने न माना भरतवंशिमीमे श्रेष्ठ पाण्डवों से मुमसन्धि करलो हे दुर्व्याधिन इसी में तेरी और सबसंभारकी कुशल है, होतात भाइयों समेत सयमित्रों को प्रसन्न करके अपने बांधवों समेत आनन्दपूर्वक इस पृथ्वी को भोगो और पहलेभी हमने बारंबार कहा उसको तुमने नहीं सुना सुनो जो कोई पांडवोंका अपमान करता है उसका यहीफल वर्त्तमान होना है वही अब तुमकोभी वर्त्तमान है, हे समर्थ महाराजउन सुगमकर्मों पांडवों के अवश्य होनेका जो हेतु है उसको मुझमे सुन, लोकोमें ऐसाकोई बलीनही है नकभीकोईहोगा जो शार्ङ्गधनुष धारी के शरणमें रक्षित सबपांडवोंको विजयकरे । ४० । हेधर्मज्ञ जो शुद्धअन्त करण वाले मुनियों ने पुराणों में कहा है उसको तुम ठीकठीक पूर्णता से सुनो, निश्चय है कि प्राचीन समयमे सब देवता और ऋषियों ने इकट्ठेहोकर गन्धमादन पर्वत पर पितामहजी की उपासना की फिर उन सबोंमें बैठेहुए प्रभापति ब्रह्माजीने तेज

men for my allies, the Pandavas gain victory over us at each step" 34 "Hear my words, Prince of the Kauravas," said Bhishma in reply, "I have often remonstrated with you, but to no purpose. Make peace with the Pandavas, best of the descendants of Bharat, for the safety of you and of all the world lies in this. Make your brothers, friends and kinsmen happy, and rule over the earth. I have often said this to you in vain. Whoever will make war on the Pandavas will get the same result as you are about to do. Hear the reason why the Pandavas are invulnerable. There is no warrior in the world, nor there will ever be, who can conquer the Pandavas as long as they are under the protection of the wielder of Shrang Low. 40 Hear in detail what the pure minded munis of old have said. In the days of yore, all the gods and rishis together were worshipping Brahma who, seated in the midst, saw a glorious celestial in the firmament above.



च नियतोज्जिम् । नमश्चकार दृष्टत्मा पुरुषं परमेश्वरम् ॥ ४३ ॥ ऋषयश्च य  
 देवाश्च दृष्ट्वाग्रहाण मुनिव्रतम् । स्थिताः प्राञ्जलयः सर्वे पश्यतो महद्दभुतम्  
 ॥ ४५ ॥ यथावच्छतमभ्यन्यं ब्रह्माग्रहविदांवरः । जगद्जगतः सृष्टापरपरमधर्म  
 यित् ॥ ४६ ॥ विश्वावसुर्विश्वमूर्तिर्विश्वेशो विश्वक्सेनोविश्वकर्मावशीच । विश्वे  
 श्वरो वासुदेवो सितस्माद्योगात्मानं देवतं त्वामुपैसि ॥ ४७ ॥ जयविश्वमहादेव जय  
 लोकहितेन । जययोगीश्वर विभो जय योगपरावर ॥ ४८ ॥ पद्मगर्भं विशालाक्ष  
 जयलोकेश्वरेश्वर । भूतभन्व भवप्रापजयसौभ्यात्मजात्मज ॥ ४९ ॥ असंख्येय  
 गुणाधार जय सर्वपरायण । नारायणमुदुप्यारजय शार्ङ्गधनुर्वर ॥ ५० ॥ जयसर्व

से प्रकाशित अत्यन्त सुन्दर आकाशमें वर्तमान उत्तमविमान को देखा, ब्रह्माजीने  
 ध्यानकेद्वारा जानकर हाथ जोड़के उस घटघटवासी को नमस्कार किया, फिरसब  
 देवता और ऋषिलोगभी वहाँसे उठे हुए ब्रह्माजीको और उसप्रपूर्व ब्रह्मरूपको  
 देखकर हाथजोड़कर नियतहुए, फिर ब्रह्मज्ञानियोंमें श्रेष्ठ धर्मज्ञ संसारकेस्वामी ब्रह्मा  
 जीने बुद्धि के अनुसार उसका पूजन करके इस परम उत्तम और पवित्र स्तोत्रको  
 पढ़ा ॥ स्तोत्र । विश्वावसुर्विश्व मूर्ति विश्वेशो विश्वक्सेनो विश्वकर्मा वशीच ॥  
 विश्वेश्वरो वासुदेवो सितस्माद्योगात्मानं देवतं त्वामुपैसि ॥ ४७ ॥ जयविश्वमहादेव  
 जय लोकहितेन ॥ जय योगीश्वर विभो जय योगपरावर ॥ ४८ ॥ पद्म नाम  
 विशालाक्ष जय लोकेश्वरेश्वर ॥ भूतभन्वभवन्नाथजयसौभ्यात्मजात्मज ॥ ४९ ॥  
 असंख्येयगुणाधार जय सर्वपरायण । जय कृष्णमुदुप्यारजय शार्ङ्गधनुर्वर ॥ ५० ॥

Brahma knew him by meditation and with joined palms bowed down to  
 the Dweller-within-all. The gods and the rishis stood up and casting  
 their eyes on Brahma as well as on the wonderful being joined their  
 palms in token of respect. Brahma the best of those who know Brahm  
 and dharm, worshipped Him according to his wisdom and recited  
 the following hymn of praises:—Protector of the Universe, having  
 the Universe for thy form, Lord of the Universe, Refuge of the world  
 Maker of the world, controller and Supreme Lord of the Universe,  
 Vasudev, I seek refuge in thee the soul of Yoya and the highest  
 Divinity. 47. Victory to thee, Supreme God of the universe. Victo-  
 ry to thee, benefactor of the world. Victory to thee Lord of yog  
 and All-powerful. Victory to thee, thou before and after the yog. 48.  
 Thee from whose navel the lotus grew, possessor of large eyes, Victory  
 to thee Lord of lords. Lord of the Past, Present and Future, Victory  
 to thee embodiment of gentleness, son of sons 49. Victory to thee, seat  
 of untold attributes and refuge of all. Victory to thee, Narayan,  
 unknowable and wielder of Sharang bow. Victory to thee seat of  
 all attributes of the form of universe and ever healthy. Victory to

गुणोपेत विश्वमूर्ते निगमय । विश्वेश्वरमहाबाहो जयलोकार्थतत्पर ॥ ५१ ॥ महो  
रगवराहाय हरिकेश विभोजय । हरि वास दिशामीश विश्ववासा मिताव्यय ५२ ॥  
व्यक्ताव्यक्तामितरधान नियतेन्द्रियसत्क्रिय । असंख्ये यात्मभावज्ञजयगभीरकामद  
॥ ५३ ॥ अनन्त विदितब्रह्मन् नित्यभूत विभावन । कृतकार्यं कृतप्रज्ञ धर्मज्ञविजया  
वह ॥ ५४ ॥ गुह्यात्मन् सर्वं योगात्मन् स्फुटं संभूतसंभव । भूताद्यलोक तत्त्वज्ञ  
जयभूत विभावन ॥ ५५ ॥ आत्मयोने महाभाग कल्पसंक्षेपतत्परम् । उद्भायनमनो  
भावजयब्रह्मजनप्रिय ॥ ५६ ॥ निसर्गसर्ग निरतकामेशपरमेश्वर । शमृतोद्भवसद्भाव  
मुक्तात्मन् विजयप्रद ॥ ५७ ॥ प्रजापति पतेदेव पद्मनाभमहाबल । आत्मभूतमहा  
भूत सत्त्वात्मन् जयसर्वदा ॥ ५८ ॥ पादौतथरादेवी दिशोवाहू दिग्दिशिरः । मूर्तिस्तेह

जयसर्वं गुणोपेत विश्व मूर्ते निरामत ॥ विश्वेश्वर महाबाहो जयलोकार्थ तत्पर ॥ ५१ ॥  
महोरगवराहाय हरिकेश विभोजय ॥ हरि वास दिशामीश विश्ववासा मिताव्यय  
॥ ५२ ॥ व्यक्ता व्यक्त भित्त्यान् नियतेन्द्रियसत्क्रिय ॥ असंख्ये यात्म भावज्ञ जयगं  
भीरकामद ॥ ५३ ॥ अनन्त विदित ब्रह्मन् नित्यं भूत विभावन । कृत कार्यं कृतप्रज्ञ  
धर्मज्ञ विजया वह ॥ ५४ ॥ गुह्यात्मन्सर्वं योगात्मन्स्फुटं संभूत संभव । भूताद्य तत्त्वलो  
केश जयै भूत विभावन । ५५ । आत्मयोने महाभाग कल्प संक्षेप तत्परम् ॥ उद्भा  
यनमनो भाव जय ब्रह्म जन प्रिय ॥ ५६ ॥ निसर्ग सर्ग निरत कामेशपरमेश्वर ॥  
शमृतोद्भवसद्भाव मुक्तात्मन् विजयप्रद ॥ ५७ ॥ प्रजापतिपतेदेव पद्मनाभ महाबल ॥  
आत्मभूत महाभूत कर्मात्मन् जय सर्वदा । ५८ । पादौतथरादेवी दिशोवाहू  
दिग्दिशिरः । मूर्ति स्तेह सुराकायश्चन्द्रा दिक्षौ च चातुर्षी ॥ ५९ ॥ बलं तपश्च सत्यं

thee, Lord of the worlds, of mighty arms, benefactor of the world  
51. Victory to thee, great Urag, Boar, first cause, of tawny looks,  
Almighty, of yellow robes Lord of the directions, Omnipresent,  
Infinite and free from decay. 52. Manifest and Unmanifest, Immeas-  
urable space, controller of senses and achiever of what is good, im-  
measurable, self-knowing, Deep and giver of boons, victory to thee  
53. Endless, Brahm, Eternal creator, Victorious, wise, just, giver  
of victory, mysterious soul of yog, the great cause of all beings,  
Knowledge of self, Lord of the world and creator of all beings, Victory  
to thee. 55. Self create, highly blessed, Destroyer of all, inspirer  
of thoughts and dear to those who know Brahm, Victory to thee.  
Victory to thee whose works are creation and destruction, who has all  
wishes under control, the Supreme Lord, the fountain of Amrit, All exis-  
tent, Agni of the last conflagration and giver of victory. 57. Divine  
lord of all created beings whose navel is the seat of the lotus, Almighty,  
Self create, the great Element and the soul of all rites, victory to thee  
that givest all 58. The Earth represents thy feet, the directions  
thy arms and the heavens thy head. I am thy form the gods are

सुराः कायश्चेद्रादित्यौ च चक्षुषी ॥ ५९ ॥ यत्तत्पञ्च सत्यं च कर्मधर्मात्मजतं च ।  
तेजोऽग्निः पवनश्चासः आपस्ते श्वेदसंभवाः ॥ ६० ॥ अश्विनौ श्रवणौ नित्यौ देवी जिह्वा  
सरस्वती । वेदाः संस्कारनिष्ठाहित्वदीयं जगदाश्रितम् ॥ ६१ ॥ न संख्यानं परीमाणं  
न तेजो न पराक्रमम् । न बलं योगयोगीशानाजीमस्ते न सम्मयम् ॥ ६२ ॥ त्वद्भक्ति-  
निरता देव, नियमैश्चां समाश्रिताः । अर्चयामाः सदा विष्णो परमेशं महेश्वरम् ॥ ६३ ॥ ऋषयो देवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः । पिशाचा मानुषाश्चैव  
मृगपक्षिसरीसृपाः ॥ ६४ ॥ एवमादि मया सृष्टं पृथिव्यां त्वत्प्रसादजम् । पशूनां विशालाक्ष कृष्ण दुःखप्रणाशन ॥ ६५ ॥ त्वं गतिः सर्वभूतानां त्वं नेता त्वं  
जगद्गुरुः । त्वत्प्रसादेन देवेश सुखिनो विबुधाः सदा ॥ ६६ ॥ पृथिवी निर्भया  
देव त्वत्प्रसादात् सदाभवत् । तस्माद्भव विशालाक्ष यदुर्वंशविचर्जनः ॥ ६७ ॥  
धर्मसंस्थापनार्थाय दैत्यानां च यथायच । जगतो धारणार्थाय विश्वाप्यं कुरु मेधिमे ।

च धर्मं कर्मात्मनं तव ॥ तेजोऽग्निः पवनश्चासः आपस्ते श्वेद संभवाः । ६० । अश्वि-  
नौ श्रवणौ नित्यौ देवी जिह्वासरस्वती ॥ वेदाः संस्कार निष्ठाहि त्वदीयं जगद श्रितं  
॥ ६१ ॥ न संख्यानं परीमाणं न तेजो न पराक्रमं । न बलं योगयोगीशानानीमस्ते न संभवं ॥ ६२ ॥  
त्वद्भक्तिनिरता देवानियमैश्चां समाश्रिताः ॥ अर्चयामासदा विष्णो परमेशं महेश्वरं । ६३ ॥  
ऋषयो देवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः ॥ पिशाचामानुषाश्चैव मृगपक्षिसरीसृपाः । ६४ ॥  
एवमादि मया सृष्टं पृथिव्यां त्वत्प्रसादजं ॥ पशूनां विशालाक्ष कृष्ण दुःखप्रणाशनं । ६५ ॥  
त्वंगतिः सर्वभूतानां त्वं नेता त्वं जगन्मुखं ॥ त्वत्प्रसादेन देवेश सुखिनो विबुधाः सदा । ६६ ॥  
पृथिवी निर्भया देव त्वत्प्रसादात् सदाभवत् ॥ तस्माद्भव विशालाक्ष यदुर्वंशविचर्जनः । ६७ ॥  
धर्मसंस्थापनार्थाय दैत्यानां च यथायच ॥ जगतो धारणार्थाय विश्वाप्यं कुरु मेधिमे । ६८ ॥

thy limbs, and the sun and the moon are thy eyes. Perances and truth, torn of morals and religious rites, constitute thy strength. Fire is thy energy, the wind is thy breath and the waters are thy sweat. 60. The twin Aswins are thy ears and Saraswati is thy tongue. The Vedas are thy knowledge and the universe rests upon thee. Lord of yog and yogis, we donot know thy extent, measure, energy, prowess, might and origin. O God, Vishnu, filled with thy devotion and depending on thee with vows and observances we ever worship thee as the highest Lord and the God of gods. The rishis, the gods, the gandharvas, the yakshases, the rakshes the pannags, the p'shachies, men, beasts, birds and reptiles were created by me by Thy grace. From thy navel springs the lotus, and thy eyes are large, O Krishna, dispeller of woes 65. Refuge and guide of all creatures thou hast, the Universe for thy mouth. Through thy grace, O lord of the gods, the gods are ever happy. Through thy grace the Earth remains free from danger; be born among the Yadus, large eyed one, Grant my request for the sake of consolidating dharma, for the destruction of

॥ ६८ ॥ यत्तत् परमं गुह्यं त्वत्प्रसादादिदं विभो । वासुदेव तदेतत्ते मयोद्गीतं  
 यथातथम् ॥ ६९ ॥ सृष्ट्वा सङ्कर्षणं देवं रक्षयमात्मानमात्मना । कृष्णं त्वंमात्मनो  
 साक्षी प्रद्युम्नं चात्मसम्भवम् ॥ ७० ॥ प्रद्युम्नादविकर्तृत्वं यं विदुर्धिष्णुमन्ययम् ।  
 अनिरुद्धोऽमृजन्मावै ब्रह्माणं लोकधारिणम् ॥ ७१ ॥ वासुदेवमयः सोऽहं त्वयैवास्मि  
 विनिर्मितः । विभज्य भागशोत्मानं ब्रजमानुपतां विभो ॥ ७२ ॥ तत्रास्मिन्वर्धं  
 कृत्वा सर्वं लोकसुखायै । धर्मं प्राप्य यशः प्राप्य योगं प्राप्यसि तत्त्वतः ॥ ७३ ॥  
 त्वां हि ब्रह्मर्षयो लोके देवाभ्यामित विक्रमः । तैस्तैर्हर्नामभिर्भुक्ता गायन्ति परमात्म  
 कम् ॥ ७४ ॥ स्थिताश्च सर्वे त्वयि भूतसंघाः कृत्वाश्रयं त्वां वरदं सुवाहो ।  
 अनादिमध्यान्तमपारयोगं लोकस्य सेतुं प्रवदन्ति विभोः ॥ ७५ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि विश्वोपाख्याने  
 पंचपट्टितमोऽध्यायः ६५ ॥

यत्तत्परमं गुह्यं त्वत्प्रसादादिदं विभो ॥ वासुदेव तदेतत्ते मयोद्गीतं यथातथम् । ६९ ।  
 सृष्ट्वा सङ्कर्षणं देवं रक्षयमात्मानमात्मना । कृष्णं त्वंमात्मनो साक्षीः प्रद्युम्नोऽस्मात्संभवः ७०  
 प्रद्युम्नोऽप्यानिरुद्धस्तुवयं विदुर्विष्णुमन्ययम् । अनिरुद्धोऽमृजन्मावै ब्रह्माणं लोकधारिणः ७१  
 वासुदेवमयः सोऽहं त्वयैवास्मि विनिर्मितः ॥ विमृज्य भागशो ज्ञानं ब्रजमानुपतां विभो ७२ ।  
 तत्रास्मिन्वर्धं कृत्वा सर्वं लोकहिताय वै ॥ धर्मं स्थाप्य यशः प्राप्य योगं प्राप्यसि तत्त्वतः ७३ ।  
 त्वां हि ब्रह्मर्षयो लोके देवाभ्यामित विक्रमः ॥ तैस्तैर्हर्नामभिर्भुक्ता गायन्ति परमात्मनः ७४ ।  
 स्थिताश्च सर्वे त्वयि भूतसंघाः कृत्वाश्रयं त्वां वरदं सुवाहो । अनादिमध्यान्तमपारयोगं लोक-  
 स्य सेतुं प्रवदन्ति विभोः ॥ ७५ ॥

Daityas and for the protection of the world. Thy mystery has been  
 sung by me through thy grace, Vasudev. Having created the di-  
 vine Sankarshan through thy grace, thou art born as Pradyumna,  
 O Krishn. 70. From Pradyumna thou hast created Anirudh who is  
 known as everlasting Vishnu. I was created by Anirudh to protect  
 the world. Being created by Vasudev, I have in reality been created  
 by thee. Divide thyself into parts and take birth, O lord, among  
 men. Destroy the Asuras for the good of all creatures, win renown  
 and yog to establish righteousness. The twice born rishis on the face  
 of the earth and the gods devoted to thee, sing songs in thy praise,  
 mighty one. Possessor of good aims, all creatures rest on thee and  
 have their refuge in thee, giver of boons. The twice born speak of  
 thee as the world's bridge, without beginning, middle and end, and  
 possessed of boundless yog. 75.

मीम उवाच । ततः स भगवान् देवो लोकानामीश्वरैश्चरः । धृष्टेऽपि प्रियुषाणेन  
स्तिग्धगम्भीरपागिरां ॥ १ ॥ विदितं तत्तयोगान्मे सर्वमेतत्तवस्तितम् । तथातद्  
वितस्युक्त्वा तत्रैवान्तर्धीयत ॥ २ ॥ ततो देवर्षिगन्धर्वा विश्वमर्यापरमेष्ठाः । कौतूहल  
पराः सर्वे पितामहमपामुवन् ॥ ३ ॥ कोन्धयं यो भगवता प्रणम्य वितपाक्षिमी ।  
पाग्निः स्नुतो वरिष्ठाभिः श्रोतुमिच्छामंतवयम् ॥ ४ ॥ एवमुक्त्वा भगवान् प्रष्टु  
यान् पितामहः । देव प्रहर्षिगन्धर्वान् सर्वान् मधुरया गिरा ॥ ५ ॥ यत्तत्पर  
मधिष्यञ्च मधितत्पञ्चयत्परम् । मृतात्मा च प्रमुञ्चैव मेहा यच्चपरं पदम् ॥ ६ ॥  
तेनास्मि कृतसंवाहः प्रणजेन सूर्यमाः । जगतोनुग्रहाधीय याचितो मे जगत्पतिः  
॥ ७ ॥ मानुषं लोकमातिष्ठ वासुदेव इति नुतः । अह्मगणां संघार्णय सम्भवस्व मही  
तले ॥ ८ ॥ संप्राप्ते निहता ये ते दैत्यदानव राज्ञसाः । त इमे नृप सम्भूता घोरा

अध्याय ६६ ॥

भीष्मजी बोले कि इसके पीछे वहीयोगेश्वरोंके ईश्वर भगवान् स्निग्ध गम्भीर  
बाणीकेद्वारा ब्रह्माजी से बोले, हे तात यहतरे मनकी इच्छा मुझको योगसे विदित  
हे वह उसी प्रकार से होगा यहकह कर वह उसी स्थानमें गुप्त होगये, इसके अन  
न्तर देवर्षि और गन्धर्वोंने वड़ा आश्चर्य किया और सबने मिलकर ब्रह्माजी से  
कहा कि हे समर्थ यह कौनया जिसको आपने वड़ी नम्रतासे नमस्कार पूर्वक  
उत्तर बाणियों में स्तुति किया हम उसको जानना चाहतेहैं । ४ । इसरीति से देव  
र्षिगन्धर्वों के पुछनेपर वड़ी मधुर बाणी से ब्रह्मा जी बोले, जो सर्वोत्तमरूप आगे  
प्रकट होनेवालाहै वही अष्ट सवर्जीवमात्रोंका आत्मारूप मनु है उसीको ब्रह्म और  
ज्योति स्वरूपकहतेहैं, हे भेष्ट पुरुषो मैंने उसी प्रसन्न मूर्ति परमेश्वर से वार्त्ताज्ञाप  
की है और जगत् के अनुग्रह के लिये वह जगत्पति मेरी प्रार्थना से वासुदेवनाम से  
प्रसिद्ध होगा तुमसब लोग मर्त्यलोक में नियत होकर असुरोंसे मारनेके लिये पृथ्वी  
पर प्रकट होजाओ । ८ । जो दैत्य दानव और राजस्य युद्ध में मारेगये हैं वही

### CHAPTER LXVI

Bhishma continued: "Then the Lord of yogis gave the following  
reply to Brahma in a sweet and solemn tone of voice:—'I know by the  
power of yog what passes in your mind. It will be as you desire.'  
Having said this he disappeared at that very place. At this the gods  
and grandharras were much astonished and unanimously asked of  
Brahma to tell them all about him whom he had bowed down and  
praised in such high terms 5. Being thus asked by them, Brahma  
replied in a very sweet voice that the good form appearing before them  
was the soul and lord of all beings, known as Brahman and light. 'I have  
talked, said he with that cheerful form, the Lord of all. At my request  
and for the good of the world that lord of the Universe will appear  
in this world as Vasudeva. You too must go to the world of mortals

कामहावलाः ॥ ९ ॥ तेषां च धार्म्यं भगवान् नरेण सहितो वशी । मानुषो योनि  
मास्थाय चरिष्यति महीतले ॥ १० ॥ नरनारायणौ यौतौ पुराणावृषिसत्तमौ । सहितौ मानु  
षलोके सम्भूताव नित्यतौ ॥ ११ ॥ अजेयौ समरे यद्यौ सहितौ रमैरपि । मूढाश्चेतौ  
न जानन्ति नरनारायणावृषी ॥ १२ ॥ तस्याहमग्रतः पुत्रः सर्वस्य जगतः प्रभुः ।  
पाण्डुदेवोर्ध्वनीयो यः सर्वं लोकमहेश्वरः ॥ १३ ॥ तथा मनुष्यो यमिति कदाचिद्वि  
सृष्टसत्तमा । नावज्ञेयो महावीर्यः शंखचक्रगदाधरः ॥ १४ ॥ एतत् परमकं गुह्यं  
मेतत्परमकं पदम् । एतत् परमकं ब्रह्म एतत्परमकं यशः ॥ १५ ॥ एतदक्षरमव्यक्तं  
मेतद्वैशाख्यं ममदः । यत्तत् पुरुषसंज्ञैव गीयते ज्ञायते न च ॥ १६ ॥ एतत् परमकं तेज  
एतत् परमकं सुखम् । एतत् परमकं स यं कीर्तितं विश्वकर्मेण ॥ १७ ॥ तस्मात्  
सेन्द्रैः सुरैः सर्वैर्लोकैश्चामित विक्रमः । नावज्ञेयो वामुदेवो मानुषो यमिति प्रभु ॥ १८ ॥  
यच्च मानुषमाश्रय मिति श्रूयात् स मनुष्यीः । हृषीकेशमवज्ञातास्तमाहुः पुरुषाधमम्

भाकर इनद्वोरूपमहावली मनुष्यों में उत्पन्न हुये हैं, इन्हीं के मारने के निमित्त  
अतुल पराक्रमी भगवान् नर संयुक्त मनुष्य योनि में नियत होकर पृथ्वीपर विचरेंगे,  
वही दोनों पुराण पुरुष ऋषियों में श्रेष्ठनरनारायण रूप मिले हुए सावधान युद्ध में  
देवताओं से भी विजय करने के योग्य नहीं हैं वही महा तेजस्वी एक साथ नर  
लोक में प्रगटहुए इन दोनों नरनारायण ऋषियों को अज्ञानी लोग नहीं जानते हैं ११  
मैं जिसके आत्मा से उत्पन्न होनेवाला पुत्र सब जगत्का पति हूं वह सब लोकोंका  
महेश्वर वामुदेव तुम्हारा पूज्य है, हे उत्तम देवताओं इसी प्रकार का वह महापरा  
क्रमी शंखचक्र गदाधारी ऐसा जानकर कि यह मनुष्य है कभी अपमान करने के  
योग्य नहीं है, यह अत्यन्त गुप्तरूप और परमज्योति है यही परब्रह्म है यही यश है  
यही अविनाशी सनातन और यज्ञ पुरुष है यही दृश्यभेदरहित नाम से गाया जाता है  
और जाना जाता है सब गीत है, यह परमतेज मुख और सतविश्वकर्ता कहा जाता है  
इस कारणसे बड़ा पराक्रमी प्रभुवामुदेव इन्द्रादिक देवता और सब असुरोंसे भी  
मनुष्य जानकर अपमानके योग्य नहीं है, जो इस वामुदेवको केवल मनुष्य समझे

and be born there to destroy the asurs. The Daityas, Danavas and  
rakshases, killed in battle are born as brave warriors among men. To  
destroy them, Bhagwan of matchless prowess, together with Nar,  
will be born among men and will move on earth. Both those an-  
cient purushes, the best of rishis, known as Nar and Narayan, are  
inconquerable even by gods. Both glorious ones are born among  
men. Ignorant people do not know Nar and Narayan. 12. The  
mighty Lord, Vasudev whose son I am the lord of creation, is worthy  
of respect by you. That wielder of conch, mace and discus, of great  
prowess, is not to be despised in human form, good  
most mysterious, the best light. Love Brahm. He is the  
father in

॥ १९ ॥ योगिनं तं महात्मानं प्रविष्टं मानुषीं तनुम् । अवमन्येद्वासदेवं तमाहुः ता  
मसेजनाः ॥ २० ॥ देवं चराचरात्मानं श्रियत्साकं सुवर्चसम् । पशनाभं न  
जानाति तमाहुस्तमसं युवाः ॥ २१ ॥ किरिटकौस्तुभघरं मिश्राणामभयद्वरम् ।  
अवजानन् महात्मानं घोरे तमसि म्रजति ॥ २२ ॥ एव विदित्वा तत्त्वार्थं लोका  
नाभीश्वरेश्वरः । वासुदेवो नमस्कृत्यः सर्वलोकैः सुरोत्तमाः ॥ २३ ॥ भीष्म उवाच ।  
एवमुक्त्वा स भगवान् देवाः सर्पिणान्परा । विद्युज्ज्वलं सर्वभूतात्मजं गाम भवनं स्वकम्  
॥ २४ ॥ ततो देवाः समन्धर्षा मुनयोऽप्यसौपि च । कथां तां ब्रह्मणा गीतां धृत्वा  
प्रीतादिबभूवुः ॥ २५ ॥ एतच्छ्रुत्वा मया तात ऋषीणां भावितात्मनाम् । वासुदेवं  
कथयतां समवाधे पुरातनम् ॥ २६ ॥ रामस्य कामदग्धमव्ययमार्कण्डेयस्य धीमतः । दयास  
नारदयोऽपि शकाशाद् भरतर्षभ ॥ २७ ॥ एतमर्च्यं विहाय धृत्वा च प्रभुमन्ययम् ।

वह इन्हीं हृषीकेशजी के अपमान से निर्वृद्धी नीचपुरुष है जो इसयोगी महात्मा  
मानुषी शरीरवर्त्ता वासुदेवजी को अपमान करता है उसको महापुरुष लोग तामसी  
कहते हैं । २० । जो इस जड़ चैनन्य के आत्मा श्रियत्समनिहून धागी तैजस्वी पद्म  
नाभजी को नहीं जानता है वहभी तामसीबोला जाना है, जोमुकुटकुंडल और कौ-  
स्तुभधारी शत्रु भयवर्द्धन महात्मापुरुषको अपमानकरताहै वहघोर तामिभ्र नामनरक  
में गिरताहै हे धेष्टदेवर्षियों इसरीति से तत्त्वार्थको जानकर लोकेश्वरों का ईश्वर  
वासुदेव सबलोकों से नमस्कार करने के योग्य है । २३ । भीष्म जी बोले कि पूर्व  
समय में भगवान् ब्रह्माजी देवता और ऋषियों के समूहों से इस प्रकार कहकर  
सब प्राणियों को विदा करके अपने भवन को गये । २४ । इस के पीछे  
देवता गन्धर्व ऋषिमुनि और अप्सरादिकभी ब्रह्माजी की कही हुई इसकथा  
को प्रीति संयुक्त सुनकर स्वर्ग को गये, हेतात इसरीति से मैंने गुह्य श्रुतःकरण  
वाले देवता ऋषिआदि की सभा में यह प्राचीन वृत्तान्त सुनाई हे शास्त्रमें कुशल

destructible, eternal and subject of sacrifices. He is sung and known  
as Visible and Invisible. He is All in all, best Light, Happiness and  
Creator of the world. Vasudev the lord of great prowess is not to be  
despised in human form by India and other gods. 20. He who  
regards Vasudev as an ordinary man, is a despicable fool. He who  
looks down upon Vasudev the great yogi in the human form, is re-  
garded by great men as fallen in darkness. He who does not know  
this soul of the moveables and immovables having the mark of Shree-  
vants, the glorious lotus navelled, is fallen in darkness. He who des-  
pises this great being adorned with diadem, earrings and Kaustubh  
jewel, is terror of foes, falls into the dire hell known as Tamishra.  
Knowing these facts, good rishis divine, Vasudev the lord of lords is  
worthy of worship." 23. "Having said this, to the gods and rishis,"  
continued Bhishma, "lord Brahma bade farewell to all beings and went

वासुदेव मह त्मानं लोकानामीश्वरैश्वरम् ॥ २८ ॥ यस्य चैवात्मजो ब्रह्मा सर्वस्य  
जगत पिता । कथं न वासुदेवो यमर्च्यश्चेत्यश्च मानवैः ॥ २९ ॥ वास्तोसि  
मया तात मुनिभिर्देव पापिनाम् । मा गच्छ सयुग तेन वासुदेवेन धन्विना ॥ ३० ॥  
मा पाण्डवैः सार्द्धमिति तदेव मोहार्थं बुध्यसे । मय्येत्वा राक्षस हरे तथा घासि  
तमो वृत् ॥ ३१ ॥ यस्मात् द्विपसि गोविन्द पाण्डवैस्त घनञ्जयम् । न नारायणौ  
देवौ काव्यो द्विधादि मानव ॥ ३२ ॥ तस्माद्ब्रवीमि ते राजश्रेयसे शाश्वतोत्पद्य ।  
सर्वलोकमयो नित्य शास्ता घात्री धो ध्रुव ॥ ३३ ॥ यो धारयति लोकास्त्रीश्वरा  
चन्द्र प्रभु । यो द्वा जयश्च जता च सर्वप्रकृतिरीश्वर ॥ ३४ ॥ राजन् सर्वमयो

दुर्योधन जमदग्न्यजी के पुत्र परशुरामजी और बुद्धिमान् मार्कण्डेय व्यास और  
नारदजी सेभी सुना है, इस अर्थ को अच्छी रीति से सुन और जानकर न्यूनता  
रहित लोकेश्वर प्रभु वासुदेवजी को ध्यान करो, जिसकी आत्मा से उत्पन्न होने  
वाला ब्रह्मा स्रजगत्का पिता है वह वासुदेव मग्मात्मा रूप किस प्रकार से  
मनुष्यों से पूज्य नहीं है अर्थात् सबका पूज्यनम है, हेतात प्राचीन समय में तो गुद  
अन्त करण वाले मुनियों ने सदैव निषेध किया है कि उम धनुषधारी वासुदेवजी  
से कभी युद्ध मत करो । ३० । और न कभी पांडवोंसे लड़ो परन्तु तू अपने मोह से  
सावधान नहीं होना है इस कारण मैं तुम्हको राक्षस और निर्हय जानता हूँ जो कि  
तू ब्रह्मान में दूबा हुआ है इसी कारण से तू गोविन्दजी समेत पांडव अर्जुन से श  
त्रुता करता है कौनसा ऐसा मनुष्य है जो इन दोनों नर नारायण देवताओंसे शत्रु  
ताकरे, हे राजन् इस हेतुसे मैं तुम्ह से कहता हूँ कि यह मनातन अविनाशी विश्वरूप  
पृथ्वी का धारण करने वाला अचल है, और जो चराचर कारूप प्रभुतीनोंको  
को धारण करता है वह युद्धकर्त्ता विजयरूप विजयी रुषकी प्रकृति और ईश्वर है,

to his abode. Then the gods grandharvas, ishhis, munis, apsaras and  
others, having cheerfully heard the words of Brahma went to heaven  
I heard this ancient account in the meeting of gods and rishis of pure  
mind I have heard the same from Parashuram the son of Jamadagni  
from wise Markandeya Vyasa and Narad Having thoroughly heard  
and known this, think of lord Vasudev the creator of the world. Is not  
lord Vasudev whose son Brahma is the father of the world worthy  
of respect? The pure-minded Munis of old have forbidden all to fight  
against the great archer Vasudev 30 They have forbidden to fight  
against the Pandavas too but thou dost not awaken from thy stupe  
fication and therefore I hold you to be a cruel rakshas. Thou bearest  
enmity with Vasudev and Arjun because thou art plunged in igno  
rance. What man will be an enemy to Nar and Naryan I therefore  
say to you king that this ancient immortal and universal form is the  
immoveable supporter of earth That lord of the immoveables and



होय तमो राग विवर्जितः । यतः कृष्णस्ततो धर्मो यतो धर्मस्ततो जयः ॥ ३५ ॥  
 तस्य माहात्म्ययोगेन योगेमात्ममयेव च । धृता पाण्डुसुता राजन् जयधैर्यं मविश्य  
 ति ॥ ३६ ॥ धेयोयुक्तां सदा बुद्धिं पाण्डवानां दधाति यः । बलैवेव रणे नित्यं  
 भवेभ्यधैव रक्षति ॥ ३७ ॥ स एव शाश्वतो देवः सर्वमुत्तमयः शिवः । वासुदेव  
 इति वषातो यन्मां स्वं परिपृच्छसि ॥ ३८ ॥ ब्राह्मणैः क्षत्रियैर्दैत्यैः शूद्रैश्च कृतलक्ष-  
 णैः । सेव्यतेऽयमर्थं ते चैव नित्ययुक्तैः स्वकर्माभिः ॥ ३९ ॥ द्वापरस्य युगस्यान्ते  
 आदौ कलियुगस्य च । सात्वतं विधिमास्थाय गीतः सकर्षणेन वै ॥ ४० ॥ स एव  
 सर्वं सुरमर्त्यलोकं समुद्रं कश्चान्तरितां पुरां च । युगे युगे मनुष्यैश्च वासं पुनः पुनः  
 सृजते वासुदेवः ॥ ४१ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि विद्वोपख्याने

पद पाठितमोऽध्यायः ॥ ६६ ॥

हेराजन् यह सतोगुण रजोगुण तमोगुणसे जुद्धाहै जिधर श्रीकृष्ण हैं उधर यन्म है  
 जिधरधर्म है उधरही विजय है । ३५ । हेराजन् पांडवलोग उन श्रीकृष्णजी के  
 माहात्म्य योग वा उत्तररूप योगमे धारण किये हुए हैं, इन्होंकीही विजयहोगी वही  
 श्रीकृष्ण पांडवोंकी कल्याण मिश्रित बुद्धिकी और युद्धमें पराक्रम कोभी सदैव  
 धारण करता है और भयों से रक्षाकरताहै वही सनातन ब्राह्मणरूप शिव और  
 वासुदेव कहा जाता है हे भरतवंशी छक्षण युक्त स्वर्कर्मसे नित्यमुक्तब्राह्मण क्षत्री  
 वैश्यशूद्रों करके वह सदैव सेवा किया जाता है उसी को द्वापर के भ्रन्त पर  
 कलियुग के प्रारंभमें सतोगुणी बुद्धि में नियत होकर संकर्षणजी ने गाया है, वही  
 युग युगमें देवलोक मृत्यु लोक और समुद्रान्तर वर्त्तपुरी और मनुष्यों के विश्राम  
 स्थानों को बारंबार उत्पन्न करता है । ४१ ॥

moveables is the supporter of the three worlds. That conquering warrior is the lord of all He is separate from the qualities of Sat, Raj and Tam. Dharm is on the side of Shree Krishn and conquest is on the side of Dharm. 25. The Pandavas O King are supported by the greatness and yog of Shree Krishn and they will conquer. Shree Krishn helps the Pandavas by his good advice and prowess and protects them from danger. The same ancient Brahman is called Shiv and Vasudev. By good deeds that always free Brahman is served by Brahmans, kshatriyas, Vaishyas and Shudras, Sankarsen sang of him at the end of Dwapar and the beginning of Kali. He creates again and again in every yug the regions of gods and mortals, the country beyond the sea and the habitations of human beings." 41.



दुःश्यांशन उवाच । वसुदेवो महद्भूत सर्वलोकेन कथ्यते । तस्यागमं प्रति  
 प्रायः शत्रुभिच्छेदितमिह ॥ १ ॥ भीष्म उवाच । वसुदेवो महद्भूतं सर्वदैवत  
 दैवतम् । न परं पुण्डरीकाक्षो दृश्यते भक्तपरम ॥ २ ॥ मार्कण्डेयश्च गोविन्दे कथयाम्य  
 दभूतमदत् । सर्वभूतानि सनात्मा महात्मा पुरुषोत्तमः ॥ ३ ॥ आपो वायुश्च तेजश्च  
 धरमेतदकलयन् । स सृष्ट्वा पृथिवीं देवीं सर्वलोकेश्वरः प्रभुः ॥ ४ ॥ अप्सु वै शयनं  
 चक्रे महात्मा पुरुषोत्तमः । सर्वे तेजोमयो देवो योगात् सुखापतव्रह्म ॥ ५ ॥ मुखे त  
 नं गिरिगच्छत् प्राणाद्वायुमथापि च । सरस्वतीं च वेदांश्च मनसः सृष्ट्वाऽप्युतः ॥ ६ ॥ एष  
 लोकां ससृज्जान् देवांश्च ऋषिभि सह । निधनं चैव मृत्युञ्ज प्रजातां प्रमवाप्यपौ ॥ ७ ॥ एतदधर्मं धर्मौ चरद्-  
 खं कामद । एष कर्त्ता च कार्यं च पूर्वदेवश्च परमभुः ॥ ८ ॥ भूतं मध्य भविष्यं प्रभिनदकल्पयत् । उभे संध्ये देशः खलु निर्याम्य जनादेनः ॥ ९ ॥

अध्याय ६७ ॥

दुःश्यांशन बोले कि सबलोकों के मध्य में वसुदेव जीही महद्भूत कहे जाते हैं हे  
 पितामह जी मैं उनके आगम और प्रतिष्ठा को जाना चाहता हूँ, भीष्मजीः बोले हैं भर  
 तवंशिषों में श्रेष्ठ वसुदेव जीही महद्भूत और सब देवताओं के देवता हैं इन पुण्डरी  
 काक्ष श्रीकृष्णजीसे परे कोई नहीं दिखाई देता है, मार्कण्डेय ऋषि भी गोविन्द  
 जी को अत्यन्त अपूर्व और बड़ा कहते हैं इसी पुरुषोत्तम महात्मा जीवात्मा  
 ने पृथिवी आदि पाँचों तत्वोंको उत्पन्न किया है इसी परमेश्वरने पृथ्वीको न  
 देखकर जलमें शयन किया फिर उस बड़े साहसी वसुदेवजी ने मुखसे आगिको  
 प्राणते वायुको उत्पन्न करके वेदों को प्रकट किया इसनेही प्रारंभ में लोकों  
 समेत देवता और ऋषियों के समूहको उत्पन्न किया और जन्म मरण नाश सहित  
 मृत्युको भी इसीने उत्पन्न किया, यहधर्म और धर्मात्मा धरका देनेवाला यही आदि  
 देव प्रभुकर्त्ता और कर्मरूप है इसीने भूतवर्तमान भविष्य इनतीनोंकालों को उत्पन्न  
 किया यही प्रभु आविनाशी जगत्का कर्त्ता और वरदाता है इसीने सबके आदि

### CHAPTEL LXVII

"Vasudev" said Duryodhan, "is called the great being throughout the world. I wish to hear of his incarnation and greatness." 1. "Best of Bharats," said Bhishm, "Vasudev is the greatest of beings and lord of lords. There is none superior to Shree Krishn. Ma-kandey calls Govind matchless and great. This supreme being the greatest soul has created the five elements earth and others. This Parmeshwar took rest on the waters which covered the face of the earth. 5 Vasudev of great prowess having created Agni from his mouth and Vayu from his breath gave out the Vedas. In the begining he created the gods and rishis. He created Brith and Death. He is Dharm Dharma-tma, giver of Loans, Primo God, Lord, Maker and deed. He created the Past, Present and Futura. He is the indestructible creator of the

श्रुत्वा श्वेदं गोविन्दस्तपश्चैवाभ्यकल्पयत् । क्षत्रं रजसतथापि महात्मा प्रभुर्दिव्यः ॥ १० ॥  
 अप्रजं सर्वं भूतानां संकर्षणकलायत् । तस्मात्प्रायणो जज्ञे देवदेव सनातनः ॥ ११ ॥  
 नाभौ पद्मं बभूवा स्य सर्वं लोकस्य सप्रवात् । तस्मात्पितामहोऽन्तरमाज्जातस्त्रिदिवः ॥ १२ ॥  
 प्रजाः ॥ १२ ॥ शेषचाकल्पयद्देवं मनंतं विश्वकपिणम् । यो भारत्यति भूतानि धरांचिमांस  
 पर्वताम् ॥ १३ ॥ ध्यानं योगतः विप्राश्च तं विदति महोजसम् । कर्णस्रोतो भद्रश्चापि  
 मधुनाम महासुरम् ॥ १४ ॥ तमुग्रमुग्रकर्माणं मुप्राबुद्धिं समास्थितम् । प्रह्वणोपचितिं  
 यानुं जघान पुरुषोत्तमः ॥ १५ ॥ तस्य तात वचादेव देवदानव मानवाः । मधुसूदन  
 मित्पाहृष्टं पयस्य अनार्दनम् ॥ १६ ॥ वराहश्चैव त्रिदिव त्रिविक्रमगतिः प्रभुः । एष  
 मातृपिताचार्य सूर्योपागणिनां हरिः ॥ १७ ॥ परं हि पुंड्रिकाक्षान्न मृतं न भविष्यति ।  
 सुपतः सोऽज्जाद्विभक्तं बहुभ्यां क्षत्रिवांस्तथा ॥ १८ ॥ वैद्ययाश्चाप्युक्तो राजन् शूद्रा  
 श्वेषादस्तथा । तपसा नियतो देवो निधानं सर्वदेहिनाम् ॥ १९ ॥ ब्रह्म भूतमावाचार्या

भूत संकर्षणजीको उत्पन्न किया उसीसे शेषकल्पना करके अनन्त नामसे मसिद्ध किया । १०। यही शेषजी पर्वत और समुद्रों समेत इस पृथ्वीको धारण करते हैं उस को महातेजस्वी कहते हैं, पुरुषोत्तमजीने ब्रह्माजी के उपकारके लिये कर्ष से उत्पन्न महा तेजस्वी पराक्रमी दैत्य मधुको मारा, हे तात इसी के मारनेसे इनको सब संसार मधुसूदन कहते हैं यही वराह वृत्तिह अवतार धारण करने वाला तीन चरणों से सब जगत् को मारने वाला है, यही हरि सूर्यजीवोंका पिता और माना है इनसे पद कर न कोई है न था न होगा । १५ । हे राजन् इसने ब्राह्मणों को मुखसे क्षत्रियों को भुजाओं से वैद्योंको चरणों से उत्पन्न किया है, इस राजधानने उसके द्वारा जीवोंकी हृष्य कट्यादिक विधियों को ब्रह्मरूपी अनावारथा वा पूर्णमासी में उत्पन्न किया, जो इन योगरूप केशव जीकी सेवा करता है यह महा ऐश्वर्य्य को पाता है, हे राजा इन केशवजी को मुनियोंने ऐसा कहा है इसी को आचार्य्य पिता और गुरु

world and giver of boons. He created Sankharthen the first of Loings. He is known by the appellations of Shesh and Anant. 10. The same Shesh supports the Earth with her mountains and seas. He is the most glorious. For the good of Brahm, he destroyed Madhu a Daitya of great glory and prowess, produced from the ear, and gained the name of Mandusudan. He is Barah, Nrisinha and he who measured the universe with three paces. Thus Hari is the father and mother of all beings, there never was any one greater than him nor ever shall be. He produced the Brahmans from his mouth, the Kshatryas from his arms, the Vaishyas from his thighs and the Shudras from his feet. With his great power he ordained the sacrifices on the days of no moon and full moon. He who serves this yogi, Keshav, gets great wealth. The munis call this Keshav, preceptor, father and superior. He to

पौर्णमास्यां तथैव च । योगैर्भूतं परिवर्त्तन् केशवे महदाप्नुयात् ॥२०॥ केशव परमतेजः  
सर्वं लोकपितामहः । एवमाहुर्हृषीकेशं मुनयो वैतराधिप ॥ २१ ॥ एवमेतं विजानीहि  
आचार्य पितरं शुभम् । कृष्णो यस्य प्रसीदत लोकास्तेनाक्षयाजिताः ॥ २२ ॥ यश्चैतन्  
भयं स्थाने केशवं शरणं व्रजेत् । सदा नर पठश्चेद् स्वस्तिमान् स सुखी भवेत् ॥ २३ ॥  
ये च कृष्णं प्रपद्यन्ते तेन मुह्यन्ति न वा । भये महति प्रमादं पाति नित्यं जनार्दनः ॥ २४ ॥  
सतं युधिष्ठिरो ज्ञात्वा याथातथ्येन भारत सर्वात् मनामहात्मानं केशवं जगदीश्वरम् ।  
प्रपन्नः शरणं राजन् योगानां प्रभुमीश्वरम् ॥ २५ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपिणि भीष्मवधपर्वणि विश्वोपाख्याने

सप्तपष्ठितमोऽध्यायः ॥ ६७ ॥

भीष्म उवाच । शृणु खेदं महाराज ब्रह्मभूतं स्तवं मम । ब्रह्मविनिधिं देवैश्च य-  
पुरा कथितो भुवि ॥ १ ॥ साध्यानामपि देवानां देवदेवेश्वरं प्रभुः । लोकभाषनभावह  
इति त्वां नारदो ब्रवीत् ॥ २ ॥ भूतमव्यं भविष्यञ्च मार्कण्डेयोऽप्युवाच ॥ यज्ञं त्वां  
जानना योग्य है जिसके ऊपर श्रीकृष्णजी ममन्त होयें वह अविनाशी लोकों का  
विजय करने वाला है, जो प्राणों के भयके स्थान में इनकी शरण में जाता है वह  
मनुष्य उसको स्मरण करना हुआ आनन्द पूर्वक निर्विघ्न होता है और जो इनको  
प्राप्त होते हैं वह मनुष्य मोहमें नहीं फँसते हैं, यह जन्मार्द्धनुजी बड़े भारी भय में  
हूये हुये अपने भक्तोंकी सदैव रक्षा करते हैं हे महाभाग राजा दुर्योधन बह्मविष्टिर  
इस प्रकारसे ठीक २ जानकर सर्वात्मारूपसे उस योगेश्वर जगदीश केशव मूर्तिकी  
शरणमें आश्रित है ॥ २५ ॥

अध्याय ६८ ॥

भीष्मजी बोले हे महाराज इसमेरे कहेहुये ब्रह्मरूप स्तोत्र को सुनो जो कि पूर्व  
समय में पृथ्वीपर देव ऋषि और देवताओं ने वर्णन किया है ॥ १॥ भीष्मउवाच ॥  
साध्यानामपि देवानां देवदेवेश्वरं प्रभुः । लोक भाषन भावह इति त्वानारदो  
ब्रवीत् ॥ २॥ भूत मव्यं भविष्यञ्च मार्कण्डे योभ्यु वाचह ॥ यज्ञं त्वां चैव देवानां

whom shree Krishna is kind, indestructible and conqueror of the  
world. He who seeks his protection from danger, gains happiness  
without interruption as he remembers him. He who attains  
to him, is freed from foolshness. Janardana always protects his  
devotees from danger. Yudhishtira knows these facts well and is  
devoted, life and soul, to Keshava the lord of yogis as well as of the  
world." 24.

## CHAPTER LXVIII

"Hear from me, king," said Bhishm, "the song of praise, sung by  
Brahma, which was repeated by divine rishis and gods: "Narad des-  
cribed thee as the Lord of the Sadhaya, and of the gods, god of gods  
as well as loved by the world and knower of essence." Markandeya

वैवदेवानां तपश्च तपसामपि ॥ ३ ॥ देवानामपि देवज्ञं त्वामाह भगवान्भृगुः । पुराणं चैव परमं विष्णो रुपं तवेति च ॥ ४ ॥ वासुदेवो यस्मात्त्वं शक्रस्यापयिनां तथा । देव देवोऽसि देवानां मिति द्वैपायनो ब्रवीत् ॥ ५ ॥ पूर्वं प्रजापतेः सगं दक्षमाहुः प्रजापतिम् । अष्टारं सर्वलोकानां मङ्गिरास्त्वां तथाऽब्रवीत् ॥ ६ ॥ अन्यकंते शरीरोत्थं व्यक्तं ते मनसि स्थितम् । देवास्त्वत्सम्भवाश्चैव देवलस्त्व सितो ब्रवीत् ॥ ७ ॥ शिरसा ते दिवं व्याप्तं बाहुभ्यां पृथिवीं तथा । जठरं ते त्रयो लोकाः पुरुषोऽसि सनातनः ॥ ८ ॥ एवं त्वामभिजानन्ति तपसा भवितानगः । आत्मदर्शनं नृमानां मृषीणां चापि सत्तमः ॥ ९ ॥ राजर्षीणामुदाराणां माह्वेष्वनिवर्तिनाम् । सर्वं धर्मं प्रधानानां त्वं गतिर्भुमूयन ॥ १० ॥ इति नियं योगविद्धिर्भगवान् पुरुषोत्तमः । सनत्कुमारमुल्लैः स्तूयतेभ्यर्च्यते हरिः ॥ ११ ॥ एष ते विस्तरस्तात संक्षेपश्च प्रकीर्तितः । केशवस्य यथा तत्त्वं मुनीतो भव केशवम् ॥ १२ ॥ सञ्जय उवाच । पुण्यं श्रुत्वा तदाश्रयं महाराज सुत

तपश्च तपसामपि ॥ ३ ॥ देवानामपि देवंच त्वा माह भगवान्भृगुः ॥ पुराणं चैव परमं विष्णो रुपं तवेति च ॥ ४ ॥ वासुदेवो यस्मात्त्वं शक्रस्याप यनां तथा ॥ देव देवोऽसि देवानां ना मिति द्वैपायनो ब्रवीत् ॥ ५ ॥ पूर्वं प्रजापतेः सगं दक्षमाहुः प्रजापतिम् ॥ अष्टारं सर्वलोकानां मङ्गिरास्त्वां तथाऽब्रवीत् ॥ ६ ॥ अन्यकंते शरीरोत्थं व्यक्तं ते मनसि स्थितम् । देवास्त्वत् सम्भवाश्चैव देवलस्त्व सितो ब्रवीत् ॥ ७ ॥ शिरसा ते दिवं व्याप्तं बाहुभ्यां पृथिवी तथा ॥ जठरं ते त्रयो लोकाः पुरुषोऽसि सनातनः । ८ । एवं त्वामभिजानन्ति तपसा भवितानगः । आत्मदर्शनं नृमानां मृषीणां चापि सत्तमः ९ राजर्षीणामुदाराणां माह्वेष्वनिवर्तिनाम् ॥ सर्वं धर्मप्रधानानां त्वं गतिर्भुमूयन । १० । इति नेत्यं योगविद्धिर्भगवान् पुरुषोत्तमः ॥ सनत्कुमारमुल्लैः स्तूयतेभ्यर्च्यते हरिः । ११ । एष ते विस्तरस्तात संक्षेपश्च प्रकीर्तितः । केशवस्य यथा तत्त्वं मुनीतो भव केशवम् । १२ ।

speaks of thee as the Past, the Present and the Future, the sacrifices of the gods and the austerity of the ascetics. Bhagwan Bhrgu speaks of thee as the god of gods, the most ancient Vishnu. Dwaipayana speaks of thee as Va-udev, Indra among Vasus and the god of gods, 5. Angira says that thou art the Prajapati of old, Daksh the father of all. 6. Deval spoke of thee as unmanifest of body and manifest in mind and the creator of gods. 7. Thy head pervades the heavens, thy arms surround the earth, thy stomach contains the three worlds and thou art the eternal being. 8. Thus the ascetics know thee and know the best of rishis that have an insight into self. Magnanimous rajarshis who never turn back from battle and who are of good morals seek thy refuge, slayer of Madhu ! 10. Hari the illustrious and supreme being is adored and worshipped by Sanatkumar and other ascetics and yogis. This has been told thee in detail and in brief, turn thy heart in love to Keshav. Sanjaya continued: You have heard

स्तव । केशवः बहुमेने स पाण्डवांश्च महारथान् ॥ १३ ॥ तेमप्रवीणमहाराज भीष्मः  
 शान्तनवः पुनः । महात्म्यन्ते शतं राजन् केशवस्य महात्मनः ॥ १४ ॥ नरस्य च  
 यथातथं यन्मां त्वं परिपृच्छसे नृप । यदर्थं नृपुस्तन्मत्तौ नरनारायणावृषी ॥ १५ ॥  
 अवध्यौ च ययः धीरौ सयुगेष्वपराजितौ । यथा च पाण्डवा राजभ्रष्टया युधिष्ठिरस्य  
 चित् ॥ १६ ॥ प्रीतिमान् हि दद कृष्णः पाण्डवेषु यशस्विषु । तस्मादप्रवीमि राजेन्द्र  
 शमो भवतु पाण्डवैः ॥ १७ ॥ दूषिष्यो भुहस्व संहितो प्रातुर्भिलिखिष्येशी । नरनारा  
 यणौ देवाश्चक्षायन शिष्यासि ॥ १८ ॥ यवमुक्त्वा तव पिता नृणीमासीद्विशाम्पते ।  
 स्थस्तर्जयश्च राजान शयनञ्च विदेशद् ॥ १९ ॥ राजा च शिविरं प्रायात् प्रणिपत्य  
 महात्मने । शिष्ये च शयने शुभ्रे रात्रिर्तां भरतर्षभ ॥ २० ॥

इति भीमहाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि विश्वोपाख्यानं  
 अष्टपष्ठितमोऽध्यायः ६८ ॥

संजयने कहा है महाराज तुमने यह सब पवित्र आख्यान केशव तथा पांडवों का  
 सुनाया शान्तनुके पुत्र भीष्मजीने कहा तुमने केशवका महात्म्य सुना और नरकाभी  
 उक्तान्त जैसा तुमने पूछाया मैंने सुनाया यहभी सुना कि नरनारायण ने क्यों अ-  
 तार लिया है दोनों धीर पिछकर अपराजित हैं और पांडव भी अवध्य हैं कृष्ण  
 को पांडवों से अधिक प्रीति है इस लिये हे राजन् मैं तुम से मेलकरने को कहता हूँ  
 अपने दली भाइयों के साथ राज्य भोगो नर और नारायणका अपमान करने से  
 तू नाशको प्राप्त होगा यह कह कर बुद्धियान् पितामह चुपहोगये और राजाको  
 भोजनर अपने शिविर में चले गये राजाभी नमस्कार पूर्वक अपने शिविर को गया  
 और रात्रि को शयन किया २० ॥

this holy description of the magnanimous Keshav and of the Pandava  
 warriors. Bhishm the son of Bhanatana further said, "Thou hast  
 heard of the greatness of Keshav and of Nar as thou askedst of me,  
 as well as the cause of the incarnation of Nar and Narayan. You know  
 why those two warriors joined together are unconquerable and why  
 no one can kill the Pandavas. Krishna bears great love to the sons  
 of Pandu and it is therefore that I advise you to make peace with  
 them. 17. Enjoy the kingdom together with your brothers, Prince.  
 By disregarding Nar and Narayan thou shalt court thine own ruin.  
 Having said this wise Bhishm became silent and having bidden good  
 night to the king, entered his own tent. The prince too, having paid  
 his respects to Bhishm went away to his tent and laid himself down  
 to repose for the night. 20.

सञ्जय उवाच ॥ व्युपितायांतु शर्वद्व्या मुदिते च दिवाचरे । अमे सेने महाराज  
युद्धायैव समीयतुः ॥ १ ॥ अत्यघावन्तसंकुद्धाः परस्पर जिगीषवः । ते सधे सहिता  
युद्धे समालोक्य परस्परम् ॥ २ ॥ पांडवाघातैराश्रय राजन् दुर्मन्त्रितं तथ । व्यूहो च  
व्यूह संरब्धाः सम्प्रहृष्टाः प्रहारिणः ॥ ३ ॥ अरक्षन् मकरव्यूहं भीमो राजन् समन्ततः ।  
तथैव पांडवा राजन् नरक्षन् व्यूह मात्मनः ॥ ४ ॥ स निययौ महाराज पिना देव प्रत  
स्तथ । महता रथवंशेन सम्भृतो रथिनावरः ॥ ५ ॥ इतरेतर मन्वीयुर्धनभाग मवस्थि  
ताः । रथिनः पत्तयश्चैव श्रितिनः सादिनस्तथा ॥ ६ ॥ तान् दृष्ट्वा व्युपतान् संस्थे पांड  
वाहि यशस्विनः । इमेनेन व्यूहराजेन तनाजयेन संयुगे ॥ ७ ॥ अशोभत मुखे तस्य  
भीमसेनो महाबलः । नेत्रे शिखण्डी दुर्धर्षो घृष्टघुम्नश्च पार्थिवः ॥ ८ ॥ दीर्घैतस्यामघ

### अध्याय ६२ ।

संजयबोले हे महाराज रात्रिच्युतीत होने और सूर्य के उदय होने पर फिर  
दोनों सेना सम्मुख वर्तमान हुई, वहसब एकसाथ युद्ध में परस्पर देखकर अत्यन्त  
क्रोधित होके परस्पर में विजय की इच्छा से सम्मुख दौड़े, हे राजा आपकी घुरी  
सलाहों के होने से आपके पुत्र और पांडव व्यूहों को रथकर अत्यन्त प्रसन्न और  
अलंकृत होके महारों को करने लगे, फिर भीष्मजीने चारों ओर से अपने मकर  
नाम व्यूहकी रक्षाकी इसी प्रकार पांडवोंने अपने व्यूहकी रक्षाकी हे महाराज  
बड़े रथसमूहों समेत रथियोंमें श्रेष्ठ आपके पिता भीष्मजी चले । ५ । और दूसरी  
ओरके भी रथी ह.भीमति और घोड़ों के सवार इत्यादि सब अपने २ स्थान और  
अधिकार में नियत होकर पीछे २ चले, यशस्वी पाण्डव कौरवोंको युद्धमें सन्नद्ध  
देखकर उस युद्धमें अजेय राजशेन नामव्यूह से युद्ध होकर सम्मुखता में वर्तमान  
हुए उसव्यूह के मुखपर महाबली भीमसेन शोभायमान हुआ और नेत्रों पर दुर्जय  
शिखण्डी और घृष्टघुम्न नियतहुए, सत्य पराक्रमी महाबली सात्यकी उसके शिर

### CHAPTER LXIX .

Sanjaya to Dhritrashtra:—"At the close of the night, at surprise, both the armies faced one another, and rushed against one another in anger to gain victory. On account of your ill advice, King, your sons and the Pandavas, having arrayed their armies and decked themselves with a cheerful mind, discharged their weapons against one another. Bhishma protected from all sides his array which he had formed of the shape of a crocodile. The Pandavas too, protected their array. Your father the best of charioteers rode on followed by numberless chariots. 5. The charioteers, elephant riders, horsemen and others of the opposite party, stationed in their proper places, followed them. The glorious Pandavas, seeing the Kauravas ready for action, faced them with their invincible array of the form of a royal hawk. At the mouth of this array was Bhim the bravest of warriors; at the eyes

द्वीपः सात्याकि सत्य विक्रमः । विद्युन्वन् गाण्डिवं यायौ श्रीवायांमभवत्तदा ॥ ९ ॥  
 अक्षौहिण्या समं तत्र वामपक्षो भवत्तदा । महाभा द्रुपदः श्रीमान् सह पुत्रेण संयुगे ॥ १० ॥  
 दक्षिणधामवत् पक्षः कैकेयोऽक्षौहिणी पतिः । पुष्टतो द्रौपदेयाश्च सौमद्रथापि  
 वीर्यवान् ॥ ११ ॥ पृष्ठे समभवच्छ्रीमान् स्वयं राजा युधिष्ठिरः । सातुभ्यां सहिनोधीरो  
 यमभ्यां चारु विक्रमः ॥ १२ ॥ अग्निदधतु रणे भीमो मकरं मुखतस्तथा । भीष्ममासा  
 घ संप्राप्ते छादयामास स्यापकैः ॥ १३ ॥ ततो भीष्मो महास्त्राणि, छादयामास भारत ।  
 मेघवन् पाण्डुप्राणां व्यूह सैन्यं मह हवे । समुल्लसति तदा सैन्ये त्वरमाणो घनजयः ।  
 भीष्मं शरसहस्रेण विद्याधरणमूर्धनि ॥ १५ ॥ प्रति सर्वार्थं चास्त्राणि भीष्ममुक्तानि  
 संयुगे । स्वेनानी केन हृष्टे युद्धाय समग्रस्थितः ॥ १६ ॥ ततो दुर्योधनो राजा भाग्दा-

पर विराजमेन हुआ और अर्जुन आने गांडीव धनुषको चलायमान करता हुआ  
 श्रीवामें वर्तमान हुआ, और श्रीमान् महात्मा द्रुपद अपने पुत्रों समेत एक अक्षौहिणी  
 सेना समेत व्यूह के बायें पक्ष में हुआ । १० । और दाहिने पक्षमें एक  
 अक्षौहिणी को लिये केकय नियत हुआ और द्रौपदी के पांचो पुत्र और  
 महाबली अभिमन्यु पीछेकी ओर हुए और उत्तम पराक्रमी श्रीमान् राजा युधिष्ठिर  
 नकुल सहदेव भाइयों समेत व्यूह के पृष्ठभाग में शोभितहुए, तबभीमसेन ने मुखके  
 मार्ग से यम कौरवों के मकर व्यूह में प्रवेश करके भीष्मजी को पाकर उसयुद्ध  
 में शायकों से ढक दिया, फिर पराक्रमी भीष्मजी ने भी बड़े अस्त्रों को फेंका  
 और बढ़ायुद्ध कर के पांडवों के व्यूहको मोहित कर दिया फिर सेना के मोहित  
 होजाने पर बड़ी शीघ्रता करनेवाले अर्जुन ने उस युद्ध भूमि में आकर हजार  
 बाणों से भीष्मजी को घायल किया । १५ । युद्ध में भीष्मजी के छोड़े हुए बाणों  
 के प्रहारको सहकर अपनी मस्तन सेना के साथ युद्धकरने को उपस्थित हुआ

were brave Shikhandi and Dhrishtadyumna. Brave Satyaki of true  
 prowess stood at the head and Arjun, with his Gandiv bow moving  
 hither and thither, stationed himself at its neck. Great Drupad of  
 good fortune together with his akshauhini of army stood on the left  
 wing. 10. And on the right wing, with an akshauhini of army, stood  
 King Kaikaya. The five sons of Draupadi and brave Abhimanyu  
 were on the rear, and Prince Yudhishtir of great prowess, together  
 with his brothers Nakul and Sahadev, brought up the rear. Bhishm  
 entered the mouth of the crocodile array of the Kauravas, and seeing  
 Bhishm there, covered him with arrows. Then Bhishm, full of  
 prowess discharged his powerful weapons and stupefied the armies of  
 the Pandavas. When the army was thus stupefied the dexterous  
 Arjun came into the field of battle and covered Bhishm with  
 thousands of arrows. 15. Receiving the shower of Bhishma's arrows  
 he fought at the head of his cheerful warriors. Then brave Prince



जमभापत । पूर्वं दृष्ट्वा यद्यं घोरं बलस्य बलिनांवरः ॥ १७ ॥ भ्रातृणां च यद्यं युद्धे  
स्मरमाणो महारथः । आचार्यं सततं हित्वं हितकामो ममानघ ॥ १८ ॥ यद्यहित्वा  
समाश्रित्य भीष्मं चैव पिनामहम् । देवानपि रणे जेतुं प्रार्थयामो न सशयः ॥ १९ ॥  
किमुपाण्डुसुतान् युद्धे हीनमीर्य पराक्रमान् । स तथा कुत भद्रन्ते यथा वध्यन्ति  
पांडवाः ॥ २० ॥ एवमुक्तस्ततो द्रोणस्तव पुत्रेण मागधि । अमिनन् पाण्डवानां  
प्रेक्षमाणस्य सात्यकेः ॥ २१ ॥ सात्यकिस्तु ततो द्रोणं वारयामासभारत । तपोः प्रयवृते  
युद्धं घोररूपं भयावहम् ॥ २२ ॥ नैनेयन्तुरणे कुद्धो भारद्वाजः प्रतापवान् । अविध्य  
जिशितैर्वर्णजैर्मुद्देश्य रुभिव ॥ २३ ॥ भीमसेनस्ततः कुद्धो भारद्वाजमविध्यत ।  
संरक्षन् सात्यकिं राजन् द्रोणान्छक्रभृताम्बरात् ॥ २४ ॥ ततो द्रोणश्च भीमश्च तथा  
शल्यश्च मारिषः । भीमसेन रणे कुद्राक्ताद्याश्चक्रिरे शरैः ॥ २५ ॥ तथाभिमन्युः  
सकुद्धो द्रौपदेयाश्च मारिषः । विष्यन्निशितैर्वर्णैः सर्वोस्तानुद्यतायुधान् ॥ २६ ॥ द्रोण

इस के पीछे पराक्रमी राजादुर्योधन पूर्व दिनमें सेना समेत भाइयों के मरण को  
देखकर द्रोणाचार्यजी से बोला कि हे पापों से रहित आचार्यजी आप सदैव मेरा  
हित चाहनेवाले हो हम सब आपकी और भीष्मजी की रक्षामें होकर देवताओं को भी  
निरसन्देह युद्धमें विजय कर सकते हैं, युद्धमें बल पराक्रम रहित पांडवों को विजय  
करना कितनी बात है आपका कल्याण हो आपवही कामकरो जिसमें पांडव मारे  
जायें । २० । तदनन्तर आपके पुत्र के इसरीतिपर कहनेसे द्रोणाचार्य जीने सात्यकी  
के देखते हुए पांडवों की सेनाको बाणोंसे भेदा, इसके पीछे हे भरतवंशी सात्यकीने  
द्रोणाचार्य को रोका फिरतो महाघोररूप युद्धहोने लगा, फिर महामतापी द्रोणा  
चार्य ने अत्यन्त कोपयुक्त होकर सात्यकी को दश वारों से शत्रुस्थान में घायल  
किया इसके पीछे सात्यकी की रक्षा के निमित्त उसक्रोधरूप भीमसेन ने द्रोणा  
चार्य जी को बाणों से घेरा फिर द्रोणाचार्य भीष्म और शल्य ने बड़े बाणों से  
भीमसेन को दक दिया । २५ । इसके पीछे महाक्रोध भरे अभिमन्यु और द्रुपद के

Duryodhan, remembering the destruction of his brothers and warriors, said to Dronacharya — "Sinless acharya, you are always my well wisher. Protected by you and Bhishma we aspire to win even the gods in battle, how easy it is to conquer the weak Pandavas! Be careful to destroy the Pandavas" 20. Hearing the words of your son, Dronacharya pierced the armies of the Pandavas within sight of Satyaki. Then, O descendant of Bharat, Satyaki checked Dronacharya and the battle was dreadful in the extreme. Valiant Dronacharya in great anger, wounded Satyaki with ten arrows in the field of battle, and for the protection of Satyaki, Bhimsen wounded Dronacharya. Then Dronacharya, Bhishma and Shalya covered Bhim with their long arrows. 25. Then the enraged Abhimanyu and the sons of Drupad wounded those warriors with sharp arrows. Then the

भीष्मौ ॥ संकृद्धावातन्तौ महाबलौ । प्रत्यययौ शिखण्डीतु महेश्वासी महाहवे ॥२७॥  
 प्रमृष्ट बलवद्भीरौ धनुर्बलदनि ध्वनम् । अम्यवर्षकजोस्तूर्ण छादयानो दिवाकरम् २८॥  
 शिखण्डिन तमासाद्य भरतानां पितामह । अवर्ज्यन सग्राम स्त्रीम् तस्थानुसंस्मरन्  
 ॥ २९ ॥ तनो द्रोणो महाराज अभ्यद्रवत तरणे । रक्षमाणस्तदाभीष्म तव पुत्रेणचो  
 दितः ॥ ३० ॥ शिखण्डीतु समासाद्य द्रोणशस्त्रवृतापरम् । अवर्ज्यतसम्प्रस्तो यगा  
 स्ताग्निमिबोदयणम् ॥ ३१ ॥ ततो बलेन महता पुत्रस्तव विशाभते । जुगोप भीष्ममा  
 साद्य प्रार्थयानोनहयशः ॥ ३२ ॥ तथैव पाण्डवाराजन् पुरस्कृत्यघनजयम् । भीष्ममेवा  
 श्रयवर्त्तन जपे कृत्वा दृढामतिम् ॥ ३३ ॥ तद्युद्धमभवद् धीर देवाना दानवैरिव । जप  
 माकांक्षतां सत्ये यथाश्च सुमहादभुतम् ॥ ३४ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मार्धेण भीष्मवधपर्वणि पञ्चमदिवसयुद्धारम्भे

ऊन समलितमोऽध्यायः । ६९ ॥

पुत्रों ने उन सब शस्त्रधारियों को बड़े तीक्ष्ण बाणों से वेधा फिर महाधनुषधारी  
 शिखण्डी उनमहा क्रोधरूप अतुलपराक्रमी भीष्म और द्रोणाचार्य के सम्मुखगया,  
 बड़ीर शीघ्र ही बादलके समान गर्जना करतावड़े भारी धनुषको लिये बाणों से सूर्य  
 को ढककर तीव्रबाणों की वर्षाकरने लगा, फिर भरतवंशियों के पितामह भीष्मजी ने  
 इसरीति से शिखण्डीको सम्मुख पाकर उसके स्त्रीभावको स्मरणकरके उससे युद्ध  
 करना त्याग किया, हे महाराज इसके पीछे आपके पुत्रके कहनेसे भीष्मजी की  
 रक्षाकरते हुए द्रोणाचार्यजी संग्रामभूमिमें उसके सम्मुख दौड़े ॥३०॥ फिर श्रयभीत  
 शिखण्डी ने उनमहाशस्त्रोच्चा प्रलयकी अग्निके समान प्रकाशमान द्रोणाचार्य को  
 अच्छरीतिसे सम्मुखहोकर बोका, हे राजा इसके पीछे युद्धाभिलाषी आपके पुत्र ने  
 बड़ी सेना समेत भीष्मजी की रक्षाकी, और इसी रीति से पाण्डव अर्जुन को अगे  
 करके और विजयमें दृढ़ बुद्धि होकर भीष्मजी के सम्मुख हुए, वह ऐसा महावीर  
 युद्ध हुआ जैसा कि देव और दानवोंका संग्राम होता है उस युद्ध में विजयाभिलाषी  
 शूरवीरों कीबड़ीअपूर्व कीर्ति विख्यात हुई ३४ ॥

great archer Shikhandi faced the great warriors Bhishm and Drona  
 charya. That great warrior rolling like thunder, showered arrows  
 from his bow and covered the sun with them. Then Bhishm the  
 grandsire of the Kauravas, seeing Shikhandi before him and remember  
 ing his womanhood, ceased fighting. Then, at the request of your  
 son, Dronacharya rushed to face Shikhandi to protect Bhishm 30  
 Shikhandi, though terrified, resisted well the attack of Dronacharya  
 the great master of the use of weapons and glorious like the fire of  
 pralaya. Then, O king, your son desirous of fighting, protected  
 Bhishm with his great army. In a like manner, the Pandavas,  
 headed by Arjun and resolved on conquering, encountered Bhishm.  
 The battle raged as fierce as that between the gods and the Danavas  
 to the great fame of the warriors desirous of conquest. 340.

सजय उवाच ॥ अकरोत्तुमुलं युद्ध भीष्मः शान्तवदस्तदा । भीष्मेन मया दिव्यं  
न पुत्रांस्तारयितुं तव ॥ १ ॥ पूर्वाहणे तन् महारौद्रं रात्रां युद्धं मयर्तन । कुरूणां पांडवा-  
नाञ्च मुख्यशर विनाशनम् ॥ २ ॥ तस्मिन्धातुल संग्रामे घत्तमाने महामये । अमयत्तुमु-  
लः शब्दः संस्पृशन् गगनं महत् ॥ ३ ॥ नदद्भिश्च महानगैर्हृषमाणैश्चवाजिभिः । भेरी-  
शंख निनादैश्च तुमुल समपद्यन् ॥ ४ ॥ युयुत्सवस्ते विक्राग्ता विजयाप महाबलाः ।  
अन्योन्यमभि गर्जन्तो गोष्ठेष्विव महर्षभाः ॥ ५ ॥ शिरसां ग्राह्यमानानां समरे निशितैः  
शरैः । अदम्यदृष्टि रिक्षाकाशे यमूव भरतर्षभ ॥ ६ ॥ कुण्डलोष्णीपघातिणि ज्ञातृरूपोज्ज्व-  
लानि च । पतितानि स्म दृश्यन्ते शिरांसि भरतर्षभ ॥ ७ ॥ विशिखोन्मथिनैर्गान्धैर्बाहुभि-  
श्च सकांशुकैः । सदस्तांभरणैश्चान्यै रमवच्छादिना मही ॥ ८ ॥ कवचोपहितैर्गात्रैर्हस्ते  
श्च खमलैर्कृतैः । मुखैश्च चन्द्रसंकाशै रक्तान्तनयनैः शुभैः ॥ ९ ॥ गजवाजि मनुष्याणां

अध्याय ७० ॥

संजय बोले कि आप के पुत्रों की रक्षा चाहने वाले शांतनु भीष्मजी ने बड़ा  
कठिन युद्ध किया, वह बड़ा भारी युद्ध दिनके पूर्व भाग में पांडव और कौरवों  
के रानाओं का नाश करने वाला हुआ, उस बड़े भयानक सब को व्याकुल कर  
ने वाले महा घोर युद्ध के होनेपर आकाश को व्याप्त करने वाला महाघोर शब्द  
हुआ, और हाथियों की चिंहाड़ और घोड़ों के हिनहिनाहों से वह शब्द अत्यन्त  
कठोर होना, फिर वह पराक्रमी शूवीर विजयाभिलाषी होकर पृथ्वी पर युद्ध  
करतेहुए ऐसे गर्जे जैसे कि गौओं की शालाओं में बड़ी बड़े गर्जना करते हैं  
। ५ । हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ उस युद्ध में तीक्ष्ण बाणों से कटे हुए शिरों की  
ऐसी दृष्टिहुई जैसी कि आकाश से पापाणों की वर्षा होती है और बड़े सुन्दर  
मुनहरी कुरडल और मंडीलें पहरे हुए शिर पृथ्वी पर गिरे हुए दृष्टि गोधर हुए,  
विशिखों से भिदे हुए अंग और कुरडलपारी शिर और अनेक हाथों के भूषणों

## CHAPTER LXX

Sanjay: "Shantanu's son, Bhishma the wellwisher of your sons, fought a hard fight. The severe fighting in the early part of the day was destructive of the allies of the Kauravas and the Pandavas. At the commencement of that dreadful war, there was a great uproar which filled the firmament. The shrieking of elephants and the neighing of horses made the uproar yet more tremendous. The brave warriors, desirous of victory, roared so loud during the battle as bulls bellow in the midst of cows. 5. O best of the descendants of Bharat! the heads struck by sharp arrows fell thick like a shower of stones from the sky. Heads decked with beautiful gold earrings and turbans, were seen here and there on the ground. The bodies pierced through with darts, the heads adorned with earrings and various ornaments of hands covered the ground. The bodies decked with armour

सर्व गात्रैश्च भूपते । आसीन् सर्वा समास्तीर्णा महत्तैर्न दसुन्धरा ॥ १० ॥ रजो मेघैश्च  
 तुमुलैः शस्त्र विद्युत्प्रकाशिमि । आयुधानांच निर्धौपः स्तन धितु समो भवत् ॥ १० ॥  
 ससंमहारस्तुमुलः क्रदुकः शोणितोदकः । आवर्तत कुरूणांच पांडवानांच भात ॥ ११ ॥  
 तस्मिन्महाभये घोरं तुमुले लोमहर्षणे । बभूवुः शरवर्षाणि सन्निपा युद्ध दुर्मदाः ॥ १२ ॥  
 आक्षोभन् कुञ्जरास्तत्र शरवर्षं प्रतापिताः । तावकानांपरिषांच संगुणे भरतपंभ ॥ १४ ॥  
 संरक्षणांचधीराणां धीराणाम मितौ जसाम् । धनुर्धरा तल शब्देन न प्राप्तायत किंचन  
 ॥ १५ ॥ उत्थितेषु कवचेषु सवतः शोणितोदके । समरे पर्य घावन्त नृपा रिपुबधोद्यता  
 ॥ १६ ॥ शरशक्तिगदाभिस्ते खड्गैश्चानित तेजसः । निजघ्नुः समरे न्योन्यं शूरा परिष  
 दाहवः ॥ १७ ॥ द्रुपदः कुञ्जरायाश्च शरैर्विद्धा निरंकुशः । अश्वश्च पर्यघावन्त हताशौ  
 से पृथ्वी व्याप्तहोकर गुप्तसी होगई, हे राजा अंगों में कवच विभूषित भुजाचन्द्रमा के  
 समान मुख और लाल नेत्रों से और हाथी घोड़े और मनुष्यों के सब अंगों से सब  
 युद्धभूमि एक महूर्त में ही भरकर पूर्ण होगई । १०। धूलके कठिन बादलों में शस्त्ररूप  
 बिजली प्रकाशितथी और वहाँ शस्त्रों के शब्दोंसे बादलकी गर्जनासी होतीथी, हे राजा  
 कौरव और पांडवों के वह शस्त्रोंका परस्पर प्रहार महा कठिन सहने के अपोप  
 हुआ जिसमें रुधिर की नदी वह निकली उस महा भयानक घोर तुमुलवाले रोम  
 हर्षण युद्धमें दुर्मद सन्निधों ने बाणों के जालों को बरसाया, यहाँ बाणोंकी वर्षा से  
 अत्यन्त पीड़ामान् हाथी पुकारे और पाण्डवों के शूरवीर शस्त्रों से शोभित होकर  
 चारों ओर से दौड़े, अत्यन्त कोपयुक्त पराक्रमी शूरवीरों के धनुषों के टंकार  
 शब्दों से कुछभी नहीं जान पड़ताया । १५ । सब ओरसे जलरूप रुधिर के मय  
 में दिन शिर घोड़ों के उड़ने पर शत्रुओं के मारने को उपस्थित दूसरे राजालोग  
 चारोंओरको दौड़े, बड़ेतेजस्वी परिष के समान भुजाधारी वीरोंने युद्ध में बाणवरणी  
 गदा और खड्गों से परस्पर में एक को एक ने मारा, और बाणों से घायल हाथी  
 अंकुश के बिनाही इधर उधर घूमने लगे और जिनके सवार मारेगये ऐसे घोड़ेभी

the faces like the moon, the red eyes and the limbs of elephants, horses  
 and men, filled the whole field of battle. 10. Weapons shone like  
 lightning through the clouds of dust and clashed like thunder. The  
 mutual strokes of the Kauravas and the Pandavas, O king, were hard  
 to bear and a river of blood flowed down. In that hard contest the  
 brave warriors showered networks of arrows. With the shower of  
 arrows elephants shrank and the Pandav warriors armed with weapons  
 rushed from all sides. The twang of the bows of the surged  
 warriors deafened the ears. 15. Into that river of blood, the warriors  
 rushed upon those who were mounted on headless horses. The  
 brave warriors with their arms like clubs, discharged at one another  
 their arrows, spears, maces and swords. The elephants wounded by  
 arrows rushed hither and thither without the agency of the guard

द्वा दिशोऽर्धं ॥ १८ ॥ उत्पत्य निपतन्त्यग्रे शरघात प्रपीडिताः । तावकानां परेषां च  
 घोषा भरत सत्तम ॥ १९ ॥ बाह्यानामुत्तमांगानां कामुकानां च भारत । गदानां परिघा  
 नां च हस्तानां चोभ भिः सह ॥ २० ॥ पादानां भूषणानां च केशगणानां च संघशः । राशयस्तत्र  
 दृश्यन्ते भारत भीष्म भीमसमागमे ॥ २१ ॥ अश्वानां कुल्लराणां च रथानां च निर्वर्तिनाम् ।  
 सघातास्मदृश्यन्ते तत्र तत्र विश्वास्पते ॥ २२ ॥ गदामिरसिभिः प्रासेर्षणैश्च नत  
 पर्वभिः । जघ्नुः परस्परं तत्र क्षत्रियाः कालज गते ॥ २३ ॥ अपरे बाहुभिर्वीरा निमुद-  
 कुशलायुधि । बहुधा समसज्जन्ते आयसैः परिधैरिव ॥ २४ ॥ मुष्टिर्मर्जानुभिश्चैव तले  
 श्चैव विशां गते । अन्योन्यं जग्मिरे वीरास्तावकाः पाण्डवैः सह ॥ २५ ॥ पतितैः पात्य  
 मानैश्च विचेष्टद्भिश्च भूतले । घोरमायोधन जज्ञे तत्र तत्र जरेश्वर ॥ २६ ॥ धिरधारधि  
 नश्चात्र निस्त्रिंशश्चरधारिणः । अन्योन्यमभिघावन्त परस्परचप्रेणिनः ॥ २७ ॥ ततो दुर्यो  
 द्धो दिशोऽर्धं मे दौडते फिरतेथे, और कोई बाणों से पीड़ित होकर वदकर गिरते  
 थे और आपके व पांडवों के शूरीर भ्रमण करने लगे १९। पृथ्वीपर गिरे हुए बाण  
 बरली गदा खड्ग और परिघ जांघ और हाथों से युक्त चरण भूषण समेत कपड़ों  
 के तोड़े भीमसेन और भीष्मजी के सम्मुख पड़े हुए दृष्टिपट्टे हैं, हे राजा जहां तहां  
 दौड़ते हुए घोड़े और लौटते हुए हाथियों के समूह दृष्टिगोचर हुए, वहां काल के मेरित  
 क्षत्रियों ने गदा खड्ग प्रास और झुके हुए पर्ववाले बाणों से एकने एक को परस्पर  
 में मांड़ालां युद्ध में भुज चलकरने में कुशल शूरीर लोहे के परिघ समान अपनी  
 भुजाओं के द्वारा बहुत प्रकार से वड़े, हे राजा पांडवों के साथ आपके शूरीरों ने  
 मुष्टिका जानुतल और कीलों से भी परस्पर में घात किया २५। और जहां तहां  
 गिरे और गिराये हुए पृथ्वीपर चपेटा करने वाले शूरीरों से युद्धभूमि महा भयकारी  
 दीखने लगी, और रथी रथ में पृथक् अथवा वत्तम खड्ग के चारण करने वाले परस्पर  
 घातके आकांक्षी एक एक के सम्मुख दौड़े, तदनन्तर बहुत से कलिङ्ग दैतियों से  
 युक्त राजा दुर्योधन युद्ध में भीष्मजी श्री आगे करके पाण्डवों के सम्मुख वर्तमान

The riderless horses were seen running on all sides. Some wounded by  
 arrows rose and fell again, and the warriors of your sons and those of  
 the Pandavas reamed all through 19. The arrows, spears, maces, swords,  
 clubs, leg- and arms with ornaments and heaps of clothes were seen  
 before Bhishma and Bhima. Numbers of running horses and returning  
 elephants were to be seen all round. The warriors, urged on by Death  
 killed one another with their maces, swords and arrows. The brave  
 warriors, dexterous in the art of fighting, with their arms hard like  
 steel, rushed upon one another. Your warriors and those of the Pan-  
 davas too hit hard blows with their fists and legs 25. The warriors,  
 fallen on the ground made the scene hideous with their bodies mov-  
 ing in various manners. The charioteers deprived of chariots and the  
 swordsmen wishing to use their swords, rushed upon one another

घनो राजा कलिकैवैर्धुमिवृत । पुरस्कृत्य रणे भीष्म पाण्डवानभ्यवर्तत ॥ २८ ॥ तथैव  
पाण्डवाः सर्वे परिवार्ये वृकोदरम् । भीष्ममभ्यद्रवन् कुक्षस्ततो युद्धमवर्तत ॥ २९ ॥  
इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि संकुलपुट्टे

सप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७० ॥

सञ्जय उवाच । दृष्ट्वाभीष्मेण ससकान् भ्रातृनन्यांश्च पार्थिवान् । समभ्यवावृणां  
क्षेयमुद्यतास्त्रोघनञ्जयः ॥१॥ पाञ्चजन्यस्य निर्घोष धनुषो गाण्डिवस्य च । ध्वजश्च दृष्ट्वा  
पार्थस्य सदाशोभयमाविशत् ॥२॥ सिंहलांगूलमाकाशे ज्वलन्तमिव पर्वतम् । असञ्जमान  
वृक्षेषु घमकेत मिचोत्थितम् ॥३॥ बहुवर्णं विचित्रञ्च दिव्यं बानसोत्क्षणम् । अपश्याम  
महाराज ध्वज गाण्डीव धन्वनः ॥४॥ विद्युत् मेघमप्यस्थां आजमाना मिवाग्नये । ददृशु

हुआ, और इसी प्रकार युद्ध में क्रोधयुद्ध शीघ्रगामी सवारियों वाले सब पाण्डव  
भीमसेन को मध्य में करके भीष्मजी के सम्मुख दौड़े । २९ ॥

अध्याय ७१ ॥

संजय बोले कि भीष्मजी से युक्त भाइयों और अन्य बांधवों को देखकर  
अस्त्रधारी अर्जुन गांगेय भीष्म के सम्मुख दौड़ा फिर पांच जन्यशाल और  
गांडीव धनुषका शब्द सुनकर और अर्जुनकी ध्वजा को देखकर हमसब लोगों में  
भय उत्पन्न हुआ, हे महाराज हमने गांडीव धनुषधारी की उसध्वजा को आकाश  
में देखा जो सिंहलांगूलनाम आकाशमें प्रकाशित पर्वत समान वृक्षों में न हकने  
वाली ऊंची उठी हुई अनेक रंगों से युक्त थीहनुमान जीके चिह्न से अलंकृत थी,  
जैसे कि आकाशके बादलों में नियत शोभायमान विजली दिखाई देती है उसी  
प्रकार शम्बीरों ने भारी युद्ध में सुनहरी पृष्ठवाले गांडीवधनुष को देखा, फिर  
हमने इन्द्र के समान सम्मुख गर्जना करते और आपकी सेनाको मारते हुए अर्जुन  
के ननोंके महाघोर शब्दों को बारम्बारसुना, जैसे कठिन वायुयुक्त बादल विजली  
और अग्नि के साथ होता है उसी प्रकार अर्जुन ने चारों ओरसे बाणों की वर्षा से

Duryodhan accompanied with a large number of Kalingas led by  
Bhishm encountered the Pandavas. In a like manner the enraged  
Pandavas headed by Bhim, rushed upon Bhishm " 29.

### CHAPTER LXXI

Sanjaya : 'Sung the brothers and their kinsmen in company with  
Bhishm, Arjun armed with his weapons, encountered Bhishm the son  
of Ganga. Hearing of the sounds of the Gandiv bow and of the  
conch known as Panchjanya, and the sight of Arjun's banner, terr-  
fied us. We saw, O king, the banner of the wielder of the gander  
which like a lion's tail shon against the sky, which though lifted  
on high could not be a-tacted by trees and which was decorated with  
the figure of dhanu-m in different colours. The warriors saw in the  
he'l of battle the wielder of the golden Gandiv like lightning

गाण्डिवं योधा रुक्मपुष्टं महामृचे ॥ ५ ॥ अनुधुम भृशं चास्य शक्रस्येवामि गर्जतः ।  
 सुघोरं तलयोः शब्दं निप्रतस्तव वाहिनिम् ॥ ६ ॥ चण्डपातो यया मेघः सविद्युत् स्त  
 न यितुमान् । दिशः संप्लावयन्सर्वाः शपचपैः समन्ततः ॥ ७ ॥ असत्रयघावद्गाम्भी  
 रैरवाह्यो धनंजयः । दिवं प्राचीं प्रतीचीच न जर्जरीमोक्ष मोहिताः ॥ ८ ॥ कान्दिशुभ्राः  
 शान्तपत्रा हताभ्याहतचैतसः । अन्योन्यमग्नि संश्लिष्य योधास्ते भरतर्षभ ॥ ९ ॥ भीष्म  
 मेघाम्य लीयन्त सह सर्वैश्चतुर्भुजैः । तेषामाचार्योयमममूर्द्धीष्म शान्तनवो रणे ॥ १० ॥  
 समुत्तान्ति विप्रस्ता रथेभ्यो यधिनस्तथा । सादिगश्चाभ्य पृष्ठेभ्यो भूमौ चापि पदातयः  
 ॥ ११ ॥ सुधा गाण्डिव निघोषं विस्फूर्जित मिचाशनेः । सर्व सैव्यानि भीतानि द्यवा  
 लीयन्त भास्व ॥ १२ ॥ अथ काश्ये जजेरभ्वैर्महाङ्गिः शुभिगामिभिः । गोपानां घटुसाह  
 स्त्रैर्वल्लिगोपायनैर्वृतः ॥ १३ ॥ मद्रसौवीरगान्धारकैर्गर्जन् विशाम्पते । सर्वकालिङ्गमुखैश्च  
 कलिङ्गाधिपतिवृतः ॥ १४ ॥ नानामरगणैश्च दुःशासनपुत्रः । जपद्रुघव वृणुतः

दिशाओं को चलायमान कर दिया । ५ । भयानक अस्रवाला अर्जुन भीष्मजीके  
 सम्मुख दौड़ा उससमय हमने अस्त्रोंसे व्याकुल होकर पूर्वादि दिशाओं कोभीनहीं  
 पहचाना, हे भरतर्षभ आपके अचेत होने वाले शूरवीर जिनकी सवारी यकी और  
 घोड़े मरे वा किसी दशा में नियत थे, वहसब परस्पर में मिलकर आपके पुत्रों  
 समेत भीष्मजी केही आश्रय में होते थे और भीष्मजी उनकी रक्षा करते थे । १० ।  
 भयभीत रथी अपने रथों से और सवार घोड़े की पीठसे और पदाती पृथ्वीसे अत्य  
 न्त उछलते थे, हे भरतवंशी गांडीव धनुष के बज् के समान शब्दों को सुनकर सेना  
 के सब मनुष्यमारे भयके भागे, इसके पीछे राजा कालिंग बड़े शीघ्र गामी कांबोज  
 देशीय उत्तमघोड़ों के द्वारा गोपायन नाम गोपों की असंख्य सेनायुक्त मद्र सौवीर  
 गान्धार त्रिगर्तदेशी और कलिङ्गों की उत्तमसेनाके शूरवीरों समेत नानामकार की  
 सेनाओंके समूहों को साथ लिये जिनमें मुख्य दुःशासन या और सवराजाओं

in the clouds. 5. We heard again and again the dreadful sounds of  
 Arjun's claps thundering like Indra and killing your armies. He  
 filled with the shower of his arrows all the directions like a thunder-  
 storm of mixed clouds and lightning. Arjun the wielder of dreadful  
 weapons rushed against Bhishma and, distressed by his weapons we  
 could not distinguish the east from west. Your fainting warriors,  
 O king, with their animals tired and horses killed, rallied round Bhishma  
 for protection and he saved them from slaughter. 10. The terrified  
 charioteers jumped down from their chariots, the horsemen from their  
 horses and foot soldiers from the ground. Hearing the vajra like  
 sounds of the Gandiv bow the people of the army fled with terror.  
 Then the king of Kaling together with swift Cambojes and the num-  
 berless horsemen of the Gopayans, Bhadras, Sauvirs, Gandhars,  
 Trigarts and Kalingas with armies of different sorts, headed by Du-

सहित सर्वराजानि ॥ १५ ॥ इयारोहयरावैव तत्र युधेण चोदिताः । सप्तदशसहस्राणि  
 सौगले पथ्यवारयन् ॥ १६ ॥ ततस्ते सहिताः सर्वे विभक्तगणाहनाः । अर्जुन समरे  
 जघनस्त्रावका भरतयुग्म ॥ १७ ॥ रथिभिर्वारणैरग्नैः पार्श्वतैश्च समीरितम् । घोर  
 भार्योषने चक्रे महाप्रसहश रजः ॥ १८ ॥ तोमरप्रासनाराच गजाभ्यरणयोधिनम् ।  
 चलेन महता भीष्मः समसज्जन् किराटिना ॥ १९ ॥ आत्यन्तः काशिराजेन भीमसेनेन  
 सैन्ययः । अज्ञानशत्रुद्राणामृपभेण वंशस्थिना ॥ २० ॥ सहपुत्र सहामात्यः शल्येन  
 सममज्जत । विकर्णः सहदेवेन चित्रसेनः शिखण्डिना ॥ २१ ॥ मत्स्या दुष्योधनं जग्मुः  
 शकुनिश्च विशाम्पते । द्रुपदेकितानश्च सात्यकिश्चमहात्मा ॥ २२ ॥ द्रोणेन सममज्जत

समेत राजा जयद्रथ और आपके पुत्रके भेजे हुए चौदह हजार उत्तम भर्षा सवार  
 इन सबोंने चारोंओर से सौचलके पुत्रको मध्य में करालिया । १६ । इसके पीछे उन  
 सब पांडवोंने जिनके रथ और सवारियां बुद्धिके अनुसार विभाग युक्तर्था एकसाथ  
 ही आकर आपके शूरवीरों को मारा, रथी हाथी घोड़े और पदातियोंसे अच्छे प्रकार  
 से चलायमान युद्ध भूमि बड़े बादलों के समान धूलि से महा भयकारी विदित हुई  
 भीष्मजी तोमर प्रास नाराच और हाथी घोड़े रथों से युद्ध करनेवाली गूर वीरोंकी  
 सेना समेत अर्जुन से अत्यन्त लड़े राजा अवन्ती काशी के राजा के साथ और  
 भीमसेन जयद्रथ के साथ और राजा युधिष्ठिर पुत्र और कृपार्णों समेत मद्रदेश के  
 राजा शल्यके साथ अत्यन्त शूरतासे लड़े और विकर्ण सहदेवसे चित्रसेन शिखंडीमे  
 लड़ने लगा । २१ । हे राजा मत्स्यदेशी शूरवीर दुष्योधन और शकुनी के साथबड़े  
 पराक्रम करने वाले हुए और महारथी द्रुपद चेकितान और सात्यकी महात्मा द्रोणा  
 चार्य और उनके पुत्र से युद्ध करनेवाले हुए कृपाचार्य और कृतवर्मा दोनों हुए

shaman and all the kings with Jaydrath and the fourteen thousands  
 of horse sent by your son, surrounded the son of Surval on all sides.  
 16. Then the Pandavas whose chariots and ranks were divided in a  
 regular manner, at once rushed upon your warriors. With the cha-  
 riots, elephants, horses and foot soldiers the field of battle seemed  
 moving like clouds of dust dreadful to behold. Bhishm, accompanied  
 by an army of warriors, armed with Tombs, Pruses and arrows, and  
 mounted over elephants, horse and chariots, fought a severe fight  
 with Arjun. The king of Avanti fought with the king of Kaabi,  
 Bhimsen joined in combat with Jayadrath, and prince Yudhis-  
 thir, accompanied by sons and chiefs, fought bravely with the  
 king of Madra. Vikarn fought against Sahad e and Chitrasen  
 against Shikhardi. 21. The warriors of Matsya, O king, fought  
 bravely against Duryodhan and Shakuni. The great warriors,  
 Drupad, Chekitan and Satyaki fought against Dronacharya and his  
 son. Both Kripacharya and Kritarns rushed upon Dhrish-  
 ta-



सपुत्रेण महात्मना । कृष्ण कृतवर्मा च घृष्टघ्नमभिद्रुतौ ॥ २३ ॥ एवं प्रयाजिताभ्यानि  
 आतनागरथानि च । सैन्यानि समसज्जन्त प्रयुद्धानि समन्ततः ॥ २४ ॥ निरन्त्रं विद्युत्  
 स्तीव्रा दिशश्च रजसा वृताः । प्रादुरासन्महोत्काशं सनिर्घाताविशामपते ॥ २५ ॥  
 प्रादुर्भूतो महाबातः पांशुवर्षेण तच्च । नमस्यन्तर्दधे सूर्यः सैन्यं रजसावृतः ॥ २६ ॥  
 प्रमोहः सर्वसत्त्वानामतीव समपद्यत । रजसा चाभिभूतानामखजालैश्च तृचताम् ॥ २७ ॥  
 वीरवाहिविद्युष्टाणां सर्वावरणभेदिनाम् । सघातः शरजालानां तुमूलः समपद्यत ॥ २८ ॥  
 प्रकाशं बहुकाशानुचतानि भुजोत्तमैः । नक्षत्रविमलामानि शस्त्राणि भरतर्षभ ॥ २९ ॥  
 कार्यमाणि विचित्रानि रुक्मजालावृतानि च । सम्पेतुर्दिशु सर्वाणि चर्माणि भरतर्षभ ॥ ३० ॥  
 सूर्यवर्णैश्च निस्त्रिशोः पात्यमानानि सर्वशः । दिशु सर्वाश्च दृश्यन्त द्रागीणि  
 शिरांसि च ॥ ३१ ॥ मग्नचक्राक्षनिडोश्च निपातितमहाध्वजाः । हताभ्याः पृथिवीजामु  
 त्तत्र तत्र महारथाः ॥ ३२ ॥ परिपेतुर्हयाश्चात्र केषिच्छस्त्रशृङ्गप्रणाः । रथान्निपरिकर्षतां

घुम्नके सम्मुख दौड़े इसरीति से स्थान पर चारों ओर से ऐसे युद्ध होने लगे कि जिन  
 के घोड़े प्राणगत और हाथी रथ भ्रान्ति से युक्त हो गये हे राजा उस समय आकाश  
 में बिनाही बादलों के महातीव्र विद्युत्पात होने लगा और दिशा धूल से आच्छादित  
 होगई और महा उत्कापात होकर परस्पर में बड़े घोर शब्द प्रगट हुए । २५ । महा  
 वायु चलने लगा और धूलकी ऐसी मत्स्यन्त वर्षा हुई जिसके कारण सूर्य ढककर  
 आकाश में गुप्त हो गया, धूलसे छुपे हुए और अस्त्रों के जालों से लड़नेवाले सब  
 जीवों को बड़ी भवेतता प्राप्त हुई, वीरों की भुजाओं से छुटे सब पदों के भेदन करने  
 वाले वाणों के जालों से महाकठोर शब्द गतान्न हुए हे भरतर्षभ उत्तम भुजाओं से  
 उड़ाये हुए निर्मल नक्षत्रों के समान प्रकाशमान शस्त्रों ने आकाश को प्रकाशित  
 करा दिया, और सब दिशाओं में उत्तम मढ़ाऊ सुनहरी दासें पृथ्वी पर गिरिं । ३० ।  
 सब रीतों से सूर्य रूप खड्गों से गिराये हुए शरीर और शिरसव और को पड़े हुए  
 दिखाई दिये, जिनके पहिये भट और नीचे दृश्य थे और बड़ी र घ्वजायें गिर

dyumn. Thus in several places the warriors fought all round. Their horses were killed and the elephants became mad. At that time lightning flashed in the sky without clouds, the directions were filled with dust and the cinders fell down with a hissing sound. 25. The wind blew a gale and the storm of dust overp ead the sun in the sky. Covered with dust and fighting with arrows, the warriors became insensible. Discharged from the arms of the warriors, the network of arrows fell down with a crash. The weapons raised by powerful arms lit the firmament like shining stars. The good shields, decked with gems and gold, fell down on earth. 30 Killed by the swords, shining like the sun, the loches and heads of the warriors were seen lying in all directions. The huge chariots

वमौ । सरःसुनह्निर्नजातं विपक्वमिव कर्पताम् ॥ ४२ ॥ एवं संछादितं तत्र वभ्यामोचनं  
महत् । सादिमिध्वपदातैश्च सच्चर्जश्चमहारथैः ॥ ४३ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि संकुलयुद्धे  
एकसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७१ ॥

सत्रय वधाच्च ॥ शिखण्डी सह मत्स्येन विराटेन विशांपते । भीष्मगाशु गह्वेष्वास  
मासस्ताव सुदुर्जयम् ॥ १ ॥ द्रोणे कृतं विकर्णं च महेश्वासं महावलीम् । रातश्चान्धान्  
रथे शूरान् यदुगायर्छन्दमज्ञयः ॥ २ ॥ सैध्रयश्च महेश्वासं सामात्यं सह धनुमिः ।  
प्राच्यांश्च दक्षिणात्यांश्च भूमिपान् भूमिपंश्च ॥ ३ ॥ पुत्रञ्च ते गह्वेष्वासं दुर्योधनम्  
मर्षणम् । दुःसहस्रैव समरे भीमसेनोऽभ्यवर्तत ॥ ४ ॥ सहदेवस्तु शकुनिं सुलूकञ्च महा-  
रथम् । पितापुत्री महेश्वासावभ्यवर्तत दुर्जयौ ॥ ५ ॥ युधिष्ठिरो महाराज गजानीकं

हुए सत्र दिशाओं को दौड़े, उन खेंचनेवाले हाथियों का रूप ऐसा शोभित हुआ  
जैसे कि तड़ागों में लगे हुए सुन्दर कमलों के खेंचने वाले हाथियों का रूप  
शोभायमान होता है, वह युद्ध भूमि तयार पदाती और वड़े ध्वजावाले रथों से  
पूरित होगई ॥ ४३ ॥

अध्याय ७२ ॥

सत्रय बोले हे राजा शिखंडी ने मद्रके राजा विराट समेत बड़ी शीघ्रतासे महारथी  
दुःप्रवर्ष भीष्मजी से सम्मुखताकी और अर्जुन ने द्रोणाचार्य कृपाचार्य और राजा  
दुर्योधन के बहुत से बड़े धनुषधारी महावली शूरवीरोंको मोहित किया, हेराजनेन्द्र  
प्रधान और भाइयोंके साथ बड़े धनुषधारी राजासिंध और पूर्वी पश्चिमीय व आपके  
क्रोधीपुत्र बड़े धनुषधारी दुर्योधन आदि अन्य अनेक राजाओं के सम्मुख दस  
युद्धमें भीमसेन वर्तमान हुए और महारथी सहदेव शकुनी और सुलूक के सम्मुख  
हुए और वह बड़े धनुषधारी दुःप्रवर्ष-पितापुत्र भी सम्मुख वर्तमान हुए १५ । और

dragged them along with themselves rushing on in all directions. The  
elephants dragging the chariots looked beautiful like those dragging  
out lotus plants from a lake, and the field was strewn over with  
horsemen and the chariots with high banners " 43.

### CHAPTER LXXII

Sanjaya said to the king:—"Shikhandi and Prince Virat of Madra  
hastened to face invincible Bhishm, and Arjun made Dronacharya,  
Kripacharya and Prince Duryodhan with many other warriors insen-  
sible. And O king, Bhimsen, faced the great archers, the Kings of  
Sindhu—Eastern and Western, your enraged son Duryadhan the great  
archer and other princes. Brave Sahdev faced Shakuni, Uluk and  
the great Dushpradharsh archers, father and son 5. Brave Yudhisht-

दत्तेषु रथेषु चिपु ॥ ३३ ॥ शराहताभिश्च देहा बद्धयोक्ताहयोत्तमाः । युगानिपर्व्यकर्वन्त  
तत्र तत्र स्ममार्त ॥ ३४ ॥ बद्धान्त सख्नाश्च साध्वाः सत्पथोद्धितः । एकेन बलिना  
गजान् धारणेन विमर्दिताः ॥ ३५ ॥ गन्धहस्तिमदसूचमाघ्राय बहवो रणे । सन्निपाते  
बलाघानां धीतमादद्विरेगजाः ॥ ३६ ॥ सतोमरैर्महामात्रैर्निपतद्भिर्गतासुभिः । वभूवायो  
भ्यन्तुन्नं नाराचभिर्दत्तैर्गजैः ॥ ३७ ॥ सन्निपातेबलौघानां प्रेषितैर्धरधारणैः । निपेतुर्बुधि  
समग्नाः सयोधा सध्वजागजाः ॥ ३८ ॥ नागराजोपमैर्हस्तेर्नागैराक्षिप्यसंयुगे । व्यददय  
तमहाराजसंमग्नारथक्षराः ॥ ३९ ॥ विशर्णिरेषसंघाश्च केशेष्वक्षिप्यदन्तिभिः ।  
दुमशाखाद्वाविध्यनिधिघातघिनोरणे ॥ ४० ॥ रथेष्वच रथान् युद्धे संसक्तान्धरवारणाः ।  
विचर्षेतोदिशः सर्वाः संपेतु सर्वशब्दगाः ॥ ४१ ॥ तेषां तथा कर्षतांतु गजानांरूपमा-

पड़ी थीं वा घोड़े भी मरगये थे ऐसे बड़े २ रथ स्थान २ पर गिरे पड़े थे और कित  
ने ही घोड़े शस्त्रों से घायल हुए पृथ्वी में चारों ओर घूमते थे हे भरतवंशी बाणों  
से घायल देहवाले उत्तम घोड़े जिन के अंगोंपर ईषा दयद बंधाया उन्होंने जुआँको  
स्थान स्थान पर खेंचा । ३५ । उस युद्ध में कोई २ एकही बाण से सारथी घोड़े  
और रथ समेत मारे हुए शूरवीर दिखाई पड़े, सेना के समूहों के चढ़ाई होने पर  
बहुत से हाथियों ने हाथी के मद से निकली हुई गन्ध को सूंघकर वायु को भक्षण  
किया, और नाराचों से मारे हुए बड़े डील डौल वाले तोरनों समेत गिरे हुए मृतक  
हाथियों से युद्ध भूमि गुप्त होगई, फिर सेना के चलायमान होनेपर भागे हुए हाथि-  
यों ने घायल हुए दूसरे हाथी अपने शूरवीर सवारों समेत अवभोरसे पृथ्वीपर गिरे  
हे महाराज उमयुद्ध में गजराज के समान हाथियों की मूँड़ोंसे खिचकर रथोंकेकुब  
भ्रत्यन्तदूटे हुए दिखाईपड़े, जिनके रथों के जाल दूटे ऐसे रथी युद्ध में हलकी  
समान शिरके बालोंमें हाथियों से खिचकर और घायलहोके फैसगये और युद्ध में  
उत्तम हाथी रथों में चिपटे हुए रथोंको खेंचते सब हाथियों के शब्दों पर चलते

with broken yokes, wheels and banners and the horses killed fell here  
and there, and the horses wounded by weapons ran all round. The  
good horses wounded in their bodies decked with *Isha Dand*, dragged  
the yokes this way and that. 35 Some warriors were killed there—  
horses, driver and chariot all—with single arrows. With the ad-  
vance of the army, numbers of elephants sniffed in the air the stench  
coming out of the juice of elephants, and the ground was covered with  
the huge bodies of elephants fallen in battle. In the bustle of the  
battle, many elephants were wounded and fell down with their brave  
riders, by the rush of other elephants running away from the  
field. The chariots, dragged by the trunks of powerful elephants,  
were broken into pieces. The warriors, with their chariots broken  
down, were dragged by the hair and dashed on the ground by the ele-  
phants. In the field of battle the elephants clung to chariots and

यमौ । सरःसुनलिनीजालं विपकमिव कर्षयताम् ॥ ४२ ॥ एवं संछादितं तत्र यम्यापोघनं  
महत् । सादिभिश्च पदातैश्च सध्वजैश्च महारथैः ॥ ४३ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि संकुलयुद्धे  
एकसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७१ ॥

सञ्जय उवाच ॥ शिखण्डी सह मत्स्येन विराटेन विशाङ्गते । भीष्मनाशु महेश्वास  
माससाह सुदुर्लभम् ॥ १ ॥ द्रोणे कुरं विकर्णं च महेश्वासं महावलीम् । राक्षसान्मान्  
रथे शूरान् बहुगान्छन्दनञ्जयः ॥ २ ॥ सैन्धवञ्च महेश्वासं सामात्यं सह धनुमिः ।  
प्राच्यांश्च दक्षिणात्यंश्च भूमिपान् भूमिपर्वजम् ॥ ३ ॥ पुत्रञ्च ते महेश्वासं दुर्पोषतम  
मर्षणम् । दुःसहचैव समरे भीमसेनोऽयवर्तत ॥ ४ ॥ सहदेवस्तु शकुनि मुद्गफञ्च महा  
रथम् । पितापुत्री महेश्वासावश्च वर्तत दुर्जयौ ॥ ५ ॥ एभिष्टिरो महाराज गजानीकं

हुए सब दिशाओं को दौड़े, उन सैचनेवाले हाथियों का रूप ऐसा शोभित हुआ  
जैसे कि तड़ागों में लगे हुए सुन्दर कमलों के सैचने वाले हाथियों का रूप  
शोभायमान होता है, वह युद्ध भूमि सवार पदाती आरं वड़े ध्वजावाले रथों से  
पूरित होगई ॥ ४३ ॥

अध्याय ७२ ॥

संजय बोले हे राजा शिखंडी ने मदके राजा विराट समेत बड़ी शीघ्रतासे महारथी  
दुःप्रथर्ष भीष्मजी से सम्मुखताकी और अर्जुन ने द्रोणाचार्य कृपाचार्य और राजा  
दुर्योधन के बहुत से बड़े धनुषधारी महावली शूरवीरोंको मोहित किया, हेराजेन्द्र  
प्रधान और भाइयोंके साथ बड़े धनुषधारी राजासिंध और पूर्वी पश्चिमीय व आपके  
क्रीष्णीपुत्र बड़े धनुषधारी दुर्योधन आदि अन्य अनेक राजाओं के सम्मुख उस  
युद्धमें भीमसेन वर्तमान हुए और महारथी सहदेव शकुनी और उलूक के सम्मुख  
हुए और वह बड़े धनुषधारी दुःप्रथर्ष-पितापुत्र भी सम्मुख वर्तमान हुए ॥ ५ ॥ और

dragged them along with themselves rushing on in all directions. The  
elephants dragging the chariots looked beautiful like those dragging  
out lotus plants from a lake, and the field was strewn over with  
horsemen and the chariots with high banners" 43.

### CHAPTER LXXII

Sanjaya said to the king:—"Shikhandi and Prince Virat of Mandra  
hastened to face invincible Bhishm, and Arjun made Dronacharya,  
Kripacharya and Prince Duryodhan with many other warriors insen-  
sible. And O king, Bhimsen, faced the great archers, the Kings of  
Sindhu—Eastern and Western, your enraged son Duryadhan the great  
archer and other princes. Brave Sahdev faced Shakuni, Uluk and  
the great Dushpradharsh archers, father and son 5. Bravo Yudhish-

महारथ । समवर्तत सग्रामे पुत्रेण निकृत्तस्तव । ६ ॥ माद्रीपुत्रस्तु नकुल शूरसन्न  
दनीयुधि । त्रिगतोनावलैः साथ समसञ्जत पण्डव ॥ ७ ॥ अश्ववर्तन्तसकुन्ता समरे  
शावकेक्यान् । सात्वकिध्वेकितानथ सौमद्रथमहारथ । ८ ॥ धृष्टकेतुश्च समरे राक्षस  
धृष्टोत्कच । पुत्राणां ते रथानि प्रयुज्याता सुदुर्नया ॥ ९ ॥ सेनापतिरमेयात्मा धृष्ट  
द्युम्न महाबलः । द्रोणेन समरे राजन् समीपायोग्रकर्मेण ॥ १० ॥ एवमेते महेश्वासास्ता  
वका पाडयै सह । समेत्य समरे शूरा सम्प्रहात् प्रचक्रिरे ॥ ११ ॥ मध्यन्दिनगतैस्तु  
नमस्याकुलताङ्गते । कुरथ पाण्डवेयाथ निजघ्नन्तिरेतरम् ॥ १२ ॥ ध्वजिनो हेम  
ध्विनाङ्गा विचरन्तो रणाजिरे । सपत्न्या रथा रेजुर्वैद्यघ्नपरिवारणा ॥ १३ ॥ समेता  
नाच समरे जिगीषूणा परस्परम् । बभूव तु मण शब्दं सिंहातामिव नर्पताम् ॥ १४ ॥  
तत्राद्भुतमपश्याम सम्प्रहात् सुदारुणम् । यदकुर्वन् रणे शूरा सृज्या कुर्वन्ति स्म

आपके पुत्र से उगाहुआ महारथी युधिष्ठिर युद्धमें हाथियोंकी सेनाके सम्मुख वर्त  
मानहुआ, और युद्धमें गर्जनेवाला माद्रीनन्दन वीरनकुल त्रिगर्च देशियोंके वड़े रथोंसे  
युद्धकरनेवालाहुआ, और अजेय महाबली सात्वकी व चेकितान और अभिमन्यु यह  
तीनों शाल्य और केकय लोगोंसे युद्ध करने के लिये उपस्थित हुए और धृष्टकेतु  
व धृष्टोत्कच राक्षस युद्धमें आपके पुत्रों की रथाली सेनाके सम्मुख गये, हे राजा  
महारथी सेनापति धृष्टद्युम्न महाभयकारी कर्नकरता द्रोणाचार्यके सम्मुख नाभिडा  
। १० । इस प्रकार से आपके इतने घनुषधारी पराक्रमी शूरोंने पाडवों के सम्मुख  
होकर महारों को किया, दिवस में युद्ध के वर्तमान होने और आकाश में व्याकु  
लता होनेपर कौरव और पाडवों ने परस्पर मे गारना प्रारम्भ किया, और सुवर्ण  
जटित ध्वजा उस युद्धमें घूमने लगी और व्याघ्रचर्म से मढ़े हुए रथ और पताकाओं  
समेत महा शोभायुक्त हुए, युद्धमें भिडे हुए परस्पर विजयाभिलाषी सिंह के समान  
गर्जना करनेवाले शूरवीरों के महाक्रुद्ध शब्द होनेलगे, वहां हमने वड़े भयानक उस  
अपूर्व महार को देखा जिसको वड़े शूर वीर सृजय लोगों ने कौरवों के साथ किया

thir, he who was deceived by your son faced the line of elephants  
in the field of battle. The joy of Madri, Nal ul stood ready to fight  
against the great archers of Tugart. And invincible Satyaki of great  
strength Chekitan and Abumanyu all these three were ready to fight  
against the Shalyas and Kuryas. Dhrishtaketu and Ghatotkach  
the rakshas encountered the charoteers of your sons. Brave  
Dhrishtadyumna the great commander of armies fought bravely  
against Dronacharya. 10 Your brave archers attacked the Pandavas  
with their weapons. The fighting began when the sun had risen high  
on the sky. The golden bedecked banners fluttered in the sky and the  
bannered chariots covered with the lions hide looked very glorious.  
Brave warriors aspiring for victory roared like lions. We saw the  
brave deeds of Srinjayas in fighting against the Kauravas. 10 The

॥१५॥ मैव ये न दिशो राजशस्यै शत्रुनापन । विदिशो घायिषदयामः शरैर्भुक्तेऽमन्ततः ॥  
 ॥१६॥ शस्त्रीनां विमलाघ्राणां तीक्ष्णराणां तथास्यताम् । निदिशुनांच पीतानां नीलोत्पल-  
 निभाः प्रभाः ॥ १७ ॥ कवचाणां चिचिवाणां मूषणानां प्रभास्तथा । संदिशः प्रदिशयेव  
 मासयामासुरोजसा ॥ १८ ॥ चयुर्मिथ नरेन्द्राणां चन्द्रसूर्यसमप्रभैः । विराजत तदाराजं  
 स्तत्र तत्र रणाद्गनम् ॥ १९ ॥ रथसंघा नरव्याघ्राः समायांतथ संद्युगे । विरेजुः समरे  
 राजन् प्रदा ह्य नभस्तले ॥ २० ॥ भीष्मस्तु रथिनां श्रेष्ठो भीमसेनं महाबलम् ।  
 अचारयत सकुब्धः सर्वसैन्यस्य पद्गतः ॥ २१ ॥ ततो भीष्म विनिर्मुक्ता दम्भपुंसाः  
 शिरसाशिताः । अभ्यघ्नन् समरे भीमं तैलघौनाः सुतेजनाः ॥ २२ ॥ तस्य शक्तिं महा-  
 घेगां भीमसेनो महाबलः । कुह्याश्रीविपसंकाशां मेधयामास भारव ॥ २३ ॥ तामा-  
 पीतवतीं सहस्रा रुक्मदण्डां दुरासदाम् । चिरछेद समरे भीष्मः शरैः सप्रतपयमिः  
 ॥ २४ ॥ ततोपरेण भूतेन पीतेन निश्चितेन च । कार्मुकं भीमसेनस्य द्विधाचिरछेदमावत

। १५ । हे शत्रुहन्ता हमने चारों ओरसे छोड़े हुए बाणों के कारण आकाश सूर्य  
 दिशा विदिशा आदि किसीको नहीं देखा, तीक्ष्णधार वरछी और छोड़े हुए तीमर  
 और विषयुक्त नीले कमल के समान खड्गोंके और भड़ाऊ कवचोंके वा आभूषणों  
 के प्रकाश ने आकाश दिशा विदिशाओं को प्रकाशित करा दिया हे राजा उस समय  
 वह रणभूमे चंद्रमा सूर्य से प्रकाशमान मुखवाले राजाओं के शरीरों से शोभा-  
 मान हुई, हे राजा रथियों में श्रेष्ठ नरोत्तम युद्ध में जुड़े हुए उस युद्धमें ऐसे शोभाय-  
 मान विदित होते थे जैसे कि आकाश में ग्रहों समेत सूर्य चंद्रमा शोभा देने हैं २०  
 फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त महारथी भीष्मजी ने सब सेनाके देखते उस महावनी भीम-  
 सेन को रोका और अपने तीक्ष्ण शिरापर धिमे हुए सुंदर प्रकाशित सुवर्ण पुंखवाले  
 बाणों से उसके शरीरको घायलकिया हेभक्तवंशी फिर उस महावनी भीमसेनसे शीघ्र  
 गामी सूर्य के समान तीव्र वरछी को वड़े क्रोध कर के भीष्म के ऊपर फेंका, फिर  
 भीष्म ने उस मुनहरी दण्डवाली महा असह्य अकस्मात् गिरनेवाली वरछी को अपने

sun in the sky was hid from our view by the shower of arrows in all directions. The sharp edged spears, javelins, poisoned swords of the colour of blue lotus, the jewelled armours and ornaments shone in all directions. The battle field was glorious to behold on account of the sun and moon like faces of the kings. The best of warriors, O king, engaged in battle, looked lustrous like the luminaries in the sky. 20. Brave Bhishm, in great rage, checked brave Bhim within sight of all, and with his beautifully shining and elusped arrows furnished with golden feathers, wounded his body. Then O descendant of Bharat. Bhim threw his swift spear, brighter the sun, against Bhishm; but the latter cut down with his arrows containing hidden knots that unbearable spear of golden staff coming suddenly upon him,

॥ २५ ॥ सात्यकिस्तु ततस्तूर्णं भीष्ममासाद्यसमुगे । आकर्ण्यार्द्रितैस्तीक्ष्णैर्निशितैस्त्रि-  
 ग्मतज्जने ॥ २६ ॥ शरैर्वहुभिरानच्छेत् पितरं ते जनेश्वर । ततः सन्धाय वै तीक्ष्णं शर-  
 परमदारुणम् ॥ २७ ॥ चाण्यस्य रथाङ्गीं भीष्मपातयामास साधिमामतस्याम्बा ।  
 प्रदुताराजन्निहते रथसारथी ॥ २८ ॥ तेन तेनैव घावन्ति मनोमारतरहसः । ततः  
 सर्वस्य सैन्यस्य निस्वनस्तुमुलोभवत् ॥ २९ ॥ हाहाकारश्च सञ्जने पाण्डवानामहात्  
 मनाम् । अभिद्रवत् गृध्णतिहयान् यच्छतधावत ॥ ३० ॥ इत्यासीत्तुमुलशब्दो युयुधानं  
 रथमति । एतस्मिन्नेव काले तु भीष्मशान्तनवस्तदा ॥ ३१ ॥ न्यहनत् पाण्डवोत्तम-  
 मासुरी निघ वृत्रहा । ते घघ्यमानाभीष्मेण पाञ्चाला सोमकै सह ॥ ३२ ॥ स्थिरांगुदे-  
 मर्ति कृत्या भीष्ममेवामिदुद्बुधः । घृष्टस्ममुखाश्चापि पार्था शान्तनव रणे ॥ ३३ ॥

गुप्तग्रन्थीवाले चाणों से काटा, तदनन्तर अपने तीक्ष्ण पतिरंगवाले भस्म से भीमसेन  
 के धनुष को काटा ॥ २५ ॥ इसके पीछे सात्यकी ने भीष्मजी के सम्मुख आकर बड़े वेग से  
 कानोंतक वैचे हुए तीक्ष्ण प्रकाशित चाणों से आप के पिता को मोहित कर दिया फिर  
 भीष्मजी ने बड़े भयानक तीक्ष्ण चाणको चढ़ाकर सात्यकी के सारथी को रथ से गिराया  
 हे राजा सारथी के मरनेपर उसके घोड़े मन और वायुकी गतीके समान इधर उधर  
 दौड़ने लगे, इस के पीछे सम्पूर्ण सेना में कठिन शब्द प्रकटहुआ और महात्मा  
 पाण्डवोंका हाहाकार उत्पन्न हुआ । ३० । चलो दौड़ो घोड़ों को धामो यह कठोर  
 शब्द केवल सात्यकी के रथ के विषय में हुआ फिर उसी समय शान्तनुके पुत्र भीष्म  
 जी ने पाण्डवों की सेनाको ऐसे मारा जैसे कि असुरों की सेनाको इंद्र मारता है,  
 वह पांचाल देशी सोमकों समेत भीष्म के हाथ से घायल युद्ध में उच्चम बुद्धिको  
 करके भीष्म के सम्मुख दौड़े और अग्रगामी घृष्टस्म समेत पाण्डव भी आपके  
 पुत्रकी सेना के मारने की इच्छा से उस भीष्म के सम्मुख दौड़े, हे राजा इसी प्रकार

and with his dart of yellow colour he cut down Bhishm's bow 25 Then  
 Satyaki coming suddenly upon Bhishm, your father made him  
 insensible with his sharp bright arrows discharged from his bow drawn  
 to the ear Bhishm put up his dreadful sharp arrow to his bow  
 and with it he caused the chariot driver of Satyaki to fall down  
 from his seat on the chariot At the death of the driver the horses  
 ran hither and thither with the speed of the mind or the wind and  
 the noise was tremendous throughout the army of the Pandavas 30  
 "Come, run, check the horses" were the cries on all sides regarding  
 the chariot of Satyaki In the meantime Bhishm destroyed the army  
 of the Pandavas as Indra does the asuras The Panchals with the  
 Somakas, wounded by Bhishm, thought it wise to run away from the  
 presence of Bhishm The Pandav armies, headed by Dhrishadyumna-

अभ्यधावन् जिगीषतस्तवपुत्रस्य चाहिनीम् । तथैव कौरवा राजन् भीष्मद्रेणपुरोगताः ॥ ३४ ॥ अभ्यधावन्त वेगेन ततो युद्धमवर्त्तत ॥ ३५ ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि द्वन्द्वयुद्धे  
सप्तमोऽध्यायः ७२॥

सञ्जय उवाच । विराटोऽपि धिक्निर्वाणैर्भीष्ममर्द्धेन महारथम् । विद्योऽन्तुरगांवात्प  
त्रिभिर्वाणिमहारथः ॥ १ ॥ त प्रत्यविध्यद्दशमिर्भीष्मः शान्तनयः शरैः । रुक्मपुत्रैर्मह  
बासः कृतहस्तो महायुधः ॥ २ ॥ द्रुपिर्गण्डीपयन्वानं भीष्मधन्वामहारथः । अविध्यद्विषु  
भिः पद्भिरुद्धस्तः स्तनान्तरे ॥ ३ ॥ कर्णुकंतस्य चिच्छेद फाल्गुनः परवीरहा । अविध्यष  
भुवः तीक्ष्णैः पत्रिभिः शक्रकरीनः ॥ ४ ॥ सौम्यत् कर्मुक्तादाय वेगवान् क्रोधमूर्च्छितः ।  
अमृष्यमाणः पाथेन कर्मुक्छेदमाहवे ॥ ५ ॥ अविध्यत् फाल्गुन राजन् नवाः पानिशितैः

आपके भीष्म आदिक वीर भी पाण्डवों के संमुख बड़े वेगसे दौड़े और युद्ध  
होने लगा ॥ ३४ ॥

अध्याय ॥ ७१ ॥

संजय बोले कि इसके पीछे राजा विराट ने तीन पाणों से महारथी भीष्म  
को मोहित किया और भीष्म ने अपने तीनवाणों से उसके घोड़ों को घायल करके  
अपने तीक्ष्ण दश वाणों से उसको घायल किया और बड़े धनुषधारी महारथी द्रु  
प इत अश्वत्यामा ने छः वाणों से अर्जुन की छाती को घायल किया फिर शत्रुओं  
के मारनेवाले और घलसे हीन करनेवाले अर्जुनने उसके धनुष को काटकर बड़े तीक्ष्ण  
वाणों से उसको घायल किया । ३ । हे राजा उस वेगवान् क्रोध से मूर्च्छित युद्धमें  
अर्जुनके हाथ से दृढ़दृष्टे धनुषको असह्य मानकर अश्वत्यामा ने दूसरे धनुष को  
लेकर, नौ तीक्ष्ण वाणों से अर्जुन को घायल किया और रुक्म तेजव.णों से वासु

encountered Bhishma to destroy the armies of your sons. Your  
warriors too, joined in fighting and the battle was furious." 34.

### CHAPTER LXII

Sanjaya continued:—"King Virat made brave Bhishma insensible  
with three arrows and the latter having wounded his horses with three  
arrows, shot at him ten more. Hard Landed Ashwathama wounded  
Arjun in the breast with six arrows, and the latter, destroyer of ene-  
mies cut down his bow and wounded him with his sharp arrows. 3.  
Furious with anger, Ashwathama could not bear the high hard darts  
of Arjun in cutting down his bow and having taken up another,  
wounded him with nine sharp arrows and Vasudev with  
seventy. With his eyes red in anger and with deep sighs and care  
worn face on account of Vasudev, Arjun pressed hard the Gandiv



शरैः । घासुदंश्च सप्तत्या विद्युद्यध परमेपुमि ॥ ६ ॥ ततः क्रोधाग्नि ताप्राक्तः कृष्णेन  
मह फालगुन । दीर्घमण्डल निःश्वस्य चिन्तयित्वा पुनः ॥ ७ ॥ धनुः प्रपीड्य धामेन  
करेणान्निवर्तनः । गाण्डीवधन्वासंकुहः शितान् सन्नतपर्वणः ॥ ८ ॥ जीवितात्करान्  
घोरान् मगादस शिलीमुखान् । तैस्तूर्ण समरोविध्यद्रौर्गि वलवताम्बरः ॥ ९ ॥ तस्य  
ते कवचं भित्वापुः शोणितमाहवे । तज्जिघ्र्येच निमिषो द्रौणिगाण्डीवधन्वना ॥ १० ॥  
तथैव च शरान् द्रोणि । प्रविमुञ्चन्निवृत्तः । तस्यैव स समरे राजंस्त्रातुमिच्छन्  
महाव्रतम् ॥ ११ ॥ तस्य तत् सुमहत्कर्म शशस्रुः कुरुसत्तमाः । यत् कृष्णाश्यां समेताश्या  
मभ्यापततसंयुगे ॥ १२ ॥ स हि मित्यमनीके युध्वातेऽभयमास्थितः । अस्त्रप्रामे  
ससंहारं द्रोणात् प्राप्य सुदुर्लभम् ॥ १३ ॥ ममैष आचार्य सुतो द्रोणस्यापि प्रियः  
सुतः । ब्राह्मणश्च विशेषेण माननीयो ममेति च ॥ १४ ॥ समास्थाय मतिं धीरो  
धीमस्तुः शस्त्रापातः । कृपाञ्चक्र रथश्रेष्ठो भारद्वाजसुत प्रति ॥ १५ ॥ द्रौणिं त्यक्त्वा  
ततो युद्धे कौन्तेयः श्वेतवाहनः । धृष्टकेतावकाभिर्घत्स्वरमाणः पराक्रमी ॥ १६ ॥

देवजी को घायल किया, इसके पीछे श्रीकृष्णजी समेत क्रोध से लाल नेत्र अर्जुन  
ने बड़ी लम्बी उष्ण श्वासें लेकर बारम्बार बड़ी चिन्ता युक्त होकर वाम हाथ  
से गांड़ीव धनुष को बहुतसा दबाकर गुप्तग्रन्थी युक्त जीवनके नाश करने वाले  
भयानक शिर्षमुख नाम बाणों को धनुष पर चढ़ाया और बड़ी शीघ्रता से उन  
बाणों के द्वारा अश्वत्थामा को घायल किया, उन बाणों ने युद्ध में उसके कवच  
को काटकर उसके रुधिर को पान किया फिर अर्जुनसे घायल किया हुआ पीढ़ामान  
अश्वत्थामाभी उसी रीति के अर्जुन को बाण मारता हुआ और महाव्रत भीष्म-  
जीकी रक्षाकरता हुआ बड़े धैर्य से युद्धमें नियतरहा । १० । उसके उस महाकर्म  
को देखकर कौरवों ने बड़ी मशंशा की जो युद्ध में श्रीकृष्ण के संमुख दौड़ा, और  
द्रौणाचार्य से अतिदुःप्राप्य संहार समेत अस्त्र समूहों को पाकर भयभीत सेना में  
युद्ध करने वाले शत्रु संपाती वीर अर्जुन ने इस बात को विचार करके कि यहमेरे  
गुरुका पुत्र गुरुको अत्यन्त प्यारा और मुख्यकर ब्राह्मण होकर मेरापूजनीय है उस  
को अवश्य जानकर नहीं मारा । १५ । इसके पीछे श्वेत अश्ववाला शीघ्रकर्मी अर्जुन

bow with his left hand, put on his Low dreadful arrows having hid-  
den knots destructive of life, and with them he wounded Ashwathama in great haste. The arrows thus shot pierced through his armour  
and drank his blood. Wounded by Arjun's arrows, Ashwathama  
shot his arrows in turn and stood firmly for the protection of Bhishm.  
10. The Kauravas highly praised his brave deed as he had assailed  
Shree Krishna. Arjun spared his life because he was worthy of res-  
pect as a Brahman and was the dearly loved son of Dronacharya  
from whom he (Arjun) had acquired the knowledge of arms so difficult  
of achieving. 15. Then dexterous Arjun, the possessor of white  
horses, left Ashwathama and engaged in fighting against and killing

दुर्योधनस्तु दशभिर्वाणैः पञ्च-शिलाशितैः । भीमसेनं महेष्वासं रुद्रमण्डलैः समर्पयत् ॥ १७ ॥ भीमसेनः सुसंकुद्धः परासुरकरणं दृढम् । चित्रं कार्मुकभादत्तं दशान्धं निशितान्दश ॥ १८ ॥ आकर्णप्रहिर्नैस्तीक्ष्णैर्वैगवद्भिरजित्वाणैः । अविध्यत्तुर्गमद्वयः कुरुराजं महोरति ॥ १९ ॥ तस्य काञ्चनसूत्रस्थः धरैः छद्वादितोमणिः । रराजोरसि स्ये सूर्यो ग्रहेरिव समावृतः ॥ २० ॥ पुत्रन्तु न च तेजस्वी भीमसेनेन ताडितः । नामृष्यत यथा नागस्तलशब्दमदोक्तः ॥ २१ ॥ ततः शरैर्महाकाजरुद्रमण्डलैः शिलाशितैः । भामं विव्याधसंकुद्धस्त्रासयान्ते वदन्निनीम् ॥ २२ ॥ तौ युध्मनामौ समरे मृशमन्योन्यविस्तौ । पुत्रौ ते देवसङ्काशौ व्यरोचनामहाबलौ ॥ २३ ॥ चित्रसेनं नरव्याघ्रं सौमद्रः पत्नीहृत् । अविध्यदशभिर्वाणैः पुरुभिर्ब्रह्म सतामिः ॥ २४ ॥ सत्यव्रतश्च सतत्या विशाशक्रसमो युधि । नृत्यन्निघ रणे धीर आसिं न समजीजनत् ॥ २५ ॥

युद्धमें अश्वत्थामा को छोड़कर आपके शूरवीरों को मारता हुआ युद्ध में प्रवृत्त हुआ फिर दुर्योधन ने शूद्रपक्ष युक्त सुनहरी पुंस्तशिलापर तीक्ष्ण किये हुए दश वाणों से बड़ेबली धनुषधारी भीमसेन को घायल किया, तब अन्यन्त कोपित भीमसेनने मृत्यु कारक रत्नोंसे जड़ित बड़े दृढ़ धनुष को हाथ में लिया और दश तीक्ष्णवाणों को चढ़ाकर बड़ी शीघ्रतासे अधिक खेंच कर राजा दुर्योधनको छाती में घायल किया, उसकी सुवर्णित सूत्र से बँधी हुई छाती की मणिवाणों से संयुक्त होकर ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि आकाशमें ग्रहोंसे व्याप्त सूर्य्य होनाहै, २० फिर भीमसेन से घायल आपके तेजस्वी पुत्रने ऐमे नहीं सहा जैसे कि हाथ की हथेली के शब्द से जागाहुआ सर्प शान्तनहीं होता है, हे महाराज सेनाकी रक्षा करनेवाले अत्यन्त क्रोधयुक्त दुर्योधन ने सुनहरी पुंस्तके पैनेकिये हुए वाणों से भीमसेन को घायल किया, फिर आप के वह दोनों महाबली पुत्र युद्ध में लड़ते और परस्परघायल करते देवताओं के समान शोभायमान हुए, और नरोत्तम शत्रुहन्ता अभिमन्युने सात तीक्ष्णवाणों से चित्रसेन और पुरुभिन्नको घायल किया फिर युद्ध में नृत्यकरते इन्द्रके समान पराक्रमी अभिमन्युने सत्तरवाणों से सत्यव्रतको घायल करके हम लोगोंको पीड़ित किया । २५ । चित्रसेनने शिलीमुख नाम दशवाणोंसे और

your other warriors. Then Duryodhan wounded Bhim the great warrior and archer with his ten arrows sharpened on stone having gold feathers and vulture quills stuck in them. The latter, in a rage took up his fatal bow decked with gems, and drawing it swiftly and more closely he wounded the former with ten sharp arrows in the breast. The gold thread of his breast jewel, pierced with arrows looked beautiful like the sun surrounded by stars. 20. Your glorious son could not bear being wounded by Bhim like a serpent awakened by the clap of hand. Duryodhan the protector of armies, in a great rage, wounded Bhimsen with his sharpened arrows having gold feathers. Both your sons, fighting with and wounding each other look-

त प्र यस्मिन् महाशक्तिश्चित्रसेनः शिलामुखः । सत्यव्रतश्च नयामि- पुरुमित्रश्च सतमि  
॥ २६ ॥ स विद्धो विश्वरत्नकः शत्रुसवारणमहत् । चिच्छेत् चित्रसेनस्य चित्र कर्मक  
माहुनि ॥ २७ ॥ निष्वा चास्य सनुनाण शरेणो रस्यताडयत् । ततस्ते तावकावीरा  
राजपुत्रामहात्मा ॥ २८ ॥ समेत्ययुधि सरम्घा विन्यधुनि शितै शरैः । ताश्च ध्वान्  
शरस्तक्षिणैर्जव न परम ह्यभित ॥ २९ ॥ तस्य दृष्ट्वा तु तत्त्वम् परिव्रजन्तुतास्तथ ।  
ददन्त समरे सैन्य घनेकत्र यथोत्थणम् ॥ ३० ॥ अपेतशिशिरे कालं समिद्धमिव  
पावकम् । अत्रोचत सौमद्रस्तव सैन्यानि नाशयन् ॥ ३१ ॥ तत्तस्य चरितं दृष्ट्वा  
पौत्र-तस्त विशास्यते । लक्ष्मणोऽप्यतत्तूर्णं सात्वतीपुत्रमादधे ॥ ३२ ॥ अभिमन्यु

सत्यव्रतने नत्र घाणोसे पुरुभिन्ने सातवर्णो से उसको घायल किया, उस घायल  
और कविर को डालने वाले अभिमन्युने चित्रसेनके उस जड़ाक शत्रुओंके हथाने  
वाले बड़े धनुषको काटा, और बाणही से उसके कवचको काटकर छातीमें घायल  
किया फिर आपके उन महावर्ण राजकुमारों ने और महारथियों ने भी उसको  
अपने तीक्ष्ण बाणोंसे घायल किया फिर उस महा अस्त्रजने उन सबकोभी अपने  
तीक्ष्ण बाणोंसे घायल किया, फिर युद्धमें महाकुदके समान आपके वीरोंके जलाने  
वाले उस अभिमन्यु के उस कर्मको आपके पुत्रों ने देखकर उसको चारों ओर से  
घेराडिया, । ३० । चैत्र वैशाखकी तीव्र अग्नि के समान अभिमन्यु आपकी सेना  
को नाश करता बड़ा शोभित हुआ, हे राजा आपका पौत्र लक्ष्मण उस चरित्र को  
देखकर शीघ्रही अभिमन्यु के सम्मुख आभिड़ा, फिर अत्यन्त कोपित अभिमन्युने  
शुभ लक्षण वाले लक्ष्मणको छाः विगृह्णोसे और सारथी को तीनबाणों से पीड़ा  
मान किया । ३१ । हे महाराज धृतराष्ट्र उसी प्रकार से लक्ष्मण ने भी अपने

ed glorious like gods And Abhimanyu the best of men and destroyer  
of foes wounded Chitrissen and Purumitra with seven sharp arrows  
Then dancing in the battle field full of prowess like Indra, Abhimanyu  
wounded Satyabrata with seventy arrows and gave us much  
trouble 35 Chitrissen wounded him with ten arrows sharpened on  
stone, Satyabrata with nine and Purumitra with seven Abhimanyu,  
wounded and bleeding, cut down Chitrissen's bow, jew bedecked and  
destroyer of enemies, and with the same arrow, piercing through  
his armour, wounded him in the breast. Then your brave sons and  
warriors too, wounded him with their sharp arrows and that great  
warrior wounded them with their sharp arrows. Then seeing the  
great bravery of enraged Abhimanyu the destroyer of foes, your sons  
surrounded him on all sides. 30 Lal o the fierce fire of the Spring,  
Abhimanyu looked very glorious when he destroyed your armies  
Seeing his brave deeds, O king, your grandson Lakshman came at  
once before Abhimanyu and fought with him Abhimanyu thereupon,

रतुसंकुद्धोलक्ष्मणं शुभलक्षणम् । विव्याध निशितैः पशुभिः सारथिञ्च त्रिभिः शरैः ॥ ३३ ॥  
तथैव लक्ष्मणो राजन् सोमद्रं निशितैः शरैः । अविष्यत महापतिं तद्दधुन मियाभ  
धत् ॥ ३४ ॥ तस्याभ्यासतुरो हत्वा सारथिञ्च महाबलः । अश्वद्वयं सौमद्रो लक्ष्मणं  
निशितैः शरैः ॥ ३५ ॥ हताश्वे तु रथे तिष्ठन् लक्ष्मणः परवीरहा । शक्तिं चित्तेऽपि संकुर्यः  
सौमद्रस्य रथं प्रति ॥ ३६ ॥ तामापतन्तो सदसाघोररुपांदुरासदाम् । अभिगम्युः शरैः  
स्तीक्ष्णैश्चिच्छेद भुजगोपमाम् ॥ ३७ ॥ ततः स्वरथमारोप्य लक्ष्मणं गौतमस्तदा । अपो  
षाह रथेनाग्री सर्वैस्सैन्यस्य गश्पतः ॥ ३८ ॥ ततः समाकुले तस्मिन् यतमाने महामये ।  
अश्वद्वयं जिघांसन्तः परस्परचपैर्युगैः ॥ ३९ ॥ तावकाश्च गच्छेत्तानाः पाण्डवाश्च  
महात्माः । जुह्वन्तः समरे प्राणान् निजघ्नुरितरेतरम् ॥ ४० ॥ मुक्तकेशा विक्रमचा  
धिरयाश्विभक्तार्मुकाः । पाशुभिः समयुध्यन्त सृजयाः कुरुभिः सह ॥ ४१ ॥ ततो भीष्मो  
महाबाहूः पाण्डवानां महात्मनाम् । सेनां जघान संकुद्धो दिव्यैस्सर्वहायलः

बाणों से अभिमन्यु को ऐसा घायल किया जिसके देखने से आश्चर्यसा होना है  
फिर महारथी अभिमन्यु उसके चारों घोड़ों को सारथी समेत मारकर लक्ष्मण के  
समुल दौड़ा, फिर मृतक घोड़ों के रथपर नियत शत्रु के वीरों के पागलेवाले  
अत्यन्त क्रोधित लक्ष्मण ने अभिमन्यु के रथपर बरछीको फेंका, अभिमन्यु ने उस  
भयानक रूप अतृप्तर्पाकृति मानेवाली बरछी को अपने तीव्र बाणों से काटा,  
फिर कृपाचार्य जी लक्ष्मण को अपने रथपर बैठाकर सयसेना के देखते हुए  
उसको रथके द्वारा दूर लेगये, फिर बड़े भयकारी तुल्य युद्धके वर्तमान होनेपर  
परस्पर विजयाभिलाषी शूरवीर एक एकको मारतेहुए सम्मुख दौड़े, आपके बड़े  
धनुषधारी और महारथी पांडव युद्धमें बाणोंको होमने हुए परस्पर में मारने लगे  
फिर छेदेवालकवचरहित दूरे धनुष शृंजय लोग अपनी भुजाओं से तीरों से अत्यन्त  
युद्ध करने वाले हुए, तदनन्तर महाबाहु भीष्मजी ने बड़े क्रोध युक्त होकर अपने

in great rage, wounded Lakshman with six darts and his chariot driver with three. Lakshman too, in the same manner, O Ling Dhritrashtra, wounded Abhimanyu in a wonderful way. Thereupon Abhimanyu killed all his four horses and the driver and rushed upon him. Seated on the chariot of which the horses were dead, enraged Lakshman the destroyer of foes, hurled a spear at the chariot of Abhimanyu. The latter cut down with his arrows the unbearable spear coming towards him like a serpent. Kripacharya then seated Lakshman on his own chariot and carried him far away from the sight of the enemy. Then there was a severe fighting and the warriors desirous of victory rushed against one another killing and destroying. Your great archers and the Pandav warriors, careless of their lives fought bravely, and with dishevelled hair and destitute of armour and with broken bows the Srinjayas and Kauravas fought a hard contested

॥ ४२ ॥ हतेऽध्वरैर्गजेस्तत्र नरेरध्वैश्च पातितै । राधिभि सादिभिश्चैव समास्ती  
र्यत मेदिनी ॥ ४३ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मपर्वणोऽष्टमोऽध्यायः ॥ ७३ ॥

सञ्जय उवाच । अपराजित् महाबाहु सात्यकिर्युद्धदुर्मद । विह्वल्य बाणं स्वमे  
मारसाहमनुत्तमम् ॥ १ ॥ प्रामुख्यं सस्युक्तान् शगनाग्निविषोपमान् । प्रगाढं ऋषुचित्रश्च  
दर्शयन् हस्तलाघवम् ॥ २ ॥ तस्य विक्षिपतश्चाप शरानन्याश्च सुच्यत । आदद् नश्य  
भूयश्च सन्दधानस्य चापरान् ॥ ३ ॥ क्षिपतश्च परास्तस्य रणे शत्रून् विनिघ्नत । ददरो  
रूपमस्यार्धं मेघस्येव प्रवर्षत ॥ ४ ॥ तमुदीर्यन्तमालोक्य राजा दुर्म्योधनस्ततः । रथाना  
मयुत तस्य प्रेषयामास भारत ॥ ५ ॥ तास्तु सर्धान्महेष्वासान् सात्यकिः सायविक्रमः ।  
जघान परमेष्वासो दिव्येनास्त्रेण घर्षिषान् ॥ ६ ॥ स कृत्वा दक्षिण कर्म प्रगृहीतशर  
स्तन । आससाह ततो वीरो भूरिधवलमाहवे ॥ ७ ॥ स हि स दृश्य सेनाते युयुधानेन

दिव्यभस्त्रों से महात्मा पांडवों की सेनाको मारा, उस समय विनाश भी के हाथी  
मनुष्य घोड़ों के वा रथी और अश्वारूढ़ों के गिरने से युद्धभूमि अत्यन्त व्याप्त होगई ॥

अध्याय ७४ ॥

संजय बोले हे राजा फिर युद्धमें दुर्मद महाबाहु सात्यकी ने अपने उग्र धनुषको  
खेंचकर, अपनी हस्तलाघवता को दिखाते सपुत्र सर्पाकृति वीक्षण बाणों को छोड़ते  
और बड़ी शीघ्रता से अनेक बाणों को फेंकते शत्रुओं को मारते हुए सात्यकी  
का ऐसा रूप दिखाई दिया जैसे कि अत्यन्त बरसते हुए बादलका रूप दिखाई  
देता है, फिर राजा दुर्म्योधन ने उस गर्जने वाले सात्यकीको देखकर उसके ऊपर  
दशहजार रथियोंको भेजा ॥ ५ ॥ फिर सत्य विक्रम महाबली उग्रधनुषधारी सात्यकी ने  
अपने दिव्यास्त्रों से उन बड़े २ धनुषधारियोंको मारा, फिर इसवीर धनुषधारी ने  
महा कठिन कर्मको कर के भूरिधवा को सम्मुख पाया, वह कौरवों की कीर्तिक्र

batle : Then brave Bhishm, in great anger, discharged his celestial  
weapons at the Pandav army At this the field was strewn over with  
the bodies of the riderless elephants, men, horses and char oters" 43

### CHAPTER LXXIV

Sanjaya to Dhritrashtra — 'Satyaki the best of warriors, Drawing  
his bow and showing the dexterity of his hand, discharged feathered  
arrows of the form of snakes, and with great rapidity discharging  
many arrows and destroying the enemies, Satyaki's form appeared like  
that of a raining cloud. Prince Duryodhan, seeing that roaring Sat  
yaki, sent ten thousands of charioteers against him 5 But Satyaki  
the great archer of true prowess killed those great archers with his  
arrows And the brave archer in doing that deed of valour, found

प नितार्म् । अभ्यधातु संकुलः कुरुणां कीर्तिवर्धनः ॥ ८ ॥ इन्द्रायुधसवर्णं तु वि-  
स्कार्य सुमहद्वज्रः । सृष्टवान्वज्रसङ्गं शान् शरानादीनिपिपीपमान् ॥ ९ ॥ सहस्रशो महाराज  
दर्शयन् पाण्डिनीययम् । शरान् शतान्मृत्युसंस्पर्शान् सात्यकेयपदान्गता ॥ १० ॥ न विप्रेदुस्तदा  
राजन् दुष्टयुक्ते समन्ततः । विहाय सत्यार्कं राजन् समरे युद्धदुर्मदम् ॥ ११ ॥  
तं दृष्ट्वा युयुधानस्य सुता दैश महाबला । महारथा समावृतास्त्रिध्रुवर्मा युधध्वजाः  
॥ १२ ॥ समासाय महेष्वासं भूरिश्रवसमाहवे । ऊचुः सर्वे सुसंरब्धा यूयकैर्तु महारणे  
॥ १३ ॥ भो भो कौरवदायाद सदास्मानिमहाबल । यहि युध्यस्य संग्रामे समस्तैः पृथगे  
चेया ॥ १४ ॥ अस्मान् वा त्वम्पराजित्य यथाः प्राप्स्यसि सयुगे । वयं वा त्वां पराजित्य  
मीति धास्यामेहे पितुः ॥ १५ ॥ यच्च मुक्तस्तदा शूरेस्तानुवाच महाबलः । धीर्य्यस्त्राघी  
नरत्नेष्टस्तान् दृष्ट्वासमपरिस्थितान् ॥ १६ ॥ साध्विदं कथ्य ते वीरा यद्येयं मति रचयः ।

बढ़ाने वाला भूरिश्रवा उस सेनाको सात्यकी के हाथ से पीड़ित देखकर बड़ा  
क्रोध युक्त हो के सम्मुख दौड़ा हे राजा उसनेभी अपनी हस्तलाचवता को दिखाकर  
इन्द्र चक्र के समान धनुष को टंकारकर सपों के समान वज्र के सहस्र हजारों बाणों  
को छोड़ा, और सात्यकी के साथी शूर वीर उनमृत्यु के समान स्पर्श वाले बाणों  
को नहीं सहसके और सब उसदुर्मद सात्यकी को युद्धमें अकेलाही छोड़कर चारों  
ओर को भागे । ११ । फिर सात्यकी के बड़े धनुषधारी महारथी कवचों से  
शोभित देश पुत्रों ने उस सेना को भागता देखकर बड़ा क्रोधित होके उम यूधध्वज  
बड़े धनुषधारी भूरिश्रवाके सम्मुख होकर बोले, हे कौरवों के प्यारे पुत्र महाबली  
आओ और युद्धमें हमसबों के साथ अथवा जुटे २ के साथ युद्ध को करो, तुमसं-  
ग्राममें हमको विजय करके कीर्तिवानहोगे अथवा हम तुमको विजय करके पिताको  
आनन्द देंगे, तबउन शूरवीरों से ऐसा कहा हुआ अपने बलसे प्रशंसा पाने वाला  
नरोत्तम महाबली भूरिश्रवा उनको सम्मुख नियत देखकर बोला । १६ । हे वीरलो

Bhurishrava before him. Bhurishrava the perpetuator of the fame of the Kauravas, seeing the destruction of the Kauravas, rushed upon him in a rage. And showing the dexterity of his hand and twanging his bow like the vajra of India, discharged thousands of arrows like vajra or snakes. The warriors who accompanied Satyaki, could not bear the wounds of those fatal arrows and ran away in all directions, leaving Satyaki alone 11. Then the ten brave sons of Satyaki, great archers sheathed in armour, seeing the flight of the army, faced the great archer Bhurishrava and said,—“Darling of the Kauravas! come and fight with us jointly or separately. Either you will gain fame by conquering us or we shall please father by conquering you.” Thus challenged by these warriors, the famous warrior Bhurishrava the best of men, seeing them in his presence, said, 16 “Well, warriors!

युधामन्युः साहिता यत्ता निह निध्यामि घो रणे ॥ १७ ॥ एवमुक्तामहेष्वास्ते वीराः क्षिप्र  
कारिणः । महता शस्त्रवैषेण व्यधधावन्नन्दिमम् ॥ १८ ॥ खोपराहणे महाराज सग्राम  
स्तुमुलो भवत् । एकस्यच वट्नां च समेतानां रणाजिरे ॥ १९ ॥ तमेकं रथिनां श्रेष्ठं शरै  
स्ते समदा फिरन् । शत्रुपीव यथा मेघं सिपिचुर्जलदानृष ॥ २० ॥ तैस्तु मुक्तान् शरान्  
घोरान् यमदण्डा शनिप्रभान् । असम्प्राप्ता न स श्रान्तविच्छेदाशुमहारथः ॥ २१ ॥ परि  
वार्य महापाहुः निहन्तुमुपचक्रमु । सौमदस्तिस्ततः दृष्टस्तेषां चापाणि भात ॥ २२ ॥  
चिच्छेत् समरे राजन् युध्व मानो महारथैः । ते हता न्यपतन् राजन् वज्रभगता इष  
दुमा ॥ २३ ॥ तान् दृष्ट्वा निहतान् वीरां रणे पुत्रान्महाबलान् । क्षाण्यो विनदन् राजन्

गो यह बहुत उत्तम है जो अवतुम्हारी ऐसीही इच्छा है तो हमसे सब इकट्ठे होकर  
लड़ो मैं युद्ध में तुमसब उपाय करने वालों को मारुंगा, ऐसे परस्पर कहकर बड़े  
धनुषपारी शीघ्रता करने वाले शत्रुओंके पराजय करनेवाले उन वीरों ने बाणों की  
वर्षाचारों ओरसे की हे महाराज तीसरे पहर तक एक का बहुतों के साथ महा युद्ध  
हुआ फिर इन सबोंने उस रथियों में श्रेष्ठ अकेले को बाणों से दक कर ऐसा  
सींचा जैसा कि वर्षा ऋतु में सुमेरु पर्वत को बादल सींचते हैं । २० । उस  
भ्रान्ति रहित महारथी ने उन सबों के छोड़े हुए यमदण्ड वा इन्द्र वज्र के समान  
प्रकाशित बाणसमूहों को पड़ी शीघ्रता पूर्वक मार्ग में ही काटा, हे राजा हमने  
वहाँ पर सोमदत्त के पुत्र भूरिश्रवाके अद्भुत पराक्रम को देखा कि जो अकेलाही  
निर्भयके समान अनेकों से लड़ा, दश महारथियों ने बाणोंकी वर्षाको छोड़कर  
उस महाबाहुको चारोंओरसे घेरकर मारनेका विचारकिया, हे भरतर्षभ तब तो महा  
रथी भूरिश्रवा ने अत्यन्त कोपयुक्त होकर एक निमिषही में अपने दश बाणों से  
उनके दशों धनुषों को काटा, तदनन्तर इन दूढ़े धनुषवाले वीरोंके शिरों को अपने  
गुप्तग्रन्थी वाले भस्त्रोंमे काटबाला, वह मारकर पृथ्वीपर ऐसे गिरे जैसे कि वज्रमे

I shall gratify your desire by fighting with you all at once." Thus  
bandying words with one another, those great and dexterous warriors,  
destroyers of foes, showered their arrows from all sides. The one O  
king, fought against many till afternoon and they all covered him  
with the shower of their arrows as the clouds do Sumeru mountains.  
20 That warrior with a calm and collected mind, cut down all their  
arrows like the vajra of Indra or the staff of Yama, in the way. There  
we saw, O king, the matchless prowess of Somdatta's son Bhurishra-  
va who alone, like an intrepid warrior, fought against many. Then  
the ten warriors, stopping their shower of arrows, surrounded him from  
all sides in order to kill him. Thereupon, Bhurishrava in great rage  
cut down in a trice the ten bows of those warriors with ten of his  
arrows and then cut down their heads with his arrows having hidden

भूरिश्रव सम्मम्ययार्त् ॥ २४ ॥ रथं रथेन समरे गाडयित्वा महाबली । तच्चन्योद्यं हि  
समरे निहरय रथचाजिनः ॥ २५ ॥ विरथा यमिवर्ज्यन्तौ समेयास्तौ महारथौ । मनुजानमहा  
यद्गौ तौ चर्म चरधारिणौ ॥ २६ ॥ युधुमाते नग्व्याघ्रौ युद्धाय समवस्थितौ । ततः  
सात्यकि मथ्येत्य भिक्षिशयधारिणम् ॥ २७ ॥ भीमसेनस्तस्मान् राजन् रथ मारोपयत्  
तदा । तद्यापि तनयो राजन् भूरिश्रव समाह्वये ॥ २८ ॥ आर्णवपद्मं तूर्णं पश्यतां सर्व  
घनिनाम् । तस्मिन्स्थेया वस्तेमाने रथे भीष्मे महारथम् ॥ २९ ॥ अये घनन्त संस्थाः  
पाण्डवा भरतर्षभ । लोहितापति च्चदित्ये त्वरमाणो घनद्वयः ॥ ३० ॥ पञ्चविंशति  
साहस्राग्निजघान महारथम् । ते हि दुर्धौघनाद्विष्टाभ्यन्तर्वा पाण्डवहर्णे ॥ ३१ ॥ सम्प्रा-  
प्येय गतां नाश शलमादितपायकम् । ततो मत्स्याः केकयाध घनुर्वेदघिशारदाः ॥ ३२ ॥

दूटे हुए वन पृथ्वी पर गिरते हैं, हे राजा युद्धमें मरे हुए महाबली वीर पुत्रों को  
देखकर, बड़ी गर्जना करता हुआ सात्यकी भूरिश्रवा के सम्मुख गया और दोनों  
महाबली युद्ध में रथ से रथ को टक्कर देकर रथोंके घोड़ोंको परस्पर मार विरथ  
होके सम्मुख गर्भते हुए अद्भुत युद्ध करने लगे, फिर वह बड़े खड्ग और दासोंको  
धारण किये हुए युद्धमें प्रवृत्त महा शोभायमान हुए । २६ । हे राजा इस के पीछे  
भीमसेन ने उत्तम खड्ग धारी सात्यकी के पास आकर उनको रथपर सवाराकिया  
फिर आपके पुत्र ने भी सब धनुष धारियों के देखने हुए शीघ्रही भूरिश्रवा को रथ  
पर सवाराकिया, हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ इस प्रकार से उस युद्ध के प्रवृत्त होनेपर  
महा क्रोधित पांडव और भीष्मजी भी युद्ध में प्रवृत्त हुए, सूर्य के अदृश होने  
पर बड़ी शीघ्रता करने वाले अर्जुन ने पच्चीस हजार महारथियों को मारा । ३०।  
फिर वह दुर्योधन की आज्ञा से अर्जुन के मारनेकी इच्छा में अर्जुन को नपाकरही  
ऐसे नष्ट होगये जैसे कि अग्नि में टींड़ीमत्स्य होजाती हैं, इस पीछे घनुर्वेदमें पांडव  
मत्स्य और केकया ने आकर पुत्रसमेत अर्जुनकी चारों ओर के रक्षाकी फिर

knots. They fell dead on the ground like trees struck down by light-  
ning. Seeing his brave sons dead in the field of battle, O king,  
Satyaki faced Bhurishrava with a tremendous roar. The two war-  
riors then dashed their chariots against each other, and having killed  
each other's horses, they dismounted from their chariots and continued  
their duel. Both looked very glorious with their shields and swords.  
26. Then O king, Bhimsen came to Satyaki the wielder of good sword  
and mounted him on his own chariot. Your son too, within sight of  
all the warriors, took Bhurishrava on his own chariot. When the  
battle was thus raging, O best of the descendants of Bharat, the en-  
raged Pandavas and Bhishm joined in combat. Before sunset Arjun  
had destroyed twentyfive thousands of warriors. 30. They had come by  
Duryodhan's order to destroy Arjun but unable to have their hands on  
him they were themselves destroyed in the attempt as the locusts in



परिवृष्टदा पार्थ सहयुवं महारथम् । एतन्निधेय कालेन सूर्यस्तमुपगच्छति ॥ ३१ ॥  
 सर्वेषां चैव सैन्यानां प्रमोहः समजायत । अवहारं ततश्चक्रे पिताश्वमेवमस्तव ॥ ३४ ॥  
 सन्ध्याकाले महाराज सैन्यानां श्रोतवाहनम् । पाण्डवानां कुरूणाञ्च परस्परसंमगमे  
 ॥ ३५ ॥ ते सेने भृशसंविभे ययतु स्वभिर्देशनम् । ततः स्वशिविरकृत्वा न्यविशंस्तत्रंभारत ।  
 पाण्डवाश्च पार्थैः सार्धं पुरवद्य यथाविधि ॥ ३६ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि पंचमदिवसावहारे  
 चतुःसप्ततितमोऽध्यायः ७४ ॥

अच्छे प्रकारसें उठी हुई धूल के बादलों से सूर्यास्तसा होगया उस समय सूर्यास्त  
 के कारण सेना में बड़ा मोह उत्पन्न हुआ, इस के पीछे हे महाराज, आपके पिता  
 देवव्रतगिनके घोड़े थके हुए थे उन भीष्मजी ने सायंकालके समय सेनाको विभाम  
 दिया, पाण्डव और कौरवों के परस्पर युद्धसे अत्यंत व्याकुल वह दोनों ओर की  
 सेना अपने निवासस्थान को गई, इसके पीछे मंजियों समेत पाण्डव और कौरव युद्ध  
 के अनुसार अपने २ ढेरोंमें जाकर स्थित हुए ॥ ३६ ॥

file. Then the great niches of Matsya of Knikaya, protected Arjun and his son from all sides. The sun at that time was so covered with the rising dust that it appeared as if he was about to set and the armies became insensible on account of the darkness. Then, O king, your father Devabrat whose horses were tired, issued orders to them to rest for the night. Both the armies depressed much on account of the excessive fighting between the Kauravas and the Pandavas, retired as well as the Kauravas and entered their tents." 36.



सञ्जय उवाच । तेष्विधम्य ततो राजन् सहिता दुर्योधनस्य वाः । व्यतीतायातुश्च ॥  
 पुनर्युद्धायनिर्णयः ॥ १ ॥ तत्रशब्दो महानासीत्तत्र तेषां च मरतः । युद्धतारयमुपयाना  
 कल्पना चैव दत्तिनाम् ॥ २ ॥ सनह्यतापदानां हयानाञ्चैव मरतः । शपद्दुभि तादृश  
 तुमल सर्थतोभवत् ॥ ३ ॥ ततो युधिष्ठिरो राजा धृष्टद्युम्नमापत् । व्यूहव्यूहमहाबाहो  
 मकरशयुनाशम् ॥ ४ ॥ एवमुक्तस्तु पाँचन धृष्टद्युम्नो महारथः व्यादिदेशमहाराज  
 रथिनोरथिनां च ॥ ५ ॥ शिरोमूढद्रुपदस्तस्य पांडवश्च न जयः । धनुषी सहदेवश्च  
 नकुलश्च महारथः ॥ ६ ॥ त्रुडमासीन् महाराज भीमसेनो महारथः । भीमद्रोणोऽप्येव  
 राक्षसश्च घटोत्कचः ॥ ७ ॥ सात्यकि धर्मराजश्च व्यूहग्रीवासमास्थितः । धृष्टमासीन्महा  
 राज विराटोऽप्यहिनीपतिः ॥ ८ ॥ धृष्टद्युम्नेन सहितो महारथसेनवानृतः । केकप्रातर  
 पञ्चघामपार्श्वे समाश्रिताः ॥ ९ ॥ धृष्टकेतुर्न्यायप्रबोधिना नक्षत्रधीयान् । दक्षिणपक्षमा

आन्यायः । ७९ ॥

संजय बोले हे राजा फिर वह कौरव पांडव रात्रि को व्यतीत करके प्रातः  
 कालही युद्ध करने को चले, इसके पीछे उन पांडवों के और आप के पुत्रों के  
 उत्तम रथों के जुड़ते हुए घोड़ों के महा शब्द होने लगे और सब ओरमें शंख वा  
 दुन्दुभियों के कठिन शब्द भी सुनाई दिये तब राजा युधिष्ठिरने धृष्टद्युम्न से कहा  
 कि हेमहाबाहु तुम मकरव्यूहको तैयार करो वह व्यूह शत्रुओं का संतप्त करनेवाला  
 है, युधिष्ठिर की आज्ञा पातेही उस महारथी धृष्टद्युम्न ने रथी शूरावीरोंको आज्ञा की  
 उस व्यूहका शिर तो राजा द्रुपद और अर्जुन हुआ और नेत्रमें महारथी नकुल  
 और सहदेव हुए । ६ । और मुखमें महा बली भीमसेन हुआ और व्यूहकी ग्रीवा में  
 अभिमन्यु द्रौपदी के पाँचो पुत्र घटोत्कच राक्षस, सात्यकी, और धर्मराज हुए और  
 पीठ पर बड़ी सेना युक्त सेनापति धृष्टद्युम्न और विराट उपस्थित हुए और  
 वाम भागमें पाँचों भाई केकय वर्तमान हुए, और नरोत्तम धृष्टकेतु और पराक्रमी

### CHAPTER LXXV

"At the close of the night," continued Sanjaya, "early in the morn-  
 ing, the Kauravas and the Pandavas started for fighting. The horses  
 which drew the chariots of the Pandavas and those of your sons, made  
 a tremendous noise with their neighing. The peals from the conchs  
 and trumpets were yet more prominent. Then Prince Yudhishtir  
 thus addressed Dhrishtadyumna—"Arrange your armies in the form  
 of a crocodile great warrior, thy army will destroy the enemies." At  
 Yudhishtir's command, Dhrishtadyumna arranged the warriors. King  
 Drupad and Arjun were stationed at the head, and Nakul and Saha-  
 dev formed the eyes. 6 At the mouth stood brave Bhim and at  
 the neck were Abhimanyu, the five sons of Draupadi, Gha'otkach the  
 rakshas, Satyaki and Yudhishtir. On the back were stationed Dhrish-  
 tadyumna the commander and Virat with a large army. On the left

धिरय स्थितोऽयुहस्वरक्षणे । १० ॥ पादयोस्तु महाराज स्थित श्रीमान्महाराज । कुन्ति  
भोज शतानीको महत्य सेनयावृत ॥ ११ ॥ शिखंडीतुमहेष्वास सोमकै सवृतावली ।  
इरावाश्चतत पच्छेमकास्य व्यवस्थितौ ॥ १२ ॥ एवमेव महाऽयुहं व्यूहभारतपादवाः ।  
सूर्योदये महाराज पुनर्दुष्टायदक्षिता ॥ १३ ॥ कौरवान्प्रयुस्तूर्ण हस्त्यभरणपत्तिभिः ।  
समन्त्रिणैर्ध्वजैश्छत्रैः शस्त्रमविमलैश्चितैः ॥ १४ ॥ व्युद्धट्यन्तु तत्सैन्यं पितृदेव  
प्रतस्तय । क्रौंचेनमहताराजन् प्रत्यव्यूहतथाहिनीम् ॥ १५ ॥ तस्यनुडेमहेष्वासो भारद्वाजो  
व्यरोचत । अश्वत्थामाहपश्चैव चक्षुरासीन्नरेश्वर ॥ १६ ॥ कृतवर्मातु सहित कावोजवर  
वाहिकैः । शिरःपासीनाश्रेष्ठ श्रेष्ठ सर्वेधनुःपताम् ॥ १७ ॥ श्रीवायादूरसेनश्च तव  
पुत्रश्चमारिष । दुर्योधनोमहाऽराजगजमिवेदुर्भिवृतः ॥ १८ ॥ प्राग्योतिषातु सहितोमद्रसौ  
वीरकरुये । उरस्यभूश्रश्चेष्ट महत्यासेनयावृत ॥ १९ ॥ स्वसेनयाच सहित पुशर्मा

वैकितान दक्षिण पक्षमे नियत होकर व्यूहके दक्षिण ओर नियत हुए । १० ।  
और हे राजा बड़ी सेना समेत श्री मान महारथी कुन्तभोज और शतानीक व्यूहके  
चरणों पर स्थिर हुए, फिर बड़ा धनुषधारी बलवान् शिखंडीसोमकों समेत और  
राजा इरावान् उम मकरव्यूहको पूछपर नियत हुए, इस रीति से मकरव्यूहको  
रचकर सूर्य के उदय होनेपर सब पांडव फिर युद्ध करने को शस्त्रधारी होकर  
व्यवस्थित हुए और रथ हाथी घोड़े और बड़ी ऊंची ध्वजा वाले क्षत्रियों से युक्त  
सब प्रकार के स्वच्छ अस्त्रों समेत कौरवों के सम्मुख गये, हे धृतराष्ट्र आपके पिता  
भीष्मजी ने उस अलंकृत सेनाको देखकर अपनी सेनाको भी क्रौंच नामदेव्यूह में  
पड़ी रचना से बनाया । १५ । उसके मुखपर बड़े धनुर्धर द्रोणाचार्य और नेत्रोंपर  
अश्वत्थामा और कृपाचार्य हुए और शिरकी और कृतवर्मा वालीक और काम्बो-  
ज वाले हुए, और भीवा में सब राजाओं समेत आपका पुत्र दुर्योधन और शूरसेन  
नियत हुए, और बड़ी सेनासमेत राजा प्राग्योतिष भट और केकयोंसमेत सौवीर

wing were the five Kurukya brothers, and Dhrishtaketu the best of  
men with brave Chekitan was stationed on the right wing 10  
And brave kuntibhoj and Shatanik stood, O king, at the feet of that  
array Then the great archer Shikhandi together with the Somak  
and King Iravan stood at the tail Thus having arrayed the army  
in the form of a crocodile the Pandavas armed with weapons stood  
ready to fight at sunrise and with chariots, elephants, horses and  
warriors having high banners and well polished weapons they faced  
the Kauravas And seeing O king, that well arranged army, your  
father Bhishm formed his armies into an array named Kraunch 15  
At its mouth was the great archer Dronacharya and Ashwathama  
and Kripicharya were at the eyes At its head were Kritvarma,  
Vahlik and the Cambojes and at the neck was Duryodhan your son  
together with all the princes and Shursen King Pragjyotish with a

प्रस्थलाधिपः । यामपक्षं समाश्रित्य दक्षिणं समवास्थितः ॥ २० ॥ तुषारा यवगाश्चैव  
शकाश्चसह च्युतुर्षु । दक्षिणं पक्षमाश्रित्य स्थिताव्यूहस्य भारतः ॥ २१ ॥ भुतायुश्च  
शतायुश्च सोमदत्तिश्च मारिषः । व्यूहस्य जघनेतस्थुः क्षमाणा परस्परम् ॥ २२ ॥  
ततो युद्धाय सज्जन्तु पाण्डवाः । कौरवैः सह । सूर्योदये महाराज युद्धमभ्युत्तहत् ॥ २३ ॥  
प्रतीपं रथिनो नामा नामाश्च रथिनोययुः । हयारोहान् रथारोहा रथिनश्चापि सादिनः  
॥ २४ ॥ सादिनश्च हयान् राजान् रथिनश्च महारणे । हस्त्यारोहान् हयारोहा रथिनः  
सादिनस्तथा ॥ २५ ॥ रथिनः पश्चिभिः सार्द्धं सादिनश्चापि पश्चिभिः । अन्योन्यं समरे  
राजान् प्रत्यघावन्नमोपता ॥ २६ ॥ भीमसेनार्जुनयमैर्गुप्ताश्च यैर्महाधैः । शुशुभेपाडवी  
तेना नक्षत्रेणिविशर्वरी ॥ २७ ॥ तथा भीष्मरूपद्रोणशल्यदुर्योधनादीभिः । तत्रापि

छातीपर नियत हुआ और मस्थल, देशका राजा सुशर्मा अपनी सेना समेत बायें भाग में शर्शों को धारण करके नियत हुआ । २० । और तुषारयवन और शक चोल्कों समेत व्यूहके दाहिने भाग में बड़ी मावधानी से बर्त्तनान हुए, और श्रुतायु शतायु सोमदत्त मारिष यह सब, व्यूहकी जंघापर रक्षा करनेवाले हुए इसके पीछे हे राजा सूर्यके उदय होने पर पाण्डव कौरवोंके समूह युद्ध के निमित्त चने फिर युद्धहोना आरम्भ हुआ, हाथी रथियों के सम्मुख गये और रथी हाथियों के सम्मुख हुए अश्वारूढ़ अश्वारूढ़ों के और रथी अश्वारूढ़ों के और अश्वारूढ़ घोड़ों के सम्मुख पहुँचे और हाथी हाथीके सवारों से और रथी रथियोंके सम्मुख उपस्थित हुए हे राजा रथि और अश्वारूढ़ पक्षियों से युद्ध करने लगे और युद्धमें महान्नोषित होकर परस्पर सम्मुख टाँड़े २६ । और भीमसेन अर्जुन और नकुल व सहदेव पहमन अन्य महारथियोंमे रक्षित होकर ऐसी बड़ी शोभा को प्राप्त हुए जैसी कि नक्षत्रों में रात्रिकी शोभा होती है, इसी प्रकार आपकी सेना भी भीष्म कृपाचार्य

large army, Bhishma and the Kauravas with the Sauvas stood at the  
b east The king of Prasthal named Susharma together with his  
armed soldiers, stood on the left side 20 Tushu javan and Shak  
with the Cholkas, stood on the right wing, and Shrutayu, Shrtayu,  
Somdatta and Marish guarded the thigh port on of the array Then  
O king, when the sun had risen, the armies of the Kauravas and the  
Pandavas advanced to battle and the fighting commenced The ele  
phants faced the chariots, the horsemen encountered the horsemen  
and charioteers faced the horsemen Elephant riders encountered the  
elephant riders and charioteers attacked charioteers The charioteers  
and horsemen attacked those on foot and ran against one another in  
anger 26 Bhimsen, Arjun, Nakul and Sabadev, protected by  
other charioteers, embellished the battle field as the stars do the night.  
In the same manner, your army was glorious by the presence of Bhishma,

युधयन्त भावः ॥ ३१ ॥ प्रतिसवार्यं चास्त्राणि तैर्धान्यस्य विद्यास्पते । युयुधु पाण्डवा  
धैर्यं कौरवाय महावता ॥ ३७ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मपर्वण्यर्वाणि षष्ठं दिवसयुद्धारम्भे  
पंच सप्ततितमोऽध्यायः ७८ ॥

धृतराष्ट्र उवाच । एव बहुगुणं सैन्यं मेव बहुविधं पुरा । द्यूदमेव यथाशास्त्रममोघञ्चैव  
सञ्जय ॥ १ ॥ द्यूदमस्माकमत्यन्तमभिकामञ्चनं सदा । प्रद्यूमन्यसन्नोपेतं पुरस्ताद्  
दृष्टविक्रमम् ॥ २ ॥ नातिद्यूदमवास्तुच न दृष्टं न च पीडितम् । लघुवृत्तायतप्रायं सार  
योधमनामयम् ॥ ३ ॥ आत्तसन्नाहशस्त्रञ्च यद्वान्मन्त्रिप्रहम् । आसियुद्धं निशुद्धं च  
गदायुद्धं च कौशिकम् ॥ ४ ॥ प्रासङ्गितोमरेष्वाजौ परिघेष्वायसेदुच । सिन्धुपाशेषु  
शस्त्रीषु मुसलेषु च सर्वथा ॥ ५ ॥ कण्ठेषु च चापेषु कण्ठेषु च सर्वथा । क्षेपणीयेषु

एकं स्थानं परं वर्तमानं होकर सब युद्ध में प्रवृत्त हुए वह कौरव पाण्डव उस महायुद्ध  
में परस्पर आगोंको प्रहार करके युद्ध करते हुए ३७ ॥

अध्याय ७८ ॥

धृतराष्ट्र बोले हे मेरेपुत्र यह मेनावहुगुण संपन्न अनेक प्रकार के शास्त्रके अ-  
नुसार अलंकृत और युद्धमें मफूट है, और हमारी सेना भी सदैव प्रसन्न सकल रूप  
और उदार है जिसका कि पराक्रम भारभेदी देगाजाना है, न बहुत दृढ़ न  
बालक न दुर्बल न पुष्ट है किन्तु हस्तनायक आदि उपायोंमें कुशल अत्यन्त दृढभंगवाली  
और नीरोग, क्रूर और शत्रुओंकी धागा करने वाली अनेक शस्त्र समूहों से पूर्ण  
भुजा गद्गद गदा इत्यादि में युक्त लड़ाई में उड़ी तीव्र है, आस दुःखाराजद्वारा तोमर  
परिघ गेहोंके भिन्दपाल वरछी मृगन रूपनयन वनप इत्यादि शस्त्रों में और  
उनके चलाने आदिकी अनेक अद्वितीय ३ मरीचकता के युद्धोंमें सम्राजभूमिपर  
नियतहोकर सत्रपकार में योग्य, विद्याओंमें पूर्ण शायरामन्त्र युद्धमें मजल शस्त्र

your sons and the opposite side engaged there. Both the Kuravas  
and the Pandavas discharged their weapons at one another' 37

### CHAPTER LXVI

'These warriors,' said Dhritrashtra addressing Sahjayi "possess  
various qualities, as depicted according to the Shastras and are skillful  
in fighting. Our armies too, are always cheerful, successful and  
unflinching and their prowess will prove firm from the beginning.  
They are neither too old nor too young, neither lean nor fat. They  
possess a dexterity of hand and strength of body and healthy. They  
possess arms and armour as well as different sorts of weapons like  
swords, maces and others and are sharp in fighting. They possess and  
are capable of using pikes, double edged swords, tomars, clubs, hand-  
pikes, spears, bows, arrows, etc. and are great fighters.

च यमो सेना ग्रहेद्यौगि सनुता ॥ २८ ॥ अभिसेनस्तु कौन्तेयो द्रो० दृष्ट्वा पराक्रमी ।  
 धृष्ट्याज्जवनैरश्वैर्भ्रातृद्वयस्य घातिनीम् ॥ २९ ॥ द्रोणस्तु समरे कुदो भीम नवाभि  
 रायसै ॥ विधवाद्य समरश्लाघी समीपमुद्दिश्य वीर्यवान् ॥ ३० ॥ दृढाहतस्ततो  
 भीमो सारद्वाजस्य सयुगे । सार्ग्यं प्रेषयामास यमस्य सदनं प्रति ॥ ३१ ॥ ससंगृह्य  
 स्वयं चाहान्भारद्वाजं प्रनापवान् । व्यघमत् पाण्डवो सेनां तुल्यशक्तिमिवानलः ३२ ॥  
 ते घथ्यमानाद्रोणेन भीष्मेण च नरोत्तमाः । सुभया- केकयै सार्द्धं पलायतपातयन्  
 ॥ ३३ ॥ तथैव तावक सैन्य भीमाज्जुनपरिक्षरम् । मुञ्चते तत्र तत्रैव समदेव वराहना  
 ॥ ३४ ॥ अभिचंता तत्रो व्यूहो तस्मिन् वीरवरक्षये । आसीद्व्यतिकरो घोरस्तव  
 तेषां च भारत ॥ ३५ ॥ तद्बुद्धुतमपद्याम तावकाणां परै सह । एकायनगताः सर्वे यद

द्रोणाचार्य्य शल्य और दुर्योधन से ऐसी गोभायमान हुई जैसे कि ग्रहों से  
 भराहुआ आकाश शोभित होता है, फिर कुन्ती का पुत्र पराक्रमी भीमसेन द्रोणा-  
 चार्य्य को देखकर बड़े शीघ्रगामी घोड़ों की सवारी से उनकी सेना के सम्मुख  
 गया। फिर युद्ध में क्रोधित पराक्रमी द्रोणाचार्य्य ने मर्मस्थलों को ताककर नौ  
 लोहे के बाणों से भीमसेन को घायल किया ॥ ३० ॥ तदनन्तर उस युद्ध में द्रोणा-  
 चार्य्य से बहुत घायल हुए भीमसेन ने उनके सारथी को मारा, फिर उस प्रतापी  
 द्रोणाचार्य्यजी ने आप घोड़ों को पकड़कर पांडवों की सेना का ऐसा विध्वंस किया  
 जैसे कि अग्नि रुई को भस्म करता है, हे नरोत्तम द्रोणाचार्य्य और भीष्मजी से  
 घायल होकर वह संजय केकयों समेत भाग गये, इसी प्रकार भीमसेन और अर्जुन  
 से भयभीत आपकी भी घायल सेना जहां तहां ऐसे भागी जैसे कि मतवाली श्रेष्ठ  
 स्त्री जहां तहां भागती है, हे भरतवंशी इसके पीछे उस उत्तम वीरों के नाश में  
 दोनों व्यूह भिन्न भिन्न होगये और आपके पुत्रों को और पांडवों को महाघोर  
 दुःख हुआ हेराजा हमने आपके पुत्रों का शत्रुओं के साथ वह आश्चर्य्य देखा जो

Kripacharya, Dronacharya Bhishma and Duryodhan like the sky full  
 of stars. Brave Bhishma the son of Kunti sped on swift horses to  
 wards Dronacharya Dronacharya full of prowess and anger, wound-  
 ed Bhima with nine iron arrows well aimed at the vital parts 30  
 Excessively wounded by Dronacharya, Bhishma killed his chariot  
 driver and Dronacharya taking up the reins of his steeds himself  
 destroyed the Pandava army as fire does cotton Wounded by Dro-  
 nacharya and Bhishma, the Drimjayas and the Karkayas fled from the  
 field In the same manner, terrified by the attack of Bhima and Arjun,  
 your wounded ■ my dispersed in all directions like ■ mad woman Then  
 O descendant of Bharat, both the arrays were broken on account of  
 the destruction of the warriors, leaving your sons as well as the Pan-  
 das plunged in grief. We saw, O King, the wonderful sight of

युध्यन्त भारत ॥ ३५ ॥ प्रतिसंवर्षं चास्त्राणि तैर्धान्यस्य विशास्यते । युयुध पांडवा  
श्च कौरवाश्च मदायलाः ॥ ३७ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि षष्ठ दिवमयुद्धारम्भे  
पंच-सप्ततितमोऽध्यायः ७७ ॥

धृतराष्ट्र उवाच । एव बहुगुणं सैन्य मेवं बहुविधं पुरा । द्यूतमेव यथाशास्त्रममोघञ्चैव  
सञ्जय ॥ १ ॥ हृष्टमस्माकमत्यन्तमभिकामञ्चनः सदा । प्रह्वमन्यसनोपेतं पुरस्ताद्  
दृष्टविक्रमम् ॥ २ ॥ नातिबृद्धमवालम्ब्य न ह्ययं न च पीडितम् । लघुवृत्तायतप्राय सा  
योधमनामयम् ॥ ३ ॥ आत्तसन्नाहशस्त्रञ्च बहुशस्त्रारिग्रहम् । असियुद्धे नियुद्धे च  
गडायुद्धे च कोपिदम् ॥ ४ ॥ प्रासङ्गितोमरेष्वाजं परिघेष्वायसेषुच । भिन्दिपालेषु  
शस्त्रीषु मुसलेषु च सर्वशः ॥ ५ ॥ कपनेषु च चापेषु कणपेषु च सर्वशः । क्षेपणीयेषु

एक स्थान पर वर्तमान होकर सब युद्ध में प्रवृत्त हुए वह कौरव पांडव उम महायुद्ध  
में परस्पर अश्वोंको प्रहार करके युद्ध करते हुए ३७ ॥

अध्याय ७६ ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय यह मेनावहुगुण संपन्न अनेक प्रकार के शास्त्रके अ-  
नुसार अलंकृत और युद्धमें सफल है, और हमारी सेना भी सदैव सन्न सकल रूप  
और उदार है जिसका कि पराक्रम प्रारंभही देखा जाता है, न बहुत हृद्धा न  
बालक न दुर्बल न पुष्ट है किन्तु हस्तनाचरता अति उपायोंमें कुशल अत्यन्त हृष्ट अंगवाली  
और निरोग है, कुवच और शस्त्रोंकी धारण करने वाली अनेक शस्त्र समूहों से पूर्ण  
भुजा लङ्का गदा इत्यादि में युक्त लड़ाई में बड़ी तीव्र है, मास कुशाल लङ्का तोमर  
परिघ लोहेके भिन्दिपाल बरछी मृगल कपनधनुष कनक इत्यादि शस्त्रों में और  
वनके चलाने आदिकी अनेक अद्भुततामें वं मदान्मत्तता के युद्धोंमें संग्रामभूमिपर  
नियत होकर सज्जकार से योग्य, विद्याओंमें पूर्ण अथवा मल्ल युद्धमें मजल शस्त्र

your sons and the opposite side engaged the e. Both the Kauravas  
and the Pandavas discharged their weapons at one another " 37.

### CHAPTER LXVI

"These armies," said Dhritrashtra, addressing Sanjaya, "possess  
various qualities, as checked according to the Shastras and are skilful  
in fighting. Our armies too, are always cheerful, successful and  
forgivacious and their prowess is well proved from the lightning.  
They are neither too old nor too young, neither lean nor fat. They  
possess dexterity of hand and strong of body and healthy. They  
possess arms and armour as well as different sorts of weapons like  
swords, maces and others and are sharp in fighting. They possess and  
are capable of using pikes, double edged swords, tomars, clubs, the d-  
pils, spears, - muskils bows, kempis etc. and are good fighters,

विनेपुमुष्टिपुष्टिपुचभ्रमम् ॥ ६ ॥ अपरोक्ष च विद्यासु व्यापारसंकृतश्रमम् । शस्त्रप्रहण  
विद्यासु सर्वासुपरिनिष्ठितम् ॥ ७ ॥ आगेहेपर्यवस्कदेशरणेसातरप्नुते । सम्यक्प्रहरणे  
यानेदपयानेचकोविदम् ॥ ८ ॥ नागाश्च रथयानेषु बहुधा सुपरीक्षितम् । परीक्ष्यन्  
यथान्याय धेतनेनोपपादितम् । ९ ॥ नगोष्ठयानोप कारणेन च बहुनिमित्ततः । नसौ  
दृढशलेरपि नाकुलीन परिग्रहे । १० ॥ समृद्धजन मार्यं च तुष्टवधिर्वाध्रवम् । कृतो  
पकार भूयिष्ठ यशस्विच मनस्विच ॥ ११ ॥ स्वजनैस्तु नैर्मूर्खैर्धृष्टो दृष्टकर्मणि ।  
लोकपालो पमैस्तात पालितं लोकविश्रुतम् ॥ १२ ॥ बहुभि क्षत्रियैर्गुप्त पृथिपालोक्त  
संमते । अश्मानाभि गतं कामास्तवले सपदानुगे ॥ १३ ॥ महोदधि मिवापूर्णा सायगा  
मि समतत । अपक्षे पक्षिसकाशे रथैर्नागैश्च भवृत्तम् ॥ १४ ॥ नानायोगे जज्ञ भीम  
बाहोर्मितरणिगम् । क्षेपण्यासि गदाशक्ति शरमाससमाह्वलम् ॥ १५ ॥ ध्वजभूषण  
संवाद्य रत्नपट्टसुसज्जितम् । परिधावद्विरश्वैश्च बाणुवेग विर्जितम् ॥ १६ ॥ अपार

विद्याके ज्ञाता सब विद्याओंपि पांडित, सवारहोने वा डेरें रहने वा चमने वा दोनों  
के अन्तरसे चलने वा शस्त्र चलाने वा चढ़ई करने वा समय देखकर हृदयानेमें  
कुशल बुद्धि, हाथों घोड़े और रथोंकी सवारियों में बहुधा परीक्षा कियेहुए और  
परीक्षालेकर न्यायके अनुसार मासिक आठि वेतन के योग्य है । ७ । और सभा  
उपकार नातेदारी और मित्रों के और कुटुम्बियों के बल और सामानों के कारण  
अधिकार नहीं पाने वाले हैं, हृदियुक्त वा उत्तम मनुष्य जिन में बांधव प्रसन्न  
और प्रतिष्ठावान है और बहुत उपकारी यशस्वी साहसी बेगवान उत्तम कर्मी  
लोकपालों के समान सत्तार में प्रसिद्ध मनुष्यों से घोषित अपनी इच्छा से सैना  
समेत पीछे चलनेवाले बहुत से सन्निधियों को लेकर हमारे समीप आनेवाले चारों ओर से  
समुद्रके समान उमगते हाथी रथघोड़ों समेत अनेकशरधारोंसे शोभित बड़े भयानक क्षेप  
खड्ग गदा बरछी बाणपरशु इत्यादि अनेक शस्त्रों से अलंकृत रत्नजडित रेशमी वस्त्रों  
से भाँडित अनेक ध्वजाओं समेत चागों ओरकी दीहनेवाली सवारियों में बैठे समुद्र

having a complete knowledge of all sorts of warlike and wrestling  
exercises They are learned in all sorts of sciences and are good at  
ho semanship camp management, marches, use of weapons, making  
assaults or timely retreat. They have often been tested in riding and  
driving the elephants horses and chariots and are worthy of receiving  
the pay 7 They are not taken into service by social influence, kinsman  
ship friendship and recommendations of friends They are of good  
and respectable families and are kind hearted, glorious, courageous,  
nimble, good, brought up by those who are famous like lokpals will  
ing to follow the armies, having many friends among warriors, brave  
like the rising ocean, possessed of elephants, chariots and horses, deck-  
ed with swords, maces, spears, arrows and other warlike weapons, clad



मिथ गजैः सागरं प्रनिर्ममं महत् । द्रोण भीष्माभिः संगुप्तं गुप्तं च कृतवर्मणा ॥ १७ ॥  
 कृपादुःशामनाभ्यां च जयद्रथ मुपैस्त्वया । भगदत्त विकर्णाभ्यां द्रौणिमौ वलवादिहकेः  
 ॥ १८ ॥ गुतं प्रदीरेल्लोकैश्च सारथद्रिर्महात्मभिः । यद्दृश्यतः संप्राप्ते दधमन्नुत्तमम्  
 ॥ १९ ॥ नैतादृशं समुद्योगं दृष्ट्वन्तो हि मानुषा । ऋषयो वा महाभागाः पुराणाभुवि  
 सन्मय ॥ २० ॥ ईदृशोऽपि बलीयस्तु संयुक्तः शस्त्रसम्पदा । वश्यते यत्र संप्राप्ते किमप्यद्रा  
 गयेयतः ॥ २१ ॥ विपरीतं भिद्ये सर्वं प्रतिमाति द्वे सञ्जय । यत्रेदं यत्नं घोरं पांडवा  
 भ्रातृद्वये ॥ २२ ॥ पाण्डवार्थं निमित्तं देवास्तत्र समागताः । युध्यते मामकं सैन्यं  
 यथा यद्य सञ्जय ॥ २३ ॥ उक्तो हि विदुरेणाह दिने पथ्य च निश्चयः । न च जग्राहतन्  
 मद पुत्रो दुर्योधनो मम ॥ २४ ॥ तस्य मन्येमति पूर्वं सर्वज्ञस्य महात्मनः । आसीद्यथागत

के समान गजनेवाने द्रोणाचार्य और भीष्म ने रक्षित कृतवर्मा, कृपाचार्य, दुःशासन जयद्रथ भगदत्त विकर्ण अञ्जल्यामा शकुनि बाह्लीक इन सब २ वीरों से और महात्माओं से रक्षित जो मेना युद्ध में मारी गई इसमें होनहार ही प्रबल है, हे संजय पृथ्वीपर ऐसे युद्ध को बड़े २ ऋषि मुनि और महात्मा मनुष्यों ने भी कभी नहीं देखा । २० । शस्त्रधन लक्ष्मी से युक्त ऐसा सेनाका समूह भी जिस युद्ध में मारा जाता है वहां प्राण्य के निवाय क्या सम्भना चाहिये, हे संजय यह सब विपरीत दृष्टव्यता है कि जहां ऐसी भयानक सेनाने युद्ध में पांडवों को नहीं भीता, हे संजय पांडवों के निमित्त देवता तो आनकर हमारी सेना से नहीं लड़ते हैं कि इतनी प्रबल सेना घायल हो जाती है, इस स्थान पर सदैव हितकारी फल दायक वचन विदुरजीने कहा है परन्तु मेरा अभाग्य वेदा दुर्योधन उस वचन को नहीं मानता है मैं मानता हूं क्योंकि उस सर्वज्ञ महात्मा विदुरका परला कहा हुआ अवसत्य हुआ है तात उस

in jam bedecked silk clothes, running hither and thither with high banners, riding good carriages, roaring like the ocean and protected by Dronacharya, Bhishma, Kirtvarma, Kripacharya, Dushasan, Jayadrath, Bhagdatta, Vikarna, Ashwathama, Shakuni, Vablika and such other warriors and great men. The destruction of such an army may be ascribed to fate alone. Riches, munis and great men of the world have never seen such a war. 20. Such a large destruction of weapons and wealth as is being done in this war, may be ascribed to fate alone. All this is preposterous, Sanjaya, in as much as such a tremendous army could not win the Pandavas. Is it the gods that fight for the Pandavas and disable our strong armies! Vidur always gave good advice regarding this matter, but my unfortunate son Duryodhan never gave any attention to it. I own that the saying of

तात येनदृष्ट मिदं पुरा ॥ २५ ॥ अथवा भाव्यमेवं हि संजयै तेन सर्वथा । पुंयाथाश्रया  
सृष्ट सत्तया नैतदयथा ॥ २६ ॥

इति श्री मेधाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मपर्वण्युत्तमाष्टकायां

पट्टमस्तुतितमोऽध्यायः ॥ ७६ ॥

संजय उवाच ॥ आत्मदोषांशया राजन् प्राप्तं व्यसनमीदृशम् । नेहि दुर्योधनस्तां  
नि पश्येते भ तर्पण ॥ १ ॥ यानि त्व दृष्टवान् राजन् धर्मसङ्करकारिणि । तव दोषात्पु  
वृत्त एतेमेव विधास्यते ॥ २ ॥ तव दोषेण युद्धं प्रवृत्तं सह पाण्डवै । त्वमेवाद्यफलं  
क्षुभ्य कृत्वाकिञ्चिदपि म तस्मात् । ३ ॥ आत्मनैव कृतं कर्म ह्य त्मने वोपभुज्यते । इह च  
मेव वा राजस्त्वया प्राप्तं यथा तथम् ॥ ४ ॥ तस्माद्राजन् स्थिरी भूत्वा प्राप्येद व्यसन  
महत् । शृणुयुद्धं यथावृत्तं शसतो मे तर्गयिष्य ॥ ५ ॥ भीमसेन सुनिश्चितैवापेक्षित्या  
महाचक्षुम् । आसत्ताव ततो वीर सर्वान् दुर्योधना नृमान् ॥ ६ ॥ दुःशीसेनं दुर्द्विपह

ने पूर्वही ऐसा देखाथा, हे, संजय इस प्रकार की होनहार को उस ने पूर्वही देख  
लिया कि ईश्वर को अब ऐसा करना है शकं विपरीत कभी नहीं होसक्ता २६ ॥

अध्याय ॥ ७७ ॥

संजय बोले, हे राजा तुम ने अपने दोष से ऐसे दुःखों को पाया है भरतर्षभ  
इसको, दुर्योधन नहीं देखता है, हे राजा जिनको तुम ने देखा है वह सब धर्म को  
अधर्म से मिलावेवाले है हे राजा पूर्व समय में आपही के दोष से यह जुवा जारी  
हुआ, आपके ही दोष से पांडवों से युद्ध प्रारंभ हुआ, और अब तुमही अपने पाप  
को करके उसके फलको भोगो, आपने ही कर्म किया है इसका फल इसलोक में वा  
परलोक में आपही को भोगना पड़ेगा हे राजा जैसा तुमने कियाथा वैसाही फलभी  
ठीकपाया, इससे हे धृतराष्ट्र तुम चित्त को समाधान करके इसमहादुःखको  
पाकर इसयुद्ध होनेका वृत्तान्त मुझसे सुनो ॥ १ ॥ तदनन्तर वीर भीमसेनने बड़े तीक्ष्ण  
बाणों से आपकी बड़ी सेनाको चलायमान करके दुर्योधन के इनसब भाइयों को

Vidur the wise and great has proved true. He foresaw long ago what  
was coming to pass and it will never happen otherwise" 26

### CHAPTER LXXVII

"Your miseries, said Sanjaya, "are the results of your own sins,  
king. Duryodhan does not see this, O best of Bharats. Those whom  
you have seen O king, are mixing adharma with dharma. It was through  
your fault, king, that the gambling took place and the war with  
the Pandavas commenced. You yourself will reap the fruit of your  
sins. You will suffer the punishment of your own wickedness either  
in this or the next world. You have sown O king, what you had  
sown. Compose your mind, O king and hear from me the account of  
this war which has brought you so much trouble. 5 With sharp  
arrows brave Bhishma, while destroying your armies, found himself

दुःसह दुर्मद जयम् । जयसेनं विकर्णं चित्रसेनं सुदर्शनम् ॥ ७ ॥ चरुचित्रं सुप्र  
भाणं दुष्कर्णं कर्णं मेघच ॥ एताश्चान्याश्च सुगृह्णन् समीपस्थान् महारथान् ॥ ८ ॥ चासं  
राष्ट्रान् सुलक्ष्णान् दृष्ट्वा भीमो महारथः । भीमेण समरे गुप्ता प्रविशति महाचमम् ॥ ९ ॥  
अथालोक्य प्रविष्टो मूच्छस्ते सर्व एषतु । क्षीयग्राहं निगृह्णीमो वयमेनं नराधिप ॥  
१० ॥ स तैः परिवृतः पार्थो ब्राह्मि वृत्तनिश्चये । प्रजासहरणे नर्यः प्रेरितो महा  
प्रदं ॥ ११ ॥ सम्प्राप्य मथ्य सैन्यं नमो पाण्डवमादिशत् । यथा देवासु युद्धे महे  
न्द्र प्राप्य दानवान् ॥ १२ ॥ ततः दात सहस्रं विरथिना सन्देशं प्रभो । वधतानि शरी  
रतीर्यस्तमेकं परि यन्त्रिरे ॥ १३ ॥ स तेषां प्रवरान् योषाम् हस्त्यश्वस्थसादिन् । जघाम  
समरे शूरो चासंराष्ट्रा नञ्चितयन् ॥ १४ ॥ तेषां न्यवसितं ज्ञात्वा भीमसेना जिघृक्षताम् ।

सम्पन्न पाया, दुःसहासन, दुर्विपह, दुःसह दुर्मद, जयमेन, विकर्ण, चित्रमेन सुदर्-  
शन, चारुचित्र, सुप्रभाण दुष्कर्ण कर्ण इनके सिवाय और बहुत से रथ में बड़े  
समीपी महारथी इनसनको महारथी रूप महारथी । भीमसेन देखकर  
युद्धमें भीष्मजी मे रक्षित बड़ीउग्र सेनामें युक्तगया । ९ । भीमसेनमें घुनेहुए भीम  
सेनका देखकर वहसब बोले कि हेराजामो हममय इसको जीताही पकडे । १० ।  
जैसे कि समारके नाश करने में मृर्य उडे २ मृर ग्रहो से घिराहुआ होता है इसी  
प्रकार यह भीमसेन इन निश्चय करनेवाले भाइयों से घिराहुआ बलमान हुआ,  
सेना के मध्यमें भी जाकर इसको ऐसे भय नहीं हुआ जैसे कि महाइन्द्र देवता  
अशुरोंके युद्ध में दानवोंको पाकर भयभीत नहीं होता है, तदनन्तर घोर वाणोंके  
समूहोंको फेंकतेहुए एकलख शस्त्रधारी रथियोंने इस अकेलेको घेरलिया, धृतराष्ट्रके  
पुत्रोंको ध्याननकरके उममहाबलीने उममेना के बड़े जंगी हाथी घोड़े रथऔरसर्वा  
रोंको मारा, हेराजा पकडनेके इच्छावान उनलोगों को जानकर उस पराक्रमीभीम-  
सेन ने सबके मारनेको मनोरथ किया, और रथ को त्यागकर गदाहाथ में लैके उन

fice to fice with Dushasan, Durvishah Dushah, Durmad, Jayasen,  
Vikarn, Chitraven, Sudarshan, Chauruntra Durveman, Dushkarn and  
Karn the brothers of Duryodhan. Besides these there were many  
warriors. Bhim-en in great anger, seeing all the e, entered that large  
army protected by Bhishm. Seeing Bhim-en there in the midst of  
the army they all cried out with one voice, "Let us catch him alive"  
10 Just as the sun is surrounded by fierce constellations, Bhim-en  
was surrounded by the brothers resolved to capture him. But he  
was not afraid of the enemies as Indra, during the war of the gods  
and asurs is not afraid of the Danavas. Then discharging thick  
showers of arrows a hundred thousand of the warriors wounded him  
but Bhimsen not caring for the sons of Dhritrashtra in the least, des-  
troyed the huge elephants, horses, chariots and horse-men of that large  
army. And knowing them to be desirous of capturing him, he resolv-

समस्तानां वधे राजन् म तं चक्रे महामना ॥ १५ ॥ ततो रथ समुत्सृज्य गदामादाय  
पाण्डव । जघान धार्तराष्ट्राणां तं बलौघमहार्णवम् ॥ १६ ॥ भीमसेने प्रविष्टे धृष्टद्युम्नो  
पि पापत । द्रोणमुत्सृज्य तरसा प्रययौ यत्र सौवल ॥ १७ ॥ निवार्य महर्तो सेनां ताम्  
कानां नरपंथम् । आससाद् रथं शून्यं भीमसेनस्य सद्युगे ॥ १८ ॥ दृष्ट्वा विशोकः समरे  
भीमसेनस्य सारथिम् । धृष्टद्युम्नो महाराज दुर्मना गतचेतन ॥ १९ ॥ अपृच्छद्वाप्यस-  
रक्षो निःस्वसन् वाचमीरयन् । मम प्राणैः प्रियतम क्व भीम इति दुःखित ॥ २० ॥ वि-  
शोकस्तमुवाचेद् धृष्टद्युम्न कृताजलि । सस्थाप्य मामिह बलीं पाण्डवेयः पराक्रमी २१ ॥  
प्रविष्टो धार्तराष्ट्राणां भेतद्वलमहार्णवम् । मामुक्त्वा पुरुषव्याघ्रं प्रीतियुक्तं मिदं वच-  
॥ २२ ॥ प्रति पालय मां सुत नियम्याभ्यान्महर्त्तकम् । याव देताग्निहर्म्यस्य य इमे  
ऽश्वोद्यता ॥ २३ ॥ ततो दृष्ट्वा प्रधावन्त गदाहस्तं महाबलम् । सर्वपामेय-सैन्यानां  
सह्य सम जायत ॥ २४ ॥ तस्मिन् सुतुमुले युद्धे वर्त्तमाने भयागके । भिम्बा राजन्

आपके पुत्रों समेत सेनाके महा समूहको मारा । १५ । फिर सेना में भीमसेन के  
मवेश करनेपर पृषतका पुत्र धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य को छोड़कर वड़ीशीघ्रता से वहां  
गया जहां शकुनी वर्त्तमान था, उसनरोत्तम ने युद्ध में आपके पुत्रकी वड़ी सेनाको  
हटाकर भीमसेनके रथको पाया, हे महाराज वहा भीमसेन के विशोकनाम सारथी  
को देखकर बड़ाखिन्न चित्त अचेत हो अश्रुपात युक्त गदगद करत से महादुःखित  
ध्वामालेकर धृष्टद्युम्न बोला और पूछा कि मेरे प्राणों से भी प्रियतम भीमसेन कहां  
है । २० । यह सुनकर हाथजोड़कर विशोक, धृष्टद्युम्न से बोला कि महाबली भीम-  
सेन मुझको यहां नियत करके, अकेलाही धृतराष्ट्र के पुत्रों की असंख्य समुद्र रूपी  
सेना में घुसा है और मुझसे ऐसे प्रीति पूर्वक बचन कहकर गया है कि हे सुत तुम  
घोड़ों को एक गूह तक थाप के मेरी वाट देखो मैं इन के मारने को जाता हूँ जो  
कि मेरे मारने की इच्छा करते हैं, सो गदाहाथ मैं छिपे उस महाबली को दौड़ता  
देखकरसब सेना में वड़ी प्रसन्नता हुई, हे राजा उसबड़े भयकारी तुमुल युद्धके

ed to kill them all He Jumped down from his chariot, mace in  
hand and destroyed your sons along with other warriors 15 - While  
Bhim'sen was in the midst of the army, Dhrishtadyumna the son of  
Prashat left Dronacharya and went there where Shakuni was That  
best of men pushed through the army of your son and found Bhim's  
chariot there and seeing Vishok the chariot driver, he with a troubled  
mind, faint voice, tearful eyes, choked throat and deep sighs, asked of  
the whereabouts of Bhim, saying "Where is Bhim who is dearer to me  
than life?" 20. At this, Vishok with joined palms, said, "Brave Bhim,  
having stationed me here has alone entered the innumerable armies  
of the sons of Dhritrashtra. He told me in affectionate tone to keep  
the horses here for sometime as he was going to kill those who intend-  
ed to destroy him All the warriors were pleased to see him

महायुद्धं प्रविशन्नुकोदः ॥ २५ ॥ विशोकस्य वचः श्रुत्वा धृष्टद्युम्नोऽपि पारितः । प्रत्यु-  
 धात् ततः सुतं रणेमध्ये महाबलः ॥ २६ ॥ नहि मे जीवितेनापि विद्यतेऽद्य प्रयोजनम् ।  
 भीमसेनं रणे हित्वा स्नेहं मुत्सुज्य पाण्डवः ॥ २७ ॥ यदि यामिन्नाभीमं किमाजिह्वं  
 यदि श्पतिः । एकायनं गतं भीमे मथिचावस्थिते यधि ॥ २८ ॥ अस्मात् तदस्य कथंति  
 देवाः शक्रपुण्ड्रगमाः । युः सहायान् पतियुज्य स्वस्तिमानात्रे वृष्टुम् ॥ २९ ॥ माभीमः  
 सखा चैव स्वघी च महाबलः । भक्तोऽस्माकमिमांश्चाहं तमप्यस्मिन्पुनम् ॥ ३० ॥  
 सोऽहं तत्र ममिष्यामि यत्र यातो वृकोदरः । निघ्नं तं मारिष्यद्दधनवानिघ्नं चासवम्  
 ॥ ३१ ॥ एवमस्मरन् ततो धीरो ययौ मध्येन-भारत । भीमसेनस्य मार्गं मुदा प्रगमयितुं  
 रीतः ॥ ३२ ॥ स ददर्श तदा भीमं वहन्तं प्रवाहिनीम् । यातो वृक्षानिघ्नघालात् प्रसज्यते

वत्तमान" होनेपर आपका भित्र बड़ी भेनाके व्यूहको हटाकर प्रवेश करगया है । २५  
 यह विशोक के वचन सुनकर वह महाबली धृष्टद्युम्न जी वरामृत में यह वचन बोला  
 कि पाण्डवों के साथ मीति करके और भीमसेन को युद्ध में छोड़कर प्रदोषायेन मे  
 मुझको कुछ प्रयोजन नहीं है मैंभी बिना भीमसेन के कभी न जाऊंगा क्योंकि  
 भीमसेन के बिना जाऊंगा तो मुझको सबत्तबी क्या कहेंगे युद्ध में भीमसेनके एक  
 ओर जाने औरमेरे नियत होनेपर इंद्रसमेन सयदेवता उनके अकल्पाणको करतेहैं जो सह  
 यकोंको त्यागकर जीतेधरको जातेहैं हेनत्रहस्ता वह महाबली भीमसेन मेरा मित्र नातेदार  
 और परमभक्तहैं और मैंभी उसमेभक्ति रखनेवालाहूँ । ३० । सो हे सुत मैंभीविही  
 जाऊंगा जहाँ भीमसेन गया है मुझको भी तू देख कि मैं शत्रुओंको कैसा मारताहूँ भेमे  
 कि इन्द्रदानवोंको मारताहै, हे राजा ऐसा कहकर वह महाबलीभीमसेन की गुदा में  
 मारेहुए हाथियों में उत्पन्न भीमसेन के मार्गों में होकर चला बड़ा उस ने शत्रुओंको  
 भूमि करते और भेमे कि वायु घुड़ोंको काटताहै उमी प्रकर युद्ध में राजाओंको

rushing mace in hand and that fiend of his had fought his way through that large army. 25. Having received this information from Vishok, brave Dhrishtadyumna said, "Loving the Pandavas as I do I shall live no longer without Bhim. All the Kshatriyas will despise me, if I shall leave him here alone India and other gods will give me the reward of those who leave their friends in the lurch, if I shall desert him now. Brave Bhimsen is my friend, kinsman and devotee, and I too, am devoted to him. 30. I, too, O Sut, will follow the footsteps of Bhim; you will see how I kill the enemies as India destroys the Danavas." Having said this, O King, he went over the path made by Bhimsen by killing the elephants with his mace and saw him there destroying the enemies and princes as the wind fells down trees. Wounded by Bhim the terrified charioteers, horsemen, foot soldiers and

रणेरिपूत ॥ ३३ ॥ तेवध्यमानः समरे रथिनः सादिनस्तथा । पादाता दीनिनपैद्य  
चक्रुरातस्वरेमहत् ॥ ३४ ॥ हाहाकारश्च सज्जमे तच्च सैन्यं य मारिष । वध्यतो भीमसेनेन  
कृतिनाचित्रयोधिता ॥ ३५ ॥ तत कृतास्त्रास्ते सधे परिवार्यवृकोदरम् । अभोताः सम  
धर्तत शस्त्रवृष्ट्यापरतप ॥ ३६ ॥ अभिद्रुत शस्त्रभृतांवारिष्ठ समंततः पाण्डवलोकवीरः ।  
सैन्येन घोरैण सुसहितेन दृष्ट्वा घलीपार्यतो भीमसेनम् ॥ ३७ ॥ अघोरगच्छच्छेरधि  
क्षतांग पदातिनं क्रोधविष चमंतम् । आभ्वासयन् पार्यतो भीमसेनं गदाहस्त  
कालमिवांतकाले ॥ ३८ ॥ विशश्य भेनचचकारतर्ष मारोपयच्छात्मरपेमहात्मा । भृश  
परिष्वज्य च भीमसेन आभ्वासया माससशश्रुमध्वे ॥ ३९ ॥ भ्रातृनघोपेत्य तवाविपुश्रस्त  
स्मिन् धिमर्दे महति प्रवृत्ते । अथ दुरात्मा द्रुपदस्यपुत्रः सामगतो भीमसेनेन साधेम्  
॥ ४० ॥ संयाम सधे गहता घलेन माघोरिपुः प्रार्थयतामनीरम् । श्रुत्वातुव कथंतममृष्य

छिन्न भिन्न करते हुए भीमसेन को देखा, युद्ध में भीमसेनसे घायल और पीड़ितरथी  
सवार पदाती और हाथियोंने महा भयभीत और पीड़ामान होकर घोर शब्द किया,  
हे राजा आपही सेनामें बड़ा हाहाकार उत्पन्नहुआ और यह शब्द पुकारते लगे  
कि सावधानहो अपूर्व युद्धकरनेवाले भीमसेनके हाथसे सेना नाशहुँजाती है । ३५ ।  
इसके पीछे बड़े निर्भय अश्वों के ज्ञाता उनवीरों से भीमसेन को चारों-ओरसे घेर  
कर राय और से अश्वों की वर्षाकरी, फिर चलवान धुष्टगुन बड़ी मिलाहुई घोर  
सेना से सम्मुख हुए महाबली लोक में प्रसिद्ध भीमसेन को देखकर, उसके पास  
गया और घाणों से छिदे हुए क्रोधरूप बिपको डगलते प्रलयके काल पुरपकी  
समानगदा लियेहुए भीमसेन को विश्वास कराया, फिर उस महात्मा ने बहुत शीघ्रही  
उसको घाणों से छुटाया और अपने रथपर सवार किया और शत्रुओं के मध्यमेंही  
अच्छे प्रकार मिलकर विश्वास कराया, इस के पीछे आपका वेदाभी उस युद्ध में  
अकस्मात् भाइयों से मिलकर बोला कि यह द्रुपद का वेदा निर्बुद्धी भीमसेन के  
साथमें आया है । ४० । इस के मारने को हममव एक साथही चलें क्योंकि हमारा

elephant riders, who raising terrible cries of distress. There was a cry  
of "Ah! and alas!" in your army and the people said, "Be careful.  
The army is being destroyed by Bhimsen of matchless prowess." 35.  
Then the intrepid warriors, well knowing the science of arms, sur-  
rounded him on all sides and poured on him a volley of weapons. Then  
brave Dhrishtadyumna, seeing the famous warrior Bhim surrounded  
by those terrible foes, went to him and by his presence cheered Bhim-  
sen who being pierced with the arrows was vomiting forth the  
poison of his rage, standing inace in hand like Death. He soon dis-  
entangled his body from the net of arrows and further cheered him in  
the midst of the enemies by making him mount his chariot. Then your  
son collected his bowmen in haste and addressed them thus,—"This  
son of Drupad," said he, "has joined foolish Bhim. 40—Let us all go to

माणा ज्येष्ठाग्रयानोदितो घातैराष्ट्राः ॥ ४१ ॥ दधाय निष्पेतु द्वायुघाते युगलये केत  
वो यददुग्धाः । प्रगृह्णाच्छास्त्राणि धनुर्विद्यां द्युज्जिमे घोषैः प्रविकं पयन्तः ॥ ४२ ॥  
शरैर्वर्ष्यं दुपदाय पुत्रं यथा बुद्ध्यामूधरं चारि जालैः । निहत्य तांश्चापि शरैः सुतीक्ष्णैर्न वि  
न्यथे सारो चित्रयोधो ॥ ४३ ॥ समं बुद्धिर्णाथतवात्मजास्तथा निशम्य वीरा नमितः  
रिपितान् रणे । जिघांसुः प्रहृष्टात्मजो युवा प्रमोहनास्त्र युयुजे महारथः ॥ ४४ ॥ कुड्यो  
भृशं तव पुत्रेषु राजन् क्षेत्येषु यद्वत्समरे महेन्द्र । ततो व्यमृह्यन्तरणे नृवीराः प्रमोहना  
स्त्रो हतबुद्धिस्तथाः ॥ ४५ ॥ प्रदुष्टबुः कृत्वा धैर्यं स्वैः सथाजिनागाः सरपाः समं तात ।  
परीतं कालानि घनघट्टेभ्यः मोहो पतांस्तव पुत्राग्निशम्य ॥ ४६ ॥ एतस्मिन्नेव काले तु  
द्रोणः शस्त्रं यतो वरः । दुपदं त्रिभिरासाय शरैर्विव्योध दारुणैः ॥ ४७ ॥ सोति विद्वस्त

अत्र शोके हमारी सेनामें न भिने इस के पीछे वह क्रोधी पुत्र अपने भाई दुर्योधन  
के इतने वचन का सुनकर और आज्ञामान कर शस्त्रों को लेकर उसके मारने को  
ऐसे दौड़े जैसे कि प्रलयकाल में पृथ्वीतले वह वीर रत्नजडित धनुषधारी कवच  
पहरे रथके पहियों की ध्वनि से सचको कम्पायमान करते हुए, बाणों से दुपद के  
पुत्रपर ऐसी वर्षा करने लगे जैसे कि बादल पानी की झड़ियों से पर्वतपर वर्षा  
करते हैं उस समय वह अपूर्व युद्ध करने वाला धृष्टद्युम्न अपने तीक्ष्ण बाणों से  
उनको पीड़ामान करने पर भी आप पीड़ा युक्त नहीं हुआ, और बड़े साहसी आपके शूर  
वीर पुत्रोंको देखकर युद्ध में नियत हुआ फिर उस दुपदपुत्र महारथी मारनेकी इच्छा  
करनेवालेने प्रमोहननाम बड़े मयानक अस्त्रको प्रयोग किया और आपके पुत्रों पर  
ऐसा अत्यन्त क्रोधित हुआ, जैसे कि इन्द्रयुद्ध में दैत्योंपर क्रोधित होता है । ४५ ।  
फिर वह सब आप के वीर युद्धमें परशुओं और अस्त्रों से घायल होकर बड़े अचेत  
होगये फिर आपके पुत्रों को कालपास में फँसे हुए अचेतरूप देखकर सब कौरव  
घोड़े और रथों के साथ घोर शब्द करते हुए चारों ओर से भागे उस समय शस्त्र

kill him, so that, being an enemy, he may not mix with our soldiers." The enraged princes, hearing the words of their brother, obeyed his orders, and armed with weapons to destroy him, they rushed upon him like meteors of plajya. The brave warriors having bows decked with jewels, shook in armour and shaking all with the rumbling of their chariot wheels. They showered their arrows on the son of Drupad as clouds pour rain over a mountain. That wonderful warrior Dhishtadyumn, while wounding them with their sharp arrows, was not wounded by them and seeing your brave sons before him, he stood ready to fight. Drupad's son, desiring to destroy them, discharged his dreadful weapon known as Piamohau (causing insensibility) and was enraged at your sons as Indra does at Dasyas 45 All your warriors, wounded by axes and other weapons, became unconscious. Seeing your sons in the meshes of Death and unconscious, all the

तो राजन् रणे द्रोणेन पारिव्य । जपायाद्दुपदो राजन्, पुत्रैरमनुसमरन् ॥ ४८ ॥ जित्वा  
 दुपदं द्रोण शस्त्र इधौ प्रतापवान् । तस्य शस्त्रं स्वर्णं शुभ्रा-वित्रेण, सर्वं सोमका  
 ॥ ४९ ॥ अथ युधामन्युः तेजस्वी द्रोण शस्त्रं भूतावर । प्रमोहं नास्त्रशरैः, मृष्टिवातात्म  
 जस्तु ॥ ५० ॥ ततो द्रोणो महाराज, त्वरितोऽस्या ययौ रणात् । तत्रापश्यन्महेष्वाशो  
 भारद्वाज, प्रतापवान् ॥ ५१ ॥ धृष्टयुष्मन्च भीमश्च विचरन्तौ महारणे, मोहा विप्रांश्चते,  
 पुत्रो न प्रदयत्समहारण ॥ ५२ ॥ ततः प्रतापवान् द्रुपदो मोहनास्त्रं व्यनाशयत् । अथ प्रत्या  
 गतः प्राणास्तच पुत्रा महारण ॥ ५३ ॥ पुनर्द्रुपदाय समरे प्रययुर्भीम, पापता । ततो युधिष्ठिर  
 प्राह समाह्वय स्वर्सेनिकान् ॥ ५४ ॥ गच्छन्तु पदवीं शत्रूणां भूमिपापितयोर्धुषि । सौमद्र  
 प्रमुखाधिरा रथाद्वा दश दक्षिताः ॥ ५५ ॥ प्रवृत्तिं न वि गच्छन्तु नहि दृष्टव्यं ते मे मनः ।

धारियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्यजी ने धृष्टयुष्मन् को पाकर, तीन उग्रशर्पा से पीड़ित  
 किया, हे राजा तब वह राजा द्रुपदका पुत्र द्रोणाचार्य से अत्यन्त घायल, पुत्र की  
 शत्रुता को, रमण करके हट गया ॥ ४७ ॥ प्रतापवान् द्रोणाचार्य ने दुपद को जीतकर  
 शस्त्रों का बजाया उनके शस्त्रों के शब्दों को सुनकर सब भयभीत हुए, इसके पीछे महा  
 शस्त्रों का द्रोणाचार्य ने युद्ध में आपके पुत्रों को प्रमोहन अस्त्र से अचेत होना सुना ॥ ४८ ॥  
 और, बड़ी शीघ्रता से संग्राम भूमि में उनके पास आये वहाँ प्रवल युद्ध में, संग्राम करते  
 हुए धृष्टयुष्मन् और भीष्मजी को देखा और आपके पुत्रों को भी मोह से, महा अचेत  
 देखा फिर उन्होंने ने महा अस्त्रों को लेकर मोहन अस्त्रों को काटा, इस के पीछे आप के  
 महारथी पुत्रों के प्राण फिर लौट आये फिर युद्ध में लड़ने के लिये भीष्मसेन और  
 धृष्टयुष्मन् के संग्राम गये इसके अनन्तर राजा युधिष्ठिर अपनी सेना के अनुषों से बोले  
 कि तुम अपनी सामर्थ्य से संग्राम भूमि में भीष्मसेन और धृष्टयुष्मन् के मार्ग में जाओ तुम  
 अभिमन्यु को मुख्य करके, वाह धीर वहाँ जाकर निज वृत्तान्त को देखो ॥ ५१ ॥ मेरा  
 चित्त मन्देह से निवृत्त नहीं होता है वह सब शूरवीर सिंह के समान युद्ध करने वाले

Krishna's rushed with their chariots and horses from all sides  
 Dronacharya the best of warriors wounded Dhrishtadyumna with  
 three terrible arrows. Drupad's son seriously wounded by Drona-  
 charya and remembering the former enmity, gave way 47. Glorious  
 Dronacharya, having conquered Drupad's son, sounded his conch,  
 terrifying all with the peal. Dronacharya who knew the use of all  
 weapons, heard of unconsciousness of your sons by swoon-bringing  
 weapon 53. He soon came there from the field and saw Bhishm and  
 Dhrishtadyumna engaged in fighting, while your sons were unconscious.  
 He then removed the effect of that weapon by the Pragna weapon  
 and they were all restored. He then went on to fight against Dhrishta-  
 dyumna and Bhim. The cupon Prince Yudhishtira ordered his twelve  
 warriors to force their way through the ranks of the enemy with  
 Bhishm as the leader to bring news of Dhrishtadyumna and



तपः समनत्राग्री शिराभिरातयोधिः ॥ ५६ ॥ दाहं भिन्येष मुक्त्वा तु मयं पुरुष मानि  
न । मत्पथे दिगं गते स्वयं प्रययुः सद्य एव हि ॥ ५७ ॥ केन्द्या द्रौपदेयाश्च घृष्टकुंठो धीर्य  
वान् । अभिमन्युः पुरस्सृत्य महत्यामेतयावृतः ॥ ५८ ॥ तं श्रुत्वा समर-युद्धं सूचीमुख  
मैरिदमोऽपि विमिदुर्धर्ततायान्ना तद्वशीक माहुरे ॥ ५९ ॥ तान्प्रयाता महो च सानमि  
मन्यु पुरोगमान् । भीमसेन मया विष्टा घृष्टयुष्मि विमाहिता । ६० ॥ ससवायितु-क्तः ।  
तवसेनाजनाधिपे । मदम्-उभिवितारमार्गे प्रमद्वेद्यो धृनि-विता ॥ ६१ ॥ तेऽभिजाता  
महेष्वासा सुवर्ण विकृतध्वजाः । परितस्तोऽश्वधाव त घृष्टयुष्मदृकोदगाः ॥ ६२ ॥ तौ  
चिद्वेष्ट्या महेश्वामा अभिमन्युपुरोगमान् । वभूधनुर्मुदायकौ निष्पन्ता तवचाहि  
नीमोऽहो ॥ ६३ ॥ द्रुपदाहुन्महो गान पाचात्यो मुहमा मत्र । नात्र सत पथधीर पुत्राणां तत्र  
भारत ॥ ६४ ॥ ततो रथ समारोप्य कैकेयस्य वृकोदाम् । अभ्यन वत्सुसंक्रुदो द्रौण

युधिष्ठिर की आज्ञा पातेही मयाह्नके समय युद्धकी ओर गये; पांचो कैकेय और  
पांचो द्रौपदी के पुत्र घृष्टकुंठ-यह सब अपनी भारी सनामसे अभिमन्यु को  
आगे करके, स्थित हुए और वहां युद्ध में घृष्टको शूर्वी मुख बना के  
धृतराष्ट्र के पुत्रों की रथवाली सेना को डिन्ना-भिन्न कर दिया, भीमसेन के भय-  
से भरे हुए और घृष्टयुष्म के हाथ से जति अचेत आपकी सेना उन अभिमन्यु  
आदि बड़े धनुषधारियों के सम्मुख होने का समर्थ नहीं हुई, और मूर्छा में भरेहुये  
पत्नी के समान मार्ग में नियत हुए । ६१ । वह महा धनुर्धर सुवर्णित ध्वजा युक्त  
घृष्टयुष्म और भीमसेन के देखने को मम्भुत दौड़े उन अभिम-यु, आदि बीरों को  
देखकर वह दोनों भीमसेन और घृष्टयुष्म बड़े आनन्दित हुए, फिर शूरवीर, घृष्ट-  
युष्म ने अकस्मात् आये हुए अपने मुक्को देखकर आपके पुत्रों को, नहीं मारा  
तदनन्तर भीमसेन को कैकेय के रथपर सवार करके अत्यन्त काप में मरा हुआ घृष्टयुष्म

Bhim 50 "My mind," said he "is much disturbed on their account." All those warriors having obtained Yudhishtira's orders entered the battle field at midday. The five Karkya brothers, the five sons of Draupadi and Dhrishtadyumna with a large army were led by Abhimanyu, and having formed themselves into a wedge like shape, they dispersed the armies of the sons of Dhrishtadyumna. Already terrified by Bhim and wounded by Dhrishtadyumna, your armies could not withstand the great archers, Abhimanyu and others, and stood like an unconsious woman in the way. 61 The great archers with golden banners rushed on to see Dhrishtadyumna and Bhim. Seeing those brave warriors, Abhimanyu and others, Bhim and Dhrishtadyumna were much pleased. Then brave Dhrishtadyumna, seeing his preceptor before him did not destroy your sons and mounting Bhim on the chariot of Karkya, Dhrishtadyumna in a great rage, rushed against Dhrishtadyumna - perfect in archery and other

मिथ्यस्त्रपागम् ॥ ६५ ॥ तस्याभि पततस्तूर्णं भारद्वाज प्रतापवान् । कुदक्षिच्छे-  
द्वजेन धनं शत्रुनिर्दणः ॥ ६६ ॥ अग्रांश्च शतशोषाणान् प्रेषयामास पार्थ ।  
दुर्योधनं हितार्थाय भर्तुं पिबमनश्मरन् ॥ ६७ ॥ अथान्यं अनुदाय पार्थतः पर-  
चीरया । द्रोणं विद्याय विंशत्याकम्पयौ । शिलाशिरैः ॥ ६८ ॥ तस्य द्रोणः  
पुनश्चापं चिच्छेदामिधकर्मणः ॥ ह्यायचतुस्तूर्णं चतुर्भिः सायकोत्तमैः ॥ ६९ ॥  
धैर्यैः तत्र त्वं घोरं प्रेषयामास मारुत । सा विचास्य भङ्गुप्रेषयामास मृगये ॥ ७० ॥  
हताश्वात्सरथा तूर्णं मवप्लुत्यमहारथः । आकरोह महाबाहु अभिमन्यो महारथम् ॥ ७१ ॥  
ततः सरथं नागा श्वासमं कंपतवाहिनी । पश्यतोऽग्रे सैनस्य पार्थ-  
तस्य च पश्यतः ॥ ७२ ॥ तत्रमग्नं धलं दृष्ट्वा द्रोणेनामिततेजसा । नाशयन् वन्द्यारयितुं  
समस्तारस्ते महारथाः ॥ ७३ ॥ यध्यमानं तु तत्सैन्यं द्रोणेन निश्चितैः शरैः । व्यधत्त सत्र-

वाण और अस्त्रों के परांगत द्रोणाचार्य के सम्मुख दौड़ा । ६५ । शत्रुहन्ता प्रतापी  
द्रोणाचार्य ने बहुत क्रोधित होकर बड़ी शीघ्रता से उस सम्मुख आनेवाले धनुष को  
भल्ल से काटा, और स्वामी के हित के निमित्त अन्य सैकड़ों वाणों से धृष्टद्युम्न  
को घायल किया, फिर शत्रु के मारनेवाले धृष्टद्युम्न ने दूसरे धनुष को लेकर शिला  
पर धिसे सुनहरी पुंखवाले, वाणों से द्रोणाचार्य को घायल किया, फिर शत्रुहन्ता  
द्रोण ने उसके दूसरे धनुष को भी काटा और बड़े तीव्र चारशायकों से चारों  
घोड़ों को उसके लोक को भेजा फिर इस के सारथी को भी एकही भल्ल से  
मार डाला ७० । फिर वह महाबाहु महारथी शीघ्रही मृतक घोड़ों के रथ से उतरकर  
अभिमन्यु के महारथ पर सवार हुआ, इसके अनन्तर अभिसेन और धृष्टद्युम्न के देखते  
हुए रथ हाथी घोड़े आदि समेत सेना भयसे कम्पित हुई, फिर द्रोणाचार्य जी से  
व्याकुल सेना को देखकर वह सब महारथी उसके रोकने को समर्थ नहीं हुए,  
द्रोणाचार्य के तीक्ष्ण वाणों से घायल वह सेना समुद्र के समान महा व्याकुल

weapons 65. Brave Dronacharya the destroyer of enemies, cut down the bow of his adversary with his dart, and with hundreds of arrows wounded him for the good of his employer. Then Dhrishtadyumna the destroyer of foes, taking up another bow, wounded Dronacharya with his arrows sharpened on stone and having gold feathers. Drona the destroyer of foes cut down his second bow too and killed the four horses of his chariot with four arrows and the driver with one. That warrior soon jumped down from his chariot of which the horses were dead, and mounted on Abhimanyu's chariot. Then within sight of Bhishma and Dhrishtadyumna your armies full of chariots, elephants and horses, trembled with fear and could not withstand the fury of Dronacharya's attack. Wounded by the sharp arrows of Drona, the army was agitated like the ocean and

तत्रैव क्षीयमाणइषाणं च ॥ ७५ ॥ तथा दृष्ट्वा च तत्सैन्यं जहृपितायकधत्तम् । दृष्ट्वा  
चार्यमुसकृद्धं पतंतारिपुषाहिनीम् । चुक्रुधुःसर्वतोयोषाः साधुसाधिवितिमात्त ॥ ७५ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि संकुलपुद्धे द्रोणपराक्रमे

सप्तसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७७ ॥

सञ्जय उवाच । ततो दुर्योधनो राजा मोहात्प्रत्यागतस्तदा । शरवर्षं पनर्भे मे  
प्रत्यचारयदध्वृतम् ॥ १ ॥ पर्याभूतस्ततश्चैव तत्र पुत्रा महारथाः । जमेय समरे भीम  
योधयामाबुधयताः ॥ २ ॥ भीमसेनो वि समरे सम्प्राप्य स्वराधपुनः । महावृद्धा महाबाहु  
ययौ येन त्वारमजः ॥ ३ ॥ प्रवृष्टा च महावेगे पगान्करणं ददम् । सज्ज शराघन सहस्रं  
शरैर्विध्याय ते सुतम् ॥ ४ ॥ ततो दुर्योधनो राजा भीमसेन महाबलम् । नाराधेन सुती  
हमेन भूशं समप्यताडयत् ॥ ५ ॥ सो त्रिविद्धो महेष्वासस्तवपुत्रेण धन्विना । क्रोधसरण  
मयनो वेगेना क्षिप्य कामुकम् ॥ ६ ॥ दुर्योधनस्तु भिर्वाही हरसिंघार्ययत् । सतत्र शुशुभे  
होकर जहां तहां भागने लगी, फिर आपकी सेना उस सेना को भागती देखकर  
बड़ी मस्तन हुई, हे भरतर्षभ इस रीतिमें शत्रुकी सेना को मारता हुआ क्रोधयुक्त  
द्रोणाचार्य को देखकर शूरीर लोग चारों ओरसे घन्य २ करके पकारने लगे ७५ ॥

अध्याय ७८ ॥

इसके पीछे राजा दुर्योधन ने ब्यूह से पृथक् होकर अपने बाणों की वर्षा से  
दुर्जय भीमसेन को रोका, फिर आपके महारथी पुत्रभी इकट्ठे होगये और सब  
मिलकर भीमसेन से लड़ने लगे फिर महाबाहु भीमसेन भी युद्ध में अपने रथ को  
पाकर उसपर चढ़के वहां को गया जहां आपके पुत्र था, वहां उस वेगवान ने  
जीव निकालनेवाले दंड और जंझाक घनुप को चढ़ाकर बाणों से आपके पुत्रको  
पीड़ित किया, इसके पीछे हे राजा दुर्योधन ने भी अत्यन्त तीक्ष्ण नाराचों से  
महाबली भीमसेन को मर्मस्थलों में घायल किया, फिर उसे महाक्रोध रूप घनुप  
धारी भीमसेन ने आपके पुत्र से घायल होकर बड़े लाल नेत्र करके उत्तम मयल

began to run away thus way and that. Your army was much pleased  
at the flight of the opposite party. Thus destroying the army of the  
enemy, Drónacharya was much praised by all the warriors 75.

### CHAPTER LXXVIII

Prince Duryodhan then separated him self from the rest of the  
army and checked invincible Bhimsen with a shower of arrows, Your  
other sons too came together and began to fight against Bhim  
Bhimsen mounted on his chariot and went to the place where your  
son was and wounded him with the arrows shot from his jewelled  
bow. Prince Duryodhan, too, wounded him in vital places with his  
exceedingly sharp arrows Wounded by your son, Bhim with eyes  
red in anger, drew up his bow and with three arrows wounded Dur-

राजा शिवरेमिदि मडि ॥ ७ ॥ तौदृष्ट्वा समरेकुडौ विनिघ्नतौ परस्परम् । दुर्ग्योधना  
 तुजा सर्वे दूरा सन्त्यजजी वित् ॥ ८ ॥ सम्मृत्य मन्त्रित पूर्वं निग्रह भीमकर्मण  
 निरर मरन कृत्वा दिग्वीम् प्रवक्रमु ॥ ९ ॥ तानापतत पद्माजी भीमसेना महाबली ।  
 प्रत्युद्यौ महाराज गज प्रतिगज निव ॥ १० ॥ भृशकुक्ष्यतेजस्वी नागाक्षेन समा  
 र्ययत् । चित्रसेन महाराज तव पत्र महावशा ॥ ११ ॥ तथैतरास्त्वय सुतास्त्राड  
 याम स भारत । दग्धहृदिष्वै सङ्घेय स्वमण्डं स्तेजने ॥ १२ ॥ तत सद्यप्य  
 समरे तावनाकानि सर्वश । अग्निमग्न्युग्रमृतयस्ते छन्दस महारथा ॥ १३ ॥ मयि  
 ता धर्म राजे । भीमसेनपदाधुमा । प्रतिजग्ममहाराज तत्रपुत्रान् मह वनान् ॥ १४ ॥  
 दृष्ट्वा रथधातान्धरान् सूर्योग्निसमतेजस । सजानव महेश्वासान् ब्राजमानान्  
 श्रियावृत्तान् ॥ १५ ॥ महादधे दीरमागन् सुवर्णचक्रतोडवल्गान् । तत्पञ्चु सगरे

धनुषको खेचकर अपने तीन बाणों से दुर्ग्योधन की भुजा और छाती को घायल  
 किया, हे राजा इस रीति से घायल होकर भी वह दुर्ग्योधन पूर्वतः के समान  
 चलायमान नहीं हुआ फिर दुर्ग्योधन के शूर वीर युद्ध में देह के त्यागने वाले  
 भयों ने दोनों पीरों को परस्पर मारने में प्रवृत्त ठहरकर भयकारी भीमसेन के  
 पकड़ने का पूर्व कर्म स्मरण करके बड़े निश्चय पूर्वक उस के पकड़नेका उपाय  
 किया, हे महाराज महाबली भीमसेनभी उन युद्ध में प्रवृत्त वीरों के सम्मुख ऐसा  
 चला जैसे कि हाथी हाथियों के सम्मुख जाता है हे महाराज बड़े यशस्वी तेजमान  
 अत्यन्त काधित भीमसेन ने आप के पुत्र चित्रसेनको नाराचसे घायल किया,  
 और इसी प्रकारसे अनेक उत्तम बाणों से आपके अन्य पुत्रों को भी घायल  
 किया, तदनन्तर धर्मराजके भेजे हुए भीमसेन के पीछे चलनेवाले वह अभिमन्यु आदि  
 बारह महारथी युद्ध में अपनी सेना को सब ओर से नियत करके उन महारथी राज  
 पुत्रों के सम्मुख गये, उनसूर रथोंपरमवारसूर्य्य अग्नि के समान प्रकाशितशोभाय-  
 मान लक्ष्मी से युक्त भूमि में तेजस्वी सुवर्ण भूषणा से अलंकृत सब बड़े धनुषधारिणों

Jodhan in the aim and burst Duryodhan remained immovable  
 like a mountain even after receiving the wounds. The brave brothers  
 of Duryodhan ready to die for him seeing those two warrior engaged  
 in combat and remembering their former resolution tried hard to  
 capture Bhim. The latter faced those brave warriors as an elephant  
 faces other elephants. Glorious Bhim of great prowess in great  
 anger wounded Chitrang with an arrow and with others he wounded  
 the others. Then the twelve warriors, Abhimanyu and others, sent  
 by Yudhishtir to help Bhim having stationed their forces all round,  
 faced those brave pieces. Seeing those brave men mounted on  
 chariots glorious like the sun or fire, decked with ornaments of great  
 value and armed with bows, your brave sons left Bhim but the latter

भीमं तत्र पुत्रा महाबलाः । तान्नामृष्यत कौन्तेयो जीवमाना गता इति ॥ १६ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि भीमपराक्रमे

अष्टसप्ततितमोऽध्यायः ७८ ॥

सञ्जय उवाच । अन्याय च पुनः सर्वास्तत्र पुत्रानपीडयत् । अभिमन्युं समरे भीममेतेन संगतम् ॥१॥ पार्यतेन च सञ्जये तव सैन्ये महारथाः । दुर्योधनप्रभृतयः प्रगृहीतशरासनाः ॥ २ ॥ मृपमद्वैः प्रज्वितैः प्रययुर्यत्रते रथाः । अपराङ्महे महा राज प्रायच्छत महारणः ॥ ३ ॥ तावकानाञ्च बलिनां परेषाञ्चैव भारत । अभिमन्यु विकर्णस्य हयान् हत्वा महाह्वे ॥ ४ ॥ अर्थेन पञ्चविंशत्या क्षुद्रकाणां समापयत् । हताश्च रथमुत्सृज्य विकर्णस्तु महारथः ॥ ५ ॥ आक्रोह रथे राजश्चित्रसेनस्य भारत । स्थितावकुरये तौ तु भ्रातरौ कुलवर्धनौ ॥६॥ आर्जुनिः शरजालेनच्छादयामास

को देखकर आपके महाबली पुत्रों ने युद्धमें भीमसेन को त्याग दिया परन्तु भीमसेन उन जीवते जानेवालों को देखकर सह न सका १६ ॥

अध्याय ७९ ॥

संजय बोले कि इस के पीछे भीमसेन समेत अभिमन्यु ने पीछा करके आपके सब बेटों को घायल किया, फिर धनुषधारी महारथी दुर्योधनादिक आपकी सेना को धृष्टद्युम्न के हाथमें महा व्याकुल देखकर बड़े शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा वहाँ पहुँचे जहाँ कि वह रथी वर्त्तमानये तदनन्तर मध्याह्नके पीछे आपके और दूसरों के शूर वीरोंका महायुद्ध प्रारम्भ हुआ हे भारतवंशी अभिमन्युने विकर्णके घोड़ों को मारकर २५ क्षुद्रकाणों से उनकी आच्छादित कर दिया फिर महारथी विकर्ण मृतक घोड़ों के रथको त्यागकर चित्रसेनके प्रकाशमान रथपर चढ़े हुए दोनों भाइयों को अभिमन्यु ने बाणों से दक दिया तब दुर्जय और विकर्ण ने पाँचसौहके बाणों से अभिमन्यु को पीड़ित किया परन्तु मेरे पर्वतके समान दृढ़ अभिमन्यु उस

could not bear their going away alive 16.

#### CHAPTER LXXIX

Sanjaya continued.—“Abhimanyu and Bhimsen then chased your sons and wounded them all. Then the great charioteers of your army Duryodhan and others seeing their armies, much distressed by Dhrishtadyumna, rode on their swift horses to the place where those warriors were, and in the afternoon there was a severe fight between the soldiers of the two parties. Having killed the horses of Vikarna, Abhimanyu covered him with twenty five sharp arrows. Brave Vikarna, thereupon, left his chariot with the dead horses and mounted the shining chariot of Chित्रसेन. Abhimanyu covered with his arrows, both the brothers mounted on the same chariot. Durjaya and Vikarna wounded Abhimanyu with five iron arrows, but the latter remained firm like a mountain and could not be shaken with the wounds. Dushasan fought a won-

भारत । चित्रसेनो विकर्णश्च कार्पण्यं पञ्चभिरायसे ॥ ७ ॥ विव्यधा तेन चाकम्पत्  
 कार्पण्यैरुत्थित ॥ दुःशासनस्तु समरे केकयान् पञ्च भारिण ॥ ८ ॥ मोघयामास  
 राजेन्द्रतद्वदमुतामिधामवत् । द्रौपदेया रणे कुन्दा दुर्योधनमचारयन् ॥ ९ ॥ शरैराशी  
 विनाकारै पुन तव विशास्पते । पुत्रोपि तव दुर्धर्षो द्रौपद्यास्तनयानुरणे ॥ १० ॥ साय  
 कैर्निशितैराजन्नाजघान पृथक्पृथक् । तैश्चापि विद्धुः शुशुभे रुधिराण समुक्षित ॥ ११ ॥  
 गिरि प्रसूयणैर्यद्भृगैरिकादि विमिश्रितैः । भीष्मोपि समरराजन् पाण्डवानाम नीकिनीम्  
 ॥ १२ ॥ कालयामास चलवान् पाल पशुगणानिव । ततो गाण्डीवनिर्घोष प्रादुरासी  
 द्विशास्पते ॥ १३ ॥ दक्षिणेन वरूथिन्या पार्यस्थीरिन् विनिघ्नत । उत्तस्थु समरे  
 तत्र कचन्धाति समन्तत ॥ १४ ॥ दुरुणाभ्येव सैन्येषु पाण्डवानाञ्च भारत ।  
 शोणितोदशरावर्त्तं गजद्वीपं हयोर्मिणम् ॥ १५ ॥ रथनीभिर्नरव्याघ्रा प्रतेक सैन्यसा

चोटसे कंपित नहीं हुआ फिर हे राजेन्द्र दुःशासन ने पाँचों केकयों को लड़ाया  
 यह एक आश्चर्यसा हुआ और युद्धमें कोपित द्रौपदी के पुत्रोंने दुर्योधन को  
 रोका फिर प्रत्येकने तीन २ बाणों से आपके घेरेको पीड़ामान किया और उसने  
 भी दुर्गय द्रौपदी के सब पुत्रों को बड़े तीक्ष्ण शायकों से जुदा २ घायल किया  
 और फिरवह दुर्योधन उन पाँचोंसे घायल रुधिर चूता हुआ ऐसाशोभा युक्त हुआ  
 जैसे कि पहाड़ी घातु मिश्रित भित्तोंसे पर्वत शोभायमान होता है और हे राजा  
 महाबली भीष्मजीने भी पाण्डवों की सेनाको ऐसाघायलकिया जैसे कि ग्वाल  
 अपने पशुओं के समूहों को ताड़ित करताहै । १२ । इसके पछि सेनाके दक्षिण  
 और अर्जुन के शत्रु हन्ता गांडीव अनुपया शब्द सुनाई दिया, वहाँभी कौरव और  
 पाण्डवों की सेनाओंमें हजारों रुंदखड़े होहोकर युद्धकरनेवाले हुए, उसयुद्धमें भी  
 नरोत्तमों ने रुधिररूप जल और वाणरूप भँवर हाथी रूप टापू घोड़े रूप लहरें  
 ऐसे सेना रूपी सागर को रथरूप अपनी नौकाओंके द्वारा तरणकिया उस संग्राम

derful fight with the five Kaurava brothers, and the five sons of Draupadi checked in battle the enraged Duryodhan. Each of them wounded your son with three arrows and the latter wounded them separately with his own sharp arrows. Duryodhan wounded and bleeding by those five warriors looked glorious like a mountain with its fountains of mineral waters. The army of the Pandavas was beaten down by Bhishma like a herd of cattle by the herdsman. 12. In the south of the army was heard the twang of Arjun's Gandiv bow the destroyer of foes and thousands of headless bodies were to be seen there in the armies of the Kauravas and the Pandavas. In that battle, too, the best of warriors crossed with the canoes of their chariots the ocean having blood for its water, the arrows for its eddies, the elephants for its islands and the horses for its billows. Thousands of warriors

गरम् । छिन्नहस्ता विफलयुक्ता विदेहाश्च नरोत्तमा ॥ १६ ॥ हृदयन्ते पतितास्तत्र शत  
शोथसहस्रशः । निहतर्मत्तमातङ्गः शोणितो घपरिन्दुतः ॥ १७ ॥ भूर्भोति भरतश्चेष्ट  
पर्यैतैरचितायथा । तत्राद्भुतमपद्यामस्तत्र तेषाञ्च भारत ॥ १८ ॥ न तत्रासीत्पुमान्  
फटिचयो युद्धं नामिकांक्षति । एवं युयुधिरे वीरा प्रार्थयान्ता महद्यशः । तावकाः  
पाण्डवैः सार्द्धं माकांक्षन्तो जयंयुधि ॥ १९ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि संकुलयुद्धे

ऊनाशीतितमोऽध्यायः ॥ ७२ ॥

सञ्जय उवाच । ततो दुष्येधनो राजा लोहितायति मात्करे । संप्रामरभसो भीम  
हन्तुकामोभ्यधावत ॥ १ ॥ तमायान्तमभिप्रेक्ष्य नृधीरे हृदयैरिणम् । भीमसेनः सुसंयुद्ध  
स्वभ्यचनमप्रवीत् ॥ २ ॥ अयं सकालः सम्प्राप्तो घर्षपूगाभिर्वांक्षितः । अद्यत्वां निह  
निष्यामि यदि नोत्सृजसे रणम् ॥ ३ ॥ अद्यकुन्त्या परितलेशं चनवासञ्च कृतस्नशः ।  
मैं हाथ कवच दूरे देइके अहंकार से रहित हजारों नरोत्तम पृथ्वी पर गिरे हुए दृष्टि  
गोचरहुए, हे भरतर्षभ मृतक हुए रुधिरोंमें भरे मतवाले हाथियों में पृथ्वी ऐसी दिरझाई  
दी मानों पर्वतों से भरा है, वहां हमने आपके पुत्रोंका और पांडवों का अपूर्व  
वृत्तान्त देखा अर्थात् कोई ऐसा वहां पुष्प नहीं था जो युद्धकरना न चाहता हो,  
इस रीतिसे बड़े यशके चाहनेवाले युद्धमें विजयाभिलाषी आपके धीरपुत्र पाण्डवों  
के साथयुद्धकरनेवालेहुए ॥ १९ ॥

अध्याय ८० ॥

संजय बोले फिर सूर्यके अरुण होनेपर युद्धमें वेगवान् राजा दुष्येधन भीमसेनके  
मारनेको इच्छवान् सम्मुख दौड़ा, तब अत्यन्त कोपयुक्त भीमसेन उस आतेहुए नर  
धीर बड़ी शयुतारनेवाले को अपने सम्मुख देखकर यह वचन बोला, कि बहुत  
यों से चाहाहुआ यह समय आया है अब मैं अवश्य तुम्हको मारुंगा जो तू युद्धसे  
न भागेगा, अब तेरे मारनेमें मैं कुन्ती के और द्रौपदी के चनवासके दुखोंको दूर  
We were seen there falling down deprived of their hands, armour and  
pride of power. The ground looked full of hills with the bleeding  
bodies of mad elephants. There we saw the wonderful prowess of your  
sons and that of the Pandavas. There was no person there who did  
not desire for fighting. Thus the great seekers after fame and victory,  
your sons as well as the Pandavas fought bravely "19.

CHAPTER LXXX

Sanjaya continued — "When the sun was red, Prince Duryodhan  
of great energy rushed to destroy Bhishma in fight, and the latter, in a  
rage seeing his brave enemy coming towards him, said, 'The long-  
wished for time has come! I shall surely kill you, if you do not run  
away from the field. I shall wash away with your blood the sorrows  
of Kunti and Draupadi at once. You will now reap the fruit of

द्रौपद्याश्च परिकलेशं प्रणेष्यामि हते त्वयि ॥ ४ ॥ यत्पुरा भर्तस्य सृत्वा पाण्डवान्य  
मन्यसे । तस्य पापस्य गान्धारे पश्य व्यसनमागतम् ॥ ५ ॥ कर्णस्य मतमास्थाय  
सौवलस्य च यत्पुरा । अचिन्त्य पाण्डवान् कामाद्येष्टं कृतवानसि ॥ ६ ॥ याच  
मानञ्च यन्मोहादाशार्हमवमन्यसे । उन्नूकस्य समादेशं यद्ददासि च दृष्टवत् ॥ ७ ॥  
तेन त्वा निहनिष्यामिः सानुबन्धं सवान्धवम् । शमीकरिष्ये तत्पाप यत्पुरा कृतवानसि  
॥ ८ ॥ एवमुक्त्वा धनुर्घोरं विकृष्योद्ग्रास्य चासकृत् । समाधत्त शरान् घोरान् महा  
शनिस्त्रिमप्रभान् ॥ ९ ॥ पद्भिश्चतुर्भिर्मुखांश्च कुक्षो मुमोचाशु सुयोधने । ज्वलितान्नि शिखा  
कारान् वज्रकल्पानजिह्वान् ॥ १० ॥ ततोऽस्य कार्मुकं द्वाभ्यां मृतं द्वाभ्याञ्च विव्यधे ।  
चतुर्भिर्दशानुजघनान् नयधमसादनम् ॥ ११ ॥ द्वाभ्याञ्च सुविहृष्टाभ्यां शराभ्यामरि  
मर्दनं । छत्रं चिच्छेद् समरे राक्षस्तस्य नरोत्तम ॥ १२ ॥ पद्भिश्चतस्रस्तस्य चिच्छेद्  
ज्वलन्तं ध्वजमुत्तमम् । छित्त्वा तञ्च ननादाञ्चैस्तव पुत्रस्य पश्यत ॥ १३ ॥ रथाञ्च  
कहंगा, जिस हेतुसे कि पूर्वसमय में तेने ईर्ष्या करके पाण्डवों का अपमान किया था  
हे गांधारी के पुत्र तू उस पापके फल को देख और जिसकारण से कि तेने कर्ण  
और शकुनी के मत में नियत होकर पांडवों को साधारण समझकर अपनी इच्छा  
से वह कर्म किया है, और जिस दशार्मे कि भूलसे तेने श्रीकृष्णजी का अपमान  
किया है इन सब हेतुओंसे मैं बांधवोंसमेत तुम्हको मारुंगा और उस पापको शान्तकहंगा  
जो पूर्व समय में किया है, उस क्रोधरूप भीमसेन ने इस प्रकार से कहकर अपने  
घोर धनुष को खिंचकर बारम्बार ऊंचा घुमाकर घोर महावज्र के समान प्रकाशमान  
अग्नि शिखा के समान ज्वलित वज्रके समान भीधे चलने वाले छत्रास बाणों को  
बड़े वेग से शीघ्रता पूर्वक दुर्योधनपर फेंका ॥ १० ॥ और दो बाणों से उसके धनुष  
को काटा और दोही बाणों से उसके मृत को घायल करके चार तीक्ष्ण बाणों से  
उसके घोड़ों को मार डाला, फिर उस शत्रुहन्ता ने अच्छे प्रकार खिंचे हुए दो बाणों  
से उस राजा के छत्रको भी उत्तम रथ से काट गिराया, फिर तीन बाणों से  
उसकी उत्तम ध्वजा को पृथ्वी पर काटकर दुर्योधनके देखते हुए बड़े शब्द

your envy and contempt of the Pandavas, son of Gandhari 5. And because you have acted on the evil counsel of Karan and Shakuni have fought against the Pandavas and thought them to be ordinary men, and have by your stupidity looked down upon Shree Krishna, I shall therefore destroy you and your kinsmen to avenge the wrongs done by you in former days " Having said these words Bhim in his rage, drew his bow and swinging it high several times, discharged ceaselessly at Duryudhan, twenty six arrows straight and shining like vajra and burning like a flame. 10 With two of his arrows he cut down his bow and having killed his chariot driver with two more, he killed his horses with four. Then that destroyer of foes with two fine & well aimed arrows cut down the shade from the chariot. And



स ध्वजः श्रीमान् नानादत्तविभूषितात् । पपात सहस्रं मूर्ध्नि विगुञ्जलधरादिव ॥१४॥  
 ज्वलन्तं सूर्यस्तद्गोशं, नानां मणिमयं शुभम् । ध्वजकुम्पतोद्विग्नं दृष्ट्वा सर्वपाथिवाः  
 ॥ १५ ॥ अयेनं दृशमिवाणस्तोत्रैरिव महात्रिपथम् । आजगान रणे वीरं स्मयन्निधमहा  
 रथम् ॥ १६ ॥ ततः स राजा सिन्धुनां रथश्रेष्ठो महारथः । दुर्योधनस्य जग्राह पाणि  
 सतपुरुषैर्हतः ॥ १७ ॥ कृपश्च रथिनां श्रेष्ठः कौरव्यमभिमन्युञ्जसम् । आरोपयद्रथं राजन्  
 दुर्योधनममर्षयम् ॥ १८ ॥ स गाढचिह्नो व्यथितो भीमसेनेन संयुगं । निजसाह रथो  
 पस्थे राजन् दुर्योधनस्तदा ॥ १९ ॥ परिवार्य सतो मीमं जेतुकामो जयद्रथः । रथैरनेक  
 साक्षैर्भीमस्पाचार्यदिश ॥ २० ॥ धृष्टकेतुस्ततो राजन्नाभिमन्युञ्ज वीरवान् । केकया  
 द्रौपदेयाश्च तव पुत्रानयोधयन् ॥ २१ ॥ चित्रसेनः सुचित्रश्च चित्रांगदिचन्द्रदर्शनः ।

से गर्जा वह नानाभकार के रथों से शोभित उत्तम ध्वजा अकस्मात् रथ से  
 पेसी गिरी जैसे कि बादल में बिजली गिरती है, तब राजाओं ने कुरुक्षेत्र  
 दुर्योधन की प्रकाशमान अग्नि के समान ज्वलित मणियों से जटित ध्वजा को  
 कटाहुआ देखा । १५ । तब अहंकार युक्त महारथी भीमसेन ने वंस को दश बाणों से  
 ऐसे घायन किया जैसे कि दण्ड से महागजेन्द्र को घायल करते हैं, इसके अनन्तर  
 सिंधुदेशियों के राजा रथियों में श्रेष्ठ महावर्त्ता ने हाथ में परशों को धारण  
 करके दुर्योधन की पीठ को पकड़ा, रथियों में श्रेष्ठ कृपाचार्य ने बड़े  
 तेजस्वी क्रोध युक्त कौरवी दुर्योधन को रथपर सवार किया, फिर वह राजा  
 दुर्योधन भीमसेन के हाथ से अत्यन्त घायल और पीड़ितमान् रथ में बैठ गया, तब  
 मारने की इच्छा करनेवाले जयद्रथने भीमसेन को चारों ओरसे घेरकर हजारों रथियों  
 से उसकी सब दिशाओं को रोका । २० । इसके पीछे हे राजा धृष्टकेतु व पराक्रमी अभिमन्यु  
 व पाँचों केकय व पाँचों द्रौपदी के पुत्र आपके पुत्रों से युद्ध करने लगे चित्रसेन

having severed his banner with three arrows he roared within sight  
 of Duryodhan. Decked with jewels the banner fell suddenly from  
 the chariot as lightning does from clouds 14. All the princes saw  
 the fall of the jewelled and shining banner of Duryodhan the Prince of  
 the Kurus. Bhim then wounded Duryodhan with ten arrows as a  
 driver wounds an elephant. At this the king of Sindhu a great war-  
 rior armed with axe, protected Duryodhan on the back. Kripacharya  
 the best of charioteers mounted the glorious prince of the Kauravas  
 on his own chariot. Prince Duryodhan, much wounded and distressed  
 at the hands of Bhim, sat on the chariot. And desiring to kill  
 Bhim, Jayadrath surrounded him on all sides with thousands  
 of chariots. 20. Dhristketu, valliant Abhimanya, the five  
 Kailayas and the five sons of Draupadi fought against your  
 sons. Chitrasen, Suchitra, Chitrang, Chitradarshan, Sucharu, Charu-  
 mitra, Nand and Upnandak, these eight warriors of great prowess

चारु चित्र सुचारुश्च तथा नैदीपनैदको ॥ २२ ॥ अष्टवेते महेष्वासा सुकुमारयश  
स्विन । अभिमन्युरय राजन् समतात् पर्यवारयन् ॥ २३ ॥ आजघ्नन् ततस्तूर्णं ममि  
मन्युर्महामना । एकैकं पञ्चभिर्वाणै शितै सन्नतपर्वभिः ॥ २४ ॥ वर्ज्यमृत्यु प्रतीकाशै  
र्विचित्रासुध नि सृते । अमृष्यमाणास्ते सर्वे सौमद्रं त्यक्तसमम् ॥ २५ ॥ वष्टुर्मुर्गणै  
स्तीक्ष्णैर्गैरेममिवाबुदा । सर्पीज्वमान समरे कृतास्त्रोयुद्धवुर्म् ॥ २६ ॥ अभिमन्यु  
र्महाराज तावकान् समकपयत् । यथा देवासुरे युद्धे वज्रपाणिर्महासुरान् ॥ २७ ॥  
विकर्णस्य ततो भल्लान् प्रेषयामास भारत । चतुर्दश रथध्रेष्ठो घोरानाशीविधोपमान्  
॥ २८ ॥ स तैर्विकर्णस्य रथात् पातयामास वीर्यवान् । ध्वज सूतं हयाश्चैव नृत्यमान  
इवाहवे ॥ २९ ॥ पुनश्चान्यान् शरान् पीतानकुण्ठाग्राश्च शिला शितान् । प्रेषयामास  
सकुटो विकर्णायमहाबलः ॥ ३० ॥ ते विकर्णं समासाद्य कङ्कवर्हिणवांससः । मित्रा

सुचित्र चित्रांग चित्रदर्शन सुचारु, चारुचित्र इसी प्रकार नन्द उपनन्दक, इन बड़े २  
धनुषधारी सुकुमार यशस्वी आठों ने अभिमन्यु के रथको चारों ओर से घेरा,  
फिर बड़े साहसी अभिमन्यु ने शीघ्रही गुप्तग्रन्थिवाले पांच ५ बाणों से प्रत्येक को  
घायल किया, बड़े बाण जड़ाऊ धनुष से निकले हुए वज्ररूपमृत्युकें समान थे वह  
मर भी क्रोधयुक्त होकर, रथियों में श्रेष्ठ अभिमन्युपर । २५ । अपने तीक्ष्ण बाणों की  
ऐसे वर्षा करने लगे जैसे कि मेरु पर्वत पर बादल वर्षा करते हैं । महाराज उस  
अस्त्र युद्ध में बुद्धि, पीड़ामान अभिमन्यु ने आप के पुत्रों को ऐसा अत्यन्त कंपित  
किया जैसे कि देवता और असुरों के युद्ध में वज्रधारी इन्द्र बड़े २ असुरों को  
कपायमान करता है । २७ । राजा इसी प्रकार उस अभिमन्यु ने विप भरे हुए घोर चौदह  
भल्लों को विकर्ण के निमित्त भेजा, फिर उस पराक्रमी ने युद्ध में नृत्य करने वाले के  
समान उन बाणों से विकर्ण की ध्वजा घेड़े रथ सूत और धनुष को भी रथ से  
गिराया, और पीतंग के प्रकाशित नोक और सीधे चलने वाले और बाणोंको  
विकर्णपर पेका । ३० । वह कंक और गोरके परोसे संयुक्तवाण विकर्ण को पाकर

surrounded Abhimanyu's chariot, but the latter wounded each of  
them with five arrows containing hidden knots. Those arrows shot  
from the gam-decked bow were fatal in effect like vajra and those  
best of warriors, in a rage, showered their arrows on Abhimanyu as  
clouds pour forth rain on Sumera. That great archer Abhimanyu,  
being much wounded by those arrows, shook your sons with his arrows  
as India the wielder of vapa shakes the asurs in the war between the  
gods and the asurs. 27 With fourteen poisonous darts, he wounded  
Vikarn. Like a dancer in the field of battle he felled Vikarn's lanner,  
horses, chariot, driver and bow from the chariot, and discharged more  
yellow coloured arrows at him. 30 These arrows furnished with  
the feathers of vultures and peacocks, pierced through the body of

देह गता भूमिं ज्वलन्तश्च पञ्चगा ॥ ३१ ॥ ते शरा हेमपट्टाग्रा व्यहृद्यन्त महीतले ।  
विकर्णरुधिरफिलिन्ना वमन्तश्च शोणितम् ॥ ३२ ॥ विकर्णं धीक्ष्य निर्भिन्न तस्यैवान्ये  
सहोदरा । अभ्यद्रवन्त समरे सौमद्रप्रमुखान् रथान् ॥ ३३ ॥ अभियात्वा तथैवान्यान्  
रथास्तान्सूर्यवचंसः । अविध्यन् समरेन्योन्यं संरंभायुद्धदुर्मदा ॥ ३४ ॥ दुर्मुखं धृत  
कर्माणं विध्वा सप्तभिराशुगैः । ध्वजमंकेन चिच्छेद् सारथिश्चास्य सप्तभिः ॥ ३५ ॥  
अश्वान्जाम्बूनदैर्जालैः प्रच्छन्नान् वातरहसः । जघान पट्टभिरासाद्य सारथिश्चाभ्य-  
पातयत् ॥ ३६ ॥ स हताश्वे रथे तिष्ठन् धृतकर्मा महारथः । शक्तिं चिक्षेप स कुड्यो  
महोदका ज्वलितामिव ॥ ३७ ॥ सा दुर्मुखस्य विमलं वर्म मित्वायशस्त्रिनः । विदार्यप्रा-  
विशद्भूमिं दीप्यमाना स्वतेजसा ॥ ३८ ॥ तं दृष्ट्वा धिरथ तत्र सुतसौमो महारथः ।

उसके शरीर को घायल कर सपोंके समान स्वासलेते हुए पृथ्वी पर गिरे, फिर  
वह सुनहरी पुंख नोकवाले बाण विकर्णके रुधिरसे भरेरुधिर को उगलते हुए पृथ्वी  
पर पड़े दृष्टआये, विकर्ण को घायलदेखकर उसके दूसरे सगे भाई युद्धमें अभिमन्यु  
आदि रथियों के सम्मुख दौड़े, और इसी प्रकार उन क्रोधयुक्त युद्ध दुर्मद  
रथियों ने उनके सम्मुख जाकर उन सूर्य के समान तेजस्वी रथियों को परस्पर में  
रायल किया, फिर दुर्मुखने शीघ्रगामी सात बाणों से श्रुतकर्मा को घायल करके  
एक बाण से उसकी ध्वजाको काटा और सात बाणों से उसके सारथीको घायल  
किया ॥ ३५ ॥ फिर सुनहरी जालोंसे ढके हुए बायुके समान शीघ्रगामी घोड़ोंको छः बाणों  
से मारकर उसके सारथीको भी गिराया उसपूतक घोड़ों के रथपर नियत उस महा-  
बली श्रुतकर्मा ने बड़े क्रोधयुक्त होकर महाज्वलित उत्काके समान बरछी को उस  
के ऊपर फेंका, वह बरछी उस यशस्वी दुर्मुख के बड़े कण्ठको काटकर अपने  
तेज से उसको फाड़के बड़ी प्रकाशमान होके पृथ्वी में प्रविष्टहोगई वहां  
महानली सुतसौमने उसको धिरथ देखकर सब सेनाके देखने हुए अपने रथ पर

Vikarn and fell down on the ground like hissing serpents. Those  
pointed arrows with gold feathers, vomiting forth the blood of  
Vikarn, were to be seen on the ground. Seeing Vikarn wounded,  
his other brothers rushed against Alharmayu and others, and  
those brave warriors, proud of their power, wounded those glorious  
charioters in battle. Durmukh wounded Shrutkarma with seven  
swift arrows and having cut down his banner with an arrow he  
wounded the driver with seven more. And with six more arrows  
having killed the horses covered with gold nets and swift as the  
wind, he killed the driver also. Seated on the chariot with the horses  
dead, brave Shrutkarma in great anger, hurled at him a javelin bright  
as fire. The javelin cut through the armour of brave Durmukh with

पश्यतां सर्वे सैन्यानां रथमारोपयत्स्वकम् ॥ ३९ ॥ श्रुतकीर्तिस्तथा वीरो जयत्सेनं  
 सुतं तव । अश्रययात् समरे राजन् हन्तुकामो यशस्विनम् ॥ ४० ॥ तस्य विक्षिपतध्वजं  
 श्रुतकीर्तिमहास्त्रनम् । चिच्छेद समरे तूर्णं जयत्सेनः सुतस्तव ॥ ४१ ॥ क्षुरमेण सुती  
 क्षणेन प्रहसन्निवभारत । तं दृष्ट्वाच्छिन्नधन्वानं शतानीकः सहोदरम् ॥ ४२ ॥  
 अश्रयपयततेजस्वी सिंहायन्निनदन् मुहुः । शतानीकस्तु समरे दृढं विस्फार्यकामुकम्  
 ॥ ४३ ॥ विव्याध दशभिस्तूर्णं जयत्सेनं शिलीमुखैः । ननाद् सुमहानाद् प्रभिन्नश्च  
 चारणः ॥ ४४ ॥ अथान्येन सुताक्षणेन सर्वोवरणं भेदिना । शतानीको जयत्सेनं विव्याध  
 हृदये भूशम् ॥ ४५ ॥ तथा तस्मिन् वर्चमाने दुष्कर्णो भ्रातुरन्तिके । चिच्छेद समरे  
 चापं नाकुलेः क्रोधमूर्च्छित ॥ ४६ ॥ अथान्यदनुपदाय भारसाहमनुत्तमम् । समादत्त  
 शरान् घोरान् शतानीको महाबलः ॥ ४७ ॥ तिष्ठ तिष्ठेति धामन्यदुष्कर्णं भ्रातुरप्रतः ।

सवार किया इस के पीछे हे राजा महाबली श्रुतकीर्ति आपके यशस्वी जयसेन पुत्र  
 के मारने की इच्छा से उसके सम्मुख गया, तब आपके पुत्र जयसेन ने उस धनुष  
 खिंचने वाले श्रुतकीर्ति के धनुषको अपने चुरप्रवाणोंसे बड़े हास्यपूर्वक काटा फिर  
 तेजस्वी शतानीक उस धनुषदूढ़े अपने निज भाई को देखकर सिंहके समान बारंबार  
 गर्जता हुआ सम्मुख आया और युद्धमें अपने दृढ़ धनुषको खिंचकर बड़ी शीघ्रता  
 से दश शिली मुख बाणों से जयसेनको घायल किया और मदोन्मत्त बाणों के  
 समान महाशब्द करके गर्जा, तदनन्तर इसने बड़े २ तक्षिण दाल खड्गों के काटने  
 वाले अन्य बाणोंसे जयसेनको अत्यन्त घायल किया । ४५ । इसी प्रकार युद्धके वर्चमान  
 होनेपर भाई के समीप नियतक्रोधमें व्याकुल दुष्कर्ण ने शतानीकके बाण समेत  
 धनुषको काटा, फिर महाबली शतानीकने बड़े बौद्ध के साथने वाले अन्य दृढ़  
 धनुषको लेकर बड़े घोरबाणों को हाथमें लिया । ४७ । और भाई के सम्मुखहोकर  
 दुष्कर्ण से तिष्ठ तिष्ठ शब्द कहके उसके ऊपर बड़े तीक्ष्ण और ज्वलित सर्प के

its sharp edge and then glancing out entered the ground below. Sut-  
 som of great prowess seeing him destitute of chariot took him up on  
 his own chariot within sight of the armies. Then brave Shrutakirti  
 faced your valiant son Jayasen in order to kill him; but the latter  
 with a smiling face, cut down the bow of Shrutakirti with his sharp  
 arrows. Shatanik seeing his brother's bow cut down, roared again  
 and again like a lion and drawing up his bow for the purpose of  
 fighting, soon wounded Jayasen with ten arrows sharpened on stone,  
 and like a mad elephant roared a loud roar. Then with very large arrows  
 which could cut shields, swords and bows, he wounded Jayasen more  
 and more. When the battle was thus raging, Dushkarn stationed near  
 his brothers, in great anger, cut down the bow and arrow of Satanik,  
 who took up another bow capable of bearing great weight and put  
 to it his dreadful arrows. 47. In the presence of his brother, he

मुमोचास्मै शितान् बाणान् उल्लितान् पन्नगानि ॥ ४८ ॥ ततोऽस्य धनुरेकेन द्वाभ्यां  
 सूतञ्च मारित । विच्छेत् समरे तृणं तञ्च विव्याध मतामि ॥ ४९ ॥ अश्वान् मत्तो  
 जवांस्तस्य कर्तुरादवातरंहसः । जवान् निशिनस्तूर्णं सर्वान् द्वादशभि शरैः ॥ ५० ॥  
 अयापेरज मञ्जरेन संयुक्तेनागु पातिना । दुष्कर्णं सुदृढं कुदो विव्याध हृदये भृशम्  
 ॥ ५१ ॥ स पश्चात् ततो भूमौ वज्राहत इव दुमः । दुष्कर्णं व्यथितं दृष्ट्वा पञ्च राजन्  
 महारथाः ॥ ५२ ॥ जिघ्रामन्तः शतानीकं सर्वतः पर्यवारयन् । छाद्यमानं शस्त्राति-  
 शतानीकं यशस्विनम् ॥ ५३ ॥ अश्ववधन्त संकुदाः केकया पञ्चमोदराः । तानभ्या  
 पतनः प्रेक्ष्य तत्रपुत्रामहारथाः ॥ ५४ ॥ प्रत्युद्युर्मुह्यारज गजा निर महागजाः । दुर्मुखो  
 दुर्जयश्चैव तया दुर्मरिणो युवा ॥ ५५ ॥ शत्रुजय शत्रुसह सर्वे कुड्यायशस्विनः । प्रत्यु  
 द्यानामहारजकेरुषान् भ्रान्तः समम् ॥ ५६ ॥ रथैर्नगरसदृशैर्हयैर्धुकैर्मनोजयैः । नाना  
 समान बाणों को छोड़कर एक बाणने उनके धनुषको और दो बाणों ने उनके  
 मारथों को काट मारकर बड़ी शीघ्रतासे मात बाणों से उसको घायल किया, फिर  
 प्रहस्तमूर्ति मारथकी ने बड़ी शीघ्रतासे बारह तीक्ष्ण बाणों से उसके सब घोड़ोंको  
 जो कि चलते अनुमार शीघ्रनामी और कल्याणी रंगये मारडाला ॥ ५० ॥ फिर हेराजा  
 उन क्रोधवन्तने शत्रुहन्ता और महा भयकारी भल्लनाम बाणने दुष्कर्ण को व्यथित  
 किया और वा उन के आघात से वज्रने दृष्टे हुए वृत्तकी समान पृथ्वीपर गिरा हे  
 राजा पांचनहारथियों ने दुष्कर्ण को मरादुआ देखकर मारने की इच्छाकरके  
 शतानीक को चारों ओर से घेर लिया, फिर बाणों ने दके हुए यशस्वी शतानीक  
 को देखकर, अश्वन क्रोध में भरे पांचों निजभाई केकय उनके सम्मुख दौड़े, हे  
 राजा उन पांचों महारथियों को आता देखकर आपके पुत्र ऐसे सम्मुख गये जैसे  
 कि हाथी महागजेन्द्रोंके सम्मुख जाय दुर्मुख दुर्जय दुर्देय ॥ ५५ ॥ शत्रुजय शत्रुसह  
 यह सब यशस्वी महा क्रोध युक्तशेकर केरुष लोगों क सम्मुख गये, मन के अनुसार

challenged Duryodhan with a cry of 'stay, stay' and discharged sharp and bright arrows like serpents at him. With one arrow he cut down his bow; with two more he hit and killed the driver and very soon he pierced his body with seven sharp arrows. Then Satyaki with a cheerful face, killed all his swift horses of variegated colour with twelve sharp arrows 50 And with dreadful darts, destroyers of foes, he wounded Dashkarna, O King. Wounded by those darts he fell down like a tree struck down by lightning. The five warriors seeing Dashkarna dead surrounded Shatanik on all sides in order to kill him. And seeing Shatanik covered with their arrows, the five Kaikaya brothers, rushed on to the front. Seeing those five warriors rushing on towards him, your sons faced them as elephants face elephants. Durmukh, Durjaya, Dardharshan 55 Shatranjaya, Shatru-ah, all these in great anger, faced the Kaikyas. Mounted on

वर्णविचित्राणि पताकाभिरन्वृते ॥ ५३ ॥ धरवापधरावीरा विचित्रकनकध्वजा ।  
 विविशुस्ते पर सैन्य सिंहा इव जगद्गम ॥ ५८ ॥ तेषां तु मुलं युद्धं व्यतिपतरय  
 द्विपम् । अचरन्त महायुद्धं निघातामिवरेतरम् ॥ ५९ ॥ अन्योन्यागच्छता राजन् यम  
 राष्ट्रविचर्जनम् । युद्धार्तास्तमिते सूर्ये चक्षुर्बुद्ध सुदारुणम् ॥ ६० ॥ रथिनः सादिनश्चाय  
 व्यकीर्यन्त सहस्रशः । ततः शान्तनव युद्धं शरैः सन्नतपर्वभिः ॥ ६१ ॥ नाशयामास  
 सेनांता भीष्मस्तेषां महात्मनाम् । पञ्चालानाञ्च सैन्यानि शरैर्निन्येयमक्षयम् ॥ ६२ ॥  
 एव मित्यामहेष्यास पाण्डवानामनीकिनीम् । कृत्वाऽवहार सैन्यानां ययौ स्वाशिधिर  
 नृप ॥ ६३ ॥ धर्मराजोपि सम्येक्ष्य धृष्टद्युम्नवृकादरो । मूर्ध्नि चैतामुपाधाय प्रहृष्ट  
 शिधिर ययौ ॥ ६४ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मप्रपञ्चनि भीष्मद्रोणसंवादे

अशीनितमोऽध्यायः ८० ॥

शीघ्रगामी घे हों से मयुक्त नाना प्रकारके विचित्ररथों और पताकाओं समेत रथों में बैठे उत्तम धनुषधारी चित्र चित्र कनक पहिरे वह धीरशत्रुओंकी सेना में आकर ऐसे वर्तमानहुये जैसे कि सिंह एक वन से दूसरे वन में वर्तमान होते हैं । ५८। हे राजा परस्पर मारते और एक एक का अपराध करने वाले लोगों का वह युद्ध शयी पोंदों समेत महातुम्ह और घोर जारी हुआ वह सब यमलोक की वृद्धि करने वाले सूर्यास्त के समय बड़े घोरयुद्धकरने वाले हुए, हजारों रथी और घुड़चढ़े व्य कुल हुए इस के पीछे शत्रु के घेदे कोष युक्त भीष्मजी ने गुप्तग्रन्थी वाले बाणों से, उन महात्माओं की उस मेनाको नष्ट करदिया और पांचनों की सेना को भी यम लोक में पहुँचाया, इसरीति से यह बड़े धनुषधारी पांडवों की सेनाको घायन कर के सब सेनाओं का विधाम करके अपने डेरे को गये, धर्मराजभी धृष्टद्युम्न और भीमसेन को देखकर दोनों के मस्तरुको मूँधकर अपने डेरों को गये ६४।

various, chariots drawn by horses swift like the wind and furnished with banners the best of archers, clothed in armour, came into the field of battle like lions coming from one forest to another 58 Killing one another and wounding those warriors, he fought hard with the help of elephants and horses and filled the region of Yama till sunset. Thousands of chariots and horsemen were disabled. Then Bhishm the son of Shantanu, in great anger, with arrows having hidden krishna, destroyed the armies of the great Pandas as and the Panchals sending many to the region of Yama. Thus the great archer having wounded the army of the Pandavas dismissed the armies for the night and himself went to his tent. Dronraj too, smelt the foreheads of Bhishm and Dhrishtadyumna and then went to camp. 64

सञ्जय उवाच । अथ शूरा महाराज परस्परकृतागसः । जग्मुः स्वशिविराण्येव  
 रुधिराण्य समुक्षिताः ॥ १ ॥ विश्राम्य च यथान्यायं पूजयित्वा परस्परम् । सन्नृताः  
 समदृश्यन्त भूयो युद्धचिकीर्षया ॥ २ ॥ ततस्तत्र सुतो राजंश्चिन्तयाभिपरिप्लुतः ।  
 विसृज्यच्छोषिताकाङ्क्षः पप्रच्छेद् पितामहम् ॥ ३ ॥ सैन्यानि रात्रौपि भयानकानि  
 ध्यूतानि सभ्यग्वहस्रध्वजानि । विदार्य हत्वा च निषोड्य शूरास्ते पाण्डवानां त्वारिता  
 महारथाः ॥ ४ ॥ सम्मोहं सर्वान् युधि कीर्त्तिमन्तो व्यूहञ्च तं मकरं वज्रकल्पम् ।  
 भविष्य भीमं रणेहतोस्मि घोरं शर्मभृत्युदण्डप्रकाशः ॥ ५ ॥ कुदन्तमुद्गाक्ष्य  
 भयेन राजन् सम्मुच्यतो नलभे शान्तिमद्य । इच्छे प्रसादात्तव सत्यसन्ध प्राप्तुं  
 जयं पाण्डवेयांश्च हन्तुम् ॥ ६ ॥ तेनैवमुक्तः प्रहसन् महात्मा दुर्योधनं मन्युगतं  
 विदित्वा । तं प्रत्युवाचा विमना मनस्वी गङ्गासुत शस्त्रधृताभ्यारिष्ठः ॥ ७ ॥ परेण

अध्याय ८१ ॥

संजय बोले हे महाराज इसके पीछे परस्पर अपराध करने वाले शूररुधिर से  
 भरे देह अपने २ डेरोंको गये, फिर न्याय के अनुसार विश्राम कर परस्पर पूजन  
 को करके युद्ध करने की इच्छा से कवच और अस्त्र शस्त्रों से, अलंकृत दृष्टपट्टे  
 हे राजा इसके अनन्तर चिन्तायुक्त आपके पुत्रने गिरतेहुये रुधिरसे भरेहुये शरीर  
 वाले भीष्मपितामहसे पूछा कि पाण्डवों के वहशूर महारथी घोर भयानक और  
 शस्त्रोंसे अलंकृत बहुत ध्वजायुक्त सेनाओंको मार और पीड़ित करके कीर्त्तवानहो  
 युद्धमें प्रवृत्तहुये और उसवज्रके समान मकरव्यूहमेंप्रवेश कर के भृत्युदण्ड के समान  
 प्रकाशित और घोर भीमसेनके वाणों से मैं महाव्याकुल और घायल होगयाहूँ ।  
 हे राजा उस क्रोधरूप भीम को देखके भय से मूर्च्छावान् होकर अबतक मैं शान्ती  
 को नहीं पाता हूँ हे सत्यसंकल्प मैं आपहीकी कृपा से पाण्डवोंको मारकर विजय  
 पाना चाहताहूँ इतनी वीरि के सुनतेही, दुर्योधन को व्याकुल और क्रोधयुक्त देख

### CHAPTER LXXXI

Sanjaya continued, "Then, O king, wounding one another, the warriors with blood stained bodies went to their respective camps. And having rested during the night, they saluted one another and were seen again well decked with arms and armour. Then your son, plunged in grief said to Bhishma the grandfather whose body dropped blood—"The brave warriors of the Pandvas, armed with dreadful weapons, have in battle killed and cut our soldiers and banners and gained great fame, and having entered the impregnable crocodile array of our army, Bhishma wounded me with his dreadful arrows shining like the staff of death. 5 Having seen the angry form of Bhishma, I fainted with terror and my mind is not yet composed. Observer of true vow I by your grace I hope to destroy the Pandavas and gain victory." Having heard these words and seeing Duryodhan

यत्नेन विगाह्य सेना सर्वात्मनाह तव राजपुत्र । इच्छामि दातु विजय सुखं च  
 स्वात्मानं छादये ह त्वदर्थे ॥ ८ ॥ एते तु गद्गा बहवो महारथा यशस्विनश्च शूर  
 तमा वृताः ॥ ये पाण्डवानां समरे सहाया जितकलमारोपविष व्रजन्ति ॥ ९ ॥  
 ते नैव दासया सहसा विजेतुं धीर्योद्धता कृतवैरास्तवया च । अहसेनां प्रतियोत्स्या  
 मि राजन् सर्वात्मना जीवितं त्यज्य धीर ॥ १० ॥ रणे तवार्थाय महानुभाव न जी  
 वितं रक्ष्यतमं ममाय । सर्वास्तवार्थाय सदेवैत्यान् धोरान् दह्य किमु शत्रुसेनाम्  
 ॥ ११ ॥ तान् पाण्डवान् योध्यिष्यामिराजन् प्रियवते सर्वमहं करिष्ये । भुत्वा चैतद्भुजं  
 तदानीं दुर्योधनं प्रातमना प्रभुम् ॥ १२ ॥ सर्वाणि सैन्यानि तस्य प्रहृष्टो निर्गच्छतेत्याह  
 नृपाश्च सर्वाः । तदाज्ञयातानि विनिर्ययुर्दुतगजाश्च पादात्तरथायुतामि ॥ १३ ॥ प्रहृष्टयुक्ता  
 नितुस्तानि राजन् महान्ति नानायुधशस्त्रवन्ति । रियतानि नागाश्च पदातिमन्ति विरेज  
 कर भीष्मजी इसकर बोले, हे राजपुत्र मे सर्वांग पूर्वक बड़े उपायों से सेना को  
 मक्काकर विजय और सुखको देना चाहताहूँ और मैं अपने शरीर को तेरेप्रयोजन  
 के लिये किसी प्रकार से बचाता हूँ, बहुतेरे महारथी शूर और ह्दरूप अस्त्रह पारि  
 श्रम से अस्त्रिन्न तोषरूप विष के डगलने वाले जो पाण्डवों के युद्ध में सहायक है  
 वह डल में बड़े है उन्ही के साथ तुमने शत्रुताकरी है वह युद्ध में एकाएकी विजय  
 करने के योग्य नहीं है हे वीर राजा दुर्योधन मैं इस जीवनको त्याग करके सब प्रकारसे  
 उनके साथ लड़ूंगा ॥ १० ॥ हे महानुभाव अब युद्धमें तेरेप्रयोजन के लिये मैं अपने प्राणों की  
 रक्षा करना योग्य नहीं समझताहूँ अर्थात् अपने प्राणोंकी रक्षानहीकरसक्ताहूँ मैं तेरे निमित्त  
 देवता और दैत्यों समेत सबलोकोंकोभी जीत सकताहूँ तो इस स्थानपर तेरे शत्रुओं का  
 जीतना कितनी बड़ी बात है हे दुर्योधन मैं पाण्डवों से लड़कर तेरे सब अभीष्टों को  
 करूंगा इस बातको सुनकर दुर्योधन भीष्मजी मे बहुत प्रसन्न हुआ, इसके अनन्तर  
 उस प्रसन्न चित्तने सब सेनाओं समेत राजाओं से कहा कि चलो चलो हे धृतराष्ट्र

much enraged and disturbed in mind, Bhishma replied with a smile,  
 " With all my heart, O Prince, I desire to destroy all the warriors  
 and to gain victory and happiness For this purpose and for your  
 sake I cared to live any how Many a brave warrior of dreadful  
 form, adept in the science of weapons, vomiting forth the poison of  
 anger, help the Pandavas in this war You have made enemies of  
 very strong men who can not easily be conquered Careless of life,  
 I shall fight against them Prince Duryodhan ' 10 I shall no  
 longer spare my life in battle for your sake I can, for your sake,  
 win all the worlds with the gods and the devas, it is not so difficult  
 to conquer your enemies here I shall fulfil all your desires by  
 fighting against the Pandavas " Duryodhan was much pleased to  
 hear this from Bhishma and the latter with a cheerful mind ordered  
 the soldiers and the princes to march At his command, O Dhrit-



राजो तव राजन् चलानि ॥ १४ ॥ द्यूद्धः स्थिताद्यापि सुसंग्रयुक्तः ॥ १५ ॥ शिर इति गणा-  
समन्तात् । शरत्रास्त्रविज्जिर्नरवीरयोर्धरधिशिता सैन्यगणास्तद्विधा ॥ १५ ॥ रथोप-  
पादातगजाश्चसंघः प्रयाद्विराजो विधिवत् प्रणुन । ममुद्धतं धैतरणाप्यवर्णं रजो  
वर्मीच्छाद्यत् सूर्यरश्मीन् ॥ १६ ॥ रेजु पताका रथदन्तिमस्था बोतिरिता त्राम्यमाणा-  
समन्तात् । नानारङ्गाः समरे तत्र राजन् मेघयुता विद्यत रै यथैव ॥ १७ ॥ धनुषि वि-  
स्फारयतां नृपाणां वम्व शब्दस्तुमुलोऽतिघोरः । विमथ्यतो द्यूद्धाभ्यामर्धैर्यथाणवस्था  
द्वियुगे तदानीम् ॥ १८ ॥ तदुग्रनागं बहुरूपवर्णं तयात्मजानां ममुदीर्णमेघम् । वम्व  
सैन्यं विपुलैर्यहन्तुं युगान्तमेघौष निमन्तदानीम् ॥ १९ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मप्रवचनपर्वणि मत्स्यपुद्गादिवसे

एकाशीतितमोऽध्यायः ॥ ८१ ॥

उसकी आज्ञा पातेही रथ घोड़े हाथी और पैदलों की सब सेना शीघ्रही चलदी, है  
तात फिर आपही बड़ी सेना आते मसन्न होकर नाना प्रकार के अस्त्र शस्त्र धारण  
करके हाथी घोड़े पैदलों समेत संग्राम भूमि में नियत होकर शोभायमान हुई और  
हाथियों के समूह अच्छे प्रकार उचित स्थानोंमें नियत होकर चारों ओरसे प्रकाशित  
हुए और अपने अस्त्र शस्त्र बेचाओंके समूह नरदेव शूरवीरों में संयुक्त होकर  
अपने २ कर्मको करने लगे, फिर उन रथ घोड़े हाथी और पैदलों से उठी हुई धूल  
भी बड़ी उठी कि सूर्यभी ढकगये, है राजा युद्ध में चारों ओरसे घूमते नाना रंग-  
धारी रथ हाथी घोड़े और पैदली और इनके चढ़ने वाले अपनी २ सवारियों  
समेत ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि बादलों में संयुक्त और वायु से घृष्टहुई विज-  
लियां आकाश में प्रकाशित होती हैं, फिर धनुष चढ़ाने वाले राजाओं के शब्द  
ऐसे बड़े कठोर और घोर हुए जैसे कि युगकी आदि में देवासुरों के हाथ से मये  
हुए ममुद्र के शब्दहुए थे, तब वह आप के पुत्रों की सेना भयकारी शब्दों से और  
शत्रुओं के मारने वाले अनेक रूपों से प्रलयकाल के बादलों के समानहोगई ॥ १९ ॥

rastra, all the armies of chariots, horses, elephants and foot soldiers  
marched for battle. Your large army armed with all sorts of weapons,  
marched cheerfully with the elephants, horses and foot soldiers into the  
field of battle. The elephants were arrayed in proper places all round  
and the parties of warriors and valliant soldiers engaged in doing their  
duties. 15. The dust raised by chariots, horses, elephants and foot-  
men covered the sun. On all sides, roaming in the field of battle, the  
chariots, elephants and horses of various colour and their riders and the  
footmen looked glorious like lightning flashes detached from clouds.  
The sound of the bowstrings of the warriors was tremendous like that  
of the churning of the ocean by the gods and the asurs in the begining  
of creation. Then the armies of your sons with their dreadful noises  
and the slaughter of enemies looked like the clouds of pralaya." 19.

संजय उवाच । अथात्मजं तव पुनर्गान्धेयो ध्यानमास्थितम् । अग्रवीर्यस्तभेष्टः सन्म  
 हर्षकर घबः ॥ १ ॥ अहं द्रोणश्च शल्यश्च कृतवर्मा च सात्वतः । अश्वत्थामाविकर्णश्च  
 भगवत्तोषसावल ॥ २ ॥ विन्दानुविन्दावावन्यो बाल्हिक सह बाहिके । त्रिगर्त  
 राजोबलवाद् मागधश्च सुदुर्जयः ॥ ३ ॥ बृहद्रथश्च कौशल्यचित्रसेनो विविंशतिः ।  
 रथाश्च बहुसाहस्रा शोभनाश्च महाध्वजाः ॥ ४ ॥ देशज्ञाश्च हथा राजन् श्वाकृदा ह्य  
 सादिभिः । गजेन्द्राश्च मदोद्भृता अभिन्नकर्दामुखा ॥ ५ ॥ पादास्ताश्च तथा गूरा नाना  
 रः ॥ ६ ॥ नानादेशसमुत्पन्नास्त्वदर्थे योद्धुः सुघताः ॥ ६ ॥ एते धान्ये च बह  
 वस्त्वदर्थे त्यक्जीविताः । देवानपि रणे जेतुं समर्था इति मे मतिः ॥ ७ ॥ अश्वयं  
 हिमयो राजस्नव बान्धव हितं सदा । अशक्या पाण्डवा जेतुं देवैरपि सवासवैः ॥ ८ ॥  
 वासुदेवमदीयाश्च महेन्द्रसम विक्रमा । सर्वथाहन्तु राजेन्द्र करिष्ये घबन्तव्य

अध्यायः ॥ ८२ ॥

मनय बोले कि हे भरतवंशियोंमें श्रेष्ठ इसके पीछे भीष्मभी ध्यानमें नियत हो-  
 कर फिर आपके पुत्रकी प्रसन्नता के बचन बोले कि मैं द्रोणाचार्य शल्य कृतवर्मा  
 अश्वत्थामा सोमदत्त और सिन्धु देशियों समेत विन्द अनुवन्द अग्रवति देश के राजा  
 बाह्लीकदेशी और बलवान राजा त्रिगर्त और महादुर्जय राजा भगध, बृहद्रथ  
 कौशल्य चित्रसेन विविंशति और बड़ी ध्वजा वाले शोभायमान हजारों रथ, और  
 युद्धबंदे समेत देशी घोड़े और मद से लास नेत्र वाले मदोन्मत्त गजेन्द्र पदाती और  
 नाना प्रकारके शस्त्रधारी शूभलोग भी नाना प्रकार के देशों में उत्पन्न होने वाले  
 सब लोग तेरेही निमित्त युद्ध करने को तैयार हैं । ६ । इन के सिवाय और बहुत  
 से लोग तेरे लिये जीवन के त्यागने वाले हैं बहुत से इन में देवताओं को भी  
 युद्ध में विजय करने वाणे हैं यह मेरा मत है परन्तु हे राजा युद्ध को तेरेभियकरी  
 बचन अरुण्य कहने के योग्य हैं उनको भी सुनो कि इन्द्र समेत देवताओं से  
 भी पांडवों का विजय करना अतभव है । ८ । क्योंकि वह वासुदेवजी को

#### CHAPTER LXXXII

Saujaya continued — "Then, O best of the descendants of Bharat !  
 Bhishm thought for a while and spoke these words to cheer up your  
 son:—"I, Dronacharya, Shalya, Kritvarma, Ashwathama, Somdatta,  
 Vind and Anuvind with the Somas, the princes of Avanti, Vahlilka,  
 valliant king Trigart, the invincib'e king of Magadh, Vrihadval, Kosal  
 Chitraven, Vivinshati, thousands of bannred chariots of beautiful  
 form, horsemen, mad elephants with red eyes, footmen and armed sol-  
 diers of different countries are ready to fight for you ॥ Besides  
 these there are others ready to lay down their lives for you and many  
 of them can win even the gods in battle. This is my opinion, but I  
 must give you some salutary advice. Hear it attentively:—Even  
 the gods led by Indra cannot conquer the Pandavas, because they

॥ ९ ॥ पाण्डवाश्च रणे जेष्ये मां वा जेष्यन्ति पाण्डवाः । एवमुक्त्वा दशधरम्  
 विशल्यकर्णो शुभाम् ॥ १० ॥ गोपघ्नो वीर्य्यसम्पन्नां विशल्यश्चाभयत्तदा । ततः  
 प्रभाते विमले स्वेन सैन्येन वीर्य्यवान् ॥ ११ ॥ अन्यूहन स्वयं व्यूहं भीष्मो व्यूह  
 विशारदः । मण्डले मनुजधेष्टो नानाशस्त्रसमाकुलम् ॥ १२ ॥ सम्पूर्णं बाधमुख्यंश्च  
 तथा दन्तिपदातिभिः । रथैरजेकसाहसैः समन्तात् परित्यक्तम् ॥ १३ ॥ अद्वयवृ-  
 न्दर्महृद्भिश्च ऋषितोमरचारिभिः । नागे नागे रथाः सप्त सप्त चाश्वे रथे रथे ॥ १४ ॥  
 अन्यद्वयं दश धानुष्का धानुष्के दशचर्मिणः । एवं व्यूहं महाराज तव सैन्यं महार-  
 थैः ॥ १५ ॥ स्थितं रणाय महते भीष्मेण युधि पालितम् । दशदधानां सहस्राणि  
 दन्तिनाञ्च तथैव च ॥ १६ ॥ रथनामयुतञ्चापि पुत्राश्च तव दक्षिताः । चित्रसेना

सहायक रत्नचले होकर महाइन्द्र के समान पराक्रमी हैं हे राजेन्द्र मैं सयप्रकार  
 से तेरेवचनको करूंगा । ९ । पांडवों को युद्ध में विजय करूंगा अथवा पांडव  
 मुझको विजय करेंगे इन प्रकार की बातें काके उसके निमित्त वह औपधियां जो  
 पावको आनन्द करनेवाली और सामर्थ्य की बढ़ाने वाली थीं दीं उनके लगातेही  
 वह घोवों से रहित हुआ तदनन्तर बड़े प्रातःकाल उठकर शुद्ध हो व्यूहकी रचना में  
 बड़े कुशल भीष्मजी ने अपनी सेनाके व्यूहको आप तैयार किया फिर उसनरोत्तम  
 ने अपनी सेनाके मंडकको शस्त्रों से अलंकृत किया, और उत्तम शूरवीर हाथी  
 और पैदलों ते भराहुआ हजारों रथों से चारों ओरको घिराहुआ दुधारे खड्ग  
 तोपर धारण करने वाले सवारों से व्याप्त एक २ हाथी के साथ सात २ रथी और  
 मत्येक रथके साथ सात २ घोड़े और घोड़े २ के पीछे दश २ धनुषधारी और  
 हरएक धनुष धारी के पीछे सात २ पदाती हुए हे महाराज आपकी सेना इस रीति  
 से महारथियों से शोभायमान हुई युद्धमें भीष्मजी ने रचित बड़े संग्राम के लिये  
 नियत किये हुए दशहजार घोड़े और दशहजार हाथियों के समूहों के साथ आपके

have Vasudev for their ally and are themselves full of prowess like  
 Indra. I shall do thy bidding, Prince, with all the means in my po-  
 wer. Either I shall win the Pandavas or they shall conquer me." Having  
 said these words he gave him medicines for the cure of wounds  
 and for restoration of strength. His wounds were healed as soon as  
 the medicines were applied to them. Then having performed his  
 morning ablutions, Bhishm, very clever in forming phalanxes, arrayed  
 the armies and decorated the circle with weapons. 12. Full of brave  
 warriors, elephants and footmen, surrounded by thousands of chariots  
 and abounding in numerous horsemen armed with double-edged swords  
 and tomars, that array had seven chariots for each elephant, seven  
 horse for each chariot, ten archers following each horse and each archer  
 followed by seven footmen. Thus, O king, your army became glori-  
 ous with the warriors. Protected by Bhishm, ready for action with

दयः शूरा अभ्यरक्षन् पितामहम् ॥ १७ ॥ रक्ष्यमाण सत्ते शूरैर्मोघ्यमानाश्च तेनते ।  
 सन्तदाः समदृश्यन्त राजनश्च महाबलाः ॥ १८ ॥ दुर्योधनस्तु समरे दंशितो रथ  
 मास्थतः । व्यराजत श्रिया जुष्टो यथा शक्रस्त्रिविष्टपं ॥ १९ ॥ तत शब्दो महा  
 नासीत् पुत्राणां तव भारत । रथघोषश्च विपुलो घादिघ्राणञ्च नि स्वनः ॥ २० ॥  
 भीष्मेण धार्तराज्ञाणां व्यूढः प्रत्यं मुखो युधि । मण्डलः स महापूहो दुर्भेद्योऽपि  
 घघातनः ॥ २१ ॥ सद्यतः शुशुभ राजन् रणेऽरीणां वुरासदः । मण्डलन्तु समा  
 लोफ्य व्यूहं परमदुर्जयम् ॥ २२ ॥ स्वयं युधिष्ठिरा राजा वज्रं व्यूहं मथाकरोत् ।  
 तथा व्यूढेप्सुनीकेषु यथास्थानमवास्थताः ॥ २३ ॥ रथिनः साधिनःसर्वे सिंहनादं  
 मथानदन् । विभत्सवस्तता व्यूहं निर्धय्युद्धकाक्षिणः ॥ २४ ॥ इतरेतरत शूराः सह  
 सैन्याः प्रहारिण । भारद्वाजो ययौ मत्स्यं द्रोणिवापि शश्वणिडनम् ॥ २५ ॥ स्वयं

चित्रसेन आदि शूरवीरोंने पितामहको चारों ओर से रक्षित किया वह, भीष्मजी उन  
 उन शूरोंसे रक्षित और शूर उनसे रक्षित हुए और महाबली राजालोगभी शस्त्र  
 धारण किये युद्धको तैयार दृष्ट पड़े, फिरशस्त्रों से अलंकृत रथपर बैठाहुआ दुर्योधन  
 भी शोभा से युक्त ऐसा प्रकाशमान हुआ जैसा कि स्वर्ग में इन्द्र प्रकाशमानहोता  
 है इस के पीछे हे भरतर्षभ आपके पुत्रों के महाशब्द हुए और रथ और रथांगों के  
 भी घोर शब्दहुए ॥ २० ॥ फिर वह घृतराष्ट्र के पुत्रों का व्यूह भीष्मजी का रचा हुआ  
 अतिदुर्जय मंडलरूपवनाहुआ पश्चिमकी ओरको चला, हे राजा शत्रुओं में दुर्जय  
 होनेवाला वह व्यूह सबओरसे शोभित हुआ फिर उस मंडलवाले भयानक व्यूह  
 को देखकर राजा युधिष्ठिरने अपने हाथों से अपनी सेना के वज्रव्यूहको तैयार  
 किया इस रीतिसे सेनाओंके तैयार होनेपर सबरथी पदाती आदि अपने २ स्थानों  
 पर नियत होकर सिंहनाद करने लगे इसके पीछे व्यूहके तोड़ने को युद्धाभिलाषी  
 पराक्रमी शूरवीर लोग एक दूसरे के सम्मुख गये, द्रोणाचार्य जी राजा मत्स्यके

a myriad of horses and elephants, your brave sons, Chitrasen and others, protected the grandathe on all sides. 17. And protected by those warriors was Bhishm who himself protected him. The brave princes, armed with weapons were ready to fight. Duryodhan mounted on his chariot and armed with weapons looked glorious like Indra in heaven. Then, O best of Bharats, there was a tremendous noise made by your sons 20 The chariots and their puts too, made a loud noise. The array of the sons of Dhritrashtra, formed by Bhishm, made invincible in a circular form, moved towards the west. Indefatigable by enemies, that array was beautiful to look at from all sides. Seeing that array of formidable appearance, Yudhishtir himself arrayed the army in the form of vajra. When the armies were thus prepared, all the charioteers, footmen and others, stationed on their seats, uttered war cries. Intent on breaking the arrays and desirous of fighting, valliant men

दुर्योधनो यज्ञा पार्षत समुपाद्रवत् । नकुल सहदेवश्च मदराजानमीयत् ॥ २६ ॥  
 विन्दानुविन्दावावन्त्या विरावन्तमभिद्रुतौ । सर्वे नृपास्तु समरधनञ्जयमयोधयन् ॥ २७ ॥ भीमसेनो रणे पाव हार्दिकं समवारयत् । चित्रसेन विकर्णञ्च तथा  
 दुर्मर्षेण विमु - ॥ २८ ॥ अर्जुनि समरे राजसूय पुत्रानयोधयत् । प्राग्ज्योतिषो  
 महेष्वासोऽर्द्धिश्च राक्षसोत्तमम् ॥ २९ ॥ अभिद्रुद्राव वेगेन मत्तो भक्तमिव द्विपम् ।  
 अलङ्घ्यस्तदा राजन् सात्याकिं युद्धं दुर्मदम् ॥ ३० ॥ ससैन्य समरे कुक्षो राक्षसं समु  
 पाद्रवत् । भूरिश्रया रणे यत्तो धृष्टकेतुमयोधयत् ॥ ३१ ॥ श्रुतायुष च राजान धर्मपुत्रं  
 युधिष्ठिर । चोक्तितामश्च समरे कृपमेवान्वयोधयत् ॥ ३२ ॥ शेषा प्रति ययुर्यत्ता भी  
 ष्ममेव मदारवम् । ततो राज समूहास्ते परितुर्धनञ्जयम् ॥ ३३ ॥ शक्तितोमरनाराच

सम्मुखगणे अश्वत्थ मा शिखण्डीके सम्मुखहुआ २९ राजादुर्योधन आप धृष्टद्युम्नके  
 सम्मुख दौंडा और नकुल सहदेव राजा मद्रके सम्मुख गये, विन्द अनुविन्द अवन्ति  
 के राजा लोगोके और युधाम युके सम्मुख दौंडे और सब राजानोग इकट्ठे होकर  
 अर्जुन मे लड़नेको उपस्थितहुए फिर, सावधान और समर्थ सात्यकी ने युद्ध में  
 भीमसेन को रोका, हे राजा अर्जुन, का मर्मथ पुत्र अभिमन्यु, चित्रसेन  
 विकर्ण और दुर्मर्षेण नाम आपके तीनों पुत्रों से युद्ध करने लगा फिर हिडम्बा  
 का पुत्र राक्षसोत्तम घटोत्कच घडे वेगसे राजा प्राग्ज्योतिष के सम्मुख ऐसे दौंडा  
 जैसे कि मदनमत्त हाथी, मदनमत्त हाथीपर दौंडा है हे राजा युद्ध में महा क्रोधरूप  
 अलङ्घ्य, राक्षस सेना समरे युद्ध में महादुर्मद सात्यकी के सम्मुख दौंडा और युद्ध  
 में कुशत्र भूरिश्रया धृष्टकेतुमे लड़ने लगा ३१ फिर धर्मपुत्र युधिष्ठिर ने राजा पुता-  
 युष से और चोक्तिताम न कृपाचार्य से युद्धकरना मारभ किया, शेष वचेहुए राजा  
 लोग मदारयो भीमसेन के सम्मुख हुए, इसके पीछे हजारों राजाओं ने अर्जुन को  
 घेरलिया उन सब राजाओं के हाथोंमे बरछी तोमर नाराचगदा और परिघइत्यादि

faced one another in battle Dronacharya attacked the king of Matsya and Ashwathama faced Shulhandi as Prince Duryodhan himself faced Bhishmatyuma and Nakul and Sahadev faced the king of Matsya Vind and Anand the princes of Avanti attacked Udhimanyu All the kings in a body prepared to fight against Arjun Valliant Satyaki with a collected mind checked Bhimson. Abhimanyu the valliant son of Arjun fought against Chitrissen, Vikram and Durmasan your three sons. Hidimva's son, Ghatotkarch the best of rakshases rushed against the king of Pragyo fish like a small elephant. Alamvush the rakshas of dreadful visage followed by a large army, faced valliant Satyaki and Bhishmava clover in battle, fought with Dhritishetha Yudhishtir the son of Dharm fought with Shrutayush and Chokitan with Kriacharya The rest of the kings faced Bhim Then thousands of kings surrounded Arjun All these warriors were armed with spears tomars,

गदापरिव पाणय । अर्जुनोऽथ भृशं युद्धो वाष्पैर्यमिदं मन्वेवीर ॥ ३४ ॥ पश्य माधव  
 सैन्यानि धार्तराष्ट्रस्य सैयुगे । व्यूहानि व्यूहं चिदुश भाद्रेयेन महात्मना ॥ ३५ ॥ यु  
 द्धाभिरामान् शराश्च पश्य माधव दक्षितान् । त्रिगर्तराजं सहितं भ्रातृभिः पश्य के  
 शव ॥ ३६ ॥ अर्घनान् नाशयिष्यामि पश्यतस्ते जनार्दन । य इमे मा यदुद्येध योद्धु  
 कामारणा जिते ॥ ३७ ॥ पतदुक्त्वातुकौन्तेयो धनुर्ज्या भवमृज्यच । ध्रुवैशरवर्षाणि  
 नराधिप गणान् प्रति ॥ ३८ ॥ ते पित परमेष्वासा शरवर्षेण पूरयन् । तद्भागं धारिधिरा  
 भिर्यथाप्रावृषि तो यदा ॥ ३९ ॥ हाहाकारो महातासीत्तव सैन्ये विशाम्पते । ह्यं  
 मानौ रणे कृष्णौ शरैर्दृष्ट्यामहारणे ॥ ४० ॥ देवादेवर्षयश्चैव गन्धर्वाश्चसहोरगैः ।  
 विस्मय परम जग्मुर्दृष्ट्वा कृष्णौ तथा गतौ ॥ ४१ ॥ ततः कुद्धोऽर्जुनो राज्ञेन नैन्द्रमस  
 शुबैरयत् । तत्रादमुत मपश्याम विजयस्य पराक्रमम ॥ ४२ ॥ शरवृष्टिं परैर्मृक्ता श  
 अनेक अस्त्र शस्त्र शोभायमान, थे उससमय अर्जुन अत्यन्त कोपित होकर भी  
 कृष्णजी से बोला कि, हे माधवजी व्यूहविद्या में कुशल महात्मा भीष्मभी से व्यूहित  
 करी हुई दुर्योधन की सेनाको सग्राम भूमि में देखो ३५ और युद्धाभिरापी शरांको  
 कवच और शस्त्र धारण कियेहुए देखो और भाइयों समेत राजात्रिगर्तकोभी देखो  
 हे जनार्दनजी अब आपके देखने हुए इन सबको मैं मारूंगा हे यादवेन्द्र जो यह  
 सग्राम भूमि में मेरे मारने के लिये इच्छा कर रहेहैं, इतना कहकर अर्जुन ने अपने  
 धनुषकी मत्स्यंदा की ठीककरके राजाओं के समूहों पर बाणोंकी वर्षाको बरसाया  
 फिर उन बड़े २ धनुष शरियों नेभी उस अर्जुनको बाणोंकी वर्षा से ऐसा भेरादिया  
 जैसे कि वर्षाऋतु में बादल तडागों को जलसे भरदेते हैं, हे राजा उस बड़े सग्राम  
 में दोनों कृष्ण अर्जुनको अत्यन्त बाणोंसे दकाहुआ । ४० । देवकर आपकी सेनामें  
 बड़ा हाहाकारहुआ देवता ऋषि गंधर्वा और महावरगों ने इस प्रकार बाणों से  
 दकेहुए दोनों कृष्ण अर्जुन को देखकर बड़ा आश्चर्य किया, इसके पीछे हे  
 राजा महाकोप युक्त अर्जुन ने इन्द्रास्त्रको प्रकट किया उस समय हमने अर्जुन के

arrows maces clubs and other weapons of sorts Arjun in great  
 anger then said to Shree Krishn — Look at the array of Duryodhan  
 formed by Bhishm the skilful in war, O Madhav ! 35 Look at the  
 warriors armed with weapons and armour Look at the king of  
 Trigart too I shall within sight of you, destroy all of those who  
 are desirous of killing me. Having said this, Arjun twanged his  
 bow and showered arrows at the king. Those warrior princes too  
 filled Arjun's chariot with arrows as clouds fill tanks with rain water.  
 40 So eng both Krishn and Arjun covered with the shower of arrows,  
 there was a great cry raised from your number. The gods, the rishis,  
 the gandharvas and the urnagar wondered at the sight of Krishn and  
 Arjun so covered with arrows. Then, O king Arjun in great anger

महापर्वः ॥ ४६ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मपर्वणि सप्तमदिवसपुद्गारम्भे  
द्व्यशतितमोऽध्यायः ८२ ॥

सञ्जय उवाच । तथा मवृत्ते संग्रामे निवृत्ते च सुशर्मणि । मग्नेषु चापि वीरेषु  
पाण्डवेन महात्मना ॥ १ ॥ क्षुब्धमाणे घले तूर्णं सागरप्रतिमे तथ । प्रत्युघाते च  
गाङ्गेयं त्यरितं विजयं प्रति ॥ २ ॥ दृष्ट्वा दुर्योधनो राजा रणे पार्थस्य विक्रमम् । त्वरे  
अपूर्व पराक्रम-को-देखा, कि अपने बाणों के समूहों से शत्रुओं के छोड़े हुए अस्त्र  
समूहों को रोकदिगा कोई मनुष्यभी शास्त्रों से घायल हुए बिना नहीं रहा और हे  
धृतराष्ट्र हजारों राजा घड़े हाथी और शूरवीर लोगोंको अर्जुन ने दो २ तीन २  
बाणों से पीड़ाग्रस्त किया इसक पीछे वह अर्जुन स घायल हुए शत्रु के पत्र भीष्म  
जी के पास आये तब भीष्मजी इन अयाह जलमें डूबे हुआके रक्तकहुए, हे महाराज  
बड़ा ही जन मानेवालों से आपकी सेना तिर तिर होकर ऐसे महा व्याकुल हुई जैसे  
कि वायु से महासमुद्र उथल पुथल होता है ४६ ॥

अध्याय ॥ ८३ ॥

सञ्जय बोले कि इस रीति से युद्ध जारी होने व राजा सुशर्मा के लौटने व  
महात्मा अर्जुन के हाथ से वीरों के अस्तव्यस्त होतेपर, और बड़ी भीमता ॥ समुद्र  
के समान आपकी सेना के व्याकुल होने व भीमही अर्जुन के ऊपर भीष्मजी के  
खदाई करने पर राजा दुर्योधन युद्धमें अर्जुन के पराक्रम को देखकर बड़ी भीमता

discharged the weapon of Indra and we saw at that time, the immense  
prowess of Arjun who checked the shower of enemy's arrows  
with his own. There was not a single man present who did not  
receive a wound. He wounded thousands of warriors, horses, elephants  
and princes with two or three arrows each. Those warriors wounded  
by Arjun's arrows, came to Bhishm, the son of Shantannu, who pro-  
tected them from being drowned in that bottomless ocean. Then O  
king, your armies were dispersed by those comers as the ocean is  
agitated by the wind storm" 46.

#### CHAPTER LXXIII

Sanjaya continued:— "When the battle was thus going on, Prince  
Susharma gave way; the army was being destroyed by Arjun and  
was dispersing like ocean waves; Bhishm attacked Arjun and on  
seeing the prowess of Arjun, Prince Duryodhan thus addressed the

माण समभ्येत्य सर्वास्तानवर्वान्त्पान् ॥ ३ ॥ तेषां प्रमुखे शूरे सुशर्माणे महा  
 बलः । मध्ये सर्वस्य सैन्यस्य भृशं सहयेयम् निव ॥ ४ ॥ एतं भीष्मं शान्तनवो योद्धु  
 वामो धनञ्जयम् । सर्वात्मना कुरुक्षेत्रस्थित्वा जीवितमात्मनः ॥ ५ ॥ तं प्रयान्तं  
 रणेवीरं सर्वं सैन्यम् भारतम् । सयथा समरं सर्वं पालयिष्व पितामहम् ॥ ६ ॥ बाह  
 मित्येवमुक्त्वा तु तान्यनीकानि सर्वशः । नरद्राण्यमहाराज समाजं मु  
 पितामहम् ॥ ७ ॥ ततः प्रयातः सहसा भीष्मं शान्तनवोर्जुनम् । रणे भारतमाप्यान्तमाससाद् महाबल  
 ॥ ८ ॥ महाश्वेताश्वयुक्तेन भीमवानरकेतुना । महता मेघनादेन रथेनातिविराजता  
 ॥ ९ ॥ समरे सर्वसैन्यानामुपयान्तं धनञ्जयम् । अभवत्सुमुलोनादो भयाद्दृष्ट्वा किरीटि  
 नम् ॥ १० ॥ अभीयुहस्तं कृष्णञ्च दृष्ट्वा दित्यमिवापरम् । मध्यन्दिनगतं सत्ये नशोक  
 प्रतिषीक्षितुम् ॥ ११ ॥ तथा शान्तनव भीष्मं श्वेताश्वं श्वेतकामुकम् । नशोकः पाण्डवा

से सवराज्ञाओं से मिलकर और इन्हीं लोगों के सम्मुख सर सेनाके, मध्यमें महाबली  
 सुशर्मा को अत्यन्त प्रसन्न करता हुआ यह वचन बोला, कि यह कोरवों में श्रेष्ठ शान्त-  
 नु के पुत्र भीष्मजी अपने जीवनको त्यागकरके सर्वपावसे अर्जुन से युद्ध करना  
 चाहते हैं । तुम सब सावधान होकर सेनासमेत उन शत्रुओं पर चढ़ाई करनेवाले भरतयुद्धी  
 पितामहकी रक्षा करो, फिर राजाओं की वह सब सेना उस के वचनको अगीकार  
 करके पितामहके पीछे चली, इसके पीछे शान्तनुके पुत्र भीष्मजी अकस्मात् अर्जुन की  
 ओरको चले और बड़ेबड़े घोड़ों, के कपि-वनवाले घनके समान शब्दायमान महा  
 व्रजतम रथपरचढ़े सब सेनाके सम्मुख जाते हुए महाबली अर्जुनको पाया और अर्जुन  
 को देखतेही भयसे कंठोर शब्दहुए । १० । दिवसहीमें सूर्य के वर्तमान होनेपर, दिताय  
 सूर्य के समान आगहोर हाथमें रखनेवाले श्रीकृष्णजी को देखकर उनके सम्मुख  
 देखने को भी समर्थ नहीं हुए, इसी प्रकार पाण्डव भी श्वेतघोड़े और श्वेत धनुषधारी

assembly of princes and warriors, cheering bravo Susharma with his words— 'This best of the Kauravas, Bhishm the son of Shantanu is desirous of fighting against Arjun without caring for his life 5 You must carefully protect with your armies the grandfather of Bhishm family who is fighting against the enemies' The assembly of kings and warriors in obedience to his commands, followed the grandfather. Then Bhishm the son of Shantantu rushed at once towards Arjun and found him mounted on the monkey bannered chariot, drawn by large white horses the rumbling of whose wheels was like thunder and which was followed by the whole army. The cries of fear were heard at the sight of Arjun 10 In the light of the sun, seeing Shro Krishna holding the reins like the second sun, no one could look him in the face. The Pandavas too, could not face Bhishm the son of Shantantu coming like a rising sun. Thus the



द्रुपुः श्वेतप्रहमिवोदितम् ॥१२॥ स सर्वतः परिष्ठतास्त्रिगर्तं सुमहात्माभिः । शत्रुभिः सह  
 पुत्रैश्च तथा न्यैश्च महारथैः ॥१३॥ भारद्वाजस्तु समरे मत्स्य विन्याध पश्चिणा । ध्वजश्चा-  
 स्य शरेणाजौ धनुश्चैव न चिच्छिद्ये ॥ १४ ॥ तदपास्य धनुर्दिष्टन्न विराटो बाहिनीपति ।  
 अन्यदा दत्त धेगेन धनुर्मारसह दृढम् ॥१५॥ शराश्चाशीमिपाकारान् ज्वलितान् पद्मगा-  
 निव । द्रोणं त्रिमिदच विन्याध चतुर्मिदचास्य बाजिन ॥ १६ ॥ ध्वजमेकेन विन्याध  
 सारथिनास्य पञ्चभिः । धनुरेकेषुणाविध्यत्तत्राकुप्यद्भिर्जयम् ॥ १७ ॥ तस्य द्रोणो  
 वधाददवाद् शरैः सन्नतपर्वभिः । यष्टाभिर्मग्नतश्चेष्ट सृतमेकेन पश्चिणा ॥ १८ ॥ स  
 वृतादशरान्प्लुत्य स्यन्दनाद्गतसारथि । आरुरोह रथं तूर्णं पुत्रस्य रथिनाम्बरः ॥ १९ ॥  
 तनस्तुनां पितापुत्रौ भारद्वाज रथे स्थितौ । महता शरवर्षेण वारयामासतुर्जलात्

श्वेतप्रहके उदय समान शान्तनु के पुत्रभीष्मजी के देखने को सर्वर्ष नहीं हुए इसरीति  
 से वह महात्मा भीष्म त्रिगर्त देशी भाइयों व आपके पुत्रों अथवा अन्य बड़े २ महा-  
 रथियों से रतितहुए फिर द्रोणाचार्य ने युद्ध में बाणों से राजामत्स्यको पीड़ित  
 किया और एक २ बाणने उसकी ध्वजाको और धनुष को काटा फिर बाहिनीपति  
 विराटेने उसदृष्टे धनुष को ढालकर भारमहनेवाले दूसरे दृढ धनुष को बड़ी तीव्रता से  
 हाथमें लिया ॥१५॥ और सर्पाकृति पद्मगनाम सर्पोंके समान ज्वलित बाणों को लेकर  
 तीनज्ञानने द्रोणाचार्य को और शरबाणों से उनके घोड़ों को घायल किया, एकसे  
 ध्वजाको काटा और पांच से उनके सारथीको व्यथित करके एक बाणसे धनुषको  
 तोड़ा उसस्थान पर बाणों में गठ द्रोणाचार्य जीने बड़े क्रोधयुक्त होकर गुस्मग्रन्थी  
 के भाठबाणों से उसके घोड़ों को और बाणने उसके सारथी को मारा, वह रथियों  
 में श्रेष्ठ सारथी को मरा देस, मृतक घोड़ों के रथ से कूदकर शीघ्र ही पुत्रके रथपर  
 सवार हुआ फिर उसके पीछे रथपर नियत उनदोनों पितापुत्रों ने बलसे मारे बाणों  
 के द्रोणाचार्य को रोकता । २० । हे राजा इसके पीछे क्रौर्यरूप द्रोणाचार्य ने सर्व

great Bhishma was protected by the warriors of Tugut and other great archers together with your sons. Dronacharya wounded the king of Matsya with his arrows. With one arrow he cut down his banner and with another his bow. What the leader of armies put down the broken bow and speedily took up another capable of bearing great strain. 15 And taking serpent like arrows, known as pinnags, he wounded Dronacharya with three arrows and his horses with four. With one arrow he cut down his banner and having wounded the driver with five more, he cut down his bow with one. Then Dronacharya the best of Brahmans in great anger, killed his horses and driver with eight arrows. Seeing the driver killed, he jumped down from the chariot of which the horses were slain and soon mounted his son's chariot. Then seated on the same chariot the father and son checked Dronacharya with their strength. 20 Then, O king, Dro

॥२०॥ भारद्वाजस्ततः कुक्षः शरमाशीविषोपमम् । चिक्षेप समरेऽतूर्णं शङ्खं प्रति  
जनेश्वरः ॥ २१ ॥ सतस्य हृदयं भित्त्वा पीत्वा शोणितमाहवे । जगाम धरणीं चाणो  
लोहिताद्रैरच्छदः ॥ २२ ॥ सपपात रणेनूर्णं भारद्वाजशराहतः । धनुस्त्यक्त्वाशरांश्चैव  
पितुरेव समीपतः ॥ २३ ॥ इतं तमात्मजं दृष्ट्वा विराटः प्राद्वन्द्वयात् । उत्सृज्य  
समरे द्रोण व्यात्तानतमिवान्तकम् ॥ २४ ॥ भारद्वाजस्ततस्तूर्णं प्राण्डवोर्नो महाचमूम् ।  
दारयामास समरे शतशोथ सहस्रशः ॥ २५ ॥ शिखंडीतु महाराज द्रोणिमासाय  
संयुगेऽआजघान भ्रयोर्मध्ये नापचैस्त्रिभिराशुगैः ॥ २६ ॥ स बभौ रथशार्ङ्गो ललटे  
संस्थितैस्त्रिभिः । शिखरैः काञ्चनमयैर्मैरस्त्रिभिरिवोच्छ्रितैः ॥ २७ ॥ अश्वत्थामा ततः  
कुक्षो निमेषार्धात् शिखण्डिनः । ध्वजं सूतमयो राजंस्तुरगानायुधानि च ॥ २८ ॥ शरै  
र्बहुभिराच्छिद्य पातयामास संयुगे । स हताश्वान्धनुस्त्य रथाद्दे रथिनाम्बरः ॥ २९ ॥

के समान चाणको बड़ी शीघ्रतासे शंख के ऊपर छोड़ा, वह चाण उसके हृदय में  
घुस गया, उसके रुधिरको पीनकर लालरंग लोहमें भरा हुआ पृथ्वी में गिरा, वह शंख  
द्रोणाचार्य के बाण से घायल पितकिंदी सम्मुख धनुषबाणको त्याग कर गिरपड़ा  
फिर राजा विराट अपने पुत्रको मृतक देखकर और द्रोणाचार्य को मृत्युके समान  
समझकर बड़े भयमें उनको छोड़कर भागा, इसके पीछे द्रोणाचार्यने शीघ्रही  
प्राण्डवोंकी हजारों बड़ी २ सेनाओं को हटाया । २५ । हे महाराज शिखण्डी ने  
भी बड़ी शीघ्रतासे अश्वत्थामा को पाकर तीव्रगामी तीन नाराचों से दोनों भूकडी  
के मध्यभाग मस्तक को घायल किया, फिर वह नरोत्तम ललाटपर नियत हुए  
तीनों बाणों से ऐसा शोभायमान हुआ जैसे ऊँचे सुवर्ण के तीनों शिखरों से मेरु  
पर्वत शोभित होता है, फिर क्रोध भरे अश्वत्थामा ने आधी निमेष में शिखण्डी  
के सारथीरथ छोड़े शंख और ध्वजा को अनेक बाणों से काटकर गिराया, फिर

nacharya in anger, discharged his serpent like arrows at Shankh. The  
arrow pierced through his breast and having come out on the other  
side and drunk his blood, fell down on the ground. Wounded by the  
arrow of Dronacharya, Shankh fell down dead within sight of his  
father and his bow and arrows fell from his hand. King Virat finding  
his son dead and Dranacharya ready like Death to pounce upon, fled  
away in terror. Then Dronacharya soon dispersed thousands of the  
Pandav warriors. 25. Shikhandi too, in great haste, finding Ash-  
wathama before him, wounded him with three arrows in the middle  
of the forehead. That best of men, with the three arrows standing on  
his forehead, looked glorious like mount Meru with its three golden  
peaks. Ashwathama in the excess of anger, cut down with his  
arrows the chariot driver, the chariot, horses, weapons and banner of  
Shikhandi. Then that best of charioteers, jumping down from his

खड्गमादाय सुशिरं विमलच शरा वरम् । श्येनवद्व्यचरत् वक्र शिखण्डी शत्रुता  
पन ॥ ३० ॥ सखड्गस्य महाराज चरतस्तस्य सयुगे । नान्तरं ददशे द्रौणिस्तदद्  
तमिवामघत् ॥ ३१ ॥ तत शरसहस्राणि धनुनि भरतर्षभ । प्रेषयामास समरे द्रौणि  
परमकोपन ॥ ३२ ॥ तामापतन्तीं समरे शरवृष्टिं सुदारुणाम् । असिना तीक्ष्णदारेण  
चिच्छेद् घलितोन्म्वरे ॥ ३३ ॥ ततोऽस्यविमल द्रौणि शतचन्द्र मनोरमम् । चर्मोच्छि  
नदसिञ्चास्य खण्डयामास सयुगे ॥ ३४ ॥ शिरस्तुवहुशो राजन् तच्च धिष्याध  
पत्रिमि । शिखण्डी तु तत खड्ग खण्डित तेन सायकै ॥ ३५ ॥ आविध्य व्यसृजत्  
तूर्णं ज्वलन्तमिध पन्नगम् । तमापतन्त सहसा कालानलसमप्रभम् ॥ ३६ ॥ चिच्छेद्  
समरे द्रौणिर्दशैव पाणिलाघवम् । शिरण्डिनञ्च विष्याधि शरैर्वहुभिरायसे ॥ ३७ ॥  
शिखण्डी तु सश राजेस्ताड्यमान शितैः शरैः । आहतोऽहं रथतूर्णं माधवस्य

रथियों में श्रेष्ठ मृतक घोड़ों के रथसे कूदकर अपने तीक्ष्ण खड्ग और दालको लेकर  
बड़ा क्रोध में भरा हुआ सब सेना में बाजपत्नी के समान घुमा । ३० । हे राजा  
युद्ध में खड्ग लिये हुये असाधिलडी को अश्वत्थामा ने कोई अवकाश नहीं देखा  
यह बड़ा आश्चर्य था हुआ इसके पीछे महाक्रोध युक्त अश्वत्थामा ने हजारों बाणों  
की वर्षा करी परन्तु उसमहापराक्रमी ने अपने खड्गसेही उन सब बाणों को काट  
डाला । फिर अश्वत्थामा ने इसकी सूर्य, चन्द्रमावाली स्वच्छ दालको काटकर  
खड्ग के भी खण्ड करवाले और बहुत से बाणों से उसको घायल किया फिर  
शिखण्डी ने उसके बाणों से कटे हुए खड्गको देखकर शीघ्रही-सर्प के समान महा  
ज्वलित खड्गको छोड़ा तब हस्तलाघवता दिसते हुए अश्वत्थामा ने उस वज्र और  
पिजली के समान शब्दायमान अकस्मात् गिरते हुए खड्गको युद्धमेंही काटडाला  
और बहुतसे लोहे के बाणों से शिखण्डी को घायल किया । ३७ । फिर तीव्र  
बाणों से अत्यन्त घायल शिखण्डी शीघ्रहीमहात्मा सात्यकी के रथपर सवार हुआ

chariot of which the horses were dead ran with his sword and shield  
throughout the army in great anger like a hawk 30 Ashwathama  
could not see Shikhandi staying at any place in the field of battle and  
this was a great wonder Then Ashwathama in great anger showered  
thousands of arrows, but that great warrior cut them all down with  
his sword alone Ashwathama then cut into pieces his shining shield  
bearing the sun and the moon, his sword too was broken and he him-  
self was wounded by the arrows. Finding his sword cut down by the  
prows Shikhandi flung away the sword venomous like a serpent  
Then showing the dexterity of his hand Ashwathama cut into pieces  
the sword falling with a noise like that of vapour or thunder, and with  
many other arrows he wounded Shikhandi 37 Much wounded by  
sharp arrows, Shikhandi mounted the chariot of Satyaki Brave

महात्मन ॥ ३८ ॥ सात्यकिश्चापिसकृदा राक्षस क्रमाहवे । अलम्बुष शरस्ती  
 ह्यैर्विन्ध्यध पलिनावर ॥ ३९ ॥ राक्षसेन्द्रस्ततस्तस्य धनुश्चिच्छेदमारत । अधोचन्द्रेण  
 समरे तच्च विन्ध्यध सात्यकै ॥ ४० ॥ मायाञ्च राक्षसीं कृत्वा शरवर्षैर्वाकिरत् ।  
 तत्राद्भुतमपश्याम शैनेयस्य पराक्रमम् ॥ ४१ ॥ असम्रमस्तु समरे बध्यमाना शिते  
 शरे । ऐन्द्रमस्त्रञ्च घाण्ण्यो योजयामास भारत ॥ ४२ ॥ विजयाद्यदनुप्राप्त माधवेन  
 यशस्विना । तदस्त्रम्भस्मसात् कृत्वा मायान्ता राक्षसीं तदा ॥ ४३ ॥ अलम्बुष शरे  
 रन्यैरभ्याकिरत सर्वत । पर्वत चरिर्घातामि प्रावृषीव घटाहक ॥ ४४ ॥ तत्तथा  
 षोडितं तेन माधवेन यशस्विना । प्रवुद्राव मयाद्रक्षस्त्यक्त्वा सात्यकिमाहवे ॥ ४५ ॥  
 ततजेय राक्षसेन्द्र सरये मधवतामपि । शैनेय प्राणदञ्जित्वा योधानातवपश्यताम् ४६  
 न्यहनत्तावकाश्चापि सात्यकि सत्य विक्रम । निशितैर्बहुभिर्घाणैस्ते द्रवन्त भया

किर महाबली सात्यकी ने भी बड़ा क्रोध करके अपने घोर बाणों से उस पराक्रमी  
 अलम्बुष राक्षस को घायल किया । फिर राक्षसाधिप अलम्बुष ने अपने अर्द्धचन्द्र  
 नम बाणों से उसके धनुषको काटकर बहुत से शायकों से उसको घायल किया  
 । ४० । और राक्षसी मायाको करके बाणों की वर्षा से ढक दिया वहाँ हमने सा-  
 त्यकी के अपूर्व पराक्रम को देखा, कि वह युद्ध में बड़े तीक्ष्ण बाणों से घायल  
 होकर भी व्याकुल नहीं हुआ हे भरतवशी सात्यकी ने उस ऐन्द्र अस्त्र का प्रयोग  
 किया जो कि महात्मा माधवजी और अर्जुन से मिलाया उस अस्त्रसे सब राक्षसी  
 माया को अत्यन्त नाश करके अपने घोर बाणों से अलम्बुष को इसरीति से ढक  
 दिया जैसे कि वर्षाऋतु में बलाहकनाम बादल अपने जलों के पर्वत को ढकते हैं,  
 उस पशशी सात्यकी ने षोडित होकर वह राक्षस महाभयभीत होकर सात्यकी  
 को त्यागकर भाग गया । ४५ । सात्यकी आपके शूरवीरों के देखतेहुए उस  
 राक्षसाधिपको जो कि इन्द्रने भी विजयहोना कठिनथा जीतकर सिंहके समान

Satyaki too in great anger wounded valiant Alambush the rakshas  
 with his dreadful arrows Alambush the prince of rakshases cut  
 down with his half moon shaped arrowhis bow and wounded him  
 with his darts 40 He then covered him with arrows discharged  
 by the demoniac art There we saw the prowess of Satyaki who  
 though wounded with many sharp arrows was not disheartened and  
 discharged his Andra weapon which he had got from the great  
 Madhav and Arjun and having destroyed all the artfulness of the  
 rakshas covered him with his arrows as clouds cover a mountain with  
 their waters Wounded by the arrows of Satyaki the rakshas in great  
 terror fled away leaving him there 45 Having conquered the rak-  
 shas chief who could not easily be conquered even by Indra, Satyaki  
 roared like a lion Then Satyaki wounded his sons too with sharp  
 arrows and they too ran away in terror -In the meantime, Dhristi-

हिताः ॥ ५३ ॥ अतस्मिन्नेवकोष्ठेन द्रुपदस्यात्मजो बली । वृष्टद्युम्नो महाराज पुत्रः  
 तव जनेश्वरम् ॥ ५४ ॥ छादयामास समरे शरैः सन्ततपर्वभिः । सच्छाद्यमानो विशि-  
 क्षेष्टद्रुपदो मारुतः ॥ ५५ ॥ विव्यधे न च राजेन्द्र तव पुत्रो जनेश्वर । वृष्टद्युम्नश्च  
 समरे तूष्णे म्रियामास प्रविभिः ॥ ५६ ॥ पथ्या च त्रिशक्त धैव तद्द्रुतमिवामयत ।  
 तस्य सेनापतिः सुदो घनुविच्छेद मारिणः ॥ ५७ ॥ ह्यांश्च चतुरः शीघ्र निजघान  
 महाबलः । शरैश्च सुनिशितैः क्षिप्रं विव्याध सतमिः ॥ ५८ ॥ स हतावधमहाबाहुय  
 नुत्परमादली । पथतिरसिमुधम्य आद्रवत् पार्यतप्रति ॥ ५९ ॥ शकुनिस्तं समभ्येत्य राज  
 मृद्धीमहाबलः । राजानं सर्वलोकम्य स्थमारोपयत् स्वकम् ॥ ६० ॥ ततो वृष परजित्य  
 पार्यतः पट्वीरहा । म्बहनसावकः सैन्यः वज्रपाणिर्विवासुरान् ॥ ६१ ॥ कृतस्मार्णे  
 भीमोऽप्येवमन्त्रे महाबलः । सच्छाद्यामास चतः महाभयो रतिं यथा ॥ ६२ ॥ ततः

गर्जा, फिर सैन्य पराक्रमी, सात्यकी ने आपके पुत्रों को भी बड़े तीक्ष्ण बाणों से  
 घायल किया वह भी भयरे पीड़ित होकर भागे है महाराज उसी समय द्रुपद के पुत्र  
 वृष्टद्युम्न ने आपके पुत्र दुर्योधन को, वहाँ गुप्तग्रन्थी वाले बाणों से आच्छादित  
 करा दिया, है राजेन्द्र वृष्टद्युम्न के बाणों से दकड़भाभी दुर्योधन पीड़ामान नहीं  
 हुआ और बड़ी शीघ्रता से अपने बाणों से वृष्टद्युम्न को घायल किया यह एक  
 आश्चर्यसाहस है राजा फिर उस क्रोधयुक्त सेनापति ने उसके घनुपको काटकर  
 शीघ्र ही चारों ओरों को मारा और मात तीक्ष्ण बाणों से उस को, तत्क्षण घायल  
 किया, बगहाहाड, मृतक घोड़ों के रथ में कूदकर पैदल हो खड्ग को उठाकर  
 वृष्टद्युम्न के ऊपर जाड़ा ॥ ५३ ॥ राज्य के लोभी महाबली शकुनि ने समीप आकर  
 राक्षस दुर्योधन को अपने रथपर सवार किया, इस के पीछे अनुहन्ता वृष्टद्युम्न ने  
 राजा को विजय करके उसकी सेना को ऐसा मारा जैसे कि वज्रधारी इंद्र समूहों  
 के समूहों को मारता है, कृतवर्मा ने महारथी भीमको युद्ध में मोहित करके बाणों से  
 ऐसे दकदिया जैसे कि बड़ा बादल सूर्य को ढक देता है, इसके पीछे शत्रु सन्तापी

dyum : the son of Dripid had you son Dargodhan with his arrows  
 having hidden knots, but the latter, being hidden by the arrows of  
 Dhrishtadyumna, was not terrified and soon wounded him with his  
 own. This was a wonderful deed. Then the enraged commander of  
 armies cut down his bow and having killed his horses, wounded him  
 with seven sharp arrows. The brave warrior jumped down from the  
 chariot of which the horses were dead and rushed sword in hand  
 towards Dhrishtadyumna 53 Brave Shakuni, desirous of kingdom  
 advanced towards Duryodhan and mounted him on his own chariot.  
 Then Dhrishtadyumna the destroyer of enemies, having defeated the  
 king, killed and destroyed his armies, as Indra the wielder of vajra  
 destroys the asuras. Krishna, having made Bhishma insensible in  
 battle covered him with his arrows as clouds hide the sun. Then

ग्रहस्य समरे भीमसेन परन्तप । प्रेषयामास संकुद्धः सायकान् कृतवर्मणे ॥ ५० ॥  
 तैरर्थमानोति रथः सात्वतः सत्यकोविदः । नाकम्पत महाराज भीमं चार्धच्छिते  
 शरेः ॥ ५१ ॥ तस्याश्वोच्चतुरो हत्वा भीमसेनो महारथः । सारथि पातयामास  
 सुध्वजं सुपरिष्कृतम् ॥ ५२ ॥ शरैर्वैदुषिद्वैदचैनमाचिनोत् परवीरहा । शकलीकृतसूत्रा  
 ज्ञोहनाश्व प्रत्य हृदयत ॥ ५३ ॥ हताश्वश्चततस्तूर्णं वृषकस्य रथं ययौ । स्यात्स्य  
 ते महाराज तव पुत्रस्य पश्यतः ॥ ५४ ॥ भीमसेनोपि संकुद्धस्तथ सैन्यमुपादधत्  
 निजधानं च संकुद्धो दण्डपाणिरिवान्तकः ॥ ५५ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि द्वैत्ये

त्रयशीतोऽध्यायः ॥ ५६ ॥

भीमसेन ने महाक्रोधित होकर अच्छे प्रकार हँसकर कृतवर्मा के ऊपर शायकों की  
 वर्षा करी है महाराज अति रथी कृतवर्मा उन भीमसेन के बाणों से घायल होकर  
 कम्पायमान नहीं हुआ और फिर भीमसेन को तीक्ष्ण बाणों से घायल किया  
 । ५० । इसके पीछे महाबली भीमसेनने उसके चारों घोड़ों को मारकर सारथी और  
 ध्वजायुक्त उसके उत्तम रथको भी गिराया, बाघुहन्ताने फिर उस कृतवर्मा को भी  
 अनेक बाणों से ढक दिया फिर वह महाघायल सब अंगों से शिथिल हुए पड़ा,  
 है महाराज फिर वह भीग्रही आपके पुत्रको देखकर मुत्तक, घोड़ों के रथ से कूदकर  
 आपके वृषरुनाम सारथी के रथपर गया, फिर महाक्रोधरूप होकर भीमसेन भी आप  
 की सेना के ऊपर दौड़ा और मृत्यु के समान हाथ में दण्ड लेकर बड़े क्रोध में  
 उसको मारा ५१ ॥

Bhimsen the terror of enemies in great anger, laughed loudly and showered his arrows upon Kritvarma. Valiant Kritvarma, wounded by the arrows of Bhimsen was not shaken and again wounded him with his arrows 58 Then brave Bhim killed the four horses of his chariot and cut down the banner and the chariot That destroyer of enemies again hid him with more arrows and he was seen much wounded and tired. Then seeing your son, he jumped down from his chariot and mounted the chariot of Vishak your brother-in-law Then Bhimsen in great anger rushed upon your army and with the staff of Death in his hand destroyed it in great anger" 62



धृतराष्ट्र उवाच । बहूनि हि विचित्राणि द्वैर्यानि, स्मसञ्जय । पाण्डूनां मामकैः  
साधैर्मथैषं तव जल्पत ॥ १ ॥ न चैनं मामकं किञ्चित् दृष्टं शससि सञ्जय । नित्यं  
पाण्डुसुतान् दृष्टानभग्नान्संप्रशससि ॥ २ ॥ जीयमानान् विमनसो मानकान् विगतौ-  
जसः । चद से सयुगे सूत दिष्टमेतन्न सशयः ॥ ३ ॥ सञ्जय उवाच । यथाशक्ति  
यथोत्साह-युद्धे चेष्टन्ति तावकाः । दुर्योधनाः पर शक्त्या पौरव्यं पुरतर्पय ॥ ४ ॥  
गङ्गाया सुरतया वै स्वादुस्त्वा यथादकम् । महादधेर्गुणाभ्यासाल्लवणत्वं निगच्छति ।  
॥ ५ ॥ तथा तत् पौरव्यं राजस्तावकानां परतपः । प्राप्य पाण्डुसुतान् वीरान् व्यर्थं  
भवति संयुगे ॥ ६ ॥ घटमानान् यथाशक्ति कुर्वाणान् कर्म तुष्करम् । न दोषेण कुर्यश्चेष्ट  
कौरवान् गन्तुमर्हसि ॥ ७ ॥ तथापराधात् सुमहान् सपुत्रस्थ विशाम्पते । पृथिव्याः  
प्रक्षयो घोरो यमराष्ट्रविधयेन ॥ ८ ॥ आत्मदोषात् समुत्पन्नं शोचितु नार्हसे नृप ।

अध्याय ८४ ॥

हे संजय मेने-तेरे कहने से अपने पुत्रों के साथ पांडवों के विचित्र २ युद्ध,  
मुने, हे सूरपुत्र, मेरी सेनाको कुछ प्रसन्न नहीं कहता है सर्व पांडवों को,  
प्रसन्न चित्त और अजेय कहा करता है, और मेरे पुत्रों को युद्ध में पराजित  
व अनुरताह-युक्त और धायल कहता है, निश्चय करके यही होना है,  
संजय बोले आपके पुरुषोत्तम बेटे युद्ध में बड़े पराक्रम से वीरता और पुरुषार्थ  
को दिखाते बल, साहस के अनुसार ऐसे युद्ध करते हैं जैसे कि देवनादी, गंगाजीका  
जल महास्वादिष्ट महा समुद्र के मिलजाने के प्रभाव से स्रवणताको प्राप्त होता है ।  
हे-राजा इसी प्रकारसे आप के पुत्र भी महात्मा और वीर पांडवों के पुरुषार्थको  
पाकर निष्फल होते हैं, हे कौरवोत्तम सामर्थ्य के अनुसार उपाय कर्त्ता और कठिन  
साध्यकर्मों के करनेवाले आप अपने शूरवीरों को दोषके भागी करने को योग्य  
नहीं हो, हे राजा बेटेमेने आपके अपराध से पृथ्वीभर का नाश अत्यन्ततासे यमराज  
के देशका वृद्धि कारक है, आप अपने दोषजन्य फल के शोचने के योग्य नहीं हो,

### CHAPTER LXXXIV

"I have heard from thee, Sanjaya," said Dhritrashtra, "the wonderful account of the war of the Pandavas. Thou sayst, 'But, that my army is not cheerful. While the Pandavas are represented as unconquerable and cheerful, my sons are spoiled as destitute of prowess, conquered and wounded. Surely, it is sure to happen.' Your sons, the best of men," replied Sanjaya, "fight bravely in battle and show their prowess to the best of their strength but the attempts of your sons become futile before the Pandavas as the sweet waters of the divine Ganges become salt in contact with the Ocean." 5 You should not blame your sons who do hard work and try their best in doing their duty. Through your fault and your son's the destruction of the world is sure to augment the region of Yamraj, and you should

न हि रक्षन्ति राजानं सर्वथात्रापि जीवितम् ॥ १२ ॥ युद्धे सुकृतिर्न लोका निच्छन्तो  
 वसुधाधिपाः । चमू विमह्य युध्यन्ते नित्यं स्वर्गपरायणा ॥ १० ॥ पूर्वाहणे तु महा-  
 राज प्रविशन्त जतस्य । तन्त्वमेकमगा मृत्वा शृणु देवासुरोपमम् ॥ ११ ॥ आवन्त्यो-  
 तु महेष्वासी महासेनो महाबलो । इरावन्तमभिप्रेक्ष्य समयेतां स्पृष्टकौ ॥ १२ ॥  
 तेषां प्रवहते युद्धं समहल्लोम हर्षणम् । इरावांस्तु सुसं कुडो कृतरी देवकृपणो-  
 ॥ १३ ॥ विद्याध निशितैस्तूर्ण शरैः सन्नतपर्वभिः । तावेन प्रत्याविच्येतां समरे चित्र-  
 याधिना ॥ १४ ॥ युध्यतां हि तथा राजन् विशेषो न व्यदश्यत । यततीं शृणुनाशाय ॥  
 कृतप्रतिहृतपिणाम् ॥ १५ ॥ इरावांस्तु ततो राजान्मुविन्दस्य शायकः । स्तुतिमधतुल्ये-  
 धाहाननयधमसादनम् ॥ १६ ॥ भल्लाभ्यां च सुतीक्ष्णाभ्यां धनुः केतुध्वं मारिष ।  
 चित्रश्रेष्ठ समरे राजन्तदद्भुतमिधामवत् ॥ १७ ॥ त्यक्तवानुविन्दो रथं विन्दस्य रथमा-

यहां सब राजालोग अपने जीवन ही रक्षा नहीं करते हैं, राजालोग युद्ध के द्वारा  
 उत्तम और पवित्र लोकों को चाहते हैं और संदेह स्वर्गको ही उत्तम स्थान समझने वाली  
 सेना में पुसंकर युद्ध को करते हैं ॥ १० ॥ हे राजा मातृकाल के समय अनुपपत्ता नशेहोने  
 मारुभुआ, उस देवता और असुरों के युद्ध समान महा संग्राम को आप एकाक्षित  
 होकर मुक्त से मुने, बड़े धनुषधारी महात्मा और तेजस्वी लाल नेत्रवाले अश्वनि  
 देश के राजा लोग इरावान को सम्मुख देखकर युद्ध भिलाषी हुए, और उनको  
 रोमहर्षण महातुल्य युद्ध जारी हुआ फिर अत्यन्त क्रोधित होकर इरावान ने देवतारूप  
 दोनों भण्डारों को, बड़ी शीघ्रता से गुप्त ग्रंथी वाले धाणों से घायल किया और  
 उन दोनों ने भी अपूर्व युद्ध कर के उसको घायल किया, इस के पीछे शत्रु के नाश  
 के करने में उपाय करने वाले महारथ महारं करने की इच्छा से युद्ध करनेवालों की  
 मुख्यता देखने में नहीं आई ॥ १५ ॥ फिर इरावान ने अपने चार शायक से राना अनु-  
 विन्द के चारों घोड़ों को मारकर अत्यन्त तीक्ष्ण भल्लों से धनुष और ध्वजा की काटा

not lament at the fruit of your own folly 'All the princes do not hold  
 their lives dear for your sake. They desire pure and holy regions  
 through war and always regarding paradise as the most desirable  
 place, they fight in the thickest of the battle. 10 The destruction of the  
 warriors began in the morning, O king. Hear attentively the account of  
 that great war which was like that between the gods and asurs -  
 The great archers, the princes of Avanti, with red eyes, seeing Iravan  
 before them, desired to fight and the battle between them was very  
 severe. Then in great anger, Iravan soon wounded the two brothers  
 with his arrows having hidden knots and was himself wounded by them.  
 Then those destroyers of enemies, wishing to discharge weapons at one  
 another, could not show their skill in the hurry of the moment. 15.  
 Iravan killed the four horses of Anuvind with four arrows and with  
 very sharp darts cut down his banner and bow. All this was wonderful.



स्थितः । धनुर्गृहीत्वा परम मारसाधनमुत्तमम् ॥ १८ ॥ तावेकस्यै रणे धीरावावन्त्यो  
रथिनाम्बरो । शरान् सुमुचतुस्तूर्ण मिरावतिमहात्मनि ॥ १९ ॥ ताभ्या मुका महावेगा  
शरा-काञ्चनभूषणा ( दिवाकरपथे प्राप्य ज्वालयामासुरम्बरम् ॥ २० ॥ इरावास्तु  
रणे कुब्जो घातरा तो महारथी । वयं शरवर्षण सारथिचाप्यपातयत् ॥ २१ ॥ तस्मि  
स्तुपतिते क्षमो गतस्तत्वेतु सारथी । रथ-प्रवृद्धाव दिश समुद्रभ्रान्तहयस्ततः ॥ २२ ॥  
तौ सजित्या महाराज नागराजमुतासुत पौरव ख्यापयस्तुर्णव्यधमत्तव्याहिनेम् ॥ २३ ॥  
सा प्रप्यमाना समरे धार्तराष्ट्री महाचमू । वेगान् बहुविधाधके त्रिव र्थात्वेव मानय  
॥ २४ ॥ हैडिम्बो राक्षसेन्द्रस्तु भगदत्त समाद्रवत् । रथेनादित्यवर्णेन सध्वजेन मेहा  
यत् ॥ २५ ॥ तत प्राग्ज्योतिषो राजा नागराज समास्थितः । यथावज्रधर एव सम्रा

यह भी आश्चर्यसा हुआ, फिर अनुविन्द बड़े दृढ़ और उत्तम धनुष को लेकर अपने  
रथको छोड़कर विन्द के रथपर नियत हुआ, वे दोनों महारथी एक रथपर बैठे हुए  
विन्द अनुविन्द ने बड़ी शीघ्रता से इरावान के ऊपर बाणों की वर्षा करी, इन दोनों के  
मुखों से शोभित छोड़े हुए तीक्ष्ण बाणोंने सूर्य के रथको पाकर आकाशको  
ज्वालादिता कर दिया ॥ २० ॥ फिर महारथी इरावान ने भी क्रोधमुक्त होकर उन दोनों  
भाई महारथियोंपर बाणों की वर्षाकरके उन के सारथी को गिराया, हे राजा उस  
सारथी के गिरने और भरनेपर बड़े रथ जिस के बड़े भ्रान्ति में संयुक्त थे इधर  
उधरको भागा, हे महाराज उस नागराज के पौरव ने उन दोनों को विजय करके  
पुरुषार्थ को प्रसिद्ध करते हुए आपकी सेना को भी बड़ी शीघ्रतासे भस्मीभूत कर दिया,  
दुर्योधनकी युद्ध में प्रवृत्त उस बड़ी सेनाने गतवर्षकारके ऐसे २ वेगों को किया,  
जैसे कि विषपान, करके मनुष्य किया करते हैं, फिर राक्षसों का राजा महाबली  
घटोत्कच सूर्यवर्ण ध्वजाधारी रथमें चढ़कर भगदत्तके सम्मुख दाड़ा ॥ २५ ॥ इसके पीछे  
राजा प्राग्ज्योतिष गजेन्द्र पर ऐसे सवार हुआ जैसे कि पूर्वतमयमें दानवों के युद्ध में

Anavind thereupon took up a large and hard bow, and leaving his  
own chariot seated himself on the chariot of Vind Both those  
warriors, Vind and Anuvind, seated on the same chariot poured a  
sharp shower of arrows over Iravan The gold decked arrows of  
those two warriors covered the sun on high 20 The valiant Iravan too  
in great anger, showered his arrows over those charioteers and killed  
the driver At the fall and death of the driver, the horses wandered  
hither and thither dragging the chariot, after them That grandson  
of the prince of nagas having conquered the two warriors, showed his  
prowess by destroying your armies as well The fighting warriors  
of Duryodhan made dreadful attacks like those who have drunk  
poison Then the prince of rakshases brave Ghatotkach, mounted on  
his banner'd chariot bright like the sun, rushed upon Bhagatta, 25  
The king of Pragyptish mounted on his huge elephant looked like

मे तारकामये ॥ २६ ॥ तत्र देवाः सगन्धर्वाः ऋषयश्च समागताः । विशेषं नर्ममं विवि-  
 बुर्होऽङ्घ्रिभगदत्तयो ॥ २७ ॥ यथा सुरपतिः शङ्कस्त्रासयामास दानवान् । तथैव समरे  
 राजा दानवामास पाण्डवान् ॥ २८ ॥ तेन विद्राव्य माणास्ते पाण्डवाः सर्वतोदिशो  
 आतार नाशयच्छन्न स्वेष्वनोकेषु भारत ॥ २९ ॥ भैमसेनि रथस्थं तु तत्रापश्याम  
 भारत । शेर ग विमनसो भूयः प्राद्वन्त महारथाः ॥ ३० ॥ निवृत्तेषु तु पाण्डूनां पुनः सै-  
 न्येषु भारत अस्त्रिभ्रष्टानको घोरस्तत्र सैन्यस्य सयुगे ॥ ३१ ॥ घटोत्कचस्ततो राजन्  
 भगदत्त महारणे । शरे प्रच्छादयामास मेरु गिरिं शिवाम्बुदः ॥ ३२ ॥ निहत्य तान्  
 शरान् राजा राक्षसस्य धनुश्च्युतान् । भैमसेनि रणे तूर्णं सर्वं मर्मं स्वताडयत् ॥ ३३ ॥  
 स ताड्यमानो बहुभिः शरेः सन्नतः पर्वभिः । न विव्यथे राक्षसेन्द्रो विद्यमान इवाचलः  
 ॥ ३४ ॥ तस्य प्राग्ज्योतिषः कुड्मस्तोमराश्च चतुर्दश । प्रेषयामास समरे तांश्चिच्छेद स

बल गरी इन्द्र, ऐरावत हाथी पर सवार होता था, उस स्थान में गंधर्वों समेत देवता और  
 ऋषिभोग आये घटोत्कच ने भगदत्त की मुख्यता को नहीं जाना जैसे कि देवेन्द्र  
 ने दानवों का भयभीत किया उसी प्रकार युद्ध में उस राजा ने पाण्डवों को भगाया,  
 हे भरतवंशी उस से अग्रे ये हुए, उन पाण्डवों ने अपनी सेना में जाकर सब दिशों में कोई  
 अपना रक्षक नहीं पाया, हे भरतवंशी वहाँ मैंने अकूटे भीष्मके, पुत्र घटोत्कच  
 कोही, रथ पर नियत देखा और शेर महारथी अपने मन से हार, २ कर इधर उधर को  
 भागे- ॥ ३० ॥ फिर पाण्डवों की सेना के छौटने पर युद्ध में आपकी सेना का बहोचोर निष्ठानक  
 हुआ, इस-के पीछे घटोत्कच ने बाणों से भगदत्त को ऐसा दकौ दिया जैसे कि बादल मेरु  
 पर्वत को दकौ देने है राजा भगदत्त ने भी घटोत्कच के फेंके हुए बाणों को काटकर अपने  
 बाणों से उसके मर्मस्थलों को घायल किया, वह घटोत्कच उन गुप्त ग्रन्थी वाले बाणों से  
 ऐम प्रिदामान नहीं हुआ जैसे कि घायल पर्वत पीड़ित नहीं होता, फिर उस क्रोध  
 भरे राजा प्राग्ज्योतिष ने युद्ध में चौदह तोमर उसके ऊपर फेंके उनको घटोत्कच ने

Indra riding on Airavat in the war of danavas. Then the gods with  
 the gandharvas and rishis came there. Ghatotkach did not know the  
 greatness of Bhagadatta who dispersed the Pandava armies as Indra  
 had done the danavas. The Pandavas terrified by the attacks of  
 that king could not find a protector among their friends. There I  
 saw Bhishm's son Ghatotkach alone seated on his chariot; the rest of the  
 warriors ran away in terror in different directions. 30 Again on the  
 return of the Pandava army there was a great slaughter of your  
 armies. Ghatotkach covered Bhagadatta with his arrows as clouds  
 do Meru. Bhagadatta too, cut down the arrows of Ghatotkach and  
 wounded him in vital parts, but the latter was not disturbed by  
 those wounds and stood firm like a hill. Then the enraged king of  
 Pragjyotish discharged fourteen tomars at Ghatotkach who cut them  
 all down. 35 And having cut them down the brave prince of rakshasas

राक्षसः ॥ ३९ ॥ स तां हि विज्वा महाबाहुस्त्रोमस्तन्निशि शरैः । अमरतन्त्रं विधाय सत  
 त्याकं कपत्रिभिः ॥ ३६ ॥ ततः प्रागज्योतिषगर्जः प्रति ॥ ३७ ॥ स इतामे रथे तिष्ठन् राक्षसेन्द्रः प्रतापवान् । श  
 किं चिक्षेप विगेन प्रागज्योतिषगर्जः प्रति ॥ ३८ ॥ तामापतन्तीं सहसा हेमदण्डां युवं  
 निनीम् ॥ विधा चिच्छेद नृपतिः सत्यकीर्यत मेदिनीम् ॥ ३९ ॥ शक्तिं विनिहत्य दृष्ट्या  
 हेडिभः प्रादघ्नपात् ॥ यथेन्द्रस्य रणात् पूर्वं नमुचिर्देवसत्तमः ॥ ४० ॥ तं विजित्य  
 रणे शरैः विक्रान्तं नृपतपकिम् ॥ अजेयं समरे वीरैः दमेन धरणे तच्च ॥ ४१ ॥  
 पाण्डवीं समरे सेनां सम्ममदं सकृञ्जरः ॥ यथा घनगजो राजन् मृदन् रति पद्मिनीम्  
 ॥ ४२ ॥ मद्देवचरस्तु समरे यमाभ्यां समसञ्जतः ॥ स्वस्त्रायां छादयाच्चक्रैः शरीरैः  
 पापदुन्दनैः ॥ ४३ ॥ सहदेवस्तु समरे मातुलं हृदयं सङ्गतम् ॥ श्वारयच्छरीरेण

काया ॥ ४३ ॥ फिर तोपरो को कादकर उस महाबाहु राक्षसाधिप ने कंकपसवाल सत्रह  
 बाणों से भगदत्त को घायल किया फिर हे मरुतर्पण राजा भगदत्त ने भी शायकों  
 से उसके चारों घोंड़ों को गिराया तदनन्तर उस एक घोंड़ों के रथपर नियत प्रतापी  
 घटोत्कचने बड़े वेगसे भगदत्त के हाथी पर बरछी को छोड़ा राजा ने भी उससुनहरी  
 अकस्मात् गिस्ती हुई तीक्ष्ण बरछी के तीन टुकड़े कर दिये घटोत्कच अपनी बरछी को  
 दृढ़ आ देखकर अपने ऐसा भागा जैसे कि पूर्वकाल में युद्ध भूमि से द्रुपेन्द्र  
 नमुचि रथ के भगसे भागाया ॥ ४२ ॥ हे राजा उसने युद्ध में उसपक्षिद्ध पराक्रमी यमराज  
 के समान अजेय शत्रु को विनय करके हाथीसमेत उसी युद्ध के भीतर पाण्डवों की सेना  
 को भी ऐसे मर्दन किया जैसे कि जंगली हाथी कुमुदिनियों को मर्दन करता हुआ  
 चलता है और युद्ध में नकुल और सहदेव के साथ भिड़ते हुए मद्रदेश के राजाने बाणों  
 के समूहों से दोनों पांडुनन्दन अपने भानजों को आच्छादित कर दिया फिर सह

wounded his adversary with seventeen arrows fitted with vulture  
 quills. Then O best of Bharats, Bhagdatta too, killed his four horses  
 with his sharp arrows. Seated on the chariot of which the horses  
 were dead, brave Ghatotkach swiftly discharged a spear at the ele-  
 phant of Bhagdatta. The latter cut it down in three parts with his  
 arrows. Seeing his spear cut down, Ghatotkach ran away in terror as  
 Namuchi, the prince of rakshases, had run away from before Indra. 40  
 Having conquered the famous warrior and invincible enemy, he enter-  
 ed with his elephant in the midst of the Pandava army and destroyed  
 it like an elephant crushing the lotus plants. Fighting with Nakul  
 and Sahadev the king of Madra wounded the two sons of Pandu, his  
 nephews. Sahadev seeing his maternal uncle before him hid him  
 with his arrows as clouds hide the sun. Hidden by those arrows, he  
 was much pleased and loved them the more for the sake of their

मेघो यद्गदिव्याकरम् ॥ ४४ ॥ छाद्यमाने शूरीधेन हृष्टैरुपतराभयत् त्रियोक्ष्याप्यमयत्  
 प्रीतिरतुला भाव कारणात् ॥ ४५ ॥ ततः प्रहस्य समरे नकुलस्य महारथः ।  
 अश्वाश्च चतुरो राजश्चतुर्भिः सायकोत्तमैः ॥ ४६ ॥ प्रेषयामास समरे  
 यमस्य सन्नप्रातः । हताश्वातु रथातूर्णमवप्लुत्य महारथः ॥ ४७ ॥ अक्रोह ततो  
 यान् भ्रातुरेव यशस्विनः । एकस्यो तु रथे शूरी ददौ विक्षिप्य कामुकं ॥ ४८ ॥  
 मद्रराजस्य तूर्णं डादामास तु क्षेपात् । स डाद्यमानो बहुभिः शरीरं सन्ततपर्वभिः  
 ॥ ४९ ॥ स्वसेवाया नरव्याघ्रो नाकम्पत यथाचलः । प्रहसन्निव तोच्चैषि शरशृष्टिं  
 जघाम ह ॥ ५० ॥ सहदेवस्ततः क्रुद्धः शरमुत्सृज्य वीर्यवान् । मद्रराजं मभिप्रेष्य  
 प्रेषयामास भारत ॥ ५१ ॥ स शरं प्रेषितस्तेन गरुडानिलं वेगवान् । मद्रराजं  
 विनिर्मिद्य निपपात महीतले ॥ ५२ ॥ स गाढविद्धोऽप्यथितो रथोपस्थं महारथः ।

देव ने युद्ध में सम्मुख हुए अपने मामा को देखकर बाणों से ऐसे दहादिया जैसे कि  
 बादल सूर्यको दहकते हैं, वह बाणों से दहादिया अत्यन्त मस्तक रूप हुआ और  
 माता के कारण से उन दोनोंकी अत्यन्त प्रीति हुई, हेराजा इसके पीछे उसमहारथी  
 ने बहुत इसकर युद्धमें चार उत्तम शायकों से नकुलके चारोंपोंकी मारा ४६। फिर  
 वहमहारथीभी शीघ्री श्रुतक घोड़ेवाले रथसे क्रुद्धकर अपने यशस्वी भाईके रथपर सवार  
 हुआ फिर एकरथपर सवार दोनों क्रोधयुक्त शरमाइयोंने हृदयतुणों की खिचकर  
 जगमात्रमेंही राजामद्र के रथको बाणों से दहादिया वह बाणों से आच्छादित होकर  
 भी पर्वत के समाने कपायमान नहीं हुआ और हस्तदेह उसने उन बाणों की बपों  
 को नाश किया, तदनन्तर पराक्रमी सहदेवने बड़े क्रोध से बाणको खिचकर राजा  
 मद्रके ऊपर फेंका ५०। उसका फेंक हुआ वह गरुडसमान बाण राजा मद्र की घाँस  
 करके पृथ्वीपर गिरा, फिर वह मही पर्यंत पीढोपान महारथी बड़ी हृदता से रथ  
 में बैठकर अचेत होगया उसका मृत उसको अचेत हुआ देखकर उस संग्राम भूमि  
 से रथ के द्वारा दूर लेगया, धृतराष्ट्र के सबपुत्रोंने राजा मद्रके रथको फिरा हुआ

mother Then that warrior with a smile, killed the four horses of  
 Nakul with four arrows. The latter jumped down from the chariot  
 of which the horses were dead and mounted on the chariot of his  
 brother. Mounted on the same chariot, the two brave brothers  
 drawing their hard bows, hid the chariot of the king of Madra with  
 a shower of arrows, but in spite of that the king was not discomfited  
 and with a smiling face he destroyed those arrows. Then valliant  
 Sahadev, drawing his bow, sent a single arrow which flew like  
 the ground. The bow the  
 driver had to take him far away from the field of battle. The sons of  
 Dhritrashtra seeing the chariot of the king of Madra turn back

निपसाद महाराज कदमदञ्च जगामह ॥ ५३ ॥ तं विसर्गं निपतितं भूतः सम्प्रेक्ष्य  
संयुगे । अपोवाह रथेनाजो यमाभ्यामभिपीडितम् ॥ ५४ ॥ दृष्ट्वा मद्रद्वररथं धातं  
राष्ट्रः परांमुखम् । सर्वविमनसो भूत्वा नेदमस्तीत्यचिन्तयन् ॥ ५५ ॥ निर्दिश्य मानुलं  
संस्थे माद्रीपुत्री महारथौ । दध्मतुर्मुदितौशखौ सिंहनादञ्च नेदतुः ॥ ५६ ॥ अभिदुदुव-  
तुहंष्टौ तथै संस्थं विशास्यते । यथा दैत्यचमं राजन्निन्द्रोपेन्द्राविवामरो ॥ ५७ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि द्वन्द्वयुद्धे

चतुरशीतोऽध्यायः ८४ ॥

सञ्जय उवाच । ततो युधिष्ठिर राजा मध्येप्राप्ते दिवाकरे । श्रुतायुषमभिप्रेक्ष्य प्रेषया  
मासयाजिनः ॥ १ ॥ अभ्यधांच सतो राजा श्रुतायुषमरिन्दमम् । विनिध्नन् सायकनीहणं  
नैवमिन्दतर्पयन्मिः ॥ २ ॥ स सम्याप्य रणे राजा प्रेषितान् धर्मसूनुना । शत्रान् सप्तमहे

देखकर घड़ी व्याकुलता से चिन्ताकरी और जाना कि वह नहीं है, माद्रीके दोनों  
महारथी पुत्रों ने युद्ध में अपने मामाको नीतकर शत्रुओं को वज्राके वड़े  
सिंह नाद से गुनगुनाओं को किया और हेराभा वह दोनों वड़े मसन्न होकर  
आपकी सेना पर ऐसे दौड़े जैसे कि इन्द्र और विष्णु दोनों देवता दैत्यों की  
सेनापर दौड़े ५७ ॥

अध्याय ८५ ॥

समय बोले कि इसके पीछे आकाश के मर्यागत सूर्य के आजाने पर राजा  
युधिष्ठिर ने श्रुतायुषको सम्मुख देखकर घोड़ों को चेतन्य किया और गुप्तग्रन्थी वाले  
नौशायकों से शत्रुनित श्रुतायुषको घायल करके उसके सम्मुख दौड़ा धनुषधारीने  
कोपित होकर युद्ध में बाणों को रोककर सात बाण युधिष्ठिर पर चलाये, वह बाण  
उस महात्मा के प्राणों को खोजकरते हुए उसके कवच को काटकर रुधिर को पीने

thought that he was no more. The sons of Madri blew loud blasts  
from their conchs at their conquest of the king and roared loud roars.  
And with cheerful minds they rushed upon your armies like Indra  
and Vishnu rushing upon the daityas in the war between the  
gods and the danavas. 57.

#### CHAPTER LXXXV

"When the sun had risen on the middle of the sky," said  
Sanjaya, "Prince Yudhishtir, seeing Shrutayush before him, moved  
his horses and with nine arrows having hidden knots wounded  
Shrutayush the destroyer of enemies and then rushed upon him.  
The great archer checked the arrows in a rage and discharged seven  
arrows at Yudhishtir. The arrows cutting through his armour

ध्यासः कौन्तेयाय समर्पयत् ॥३॥ ते तस्य कनक मित्वा पशु शोणितमार्हवे । अमूर्तिव  
विचिन्वन्तो देहे तस्य महात्मन ॥ ४ ॥ पाण्डवस्तु भृश क्रुद्धो विद्वस्तेन महात्मना ।  
रणे वराहकर्णेन राजानं हृद्यविध्यत ॥ ५ ॥ अथा परेण भल्लेन केतुं तस्य महात्मन ।  
रथश्रेष्ठो रथाचूर्ण भूमौ पार्थो न्यपातयत् ॥ ६ ॥ केतु निपतित इष्ट्या धृतायु सतु  
पार्थिव । पाण्डव विशिखैस्तीक्ष्णै राजन् प्रिव्याध सप्तभि ॥ ७ ॥ तत श्रोधात् प्रजग्वा  
ल धर्मपुत्रो युधिष्ठिर । यथा युगान्ते सूतानि दिग्धक्षु रिव पावक ॥ ८ ॥ हुदन्तु  
पाण्डव दृष्ट्वा देवगन्धर्वराक्षसाः । प्रविष्ययुर्महाराज व्याकुल चाप्यभज्जगत् ॥ ९ ॥  
सर्वपात्रैव सूतानां मिदमासीन्मनोगतम् । नील्लोकानय सकुद्धो नृपोऽय धक्ष्यतीति  
वै ॥ १० ॥ ऋषयश्चैव देवाश्च चक्रु स्वस्त्ययनं महत् । लोकानां नृप शान्त्यर्थं  
क्रोधिते पाण्डवे तदा ॥ ११ ॥ स च क्रोधसमाविष्ट क्षुब्धकिणीपरिलिहन् । दधारात्मवपु

ल्लो फिर उससे अत्यन्त घायलहुए युधिष्ठिर ने वराहकर्ण नाम बाणसे राजा के  
हृदय को घायल किया । फिर रथियों में श्रेष्ठ युधिष्ठिरने दूसरे भल्लसे उस महात्मा  
की ध्वजाको शीघ्रही काटकर रथ से नीचे गिराया, उसके पीछे उस राजा श्रुतायुषने  
अपनी ध्वजाको गिराहुआ देखकर सातविशिखों से धर्मराजको घायल किया,  
इसके पीछे राजा युधिष्ठिर ऐसा अत्यन्त क्रोधमें ज्वलित हुआ जैसे कि प्रलयकालकी  
अग्निदेदीप्त होती है, हे राजा देवतागंधर्व राजस युधिष्ठिर को क्रोधयुक्त देखकर  
पीड़ामान हुए और सब संसार कोभी व्याकुलता हुई और सब जीवों के चित्त में  
यह बात वर्तमान हुई कि मग यह राजा अत्यन्त क्रोध युक्त होकर तीनों लोकों को  
भस्म करदेगा । १० । हे राजा तबतो युधिष्ठिरके अत्यन्त क्रोधितहोनेपर ऋषियों और  
देवताओंने लोकों की शान्ती के निमित्त बड़ी ईश्वरसे प्रार्थनाकरी, उस क्रोधमें भरोहोटा  
को चावतेहुए युधिष्ठिरने प्रलयकालके सूर्य के समान अपने भयानकरूपको धारण  
किया, तदनन्तर हे राजा बहा आपकी सब सेनाजीवनके विषय में निराश हुई,

pierced his body and drank his blood seeking for his life. Wounded  
with the arrows, Yudhishtir pierced the breast of the king with a  
sort of arrows known as hog's ear 5 and with another dart he cut  
down the banner from his chariot. Seeing his banner fallen down,  
Shrutayush wounded Dharmraj with seven sharp arrows. The latter  
thereupon burnt with anger like the fire of pralaya. Seeing Yudhishtir  
subject to anger, the gods gandharvas and rakshases were much  
disturbed in their minds and the world shook with fear as if the  
king would burn the three worlds. 10 The gods and rishis prayed God  
to appease the wrath of Yudhishtir. Biting his lips in anger, Prince  
Yudhishtir looked glorious like the sun and all your warriors be  
came hopeless of their lives. But the prince carefully checked his  
anger and cut asunder the large bow of Shrutayush when the

घोरं युगान्तादित्यस्तन्निमम ॥ १२ ॥ ततः सैन्यानि सर्वाणि तावकानि विशाम्पते ।  
 मिराशान्यमवस्तत्र जीयितं प्रति भारत ॥ १३ ॥ स तु धैर्येण तं कोपं सन्निवाप्यं  
 महाव्रतः । श्रुतायुषः प्रचिच्छेद मुष्टिदेशे महाघनु ॥ १४ ॥ अर्धेन छिन्नधन्वानं  
 ताराचेन सन्नान्तरे । निर्विभेद रणे राजा सर्वसैन्यस्य पश्यत ॥ १५ ॥ सत्वरं च रणे  
 राजन् तस्यं बाह्यान्महात्मन । निजघान शरं क्षिप्रं सुतन्त्रं सुमहाघटः ॥ १६ ॥ हताश्वं तु  
 रथं त्यक्त्वा दृष्ट्वा राक्षोऽस्य पौरपम । विप्रदुद्राच वेगेन श्रुतायुः समरे तदा ॥ १७ ॥  
 तोष्मन्प्रजिते महेश्यामे धर्मपुत्रेण संयुगे । दुर्योधनबले राजन् सर्वमासीत् परां-  
 मम् ॥ १८ ॥ एतत् कृत्वा महाराज धर्मपुत्रो युधिष्ठिर । व्यात्ताननो यथा फालस्तव  
 सैन्य जघानह ॥ १९ ॥ चेकितानस्तु बाष्पेणो गौतमं रथिनाम्बरम् । प्रेक्षतां सर्वसैन्या-  
 नां छादयामास सायकैः ॥ २० ॥ सन्निवाप्यं शरालांस्तु कृपः शरघ्नो युधि । चेकि-

तव उस राजाने धैर्यता से उसक्रोधको अच्छी रीति से रोककर श्रुतायुषके बड़े  
 धनुषको मूठपर से काटा, फिर राजा ने भी सब सेना के देखनेहुए इस दूरे धनुष  
 वालेको अपने नाराच बाणों से छानीपर घायल किया । १५। और इसी महात्मा ने  
 शीघ्रता से उस महात्मा के घोड़ों को बाणों से मार कर मारथी को तत्क्षणही मार  
 डाला, तब श्रुतायुष मृतकघोड़ों के रथ को त्यागकर राजा के पराक्रम को देखके  
 घड़ी तीव्रता से संग्रामभूमि से भागा हे राजा उन युद्ध में धर्मपुत्र युधिष्ठिर-से उन  
 धनुषधारी के विजयहोने पर दुर्योधनकी सब सेना गुप्त मोड़गई, फिर धर्मराज  
 ने यह कर्म करके अत्यन्त काल मृत्यु के समानहोकर आपकी सब सेना को मारा  
 फिर दृष्टिबंशी चेकितान ने सब सेना के देखते रथियों में श्रेष्ठगौतम कृपाचार्य  
 को शायकों से हक दिया । २०। और कृपाचार्यने उन बाणों को रोककर युद्ध में  
 कुशलचेकितानको बाणों से घायल किया फिर उसजीघ्रताकरने वाले कृपाचार्यने  
 दूसरे भल्लसे उसके धनुष को काट कर उसके सारथी को भी मिराया, इसके पीछे

handle, and within sight of all the armies the prince wounded him  
 in the breast 15. and killed his horses and the driver with his arrows  
 Leaving the chariot of which the horses were dead, Shrutayush fled  
 from the field of battle at the sight of the king's prowess. In that  
 battle, O king, on Yudhishthir the Jus's conquering thrt archer,  
 Duryodhan's army turned back and Dharmay having done this  
 deed of prowess, assumed a dreadful form like that of Death to  
 destroy your armies. Then Chckitan of the Vrishni family within  
 sight of all the warriors, hid Kripacharya the best Goutams with  
 his arrows. 20. and the latter, having checked those arrows wounded  
 Chckitan, skilful in battle, with his arrows. The dexterous Kripa-  
 charya having cut his bow with another arrow, killed his driver too,  
 and having killed the horses and the driver, he also killed the rear

तान रणे यत्त राजन् विव्याध पश्चिमि ॥ २१ ॥ अथापरेण भल्ले न धनुश्चिच्छेद  
मारिय । सारथ्यं न्यास्य समरे क्षिप्रहस्तो न्यपातयत् ॥ २२ ॥ हृत्वा धास्याय घोद्राजन्तु  
भौ तौ पश्चिं सारथी । सोवप्लुत्य रथागूर्णं गदाजग्राह सात्वत ॥ २३ ॥ स तया  
वीरपातिन्या गत्या गदिनाम्बर । गौतमस्य हयान् हत्वा सारथिश्च न्यपातयत्  
॥ २४ ॥ भूमिष्ठो गौतमस्तस्य शराक्षिप्तेषु योद्धत । शरास्ते सात्वत भत्वा प्राविशन्  
धरणीतलम् ॥ २५ ॥ चेकितानस्तत कुद्र पुनश्चिक्षेप ता गदा । गौतमस्य वधाकाक्षी  
धृत्स्त्रेव परन्द्वर ॥ २६ ॥ तामापतन्तो विपुला मद्मगर्भा महागदाम् । शरैरेकसाह  
सैर्वारयामास गौतम ॥ २७ ॥ चेकितानस्तत खड्ग प्रीधादुद्धृत्य भारत । हाय  
परमास्थाय गौतम समुपाद्रवत् ॥ २८ ॥ गौतमोपि धनुस्त्यक्त्वा प्रगृह्णाति सुसयत  
वेगेन महुता राजश्रेष्ठितानमुपाद्रपत् ॥ २९ ॥ तावुर्भा वलसम्पन्ना निस्त्रिशयधारिणौ  
निस्त्रिशय्या सुतोष्णाभ्यामभ्योन्य सततक्षतु ॥ ३० ॥ निस्त्रिशयेगामिहती ततस्त्री

घोड़ोंको मार कर सारथी और पीछे के रत्नक को मारा फिर उसगदा में कुशभ  
यादव ने शीघ्रही रथसे कूदकर गदाको हाथमें लिया, और उस वीरोंकी मारनेवालों  
गदासे कृपाचार्य के घोड़ों को और सारथी को मारा, फिर पृथ्वी पर, वर्तमान  
कृपाचार्य ने सोलह बाणों को उसके ऊपर फेंका वह सब बाण, उम यादव को  
घायलकरके पृथ्वीपर गिरे । २५ । फिर कृपाचार्य को मारनेकी इच्छा से महाक्रोधित  
चेकितान ने उस गदाको ऐसे फेंका जैसेकि इन्द्रने वृत्रासुर के ऊपर फेंकाया फिर  
कृपाचार्य ने उसलोहेकी महा रथल गिरती हुई गदाको हजारों बाणों से रोका  
इसके पीछे चेकितान खड्ग को भियान से निकालकर बड़ी तीव्रतासे कृपाचार्य  
के समीप गया, फिरबड़े सावधान कृपाचार्य भी धनुषको छोड़कर बड़ी तीव्रतासे  
चेकितानके पासगये, वहाँ उन दोनों महा पराक्रमी खड्ग धारियोंने तीक्ष्ण धारवाले  
खड्गों से परस्पर में घायन किया । ३० । फिर वह दोनों पुरुषोत्तम खड्गों  
के आघात से घायन सयजीवों के निवासस्थान पृथ्वीपर गिरपड़े, और मूर्च्छा से

guard Then that Yadu, skilful in mace exercise jumped down  
from his chariot mace in hand and with that mace, the destroyer of  
enemies, he killed the horses and the driver of Kripacharya who  
discharged at him sixteen arrows and having wounded the Yadav,  
those arrows fell on the ground 25 Desiring to kill Kripacharya  
Chelitan manly hurled his mace at him as Indira had hurled  
his at Namichu Kripacharya checked with thousands of arrows that  
iron mace falling with great velocity Then Chelitan drew out his  
sword from the scabbard and rushed upon Kripacharya Kripacharya  
carefully left his sword and went in haste to Chelitan and then the two  
warriors wounded each other with swords 30 Wounded with sword  
cuts the two warriors fall on earth the habitation of all living beings



पुरुषर्षभौ । धरणीसमनुप्राप्ती सर्वभूतनिर्पेचिताम् ॥ ३१ ॥ भूर्ध्वोऽन्विपरीताङ्गौ व्याया  
मन् तु मोहितौ । ततोऽप्यधोऽद्वेगेन करकर्मः सुहृत्तया ॥ ३२ ॥ चेकितानं तथाभूतं  
दृष्ट्वा समरदुर्मदः । रथमारोपयन् चैनं सर्वसैन्यस्य पश्यतः ॥ ३३ ॥ तथैव  
शकुनिः शूरः स्यालस्तत्र विशाम्पते । आरोपयद्रथं तूष्णं गौतमं रथिनाम्बरम् ॥ ३४ ॥  
सौमदत्तिं तथा कुञ्जो धृष्टकेतुर्महामते । नवत्यां सारथकः क्षिप्रं राजन् विव्याध वरुसि  
॥ ३५ ॥ सौमदत्तिं हरस्येस्तैर्मृगं चाणैरशोभत । मध्यान्दिने महाराज रथिम् भिस्तप  
नो यथा ॥ ३६ ॥ भूरिश्रवास्तु समरे धृष्टकेतुं महारथम् । हतस्तहयं चक्रे विरथं सा  
यकात्तमः ॥ ३७ ॥ विरथं समालोक्य हताश्वं हतसारथिम् । महता शरवर्षेणच्छाद  
यामास संयुग्मं ॥ ३८ ॥ सेतुं तं रथमुत्खज्य धृष्टकेतुर्महामनाः । आरूढो ततोऽयानं  
शतानीकस्यमारिष ॥ ३९ ॥ चित्रसेनो विकर्णश्च राजन् दुर्मर्षणस्तथा । रथिनो ह्येव  
सन्नाहाः सौमद्रमभिदुडुबुः ॥ ४० ॥ अभिमन्योस्ततस्तैस्तु घोरं युद्धं भवन्ततः । शरी

महा व्याकुल देह होकर बड़े परिश्रमसे अचेत हांगये इसके पीछे करिकर्म उस दशा  
में युक्त युद्ध में दुर्मद चेकितान को देखकर भीति के कारण बड़ी तीव्रता से सम्मुख  
दौड़ा और सेनाके देखनेहुए उसको रथपर सवार किया, इसी प्रकार हे राजा आप  
के साले शूरशकुनी ने उस रथियों में धृष्टकृपाचार्य को भी शीघ्ररथपर सवारा किया  
इसी प्रकार से महाबली क्रोधयुक्त धृष्टद्युम्न ने नव्वे तीक्ष्ण बाणों से भूरिश्रवा को  
हृदयमें घायल किया ॥ ३५ ॥ हे राजा भूरिश्रवा उन हृदयपर नियत बाणोंसे ऐसा अत्यन्त  
शोभित हुआ जैसे कि मध्याह्न के समय सूर्य अपनी किरणों से शोभित होता  
है, फिर भूरिश्रवा ने उत्तम शायकों से महारथी धृष्टकेतुके सारथी रथ घोड़ों को  
मार रथने विरथकर दिया, फिर इसको युद्ध में रथहीन देखकर वारों से दक दिया  
दे अष्ट घृतराष्ट्र फिर वह बड़ा साहसी धृष्टकेतु उस रथको छोड़कर शतानीक के  
रथपर सवार हुआ, इस के पीछे सुनहरी कवच धारण करने वाले चित्रसेन विकर्ण

and having swooned with great exertion they became insensible. Then Karikarsh, seeing Chekitan in that condition rushed to the spot out of affection for him and within sight of all the armies bore him on his chariot. In the same manner, O King, your brother-in-law brave Shakuni put brave Kripacharya soon on the chariot. In the same manner brave and enraged Dhrishtadyumna wounded Bhurishrava in the breast with ninety sharp arrows. 35. With the arrow standing on his breast, Bhurishrava looked as glorious as the midday sun with his rays. Bhurishrava then with his good arrows, having killed the chariot driver and horses of Dhrishtaketu, deprived him of the use of his chariot and finding him out of his chariot, he covered him with arrows. Then brave Dhrishtaketu left his own chariot and mounted that of Shatanik. Sheathed in golden armour, Chitrasen, Vikarn

रस्य यथा राजन् यात पित्त कफेऽग्निभि ॥ ४१ ॥ विरथास्तवपुत्रास्तु कृत्वा राजन्  
महाहवे, न जघान नरव्याघ्र. स्मरन् भीम वचस्तदा ॥ ४२ ॥ ततो रात्रां बहुशतैर्गजा  
श्वरथयायिभि. । संवृते समरे भीष्मं देवैरपि दुरासदम् ॥ ४३ ॥ प्रयातं शीघ्रमुद्गीक्ष्य  
परिश्रांतुं सुतास्तव । अमिमन्युं समुद्दिश्य घालमेकं महारथम् ॥ ४४ ॥ वासुदेवमुवा  
चेदं कौन्तेयः श्वेतवाहन. । चोदयाश्वान् हृषीकेश यत्रैते बहुला रथा. ॥ ४५ ॥ पते  
हि बहव शूरा कृतास्त्रा युद्धबुर्मेदा । यथा हन्युर्नन. सेनां तथा माधव चीदय ॥ ४६ ॥  
एवमुक्तः स बाष्पेय. कौन्तेयेनाभिमतो जसा । रथं श्वेतहवैर्युक्तं प्रेषयामास संयुगे ४७ ॥  
निष्ठानको महानासात् तवसैन्यस्य मारिष । यदञ्जुनो रणे क्रुद्ध संयातस्तावकान्प्रति  
॥ ४८ ॥ समासाद्यतु कौन्तेयो रात्रस्तान्भीष्मरक्षिण. । भुशार्माणमथो राजन् निर्दं  
वचन मप्रवात् ॥ ४९ ॥ जाना मित्वा युधा अष्ट मत्यन्तं पूर्वं धैरिणम् । अनयस्याद्य

दुर्मर्षण नाम तीनों रथी अभिमन्युके सम्मुख दौड़े। ४०। इसके पीछे अभिमन्युसे और  
उन रथियों से ऐसा घोरयुद्ध मचा जैसे कि देह से और यात पित्त कफ इन तीनों  
से युद्ध होता है, हे राजा फिर भीमसेन के वचन को स्मरण करते हुए वसुदेव ने आपके पुत्रों को  
विरथ करके मारा नहीं तदनन्तर देवताओं से भी अजेय भी-  
ष्मजी बहुत से हाथी घोड़े और रथोंपर सवार हजारों राजाओं से आकर संयुक्त  
हुए इसप्रकार आपके पुत्रों की रक्षा के लिये वही शीघ्रता से आते हुए भीष्मजी को,  
देसके और महारथी अभिमन्यु को अकेला देखकर श्वेत घोड़े के रथपर सवार  
अञ्जुन वासुदेव जी से यह वचन बोला कि हे हृषीकेश घोड़ोंको तेज करिये  
और जहां यह बहुतमे रथ है वहां चलिये। ४५। यह अस्त्रोंके जाननेवाले युद्धमें दुर्मर्द  
घड़े शूरवीर जैसे कि हमारी सेनाको नहीं मारें हे माधवजी उसी प्रकारमे आप  
घोड़ों को चलाइये, वड़े तेजस्वी अञ्जुनके कहे हुए ऐसे वचनों को सुनकर श्रीकृष्ण  
जी ने उन्हीं श्वेत घोड़ों के द्वाग रथको संग्राम भूमि में पहुँचाया, हे राजा यह

and Durmarshan, the three great warriors rushed upon Abhimanyu, 40 and the battle amongst them was as dreadful at that of wind, bile and phlegm the, three humours of the body. And remembering the words of Bhishma, that best of warriors made the chariots of your sons useless, but spared their life. Then Bhishma, unconquerable even by gods, joined them together with thousands of elephants, horse and charioteer princes. Thus seeing Bhishma in haste coming for the protection of your sons and finding Abhimanyu alone, Arjun, mounted on the chariot drawn by white horses, said to Vasudev. "Make the horses run swiftly and go to the place where these chariots are, 45 so that these great warriors skilful in the use of arms, may not destroy our armies. Make haste to reach there." Having heard the words of glorious Arjun, Shree Krishna drove the chariot into

सम्प्राप्तं फलं पश्य मुदारुणम् ॥ ५० ॥ अद्य ते दशयिष्यामि पूर्वं प्रेतान् पितामहान् ।  
 एवं संजल्पतस्तस्य धीमत्सोः शत्रु घातिनः ॥ ५१ ॥ श्रुत्वापि पर्य्य वाक्यं सुशर्मा रथ  
 यूथपः । न चैनमग्रवीत् किञ्चिच्छुभं वा यदिवाशुभम् ॥ ५२ ॥ अमिगम्भार्जुनं वीरं  
 राजभिर्बहुभिर्वृतः । पुरस्तात् पृष्ठतश्चैव पार्श्वतश्चैव सर्वतः ॥ ५३ ॥ परिवार्याजुनं  
 सन्ध्ये तथ पुनर्महारथः । शरैः संछादयामास मेघरिव दिवांकरम् ॥ ५४ ॥ ततः  
 प्रवृत्तः सुमहान् संग्रामः शोणितोदकः । तावकानां च समरपाण्डवानाञ्च भारत ॥ ५५ ॥  
 इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि सुशर्माजुनसंग्रामे  
 पञ्चाशीतितमोऽध्यायः ॥ ८५ ॥

आपकी सेना का बड़ा निपटानक हुआ जो युद्ध में क्रुद्ध अर्जुन आपके पुत्रों पर  
 चढ़ाई करनेवाला हुआ, हे राजेन्द्र अर्जुन 'चन' भीष्मजी के रक्तक राजाओं को  
 प्राप्त होकर राजा सुशर्मा से यह वचन बोला, कि मैं तुम्हें जो शरवीरों में अत्यन्त  
 श्रेष्ठ और पहला शत्रु जानता हूँ अब इस अन्याय से प्राप्त हुए भयानक फलको  
 देखो ॥ ५० ॥ अब मैं तेरे गेहूँ पूर्वजों से तुम्हें पिलाऊँगा यह अर्जुन के वचन सुनकर  
 महारथी सुशर्मा ने उसको अच्छा बुरा कोई उत्तर नहीं दिया, फिर बहुत राजाओं  
 समित आपके महारथी पुत्रों ने महा पराक्रमी अर्जुन के सम्मुख जाकर अर्जुन को  
 चारों ओर से घेरकर बाणों की वर्षा से ऐसा आच्छादित करा दिया जैसे कि बादल  
 सूर्य को ढकलेते हैं हे भरतर्षभ इसके पीछे आप के पुत्रों से और अर्जुन से ऐसा महा  
 भयानक युद्ध प्रारंभ हुआ कि जिसे मैं रुधिरों की नदी बह निकली ॥ ५५ ॥

-the field of battle. That enraged Arjun's attack upon your armies was very injurious to your cause. Having met the princes that guarded Bhishm, Arjun said to Susharma, "I know you to be the best of warriors and first among my enemies. See the result of this unjust war. 50. I shall now send you to your deceased predecessors." Having heard these words of Arjun, Susharma returned him no reply, either good or bad. Then your brave sons with many princes surrounded Arjun on all sides and hid him with the shower of his arrows as the clouds hide the sun. The battle between your sons and Arjun was so fierce that a river of blood flowed on the field of battle." 55.



सञ्जय उवाच । सताङ्गमातस्तु शरैर्धनञ्जयः पदाहतो नागश्चभस्त्रवली ।  
चाणेन चाणेन महारथानां चिच्छेद्वापानि रणेप्रसह्य ॥१॥ सछिद्यवापानिचतानिराहो  
तेपारणे वीर्यवतांक्षणेन । विव्याध चाणैर्युगपन्महात्मानि शेषतां तेष्वयमभ्यमानः ॥ २ ॥  
निपेतुराजौ रुधिरप्रशिखास्ते ताडिताः शक्रमुतेनराञ्जन् । विभिक्षं गताः पतितीतोत्तमाङ्गा  
गतासर्वीन्द्रप्रतनत्रकावाः ॥३॥ महीगताः पार्थिवलाभिभूताविचित्ररूपायुगपद्वितेनुः । दृष्ट्वा  
हतांस्तान्युधि राजपुत्रांस्त्रिगर्भराजः प्रपयौरयेन ॥ ४ ॥ तेषां रथानामप्यपृष्ठगोपा दाक्षि-  
णदन्त्येभ्यपतन्त पार्थम् । तथैव ते तं परिवार्य पार्थ प्रकृष्य चापानि महारथाणि  
॥ ५ ॥ अवीर्यन् चाणममहौघवृष्ट्या यथा गिरिं तोयधरां जलौघैः । सम्पीड्यमानस्तु  
शैरोघवृष्ट्या धनञ्जयस्तान् युधि जातरोषः ॥ ६ ॥ यथा शरैः संयति तैलघौतैर्जघान

अध्याय ८६ ॥

संजय वाले कि बाणों से घायल सर्पके समान झुस लेने वाले महा पीड़ित  
वलवान अर्जुनने युद्धमें महा हठकरके एक २ बाणसे सब महारथियों के बाणों को  
और धनुषों को एक क्षणमें काटकर उस नाशकर्त्ता महात्मा अर्जुनने बाणों में सब  
को एकही समय में घायल किया हे राजा इन्द्रके पुत्र अर्जुन के हाथ से घायल  
वह राजालोग रुधिर में भरे अत्यन्त दृढ़ अंग शिर कटे मृतकहोके कयच पहरेहुए  
संग्राम भूमि में गिरपड़े, अर्जुन के पराक्रम से विविचरूप होकर सब महारथी एक  
साथही नाशको प्राप्तहुए, युद्ध में उन राजकुमारों को मृतक देखकर राजा त्रिगर्भ  
रथकी सवारी में चला, फिर उन रथियों के पति भी पीछे की रक्षाकरने वाले  
वीर अर्जुन के सम्मुख आये और अर्जुन को चारों ओर से घेरकर बड़े शब्दायमान  
धनुषों को चढ़ाके, हजारों बाणों को ऐसी वर्षा करने लगे जैसे कि जन समूह से  
बादल पहाड़पर वर्षाकरते हैं फिर बाणोंकी वर्षासे पीड़ित अर्जुन ने बड़े क्रोधयुक्त  
होकर उन दृष्ट रक्षकों को भी युद्धके भीतर तैलसे सफा किये हुए बाणों से  
मारा फिर उत यशस्वी प्रमत्त चित्त अर्जुनने युद्ध में उन साठ रथियों को विजय

### CHAPTER LXXXVI

Sanjaya continued — "Wounded by arrows, hissing like a serpent  
and exceedingly oppressed, brave Arjun, with great exertion in  
battle cut down the bows and arrows of all the warriors in an in-  
stant and wounded them all at the same time with his arrows.  
Wounded by Arjun the son of Indra, the princes fell down in the  
field of battle, bleeding out of their broken limbs, heads cut and ar-  
mours pierced. With the wonderful prowess of Arjun, the warriors  
were annihilated in a moment. Seeing those princes slain in battle  
the king of Trigart proceeded in his chariot, and the rear guards too  
of those charioteers advanced to meet Arjun. They surrounded him  
on all sides and drawing their loud sounding bows showered over him  
thousands of arrows as clouds pour forth rain over mountains. Much

तानप्यथे पृष्ठे गोपान् । रथे च तान्स्तान्नजित्यसस्ये धनञ्जय । भीतमना बभूव ॥ ७ ॥  
 अथात्तरन्भीष्मवधाय जङ्घुबलानि राजन् समरे निहत्य त्रिगर्त्त राजा निहतान् समीक्ष्य  
 महात्मनात् नय चक्षुर्गमन् ॥ ८ ॥ रणे पुरस्कृत्य नराधिपोस्तान् जगाम पार्थ त्वरितो  
 वधाय । अभिदूतं चास्त्रमुना वलिष्ठ वनञ्जय वीक्ष्य शिपिणिडमुखा ॥ ९ ॥ ब्रह्मयुध  
 युक्ते शिशुसैन्यहस्ता रिपुक्षिपन्तो रथमर्जुनस्य । पार्थोपि तानापततः समीक्ष्य त्रिगर्त्त  
 राणा सहितान् जूरीरात्र ॥ १० ॥ त्रिवेसयित्वा सतरे घनुमान् माण्डवीयमुक्ते निक्षेपः  
 पृथक्के । भीष्मयियासु युधि सन्वदय दुर्योधन सन्वदादीश्वरः ॥ ११ ॥ सगरायिष्मन्  
 भिवारयित्वा मुहूर्त्तमायोध्य वलेन वीर । उत्सृज्य राजानमनन्तरीय्यो जयद्रथादीन्  
 नृपान्महोजा ॥ १२ ॥ यथो ततो भीमबलो मनस्यो गाढेयमाजौ शरचापपाणि ।  
 युधिष्ठिरश्च प्रवला महत्मा समारयौ त्वरितो जातकोप ॥ १३ ॥ मद्राधिप सममित्य-

कर, युद्ध में राजाओं की सेनाओं को मार भीष्मजी के मारने के लिये जीघ्रता  
 करी, फिर राजा विभीषण के हाथों मरे हुए बाणों के उन समूहों को देखकर  
 राजाओं को आगे करके अर्जुन के मारने के लिये बहुत शीघ्रगया, फिर शिरगद्दी  
 आदि उस ब्रह्म अर्जुन को सम्मुख गया हुआ जानकर बड़े तीव्र बलों को  
 हाथमें लिये वही शीघ्रता से अर्जुन की रक्षा के निमित्त उसके पास गये फिर उग  
 बड़े धनुष मारी अर्जुन ने भी राजा त्रिगर्त्त के साथ आते हुए उन नरोत्तम वीरों को देखकर  
 गाँधीव प्रनुपासे छोड़े हुए तीक्ष्ण पृथक् बाणों से मारकर भीमजी की ओर आते  
 हुए मार्ग में दुर्योधन और जयद्रथ आदि राजाओं को देखा ॥ ११ ॥ फिर वह वीर उन  
 रोकने के इच्छावानों के सम्मुख होकर और एक मुहूर्त्त युद्ध करके बड़े पराक्रमी  
 राजा जयद्रथ आदि को छोड़ कर हाथ में भयकारी धनुष लेकर भीष्मजी के  
 सम्मुख गया फिर भयकारी पराक्रम वाला युधिष्ठिर भी बड़े क्रोध में भरके उन के  
 सम्मुख गया, फिर बह्मत्पन्न कीर्तिमान आने भाग में पड़े हुए उस राजा मद्रको

afflicted and chagrined with the shower of their arrows, Arjun killed  
 those rear guards too, with his well oiled arrows. Then glorious  
 Arjun with a cheerful mind, having conquered the sixty charioteers  
 and destroyed the armies of princes hastened to slay Bhishma. See-  
 ing the parties of his relations, slain in battle by Arjun, the king of  
 Trigart, preceled by kshatryas hastened to slay him. Shikhandi  
 and others seeing Arjun engaged in combat, hastened to help him  
 with their weapons. The great archer Arjun too seeing those war-  
 riors coming on with the king of Trigart, destroyed them with his  
 sharp arrows shot from the Gandiv bow, and advancing again to-  
 wards Bhishma, he saw Duryodhan, Jayadrath and other princes. He  
 fired the warriors denrous of checking his advance and fought for a  
 while against them. Then leaving the great warriors, Jayadrath and

ज्य संख्ये स्वभागमाप्तन्तमनन्तकीर्ति । सार्धं समाद्रीसुतभीमसेनैर्भीष्म ययौ  
 शान्तनय रणाय ॥ १४ ॥ तै सम्प्रयुक्तै समहारयाग्र्यैर्गङ्गासुत समर चित्रयोधौ ।  
 न विव्यथे शान्तनवो महात्मा समामर्त पाण्डसुतै समस्तै ॥ १५ ॥ अथैतं राजा  
 युधि सत्यसन्धो जयद्रथोत्पुत्रबलौ मनस्वी । चिच्छेद चापानि महारथानां प्रसह्य  
 तेषां धनुषा घरेण ॥ १६ ॥ युधिष्ठिर भीमसेन यमौ च पार्थ कृष्ण युधि सञ्जातकोप ।  
 दुर्योधन श्रेष्ठधियो महात्मा जघान वाणेन लप्रकाशै ॥ १७ ॥ कृपेण शल्येन शलेन  
 चैव तथा विमो चित्रसेनेन चार्जो । विद्रा शरैस्तेतिविबुधकोपैर्देवा यथा दैत्यगणै  
 समेतै ॥ १८ ॥ छिन्नायुधे शान्तनवेन राजा शिखण्डिनं प्रेक्ष्य च जातकोप । भजात  
 शत्रु समरे महात्मा शिखण्डिनं दुष्ट उवाच वाक्यम् ॥ १९ ॥ उक्त्वा तथा त्वं पितुर  
 प्रतोमा मह हनिष्यामि महाव्रतन्तम् । भीष्म शरार्धैर्विमलार्कवर्णं सत्य वदामीति

त्यागकरके नकुल सहदेव और भीमसेन को साथलिये भीष्मजी के सम्मुखगया युद्धमें  
 अपूर्व पराक्रम दिखाने वाले गंगापुत्र शतनु के पुत्र भीष्मजी उनउत्तम महारथियों  
 से संयुक्तहोकर सब पांडवों से, भिड़े हुए भी पीडामान नहीं हुए ॥ १५ ॥ इस के पीछे  
 भयानक बल साहसी मत्स्य संकल्प राजा जयद्रथने युद्धमें आकर उसम धनुष  
 से उन महारथियों के धनुषों को काटा, और क्रोध युक्त शत्रुता रखनेवाले दुर्योधन  
 ने अग्नि के समान मकाशमान वाणों से युधिष्ठिर भीमसेन नकुल और सहदेव  
 समेत श्रीकृष्ण और अर्जुनको घायल किया हे समर्थ वह पांडव युद्धभूमि में उन  
 महाक्रोध में भरेहुए कृपाचार्य शल और शल्य व चित्रसेन के वाणों से ऐसे घायल  
 किये गये जैसे कि दैत्यों के समूह से मिलेहुए देवता घायल होते हैं, फिर क्रोधयुक्त  
 महात्मा युधिष्ठिर भीष्मजी के हाथसे दृढ़ अस्त्रवाले शिखण्डीको देखकर महाक्रोध  
 युक्त शिखण्डीसे यह वचन बोला, कि तुमने अपने पिता के सम्मुख मतिहा करके  
 यहमुक्त से कहाथा कि मैं निर्मल मूर्त्य रूपी वाणोंके समूहोंसे महाव्रत भीष्मजी को

others, he faced Bhim with the dreadful bow in his hand. Yudhishtir too, of dreadful prowess, faced them in great anger. Then leaving the king of Madra allotted to him he faced Bhishim in company with Nakul Sahdev and Bhim. The son of Ganga and Shantanu, of great prowess in war was not afflicted by his encounter with the Pandavas assisted as they were by so many warriors of note. Then king Jayadrath of dreadful prowess and courage and true of word, came into the field of battle and cut down their bows. And enraged Duryodhan of envious temper with his bright arrows like fire wounded Yudhishtir, Bhim, Nakul, Sahdev, Shree Krishna and Arjun. The Pandavas, O king were wounded in battle by the enraged Kripacharya Shal, Shalya and Chitrasen as the gods are by the hosts of Danavas. Seeing Shikhandi broken of weapons by Bhishm, Yudhishtir thus addressed him, — ' You gave me your word in the presence of your father that

कृता प्रतिज्ञा ॥ २० ॥ स्वया न चैनां मफलां करोषि देवप्रते यन्न निहसि युद्धे ।  
 मिथ्याप्रतिज्ञो भव मात्रवीर रक्षस्व धर्मस्व कुलं यशश्च ॥ २१ ॥ प्रेक्षस्व भीष्मं युधि  
 भीमवेगे सर्वास्तपन्त मम सैन्यसन्धान् । शरीरघातैरतितिग्मवेगैः कालं यथा कालवृत्तं  
 क्षणेन ॥ २२ ॥ निकृत्तचापं समरेनपेक्ष पराजितं शान्तनवेन चाजी । विहाय वन्धु-  
 नथ सोदरांश्च पथ यास्यसे नानुरूपं तवेदम् ॥ २३ ॥ दृष्ट्वाहि भीष्म तमनन्तवीर्यं  
 भग्नञ्च सैन्यं द्रवमाणमेवम् । भीतोऽसिन्नं द्रुपदस्य पुत्र तया दिते मुत्तयणोऽग्रदृष्टः  
 ॥ २४ ॥ अथायमानेन च धनञ्जयेण महादिवे सम्प्रसक्ते नृवीरे । कथं हि भीष्मात् प्रथितः  
 पृथिव्यां भव स्वमप्यप्रकरोषि वीर ॥ २५ ॥ स धर्मराजस्य वचो निशम्य रुद्राक्षरं  
 विप्रलोपातुषद्धम् । प्रत्यादेशं मन्यमानो महात्मा प्रतत्तरे भीष्मवधाय राजन् ॥ २६ ॥  
 तमापतन्त महता जवेन शिखण्डिन भीष्ममभिद्रवन्तम् । निवारयामास हि शल्य-

माकिगा ॥ २० ॥ तुम अपनी प्रतिज्ञाको पूर्ण करके क्यों नहीं भीष्मजीको मारते हो, हे  
 नरोत्तम तुम असत्य प्रतिज्ञावाले मतहो धर्म यश और-कुलकी रक्षा करो, तुम अत्यन्त  
 तीव्र प्रकाशित बाणोंके समूहों से मेरी सेनाके सब यूथोंके संतप्त करनेवाले और युद्ध  
 में भयकारी रूप भीष्मको ऐसा देखो जैसे कि कानपुर चणभरमें सबकोमारे युद्ध  
 में राजालोग भीष्मके हाथसे दूटे धनुषवाले हुए तुमको ऐसा उचित नहीं है कि अपने  
 सगे भाई और बान्धवों को छोड़कर जातेहो, यह बात तुम्हारे योग्य नहीं है हे द्रुपद  
 के पुत्र तू उस अनुल पराक्रमी भीष्म को और इस छिन्न भिन्न भागी हुई सेना  
 को देखकर अवश्य भयभीत है और तेरे मुखको शोभा बिगड़ी हुई है, बड़े भारी  
 युद्ध में चारों ओरसे जातेहुए अर्जुनके साथ भिड़े हुए नरवीर भीष्मको देखो हे वीर  
 तू पृथ्वीपर बिखरात होकर क्यों भीष्मजी से शत्रुता करता है ॥ २५ ॥ हेराजा उस  
 महात्माने धर्मराज के दूते अनेक मर्म स्पर्श करने वाले वचनोंको सुनकर आज्ञाको  
 मानकर भीष्मके मारने की आज्ञाता करी, उस समय बड़े वेगसे भीष्मके सम्मुख  
 आतेहुए शिखण्डीको शल्यने बड़े दुर्जयगौर अस्त्रोंमें रोका हेराजा महाइन्द्रके समान

'with your arrows bright like the sun you will destroy Bhishm of  
 dreadful vows. Why do you not redeem your promise by slaying  
 him ? Do not break your promise, best of men, protect Dharm Fame  
 and family With your bright and sharp arrows you can destroy  
 armies. Look at dreadful Bhishm as Death the destroyer of all The  
 bows of the warriors are cut down by him Your leaving your  
 kith and relations is not worthy of you It is not worthy of you  
 son of Drupad, that you seem lighted at the sight of dreadful  
 Bhishm and the scattered army The glory of thy face is gone Look  
 at brave Bhishm engaged in fight with Arjun Fearless in the  
 world, you call yourself Bhishm's enemy in vain" Hearing the  
 taunts of Dharmraj, touching his vital parts he hastened to destroy  
 Bhishm. Shalya checked the advance of Shikhandi-against-Bhishm,-

पनमस्त्रेण धीरेण सु दज्जेयेन । २७ । स चापि दृष्ट्वा समुदाय्यमाणमस्त युगान्ताग्निं  
सन्निधातुम् । ननुमुहोऽपस्स पुत्रा राजन् मद्दन्द्रप्रतिसप्रभावः । २८ ॥ तस्यां व  
तिमैव महाययुमान् शरैस्तदस्त्रं प्रतिजायमानं शयाद्वारं भयं दृष्ट्वा शिखण्डयोम  
प्रतिधातमस्य ॥ २९ ॥ तदस्त्रमस्त्रेण विद्रव्यमाणं यस्थाः सुरा वदशु पार्थिवाश्च ।  
भीष्मस्तु राजन् समरे महात्मा धनुश्चक्रिप्रघञ्जमेव चापि ॥ ३० ॥ छित्वानदत्त  
पाण्डुसुतस्यधीरो युधिष्ठिरस्याजमोदस्य राज्ञः । ततः समुत्सृज्य धनं सवाणं युधि-  
ष्ठिरं वीक्ष्य भयामिमृतम् ॥ ३१ ॥ मर्यादं गृह्णाभिपपात सत्ये जयद्वयं भीमसूतं पदाति ।  
तमोपतन्तं सहसा जघन जयद्वयं सगदं भीमसेनम् ॥ ३२ ॥ विव्याध धीरैर्मदण्डक  
न्ये शिते शरे पञ्चशते समन्तात् । अचिन्तयित्वा स शरोस्तरस्वो वृकोदर  
भीष्मपरीतचेताः । ३३ ॥ जघान बाह्यान् समरे समतात्पारावतान् सिन्धुयजस्य  
सत्ये । ततोऽश्विर्वाक्यप्रतिममावस्तवात्मजस्वरमाणो रथम् । ३४ ॥ अभ्याययी भीम

प्रभाववाला वह दुष्टका पुत्र उस मर्यादाग्निके समान प्रकाशित अस्त्रको देखकर  
मोहित नहीं हुआ और उसे धनुष के बाणों से उस प्रखरको नाशकरके उसी स्थान  
में नियत हुआ फिर शिखण्डी ने इस के बाण करनेवाले दूसरे वरुणात्मको निया  
उत्ताभमने अस्त्रको रुके हुए को समझानी देवता और राजाओं ने देवा । फिर  
उत्तामहात्मा वीर भीष्मजी ने युद्ध में अजयों उन्हीं पारदर युधिष्ठिर के धनुषको  
जगज्जघना समेत काटकरके गदा शब्द किया इसके पीछे भीमसेन युधिष्ठिर को  
भयभीत देखकर बाणों समेत धनुषको छोड़कर गदा की हाथ में लिये पैदल ही  
सद्वाम में जयद्वय के सम्मुख आया, जयद्वय ने गदाधारी भीमसेन को बड़े  
पेग से मारा हुआ देखकर यरराज के दण्ड के समान धीरे नी बाणों से  
चारोंभर घायल किया फिर क्रोध में वर्ण भीमसेनने बाणों को छुन मानकर  
राजा शत्रु के पारायत नाम सब घोड़ों को मारा फिर अनुज प्रभाव इन्द्र के समान  
अस्त्रधारी आया पुन विजनेन बड़ी शीघ्रता से अपने रथ के द्वारा भीमसेन के

with his sharp arrows Drupada's son Shikhandi, of prowess like  
that of Indra, was not frightened at the sight of his weapons (light  
like the fire of pālaya) but stood firmly, destroying his weapons with  
the arrows discharged from his huge bow. Then Shikhandi drew  
out his Varunastra to destroy his weapons. The gods of heaven and  
the princes saw his weapons checked by the Varunastra. 30. The great  
warrior Bhishma roared a tremendous roar after cutting asunder the  
jewelled bow and bow of Yudhishtira. Finding Yudhishtira terri-  
fied, Bhishma left his bow and arrows and with mace in his hand, bas-  
tard on foot to destroy Jayadratha. Seeing Bhishma coming in haste  
with his mace, Jayadratha with many arrows dreadful like the shafts of  
Yama wounded him from all sides. Bhishma in the excess of rage





सञ्जय उवाच । विरयं तं समासाद्य चित्रसेनं यज्ञास्विनम् । रथमारोपयामास  
 विकर्णस्तनयस्तथे ॥ १ ॥ तस्मिंस्तथा वर्त्तमाने तुमुले संकुले भृशम् । भीष्मः शान्तनव  
 स्तूर्णं युधिष्ठिरमुपाद्रवत् ॥ २ ॥ ततः सरयनागाश्वा समकम्पत सृञ्जयाः । मृत्योराक्ष्य  
 मनुप्राप्ते भ्रमे च युधिष्ठिरम् ॥ ३ ॥ युधिष्ठिरं यो कौरव्यो यमाभ्यां सहितं प्रभुः ।  
 महेश्वासे नरव्याघ्रे भीष्मं शान्तनवं ययौ ॥ ४ ॥ ततः शरसहस्राणि प्रमुञ्चन् । पाण्डवो  
 युधि । भीष्मं संछादयामास यथा मेघो दिवाकरम् ॥ ५ ॥ तेन सम्यक् प्रणीतानि शर  
 जालानि मारिष । प्रतिजग्राह गाङ्गेयः शतशोथसहस्रशः ॥ ६ ॥ तथैव शरजालानि  
 भीष्मेणास्तानि मारिष । आकाशे समदृश्यन्त खगमानां प्रजा इव ॥ ७ ॥ तिग्मेबाधेन  
 कौ-तेयं भीष्म शान्तनवो युधि । महर्षे समरे चक्रे शरजालेन भागशः ॥ ८ ॥ ततो

### अध्याय ८७ ॥

संजय बोले कि इस के अनन्तर आपके पुत्र विकर्ण ने उन विरय और प्रसन्न  
 चित्त चित्रसेन को पाकर रथपर सवार किया, इसरीति से उस अत्यन्त कठिन  
 तुमुल युद्धके वर्त्तमान होने पर शान्तनु के पुत्र भीष्मजी ने बड़ी शीघ्रता से युधिष्ठिर  
 के सम्मुख दौड़े, उसके पीछे संजयनाम बड़े बलवान् क्षत्रियोंने, रथहाथी और  
 घोड़ों समेत अत्यन्त कोपित हाकर युधिष्ठिर को काल के मुखमें गया जाना फिर  
 समर्थ धर्मराज युधिष्ठिर भी नकुल सहदेव दोनों अपने भ्रातृपुत्रों समेत उस बड़े  
 अनुपपत्ति गरोत्तम भीष्मजी के सम्मुख गया, इस के पीछे पाण्डवों ने हजारों बाणों  
 से भीष्मको ऐसा ढक दिया जैसे कि सूर्य को बादल ढक देता है । फिर गांगेय  
 भीष्मजी ने उन युधिष्ठिर को अच्छी रीति से छोड़े हुये, हजारों बाणों को अपने  
 बाणों से रोक दिया हे राजा फिर इसी रीति से भीष्म केभी छोड़े हुए बाण  
 आकाश में ऐसे दिखाई दिये जैसे कि प्राक्षियों के समूह उड़ते हैं इन भीष्मजी ने  
 सर्णमात्र में ही युधिष्ठिर समेत उनके सब बाण समूहों को गुप्त कर दिया फिर

### CHAPTER LXXXVII

"Your son Vikarna," continued Sanjaya, finding Chitrarath desti-  
 tute of chariot with a cheerful mind, took him up on his own. Thus  
 when the battle was raging furiously, Bhishma the son of Shantanu  
 rushed upon Yudhishtira, and the brave Srinjaya warriors with their  
 chariots, elephants and horses, much enraged, knew Yudhishtira as if  
 fallen in the jaws of Death. Powerful Dharmraj Yudhishtira too,  
 followed by his two brothers Nakul and Sahadeva faced the great  
 archer Bhishma the best of men. Then the Pandavas hid Bhishma with  
 thousands of arrows as clouds hide the sun. Bhishma the son of Gangā,  
 checked with his arrows those thousands of well discharged ones. In  
 the same manner, the arrows discharged by Bhishma looked in the  
 sky like the flights of birds and hid Yudhishtira and his arrows in a

युधिष्ठिरो राजा कौरव्यस्य महात्मन । नाराचं प्रेषयामास कुद्ध आशीविषोपमम् ॥ ९ ॥  
 असंभ्रान्तं ततस्तन्तुं धुरिणेण महारथः । चिच्छेद् समरे राजन् भीष्मस्तस्य धनुश्च्युतम्  
 ॥ १० ॥ तन्तुच्छित्त्वा रणे भीष्मो नाराचकालसम्भितम् । निजघ्ने कौरवेन्द्रस्य हयान्  
 काञ्चनमृगान् ॥ ११ ॥ हताश्वन्तु रथं त्यक्त्वा धर्मपुत्रो युधिष्ठिरः । आक्रोहहर्षतृणं  
 नकुलस्य महात्मनः ॥ १२ ॥ यमावपि हि संकुक्षः समासाद्य रणे तदा । दारैः सहा दया  
 मास भीष्मः परपुरञ्जयः ॥ १३ ॥ तौ तु दृष्ट्वा महापुत्रं भीष्मबाणप्रपीडितौ । जगाम  
 परमां चिन्तां भीष्मस्य वधकांक्षया ॥ १४ ॥ ततो युधिष्ठिरो वदयान् रात्रस्तौ न समं  
 बोध्यत । भीष्मं शान्तनवे । सर्वे निहनेति सुदृग्गणान् ॥ १५ ॥ ततस्ते पार्थिव्य सर्वे  
 भुक्ता पात्रस्य भाषितम् । महता रथबंधेन परि वधः पितामहम् ॥ १६ ॥ स समन्तात्  
 परि वृत्तः पितादेव व्रतस्तत्र । चिकीड धनुषा राजन् पातयानो महारथान् ॥ १७ ॥ तं

युधिष्ठिर ने महा क्रोधित होकर सर्प के समान नाराच भीष्मजी के ऊपर फेंके फिर  
 वहाँ महारथी भीष्मजी ने अपने छुमनाम बाण से उसके छोड़े हुए बाणों को बीचही  
 में काटा । १० । उसकोल समान । नाराचको काटकर भीष्मजी ने सुवर्ण भूषित  
 युधिष्ठिर के घोड़ों को मारा, फिर युधिष्ठिर उस मृतक घोड़ों के रथको त्याग कर  
 शीघ्रही महात्मा नकुल के रथपर सवार हुआ, फिर शत्रुपुर के विजयी भीष्म ने  
 क्रोध युक्त दोनों नकुल सहदेव कोभी बाणों से आच्छादित कर दिया, फिर राजा  
 युधिष्ठिर भीष्म के बाणों से अत्यन्त पीड़ित उन दोनों भाइयों को देखकर भीष्मजी  
 के मारने की इच्छा से बड़े चिन्ता युक्त हुए, इस के पीछे युधिष्ठिर ने उन अपने  
 आज्ञावर्ती राजाओं को और मित्र समूहों को सावधान किया और कहा कि इस युद्ध  
 में भीष्मजी को मारो । १५ । फिर सब राजाओं ने युधिष्ठिर के वचन को सुनकर बड़े  
 रथ समूहों समेत पितामह को घेर लिया हे राजा चारों ओर से घिरे हुये आपके  
 पिता देवव्रत भीष्म बाणों से महारथियों को गिराते हुए धनुषक्रीड़ा करनेवाले

moment. Yudhishtir in a rage discharged his sharp arrows like  
 serpents at Bhishm, but the latter cut them down in the way  
 with his sharp arrows. 10 And having cut down that fatal arrow,  
 Bhishm killed the gold bedecked horses. Leaving the chariot of  
 which the horses were dead, Yudhishtir at once mounted that of  
 Nakul. Then Bhishm the conquerer of enemies, in the excess of  
 anger, hid both Nakul and Sahadev with his arrows. Seeing both  
 his brothers much wounded with the arrows of Bhishm, Yudhishtir  
 was plunged in thought, wishing to destroy him. Then he roused  
 the princes and allies who obeyed his orders and told them to slay  
 Bhishm. By Yudhishtir's orders all the kings surrounded the  
 grandfather with their chariots on all sides. Surrounded on all sides,  
 your father Devabrat played with his bow, destroying the warriors  
 with his arrows. Roaming in the field of battle the Pandavas looked

चरन्त रणे पार्था ददशु कौरव युधि । मृगमध्य प्रविश्येय यथा सिंहशिशु वने ॥११॥  
 तज्जयान रणे शूराभ्यासयानञ्च सायकै । दृष्ट्वा त्रेसुर्महाराज सिंह मृगगणाश्च ॥१२॥  
 रणे भारतसिंहस्य ददशु क्षत्रियागतिम् । अग्नर्वायुसहायस्य यथाकक्ष दिधक्षत ॥१३॥  
 शिरासि रथिना भीष्म पातयामास सयुगे । तालेभ्य परिपक्वानि फलालि कुशलो  
 नर ॥ १४ ॥ पतद्भिश्च महाराज शिरोनिर्घरणीतले । यमूच तुपुलः शब्द पततामस  
 नामिव । १५ ॥ तस्मिन् सनुमुले युद्धे वर्तमाने भयानके सर्वेयामिव सैन्यानामाग्नी  
 ह्वयतिकरो महान् ॥ १६ ॥ भिन्नेषु तेषु व्यूहेषु क्षत्रियादितरेतरम् । एकमेक समाह्वय  
 युद्धायैवावतस्थिरे ॥ १७ ॥ शिखण्डीतु समासाद्य भरताना पितामहम् । अभिदुद्राव  
 वेगेन तिष्ठ तिष्ठेति चाब्रवीत् ॥१८॥ अनाहत्य ततो भीष्मस्त शिखण्डिनमाहवे । प्रययौ  
 सृजयान् कुड्म स्त्रीत्व चिन्त्य शिखण्डिन ॥ १९ ॥ सृजयास्तु ततो दृष्ट्वा दृष्टभीष्म

होगये, संग्राम भूमि में घुमते हुए भीष्मजी को पांडवों ने ऐसा देखा जैसे कि बड़े  
 वन के मध्यमृगों में प्रवेश करके सिंह घुमता है, फिर युद्ध में शूरों को युद्धकते  
 और बाणों से उड़ाते हुए भीष्मको देखकर सब पांडवी सेना ऐसी भयभीत हुई, जैसे  
 कि सिंह को देखकर मृगों के घुंथ कपित होते हैं, उस समय सब क्षत्रियों ने  
 भीष्मजी की गतिको उस युद्धभूमि में ऐसा देखा, मानों वायुका सख, अग्नि सूखेवन  
 को जलारहा है, वहा भीष्म ने रथियों के शिरों को ऐसा गिराया, जैसे कि बुद्धिमान  
 मनुष्य ताल वृत्त के पक्के फलों को गिराता है, हे राजा पृथ्वी पर गिरते हुए शिरों  
 के ऐसे बड़े कठन शब्द हुए जैसे कि गिरते हुए पत्थरों के शब्द होते हैं, उसमहा  
 भयानक घोर युद्धके होनेपर सबनेना में बड़ा खेद उत्पन्न हुआ, फिर उनमृगोंके  
 दृढ़ने पर क्षत्री लोग परस्पर में एकएक को बुलाकर युद्धके मिमित्त सम्मुख त्रियुत  
 हुए, फिर शिखण्डी भरतवशिष्टोंके पितामहको प्राकर बड़े वेग से तिष्ठ, तिष्ठ वचनों  
 को कहता हुआ सम्मुख दौड़ा इसके पीछे भीष्मनी उस शिखण्डी को तिरस्कार

on Bhishm like a lion roaming in a large forest in the midst of a flock  
 of deer Then slaying the warriors in battle and killing them with  
 his arrows Bhishm was the terror of the Pandav armies as a lion is  
 of a flock of deer All the kshatriyas looked upon his prowess in the  
 field of battle as if he were Agni the friend of wind burning a dry  
 forest 20 He felled the heads of men as a skilful man fells down the  
 ripe fruits of a palm tree The heads of warriors fell down with a  
 crash like that of falling stones All the warriors were much distur-  
 bed in mind by the fury of the attack Then on the breaking through  
 of the arrays, the warriors challenged one another and fought duels  
 Then meeting the grandfather of the Bharats, Shikhandi hastened  
 towards him with a cry of 'stay, stay' But disregarding him on  
 account of his former womanhood, Bhishm turned towards the

महारणे । सिंहनादाश्च विविधाश्चक्षुः शस्त्रविमिश्रितान् ॥ २७ ॥ ततः प्रचरते युद्ध-  
व्यतिषत्तरथद्विपम् । पश्चिमादिदिशमासाद्य स्थिते सचितरिप्रभो ॥ २८ ॥ धृष्टद्युम्नोऽथ  
पाञ्चाल्य सात्यकिश्च महारथः । पीडयन्तो भुञ्जन्तेऽप्यशक्तितोमरवृष्टिभिः ॥ २९ ॥  
शस्त्रैश्च धनुर्भीराजन् जघननुस्तापकावरणे । ते हन्यमाना समरे तावका भरतर्षभ ॥ ३० ॥  
आप्यो युद्धे मतिं कृत्वा न त्यजन्ति स्म संयुगम् । यथोत्साहतु समरे निजघ्न-  
स्तापकारणे ॥ ३१ ॥ तत्राक्रन्दो महानासीत्तावकानां महात्मनाम् । उध्यतां समरे  
राजन् पार्षतेन महात्मना ॥ ३२ ॥ तक्षत्या निन्द धीर तावकानां महारथो । विन्दानु  
विन्दाचावन्त्यौ पार्षत प्रत्युपस्थितौ ॥ ३३ ॥ तौ तस्य सुरगान् हत्वा त्वरमाणा महारथौ  
छादयामासतु रभौ शरवर्षेण पार्षतम् ॥ ३४ ॥ अचलत्वाथ पाञ्चाल्यो रथात् पूर्ण-  
महारथः । आररोह रथं पूर्ण सात्यकेन महात्मनः ॥ ३५ ॥ ततो युधिष्ठिरो राजा

करके उसके स्त्रीपने को निचारते हुए सृज्यों के सम्मुख गये फिर प्रसन्न चित्त  
छजय लोगों ने महारथी भीष्म को देखकर शस्त्रके शब्दोंमपेत बड़े सिंहनादको  
किया । २७ । तदनन्तर भीष्मकी दिशामें नियत होकर सूर्य के वर्त्तमान होनेपर रथ  
हाथियों समेत युद्ध जारीहुआ हे राजा फिर बरछी तोमरों की वर्षा से सेनाको  
अत्यन्त पीडित करते हुए पांचालदेशी धृष्टद्युम्न और महारथी सात्यकी ने, अनेक  
प्रकारके ढाणोंमें आपके शरीरोंको घायल किया परन्तु आपके उनत्रायल शरीरोंने उड़ी  
बुद्धिमानी से युद्धभूमिको नहीं त्यागा और बड़े उत्साहसे लोगोंको मारा । ३१ । हे राजा  
वहां महात्मा धृष्टद्युम्नके हाथमें त्रायलहुए आपके पुत्रों के बड़े शब्दहुए, फिर आपके  
पुत्रों के धीर शब्दोंको सुनकर महारथी विन्द अनुविन्द और अवन्ति देश के राजा  
लोग सर्वाभिलकर धृष्टद्युम्न के सम्मुख हुए, फिर उन शीघ्रता युक्तदोनों महारथियों  
ने उनके घोड़ोंको मारकर ढाणों की वर्षा से धृष्टद्युम्न को दकदिया, तब महावनी  
धृष्टद्युम्न शीघ्रही रथसे कूदकर बड़े महात्मा सात्यकी के रथपर चढ़गया । ३५ । फिर उड़ी

Sanjaya who seeing the grandfather in their midst, cheerfully  
blew their conchs and uttered war cries 27. A fierce battle ensued  
when the sun was on the opposite side (West) Wounding, the warriors  
with spears and tomars Dhrishtadyumn of Panchal and brave Sat-  
yajit discharged arrows at them, but your warriors in spite of wounds  
wisely remained firm on the field of battle and returned their blows  
with great courage 31 Wounded by the arrows of Dhrishtadyu-  
mna your sons uttered loud cries Vind and Anuvind the princes  
of Avanti hearing the loud cries hastened to encounter Dhrishta-  
dyumn. Those two brave warriors soon killed his horses and hid him  
with the shower of their arrows. The great warrior Dhrishtadyumn  
at once jumped down from his chariot and mounted that of Satyajit.  
Thereupon Yudhishtir with a large army rushed on to encounter the

महत्या सेनया दृतः । आवन्त्यौ समरे कुद्वावभ्ययात् स परन्तपौ ॥ ३६ ॥ तथैव तव  
पुत्रोपि सर्वोद्योगेन मारिष । वि दानुविन्दौ समरे परिवार्यावतस्थिवान् ॥ ३७ ॥  
अर्जुनश्चापि संकुद्धः क्षत्रियान् क्षत्रियवर्मनः । अयोधयत संग्रामे वज्रपाणिस्त्रिवासुरान्  
॥ ३८ ॥ द्रोणस्तु समरे कुद्धः पुत्रस्य प्रियकृत्तव व्यधमत् सर्वपाञ्चालास्त्रूलराशिं  
घनलः ॥ ३९ ॥ दुर्योधनपुरोगास्तु पुत्रास्तव विशास्यते । परिवार्य्य रणे भीष्मं युयुधु-  
पाण्डवैः सह ॥ ४० ॥ ततो दुर्य्योधनो राजा लोहितायति भास्करे । अत्रयीत् तावकान्  
सर्वोभस्वरध्वमिति भारत ॥ ४१ ॥ युध्यतान्तु तथा तेषां कुर्वतां कर्म दुष्करम् ।  
अस्तं गिरिमथारुढे अ प्रकाशति भास्करं ॥ ४२ ॥ प्रावर्त्तत नदी धारा शोणितौघतर-  
ङ्गिणी । गोमायुगणसङ्कीर्णा क्षणेन अणशमुये ॥ ४३ ॥ शिवाभिरशिवाभिश्च रुषाद्विर-  
मैरधरवम् । घोरमायोधनं जज्ञे भूतसंघैः समाकुलम् ॥ ४४ ॥ राक्षसाश्च पिशाचाश्च  
तथान्ये पिशिताशिनः । समन्ततो व्यदश्यन्त शतशोऽथ सहस्रशः ॥ ४५ ॥ अर्जुनोऽथ

सेना समेत राजा युधिष्ठिर उन क्रोधयुक्त अवान्ति देशके राजाओं की ओर दौड़ा,  
और इसीप्रकार आपका पुत्रभी विन्द और अनुविन्द को रक्षित करके नित्य हुआ  
। ३७ ॥ हे क्षत्रियोत्तम धृतराष्ट्र युद्धमें अर्जुन ने भी अत्यन्त कोपयुक्त होकर क्षत्रियों  
से ऐसा युद्ध किया जैसे कि असुरों से वज्रधारी इन्द्र ने किया था, फिर युद्ध में  
कुद्ध आपके पुत्रों के शुभाचिन्तक द्रोणाचार्य ने सब पांचाल देशियों को ऐसे नष्ट किया  
जैसे कि तृत्तराशिको अग्नि भस्म कर देता है, फिर आप के दुर्योधनादि पुत्र  
भीष्मजी को रक्षित करके पांडवों से युद्ध करने लगे । ४० ॥ इस के पीछे सूर्य के  
अस्त होने पर राजा दुर्योधन आपके सब शूरवीरों से बोला कि शीघ्रता करो,  
फिर इसी प्रकार इनके लड़ते और कठिन कर्म करते हुए सूर्य के अस्तगत होने पर  
रात्रि के प्रारंभमें भयानक रुधिरकी नदी बही जिसमें हजारों शृगाल वर्त्तमान थे और  
भूत समूहों से व्याप्त संग्राम भूमि चारों ओर को घूमते हुए अशुभ शृगालों से

prince of Avanti, while your sons stood firmly to protect them Arjun  
too much enraged, fought against those warriors, O king, as Indra the  
wielder of vajra had fought against the Daityas Dronacharya the  
well wisher of your sons angrily smote the Panchals as fire consumes  
a heap of straw Your sons, Duryodhan and others, fought against  
the Pandavas for the protection of Bhishm. 40 After this, when  
the sun had assumed a reddish hue, Prince Duryodhan ordered your  
warriors to make haste The battle continued, till at the close of the  
day there flowed a river of blood where thousands of jackals were to  
be seen The field of battle strewn over with dead bodies and the  
wandering of the ominous jackals was very dreadful to behold Thou  
sands of rakshases, pishachas and cannibalous beings were to be seen  
on all sides Having defeated the armies of Sushrma and other

सुशर्मादीन् राजानान् सपदानुगान् । विजित्य पृतनामध्ये यथा स्वशिचिरे प्रति ॥४६॥  
 युधिष्ठिरोपि कार्श्यो भ्रातृ भ्रांसहितस्तथा । यथास्वशिचिरे राजा निशायां भनया  
 वृत्तः ॥ ४७ ॥ भीमसेनोपि राजेन्द्र दुर्योधनमुपानूरयान् । अयजित्य तत मह्ये  
 यथास्वशिचिरमिति ॥ ४८ ॥ दुर्योधनोपि नृपतिः परिवार्य्य महारणं । भीष्मशान्तनयं  
 तर्णे प्रयात शिचिरे प्रति ॥ ४९ ॥ द्रोणो द्रोणि कृप शल्य कृतवर्मा च सात्वतः ।  
 परिचार्य्य चम्पू सती प्रतयुः शिचिरे प्रति ॥ ५० ॥ तथैव सात्यकी राजन् धृष्टद्युम्नश्च  
 पार्यत । परिवार्य्यरण्ये योधान्ययुगः शिचिरे प्रति ॥ ५१ ॥ एवमेते महाराज तावका  
 पाण्डवः सह । पर्य्यर्चन्त सहिता निशाकाले परन्तय ॥ ५२ ॥ तत स्वशिचिरे  
 गत्वा पाण्डवाः कुरवस्तथा । न्यर्चन्त महाराज पूजन्त परस्परम् ॥ ५३ ॥ रक्षाकृत्वा  
 तत गुरारं नक्षत्रान् यथाविधि । अश्विनो च शाल्यानि स्नात्वा च विविधं ज्ञाते  
 ॥ ५४ ॥ कृतस्वस्थयना सर्वे संस्तुर्यतश्च चान्दिभिः । गीतवादिप्रशब्देन व्यक्रीडन्त

महामयानक होगई और हजारों राजा पेशाच और अनेक मांसाहारी जीवभी  
 चारों ओर के दृष्टपड़े इसके पीछे अर्जुन भी सुशर्मा आदि राजाओं को उन के  
 साथियों समेत विजय कर के सेना में जाकर अपने डेरों को गये फिर युधिष्ठिर भी  
 मेना समेत भाइयों को साथलिये शत्रु के समय अपने डेरको गये, और भीमसेन  
 भी दुर्योधनादि महारथी राजाओं को विजय करके अपने डेरोंको गये, दुर्योधन  
 भी भीष्मजीको मध्यमें करके डेकोगया, और द्रोण च र्य कृपाचार्य्य अश्वत्थामा  
 शल्य कृतवर्मा यादव यह सबसेनाको मध्य में करके डेरोंको गये । ५० । इसीप्रकार  
 सात्यकी और धृष्टद्युम्न वीरों को मयनकरके डेरों को गये हेमहाराज इस रीतिसे यह  
 शत्रु मन्तापी अ उनके सबशूवीर राजाके समान पाण्डवोंसहितलंडे, हेराजा इसरीति  
 से पांडव और कौरव परस्पर प्रंगमा करते अपने २ डेरोंमें भियनहुए, वह सब वीर  
 अपने रक्षारकरके और गुल्मनाम सेनाको बुद्धिके अनुसार देखकर और भालों  
 समेत सफाई से स्नानकर ब्राह्मणों से आशीर्वादिमांग वंदीजनोंने प्रशंसितहो गतिवाद्यों

princes, Arjun returned to his own army and from there to his camp. Yudhishtir with his brothers and armies went to camp for the night, Bhimsen too, having conquered Duryodhan and other mighty princes went to camp. Duryodhan with Bhishma in the middle went to camp. Dronacharya, Kripacharya, Ashwathama, Shalya and Kritvarma the yadav went to camp with their armies. Satwaki and Dhrishtadyumna, having killed many warriors went to camp. Thus O king, your foe striking warriors and the Pandavas returned with the night and stayed in their camps praising one another. All those warriors having fortified their camps and examined the armies, washed their weapons and their bodies and with benedictions of Brahmans and the praises of birds, joined in recreation. The recreation

यशस्विन ॥ ५५ ॥ मुहूर्तादिव तत्सर्वं ममज्ज स्वर्गसन्निभम् । न हि युद्धकथांकाचि  
सत्रा कुर्यन् महारथा ॥ ५६ ॥ ते प्रसुप्ते बले तत्र परिश्रान्तजने नृप । हस्त्यश्ववहूले  
राशौ प्रेक्षणीये चमूयन् ॥ ५७ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवचनपर्वणि सप्तमदिवस युद्धावहारे  
सप्ताशीतितमोऽध्यायः ॥ ८७ ॥

संजय उवाच । परिणाम्य निशान्तान्तु सुरप्रप्राप्ता जनेश्वरा । कुरव पाण्डवाश्चैव  
पुनर्युद्धाय निर्ययु ॥ १ ॥ तत शत्रो महानासीत् सैन्ययोरुभयोर्नृप । निर्गच्छमानयो  
सख्ये सागरप्रतिमो महान् ॥ २ ॥ ततो दुर्योधनो राजा चित्रसेनो विविंशति । भीष्मश्च  
रथिनां धेष्ठो भारद्वाजश्च वै नृप ॥ ३ ॥ एकीभूता सुसयत्ता कौरवाणा महाचमूम् ।  
व्यूहायविद्यूराजन् पाण्डवान् प्रति दशिता ॥ ४ ॥ भीष्म वृत्वा महाव्यूहं पितातय  
विशाम्पते । सागरप्रतिमं घोरं चाहनोर्मितरङ्गिणम् ॥ ५ ॥ अग्रतः सर्वसैन्यानां भीष्म

समेत आनन्द से क्रीड़ा करनेलगे फिर एक मुहूर्तमेंही वह सब क्रीड़ास्थान स्वर्ग के  
तुल्यहो गया वहा किमी महारथीने भी युद्धकी कयाका वर्णन नही किया फिर वह  
दोनोंसेनाओं के धीर हाथी घोडों समेत बडे आनन्दपूर्वक सोये ॥ ५७ ॥

अध्याय ८८ ॥

संजय बोले कि सुख पूर्वक सोये हुए कौरव और पांडवों समेत राजा लोग  
रात्रिको व्यतीत करके फिर युद्धके निमित्त गये, और संग्राम भूमि में जाने वाले  
धीरों के बडे २ शब्द समुद्र के समान हुए, तब राजा दुर्योधन चित्रसेन विविंशति  
भीष्मजी द्रोणाचार्य ब्राह्मण इननर बडे मावधान और एक मन कौरवोंके महारथी  
कुच शस्त्र धारियों ने पांडवों के समुद्र । व्यूहों को अलंकृत किया फिर शत्रु  
के पुन आपके पितामह भीष्मजी मागर के समान भयानक सवारी रूपी लहरों से  
लहरातेहुए महाव्यूहको शोभित करके । १ । मातर देशी दाक्षिण देशी और अग्नि

ground was like the paradise in a moment. There no mention of war  
was made by any warrior. Then the warriors of the two armies and  
their beasts slept soundly for the night. 57

### CHAPTER XXXVIII

Sanjaya continued. Having soundly slept for the night, the  
princes with the Kauravas and the Pandavas went again for battle.  
The roar of the warriors going to battle was like that of the ocean.  
Then Prince Duryodhan, Chitrasena, Vivishati, Bhishma and Dro-  
nachaarya the Brahman all these Kaurava warriors, wide awake and well  
armed, armed with weapons and armour arranged their armies in  
front of the Pandavas. Then Shantana's son, your grandfather  
Bhishma, moving like the surge of the sea in his carriage, embellished



शान्तनवो ययौ । मालवैर्दक्षिणात्यैश्च आवन्त्यैश्च समन्वित ॥ ६ ॥ नतोनन्तरमेवासी  
 म्भारद्वाज प्रतापवान् । कुलिन्दैः पारदैश्चैव तथा सुद्रकमालवैः ॥ ७ ॥ द्रोणादन्तरं  
 यत्तो भगदत्तः प्रतापवान् । मगधैश्च कलिङ्गैश्च पिशाचैश्च विशाम्पते ॥ ८ ॥ प्राग्ज्यो  
 तिपादनुवृषः कौशल्योऽथ वृहद्वलः । मेकले कुरु विदेश्च त्रैपुरैश्च समन्वित ॥ ९ ॥ वृहद्वला  
 त्ततः शूरसिखरं प्रस्थलाधिपः । काम्बोजैर्वहुभिः सार्जं यवनैश्च सहस्रशः ॥ १० ॥ द्रोणि  
 स्तुरभसः शूरलङ्घनादनुभारतः । प्रययौ सिंहनादेन नाद्व्यान्वो घरातलम् ॥ ११ ॥ तथा  
 सर्वेण सैन्येन राजा दुर्योधनस्तदा । द्रोणरजन्तरं प्रायात् सौदर्यं परिवारितः ॥ १२ ॥  
 दुर्योधनादनु ततः कृपः शारद्वतो ययौ । एवमेव महाव्यूहं प्रययौ सागरोपमम् ॥ १३ ॥  
 रैजुस्तत्र पताकाश्च श्वेतछत्राणि वा विम्बो । अद्भुदान्यत्र विराणि महार्हाणि धनुषिच ॥ १४ ॥ तंतु इष्ट्वा महाव्यूहं तावकानां महारथः । युधिष्ठिरोऽबधीर्त्तुं पार्षतं पृतनापं

देशियों से संयुक्त सब सेनाओं के अग्रगामी होकर चले इसके पीछे प्रतापवान्  
 द्रोणाचार्यजी पुलिंदपारु सुद्रक और मालवीलोगों के साथहुए हेराजा फिर प्रतापी  
 सावधान राजा भगदत्त मगध कलिङ्ग और पिशाचोंसमेत द्रोणाचार्य के पीछे हुआ  
 और राजा वृहद्वल कौशल्य मेकल त्रैपुर और चिबुकों समेत प्राग्ज्योतिष के राजा  
 भगदत्तके पीछे चला उसकेपीछे त्रिगर्त देशी महाशूर पराक्रमी राजा प्रस्थल बहुतसे  
 काम्बोजों से युक्त होकर नियतहुआ ॥ १० ॥ इसके पीछे महावेगवान् शूरवीर अश्वत्थामा  
 त्रिगर्त देशियों के पीछे अपने सिंहनाद से पृथ्वीको शब्दापमान करताहुआ चला  
 इसी प्रकार से इसके पीछे राजा दुर्योधन सब भाइयों समेत सब मेना के साथ  
 अश्वत्थामा के पीछे चला इसके पीछे शारद्वत कृपाचार्य जी दुर्योधन के पीछे  
 चले इमरीति से सागर के समान वह बड़ाव्यूह चला, उस व्यूहकी पताका श्वेत  
 छत्र जड़ाऊ बाजूबन्दतोमर धनुषों समेत महा शोभायमान हुई, फिर महारथी युधि-  
 स्थिर आपके वेदों के उस बड़े व्यूहको देखकर बहुत जल्दी से अपने सेनापति

the great array The people of Malav, South country, Avanti and  
 other places moved on with their leaders Then glorious Dronacharya,  
 together with the Paluds, Parads, Kshudrakas and malavin, joined  
 the array. Glorious and watchful king Bhagadatta with Magadhas,  
 Kalings and Pishachas, brought up the rear of Dronacharya, and  
 Prince Vrihadval with the Kaushalyas, Mekals, Traipuras and  
 Chibuks, followed Bhagadatta the king of Pragjyotish Then the brave  
 warriors of Trigart and their king Prasthal stationed themselves with  
 numberless Cambojes. Ashwathama of great glory and valour, sta-  
 tioned himself behind the warriors of Trigart and went on ringing  
 the earth with his cries Prince Duryodhan with his brothers and  
 warriors followed Ashwathama Sharadwat Kripacharya followed  
 Duryodhan Thus like an Ocean that huge array moved on. The  
 array was decked with banners, white shades, jewelled armlets, to-

तिम् ॥ १५ ॥ पश्य व्यूहं महेष्वास निर्मितं सागरोपमम् । प्रतिव्यूहन्त्वमपि हि कुरु  
पार्यतसत्वरम् ॥ १६ ॥ ततः स पार्यत क्रूरो व्यूहचक्रे सुदारुणम् । शूङ्गादकं महा  
राज परव्यूहविनाशनम् ॥ १७ ॥ शूङ्गाभ्यां भीमसेनश्च सात्यकिश्च महारथः । रथेते  
कणाहसैन्या दृष्टपदातिभिः ॥ १८ ॥ ताभ्यां च मौनरथेष्ठ भेताश्च कृष्णासारथिः ।  
मध्ये युधिष्ठिरो राजा मद्रिपुत्रो च पाण्डवौ ॥ १९ ॥ अथोत्तरे महेष्वासा सहस्रै  
न्यानराधिपाः । व्यूहं तं पूरयामासुर्व्यूहशास्त्रविशारदाः ॥ २० ॥ अभिमन्युस्ततः पश्चा-  
द्विरादश्च महारथः । द्रौपदेयाश्च संहृष्टा राक्षसाश्च घटोत्कचः ॥ २१ ॥ प्रथमतस्तम  
ह्यव्यूहं व्यूहमारन पाण्डवाः । अतिघ्नन् समरे गुरा योद्धुकामा जयैषिणः ॥ २२ ॥  
भेरीशब्देन च धिर्मलैर्विमिश्रैः शङ्खनि स्त्रजैः । ह्येडितास्फोटितोत्तुकुर्णोदिताः सर्वतो  
दिशः ॥ २३ ॥ ततः गुराः समासाद्य समरे ते परस्परम् । नैत्रैरनिमिराजप्रवैश्वन्त पर

धृष्टद्युम्नसे बोला । १५। कि हे बड़े धनुषधारी, धृष्टद्युम्न हम समुद्र के समान रथे हुए  
व्यूहको देखो और तुमभी उसके समान शीघ्र ही हमारे व्यूहको अलंकृत करो, इस  
के पीछे उत्तमूर धृष्टद्युम्न ने बड़े भयानक शत्रुओं के व्यूह के नाश करने वाले  
श्रृंगटक नाम व्यूहको बड़ी उत्तमता से बनाया, उस व्यूहमें महारथी भीमसेन  
और सात्यकी तो हजारों हाथी घोड़े रथ पदातिपों समेत शिखररूप हुए, और  
नरोत्तम श्वेत घोड़े शाला श्रीकृष्णको स रथों रखनेवाला अर्जुन नाभि के ऊपर  
वर्तमान हुआ और मध्य में राजा युधिष्ठिर और नकुल सहदेव दोनों भारद्वाज,  
इसी प्रकार व्यूहशास्त्र में कुशल बुद्धि बड़े धनुषधारी अन्य महारथियों ने सेना  
समेत उस व्यूहको पूर्ण किया ॥ २०। और महारथी अभिमन्यु विराट् द्रौपदी के  
पुत्र और घटोत्कच राक्षस उसके पीछे हुए, हे राजा इसीरिति से वह व्यूहवीर  
पांडव अपने व्यूहको रचकर युद्धाभिलाषी विजय के चाहने वाले संग्राम भूमि  
में आकर नियत हुए, शंखस्त्राने से युक्त भेरियों के कठोर शब्द वा सिंहनाद और

arms and bow. Mighty Yudhishtir, seeing the great array of your  
sons, thus addressed Dhrishtadyumna the commander of his armies —  
"Mighty archer Dhrishtadyumna, look at this ocean like array  
and form your own array like this." Thereupon brave Dhrishtadyu-  
mna made carefully the array known as Shringhatak the destroyer of  
the hosts of enemies. In that array mighty Bhimsen and Satyaki,  
with thousands of elephants, horses, chariots and foot soldiers, formed  
the horn; the best of men, riding the white horses and having Shree  
Krishna for the driver, Arjun stationed himself at the navel. In  
the middle were King Yudhishtira and the two brothers Nakul and  
Sahadev, and other warriors skilful in forming arrays and great  
archers and warriors with Bhimsen filled up the array. Valiant  
Abhimanyu, Virat, the sons of Draupadi and Ghatotkach the  
rakshas followed him. Thus, O King the Pandavas, brave in war,  
having formed the array with a desire to win, stationed themselves

स्परम् ॥ २४ ॥ नामभिस्ते मनुष्येन्द्र पूर्वं योधाः परस्परम् । युद्धाय ममयन्तं  
 समाहूयतरेतरम् ॥ २५ ॥ ततः प्रवृत्ते युद्धे घोररूपं भयावहम् । तावकानां  
 परेशव निघ्ननामितरेतरम् ॥ २६ ॥ नाराच्या निशिता संख्ये सम्पतन्तिस्मभारत ।  
 व्यात्ताननाभयकरा उरगा इव संघश ॥ २७ ॥ निष्पेनुर्विमलाः शक्यस्तेलघीता सुते  
 जनाः । अभ्युद्येभ्यो यथा राजन् आजमानाः शतद्वयाः ॥ २८ ॥ गदाश्च विमलैः पटैः  
 पिन्दाः स्वर्णमूर्धितैः । पतन्त्यस्तत्र दृढयन्ते गिरिशृङ्गोपमाः शुभा ॥ २९ ॥ निग्न  
 शाश्च द्रवदृश्यन्ते विमलाम्बरसन्निभाः । आर्यभाणि विचित्राणि शतचन्द्राणि भारत  
 ॥ ३० ॥ अशोभन्त रणे राजन् पात्यमानानि सर्वश । वन्योन्यं समरे सेने युध्यमाने  
 नराधिप ॥ ३१ ॥ अशोभेतां यथा देव इत्यसेनेसमुचते । अभ्यद्रवन्त समरे तेऽन्योन्यं धै  
 समन्ततः ॥ ३२ ॥ रथास्तु रथिमिस्तूर्णं प्रपिताः परमाहवे । युगैर्धुगानि संस्लिष्य

भुजाओं के शब्दों में शब्दायमान सब दिशाएँ अत्यन्त भयानक विदित हुई इस  
 के पीछे उन शूरवीरों ने परस्पर सम्मुख हाँकर एकने एकको टकटके नेत्रों से  
 देखा हे राजा वह शूरवीर पूर्वनामों के द्वारा परस्पर में बुला बुलाकर युद्ध के  
 निमित्त वर्तमान हुए, इसके अनन्तर परस्पर मारने वाले आपके पुत्र और  
 पांडवी सेना का महा घोर और भयानक रूप युद्ध जारी हुआ, हे भरतर्षभ उस  
 युद्ध में वड़ेतीक्ष्ण नाराचों की ऐसी वर्षाहुई जैसे कि महाभयानक दंशकनेत्राले  
 सर्प चारों ओरसे गिरने होय, और तेलसे युद्ध तीक्ष्णवरछियाँभी चारों ओरसे ऐसी  
 गिराँ जैसे कि बादलों से प्रकाशमान बिजली गिरती है और देशभी वज्रों से पड़ेहुए  
 सुवर्णवेजदितपर्वत के शिखर के समान बड़ी २ गदा और निर्मल आकाश के  
 समान खड्ग और सूर्य चंद्रमाओं से चिह्नित उत्तम ढालें यह सब गिरती हुई  
 बड़ी शोभायमान हुई हे राजा वह खड्ग ढालें पृथ्वीपर गिरीहुई सब ओर से  
 शोभायमान हुई फिर वह परस्पर युद्ध करनेवाली दोनों सेना ऐसी शोभित हुई

in the field of battle. The harsh peals of trumpets mixed with the  
 blasts from conchs, war cries and clanging of arms, made a dreadful  
 noise in the field of battle. Then the warriors facing one another  
 gazed at their adversaries. And those warriors, O king, called one  
 another by their names and challenged to fight. Then the battle  
 between your sons and the Pandavas, killing one another, was very  
 severe and awful. The shower of sharp arrows in the battle was  
 very severe and awful. The shower of sharp arrows in the battle  
 was like the fall of venomous serpents biting dreadfully. Rubbed  
 over with oil the sharp spears fell down from all sides like lightning  
 flashes detached from clouds. Sheathed in silk cloth, huge, gold  
 bedecked maces like mountain peaks, the swords like the clear sky and  
 the large shields bearing suns and moons, looked very glorious in  
 their fall. The swords and shields fallen on the ground, O king, were  
 shining on all sides. Then the two fighting armies looked glorious

युयुधु पार्थिवर्षमा ॥ ३३ ॥ दन्तिना युध्यमानानां सद्यर्थात् पावकोऽभवत् । दन्तेषु भरतधृष्ट सधूम सर्वतादिशम् ॥ ३४ ॥ प्रासैरमिहता केचिद्भजयोधा समन्तत । पतमाना स्म दृश्यन्ते गिरिगृद्धावगा इव । ३५ ॥ पादाताश्चाप्यदृश्यन्त निजान्तोऽथ परस्परम् । चित्ररूपधरा शूरा नखरआसयोधिनः ॥ ३६ ॥ अन्योन्यन्ते समासाध पुरुपाण्ड्यसैनिका । अस्त्रैर्नानाविधैर्धारेण निन्युर्यमक्षयम् ॥ ३७ ॥ तत शान्तनवा भीष्मो रथधोनेन नादयन् । अश्यागमद्रण पार्थान् धनु शब्देन मोहयन् ॥ ३८ ॥ पाण्डवाना रथाधायिन जदन्ता भीरव स्वनम् । अश्वद्रघन्त सयत्ता धृष्टद्युम्न पुरागमा ॥ ३९ ॥ तत्र प्रवहते युद्ध तत्र तेराज्य आरत । नराद्वयरथनागानां द्यातिपक परस्परम् ॥ ४० ॥

इति महा० भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि अष्टमदिवसयुद्धारम्भे अष्टाशीतोऽध्याय ॥ ८८ ॥

जैसे कि देव दानवों की सेना होती है उस समय एकएकके सम्मुख दौड़े रथी रथियों के साथ बहुत जल्दी से भेगे गये और उच्चम राजा लोग रथके जुओं को जुओं से मिलाकर युद्ध करने लगे, हे राजा सबओर लड़तेहुए हाथियोंकी, गसाव से दातों के ऊपर मधुम अग्नेन उत्पन्न होगये कोई हाथी के सवार हो जगी फरसों से घायल हुए सब ओरसे गिरते हुए ऐसे दृष्टपडे जैसे कि पर्वतके शिखर से घट गिरतेहैं और विचित्र रूपधारी शूर वीर नख और फरसों से युद्ध करनेवाले पदाती परस्पर में मारते हुए हुए पडे, फिर उन कौरव और पाण्डवों की सेनाके मनुष्यों ने परस्पर सम्मुख होकर युद्ध में नाना प्रकारके बाणों से एकने दुसरेको यमपुर को भेजा और रथ वा धनुष के शब्दों से गर्जना करते हुए भीष्म जी पाण्डवों के सम्मुख गये, और पाण्डवों के भी सावधान रथी धृष्टद्युम्न को आगे किये हुये बडे भयानक घोर शब्दों की करते हुए कौरवों के सम्मुख दौड़े, इसके पीछे आपके शूर वीरोंके और पण्डवोंके वीरोंका युद्ध जारी हुआ और मनुष्य हाथी घोडे और रथोंका परस्पर मेल न हुआ ४० ॥

like the armies of gods and danavas. Soldiers rushed against one another. The charioteers rushed against one another and yoked to yoke they fought hard. Fire and smoke appeared on the tusks of fighting elephants. Some riders wounded by battle axes were seen falling here and there like trees from mountain peaks. The foot soldiers in various colours were seen fighting with nails and axes and killed one another. The kaurav and Pandav armies, facing each other, sent the warriors to the region of Yam with their arrows. Raising a tremulous noise with his chariot and bow, Bhishma fired the Pandavas, who led by Dhrishtadyumna the skilful charioteer and uttering loud war cries, rushed against the Kauravas. Then a severe battle ensued between the warriors of your sons and those of the Pandavas and there was no order amongs men elephant, horses and charots. 40

सञ्जय उवाच । भीष्मन्तु समरे क्रुद्ध प्रतपन्त समन्तत । न शकु पाण्डवा  
 द्रुं तपन्तमिह भास्करम् ॥ १ ॥ तत सर्वाणि सैन्यानि धर्मपुत्रस्य, शासनात् ।  
 अभ्यद्रवन्त गाँगेय मर्हन्त शितशरै ॥ २ ॥ स तु भीष्मो रणश्लाघी सोमफान्  
 सहस्रञ्जयान् । पाञ्चालांश्च महेष्वासान् पातयामास सायकैः ॥ ३ ॥ ते घृथ्य  
 माना भीष्मेण पाञ्चाला सोमकै सह । भीष्ममेवाभ्ययुस्तूर्णं त्यक्त्वा मृत्युकृतं  
 भयम् ॥ ४ ॥ स तेषा रथिनाम्बीरो भीष्म शान्तनवो युधि । चिच्छेद्द सहस्रा राजान्  
 याह्नय शिरासि च ॥ ५ ॥ निर्यादुरथिनश्चक्रे पिता देवप्रतप्तव । पतिताभ्युत्तमा-  
 द्भानि हयभ्योहयसादिनाम् ॥ ६ ॥ निर्मेनुष्याश्च मातङ्गान् शयानान् पर्वतोपमान् ।  
 अपद्याम महाराज भीष्मास्त्रेण प्रमोहितान् ॥ ७ ॥ न तत्रासीत् पुमान् कश्चित्  
 पाण्डवाना विशाम्पते । अन्यत्र रथिना श्रेष्ठाद्रोमसेनान् महाबलात् ॥ ८ ॥ सु-

अथाय ८९ ॥

संजय बोले कि पाण्डव लोग युद्धमें क्रोधित चारों ओरसे मंत्त करके,  
 वाले भीष्मजीके देखनेको भी ऐसे समर्थ नहीं हुए जैसे कि अत्यन्त प्रबुद्ध सूर्य के  
 कोई नहीं देखसक्ता है, इसके पीछे धर्म पुत्र युधिष्ठिरकी आज्ञासे पाण्डवों की मव  
 मेनु भीष्मजी के सम्मुख टोड़ी, फिर उमप्रतापी भीष्मने सृजय लोगों को सोमकों  
 समेत शिर-वड़े घनुषचारी पांचालदेशियों को जायकों से आच्छादित किया हुवा  
 भीष्मने वायल हुए सोमकों समेत पांचाल देशी भयको त्यागकर शीघ्र भीष्मजी  
 के सम्मुख जापहुँचे, तब उस शान्तनु के पुत्र बलवान् भीष्म ने उन रथियोंकी  
 भुजाओंको अस्त्रों समेत काटकर रथोंसे विरथ करदिया । फिर खड्गोंमें सवारोंके  
 शिर गिराये हेमहाराज हय ने भीष्मजीके अस्त्रने अत्यन्त मोहित विना शिरके हाथियों  
 को प्रेमा देता जैसे कि विना वृक्षके पर्वत होते है, उम काल वहाँ रथियों में श्रेष्ठ  
 महाबली भीष्मने के सिवाय पाण्डवोंका कोई भी मनुष्य नियत नहीं हुआ, उस ने

### CHAPTER LXXIX

Sanjaya continued — The Pandavas were unable to look at  
 Bhishm burning all round in his rage, as no one can gaze at the bright  
 sun. Then by Yudhishtir's order the whole army of the Pandavas  
 rushed against Bhishm, but the latter hid with his arrows the Sri-  
 jaya, the Somaks and the great archers of Panchal. Wounded by  
 Bhishm the Panchals and the Somaks, setting aside all fear faced  
 Bhism but the brave son of Shantanu cut down the arms of those  
 charioteers bearing weapons and made their chariots useless. With  
 the sword he beheaded the horsemen. We saw O king elephants made  
 limbers and headless by his weapons like hills destitute of trees. No  
 warrior of the Pandavas could remain firm there except in gaily Bhism  
 the best of charioteers. He checked Bhishm in battle and the de-  
 vast great in the encounter between those  
 stral warriors in great cheer 10 When

हि भीष्मं समासाद्य ताडयामास संयुगे । ततो निष्ठानको घोरो भीष्मभीमसिमा  
गमे ॥ ९ ॥ यभूव सर्वसन्धानां धोररूपो भयानकः । तथैव पाण्डवा दृष्टा सिंहनाद  
मथानदन् ॥ १० ॥ ततो दुर्योधनो राजा सादयैः परिवारितः । भीष्मं जुगोप समरे  
वर्तमाने जनक्षये ॥ ११ ॥ भीमस्तु सारथिं हत्वा भीष्मस्य रथिनाम्बरः । विदुताम्बि  
रथे तस्मिन् द्रवमाणे समन्ततः ॥ १२ ॥ सुनामस्य शरेणाशु शिरश्चिच्छेदमांरतः ।  
क्षुरपेण सुतीक्ष्णेन स हतो न्यपतः भुवि ॥ १३ ॥ हते तस्मिन् महासज्ज तत्र पुत्रे । महा  
रथे । नामुपपन्न रणे शूराः सोदराः सप्त संयुगे ॥ १४ ॥ आदित्यकेतुर्वह्वाशी कुण्ड  
धारो महोदरः । अपराजितः पण्डितको विशालाक्ष सुदुर्जयः ॥ १५ ॥ पाण्डवं चित्र  
सन्नाहा विचित्रकवचध्वजा । अश्वद्रवन्त संग्रामे योद्धुकामारिमर्दनाः ॥ १६ ॥  
महोदरस्तु समरे भीमं विव्याध पत्रिभिः । नवभिर्वज्रसकाशैर्नमुचिं वृत्रहं यथा

युद्धमें भीष्मजीको पाकर गोक दिया फिर भीम और भीष्मकी सम्मुखता में सब  
सेनाओं को निष्ठानक महाघोर और भयानकहुआ और पाण्डवों ने प्रसन्नहोकर वृ  
सिंहन द किया १० इसके पीछे बड़ेघोर नाश के वर्तमान होनेपर अपने निज भाइयोंसमेत  
दुर्योधनने आकर भीष्मजीकी रक्षाकरी, फिर रथियों में श्रेष्ठ भीमसेनने भीष्मजी  
के सारथीको मारकर बड़े वेगवान् घोड़ेवाले रथपर बैठकर धनुषको तान बड़ी शीघ्रता  
से अपने क्षुरप्रमाण से सुनाम के शिरको काटा वह शिरके कटनेही पृथ्वीपर गिरपड़ा  
हे महाराज, उस महारथी आपके पुत्रके मरने पर उसके आदित्यकेतु बह्वाशी  
कुण्डधार महोदर अपराजित पांडितक, विशालाक्ष दुर्जय नाम शूरवीर सगे भाई  
जड़ाऊ कवच अस्त्रादिकोंसे अलंकृत होकर उस भीमसेन के सम्मुख दौड़े १२ उस  
समय महोदर ने वज्रके समान नौबाणों से भीमसेनको ऐसा घायल किया जैसे  
इन्द्रने नमुचिको कियाथा, फिर आदित्यकेतु ने सत्तर बाणों से बह्वाशीने पांच  
बाणोंसे कुण्डधार ने नौ बाणसे विशालाक्ष ने सात बाणसे और महारथी अपरा-

the slaughter of the armies was great, Duryodhan and his brothers  
came to Bhishma and protected him. Bhim the best of charioteers  
killed the driver of Bhishma's chariot and mounted on his swift  
chariot with his bow drawn, with much dexterity he beheaded Sunabhi  
by his sharp arrow. On the death of your brave son, O king, his  
brothers Adityaketu, Bahwashee, Kunddhar, Mahodhar, Aparajit,  
Panditak, Vishalaksh and Dairjaya, armed with weapons and golden ar-  
mour rushed against Bhim. 16 Mahodhar wounded Bhim severely with  
nine arrows as Indra had pierced Namuchi. Then Adityaketu wound-  
ed him with seventy arrows, Bahwa-hi with five, Kunddhar with nine,  
Vishalaksh with seven and brave Aparajit with many. Again Pandi-  
tak wounded him with three arrows. 20 Wounded by those arrows  
mighty Bhim on the destroyer of foes, drew his bow with his left hand

॥ १७ ॥ आदित्यकेन सत्तया वद्वारी चापि पञ्चभि । नयत्या कुण्डधारश्च त्रिशा  
लाक्षश्च पञ्चभि ॥ १८ ॥ अपराजितो महाराज पराजिष्णुर्महाराथम् । शरैर्वहुभि  
रानच्छेद्भीमसेनं महाबलम् ॥ १९ ॥ रणे पण्डितकः न त्रिभिर्बाणे समाप्यत । स  
तत्र ममूये भीम शत्रुभिर्वधमाहवे ॥ २० ॥ धनु प्रपीड्य धमेन करेणामित्रकर्शेन ।  
शिरश्चिच्छेद समरे शरेणानतपर्वणा ॥ २१ ॥ अपराजितस्य मुनस्य तव पुत्रस्य  
संयुगे पराजितस्य भीमेन निपपात शिरो महीम् ॥ २२ ॥ अयापरेण मत्लेन  
कुण्डधार महाराथम् । प्राहिणान्मृत्युलोकाय सर्व लोकस्य पश्यत ॥ २३ ॥ ततः  
पुनरमेयात्मा प्रसन्नाय शिलीमुखम् । प्रेषयामास समरे पण्डित प्रति मारुत २४ ॥  
स शर पण्डित इत्या धिवेश धरणीतराम् । यथा नर निहत्यानु भुजग कालघ्नो  
दित ॥ २५ ॥ विशालाक्षशिरश्छित्त्वा पातयामास भूतले । त्रिभि शरैर्वीनात्मा  
स्मरन् फलेषु पुरातनम् ॥ २६ ॥ महोदर महेष्वास नाराचनस्तनान्तरे । विज्याध

जितने अनेक बाणों से मशानकी भीमसेन को व्याकुल कर दिया, फिर पण्डितकने  
तानवाणमे घायल किया ॥ १७ ॥ इसके पीछे इन सबके बाणोंसे पीड़ित शत्रुसंतापी महा  
बली भीमसेननं क्रोधयुक्त हो बाणें हाथते दृढ़ धनुषको खिचकर गुप्तग्रन्थी वाले  
बाणों से आपके पुत्र अपराजित के शिरको काटा फिर बड़े शिर पृथ्वी पर  
गिरा, इसके पीछे सब सेनाके देखत हुए दूरमे भल्ल मे महाथी कुण्डधारको  
कालघ्न किया, हे भगवन् फिर बड़े साहसी भीमसेनने धनुष में शिली  
मुख बाणको चढ़ाकर पण्डितक को मारा, वह बाण पण्डितकको मारकर पृथ्वी  
में ऐसे प्रवेश कर गया जैसे कि कालका भेजा सर्व मनुष्य को काटकर पृथ्वी में  
धुमजाता है ॥ २५ ॥ फिर पूर्ण समय के दुःखोंको स्मरण करके प्रमत्तचित्त भीमसेनने  
तानवाण से विशालाक्ष को मारकर पृथ्वी पर गिराया, हेराजा बड़े धनुषधारी  
महोदर को नाराचमे छाती के ऊपर घायल किया वहभी मृतक होकर भूमिमें गिरा,  
फिर एक बाण से आदित्यकेतु के छत्र को काटकर बड़े तीक्ष्ण भल्ल से उसके

in great anger and with arrows having hidden knots, beheaded your  
son Aparajit. The head fell down on the ground. And within sight  
of the armies with another dart he killed Kundhar. Then, Bhim-  
sen of great prowess, put to his bow an arrow sharpened on stone and  
killed Panditak with it. Having killed Panditak that arrow entered  
the ground as a serpent sent by Death does after biting a man 25. Then  
remembering the former wrongs Bhimsen with three arrows killed  
Vishalaksh who fell down dead on earth. Then he wounded the great  
archer Mahoder with an arrow on the breast and he too fell down  
dead on earth. Then having cut down the umbrella of Adityaketu  
with an arrow he beheaded him with another dart. Then Bhimsen  
in the excess of wrath with arrows having hidden knots sent Bah-

समरे राजन् स हतोन्यपतद्मुचि ॥ २७ ॥ आदित्यकेतो केतुर्वाच्छिगणेन सयुगे ।  
 भलेन भृशतीक्ष्णेन शिरीषच्छेदमारत ॥ २८ ॥ वदवाशिन ततो भीम शरेणानत  
 पर्वणा । प्रेषयामास सकुद्धो यमस्य सदनं प्रति ॥ २९ ॥ प्रदुद्रुमुस्तस्तेन्ये पुत्रास्तव  
 विशाम्पते । म-यमाना हि तत्सत्यं समाया तस्य मायितम् ॥ ३० ॥ ततो दुर्योधं  
 नो राजा भ्रातृन्यसनकर्शित । अग्रवीत्ताववान् घोधान् भीमोय युधिवध्यताम् ॥ ३१ ॥  
 एवमेत महेश्वासा पुत्रास्तव विशाम्पत । भ्रातृन् सन्दृश्य निहतान् प्रास्मरस्तुहि  
 तद्वच ॥ ३२ ॥ यदुक्तवान् महाप्राज्ञ क्षत्ता हितमनामयम् । तदिव समनुप्राप्तं  
 वचनं दिव्यदर्शिन ॥ ३३ ॥ लोभमोहसमाविष्ट पुत्रप्रीत्या धनाधिप । न बुध्य  
 सेपुत्रा यत्तत् तथ्यमुक्तं यच्चोमहत् ॥ ३४ ॥ तथैव च यधार्याय पुत्राणां पाण्डवो  
 बली । नूनं जातो महाबाहुर्यथा हन्तिस्म कौरवान् ॥ ३५ ॥ ततो दुर्योधनो राजा  
 भीष्ममासाद्य सयुगे । दुःपेन महाबाधिष्ठो विललापसुदुःखित ॥ ३६ ॥ निहताप्रातर-

भी शिरको काटा, फिर अत्यन्त क्रोधभरे भीमसेन ने गुप्त ग्रन्थी वाले बाणों से  
 वहवाशीको भी यमलोकको भेजा, इसके पीछे आपके और सबके सभाके मध्य में  
 कहे हुए भीमके वचनोंको सत्यर जानकर युद्धभूमिसे भागे । ३० । तदनन्तर भाइयों के  
 दुःखसे पीडामान् राजा दुर्योधन आपके सब पुत्रों को बुलाकर यह बोला कि हे  
 भाइयो इस भीमसेनको मारो, इस रीति से इन धनुषधारी आपके पुत्रोंने भाइयोंको  
 माराहुआ देख कर उस वचन को याद किया जो बड़े शुभ चिन्तक विदुरजी ने  
 हितकारी समझ कर कहाथा वही उन महात्मा का वचन अब सत्य २ वर्तमान हुआ  
 है हे राजा तुम लोभ मोह में भरे हुए पुत्रकी मीति से नहीं जानतेहो पूर्व समयमें  
 सत्यहितकारी वचन कहागयाथा निश्चय कर के महाबाहु बलवान् भीमसेन तेरेपुत्रोंके  
 मारने के लिये ऐसाही उत्पन्न हुआहै जैसा कि कौरवोंको माररहाहै । ३५ । इसके पीछे  
 राजा दुर्योधन भीष्म के पाम जाकर महा रोद युक्त होकर रोदन करनेलगा  
 कि मेरे शूरवीर भाई युद्ध में भीमसेन के हाथ मे मारेगये, इसीप्रकार और सब सेना

was in the region of Yam. Then the rest of your sons, believing  
 the words of Bhishma said in the court to be true, fled from the field  
 of battle 30 Sorry for the death of his brothers Prince Duryodhan  
 called all your sons together and said to them — "Kill this Bhishma,  
 brothers !" Your brave sons seeing their brothers dead, remembered  
 the words which the well wisher Vidur had said for their benefit.  
 His words have proved true. Out of love for your ambitious and  
 foolish son you do not know what true and beneficial words were said.  
 Surely brave Bhishma is born to destroy your sons as well as other  
 Kauravas 35 Then Prince Duryodhan went to Bhishma and wept for  
 sorrow, saying, "My brothers are killed by Bhishma in battle and  
 he is destroying our armies. You always express your disinterested



भूरा भीमसेन ॥ युधि । यतमानास्नथान्येपि हन्यन्ते सर्वे सैनिका ॥ ३७ ॥ भयाद्वच  
मध्यस्थतया नित्यमस्मानुपेक्षते । सोऽहं कुपथागच्छ पश्य दैव भिद्मम ॥ ३८ ॥  
एतच्छ्रुत्वा च क्रूर पितादेवव्रतस्ततः । दुर्योधनमिदं वाक्यमधरोत् साधुलोचन  
॥ ३९ ॥ उक्तमेतन्मया पूर्वं द्रोणेन विदुरेण च । गान्धार्या च यशस्विन्या तव तात  
न बुद्धवाद् ॥ ४० ॥ समयश्च मया पूर्वं कृतो वै शत्रुकर्शन । नाहं युधि नियोक्त  
व्यो नाप्याचार्ये कथञ्चन ॥ ४१ ॥ यं हि धार्तराज्याणां भीमो द्रक्ष्यति सयुगे ।  
हनिष्यति रणे नित्यं सत्यमेतद्ब्रवीमि ते । ४२ ॥ सत्त्वं राजन् स्थिराभूत्वा रण  
कृत्या दहामिति । योऽयस्त्वं रणे पार्यान् स्वर्गं हृत्वा परायणम् ॥ ४३ ॥ न  
शफ्या पाण्डया जेतुं सैन्दरपिसुरासुरैः । तस्माद्युद्धे स्थिराकृत्या मतिर्युष्मत्स्वभारत ॥ ४४ ॥  
इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि आदित्यकेतुप्रभृतिवधे  
एकोनवतितमोऽध्यायः ॥ ८९ ॥

के मनुष्य भी मारेजाते हैं, आप सदैव हमको उठामीनपने से त्याग  
करतहो मैं कुमारों में वर्चमानहूँ मेरी अग्रगत्या देखिये, संभव वाले कि इस वचन  
को सुनकर आपके पिता भीष्मजी उस अश्रुपात करनेवाले दुर्योधन से यह वचन  
बोले कि मेने और द्रोणाचार्य विदुर गांधारी आदि ने प्रथमही कहाथा परन्तु हेतात  
तुमने उसको नहीं समझा, मेने प्रथम तुम्हारे साथ नियम किया है सो मैं और  
आचार्यजी दोनों किसी रीति से तुम को छोड़ने को नहीं, धृतराष्ट्र के पुत्रों में से  
युद्ध में जिस २ को भीमसेन देखेगा उसको सत्य २ ही मारे बिना नहीं छोड़ेगा,  
सो स्वर्गको अपना स्थान समझ कर मनको स्थिर कर के पांडवों से युद्धकरो  
हे भरतर्षभ इन्द्रादिक देवता भी पांडवों के जीतनेको समर्थ नहीं है इस हेतुस युद्धमें  
स्थिरबुद्धी होकर संग्रामकरो ॥ ४४ ॥

ness in our cause, while I stay in the evil path. Look my at my bad luck." "Having heard these words," continued Sanjaya, "your father Bhishma said to the weeping Duryodhan — "I as well as Dronacharya, Vidur, Gandhari and others have already warned you, but you were indifferent to hear their advice. I have already given you my word that the acharyas and I will never forsake you. It is true that whoever of the sons of Dhritrashtra will meet Bhishma, will meet his death. So with a firm mind, regarding paradise to be your proper residence fight against the Pandavas. Indra and other gods, O best of Bharats, are unable to conquer the Pandavas, therefore fight out with a firm resolution." 44



धृतराष्ट्र उवाच ॥ दृष्ट्वा मे निहतान् पुत्रान् बहुनेकेन सजय । भीष्मो द्रोण  
 कृपायैव किम कुर्वत सयुगे ॥ १ ॥ अह-यहनि मे पुत्रा क्षय गच्छन्ति सजय । मन्येह  
 सर्वथासूत देवनां प हता भृशम् ॥ २ ॥ यत्र मे तनया सर्वे जीय तेन जयत्युत । यत्र  
 भीष्मस्य द्रोणस्य कृपस्यच महात्मन ॥ ३ ॥ सौमदत्तेदच शीर्यस्य भगदत्तस्यचोभयो  
 अश्वत्थामनस्तथा तात शूराणाम निवर्तिताम् ॥ ४ ॥ अन्येषाञ्च शूराणाम मध्यगास्त  
 नयामम । यदह-यह-न-त-स-प्रामे किम-य-द्भागधेयत ॥ ५ ॥ नहि दुर्योधनो मन्द पुराप्रोक्त  
 मधुध्यत । वार्यमाणो मया तात भीष्मेण विदुरेण च ॥ ६ ॥ गाधायान्वेष्य दुर्योधना सतत  
 हित काम्यया । नाधुध्यत पुरामोहात् तस्य प्राप्त मिद फलम् ॥ ७ ॥ यद्भीमसेन समरे  
 पुत्रान्मम निचेतस । अह-यह-नि स-दु-द्धो नयतेय मसादनम् ॥ ८ ॥ सजय उवाच ।  
 इदं तत्त्वमनुप्राप्त क्षुब्धचन मुत्तमम् । न बुद्धवानसि विभो प्रोच्यमान हित तदा ॥ ९ ॥

अथ य ॥ ९० ॥

धृतराष्ट्र ने कहा हे सजय एक भीमसेन के हाथसे मेरे बहुत से पुत्रों को  
 मरा हुआ देखकर भीष्म द्रोण कृपाचार्य आदिने क्या २ किया और मेरे पुत्र  
 प्रतिदिन युद्धमें नाश होते हैं इससे हेसूत मैं मानता हूँ कि सबरीति से मारव्य से हीन  
 हूँ, कि मेरे शत्रुनाश होते हैं और विजय नहीं पाते, भीष्म, द्रोणाचार्य कृपाचार्य  
 भुरिश्रवा, भगदत्त, अश्वत्थामा आदि बड़े २ प्रतापी लोगोके मध्यमें मेरे पुत्र वर्त  
 मान होकर भी मारे जाते हैं यहां मारव्य से दूसरी कौनसी बात है, हे तात मेरे और  
 भीष्म विदुर आदि अनेक सुहृदों के समझाने और निषेध करने से भी निबुद्धी  
 दुर्योधनने पहले वचनों को नहीं समझा और हितकारिणी अपनी माता गांधारी  
 के भी वचनको उसदुर्बुद्धीने नहीं समझा उसीका यहफल पारहा है, वहमहाक्रोधो  
 भीमसेन युद्ध में प्रतिदिन मेरे पुत्रों को ही अधिकता से मारकर यमलोक में पहुँचाता है  
 सजयबोले कि हे समर्थ विदुरजीका वह उत्तम वचनवर्तमान हुआ है जो विदुर ने कहा था

## CHAPTER XC

Dhritrashtra said = What did Bhishm Drona, Kupaacharya and others do at seeing many of my sons destroyed by Bhimsen ! My sons are killed every day in battle, I believe therefore, Sat, that I am luckless. My sons are destroyed and gain no victory. In the midst of great men like Bhishm, Kripacharya, Bhurisshava, Bhagdatta, Ashwathama and others the destruction of my sons can be ascribed to nothing but fate. In spite of the remonstrances of Dhishm, Vidur, myself and other well wishers foolish Duryodhan did not become wise. He was unwise to disregard the advice of his nobles. Grihmanard is reaping the fruit of his doings. I think Bhimsen destroys most of my sons in battle. Sujaya replied — 'The prediction of Vidur is coming to be true. He told you to stop gambling and to avoid enmity with the Pandavas. You disregarded the

नियारय सुतान् वृतात् पाण्डवोऽन् मादुहेति च । सुदृढ हितकामानां धृष्टनां तत्तदेव च ॥ १० ॥ न शुभ्रपति यद्वक्ष्य मृत्यं पथ्यमिदं श्रद्धम् । तदेव त्वांमनुशात वचन साधुमापितम् ॥ ११ ॥ विदुरद्रोणभीष्माण । तथान्वेषां हितैषिणाम् । अहत्प्राञ्चन पथ्य ध्वं गच्छन्ति कौरवाः ॥ १२ ॥ तदेतत् समनुशात पूर्वमेव विशाभ्यपते । तस्मात् नृणुष्वेन यथा युद्धमर्त्तव ॥ १३ ॥ मध्याह्ने सुमहारीढ मश्राम समवयत । लोकक्षयकरो राजसन्मैर्निगदत नृणु ॥ १४ ॥ तत सर्वाणि सैन्यानि धर्मपुत्रस्य शासनात् । सर्वधान्यभ्यवर्तन्त भीष्ममेव जिज्ञासया ॥ १५ ॥ धृष्टद्युम्न शिष्यण्डी च सात्यकिश्च महारथ । युत्तानीका महाराज भीष्ममेव समभ्ययु ॥ १६ ॥ विराटो दुपदश्चैव सहिता सर्वसोमकैः । अभ्यद्रवन्त सश्राम भीष्ममेव महारथम् ॥ १७ ॥ केष्या धृष्टकेतुश्च कुन्तिभोजश्च वीरित । युत्तानीका महाराज भीष्ममेव

कि पुत्रों को जुवा खेलनेसे निषेध करो और पाण्डवों से शत्रुता मत करो। सो उन धृष्ट चिन्तक मित्रों के वचनों को तुमने ऐसे नहीं माना जैसे कि रागी अपनी नीरोगी करने वाली गोपनी को नहीं साता है वही साधुओं का कहा हुआ वचन आपके आगे वर्तमान हुआ है। ११ यह सब कौरव लोग अपने धृष्टचिन्तक विदुर द्रोणाचार्य भीष्म और अन्य बहुत से हितधारियों के वचनों को न मानकर नाश होते जाते हैं, इसके पीछे हे शत्रुमायाहन के समय ससारका नाशकारी बड़ा भागी भयानक युद्ध जो प्रारम्भ हुआ उसको शुरुमें सुनो कि धर्मपुत्र युधिष्ठिर की आज्ञा से पाण्डवों की सर्वसेना महाकोपित होकर भीष्म के मारने के लिये सम्मुख टौढ़ी है महाराज धृष्टद्युम्न शिखण्डी सान्यसी गहतीनों अपनी २ सेना समेत भीष्म के सम्मुख गये १६ विराट् दुपद आदि महारथ भी सर्वसोमकों समेत भीष्म के सम्मुख गये और पाचों भाई केष्य धृष्टकेतु कुन्तिभोज आदि भी सकवचधारी होकर सेना समेत भीष्म के सम्मुख गये, अर्जुन और द्रौपदी के पाचों पुत्र और परामर्शी

advice of your friends like a patient who does not take doses of curative medicine. The very same surly predictions are coming before you 11 The Kauravas who disregarded the advice of their well wishers, Vidur, Dronacharya, Bhishma and other friends are being destroyed. Then, O King, at midday commenced a furious battle destructive of the world. Hear from me all about it — By the order of Yudhishtira the just all the Pandav army much enraged, rushed on to slay Bhishma 16 Dhrishtadyumna, Shikhandi and Satyaki with their armies faced Bhishma Virat, Drupad and other warriors too along with the Somas the five Karkaya brothers Dhrishtaketu, Kuntibhoj and others sheathed in armour, encountered him Arjun with the five sons of Draupadi and valliant Chekitan faced the hugs sent by Duryodhan. Likewise Abhimanyu, valliant Ghatotkach and enraged Bhishma rushed against the Kauravas. 20 Two parties of the

समभ्यय १८॥ अर्जुनोद्रौपदेयाश्च चेकितानश्चवीर्यान् । दुर्योधनसमादिष्टान्द्राह  
 सर्वान् समभ्यय । १९ । अग्निमन्युस्तथा शूरा द्वेष्टिन्मथ महारथ । भीमसन्ध सक्त  
 दस्तभ्यधावत कौरवान् । २० । त्रिधामूतैरवध्यन्त पाण्डवै कौरवा युधि । तथै  
 व कौरवैराजध्रव्य त पर रण । २१ । द्राणस्तु रथिन धेष्टान् सामकान् सृजयै  
 सह । अभ्यधावत सकुद्ध प्रेषयिष्यन् यमक्षयम् ॥ २२ ॥ तत्राकन्दो महानासेत्  
 सृजयाना महात्मनाम् । वध्यता समर राजन् भारद्वाजेन घनिना ॥ २३ ॥ द्रोणन  
 निहतास्तत्र क्षत्रिया बहवो रण । त्वचष्टताह्यदश्यन्त व्याधिविलप्ता नरा इव  
 ॥ २४ ॥ कृजता क्रन्दताश्चैव स्तनताश्चैव भारत । अनिश शुश्रुव शब्द क्षुत्  
 क्लिष्टाना नृगामिव ॥ २५ ॥ तथैव कौरवेयाणा भीमसना महाबल । चकार कदन  
 घोर कुक्ष काल इवापर ॥ २६ ॥ वध्यता तत्र सैन्याना मन्योन्येन महारणे । प्रायस्तत

चेकितान उनसवराजामों के सम्मुख गये जिन को कि दुर्योधन ने आज्ञादीयी,  
 इसीप्रकारवीर अभिमन्यु और महारथी घटोत्कच और क्रोधित भीमसन् भी  
 कौरवों के सम्मुख दौड़ा । २० । हे राजा पांडवों के दुर्योधनसेतो कांसव मारेगये  
 और कौरवों सेभी उधर के लोग मारेगये फिर महारथी द्रोणाचार्य  
 बड़े क्रोधयुक्त होकर मृजियों सहित सोमरुके का मारतेहुए पांडवों के  
 सम्मुख गये उसयुद्धमें द्रोणाचार्य के हाथसे मरतेहुए महात्मा मृजियों के बड़े २  
 शब्दहुए उसस्थानमें द्रोणाचार्य के हाथसे मरेहुए बहुत से क्षत्री ऐसे  
 तडफडाते दिखाई दिये जैसे कि रोगयुक्त मनुष्य विकलहोकर तडफडाते हैं  
 युद्ध में बोलते गर्जते पुकारते हुए शूरवीरोंके ऐसे शब्दसुने गये जैसे कि भूखभे  
 व्याकुल मनुष्योंके शब्द निकलाकरतेहैं । २५ । इसीप्रकार द्वितीयकालके समान क्रोध  
 रूप महाबली भीमसेन ने कौरवों के महाघोर नाशको किया, उस महाघोर युद्ध  
 में परस्पर सब सेनाओं के मरने से रुधिर की घोर भयानक नदी जारी हुई। हे  
 महाराज कौरव और पाण्डवों की वह महायुद्ध घार लड़ाई यमराज के पुरकी

Pandavas destroyed the Kauravas and the latter killed the warriors  
 of the opposing side - Valiant Dronacharya much enraged destroyed  
 the Srinjayas and the Somals and then encountered the Pandavas  
 The Srinjayas warriors, destroyed by Dronacharya made a great noise  
 The warriors wounded by him shook like those who are overtaken by  
 sickness - The cries and roars of the warriors resembled those of the  
 starving people 25 In the same manner like a second Death, valiant  
 Bhimsen much enraged, destroyed the Kauravas in large numbers In  
 that dreadful battle the opposite sides destroying one another produced  
 a river of blood The dreadful battle between the Kauravas and the  
 Pandavas, O King, augmented the region of Yamraj Then full of  
 anger and destitute of pride Bhimsen destroyed the army of elephants  
 and sent it to the region of Yam Killed by the darts of Bhimsen

नदी घोरा रुधिरौघप्रवाहिनी ॥ २७ ॥ स संग्रामो महाराज घोररूपोमघ्नमहान् ।  
 कुक्ष्यां पाण्डवानाञ्च यमराश्रुचिवर्धनः ॥ २८ ॥ ततो भीमो रणे कुक्षो रमसश्च  
 चित्तोपतः । गजानीकं समासाद्य प्रेषयामास मृत्यवे ॥ २९ ॥ तत्र मारुत भीमेन  
 नाराचामिहंतागजाः । पेतुर्नैव सैवुश्च दिशश्च परिव्रजसुः ॥ ३० ॥ छिन्नहस्ता  
 महानागाश्छिन्नगात्राश्च मारिय । क्रौञ्चवद्व्यनदन्मताः पृथिवीमधिशरेते ॥ ३१ ॥  
 नकुलः सहदेवश्च हयानीकमभिद्रुतौ । ते हयाः काचनापीडा यक्षमाण्डपरिच्छदाः  
 ॥ ३२ ॥ बध्यमाना व्यहृद्यन्त शतशोपमहृषशः । पतद्भिस्तुरगै राजन् समास्ती  
 र्यंत मेदिनी ॥ ३३ ॥ निज्जिह्वैश्च श्वसद्भिश्च कूजद्भिश्च गतासुभिः । हयैर्वमौ  
 मरयेष्ट नानारूपधरेधरा ॥ ३४ ॥ अर्जुनेन हतैः संख्ये तथा मारुत राजभिः । प्रथमौ  
 वसुधा घोरा तत्र तत्र विशास्यते ॥ ३५ ॥ रथैर्मनैर्ध्वजैश्चित्रैर्निरुक्तैश्च महायुधैः ।  
 चामरैर्व्यजनेष्वैवच्छत्रैश्च सुमहाप्रभैः ॥ ३६ ॥ हारैर्निष्कैः सकेयूरैः शिरोभिध  
 सकुण्डलैः । उष्णोपैरपविष्टैश्च पताकामिदृश सर्वश ॥ ३७ ॥ अनुकर्षं शमैराजन्  
 छदि करने वाली हुई इसके पीछे क्रोधमें भरे निरभिमानी भीमसेन ने हाथियों  
 की सेनाको मारकर यमपुर भेजा वहाँ भीमसेन के नाराचों से मरे हुए हाथी अचेत  
 होकर शब्द करते दिशाओं में घूमते हुए पृथ्वीपर गिरे ३०। हे राजा धृतराष्ट्र वह सूँढ़  
 और भंगों से रहित हाथी कौंच पत्ती के समान शब्द करते हुए पृथ्वीपर मारकर  
 सोये, और नकुल सहदेव दोनों भाई घोड़ों की सेनाके सम्मुख गये वहाँ सुवर्ण  
 भूषणों से अलंकृत सैकड़ों और हज़ारों घोड़े मरे कटे हुए पड़े उस समय वह  
 पृथ्वी गिरे हुए घोड़ों से पूर्ण हुई, और बहुतसे निह्वा से रहित द्वांस सेते हुए  
 शब्दायमान मृतकं रूप अनेक रंग वाले घोड़ों से पृथ्वी बड़ी शोभायमान हुई, हे  
 भरतर्षभ इसी प्रकार से अर्जुन के हाथ से मरे हुए राजाओं से भी भयानक पृथ्वी  
 महाशोभा को प्राप्त हुई ३५। बड़े शस्त्रों से दूटे रथ भ्रजा और प्रकाशित छत्रों से वा  
 दूटे हुए चापर और व्यजनों से अथवा हार केयूरादिक आभूषणों से युक्त कुंडल  
 भारी शिर अनेक प्रकारकी पताकाओं से, और रथों की अनेक रंगवाली दोरियों  
 से युक्त रथों से ढकी हुई पृथ्वी ऐसी प्रकाशमान हुई जैसे कि वसन्त ऋतु में फूलों

and made insensible the elephants fell down with hideous cries. Devoid of  
 trunks and limbs the elephants cried like herons and fell down dead on  
 earth. The two brothers Nakul and Sahadev faced the squadron of horses  
 and killed hundreds and thousands of horses decked with gold trappings,  
 filling the ground with their dead bodies. The earth looked glorious  
 with the carcasses of horses of different colours, tongueless, gasping and  
 neighing. In the same manner, O best of Bharats, the scene on the  
 field of battle was awful on account of the corpses of the kings killed  
 by Arjun. Broken by powerful weapons, the chariots destitute of  
 banners, bright sun shades, fly flappers, fans, garlands and other or-  
 naments, heads decked with earrings, banners of sorts and chariot ropes

योदैत्रैवसरदिमभिः सक्तीर्णा वसुधाभाति वसन्ते कुसुमैरिव ॥ ३८ ॥ पद्मेपक्षयो  
वृक्ष पाण्डूनामपि भारत । कुक्षे शान्तनवे भीष्मे द्रोणे चरथसत्तमे ॥ ३९ ॥ अभ्युत्थामि  
रूपे चैव तथैव कृतवर्मणि । तथेतरेषु कुक्षे तु तावकानामपि क्षय ॥ ४० ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि अष्टमदिवसपुद्गे

नवतिमोऽध्यायः ॥ ९० ॥

संजय उवाच ॥ वर्तमाने तथा यौद्रे राजन् धीरधरक्षणे । शकुनिः सौबल श्रीमान्  
पाण्डवान् समुपाद्रधत् ॥ १ ॥ तथैव सात्वतो राजन् हार्दिक्य परवीरहा । अभ्यद्रव  
तत्सप्राप्ते पाण्डवानावक्राधिनीम् ॥ २ ॥ ततः काम्बोज मुख्यानां नदीद्वानाच वाजिनाम् ।  
आरहाना महीजानां सिन्धुजानां च सर्वशः ॥ ३ ॥ वनायुजानां शुभ्राणां तथा पर्वतवा  
सिनाम् । वाजिनां चक्रुः सख्ये समन्तात् परि वारयन् ॥ ४ ॥ ये चापरे तित्तिरिजा

से शोभित होती है, जिसप्रकार से भीष्मजी और रथियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य  
अभ्युत्थामा कृपाचार्य और कृतवर्मा इन सबके क्रोधरूप होने से पाण्डवों के  
शूरवीरों का नाश हुआ उसी प्रकार पाण्डवों के कोपित होने से आपके भी वीरों  
का नाश हुआ ॥ ४० ॥

अध्याय ९१ ॥

संजय बोले हे राजा इस प्रकार उन उत्तम वीरों के नाश होने पर सुबलका पुत्र  
श्रीमान् शकुनि और शत्रुओं के वीरों का मारनेवाला यादव कृतवर्मा पाण्डवों की  
सेना के सम्मुख गया, फिर काम्बोज देशी उत्तम घोड़े व नदी के समीप उत्पन्न  
होनेवाले अरु देशी व सिन्धु देशी आदि सब प्रकार के घोड़े और वनायुत देशी  
श्वेतरूप पहाड़ी घोड़े इन सब प्रकार के अनेक घोड़ों के द्वारा युद्ध के चारों ओर को नियत  
करके दूसरे प्रकार तित्तिरिज वायु के समान बेगवान् सुवर्ण भूषणों से अलंकृत श्रेष्ठ

of different colours beautified the earth like flowers in the season of  
spring The destruction of Pandav armies caused by Bhishma, Dro-  
nacharya the best of charioteers Ashwathama Kripacharya and  
Kritvarma was as great as that of your armies caused by angry  
Pandavas 40

## CHAPTER XCI

Sanjaya said — "On the destruction of those warriors, O king,  
Subal's son shakuni and Kritvarma the Yadav, destroyer of warlike  
foes, faced the Pandav armies Then with good horses of Camboj of  
Aratta by the river side and of Sindh, the white horses of mountain  
fores's, stationed all round in the field of battle and with horses of the  
colour of partridge swift like the wind, decked with gold ornaments,  
sheathed in armours of the best make Arjun's son Iawan faced that

जयनाथातरहसः । सुवर्णां लंकृतै रेतैर्धर्मवन्दिः सुकम्पितः ॥ ५ ॥ हयैर्वातजघैर्मुण्यैः  
पाण्डवस्यनुतो बली । अभ्यवर्तत तत्सैन्यं दृष्टरूपः परन्तपः ॥ ६ ॥ अर्जुनस्य सुतः श्री  
मां निरावाश्राम वीर्यवान् । स्तुथायां नागराजस्य जातः पार्थेन धीमता ॥ ७ ॥ ऐराव  
तेन सा दत्ता अनपत्या महात्मना । पत्न्यौ हते सुपणैर्न रूपणा दीनचेतना ॥ ८ ॥ भा  
र्यायै तां च जैम्राद पार्थः कामयशानुगाम् । एवमेव भूमिपुत्रः परक्षेत्रेर्जुनात्मजः ॥ ९ ॥  
सगाग लोके संवृष्टो माश्राच परि रक्षितः । पितृभ्येष परित्यक्तः पार्थद्वेषाद्भुरात्मना  
॥ १० ॥ रूपवान् यैलसम्पन्नो गुणवान् सत्य विद्वान् । इन्द्रलोकं जगामाशुं भुत्वा  
तत्रार्जुनकृतम् ॥ ११ ॥ सोभिगम्य महाबाहुः पितरं सत्य विद्वान् । अभ्यवाक्यदभ्यमो  
चिनयेन कृतांजलिः ॥ १२ ॥ न्यवेदयत्तत्तामानं मर्जुनस्य महात्मनः । इरावानस्मि मद्र  
न्ते पुत्रम्राहं तवप्रभो ॥ १३ ॥ मातुः समागमो यदच तत् सर्वं प्रत्य वेदयत् । तच्च सर्वं

रचना किये हुए कवचों को धारण करने वाले वायुके समान शीघ्रगामी उत्तम घोड़ों  
समेत बलवान् रूपवान् श्रीमान् पराक्रमी अर्जुन का पुत्र इरावान् उससेना के  
सम्मुख हुआ यह इरावान् अर्जुन का पुत्र नाग कन्या में इस रीति से उत्पन्न  
हुआ था कि ऐरावत नाम नागों के राजाने गरुड़जी से महा दुःखित होकर अर्जुन  
को अपनी कामवती कन्यादी तब अर्जुनने उस कामासक्त को अपनी स्त्री बनाने के  
लिये ग्रहण किया इसरीतिसे यह अर्जुन का पुत्र दूसरे के क्षेत्र में उत्पन्न हुआ, वह  
माता से रक्षित होकर नागलोक में बड़ा हुआ और अर्जुन की शत्रुता से उसके  
चाँबाने उसको प्रयत्नकिया ॥ १० ॥ फिर वह रूपवान् पराक्रमी गुणोंसे संपन्न सत्य परा  
क्रमी अर्जुन को स्वर्ग में वर्त्तमान सुनकर शीघ्रही इन्द्र लोकको गया, वहाँ उस  
सावधान सत्य पराक्रमी ने हाथ जोड़ कर पिता के पाम जाकर दण्डवत् की, और  
अपने वी अर्जुन के सम्मुख वर्णन किया कि हे प्रभु आप का कल्याण हो मैं  
इरावान् नाम आपका पुत्र हूँ और जैमे माता का मिलाप हुआ था वह सब वर्णन

army. This Iravan the son of Arjun was born in the daughter of the king  
of Nagas. For Airavat the king of Nagas, much distressed by Garur,  
gave his daughter Kaniwati to Arjun and the latter accepted her  
for his wife. Thus this son of Arjun was born in a widow. He was  
brought up by his mother in the region of Nagas; his uncle being an  
enemy of Arjun did not take care of him 10. Then that handsome, brave  
warrior of good qualities, hearing of Arjun's visit to paradise, went to  
the region of Indra. There that wise man of true prowess went to  
his father and with joined palms having saluted him, introduced him-  
self thus,—“May you be happy, lord,” said he, “I am Iravan your  
son.” He related to Arjun how he had met his mother. Then Ar-  
jun remembered what had happened, and in the palace of Indra see-  
ing his son to be like himself in good qualities, embraced him cheer-

यथाकृत्त मनुसस्मार पाण्डव ॥ १४ ॥ परिष्वज्य सुतञ्चापि आत्मनः सहश गुणे ।  
 प्रीतिमान् नयत् पार्थो देवराज निवेशने ॥ १५ ॥ सौर्जनेन समाह्वसो देवलोके तदनुप ।  
 प्रीति पूर्वं महाबाहुः स्वकार्यं प्रति भारत ॥ १६ ॥ युद्धकाले त्वयास्माकं साह्यं देयमि  
 तिप्रभो । वादमित्येव मुक्त्वा तु युद्धकाल इहागतः ॥ १७ ॥ कामवर्णं जयैरक्षैर्वह्निभिः  
 संवृतो नृप । ते हया कांचनापीडा नानावर्णा मनोजवाः ॥ १८ ॥ उत्पेतुः सहसाराजन्  
 हंसा इव महोदधौ । ते त्वदीयान् समासाद्य हयसंघान् मनोजवान् ॥ १९ ॥ क्रौं  
 क्रौडानभिघ्नन्तो घोणाभिश्च परस्परम् । निपेतुः सहसा राजन् सुवेगाभिहता भुवि  
 ॥ २० ॥ निपताद्भिस्तथा तैश्च हयसंघैः परस्परम् । शुश्रुवे दादणः शब्दः सुवर्णं पतने  
 यथा ॥ २१ ॥ तथैव तापका राजन् समेत्यान्वोन्य माहवे । परस्परवधं घोरं चक्रस्ते  
 हयसाविनः ॥ २२ ॥ तस्मिंस्तथा घर्तमाने संकुले तुमुले प्रशम । उभयो रपि संशान्ता

किया तब अर्जुन ने उसका ययार्थ वृत्तान्त जैसा हुआ था सब स्मरण किया  
 वह अर्जुन देवराज के भवन के भीतर गुणों में अपने समान पुत्रको देखकर  
 बहुत स्नेहसे मिलकर मस्तन हुआ । १५ । हे भरत वंशी धृतराष्ट्र तब इन्द्र-लोक  
 में वह महाबाहु इरावान् अर्जुन से बोला कि हे पिता आप मुझे कोई काम कर-  
 ने की आज्ञा दीजिये, अर्जुनने कहा कि हे पुत्र युद्ध के समय तुम को हमारी  
 सहायता करनी उचित है उसकी आज्ञा को स्वीकार करके युद्ध के समय वह  
 उन पूर्वोक्त उत्तम घोड़ों समेत वहां आया जो अक्रमात् ऐसे ऊँचे होकर चले  
 लगे जैसे कि महा समुद्रमें हंस चले हैं वह शीघ्रगामी घोड़े आपके घोड़ों के  
 समूहों को पाकर, अपनी तीव्रता से पृथ्वी पर छाती से छाती को नाकों से नाकों  
 को परस्पर धायल करतेहुये दौड़े । २० । इस रीति से उस परस्पर दौड़ते हुये घोड़ोंके  
 समूहसे ऐसे भयकारी शब्द सुनेगये जैसे कि गरुड़ के गिरने में होते हैं, इसी प्रकार  
 घोड़ों के तवारों ने भी परस्पर में मिलकर एक ने एक का नाश किया, इस रीतिसे

fully. 15. Then in the region of Indra, Iraavan said to Arjun—"Give me some work to do, father." "You must help me in the coming war." replied Arjun. The son accepted the father's offer and in due course came there with those good horses which strode with raised heads like swans in the sea. Those swift horses meeting your own rushed against them, striking with their noses and breasts 20. The sounds made by the rushing of horses against one another were dreadful like the fall of Girur. Then the horseman meeting together, destroyed one another. When the battle was raging so furiously the horses on both sides ran on all sides. The warriors whose arrows were exhausted and the horses were dead, were themselves killed 25. When the squadron of horses was nearly destroyed, the brothers of Shakuni, brave warriors came into the field of battle, riding horses



हृषसंघाः समन्ततः ॥ २३ ॥ ग्रहीणसायकाः शूरा निहताश्वाः धमातुराः । दितयंसम  
 नृमातास्तक्षमाणाः परस्परम् ॥ २४ ॥ ततः क्षीणे हयानीके किञ्चिच्छेपे च मारत ।  
 सोवलस्यानुजाः शूरा निर्गता रणमूर्धनि ॥ २५ ॥ वायुवेगसमस्पर्शान् जवे वायु  
 समादधते । आरुह्य बलसम्पन्नान् वयःस्यास्तुरगोत्तमान् ॥ २६ ॥ गजो गवाक्षो वृष  
 भश्चर्मवानार्जव-शुकः । पडेते बलसम्पन्ना निर्ययुर्महतो बलात् ॥ २७ ॥ वार्यमाणाः  
 शकुनिना तैश्च योधिर्महाबलैः । सन्नद्धा युद्धकुशलार्थैद्रूपामहाबलाः ॥ २८ ॥ तद्  
 नीकं महाबाहो मित्वा परमदुर्जयम् । बलेन महता युक्ताः स्वर्गाय विजयेष्विणः २९ ॥  
 विविशुस्ते तदा दृष्ट्वा गान्धार युद्धदुर्मदाः । तान् प्रदृष्ट्वास्तदा दृष्ट्वा इरावानपि  
 धीर्यवान् ॥ ३० ॥ अग्रवीन् समरे योधाद् विचित्रान्क्षरणावुधाद् पथेते धार्ष्ट  
 राशूष्य गोधाः सानुगवाहनाः ॥ ३१ ॥ हन्यन्ते समरे सर्वे तथा नीतिविधीयताम् ।

कठिन और-तुमल-युद्धके होनेपर दोनों ओर के घोड़ों के समूह भी चारों ओर से  
 भ्रमण करने लगे, जिनके कि वाण अत्यन्त निवृट मये और घोड़े भी मारे गये  
 उन शूरवीरों ने नाशको पाया । २५ । फिर घोड़ोंकी सेना के नाश होने और कुछ शेष  
 रहजाने पर शकुनी के छोटे भाई महाशूरवीर-युद्ध भूमि में वायुके समान तीव्र  
 स्पर्श युक्त और शीघ्रगामीपने में तीव्र वायु के समान प्रसन्न रूप तट्ठा घोड़ों पर  
 चढ़कर आये, गज, गवाक्ष, वृषभ, चर्मवान, आर्जव शुक यह छत्रों महावीर  
 गान्धारकुनाद युद्ध में दुर्मद बड़ीसेना समेत महा प्रवीण भयानकरूप अतिबली  
 कवच आदि से अलंकृत शकुनि और अपने बड़े २ वीरों से निपेधित होकरभी  
 विजयाभिलाषी हो उस बड़ी कठिन सेनाको चीरकर स्वर्ग के निमित्त युद्ध  
 में आये उस समय पराक्रमी इरावान भी उन राजकुमारों को आया हुआ  
 देखकर अपनेशस्त्र आभूषणोंसे अलंकृत वीर पुरुषोंसे बोला । ३० । कि जिस प्रकार से  
 दुर्योधन के यह सब शूरवीर मारे जायें वही काम तुमको करना उचित है । यह

as swift as the wind cheerful and youthful, Gaj, Gawaksh, Vrishabh  
 Charmvan, Arjav and Shuk, the brave warriors of Gandhar, invin-  
 cible in battle, followed by a large army, very wise, dreadful, very  
 strong, armed with arms and armours, although forbidden by Shakuni  
 and other great warriors, came into the field of battle desirous of para-  
 dise, passing through the impregnable forces. Valliant Iravan, see-  
 ing the advance of those princes addressed his warriors decked with  
 arms and ornaments:—"You should cause the destruction of all these  
 warriors of Duryodhan." Iravan's soldiers obeyed his orders and des-  
 troyed their armies. Seeing the destruction of their warriors by those of  
 Iravan, the sons of Suval, of unbearable temper surrounded him on all  
 sides and rushed upon him with their clubs and battle axes. 35. Wound  
 ed by those warriors and bleeding, Iravan looked like an elephant

धादमित्येवमुक्त्यार्ते सर्वे योधा इरावत ॥३१॥ जघ्नुस्तेर्षावलानीकं बुर्जयन्ममेरये ।  
तदनीकमनीकेन समरे वीक्ष्य पातितम् ॥३२॥ अमृष्यमाणास्तेसर्वे सुवलस्यात्मजारणे ।  
इरावन्तमभिदुत्य सर्वतः पर्यवारयन् ॥ ३४ ॥ ताडयन्तः शितैः प्रासैश्चोदयन्तः  
परस्परम् । ते शूराः पर्यवारयन्त कुर्वन्तो महबाहुलम् ॥ ३५ ॥ इरावानप निर्भिन्न-  
प्रासैरक्षिणैर्महात्मभिः । खड्गवा रुधिरैणाक स्तोत्रैर्विन्द इव द्विपः ॥ ३६ ॥ पुरतोपि  
च पृष्ठे च पार्श्वयोश्च मृशहतः । एको यदुभिरित्यर्थपर्य्याद्वाजन्ने विव्यथे ॥ ३७ ॥  
इरावानपि संदुष्टः सर्वोस्तामिशितैः शरैः । मोहयामास समरे ब्रिध्वा परपुरतय  
॥ ३८ ॥ प्रासानुत्तुष्ट्य तरसा स्वशरीरादरिन्दम् । तैरेव ताडयामास सुवलस्यात्मजा  
मरणे ॥ ३९ ॥ विरुप्य च शितं खड्गं गृहीत्वा च शरत्वरम् । पश्चातिर्दुतमागच्छगि-  
घातु सौवर्णान् युधि ॥ ४० ॥ ततः प्रयागतप्राणाः सर्वे ते सुवलस्यजः । भूय क्रो-

धनकर इरावान् के शूरां ने अंगीकार कर के, उन्हेंकी दुर्जन सेनाको मारा युद्ध में  
इस सेना से मारीहुई अपनी सेनाको देखकर, मड़ा असहिष्णु सुवलके पुत्रों ने  
इनायत को चागे औरसे घेरलिया और बड़े परशों से और परिघोंसे प्रहार करते  
हुए उनके ऊपर दौड़े ॥३५॥ इरावानभी उन वीरोंसे घायन रुधिरमें डूबाहुआ ऐसा  
विदित हुआ जैसे कि दण्डोंसे घायलहार्थी होताहै, हे राजा वह अकेल उन्सबसे  
हाथ छाती पीठ और कुक्षिपर पापल होने पर भी पीड़ित नहीं हुआ, फिर शत्रु  
के पुरको विजय करने वाले अत्यन्त क्रोधयुक्त इरावान् ने भी उन सबको अपने  
तीक्ष्ण बाणों से घायल किया, फिर उस शत्रुइन्ताने अपने शरीर में से सब परशों  
को उखाड़कर उन्ही परशों से सुवलके पुत्रों को घायल किया, इसके पीछे अपने  
तीक्ष्ण खड्ग और दालको धारण करके बड़ी शीघ्रता से उन सुवलके पुत्रों के  
मारनेको पैदलहीगया ४० फिर चैत-यहोकर क्रोधमें भरेहुए वह सब सुवलके पुत्रभी  
इरावान्के सम्मुख गये तब तो इरावान् अपने खड्गकी हस्तसाधवता को दिखलाता

wounded by staffs Wounded by them on his arms, breast, back and  
sides, he was not disheartened in spite of his being alone against so  
many. Then Iravan the conquerer of enemies in great anger wound-  
ed them all with his arrows. And that destroyer of enemies having  
removed weapons from his body, wounded the sons of Suval with  
their own weapons. Then taking up his sharp sword and shield, he  
quickly rushed on foot to slay the sons of Suval 40 The enraged sons  
of Suval carefully encountered Iravan who rushed against them all  
showing the dexterity of his hand. All those princes, riding their  
carriage, could not match him in swiftness of movement and surround-  
ing him on all sides, they desired to capture him. But singly he went  
to them and cut down their limbs 46. They all died of the wounds ex-  
cept one of them who escaped with his life by the great exertion of his

घसमाविष्टा इरापन्तमभिद्रुता ॥ ४१ ॥ इरावानपि खड्गेन दर्शयन् पाणिलाघवम् ।  
 अभ्यवर्त्तत तान् सर्वान् सोधलान् चलद्वपिन ॥ ४२ ॥ लाघवेनाथ चरत सर्वे त  
 सुवलात्मजा । अन्तर नाभ्यगच्छन्त चरन्त शीघ्रगैर्हयै ॥ ४३ ॥ मृषिष्ठमघत सख्ये  
 सम्मददय तत पुन । परिचार्य भूरी सर्वे दृष्टीतुमुपचक्रमु ॥ ४४ ॥ अथाभ्यास  
 गताना स अङ्गेनामिश्रकर्षण । असिहस्ताथापहस्तास्तेषा गात्राण्यकुन्तत ॥ ४५ ॥  
 आयुधाति च सर्वथा बाहुनापित् मृषितान् । अपतन्त विष्टचाफा मृता भूमौ गतासव  
 ॥ ४६ ॥ वृषभस्तु महाराज बहुधा परिरक्षित । अमुच्यत महारौद्राचमार्त्तरीरा  
 यकर्त्तनात् ॥ ४७ ॥ तान् सर्वान् पतितान् दृष्ट्वा सुता पुष्यार्धनस्तथ अभ्यभा  
 यत सकुटो राक्षसघोरदर्शनम् ॥ ४८ ॥ आर्ष्यदृष्ट्वा महेश्यास मायाविनमरिन्दमम् ।  
 वैरिण भीमसेनस्य यथातवकजघेन वै ॥ ४९ ॥ पश्यवीर यथाहोष फाल्गुनस्य सुतोचली ।

हुआ उन सनके सम्मुख दौड़ा, उस समय उन सय पुत्रों ने अपनी जीघ्र गामी  
 सवारियों सेभी उसकी तांत्रताको नहीं पाया, फिर उसको घेरकर मबने पक  
 ढना चाहा, परन्तु उस अकूले महावली नेही पासज, कर उनसब खड्गधनुष धारिणों  
 के अगोंको काटा और अगों के कटतेही वहमघ मृतक होकर पृथ्वीपर गिरे । ४६।  
 हे महाराज इनमें से एक वृषभही इस घोर रूद्र युद्धमें से बड़ी सहायताओं से बच।  
 फिर आपका पुत्रइन शुरवीरोंका भराहुआ देखकर, महाक्रोध में भराहुआ महाबली  
 शत्रुहन्ता मायावी आर्ष्यश्रृंग राक्षस जो कि बकामुर के बघ में भीमसेनका शत्रुथा  
 उम से घोला, हे धीर देसों जैसे कि इसपराक्रमी और मायावी अर्जुन के पुत्र ने  
 विजयकर्म से सेनाके नाश को किया हे सो हे तात तूभी इच्छानुचारी मायावी अस्त  
 विद्या में कुशलही ५०। और पांडवोंसे शत्रुता करनेवाला है इस हेतुसे इस इरावान् को  
 युद्ध में तुम मारो, उसकी आज्ञापातेही वह घोररूप राक्षस बड़ा सिंहनाद करता  
 हुआ अर्जुन के पुत्र के पास गया और दोसहस्र युद्धसे शेष बचेहुए घोडों से  
 महाबली इरावान् के मारने का अभिलाषी हुआ, फिर अत्यन्त पराक्रमी शत्रुहन्ता

assistants Seeing those warriors dead, your son, much enraged said  
 to the deceitful rakshas, Aryashung the mighty destroyer of foes who  
 was Bhim's adversary at the time of his killing Valasur — "Look  
 here, brave warrior! You are cunning, skilful in war, capable of going  
 everywhere at will and an enemy to the Pandavas 50 Kill Iravan in  
 battle as that brave and cunning son of Arjun has conquered and des-  
 troyed my armies " At Duryodhan's command, the dreadful rakshas rush-  
 ed upon Arjun's son with a tremendous roar, wishing to destroy him and  
 his two thousand horse which remained with him after the last battle  
 55 Dexterous Iravan the mighty destroyer of foes, checked the rak-  
 shas desirous of killing him Soon the brave rakshas, seeing his ad-  
 vance, artfully conjured up rakshas' horsemen armed with weapons,  
 and meeting the two thousand horsemen of Iravan both parties des

मायावी विप्रिय घोरं माकार्प्यन्मे धलक्ष्यम् ॥ ५० ॥ तच्च कामगमस्तात मायाखे च  
विशारदः । कृतवैरश्च पार्थेन तस्मादेनं रणे जहि ॥ ५१ ॥ वादमित्येवमुक्त्वा तु राक्षसो  
घोरदर्शनः । प्रययौ सिंहादेन यत्रार्जुनसुतो युवा ॥ ५२ ॥ आरूढैर्युद्धकुशलेर्विमल-  
प्रासयोधिभिः । वीरैः प्रहारिभिर्धुकैः स्वरनोकैः समावृतः ॥ ५३ ॥ ततः शैर्षमेहा  
राज द्विसाहस्रैर्हयोत्तमैः । निहन्तुकामः समरे इरावन्त महाबलम् ॥ ५४ ॥ इरा-  
वानपि संकुद्धस्त्वरमाणः पराक्रमी । हन्तुकाममभिप्रान्नो राक्षसं प्रत्यवारयत् ॥ ५५ ॥  
तमापतन्तं सम्प्रेक्ष्य राक्षसः सुमहाबलः । त्वरमाणस्ततो मायां प्रयोज्यमुपचक्रमे ॥ ५६ ॥  
तेन मायामयाः सृष्टा हयास्तावन्तएवहि । आरूढा राक्षसैर्घोरैः शूलपाट्टिशपाणिभिः  
॥ ५७ ॥ ते संरब्धाः समागम्य द्विसाहस्राः प्रहारिणः । अचिराद्गमयामासुः प्रेतलोकं  
परस्परम् ॥ ५८ ॥ तस्मिंस्तु निहते सैन्ये तापुमौ युद्धदुर्मदी । संप्रामे व्यवतिष्ठतां  
यथा वै वृत्रवाससौ ॥ ५९ ॥ प्राद्वयन्तमभिप्रेक्ष्य राक्षसं युद्धदुर्मदम् । इरावान्  
क्रोधसंरब्धो धारयन् सुमहाबलः ॥ ६० ॥ समश्वासगतस्याजौ तस्य खड्गेन

शीघ्रता करनेवाले इरावान् ने अपने मारने के इच्छावान उस राक्षसको रोका ॥ ५५ ॥  
इसके अनन्तर शीघ्रता से बड़े महाबली राक्षस ने उस आते हुए को देखकर  
मायाको प्रकट किया, अर्थात् उस ने उतनेही मायारूपी घोड़े जिनपर शूल  
पाट्टिश धारण किये हुए घोर राक्षस सवार थे प्रकट किये; फिर उन दो हजार  
क्रोधर प्रहार करनेवालों ने सम्मुख होकर थोड़ेही समय में परस्पर युद्ध करके  
एकने प्रकट प्रेतलोकमें भेजा, उस सेनाके मरने पर वह युद्ध में दुर्मद दोनों ऐसे  
युद्ध करने लगे जैसे कि वृत्रासुर और इन्द्रने युद्ध किया था, उस युद्ध में दुर्मद  
राक्षस को सम्मुख आया हुआ देखकर महाबली इरावान् बड़े क्रोधसे उसके ऊपर  
दौड़ा ॥ ६० ॥ और उस निर्युद्धी के धनुषको अपने खड्ग से काटकर पांच प्रकार के  
पांच वाणों से व्याकुल किया, फिर वह अपने धनुषको दूरा जानकर बड़े क्रोधसे  
इरावान् को अपनी माया से मोहित करके बड़ी तीव्रतासे आकाश में पहुँचा, इस

troyed each other. On the destruction of the two armies, the two war-  
riors fought like Indra and Vritrasur. Seeing the brave rakshas he  
fore him, brave Iravan rushed upon him, and cutting down his bow  
with his sword he wounded him with five arrows of five sorts<sup>57</sup>. Find-  
ing his bow broken, in great anger he deprived Iravan of his reasoning  
and ascended in the air with great rapidity. Iravan too, followed him  
in mid air and cut down his limbs. That best of rakshases, wounded  
again and again became whole of body and youthful in appearance  
like Iravan who knew all Dharm and was invincible and beautiful.  
The maya produced from the bodies of rakshases is youthful and as-  
sumes any form at will. Thus the body of that rakshas, cut again  
and again, became whole. When Iravan cut the body of the brave  
rakshas with arrows and axes again and again, he assumed a form

राजस्तव तेषांच संकुले ॥ ८१ ॥ अज्ञानन्नुनयापि निहतं पुत्रमौरसम् । जघान समरे  
शूरान् राक्षस्तान् भीष्म रक्षिणः ॥ ८२ ॥ तथैव तावका रात्रन् सृष्ट्याश्च सहस्रशः ।  
जुह्वतः समरे प्राणाभिजघ्नुरितरेतरम् ॥ ८३ ॥ मुक्त केशा विक्रवचा धिरया श्चित्रका  
मुक्ताः । बाहुभिः समयुध्यन्तं सम वेताः परस्परम् ॥ ८४ ॥ तथा मर्मातिगैर्भीष्मो निज  
घान महारथान् । कम्पयन् समरे सेनां पाण्डवानांपरंतपः ॥ ८५ ॥ तेन यौधिष्ठिरे  
सैन्ये बहवो मानवा हता । वन्तिनः सादिनैव रथिनोऽप्य हयास्तथा ॥ ८६ ॥ तत्रमारुत  
भीष्मस्य रणे दृष्ट्वा पराक्रमम् । अत्यद्भुतमपद्याम शक्रस्येव पराक्रमम् ॥ ८७ ॥  
तथैव भीमसेनस्य पार्षतस्य च भारतः । रौद्रमासीद्विणेयुद्धं सात्यकस्य च धन्विनः ॥ ८८ ॥  
एष्ट्वा द्रौणस्य चिकीर्षतं पाण्डवान्भयमा विधात् । एक एव रणे शकोनिहन्तु सर्व  
सैनिकान् ॥ ८९ ॥ किं पुनः पृथिव्या शूरैर्योद्यताते समावृतः । इत्यग्रन् महा राज  
रणे द्रोणेन पीडिता ॥ ९० ॥ यत्समनि तथा रौद्रे सन्नामेभरतर्षभ । उभयोः सैनयोःशूरा  
नामृष्यन्त परस्परम् ॥ ९१ ॥ आचिषा इव युध्यन्ते रक्षांसूतामहाबलाः । तावका पाण्डव

इसी रीति से उसयुद्धमें माणों को होमकर सृजो लोगों ने आपके शूरवीरों को पर-  
स्पर में मारा, नंगेशिर कवचों से रहित रथहीन दृष्टे धनुष परस्परमें भिड़ेहुये शूरवीर-  
भुजाओं से युद्ध करनेलगे, इसीप्रकार युद्ध में पांडवों की सेनाको कंपाते हुये पर-  
न्तप भीष्मजी ने मर्म भेदी बाणोंसे महाराधियोंको मारा ॥८५॥ उनभीष्मजी के हाथमे  
युधिष्ठिरकी सेनाके बहुत से रथ हाथी घोड़े नवार और पदाती मारेगये, हे भरत  
वंशी वहां हमने भीष्मके पराक्रमको देखकर इन्द्रके समान उसके अपूर्व बलको  
जाना और इस प्रकार मे युद्धमें भीमसेन धृष्टयुष्म और धनुर्दार सात्यकीकाभी  
युद्धमहा भयानक हुआ, फिर द्रोणाचार्य के पराक्रम को देखकर पांडवोंमें इस  
प्रकारका महाभय उत्पन्न हुआ कि यह अकेलेही द्रोणाचार्य सब सेनाओं के मार  
नेको समर्थ है तो सवपृथ्वी के बड़े २ पराक्रमी शूरवीरों ममेत कैसे न होंगे हे  
भरतर्षभ इसरीति से घोरयुद्धहोने पर दोनों ओरके शूरवीर लोग परस्पर में अस-  
हिष्णु होकर तुम्हारे और पांडवों के शूरसत्री राक्षसआदि अनेक प्रकारके घोर

Bhishma' Seeing the great prowess of Bhishma, we thought him to be equal in strength to Indra. In the same manner, Bhimsen, Dhrishadyumna and Satyaki the great archer fought very bravely. At the sight of the brave deeds of Dronacharya the Pandav armies were so terrified that they thought him alone capable of destroying all the armies and was sure to destroy them all with the assistance of the famous warriors of the world. When the battle was thus raging, the warriors on both sides fought recklessly. Your warriors and those of the Pandavas fought hard in the manner of rāksasas and others.

राजंस्त्व तेषांच संकुले ॥ ८१ ॥ अजानन्नर्जुनयापि निहतं पुत्रमौरसम् । जघान समरे  
 शूरान् रामस्तान् भीष्म रक्षिणः ॥ ८२ ॥ तथैव तादृशं राजन् सृष्ट्याश्च सहस्रशः ।  
 जुह्वतः समरे प्राणाभिजघ्नुरितरेतरम् ॥ ८३ ॥ मुक्त केशो विक्रवचा विरया श्छिन्नका  
 मुंका । बाहुभिः समयुध्यन्त सम वेताः परस्परम् ॥ ८४ ॥ तथा मर्मातिगैर्भीष्मो निज  
 घात महारथान् । कम्पयन् समरे सेनां पाण्डवानां परतपः ॥ ८५ ॥ तेन यौधिष्ठिरे  
 सैन्ये बह्व्यो मानवा हता । दन्तिनः सादिनैव रथिनोऽथ हयास्तथा ॥ ८६ ॥ तत्रभारत  
 भीष्मस्य रणे दृष्ट्वा पराक्रमम् । अत्यद्भुतमपदयाम शक्रस्येव पराक्रमम् ॥ ८७ ॥  
 तथैव भीमसेनस्य पार्षतस्य च भारत । रौद्रमासीद्रेण युद्धं सात्यकस्य च धन्विन ॥ ८८ ॥  
 दृष्ट्वा द्रोणस्य चक्रात् पाण्डवान् भयमा विशतः । एक एव रणे शको निहन्तु सर्वं  
 सैनिकान् ॥ ८९ ॥ किं पुन युधिष्ठा शूरैर्योच्यते समावृतः । इत्यग्रन् महाराज  
 रणे द्रोणेन पीडिता ॥ ९० ॥ यत्समाने तथा रौद्रे सग्रामे भरतर्षभ । उभयोः सेनयोः शूरा  
 नामृष्यन्त परस्परम् ॥ ९१ ॥ आधिष्ठा इव युध्यन्ते रक्षांसूतामहाबलाः । तावका पाण्डवे

इसी रीति से उस युद्धमें प्राणों को होमकर मंजी लोगों ने आपके शूरवीरों को पर-  
 स्पर में मारा, नंगोशिर कवचों से रहित रह्यो न दृष्टे धनुष परस्परमें भिड़े हुये शूरवीर-  
 भुजाओं से युद्ध करते लगे, इसी प्रकार युद्ध में पांडवों की सेनाको कंपते हुये पर-  
 तप भीष्मजी ने मर्म भेदी बाणोंसे महाराथियोंको मारा ॥ ८५ ॥ उनभीष्मजी के हाथमें  
 युधिष्ठिरकी सेनाके बहुत से रथ हाथी घोड़े सवार और पदाती मारे गये, हे भरत  
 वंशी वहाँ हमने भीष्मके पराक्रमको देखकर इन्द्रके समान उसके अपूर्व बलको  
 जाना और इस प्रकार से युद्धमें भीमसेन धृष्टद्युम्न और धनुर्धर सात्यकीकाभी  
 युद्धमहा भयानक हुआ, फिर द्रोणाचार्य के पराक्रम को देखकर पांडवोंमें इस  
 प्रकारका महाभय उत्पन्न हुआ कि यह अकेलेही द्रोणाचार्य सब सेनाओं के मार  
 नेको समर्थ है तो मयपृथ्वी के बड़े २ पराक्रमी शूरवीरों मयेन कैसे न होंगे हे  
 भरतर्षभ इसरीति से घोर युद्ध होने पर दोनों ओरके शूरवीर लोग परस्पर में अत  
 हिष्णु होकर तुम्हारे और पांडवों के शूरक्षत्री राक्षसआदि अनेक प्रकारके घोर

Bhishma ' Seeing the great prowess of Bhishma, we thought him to  
 be equal in strength to Indra In the same manner, Bhimsen, Dhrista-  
 dyumn and Satyaki the great archer fought very bravely At the  
 sight of the brave deeds of Dronacharya the Pandav armies were so  
 terrified that they thought him alone capable of destroying all the ar-  
 mies and was sure to destroy them all with the assistance of the  
 famous warriors of the world When the battle was thus raging, the  
 warriors on both sides fought recklessly Your warriors and those  
 of the Pandavas fought hard in the manner of raksasas and others.

राजस्तथ तेषांच सकुले ॥ ८१ ॥ अजानन्तं नृनृणापि निहतं पुत्रमौरसम् । जवान समरे  
 गूरान् राक्षस्तान् भीष्म रक्षिण ॥ ८२ ॥ तथैव तावका राजन् दृष्ट्वाश्च सहस्रशः ।  
 जुह्वतः समरे प्राणाभिजघ्नुरितरेतरम् ॥ ८३ ॥ मुक्तं केशा विक्रान्ता धिरया श्चिद्रक्षा  
 मुक्ता । बाहुभिः समयुध्यन्त सम वेता परस्परम् ॥ ८४ ॥ तथा मर्मातिगैर्भीष्मो निज  
 धान महारथान् । कम्पयन् समरे सेनां पाण्डवानां परतप ॥ ८५ ॥ तेन यौधिष्ठिरे  
 सैन्ये बहवो मानवा हता । दन्तिनः सादिनश्चैव रथिनोऽप्यह्यास्तथा ॥ ८६ ॥ तत्रमारुत  
 भीष्मस्य रणे दृष्ट्वा पराक्रमम् । अत्यद्भुतमपद्माम शक्रस्थेय पराक्रमम् ॥ ८७ ॥  
 तथैव भीमसेनस्य पार्वतस्य च भारत । रौद्रमासीद्रिणेषु युद्धं सात्यकस्य च धन्विन ॥ ८८ ॥  
 दृष्ट्वा द्रोणस्य चिकित्ता पाण्डवानामयमा विशत् । एक एव रणे शको निहन्तु सर्व  
 सैनिकान् ॥ ८९ ॥ किं पुन पृथिव्या शूरेषां ध्रुवात् समावृतः । इत्यग्रन् महा राज  
 रणे द्रोणेन पीडिता ॥ ९० ॥ चत्समाने तथा रौद्रे सप्रामेभरतर्षभ । उभयोः सैनयो गूरा  
 नानृप्यन्त परस्परम् ॥ ९१ ॥ आधिष्ठा इव युध्यन्ते रक्षांसूनामहाबला । तावका पाण्डवे

इसी रीति से उस युद्ध में प्राणों को होमकर मृत्ती लोगों ने आपके शूरवीरों को पर-  
 स्पर में माग, नगेशिर फवचों से रहित रथहीन दृष्टे धनुष परस्परमें भिड़े हुये शूरवीर  
 भुजाओं से युद्ध करने लगे, इसी प्रकार युद्ध में पांडवों की सेनाको कपति हुये पर-  
 तप भीष्मजी ने मर्म भेदी बाणोंसे महारथियोंको मारा ॥ ८५ ॥ उनभीष्मजी के हाथसे  
 युधिष्ठिरकी सेनाके बहुत से रथ हाथी घोड़े सवार और पदाती मारे गये, हे भरत  
 वंशी वहां हमने भीष्मके पराक्रमको देखकर इन्द्रके समान उसके अपूर्व बलको  
 जाना और इस प्रकार से युद्धमें भीमसेन धृष्टद्युम्न और धनुर्धर सात्यकीकाभी  
 युद्धमहा भयानक हुआ, फिर द्रोणाचार्य के पराक्रम को देखकर पांडवोंमें इस  
 प्रकारका महाभय उत्पन्न हुआ कि यह अकेलेही द्रोणाचार्य सब सेनाओं के मार  
 नेको समर्थ है तो सबपृथ्वी के बड़े २ पराक्रमी शूरवीरों ममेत कैसे न होंगे हे  
 भरतर्षभ इसरीति से घोरयुद्ध होने पर दोनों ओरके शूरवीर लोग परस्पर में अस  
 हिष्णु होकर तुम्हारे और पांडवों के शूरसत्री राक्षसआदि अनेक प्रकारके घोर

Bhishma Seeing the great prowess of Bhishma, we thought him to  
 be equal in strength to Indra In the same manner, Bhimsen, Dhrishtady-  
 dyumn and Satyaki the great archer fought very bravely At the  
 sight of the brave deeds of Dronacharya the Pandav armies were so  
 terrified that they thought him alone capable of destroying all the ar-  
 mies and was sure to destroy them all with the assistance of the  
 famous warriors of the world When the battle was thus raging, the  
 warriors on both sides fought recklessly Your warriors and those  
 of the Pandavas fought hard in the manner of rakshases and others.

राजस्तव तेषांच संकुले ॥ ८१ ॥ अजानन्नुनवापि निहतं पुत्रमौरसम् । जयान समरे  
 शूरान् राक्षस्तान् भीष्म रक्षिणः ॥ ८२ ॥ तथैव तावथा राजन् सृष्ट्याश्च सहस्रशः ।  
 जुह्वतः समरे प्राणाभिजन्तुरिनरेतरम् ॥ ८३ ॥ मुक्त केशा विक्रवचा विरया स्थिन्नका  
 मुका । बाहुभिः समयुध्यन्त सम वेताः परस्परम् ॥ ८४ ॥ तथा मर्मातिगर्भीष्मो निज  
 घान महारथान् । कम्पयन् समरे सेनां पाण्डवानांपरंतपः ॥ ८५ ॥ तेन यौधिष्ठिरे  
 सैन्यं बहवो मानवा हता । दन्तिनः सावित्रश्च रथिनोश्च हयास्तथा ॥ ८६ ॥ तत्रभारत  
 भीष्मस्य रणे दृष्ट्वा पराक्रमम् । अत्यद्भुतमपदयाम शक्रस्येव पराक्रमम् ॥ ८७ ॥  
 तथैव भीमसेनस्य पार्षतस्य च भारत । रौद्रमासोद्ग्रेयुर्दं सात्यकस्य च धन्विनः ॥ ८८ ॥  
 एष्यथा द्रोणस्य चित्राक्षः पाण्डवान्मममा विशतः । एक एव रणे शक्रो निहन्तु सर्व  
 सैनिकान् ॥ ८९ ॥ किं पुनः पृथिव्या शूरैर्गोघ्नैस्तैः समावृतः । इत्यमन् महाराज  
 रणे द्रोणेन पीडिताः ॥ ९० ॥ यत्समाने तथा रौद्रे संग्रामे भरतपम । उभयोः सैनयोः शूरा  
 नामृष्यन्त परस्परम् ॥ ९१ ॥ आधिष्ठा इव युध्यन्ते रक्षोभूनामहायलाः । तावकाः पाण्डवे

इसी रीति में उन युद्धमें प्राणों को होमकर सृंजी सांगों ने आपके शूरवीरों को पर-  
 स्पर में मारा, मंगेश्वर कवचों में रहिन रखीत दृष्ट धनुष परस्परमें भिड़े हुये शूरवीर  
 भुजाओं से युद्ध करने लगे, इसी प्रकार युद्ध में पांडवों की सेनाको कंपाते हुये पर  
 न्तप भीष्मजी ने मर्म भेदी चाणों में महारथियोंको मारा । ८५। उन भीष्मजी के हाथमें  
 युधिष्ठिरकी सेनाके बहुत से रथ हाथी घोड़े सवार और पदाती मारे गये, भरत  
 वंशी वही हमने भीष्मके पराक्रमको देखकर इन्द्रके समान उसके अपूर्व बलको  
 जाना और इस प्रकार में युद्धमें भीमसेन धृष्टद्युम्न और धनुर्दार सात्यकीकाभी  
 युद्धमें भीमानक हुआ, फिर द्रोणाचार्य के पराक्रम को देखकर पांडवोंमें इस  
 प्रकारका महाभय उत्पन्न हुआ कि यह अकेलेही द्रोणाचार्य सब सेनाओं के मार  
 ने को समर्थ है तो मयशुद्धी के बड़े २ पराक्रमी शूरवीरों मरे कैसे न होंगे हे  
 भरतपम इसरीति में घोर युद्ध होने पर दोनों ओरके शूरवीर लोग परस्पर में अस  
 हिम्मा होकर तुम्हारे और पांडवों के शूरक्षत्री राक्षसआदि अनेक प्रकारके घोर

Bhishma' Seeing the great prowess of Bhishma, we thought him to  
 be equal in strength to Indra. In the same manner, Bhimisen, Dhrista-  
 dyumn and Satyaki the great archer fought very bravely. At the  
 sight of the brave deeds of Dronacharya the Pandav armies were so  
 terrified that they thought him alone capable of destroying all the ar-  
 mies and was sure to destroy them all with the assistance of the  
 famous warriors of the world. When the battle was thus raging, the  
 warriors on both sides fought recklessly. Your warriors and those  
 of the Pandavas fought hard in the manner of rāksasas and others.



राजंस्तव तेषांच संकुले ॥८१॥ अज्ञानन्नर्जुनयापि निहतं पुत्रमौरसम् । जयान समरे  
 गुरान् राक्षस्तान् भीष्म रक्षिणः ॥ ८२ ॥ तथैव तादृका राजन् सृष्ट्याश्च सहस्राः ।  
 जुहुवतः समरे प्राणाभिजघ्नुरितरेतरम् ॥ ८३ ॥ मुक्त केशा विक्रवचा धिरया स्त्रिभ्रका  
 मंका । चाहुभिः समयुध्वन्त सम वेताः परस्परम् ॥ ८४ ॥ तथा मर्मातिगैर्भीष्मो निज  
 पान महारथान् । कस्पयन् समरे सेनां पाण्डवानांपरंतपः ॥ ८५ ॥ तेन यौधिष्ठिरे  
 सैन्ये बह्वो मानवा हता । दन्तिनः सादिनश्चैव रयिनोथ हयास्तथा ॥ ८६ ॥ तत्रमारुत  
 भीष्मस्य रणे दृष्ट्वा पराक्रमम् । अत्यद्भुतमपश्याम शक्रस्थेव पराक्रमम् ॥ ८७ ॥  
 तथैव भीष्मसेनस्य पार्षतस्यच भारत । रौद्रमासीद्विणेयुद्धं सात्यकस्यच धन्विनः ॥ ८८ ॥  
 एष्ट्वा व्रीणस्य विक्रांत पाण्डवान्भयमा विधात् । एक एव रणे शकोनिहन्तु सर्व  
 सैनिकान् ॥ ८९ ॥ किं पुनः पृथिव्या शूरैर्योद्धाते समावृतः । इत्यग्रन्महाराज  
 रणे द्रोणेन पीडिता ॥ ९० ॥ यत्समने तथा रौद्रे संग्रामं भरतर्षभ । उभयोः सेनयोः गुरा  
 नामृष्यन्त परस्परम् ॥ ९१ ॥ आविष्टा इव युध्यन्ते रक्षांभूतामहाबलाः । तावकापाण्डवे

इसी रीति से उसयुद्धमें प्राणों को होमकर सृंजी लोगों ने आपके शूरवीरों को पर-  
 स्पर में घारा, नंगेशिर फवचों से रहित रह्यहीन दृष्टे धनुष परस्परमें भिड़ेहुये शूरवीर  
 भुजाओं से युद्ध करनेलगे, इसीप्रकार युद्ध में पांडवों की सेनाको कंपति हुये पर-  
 स्पर भीष्मजी ने मर्म भेदी चाणोंसे महाराथियोंको मारा ॥८५॥ उनभीष्मजी के हाथसे  
 युधिष्ठिरकी सैन्यके बहुत से रथ हाथी घोड़े सवार और पदाती मारेगये, हे भरत  
 वंशी वहां हमने भीष्मके पराक्रमको देखकर इन्द्रके समान उसके अपूर्व बलको  
 जाना और इस प्रकार से युद्धमें भीष्मसेन धृष्टद्युम्न और धनुर्दार सात्यकीकाभी  
 युद्धमहाभयानक हुआ, फिर द्रोणाचार्य के पराक्रम को देखकर पांडवोंमें इस  
 प्रकारका महाभय उत्पन्न हुआ कि यह अकेलेही द्रोणाचार्य सब सेनाओं के मार  
 ने को समर्थ है तो सवृष्टी के बड़े २ पराक्रमी शूरवीरों समेत कैसे न होंगे हे  
 भरतर्षभ इसरीति से घोरयुद्ध होने पर दोनों ओरके शूरवीर लोग परस्पर में अस  
 हिष्णु होकर तुम्हारे और पांडवों के शूरसत्री राक्षसआदि अनेक प्रकारके घोर

Bhishma: Seeing the great prowess of Bhishma, we thought him to be equal in strength to Indra. In the same manner, Bhimsen, Dhrishtadyumna and Satyaki the great archers fought very bravely. At the sight of the brave deeds of Dronacharya the Pandav armies were so terrified that they thought him alone capable of destroying all the armies and was sure to destroy them all with the assistance of the famous warriors of the world. When the battle was thus raging, the warriors on both sides fought recklessly. Your warriors and those of the Pandavas fought hard in the manner of rakshases and others.

राजस्तथ तेषां च संकुले ॥ ८१ ॥ अजानन्नुनथापि निहतं पुत्रमौरसम् । जघान समरे  
 शूरान् राक्षस्तान् भीष्म रक्षिण- ॥ ८२ ॥ तथैव तावका राजन् सुगयाध सहस्राः ।  
 जुह्वतः समरे प्राणाग्निजघ्नुरिनरेतरम् ॥ ८३ ॥ मुक्त केशा विक्रव्या धिर्या शिष्टशका  
 मुक्ताः । वाहुभिः समयुध्यन्त सम वेताः परस्परम् ॥ ८४ ॥ तथा मर्मातिगर्भीष्मो निज  
 घान महारथान् । कम्पयन् समरे सेनां पाण्डवानांपरंतपः ॥ ८५ ॥ तेन यौधिष्ठिरे  
 सैन्ये बहवो मानवा हता । दन्तिनः सादिनश्चैव रयिनोथ हयास्तथा ॥ ८६ ॥ तत्रभारत  
 भीष्मस्य रणे दृष्ट्वा पराक्रमम् । अत्युत्तमपद्याम शक्रस्येव पराक्रमम् ॥ ८७ ॥  
 तथैव भीमसेनस्य पार्यतस्त्र भारतः । रौद्रमासीद्रणे युद्धं सात्यकस्य च धन्विनः ॥ ८८ ॥  
 एष्ट्वा द्रोणस्य चक्रांतं पाण्डवान् मयमा विशतः । एक एव रणे शकोनिहन्तु सर्वं  
 सैनिकात् ॥ ८९ ॥ किं पुनः युधिष्ठा शूरयोधयाति समावृतः । इत्यमन्-महाराज  
 रणे द्रोणेन पीडिता ॥ ९० ॥ वर्तमाने तथा रौद्रे संग्रामे मरुतर्षम । उभयोः सैनयोः शूरा  
 नामुप्यन्त परस्परम् ॥ ९१ ॥ आधिष्ठा इव युध्यन्ते रक्षोभूतामहायलाः । तावकाः पाण्डवे

इसी रीति से उस युद्धमें प्राणों को होमकर मृंजी लोमों ने आपके शूरवीरों को पर-  
 स्पर में मारा, नंगेशिर कवचों से रहित रथहीन दृष्टे धनुष परस्परमें भिड़े हुये शूरवीर-  
 भुजाओं से युद्ध करने लगे, इसी प्रकार युद्ध में पांडवों की सेनाको कंपाते हुये पर-  
 न्तप भीष्मजी ने यर्म भेदी बाणोंमें महाराथियोंको मारा ॥ ८५ ॥ उनभीष्मजी के हाथमें  
 युधिष्ठिरकी सेनाके बहुत से रथ हाथी घोड़े सवार और पदाती मारे गये, हे भरत  
 वंशी वही हमने भीष्मके पराक्रमको देखकर इन्द्रके समान उसके अपूर्व बलको  
 जाना और इस प्रकार से युद्धमें भीमसेन पृष्ठयुग्म और धनुर्धर सात्यकीकाभी  
 युद्धमहोभयानक हुआ, फिर द्रोणाचार्य के पराक्रम को देखकर पांडवोंमें इस  
 प्रकारका महाभय उत्पन्न हुआ कि यह अकेलेही द्रोणाचार्य सब सेनाओं के मार  
 नेको समर्थ है तो सबृद्धी के बड़े पराक्रमी शूरवीरों ममेत कैसे न होंगे हे  
 भरतर्षम इनरीति से घोरयुद्ध होने पर दोनों ओरके शूरवीर लोग परस्पर में अस-  
 हिष्णु होकर तुम्हारे और पांडवों के शूरक्षत्री राक्षमआदि अनेक प्रकारके घोर

Bhishma' Seeing the great prowess of Bhishma, we thought him to  
 be equal in strength to Indra. In the same manner, Bhimsen, Dhrishta-  
 dyumna and Satyaki the great archers fought very bravely. At the  
 sight of the brave deeds of Dronacharya the Pandav armies were so  
 terrified that they thought him alone capable of destroying all the ar-  
 mies and was sure to destroy them all with the assistance of the  
 famous warriors of the world. When the battle was thus raging, the  
 warriors on both sides fought recklessly. Your warriors and those  
 of the Pandavas fought hard in the manner of raksasas and others.

तादृशी मायां राक्षसस्य बुरात्मन ॥ ७१ ॥ इरावानपि संकुद्धो मायां स्रुं प्रचक्रमे ।  
तस्य प्रोधाभि भूतस्य समरेष्व निवर्तिन ॥ ७२ ॥ योन्वयो मातृकस्तस्य स एनमभि  
पेदिवान् । स नागैर्बहुनी राजन् निराशान् संवृतो रणे ॥ ७३ ॥ दधार सुमहदूपमनस्त  
इव भोगवान् । ततो बहुविधैर्नागैश्चाद्यामास राक्षसम् ॥ ७४ ॥ छाद्यमानस्तु नागैः  
स ध्यात्वा राक्षसपुंगवः । सौपर्णं रूपमास्थाय भक्षयामास पथगान् ॥ ७५ ॥ मायया  
भक्षिते तस्मिन् नन्वये तस्य मातृके । विमोदित मिरावन्तं न्यहनद्राक्षसोसिना ॥ ७६ ॥  
सकुण्डले समकुटं पश्येन्नुसदशप्रभम् । इरावन शिरो रक्ष पातयामास भूतले ॥ ७७ ॥  
तस्मिन्स्तु निहते धीरे राक्षसेनार्जुनात्मजे । विशोका समपद्यन्त धार्तराष्ट्रा सराजकाः  
॥ ७८ ॥ तस्मिन् महति संग्रामे तादृशो भैरवे पुनः । महान् व्यतिकरो घोरः सेनयोः  
समपद्यत ॥ ७९ ॥ गजा हयाः पदाताश्च विमिश्रादन्ति मिहनाः । रथाश्च दन्तिनश्चैव  
पत्तिमिस्तत्र सूदिताः ॥ ८० ॥ तथा पत्तिरयौघादच हयाश्च ध्रुवां रणे । रथिभिर्निहतः

हे राजा बहुतसे सर्पोंसे युक्त उस इरावान ने शेषनाग के समान अपने महान् हाथ  
को धारण किया और अनेक नागों से उसराक्षसको घेरा, फिर उस राक्षसों में  
श्रेष्ठने अपना गहड़रूप धारण करके उनघेरहुए सर्पोंको खाया। ७५। माया से उसके  
ननसारी सर्पोंके भक्षणहोजानेपर वह इरावान अचेत हुआ फिर उस अत्यन्त मोहित  
इरावान को राक्षस ने खड्ग से मारकर उसके कुंडल मुकुटधारी चन्द्रमाके समान  
प्रकाशमान शिर को पृथ्वीपर गिराया उसराक्षसके हाथ से उस इरावान के मरने  
पर धृतराष्ट्र के सय पुत्र शोकसे निवृत्त होकर बड़े प्रसन्नहुए, फिर उस भयकारी  
महायुद्ध में दोनों सेनाओं का घोर नाश होना प्रारंभहुआ रथ हाथी घोड़े पदाती  
सवार वह सय परस्पर में युद्ध कर करके और पत्तियों के हाथों में नाशको  
प्राप्तहुये। ८०। इसी प्रकार उसतुल्य युद्ध में आपके और उन्हींके अनेक घोड़े पति  
और रथियों के समूह रथियों के हाथों से मारे गये, और उस पुत्रको मृतक न  
जाननेवाले अर्जुन ने भी भीष्मजी के रक्त उन शूरवीर राजाओं को मारा

Iravan by the rakshas all the sons of Dhritrashtra relieved of sorrow,  
were much pleased. Then in that dreadful war a terrible destruction  
of armies began. Chariots, elephants, horses and foot-soldiers were  
destroyed by the warriors. In that dreadful battle the horses, war-  
riors and chateers of both sides were destroyed by the charioteers. 80.  
Not knowing of the death of his son, Arjun too, destroyed the prince  
who protected Blushin. The Sinjayas, sacrificing their lives in that  
great battle, destroyed your warriors. Warriors destitute of helmets,  
armours, chariots and bows fought against one another with fists.  
Seeing the Pandav armies, mighty Bhisim killed the warriors with  
his arrows piercing the vital parts. 85 Many charioteers, elephant ri-  
ders, horses and foot soldiers of Yudhishtir's army were destroyed by

राजंस्तव तेषां च संकुले ॥ ८१ ॥ अज्ञानमनुनयापि निहतं पुत्रमौरसम् । जघान समरे  
 शूरान् राक्षस्तान् भीष्म रक्षिणः ॥ ८२ ॥ तथैव तादृशं राजन् सृष्ट्याश्च सहस्रशः ।  
 जुह्वतः समरे प्राणाभिजघ्नुरितरेतरम् ॥ ८३ ॥ मुक्त केशो विकवचा विरया शिञ्जका  
 मुक्ताः । चाहुमिः समयुष्यन्त सम वेताः परस्परम् ॥ ८४ ॥ तथा मर्मातिगैर्भीष्मो निज  
 घान महारथान् । कम्पयन् समरे सेनां पाण्डवानां परंतपः ॥ ८५ ॥ तेन यौधिष्ठिरे  
 सैन्ये बहवो मानवा हता । दन्तिनः सादिनश्च रथिनोश्च हयास्तथा ॥ ८६ ॥ तत्रमारुत  
 भीष्मस्य रणे दृष्ट्वा पराक्रमम् । अत्यमुतमपदयाम शक्रस्येव पराक्रमम् ॥ ८७ ॥  
 तथैव भीमसेनस्य पापेतस्य च भारत । रौद्रमासोद्ग्रेण युद्धं सात्यकस्य च धन्विनः ॥ ८८ ॥  
 दृष्ट्वा द्रोणस्य विक्रान्तं पाण्डवान् मयमा विशत् । एक एव रणे शको निहन्तु सर्वं  
 सैनिकान् ॥ ८९ ॥ किं पुनः पृथिव्या शूरैर्विभ्रतैः समावृतः । इत्यमरः महाराज  
 रणे द्रोणेन पीडिता ॥ ९० ॥ यत्तमाने तथा रौद्रे संग्रामे मरतं वम । उभयोः सेनयोः शूरा  
 नामुष्यन्त परस्परम् ॥ ९१ ॥ आविष्टा इव युध्यन्ते रक्षोभूता महाबलाः । तावकाः पाण्डवे

इसी रीति से उस युद्ध में प्राणों को होमकर मृत्ती लोगों ने आपके शूरवीरों को पर-  
 स्पर में मारा, नंगेशिर कवचों से रहित रथहीन दृष्टे धनुष परस्पर में भिड़े हुये शूरवीर-  
 भुजाओं से युद्ध करने लगे, इसी प्रकार युद्ध में पांडवों की सेना को कंपाते हुये पर-  
 स्पर भीष्मजी ने मर्म भेदी चाणों से महारथियों को मारा ॥ ८५ ॥ उन भीष्मजी के हाथ से  
 युधिष्ठिर की सेना के बहुत से रथ हाथी घोड़े सवार और पदाती मारे गये, हे भरत  
 वंशी वही हमने भीष्म के पराक्रम को देखकर इन्द्र के समान उसके अपूर्व बल को  
 जाना और इस प्रकार से युद्ध में भीमसेन धृष्टद्युम्न और धनुर्धर सात्यकी का भी  
 युद्ध महो भयानक हुआ, फिर द्रोणाचार्य के पराक्रम को देखकर पांडवों में इस  
 प्रकार की महोभय उत्पन्न हुआ कि यह अकेले ही द्रोणाचार्य सब सेनाओं के मार  
 ने को समर्थ है तो मयपृथ्वी के बड़े २ पराक्रमी शूरवीरों ममेत कैसे न होंगे हे  
 भरतर्षभ इस रीति से वारयुद्ध होने पर दोनों ओर के शूरवीर लोग परस्पर में मस  
 हिष्णु होकर तुम्हारे और पांडवों के शूरसत्री राक्षस आदि अनेक प्रकार के घोर

Bhishma: 'Seeing the great prowess of Bhishma, we thought him to be equal in strength to Indra. In the same manner, Bhimsen, Dhrishtadyumna and Satyaki the great archer fought very bravely. At the sight of the brave deeds of Dronacharya the Pandav armies were so terrified that they thought him alone capable of destroying all the armies and was sure to destroy them all with the assistance of the famous warriors of the world. When the battle was thus raging, the warriors on both sides fought recklessly. Your warriors and those of the Pandavas fought hard in the manner of rakshases and others.

याश्च संरब्धास्तात धन्विनः ॥ ९२ ॥ नस्म पश्यामहे कंचित् प्राणान्यपरिरक्षति ।  
संग्रामे दैत्यसंकाशे तस्मिन् वीरवरक्षये ॥ ९३ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीमवधपर्वणि अष्टमदिवसयुद्धे  
एकनवतितमोऽध्यायः ॥ ९१ ॥

धृतराष्ट्र उवाच । इरावन्तन्तु निहत इष्ट्वा पार्यामहारथाः । संग्रामे किमकुर्वन्त  
तन्ममाचक्ष्व सञ्जय ॥ १ ॥ सञ्जय उवाच । इरावन्तन्तु निहतं संग्रामे वीर्यराक्षस ।  
व्यनदत् सुमहानादं भैरसेनिर्घटोत्कचः ॥ २ ॥ नदतस्तस्य शब्देन पृथिवीसागरा-  
भ्यरा । स पर्यतवना राजेश्चाल सुभृशं तदा ॥ ३ ॥ धन्तरीक्षं दिशश्चैव सर्वांश्च  
प्रदिशस्तथा । तं भुत्वा सुमहानादं तव सैन्यस्य भारत ॥ ४ ॥ ऊहलम्भ सममघो-  
रपथुः स्वेद पथच । सर्वं पथ महाराज तावका दीनचेतसः ॥ ५ ॥ सर्वतः समवेष्टत  
युद्ध परतो हँ इममे उस देव दानवों के युद्धकी समान संग्राममें किसी को ऐसा न  
देखा जो अपने प्राणों की रक्षाकरताहो ९३ ॥

अध्याय ९० ॥

धृतराष्ट्र बोले कि युद्धमें इरावान् को मरा देखकर पांडवों ने क्या किया उस  
को मुक्त से कहो, संजयबोले कि भीमसेन का पुत्र घटोत्कच राक्षस उस इरावान् को  
युद्धमें मराहुमा देखकर महाध्वनि से गर्जा, उसकी गर्जना से पर्वत और समुद्रों  
समेत पृथ्वी चलायमान हुई, और दिशा विदिशाओं समेत आकाश भी शब्दायमान  
हुमा और उस महाघोर शब्दको सुनकर आपकी सेना में भी सबको मस्वेद हुआ  
और सब धीर महावेदित होकर सब ओरसे ऐसे भयभीत हुए जैसे कि सिंहसे  
भयभीत हाथी होते हैं, उम राक्षस ने इसघोर शब्दको करके, महाज्वलित रूप

We saw none caring for his life in that battle like that of the gods and  
the danavas 93

## CHAPTER XCII

"Tell me Sanjaya," asked Dhritrashtra, "how the Pandavas  
behaved at seeing Iravan dead." "Bhim's son, Ghatotkacha the  
rakshasa," replied Sanjaya, "roared a loud roar at the death of  
Iravan. The earth with her mountains and seas trembled with his  
roar, and all the directions in the sky rang with the echo. The  
bodies of your warriors were covered with sweat to hear that dread-  
ful sound. The warriors of your army were afraid of that sound as  
elephants are at the roar of a lion. Having made that roar the  
rakshasa lifted up his spear, and in a dreadful form, accompanied by  
armed rakshasas, enraged like Death, began to strike. Seeing that

सिंहाद्रीता गजा इव समुद्धानां निर्घातमिव राक्षसः ॥ ६ ॥ ज्वलितं शूलमुद्यम्य रूपं  
 कृत्वा विभीषणम् । नानारूपमहरणैर्वृतो राक्षसपुङ्गवे ॥ ७ ॥  
 आजघान सुसं कुडः कालान्तकयमोपमः । तमापतन्तं सम्प्रेक्ष्य संकुड  
 भीमदर्शनम् ॥ ८ ॥ स्वं बलञ्च भयात्तस्य प्रायशो विमृषीकृतम्  
 । ततो दुर्योधनो राजा घटोत्कचमुपाद्रवत् ॥ ९ ॥ मृगहा विपुलं चापं सिंह  
 वद्वयनदन्मुहुः । शृष्टोनुययौ चैनं धवद्भिः पर्वतोपमैः ॥ १० ॥ कुञ्जरैर्दंशसा-  
 दैर्देवद्वानामधिपः स्वयम् । तमापतन्तं सम्प्रेक्ष्य गजानीकेन संवृतम् ॥ ११ ॥ पुत्रतय  
 महाराज धुकोप स निशाचरः । ततः प्रवृत्ते युद्धे तुमुलं रोमहर्षणम् ॥ १२ ॥  
 राक्षसानाञ्च राजेन्द्र दुर्योधनबलस्यच । गजानीकञ्च सम्प्रेक्ष्य मेघवृन्दमिवाद्यतम्  
 ॥ १३ ॥ नश्यधावन् सुसंकुडा राक्षसाः शस्त्रापाणयः । नदन्तो विविधान्नादान्मेघा  
 इव सविधुतः ॥ १४ ॥ शरशकृष्टिनाराचैर्निग्नन्तो गजयोधिनः । मिन्दिपालैस्तथ  
 शूलको धारण कर उग्ररूप होके नाना प्रकार के रूप और शस्त्रधारी राक्षसों को  
 सायलिये काल मृत्यु के समान क्रोधी होकर मारना प्रारंभ किया इसक्रोधयुक्त भया-  
 नक रूप राक्षसको आता देखकर, और उसके भयसे अपनी सेना का मुख फेरना  
 देखकर राजा दुर्योधन बड़े भारी धनुषको लेकर सिंह के समान गर्जना करता  
 हुआ घटोत्कचके सम्मुख गया इसके पीछे वंगदेशियों का राजा चलते हुए पर्वता-  
 कार दशहजार हाथियों को साथलेकर गया उस हाथियों की सेना समेत  
 आपके पुत्रको देखकर वह रक्तसमहाक्रोधाग्निरूप होगया ॥ ११ ॥ फिर रोमहर्षण  
 महातुमुल युद्ध जारी हुआ, उस समय राक्षसों से और आपकी सेनासे युद्ध होने लगा  
 फिर बादलों के समूहों के समान युद्ध में प्रवृत्त हाथियों की सेना को देखकर, विजली  
 से अनेक शस्त्रों को धारण किये हुए बादलों के समान गर्जनाकरते हजारों राक्षस  
 सम्मुख दौड़े, बाण बरली दुधारास्त्रह्य नाराच मिन्दिपाल शूल सुदृगर और परशो

angry rakshas of dreadful visage coming towards him and seeing as well  
 the return of his army by his fear, Prince Duryodhan took up his  
 heavy bow and with a lion's roar faced Ghatotkach Then the king  
 of Bang with ten thousands of elephants like moving hills, went  
 to the help of your son. Seeing Duryodhan accompanied by that  
 army of elephants, the rakshas became red like fire with anger. 11.  
 Thereupon a furious battle ensued between your armies and the  
 rakshases Spread like a mass of clouds was the army of elephants to  
 which the rakshases came armed with weapons like lightning and  
 roaring like thunder. Arrows, spears, double edged swords, naraches,  
 Bhindpals, darts, clubs and battle axes were used by the rakshases  
 to destroy the riders and hills and trees to destroy the elephants.  
 We saw, O king, elephants with heads broken by the rakshases,  
 falling down on earth with the loss of blood. When the elephants,

शलेर्मुद्गरं सपरिद्वधे ॥ १९ ॥ पर्वताग्रैश्च वृक्षैश्च निजघ्नस्ते महागजान् । भिन्नकुम्भान् विरुधिरान् भिन्नगात्राश्च घारणान् ॥ १६ ॥ अपर्याप्तं महागजं वध्यमानान्निशाचरं । तेषु प्रक्षीयमाणेषु भग्नेषु गजयोधिषु ॥ १७ ॥ दुर्योधनो महारानराक्षसान् समुपादधत् । अमर्षवशमापन्नस्त्यक्त्वा जीवितमात्मन ॥ १८ ॥ सुमोच निशितान् पाणान् राक्षसेषु परमं जघान च महेश्वास प्रधाना स्तत्र राक्षसान् ॥ १९ ॥ सकुट्वा भरतश्च पुत्रा दुर्योधनस्तथ । देगवन्त महाराट् । षष्ठिहय प्रमाथिनम् ॥ २० ॥ शरैश्चतुर्भिश्चतुरा निजघान् महाबल । तत पुनरमेयात्मा शरवर्षं दुरासदम् ॥ २१ ॥ सुमोच भरतश्च निशाचरबलं प्रति । तत्तु हृष्ट्वा महत्कर्म तव पुत्रस्य मारिष ॥ २२ ॥ नाधनामि प्रज्ज्वाल भैमसेनिर्महायल ।

इत्यादि शस्त्रोंने हाथियों के सर्वांगों को मारकर उन राक्षसों ने पर्वत और वृक्षा से हाथियों को मारा हे राजा हमने राक्षसों के हाथसे दृष्टेहुए मत्तकों-समेत हाथियों को रुधिर से रदित होकर मरा हुआ देखा उन हाथी और हाथीवानों के पराजित होने पर, महातोषक रूप होके दुर्योधन आने जीवनकी आशाका त्यागकर उन राक्षसों के सम्मुख गया हे शत्रुमर्ष उस बड़े धनुषधारी दुर्योधन ने वहाँ जाकर अपने तीक्ष्ण शस्त्रों की वर्षासे बड़े २ राक्षसों को मारकर अपने महातीव्र चारवाणों से उसमहाभयकर धोरूपवाले घटोत्कचको घायल किया ॥ २१ ॥ फिर वह राक्षस इन्द्रधनुष के समान अपने धनुषको खिंचकर, बड़ेबड़े दुर्योधन के सम्मुख गया उसमृत्यु समान रान्तस वो आता हुआ देसकर आपका पुत्र दुर्योधन पीड़ामूर्त नहीं हुआ तब अत्यन्त रक्तनेत्र कोपसे युक्त वह राक्षस इसमे कहने लगा कि अगम्य उन अपने माता पितामे शत्रुण होजाऊगा जिनको कि तुम्हानेईसी ने बन्वासी किया, और

and then riders were vanquished Duryodhan much enraged and despairing of his life fixed the rakshas and O destroyer of foes the great archer Duryodhan having destroyed great the rakshases with the shower of his arrows wounded Ghatotkach the dreadful rakshas 21 Then drawing his bow he O foe of India the rakshas rushed upon Duryodhan Your son Duryodhan was not disheartened at the sight of the rakshas coming upon him like Death and the latter with eyes flooded red in anger said — Now I shall be able to satisfy the debt of my parents whom by your cruelty you sent into exile and deathfully when in distress. Smug wretch it was you who brought Draupadi into court while she was in her nuptial courses wearing the garland. Your well wisher foolish Jayadrath disregarding my parents absconded

स विस्कार्य मद्वापमिन्द्राशनिसमप्रभम् ॥ २३ ॥ अमिदुद्राय पेगेन दुष्योधन  
मर्दिमम् । तमापतन्तमुदीक्ष्य कालसृष्टमिवान्तकम् ॥ २४ ॥ न विन्यथे महाराज पुनो  
दुष्योधनस्तव अथैनमत्रवीत् क्रुद्ध क्रोधसरत्तलोचन ॥ २५ ॥ अद्यान्वप गमिष्यामि  
पितृणां मतुर्यच । ये त्वया सुनुशसेन दीर्घकालं प्रवासिता ॥ २६ ॥ यच्च ते  
पाण्डवाराजं लल यूते पराजिता । यच्चैत्र द्रौपदी कृष्णा एकवर्णा रजस्वला ॥ २७ ॥  
समामानीय दुर्दुर्द वहुधा फटेशिता त्वया । तत्र च प्रियकामेन आश्रमस्या दुरात्मना  
॥ २८ ॥ सैन्यधेन परामृष्टा परिभूय पितृन् प्रभ । पतेषामपमानानामन्येषाव कुलाधम  
॥ २९ ॥ अन्तमद्य गमिष्यामि यदि नोत्सृज्यसे रणे । परा मुक्त्वा तु हेडिम्नो महीद्वि  
स्कार्य कामुकम् ॥ ३० ॥ सन्दश्य दशनैरौष्ठ सुक्किणी परितलितहृत् महता शरवर्षेण  
दुष्योधनमघाकीरत् । परंतं वरिध्यामि प्रावृषाव बलाहक ॥ ३१ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि द्वावदशे

द्विचरितमोऽध्यायः ॥ ९२ ॥

संजयदवाच तत्तत्तद्वानुत्तु सहदात्र वैरपि । द्वावरयु धिराजेंद्रो यथार्थं  
महाद्विष ॥ १ ॥ तत क्रोधसमा विष्टानि श्वस्तत्रिब्रजगः । सशयं परमप्राप्त  
पुत्रन्तेमरतर्षभ ॥ २ ॥ सुमोचनिशितास्त्री क्षणाशराचान्यं चर्चिषति । तेऽपतन्त

छलसे घूतमें जीता और पापात्मा निबुद्धी एकस्त्रा रजस्वला कृष्णाद्रौपदी को जो  
तुमने सभा में लाकर महादुःखित किया और तेरे अर्थ चाहनेवाले दुर्दुद्धी जयद्रथ  
ने मेरे पितालोगों को निरादर करके आश्रम में नियत द्रौपदी को पकड़ कर  
हरण किया हे कुलध्वंसी महानीच उन अपराधों का फल मैं अब तुमको देकर  
उनका मनीकार पाऊंगा, फिर आठों को चबाकर घटोत्वक ने धनुष को खिंचकर  
मारे बाणों के दुष्योधन को ऐसे दकादिया जैसे कि वर्षा ऋतु में बादल जलकी  
धाराओं से पर्वत को दक देते हैं ॥ २९ ॥

अध्याय २३ ॥

संजय बोले कि इसके अनन्तर राजा दुष्योधन ने दानवोंसे भी असह्य उन  
बाणों की वर्षा को ऐसे सहा जैसे कि बड़ाहाथी पानी की वर्षा को सहलता है हे  
भरतवंशी इसक पीछे क्रोधमें पूर्ण सर्प की समान आसन्नेते हुए आपके पुत्रने बड़े

with Draupadi from the hermitage into the forest. Mean wretch,  
curse of thy family, I shall now give you the reward of your wicked  
deeds. Then biting his lips in anger, Ghatotkach drew his bow and  
covered Duryodhan with his arrows as clouds hide a hill with the  
shower of rain" 29

### CHAPTER XCIII

Sanjaya said — 'Prince Duryodhan bore the shower of arrows,  
unbearable by Dantya, as an elephant stands under a shower of rain.  
Then filled in anger and sighing, your son in a great suspense, dis



इसाराजस्तस्मिन् राक्षसपुगवे ॥ ३ ॥ आशी विषाद्वक्त्रा पर्वते गन्धमादने । सते  
 विन्द स्रघ्न रक्तप्रभिन्नश्चकुजर ॥ ४ ॥ दधेमर्तिविनाशाचराह सपि शिताशन  
 । जग्राह च महा शक्ति गिरीणाम् दक्षिणौ ॥ ५ ॥ सप्रदीप्तामहोत्कामा मशानि  
 ज्वलिताभिः । समुदिच्छन्महा बाहुर्जिघासुस्तनयंतव ॥ ६ ॥ तामुद्यतामभिप्रे  
 क्ष्यवंगानामधिपस्त्वयम् । कुजर गिरिशकाशराक्षसं प्रत्यचोदयत् ॥ ७ ॥ सनाग  
 प्रवरणाजौ धलिना शीघ्रगामिना । ततो दुर्योधनरथस्तं मार्गं प्रत्यधर्तत् ॥ ८ ॥  
 रथच बारयामास कुजरेण सुतस्यते । मार्गमावारित दृष्ट्वा राक्षसवंगेनर्धा मता  
 ॥ ९ ॥ घटोत्कचो महाराज क्रोधस रक्तलोचन । उद्यतांता महा शक्ति तस्मि  
 न्निक्षेपधारण ॥ १० ॥ सतयभिहतो राजंस्तेन बाहुप्रमुकया । संजातरुधिरो तपीड  
 पपात चममारच ॥ ११ ॥ पतत्यधगजे चापि वंगानामीश्वरोबली । जयेमसमभिद्रु

सन्देहसे युक्त होकर पच्चीस नाराचोंको छोड़ा वह नाराच बाण उस राक्षस पर ऐसे  
 जाकर गिर, जैसीकि गन्धमादन पर्वतपर क्रोधयुक्त सर्प गिरते हैं उन बाणोंसे घायन  
 मद्बाले हाथीक समान रुधिरगिरते, उस मांसाहारी राक्षस ने राजा के मारने  
 का विचार किया और पर्वतोंके चीरने वाली घड़ी बरछी को लिया । ५। फिर आपके  
 पुत्र के मारने के लिये उस महाबाहु ने उस महाघोर उलकाके समान प्रकाशमान  
 बरछी को उठाया उस समय महाशीघ्रता करने वाले वंगदेशी राजाने उस उठाई  
 बरछी को देखकर पर्वताकार अपने हाथी को उस राक्षस के ऊपर चलाया और  
 उस शीघ्रचलेनवाले हाथी के द्वारा आप उस मार्ग में वर्तमान हुआ जिधर दुर्योधन  
 का रथया अर्थात् उस हाथी से आपके पुत्र के रथको मुसकरदिया उस वंगदेशके  
 राजा करके मार्गको बन्द देखकर घटोत्कच ने महा क्रोधित होकर उस उठाई हुई  
 बरछी को हाथीपर फेंका । १०। उस बरछी के प्रहार से वह हाथी महापीडित होकर

charged twenty five arrows which fell over the rakshas like angry  
 serpents on Gandhamadna hills Wounded by those arrows and en-  
 raged like a mad elephant with the blood dropping down, the can-  
 nibal rakshas thought of destroying the king and took up a spear  
 which could pierce a hill 5. Then that brave warrior raised up the  
 dreadful spear, bright like fire, to kill your son Seeing this the king  
 of Bang rushed against Bhim with his elephant huge like hill and  
 came between him and the chariot of Duryodhan Seeing the king  
 of Bang impeding the way, Ghototkach in a rage hurled the spear at  
 the elephant which struck by the dart fell down dead by the  
 wound The king of Bang hastened to jump down from the falling  
 elephant 10 Duryodhan, seeing the fall of the huge elephant and the  
 turning back of the army, was much disheartened, and remembering  
 the duties of a warrior stood firmly as a hill even when the soldiers

त्यजगाम धरणीतलम् ॥ १२ ॥ दुर्योधनोपि सम्प्रेक्ष्य पतितं धरवारणम् । प्रभग्नश्च  
 चलं दृष्ट्वा जगाम परमां व्यथाम् ॥ १३ ॥ क्षत्रधर्मं पुरस्कृत्य आत्मनश्चामिमानिताम् ।  
 प्रातेपक्रमणे राजा तस्थौ गिरिरिवाचलः ॥ १४ ॥ सन्धाय च शितं वाणं फालाग्निसम  
 तेजसम् । मुमोच परमक्रुद्धस्तस्मिन् घोरे निशाचरे ॥ १५ ॥ तमापतन्तं सम्प्रेक्ष्य वाण  
 मिन्द्राशनिप्रमम् । लाघवान्मोचयामास महात्मा वै घटोत्कचः ॥ १६ ॥ भूयश्च विनता  
 शोभं क्रोधसंस्कलोचनः । आसयामास सैन्यानि युगान्ते जलदो यया ॥ १७ ॥ तं युत्वा  
 निनदं घोरं तस्य भीमस्य रक्षसः । आचार्य्यमुपसङ्गम्यभीष्मः शान्तनवोपब्रवीत् ॥ १८ ॥  
 यथैष निनदो घोरः भूयते राक्षसेरितः । द्वैडिम्यो युध्यते नूनं राजा दुर्योधनेन ह ॥ १९ ॥  
 नैव शक्यो हि संप्राप्ते जेतुं भूतेन केनचित् । तत्र गच्छत भद्रं यो राजानं परिरक्षत  
 ॥ २० ॥ अभिदुतो महामागो राक्षसेन महात्मना । पताद्विचः परं कृत्यं सर्वेषां नः पर-  
 न्तवा ॥ २१ ॥ पितामहवचः श्रुत्वा त्वरमाणा महारथाः । उत्तमं जवमास्थाय प्रययुर्धम  
 गिरकर मर गया फिर वह बंगदेशी बलवान् राजाभी बहुत शीघ्र हाथी में उल्लङ्कर  
 पृथ्वीपर पड़ी तीव्रता से गया, दुर्योधन ने उत्तारे हुये बड़े हाथी को और सेना के  
 हटाने को देखकर बड़े खेद को पाया, और राजा दुर्योधन क्षत्री धर्म को विचार  
 अपने अहंकार को करके सेना के भाग जाने पर भी पर्वत के समान अचल होकर  
 युद्ध में लड़ाई, फिर महाक्रोधित होकर बड़े धनुष को खेंचकर एक बड़े तीक्ष्ण वाण  
 को उस राक्षस पर छोड़ा ॥ १५ ॥ उस इन्द्र वज्र के समान आते हुये वाण को देखकर घटो  
 त्कच ने बड़ी हस्तलाघवता से निष्फल कर दिया और लालनेत्र करके बड़े क्रोध  
 पूर्वक भयानक शब्द से गर्ज ॥ को करके सेना को ऐसा भयभीत कर दिया जैसे  
 कि मलय काल में बादल सबको भयसे पीडित करते हैं, उस राक्षस के उस ओर  
 शब्द को सुनकर शान्तनु के पुत्र भीष्मजी द्रोणाचार्य के पास जाकर बोले कि  
 यह राक्षस का घोर और भयानक शब्द सुना जाता है निश्चय करके यह घटोत्कच  
 ही राजा दुर्योधन से लड़ता है युद्ध में इस राक्षस को कोई जीव विजय नहीं कर सका  
 है आपका श्रेय हो आप वहीं जाकर गजा की सब ओर से रक्षा करो ॥ २० ॥ वह महाभाग  
 दुर्योधन बड़े साहसी राक्षस से लड़ता है हे शत्रु संतापियो तुम्हारा और हम सब का

had left him. Then in a rage drawing his huge bow, he discharged a sharp arrow at the rakshas 15 Seeing that arrow coming towards him like the vajra of Indra, Ghatotkach made it futile by his swift movement and with eyes red in anger roaring a dreadful roar, terrified the armies as the clouds of *pralaya* do Hearing the tremendous roar of the rakshas, Bhishm the son of Shantanu came to Dronacharya and said, "We hear the deep and dreadful roar of the rakshas, surely Ghatotkach in fighting with Prince Duryodhan, No mortal can vanquish the rakshas in battle. Go there in person and protect the king, may you be happy 20. Great Duryodhan is fighting with the dreadful rakshas. It is our duty to protect the king, O destroyer of

कीरव ॥ २२ ॥ द्रोणश्च सोमदत्तश्च बाह्लीकोऽप्यजयद्रथ । कृपो भूरिश्रवा शल्य  
 भावन्त्य सवृहद्वल ॥ २३ ॥ अश्वत्थामा विकर्णश्च चित्रसेनो विविशति । रथाश्चा  
 नेकसाहस्राधे तेषामनुपायिन ॥ २४ ॥ अभिद्रुत परीप्सन्त पुन दुर्योधन तव ।  
 तदनीकमनादृग्धं पालितन्तु महारथैः ॥ २५ ॥ आततायिनमायान्त प्रेक्ष्य राक्षससत्तम ।  
 नाकम्पत महाबाहुर्मताक इव पर्वत ॥ २६ ॥ प्रगृह्य विपुल चाप क्षतिभि परिवारित ।  
 शूलमुद्गरहस्तैश्च नानाप्रहरणैरपि ॥ २७ ॥ तत समभवद्युद्ध तुमुल लोमहर्षणम् ।  
 राक्षसानान्च सुर्यस्य दुर्योधनवलस्य च ॥ २८ ॥ धनुषा कूजता शब्द सर्वतस्तु  
 मुलो रणे । अश्रुतमहाराज यशाना दह्यतामिव ॥ २९ ॥ अस्त्राणां पात्यमानानां  
 कवचेषु शरीरिणाम् । शब्द समभवद्राजन् गिरिणामिव भिद्यताम् ॥ ३० ॥ वीरबाहु  
 विखुराणा तोमराणा विशाम्पते । रूपमासीद्विद्यत्स्थाना सर्पाणामिव सर्पताम् ॥ ३१ ॥

भी उत्तमकर्म है पितामहके इसरचनको घुनकर शीघ्रता करनेवाले महारथी द्रोणा  
 चार्य सोमदत्त बाह्लीक जयद्रथ कृपाचार्य भूरिश्रवा शल्य अश्वत्थामा विकर्ण  
 चित्रसेन विविशति और हजारों उनके पीछे चलने  
 वाले रथ वह सब मिले हुये आपके पुत्र दुर्योधन की रक्षा के लिये वहां गये जहां  
 राजादुर्योधन था ॥ २५ ॥ फिरवह राक्षसोत्तममहाबाहु घटोत्कच उस दुर्जय महारथियों  
 से राक्षित मारनेकी इच्छा रखने वाली सेनाको आताहुआ देखकर मेनाक पर्वत के  
 समान भयभीत नहीं हुआ, और शूल मुद्गर आदि अनेकप्रकार के हथियारी  
 राक्षसोंसे युक्त घटोत्कच बड़े धनुषको खैचकर खड़ाहुआ, फिरघटोत्कच और दुर्योधन  
 की सेना का महारोमहर्षण युद्ध जारी हुआ उस समय हे राजा धनुष की टंकारों  
 के महाकठिन शब्द चारोंओर से ऐसे सुनाई दिये जैसे कि जलतेहुये बांसों के  
 शब्द होतेहैं, और शरीर के कवचों पर लगनेवाले अस्त्र शस्त्रों के भी ऐसे शब्द  
 होतेथे जैसे कि फटेहुये पहाड़ों के महाशब्द होतेहैं ॥ ३० ॥ हे राजा वीरोंकी भुजाओं से

foes!" (Hearing the words of the grandfather, dexterous Dronacharya together with Somdatta, Vahlik, Jayadrath, Kripacharya, Bhurisshrava, Shalya, Brahmadatta the prince of Avanti, Ashvathama, Vibarn Chitrseen, Virishnati and thousands of others riding on chariots, went to help Duryodhan and reached the place where Duryodhan was 25 Then Ghatotkach the best of rakshases, seeing that army protected by those warriors coming to destroy him was not moved like Menak hill. Assisted by rakshases armed with spears and clubs, Ghatotkach stood with his bow drawn. The battle was severe between the armies of Ghatotkach and Duryodhan. The hard sounds from the twanging bows were heard on all sides like the burning of bamboos and the sounds of striking the weapons on the bodies were like the rending of mountains. 30 The tomars hurled by warriors looked like serpents running in the sky. Then much engaged and roaring dreadfully, the prince of rakshases taking up his huge bow cut down with a half moon shaped dart the

ततः परमसंकुशो विस्फार्य्य सुमहद्भुजः । राक्षसेन्द्रो महाबाहुर्विनश्य मेरुं रयम् ॥ ३२ ॥ आचार्यस्यार्द्धचन्द्रेण कुक्षिच्छेदं कारुणिकम् । सोमदक्षस्य भल्लेन ध्वजञ्चोन्मथ्य चानदत् ॥ ३३ ॥ बाह्यलीकञ्च त्रिभिर्बाणैः प्रत्यविष्यत् स्तनान्तरे । रुपमेकेन विव्याध चित्रसेनं त्रिभिः शरैः ॥ ३४ ॥ पूर्णापतयिच्छ्रेण सम्यक्प्रणिहितेन च । जघ्रु देशं समासाद्य विकर्णं समताडयत् ॥ ३५ ॥ न्यपीदत् स्व रथोपस्थे शोणितेन परिप्लुतः । ततः पुनरुत्थात्मा नाराचोद्वा पञ्च च ॥ ३६ ॥ मूर्ध्नि श्रवांसि संकुक्षः प्रादिहोद्भरतर्षभ । ते धर्मं भित्त्वा तस्याशु विविशुर्धरणीतलम् ॥ ३७ ॥ विधिशतेषु द्रौमेधयन्तारौ समताडयत् । तौ पेतुरथोपस्थे रश्मिनुत्सृज्य धाजिनाम् ॥ ३८ ॥ सिन्धुराष्टोर्द्धचन्द्रेण घाराहंस्वर्णभूषितम् । उन्मथाममहाराज द्वितीयेनाच्छिन्नजनुः ॥ ३९ ॥ चतुर्मिरथ नाराचै रावन्त्यस्य महात्मनः । जघान चतुरो बाहान् क्रोधसंरक्तलोचनः ॥ ४० ॥ पूर्णापतयिच्छ्रेण पीतेन निशितेन च । निर्विभेदं महाराज राजपुत्रं पृष्ठद्वलम् ॥ ४१ ॥

फेंके हुये तोमरांके ऐसे रूप दिखाई दिये जैसे कि आकाश में चनतेहुये सपों के आकार दिखाई देतेहैं इसके पीछे अत्यन्त क्रोधरूप भयकारी गर्जना करतेहुये उस राक्षसों के राजा ने बहुतबड़े धनुष को लेकर, अर्द्धचन्द्र नाम धाणंमे द्रोणाचार्य के धनुषको काटके भल्ल से सोमदक्ष की ध्वजाको तोड़ता हुआ महा गर्जना करके बाह्यलीक को तीन बाणमे छाती परचायल किया और एक बाणसे कृपाचार्य को तीन बाणसे चित्रसेन को, घायन करके कानतक तैचेहुए बाणसे विकर्णको घायल किया ॥३५॥ फिर बहविकर्ण रुधिर भरे देहसेरथमें बैठा इसके पीछे उस पराक्रमी ने पन्द्रह नाराच भूरिश्रवा पर फेंके वह नाराच उसके कवचको काट कर पृथ्वी पर गिरे, फिर निर्विशति और अश्वत्थामा के सारथियों को घायल किया जिसके मारे वह घोड़ों की रस्सियों को छोड़कर पृथ्वी पर गिरपड़े और अर्द्धचन्द्र बाणसे राजा सिन्धुके मुनहरी वाराहको और दूसरेबाण से उसके धनुष को काटा, फिर क्रोध से अत्यन्त रक्तनेत्र ने आने चार नाराचों से महात्मा राजा

low of Dronacharya, and cutting down with an arrow the banner of Somdatt, he wounded Vahlik with three arrows in the breast with a loud roar. And wounding Kripacharya with one arrow and Chitra-sen with three he pierced Vikarn with his arrows discharged from his bow drawn to the ear. 35. Blood flowed down from the wounds of Vikarn seated in the chariot. Then that warrior discharged fifteen arrows at Bhurishrava and they fell down on the ground piercing through his armour. Then he wounded the chariot drivers of Vivinshati and Ashwathama and they fell down from their seats leaving the reins of horses. With a Half-moon-shaped arrow he pierced the loar of the king of Sindh and with another he cut down his low. Then with eyes red in anger he killed the four horses of the king of Avanti with four darts. And with a sharp arrow he

स गाढविद्धो व्यथितो रथोपस्थ उपाविशत् । भृशं क्रोधेन चाविष्टो रथस्थो राक्षसा  
विपः । ४२॥ चिक्षेपनिशितांस्तीक्ष्णाञ्छरानाशीविपोपमान् । विभिदुस्तेमहाराज शल्यं  
युद्धविशारदम् ॥ ४३ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि हैहिव्ययुद्धे

त्रिनवतितमोऽध्यायः ॥ ९३ ॥

संजय उवाच ॥ विमुखीकृत्य सर्वास्तु तावकान् युधि राक्षसः । जिघांसुर्भरत  
श्रेष्ठ दुर्योधन मुपाद्रवत् ॥ १ ॥ समापतन्तं सम्प्रेक्ष्य राजानं प्रति वेगितम् । अभ्यधावन्  
जिघांसन्तस्तावका युद्धदुर्मदाः ॥ २ ॥ तालमात्राणि चापानि विकर्षन्तो महात्माः ।  
तमेकमभ्यधावन्त नदन्त सिंहसंघयत् ॥ ३ ॥ अथैनं शरवर्षेण समन्तात् पर्यवाकिरन्  
पर्यन्तं धारिधाराभिः शरदीव यत्नाहकाः ॥ ४ ॥ स गाढविद्धो व्यथितः क्षोभार्द्रित इव  
द्विपः । उत्पपात तदाकाशं समन्ताद्वैनतेयवत् ॥ ५ ॥ व्यनदत् सुमहानादं जीमूत इव

अचान्तिके चारों घोड़ों को मारा हे महाराज फिर बड़े तीक्ष्ण बाणसे राजा बृहद्रथको  
घायल किया वह भी महा घायल होकर रथमें बैठ गया फिर रान्तासाधिप घटोत्कचने  
सर्पाकृति अनेक बाणों से राजाशल्यको व्यथित किया ४३ ॥

अध्याय ९४ ॥

संजय बोले कि फिर वह राक्षस आपके सब योद्धाओं को युद्ध में भगाकर  
मारने की इच्छा से दुर्योधनके सम्मुख दौड़ा, उस राक्षस को राजा के ऊपर आता  
दंष्टर मारने के इच्छावाने युद्ध में दुर्मद आपके भी शूरवीर उसके सम्मुख दौड़े,  
यह मन घीर ताल वृक्षके समान धनुषोंको खेंचेहुए सिंहोंके समान गर्जना करते हुए  
उप अंकले के ऊपर दौड़े, ओर बाणों की वर्षा से उसको चारों ओरसे ऐसे ढकीदया  
जैसे कि शरद ऋतु में यत्नाहक नाम बादल अपनी जल धाराओं से पर्वत को ढक  
देते हैं । ५। दण्डने घायल हाथी के समान वह अत्यन्त घायल घटोत्कचगड्ढके समान

pierced prince Brahadvai who sat down much wounded in his chariot.  
Then Ghatotkach the prince of rakshases wounded Shalya with  
several arrows like serpents" 47.

### CHAPTER XCIV

Sanjaya said:—"Having put all your warriors to flight, the rak-  
shas desirous of slaying your son rushed against him. Seeing him  
coming upon the prince, your invincible warriors desirous of slaying  
him, hastened to encounter him. All those warriors with their bows  
like palm trees drawn, rushed upon the rakshas alone roaring like lions  
and covered him with the shower of their arrows as clouds in the cold  
season hide a hill 5 Like an elephant wounded by a god, Ghatotkach  
much wounded sprang like Garur on all sides up in the air and ringing

शारदः । दिशः खं विदिशश्चैव नादयन् भैरवस्वनः ॥ ६ ॥ राक्षसस्य तु तं शब्दं श्रुत्वा  
 राजा युधिष्ठिरः । उवाच भरत श्रेष्ठ भीमसेन मरिचिमम ॥ ७ ॥ युध्यते राक्षसो नूनं  
 धार्तराष्ट्रमंहारयैः । यथास्य ध्रुयते शब्दो नदतो भैरवस्वनस्य ॥ ८ ॥ अति भारव्य  
 पश्यामि तस्मिन् राक्षस पुंगवे । पितामहश्च संकुब्धः पांचालान् हन्तुं मुषतः ॥ ९ ॥  
 ते पांच रत्नार्थार्थं युध्यते फाल्गुन पदे । एतज्ज्ञात्वा महाबाहो कार्यद्वयमुपस्थितम्  
 ॥ १० ॥ गच्छ रक्षस्व हेडिम्बं संशयं परमं गतम् । आनुवेचनमाज्ञाय त्वरमाणो वृको  
 दुरः ॥ ११ ॥ प्रययौ सिंहनादेन ब्रासयन् सर्वपार्थिवान् । वेगेन महाराजन् पर्वकाले  
 ययोवाधिः ॥ १२ ॥ तमन्यगात् सत्यधृति सौचित्तिर्युद्ध दुर्मदः । श्रेणिमान् वसुदानथ  
 पुत्रः काश्यपस्य च निभः ॥ १३ ॥ अभिमन्यु मुखार्थेय द्रौपदेया महारथाः । क्षयं दद्युश्च

चारों ओरसे आकाश को उछला, और भयानक शब्द करता हुआ दिशा विदिशा  
 समेत आकाशको शब्दायमान करके शरदःशत्रु के बादलों के समान महा घोर  
 गर्जना करने लगा इसके पीछे हे भरतर्षभ उस राक्षस के शब्द को सुनकर राजा  
 युधिष्ठिर शत्रु विजयी भीमसेन से बोले, कि निश्चय वह घटोत्कच राक्षस धृतराष्ट्र  
 के महारथी पुत्रों से लड़ रहा है क्योंकि यह महाघोर शब्दकी गर्जना उसी की सुनी  
 जाती है इस समय उस राक्षस के ऊपर मुझको बड़ी भारी - विपत्ति जान पड़ती  
 है और अत्यन्त कोपयुक्त भीष्मजी पांचाल देशियों के - मारनेको युद्धमें प्रवृत्त हैं  
 उन पांचालों की रक्षाके निमित्त अर्जुन ही शत्रुओं से लड़ता है हे महाबाहु इस बात  
 को जानकर दो काम वर्तमान हुए १०। अब चलकर बड़ी विपत्तिसे घटोत्कचकी रक्षा  
 करो यह भाई के वचन सुनतेही शीघ्रता करनेवाला भीमसेन अपने सिंहनादसे सब  
 राजाओं को डराता हुआ ऐसे महावेग से वहां पहुँचा जैसे कि पर्वकालमें समुद्र  
 जाता है, और इस के पीछेही सत्यधृति युद्ध में दुर्मद सुचित्ती श्रेणिमान  
 वसुदान और महासमर्थ काशिराजकापुत्र यह सब गये, और अग्रवर्त्ती अभिमन्यु

all the directions will his tremendous roars he thundred like the clouds  
 in Winter. Hearing his sound, O king, Prince Yudhishtir said to  
 the conquering Bhimsen, "Surely this Ghatotkach the rakshas is  
 fighting against the sons of Dhritrashtra, for this tremendous roar can  
 be of no one else. Meseems he is in a great trouble and Bhishm in the  
 excess of his rage, is engaged in destroying the Panchals. For the  
 protection of the Panchals, Arjun is fighting against the enemies.  
 Under these circumstance there are two things to do 10. Let us protect  
 Ghatotkach from the great trouble." Having heard these words  
 from his brother, dexterous Bhimsen, terrifying all the warriors with  
 his leonine roar, hastened to reach there like the ocean at the full  
 moon. Following him went the wise warriors Suchitti, Vasudan and  
 the powerful son of the king of Kashi. Led by Abhimanyu, the five  
 brave sons of Draupadi, Kshatradev, Vikrant, Kshatradharma and

विक्रान्तः क्षत्रधर्मा तथैवच ॥ १४ ॥ अनूपाधि पतिश्चैव नीलः स्थंवलमास्थितः । मह  
ताशखंशेन हैडिम्बं पर्यवारयन् ॥ १५ ॥ कुञ्जरैश्च भहामसैः पद्सहस्रैः प्रहारिभि  
अभ्यरक्षन्त सहिता राक्षसेन्द्रं घटोत्कचम् ॥ १६ ॥ सिंहनादेन महता नेमिघोषेण वै  
वह । खुरशब्दनिपातैश्च कम्पयन्तो वसुन्धराम् ॥ १७ ॥ तेषामापततां श्रुत्वा शम्भ  
न्ते तावकं बलम् । भीमसेन मयोद्विग्नं विवर्णं वदन् तथा ॥ १८ ॥ परिवृत्त महाराज  
परित्यज्य घटोत्कचम् । ततः प्रवृत्ते युद्धं तत्र तेषां महात्मनाम् ॥ १९ ॥ तावकानां  
परेणां च संप्रामेय्य निवर्त्तिनाम् । नानारूपाणि शस्त्राणि विसृजन्तो महारथाः ॥ २० ॥  
अन्योन्य मभिधावन्त संप्रहार प्रचक्रिरे । ध्यतिष्ठन्तं महारौद्रं युद्धं भीरुभयापहम्  
॥ २१ ॥ ह्यागजैः समाजग्मुः पदाता रथिभिः सह । अन्योन्य समरे राजन् प्रार्थयन्ताः  
समभ्ययुः ॥ २२ ॥ सहसाचाभवत्तीव्रं सन्निपातान्महद्भजः । गजाश्चरथपत्तिना पद्  
नेमि समुद्धतम् ॥ २३ ॥ धूम्राकण्ठरजस्तीव्रं रणभूमिं समावृणोत् । नैव स्वेन परे राजन्

के साथ द्रौपदी के महारथी पुत्र क्षत्रदेव विक्रान्त क्षत्रधर्मा और नील नाम  
अनुपदेश का राजा अपनी सेना में नियत होकर चला यह सब शूर रथों के समूहों  
समेत घटोत्कचकी रक्षा के लिये उसके चारों ओर को नियतहुए, इन सब वारोंके  
साथ तहादुर्मद मतवाले छःसहस्र हाथी ये इन सवहाथियोंकी और रथोंकी गर्जना  
और ध्वनियों से पृथ्वी शब्दायमान होगई उन आते हुआँ के शब्दको सुनकर आप  
की सेना भीमसेन के भय से महा व्याकुलहोकर रूपान्तर दशाको प्राप्तहुई, हे महा  
राज यह सेना घटोत्कचको छोड़कर चारों ओर को घूमने लगी फिर सम्मुख लड़ने  
वाले आपके और दूसरों के शूरावीरों का नाना प्रकार के अस्त्र शस्त्रों समेत  
युद्ध होना प्रारम्भ हुआ । २० । और परस्पर सम्मुख दौड़तेहुए महारथियोंने बड़े महार  
किये और अत्यन्त भयकारी घोरयुद्ध होनेलगा, बड़े हाथियोंके साथ और पदाती रथि  
यों के साथ युद्ध करने लगे उस युद्धमें परस्पर एक दूसरेको चाहतेहुए सम्मुख गये  
उसमय अनेक हाथी घोड़े रथ पैदलों के समूहोंसे उठोहुई बहुत भारी धूल उड़ी

Nil the prince of Anup, with his army, followed by the hosts of  
charioteers, went to help Ghatotkach and stationed themselves round  
him. Six thousand elephants of great prowess accompanied the  
warriors. The sounds of these elephants and chariots rang all over  
the earth. Hearing those sounds the state of your army was quite  
changed with fear of Bhishma, and leaving Ghatotkach alone all the  
warriors dispersed in different directions. Then the warriors on both  
sides fought with different weapons and rushing against one another  
they fought hard and the battle was hard on the two sides. The  
horsemen fought against the elephant riders and the foot soldiers  
against charioteers. They rushed against one another. With the  
armies of elephants, horses, chariots and foot-soldiers there rose a great

समजानन् परस्परम् ॥ २४ ॥ पिता पुत्रं न जानीते पुत्रो वा पितरं तथा । निर्मयादेतथा  
मृते वैशसे लोमहर्षणे ॥ २५ ॥ शस्त्राणां भरतश्रेष्ठ मनुष्याणां च गर्जताम् । सुमहान्मथ  
पृष्ठं प्रेतानामिव भारत ॥ २६ ॥ गजवाजि मनुष्याणां शोणितां तद्विणी । प्राय  
तत नदी तत्र केशदंवलशाद्वला ॥ २७ ॥ नराणांचैव कायेभ्यः शिरसां पततां रणे ।  
शुश्रुवे सुमहान्मथः पतता मद्भन्ता मिव ॥ २८ ॥ विशिरस्कर्मनुष्यैश्च छिन्नाग्नैश्च  
वारणैः । अश्वैः सम्मिन्न देहैश्च संकीर्णामूढसुन्धरा ॥ २९ ॥ नानाविधानि शस्त्राणि  
यिस्तु जन्तो महारथाः । अन्योन्यमभिधावन्तः सम्प्रहारार्थमुद्यताः ॥ ३० ॥ हया हयान्  
समासाद्य प्रेषिता हयमादिभिः । समाहत्य रणेन्योन्यं निपेतुर्मतर्जिताः ॥ ३१ ॥ नरा  
नरान् समासाद्य क्रोधरक्तक्षणा भृशम् । उरांस्युरोभिरन्योन्यं समाश्लिष्य निजक्षिते  
॥ ३२ ॥ प्रेषिताश्च महामात्रैर्वारणाः परचारणैः । अभ्यघ्नन्त विषाणात्रैर्वारणानेष

फिर उस काली और लाल रंगवाली उग्र धूलिसे संग्रामभूमि ऐसी आच्छादित  
होगई कि जिसमें अपने पराये की कुछ पहचान न होसकी, इसप्रकार के रोमहर्षण  
करनेवाले महाप्रलयकाल में पिताने पुत्रको और पुत्रने पिताको भी नहीं पहचाना । २५।  
हे भरतराज उसयुद्ध में शस्त्रों के और गर्जना करनेवालों के प्रेतों केसे महाघोर  
शब्दहुए, फिर वहां हाथी घोड़े रथपैदलोंके रुधिरमे नदी वह निकली उसमें शिरोंके  
पालही कुमुदिनी सयेन शाद्वलये उससंग्राम में मनुष्यों के गिरते हुए शिरोंके ऐसे  
महा शब्द सुनाई दिये जैसे कि गिरतेहुए पत्थरों के शब्दहोते हैं फिर बिना  
शिरके मनुष्य और अंगभंग हाथी घोड़ों के शरीरोंसे पृथ्वी व्याप्त होगई औरबड़े २  
महारथी परस्पर में नानाप्रकारके शस्त्रोंको महारकरतेहुए एकएकके सम्मुख मारने  
को प्रवृत्तहुए । ३० । फिर सवारों से शोभित घोड़े घोड़ों से लड़ते २ मरकर  
पृथ्वीपर गिरे, और क्रोधसे रक्तनेत्र मनुष्यों ने दूसरे मनुष्योंको पाकर एकने  
दूसरेको छातीसे छाती मिलाकर मारा, फिर पीछे के हाथियों ने बड़े २ -शरीर

cloud of dust and the field of battle was so surrounded by the black and red dust that the warriors on the two sides could not know friends from foes. In that dreadful battle like that of pralaya, the father did not know the son. 25. The sounds of weapons and the roars of warriors in that battle were like those of hobgoblins. A river of blood flowed down from the elephants, horses, charioteers and foot-soldiers, having the hair of heads for its weeds, The sounds of the fall of the heads of the warriors were like those of stones falling down. The headless bodies of men and parts of the bodies of elephants and horses covered the face of the earth. Great warriors discharged different sorts of weapons against one another. 30. Horsemen fought against horsemen and fell dead on the field of battle. With eyes red in anger the warriors fought abreast and destroyed their adversaries. The elephants rushed against elephants and pierced their huge bodies with their



संयुगे ॥ ३३ ॥ ते जातरुधिगेतृपीडा पताकाभिरलंकृताः । संसक्ताः प्रत्यहदयन्त  
मेघा इव सविद्युतः ॥ ३४ ॥ केचिद्भिन्ना विषाणाग्रैर्भिन्नकुम्भादिव तोमरे । विनदन्तो  
भ्रमन्त गजजमाना घना इव ॥ ३५ ॥ केचिदस्तेर्द्धिषा च्छिन्नैर्दिशुः नगाग्रास्तथापरे ।  
निपेतुस्तुमुके तस्मिंदिदमपक्ता इवाद्रयः ॥ ३६ ॥ पाद्वेस्तुदारितैरन्येवारणैर्वरवारणा ।  
सुमुचु शोणितं मूर्ति धातुनिव महाधरा ॥ ३७ ॥ नाराचनिहतास्त्वग्ये तथा पिङ्गाश्च  
तोमरेः । विनदन्तो भ्रमन्त विगृह्णा इव पर्वताः ॥ ३८ ॥ केचित् क्रोधसमाविष्टा  
मदान्धा निरवग्रहाः । रथान् हयान् पदातीक्ष्व ममृवु शतशो रणे ॥ ३९ ॥ तथा हया  
हयारोहैस्ताडिताः प्रासतोमरे । तेन तेनाभ्यवर्त्तन्त कुर्वन्तो व्याकुला दिशः ॥ ४० ॥  
रथिनो रथिभिः सार्द्धं कुलपुत्रास्तनुयजः । पर शक्तिं समास्थाय चक्रुः कर्माण्यमीतवत्  
॥ ४१ ॥ स्वयम्बर इवामर्दे प्रजहृ रितरेतरम् । प्रार्थयाना यशो राजन् स्वर्गं वा युद्ध

मुलवाले शत्रुके हाथों के सम्मुख होकर दांतोंकी नोकों से हाथियोंको भारा वह  
पताकाओं से शोभित हाथी रुधिरसे पीड़ितहोकर ऐसे संसक्त दिखाई देतेथे जैसे  
कि बादलोंम बिजली दाखतीहै ३५ कोई हाथीदांतों की नोकोंसे घायल और तोमरों  
से फूटेहुए कुंभ बादलोंके समान गर्जते हुए सम्मुख दौड़े, कोई दूरी मूढवाले वा  
दूरे अंगवाले हाथी युद्धमें ऐसे गिरे जैसे कि दूरे पर्वत और कितनेही कुर्शमें घायल  
हाथियोंने बहुतसा रुधिर ऐसा ढाला जैसे कि पर्वत धातुओंको गेरते हैं, और बहु  
तेरे तोमरोंसे और नाराचोंसे घायल और पीड़ितहोकर शब्द करतेहुए ऐसे दौड़े  
जैसे कि विनाशिलरके पहाड़ होतेहैं, और अनेक क्रोधयुक्त मदान्ध हाथियोंने क्रो  
धितहोकर हजारों रथवेड़े और पदातियों को मर्दन किया, इसीप्रकार अवसथारों  
के पास और तोमरोंसे घायल घोड़े दिशाओं को व्याकुल करते हुए प्रत्येक मार्गमें  
सम्मुख हुए ४० । कुलीन और शरीर त्यागने वाले रथियोंने बड़ी सामर्थ से निर्भयता  
पूर्वक रथियोंसे युद्धकिया, हे राजा युद्धमें कुशल यश और स्वर्गके अभिलाषी  
वीरोंने उस स्वयंवर के समान युद्धमें एकने एकको परस्पर में हरण किया,

tusks The elephants decked with banners and streams of blood  
flowing from their bodies looked like clouds with lightning 35. Some  
elephants wounded with the points of tusks and tomars rushed on  
thundering like clouds, others with broken trunks and limbs fell  
down on earth like the pieces of hills Elephants wounded in their  
sides dropped streams of blood as mountains drop minerals, others  
wounded by tomars and arrows ran away shrieking with pain like  
mountains without peaks. Mad elephants in excessive rage trampled  
thousands of chariots, horses and foot-soldiers. In the same manner,  
horses wounded by prases and tomars rushed on all sides in anguish. 40  
The dying warriors of noble blood fought fearlessly against charioteers.  
Dexterous in battle, desirous of fame and paradise the warriors took  
up one another like brides in a swayamvar. Thus when the battle

शालितः ॥४२॥ तस्मिंस्तथा चर्त्तमाने संप्रामे लोमहर्षणे । धार्तराष्ट्रं महत् सैन्यं प्रायशो विमुञ्च्य कृतम् ॥ ४३ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि हैडिम्बयुद्धे  
चतुर्नवतितमोऽध्यायः ॥ २४ ॥

सत्राय उवाच । स्वसैन्यं निहतं दृष्ट्वा राजा दुर्योधन स्वयम् । अन्यधाघतसंकुद्धो भीमसेनं मलिन्दमम् ॥१॥ प्रगृह्य समुहञ्चाप मिन्द्राशनिसमस्वनम् । महता शरवर्षण पाण्डवं समवाकिरत् ॥२॥ अर्द्धचन्द्रञ्च सन्धाय सुतीक्ष्णं लोमवाहिनम् । भीमसेनस्य चिच्छेद् चापं क्रोधसमन्वितः ॥३॥ तदन्तरञ्च सभ्यैश्च त्वरभाणो महारथः । प्रसन्धे क्षितं बाणं गिरीणामपि दारणम् ॥ ४ ॥ तेनोरासि महाराज भीमसेनमठाडयत् । स गाढं विद्धो व्यथितः क्षुब्धकणो परिसंलिहन् ॥ ५ ॥ समाललम्ब्य तेजस्वी ध्वजं हेमपरिष्कृतम् । तथा विममसं दृष्ट्वा भीममेनं घटोत्कचः ॥ ६ ॥ क्रोधेनाभिप्रज्ज्वाल दिग्घ्न

इसी अकार से इस रोमहर्षण युद्ध के मारबहोने पर दुर्योधन की प्रबल सेना बहुधा भगाई गई ॥ ४३ ॥

अध्याय २५ ॥

संजय बोल कर आदुर्योधन अपनी सेना का नाश हुआ देखकर अत्यन्त क्रोधित होकर आपभी उस क्षत्रजैत भीमसेन के सम्मुख दौड़ा, और इन्द्र धनुष के समान शब्दायमान धनुष के बाणों की वर्षा करके भीमसेन को ढक दिया, और क्रोधमग्न कर अत्यन्त तीक्ष्ण अर्द्धचन्द्र बाण से भीमसेन के धनुष को काटकर बड़ी क्षीघ्रता से समय को पाकर उसने पर्वतों के भी तोड़ने वाले तीक्ष्ण बाण को धनुष पर चढ़ाया, हे राजा उस बाण से भीमसेन को छाती पर घायल किया, फिर उस तेजस्वी भीम ने होठों को चाटकर अपनी सुनहरी ध्वजा को पकड़ लिया, उस समय उदोत्कच भीमसेन को व्याकुल देख कर, क्रोधरूपी अग्नि से जाले हुए आरमहाक्रोधयुक्त अभिमन्यु आदि महा

was raging furiously, many of Duryodhan's brave warriors left the field." 43.

## CHAPTER XCV

"Seeing the destruction of his own army," continued Sanjaya, "Prince Duryodhan, in the excess of rage, rushed against Bhim the destroyer of foes and hid him with the arrows shot from his bow sounding like Indra's bow. In the excess of rage, having cut down Bhim's bow with an arrow of the shape of half moon and thus gaining time, he soon put up a sharp arrow capable of piercing through a mountain. That arrow, O king, wounded Bhim in the breast. The latter, licking his lip in anger, held fast the staff of his golden banner. Ghatotkach was inflamed with the fire of wrath at the sight of Bhim's

त्रिव पावक । अभिमन्युमुखावापि पाण्डवाना महारथा ॥ ७ ॥ समश्यधावन क्रोध  
न्तो राजान जातसभ्रमा । सम्प्रेक्ष्यै तान्सपतत सकुब्धान् जातसम्भ्रमान् ॥ ८ ॥ भार  
द्वाजो ध्रुवीद्वाप्य तावकाना महारथान् । क्षिप्रगच्छन् भद्रचो राजान परिरमन् ॥ ९ ॥  
सशय परम प्रात मोजन्त व्यसनाणवे । पते कुब्धा महेष्वासा पाण्डवानो महारथा  
॥ १० ॥ भीमसेन पुरस्कृत्य 'दुर्योधनमुपाद्रवन् । नानाविधानि शस्त्राणि विसृजन्तो  
जयेधृता ॥ ११ ॥ गवन्तो भैरवावाक्कासयन्तथ्यं भूमिपान् । तदाचार्य्यवच श्रुत्वा  
सोमदत्तपुरोगमा ॥ १२ ॥ तावका समवर्तत पाण्डवानामनीकिनीम् । कृपांमूरि  
धवा शल्यो द्रोणश्चो विविशति ॥ १३ ॥ चित्रसेनो विकर्णश्च सैन्धवोय दृढद्रुत ।  
आवन्त्यौ च महेष्वासी कौरव पर्यधवारयन् ॥ १४ ॥ तं विंशतिपद गत्वा सम्प्रहार  
प्रक्षिप्रे । पाण्डवा धातंराष्ट्रश्च परस्परजिघांसव ॥ १५ ॥ पथमुपत्वा महाघातुर्महादि  
स्कार्य कार्ष्णकम् । भारद्वाजस्ततो भीम पडविशत्या समारपयन् ॥ १६ ॥ भयक्षेन

रथी राजा को पुकारते हुए सम्मुख दौड़े अत्यन्त क्रोधयुक्त उन लोगों को आता  
हुआ देखकर, भारद्वाज द्रोणाचार्य जी आप के महारथियों से बोले कि तुम्हारा  
कल्याण हो तुम शीघ्रजाओ और बड़े दुःस समुद्र में पड़े हुए राजा को चारों ओर से  
रक्षा करो, यह महाकोपयुक्त पाण्डवों के धनुषधारी महारथी अनेक प्रकार के शस्त्रों  
को चलाते और शस्त्रों की गर्जनाओं से रामाओं को भयभीत करते सब भीमसेन  
को आगे करके दुर्योधन के सम्मुख गये, द्रोणाचार्य के इस वचन को सुनकर  
सोमदत्त को अग्रगामी कर के वह सब आपके शूरवीर पाण्डवों के सम्मुख पहुँचे  
कृपाचार्य मूरिधवा शल्य अश्वत्थामा विविशति । १३ । चित्रसेन विकर्ण  
जपय दृढद्रुत और बड़े धनुषधारी राजा भवन्ती ने चारों ओर से दुर्योधन को  
रक्षित किया । १४ । और परस्पर मारने की इच्छा से उन पाण्डव और  
धृतराष्ट्र के पुत्रों ने बीस २ चरण चलकर महारथों को किया, फिर भारद्वाज  
द्रोणाचार्य ने बड़े धनुष को लेकर छवीस बाणों से भीमसेन को पीड़ित कर के अनेक

wound, and Abhimanyu and other warriors much en aged, rushed on  
challenging the Prince. Seeing the advance of those enraged war  
riors Bha adwaj D onacha y a o d d you warriors to protect the  
Prince from the coming dang - saying: Those enag d Pandav war  
riors using diff rent sort s of w apors a i t rufy ng the warriors with  
their roars are led by Bhim en agun t Dur vodhan. Protect him  
from danger, may you be happy!" At the command of Di o b y our  
warriors led by Soudatta advanced agun t the Pandavas. Kripacharya,  
Bhumdhava Shalya Ashvatham Vivinshati Chitrasen Vikarn,  
Jagadrath, Vrahadval and the great treber princes of Avanti protected  
Dhuryodhan an all sides. Anlwishing to destroy one another, the  
Pandavas and the sons of Dhrit ishtir advanced twenty paces on  
each side and discharged their w ay on. Then taking up his mighty

महाबाहु शरै शीघ्रमयाकिरत् । पर्वत वारिधाराणि प्रावृषीव घटाहक  
 ॥ १७ ॥ त-प्रत्यविध्यदशभिर्ममिसेन शिलीमुख । त्वरमाणो महेष्वास-  
 मये पाद्वै मदावल ॥ १८ ॥ स गाढाङ्घ्रौ व्यथितो घयोवृद्ध भारत ।  
 प्रनष्टसह सहसा द्योपस्य उपाविशत् ॥ १९ ॥ गुरुप्रव्यथित दृष्ट्वा राजा दुर्योधन  
 स्वयम् । द्रोणायनिश्च सकृद्धौ भामसेनमभिदुतौ ॥ २० ॥ तावापतन्तौ सप्रेक्ष्य काला-  
 न्तक्यमोपमौ । भीमसेनो महाबाहुर्गदामादाय सत्वरम् ॥ २१ ॥ यमप्लुत्य रथागूर्णं  
 तस्यो गिरिरियाचल । समुद्यम्य गदा गुनी कालदण्डोपमा रणे ॥ २२ ॥ तमुद्यतगद-  
 दृष्ट्वा फेलासमिन् नृदिगम् । क्षौरवो द्रोणपुनर्यै सहितौवज्रधावताम् ॥ २३ ॥ तावा-  
 पतन्तौ सहितौ त्वरितौ घलिनादरो । अज्युधावत यगेन त्वरमाणो युकोदर ॥ २४ ॥  
 समापतन्त सप्रेक्ष्य सकृद्ध मीमंशनम् । समज्यभावस्तरिता क्षौराणा महारथा-

जन्प्राणसे ऐमे शीघ्र दक द्रिया जैमे कि जल्की धारसे उलाहक नाम दादल  
 पर्वतको दकदेते है, वहे धनुषधारी महाबली शीघ्रतायुक्त भीमसेनने शिलीमुख नाम  
 वशायणों से उनको घायल किया फिर वह दृढ़ द्रोणाचार्य अत्यन्त घायल और  
 पीड़ित होकर अक्रमाव रथमें बैठगये गुरु को पीडामान देखकर आप राजा  
 दुर्योधन और अश्वत्थामा वहे क्रोधितहो के भीमसेन के सम्मुख गये,  
 फिर महाबली भीमसेन उन काल और गत्युके समान दोनों को आता हुआ  
 देखकर, शीघ्रही रथ से उठ यमदण्डके समान अपनी भारी गदाको लेकर  
 युद्ध में पर्वताकार निश्चल होकर खड़ा हुआ फिर शिखरधारी पर्वतके समान  
 उस उठी हुई गदाको देखकर दुर्योधन और अश्वत्थामा दोनों एक साथही उसके  
 सम्मुख दौड़े, भीमसेन भी उन तीव्र दौड़नेवालों को सम्मुख आता देखकर बड़ी  
 शीघ्रता से उनपर दौड़ा, फिर उस क्रोधयुक्त भयानक भीमसेन को आता हुआ  
 देखकर कौरवों के महारथो यह दोनों-भी शीघ्रता से दौड़े और सबों ने आकर

boys Dronacharya wounded Bhimisen with twenty-six arrows and hid  
 him with the cover of arrows as winter clouds do a mountain with  
 the showers of rain. In his turn, the great archer Bhim of great  
 prowess wounded him with ten arrows sharpened on stone. Old  
 Dronacharya, much wounded and distressed, sat down of a sudden in  
 his chariot. Seeing the archarya in distress, Prince Duryodhan  
 himself together with Ashwathama much enraged faced Bhimisen.  
 Valliant Bhim seeing their advance like that of Time and Death, at  
 once jumped down from his chariot and with his heavy mace like the  
 staff of Yama stood firmly like a hill in the field of battle. Seeing  
 that mace upraised, Ashwathama and Duryodhan rushed together  
 against him. Bhimisen too seeing the advance of the two swiftly  
 running warriors, rushed against them. dreadful Bhimisen, much

मद्वत्यामानमयच । प्रायशश्च महष्वासा ये प्रधाना सकौरवा ॥ ४४ ॥ रिपुस्ता  
 रथिन सर्वे राजानश्च निपातिता । हयाश्चैव हयारोहा सन्निरुक्ता सहस्रश ॥ ४५ ॥  
 तद्दृष्ट्वा तावक सैन्य विद्रुत शिविर प्रति । मम प्राप्नोक्षता राजस्तथा दधर्षतस्यच  
 ॥ ४६ ॥ युध्यध्व मा पलायध्व मायैषा राक्षसीरण । घनोत्कच प्रमुत्तेतिनां तिष्ठन्त  
 विमाहिता ॥ ४७ ॥ नैवते श्रद्धघुभीता वदनो रावयोर्वच । नाथ प्रद्रवतो दृष्ट्वा जय  
 प्राप्ताश्च पाण्डवा ॥ ४८ ॥ घनोत्कचन संहिता सिंहनादान् प्रचक्रि । शख दुन्दुभि  
 निर्घोषै स ॥ तान् मेदिरे मृशम् ॥ ४९ ॥ एव तव चल सर्व हैडिम्यन दुरात्मता । सूर्या  
 स्तमन पलाया प्रभग्न विद्रुत दिश ॥ ५० ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि हैडिम्वमायाया

पवनवतितमोऽध्यायः ॥ १८ ॥

आदि जो बड़े धनुषधारी कौरवीय शूरावीर थे उन सबको राजालोंगों ने भी  
 रथ मारपी हाथी घोड़ों ममेत उस ने पृथ्वीपर गिराया, हे राजा उम आपकी सेना  
 के हेरोंकी ओर भागता हुआ देखकर मेन और देवव्रत भीष्मजीने बहुत १ पुकारा  
 कि इरामत यह राक्षसी माया घनोत्कच की पैदा कीहुई हे इसको मुनकर भी वह  
 महा अचेत होकर नियत नहीं हुए उन भयभीतोंने हम दोनोंके कहनेपर भी विश्वास  
 नहीं किया उस सेना को भागा हुआ देखकर विजय पानेवाले पाहवों ने घनोत्कच  
 समेत मिलकर बड़े सिंहनादोंको किया और शखदुन्दुभी भी चारों ओर से अच्छी  
 रीति से बजाई, इस रीतिसे सायंकालको सूर्यास्त के समय दुष्टात्मा घनोत्कच की  
 मायाने आप का सब सेना चारोओर को भागी ॥ ५० ॥

well as the kings accompanying them were struck down to the ground  
 together with their chariot drivers elephants and horses. Seeing them  
 flying towards your camp Derbut and I tried again and again to stop  
 and comfort them, saying that it was nothing but the deception of the  
 rakeshases but in spite of our efforts they could not be brought back  
 and would not believe us. At the sight of their rout the conquering  
 Pandavas and Ghatotkach together raised a tremendous war cry and  
 blew their conchs and trumpets. Thus in the evening at sunset all  
 your armies were dispersed by the deception of mischievous Gatot  
 lakh ५०



सञ्जय उवाच । तस्मिन् महद्दि सक्तन्ते राजा दुर्योधनस्तदा । गाङ्गेयमुपसद्रम्य  
 वितयेतामिवाद्यच्च ॥ १ ॥ तस्य सर्वं यथावृत्तमाख्यातुं मुपचक्रमे । घटोत्कचस्य  
 विजयमात्मनश्च पराजयम् ॥ २ ॥ कथयामास दुर्धर्यो विनि स्वस्य पुन पुन । यप्रवीच  
 तदा राजन् भीष्मं कुरुपितामहम् ॥ ३ ॥ मघन्त सशुपाशित्य वासुदेव यथा परै ।  
 पाण्डवैर्विग्रहो घोरः सारथ्यो मया प्रभो ॥ ४ ॥ एकादशं समाध्याता अश्वैहि  
 पयश्च यामम । निदेशे तव तिष्ठन्ति मया सार्धं परन्तप ॥ ५ ॥ सोऽहं भरतशार्दूल  
 भीमसेन पुरोगमै । घटोत्कच समाश्रित्य पाण्डवैर्युधिनिर्जित ॥ ६ ॥ तन्मे दहति  
 गात्राणि शुष्कवृक्षमिवानल । तदिच्छामि महामागं त्वन्प्रसादात् परन्तप ॥ ७ ॥  
 राक्षसापसदं हन्तुं स्वयमेव पितामह । इवा समाश्रित्य दुर्धर्यं तन्मे कर्तुंत्वमर्हासि ॥ ८ ॥  
 एतच्छत्रुनातुं यच्चन राजो भरतसत्तम । दुर्योधनमिदं यान्न भीष्मं शान्तनवोव्रवीत्  
 ॥ ९ ॥ शृणु राजन् ममवचो यत्ता वक्ष्यामि कौरव । यथा त्वया महाराज प्रसिद्धम्

अध्याय ॥ १६ ॥

संजय बोले हे महाराज उमचड़े शब्द के होनेपर राजा दुर्योधन ने भीष्मजी  
 के समीप जाके बड़ी नम्रता पूर्वक दणवत करके, घटोत्कचकी विजय और अपनी  
 पराजय होनेके मुख्य वृत्तान्तको बड़ी आसक्ति लेकर वर्णन किया और पितामह से  
 कहनेलगा, कि हे प्रभु मैंने वासुदेवजीके समान आपको अपनारक्षक समझकर बड़ी  
 भयकारी शत्रुतापाँडवोंसे करीब हे शत्रुहन्ता जो मेरी ग्यारह अर्द्धाङ्गिणी प्रतिद्वन्द्व  
 युद्ध समेत, आपकी आज्ञामें नियत हूँ । ५ । हे भरतर्षभ ऐसा योग होने परभी मैं भीम  
 सेन आदि पाँडव जिनका कि घटोत्कच रक्षक है उनसे पराजय हुआ, वह भीमसेन  
 मेरे अंगों को ऐसा जलारहा है जैसे सूखे रत्नको आग्निजलाता है, हे शत्रुहन्ता पितामह  
 आपमें दुर्जय पुरुषकी रक्षा में होकर आपकी कृपासे उत नीच राक्षसको मैं अपने  
 हाथमें मारा चाहता हूँ आपमें मनोरथको पूरा करने को योग्य हो, दुर्योधन के इस

## CHAPTER XLVI

Sanjaya said, 'On hearing that sound Prince Duryodhan went to Bhishm and humbly bowing down to him, recounted the facts of the conquest of Ghatotkach and his own defeat with deep sighs, saying "Knowing you to be my protector like Vasudev I have, O grandfather contracted enmity with the Pandavas I and my eleven akshauhinsis O destroyer of foes obey your orders 5 Being so united, O best of Bharats I have been defeated by Bhismen and other Pandavas led by Ghatotkach Bhismen burns the parts of my body as fire does dry wood Protected by a personage like you, O grandfather, destroyer of enemies I wish to slay that despicable rakshas with my own hand You have the power to satisfy the desire of my mind" To those words of Duryodhan, Bhishm the son of Shantanu made the following

परन्तर ॥ १० ॥ आत्मा रक्ष्यो रणे तात सर्वावस्थ्यास्वरिन्दम । धर्मराजेन संप्रामस्त्वया  
 कार्यं सदान्व ॥ ११ ॥ अर्जुनेन धर्माश्रया वा भीमसेनेन वा पुनः । राजधर्मं पुरस्सृत्य  
 राजा राजानमाच्छेति ॥ १२ ॥ अहं द्रोणः कृपाद्रौहिः कृतवर्मा च सात्वतः । शल्यश्च  
 सौमद्रक्षिश्च विकर्णश्च महारथाः ॥ १३ ॥ तव च भ्रातरः श्रेष्ठा दुःशासनपुरोगमाः ।  
 त्वदर्थं प्रतियोत्स्यामो राक्षसं तं महाबलम् ॥ १४ ॥ योद्रे तस्मिन् राक्षसेन्द्रे यदि ते  
 नृशयो महान् । अयं वा गच्छतु रणे तस्य युद्धाय दुर्मते ॥ १५ ॥ भगदत्तो महीपालः  
 पुरन्दरसमो युधि । एतावदुक्त्वा राजानं भगदत्तमद्यावतीत् ॥ १६ ॥ समस्तं  
 पार्थिवेन्द्रस्य धाम्न्यं वाक्यविशारदः । गच्छ शीघ्रं महापते हृदिभ्यं युद्धदुर्मदम् ॥ १७ ॥  
 पार्थिवश्च रणे यत्तो मिषतां सर्वघन्विनाम् । राक्षसं क्रूरकर्माणं यथेन्द्रस्तारकं पुरा  
 ॥ १८ ॥ दिग्गानि तव शस्त्राणि विक्रमञ्च परन्तप । समागमञ्च बहुभिः पुरामुदमदैः

वचनको सुन कर शान्तनु भीष्मजी यह वचन बोले, हे कौरवेन्द्र जो मैं वचन कहता हूँ  
 उस को सुनकर उसीके अनुसार तुमको भी करना योग्य है । १० । हे शत्रुहन्ता पुत्र  
 युद्ध में सब प्रकारसे अपना शरीर रक्षा के योग्य है हे निष्पप तुमको मदैव धर्म  
 राज से युद्ध करना उचित है, और अर्जुन नकुल सहदेव अथवा भीमसेनके साथ  
 युद्ध करना उचित है राजा राजधर्म को आगे करके किसी राजा के सम्मुख होता  
 है, मैं और द्रोणाचार्य कृपाचार्य अश्वत्थामा कृतवर्मा यादव शल्य भूरिश्रवा महारथी  
 विकर्ण औरतरे वह सब भाई जिनमें अग्रगण्य दुःशासन है, यह सबतरे निमिष उस  
 महाबली राक्षस से लड़ेंगे । १४ । उस रुरूप राक्षसों के राजा से जो तेरी बड़ी  
 शत्रुता है तो उस दुर्वदी राक्षस के युद्ध के लिये भगदत्त को भेजो यह काकर  
 राजा भगदत्त से बोले कि हे महाराज तुम बड़ी शीघ्रता से उस दुर्मद पयोत्कच के  
 सम्मुख जाओ और सब राजाओं के देखने हुए उस कठिनकर्मी राक्षसको ऐसे हटा-  
 ओ जैसे कि पूर्व समय में इन्द्र ने तारकको हटायाथा, हे शत्रुहन्ता तुम्हारे पास

reply:—"Hear my words, Prince of Kauravas, and act upon them 10. My son, destroyer of foes, one's own body is worthy of protection by all means. You may fight against Dharmraj, Arjun, Nakul, Sahadev or Bhimsen by all means. A king may justly fight with another king. I as well as Dronacharya, Kripacharya, Ashwathama, Kritvarma the Yadav, Shalya, Bhurishrava, valliant Vikarn and all your brothers led by Dushasan will fight for you against the powerful rakshas. 14. Send Bhagatta against that prince of rakshases, if you are inclined to kill him." Then turning towards Bhagdatta he said, "Hasten to encounter with the dreadful rakshas, king, and within sight of all the warriors defeat the dreadful rakshas of great prowess as Indra in the days of yore had defeated Tarak. You have divine weapons, O destroyer of enemies. You are full of prowess and have in former days fought many rakshases. You are worthy of fighting.

सह ॥ १९ ॥ त्व तस्य नृपशार्ङ्गल प्रतियोद्धा महाहवे । स्वधलेनोच्छ्रितो राजन्  
जहि राक्षसपुङ्गवम् ॥ २० ॥ एतच्छ्रुत्वा तु वचन भीष्मस्य पृतनापते । प्रययौ सिंह  
नादेन परानभिमुखो दुतम् ॥ २१ ॥ तमाद्रवन् सम्प्रेक्ष्य गर्जन्तमिव तोयदम् । अभ्य  
वर्त्तन्त सनुद्धा पाण्डवाना महारथा ॥ २२ ॥ भीमसेनोभिमन्युश्च राक्षसश्च घटोत्कच ।  
द्रोपदेया सत्यधृति क्षत्रदेवश्च भारत ॥ २३ ॥ चेदिषो वसुदानश्च दशार्थाधिपति  
स्तथा । सुमतीकेन तायापि भगदत्तोप्यु पादघत् ॥ २४ ॥ तत सममघयुद्ध घोररूप  
भयानकम् । पाण्डूना भगदत्तेन यमराष्ट्रविधर्धनम् ॥ २५ ॥ प्रयुक्ता रथिमिर्घाणा भीम  
वेगा स्तुतेजना । ते निपेतुर्महाराज नागेषु च रथेषु च ॥ २६ ॥ प्रमित्राश्च महानागा  
विनीता हस्तिसादिभि । परस्पर समासाद्य सन्धिपेतुरमीतवत् ॥ २७ ॥ मदान्धा रोष  
सरब्धा विपाणाभ्रमहाहवे । विभिदुर्हन्तसुसलै समासाद्य परस्परम् ॥ २८ ॥ हृषाक्ष  
चामरापीडा प्रासपाणिभिरास्थिता । चोदिता सादिभि क्षिप्र निपेतुरितरेतरम् ॥ २९ ॥

दिव्य अस्रहै और मशपराक्रमीहो और पूर्वसमय में भी तुमने बहुतसे असुरोंसे सम्मुख  
ता करी है, हे राजेन्द्र तुम इस युद्ध में उस राक्षस से युद्ध करने के योग्यहो, इस से  
हेराजा तुम अपनी बड़ी सेनाके बलसे राक्षसको मारो। २० यह भीष्मजीके वचनोंको  
सुनकर भगदत्त बड़े सिंहनाद पूर्वक शत्रुओंके सम्मुख गया और पांडवों केभी  
आगे लिखेहुए महाबली गरमा उस क्रोध युक्त बादल के समान गर्जते भगदत्तको  
देखकर सम्मुख आकर वर्त्तमानहुये भीमसेन, अभिमन्यु, घटोत्कच, द्रोपदी के पुत्र,  
सत्यधृति, क्षत्रदेव, चेदिकाराजा, वसुदान, और दशार्थाधिपति सुमतीक हाथी पर  
सवार भगदत्तके सम्मुखगये, और भगदत्तकेसाथ पांडवोंका खवयुद्धहुआ वह युद्ध  
बड़ाभयानक और यमराजके पुरका दृढ़िकारक था । २५। रथियों ने बड़े २ भयानक  
बाणों से रथी और हाथियों को मारा और बड़े २ मदोन्मत्त हाथियों को हाथीवानों  
ने—सग्राम भूमिमें लेजाकर बड़ी निर्भयतासे एक एक के पीछे दौड़ाया फिर  
हाथियों ने परस्परमें अपने २ तीक्ष्ण दातोंसे घायल किया, चमर और प्रासधारी

with the dreadful missiles, 'kill him with the help of your armies' 20  
Having heard the words of Bhishm, Bhagdatta faced the enemies  
with a roar, and seeing the advance of Bhagdatta there came on to  
fight against him the following warriors of the Pandavas, namely:  
Bhimsen, Abhimanyu, Ghatotkach, the sons of Drupadi, Satya  
dhriti, Kshatradev, the king of Chedi Vasudan and the king of  
Dasharn. All these warriors encountered Bhigdatta who rode on his  
elephant named Supratik. The battle between the two parties was  
very severe and dreadful and filled the region of Yamraj 25 The  
charioteers with their dreadful arrows killed the charioteers and  
elephant riders and the drivers of elephants goaded their beasts  
fearlessly against others in the field of battle. The elephants wounded  
one another with their sharp tusks. The horsemen armed with barbed



पादाताश्च पदायोधैस्ताडिताः शक्तितोमरैः । न्यपतन्त तदा भूमौ शतशोऽप्यसहस्रान् ॥ ३० ॥ रथिनश्च रथराजान् कर्णिनालीकसायकैः । निहत्य समरं वीरान् सिंहनादान् विहेदिरे । ३१ ॥ तस्मिंस्तथा वर्तमाने सप्रामे लोमहर्षणे । भगदत्तो महेष्वासो भीमसेन मथाद्रधत् ॥ ३२ ॥ कुञ्जरेण प्रभिन्नैः सप्तधा सूचता मदम् । पर्वतेन यथा तोयं स्वभागेन सर्वशः ॥ ३३ ॥ फिरञ्छरसहस्राणि सुप्रतीकशिरोमत । ऐरावतस्यो मघवान् धारिधारि इवानघ ॥ ३४ ॥ स भीम शरघाराभिस्ताडयामास पार्थिव । पर्वत धारिधारिभिस्तपान्ते जलदो यथा ॥ ३५ ॥ भीमसेनस्तु सकृच्च पादरक्षान् परशतान् । निजघान महेष्वास सरध्व शरवृणिभिः ॥ ३६ ॥ तान्दृष्ट्वा निहतान् कुञ्जो भगदत्त प्रतापवान् । चोदयामास नागेन्द्र भीमसेनरथं प्रति ॥ ३७ ॥ स नागं प्रेषितस्तेन बाणोज्ज्वाल्योद्धितो यथा । अभ्यधावत धेगेन भीमसेनमरिन्दमम् ॥ ३८ ॥ तमाप

घोड़ों के सवार नियत हुये और बड़ी शीघ्रतासे एकदूसरे पर दौड़े, तब हजारों पदाती शत्रुओं के बरछी आदि शस्त्रों से मरेहुये प्रभी पर गिरे । ३० । और रथियों के शायकों से अन्य रथी घायल होकर गिरे फिर युद्धमें गिराने वाले वीरों ने सिंहनाद किये, इस प्रकार के रोमहर्षण युद्ध के जारी होने पर बड़ा धनुषधारी भगदत्त बड़ेभारी सप्तांग यद्धौवी गजेन्द्रकी सवारी के द्वारा भीमसेन के सम्मुख ऐसे गया जैसे कि जलके छिड़कनेवाले बादल बड़े पर्वतके ऊपर जाते हैं फिरउसने उस सुप्रतीक हाथी के शिरपर सवार होकर हजारों बाणों को ऐसे वर्षाया जैसे कि ऐरावत हाथीपर चढाहुआ इन्द्रजलही धाराओं को वर्षाता है, उस राजाने बाणोंमें भीमसेनको ऐसा घायल किया जैसे कि वर्षाऋतुमें बादल जलकी धाराओंसे पर्वत को घायल करता है । ३५ । फिर बड़े धनुषधारी भीमसेनने अत्यन्त क्रोधित होकर बाणों की वर्षासे सैकड़ों पादरक्षकों को मारा फिर बड़े प्रतापवान् भगदत्त ने उन पादरक्षकों को माराहुआ देखकर बड़े क्रोधसे अपने गजेन्द्रको भीमसेनके रथ पर पेला, जैसे कि धनुषसे चनाया हुआ बाण मारता है उसीप्रकार उसकापेला हुआ हाथी

missiles and fly flappers rushed against one another. Thousands of foot soldiers slain by spears and other weapons of enemies lay on earth. 30 Charioteers wounded by the arrows of other charioteers fell on earth. The warriors roared like lions. When the battle was raging so furiously Bhagadatta the great archer riding his huge elephant which dropped juice from seven places in his body faced Bhimisen as raining clouds pass over a mountain. From his elephant named Sapatik he showed thousands of arrows as Indra sends forth showers of rain from the brow of Airavat. He showered his arrows over Bhimisen as a cloud send forth rain over a mountain. 35 Then the great archer Bhimisen in great anger killed hundreds of the king's guards with his arrows. Bhagadatta of great prowess seeing his foot guards slain sent his huge elephant against Bhimisen in great anger.

तन्तुं सम्प्रेक्ष्य पाण्डवानां महारथाः । अश्वयत्तन्तु धेगेन भीमसेनपुरोगमाः ॥ ३९ ॥  
 केकयाश्चोभिमन्युश्च द्रौपदेयाश्चसर्वशः । दशार्णाधिपतिः शूरः क्षत्रदधमास्त्रि ॥ ४० ॥  
 चेदिपयिप्रकेतुश्च संरंधाः सर्वे एव ते पूज्यमास्त्राणि दिव्यानि दर्शयन्तो महाप्रलाः  
 ॥ ४१ ॥ तमेकं कुञ्जरं कुद्राः समन्तात् पर्यवहारयन् । स विद्रो यदुर्मियाणैर्ध्वजैश्चत  
 महाद्विपः ॥ ४२ ॥ सञ्जातवधिगेर्पाडो घातुषित इवाद्रिपट । दशार्णाधिपतिश्चापि  
 गजं भूमिधरोपमम् ॥ ४३ ॥ समास्त्रितोभिमुद्रावः भगदत्तस्य धारणम् । तन्नापतन्तं  
 स्मरं गजं गजपतिः स च ॥ ४४ ॥ दधार सुप्रतीकोपि वेल्लेय मकरालयम् । धारितं  
 प्रेक्ष्य नागेन्द्रं दशार्णस्य महात्मनः ॥ ४५ ॥ साधुसाध्यति सैन्यानि पाण्डवेयान्य  
 पूजयन् । तत प्राण्योतिषः कुद्रस्तोमराय यं चतुर्दश ॥ ४६ ॥ प्राहिणोत्तस्य नागस्य  
 प्रमुखे नृपमत्तः । धर्मं मुख्यं तनुप्राणं ज्ञातकुम्भपरिष्कृतम् ॥ ४७ ॥ विद्वान्यं प्रायि-

भी शत्रुजित भीमसेनके ऊपर वही शीघ्रगतिसे दौड़ा, उसआतेहुये हाथी को देख  
 कर, भीमसेनके आगे चलनेवाले भीमन्यु पांचोंकेरूप द्रौपदी के पांचों पुत्र राजा  
 दुश्शार्ण क्षत्रदेव । ४० । चेदिका राजाचित्रकेतुइन सबने क्रोध युक्त होकर दिव्य  
 अस्त्रोंके द्वारा, उस अकंले हाथीको चारों ओर से घेर लिया वह महागजेन्द्र दश  
 बाणों से घायल होकर रुधिरको ढालता हुआ ऐसा महाशोभायमान हुआ, जैसे  
 कि घातुओंने चित्रित गिरिराज पर्वत शोभित होता है । ४१ । फिर पर्वतके  
 समान हाथी पर निवार राजा दुश्शार्ण भी भगदत्त के हाथी पर दौड़ा, तब उन  
 हाथियोंके राजा सुप्रतीक ने उस आते हुये हाथी को ऐसे रोंका जैसे कि किनारा  
 समुद्र को रोकता है । ४२ । महात्मा राजा दुश्शार्ण के हाथी को रुकाहुआ देखकर  
 पाण्डवों की सेना ने साधुसाधु करके प्रशंसा करी इस के पीछे बड़े क्रोधयुक्त राजा  
 प्राण्योतिष ने चौदह-तोमर उमहाथी के ऊपर फेंके वह सब तोमर स्वर्णमयी  
 कवचको भेदन करके उसके शरीर में ऐसे प्रवेश करगये जैसे सर्प वामी में प्रवेश

Like an arrow discharged from a bow, the elephant goaded by the  
 king rushed against Bhim. Seeing that elephant coming towards them,  
 Abhimanyu, the five Kailaya brothers, the five sons of Draupadi,  
 king Dusharna, Kshatrader, 40 the king of Chodi and Chitraketu  
 the leaders of Bhimsen's army armed with celestial weapons, surround-  
 ed the elephant in great rage. Wounded by ten arrows, the huge  
 elephant, bleeding from wounds, looked glorious like a mountain vari-  
 gated with its minerals 43. Mounted on his elephant huge like  
 a mountain, king Dusharna rushed against king Bhagdatta. Supratik  
 the prince of elephants, seeing that elephant coming towards him,  
 checked him as the shore does the ocean 45. Seeing the elephant of  
 the king of Dusharna thus checked, the Pandavas raised a cry of 'good,  
 good', and praised him. Then the king of Pragjyotish discharged

कौञ्च महाराज चर्मबाणौ समाहितम् । भगन्तु स्वबलं दृष्ट्वा भगदत्तं धामता ॥ ५७ ॥ घटोत्कचाय संक्रुद्धो भगदत्तमुपाद्रवत् । विकटः पुरुषो राजन् दीप्ताम्बो दीप्तलोचनः ॥ ५८ ॥ रूपं विभीषणं कृत्वा रोषेण प्रज्वलन्निव । जग्राह विमलं शूलं गिरिणामपि दोरणम् ॥ ५९ ॥ नागं जिवांसुः सहसा चिक्षेप च महाबलः । सविस्फुल्लिङ्गमालाभिः समन्तात् परिवेष्टितः ॥ ६० ॥ तमापतन्तं सहसा दृष्ट्वा प्रागज्योतिषो नृपः । चिक्षेप रुचिरं तीक्ष्णं मध्वचन्द्रं सुदारुणम् ॥ ६१ ॥ चिच्छेद तन्महच्छूलं तेन बाणेन वेगवान् । उत्पपात द्विधा च्छिन्नं शूलं हेमपरिभूतम् ॥ ६२ ॥ महाराजिष्यया भ्रष्टा शकमुका नभोगता । शूलं निपातितं दृष्ट्वा द्विधा कृत्तं च पार्थिवः ॥ ६३ ॥ रुक्मदण्डां महाशक्तिं जग्राहग्निशिखोपमाम् । चिक्षेप तां राक्षसस्य तिष्ठतिष्ठति चाप्रवीत् ॥ ६४ ॥ तामापतन्तो सम्प्रेक्ष्य विषयस्यामशनीमिव । उत्पत्य राक्षसस्तूर्णं जग्राह च ननाद च ॥ ६५ ॥ यमञ्ज चैनां स्वरितो जानुन्यारोप्य आरतः । पश्यतः पार्थिवेन्द्रस्य

से पीड़ित अपनी सेना को देखकर, बड़े क्रोध में भराहुआ घटोत्कच भगदत्त के सम्मुख गया । राजा उत्तमकुंडर क्रोधसे लाल, नेत्र पराक्रमी, घटोत्कचने अपने रूपको भयानक करके पर्वतोंके भी तोड़ने वाले बड़ेबल शूलको हाथमें लिया, और हाथीके मारने की इच्छासे अकस्मात् घुमाकर फेंका, बलशूल चारों ओरसे आगि कणों करके व्याप्तया ६० उस अकस्मात् गिरते हुये शूलको देखकर राजा प्रागज्योतिष भगदत्तने बड़ेसुन्दर तीक्ष्ण भयानक अर्द्धचन्द्र नाम बाणको फेंककर उसशूल को काटा तब वह सुनहरी शूल दोखण्ड होकर पृथ्वीपर ऐसे गिरा जैसे कि, इन्द्रका बज्र आकाश से गिरता है हे राजा शूलको टूटा और गिराहुआ देखकर भगदत्त बड़ी तीक्ष्ण सुनहरी बरछीको लेकर राक्षसपर फेंककर तिष्ठतिष्ठ इस वचनको कहने लगा, उस आकाशसे गिरतीहुई बज्रके समान बरछीको देखकर उसरान्तसने बड़ी शीघ्रता से उछलकर पकड़ा और महागर्जना को किया । ६५ और शीघ्रही उस बरछी को घोट

by that elephant and standing as if it were in fire and wounded by the enraged Bhagdatta, the Pandav army was much distressed. At this Ghatotkach much enraged rushed against Bhagdatta. Ghatotkach of wonderful form with eyes red in anger, assumed a dreadful shape and took up a dreadful spear that could pierce through a mountain, he hurled it with an intention to kill the elephant. The spear had flames of fire on all sides. 60. Seeing the spear coming suddenly upon him, Bhagdatta the king of Pragjyotish cut it with a beautiful sharp and dreadful arrow of the shape of crescent. The golden spear cut by the arrow into two pieces fell down on earth like the vajra of Indra. Seeing the spear cut and fallen, Bhagdatta took up a very sharp spear made of gold and hurled it at the rakshas with a cry of 'stay stay.' Seeing the spear falling from the sky like vajra, the rakshas with a jump held it in his hand and roared a loud roar. 65 And

शत्रु क्षिप्र घबरीकमिव पन्नगाः । स गाढविद्धो व्यथितो नागो भरतसत्तम ॥ ४८ ॥  
 उपावृत्तमदः क्षिप्रमभ्यवर्त्तत वेगिनः । स प्रवृद्धाघ-वेगेन प्रणदन् मेरुव रवम् ॥ ४९ ॥  
 सम्मर्द्दयानः स्वचल वायुर्वृक्षानिवीजसा । तस्मिन् पराजिते नागे पाण्डवानां महारथाः  
 ॥ ५० ॥ सिंहनादं विनयोच्चैर्युक्तायैवावतस्थिरैः । तनो भीमं पुरस्कृत्य भगदत्तमुपा-  
 द्रयन् ॥ ५१ ॥ किरन्तो विविधान् बाणान् शस्त्राणि विविधानि च । तेषामापततां  
 राजन् संकुक्षानाममर्दिणाम् ॥ ५२ ॥ भुत्वा स निनदं धीरममर्षाद्गतसाध्वसः ।  
 भगदत्तो महेष्वासः स्व नागं प्रत्यबोदयत् ॥ ५३ ॥ अंकुशांगुष्ठ युद्धितः सगज प्रवृत्तो  
 युधि । तस्मिन् क्षणे समभवत् साम्बर्त्तक इवानलः ॥ ५४ ॥ रथसंघास्तथा नागाश्च  
 ह्यर्षाश्च सह साविभिः । पादातांश्च सुसंकुशः शतशोय सहस्रशः ॥ ५५ ॥ अमृद्नात्स  
 मरे नागः संप्रधानस्ततस्ततः । तेन संलोक्यमानन्तु पाण्डवानां यत्नं महत् ॥ ५६ ॥ सञ्चु-

करता है, फिर वह महा घायल और पीड़ामाने मर्दोन्मत्तहाथी बड़े भयानक शब्द  
 को करके प्रथमतो सम्मुख हुआ फिर बड़ी शीघ्रता से अपनी सेना को दवाता कु-  
 चलता हुआ महाव्याकुल होकर ऐसा दौड़ा जैसे कि वायु अपने बलसे वृक्षों को गिरा-  
 ता हुआ जाता है । ५० । उस हाथी के पराजय होने पर पाण्डवों के महारथियों ने, बड़े  
 उच्च स्वर से सिंहताद किया और सब युद्ध के निमित्त सम्मुख नियत हुये । इस  
 के पीछे भीमसेन को आगे करके नाना प्रकार के अस्त्र अस्त्रों को फेंकते मारते  
 भगदत्त के सम्मुख गये हे राजा उन अत्यन्त क्रोधयुक्त आते हुये असह्य लोगों के  
 भयानक शब्दों को सुनकर क्रोध से निर्भय बड़े धनुषधारी भगदत्त ने अपने हाथी  
 को चलायमान किया, फिर अंकुशरूपी उंगलीसे पीड़ामान हाथी उस युद्ध में सर्वर्त्तक  
 अग्नि के समान अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर हजारों रथ समूहों को हाथी घोंड़े सवार  
 और पदातियों समेत मारता तोड़ता कुचलता हुआ इधर उधर को दौड़ा । ५५ ।  
 उस हाथी से घायल मर्याग्नि में नियत होने के समान क्रोधयुक्त भगदत्त के हाथ

fourteen tomars which pierced through the golden armour and entered his body as a serpent enters an ant-hill Excessively wounded and distressed the huge elephant shrieked loud, and facing the enemy for a moment, ran away trampling and killing the warriors of his own party as the wind destroys the trees in its fury. 50. When the elephant was thus vanquished, the Pandav warriors roared like lions and faced the enemy in the field of battle. Discharging different sorts of weapons and led by Bhimsen, they rushed against king Bhagdatta. Hearing the sounds of those enraged warriors coming towards him in great force, the intrepid archer Bhagdatta moved his elephant in a rage. Goaled by the hook the elephant, enraged like the fire of pralaya, rushed hither and thither, destroying and trampling thousands of chariots, elephants, horsemen and foot soldiers 55. Wounded

कोच महाराज चर्मवागी समाहितम् । भगन्तु स्वयं ल दृष्ट्वा भगदत्तेन धीमता  
॥ ५७ ॥ घटोत्कचाय सकुलो भगदत्तमुपाटवत् । विकटं पुन्यो राजन् दीप्तायो  
दीप्तलोचन ॥ ५८ ॥ रूपं विभीषणं कृत्वा रोषेण प्रज्वलन्निव । जग्राह विमलं शूलं  
गिरिणामपि वारणम् ॥ ५९ ॥ नाग जिघासु सहसा चिक्षेप च महाबल । सविस्फु  
ल्लिङ्गमालामि समन्तात् परिवेष्टित ॥ ६० ॥ तमापतन्त सहसा दृष्ट्वा प्रागज्योतिषा  
नृप । घिक्षेप रुचिरं तीक्ष्णं मर्धचन्द्रं सुदारुणम् ॥ ६१ ॥ चिच्छेद् तन्महच्छलं तेन  
बाणेन वेगवान् । उत्पपात द्विधा च्छिन्नं शूलं हेमपरिष्कृतम् ॥ ६२ ॥ महाशानिर्यथा  
भ्रष्टा शम्भुका नभोगता । शूलं निपातितं दृष्ट्वा द्विधा ईक्षे च पार्थिव ॥ ६३ ॥ दक्षम  
दण्डा महाशक्तिं जग्राहान्निदिश्यापनाय । चिक्षेप तं राक्षसस्य तिष्ठतिष्ठेति चात्रवीत्  
॥ ६४ ॥ तामापतन्तो सम्प्रेक्ष्य वियन्त्यामशनीमिव । उत्पत्य राक्षसस्तूर्णं जग्राह च  
मनाद् च ॥ ६५ ॥ धमञ्ज्यैनां त्वरितो जानुन्यारोप्य भारत । पश्यत पार्थिवेन्द्रस्य

से पीड़ित अपनी सेना को देखकर, बड़े क्रोध में भराहुआ घटोत्कच भगदत्त के  
सम्मुखगया हे राजा उत्तविकटरूप क्रोधमें लाल नेत्र पराक्रमी घटोत्कचने अपने  
रूपको भयानक करके पर्वतोंके भी तोड़ने वाले बड़ेउग्र शूलको हाथमें लिया, और  
हाथोंके मारने की इच्छासे अकस्मात् घुमाकर फेंका वहशूल चारों ओरसे अग्नि  
कणों करके व्याप्तया ६० उस अकस्मात् गिरते हुये शूलको देखकर राजा प्रागज्योतिष  
भगदत्तने बड़ेसुन्दर तीक्ष्ण भयानक अर्द्धचन्द्र नाम बाणको फेंककर उसशूल को  
काटा तब वह सुनहरी शूल दोखगड होकर पृथ्वीपर ऐसे गिरा जैसे कि इन्द्रकाबज्र  
आकाश से गिरता है हे राजा शूलको टूटा और गिराहुआ देखकर भगदत्त बड़ी तीक्ष्ण  
सुनहरी बरछीको लेकर राक्षसपर फेंककर तिष्ठतिष्ठ इस वचनको कहने लगा, उस  
आकाशसे गिरतीहुई बज्रके समान बरछीको देखकर उसराक्षसने बड़ी शीघ्रता मे  
उछलकर पकड़ा और महागर्जना को किया ॥ ६५ ॥ और शीघ्रही उस बरछी को घोट

by that elephant and standing as if it were in fire and wounded by  
the enraged Bhagadatta, the Pandav army was much distressed. At  
this Ghatotkach much enraged rushed against Bhagadatta. Ghatot-  
kach of wonderful form with eyes red in anger, assumed a dreadful  
shape and took up a dreadful spear that could pierce through a moun-  
tain, he hurled it with an intention to kill the elephant. The spear  
had flames of fire on all sides 60. Seeing the spear coming suddenly  
upon him Bhagadatta the king of Pragjyotish cut it with a beautiful  
sharp and dreadful arrow of the shape of crescent. The golden spear  
cut by the arrow into two pieces fell down on earth like the vajra of  
Indra. Seeing the spear cut and fallen, Bhagadatta took up a very  
sharp spear made of gold and hurled it at the rakshas with a cry of stay  
stay. Seeing the spear falling from the sky like vajra, the rakshas  
with a jump held it in his hand and roared a loud roar 65. And

तद्विभूतमिधामयम् । ६६ ॥ तद्वेद्यं कृतं कर्म राक्षसेन बलीयसा । त्रिवि देवा  
सगन्धर्वा मुनयश्चापि विस्मिता ॥ ६७ ॥ पाण्डवाश्च महाराज भीमसेनपुरोगमा ।  
साधुसाध्वितिनाम्न पृथिवीमन्वनादयन् । ६८ ॥ त तु धृष्टा महानाद् प्रहृष्टाना  
महात्मनाम् । नामृष्यत महेष्वासो भगदत्त प्रतापवान् ॥ ६९ ॥ स विस्फार्य मह  
श्चापं मिद्राशनिस्तमप्रभम् । तर्जयामास धेगेन पाण्डवाना महारथान् ॥ ७० ॥ विद्य  
जन् विमलास्तीक्ष्णाशाराचान् ज्वलनप्रमान् । भीममेकं विव्याध राक्षस नवमि शरे  
॥ ७१ ॥ अभिमन्यु त्रिमिधैव केषयान् पञ्चमिस्तथा । पूर्णपतविद्युदेत शरेणानत  
पर्वणा ॥ ७२ ॥ विभेद दक्षिणं धातु क्षत्रवेद्यस्य बाहवे । पपात सहसा तस्य सशरधनु  
रुत्तमम् ॥ ७३ ॥ द्रौपदेयास्तत पञ्च पञ्चमि समताडयन् । भीमसेनस्य च क्रोधा  
त्रिजघान तुरङ्गमान् ॥ ७४ ॥ व्यज केसरिज्चास्य चिच्छेद पिशिलैर्मिभि ।

पर राखकर राजा के देखनेही देखने तोड़ डाला यह सबको आश्चर्यसा हुआ । ६९ ।  
पराक्रमी राजस से किये हुए उस कर्म को देखकर आकाश में गन्धर्वों समेत देवता  
और मुनि भी आश्चर्य करने लगे, हेमहाराज जिनमें भीमसेन अग्र गणनीय हैं  
उनपाण्डव लोगों ने धनपथ्य शस्त्रों से पृथ्वी को शब्दापमान किया, फिर बड़ा  
धनुषधारी प्रतापवान भगदत्त पाण्डवों के उस अत्यंत आनेन्दकारी शब्द  
को सुनकर न सह सका । ६९ । और इन्द्र के बने के समान बड़े धनुष को चढ़ाकर  
उन ने पाण्डवों के महाराथियों को घुटका । ७० । फिर निर्मल स्वच्छ प्रकाशमान  
नाराचों को छोड़ते हुये भगदत्त ने एक बाणसे भीमसेन को और नौ बाणों से  
राक्षसों को घायल करके तीन बाणसे अभिमन्यु को पाँच से कंकय लोगों को  
व्याकुल किया और फिर अच्छे प्रकारसे खेंचे और मुके ग्रन्थीवाले बाणसे, क्षत्र  
देवकी दक्षिण भुजा को ऐसा घायल किया कि बड़े भुजा धनुष समेत अकर्ममात पृथ्वी  
पर गिर पड़ी, फिर पाँच बाणों से द्रौपदी के पुत्रों को घायल करके बड़े क्रोधसे

within sight of the king he broke it into pieces with the help of his  
knee. This was a wonder. Seeing the wonderful deed of the rakshas  
the gandharvas, gods and munis on high were much amazed. The  
Pandavas led by Bhimsen rang the directions with their warcries. Then  
the great archer Bhagdatta of great prowess could not bear the joyful  
sounds of the Pandavas and taking up his bow like the vajra of Indra  
challenged the Pandav warriors. 70 Then discharging his bright  
arrows, Bhagdatta wounded Bhimsen with one arrow, the rakshas  
with nine. Abhimanyu with 11 and the karkyas with, five, and  
with well drawn low discharging arrows having hidden knots so wound  
ed Keshatadeva's right arm that it was severed from his body and  
fell down with the bow. Then wounding the sons of Draupadi in a  
rage, he killed Bhimsen's horses. Then with three sharp arrows, he

निधिमद् विनिधान्यैः सारथि चास्य पत्रिमि । ७५ ॥ स गाद्विद्धोऽप्यथितो रथोपरथ  
उपाविशत् । विशोकं भरतधेयं भगदत्तं संयुगे ॥ ७६ ॥ ततो भीमो महाबाहुर्धि-  
रया रथिनांवरः । गदां प्रगृह्य वेगेन प्रचस्फन्द्य रथोत्तमात् ॥ ७७ ॥ तमुद्यतगदं दृष्ट्वा  
सगृह्णमिव पर्वतम् । तावकानां भयं धीरं समपद्यत भारत ॥ ७८ ॥ एतस्मिन्नेवकाले  
तु पाण्डवः कृष्णसारथिः । आजगाम महाराज निज्जन्तशत्रून् समन्ततः ॥ ७९ ॥ यत्रतो  
पुरुषध्यामौ पितापुत्रौ महाबलौ । प्राग्ज्योतिषेण संयुक्तौ भीमसैनघटोत्कचौ ॥ ८० ॥  
दृष्ट्वाच पाण्डवो भ्रातॄन् युध्यमानान्महाराथान् । त्वरितो भरतधेयः तत्रायुध्यतकिर-  
च्छरान् ॥ ८१ ॥ ततो दुर्योधनो राजा त्वरमाणो महाराथः । सेनामचोदयत् सिंघं रथ-  
नागाद्व्यसेकुलाम् ॥ ८२ ॥ तामापतन्तो सहस्रा कौरवाणां महाबलम् । अभिमुद्रायामे-  
भीमसेन के घोड़ों को मारा, फिर विशिखनाम तीन बाणों से सिंह के बिहून  
रखनेवाली उसकी ध्वजा को काटा और दूसरे तीन बाणों से उसके सारथी को  
घायल किया ७५ है भरतर्षभ युद्ध में भगदत्तसे अत्यन्त घायल और पीड़ित वह विशोक  
सारथी रथके भीतर बैठगया, इसके अनन्तर रथियों में भृष्ट महाबाहु भीमसेन  
बिगड़होकर बड़ी शीघ्रतासे गदाको हाथमें लेकर उस रथ से कूदा, हे राजा उस  
पर्वतके समान उठाई हुई गदाको देखकर आपके भूतों में बड़ा भय उत्पन्न हुआ,  
इसके पीछे श्रीकृष्ण भगवान्को सारथी रखने वाला पांडव अर्जुन चारों ओर से  
शत्रुओंको मारता हुआ वहां आ पहुँचा अहां कि वह महाबली पुरुषोत्तम पिता पुत्र  
भीमसेन और घटोत्कच प्राग्ज्योतिष के राजा भगदत्त से युद्ध कर रहे थे हे भरतर्षभ  
वह अर्जुन युद्धकरते हुए महारथी भाइयों को देखकर अत्यन्त क्रोधसे बाणों की वर्षा  
करके युद्ध में प्रवृत्त हुआ, उसके पीछे महारथी राजा दुर्योधन ने बड़ी शीघ्रता से  
रथ हाथी घोड़ों से संयुक्त सेना को भेजा, फिर श्वेत घोड़े रखनेवाला पांडव अर्जुन  
बड़े वेग से उस अकस्मात् आनेवाली कौरवी महासेना के सम्मुख गया, और राजा

cut down his ensign bearing the figure of a lion and with three more wounded the driver. 75. Excessively wounded and distressed by Bhagadatta, Vishok the driver sat down within the chariot. Then the best of charioteers, valliant Bhimsen, destitute of chariot, jumped down from it mace in hand. Your warriors were much terrified at the sight of that mace upraised like a mountain. Then Arjun the Pandav having Shree krishn for his chariot driver, came on destroy- ing the foes where the father and son, Bhimsen and Ghatotkach were fighting against prince Bhagadatta. 80. Seeing his brave brothers engaged in fight, O best of Bharats, Arjun began to fight discharging his weapons. Then the great warrior Prince Duryodhan sent an army of chariots, elephants and horses in great haste. Arjun the possessor of white horses rushed against the Kaurav army which was

मेन पाण्डव देवतवाहन ॥ ८३ ॥ भगदत्तश्च समरे तेन नागेन भारत । विमृन्तनूपाद  
वचलं युधिष्ठिरमुपाव्रथत् ॥ ८४ ॥ तदासीत्सुमहद्युद्धं भगदत्तस्य मारिषः । पञ्चालै  
पाण्डवेयश्च केकयेश्चाद्यतायुधैः ॥ ८५ ॥ भीमसेनोपि समरं तावुभौ केशवार्जुनौ ।  
अभावपद्यथावृत्तं मित्रबन्धमुत्तमम् ॥ ८६ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मववपर्वणि भगदत्तपराक्रमे

पडनवतितमोऽध्यायः ॥ ९६ ॥

सञ्जय उवाच । पुत्रं विनिहतं भुत्वा इरावन्तं घनञ्जय । दुःखेन महताविष्टो  
निं द्वयसदं पन्नगो यथा ॥ १ ॥ अग्रणीत् समरे राजन् धाम्नुदेवमिदं वचः । इदं नूनमहा  
प्राज्ञा विदुरा दृष्ट्वाद् पुरा ॥ २ ॥ कुरुणो पाण्डवानाञ्च क्षयं धारं महामति । स ततो  
निवारितवान् धृतराष्ट्रं जनेश्वरम् ॥ ३ ॥ अन्येच बहवो धीराः सप्राप्ते मधुसूदन ।

भगदत्त उस अपने हाथी के द्वारा पांडवों की सेना को मर्दन करता हुआ युधिष्ठिर  
के सम्मुख गया, इसके पीछे हे राजा धृतराष्ट्र वहां भगदत्त का और पांडवों का युद्ध  
पांचालदशी और केकयदेशी लोगों समेत बड़े २ अस्त्र शस्त्रों के द्वारा महा भयानक  
हुआ, फिर भीमसेन ने भी उसी युद्ध में उन केशव और अर्जुन दोनों महात्माओं से  
इरावानके मारेजानेका जैसा दृष्टान्त हुआ सब यथार्थ वर्णन किया । ८६ ।

अध्याय ९७ ॥

संजय बोले हे राजा उस इरावान नाम पुत्रकोमराहुआ सुनकर बड़े खेद और शोकसे  
भरा, सर्प की समान श्वासा लेगा हुआ अर्जुन वामुदेवजी से यह बचन बोला कि  
परम चतुर बुद्धिमान सत्यवक्ता विदुरजी ने पूर्वसमय में बड़े निश्चय से इस कौरव  
और पांडवों के महाघेर नाशको देखाथा इसी कारण उन्होंने राजाधृतराष्ट्र से  
निषेध किया था, हे मधुसूदनजी इस के विशेष बहुतमे वीर लोग युद्ध में जैसे कौरवों

thus advancing King Bhagdatta destroying the Pandava armies  
with the help of his elephant encountered Yudhishtir Then, O  
king Dhritrashtra the battle between Bhagdatta and the Pandavas  
assisted by the karkayas and the Panchals, using weapons and  
missiles was very severe. Bhimsen then gave Keshav and Arjun in  
the field of battle, a detailed account of the death of Iravan as it hap-  
pened' 86

## CHAPTER XCVIII

"Hearing of the death of Iravan," said Sanjaya, "Arjun was fill  
ed with grief and dismay, and sighing like a serpent said to Vasudev  
Surly Vidur had already foreseen the great destruction of the Kaura  
vas and the Pandavas as he forbade Dhritashtra. As many brave  
warriors are destroyed by the Kauravas as I have slain them. All  
this battle is being done for the sake of wealth. I despise a wealth



निहताः कौरवैः मन्थ्य तयास्माभिश्च कौरवाः ॥ ४ ॥ अर्थहेतोरन्येष्ट क्रियते  
 कर्म कृत्स्नतम । धिगयान् यत्कृते ह्येवं क्रियते क्षातिसंशयः ॥ ५ ॥ अधनस्य  
 मृतं धनं न च क्षातिवधाद्धनम् । किन्तु प्राप्स्यामहे कृष्ण हत्वा क्षातीन्समागतान् ॥ ६ ॥  
 दुर्योधनापराधेन शकुनः सौवलस्य च । क्षत्रिया निधनं यान्ति कर्णदुर्मन्त्रितेन च ॥ ७ ॥  
 इदानीं च विजानामि मुकृतं मधुसूदन । कृतं राक्ष महाबाहो पांचताक्षसु-  
 योधनम् ॥ ८ ॥ राज्याहं पञ्चधा प्राप्ता नाकार्षीत् स च दुर्मतिः । इन्द्रया हि-  
 क्षत्रियाद्गुरान् शयानान् धरणीतले । ९ ॥ निन्दामि मृशमात्रानं धिगस्तु क्षत्रे  
 जीविकाम् । अशक्तमिति मामेते प्रास्यन्ते क्षत्रिया रणे ॥ १० ॥ युद्धन्तु मेनं क्वचिन्  
 क्षातिभिर्मधुसूदन । मञ्जुषादयं हयान् शीघ्रं पार्श्वराष्ट्रचमूं प्रति ॥ ११ ॥ प्रतर्प्येमहा-  
 पारं भुजाभ्यां समरोद्धिमम् । नायं थापं यितुं कालो विद्यते माधव कर्वाचत् ॥ १२ ॥

के हाथ से मारेगये उसी प्रकार युद्ध में मेरे हाथ से भी अनेक कौरव मारेगये । हे  
 महेत्तम यह सब युद्ध कर्म केवल धनही के निमित्त किये जाते हैं ऐसे धन आदि को  
 धिक्कार है जिन के कारण ऐसा क्षातिवालों का नाश किया जाता है । ५ । इस  
 क्षाति के मारने से तो निर्धनही मरना श्रेष्ठ है हे श्रीकृष्णजी हम जान वालोंको मार  
 कर क्या फल पावेंगे, दुर्योधन और सुव्रत के पुत्र शकुनी के अपराध अथवा करण  
 की बुरी मलाहों से क्षत्रीलोगों का नाश हुआ जाता है, हे महाबाहु श्रीकृष्णजी अब  
 मैं अच्छी रीति से जानन हूँ कि राजा युधिष्ठिर ने बड़ा अच्छा काम किया कि  
 दुर्योधन से आधेराज्य वा पांचही गांवोंको अभिलषा चाही और उस निर्बुद्धी ने  
 वह भी उनकी अभिलाषा पूरी नहीं की मैं इस युद्ध भाषे में मोते हुए बड़े २ शूर-  
 धीर क्षत्रियों को देखकर, अनेको अत्यन्त बुरा कहकर क्षत्री की जीविका को  
 अत्यन्त धिक्कार देता हूँ, हे मधुसूदनजी मैं क्षातिवालों से युद्ध करना न चाहूँ तो सब  
 क्षत्री लोग मुझको युद्ध में असमर्थ समझेंगे । १० । इस कारण हे मधुसूदन आपधोड़ों  
 को जीवही दुर्योधन की सेना में ले चलो, अब मैं भी अपनी भुजाओं से इस युद्ध  
 रूपी महासमुद्रको जीवही तरुगा क्योंकि यह समय किसी स्थान पर भी अतामर्थ

for which kinsmen are slain 5. To die in poverty is better than the  
 destruction of kinsmen. What shall we gain Krishna after destroying  
 them. By the fault of Duryodhan and Shakuni the son of Su'al  
 and the wicked council of Karan all this destruction of Kshatryas is  
 taking place. I know well, brave Krishna, that Prince Yudhishtir  
 was right in that he wished to take half the kingdom or even five  
 villages from Duryodhan, but the latter would not part with even  
 that much. Seeing these great warriors sleeping on the field of battle,  
 I blame myself and the work of a kshatrya. The Kshatryas will think  
 me to be weak, if I donot fight against my kinsmen 10. Drive  
 therefore my horses into the field of battle, Madhusudan. I too,

पवमुकस्तु पाथेन केशव परवीरहा । चोदयामास नानभ्यान् पाण्डुरान् धातरहसः ॥ १३ ॥ अथ शब्दो महानासीत् तव सैन्यस्य भारत । मारुतोद्भूत वेगस्य सागरस्यैव पर्यणि ॥ १४ ॥ अपराहुणे महाराज सग्राम समपद्यत । पर्जन्यसमनिर्घोषो भीष्मस्य सह पाण्डवै ॥ १५ ॥ ततो राजस्तर्ज सुता भीः सेनमुपाद्रवन् । परिवाय्ये रणे द्रोण वसवो वासव यथा ॥ १६ ॥ तत शान्तनयो भीष्म वृषश्च रथिनावर । भगदत्त मुश मांचधनञ्जयमुपाद्रवन् ॥ १७ ॥ हार्दिक्यो बाहलिकश्चैव सात्यकि समभिद्रुता । अम्ब एकस्तु नृपति रभिमन्युमवस्थित ॥ १८ ॥ शेपास्त्यन्ये महाराज शेपानेव महारथान् । तत प्रवृत्ते युद्ध घोररूप भयावहम् ॥ १९ ॥ भीमसेनस्तु सम्प्रेक्ष्य पुत्रास्तव जनेदवर । प्रजज्वाल रणे कुस्रो हविषा हव्यवाडिष्ठ ॥ २० ॥ पुत्रास्तु तव कौन्तेय छादयाश्चकिरे

होने का वर्त्तमान नहीं है, इस प्रकार अर्जुन के वचनों को सुनकर शत्रु संहारी केशव जी ने उन श्वेतरूप वायुके समान तीव्रगामी घोड़ों को हांका, इसके पीछे हे राजा आप की सेना में ऐसा महा शब्द हुआ जैसे कि पर्व के समय वायुमें उठे हुए वेगवान् समुद्रका घोर शब्द होता है, हे महाराज अपराहनके समय भीष्मजी के और पांडवलीनों के युद्धमें बादल के समान शब्द हुए ॥ १५ ॥ इसके पीछे हे राजा आपके पुत्र युद्धमें द्रोणाचार्यको रत्नितकरके भीमसेनके सम्मुख ऐसे गये जैसे इन्द्रको राक्षित करके अष्टवज्जाते है, फिर शन्ननुके पुत्र भीष्मजी और रथियों में श्रेष्ठ कृपाचार्य, भगदत्त, मुशर्मा, यह सब अर्जुनके सम्मुख गये और, कृतर्था व बाहलीक सात्यकी के सम्मुख हुए और रागा अंबट्टक अभिमन्यु के सम्मुख वर्त्तमान हुआ, इन के विशेष शेष बचे हुए शूरवीर उबेरु मशरविश के सम्मुख गये फिर महा भयानक युद्ध मारम्भ हुआ, हे राजा फिर भीमसेन आपके पुत्रोंको देखकर ऐसा क्रोधित होकर अभिरूप हुआ जैसे कि हव्य को पाकर अग्नि प्रचण्ड होवे है, फिर आप के पुत्रों ने बाणों से भीमसेन को ऐसा डक दिया, जैसे कि वर्षाऋतु में बादल

shall with my arms cover the ocean of battle, for it is no time to stand still like a weakling' On hearing the words of Arjun, Keshav the destroyer of foes drove those white horses swift as wind. Then there was an uproar in your army like that of the ocean caused by the wind at the full moon. Bhishm and the Pandavas thundered like clouds in the field of battle in the afternoon. Then, O king, your sons protected Dronacharya in battle who faced Bhishma like Indra protected by the Vasus. Then Bhishma the son of Shantanu, Kripacharya the best of charioteers Bhagdat and Susharma encountered Arjun, Kritvarma and Vahlik tried Satyaki and king Amavashita met Abhimanyu. The rest of the warriors encountered the remaining army on the opposite side. A dreadful battle ensued. Then, O king, Bhishma, seeing your sons there he became furious, like fire on pouring libation. Your sons hit Bhishma with their arrows as clouds in the

शरीरे । प्रावृषीव महाराज जलदाह्यपर्वतम् ॥ २१ ॥ संच्छाद्यमानो बहुधा पुत्रैस्तत्र विशां  
पते । सृषिकणीमलिहन् वीर शार्ङ्गल इव दर्पितः ॥ २२ ॥ व्यूढोरस्कं ततो भीम पातया  
मास भारत । क्षुरप्रेण सुतीक्ष्णेन सोमवद्गतजीवितः ॥ २३ ॥ अपरिण तु मल्लेन पीते  
ननिशितननु । अपातयत् कुण्डलिनं सिंह शुद्धमृगं यथा ॥ २४ ॥ ततः सुनिशितान्  
प्रीतान् समादत्त शिखीमुखान् । ससर्ज्जं त्वरया युक्तं पुत्रांस्ते प्राप्य मारिषः ॥ २५ ॥  
प्रेषिता भीमसेनेन शरास्ते हृदयध्वजा । अपातयन्त पुत्रास्ते रथेभ्यः सुमहारयाद्  
॥ २६ ॥ अजोद्युष्टिं कुण्डभेदिं वैराट् दीर्घलोचनम् । दीर्घबाहुं सुबाहुश्च तथैव कनक  
ध्वजम् ॥ २७ ॥ प्रपततस्म वीरास्ते चिन्तुर्मरुतपथम् । वसन्ते पुष्पशयलादचूताः प्रप  
तित्वाप्य ॥ २८ ॥ ततः प्रकुडुषु शपास्तवपुत्रा महाहवे । त कालमिव मग्नन्तो भीम-  
सेन महाबलम् ॥ २९ ॥ द्रोणस्तु समर वीर निर्दहन्त सुतांस्तव । यथाद्रि यारिधारा  
भि सर्गन्ताह्वपकिरच्छरे ॥ ३० ॥ तत्राद्भुतमपह्नयाम कुन्तीपुत्रस्य पीडयम् । द्रोणेन  
पर्वतको दह देते हैं । २१ । हे राजा आपके पुत्रोंमें बहुत दके हुए होठोंको चावते  
शार्ङ्गलके समान गर्वित महाशली भीमसेनने, अत्यन्त तीक्ष्ण छुरमवाणसे व्यूढोरस्क  
को ऐसा गिराया - किं वह मर गया, फिर दूसरे पीले तीक्ष्ण भस्मसे कुंडली कोभी  
ऐसे गिराया जैसे कि छोटेमृगको सिंह गिराताहै, इसके पीछे हेराज! बड़ीशीघ्रतासे  
भीमसेन ने अत्यन्त तीक्ष्ण शिखीमुख बाणों को हाथों में लिया । २५ । और आपके  
पुत्रोंपर छोड़े उनभीमसेनके चनापेहुए बाणोंने आपके महारथी अनाधृष्ट, कुण्डभेद,  
वैराट, दीर्घलोचन, दीर्घबाहु, सुबाहु, कनकध्वज पुत्रोंको पृथ्वीपर गिराया और सब  
वीर गिर कर ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि वसन्तऋतु में गिरे भोग पड़ेहुए लाल-  
फूल होतेहैं, । २८ । इसके पीछे आपके शेष बचेहुए पुत्र भीमसेन को काल के  
समान जानकर युद्ध से भाग गये, फिर द्रोणाचार्य ने आपके पुत्रों के जलाने  
गाने भीमसेन को बाणों की वर्षा करके चारों ओरसे ऐसा ढक दिया जैसे कि  
बादल जलकी धाराओं से पर्वतको ढकता है, । ३० । वहाँ हमने कुन्ती के पुत्र

rainy season hide a hill 21 Excessively hidden by your sons and  
biting his lips, valliant Bhimsen, proud as a lion, killed Vyudhorask  
with a sharp arrow By another yellow dart he felled Kundali as a  
lion kills a small deer. Then O king, he took up in his hand very  
sharp arrows grinded on stone 25 He discharged them at your sons.  
By those arrows Bhimsen caused the fall of your sons Anadhrisht,  
Kund blud, Vanat, Dughlochan, Dughvahu, Suvahu and Kanak-  
dhvaj. All these warriors, lying on the ground, looked glorious like  
red flowers lying on earth in the sea-on of Spring The rest of your  
sons, regarding him as dangerous as Death, fled from the field of  
battle. Then Dronacharya hid Bhimsen the dest-oyer of your sons  
with his arrows as clouds hide a mountain with the showers of rain  
30 There we saw the prowess of Bhimsen, the son of Kunti, who

धार्म्यमाणोपि निजघ्ने यत् सुतास्तव ॥ ३१ ॥ यया गोवृषभो वर्षे सन्धीरयति खात  
 पतत् । भीमस्तथा द्रोणमुक्त शरवर्मदीधरत् ॥ ३२ ॥ अद्भुतञ्च महाराज तत्र चक्रे  
 धनुर्धर । यत् पुत्रास्तेऽवधीतसख्ये द्रोणैव न्यवारयत् ॥ ३३ ॥ पुत्रेपुत्रधारेषु चिक्रीडा  
 र्जुनपूर्वज । मृगेष्विच महाराज खरन् व्याघ्रो महाबल ॥ ३४ ॥ यथाहि पशुमध्यस्था दार  
 यत पशून् वृक । वृकादरस्तव सुतास्तथा व्यद्रावयद्रणे ॥ ३५ ॥ गाङ्गेयोमगच्छथ  
 गौतमश्च महारथा । पाण्डवं रभस युद्धे धारयामासुर्जुनम् ॥ ३६ ॥ अक्षैरक्षाणि  
 संधार्य तेषासोतिरथो रथे । प्रवीरास्तव सैन्येषु प्रेषयामास मृत्यवे ॥ ३७ ॥ अभिम-  
 न्युत्तुराजान मम्वष्ट लोकविश्रुतम् । विरथ रथिनाश्रेष्ठ धारयामास सायकैः ॥ ३८ ॥  
 धिरयो धैर्यमानस्तु सौभद्रेण यशस्विना । अवप्लुत्य रथात्तूर्ण मंबष्ठोवसुधाधिप ३९ ॥  
 आसिं बिक्षेप समरे सौभद्रस्य महात्मन । आकरोह रथं चैत्र हार्दिकयस्य महाबल

भीमसेन के पराक्रम को देखा कि जिसने द्रोणाचार्य के रोकने पे भी आपके पुत्रों को मारा, हे राजा जैसे कि आकाश से गिरेहुए जलको गो वृषभ जंगल में सहते है उसी प्रकार द्रोणाचार्य के बाणोंको भीमसेन ने सहा, फिर वहाँ भीमसेनने दूसरा अद्भुत कर्म किया कि आपके बैटोको मारकर द्रोणाचार्य को भी रोक, अर्जुन का बड़ाभाई आपके वीरपुत्रोंका महापीड़ा देनेवाला ऐसा हुआ जैसे कि मुर्गोंके मध्य में महाबली व्याघ्र पीड़ा देनेवाला होताहै जैसे कि भेड़िया पशुओं के बीचमें नियत होकर पशुओं को व्याकुल और चलायमान करता है इसी प्रकार भीमसेन ने युद्ध मे आपके पुत्रोंको भगादिया । ३५ । फिर भीष्मजी भगदत्त और महारथी कृपाचार्य ने युद्ध में वेगवान् अर्जुन को धारण किया अर्थात् उसके बाणों को सहा उस अनि रथी ने युद्ध में उन सब के अस्त्रोंको अपने अस्त्रों से रोककर आपकी सेना के बड़े २ बाणोंको मारा, और अभिमन्यु ने भी रथियों में श्रेष्ठ संसार मे विख्यात राजा अंबष्ठ को शायकों से विरथ कर दिया, फिर उस यशस्वी अभिमन्यु ने विरथ हुए राजा अंबष्ठ ने शीघ्रही रथ से कूद महात्मा अभिमन्यु

Although checked by Dronacharya could not be kept back from killing your sons. Bhishma bore the arrows of Dronacharya as cattle undergo the shower of rain in a forest. Bhishma then performed another wonder having killed your sons he checked Dronacharya. The elder brother of Arjun destroyed your sons as a lion destroys a herd of deer. As a wolf entering a flock disturbs and disperses them, so did Bhishma cause your sons to scamper away 35. Then Bhishma, Bhagdatt and valliant Kripacharya bore the velocity of Arjun's arrows. That brave warrior, having checked the weapons of other warriors with his own, killed the great warriors of your army. Abhimanyu too, with his prowess, cursed the best of charioteers, famous king Amvasht to leave his chariot. Made destitute of chariot by Abhi-

॥ ४० ॥ आपते तनु निर्मिश्रं युद्धमार्गविशारद । तत्रैवाव व्यसयामास सौभद्र परवीर  
रहा ॥ ४१ ॥ व्यसित वास्य निर्मिश्रं सौमदेय रणे तदा । साधुसाधयति सैन्यानां  
प्रणादोभूद्विनाम्यते ॥ ४२ ॥ धृष्टद्युम्नमुखास्त्यन्ये तत्र सैन्यमयोधयन् । तथैव तावदा-  
सर्वे पाण्डुसैन्यमयोधयन् ॥ ४३ ॥ तत्राकन्दो महान्मासीत्तव तेषाञ्च भारत । निघ्नता  
वृहमन्योन्य कुर्वता । का दुष्करम् ॥ ४४ ॥ अन्योन्य हि रणे शूरा केशेष्याक्षिप्यमानिन ।  
नखदन्तैर्युध्यन्त मुष्टिभिर्जानुभिस्तथा । ४५ ॥ तलैश्चैवाथ निर्मिश्रैर्बाहुभिश्च  
सुमहियतैः । चिवरभ्याप्य चान्योन्यमनयन् यममादयन् ॥ ४६ ॥ न्यहनञ्च पिता  
पुत्रं पुत्रश्च पितर तथा । व्याकुलीकृतसर्वाङ्गा युयुधुस्तत्र मानवा । ४७ ॥  
रणे व्याकुणि चापानि हेमपृष्ठानि भारत । हतानामपुन्रिदानी कलापाश्च महाधना ४८  
जातरूपमयं पृष्ठै राजतैर्निशिता शरा । तैलधौताव्यराजन्त निर्मुक्तमुजगोपमा । ४९ ॥  
हस्तिदन्तमरुचङ्गाणाम् जातरूपपरिष्कृताम् । अर्माणि चापविद्वानि रुद्रमचिप्राणि

के ऊपर अपने खड्ग को फेंका और बड़ी शीघ्रता से महाबली कृतवर्मा के रथ पर  
मवार हुआ । ४० । फिर युद्ध में महाकुशल शत्रुहन्ता अभिमन्यु ने उस गिरतेहुए  
खड्ग को अपनी तीव्रता से निष्फल किया तब अभिमन्यु से निष्फल किये हुए  
खड्ग को देखकर सैन्य के लोगों ने बाधु शब्द उच्चारण किया, और जैसे कि  
धृष्टद्युम्न आदि वीर लोग शत्रु की सेना से लड़े उसी प्रकार आपके सब वीर पुरुष  
भी पांडवों की सेना से लड़े हे भरतर्षभ वहां परस्पर में मारोंको मारते और कठिन  
कर्मोंको करते हुए आपके और पांडवों के वीरों के महाशब्द हुए । ४१ । युद्ध में  
मजमनीय वीर लोग परस्पर में बलों को रेंचकर नख दांत और मुष्टिका और  
जांघों में भी युद्ध करने लगे हुए और अवकाश पाकर त्रमाचों तलवारों और  
अठ्ठे नियत भुजों से बहुतों ने बहुतोंको यमपुरीमें भेजा, उस युद्ध में पिनाने पुत्रको भी  
मारा अर्थात् तब मनुष्य सर्वांगरहित व्याकुल हो होकरभी युद्धको करतेहुए, हे राजा  
धृतराष्ट्र युद्ध में मरेहुए वा घायल शूरवीरों के सुनहरी पृष्ठवाने सुन्दर धनुष और

manyu, king Amrshat soon jumped down from his chariot and  
having hurled his sword at him, mounted the chariot of Kritvarma 40  
Then dexterous in battle Abhimanyu the destroyer of foes made  
the falling sword futile by his own swiftness. Seeing that sword  
made useless by Abhimanyu, the people raised cries of good and well.  
Your warriors fought as bravely against the Pandav warriors as  
Dhrishtadyumna and other warriors fought against your army. Kill  
ing one another and doing hard deeds your warriors and the Pandavas  
made a great noise. Brave warriors of great merit in battle dragged  
others by the hair and wounded them with their nails, teeth, bows  
and kicks. On some occasions they used slaps, swords and strong  
arms to destroy their adversaries. Fathers destroyed their sons in

प्रविशन्नाम् ॥ ५० ॥ सुवर्णं विरुतप्रसादान् पतिशान् हर्मयितान् । जातस्यपमयाश्चर्द्धी  
शकीध्वजकोट्यवला ॥ ५१ ॥ सुसन्नाहाय पतिता सुसलानि गुरुणिच । परिधानपट्टि  
शायेन भिक्षिपालाश्च मारिष ॥ ५२ ॥ पतितान् विविधायाथाधिवाग्नेहम परिष्कृतान् ।  
कुर्याद्विषाकाराश्चामरान्व्यजनानिच ॥ ५३ ॥ नाना विधानि शस्त्राणि प्रगृह्य पति  
तानय । जीवन्त इव दृश्यन्ते गतसत्त्वामहारथाः ॥ ५४ ॥ गदाविमथितैर्गात्रैर्मसलेभि  
श्चमदनका । राजघाजिरथबुधैः शेरतेस्मनग क्षिता ॥ ५५ ॥ तथवादवन्तुनागाना शरी  
रैर्विन्मो तदा । सञ्जना यमुधाराजन् पर्वतेरिव सर्वश ॥ ५६ ॥ समरे पतितैश्चैव  
शस्त्राणिरशरीरैर्निक्षिपे पट्टिषु प्राप्ते रयस्वन्तै परदग्ध ॥ ५७ ॥ परिष्वेभिन्दु  
मालह्य शतध्वनिश्चमारिष । शरीरैः शस्त्रनिर्मिन्नैः समास्तीर्यत मेदिनी ॥ ५८ ॥  
विशस्वैरवशब्दैश्च शान्तिताघपरिहृतैः । गतासु भिरमिष्यन् प्रियभी निश्चिन्तामही ॥ ५९ ॥

तगीर अथवा सुनहरी रपहरी पुखवाले छोड़हुए तीक्ष्णधार बाणनेलमे शुद्ध  
रिपु हुए सपों के समान शोभायमान हुए, हाथीटात की मृदाले सुवर्ण मे  
जग्नि सङ्ग धनुष दाठ पराश, दुधारे, खड्ग, शक्ति, कयच, भारीमुशल, परिष,  
पट्टिग, धिरिडपाल अनेक प्रकारके गिरिहुए धनुष और अनेक प्रकार की मूलचमर  
पवे वा अनेक प्रकार के शस्त्रधारी महारथी और मरे मनुष्य भी जीवते मे दिखाई  
देते है । ५८ । हे राजा गदाओं मे मथे हुए अगों समेत मुशलों से दृटे शिर घायल  
हाथी घोडे और रथ पृथ्वी पर जपन कर रहे है अर्थात् बिछ हुए है, उन हाथी घोडे  
रथ और मनुष्यों मे ढकी हुई पृथ्वी मन और से ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि  
पर्वतों मे शांभन हाता है, युद्धभूमि में गिरी हुई वरछी और दुधारे खड्ग बाण  
तोमर पट्टिग पराश भल्ले छोडे के फरसे परिष धिरिडपाल शतर्णी और शस्त्रों मे  
मरे हुए शरीरों मे पृथ्वी सविस्तर बिदित होती है अल्प शब्द के वा दीर्घ शब्द के  
मृतक मनुष्यों के समूहों से व्याप्त हुई पृथ्वी महाशोभित बिदितहुई, तत्त्र केयूर

the hurry of the battle. The golden bows of the warriors killed or  
wounded in battle quivers and arrows having silver or gold  
feathers sharpened and oiled looked like serpents. The gold decked  
swords with iron handles bows shields missiles double edged swords  
spears armours clubs and other weapons lying down together with  
the fine tipped spears and arrows made the heads of warriors look as  
they were alive 54. Bristles of bows and leads by axes and clubs  
elephants horses and chariots are lying on the ground. Strewed over  
with them the earth looks glorious as if covered with mountains  
fallen over the field of battle spears double edged swords, tomars,  
darts axes clubs blades slings and other weapons and the  
bodies cutly them cover the whole earth. Crying low and loud,  
crowds of dying warriors embellish the face of the earth. Decked with

सतलये सकेयूरवाहुमिदचन्दनोक्षिते । हस्मिहस्तापर्मोदितये रुग्मिश्च तरस्यिनाम् ॥ ६० ॥ वद्धचूडामणिर्वर शिगमिदच सनुण्डले । पारितर्क्यपभाक्षणा वसो भारत मेदिते ॥ ६१ ॥ करये शोणित दिग्धर्विप्रकीर्णैश्च काचने । रराज समृश सुमि शान्ता चिं भिरिनातये ॥ ६२ ॥ विप्रविद्ध कलापैश्च गतितैश्च शरामनं विप्रकीर्णं शरैश्चैव रुक्म पुनै समन्तत ॥ ६३ ॥ रथैश्च सर्वता भनै किंकिणीजालगुणितै । घाजिमि दचहर्तैर्वाणि सस्त जिह्व सशोणिते ॥ ६४ ॥ अनुकूपे पताकामि रपासङ्गैर्ध्वजैरपि । प्रवीराणामहासलैर्विप्रकीर्णैश्चपादुरै ॥ ६५ ॥ मृस्तहस्तैश्चमातङ्गै शयानैर्विचमोमती । नानारूपैरलकारै प्रमदेवाभ्यलङ्कृता ॥ ६६ ॥ दन्तिमिदचापरैस्तत्र समासैर्गाढवेदनै । करै शब्द विमुञ्चद्भि शीकरैश्च मुहुर्मुहु ॥ ६७ ॥ विचमो तद्रपस्थानं स्यन्दमानै रिवाचले । नानारागै कम्बलैश्च परिस्तोमैश्च दन्तिनाम् ॥ ६८ ॥ धैर्यमणि दण्डैश्च पतितै रकुशै शुभै । घटाभिश्च गजेन्द्राणा पतितामि समन्तत ॥ ६९ ॥ विपादित

रक्षक और चन्दन चर्चित गुना हाथियों की शृङ के समान कटी जंघा और चूडामणि बंधे हुए उत्तम शरों के कुडलधारी शिरो से पृथ्वी अपूर्वही शोभा दे रही है । ६१ । और हे भरतवर्मा सुवर्णके फैले हुए कथिरसे भरे कवचों से पृथ्वी ऐसी प्रकाशमान हुई जैसे कि निर्धम अग्नियों से शोभित होती है, दृढ़ घनप तरकम और फैले हुए मुनहरी पुष्पवाले बाणों से और चारों ओर से घण्टों से युक्त दृढ़ हुए रथों से वा बाणोंसे मारे हुए कथिर में भरे तिनकी गिह्वा मुख से बाहर निकली थी उनघोड़ोंमें वा खेंची हुई पताकाओं से और उपासगिक ध्वजप्रांसि और वीरोंकी खांपड़ियों से वा बिसरी हुई चोटियों से और शृङ दृढ़ हुए हाथियों से पृथ्वी ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि नानाप्रकार के आमृषणोंसे अलङ्कृतस्त्री शोभित होती है । ६६ । वडा बहुत पीढत सडोसे शब्दकरते हुए पराशों समेत अन्य हाथियों से वह युद्धभूमि ऐसी शाभित हुई जैसे कि चलते हुए पहाडों से शोभाय मान होती है, नानाप्रकार के रगवाले हाथियों के कम्बलों से वा परश तोमरों से और धैर्यमणिवाले शुभ अकुशों से व चारों ओर से गिरे हुए गजेन्द्रों के घटों

armlets, guards and sanadil paste, the covered arms, the thigh like the trunks of elephants and the heads of warriors wearing earings and head jewels make the ground look yet more beautiful - 61 Covered with blood stained and gold filled armours the earth looked as if covered with fire without smoke. With the broken bows and quivers, the arrows with golden feathers strewn all over, el-triots and their bills lying all over, the discharged arrows, the bleeding horses with their tongues lolling out, broken banners, skulls of warriors strewn over like peaks and the trunkless elephants, the earth looked beautiful like a damsel decked with various sorts of ornaments and jewels - 66 With other elephants, wounded in trunks and shreking, the field of battle looked beautiful as if it had mountains moving on it. The field of battle looked like starlit sky with the coloured trappings of elephants,

विचित्राणि कुशानि रज्जुस्तथा । श्रेयसाश्चित्ररूपैश्च रुक्मकन्याभिरेव च ॥ ७० ॥ य  
 न्मैश्च बहुधादिउन्नेस्नामरैश्चापि क्वाचनै । अश्वानां रेणुकपिलै रुक्मरुत्नैरदृष्टै  
 ॥ ७१ ॥ सादिना भुजगं विउभै पनितै साङ्ग दैस्तथा । प्रायश्च विमलैस्तीक्ष्णैर्विमला  
 मिस्तथार्थिभि ॥ ७२ ॥ उष्णीषैश्च तथा चित्रैर्विप्रदृष्टैस्ततस्तत । विचित्राणां वर्षैश्च  
 जातरूपपरिष्कृतै ॥ ७३ ॥ अश्वास्तरपरिस्तोमै राकवैर्मृदितैस्तथा । नरैश्च चडामणिभि  
 विचित्रैश्च महोपनै ॥ ७४ ॥ उभैस्तथापि दैश्च चामरैर्व्यजनैः । पशन्दुयुतिभि  
 दैश्च घटैश्च चारुकुण्डलै ॥ ७५ ॥ कृतसदमभुभिरत्यर्थं चापाना समलकृतै । अपविष्टै  
 महाराज सुवर्णैश्च कुण्डलै ॥ ७६ ॥ महनक्षत्रशङ्ख शौरिवासा हसन्धरा । एवमेते  
 महासेन मृदिते तत्र भारत ॥ ७७ ॥ परस्पर सनासाद्य तरनेवाच्चसयुगे । तेषु भ्रान्तेषु  
 भ्रान्तेषु मृदितेषु भारत ॥ ७८ ॥ रात्रिः सम्भवत्तत्र नापश्याम तता नुगम् । ततो  
 यद्धार सैन्यानामप्रचक्र कुहाण्डवा ॥ ७९ ॥ रजनैर्मुलेषु रौद्रेतु घत्तेमानं महामये । अथ  
 हार ततः कृत्वा मरितु कुहाण्डवा । न्यविशन्त यथाकाल गत्वास्त शिविरं तदा ८०  
 इति महाभारतप० भीष्मवधप० अष्टमोऽध्यायः ॥ ७९ ॥

से और विचित्रविचित्र मल और ग्रीवाओं के मणियों से वा हाथीके बाजं बानी  
 सुवर्ण की रक्षियोंने बाजवन्दों समेत गिरी हुई भुजाओं से वा शुद्ध तीक्ष्ण परशों  
 से और निर्मल दुधारा खड्गों से विचित्र वाणों की वर्षामे ओकि राक नाममृगके  
 रोमोंसे बनेहुए अत्यन्त मृदुधे वा राजाओंकी अपत्य चडामणियोंसे वा दृष्ट छत्र  
 चामर व्यजन और चन्द्रकमल के समान मुखों के प्रकाशों से और हे महाराजभीरों  
 की अच्चे प्रकार से रची हुई द दी मूछते पृथ्वी ऐसी होगई जैसे कि नक्षत्र समूहों  
 में प्रकाशमान आकाश होताहै । ७७ । हे भरतर्षभ इसप्रकार आप की आर उन्होंने  
 यह दोनों भेना युद्ध में परस्पर सम्मुखहोकर गईं गईं होगई, उन सेनाओं के  
 थकने और तिरैर्विरहोंने और मर्दन हानेपर, रात्रिहोगई इसके पीछे हमने  
 चलने वालों को नहीं देखा फिर कौरव पांडवों ने सेनाओं का विश्राम किया  
 रात्रि के प्रारंभ होजानेपर कौरव और पाण्डव एकसाथही सदैव के समान  
 अपने २ डेरों में नियतहुए ८० ॥

battle res missiles, jewelled goads, bells of elephants strewn all over,  
 coverings of various colours necklaces of elephants, gold chains, ma-  
 chines, arms of warriors decked with jewels, sharp axes, bright double  
 edged swords, shower of arrows covered over with soft deerskin, head  
 jewels of princes broken shades chamars and fans, faces bright as the  
 moon or lotus flowers and with the fine beards and moustaches of  
 warriors 17 Thus O best of Bharata the armies of both sides met  
 in battle and were destroyed When these armies were thus tired and  
 dispersed or destroyed, the night came on. We could not see them  
 going to their camp The two parties took rest for the night and  
 both Kauravas and Pandavas slept during the night as usual " 80 "



सञ्जय उवाच । ततो दुर्योधनो राजा शकुनिवापि सौवलः । दुर्शासनश्च पुत्रस्तं  
 सूतपुत्रश्च जुजयः ॥ ३ ॥ समागम्य महापते मन्त्रं चक्रुर्विवक्षितम् । कथं पाण्डुमुता  
 सङ्ख्ये जेतव्याः समवाप्सि ॥४॥ ततो दुर्योधनो राजा सर्वोन्मानाह मन्त्रिणः । सत  
 पुत्रं समाग्राम्य सौवलञ्च-महाबलम् ॥ ३ ॥ द्रोणा भीष्मः कृपः शल्यः सौमदत्तिश्च  
 संयुगे । न पार्यान् प्रतिपाद्यन्ते न जाने तच्च कारणम् ॥ ४ ॥ धवध्यमानास्ते चापि  
 क्षययन्ति बलं मम । सोस्मि क्षीणबलः कर्णं क्षीणशस्त्रश्च संयुगे ॥ ५ ॥ निहत-पाण्डव-  
 गुरोरध्वेयैर्देवतेरपि । सोहं सशयमापन्नः प्रहरिष्ये कथं रमे । तमश्वीन्महाराज सूत  
 पुत्रो नयधिपम् ॥ ६ ॥ कर्ण उवाच । माशोच भरतधेष्ट करिष्येह प्रियं तव । भीष्म-  
 शान्तनवस्तूर्णं प्रयातु महारणात् ॥७॥ निवृत्ते युधि गात्रेभ्य न्यस्तशस्त्रेभ्य भारत । बह-  
 व्रथ्यान् हनिष्यामि सद्वितान् सर्वसौमके ॥ ८ ॥ पश्यतो युधि भीष्मस्य शपे सत्येन ते  
 नृप । पाण्डवेषु दयां नित्यं स हि भीष्मः करोति वै ॥ ९ ॥ अशकश्च रणे भीष्मो जितुं

अध्याय ९८ ॥

संजय बोले कि इसके पीछे राजा दुर्योधन और सुवलकापुत्र शकुनि, दुर्शासन  
 और दुर्जयकर्ण इनमयने मिलकर सलाहकरी कि पाण्डवों को सेना समेत कैसे विजय  
 करना चाहिये, यह सुनकर राजा दुर्योधन महाबली शकुनि और कर्ण को सम्मुख  
 करके उनसब मन्त्रियों से बोला, कि द्रोणाचार्य, भीष्म, कृपाचार्य, शल्य, भूरिश्रवा  
 यह सब मिले हुये पाण्डवों की युद्ध में पीड़ानहीं देते हैं इसका कारण मैं नहीं जानता  
 हूँ, बहसब बिना पाण्डु हुपही मेरीसेनाका नाशकरे डालते हैं, हे कर्ण मैं युद्ध में  
 अपनी सेना और शस्त्रों से नाशयुक्तहोकर देवताओंसे भी अजेय गुरवीर पाण्डवों से  
 निरादर कियागया हूँ इस सन्देहमें पड़ा हुआ मैं युद्धको कैसे करूंगा । ६ । हे राजा  
 यह सुनकर कर्ण ने कहा कि हे भरतर्षभ चिन्तामतकरो मैं तुम्हारे हितको करूंगा शततु  
 के पुत्र भीष्मजी कीप्रही युद्धसे निवृत्त होजायें, युद्धसे भीष्मजी के हटजाने और  
 सख्तांने रहित होजानेपर मैं सब सौमकों समेत पाण्डवों को भीष्मजी के देखनेहुपही

### CHAPTER XCVIII

Sanjaya said, "Then Prince Duryodhan and Shakuni the son of Suval with Dushasan and invincible Karan met in council to determine how to conquer the Pandavas. Prince Duryodhan thus addressed brave Shakuni, Karan and other ministers:—"Dronacharya, Bhishma, Kripacharya, Shalya and Bhurishrava together do not destroy the Pandavas, what is the reason? They destroy our armies without being themselves wounded. With my armed warriors, O Karan, I think myself invincible by the gods and yet I am being despised by the Pandavas. Being so doubtful how shall I fight out?" On hearing this, O king, Karan said, "Remove all care from your mind, best of Bharats; for I shall gratify your desire. Let Bhishma the son of Shantanu desist from fighting. On his giving up arms, I shall, with-

मेतान् महारथान् । अभिमानी रणे भीष्मो जेतुमेतान् महारथान् । अभिमानी रणेभी  
ष्मो नित्यं चापि रणोन्मिय ॥ १४ ॥ स कथं पाण्डवान् युद्धं जेष्यते तात सङ्गतान् । न  
त्वं शीघ्रमिती । गत्वा भीष्मस्य शिरः प्रति ॥ १५ ॥ अनुमान्य गृहं युद्धं शत्रुभ्यामप  
भारत । न्यस्तशस्त्रं ततो भीष्मे निहतान् मय्य पाण्डवान् ॥ १६ ॥ मयैकेन रणराजिन्  
संसुहृद्गणबान्धवादि । पंचमुक्तस्तु कर्णेन पुत्रो दुर्योधनस्तव । १७ ॥ अथवाऽऽतरेतत्र  
दुःशासनमिदं वच । अनुयायं यथा सर्वे संजीभयति सर्वशः ॥ १८ ॥ दुःशासनतथा  
क्षिप्रं सर्वमेवोपपादय । पंचमुक्त्वा ततो राजन् कणमाह जितेन्दव ॥ १९ ॥ अनुमान्य  
रणे भीष्म मेयोह द्विपदाभरणम् । आगमिष्ये ततः क्षिप्रं स्वस्वकाशमरिन्दम ॥ २० ॥  
अपक्रान्ते ततो भीष्मे प्रहरिष्यसि सपुत्रे । निष्पणतं ततस्तर्णे पुत्रस्तव विशम्पत ॥ २१ ॥  
सहितो सातृभिस्तैस्तु देवैरिव शतक्रतु । ततस्त नृपशास्त्रं शास्त्रं समविक्रमम् ॥ २२ ॥

माङ्गा हे राजा यहै तेरे सम्मुख, मर्त्य मकल्प पूर्वक, मतिज्ञाको कृपाहू और  
शपथ से कहताह कि वह भीष्म निश्चय करके पाँडवों पर दया करता है, इसे  
भीष्मजी युद्ध में उन महारथियों के विजय करने को असमर्थ है । १४ ॥ यह भीष्म  
युद्ध में महामहकारी और युद्धहीनो सदैव भिय माननाहै, हे तात वह सम्मुख भाये  
हुए पाँडवों को युद्ध में कैसे विजय करेगा सां तुम शीघ्रही यहा से भीष्म के  
हरे में जाकर, उन युद्ध गुरुको नमस्कार करके शत्रु के त्यागने के लिये  
कहो हे राजा भीष्मजी के शत्रु त्यागने पर युद्ध में सत्ता और मित्रो समेत  
पाँडवों को मुक्त अकेले कहो हाथ से भराहुआ देखोगे कण क पमे बचन सुनकर  
आप का पुत्र दुर्योधन, अपने भाई दुःशासन से बोला कि यात्राका सब सामान  
सब प्रकारसे तैयार हो । १५ ॥ ऐसा दुःशासन को वह दुर्योधन कर्ण से बोला,  
कि हे शत्रुओं के विजय करने वाले मैं दुर्योधन भीष्मको युद्ध के लिये समझाकर  
और भणाम करके शीघ्रही तेरे सम्मुख आऊगा, उमके पीछे भीष्मजी के हट  
जाने पर तुम युद्ध में प्रहार करोगे, हे राजा ऐसा कहकर आपका पुत्र अपने भाइयो

in sight of Bhishm destroy all the Pandavas with the Somas. I  
make a true promise in your presence and swear that Bhishm is, I ind,  
to the Pandavas and therefore incapable of conquering them 10. He  
is proud of his power and loves battle, but he can not conquer the  
Pandavas. You may be pleased to go at once to Bhishm's camp, and  
humbly ask that old man to give up arms. You will see all Pandavas  
with their armies and friends slain by me alone as soon as Bhishm  
gives up fighting. Hearing the words of Karan your son Duryodhan  
said to Dushasan his brother. Let there be every thing ready for my  
departure." 15. Then turning to Karan he said 'Destroyer of foes'  
I shall soon come back to you after asking Bhishm the best of men to  
desert from fighting and paying my respects to him. You will fight  
in the field of battle when Bhishm gives up fighting. Having said

आरोहयन्त्य तत्र प्राप्ता दुःशासनस्तदा । अद्रवा चक्रमुकुटा हस्ताभरणवान्नुप ॥१९॥  
धास्तिराष्ट्रं महाराजं विचित्रं स पथि व्रजन् । भण्डोपपुष्पनिकाशेन तृपनीयनिभेन च २०॥

स्वयामरा दाय ॥ ३९ ॥ सस्यज्व

राजा गाद्वयस्य यशस्विनः ॥ २६

वशिष्ठः काले संभृत्य स्वमुजं तदा ॥ २७ ॥ हस्तिहस्तोपमं शीघ्रं सर्वशत्रुनिघर्हणम् ।

समेत एमी शीघ्रतात् चला जेम कि देवताओं समेत इन्द्र जाता है, इस क पीछे  
राजा भी म अष्ट भिह समान पराक्रमी दुर्योधनको भाई दुःशामन ने शीघ्र ही  
घाई पर सवार किया । १९ । हे धृतराष्ट्र धाज्वन्द और मुकुट हस्त भूषणादि से  
भट्टकृत यह दुर्योधन प्राण में चलता हुआ भिण्डी के फल और सुवर्ण के समान  
प्रकाशमान उत्तम चन्द्रनादि से सगुणित देह निमल वस्त्रादिका को पहरे सिंह समान  
गति से ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि आकाश में निर्मल किरण युक्त सूर्य  
प्रकाशमान होता है भीष्म के डेर में जाते हुये उस नरोत्तम के पीछे सब लोको  
के बड़े धनुषधारी शूवीर और महाधनुषर भाई लोग ऐसे चले जैसे कि इन्द्र के  
पीछे देवता चलते हैं नरोत्तम इसी प्रकार कोई हाथी पर कोई रथ पर कोई  
घोड़े पर सवार होकर उसके साथ हुये, राजा की रक्षा के निमित्त वह मुहूर्तजन  
जिन्होंने शस्त्रोंको त्यागकर दिये थे एक साथ ही ऐसे प्रकट हुये जैसे कि इन्द्र  
की रक्षा के निमित्त देवता स्वर्ग में प्रकट होते हैं, कोरवों का रामा अपने सब  
कोरवत्तोंगा से सवित उन यशस्वी भीष्मजी के डेरको गया, उस समय उसके पीछे तो

this, your son hastened with his brothers to go to Bhishm as Indra does with the gods. Then Dushasan helped Duryodhan, the best of kings and full of prowess like a lion, to ride his horse. 19. Adorned, O king, with armlets diadem and finger-jewels, looking like a golden flower, his body lincinted with sandal and other scab, wearing fine clothes and walking like a lion, Duryodhan looked like the sun with his pure rays in the sky. Going to the camp of Bhim, that best of men was followed by the famous archers and warriors of the world and his brothers, mighty bowyers, like Indra followed by gods. Some of his followers, O best of men, were mounted on elephants, some on chariots, and others on horse back. Those of his friends, who had laid aside their weapons, came at once to guard the king as gods, in the heaven, do to protect Indra. The prince of the Kaurava, followed by

यान् । तद्मादहंसि गान्धर्वकृपाकर्तुं मयिप्रभो ॥ ३७ ॥ जहि पांडुसुतान्वेराय महप्रिय  
 दानवान् । महे सर्वान् महायज्ञ निहनिष्यामि सोमपाद ॥ ३८ ॥ पञ्चालान् कैकयैः  
 साधैरुपाधेति भारत । त्वद्वचः सत्यमेवास्तु जहिपाण्डु ममागतान् ॥ ३९ ॥  
 सोमकाश्च महचासान् सत्यवाग्मेव भारत । दययाप दिषाराज्यं ह्येषमावान्ममप्रभो  
 ॥ ४० ॥ मंदमायतयावापि ममरक्षासि पांडवान् । अनुचारीहि समरे कर्णं माहवशोमि-  
 नम् ॥ ४१ ॥ स जेष्यति रणे गार्धान् सुसुहृद्व्रणयान्धवान् । स एवमुक्त्वा नृपतिः  
 पुत्रो दुष्योधनस्तथ । नोवाच वचनं किञ्चिन्नोष्ये सत्यपराक्रमम् ॥ ४२ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवपर्वणि भीष्मदुर्योधनसम्वादे

अष्टनवतितमोऽध्यायः २८ ॥

इन्द्र समेत देव दानवों के भी विजय करने की अभिमाया रखते हैं तो इन  
 पाण्डवोंको उन के सहायकों समेत विजय करना कितनी बात है हे गान्धर्व भीष्म  
 की आप मुझपर कृपा करने को योग्य है, आप उनवीर पांडवोंको ऐसे मारो जैसे  
 कि महाइन्द्र दानव लोमोंको मारता है हे महाराज मैं सब सोमकों को मारूंगा  
 फिर कैकयोंको भीर पोवानों समेत केकय आ्यों को भी मारूंगा आप अपने  
 वचन को मन्त्रकरके सम्मुख आयि हुए पाण्डवों की मारो और बड़े पतुपधारी  
 सोमकों कोभी मारकर अपने वचनकी सत्यकरो हे भरतवंशी भीष्मपितामह दयासे  
 यामरे वैरभावसे अथवा मेरी भारव्य हीनतासे जो आप पांडवों की रक्षा करते हो  
 नो युद्ध में शोभा बानेवाले कर्ण को आज्ञादी, वह कर्ण युद्धमें सब सेनाभोरमुहर्षों  
 समेत पांडवों को मारिगा, आपका पुत्र इस प्रकारके वचन कहकर फिर उस सत्य  
 पराक्रमी भीष्मजी से कुछ नहींबोला ॥ ४२ ॥

gods and daanavas with Indra, how easy it is for us to conquer the Pan-  
 davs and their allies I crave your favour, Bhishm the son of Gangā.  
 Kill the Pandavas as Indra does the daanavas. I shall, O king, des-  
 troy all the Somaks and the Panchals together with the Kaikayas.  
 Fulfil your promise by killing the Pandavas when they face you, fulfil  
 also your promise of killing the Somaks, Grandfather, Bhishm, des-  
 cendant of Bharat! If through kindness to them, or unkindness to me  
 or through my misfortune you spare the Pandavas, allow the great  
 warrior Karu to do the work. He will destroy all the Pandavas and  
 their allies in battle. Having said these words to Bhishm of true  
 prowess, your son became silent." 42.



प्रगृह्णन् जलीक्षणा मुद्यतान् सर्वतो दिशः ॥ २८ ॥ शुभाश्व मधुरा वाचो नानादेशनि  
वासिताम् । संस्तूयमानं मूर्तेश्च मागधैश्च महायशः ॥ २९ ॥ पूजयानश्चतान् सर्वान्  
सर्वलोके भरेऽध्वर । प्रदीपैः काञ्चनैस्तत्र गन्धतैलावसेचितैः ॥ ३० ॥ परैवग्रमैर्हा  
राजं प्रज्वलद्भिः समन्ततः । सतैः परिवृतो राजा प्रदीपैः काञ्चनैर्ज्वलन् ॥ ३१ ॥  
नुशुमे चन्द्रमा युको दीप्तैरिव महाग्रहैः । काञ्चनोष्णीपिणस्तत्र वेत्रघ्नैरपाययः  
॥ ३२ ॥ प्रोत्साहयन्तः शनकैस्तं जन सर्वतो दिशम् । सम्प्राप्यतु ततो राजा भीष्मस्य  
सदृशं शुभम् ॥ ३३ ॥ अचतीयं हृष्यान्वापि भीष्मं प्राप्य जनेश्वर । अभिधाद्य ततो  
भीष्मं नियुगण परमासने ॥ ३४ ॥ काञ्चने संवतो मन्त्रे स्पृष्ट्वास्तिरणसङ्घने । उवाच प्रां  
जलिभीष्मं चापकटोद्युलोचनः ॥ ३५ ॥ त्वांवयंहि समाभित्य सयुगे शत्रुसूदन ।  
उत्सहे मरणेजेतु सैद्धानपि मुरा मुरात् ॥ ३६ ॥ किमुपांशुमुतान्वीरासमुद्गृह्णवाच

शिर लोंग और और पास सब आई बन्धु अपने सुन्दर भुज दण्डों में झुली  
साधे हुये और देशनिवासियों से भीठे वचनों को सुनता हुआ वह महायशस्वी  
सूत मागधों से प्रशंसित होकर उनसब अपनी प्रजाओं को प्रसन्न करने लगा  
। ३० । वहाँ महात्मा पुरुषों ने सुगन्धित वस्तुओं से पूर्ण सुवर्ण के दीपकों के द्वारा  
उत्सवों का आँगन से प्रकाशित किया, फिर उन सुवर्ण के बड़े २ दीपकों के प्रकाश  
से महाप्रकाशमान, वह राजा ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि बड़े २ ग्रहों से संयुक्त  
चन्द्रमा प्रकाशमान होता है उस स्थान पर सुनहरी सितार आदि बाजे हारों में  
रखनेवाले मनुष्य सबधोर से उन मनुष्यों को भीठे वचनों से हटानेवाले हुए फिर  
राजा भीष्म के शुभ डेरे को पाकर घोंडे से उतर भीष्म के सम्मुख उनको नम  
स्कार करके उत्तम आसन पर बैठ गया । ३५ । वह डेरा सुनहरी उत्तम बिछानों  
से गूँथ दिशा में कल्याणकर था उस में बैठे हुए भीष्मजी से राजा दुष्योधन हाथ  
जोड़े हुए गवगदवाणी में बोला कि हे शत्रुहन्ता हमलोग युद्ध में आये रहे रहित होकर

all the Kauray went to the tent of Bhishm. Followed by warriors  
and surrounded by his brothers and kinsmen with upraised arms,  
Prince Duryodhan went on hearing the sweet words of the citizens and  
the praises of the baris and pleased his subjects in this manner 30.  
Great men illumined his way from all sides with gold lamps fed by  
scented materials. Looking glorious in the light of gold lamps, the king  
appeared like the moon surrounded by stars. A band of musicians  
went on in front, playing sweet tunes to clear the way. Having  
reached the tent of Bhishm, the king dismounted from his horse, and  
having paid his respects to him sat on the best seat : 35 Golden  
carpets were spread all over the tent where Bhishm sat, and the  
prince with joined palms and choiced voice thus addressed him,— ' Be  
happy to see me here, do not fear of me, we are to conquer the

यान् । तस्मादहं हि गांगेय कृपां कर्तुं मयि प्रमो ॥ ३७ ॥ अहि पांडुसुतान्वापां न महेन्द्राय  
दानवान् । अहं सर्वान् महाराज निहनिष्यामि सोमकान् ॥ ३८ ॥ पञ्चालान् केकयैः  
साधैकैरुपायैः भारत । त्यक्त्वाः सत्यमेवास्तुः अहिपाण्डो न भयमागतात् ॥ ४१ ॥  
सोमकांश्च महेष्वासान् सत्यवान्मेव भारत । दद्याय दिश्राजश्च द्वेष्यसत्त्वानममममो  
॥ ४० ॥ मद्रमायतया वापि ममैरुहति पांडवान् । अनुचारी हि समरे कर्ण माहवशो मि-  
तम् ॥ ४१ ॥ स जेष्यति रणे पार्थान् समुद्रहृत्पयान्धवान् । स एवमुक्त्वा नृपतिः  
पुत्रो दुर्व्योधनस्तथा । मोघान् वचनं किञ्चिज्जीष्मं सत्यपराक्रमम् ॥ ४२ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वोऽध्यायः ३८ ॥

अष्टमवर्ततथोऽध्यायः ३८ ॥

इन्द्र समेत देव दानवों के भी विजय करने की अभिलाषा रखते हैं । तो इन पाण्डवोंको उन के सहायकों समेत विजय करना कितनी बात है- हे गांगेय भीष्म भी आप मुझपर कृपा करने को योग्य हैं, आप उनवीर पांडवोंको ऐसे मारो जैसे कि महाहर्ष दानव लोगों को मारता है- महाराज मैं सब सोमकों को मारूंगा फिर केकयोंको और पांचालों समेत केकय लोगों को भी मारूंगा आप अपने वचन को मंजूरकरके सम्मूल आपसे हुए पाण्डवों को मारो और बड़े अनुपकारी सोमकों कोभी मारकर अपने वचनको सत्यकरो, हे भरतवंशी भीष्मपितामह दयासे आमेरे वैरभावसे अथवा मेरी भारव्य हीनतासे जो आप पांडवों की रक्षा करते हो नो युद्ध में शोभा दानैवाले कर्ण को भेड़ादी, वह कर्ण युद्धमें सब सेनाओंपर मुहूर्तों समेत पांडवों को मारेगा, आपका पुत्र इस प्रकारके वचन कहकर फिर उस सत्य पराक्रमी भीष्मजी से कुछ नहीं बोला ॥ ४२ ॥

gods and dānavas with Indra, how easy it is for us to conquer the Pan-  
davas and their allies! I crave your favour, Bhishma the son of Gangā.  
Kill the Pandavas as Indra does the dānavas." I shall, O King, des-  
troy all the Somaks and the Panchala together with the Kaikayas.  
Fulfil your promise by killing the Pandavas when they face you, fulfil  
also your promise of killing the Somaks. Grandfather, Bhishma, des-  
cendant of Bharata. If through kindness to them, or unkindness to me,  
or through my misfortune you spare the Pandavas, allow the great  
warrior Karna to do the work. He will destroy all the Pandavas and  
their allies in battle." Having said these words to Bhishma, of true  
prowess, your son became silent." 42.



संज्ञय उवाच । चोक्षशर्ल्यस्त्वर् पुत्रेण सीतविश्वो महामना । दुःखेनमहताविधा  
 नावाच प्रियमण्यव ॥ १ ॥ स भयात्वा सुचिरं कालं दुःखरोपसमन्वित । श्वसमानो  
 यथा नागः प्रभुश्रो घोक्षशर्लोकया ॥ २ ॥ उद्वृत्य चक्षुषी कोपाग्निर्दहनित्य भारत ।  
 स्निग्धासरगन्धर्व लोकं लोकविदावरः ॥ ३ ॥ अग्रवीत तव पुत्र स सामपूष मिदं  
 धत्तः ॥ कित्यं दुःख्यं धनं यमोयाक शल्यैरपकुन्तासि ॥ ४ ॥ घटमानं पयाशकं कुर्वी  
 ण्य तव प्रियम् ॥ हृद्वाते समरे प्राणोस्तव प्रियकाभ्यया ॥ ५ ॥ यदा तु पाण्डवः  
 गुर पाण्डवेभित्तमतपेभित्तं पराजित्यरणे शक्ते पथ्यासि तत्रिदशनम् ॥ ६ ॥ यदा चेत्या  
 महायाहो गुर्ययैर्दत्तमोजसा ॥ अमोचयत् पाण्डुसुतः पथ्यासि तत्रिदशनम् ॥ ७ ॥  
 द्रयमाणेषु गुरेषु सादरेषु तव प्रभो सुतपुत्रे च सधये पथ्यासि तत्रिदशनम् ॥ ८ ॥  
 यद्वनं सहितान् सवान् विराटनगरं तदा ॥ एक एव समुद्यतः पथ्यासि तत्रिदशनम् ॥ ९ ॥  
 नमः ॥ ॥ प्राणैश्च युधि सरंभे मां च निजित्यमयुगे । पासांसि समदित पथ्यासि

किं हि त्वं ॥ १ ॥ अथापि ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥  
 किं आपके पुत्रके वजनरूपी भालो से अर्पित घायल और वचन  
 रूपी सभाकामे भिदे हुए संपत्ती संमान प्रशंसिते बड़े साहसी महाकष्टमें पड़े हुए  
 भीष्मजी बड़ी बिलम्ब तक शोचरूपी ध्यान में मग्न होकर अपने क्रोधसे देव दनुज  
 मनुष्यों को भस्म करने वाले बड़े क्रोधसे दोनों तैयारी खोलकर बड़ी मधुरबाणी  
 द्वारा आपके पुत्र से वचन बोले कि हे सुदर्पोधन इस समय को से अपनी सामर्थ्यके  
 अनुसार उपाय करके तेरे हितके लिये अपने प्राणों को दोगेते हुए मुझको तू अपने  
 वजनरूपी भालो ने क्यों घायल करता है ॥ १ ॥ तब दशार्जुन कि शूरीयों प्राणद्वों  
 ने युद्ध में इन्द्र का विजय करके खांडव वनमें अग्निको तृप्त किया और हे महाबाहू  
 जवानों के पराक्रम से तुझ पकड़े हुएको तेरे भाई बन्धु और कर्ण आदि बड़े शूरी  
 के भीम शक्ति पर प्रकल पाँदव सज्जने छुड़ाया यही दृष्टान्त तुमको शोचनेके योग्य  
 है और विराटनगर में हम सब के समुल्ल अकेला भर्जनी हुआ बहभी दृष्टान्त

## CHAPTER XCIX

Wounded by the darts of your son's taunts and pierced by those verbal spears, said Sanjaya, "great Bhishma remained long plunged in thoughtful predicament, heaving deep sighs of distress. Capable of destroying gods, danavas and men with his anger, he opened wide both his eyes in anger and in a very sweet tone said to your son, 'This trying to the limit of my ability and sacrificing my life for your sake, I am wounded by your taunts.' You must bear in mind how the Pandavas conquered Indra and burnt the forest of Khandav. Remember how you and your brothers captivated by the Gandharvas were liberated by Arjun when Karna and other warriors had been put to flight by them. You must remember that Arjun saved us all at

तन्निदशतम् ॥ १० ॥ तथा त्रैणि महिषासं शारद्वतं मथापिच । गोमदे जितवात्सर्वं  
 पत्न्यास्तं तन्निदशतम् ॥ ११ ॥ विजित्यत्र यदा कर्णं सदा पुरुषामातिनम् । उत्तरार्धे  
 वृद्धो वस्त्रं पयासं तत्रिदशतम् ॥ १२ ॥ निवातकवचान् युद्धे प्राप्तवानपि दुर्जयात् ।  
 जितवान् समरपायं प्रयानं तन्निदशतम् ॥ १३ ॥ कोहि शक्तो ह्येते जेतुं पाण्डवैरम  
 सं तदा । यस्य गोमा जगद्गता शस्त्रचक्रगदाधरः ॥ १४ ॥ मामुदेवानन्तं शक्तिः सृष्टि  
 संहारकारकः । सर्वदेवरा वन्द्यः परमात्मा सनातनः ॥ १५ ॥ उकोहि बहुशोराजन  
 तारदाद्यमहापिभिः । त्वन्तु मोहाश्रजानीपे वाच्या वाच्यं सुयोधन ॥ १६ ॥ सुसर्पहि  
 नरः सजान् वृक्षान् पदगतिः काञ्चनान् । तथा त्वमपि गान्धारे विपरीतानि पश्यसि ॥ १७  
 ॥ इत्यनेनैव प्रहसन्त्यानारुणात्पुनः प्रहसन्त्यानारुणात्पुनः ॥ १८ ॥ युध्यस्वतानद्य तणे सदयामः सुयोधव

भागवानेपर युद्ध दुर्मद-शोणाचार्य-भैर  
 भुक्तको सम्प्राप्त में विजय करके वस्त्र उतार-लिये वह भी दृष्टान्त योग्य है । ॥ १० ॥  
 इसी प्रकार गोहरण में भी युद्ध प्रनुषांगी अश्वत्थामा और कृपाचार्य को भी  
 विजय किया वह भी दृष्टान्त ठीक है जब कि सब पुरुषों में युद्ध प्रनुद्धर कर्णको  
 विजय करके उत्तरार्ध लिये वस्त्र-दिये वह दृष्टान्त भी बहुत है, अर्जुन ने इन्हीं  
 भी कविमता पूर्वक विजय दाने व  
 किया वह भी दृष्टान्त बहुत है, तब

युद्ध में विजय करने को समर्थ होय और दुःश्याघ्न (जिसका रत्न भूज-बाण-जगद  
 का स्वामी शस्त्र-चक्र गदा-पद्म धारण करने वाला, महा-शक्तिमान्, वामुदेव सृष्टि  
 संहार का करने वाला सर्वेश्वर देव-देव-प्राप्ता सनातन है, जिसका कि तारदादि  
 महापियों ने भी तुम्हको सम्प्राप्ता-इशता जानकर भी बुदबुदी तू माहस करने और  
 न करने की बातको भी नहीं जानता है । १६-१७-१८-मरने की इच्छा रखने वाला प्ररुप  
 जैसे कि सब वृक्षाको स्वर्णमयी देखता है उसी प्रकार-हे गान्धारी के पुत्र तू भी  
 विपरीत बातों को देखता है, तैने आप-पाण्डव और मंजियों से बड़ी भारी शत्रुता

Virat and when your brothers had run away he conquered invincible  
 Dronacharya and me and took off our clothes. 10. At the occasion  
 of the cap and the great archer  
 Ashwath after conquering the

Kauravas, and this is a sufficient example of his bravery. Arjun con-  
 quered the rakshases known as Nibat Kabaches whom Indra himself  
 could not conquer and this is a sufficient example. Who is then brave  
 enough to conquer Arjun in battle? He has for his guardian the  
 wielder of conch, discus, mace and lotus, mighty Yasudev, the destroyer  
 of the world, lord of all gods, eternal lord who has been pointed out as  
 such to you by Narad and other rishis. Knowing these facts, O fool-  
 ish Duryodhan, a dying person



॥ २८ ॥ अहन्तु सोमकान् सर्वान् पञ्चालाश्च समा गतान् । निहन्त्ये नरव्याघ्र वज्रं  
 पित्वा शिखण्डिनम् । २९ ॥ तैर्वाह निहत सख्ये गमिष्य यमसादनम् । तान् वा निह  
 त्यसमरे प्रीतिं दाशम्यह तव ॥ ३० ॥ पूर्वं हि स्त्री ससुप्तया शिखण्डी राजघेदमनि ।  
 वरदानोत् पुमान् जात सैषा वै स्त्री शिखण्डिनी ॥ ३१ ॥ तमह न हनिष्यामि प्राणस्यामे  
 पि मारत । यासीं प्राणिमिता धात्रा सैषा वै स्त्री शिखण्डिनी । ३२ ॥ सुखं स्वपिहि  
 गान्धारे इवोस्मि कर्ता महारणम् । यज्ज्ञा कथं विष्यति यायत् स्थास्यति मेदिनी  
 ॥ ३३ ॥ पर्वमुक्तस्तवमुतो निर्जगाम जनेश्वर । अभिवाद्य गुरुं मूर्ध्ना प्रययौ स्व निषे  
 शनम् ॥ ३४ ॥ आगम्यन्तु ततो राजा विसृज्य च महाजनम् । प्रविशेत् ततस्त्वेन क्षय  
 दातु क्षयकरः ॥ ३५ ॥ प्रविष्टः स निशां ताञ्च गमयामास पार्थिव । प्रमाताया च शर्व  
 करी है इस से युद्ध भूमि में उन से तू संग्राम करियो हमरी देखेंगे, हे नरोत्तम मैं  
 शिखण्डी को छोड़कर सम्मुख आये हुए सब सोमकोंको और पांचालोंको मारुंगा,  
 मैं युद्धमें उनके हाथसे मरा हुआ यमलोकको जाऊंगा या मैरी उनको मारकर तुम्हको  
 मत्सर्ग करुंगा । ३० । क्योंकि प्रथम राजमहल में शिखण्डी स्त्री होकर उत्पन्न हुआ  
 था फिर वरदानसे पुरुष हुआ है निश्चय करके यह शिखण्डी स्त्री है इससे हे  
 दुर्योधन मैं अपने प्राण जाते हुए भी उसको कभी न मारुंगा जो इसको ईश्वर ने  
 प्रथम स्त्री उत्पन्न किया था इसीसे यह शिखण्डी अर भी निश्चय स्त्री है हे गान्धारीके  
 पुत्र भानुदत्त से शयनकर मैं मातःकाली ऐसा महामारी युद्ध करुंगा जिसको  
 मनुष्य जब तक पृथ्वी नियतरहगी तब तक कहाकरेंगे, हे राजा भीष्मजी से ऐसे  
 बचनों की सुनकर आपका पुत्र मत्सर्गसे उनको दण्डवत् करके डेरमे बाहर निबल  
 अपने निवासस्थान को गया, और सब साथ के लोगों को बिदाकरके शीघ्र ही  
 अपने डेर में प्रवेश कर गया । ३५ । वहाँ रात्रिभर सोया, मातःकाल उठ कर

contrary to what they are You have intentionally made the Pandvas  
 and the Srinjayas your enemies and we shall see what prowess you  
 can show aga nst them I shall O best of men, kill all the Somaks  
 and Panchals who face me in battle with the exception of Shikhandi  
 I shall either be killed in battle and go to the region of Ym or shall  
 please you by their slaughter 20 For Shikhandi originally was  
 born a woman in the palace of the king and then was changed to  
 manhood through a boon, he is surely a woman and I shall not kill him  
 even if I am in the danger of losing my life. Because he was born a  
 woman, he must be regarded as such. So psonally, son of Gandhari:  
 I shall in the morning, make a hard fight which shall be remembered  
 till the end of the world" Hearing these words from Bhishm,  
 Duryodhan bowed down to him and went out to his residence. Then  
 dismissing all his companions, he entered his tent 24. There he slept  
 during the night and rising early in the morning, he ordered the

र्वा प्रातस्त्यापतान्नुप ॥ २६ ॥ राज्ञ समाम्नापयत सेनां योजयतेति ह । अथ भीष्मो  
 रणे कुक्षो निहनिष्यति सोमकाद ॥ २७ ॥ दुर्योधनस्य तन्त्रुन्या राज्ञो विलपितंयदु ।  
 मन्यमान मत राजद प्रत्यादेश निरात्मन ॥ २८ ॥ निर्द्वेषरम गतां विनिन्दयप  
 वश्यताम् । दीर्घ दध्यौ शान्तनयो थोद्धृतामोर्जुन रणे ॥ २९ ॥ इति नेननु तन्त्राया  
 गात्रे येन विचिन्तितम् । दुर्योधनो मशराज दु शान्तन मचोदयत् ॥ ३० ॥ दु शान्तन  
 रयास्तूर्ण युज्यन्तां भीष्मरक्षिण । द्वाविंशति मनीकानि सर्वाप्येवामिबोदय ॥ ३१ ॥ इदं  
 हि समनुमास वर्षपूगाभि चितितम् । पाण्डवसु । सुसैन्यान् वधो राज्यस्यचागम ॥ ३२  
 तत्र कार्यतमं मन्ये भीष्मस्यगानि रक्षन्म । अतो गुत सहस्र स्याद्भक्ष्यात् पार्याथ  
 सयुगे ॥ ३३ ॥ अत्रवीदि विशुद्धात्मा नाह हन्या शिखण्डिनम् । स्त्री पूर्वको हामी रा  
 जस्तस्माद्भक्ष्यां मया रणे ॥ ३४ ॥ लोकादेर परह पितु प्रिय चिकीर्षया । राज्य  
 उत्तरे राजाशो को आज्ञा करी कि सेनाको तैय रन्ता अब छुडमें कोय हेकर  
 भीष्म नी सेमकों को मारेग, हे राजा राजि में दुर्योधन के उन बड़े भारी विनाप  
 को मुन और अपना निरादर सफल बड़े वैराग्य का होकर दूसरे का दोष वर्णन  
 करने की निन्दा करके युद्ध में अर्जुन से संग्राम करने के लक्षित भीष्मजी ने  
 बड़ा ध्यान किया और दुर्योधन ने शरीर की चेष्टा द भीष्मजी की बड़ी चिन्ता  
 को जानकर दुःशासन ने कहा । ३० । कि हे दुःशासन भीष्मजी के रत्ता करने  
 वाले रथ बहुत शीघ्र तैयार हों और जईम अनीक सेना को भी भेरणा करदो,  
 कि बहुत काल से विचार किया गया सम्पूर्ण सेना अपने पाण्डव लोगों का मरण  
 अब अच्छी तरह से प्राप्त हुआ उस स्थान में भीष्मजी की रत्ता को ही मैं बड़ा  
 काम जानता हूँ वह रक्षित किया हुआ भीष्म हमारा महायक होकर पाण्डवों को  
 मारेगा, क्योंकि हमने बड़े शुद्ध मन करण से कहा है कि मैं शिखण्डीको नहीं  
 मारूंगा इस निमित्त कि वह पहले स्त्रीया वह युद्ध में मुझसे त्याग्य है, और सब  
 संसार इस बातको जानता है कि मैंने पिताकी प्रीति के निमित्त राज्य करनेको

princes to arrange the army, informing them that Bhishm would  
 destroy the Somakas. Hearing of the exclamation of Duryo-  
 dhan in the night and feeling his dignity wounded, Bhishm lost  
 all love for the world, and commenting on the evil practice of back  
 biting, he thought a great deal of his desire to fight against Arjun.  
 Seeing indications of thoughtfulness on the face of Bhishm Duryo-  
 dhan said to Dushaan, 'Pe are soon chariots for the protection of  
 Bhishm and order twenty two units (divisions) of the army to be  
 ready 31 The long wished for destruction of the Pandavas and their  
 armies is at hand. I think the protection of Bhishm to be the highest  
 duty. Well protected he will help me to destroy the Pandavas, for  
 with a true intention he said that he would not slay Shikhandi  
 who was originally a woman and that all the world knew that for the

स्वीकृतं महाबाहो क्षियञ्च त्यक्तवानपुरा ॥ ३५ ॥ नैव चाहं क्षियं जातु ॥ स्त्रीपूर्वं कथ  
ञ्चन । हन्यांयुधि नरघोष्ठ सत्य मेतद् व्रथीमिमे ॥ ३६ ॥ अयं स्त्रीपूर्वको राजञ्छिख  
ण्डी यदि ते हृतः । उद्योगे कथितं यत्तत्तथा जाता शिखण्डिनी ॥ ३७ ॥ कन्या भूत्वा  
पुंमान् जातः सद्य मां योधयिष्यति । तस्याहं प्रमुखे वाणान् न मुञ्चेयं कथञ्चन ३८ ॥  
युद्धेहि क्षत्रियांस्तात पाण्डवाना जयेषिणः । सर्वा नन्यान् हनिष्यामि सम्प्राप्तान् रण  
मूर्धनि ॥ ३९ ॥ एवं मां भरतश्चेष्ट गाङ्गेयः प्राह शारत्त्वित् । तत्र सर्वात्मना मन्ये गाङ्गे  
यस्यैव पालनम् ॥ ४० ॥ अरह्य माणं हि वृको हन्यात् सिंहं महाहवे । मा वृकणेभ  
गाङ्गेयं घातयेम शिखण्डिना ॥ ४१ ॥ मातुलः शकुनिः शल्यः कृपा द्रोणो विविशतिः ।  
यत्तारक्षन्तु गाङ्गेयं तस्मिन्गुप्ते ध्रुवोजयः ॥ ४२ ॥ एतच्छ्रुत्वातु ते सर्वे दुर्योधन वच  
स्तथा । सर्वतो रथ वशेन गाङ्गेय पर्यचारयन् ॥ ४३ ॥ पुत्राश्च तव गाङ्गेयं परितार्य ययु  
सेवा । कम्पयन्तो भुवं धाञ्च क्षोभयन्तश्च पाण्डवान् ॥ ४४ ॥ ते रथैः सुप्रसंयुक्तैर्दति  
भौर स्त्री संग्रह को त्याग किया है । ३५ । इस निमित्त हे नरोत्तम मैं किसी दशा में भी  
युद्ध में इस जन्म की स्त्री को व पूर्व जन्म की स्त्री को कभी न मारूंगा यह मैं सत्य  
सत्य तुम से वर्णन करता हूं, हे गजा यह शिखण्डी जिसको कि आपने सुना है  
यह स्त्री या फिर उद्योग करनेसे यह शिखण्डिनी नामसे उत्पन्न हुई जो कन्या होकर  
मुझसे युद्ध करेगी उस पर मैं कभी अपना शस्त्र न चलाऊंगा, हे तात मैं पाण्डवों  
की विजय चाहनेवाले सत्रियों को या युद्ध में मम्पुल आये हुए अन्य क्षत्रियों को  
भी संग्राम करके मारूंगा, यह भरतर्षभ गांगेय भीष्मजी ने मुझ से कहा है इस से मैं  
सर्वात्मभाव से ही भीष्मजीकी रक्षाको चाहता हूं । ४० । क्योंकि बिना रक्षा किसे  
हुए सिंह को भेड़िया भी मार्मक्ता है मेरा मामा शकुनि शल्य कृपाचार्य द्रोणाचार्य  
विविंशति यह सब मिलकर बड़ी सावधानी से भीष्मजी की रक्षा करें उसके रक्षित  
होने से अवश्य विजय होगी, तब तो सब लोगों ने दुर्योधन के इस वचनको सुनकर  
संग्रह और से रथों के समूहों से भीष्मजी की रक्षा करी, फिर भीष्मजी की रक्षा करके

love of his father he had forsaken the flourishing kingdom and the  
society of women 35. He has promised to spare one who was  
a woman in this life as well as in the former one. Shikhandi was  
formerly a woman and therefore he would not lay hands on him. With  
this exception he would slay all the kshatriyas of the Pandavas desirous  
of conquest or any other warriors seeking battle with him. All  
this was said to me by Bhishm the son of Ganga and therefore with  
all my heart I am desirous of Bhishm's protection 40. A wolf may  
slay an unprotected lion. My uncle Shakuni, Shalya, Kripacharya  
Dronacharya and Vivinshati should protect him jointly. Victory  
will fall on our side if he is well protected" Hearing these words of  
Duryodhan, all the warriors mounted on chariots, protected Bhishm  
from all sides. Surrounding Bhishm, your sons went on slaying

मित्रं महारथः । परिवार्य रणे भीष्मं दक्षिताः समवस्थिताः ॥ ४५ ॥ यथा देवा सुरे  
युद्धे त्रिदशा वज्रधारिणम् । सर्वेतेस्म व्यतिष्ठन्तु रक्षतस्तं महारथम् ॥ ४६ ॥  
ततो दुर्योधनो राजा पुनर्घातं प्रवीत् । सन्ध्यं चक्रे युधामन्यु रत्तमौजाय दक्षिणम्  
॥ ४७ ॥ गोसायजुनस्यैतावर्जुनोपि शिखण्डिनः । रक्षमाणः स पार्येन तथास्मा  
भिर्निर्वर्जितः ॥ ४८ ॥ यथा भीष्मं ननो हन्या दुःशासन तथा कुरु । भ्रातृस्तद्वचनं  
श्रुत्वा पुत्रो दुःशासनस्तव ॥ ४९ ॥ भीष्मं प्रमुखतः कृत्वा प्रययौ सह सेनया । भीष्मन्तु  
र्यवन्देन दृष्ट्वा समभिसंश्रुतम् ॥ ५० ॥ अर्जुनो रथिना श्रेष्ठो धृष्टद्युम्न मुवाच ह । शिख  
ण्डिनं नररथाय भीष्मस्य प्रमुखेन । स्थापयस्वाद्यपाञ्चाद्रय तस्य गोसाहमित्युत ॥ ५१ ॥  
इति भीमहाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि दुर्योधनदुःशासनसम्वादे  
नवनवतितमोऽध्यायः ॥ ९९ ॥

आपके बैठे पृथ्वी और आकाश को कम्पायमान करके, पाण्डवों को भयभीत  
कराते हुए बड़े प्रसन्न होकर चले, वह सब महारथी बड़ी रीतिसे नियत किये हुए  
रथियों से भीष्मजी को मध्य में रक्षित कर के कवच और अस्त्र शस्त्रों को धारण  
किये हुए ऐसे सब इकट्ठे हुए जैसे कि देवता और असुरों के युद्ध में देवता और  
वज्रधारी इन्द्रकृदे यह सब इस प्रकारसे उस महारथी को रक्षित करके नियत हुए  
॥ ४६ ॥ तदनन्तर राजा दुर्योधन ने फिर अपने भाई से कहा, कि अर्जुन के वाम  
और का रक्षक युधामन्यु और दक्षिण भागका उत्तमौजा यह दोनों हैं और अर्जुन  
भी शिखण्डीका रक्षक है, वह अर्जुन से रक्षित और हम से त्यागाहुआ शिखण्डी  
जैसे भीष्मको और हमको नहीं मारे हे दुःशासन तुम वही उपाय करो, फिर आपका  
पुत्र दुःशासन भाई के इस वचनको सुनकर भीष्मजी को आगे करके सेना के साथ  
में चला, और रथियों में भेष्ट अर्जुन रथियों के समूहों से भीष्मजी को चारों ओरसे  
रक्षित देखकर धृष्टद्युम्न से बोला कि हे राजा धृष्टद्युम्न अब नरोत्तम शिखण्डी को  
भीष्म के सम्मुख नियत करो मैं उस का रक्षक हूँ ॥ ५१ ॥

the earth and sky and terrifying the Pandavas with their cheerful mood. All these warriors, properly stationed round Bhishm with their chariots and elephants, arms and armour looked like Indra surrounded by gods in the war of the gods and asurs. 46. Then Prince Duryodhan, again addressing his brother, said, "Yudhadmanyu protects Arjun from the left and Uttamanuja from right, and Arjun himself protects Shikhandi. Let not Shikhandi, protected by Arjun and deserted by us, kill Bhishm and ourselves. You must look to this Dushasan." Your son Dushasan, hearing these words of his brother, followed the army led by Bhishm. And Arjun the best of charioteers, seeing Bhishm well protected by the hosts of charioteers, said to Dhrishtadyumna, "Let Shikhandi face Bhishma, I shall guard him." 51.

सञ्जय उवाच । तत शान्तनुवो भीष्मो निययौ सह सेनया । ब्यूहञ्चाब्यूहं  
महत् सर्वतोमद्रमात्मनः ॥ १ ॥ कृपाञ्च कृतवर्मा च शैष्यश्चैव महारथः । शकुनि सैन्धव  
वधैश्च काम्वोजश्च सुदक्षिण ॥ २ ॥ भीष्मेण सहिताः सर्वे पुत्रैश्चतस्र भारत । अग्रत  
सर्वं सैन्यानां ब्यूहस्य प्रमुखे स्थिताः ॥ ३ ॥ द्रोणो भूरिश्रवा शल्यो ममदत्तश्च  
भारवि । दक्षिणं पक्षमाश्रित्य स्थिता ब्यूहस्य दक्षिणतः ॥ ४ ॥ अश्वत्थामा सामदत्तश्च  
वन्त्यो च महारथौ । महत्या सेनया युक्ता धामं पक्षमपालयन् ॥ ५ ॥ दुर्योधनो महा  
राज त्रिगर्तं सर्वतो वृत्तः । ब्यूहमध्ये स्थिता राजन् पाण्डवान् प्रति भारतः ॥ ६ ॥  
अलम्बुषा रथभेष्ट श्रुतायुश्च महारथः । पृष्ठतः सर्वसैन्यानां स्थितौ ब्यूहस्य दक्षिणतः  
॥ ७ ॥ एवञ्च त तदा ब्यूहं कृत्वा भारत तावकाः सञ्ज्ञाः समददयन्त प्रतान्तरावा  
ग्नयः ॥ ८ ॥ ततो युधिष्ठिरः राजा भीमसेनश्च पाण्डवः । नकुलः सहदेवश्च माद्रीपु-

त्राचार्यः ॥ १०० ॥

संजय बोले कि इसके पीछे शंतनुके पुत्र भीष्मजी अपनी सेना को सायसेकर  
चले और अपनी बुद्धिसे सर्वतोमद्र नाम ब्यूह को तैयार किया, और कृपाचार्य  
कृतवर्मा महारथी शक्य शकुनि सेंधव कांबोज सुदक्षिण यह सब भीष्मजी और आप  
के पुत्रों समेत सेनाके अग्रगामा होकर ब्यूहके मुखपर नियतहुए और द्रोणाचार्य  
भूरिश्रवा शल्य ममदत्त यह सब शस्त्र और कवचोंका धारणकरके ब्यूह के दक्षिण  
भाग में रक्तकहो कर नियत हुए, और अश्वत्थामा सामदत्त और दोनों अवन्ति  
देश के महारथी राजा यह सब बड़ी सेना समेत ब्यूह के बागभाग में रक्तक हुए  
॥ ५ ॥ और हे भरतवंशी घृतराष्ट्र राजा दुर्योधन सब ओर से त्रिगर्त देशियों से  
संयुक्त ब्यूह के मध्यमें पांडवों के सम्मुख नियतहुआ, रथियों में भेष्ट अलंबुष और  
महारथी श्रुतायु यह दोनों कवच शस्त्रधारी ब्यूहकी सब सेनाओं के पीछे नियतहुए,  
हे भरतवंश उससमय आप के शूरवीर शस्त्र कवचों से अलंकृत ऐसे दृष्टपड़े जेने कि  
अत्यन्त संतप्त करनेवाली अग्नियां होती हैं, इनके पीछे राजा युधिष्ठिर भीमसेन

## CHAPTER C

Sanjaya said "Then Bhishm the son of Shantanu with his army proceeded to form a phalanx known as the Best-of-all. Kripacharya, Kृतवर्मा, valiant Sharyja, Shakuni, Sandhav, Camboj, Sudakshin, Bhishm and your sons, leading the army, stood at the mouth of the array, Dronacharya, Bhurisnuava, Shalya and Bhagdatta, armed with arms and armour, stood at the right wing, and Ashwathama, Somdatta and the two princes of Avanti, together with a large army, protected the left flank. 5. Prince Duryodhan with all the Trigartas stood in the middle to face the Pandavas. Alamvush the best of charioteers and valiant Shrutayu, armed with weapons and armour, stood behind all the armies. Your warriors decked with weapons and armour looked like burning fires. Then prince Yudhishtir, Bhimsen and the

शत्रुभावपि ॥ ९ ॥ अग्रतः सर्वसैन्यानां स्थिताम्यूहस्य दक्षिताः धृष्टद्युम्नो विराटश्च  
सात्यकिश्च महारथः ॥ १० ॥ स्थिताः सैन्येन महता परानीकविनाशनाः । शिखण्डी  
विजयश्चैव राक्षसश्च घटोत्कचः ॥ ११ ॥ चेकितानो महाबाहु कुन्तिभोजश्च धीर्य-  
वान् । स्थिता रणे महाराज महत्या सेनया कृता ॥ १२ ॥ अभिम-धुर्महोपासो द्रुपदश्च  
महाबलः । युयुधानो महेश्व सो युधामन्युश्च धीर्यवान् ॥ १३ ॥ हेमक्या श्वतरश्चैव  
स्थिता युद्धाय दक्षिताः । एव तेषां महाव्यूह प्रतिव्यूह सुदुर्जयम् ॥ १४ ॥ पाण्डवा-  
समेत शूराः स्थिता युद्धाय दक्षिताः । तावकास्तु रणे यत्ता सहसेना नराधिप ॥ १५ ॥  
अभ्युद्यद्गणे पार्यान् भीष्म कृत्वाप्रतो नृप । तथैव पाण्डवाराजन् भीमसेनपुरोगमा-  
म् ॥ १६ ॥ भीष्मे योऽमुमक्षीप्सन्त सप्राप्ते विजयंयपिण । श्वेहा किलकिला शङ्खान्  
क्रकच्चान् गाविषाणिकाः ॥ १७ ॥ भेरीमुदङ्गपणवान् नादयन्तश्च पुष्करान् । पाण्डवा-  
अभ्युद्यन्त मद्भन्तो भेरवान् रथान् ॥ १८ ॥ भेरीमुदङ्गशङ्खानां दुन्दुभीनाञ्च निहरन्ते ।

श्रीर माद्री के दोनों पुत्र नकुल और सहदेव भी शस्त्र और कवच धारण किये हुए  
पहुन शोभा युक्त अपने व्यूहकी सब सेनाओं के आगे नियत हुए और धृष्टद्युम्न  
विराट महारथी सात्यकी । १० । यह सब शत्रुहन्ता वीर बहुतसी सेना समेत नियत हुए  
शिखण्डी घटोत्कच राक्षस, महाबाहु चेकितान, कुन्तिभोज यह सब भी बहुतसी सेना  
समेत युद्धमें उपस्थित हुए, और महा धनुषधारी अभिमन्यु और महाबली द्रुपद  
और हेमक्यसो गश्पादिसे अलंकृत होकर युद्धके निमित्त नियत हुए इसरीति से  
वह शूरीर पाण्डवलोग भी दुर्जय व्यूहको रचकर शत्रुओं के सम्मुख संग्राम भूमिमें  
युद्धके निमित्त वर्तमान हुए, हेराभा फिर युद्ध में कुशल आपके पुत्र और सेना  
समेत सब राजा लोग भीष्मजी को आगे करके संग्रामभूमि में पाण्डवों के सम्मुख  
गये । १५ । इसी प्रकार पाण्डव लोगभी भीमसेन को आगे करके भीष्मसे लड़नेकी  
इच्छा से विजयाभिलाषी होकर सिंहनाद पूर्वक किलकिला शब्दों को करने और  
भेरी मुदंगादि बाजोंमें और दुन्दुभिषोंसे शत्रुओंको भय उत्पन्न करतेहुए बड़े मगन्न  
चित्त कौरवों के सम्मुख वर्तमान हुए, पृथक् २ रीति से मत्येक से मैकायेहुए सिंह

two sons of Madri Nakul and Sahadev armed with arms and armour,  
stood in the van of all the armies in front of the array Dhishhtadyumna  
Virat, valiant Satyaki 10 all these brave warriors, destroyers of  
enemies, together with a large army, stood behind Shikhandi, Gha-  
tothach the rakshas, brave Chekitan and Kuntibhoj were stationed  
with their armies The mighty archer Abhimanyu, brave Drupad  
and the Kaikayas, armed with weapons stood ready for battle Thus  
the brave Pandavas too, having formed the invincible array stood  
ready to fight facing the enemy Your sons, skilful in battle and the  
princes with the armies led by Bhishm, faced the Pandavas 15 The  
Pandavas too, led by Bhishm, desirous of gaining victory against  
Bhishm, roaring like lions with a tremendous roar and causing fear to

उत्कृष्ट सिंहनादश्च ध्वजितश्च पृथग्विधैः ॥ १९ ॥ वयं प्रतिनन्दन्तस्तान् गच्छामित्वरा  
 न्विता । सहसैवान्निसकुद्धास्तदासाधुमूलं महत् २० । ततोऽन्योन्यं प्रधावन्त सम्गृह्य  
 प्रचक्रिरे । ततः शब्देन महता प्रचक्रन्ते वसुधरा ॥ २१ ॥ पश्चिमश्च महाघोरं व्याह  
 रन्तो विषमम् । सध्वजोऽदित सूर्यो निष्पन्नः समपयत् ॥ २२ ॥ वसुधश्च धातास्तु  
 मुला शंसन्तः सुमहद्भयम् । घोरश्च घोरनिर्हंसा शिवास्तत्र धवाशिरः । २३ ॥ वेद  
 यन्तो महाराज महद्भयसमागतम् । दिशः प्रज्वलिताराजन् पाशुवर्षपातोच्च ॥ २४ ॥  
 रुधिरं ससुग्मिधमस्थिवर्षं तथैव च । रुदता बाहनानाञ्च नेत्रेभ्यः प्रापतज्जलम्  
 ॥ २५ ॥ सुध्रुवश्च सङ्कल्पं प्रध्यायन्तो विशम्भते । अन्तर्हिता महानादाः क्षयन्ते भरत  
 र्षम् ॥ २६ ॥ रक्षसाः पुरुषावान् नदता भैरवान् रवान् । सम्पतन्तश्च इदं यन्त गोमायु  
 षलघापसा ॥ २७ ॥ ध्यानश्च विधिर्नादैर्वांशन्तस्तत्र मारिय । उल्लिताश्च महा  
 व्कावै समाहत्य दिघाकरम् । निपेतु सहसा भूमी वेदयन्तो महद्भयम् ॥ २८ ॥ महा

नादों से गर्जना करते हुए हम सबलोग बड़ी शीघ्रता से उनके सम्मुख हुए, और  
 भ्रकस्मात् अत्यन्त क्रोधित होकर बड़े कठोर शब्दों को करते हुए परस्परसे सम्मुख  
 दौड़कर बड़े १ महार करने लगे । २० । इसके होतेही पृथ्वी अत्यन्त कम्पायमान  
 हुई, और बड़े भारी कठोर शब्दों को करते हुए पसी धमने लगे, और बड़ा प्रकाश  
 मान सूर्य उस समय मभा से रहित हुआ और बड़ी मयानक कठोर शब्दवाली  
 शीघ्रता वायु चली, हे महाराज वहां घोरनाश के सूचक नाना रूपवारी भयानक  
 गुंफालों के समूह भी कठोर शब्दों को करने लगे, और सब दिशाओं में दिग्दाह  
 हुआ और धूलकी वर्षा हुई और रुधिर से संपुक्त हाडों की वर्षा हुई, और रौने हुए  
 बाहनों ने बड़े ध्यान में प्रवृत्त होकर मूत्र और विष्टाको फर दिया । २५ । और देराना  
 मांसभंसी राजसों केभी बड़े १ अशुभ शब्द वहां गुंफे सुने गये और गोमायु वा  
 कौबों के कुंड भी गिरते हुए दृष्ट पड़े और नाना शब्दों से कुत्ते घंसे और रौने  
 लगे, और सूर्य को आच्छादित करके बड़े भारी उल्कापातभी पृथ्वी पर हुए  
 इसके पीछे पाँदवों की और दुर्योधन की बड़ी सेना शत्रु और मृदंगों के शब्दों

the enemies with the sounds of trumpets, drums and other musical instruments, faced the Kauravas with cheerful minds and much enraged of a sudden, rushing with tremendous war cries, began to smite. 20. With this the earth shook and the birds screamed with a dreadful noise. The sun lost his brightness and the storm of wind blew with a tremendous sea. Significant of great destruction, dreadful jackals howled ominously, the directions lit up, dust fell and blood and bones fell down from the sky. The beasts with tears in their eyes dropped urine and excretion. 25. The cannibal rakshases unseen made a terrible noise and crows swooped down. Dogs howled ominously and the sun being hidden by the dust there fell from the sky sparks

न्यनीकानि महासमुच्छ्रये ततस्तयो पाण्डवघातं राण्यो । चकम्पिरे शङ्खमृदङ्गनि  
स्वने प्रकम्पितानीव धनानि वायुना ॥ २९ ॥ नरेन्द्रनागाद्वसमाकुलानामभ्यायती  
नामशिखे मुहुर्से । धम्व पोषस्तुमुल्लेखयूना धार्तादुत्तानामिव सागराणाम् ॥ ३० ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि उत्पानदर्शने

शततमोऽध्यायः १०० ॥

सञ्जय उवाच । अभिमन्युरघोदार पिशङ्गैस्तुरगोत्तमै । अभिद्रुद्राव तेजस्वी  
दुष्योषनघलं महत् ॥ १ ॥ विकिरन् शरवर्षाणि वारिधाराद्व्यामुद । न शङ्क समरे  
कुञ्ज सौमद्रमरिन्दनम् ॥ २ ॥ शकौघिण गगमान सेनासागरमक्षयम् । निवारयितु  
मपशब्दो त्वदीया क्रुदन्दन ॥ ३ ॥ तेन मुक्ता रणे राजन् शरा शत्रुनिर्वहणा ।  
क्षत्रियाननयच्छराद् मेतराजनिवेशनम् ॥ ४ ॥ यमदण्डोपमान् धोरान् ज्वलिताशीवि-  
षोपमाद् । सोमद्र समरे कुड्म प्रेयमानास्त सायकान् ॥ ५ ॥ सरयान् रथिनस्त्रुणं हयां  
मे ऐसी कम्पायमान हुई जैसे कि वायु के वेग से वन कम्पायमान होते हैं,  
हे राजा शशी घोड़े और रथों से पूर्ण अगुम मुहूर्त में आई हुई सेनाओं के ऐसे  
कठोर शब्द हुए जैसे कि वायु से उठे हुए समुद्र के शब्द होते हैं ३० ॥

अध्याय १०१ ॥

संजय बोले कि, बड़ा रथी और तेजस्वी अभिमन्यु पिगल वर्षा के उचम घोड़ों  
के ढाग बादल की जलधाराओं के समान वाणों की वर्षा करता हुआ दुष्योषन  
की सेनाके सम्मुख गया उस के हटाने को आपके महाबली शत्रुहन्ता महा व्रतम  
शस्त्रधारी गुरवीर लंगभी समर्थ नहीं हुए, हे राजा उस के छोड़े हुए शत्रु संहारी  
वाणों ने युद्ध में अनेक क्षत्रियों को मारकर यमपुर को भेजा, फिर युद्ध में क्रोषित  
अभिमन्यु ने यमदण्ड और ज्वलित सर्पाकार घोरवाणों को छोड़कर बड़ी क्षिप्रता  
से रथी समेत रथों को और सवारों के साथ घोड़ों को और हाथियों समेत

of fire The dimes of Duryodhan and the Pandavas shook with the  
rounds of conchs and trumpets as forests shake with the storm of wind  
Full of elephants, horses and chariots collected in evil time the army  
of warriors made an uproar like that of a stormy ocean" 30

### CHAPTER CI

Sanjaya said — 'Mighty and glorious charioteers Abhimanyu, rid-  
ing his yoll in horses and showering his arrows like rain, faced the ar-  
my of Duryodhan, even your strong warriors, destroyers of foes and  
wielders of arms were unable to cop. with him His arrows destroyers  
of enemies, killed numerous Lshatryas and sent them to the region of  
Yam. Then enraged Abhimanyu discharging his dreadful and serpent  
like arrows soon destroyed the charioteers with chariots, horsemen  
with horses and elephant ride's with elephants. All the kings cheer



इच्चैव ससादिन । गजारोहाश्च सगजान् वारयामास फाल्गुनि । तस्य तत् कुर्यत कर्म  
महत् संख्ये महीभूत । पूजयाम्यङ्किरे दृष्ट्वा प्रशशंसुश्च फाल्गुनिम् । ७ ॥ ताव  
नीकानि सौमद्रो द्वाचयामास भारत । नृलराशी निवाकाशे मासत सर्वतो दिशम् ८ ॥  
तेन विद्राव्यमाणानि तव सैन्यानि मारुत । आतारं माप्यगच्छ तपके मन्माएव द्विषा  
॥ ९ ॥ विद्राव्य सर्वसैन्यानि तावकानि नरोत्तम । अभिमन्यु स्थितो राजन् विधूमोऽग्नि  
रिवज्ज्वलन् ॥ १० ॥ न चैन तावका राजन् विपेदुररिघातिनम् । प्रदीप्त पावक पश्य  
प्रतप्ता कालचोदिता ॥ ११ ॥ ग्रहरन् सर्वं शत्रुष्य पाण्डवानां महारथ । अदृश्यत  
महेष्वास सख्यश्च वासव । १२ ॥ हेमपृष्ठ घनुश्चास्य दृशो विचरद्दिश । तोयदेषु  
येथा राजन् राजमाना दतद्दृवा । १३ ॥ शरादय निशिता पीता निश्चरन्तिस्मस्युगे ।  
वनात् कुवचदुमाद्राजन् व्रतरायामिव प्रजा ॥ १४ ॥ तथैव चरतस्तस्य सौमद्रस्य महा

हाथीवानों को चूर्णकर डाला । ६ । युद्ध में ऐसे महाकर्म करनेवाले अर्जुन के पुत्र  
अभिमन्यु की सब राजाओं ने बड़ी प्रसन्न चित्ततासे धन्य २ करके प्रशंसा करी  
हे राजा उस सुभद्रा के पुत्र ने उन सेनाओं को ऐसे घायल किया जैसे कि वायु  
आकाश में रुईको चारों ओर को बखेरदेता है, और हे राजा उस अभिमन्यु से  
भी हुई तुम्हारी सेनाको कोई रत्नक ऐसेनहीं मिला जैसे कि कीचमें फँसे हुए  
हाथी को कोई रत्नकहीं मिलसक्ता, फिरवह अभिमन्यु आपकी 'सब सेना को  
भगाकर निर्दम अग्नि के समान क्रोधमें मरादुमा स्थिर होगया । १० । हे राजा  
इसको देखकर आपके शूरवीर-लोग ऐसे नहीं सहसके जैसे कि बालके भेरि  
पन्नग अत्यन्त प्रकाशमान अग्नि को, फिर बर्षादलों का महीरथ उग्रधनुषधारी  
संबशत्रुओं को घायल करता हुआ शत्रुधारी इन्द्रके समान दृष्टदृष्ट, और उसके  
सुवर्ण की पृष्ठवाला धनुष दिशाओं में घूमता हुआ ऐसा दिखार् दिया जैसे कि बादलों  
में प्रकाशमान विजयी होती है, अत्यन्त नीक्ष्ण नौक पीतरंग विप के भरे हुए बाण  
युद्ध में घूमनेलगे हे राजा जैसे कि फूले दृष्टवाले बन से भँवरों के समूह

fully praised the great works of Abhimanyu the son of Arjuna. That  
of Sabhar, O King expressed the armies as the wind does the  
blades of cotton, and when put to flight by Abhimanyu found no  
protector like an elephant sunk in mud. Having dispersed your ar-  
my, Abhimanyu stood enraged like smokeless fire. 10 Your war-  
rior, O King could not bear the sight of him as insects 'fated to die'  
cannot bear the sight of burning fire. Then that mighty archer of  
the Pandava looked like Indra wounding all enemies. And his bow  
of golden back, circling on all sides, looked like lightning in the midst  
of clouds. Very sharp pointed arrows of yellow colour, flew  
in the field of battle. Like swarms of black bees issuing out of a

राम । रथेन काञ्चनाद्वेन बहदुर्नान्तरजना ॥ १५ ॥ मूर्धयित्वा रूपद्रोणं द्रोणिञ्च  
सर्वद्वलम् । सैन्धवञ्च महेश्वासो व्यचरत्तपु सुपुत्र ॥ १६ ॥ मण्डलीकृतमेषास्य  
धनुः पश्यामभारत । सूर्यमण्डलसकाशं बहतस्तत्र वाहिनीम् ॥ १७ ॥ तद्दृष्ट्वाक्षत्रि  
या गूरा प्रतपततरस्थिनम् । विफालगुणमिमं लोकमेतिरे तस्य कर्मणि ॥ १८ ॥ तना  
र्विता महाराज भारती सा महाचमू । व्यन्मन्त्रे तत्रैव योयिमदवशादिब ॥ १९ ॥  
द्रावयित्वा महासैन्यं कम्पायित्वाभहारथान् । नन्दयामास मुहूर्धो मयं क्रित्वेव घासय  
॥ २० ॥ तेन विद्राव्यमाणानि तत्र सैन्यानि समुगे । चक्रुस्तस्वन घोर पञ्चानिनदीप  
मय ॥ २१ ॥ तं श्रुत्वा निनद घोर तत्र सैन्यस्य भारत । मादतोद्धृतवेगस्य सागरव्येव

निकन्ते इषु दृष्टं नदीं आतेः उत्ती प्रकारं अनुप्यो ने मुनहरी अंगवाले रथों से  
घूमते उस महात्मा अभिमन्यु का अन्तर अर्थात् भवकाश नहीं देता । १५ ।  
किं यह बड़ा धनुषधारी उत्तमहस्तभाष्य करनेवाला जन कृपाचार्य्य द्रोणाचार्य्य  
अश्वत्थामा दृष्ट्वा और जयद्रथको मोहित करके अत्यन्तता से घूमा, हे धृतराष्ट्र  
आपकी सेना भस्म करनेवाला उस अभिमन्यु का धनुष सूर्यमण्डल के समान मंडली  
करनेवाला हमने देखा, बड़े २ शूरवीर क्षत्रियों ने उस वेगवान् शीघ्रगामी कठिन  
बौद्धेवाले अभिमन्युको देखकर उसके कर्मों से इस लोकको दो अर्जुनका रखनेवाला  
माना, हे महाराज उस अभिमन्यु से पीडामान् आपकी सेना स्थान २ पर ऐसी  
अत्यन्तता से घूमी जैसे कि तल्लगाताके मद में भरी हुई स्त्री डभर उभर घूमती है,  
फिर सेना समेत महाराथियों को घायल और कम्पायमानकरके उस अभिमन्यु ने  
अपने मुहूर्धो को ऐसा प्रबल किया जैसे कि इन्द्र ने यय दैत्यको जीतकर सबको  
ममन्न किया था । २० । और युद्ध में अभिमन्यु से भगाई हुई आपकी सेनाओं ने  
ऐसी पीडा के भयानक शब्दकिये जैसे कि भयकारी बादल की गर्जना के शब्द  
होते हैं, इमरति के आपकी सेनाके शब्दों को सुनकर राजा दुर्योधन आर्यभुङ्ग

forest in bloom' the arrows issuing out of chariots were invisible on  
account of their swiftness 15— Having made Kripacharya, Drona  
charya, Ashwathama, Brahmadval and Jayadrath insensible the swift  
archer moved incessantly<sup>1</sup> We saw, O King, the bow of Abhimanyu  
the destroyer of your armies, moving in a circle like the sun The  
great warriors seeing the exceedingly swift movement of Abhimanyu  
and his brave deeds thought that there were two Arjuns in the world.  
Wounded by Abhimanyu your armies, 'O King, rushed hither and thi  
ther like a young woman who has lost her senses.' Then wounding  
and shaking the army of warriors Abhimanyu made his party as strong  
as Indra had made all the people after conquering the Mayas danavas  
20 Put to flight by him your armies uttered dreadful noises of distress  
like those of thundering clouds<sup>2</sup> Thus hearing the distressing sounds  
of your warriors, Prince Duryodhan said to Aryabhring the rakshas

पर्वणि । २९ ॥ दुर्योधनस्तदा राजश्राव्यगृह्णिमभाषत । एष कार्णिर्महाबाहो द्वितीय  
इव काष्मृतः ॥ २३ ॥ चमं द्रावयते क्रोधावृष्टो देव चममिव । तस्य वान्यथ पश्या  
मिसंयुगे भेषजं सहतु ॥ २४ ॥ श्रुत्वा राक्षसश्रेष्ठ सर्वं विद्यासुपारगम् । स गत्वा  
त्परित धीरं जडि सौमद्रमाहवे ॥ २५ ॥ वयं पापं हनिष्यामो भीष्मद्रोणपुरोगमाः ।  
स पथमुक्तो बलवान् राक्षसेन्द्रः प्रतापवान् ॥ २६ ॥ प्रययौ समरे दूणं तव पुत्रस्य  
शासनात् । नर्दमानो महानादं प्रावृषीथ बलाहकः ॥ २७ ॥ तस्य शब्देन महता  
पाण्डवानां बलं महत् । प्राजलत् सर्वतो राजन् घातोयुधतद्धारणवः ॥ २८ ॥ यहवश्च  
महाराज तस्य नादेन भीषिताः । म्रियान् म्रियान् परित्यज्य निपेतुर्धरणीरले ॥ २९ ॥  
कार्णिश्चापि मुदा युक्तः प्रयुक्तं सशरं घनुः । नृत्यन्निष रथोपस्थे तद्रक्षः समुपाद्रवत्  
॥ ३० ॥ ततः स राक्षसः क्रुद्धः सम्प्राप्यैवाहुनि रणे । नातिदूरे स्थितां तस्य द्वाब्यां

नाम राक्षस से बोला कि हे महाबाहो यह दूसरे अर्जुन के समान अभिमन्यु क्रोध  
से सेनाको ऐसे भगाये देता है जैसे कि देवताओं की सेना को एवामुर भगाता था  
तुम सर्व विद्या और शस्त्र सम्पन्न के सिवाय इस युद्ध में इसका मारने वाला  
मुझको कोई नहीं दिखाई देता सो तुम शीघ्र ही जाकर इस अभिमन्यु को मारो  
॥ २६ ॥ और हम सब भीष्म और द्रोणाचार्य को आगे करके अर्जुन को मारेंगे,  
इस प्रकार से वह आकाशिया हुआ प्रतापी बलवान् राक्षसाधिप वर्षा ऋतु के  
पादल के समान बड़े शब्दों को करता हुआ आपके पुत्र की आत्मा से शीघ्र ही युद्ध  
भूमि में गया, हे राजा उसके भयंकर शब्द से पांडवों की बड़ी सेना सब ओर  
से ऐसी चलायमान हुई जैसे कि वायु से उठा हुआ समुद्र चलायमान होता है,  
॥ २८ ॥ बहुत से मनुष्य तो उसके भयंकारी शब्द ही से अपने प्यारे जीवनको  
त्यागकर पृथ्वी पर गिर पड़े ॥ २९ ॥ पान्तु शूरीर अभिमन्यु बड़ी प्रसन्नता से  
युक्त बाणों समेत धनुष को हाथों में लेकर नाचता हुआ सा रथ में बैठकर उस  
क्षत्रिय के सम्मुख पहुँचा ॥ ३० ॥ इस के पीछे उस क्रोधयुक्त राक्षस ने युद्ध में  
अभिमन्यु को पाकर उसकी समीपी सेना को घायल किया हम शीति से उस

"Like a second Arjun much enraged Abhimanyu is dispersing all the  
armies as Vritrasur did the armies of gods; I see none of my warriors  
capable of slaying him. Go at once and kill him. 25. All of us, led  
by Blushin and Dronacharya, will slay Arjun." Thus ordered that  
brave warrior the prince of rakshasas making a loud noise like that of  
thundering clouds, at once rushed to battle by the order of your son,  
and with his dreadful cries the armies of the Pandavas were agitated  
like the ocean with the storm of wind. 28. Many men lost their dear lives  
by his dreadful sound and fell down on earth; but brave Abhimanyu  
cheerfully held his bow and arrows and as if dancing in his chariot he  
faced the rakshas. 30. Then the enraged rakshas, coming face to  
face with Abhimanyu wounded his attendant warriors, and seeing the

मास वै चमूं ॥ ३१ ॥ तां वध्यमानाञ्च तेषां पाण्डवानां महाचमूं । प्रत्युद्ययो रणे  
 रक्षो देवसेनापथायलः । ३२ ॥ विमर्देः सुमहानासीत् तस्य सैन्यस्य मारित । रक्षसा  
 घोररूपेण वध्यमानस्य संयुगे ॥ ३३ ॥ ततः शरसहस्रेस्तां पाण्डवानामहाचमूं ।  
 व्यद्रावपद्मे रक्षो दशयत् स्वपराक्रमम् । ३४ ॥ सा वध्यमाना च तया पाण्डवानाम  
 तीकिनी । रक्षसा घोररूपेण प्रवृद्राव रणभयात् ॥ ३५ ॥ प्रमृद्य च रणे सेना  
 पश्मिनी वारणा यथा । ततोमिदुद्राव रणे द्रौपदेयान् महावलीम् ॥ ३६ ॥ तत्  
 कुत्रा महश्चसा द्रौपदेयाः प्रहारिणः । राक्षसं दुदुवः संहये प्रहाः पञ्च रवि यथा  
 ॥ ३७ ॥ पीर्य चद्रिभूतलेस्तु पीडितो राक्षसोत्तमः । यथा युगक्षये घोरे चन्द्रमाः  
 पञ्चभिर्ग्रहेः ॥ ३८ ॥ प्रतिविम्ब्यन्ततो रक्षो विनेव निशितः शरः । सर्वपांशो  
 वैस्तूर्णकुण्डामिमहाबलः ॥ ३९ ॥ स तैमिषतनुषाणः युयुमे राक्षसोत्तमः । ब्रह्म  
 विमिरिवाकस्य संस्पृतो जलक्षो महान् ॥ ४० ॥ विपलः स शरैश्चापि तपनीय

पाण्डवी। घायल और भागी हुई बड़ी सेना को देखकर वह राक्षस युद्ध में उसके  
 सम्मुख ऐसे गया जैसे कि देवताओं की सेना के सम्मुख दैत्यों का राजा वासिष्ठा  
 था, हे घृतराष्ट्र युद्ध में उस घोर राक्षस ने सेना का बड़ा मर्दन किया, और अपने  
 पराक्रम को दिखाकर हजारों बाणों को फेंका; तब तो वह पाण्डवी सेना भय  
 से महाव्याकुल होकर भाग निकली, जैसे कि हाथी कमलानियों की मर्दन  
 करता है उसी प्रकार सेना को मर्दन करके युद्ध भूमि में द्रौपदी के पुत्रों के सम्मुख  
 गया । ३६ । तब वह बड़े घनपथारी प्रहार करने लगे महाबली द्रौपदी के पुत्र भी  
 महा क्रौर्यरूप होकर उसके सम्मुख ऐसे गये जैसे कि पांच ग्रह सूर्य को सम्मुख से  
 घेरते हैं, फिर उन पांचों महाबली यूरोंने उसको ऐसा घायल किया जैसे कि युग के  
 अन्त में अर्थात् मलय होने के समय में पांच भयकारी ग्रह चन्द्रमा को पीड़ा देते हैं  
 इस के अनन्तर महाबली प्रतिविम्ब ने अत्यन्त शीघ्रता से तिर्थेण घातवाले सोहे के  
 बाणों से उस राक्षस को अत्यन्त घायल किया, उन बाणों से कटे हुए कवचवाला  
 वह राक्षस ऐसा अत्यन्त शोभयमान हुआ जैसे कि सूर्य की किरणों से गर्भित  
 बड़ा बादल होता है । ४० । हे राजा वह आर्य शूरा गच्छतु सुवर्ण जडित बाणों से

army of the Pandav wounded and dispersed, the rakshas faced him as  
 Bali the prince of the daityas had faced the armies of gods. That  
 dreadful rakshas made a dreadful slaughter of the armies and discharg-  
 ed thousands of arrows to show prowess, putting to flight the Pandav  
 armies. And trampling the armies as an elephant tramples a clump of  
 lotuses, he faced the sons of Draupadi. - 36. The great archers, the  
 sons of Draupadi faced him much enraged like five constellations  
 surrounding the face of the earth. Then the five warriors wounded  
 him as severely as five dreadful constellations distress the moon at  
 the end of a yug. - Then brave Pratibindh with very sharp edged

परिच्छेदे । आप्यंशुद्विषमौ राजन् क्षीयन्तु इवाचलः ॥ ४१ ॥ ततस्ते शतरा-  
 पः राक्षसेन्द्रं महाबलं । विन्यधुनिगितैर्घोषैस्तपनीयविभूषितं ॥ ४२ ॥ त नि-  
 भिन्न शरीरैर्मुजगैः कोपितैरिव । अलम्बुषो भूदो राजन् नागेन्द्र इव छुल्लुधे ॥ ४३ ॥  
 सोतिविद्धो महाराज मुहूर्तमथ मारिव । प्रविशेश तमो वीर्यं पीडितस्त्वमहारथः  
 ॥ ४४ ॥ प्रतिलङ्घ्य सतः सङ्घां क्रोधेन द्विगुणीकृतः । चिच्छेद सायकांस्तेषां  
 रज्ज्वाश्च धनुषि च ॥ ४५ ॥ एकैकं पञ्च भिर्बाणे रात्रिमानस्मयन्निव । अल-  
 म्बुषो रथोपस्थे नृत्पन्निव महारथः ॥ ४६ ॥ त्वरमाण सुसरङ्गो हर्षास्तेषां महा-  
 रतनाम् । अघान राक्षसः क्रुद्धः सारथीश्च महाबलः ॥ ४७ ॥ भिभू च सुर्म-  
 दः पुनश्चानामुसंशितैः । शरीरैर्दुविधाकारैः शतशोथसहस्रशः ॥ ४८ ॥ विरथाः मरे  
 स्वास्तारुत्वात्तवसराक्षसः । अभिमुद्रांश्च वेगेन हन्तुकामो निशाचरः ॥ ४९ ॥ तानपि  
 तान्तरथे तेन राक्षसेन वुरात्मना । इवाजुनमुतः संख्ये राक्षसंसमुपाद्रयत् ॥ ५० ॥ तयो-

भिदाहुआ ऐसा शोभित विदित होता है जैसे कि प्रकाशित शिखरवासा पर्वत  
 शोभायमान होता है, फिर वेने पांचों भाइयों ने उस राक्षस को बड़े तीक्ष्ण  
 मयी बाणों से घायल किया । ४२ ॥ तब तो महाबल भरे सों के समान बाणों से  
 विदीर्ण वह गजेन्द्र रूप राक्षस बड़ा क्रोधयुक्त होकर एक मुहूर्त मात्र तो अचेत  
 होगया, फिर उस क्रोध से द्विगुणित पराक्रमवाले ने उनके बाण धनुष और धनुष-  
 ओंको काटों । ४५ ॥ और रथमें बैठे हुए नाचते और आश्चर्य करित महारथी  
 अलम्बुष ने मृत्यु के पांच र बाणों से घायल करके जड़ी क्षीयता से उन महात्मा-  
 ओं के घोड़े और सारथियों को मारा, और बहुत प्रकारके अनेक रूपके हजारों बाणों  
 ने उनके शरीरों को घायल किया इन सबकायोंको कर के उन सबके मारने की इच्छा  
 करके वह राक्षस बड़ी तीक्ष्णता से उनके पास गया, अर्जुन को पृथ्वी अभिमुख  
 दुष्टात्मा ने अपने भाइयों को पीडित देखकर क्षीघ्र ही उसके सम्मुख गया । ५० ।

swift arrows made of iron, wounded the rakshas. Pierced through  
 the armour by golden arrows, the rakshas was glorious to behold like  
 a mountain of shining peak. Then the rakshas wounded the five  
 brothers with very sharp golden arrows. 42. Wounded by those  
 arrows like venomous serpents, the rakshas like an angry elephant  
 became insensible for a moment, and then becoming doubly enraged  
 with rage he cut their bows and arrows. 45. Seated in his chariot,  
 dancing and wondering brave Alambush wounded each of them with  
 five arrows and killed their horses and drivers. He pierced through  
 their bodies with thousands of arrows and having done all this, the  
 rakshas desirous of slaying them, rushed upon them. Abhimanyu the  
 son of Arjun, seeing his brothers distressed by the rakshas, hastened  
 to face him. 50. The battle between them was as severe as that bet-

समन्वययुद्धं दृष्टवत्सवयोरिव । वृद्धशुस्तावकाः सर्वे पाण्डवाश्च महारथाः ॥ ५१ ॥  
 समेतौ महायुद्धे कौघदीप्तौ परस्परम् । महाबली महायुद्धे कौघसंरक्तलोचनौ ॥ ५२ ॥  
 परस्परमवक्षेताः कालानिलसमी युधि । तयोः समागमा घोरो वनूव कद्रुकौदयः ॥ ५३ ॥  
 यथा वेवासुरे युद्धे शकशम्बरयोः पुरा ॥ ५४ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि नवमदिवसपुद्गारम्भे अलम्बुध-

धिमन्युसमागमे एकाधिशततमाध्यायाः ॥ १०१ ॥

धृतराष्ट्र उवाच । भाजेति समरेभूर विनिष्पन्नं महारथान् । अलम्बुधः कथयुद्धं  
 प्रत्युद्युत्सवयोरिव ॥ १ ॥ आर्यशक्तिः कथञ्चैव सोमद्रुपर्वीरहा । तन्ममाचक्ष्व तथैव  
 यथाशुद्धा संयुगे ॥ २ ॥ धनञ्जयश्च किं चक्रे ममसन्त्येषु संयुगे । भीमो वा रथिनां  
 अहो राक्षसो वा घटोत्कचः ॥ ३ ॥ नकुलः सहदेवो वा सात्यकिर्वा महारथः । एतद्वा  
 युद्धमेतत्सर्वं कथञ्छासि सञ्जय ॥ ४ ॥ सञ्जय उवाच । हन्ततेह प्रवक्ष्यामि संग्रामं

वहां ज्ञातौ नो का ऐसा महायुद्ध हुआ जिता कि इन्द्र और हनुमत् का हुआ था  
 युद्धतो आपने सब पुराओं ने और महारथी पाण्डवों ने देखा कि दोनों परस्पर  
 कौघदीप्त होकर एक-दूसरे के साथ लड़ने लगे और युद्ध में कासाग्नि के  
 समान दोनों वीरों ने अपने-कौ देखा फिर दोनों का भयकारी युद्ध ऐसा अभि-  
 युक्त पड़ा जिता कि पूर्व समय में देवता और अमुरों के युद्ध में इन्द्र और  
 शम्बरका हुआ था ॥ ५४ ॥

अध्यायः ॥ १०३ ॥

धृतराष्ट्र बोले हे सञ्जय युद्ध में अलम्बुध राक्षस किस रीति से पाँचों महा-  
 रथियों को मारता हुआ शूरावीर अभिमन्यु के सम्मुख हुआ और शत्रुओं के वीरों को  
 मारनेवाला अभिमन्यु कैसे २ उस अलम्बुध से लड़ा इसको यथार्थता से मुझसे बताना  
 करो । रथियों में अष्ट भीमसेन घटोत्कच राक्षस नकुल सहदेव और महारथी  
 सात्यकी यह सब कैसे २ लड़े और अर्जुन के युद्ध में मेरी सेना में क्या क्या  
 हुआ इन सब बातों के बारे में पता २ बताना करो । सञ्जय बोले कि हे अष्टधृतराष्ट्र

ween Indra and Virasat. "The Pandavas as well as your sons  
 witnessed the fighting of the two warriors who with eyes red in great  
 anger fought with each other. "The two warriors of fiery temper  
 fought like Indra and Samvar in the war of gods and asura." 53.

## CHAPTER CII

"How did Alamvush the rakshas beat the five warriors?" asked  
 Dhritrashtra of Sanjaya, "how did he face Abhimanyu and how did  
 Abhimanyu the destroyer of foes encounter him? Pray tell me all  
 this in detail. How did Bhimsen the best of charioteers, Ghatotkachi  
 the rakshas, Nakul, Sahadev and brave Satyaki fight, and what was  
 done is my army in the war with Arjun? Pray give a detailed account  
 of all these facts." "I shall tell you of that thrilling war," replied

लोमहर्षणम् । यथाभूदाश्रुतं सेन्द्रस्य सौमद्रस्य च मारिष ॥ ५ ॥ अर्जुनश्च यथा संख्ये  
भीमसेनः पाण्डव । नकुल सहदेवश्च रणे चक्रुः पराक्रमम् ॥ ६ ॥ तथैव तावका सर्वे  
भीष्मद्रोणपुरःसरः । अद्भुतानि विचित्राणि चक्रुः कर्मण्यमर्षितवत् ॥ ७ ॥ अलम्बुपस्तु  
समरे अभिमन्यु महारथम् । चित्रं सुमहानाद तज्जयित्वा मुहुर्मेढु ॥ ८ ॥ अभिमु  
द्राद्य वेगेन तिष्ठतिष्ठति चावधीत् । अभिमन्युश्च वेगेन सिंहवद्विनदन्मुहुः ॥ ९ ॥ आप्य  
शृङ्गि महेष्वास पितुरत्यन्तचैरिणम् । ततः समीपतु सख्ये स्वरितौ नरराक्षसी १० ॥  
रथाभ्या रथिनौ धेष्टौ यथावै देवदानवौ । मायावी राक्षसश्चेष्टो दिव्यास्त्रैश्च फाल्गुनि  
॥ ११ ॥ ततः कार्प्यमहाराज निशितैः सायकैस्त्रिभिः । आप्ये शृङ्गि रणे दिव्या एनवि  
व्याध पचमि ॥ १२ ॥ अलम्बुपोपि सकुब्धः कार्प्यं नवभिर्शृङ्गैः । दृष्टिं दिव्याद्य  
वेगेन तोत्रैरिव महाक्षिपम् ॥ १३ ॥ ततः शरसद्वयेण क्षिप्रयास्त्रि निजाचर । अर्जुनस्य  
मै उत रोमहर्षण युद्धको तुम से कहनाहू जो उत राक्षस और अभिमन्यु ने किया है  
और जैसे कि पाण्डव अर्जुन भीमसेन नकुल सहदेव और सात्यकी ने युद्धमें पगत्रय  
किया है, और जो २ कठिन कर्म आपके उन शूरोंने किया जिनके कि अग्रगामी  
भीष्म और द्रोणाचार्य थे उसको और जैसे २ किंग अलम्बुप युद्ध में बड़े शब्दसे  
गर्जकर वा थडककर महारथी अभिमन्यु के सम्मुख गया और बड़ी तीव्रता से तिष्ठ  
तिष्ठ शब्द करके सिंह के समान गर्जना करता हुआ अभिमन्यु पिता के महाशत्रु  
अलम्बुप के सम्मुख जैसे गया तदनन्तर रथियों में श्रेष्ठ शीघ्रता करने वाले नर और  
राक्षस युद्धमें रथों के द्वारा देवदानव के समान सम्मुख हुए मायाका जाननेवाला  
राक्षस और अर्जुन का पुत्र अभिमन्यु यह दोनों दिव्य अस्त्रोंके जाननेवाले थे,  
फिर अभिमन्यु ने तीन तीक्ष्ण बाणों से अलम्बुप को घायल करके पांचबाणों से  
विदीर्ण किया, और अत्यन्त क्रोधयुक्त अलम्बुप ने भी नौ बाणों से अभिमन्यु  
के हृदयको ऐसा घायल किया, जैसे कि अंकुश से पड़े हाथी को करते हैं । ११ ।

Sanjaya, "I shall tell you of the doings of the rakshas and Abhimanyu  
of the brave deeds of the Pandava Arjun, Bhishma, Nakul, Sahadev  
(Sahadev) I shall tell you of the brave deeds of your warriors  
who were led by Bhishma and Dronacharya as well as of  
Alamvush who, roaring and flashing, faced Abhimanyu and how the  
latter, roaring like a lion and uttering forth the cry of 'stay, stay,'  
rushed upon Alamvush the great enemy of his father. Both the  
best of charioteers, man and rakshas, mounted on swift chariots, faced  
each other like gods and Danavas. The rakshas, skilful in the use of  
maya and Abhimanyu the son of Arjun were both skilful in the use  
of celestial weapons. Having wounded Alamvush with three arrows,  
Abhimanyu pierced him with five more. Alamvush too, much en-  
raged, wounded Abhimanyu in the breast with nine arrows as they do  
an elephant with a goad. 13. Then, O best of Bharats, Alamvush

सुते मध्ये पीडयामास आरत ॥ १४ ॥ अभिमन्युस्तत क्रुद्धो नवभिर्धृत पर्वभिः । वि-  
भेद निशितैर्वाण राक्षसेन्द्रं महोरसि ॥ १५ ॥ ते तस्य विविशुस्त्पूर्णं कार्यं निर्भिद्यममं  
सु । सगैर्विभिन्नसंयुक्तं शुशुभे राक्षसोत्तमः ॥ १६ ॥ पुष्पितं किशुकै राजन् संस्तीर्णं  
इव पर्वतः । सन्धारयाणश्च शरान् हेम पुंसान् महाबल ॥ १७ ॥ विवर्गो राक्षसश्रेष्ठः  
सज्जाल इव पर्वतः । तत क्रुद्धो महाराज आप्यं शृङ्गिर्भरणः ॥ १८ ॥ भेदेन्द्रप्रतिमं  
कार्पिणं छादयामास परिभिः । तेन ते विशिष्यामुक्ता यमदण्डोपमाः शिताः ॥ १९ ॥  
अभिमन्युं विनिर्मिथ प्राविशन्तधरातलम् । तथेयार्जुनिनामुक्ताः शरा कनकभूषणाः  
॥ २० ॥ अलम्बुपं धिनिर्मिथ प्राविशन्त धरातलम् । सोमद्रस्तु रणे रक्षं शरं सन्त  
पर्वभिः ॥ २१ ॥ चक्रे विमुच मासाद्य मयं शन इवाहवे । विमुचश्च रणे रक्षं प-  
मानं रणे रिणा ॥ २२ ॥ प्रादुर्धके महामायां तामसीं परतापनाम् । ततस्ते तमन्मा सर्वे

हे भरतर्षभ इनके पीछे शीघ्रता करने वाले अलम्बुन ने अपने हजार बाणों से अभिमन्युको पीड़ामान किया, फिर महाक्रोध भरे अभिमन्यु ने भी ग्रन्थी वाले नौ बाणों से राक्षसों के राजा को बड़ी छाती पर घायल किया, वह बाण मर्मा में प्रवेश करके शीघ्र ही उसकी देह में घुसगये उन बाणों से वह संतप्त तन शरीर में घायल होकर ऐसा शोभायमान हुआ, जैसे कि फूले हुए किशुक वृक्षों से पर्वत शोभित होता है और सुनहरी पुंसवाने बाणों से उसकी ऐसी अद्भुत शोभा हुई जैसे अग्नि वाले पहाड़की होती है इनके पीछे महाक्रोध युक्त असह्य अलम्बुप ने बाणों से महादृढ़ के समान अभिमन्यु को ढका दिया, फिर उसके बाण अभिमन्यु को घायल करके पृथ्वी में घुसगये इसीप्रकार अभिमन्यु के छोड़े सुवर्ण जडित बाण भी अलम्बुप को घायल करके पृथ्वी में प्रवेश करगये फिर अभिमन्यु ने युद्धमें अच्छे युद्धे हुए ग्रन्थी के बाण अलम्बुपके ऐसे मारे जिनके मारे उसने ऐसे मुक्त फेर लिया जैसे कि इनके मारे हुए बाणोंसे मयदैत्यने मुक्तफेर लिया था फिर राक्षसाधिपने अपनी तामसी बड़ी मायासे अन्धकार को शकटकिया उस अन्धकारमें वहस्य गुप्तहोगये, तब

furiously wounded Abhimanyu with thousands of arrows, and the latter too, much enraged pierced that prince of rakshases with nine arrows in the breast. The arrows pierced the vital parts in his body and the rakshas with the wounds on his body, looked beautiful like kinshuk trees in bloom on a mountain. With the arrows having golden feathers stuck to his body, he looked glorious like a volcano. Then enraged Alambush of uncleanable nature hid Abhimanyu with his arrows like those of Indra. His arrows having pierced through the body of Abhimanyu, entered the ground. Then Abhimanyu pierced him with his arrows of hooked points and the rakshas turned face like Maya daitya wounded by Indra. The rakshas prince thereupon created a storm of darkness by his art of darkness and hid all the comba-



धृताश्वस्तन् महीपते ॥ २३ ॥ नामिगन्धुमपदयन्त नैव स्वान् न परान् रणे । अभिमन्यु  
 अतर्हृषा घोररूपं महत्तमः ॥ २४ ॥ प्रादुर्भवे तवत्युमं भास्करं कुलन्दनः । तत  
 मकाशमभवज्जगत् सर्वं महीपते ॥ २५ ॥ ताञ्चाभिजग्निवान् माया राक्षसस्य दुरात्म  
 नः । संकुप्य भ्रमहावीर्यो राक्षसेन्द्रं मयेत्तमः ॥ २६ ॥ द्वावधामास समरे शरैः सन्नत  
 पर्वभिः । यद्भीस्तयान्या मायाश्च प्रयुक्तास्तेन रक्षसा ॥ २७ ॥ सर्वाणि विदमेयामा  
 दारयामास फाल्गुनिः । हतमायन्ततो रक्षो यष्यमानश्चसायकैः ॥ २८ ॥ रथत्रयैश्च सं  
 त्यज्य प्रादुपद महतो मयात् । तस्मिन् विनिर्जिते तूष्णं कूटयोधिनि राक्षसे ॥ २९ ॥  
 भार्गुनि समरे सैन्यं तावकं सं ममर्दह । मदान्वो गन्धनः शैलं सपत्न्या पद्मिनीमिव  
 ॥ ३० ॥ ततः शान्तनयो भीष्मः सैन्यं दृष्ट्वामि विदुतम् । महता शरवर्षेण सौमद्रं  
 पथ्यं दारयत् ॥ ३१ ॥ कौट्टीकृत्यच सं घोरं घातं राक्षसं महारथाः । एकं सुबहवो युद्धे  
 न राक्षसको न अपने शूरवीरों को न शत्रुओं को अभिमन्यु ने देखा इसमहाभयकारी  
 मन्त्र मायाको देखकर अभिमन्युने मकाशमान सौरनाम अस्त्रको मकटकिपातवत्  
 संसार दीप्तने लगा । २५ । और मकाश के होनेही उन निर्बुद्धी दुरात्मा राक्षसकी  
 मवल मायाको दूरकरके बड़े धीर पराक्रमी नरोत्तम अभिमन्युने उस राक्षसाधिपको  
 पुद्गलें गुप्तप्रण्वी वाले बाणों से ढकदिया फिरउस राक्षस ने अनेक मायाकरी  
 परन्तु सब मायाओंको उस महाभयज्ञ अभिमन्युने दूर किया फिर मायाके नाशो-  
 तेही सायकों से घायल होकर वह राक्षस बड़ा भयभीत होकर रथको उरी स्थान में  
 छोड़कर भागगया फिरउम कठिन पुद्गल कर्चा राक्षसके शीघ्र विजय होनेपर पुद्गलें  
 मल्लहोकर अभिमन्युने आपकी सेनाका ऐसा विध्वंसनकिया जैसे किमदोनाच न  
 वाली गजेन्द्र निर्बल कुमुदिनियों के बरको विध्वंस करता है । ३० । इन्ही पक्षे  
 शान्तनुके पुत्र भीष्मजीने अपनी सेना को भागादुआ देकर बाणों से राक्षसों को  
 अभिमन्युको ढकदिया, फिर धृतराष्ट्र के महारथी पुत्रों ने उत्तमरथों से राक्षसों को

ants under it. 23. Neither the rakshas nor the warriors of both  
 sides were discernible to Abhimanyu. Seeing that dreadful delusion,  
 Abhimanyu discharged his light producing weapon known as Sour  
 (solar) and the firmament was again clear. 25. Thus dispelling  
 darkness caused by the unwise and ill natured rakshas, brave Abhi-  
 manyu hid him by his arrows having hidden knots. The rakshas de-  
 ceived various deceptions, but Abhimanyu, skilled in the use of all wea-  
 pons, made all his schemes futile. With the destruction of his artful-  
 ness, the rakshas wounded by arrows and afraid, left his chariot and  
 fled from the field of battle. After the conquest of that warrior rakshas  
 Abhimanyu began to destroy your armies as a mad elephant of the  
 forest tramples down the helpless lotuses. 30. Then Bhishm the son  
 of Saantas, using his army put to flight, bid Abhimanyu with his  
 sharp shower of arrows. The sons of Dhritrashtra then surrounded that

ततः सायकैर्बभूव ॥ ३२ ॥ स तेषां रथिनाधीर- पितुस्तुल्य पराक्रमः । सद्यो पाशु-  
 देवस्य विक्रमेण बलेन च । ३३ ॥ उभयोः सद्यो कर्म स पितुर्मातुलस्य च । रणे  
 बहुविधं शक्रे सर्वशस्त्रभृतां धरः ॥ ३४ ॥ ततो धनञ्जयो 'धीरो धिनिर्गलस्य  
 सैनिकाद् । आसत्साद् रणे भीष्मं पुत्रप्रेप्सुसुरमर्षणः ॥ ३५ ॥ तथैव समरे राजन्  
 पिता दैवव्रतस्तथ । आसत्साद् रणे पार्थ स्वमोक्षुरिव माह्वकरम् ॥ ३६ ॥ ततः  
 सद्यनागादवाः पुत्रस्तव अनेश्वर । परिव्रज्य रणे भीष्मं क्षुद्रपुत्र समन्वतः ॥ ३७ ॥  
 तथैव पाण्डवी राजन् पश्चिवात्यैर्धनञ्जयम् । रणाय महते युकां वीक्षिता भरतर्षभ  
 ॥ ३८ ॥ शारद्वतस्ततो राजन् भीष्मस्य प्रमुखे स्थितम् । अर्जुनं पञ्चविंशत्या  
 सायकानां समाविनोद् ॥ ३९ ॥ प्रत्युद्गम्याथ विव्याध सात्यकिर्लक्ष शितैः शरैः ।  
 पाण्डवप्रियकामार्थं शार्ङ्गल इव कुञ्जरम् ॥ ४० ॥ गीतमपि स्वारायुको माघबन्धविर्म-

से घेरकर युद्धमें अनेकों ने अकेले को बहुतसे बाणों से अत्यन्त घायल किया, उस  
 पिता के समान बली व बल पराक्रम में बामुदेवजीके तुल्यसब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ  
 वीर अभिमन्युने उन रथियों के सम्मुख पिता और मामाके समान अनेक प्रकारके कर्मोंको  
 किया । ३४ । उसके पीछे पुत्रको चाहते और आपकी सेनाको मारने क्रोधयुक्त  
 वीर अर्जुनने युद्ध में अपने पुत्रको पाया, इसी प्रकार अन्य आने वीरों को भी  
 सम्मुख लड़ते हुए पाया और आप के पिता देवव्रतने लड़ाई में अर्जुन को ऐसे  
 सम्मुख पाया जैसे कि शङ्ख सूर्य को सम्मुख पाता है, इसके पीछे रथ हाथी और  
 घोड़ों समेत आपके पुत्रों ने युद्ध में भीष्मजी को चारों ओर से रक्षित किया,  
 हे राजा धृतराष्ट्र इसी प्रकारसे असंख्य पाण्डव अर्जुनको घेर कर बड़े युद्धके लिये  
 मद्दहइष्ट, इसके पीछे कृपाचार्य ने पञ्चीस बाणों से भीष्म के आगे बर्त्तमान  
 अर्जुन को दहादिया फिर सात्यकीने अर्जुन के प्रियकरने की इच्छा में सम्मुख  
 जाकर उनको तीक्ष्णबाणों से ऐसा घायल किया जैसे कि शार्ङ्ग हाथी को घायल  
 करता है । ४० । और अत्यन्त कोपयुक्त भीष्माकरनेवाले कृपाचार्य जाने भी केक

warrior-as all sides and many of them united together wounded the  
 single. Valliant Abhimanyu the best of warriors, strong like his father  
 and full of prowess like his uncle Vasudev, performed deeds of valour  
 like those of his father and uncle. Then out of love for his son killing  
 your warriors, brave Arjun, much enraged, approached him and found  
 him opposed by many. Then your father Devabrat met Arjun in  
 combat as Bahu meets the sun Your sons protected Bhishm with  
 chariots, elephants and horses, and surrounding the Pandav Arjun they  
 fought against him. Then Kripacharya with twenty five arrows hid  
 Arjun who opposed Bhishm. Satyaki, wishing to please Arjun, faced  
 him and wounded him with his arrows as a lion wounds an ele-  
 phant. 40. Skilful Kripacharya, much enraged, wounded Satyaki

शरैः । इति विज्याथ संकुद्धः कंकपत्रपरिच्छेदः ॥ ४७ ॥ शैनेयोपि ततः कुक्षेऽध्यापमा  
नमर वेगवान् । गौतमान्तकरं तूर्णं समाधत्त शिलीमुखम् ॥ ४८ ॥ तमापतन्तं वेगेन  
शक्राशनिमग्नयुतिम् । द्विधा चिच्छेद संकुद्धो द्रौणिः परमकोपनः ॥ ४९ ॥ समुत्  
सृज्याथ शैमथो गौतमं रयिनांवरः । अश्वद्रवद्रणे द्रौणिं राहुः खे शशिनं यथा ॥ ५० ॥  
तस्य द्राणमुत्थापं द्विधा चिच्छेदमारुतः । अयेन छिन्नधन्वानं ताडयामास सात्यकीः  
॥ ५१ ॥ सोम्यन्तर्कामुकमादाय शत्रुघ्नं भारसाधनम् । द्रौणिं पश्या महारोजघाह्वो  
ररसि चार्पयत् ॥ ५२ ॥ स विद्धो ध्ययितश्चैव मुहूर्त्तं कश्मलायुतः । निपसादस्थो  
पस्थे ध्वजयष्टिं समाधितः ॥ ५३ ॥ प्रतिलङ्घ्य ततः संज्ञांशेणपुत्रः प्रतापवान् । वार्ष्णेय  
समरे कुञ्जो नाराचेन सभार्पयत् ॥ ५४ ॥ शैनेयं स तु निर्भिद्य प्राविशद्वरणीतलम् ।

पञ्च युक्त गौ वार्ष्णेय से सात्यकी को हृदय में घायल किया फिर वेगवान् क्रोध  
भरे सात्यकी ने अपने धनुषको लेकर कृपाचार्य के नाश करनेवाले शिलीमुख  
नाम वार्ष्णेय धनुषपर चढ़ाया उस समय अत्यन्त क्रोध से भरे हुए अश्वत्थामा ने  
उस तीव्रतासे गिरते हुए इन्द्र वज्र के समान वाणको दोस्थानों में काटा, इसके  
पीछे रथियों में भेष्ट सात्यकी कृपाचार्य को त्यागकर युद्ध में अश्वत्थामा के  
सम्मुख ऐसे गया जैसे कि आकाश में चन्द्रमा के सम्मुख राहुजाता है । ४४ । हे  
भरतवंशी द्रोण के पुत्र अश्वत्थामा ने उसके धनुष के दो खण्ड करके उसको मारे  
वार्ष्णेय के अच्छादित करदिया फिर सात्यकी ने शत्रुओं के मारनेवाले दूसरे धनुष  
को खींचकर साठ वार्ष्णेय से अश्वत्थामाकी छाती और दोनों भुजाओं को घायल  
किया उन वार्ष्णेय से घायल और पीड़ित होकर अश्वत्थामा महाव्याकुल व अचेत  
होकर कई मुहूर्त्तरु ध्वजाके आश्रयसे रथमें बैठगया, योदेही समयमें अश्वत्थामा ने  
सचेतही बड़े क्रोधसे सात्यकीको नाराच वाणने घायल किया, वहवाण सात्यकी  
को घायल करता हुआ पृथ्वीमें ऐसे घुम गया जैसे किवस्तन् ऋतुमें सर्पका बलवान्

in the breast with nine arrows having vulture quills, and Satyaki  
much enraged sharply bent his bow and desirous of killing Kripacharya,  
put to his bow an arrow whetted on stone Ashwathama exceedingly  
enraged, cut that swift arrow like the vajra of India, in two places.  
Then Satyaki the best of charioteers left Kripacharya and rushed  
against Ashwathama as Rahu goes against the moon. 44 The latter  
cut down his bow and hid him with his arrows. Satyaki then took  
up another bow destructive of enemies and discharging from it sixty  
arrows, wounded him on the breast and arms. Wounded and pained  
by them, Ashwathama became unconscious for some time and held  
his banner staff to keep himself from falling down. On regaining  
consciousness he wounded Satyaki with a long shafted arrow. Hav-  
ing wounded Satyaki that arrow entered the ground as a young and  
powerful snake enters his hole in the season of Spring 49. Then

घसन्तकाले बलवान् धिलं सर्पेशिशुर्वथा ॥ ४९ ॥ अथा परेण भल्लेन माधवस्य ध्वजो  
 तमम् । चिच्छेद समरे द्रौणिः सिंहमादं मुमोच ह । ५० ॥ पुनश्चैनं शरैर्वोरैश्छादया  
 मास भारत । निद्राघान्ते महाराज यथा मेघो दिवाकरम् ॥ ५१ ॥ सात्यकीपिमहाराज  
 शरजालं निहत्य तत् । द्रौणिमथ्या किरतूणे शरजालैरनेकधा ॥ ५२ ॥ तापयामास  
 च द्रौणिं शैभेयं परधीरहा । विमुक्तो मेघजालेन ययैव तपनसथा । ५३ ॥ शराणां च  
 सहस्रेण पुनरेव समुद्यतः । सात्यकिश्छादयामास ननाद् च महायत्नः ॥ ५४ ॥ द्रुप  
 पुत्रं च तं ग्रस्ते राहुणेव निशाकरम् । बभूव द्रुपदं शनैर्वा भारद्वाजः प्रतापवान्  
 ॥ ५५ ॥ विष्याध च सुतीक्ष्णं पुण्ड्रकेन महामुघे । परीप्सन् स्वसुतं राजन् बाष्पणे  
 नाभिपीडितम् ॥ ५६ ॥ सात्यकिस्तु रणे हित्वा गुरुपुत्रं महारथम् । द्रोणं विष्याध  
 विशाया सर्वं पादशयैः शरैः ॥ ५७ ॥ तदन्तरममेयात्मा क्रीन्तेयः शत्रुतापनः । मथ्य

पश्चा विज्ञप्तं मवेश करता है । ४९ । फिर अश्वत्थामाने दूसरे भल्ल से सात्यकी  
 की उत्तम ध्वजाको काटकर बड़े सिंहनाद पूर्वक उसको महाघोर बाणों से ऐसा  
 ढकादिना जैसे कि वर्षाऋतुमें बादल सूर्यको ढकदेता है हे महाराज फिर सात्यकीने  
 भी बड़ी शीघ्रतासे उस बाणोंके जालको काटकर अपने बाणसमूहोंसे अश्वत्थामाको  
 आच्छादित करदिया । फिर उसशत्रुहन्ता सात्यकीने अश्वत्थामाको ऐसा संतप्त किया  
 जैसे कि स्वच्छ आकाशवाला सूर्य सबको अत्यन्त तपाता है, इसके पीछे बड़े उपाय  
 करनेवाले सात्यकी ने बड़ी गर्जनाओंको करके हजारों बाणोंसे अश्वत्थामाको व्याप्त  
 करदिया, तबराहुने असेहुए सूर्यके समान अपनेपुत्रको देसकरप्रतापवान् द्रोणाचार्य  
 जी इस सात्यकी के सम्मुख गये । ५० । हे राजा सात्यकी के हाथसे पीड़ामान्  
 अपने पुत्रको चाहते हुए द्रोणाचार्य ने उसको युद्ध में बड़े तीव्र पृष्ठकबाणसे  
 घायल किया फिर सात्यकी ने युद्धमें गुरुके पुत्र महारथी को छोड़कर लोहमपी  
 बाणों से द्रोणाचार्यजी को महा व्याकुल किया, उसी अन्तर में बड़ा साहसी

having cut down his good banner with another dart, Ashwathama  
 roared like a lion and hid him with his arrows as clouds in the  
 rainy season hide the sun. Satyaki with great velocity cut down  
 that network of arrows and his Ashwathama with a swarm of  
 his own. That destroyer of foes then heated Ashwathama as  
 does the sun when the sky is clear. With great skill Satyaki  
 hid Ashwathama with thousands of arrows and uttered loud  
 roars. Then seeing his son like the sun arrested by Rahu, Drona-  
 charya faced Satyaki. 55. Out of affection for his son who was  
 wounded by Satyaki, Dronacharya wounded the latter with his very  
 sharp arrows. Satyaki then left the son of Acharya and wounded  
 Dronacharya with his steel arrows. In the meantime, valiant

ब्रह्मद्रणे कुड्डो द्रोणे प्रति महारथम् ॥ ५८ ॥ ततो द्रोणश्च पाण्डुश्च समेपातां महाद्युधे ।  
यथा युधश्च युक्श्च महाराज नमस्तले ॥ ५९ ॥

इतिथी महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि संकुसपुद्गे द्रोणार्जुन-

समागमे वयधिकशततमोऽध्यायः ॥ १०२ ॥

धृतराष्ट्र उवाच । कथं द्रोणो महेष्वास पाण्डवश्च धनञ्जय । समीपतु रणे  
यसौ तावुसौ पुण्यवंशौ ॥ ॥ प्रियोहि पाण्डवो नित्य आरद्राजस्य भीमतः । आचार्यश्च  
रणे नित्य प्रियः पाण्डवस्य सञ्जय ॥ २ ॥ तावुसौ रथिनी सख्ये दृष्टौ सिंहाधिनाकटौ ।  
कथं समीपतुयसौ भारद्वाजधनञ्जयौ । ३ । सञ्जय उवाच । न द्रोण समरे पाण्डे  
जानीते प्रियमात्मनः सत्रधमं पुरस्कृत्य पाण्डो वा शुष्माह्वये ॥ ४ ॥ न क्षत्रिया रणे  
यजन् प्रज्ययति परस्परम् । निर्भर्यादे हि युध्यन्ते पितृभिर्भ्रातृभिः सह ॥ ५ ॥ रणे

शत्रुसेनापी महारथी क्रोध भरा अर्जुन युद्धमें द्रोणाचार्य के सम्मुख गया फिर  
द्रोणाचार्य और अर्जुन ने उन घोर युद्ध में ऐसी बड़ी सम्मुखता करी जैसी कि  
आकाश में बुध और शुक्रने करीथी ५९ ॥

अध्याय १०२ ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय युद्ध में कुशल दोनों पुरुषोत्तम अर्थात् बड़े धनुषधारी  
द्रोणाचार्य और पाण्डव अर्जुन परस्पर केते सम्मुख हुए, हे संजय वह अर्जुन उस  
बुद्धिमान द्रोणाचार्य का सदैव प्यारा है और आचार्यजी भी अर्जुन को सदैव  
प्यारे हैं, वर दोनों महारथी युद्ध में प्रसन्न चित्त सिंहकी समान मदोन्मत्त और  
सावधान होके किस रीति से युद्धकरने को प्रवृत्त हुए, संजय बोले कि द्रोणाचा-  
र्यजी युद्ध में अर्जुन को अपना प्यारा नहीं जानते हैं इसी प्रकार अर्जुन भी सखी  
पर्वको आगे करके गुरुको युद्ध में प्यारा नहीं मानता है, हे राजा क्षत्री लोग  
परस्पर में एक दूसरेको त्याग नहीं करते हैं किन्तु पिता और भाई

Arjun of great courage and destroyer of foes went against Drona-  
charya much enraged and met him in a severe combat like that of  
Budh and Shukra in heaven." 59.

### CHAPTER CIII

"Describes the encounter between the two skilful warriors and  
best of men, viz., Dronacharya the great archer and Arjun the  
Pandav" said Dhanrashtra to Sanjaya, "Arjun is always dear  
to Dronacharya and the former has equal regard for the latter, how  
did the two warriors, with cheerful minds like two maddened lions,  
fight against each other in earnest?" "Dronacharya casts aside his  
love for Arjun at the time of fighting," replied Sanjaya, "and  
likewise Arjun's idea of kshatrya duty overcomes that of love for his  
preceptor. Kshatryas, O king, do not spare any one in battle they

मारु पापेन द्रोणे विद्वन्निमि शरैः । नाचिन्तयच्छ तान् वाणान् पार्थचापस्य  
 तान् युधि ॥ ६ ॥ शरदृष्ट्या पुन पार्थ दृष्टव्यामास तं रणे । स प्रजग्वाल रोपेणमहने  
 मिदृशोऽजित ॥ ७ ॥ ततार्जुन रणे द्रोण शरैः सप्ततपर्वभिः । छादयामास राजेन्द्र  
 न चिरादेव मारुत ॥ ८ ॥ ततो दुर्योधनो राजा सुशर्माणमचोदयत् । द्रोणाय सवरे  
 राजन् पार्थिवमहणकारणात् ॥ ९ ॥ त्रिगर्तसदपि कुक्षो घृतामायन्यफामुक्कम् । छाद  
 यामास समरे पार्थ चापैरयो मुखैः ॥ १० ॥ ताभ्यां मुक्ताः शरा राजघ्नन्तरिक्षे विरे  
 जिरे । हस्त इव महाराज शरत्काले नमस्तले ॥ ११ ॥ ते शराः प्राप्य कौन्तेयं समन्ता-  
 द्विविशु प्रभो । फलमारुतन यद्भव स्वादुष्टं विदधमा ॥ १२ ॥ मर्जुनस्तु रणे  
 नाद् यित्तु रयिनाघरः । विगर्तराजं समरे सपुत्रं विष्यथ शरैः ॥ १३ ॥ ते विष्यमा  
 ना पार्थेन कालेनैव युगक्षये । पार्थमेवाभ्यवर्तन्त मरणे कृतनिधया ॥ १४ ॥ सुगुह

के साथ में भी अनर्थादा से लड़ने हैं हे राजा युद्धमें अर्जुन के तीन वाणों से  
 व यत्र द्रोणाचार्यजीने अर्जुन के धनुष से गिरेहुए वाणों को विचार नहीं किया,  
 फिर अर्जुन युद्धभूमि में वाणों की वर्षा करता हुआ ऐसा क्रोधगुक्तहुआ जैसे कि  
 बड़े पन में दृढ़ि पानेवाला अग्नि मचरह होताता है, फिर द्रोणाचार्य नेभी शी-  
 प्रशी गुप्तप्रन्धीवाले वाणों ने अर्जुन को दकदिया, तदनन्तर राजा दुर्योधन ने युद्ध  
 में द्रोणाचार्य की मर्मपक्ष के कारण राजा सुशर्मा को आज्ञाकरी, उस त्रिगर्त  
 के क्रोधयुक्त राजा ने भी अपने धनुषको अच्छे प्रकार खैचकर लोहे की पुंसवाले  
 वाणों ने अर्जुन को आच्छादित करदिया । १० । हे राजा उन दोनों के छोड़ेहुये  
 वाण अन्तरिक्षमें ऐसे प्रकाशमान हुए जैसे कि शरदऋतुके आकाश में हंसशोभित  
 होतेहैं, वह वाण चारोंओरसे अर्जुन को पाकर ऐसे प्रवेष्टहुए जैसे कि फलों के  
 बोम्ब से फुकेहुए दलों में पक्षी प्रवेश करने है, फिर रथियों में श्रेष्ठ अर्जुन ने  
 बड़ी गर्वना करके मारे वाणों के पुत्र समेत त्रिगर्त के राजा को घायल कर दिया  
 जैसे कि युग के अन्त में काल से घायल होतेहैं वसी महार अर्जुन से घायल

fight against their fathers and brothers. Wounded with three arrows  
 of Arjun, O king, Dronacharya took no notice of them. Thus  
 Arjun, showering his arrows was exceedingly enraged like the  
 advancing fire in a forest. Dronacharya too, hid Arjun with the  
 shew of his arrows having hidden knots. Then Prince Duryodhan  
 called king Sisharma to assist Dronacharya, and that enraged  
 king Trigart too, drew his bow and hid Arjun with his feathered  
 arrows. When the 10 he arrows discharged by both looked  
 like stars flying on high in the winter season. The arrows  
 entered the chariot of Arjun as birds enter the foliage of a fruit  
 bearing tree. Then Arjun the best of charoteers with a long roar  
 wounded the king of Trigart and his son with the shower of arrows

धारयष्टिञ्च पाण्डवस्य रथे प्रति । शरवृष्टिं ततस्तान्तु शरवर्षैः समन्ततः ॥ १५ ॥  
 प्रतिजग्राह राजेन्द्र तोयवृष्टिर्निवाचलः । तत्राद्भुतमपद्याम धीमत्सोर्हस्तलाघवम्  
 ॥ १६ ॥ विमुक्तां वधुभिर्योधिः शस्त्रवृष्टिं पुरासदाम् । यदेको वारयामास मारुतोन्नग-  
 णानिव ॥ १७ ॥ कर्मणातेन पार्यस्य तुतुपुदैवदानवाः । अथकुन्दो रणे पार्यं खिगत्तान्  
 प्रति भारत ॥ १८ ॥ सुमोचास्त्रं महाराज वायव्यं पृतनामुचे । प्रादुरासीत्ततो वायुः होन  
 याणो नभस्तलम् ॥ १९ ॥ पातयन् वै तरुणान् चिनिष्पन्श्चैव सेनियान् । ततो द्रोणे  
 भिवीक्ष्यैव वायव्यास्त्रं सुदारुणम् ॥ २० ॥ शैलमन्यन्महाराज घोरमस्रं सुमोच ह ।  
 द्रोणेन युधि निर्मुक्ते तस्मिन्मस्रे नयधिप ॥ २१ ॥ प्रशशाम ततो वायुः प्रसन्नाश्च  
 दिशोदश । ततः पाण्डुसुतो वीरखिगर्तस्य रथयजान् ॥ २२ ॥ निरुत्साहान् रणेचक्रे  
 विमुखां विपराक्रामान् । ततो दुष्योन्धनश्चैव रूपश्च, रथिनां वरः ॥ २३ ॥ अश्वत्था  
 और मरने में निश्चय करनेवाले वह लोग अर्जुन के ही सम्मुख आकर वर्तमान हुए  
 । १४ । और युद्धमें उन लोगोंने अर्जुन के रथ पर बाणों की वर्षाकरी और  
 अर्जुन ने अपने बाणों से उनके बाण जालों को ऐसे रोका जैसे कि जलकी  
 वर्षा को पर्वत रोकता है हे राजा जहां हमने अर्जुन की हस्तलाघवता को भी  
 अपूर्व देखा कि जो अकेले ने बहुत से वीरोंकी छोड़ी हुई अस्र बाणों की  
 वर्षाको और शस्त्रों को ऐसे रोककर जैसे कि वायु बादलोंके समूहोंको रोकदेता है,  
 अर्जुन के उस कर्म से देवता और दानव भी महामत्सन्न हुए हे राजा अर्जुन ने महा  
 क्रोधित होकर सेना के मुखरूप त्रिगर्त देशियों के ऊपर वायव्य अश्वको छोड़ा  
 उस में से आकाशको व्याकुल करते या देवताओंके समूहोंको गिराते और नेनाओं  
 को मारते हुए वायु प्रकटहुए फिर द्रोणाचार्य जी ने बड़े भयकारी वायव्य अश्व  
 को देखकर । २० । दूसरे शैल्य नाम घोर अश्वको छोड़ा उस द्रोणाचार्यके उम अश्व  
 के छोड़तेही वह वायु शान्त होगई और दशोदिसा प्रसन्नहुई इस के पीछे उम वीर  
 अर्जुन ने त्रिगर्त राजा के रथों के समूहोंको, वेउत्साह व निर्मल व मुल फेरनेवाला

like those of Death. Thus wounded by Arjun, they faced him believing in their death 14 They showered arrows at the chariot of Arjun and the latter with the network of his arrows checked them as a mountain checks a shower of rain. There we saw, O King, the wonderful swiftness of Arjun who checked the shower of their arrows as the wind does the masses of clouds. The gods and the danavs were pleased at the prowess of Arjun. He discharged his Vayavya (niry) weapon at the Trigartas who led the army. It produced winds disturbing the skies, making the crowds of gods fall from their seats and destroying the armies. Seeing the effect of that weapon Dronacharya discharged another, known as Shailya, which subsided the storm of wind and the people were pleased. Then

मातया शल्यः कौम्बोजश्च सुदक्षिणः । विन्दानुविन्दावाचन्त्यौ पाहलिकः सह  
 पाहलिके ॥ २४ ॥ महता रथवेशेन पार्थस्यावारयन् दिशः । तथैव भगदत्तश्च युता  
 युद्धं महाबलः ॥ २५ ॥ गजानीकेन भीमस्य ताववारयतां दिशः । भूरिध्रुवाः शल्यश्चैव  
 सौषलश्च विशम्भते ॥ २६ ॥ शरीरैर्विमलैर्हस्तिदणैर्मोद्रीपुत्रावधारयत् । भीमस्तु  
 संहतः सद्भवे धार्तराष्ट्रः ससेतिकैः ॥ २७ ॥ युधिष्ठिरं समासाद्य तपेत पर्यवार  
 यत् । आपतन्तं गजानीकं दृष्ट्वा पाथो वृकोदरः २८ ॥ लेलिहन् सुनिकर्णविरो  
 मृगराडिञ्च कानने । भीमस्तु रथिनां श्रेष्ठो गदां गृह्य महाहवे ॥ २९ ॥ अवच्छृत्य रथ  
 तूर्णं तय सैन्यान्पभीपयत् । तमुद्बोध्य गदाहस्तं ततस्तं गजसादिनः ॥ ३० ॥ परि-  
 ब्रज्यते यत्ता भीमसेनं सनन्तः । गजमध्वगनुप्राप्तः पाण्डव स म्यराजत ॥ ३१ ॥  
 मेघेजालस्य महतो यथा मध्यगतो रविः । व्यधमत् स गजानीकं गद्या पाण्डव्यभः

किया, इसके पीछे दुर्योधन व रथियों में श्रेष्ठ कृपाचार्य ब्रज्यतांमा शल्य  
 कांबोज सुदक्षिण विन्द अनुविन्द अवन्तिके राजा लोग वाल्हीक देशियों समेत  
 राजा वाल्हीक इन सब वीरों ने रथों के समूहों से अर्जुन की दिशाको  
 रोकादिया । २५ । उसी प्रकार भगदत्त व महादत्ता श्रुतायु इन दोनों ने हाथियों  
 की सेना समेत भीमसेन की दिशाओं को रोक और भूरिश्रवा शल्य शकुनी  
 इस सबने बड़े तीव्र दणों से माद्री के दोनों पुत्र नकुल सहदेव को घेरलिया और  
 मेना वा धृतराष्ट्र के सब पुत्रों समेत भीमजी ने युधिष्ठिर को पाकर सब ओर  
 से घेरलिया, फिर भीमसेन ने लग गिरती हुई हाथियों की सेनाको देखकर उनके  
 सिंहाके समाग होजोंको चाटते हुए अपनी बड़ी गदाको लेकर सीधही रथसे कूदके  
 आपसी सेनाओं को भयभीत किया इसके पीछे युद्ध कुशल उन हाथियों के सवारों  
 ने भीमसेन को गदा धारण किये देखकर ३०। चारों ओर से घेरलिया सब वह  
 भीमसेन हाथियों के मध्यवर्ती होकर ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि बादलोंके बड़े

bravo Arjun made the hosts of Trigart charioteers powerless and they turned back out of despair. Then Duryodhan, Kripacharya the best of charioteers, Ashwathama, Shalya, Canboj, Sudakshin, Vind and Anuvind the two princes of Avanti and Vablik with his countrymen checked Arjun from all sides 25. In the same manner, Bhagdatta and mighty Shrutayu with their armies of elephants checked Bhimsen from all directions; and Bhurishrava, Shalya and Shakuni checked with their arrows the advance of Nakul and Sahadev the two sons of Madri. Bhishm with all the sons of Dhritrashtra and the armies surrounded Yudhishtir. Seeing the armies of elephants falling on him, Bhimsen licked his lips like a lion and taking up his huge mace, jumped down from his chariot and terrified your armies. The elephant riders saw Bhimsen race in hand (30) and surrounded him on all sides. Surrounded by those huge elephants Bhimsen looked



॥ ३२ ॥ महाप्रजालमनुलं मातरिभ्येवं सन्ततम् । ते वध्यमाना घलिना भीमसेन  
 दन्तिनः ॥ ३३ ॥ आर्तनादं श्रुत्वा च कुर्वाणोऽन्तो अलदा इव । बहुधा दारित्यचेव  
 विषाणैस्तत्र वसिष्ठिभिः ॥ ३४ ॥ फुलाशोकं गिरिः पार्थ शुशुभेरणमूर्धनि । विषाणे  
 दन्तिनं गृह्य निर्धनं जमयाकरोत् ॥ ३५ ॥ विषाणेन च सेनेव कुम्भेभ्याहृत्य दन्तिनम् ।  
 पातयामास समरे दण्डहस्त इवान्तकः ॥ ३६ ॥ क्षोणिताकां गदां विभ्रद् मेदोमञ्जरा  
 कृतः उदि । कृताश्वद्वज्र क्षोभितेन सद्रवम् प्रत्यहदयत् ॥ ३७ ॥ एव ते वध्यमानाश्च  
 हतशेषामहागजाः । प्राद्वन् दिशो राजन् विभूश्च नः स्वर्कवलयम् ॥ ३८ ॥ द्रष्टुं हि स्तैर्म  
 दानवीः समेताद्भरन्धम । कुर्व्येऽथ वल सर्वं पुनरास्तिपत्यं मुखम् ॥ ३९ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मप्रपञ्चनि संकुलपुट्टे

अथ भिक्षुशततमोऽध्यायः ॥ १०१ ॥

जालमें बर्चमान होकर सूर्य शोभित होता है और वीर भीमसेनने अपनी गदासे  
 हाथियोंकी सेना को ऐसे पृथक् २ कर दिया जैतकि बहुत बड़े और अतल्लय फैले  
 हुए वाद्यों के जालों की पृथक् २ काता है उस महाबली भीमसेन से घायल  
 बादलों के समान गर्तेनागले हाथियों ने पीड़ायुक्त शब्द नित्य और हाथियों के  
 दांतों से बहुत घाव ल हुआ भीमसेन रणभूमि में फूले हुए अशोक के समान शोभित  
 हुआ फिर हाथीको दाँवपर से पकड़कर बिना दाँत कर दिया और उड़ी दाँत से  
 हाथी के मुखको घायल करके रणभूमि में गिराया उस समय मृत्यु समान दण्ड  
 हाथ में नित्य गस्तकों की चरवी से शोभित रुधिर भरे देह से रुधिर में हवी हुई  
 गदाका घाण करनेवाला भीमसेन रुद्र के समान हुए पड़ा इस रीति से सब  
 हाथी मारेगये और मरने से बचेपचाये बड़े हाथी अपनीही सेना को दबाते  
 मर्दन करते इधर उधरकां भागगये उन चारों ओर को भागते हुए उनबड़े २  
 हाथियों के कारण से दुर्योधनकी सबसेना मुल फेर गई ३९ ॥

glorious like the sun surrounded by clouds. With his mace he dis-  
 persed the army of elephants as the wind disperses the clouds. Wound-  
 ed by mighty Bhishma the elephants thundring like clouds uttered  
 shrieks of distress; and exceedingly wounded by elephants, Bhishma  
 looked beautiful like the a-hok tree. He pulled out the tusks of the  
 elephants and felled them in the field of battle with the bow and the  
 tusk. Holding the fatal staff in hand, stained with the feet of the  
 heads, with his body and mace rocking in blood, Bhishma looked like  
 Rudra. Thus nearly all the elephants were slain, while the rest,  
 huge ones, fled hither and thither crushing their own warriors  
 and with those huge elephants all the army of Duryodhan turned  
 back." 39.

सञ्जये उवाच । मध्येदिने महाराज संश्रामं समपद्यत । लोकक्षयकरो रीक्षो  
भीष्मस्य सह सौमकेः ॥ १ ॥ गांगेयो रथिनां श्रेष्ठः पांडवाणामनीकिनीम । व्यधमात्रि  
शिवैर्वागेः शतशोयसहस्रशः ॥ २ ॥ संममर्वच तत्तत्सैन्यं पितादेवप्रतज्जव । चाभाना  
मिबलूनानां प्रकरंगोगणाश्च ॥ ३ ॥ धृष्टयुष्मः शिखण्डाच्च विराटो द्रुपदस्तथा । भीष्म  
मासाय समरे शरैर्जघ्नुर्महारायम् ॥ ४ ॥ धृष्टयुष्मं ततो विध्वा विराटच्च शरैर्लिभिः ।  
द्रुपदस्व च नारायं प्रेषयामास भारत ॥ ५ ॥ तेनविद्धा महेष्वासा भीष्मेणा निश्र  
कर्षिणा । चुक्रुधुः समरे राजन् पादस्फुट्टाघोरगाः ॥ ६ ॥ शिखंडीति च विम्याघ भरता  
नापित्यमह । स्त्रीमयं मनसाध्यात्वा नास्तेप्राहरन्त्युत ॥ ७ ॥ धृष्टयुष्मस्तु समरेक्रोधे  
नागिनरिवञ्चलन् । पितामहं त्रिभिर्बाणैर्बाह्वोरुसिचार्पयत् ॥ ८ ॥ द्रुपदः पञ्चविंश

### अध्याय १७४ ॥

सञ्जय बोले कि हे राजा मध्याह्न के समय सौमकीं भीष्मजी का युद्ध  
प्रतिपान हुआ वह महायोर युद्ध लोको के नाशका करने वाला भयंकर रूप था।  
रथियों में श्रेष्ठ गंगापुत्र भीष्मजी ने अपने साहस बाणों से पांडवों की हजारों  
सेनाओं को तितरिबितर कर दिया और ऐसा मर्दन किया जैसे कि कैलों का समूह  
बहुत से कटे हुए नाज के डेरको कर देता है, धृष्टयुष्म शिखण्डी, विराट और द्रुपद  
ने युद्ध में महारथी भीष्मको पाकर बाणों से घायल कर दिया इस के पीछे भीष्म  
ने धृष्टयुष्म को घायल कर तीन बाणों से विराट को व्यथित करते हुए द्रुपद के  
ऊपर नाराचको चलाया । ५ । तब तो उस भीष्म से घायल शत्रुदुश्ना बड़े धनुषधारी  
चरण से झुपे हुए सर्वरूप क्रोधयुक्त शिखण्डी ने उस भरतपेशियों के पितामह भीष्मजी  
को घायल किया और उस अज्ञेयने उसको स्त्री रूप ध्यान करके इसपर मदार नहीं किया  
फिर क्रोधरूप धृष्टयुष्म ने अपने तीन बाणों से पितामहकी छाती और भुजाओं पर  
घायल किया द्रुपद ने पञ्चीस बाणसे विराट ने दश बाणों से और शिखण्डी ने

### CHAPTER CIV

"At midday," said Sanjaya to Dhritrashtra, "Bhishm  
fought against the Somaks. That severe battle was destructive of  
the world and dreadful in the extreme. Ganga's son Bhishm the  
best of charioteers dispersed thousands of the Pandav charioteers with  
his sharp arrows and trampled them down as a herd of oxen does a  
heap of cut corn. Dhrishtadyumna, Shikhandi, Virat and Drupad  
met brave Bhishm in battle and wounded him with their arrows.  
Having wounded Dhrishtadyumna, Bhishm pierced Virat with three  
arrows and discharged an arrow at Drupad. 5. Wounded by Bhishm  
Shikhandi the great archer and destroyer of foes, enraged like a  
serpent trodden under foot, wounded Bhishm the grandfather of the  
Bharatas; but the invincible one, knowing him to be a woman, did not  
discharge at him his weapons in return. Then Dhrishtadyumna,

एषा विराटोदशानि शरैः । शिखंडीपञ्च त्रिशत्याभीष्मं विज्याधसायकैः ॥ ९ ॥ सोति  
 विद्धो महाराज शोणितौघपरिप्लुतः । घसन्ते पुष्पशवलो रक्ताशोक इयावमौ ॥ १० ॥  
 तान् प्रत्यविध्यद् गाद्रेयस्त्रिभिस्त्रिभिरजिह्वनैः । द्रुपदस्य च भल्लेन धनुश्छिच्छेदमा-  
 रिष ॥ ११ ॥ सौन्यत्पार्थुकमादाय भीष्मं विज्याधपञ्चभिः । सारथिञ्च त्रिभिर्घातैः  
 निशिनैरपमूर्धनि ॥ १२ ॥ तथा भीमो महाराज द्रौपद्याः पञ्चचात्मजाः । केकया  
 प्रातरं पञ्च सात्यकिश्चैव सात्वतः ॥ १३ ॥ जय्यद्वेनन्त गाद्रेयं मुधिष्ठिरपुरोगमाः ।  
 रिशिक्षिपत् पाञ्चाल्यं धृष्टद्युम्नपुरोगमा ॥ १४ ॥ तथैव तायकाः सर्वे भीष्मर  
 सारथ्यमुद्यताः । प्रत्युद्युः पाण्डुसेनां सहसैरयानपथिषु ॥ १५ ॥ तत्रासीत् सुमहामूर्ध  
 तव तेषाञ्च संकुलम् । नराश्वरयनागानां यमराष्ट्रनिवर्धनम् ॥ १६ ॥ रथी रथिनमा  
 साद्य प्राहिणाद्यमसादनम् । तथैतरान् ममासाद्य नरनामाद्वसादिनः ॥ १७ ॥ मनयन्

पश्चीम शायकों से भीष्मजी को घायल किया, फिर अत्यन्त घायल रुधिर भरे  
 शरीरसे वह पितामह ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि यमन्तक्रतु में फूला हुआ लाल  
 अशोक होता है । १० । इसके पीछे गंगापुत्र भीष्मजीने साँधे चलने वाले तीन १  
 बाणों से उन सबको घायल किया और भल्ल से द्रुपद के धनुष को काटा, फिर  
 द्रुपद ने दूम्ने धनुष को लेकर पाँच दाशों से उनके शिरको घायल किया और  
 अत्यन्त तीक्ष्ण तीन बाणों से मारथी को व्याधित किया, इसी प्रकार से भीमसेन  
 व द्रौपदी के पाँचों भाई केकय व यादव सात्यकी जिन में अग्रगामी मुधिष्ठिर थे  
 और पाँचाळ जिनका अग्रगामी धृष्टद्युम्न था रत्ना पूर्वक यह सब लोग भीष्मजी  
 के सम्मुख दौड़े । १२ । हे राजा इसी प्रकार से आप के शरवीर भीष्मजीकी रत्ना  
 के लिये उपय्य करने वाली सेनाओं समेत पाँडवों सेनाके सम्मुख गये वहाँ आपके  
 और पाँडवोंके मनुष्य मोड़े हाथी सवार और रथोंका बड़ा भारी युद्ध हुआ पहलुद  
 much enraged, wounded Bhishm in the breast and arms with three  
 arrows. Drupad wounded him with twentyfive arrows, Vnat with  
 ten and Shikhandi with twentyfive. Much wounded and reeking in  
 blood, the grandfather looked glorious like the blooming ashok  
 tree in Spring. 10. Then Bhishm the son of Ganga wounded them  
 with three arrows each and cut down the bow of Drupad with one.  
 Taking up another bow, Drupad wounded him in the head with five  
 sharp arrows and with three more arrows of exceeding sharpness  
 wounded his driver. In the same manner, Bhimisen, the five sons of  
 Draupadi, the five Kailaya brothers and Satyaki the Yadav, all led  
 by Yudhishtir, and the Panchals headed by Dhrishtadyumna, well  
 protected, rushed against Bhishm. 15. In the same manner, O King,  
 your warriors with the armies, trying to protect Bhishm, encountered  
 the Pandav armies. Your men and those of the Pandavas, mounted  
 on horses, elephants and chariots, fought very bravely. That battle

परलोकाय शरैः सन्नतपर्वभिः । शरैश्च विविधैर्वैस्त्रय तत्र विशास्पते ॥ १८ ॥  
 रथास्तु रथिभिर्हीना इतसारययस्तथा । विप्रदुताश्च समरे दिशो जग्मुः समन्ततः १९ ॥  
 मृद्नन्तस्तेनराजान् हयांश्च सुबहून् रथे । चातायमानाददयन्ते गन्धर्वनगरोपमाः २० ॥  
 रथिनश्च रथिर्हीना धर्मिणस्तेजसा युताः । कृष्णलोष्णीपिणः सर्वे निष्काङ्गदधिमूषणाः ॥ २१ ॥  
 देवपुत्रसमाः सर्वे शौर्ये शक्रसमा युधि । श्रुद्धया वैश्रवणश्चाति नयेन च  
 बृहस्पतिम् ॥ २२ ॥ सर्वे लोकेद्वराः शूरास्तत्र तत्र विशास्पते । विप्रदुता व्यददयन्त  
 प्राकृताश्च मानवाः ॥ २३ ॥ दन्तिनद्वय नरश्रेष्ठ हीनाः परमसार्द्धभिः । मृद्नन्तः  
 स्वान्यनीकानि निपेतुः सर्वशब्दगाः ॥ २४ ॥ धर्मभिश्चामरैर्विभैः पताकाभिश्चमारिष ।  
 छत्रैः सितैर्मन्दपण्डैश्चासरेव समन्ततः ॥ २५ ॥ विशीर्णविप्रधावन्तो ददयन्तेस्मदिशोदश ।

भीष्मराजके पुरकी दृष्टिका करने वाला था नहां रथीने रथी को यमलोकमें भेजा  
 और अन्य मनुष्योंने हाथी घोड़े और रथों को सम्पुर्ण पाकर, गुप्त ग्रन्थीवाले बाणों  
 से परलोक को पहुँचाया हे राजा जहाँ तहाँ नाना प्रकारके घोरबाणोंसे रथी रथोंसे  
 हीन हुएजय सारथी भी मारेगये तत्र चारों ओर को भागगये हे राजा युद्धमें गंधर्व  
 नगरके समान बहुत से घोड़े मनुष्योंको खूदते मर्दन करते भागते हुए दृष्टपड़े । २० ।  
 और रथी रथियोंसेहीन कवचधारी और तेजयुक्त कुंडल मंडीसराण और बाणधन्व  
 आदि भूषण धारी, सब देवकुमारों के समान और युद्धमें बलसे इन्द्र के समान धनसे  
 कुंभर को और चित्तसे बृहस्पति को भी जल्लंगन करने वाले, सब संसारके शूरवीर  
 राजा जहाँ तहाँ ऐसे भागे हुए दृष्टपड़े जैसे कि साधारण मनुष्य होते हैं, हे नरोत्तम  
 हाथी अपने श्रेष्ठ सवारों से हीन अपनी सेनाओं को मर्दन करते हुए सब शब्दों के  
 पीछे चलने वाले दौड़े, हे श्रेष्ठ ढाल चमर पताका सुन्दर मुनहरी दण्डवाले सत्रा-  
 दिक । २६ । चारों ओर भागे हुयों के साथ दशों दिशाओं को दौड़नेहुए दृष्टपड़े

caused much increase in the population of the region of Yam. Chariot  
 eers sent charioteers to the abode of Yam and others, encountering  
 elephants, horses and chariots, sent them to the other world. With  
 dreadful arrows of different sorts the charioteers were deprived of  
 chariots and drivers and ran away in all directions. As in the city  
 of gandharvas, many horses were to be seen running and trampling  
 men.<sup>20</sup> Charioteers, destitute of chariots, decked with armours, bright  
 carriages, turbans, arrows, armlets and other ornaments, like the sons  
 of gods, full of prowess like Indra, wealthier than Kuyar and more  
 magnanimous-minded than Vrihaspati, the warriors and princes of  
 the world were seen running hither and thither like ordinary  
 men. The elephants, O best of men, deprived of their riders ran  
 away shrieking and trampling their own men. Shields, fly flappers,  
 banners and shades with golden handles were seen as if running  
 along with those who fled. Elephants huge as clouds, were seen as

मवर्मेवप्रतीकाशा जलदोषमनि स्वना ॥ २६ ॥ तथैवदन्तिभिर्हीना गजारोहा विशा  
म्पते । प्रधावन्तो न्वदश्यन्त तव तेषाम्बु सकुले ॥ २७ ॥ नानादेशमुत्थाध तुरगान्  
मभूषितान् । यानायानानद्राक्ष शतशोयस्तदक्षय ॥ २८ ॥ अघवारोहान् हतैरश्वैर्गु  
हीतासीन् समन्तत । द्रवमाणानपद्रयाम प्राण्यमाणान्दच संयुगे ॥ २९ ॥ गजो गज  
समासाय द्रवमाण महाहवे । ययौमृद्य तस्सायादातान् घाञ्जिनस्तथा ॥ ३० ॥ तथैव  
च रयान् राजन् प्रममर्हणे गज । रथाश्चैव समासाय पतितस्तुरगान् भुवि ॥ ३१ ॥  
प्यमृद्मन् समरे राजस्तुरङ्गादच नरानुरणे । पवते बहुधा राजन् प्रत्यमृद्मन्परस्परम्  
॥ ३२ ॥ तस्मिन् रौद्रे तथा युद्धे पर्वमाने महामये । प्रावर्त्तत नदी घोरा शोभिता  
प्रतरङ्गिणी ॥ ३३ ॥ अस्थिसंघातसम्बाधा केशशैबलशाह्वला । रघुहृदा शरावर्षाहव  
मीना दुपसदा ॥ ३४ ॥ शोशंपलसमाकीर्णा हस्तिप्राहसमाकुला । कवचोष्णीयफेनौषा

वांदलके रूप हाथी घन कीसी गर्जना करने वाले विदितहुए, हेराजा इसी प्रकार  
जस तुमल युद्धमें आपके और पांडवों के हाथियों के सवार हाथियों से रहित दौड़ते  
दृष्टिगोचर हुए, नानाप्रकार के देशों में उत्पन्न होने वाले सुवर्णन भूषणों से अलंकृत  
हजारों घोड़ों को भी भागता हुआ देखा, घोड़ों के मरने से चारों ओर को हाथ में  
खड्ग लिये भागेहुए घेड़ों के सवारों को देखा, उसी बड़े युद्धमें भागतेहुए हाथी  
को पाकर हाथी बड़ी तीव्रता-युक्त पदातियों को और घोड़ों को मर्दन करता  
हुआ गया ॥ ३० ॥ इसी प्रकार हाथीने राधियों को और पृथ्वी पर पड़े हुए रथी और  
घोड़ों को पाकर घोड़ों ने मनुष्यों को मर्द । किया और बहुतसोंने परस्पर में मर्दन  
किया इस प्रकार जस भयानक युद्धमें रुधिर की महा अंयकर नदीभी वर्तमान देखी  
खड्ग रथों से गरुहुए केदारूप बौगल रथरूपहृद बाणरूप चक्र घोड़े रूप मछलि-  
या रथने वाली दुष्प्रत्य शिररूप पत्यरोंसे व्याप्त हाथी रूप ग्राहोंसे म्याकुल और  
कवच मंडील रूपके फेनोफे भरी धनुष रूप वेग खड्ग रूपी कछुए रखने वाली,

if running along with those who fled Elephants, huge as clouds, were  
seen scampering with their thunder like strokes. In the same manner,  
O king the elephant riders belonging to both the armies, were seen  
running away without their elephants. Decked with ornaments of  
different sorts thousands of horses of different countries were to be  
seen scampering in all directions. The horsemen with swords in their  
hands were to be seen running away without horses. Elephants  
were to be seen trampling down the horse and foot 30. In the same  
manner, the elephants trampled down the chariots, the chariots  
crushed the horses and the horses crushed those on foot. Others  
crushed one another producing a dreadful river of blood on the field.  
That river, full of swords, having hair for its weeds, chariots for its  
pools arrows for eddies, horses for fish, rare heads for stones, elephants  
for crocodiles armours and turlans for foam, bows for torrent, swords

धनुर्वेगासि कच्छपा ॥ ३५ ॥ पनाकाप्यजद्वाराण्य मर्त्यकूलापहारिणी । कन्यादहम  
सकीर्णा यमराष्ट्रविचरिणी ॥ ३६ ॥ तान्दो क्षत्रिया शूरा रयनागहयन्तु वै । प्रते  
मर्हवो राजन् मयं त्यक्त्वा महारथाः ॥ ३७ ॥ अपोवाहरणे भीरुः कश्मलेनामि  
सहताम् । यथा चैनरणीमेताम् प्रेतराजपुर प्रति ॥ ३८ ॥ प्राक्कोशं क्षत्रियास्तत्र हन्त्वा  
बहैरस मद्व । दुर्योधनापराधेन गच्छन्ति क्षत्रियाः क्षयम् ॥ ३९ ॥ गुणवारसु य  
द्वेष धृतराष्ट्रो जनेश्वर । कृतान् पाण्डुपुत्रेषु पापात्मा लोमभांहित ॥ ४० ॥ एवमु  
पिधावाच ध्यन्तेस्म परस्परम् । पाण्डवस्तवसंयुक्ताः पुत्राणां ते सुदारुणाः ॥ ४१ ॥  
ता निशम्य ततो पाच सर्वं बोधि रुद्राहता । आगच्छन् सर्वं लोकस्य पुत्रां  
दुर्योधनतव ॥ ४२ ॥ भीष्मद्रोण कृपश्चैव शल्यश्चोवाच भारत । युध्यमानं दुरा  
किं चिरं दुर्येति च ॥ ४३ ॥ तत्र प्रवृत्ते युद्धं कुरुणापाण्डवै सह । सद्यस्तत्त

पताका ध्वजा रूप वृत्तों से संयुक्त मृत्युकुपी किनारे रखनेवाली नाशकारी माँस  
भीषी राक्षस रूप हंताँ से युक्त नदी यमराज के देशकी अत्यन्त बढ़ाने वाली थी । ३५।  
हे राजा पंडे ५ दूरबीर महारथी क्षत्रियों ने भय को त्यागकर रयंदाभी पोदे रूप  
नैर्वागोंके द्वारा उसनदी को तरा, युद्धमें भयभीत मूर्च्छावान् मनुष्यों को ऐसेदूर  
पहुँचाया गे। ३६। ३७। ३८। ३९। ४०। ४१। ४२। ४३।  
उसबड़ी प्रयत्नको लेकर पुकारे कि दुर्योधन के अपराधसे क्षत्री लोगोंका नाश  
होताहै, पापात्मा लोनी राजा धृतराष्ट्रे गुणवान पांडवों से कैसे शत्रुता करी । ४०।  
इस प्रकार पांडवों भी प्रशमा से भरेहुए आपके पुत्रों समेत सेना के अनेक प्रकार  
के भयानक शब्द परस्पर में सुनेगये, इसके पीछे सवमंसारका अपराधी आपकापुत्र  
दुर्योधन उन शूरीरों के कहेहुए वचनोंको सुनकर, भीष्म द्रोणाचार्य कृपाचार्य  
शल्य इत्यादि से बोलाकि आपलोग अहंकार को त्यागकर युद्ध करो विलम्बक्यों  
करनेहो, इनकेपीछे पांडवाका और कौरवोंका महापौर भयानक युद्धजारी हुआ, हे

for to to see banno a for to 04, Death for its banks and destructive  
cannibal rai sha 04 for its swa 14, augmented the population of Yam's  
Node 35 Mighty warriors casting aside fear, crossed that river  
through the boats of elephants and chariots, and cast away the terri-  
fied and the fainting far away as the Baitarni does the dead in the  
region of Yam. Seeing that great destruction, the warriors cried out-  
"Kshatryas are being destroyed for the fault of Duryodhan. What  
enmity has the sinful and avaricious Dhritrashtra contracted with  
the Pandavas?" 40. Thus eulogising the Pandavas and blaming  
your sons, the cries of your warriors were heard on all sides. Then  
the culprit of the whole world, your son Duryodhan, hearing those  
words of his warriors, addressed Bhishm, Dronacharya, Kripacharya,  
Shalya and others, saying, "Fight without selfishness. Why do you  
delay?" Then there was a severe fight between the Kauravas and

राजन् सुघोरं वैशसं तदा ॥ ४४ ॥ यत्पुरा न निगृह्णासिं धार्यमाणो महात्मभिः ।  
 वैचित्रवीर्यं तस्येदं फलं पश्यसुदारुणम् ॥ ४५ ॥ न हि पाण्डुसुता राजन् ससैन्याः  
 सपदानुगाः । रक्षन्ति समरे प्राणान् कौरवाद्यापि संयुगे ॥ ४६ ॥ यतस्मात् कारणा  
 दोरो वर्तते स्वजनक्षयः । वैवादा पुरुषव्याघ्रं तव चापनयाम्नुव ॥ ४७ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मपर्वणि सहकुलप्रदे

चतुरधिकशतोऽध्यायः ॥ १०४ ॥

सञ्जय उवाच । अर्जुनस्तान् नरव्याघ्रः सुशर्मनुचरान्नुपात् । अनयत् प्रेतराजस्य  
 सदनं सायकैः शितैः ॥ १ ॥ सुशर्मापि ततो वाणैः पार्यं विध्वाद्य संयुगे । बाह्यदेवश्च  
 सतत्या पार्यश्च नवभिः पुनः ॥ २ ॥ तन्निवार्यं शरीरेण शकसूनुर्महार्घ्यः । सुशर्म  
 णो रणे योधान् प्राहिणोद्यमसादनम् ॥ ३ ॥ ते पश्यमानाः पार्येन कालेनेव पुगक्षये ।

विचित्र वीर्य के पुत्रजोपूर्व समय में महात्माओं के कहने को तुमने नहीं माना उसी  
 का यह महाभयकारी फल तुम देखो हे राजा पांडवलो, ग सेना और सायक के चलने  
 वालों समेत अपने प्राणों की रक्षा नहीं करने हैं और कौरव लोग भी अपने प्राणों  
 की रक्षा नहीं करते हैं, हे पुरुषोत्तम धृतराष्ट्र इमं देव से सूचित होता है कि यातो देव  
 की इच्छा से अथवा आपके अन्याय भे मनुष्यों का भयकारी और प्रलय रुपी नाश  
 वर्तमान है ४७ ॥

अध्याय १०५ ॥

संजय बोले कि पुरुषोत्तम अर्जुन ने सुशर्मा के पीछे चलनेवाले उन राजाओं  
 को तीक्ष्ण वाणों से प्रेतराज के पुरको पहुंचाया, इस के पीछे सुशर्मा ने अर्जुन को  
 वाणों से घायल करके वामुदेय जी को सत्तर वाणों से और अर्जुन को  
 नौ वाणों से घायल किया तब इन्द्र के पुत्र महार्थी अर्जुन ने अपने वाणों से  
 उनको रोककर सुशर्मा के शूरीरों को यमनोक में भेजा, हे राजा जैसे कि

the Pandavas Son of Vichitravirya! you paid no attention to the  
 prophecy of great men and therefore you see this dreadful fruit. The  
 Pandavas with their armies and followers, O king, donot care for  
 their lives nor do the Kauravas care. Thus it is seen, O best of men,  
 that this destruction like that of pralaya is raging on either side  
 through the will of God or through your injustice." 47.

#### CHAPTER CV

Best of men," said Sanjaya to Dhritrashtra, "with his sharp arrows,  
 Arjun sent the attendant warriors of Susharma to the region of Yam  
 Susharma wounded Arjun with nine arrows and Shree Krishn with  
 seventy. Then brave Arjun the son of Indra, having checked him  
 with his arrows sent his followers to the region of Yam. Like those

अपद्रवन्त रणे राजन् भये जाते महारथाः ॥ ४ ॥ उत्सृज्य तुरगान् केचित् रथान्  
 केचित्च मारिप । गजानन्ये समुत्सृज्य अपद्रवन्त त्रिशो दश ॥ ५ ॥ क्षपरे तु तदा  
 द्रौप्य वीजितमरथाव्रणे । त्वरया परया युक्ता प्राद्रवन्त विशम्पते ॥ ६ ॥ पादाताश्चापि  
 शस्त्राणि समुत्सृज्य महारणे । निरपेक्षाम्यधावन्त तेन तेनस्म भारत ॥ ७ ॥ वार्य्यमाणाः  
 सुवह्नुशस्त्रैर्गतेन सुशर्मणा । तथान्यैः पार्थिवश्रेष्ठैर्न व्यतिष्ठन्त संयुगे ॥ ८ ॥ तद्वलं प्रद्रुतं  
 दृष्ट्वा पुत्रो दुर्योधनस्तथ । पुरस्कृत्य रणे भीष्मं सर्वसैन्यपुरस्कृतः ॥ ९ ॥ सर्वोद्योगेन  
 महता धनञ्जयमुपाद्रवत् । त्रिगर्त्ताधिपतेरथं जीवितस्य विशम्पते ॥ १० ॥ स एक समरे  
 तस्यां किरन् बहुचिदाश्रय शरात् । भ्रातृभिः सहितः सर्वैः शेषाहिं प्रद्रुता नराः ॥ ११ ॥  
 तथैव पाण्डया राजन् सर्वोद्योगेन दक्षिताः । प्रययुः फाल्गुनार्थाय यत्रभीष्मोव्यतिष्ठत्  
 ॥ १२ ॥ ब्राह्मणा रणे धीर्य्य घोरं गणशैचघन्वन । हाहाकारकृतोत्साहा भीष्मजग्मुः

युगके अन्त में काल से मेरित लोग होते हैं इनी प्रकार अर्जुन से घायल हुए  
 वह महारथी युद्ध में भयभीत होकर कोई तो घोड़ों को त्यागकर कोई रथ कोई  
 हाथियों को त्यागकर दशों दिशाओं में भागे । ५ । और कोई शूर रथ छोड़े  
 और हाथीकोही लेकरपड़ी सांप्रतामेभागे, और पदातीलोग भी उस युद्ध में शस्त्रों  
 को त्यागकर अनिच्छावान् होकर जहांतहांमे भागे, उससमय सुशर्मा मनसे हारकर  
 त्रिगर्त्त के राजा और अन्य बहुत से उत्तम राजाओं के रोक्ने से नहीं रुकसका,  
 तब आपका पुत्र दुर्योधन गेना समेग उन शूरवीरों को भागता हुआ देखकर युद्ध  
 में भीष्मजी को आगे करके सब सेना के आगे बड़े उपायों समेग राजा त्रिगर्त्त के  
 जीवन के लिये अर्जुन के सम्मुख गया । १० । हे राजा वह युद्धमें अनेक प्रकारकेबाणों  
 की वर्षा करता हुआ तब भाइयों समेग युद्ध में वर्त्तमान रहा और शेष सब मनुष्य  
 भागगये, हे राजा इसीप्रकारसे पण्डव लोग भी सब उपायों समेत अर्जुन के लिये  
 कदब शस्त्र धारण किये वहांगये जहांपरकि भीष्मजी नियतथे, यह सब बीरगांडीव

who are actuated by Death at the end of the yug, those warriors  
 terrified in battle, ran hither and thither leaving their horses, chariots  
 and elephants. 5. Some of the warriors ran away with their cha-  
 riots, horses and elephants. The foot soldiers too, leaving their arms  
 in the field of battle, lost their courage and ran away in all directions.  
 Then Susharma lost heart and ran away in spite of the checking of  
 Trigart and other warriors. Then your son Duryodhan, seeing the  
 flight of those warriors hastened with a large army led by Bhishm to  
 the rescue of the king of Trigart and encountered Arjun. 10. Show-  
 ering their arrows of different sorts, Duryodhan and his brothers  
 stood firmly in the field of battle. The Pandavas too, in the same  
 manner, armed with weapons and armour, went there to help Arjun  
 against Bhishm. All these warriors knew the prowess of Arjun the



नवभिः शरैः ॥ २१ ॥ ननाद बलयोग्नादं सौमद्रः परवीरहा । हताश्वापु रथाङ्गौ सा  
 बभूव्य महारथः ॥ २२ ॥ आश्वरोह रथं तूर्णं दुर्मुखस्य विशाम्पते । द्रोणोऽधुपक्षं मित्या  
 शरैः सशतपवभिः ॥ २३ ॥ सारथिश्चास्य विध्याथ स्वर्माणः पराक्रमी । पीड्यमानस्त  
 तो राजा द्रुपदो याहिनीमुखे ॥ २४ ॥ अपायोज्ज्वलैरश्वैः पूर्ववैरमनुस्मरन् । भीमसेन-  
 षु राजानं मुहूर्त्तादिव बाहिलकम् ॥ २५ ॥ व्यदधस्तथं चक्रे सर्वसैन्यस्य पश्यतः ।  
 ससम्भ्रमो महाराज सशयं परमे गत ॥ २६ ॥ अवपुनर्य ततो बाह्याद्बाहलीकः पुरुषो-  
 त्तमः । आश्वरोह रथं तूर्णं लक्ष्मणस्य महारणे ॥ २७ ॥ सात्यकिः कृतधर्माणं धारयित्वा  
 महारणे । शरैर्वद्विधै राजन्नाससाद पितामहम् । स विध्या मारतं पश्या निजितैलै-  
 मवाहिभिः । नृत्यन्निवरथोपस्थे विबुध्यानो महत्तनुः २९ तस्याप्यसामर्थाकिः विशेषेण

को। मारकर बड़े बेग से गर्जी इस के पीछे वह महारथी चित्रसेन मृतक घोड़ों  
 के रथ से शीघ्र ही कूदकर दुर्मुख के रथ पर सवार हुआ फिर शीघ्रताकरने  
 वाले पराक्रमी द्रोणाचार्य ने द्रुपद को गुमग्रन्थी वाले बाणों से घायल करके उसके  
 सारथी को भी घायल किया, फिर सेना सुनपर पीड़मान राजा द्रुपद पूर्व  
 शत्रुता को स्मरण करके बड़े शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा युद्ध से हट गया, फिर  
 भीमसेन ने एक मुहूर्त्त में सय सेना के देखते हुए राजा बाहलीक को घोंड़े रथ और  
 सारथी से राहित कर दिया ॥ २५ ॥ तदनन्तर पुरुषोत्तम बाहलीक सवारी से उतरकर  
 व्याकुल होके महा मन्देह युक्त हुआ, और शीघ्र ही लक्ष्मण के रथ पर सवार हो गया  
 और सात्यकी ने कृतधर्मी को हटाकर बहुतसे बाणों के द्वारा पितामह को पाया  
 और तीक्ष्ण साठ बाणों से उनको घायल कर बड़े धनुष को कंपता हुआ रथ में  
 बैठा हुआ नाचता सा दृष्ट पड़ा फिर पितामहने इनहीं बड़ी विचित्र बेगवान् नाग  
 कन्या के समान शुभ सोहे की बड़ी भारी शक्ति को उस के ऊपर फेंका उस मृत्युके

roared a tremendous roar. Then brave warrior Chitrassen jumped  
 down from the chariot of which the horses were dead and mounted  
 that of Dui mukh. Then Valliant Dronacharya of great swiftness,  
 having wounded Drupad with his arrows having hidden knots,  
 wounded the driver of his chariot. Being thus wounded, Prince  
 Drupad the commander of the army, remembering his former enmity,  
 betook himself from the field of battle by means of his swift horses.  
 Then Bhimsen, within sight of all, deprived king Vahlk of horses,  
 chariot and driver in a moment 25. Vahlk the best of men alighted  
 from his carriage and in a state of great anxiety mounted the chariot  
 of Lakshman. Satyaki pushed Kritvarma aside and showered his  
 arrows at the grandfather. Having wounded him with sixty arrows,  
 he was seen shaking his bow and looked as if dancing on his seat in  
 the chariot. Then the grandfather hurled at him a golden spear of  
 wonderful sharpness like the daughter of a Naga, made of good

समस्तत ॥ १३ ॥ ततस्ताकध्वजं गूर पाण्डवानां धरुपिनीय । छादयामास समरे  
 शरैः समतपर्वभिः ॥ १४ ॥ एकीभूतास्तत सर्वे कुरुव सद्य पाण्डवै । धनुष्यस्त  
 महाराज मध्य प्राप्ते दिवाकरे ॥ १५ ॥ सात्यकि कृतवर्माण विष्मया पञ्चमिराशुगै ।  
 अतिप्रवाहवद् गूर किरन् वाणान् सहस्रशः ॥ १६ ॥ तथैव दुपदो राजा द्रोण विष्मया  
 शितैः शरैः । पुनर्विष्मया च समत्या सारथिश्चास्य पञ्चभिः ॥ १७ ॥ भीमसेनस्तु राजान  
 बाहुलीक प्रपितामहम् । विष्वाङ्गन्महानाद् शार्ङ्गैश्च कानने ॥ १८ ॥ भाङ्गुनिक्षिप्त  
 सेनैः पिक्षो यदुमिराशुगै । अतिप्रवाहवद् गूर किरन् वाणान् सहस्रशः ॥ १९ ॥  
 चित्रसेन त्रिभिर्वाणैर्विष्मया च समरं कृतम् । समागतास्तौ च मयाम तौ परोक्षताय  
 ॥ २० ॥ यथादिवि महापौरी राजन् वृषशर्नवैश्चरैः । तस्याश्च यतुरा हस्या सूतश्च

धनुष्यारी के युद्ध में पराक्रम को जानते और हाहाकार से उत्पन्न वरणाह को न  
 रखनेवाले चारों ओर से भीष्मजी के सम्मुख गये फिर तालध्वज भीष्मजी  
 ने मुसप्रस्थी के बाणों से पाण्डवों की सेना को ढक दिया, हे राजा इस में पीछे  
 आकाश के मध्यवर्ती सूर्य के होने पर सब कौरव और पाण्डवों में एकत्र होकर  
 युद्ध प्रारम्भ हुआ । १५ । सात्यकी और कृतवर्मा को पाँच बाणों से घायल करके  
 हजारों बाण छोड़ता हुआ युद्ध में नियत हुआ इसी प्रकार राजा द्रुपद ने द्रोणा  
 चार्य जी को तीक्ष्ण बाणों से घायल करके फिर सत्तर बाणों से घायल किया  
 और पाँच बाणों से उनके सारथी को व्यथित किया, फिर भीमसेन राजा बाह  
 लीक और पितामह को घायल करके ऐसी महागर्जना से गर्जा जैसे दिग्धन ॥  
 सिंह गर्जता है, चित्रसेन के बहुत बाणों से घायल अभिमन्यु ने युद्ध में चित्रसेन  
 को तीन बाणों से अत्यन्त घायल किया फिर युद्ध में भिड़े हुए बड़े दोनों बड़े शरीर  
 वाले जैसे शोभायमान हुए जैसे कि आकाश में बड़े घोर बुध और शनेश्चर शोभित  
 होते हैं । २० । अनुदन्ता अभिमन्यु नौ बाणों से मूल समेत उसके चारों पोंडों

wielder of the Gandiv and with no artificial courage opposed Bhishma  
 who with his banner of palm tree covered the Pandav armies under  
 the shower of his arrows having hidden knots. When the sun had  
 reached the middle of the sky O king the battle began between the  
 Kauravas and the Pandavas 13. Valiant Satyaki having wounded  
 Krtivarma with five arrows stood in the field of battle discharging  
 thousands of arrows. In the same manner Drupad wounded Drona  
 charya again and again with seven y arrows and his coachman with  
 five. Having wounded king Valish and the grandfather, Bhim  
 roared a loud roar as a lion does in a forest. Wounded by many  
 arrows of Chitraven Abhimanyu exceedingly wounded him with  
 three arrows. Fugaged in fighting the two warriors of huge bodies  
 looked like mighty Buth and Saturn in the sky 20. Having killed  
 his four horses and the coachman with nine arrows, Abhimanyu

नवभिः शरैः ॥ २१ ॥ मनाक् बलवान्नादैः सौमद्रः परवीरहा । हताश्वाणु रथाशूणं सा  
 धत्तुस्य महारथे ॥ २२ ॥ आरुरोह रथं तूर्णं दुर्मुखस्य विशाम्पते । द्रोणश्चद्रुपदं मिरया  
 शरैः सन्नतपवभिः ॥ २३ ॥ सारथिश्चास्य विभ्याथ त्वरमाणः पराक्रमी । पीड्यमानस्त  
 तो राजा द्रुपदो घाहिनीमुखे ॥ २४ ॥ अपावान्जयनैरदधैः पूर्वैर्धर्मनुस्मरन् । भीमसेन-  
 स्तु राजानं मुहूर्त्तादिव याहितकम् ॥ २५ ॥ व्यद्वस्तुरथं बभूव सयमेभ्यश्च गदयत् ।  
 ससम्भ्रमो महाराज सदायं परमं गतः ॥ २६ ॥ अथपुनर्य ततो दाहाद्वाहलीकः पुरुषो-  
 त्तमः । आरुरोह रथं तूर्णं लक्ष्मणस्य महारणे ॥ २७ ॥ सात्यकिः कृतघर्माणं घारयित्वा  
 महारणे । शरैर्वहुविधं राजन्नाससाद् पितामहम् । स विध्वा गारं पश्या निशितैलै-  
 मवाहिभिः । नृत्यन्निवरयोपस्थे विबुधानो महद्भुः २९ तस्यायसामर्हो शक्तिं चिक्षेपाथ

को। मारकर बड़े वेग से गर्जा इस के पीछे यह महारथी चित्रसेन मृतक घोड़ों  
 के रथ से शीघ्र ही कूदकर दुर्मुख के रथ पर सवार हुआ फिर शीघ्रताकरने  
 वाले पराक्रमी द्रोणाचार्य ने द्रुपद को मुमग्रन्थी वाले बाणों से घायल करके उसके  
 सारथी को भी घायल किया, फिर सेना मुँहपर पीड़ामान राणा द्रुपद पुनः  
 शत्रुता को स्मरण करके बड़े शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा युद्ध से हट गया, फिर  
 भीमसेन ने एक मुहूर्त में तब सेना के देखते हुए राजा वाहलीक को घोड़े रथ और  
 सारथी से रहित कर दिया ॥ २५ ॥ तदनन्तर पुरुषोत्तम बाधश्रीक मवारी से उतरकर  
 न्याकुल होके महा सम्भ्रम युक्त हुआ, और शीघ्र ही लक्ष्मण के रथ पर सवार हो गया  
 और सात्यकी ने कृतघर्मी को हटाकर बहुतसे बाणों के द्वारा पितामह को घायल  
 और शीघ्र साठ बाणों से उनको घायल कर बड़े धनुष को कंपता हुआ रथ में  
 बैठा हुआ नाचता सा दृष्ट पड़ा फिर पितामहने सुनहरी बड़ी विचित्र वेगवान् नाग  
 कन्या के समान शुभ सोई की बड़ी भारी शक्ति को उसके ऊपर फेंका उस मृत्युके

roared a tremendous roar. Then brave warrior Chitrasen jumped  
 down from the chariot of which the horses were dead and mounted  
 that of Durmukh. Then Valliant Dronacharya of great swift-  
 ness, having wounded Drupad with his arrows having hidden knots,  
 wounded the driver of his chariot. Being thus wounded, Prince  
 Drupad the commander of the army, remembering his former enmity,  
 betook himself from the field of battle by means of his swift horses.  
 Then Bhimsen, within sight of all, deprived king Vahlik of horses,  
 chariot and driver in a moment 25. Vahlik the best of men alighted  
 from his carriage and in a state of great anxiety mounted the chariot  
 of Lakshman. Satyaki pushed Kritvarma aside and showered his  
 arrows at the grandfather. Having wounded him with sixty arrows,  
 he was seen shaking his bow and looked as if dancing on his seat in  
 the chariot. Then the grandfather hurled at him a golden spear of  
 wonderful sharpness like the daughter of, a Naga, made, of good

पितामहः । हेमचित्रां महावेगां नागकन्योपमां शुभाम् ॥ ३० ॥ तामापतन्तीं सहसा  
 मृत्युकल्पां सदुर्जयाम् । व्यसयामास चाष्णेयो लाघनेन महायशः । ३१ ॥ अनासाद्य  
 तु चाष्णेयं शक्तिं परमवारुणा । न्यपतद्धरणीपृष्ठे महोल्केव महाप्रभा । ३२ ॥ चाष्णं  
 यस्तु ततो राजन्त्वां शक्तिं कनकप्रभाम् । वेगवद्भृशं चिक्षेप पितामहरथं प्रति ॥ ३३ ॥  
 चाष्णेयमुज्ज्वलेन प्रभुभासा महाहवे । अभिदुद्राव वेगेन कालरात्रिर्यथा भरम् ॥ ३४ ॥  
 तामापतन्तीं सहसा द्विधा चिच्छेद भारत । क्षुरप्राभ्यां सुतीक्ष्णाभ्यां ता व्यशीर्यन्  
 मेदिनीम् ॥ ३५ ॥ छित्वा शक्तिन्तु गाङ्गेय भात्यर्कि नवभिः शरैः । आजघानोरसि  
 कुक्षः प्रहसद्भुक्शरैः ३६ तत सरथनागाभ्याः पाण्डवा पाण्डुर्धृजाः । परियुद्धरणे भीष्मं  
 माधवप्राणकारणात् ॥ ३७ ॥ तत प्रयवृते युद्धं तुमुलं लोमहर्षणम् । पाण्डवानां क्रु-  
 णाञ्च समरे विजयैषिणाम् ॥ ३८ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि भीष्मवाष्णेय युद्धे  
 पञ्चाधिकशतोऽध्यायः ॥ १०५ ॥

समान अस्मात् गिरती हुई शक्ति को अपने तेजसे सात्यकी ने निष्फल कर दिया  
 । ३० । फिर वह शक्ति सात्यकी को न पाकर पृथ्वी पर गिरपड़ी इस के पीछे  
 सुवर्ण के समान अपनी बरछी को सात्यकी ने बड़ी तीव्रतासे पितामह के रथपर  
 फेंका उस सात्यकी की भुजाके वेग से वह शक्ति बड़ी तीव्रतासे उनके पास ऐसी  
 गई जैसे कि मनुष्य के पास कालरात्रि आती है हे राजा उस अकस्मात् गिरती हुई  
 तीव्र शक्ति को भीष्म जी ने तीक्ष्णतुरप्रवाणों से दोखरकरके पृथ्वीपर गिरा दिया  
 फिर शत्रु सन्तापी गंगापुत्र भीष्मने उस शक्ति को तोड़ नौ बाणों से बहुत हँसते हुए  
 उसको छती पर पायल किया तदनन्तर रथ हाथी और घोड़ों समेत सात्यकी की  
 रक्षा के लिये पाण्डवों ने भीष्मजी को घेर लिया फिर युद्धाभिलाषी पाण्डव लो-  
 गोंका और कौरवोंका रोमहर्षणकरनेवाला महाघोर युद्ध हुआ ३८ ॥

steel and very heavy; but Satyaki by his skill made useless the  
 spear falling suddenly like Death. 30. The spear fell down on earth  
 without touching Satyaki. Then Satyaki hurled with great force  
 his golden spear at the grandfather. The spear leaving the powerful  
 arm of Satyaki approached him like the night of Death; but Bhishm  
 cut it down into two pieces with his sharp arrows. Then Bhishm the  
 son of Ganga, destroyer of foes, having cut it down, wounded Sa-  
 tyaki on the breast with nine arrows smiling all the while. Then  
 for the protection of Satyaki the Pandavas surrounded Bhishm with  
 their chariots, elephants and horses and the Pandavas de-ironed of  
 battle fought a severe fight against the Kauravas " 37.

सञ्जय उवाच । इत्थं भीष्मं रणे कुशं पाण्डुर्यमसिद्धम् । यथा मेघमहाप्लव  
 तपान्ते दिशि आस्फुरन् ॥ १ ॥ दुर्योधनो महाराज दुःशासनमभाषत । एष शूरो  
 महेष्वासो भीष्म-शूरनिपुणः ॥ २ ॥ छादितः पाण्डवैः शूरैः समन्ताद्भरतपुत्रम् । तस्य  
 कार्यं त्वया वीर रक्षणं सुमहात्मनः ॥ ३ ॥ रक्षमाणोहि समरे भीष्मोस्माकं पितामहः ।  
 निहन्त्यात् समरे यत्तान् पाण्डूचालान् पाण्डवैः सह ॥ ४ ॥ तत्र कार्यतमं सन्त्य भीष्मस्यै  
 वामिरक्षणम् । गोसा श्लेष महेष्वासो भीष्मोस्माकमहाव्रतः ॥ ५ ॥ स मघान् सर्वसैन्ये  
 न परिचार्य्य पितामहम् । समरे कर्म कुर्याणं दुष्करं परिरक्षतु ॥ ६ ॥ स एवमुक्तः  
 समरे पुत्रो दुःशासनस्य । परिचार्य्य स्थितो भीष्मं सैन्येन महता वृत्- ॥ ७ ॥ तत्र  
 शतसहस्राणां हयावां सुघटात्मजः । विमलप्रासहलानामृष्टितोमरधारिणाम् ॥ ८ ॥  
 द्रुपितानां सुवेशानां बलस्थानां पताकिनाम् । शिश्रितैर्युद्धकुशलं रूपेतानां नरोत्तमैः

अध्याय १०६ ॥

संजय बोले कि हे महाराज जैसे कि वर्षा ऋतुके आकाश में बादलोंमे दूरे  
 हुए सूर्य को देखते हैं इसी प्रकार युद्धमें कुद्धरूप पांडवों से घिरे हुए भीष्मको  
 देखकर दुर्योधन उस दुःशामन से बोला कि यह बड़ा धनुषधारी शूरो का मार्ग  
 वाला भीष्म चारों ओरसे बड़े वीर पांडवों से घिरा हुआ है उसकी रक्षा तुम लोगों को  
 करनी अवश्य है, क्योंकि वह हमारा पितामह भीष्म युद्ध में पांडवों मनेन पांचालों को  
 मारेगा इस स्थानपर भीष्म जीकी रक्षा करना ही मैं बड़ा काम मानता हूं यह बड़ा धनुष  
 धारी महाव्रत भीष्म हमारा बड़ा भारी रक्षक है । १ । सो अपनी सबसेना समेत उस  
 कठिन युद्ध कभी भीष्मकी प्रीति से रक्षा करो इस प्रकारसे बड़े भाई की आत्मा को  
 सुन कर आपके पुत्र दुःशासन ने बड़ी सेना समेत भीष्मजी की चारों ओर से  
 मध्य में करके रक्षित किया, फिर मुवलके पुत्र शकुनी ने बड़े अच्छे प्रास  
 एडग तोमर धारी शुभ्रवस्त्रोंसे शोभित अस्त्रकार में भरे बड़े बलवान् ध्वजा धारी

## CHAPTER CVI

Sanjaya said, "Seeing Bhishm surrounded by the enraged Pandavas like the sun hidden by clouds, Duryodhan said to Dushasan, This great archer Bhishm the destroyer of foes is surrounded by the brave Pandavas; it is incumbent on you to protect him. Our grandfather Bhishm will slay the Pandavas and the Panchals. The protection of Bhishm is to be my highest duty at this time, for this great archer Bhishm of mighty vows is our greatest protector. 5. So with all your army and love you must protect mighty Bhishm." On hearing the command of his elder brothers, your son Dushasan surrounded Bhishm with a large army and protected him on all sides. Then Shakuni the son Suval with a great many warriors bearing bright swords and tomars, clad in fine clothes, proud of prower, ban-

॥ ९ ॥ नकुलं सहदेवञ्च धर्मराजञ्च पाण्डवम् । न्यधारयन्नरभेष्टान् परियार्य्य सम-  
न्ततः ॥ १० ॥ ततो दुर्योधनो राजा शराणां ह्यस्तादिनाम् । अयुतं प्रेषयामास पां-  
डवानां निवारणे ॥ ११ ॥ तैः प्रविष्टैर्महावेगेर्नरैर्महद्भिरिवाहवे । क्षुराहता धरा राजेभ्यः कम्पे  
च मत्ताव च ॥ १२ ॥ क्षुरशब्दस्य सुमहान् ध्वजिनां शुश्रुषे तदा । महावेगघनस्येव दृष्ट्वा  
मानस्य पथते ॥ १३ ॥ उत्पतन्निश्च तैस्तत्र समुद्रभूतं महद्भज- । विचारयथं प्राप्य  
छळादयामास भाङ्करम् ॥ १४ ॥ वेगवद्भिर्देवैस्तैस्तु क्षोभिता पाण्डवी बभूवुः ।  
निपतन्निर्महावेगेर्देवैरिव महत्सरः ॥ १५ ॥ ह्यपताल्यैव शब्देन न प्राप्तायत किञ्चन ।  
ततो युधिष्ठिरा राजा माद्रीपुत्री च पांडवौ ॥ १६ ॥ प्रत्यघ्नस्तरसां वेगं समरे ह्यस्तादि-  
नाम् । उद्धृतस्य महाराज प्रावृट्कालेतिपूर्य्यनः ॥ १७ ॥ यौणेमास्यामस्तु वेगं यथा  
वेला महोदधे । ततस्तं रथिनो राजन् दारैः सञ्जलपर्वभिः ॥ १८ ॥ व्यकुलन्तनुसमात्राणि  
शिक्षित युद्ध में कुशल अनेक नरोत्तम वीरों के और लाखों घोड़े रथ हाथियों के  
सवारों समेत भिन्नकर, नकुल सहदेव और धर्मराज नरोत्तम युधिष्ठिर को चारों  
ओर से घेरकर रोक लिया । १० । और राजा दुर्योधन ने दश सहस्र घोड़े के  
सवारोंका घूँघ पांडवों के बड़े युद्ध में भेजा है राजा वह युद्ध में गरुड़ के समान  
शीघ्रगामी उन पहुंचने वाले घुड़चढ़ों से घायल पृथ्वी के कंपाने वाली शब्दों को  
करते हुए वर्तमान हुए, उस समय घोड़ों के खुरों के ऐसे महा शब्द सुनेगये जैसे  
कि पर्वत में जलते हुए बाँसों के बड़े वनमें शब्द होतेहैं, उस भूमि में घोड़ों के  
उछलने से ऐसी धूम उड़ी जिससे कि सूर्य का रथ दक गया, फिर उन शीघ्रगामी  
घोड़ों की सेनासे पांडवों की सेना ऐसी व्याकुल हुई जैसे कि गिरते हुए बड़े शीघ्र  
गामी हंसों से तड़ाम व्यथित होना है । १५ । वहाँ घोड़ों के हींसनेके शब्द से कुछ  
नहीं जाना गया इसके पीछे नकुल सहदेवने युद्धमें अपनेवेगसे सवारों के बड़े भारी  
वेगोंको ऐसेरोका जैसे कि वर्षाकृत्तुमें पूर्णमासीके दिन अत्यन्त उमगेहुए पूर्ण समुद्र  
के जल वेगको समुद्रका किनारा रोकता है इसके पीछे इन रथियों ने गुप्तप्रण्यवाले

nored, trained and skillful in battle, and with millions of horsemen, elephant riders and charioteers checked Nakul, Sahadev and Dharam, raj Yudhishtir the best of men. 10. Prince Duryodha sent a body of a myried horie against the Pandavas who encountered in battle the new coming horsemen, swift as Garur and shaking the earth with their cries. The sounds from the hoofs of horses were heard like the burning of a forest of bamboos on a mountain. With the bounding of horses there arose a storm of dust hiding the sun. The array of the Pandavas was so harrassed by the swift horsemen as a lake is agitated with the fall of a flight of swans. 15. No other sounds were audible above the neighing of horses. Then Nakul and Sahadev checked the great advances of the horsemen as the shore desists the rise of the mighty ocean on the day of the full moon. Then

अथैव ब्रह्मसंहितायाम् । ते निपेतुर्महापात्र निहता बहुभग्विभिः ॥ १९ ॥ मार्गेरिव महा-  
 माया ककावह गिरिगङ्गवरे । तेषां शसैः सुनिश्चितैः शरैः सप्रतपवर्भिः ॥ २० ॥ ब्रह्म-  
 सन्तुष्टमाङ्गानि विश्वरन्तो विशो दृश । अन्यथाहता ह्यवातोहा ऋद्धिर्मरुतवर्ज ॥ २१ ॥  
 अल्पजन्तुसमाङ्गानि फलानीय महादुमाः । सस्ताविनो ह्यपा राजस्तत्र तत्र निर्वृतिः ॥  
 २२ ॥ पतिताः पातयमानाश्च प्रत्यहृद्यन्त सर्वदाः । बध्वमाना ह्यवाधैव प्राङ्मुख-  
 मन्वर्तिताः ॥ २३ ॥ यथा सिंह समास्ताद्य शृगाः प्राणपरायणाः । पाण्डवाश्च महाराज-  
 जित्वा यशस्महाभूधे ॥ २४ ॥ दध्मुः शंखाश्च मेरीच ताडयामासुराहवे । ततो दुष्योधनो  
 हीनो हस्ता सैन्ये पराजितम् ॥ २५ ॥ अग्रवीह भरतमेष्ठ महाराजमिह वधः । य-  
 वजन्तुस्तो भ्रमेष्टो यमाभ्या सहितो रणे ॥ २६ ॥ पश्यतां धी महामाहो सेनां प्राववति  
 प्रजो । तं वारव महाबाहो वेलेष मकरालयम् ॥ २७ ॥ र्वहि संभूय सेत्ययं मल्लवज-  
 वाणां ते घोडों के सवारोंको काटा और इनके काटतेही वह सब मारकर पृथ्वीपर  
 वेले मिरपड़े । १९ । जैसे कि पहाड़ी वन में हाथियों से हाथी गिरपड़ते हैं, फिर  
 इन्होंने दूधों दिशाओं में घूमते हुए अत्यन्त तीक्ष्ण शरों और सुप्त ग्रन्थी वाले बाणों  
 से शिरोंको काटा, और दुधारा सड़गों से मरेदुएयोडों के सवारों ने शिरोंको ऐसे  
 स्वायंकरादिया जैसे कि बड़ाहल फलों को मसग कर देताहै उसपुद्धमें सवारोंसैन्य  
 घोडोंका नाशहोगया फिर घायल घोड़े भयभीत और पीड़ित होकर ऐसे भाने, जैसे  
 कि शार्ङ्गको भियममभनेवालेमृग सिंहकोदेखकर महाग्याकुलता से भागते हैं, हेराजा  
 इसरीतिसे पाँच सौगोने सब शत्रुओं को विजय कर के शंखोंको बजाया और मेरी  
 दुष्योधनको भी बजवाया इसके पीछे राजा दुष्योधन अपनीसेनाको पराजित देखकर  
 २५ । महादुःखीहो राजाप्रदसे कहनेलगा कि हे महाबाहो यहनकुल सद्देव मर्ते  
 पांडुका बहापुत्र राजायुधिष्ठिरपुद्धमें तुम्हारे देखतेहूए हमारी बड़ी सेनाको घायलकर  
 के जगाताहै, उसको तुम ऐसेरोकी जैसे कि समुद्रको किनारा रोकताहै, सदैव आप

the charioteers cut down the horsemen with their arrows having hidden knots and they fell dead on the ground (19) like elephants struck down by elephants in a hill forest. Then wandering in all directions, they cut down the heads with their sharp arrows having hidden knots. The horsemen dropped their heads, cut down by double edged swords as trees drop their flowers. There was a great destruction of horses and their riders in that great battle. The horses, panicked and terrified, scampered away as a herd of deer runs away for life at the sight of a lion. Thus, O king, the Pandavas having conquered the enemies sounded their conchs trumpets and horns. Prince Bhishma, finding his army vanquished, (25) in great distress said to the king of Madra, 'Prince Yudhishtir the eldest son of Pandu, together with Nakul and Sahadev is wounding and putting to flight your armies within your sight; be pleased to check him as the shore does

विक्रमः । पुत्रस्य तव तद्वाक्यं श्रुत्वा शल्य प्रतापवान् ॥ २८ ॥ स ययौ रथध्वजेन यत्र  
 राजा युधिष्ठिरः । तदापतद्दे सहसा शल्यस्य सुमहद्वलयः ॥ २९ ॥ महीधवेन समरे  
 धारयमास पाण्डवः । मद्रराजञ्च समरे धर्मराजो महारथः ॥ ३० ॥ दशभिः सायकैस्तुर्न  
 मात्रघान स्तनान्तरे । नकुलः सहदेवश्च तं सप्तमिरजिह्वगैः ॥ ३१ ॥ मद्रराजोपि तौ  
 सर्वानाजघान त्रिमिश्रिभिः । युधिष्ठिरं पुनः पश्या विस्वाद्य निशितैः शरैः ॥ ३२ ॥  
 माद्रीपुत्रौ च सम्भ्रान्तौ द्रुप्या द्रुप्यामताडयत् । ततो भीमो हावाहूर्द्धा राजा  
 धमाहवे ॥ ३३ ॥ मद्रराजरथं प्राप्ते मृत्यो राख्यगतं यया । अभ्यपद्यत संग्रामे युधिष्ठिर  
 मभिप्रजित् ॥ ३४ ॥ ततो युद्धं महाघोरं प्रायत्तत सुदारुणम् । अपरां दिशमास्थाय  
 पतमाने दिघाकरे ॥ ३५ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि शल्यधर्मराज समांगमे  
 षडधिकशतोऽध्यायः । १०६ ॥

असल और महावली सुनेजातेहो इसप्रापके पुत्र के बचनको सुनकर वह प्रतापवान्  
 शल्य बहुतसे रथोंसमेत वहां गया जहांकि राजायुधिष्ठिरथा वहां जाकर शल्यकी सेना  
 अकस्मात् जाकर गिर, तब महारथी पांडव धर्मराजने उसबड़ी सेनासमेत राजा भद्रके  
 महावेगको रोककर बड़ी शीघ्रतापूर्वक द्रुपयाणों से घायल किया, इसी प्रकार से  
 सातहीसात वाणों से नकुल सहदेवनेभी घायल किया । ३१ । फिर शल्यने भी उन  
 सबको तीन २ वाणोंसे घायल करके बड़े तीक्ष्ण साठवाणों से राजा युधिष्ठिरको  
 घायल किया, और भ्रान्तियुक्तहोकर उन दोना नकुल सहदेवको भी दो २ वाणोंमें  
 व्यथितकिया इसके अनन्तर शत्रुहन्ता महावली भीमसेन राजाको युद्ध में देखकर  
 और कालके सुखमें वर्तमान के समान राजमद्र के आगेहुए रथको देखकर बड़ेबों  
 से उस युद्धमें राजा युधिष्ठिर के पाम जापहुंचा, उस के पीछे पडिचम और में  
 नियतहोकर सूर्य के चलने पर बड़ा घोर भयानक युद्ध जारी हुआ ॥ ३५ ॥

the sea. You are reported to be the most powerful and irresistible." Hearing these words of your son, Shalya of great prowess attacked Yudhishtir with good many chariots. Shalya's army fell on him all of a sudden. Then Dharma, the mighty Pandav checked the king of Madra and his army and wounded him with ten arrows. Nakul and Sahadev wounded him with seven arrows. 31. Shalya then wounded them with three arrows each and Pandu Yudhishtir with sixty. He again in confusion wounded Nakul and Sahadev with two arrows each. Then Bhishma the best of men, seeing the king engaged in fighting and seeing the king of Madra in his chariot coming like one fallen in the jaws of death, went to help Yudhishtir. At this time when the sun was going towards the west, a dreadful fighting began." 35



सञ्जय उवाच । ततः पिता तप कुक्षो निशितः सायकोत्तमः । आनघान रणे  
पापोंद सहस्रान् समन्ततः ॥ १९ ॥ भीमं द्वादशभिर्विष्वा सात्यकिं नवभिः शरैः । नकुलं  
च त्रिभिर्विष्वा सहदेवञ्च सप्तभिः ॥ २० ॥ युधिष्ठिरं द्वादशभिर्बाहुधोरसि चापयत् ।  
धृष्टद्युम्नन्ततो विष्वा ननाद सुमहाबलः ॥ २१ ॥ तं द्वादशाभ्यर्म्कुलो माधवदत्तं त्रिभिः  
शरैः । धृष्टद्युम्नञ्च सप्तया भीमसेनञ्च सप्तभिः ॥ २२ ॥ युधिष्ठिरं द्वादशभिः प्रत्यविध्य  
तपितामहम् । द्रोणस्तु सात्यकिं विष्वा भीमसेनमविध्यत ॥ २३ ॥ एकैकं पञ्चभिर्बाणैः  
यमदण्डोपमैः शितैः । तौ च तं प्रत्यविध्यतां शिमशिमिरजिह्वगैः ॥ २४ ॥ तौ त्रैविद्य  
महानातं द्रोणं प्राक्षणाशुक्रवम् । सौवीर्यः कितवाः प्राच्याः प्रतीच्यादीर्यमालवाः  
॥ २५ ॥ अश्वीपाहाः शूरसेनाः शिवयोधपतामयः । संप्रामे नाजहुर्मौर्षं वधमानाः  
शितैः शरैः ॥ २६ ॥ तथैवाग्रे महीपालानानादेशममागताः । पाण्डवान्प्रपञ्चन्त

अध्याय १०७ ॥

संजय बोले कि आपने पिता भीष्मजीने बड़े कोपमें तीक्ष्णशर के वल्लम बाणों  
से सेना समेत पांडवोंको ऐसे घायल किया कि भीमसेनको बारह बाणों ने सात्यकी  
को नौबाणों से नकुलको तीनबाणों से और सहदेव को सातबाणों से युधिष्ठिरको  
बारहबाणों से भूषा और छत्तीस घायलकर धृष्टद्युम्नको व्यथितकरके बड़ेवेगसे गर्जना  
की फिर नकुलने बारहबाणों से सात्यकीने तीनबाणोंसे धृष्टद्युम्नने सप्तबाणोंसे भीमसेन  
ने सातबाणोंसे । युधिष्ठिरने बारहबाणों से पितामहको घायल किया । फिर द्रोणने  
सात्यकी को और भीमसेनको घायलकरके प्रत्येकको पांच तीक्ष्ण बाणोंसे व्यथित  
किया और दोनोंने तीन २ बाणोंसे उन ब्राह्मणोत्तम द्रोणाचार्य को ऐसाघायल  
किया जैसा कि चावकोसे बड़े हाथीको घायलकरतेहैं सौवीर कितव पूर्वी पश्चिमी और  
उत्तरी मालवी, अश्वीपाह शूरसेन शिवय और वशातयने युद्धमें भीष्मको घायलहोकर  
भी त्याग नहीं किया । ८१ ईश्वरप्रकार नानाप्रकारके शस्त्रोंको हाथमें रखनेवाले अनेक

## CHAPTER CVII

Sanjaya said:—“Your father Bhishma in the excess of anger with very sharp arrows wounded the Pandavas and their armies. He wounded Bhim-sen with nine arrows, Satyaki with nine, Nakul with three and Sahadev with seven, and having wounded Yudhishtir with twelve arrows on the breast and arms he pierced Dhrishtadyumna and roared a loud roar. Then Nakul wounded him with twelve arrows (4) Satyaki with three, Dhrishtadyumna with seventy, Bhim-sen with seven and Yudhishtir with twelve. Drona wounded Satyaki and Bhim-sen with five arrows each, while the latter wounded that best of Brahmans with three arrows each, as a large elephant is wounded with goads. The Sauters, the Kitiyas and the Eastern, Western and Northern Malavis did not desert Bhishma. 8. In the same manner, armed with different sorts of weapons, the princes of

विदिषामुपपाणय ॥ ९ ॥ तथैव पाण्डवापराजन् परिव्रज. पितामहम् । स समस्ताद  
परि हृतो रथौघैरपराजितः ॥ १० ॥ गहनेनिरिवोदसृष्टः प्रज्ज्वाल दहति वटाहः ।  
रघाम्बमारुह्यापाधिरेतिसिक्तगवेन्द्वनः ॥ ११ ॥ शरस्फुल्लिहो भीष्मानिर्बन्धाह  
त्रियर्धमाह । सुपर्णपुंघोरिधूमिगोभेषहै सुवेज्जने ॥ १२ ॥ कर्णिनालीकनाराचेष्टका  
यामास तहलम् । अपातपट्वजोघै रथिनश्च शितै शारे ॥ १३ ॥ सुण्डताडवना  
नीव अकार स रथप्रजान् । निर्मनुष्यान् रथान् राजन् गजानश्चांश्च संयुगे ॥ १४ ॥  
भक्तोद स मदाबाहुः सर्वशस्त्रतोवरः । तस्य ज्यातलनिर्घोषं विस्फुरितमिवाशने  
॥ १५ ॥ निशङ्ग्य सर्वसूतानि क्षमकम्पन्तः कारतः । अमोघाह्वयतन् बाणा पिप्पुलेभरत  
वैभ ॥ १६ ॥ नासञ्जगत् तनुत्रेषु भीष्मचापव्युता शराः । हतवीरान् रथान्दराजन्  
संयुक्ताह ज्वनैर्हेयैः ॥ १७ ॥ अपदयाम महाराज ह्रियमाणान् रणाजिरे । वैदिकाशि  
करुणाणा सहस्राणि चतुर्दश ॥ १८ ॥ महारथा समाप्याता कुलपुत्रास्तन्मुखजः ।

देखोसि घाये हुए दूसरे राजासोम पाण्डवों के सम्मुख वर्तमानहुए, इस रीतिसे  
पाण्डवोंने चारोंओर से पितामहको घेरलिया फिर अनेकरथोंसे घिरेहुए उन अनेक  
शत्रुओंके वनोंको आगिनके समानजलानेवाले पितामहने बड़े २ शूरवीर क्षत्रियोंको  
भस्म कर दिया, और गृध्रपल्ल युक्त सुन्दर सुनहरी पुंखवाले अनेक प्रकारके नाराच  
नाम बाणोंसे उससेनाकोभी ढककर बड़े असिधारवाले बाणोंसे रथियोंके समूहों को  
गिराया ॥ ११ ॥ और रथोंके समूहों को भी सुण्ड तालवनों के समान, करुण्डिया फिर  
उत्त महाबाहु ने रथ हाथी घोड़ों को भी सबारों से रहित करदिया उसके अनुबकी  
मरपचाका शब्द इन्द्र वज्रके समान शब्दायमानया उसके सुनेनेसे सब जीवमात्र  
कम्पायमानहोतेथे और हे राजा उन आपके पितामह के बाहु निष्फल नहीं गिरते  
थे, हमने शीघ्रगामी घोड़ोंको मृतक शूर वीरवाले रथों को और खेंदरी काशी और  
क्रोश देशियों के चौदहहजार मशरफी शूरवीर कुलीन युद्ध में देखके त्यागनेवालों

various lands faced the Pandavas The Pandavas surrounded the  
grandfather from all sides Surrounded by innumerable chariots the  
invincible grandfather destroyer of foes burnt down the hosts of  
warriors as fire does forests Having covered the large army with  
his beautiful gold feathered arrows of vulture quills and long shafted  
ones he cut down the charioteers with his sharp edged arrows 13  
He made the chariots like a forest of headless palms. Then that great  
warrior made the elephants, horses and chariots riderless The  
sound of his bowstring rang like that of vajra and shool all the hearers  
with terror The arrows of the grandfather did not fall in vain  
We saw the chariots drawn by swift horses destitute of riders Four  
teen thousands of the warriors of Chandri, Kashi and Krosh, of good  
families and ready to die, turned back, and thousands of warriors with

अपराधितः सर्वे सुवर्णैश्च त्र्यम्बजाः ॥ १९ ॥ संग्रामे भीष्ममासाद्य व्याधिताश्चमि-  
 चास्तकम् । निमग्नाः परलोकाय सवाजिरथकुञ्जराः ॥ २० ॥ अग्नाक्षोपस्कपाद् कांशि  
 ज्मन्त्रकाश्च भारत । अपश्याम महाराज शतशोथ सहस्रशः ॥ २१ ॥ सबन्धुरयेभ्यो  
 श्वैरथभिश्च निपातितैः । शरैः सुकवचैर्दिव्यैः परिशुद्धैश्च मिश्राभ्यते ॥ २२ ॥ गदामि-  
 भिर्मृगिण्यैश्च निशितैश्च शिखीमुखैः । मनुकैर्दयासाहस्यैर्भयैर्भयैश्च मरित्व ॥ २३ ॥ बाहु-  
 मिः कार्मुकैः खड्गैः शिरोभिश्च सकुण्डलैः । तलत्रैर्दशुलित्रैश्च ध्वजैश्च विनिपातितैः  
 ॥ २४ ॥ क्षीपैश्च बहुधाच्छिन्नैः समाक्षीय्येत मेघिनी । हतारोहा गजा राजान् हयाश्च  
 हयसाधिनः ॥ २५ ॥ न्यपतन्त गतप्राणाः शतशोथ सहस्रशः । यतमानापि ते वीरा  
 द्रवमाणान् महारथान् ॥ २६ ॥ नाशकनुषान् चारयितुं भीष्मबाणमपीडितान् । भवेन्म  
 समवीर्येण बध्यमाना महाबलम् ॥ २७ ॥ अमज्जयत महाराज न च ह्यी सह धावतः ।  
 आविष्टारयनागादश्च पतितैश्च जसंकुलम् ॥ २८ ॥ अनीकं पाण्डुपुत्राणां द्वाहाभूतमचेतनम् ।  
 जघानात्र पिता पुत्रं पुत्रश्च पितरौ तथा ॥ २९ ॥ प्रियं सलायञ्चाक्रम्ये सखा देवदत्ता-  
 त् कृतः । विमुक्त कथयानन्ये पाण्डुपुत्रस्य सैनिकाः ॥ ३० ॥ प्रकीर्त्ये केद्यान् धावन्तः  
 मृत्युरस्यन्त सर्वशः । तद्गोकुलमिषोद्व्रान्त सुव्रान्तरथकूबरम् ॥ ३१ ॥ इहो  
 पाण्डुपुत्रस्य सैन्यमात्सेवरं तदा । अमज्जयमानं सैन्यन्तु दृष्ट्वा यादवमन्दनः ॥ ३२ ॥  
 उवाच पार्थ भीमस्तु निवृत्त रथमुत्तमम् । अयं स कालः सम्प्राप्तः पार्थ यः कश्चित्सक-  
 ल ॥ ३३ ॥ महारात्मिन्नरण्याम् नचेन्नोहाद्विमुक्तसं । यत् पुराकथितं वीरै र्यत्

को मुखकेरनेवालदेखा और हजारों वीरोंको मुनहरी ध्वजायुक्त शीपरथ मोड़ों  
 समेत भीष्मजी के हाथसे मरे हुए परलोक के निमित्त देखा । २० । इनके सिवाय  
 हजारों रथोंको ऐसा देखा कि जिनके पहिये आदि अनेक रथों के अंगदृगबेये,  
 और कवचों समेत गिराये हुए रथोंमेत सवार जिन के कि बाण कवचें टूटेहुये थे  
 उनको भी देखा इस युद्ध में पिताने पुत्रको पुत्र ने पिता को भी मार डाला, और  
 भारव्धके बलसे प्रेरित मित्रने प्रिय मित्रको भी मारा फिर पाँदवोंकी दूसरीसेनाके  
 मनुष्य कवचको उतार धिक्के बालोंको फैलाते हुए सबभौरको हृष्टपंडे तब पाण्डवों  
 की गौर्वा के समान घृण्य चलायमान सेनाको रथकूबरके समान पीडायमान देखकर  
 भीष्मज्मजी रथको रोककर अर्जुन से बोले कि हे अर्जुन यह वह समय वर्धमान  
 इमारे जो तेरा अभीष्ट है । ३३ । हेनरोक्षम जो तू मोहसे अज्ञान नहीं है तो अब मरार

golden banners, mounted on elephants, chariots and horses, were slain by Bhishma. 20. Besides these, thousands of chariots were to be seen destitute of chariots, arrows and armour. Fathers and sons slew each other in the fury of the battle. Friends actuated by Fate, slew their friends. Another army of the Pandavas, destitute of armour, were seen running in confusion with dishevelled hair. Seeing the army of the Pandavas dispersed like a herd of cows and distressed like yoke-encumbered beasts, Shree Krishna checking the reins of the chariot horses said to Arjun:- " This is the time which you longed for. 33.

तथा समा म ॥ ३४ ॥ विराटनगरे तातसञ्जयस्य समीपत । भीष्मद्रोणमुक्तां  
 सर्वांश्च धार्तराष्ट्रस्य सौकेयान् ॥ ३५ ॥ सांमुख्यान् हनिष्यामि ये मां योतस्यन्ति  
 संगं । इति तत् कुरु वीर्यस्य सत्यवाक्यमस्मिन् ॥ ३६ ॥ ह्यवधर्ममनुरमृत्युं युष्यं  
 विगतञ्जर । इत्युक्ता वासुदेवेन तिर्य्यगृष्टद्विघोमुखा ॥ ३७ ॥ आकाम इव यीमत्सु  
 रित् वचनमप्रवीत् । अथ घ्यानां वधं कृत्वा राज्यं या नरकोत्तरम् ॥ ३८ ॥ दुःखानि  
 घनघासे या किं नु मे सुदृढमवेत् । चोदयाद्वा न यतोभीष्म करिष्ये दक्षनतः ॥ ३९ ॥  
 पातयिष्यामि युधयं भीष्मं कुरुपतामहम् । स चाश्वान् रजतप्रस्थाश्चोदयामास  
 माधव ॥ ४० ॥ यतोभीष्मस्ततो राजन् दुष्प्रेक्ष्यो रश्मिधानिव । ततरत्त पुनरावृत्त  
 युधिष्ठिर चल महत् ॥ ४१ ॥ दृष्ट्वा पाय महापातु भीष्मायोद्यतमाह्वये । ततो भीष्म  
 कर्णेहीर भाई अर्जुन पूर्व समय में विराट् नगरके मध्यमें उन राजाओं के मिलने में जो  
 तुम्हें सैन्य के सम्मुख कहाया कि मैं युयुधेन की सब सेनासमेत उन भीष्म  
 द्रोणाचार्यको सब साथियों समेत माइंगा जो मुझसे लड़ेंगे, हे शत्रुओंके विनाश  
 करनेवाले अर्जुन तू अपने उस वचनको सत्यकर, क्षत्रीधर्म को स्मरण करके दुःख  
 को दूरकरके युद्धकर इसप्रकार वासुदेवजी के वचनों को सुनकर अर्जुन बहुत नम्र  
 और अधोमुखहोकर निष्पृहके समान यह वचन बोला कि अवश्यवृद्ध गुरु लोगों  
 को मारकर अन्त में नरकका देने वाला राज्यहो वा वनवास में दुःखहो अथवा  
 अन्य मेरा कोईसा प्रयोजन सिद्धहो आपघोड़ोंको तीव्रकरके जहां भीष्म हैं वहां  
 रथको लेवलिये मैं आपके वचनको करूंगा, वहां कौरवों के दुर्जय पितामह भीष्म  
 भी को गिराऊंगा यह सुनतेही माधवजीने चांदी के समान श्वेत घोड़ोंको अच्छे  
 प्रकारसे चलायमान किया । ४० । और जिस ओर को सूर्य के समान दुःख से  
 देखने के योग्य बड़े प्रतापवान् भीष्मजी थे वहां पहुँचे उसके पीछे युधिष्ठिरकी वह  
 बड़ी सेना भी जो उस युद्ध में भीष्म के लिये तैयारथी अर्जुन को देखकर फिर

Use your weapon, best of men, if you are not out of your mind! Do  
 you remember, brave Arjun, what you formerly said to Sanjaya at  
 Virat in the midst of kings? You said that you would slay the  
 armies of Duryodhan together with Bhishm, Drona, Ajna and others  
 who should come against you in battle. Fulfil your promise, Arjun  
 the destroyer of foes! Recall the duties of Kshatriyas and fight with-  
 out hesitation! Hearing the words of Vasudev, Arjun with his head  
 downcast for bashfulness, said, "Whether the slaughter of old and  
 respectable men lead me to the kingdom of hell, or to pangs of exile,  
 turn the horses of my chariot to the place where Bhishm is; I shall  
 obey your orders and shall slay in battle the invincible grandfather  
 of the Kuruvans." At this Madhav drove swiftly the horses white as  
 silver (10) till they reached the place where glorious Bhishm, difficult  
 to be got at like the sun, was stationed. Then the great army of

कुक्षेत्रे सिंहयस्त्रिनदमुह ॥ ४२ ॥ धनुर्धरपरं शीघ्रं शरवैरपाविरत् । क्षणं स  
 रयस्तस्य सहय सहसारथि ॥ ४३ ॥ शरवर्षेण महता न प्राप्तायत भारत । वासुदेवस्तु  
 सम्भ्रान्तो धैर्यमास्थाय सत्यम् ॥ ४४ ॥ चोदयामास तानश्वान् विनुन्नान् भीष्मसाय  
 के । ततः पाथो धनुर्गृह्य दिव्य जलदनि स्वनम् ॥ ४५ ॥ पातयामास भीष्मस्य धनु  
 र्छित्वा शिरो शरैः । सच्छिन्नधन्वा कौरव्य पुनरन्यन्महदनु ॥ ४६ ॥ निशेपान्तर  
 मात्रेण मज्य चक्रे पिता तप । चकार्यचततोदोर्ध्वा धनुर्जलदनि स्वनम् ॥ ४७ ॥ अथा  
 स्य तदापि कुदाश्चिच्छ धनुर्जुगम् । तस्य तत् पूजयामास लाघव शान्तना सुत ॥ ४८ ॥  
 गानेयस्त्व प्रवीणार्थं धीम्वि श्रेष्ठ मरिदम् । साधुसाधु महाबाहो साधु कुन्तीमतेति  
 च ॥ ४९ ॥ समाभाष्यैवमपर प्रयुक्तं च विर धनु । भुमोच समर भीष्म शरान् पार्थ  
 स्य प्रति ॥ ५० ॥ अदशोपद्रासुदेवो हययाने परं यत्नम् । मोघान् कुर्वन् शरालस्य

लौकिकार्थं तदनन्तर भिष्मके समान बारम्बार गर्भना करते कौरवों में श्रेष्ठ भीष्मजी  
 ने अपने बाणोंकी वर्षासेशीघ्रही अर्जुनके रथको ढका दिया तब क्षणभरमेंही उसका  
 घोड़े और सारथी सवेत रथ, भीष्मके बाणों की वर्षा से दिखाई नहीं दिया इसके  
 अनन्तर भ्रान्तीमें भरोइए शीघ्रता करनेवासे वासुदेवजीने धैर्यता में नियतहोकर  
 वनघोड़ोंकी जो कि भीष्मके बाणों से व्यथितथे सत्यन्त तीव्र किया और  
 अर्जुन जे बादल के समानदिग्मधनुष को लेकर अपने तीक्ष्णबाणों से भीष्मजी के  
 धनुष को काटकर पृथ्वीपर गिराया फिर धनुष टूटैइए आपके पिता ने निमिषमात्र  
 मेंही दूसरे धनुषको तैयार किया और उस बादल के समान शब्दायमान धनुषको  
 अपनी दोनों भुजाओं से खेंचो,, फिर अर्जुन ने उन के उस धनुषको भी काटा  
 शान्तनु के पुत्र भीष्म ने उसकी उस हस्तछायवता की बड़ी मशक्ता करी कि हे  
 महाबाहु कुन्ती के पुत्र बहुत अच्छा बहुत अच्छा इस प्रकार की वार्त्ता करके दूसरे  
 उत्तम धनुष को लेकर बाणों को अर्जुन के रथपर फेंका वहां वासुदेव जीने घोड़ों  
 के चलाने में अपने बड़े वनको दिखाया । ५० । फिर भीष्म के बाणों ने घायल

of Yudhishtir, ready for the encounter of Bhishm, came back at the  
 sight of Arjun. Then roaring like a lion, Bhishm the best of the  
 Kaaravas, hid Arjun's chariot with the shower of his arrows. The  
 chariot together with the horses and driver was quite out of sight  
 by the shower of Bhishma's arrows. Vasudev who was confused for  
 a short time with the fury of the onslaught, recollected himself and  
 drove swiftly the horses which were wounded by Bhishma's arrows.  
 Arjun took up his divine bow like a cloud and with his sharp arrows  
 cut down the bow of Bhishm. The latter soon prepared another bow  
 and drew it with both arms with a sound like thunder. Arjun cut  
 down this second bow also. Bhishm praised the dexterity of Arjun's  
 hand, saying 'Good, brave son of Kunti, good.' Thus saying he  
 prepared another bow and discharged arrows at the chariot of Arjun.

महलानि निदर्शयत् ॥ ५१ ॥ शुशुमाते नरन्यायौ तौ भीष्मद्वारचिह्नतौ । गोवृषाविष  
संरन्धौ विषाणोत्थिभित्ताकितौ ॥ ५२ ॥ वासुदेवस्तु सम्येव पापस्य मृदुयुक्तताम् ।  
भीष्मश्च शरवर्षाणि वृजस्तमनिश युधि ॥ ५३ ॥ प्रपपन्तमिवादित्यं सप्यमासाद्य  
सेनयोः । वरान् वरान् विनिघ्नन्तं पाण्डुपुत्रस्य सैनिकान् ॥ ५४ ॥ युगान्तमिव कुर्वाणं  
सीम्न भीमिद्विर वले । मासृष्यत महाबाहुर्माधवः परदारहा ॥ ५५ ॥ उत्सृज्य रजत  
प्रस्त्रान् हयान् पापस्य भारिव । वासुदेवस्ततोयोगी प्रबस्कन्द महारथात् ॥ ५६ ॥  
जमिदुद्राव भीष्मं स मुजग्रहरणोयली । प्रतोदपाणिलेजस्वी सिंहघट्टिनदम्मुहुः ॥ ५७ ॥  
वारपणिव पेङ्गर्षो स जगतीं जगदीश्वर । क्रोधताम्रेक्षणः कृष्णो जिघांसुरमितप्रातिः  
॥ ५८ ॥ प्रसन्त इव चेतांसि तावकानां महाहवे । दृष्ट्वा माधवमाक्रन्दे भीष्मायोद्यत

वर दोनों नरोत्तम उनके बाणों को निष्फल करते मंदलोंको दिखाते हुए ऐसे  
होमायमान हुए, जैसे कि सींगों के महारोंसे छिन्नभिन्न चिह्नित किये हुए वृषभ  
होते हैं, फिर वासुदेव जीने अर्जुन के मृदु युद्धको और पांडवों की सेनापर बड़ी  
तीव्रता से बाणों की वर्षा करते और दोनों सेनाओं के मध्यवर्ती सूर्य के  
समान तपाते और पांडवों के बड़े २ शूरवीरों को मारतेहुए युधिष्ठिर की सेना  
में मलय मचाते भीष्मको देखकर, समा न करने वाले शत्रुहृता माधव वासुदेव  
जी अर्जुन के श्वेत घोड़ों को छोड़कर बड़े रथसे उतर हाथ में चाक्र लिये  
सिंह के समान बारंबार गर्भते चरणों से पृथ्वी को विदर्शित करते क्रोध से रक्तनेत्र  
किये मारने के उत्सुक आपके शूरवीरों को भयभीत करते बड़े तेजस्वी जगत्कर्ता  
बड़े वेगसे भीष्मके सम्मुख गये । ५७ । हेराजा भीष्मजी के सम्मुख वर्तमान  
माधवजी को देखकर उस युद्ध में जहां तहां भयभीत लोग देखी २ वार्त्ता करने  
लगे कि भीष्म मारागया मारागया पीताम्बरधारी नीलमणि के समान, रंगवाले

Then Vasudev showed his skill in driving the horses. 50. Wounded by  
the arrows of Bhishm, the two best of men made his arrows futile,  
and performing circular movements they looked beautiful like strong  
oxen wounded by horns. Vasudev noticed the mild fighting of Arjun  
as well as the fast shower of arrows over the Pandav armies sent forth  
by Bhishm who standing in the midst of the two armies diffused heat  
like the sun, slaying the great warrior of the Pandavas and spreading  
destruction through the armies of Yudhishtir. At this the unfor-  
giving destroyer of enemies, Madhav gave up the reins of Arjun's  
white horses and alighting from the huge chariot whip in hand  
rushed towards Bhishm. Roaring like a lion, breaking the earth un-  
der his feet, with eyes red in anger wishing to slay and terrifying your  
warriors, glorious creator of the world faced Bhishm. 57. Seeing  
Madhav face to face with Bhishm, the terrified people in the field of  
battle cried out, "Bhishm is slain, Bhishm is slain." Running

मतिके ॥ १९ ॥ हतो भीष्मो हतो भीष्मस्तत्र तत्र यचो महत् । अश्रयत महाराज  
वासुदेवमया सदा ॥ २० ॥ पीतकौशेयनसंगीतो गणिद्यामो जनार्दन । शुभ्रमे चित्रवन्  
भीष्म विभुमालीपया पुद्ग ॥ २१ ॥ ससिंह इव मातङ्ग ययर्षमर्षमम् । अमिदुदाय  
चेगेन पुनन्द यादवर्षमम् ॥ २२ ॥ तमापतन्त सस्त्रेभ्य पुण्डरीकाक्षमाहवे । ससम्भ्रम  
रूपे भीष्मो विचर्ष महद्गु ॥ २३ ॥ उवाच चैव गोविन्दमसम्भ्रान्तेन चेतसा ।  
पहोहि पुण्डरीकाक्ष देवदेव नमास्तुते ॥ २४ ॥ मामद्य सात्वतश्रेष्ठ पानयस्व महाहवे ।  
त्वंया हि देव सशमं हतस्यापि ममानत्र ॥ २५ ॥ श्रेय एव पर वृष्णलोके भयति  
मयतः । सम्भावितोस्मि गोविन्द । लोन्थे नायसयुगे ॥ २६ ॥ प्रहरस्व यथेष्टं व वासो  
स्मि तव चानय । अन्यगेव तव पार्थ समभिद्रुय केशधम ॥ २७ ॥ निजग्राह  
महाबाहुर्बाहुभ्या परिगृह्य । निगृह्यमाण पार्थेन कृष्णो राजीय लोचन ॥ २८ ॥ ज

जनार्दनभी भीष्मकी ओर दौड़ने हुए ऐसे गोभायमान हुए जैसे कि विद्युतरपमाला  
धारी रातल होता है और जैसे कि समूहका स्वामी सिंह उत्तमहाथी की ओर दौ-  
ड़ता है उसी प्रकार यादवोंमें श्रेष्ठ श्रीकृष्णजी गर्जना करते तीव्रतासे भीष्मके सम्मुख  
गये, युद्धमें आतेहुएउन कमलल्लोचन को देखकरभीष्मने सावधान चित्त होकर बड़े  
धनुषको खिंचकर । २९ । बड़ी स्थिरचित्ततासे उनको दाध जोड़कर कहा है पुण्डरीकाक्षजी  
आपआइये हे देवदेव आपको नमस्कार है हे यादवदेव अब मुझको आपदम महायुद्ध  
में गिराओ, हे निष्पाप श्रीकृष्णजी युद्धमें आपके हाथमें मुझमारहुए वाभी तब  
ओरमें बड़ा कल्याण होता है, हे गोविन्दजी अदम्य युद्ध में तीनों लोक से प्रतिष्ठा  
पाया गया हूँ । २५ । हे निष्पाप मैं आपका निरस्त-देह दामह अथ इच्छाके समान  
महार करी, इसके अनन्तर पीछे २ जाने वाले अर्जुन ने केशवजी के पासनाकर  
अपनी दोनों भुजोंमें उन महाबाहुको ढावकर पकड़ लिया, अर्जुन ने  
पकड़े हुए कमल लोचन पुष्पोत्तम श्रीकृष्णजी इसको लेकर बड़ी गीमता ने

towards Bhishma, Janardan in his yellow clothes looked glorious like  
a cloud garlanded with lightning Shree Krishn the best of the  
Yadavas rushed upon Bhishma with loud roars as the king of beasts, lion  
rushes upon a huge elephant Spring the lotus eyed one coming  
towards him, Bhishma carefully drew up his bow (62) and with a  
composed mind thus addressed him with joined palms, 'Welcome  
Pundarikash ! I bow to you god of gods ! Kill me, the field of  
battle best of Yadavas ! killed by you, unless Shree Krishn, I shall  
attain great glory. I am respected by the three worlds, Govind ! 63.  
I am surely your slave, unless one Discharge your weapon as you  
like ' Arjun who followed the footsteps of Krishn, approached in  
the meanwhile and caught him in both his arms Held fast by  
Arjun, the lotus eyed Krishn, best of male beings rushed along with

गामे येनमादाय येमेन पुरुषोत्तमः । पार्थस्तु विष्टम् घलावरणौ परवीरहा ॥ ६९ ॥  
 निजप्राह हृषीकेश कथं चिदशमे पदे । ततएवमुवाचार्यः क्रोधपर्या कलेक्षणम् ७०  
 निःश्वसन्तं यथा नागमर्जुनः प्रणयात्सखा । निवर्त्तस्व महाबाहो नानृतं कर्तुमर्हसि ७१ ॥  
 यत्त्वया कथितं पूर्वं न योत्स्यामीति केशव । मिथ्यावादीति लोकास्त्वां कथं विप्यसि  
 माधव ॥ ७२ ॥ ममैव भारः सर्वो हि हनिष्यामि पितामहम् । शपे केशव शस्त्रेण सत्येन  
 सुकृतेन च ॥ ७३ ॥ अन्तं यथा गमिष्यामि शत्रूणां शत्रुसदनम् । मदैव पश्य दुर्धर्षं  
 पात्यमानं महारथम् ॥ ७४ ॥ तागपतिमिवापूषमन्तकाले यदृच्छया । माधवस्तु बभूव  
 श्रुत्वा फाल्गुनस्य महात्मनः ॥ ७५ ॥ अकिञ्चिदुक्त्वा सक्रोध आहरोह रथं पुनः । तौ  
 रथस्थौ नरस्याघौ भीष्मः शान्तनवः पुनः ॥ ७६ ॥ यवर्ष शरवर्षेण मेघो वृष्ट्या यथा-  
 चली । प्राणानादत्त पोषानां पिता देवव्रतस्तथ ॥ ७७ ॥ गमामिभिरिवा दित्यस्तेजां

चले, फिर शत्रुओं के वीरों के मारने वाले अर्जुन ने बड़े बलसे किसी प्रकार  
 करके दशवैदी चरण पर दोनों चरणों को पकड़ लिया, तदनन्तर पीड़ामान  
 सखा अर्जुन उन क्रोधसे व्याकुल सर्पके समान श्वाभलेने वाले श्रीकृष्ण जैसे  
 यह वचन बोला । ७० । हे महाबाहु कीकृष्णजी आपलौटिये और अपने उस  
 वचनको और सत्यको न छोड़िये जो आपने कहाथा कि हमनहीं होंगे क्योंकि हे माधव  
 जो तुम ऐसा करोगे तो संसार आपको मिथ्यावादी कहेगा यह सब काम मेरा है  
 मैं पितामह को मारूंगा, हे केशव मैं शस्त्र सत्यता और अपने उत्तम कर्मकी  
 शपथ लाता हूँ कि मैं शत्रुओं को मारकर जीतूंगा आप इसी समय इस महाव्रज्य  
 भीष्मको गिराहुआ ऐसे देखोगे जैसे कि युग के अन्त प्रलय में देवइच्छा से चन्द्रमा  
 गिरता है यह सुनकर क्रोधभरे माधवजी अर्जुनसे कुछ न बोलकर रथपर सवार हुए  
 । ७१ । फिर शान्तनुके पुत्र भीष्मने उन दोनों रथपर सवार नरोत्तमों पर ऐसे बाणों  
 की वर्षाकरी जैसे कि पर्वत पर बादल जलको बरसाते हैं, उन आपके पिता

him in great haste. Then Arjun the destroyer of the warriors  
 of the enemies somehow caught with great force both his feet  
 at the tenth pace. Arjun in great distress thus addressed his  
 enraged friend Shree Krishna who much agitated with anger breathed  
 hard like a serpent 70. "Turn back, mighty Shree Krishna," said  
 Arjun, "do not break your promise of remaining neutral. The  
 world will call you a liar, if you will fight. It is my duty to slay  
 the grandfather. I swear, O Keshav, by my arms, truth and duty  
 that I shall slay and win the enemies. You will see the invincible  
 Bhishma fallen like the moon at the end of the yug." Having heard  
 this, enraged Madhav returned no reply to Arjun and mounted on  
 the chariot. 71. Then Bhishma the son of Shantanu went forth on the  
 two best of men his shower of arrows as a cloud sends forth rain on a



सि शिशिरान्तये । यथा कुरूणां सैन्यानि यमञ्जु युधि पाण्डवा ॥ ५८ ॥ तथा  
पाण्डवसैन्यानि यमञ्जु युधि ते पिता । हन विदुस्तस्यैवाञ्जु निदमन्तहा विचिंतस  
॥ ७१ ॥ मर्त्यं गतमिवादिदं प्रतपन्त स्थतेजसा । तं यथ्यमाणा भीष्मेण शतशोऽथ  
सहस्रेश ॥ ८० ॥ निरीक्षितुं न शक्नुते भीष्ममप्राप्तम र्थे । कुर्वाण समरे कर्माण्य  
तिमानुषविक्रमय ॥ ८१ ॥ द्रोणाञ्चक्रु महाराज पाण्डवा मयपीडिता । तथा  
पाण्डवसैन्यानि द्राव्यमाणा निभारतः । ८२ ॥ आतार नाप्यगच्छन्त माध. पंकगता इव ।  
विपीडिता इयधुष्णा युधला बलिना रणे ॥ ८३ ॥ महारथं भारत दुष्प्रकम्प शरोधिण  
प्रतपन्त नरेन्द्रान् । भीष्म न शक्नु प्रतिशोभितुंते शराधिपं सूर्यमिवातप तम् ॥ ८४ ॥  
विमृशन्तस्तस्यनु पाण्डुसेनामस्तं जगामाथ सहस्ररश्मि । ततो बलानां भ्रमकाशो  
ताता मनोऽबहारे प्रतिमन्वभूष ॥ ८५ ॥

इति भी महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि नवमादिवमपुद्गमभाषो

सप्ताधिकशतोऽध्यायः ॥ १०७ ॥

देवदत्त ने शूरवीर लोगों के माणों को ऐसे लिया जैसे कि शिशिर ऋतु में सूर्य  
तेजों को आकर्षण करता है, और जैसे कि पाण्डवों ने कौरवों की सेना को  
छिन्नभिन्न किया उसी प्रकार आप के पिता ने भी पांडवों की सेना को अशुभ्य  
हकर दिया, मृतक और घागे हुए असाहसी व अचेत पांडवों की सेना युद्ध में आदि-  
तीय भीष्मके देखने को भी ऐसे समर्थ नहीं हुई जैसे कि मध्याह्नवर्ती अपने तेजसे  
तपाने वाले सूर्यको नहीं देखसक्ते । ८० । हेमहाराज भयमे युःली हुए पांडवोंने  
दृष्टिकी बीजाकरी हे भरतवंशी हम प्रकार से भागी हुई पांडवों की सेना ने ऐसे  
अनारक्षक कोई नहीं पाया जैसे कि कीचमें फंसी हुई गौका कोई रत्नक नहीं हो-  
ता है और युद्ध में वह निर्वस सेना बड़े बड़ीके हाथसे बैदियों के समान घायल  
हुई । ८१ । उन महारथी दुर्जय बाणरूपी किरणरत्ननेवाने राजाओं के तपानेवाले  
सूर्य की समान भीष्म के देखने को कोई समर्थ नहीं हुआ फिर सूर्य अस्तावस  
को प्राप्त हुए तदनन्तर परिश्रम से यकी हुई सेनाओं के मनका विश्राम हुआ अर्थात्  
युद्ध समाप्त हुआ ॥ ८५ ॥

mountain Your father Devabrat took away the lives of men as the  
sun in Winter draws away light. Your father destroyed the armies  
of the Pandavas as the latter had done with the Kauravas. Dead  
and flying, terrified and insensible, the Pandav army was unable to  
gaze at Bhishma the matchless warrior like the sun at midday. 80  
The terrified Pandavas looked on at the great destruction. The  
dispersed army of the Pandavas found no protector like a cow stuck  
in mud. That great and invincible charioteer, having arrows  
for his rays was not looked at like the sun by any warrior. Then  
the sun set down and the armies retired for the night. 84

सञ्जय उवाच । युधातामेव तेषाम्भु भास्करेऽस्तमयागत । सन्त्यगं समभवद्दे-  
 रा न पश्याम तनो रणम् ॥ १ ॥ ततो युधिष्ठिर राजा सन्ध्यां स हृदय भारत ।  
 यद्यप्यतश्च भीष्मेण त्यक्तास्त्र भयविह्वलम् ॥ २ ॥ स्वसैन्यञ्च परावृत्त पला-  
 यनपरायणम् । माभ्यश्च युधि सरथ्य पीडय तमहारथम् ॥ ३ ॥ सामकाश-  
 जितान् दृष्ट्वा निरुत्साहान् महारथम् । चिन्तयित्वा ततो राजाभयहारमराचयत् ॥ ४ ॥  
 ततोऽवहार यथा चक्रे राजा युधिष्ठिर । तथैव सव सैन्यानामवहारा-  
 म्भूतम् ॥ ५ ॥ ततोऽवहार सैन्यानां कृत्वा तत्र महारथा । ययिषात कुरुक्षेत्र-  
 सभामक्षेत्रविस्तृतम् ॥ ६ ॥ भीष्मस्य समरे कर्म चिन्तयानास्तु पाण्डवा । माल-  
 भन्त तदा शान्तिभीष्मपाणप्रपीडिता ॥ ७ ॥ भीष्मोपि समरजिता पाण्डवान्  
 सदृशञ्जयात् । पृथमानस्तव सुतेर्धर्ममानस्य भारत ॥ ८ ॥ न्यविशत् कुरासि-

अथ ॥ १०८ ॥

दशवैदिनके युद्धका भारम्भ ।

सजयबोले कि युद्ध करते हुए सूर्य के अस्त होने के समय भयकारी संध्या  
 वर्त्तमान हुई और युद्ध करना मग्य और ते उन्ह हुआ, इसके पीछे राजा युधिष्ठिर  
 ने स पाको देवकर और भीष्म के हाथ से घायल शस्त्रत्यागने वाली भयसे  
 महाव्याकुल व शत्रुओं से घिरी भागने की इच्छा करने वाली अपनी सेना को  
 जान और युद्ध में क्रोधित पीडादेनेवाले महारथी भीष्म को देख सोमकों को सह  
 सहित पराजय रूप जानकर बड़ीचिन्नापूर्वक विश्रामको चाह इस प्रकार आपकी  
 मेनाका विश्रम हुआ हे कौरवोत्तम घृतराष्ट्र फिर युद्ध में घायल शरीरवाले महा-  
 रथी वैश सेनाओंका विश्रामकरके स्थिर हुए । ६ । और युद्धमें भीष्मकेकर्म को शीघ्रसे  
 उन के बाणों से अत्यन्त पीडाग्रान पाडवों ने शान्ती को नहीं पाया और चिन्ता  
 से व्याकुल रह रहे फिरभीष्मभी पाडवों समेत सृजियोंको विजयकरके आपके पुत्रों से

### CHAPTER CVIII

The tenth day Sanjaya said After the battle at sunset the scene  
 in the evening was dreadful and the battle stopped in all quarters.  
 Seeing in the evening his army wounded by Bhishm, lying along  
 and much distressed with terror surrounded by enemies and  
 ready to flight seeing as well the high-handedness and rage  
 of Bhishm and finding the Souras prostrate and almost van-  
 quished Prince Yudhishtira with a feeling of depression gave  
 orders of retreat to his army In the same manner your armies too  
 went to take rest Then the wounded warriors took rest. Thinking  
 of Bhishm's work and much wounded by his arrows the Pandavas  
 could find no rest and peace of mind Bhishm too having conquered  
 the Panjavas and the Sanjyas, returned to the camping ground  
 much honoured and praised by his sons and surrounded by the

सार्धं दृष्टरूपैः समन्ततः । ततो रात्रिः समभवत् सर्वभूतप्रमोहिनी ॥ ९ ॥ तस्मिन् रात्रिमुखे घोरे पाण्डवावृष्टिभिः सह । खड्गयाश्च कुराधर्या मन्त्राय समुपाविशन् ॥ १० ॥ आत्मनिःश्रेयसं सर्वं प्राप्तकालं महाबलाः । मन्त्रयामासुरव्यग्रा मन्त्रनिधय कोविदाः ॥ ११ ॥ ततो युधिष्ठिरो राजा मन्त्रयित्वा चिरं रूप । वासुदेवं समुद्गीक्ष्य वचनञ्चेवमाददे ॥ १२ ॥ कृष्ण पश्य महात्मानं भीष्मं भीमपराक्रमम् । गजं नलयनानीध विमृद्नन्तं घले मम ॥ १३ ॥ न चैवं न महात्मानमुत्सहामो निरोक्षितुम् । लेलिहामानं सैन्येषु प्रपृष्टमिव पाथकम् ॥ १४ ॥ यथा घोरो महानागस्तक्षको वै विषोत्खनः । तथा भीष्मो रणे कुक्षीदृष्टशस्त्रः प्रतापवान् ॥ १५ ॥ गृहीतचापः समरे प्रमुञ्चन्ति शिताञ्छरान् । शक्यो जेतुं यम-कुक्षो यज्ञपाणिश्च देवराट् ॥ १६ ॥ वरुणः पाशभृचापि सगदो वा धनेश्वरः । न तु भीष्मः सुसंकुद्धः शक्योजेतुं महाहवे ॥ १७ ॥ सोऽहमेवंगते पूज्य और स्तुतिमान होकर चारों ओर से प्रसन्नरूपकौरवों समेत निवासस्थान में वर्तमान हुए नितपीछे सबजीवोंको प्रसन्न करने वाली रात्रि वर्त्तमान हुई उसघोररात्रिके प्रारंभमें दुर्जय पण्डव मंजय और वृष्णीलोग सलाह करनेके लिये बैठे । १०। उनसाधन मंत्रके निश्चयमें पंडित भवमहाबलियोंने अपने कल्याणको विचार किया, इसके पीछे राजा युधिष्ठिरने बहुत विलम्बतक विचारार्शकरके वासुदेवजीको देखकर यह वचन कहा, कि हे श्रीकृष्णजी जैसे कि हाथी कमल के वनोंको मर्दन करता है इसी प्रकारसे मेरी सेना के मर्दन करेवाले भयके उत्पन्न कर्त्ता महात्मा भीष्मको देखो, कि इस अत्यन्त प्रबल अग्नि के समान सेनाओं के चाटने वाले महात्मा के देखने को हम सब समर्थ नहीं होते हैं, जैसे कि बड़ा विष भरा तक्षक नाग होता है इसी प्रकारके यह युद्धमें, क्रोधिन महातेजस्वी शस्त्रधारी भीष्म हैं, युद्ध में धनुष हाथ में लिये तीक्ष्ण बाणों को छोड़ते क्रोधरूप यमराज और वज्रधारी इन्द्रको वा पाशधारी वरुण और गदाधारी कुबेर को भी विजय करना संभव है परन्तु महा युद्धमें क्रोध संयुक्त भीष्मजी का विजय करना महा कठिन और असंभव है, हे श्री

clever Kauravas. Then the night commenced giving happiness to all beings. In the early part of that dark night the Pandavas, the Srinjayas and the Vrishnis met in council. 10. Those wise warriors skilful in council thought of their welfare. Then Prince Yudhishtir after deep thought thus addressed Vasudev:—" Bhishma the terror of our armies destroys my warriors as an elephant tramples down a clump of lotuses. We are unable to look at that destroyer of armies like a burning fire. He is like a venomous snake much enraged in the field of battle. It is easy to conquer the enraged Yam discharging his sharp arrows, Indra the wielder of vajra, Varun the bearer of noose or Kuver the maze bearer; but it is very difficult to conquer the enraged Bhishma in battle. Endowed with small wisdom as I am, O Krishn, I

कृष्ण निमग्न शोकसागरे । अस्मनो बुद्धिदौर्बल्याद् भीष्ममासाद्य सयुगे ॥ १८ ॥ वन  
यास्यामि दुर्धर्ष श्रेयोवै तत्रमे गतम् । न युद्ध रोचतेऽह्ण हन्ति भीष्मो हि न सदा  
॥ १९ ॥ यथा प्रज्वलित वह्निं पतद्ग सममिदं यत् । एकतोमृत्युमभ्येति तथाह भीष्म  
भीयिष्यान् ॥ २० ॥ क्षय नीतोस्मि वाष्पेय राज्यहेतो पराक्रमी । भ्रातरश्चैवमेशूरा  
सायकैर्भेदशपीडिता ॥ २१ ॥ मत्कृते प्रातृसौहार्दाद्राप्यग्राष्ट्रं वन गता परिकलिष्टा  
तथा कृष्णा मत्कृते मधुसूदन ॥ २२ ॥ जीवितं बहुमन्यह जीवितं ह्यह दुर्लभम् । जीवि  
तस्याद्य श्रेयेण चरिष्ये धर्ममुत्तमम् ॥ २३ ॥ यदि ते ह मनुग्रहो भ्राताभि सह केशव ।  
स्वधर्मस्याविरोधेन हितं व्याहर केशव ॥ २४ ॥ पच श्रुत्वा वचस्तस्य कारण्याद्बहुवि  
स्तरम् । प्रत्युवाच ततः कृष्णः सान्त्वयानो युधिष्ठिरम् ॥ २५ ॥ धर्मपुत्र विपादस्त मा

कृष्णजी मैं अपनी बुद्धि की अल्पज्ञता से युद्धमें ऐसी दशाके द्वारा भीष्म को पाकर  
शोक समुद्र में डूबा हुआ हूँ । १८ । हे अजेय मैं वनको जाऊंगा निश्चय करके मेरा  
कल्याण वनही में वर्तमान है हे माधव मैं युद्ध को मन्त्रा नहीं समझता हूँ क्योंकि  
भीष्मजी सदैव हमारे शत्रुओं को मारते हैं, जैसे कि पतंगपक्षी बड़ी देदीमि  
अग्निकी ओर को दौड़ता हुआ एक साथ भस्म होता है इसी प्रकार हम अग्नि के  
समान भीष्म को भी देखते हैं कि जो इसकी ओर को गया वही भस्म हुआ  
। २० । हे श्रीकृष्णजी राज्य के निमित्त पराक्रम करनेवाला मैं नाश होने में ही  
हूँ और मेरे शत्रु भी शायकों से अत्यन्त पीड़ामान है, हे मधुसूदनजी  
वह मेरे भाई भायपने की प्रीति से मेरे ही कारण राज्य से भ्रष्ट होकर वन को  
गये और मेरे ही कारण से द्रोपदी भी महा दुःख में पड़ी, मैं जीवनको बहुत मानता  
हूँ वह जीवन अन्त दुःख से प्राप्त होने के योग्य है अन्त मैं शेष अवस्था से उत्तम  
धर्मको करूँगा, हे केशवजी जो मैं भाइयों समेत आप का कृपापात्र हूँ तो अपने धर्म  
की अविरोधतासे मेरे हितको करो इस प्रकार के उसके विस्तार युक्त वचनों को  
सुनकर बड़ी करुणा से श्रीकृष्णजी युधिष्ठिर को विश्वासित करके यह वचन

am plunged in the ocean of grief on account of Bhishm 18 I shall  
go into exile, O madhava and I see happiness now here but in a forest.  
I donot think the war will do me any good, Madhav, for Bhishm  
destroys our armies Take an insect which falls assoon as it looks upon a  
burning fire, we can not look Bhishm in the face 20 I myself am nearly  
dead in the attempt to win the kingdom, and my brothers too are  
much wounded by arrows My brothers, O destroyer of Madhu, were  
doprived of kingdom out of love for me and sent into exile It was  
for my sake that Drupadi underwent great hardships I love my  
life, but it is difficult to maintain it I shall therefore, live a life of virtue  
the rest of my days If you are kind to me keshav, do me good as  
far as it is notcontradictory to the dictates of your Dharma Hearing

कृपा. सत्यसङ्गरः यस्य ते प्रतरः गुरोः दुर्जयाः शत्रुसूदनाः ॥ २६ ॥ अर्जुनोर्मिम  
 सैनश्च वाय्वग्निममतेजसौ । मार्द्रिपुत्रौ च विमान्ता त्रिदशानामिवेश्वरौ ॥ २७ ॥  
 मांवापि युक्ष्य सौहार्दाद्योसस्ये भीष्मेणपाण्डव । स्वतुप्रयुक्तोमहाराज किं न कुर्यामहा  
 हवे ॥ २८ ॥ हनिष्यामि रणे मीष्ममाह्वयं पुरुषपर्मम । पश्यतां धार्तराष्ट्रणांयदिने  
 चञ्चतिफालगुनः ॥ २९ ॥ यदि भीष्मे हते वीरे जयं पश्यसि पाण्डव । हन्तास्त्र्येकरणे  
 नाथ कुरुक्षेत्रं पितामहम् ॥ ३० ॥ पश्य मे विक्रमं राजन् महेन्द्रस्यैव संयुगे । विमु  
 च्छन्ते महास्त्राणि पातयिष्यामि तं स्यात् ॥ ३१ ॥ यः शत्रुः पाण्डुपुत्राणां मच्छद्भुःस  
 न संशयः । मर्द्या भवदीया ये ये मर्द्यास्तत्रैव ते ॥ ३२ ॥ तव भ्राता मम सखा

बोले, हे धर्म पुत्र सत्यपर्मकल्प तुम व्याकुलना कौ मत्तमर्गो तेरे शूरवीर दुर्जयर्माई  
 शत्रुओं के मारनेवाले हैं, अर्जुन और भीमसेन वायु और अग्नि के समान  
 तेजस्वी हैं और दोनों नकुल और सहदेव देवताओं के ईश्वर भगवान्-इन्द्रके  
 समान पराक्रमी हैं, हे पाण्डव तुम मुझको आज्ञा दो कि मैं भी तुम माइयों की  
 प्रीति से भीष्म के साथ लड़ूंगा हेराजा युधिष्ठिर जो तुम मुझको भी युद्ध में  
 महत करोगे तो मैं भी जस महा युद्ध में सब कुछ करसक्ताहूँ, जो अर्जुन नहीं  
 चाहता है तो मैं पुरुषोत्तम भीष्म को बुलाकर धृतराष्ट्र के पुत्रों के देखते हुएही माहं  
 गा, हे पाण्डव जो तू वीर भीष्म के मरनेपरही विजय देखता है तो मैं एकही रथके  
 द्वारा कौरवों के वृद्ध पितामह को मारूंगा । ३० । हे राजा तुम युद्ध में महाइन्द्र के  
 समान मेरे पराक्रम को देखो मैं बड़े २ अर्धोंको छोड़कर उसको श्वेतगिराजंगा,  
 क्योंकि जो पाण्डवों का शत्रु है वह मेरा भी शत्रु है जो तुम्हारे निमित्त धनआदि  
 हैं वह मेरे हैं और जो मेरे हैं वह तुम्हारे हैं । ३२ । आपका भाई मेरा मित्र और

In his grief in details, Shree Krishn felt much pity on Yudhishthir and thus consoled him, saying, " O son of Dharm, of true vows, be not disturbed in mind. Thy brave and invincible brothers are destroyers of enemies. Arjun and Bhishm are glorious like Agni and Vayu, and both Nakul and Sahadev are full of prowess like Indra the chief of gods. Allow me to fight against Bhishm for your sake. I can do everything, in battle, Prince Yudhishthir, if you will engage me in fighting. I shall, if Arjun be unwilling, challenge Bhishm and shall kill him in the presence of the sons of Dritrashtira. If, O Panda, you see your victory in the death of Bhishm, I shall with a single chariot kill the old grandfather of the Kauravas. 30. You will see O king, my prowess like that of Indra. I shall, with mighty weapons, make him fall from his chariot, for the enemy of the Pandavas is my enemy, my prosperity lies in yours and my wealth belongs to you as well. 32. Your brother is my friend. kinsman

सम्बन्धी शिष्य एव च । मांसान्मुत्कृत्य दास्यामि फाल्गुनार्थं महीपते ॥ ३३ ॥ एष  
चापि नरव्याघ्रो मत्कृते जीवितं त्यजेत् । एष न समयस्तात तारयेम परस्परम् ॥ ३४ ॥  
स मा नियुक्ष्यराजेन्द्र यथायोद्धा भवाम्यहम् । अनिज्ञातमुपप्लव्येयस्तत्र पार्थेनपूर्वत  
॥ ३५ ॥ घातयिष्यामि गाङ्गेय मितं लोकस्य सन्निधौ । परिरक्ष्यमिदं तव हृदयं च पार्थस्य  
घोमत ॥ ३६ ॥ अनुज्ञातं तु पार्थेन मया कार्य्यनसंशय । अथ वा फाल्गुनस्यैव भार  
परिमितोरणे ॥ ३७ ॥ सहनिष्यति सप्राप्ते भीष्म परपुरञ्जयम् । अशयमपि कुर्याद्विरणे  
पार्थ समुद्यत ॥ ३८ ॥ त्रिदशान्वा समुत्तकान् सहितान् दैत्यदानवै । निहन्त्यादर्जुन  
सख्ये किमुभीष्म नराधिप ॥ ३९ ॥ विपरीतो महावीर्यो गतसर्वोत्पज्जिवन । भीष्म  
शान्तनवो नूनं कर्त्तव्यं भावयुष्यते ॥ ४० ॥ युधिष्ठिर उवाच । एषमेतन्महाबाहोयथा  
वदसि माधव । सर्वे ह्येतेनपर्यास्तास्तव वेगविधारणे ॥ ४१ ॥ नियतं समवाप्स्यामि

सम्बन्धी होकर शिष्यभी है हे युधिष्ठिर मैं अर्जुनके निमित्त अपने मांसको भी काटकर  
देसक्ता हूँ और वह नरोत्तम अर्जुन भी मेरे निमित्त जीवनको त्यागकरसक्ता  
है हे तात हमारा यह नियम है कि हम परस्पर के दुःख से छूटें, सो तुम मुझको  
युद्ध करने की आज्ञा दो पूर्व में जो अर्जुनने प्रतिज्ञा की है उसको पहले से चाह  
रहे है सब लोक के ममुख गागेय भीष्म को मारुंगा उस बुद्धिमान अर्जुन का  
यह वचन रत्नाकरने के योग्य है, मुझको अर्जुनका प्रण पूराकरना योग्य है यह  
निस्तमदेह है कि वह शत्रुओं का विजय करनेवाला अर्जुन युद्ध में अवश्य भीष्म  
को मारेगा और युद्ध में अच्छी रीति से प्रवृत्त होकर असंभव कठिन कर्मों कोभी  
करेगा, यह अर्जुन युद्ध में क्रोशित होकर देवता और दैत्यों को भी मारसक्ता है  
तो हे राजा भीष्म का मारना इसको कितनी बड़ी बात है, निश्चय करके महा  
पराक्रमी शतनु का पुत्र भीष्म विपरीतता और निर्बलता से थोड़ी आयु रखनेवाला  
होकर करने के योग्य कर्म को नहीं जानता है । ४० । युधिष्ठिर बोले हे महाराज  
महाबाहु आपका यह सब कथन यथार्थही है निश्चय करके आपका वेग किसी

and pupil, I can cut an eye my own flesh for Arjun's sake Yudhishtir  
thru Arjun the best of men can lay down his life for my sake  
We strive to rid each other from misery allow me to fight Arjun's  
former promise to kill Gangeya in the presence of all warriors is  
worthy of respect and desirable I am bound to satisfy Arjun's  
desire Undoubtedly, Arjun the destroyer of foes is sure to kill  
Bhishm in battle and will achieve other hard and impracticable  
deeds When engaged in battle, Arjun can destroy the gods and  
demons the destruction of Bhishm is not a very difficult Surely  
Shantanu's son Bhishm of great prowess does not know what to do  
because he is old and his life is short" 40 "You are quite right  
I am Prince" said Yudhishtir in reply "surely your velocity

सेवयतयं विसितम् । यस्य मे पुरुषव्याघ्र भयान् पक्षे व्यवस्थितः ॥ ४२ ॥ सन्द्रानपि  
रणे देवान् जपेय जपतां पर । त्विवा नार्धेन गोविन्द किमु भीष्मं महारथम् ॥ ४३ ॥ न  
तु त्वामनृतं कर्तुमुत्सहं स्वात्मगो वात् । मधुसूतानः साहस्य यथोक्तं कुरुमायव  
॥ ४४ ॥ समयस्तु कृतः कश्चिन्मम भीष्मसंयुगे । मन्त्रयिष्ये तवार्थाय न तु योत्स्ये  
कथञ्चन ॥ ४५ ॥ दुर्योधनार्थं योत्स्यामि सत्यमेतदिति प्रभो । स हि राज्यस्य मे  
दाता मन्त्रस्त्वं च माधव ॥ ४६ ॥ तस्माद्देवव्रतं मूयो यद्योषःपार्थमात्मनः । भवताः  
सहिता सर्वे प्रायाम मधुसूदन ॥ ४७ ॥ तद्वयं सहिता गत्वा भीष्ममाशु नरोत्तमम् ।  
न चिरात् सर्वे पार्थिव मन्त्रे पृच्छाम कौरवम् ॥ ४८ ॥ स वक्ष्यति हितं वाक्यं सत्य  
मस्माद् जनादिन । यथा च वक्ष्यते कृष्ण तथा कर्तास्मिसंयुगे ॥ ४९ ॥ स नो जयस्य  
दाता स्यान्मन्त्रस्य च हृदव्रतः । धालाः पित्रा बिहीनाश्च तेन संवर्धिता वयम् ॥ ५० ॥

के सहने के योग्य नहीं है, इसको अपने मन की इच्छा के अनुसार मैं अवश्य प्राप्त  
करूंगा जब कि आप से कृपानिधि इपारे पक्षपर लड़े हैं हे महाविजयस्वरूप  
गोविन्दजी तुम से अपने नाथ के साथ होकर युद्ध में सब देवताओं समेत इन्द्र  
कोभी हम विजय करसक्ते हैं तो इन महारथी भीष्मजी का विजय करना कितनी  
बातहैं मैं आपको मिथ्याबादी करना योग्य नहीं समझताहूँ हे माधवजी आप युद्ध  
किये बिनाही अपने स्वाभाविक बल पुरुषार्थ से अपने वचन के अनुसार हमारी  
सहायता करो, भीष्म ने मुझसे प्रण किया है कि युद्ध में सलाह करूंगा परन्तुतरे  
अर्थ कभी न लड़ूंगा मैं दुर्योधन केही लिये लड़ूंगा इसमें सन्देह नहीं है कि  
वह भीष्मजी मुझको राज्य की सलाह के देनेवाले हैं इस कारण से हम सब मिल  
कर आपको साथ लेकर उनके शरीर के मारने के निमित्त उस देवव्रत के पास  
चलें, हे जनार्दनजी वह हमसे हमारे अभीष्ट सत्य सत्य वचनोंको कहेंगे और जैसा  
वह कहेंगे वैसाही हम युद्धमें करेंगे, वह हृदय व्रत भीष्म हमारी विजय और कीर्ति  
का देनेवाला होगा क्योंकि पिताकर के बिहीन हमबालकों को उन्हीं ने सबप्रकार

is unbearable. I own that on my side I have in you an ocean of kind-  
ness. Invincible Govind, having you for our protector we can win  
Indra and the gods; it is not difficult to conquer Bhishma. But  
I would not make you break your word; for without engaging in  
battle, Madhav, you can with your natural strength and prowess  
help us as you have promised. Bhishma has promised to give me advice  
in wartime, though he will fight for Duryodhan and not for me. No  
doubt he will advise me how to gain kingdom; we shall therefore go  
with you to Devabrat in order to contrive his death. He will, O Janar-  
dan, tell us truly how to gain our object and we shall act upon his  
advice in battle. Bhishma the observer of true vows will lead us to  
victory and fame; for he brought us up from childhood when we were  
fatherless. 50. I desire, Madhav, to slay my old grandfather Bhishma; and

तच्छ्वेतपितामहं वृद्धं हन्तुमिच्छामि वाच । पितुं पितरमिष्टञ्च धिगस्तु क्षत्रजीवि-  
 काम् ॥ ५१ ॥ सम्जय उवाच । ततोऽब्रवीन्महाराज चाप्येयः कुरुनन्दनम् । रोचतेमे  
 महाप्राज्ञ राजेन्द्र तव भाषितम् ॥ ५२ ॥ देवव्रतं कृतो भीष्मः प्रक्षितेनापि निर्देहेत् ।  
 गम्भीरां स वयोपायं मष्टे सागरगामुनः ॥ ५३ ॥ वन्तुमर्हति सत्यं स त्वयापृष्टो विशेष-  
 पतः । ते वयं तत्र गच्छामः प्रष्टुकुपितामहम् ॥ ५४ ॥ गत्वा शान्तनव वृद्धं मन्त्रं  
 पृच्छाम भारत । स वो दास्यति मन्त्रं यं तेन योत्स्यामहे परान् ॥ ५५ ॥ एवमामन्व्यते  
 वीराः पाण्डवाः पाण्डुपूर्वजम् । जम्बुस्तेसाहिताः सर्वे वासुदेवश्च वीर्यवान् ॥ ५६ ॥  
 विमुक्तशस्त्रकनका भीष्मस्य सदनं प्रति । प्रविश्य च तदा भीष्मं शिरोभिः प्रणिपेदिरे  
 ॥ ५७ ॥ पूजयन्तो महाराज पाण्डवा भरतर्षभम् । प्रणम्य शिरसाच्चैनं भीष्मं शरण-

से भरण पोषणकर के इतना बड़ा किया है । ५० । हे माधवजी जो मैं अपने पिता  
 के भी पितावृद्ध भीष्म पितामह को मारना चाहता हूँ, ऐसे सुत्री धर्म को और  
 क्षत्रियों की जीविकाको धिक्कार है, संजय वाले हे महाराज फिर श्रीकृष्णभी  
 कौरवनन्दन युधिष्ठिरसे कह ने लगे कि हे वृद्धज्ञानी राजेन्द्र तेरा कहना मुझको  
 अच्छालगता है शुभकर्मों देवताओं के बराबर ब्रतरखनेवाला जो दृष्टि सेभी दूसरे  
 को भय कर मक्ता है उस भीष्मके पास उमी भे उसके मारने का उपाय पूछने  
 के निमित्त जाओ, वह तेरेपूछने पर तुझ से सत्यही सत्य कहेगा इस से हम सब  
 मित्रकर उन कौरवों के पितामह के पास पूछने के हेतु चले, हे भरत वंशी हम  
 वृद्ध भीष्मसे मिलकर सलाह को पूछे वह हमको जो सलाह देगा उसी के अनुसार  
 हम शत्रुओंसे युद्ध करेंगे, हे पांडुके बड़े भाई धृतराष्ट्र वह वीर पांडव इस रीतिसे  
 सलाह करके सबने वासुदेवजी समेत शत्रुओं से राहित होकर उस भीष्म के डेरों में  
 प्रवेश करके उनको बड़ीनम्रता पूर्वक प्रणाम किया, हे राजा इसरीति से श्रीकृष्ण  
 समेत पांडवलोग शिर से प्रणाम करते हुए भीष्मजीके समीप बैठने के स्थानों में

not kshatriya dharma and kshatriya life blameable?" Sanjaya continued  
 "Then, O great king, Shree Krishna said to Yudhishtira the joy of  
 Kauravas, "I like your idea, wise Prince. Let us go to Bhishm  
 the virtuous, of true vows like gods, who can by his mere look burn  
 others, in order to seek from his own lips the manner of his death.  
 Being asked by you, he will speak the truth. Let us therefore all  
 go together to ask of the grandfather of the Kauravas what is to be  
 done. We shall take counsel of old Bhishm, O descendant of Bharat,  
 and shall act accordingly in fighting against our enemies." Thus  
 having consulted together, the Pandavas together with Vasudev,  
 went without arms in the tent of Bhishm and humbly bowed down  
 to him. And thus bowing down with their heads, the Pandavas  
 with Shree Krishna, approached the seat of Bhishm. Then brave



मभ्ययु ॥ ५८ ॥ तानुवाच । ह्यराहुर्मोमः कुरपितामह । स्वागतं तत्र बाष्पेयस्नात-  
न्तेघनञ्जय ॥ ५९ ॥ स्वागतं धर्मपुत्राय भीमाय यमयोद्धदा । किं वा कार्यं करोम्य  
घयुष्माकं प्रीतिवर्धनम् ॥ ६० ॥ सर्वात्मनापि कर्त्तास्मि यदपि स्यात् रुदुष्करम् ।  
तथा प्रयाणं गात्रेयं प्रीतियुक्तं पुनः पुनः ॥ ६१ ॥ उवाच राजा दीनात्मा प्रीतियुक्तं मिदं  
वचः । कथं ज्ञेयम् सर्वज्ञ कथं राजवंशभेमेहि ॥ ६२ ॥ प्रजानां संशयो न स्यात् वधतन्मं  
यद् प्रमो । भवान् हि नो वधोपायं श्रवीतु स्वयमात्मन ॥ ६३ ॥ भयतं समरेषीर  
विपहेम कथं वयम् । न हि ते सूक्ष्ममप्यस्ति रन्ध्रे कुरपितामह ॥ ६४ ॥ मण्डलेनैव  
धनुषाहं हृदये संयुगे सदा । आदधानं सन्धानं विकर्षन्तं घनुर्न च ॥ ६५ ॥ पश्याम  
स्त्वां महाबाहो रथं सूर्यनिषापरम् । रथाभ्यनरजागानां हन्तारं परवीरहन् ॥ ६६ ॥ को  
ययोत्सहते जेतुं त्वा पुमान् मरणपथम् । धर्षता शरवर्षाणि सयुगे वंशानं कृतम् ॥ ६७ ॥

पहुँचे, तब वीरवों के पितामह महाबाहु भीष्मजी श्रीकृष्ण जीभे घाले कि हे कृष्ण  
आपका आना शुभदायकहो और हे अर्जुन तेराभी आना सफलहो, और युधिष्ठिर  
भीमसेन नकुल सहदेव कार्भी आना मंगल कारीहो यह कहकर कहा कि अब मैं  
तुम्हारी प्रीति का बढ़ाने वाला कौनसानुम्हारा शिष्टाचारकर्त्ता । ६० । मैं तुम्हारे  
दुःखसेभी करने के योग्य हितको आत्मा से करनेको उपासित हूँ इस प्रकारके प्रीतिपूर्वक  
बारंबार वचन कहनेवाले गांगेय भीष्मजी से महादुःखीचित युधिष्ठिर बड़ी  
प्रीति में डूबकर यह वचन बोला कि हे सर्वज्ञ हम कैसे सब को विजय करें और  
कैसे राज्यको पावें, और किमरीति से मजालोगों का नाशनहो हे मधु इस को  
हमसे फीरिये और अपने भी मरण का उपाय हमको बताइये हे महावीर हम युद्धमें  
कैसे आपको सहसकें हे हमसब के पितामह आपके किमीसूक्ष्म दोषको भी हमनहीं  
जानते, तुमसदैव युद्ध में घनुष मंडल के साथही रह पड़तेहो हे महाबाहु हमलोग  
आपको घनुष चढ़ाते बाणनेते संधानते और द्वितीय सूर्यके समान रथपर सवारहोते

Bhishm the grandfather of the Kauravas thus addressed Shree Krishn— " You are welcome Shree Kaishn and you too, Arjun, will gain the object of your desire Yadhishthir, Bhimsen, Nakul and Sahdev too are welcome " Then he said, "What should I do to secure your love and pleasure? 60 I am ready with all my soul to do the most difficult work for your sake." Hearing the affectionate words of Bhishm, repeated again and again, Yudhishtir, plunged in deep love said, " How, O omniscience, shall we conquer all and win our kingdom? How can we avoid bloodshed? Tell me this as well as the manner of your death. How can we bear you in battle, mighty warrior? We do not know the least weakness of yours grandfather. You are always seen cingling your bow in the field of battle; we can not see you riding your chariot like a second sun

क्षय नीताहि पृतना सयुगे नहतीमम । यथा युधि जयेमत्वा यथा राज्य भूशमम । ६८ मम स-वस्य च क्षेम त म ग्रहि पितामह । ततोऽर्षीच्छान्तनय पाण्डवान् पाण्डुपुत्रं ॥ ६९ ॥ न कथञ्चन कौन्तेय मयि जीवति मयुगे । जयो भवतिसर्वज्ञ सत्यमेत-प्रवीणिते । ७० ॥ निज्जिते मयि युद्धेन रणे जेष्यथ पाण्डवा । क्षिप्र मयि प्राहरष्व यदिच्छथ रणे जयम् । ७१ ॥ अनुजानामि च पार्था प्रहरष्य यथासुखम् । एव हि सुरत मन्ये भवता विद्वितोऽहम् । ७२ ॥ हते मयि हत सर्व तस्मादेव विधीयताम् । युधिष्ठिर उवाच । ब्रूहि तस्मादुपाय नो यथा युद्ध जयेमहि ॥ ७३ ॥ भवन्त समरे क्रुद्ध वण्डहस्तागिवान्तकम् । शशपोषजधरो जेतु षण्णोऽयं यमस्तथा ॥ ७४ ॥ न भवान् समरे शक्य सेन्द्रेरपि सुरासुरैः । भीष्म उवाच । सत्यमेत-महाबाहोयथा

हुए भीमही देख रक्ते है हे शत्रुओं के बीर लोगों के मारने वाले हे रथघोड़े मनुष्यों के मारने वाले, हे भरतर्षभ अबकिसपुरुषकी सामर्थ्य है जो आपको युद्धमें विजय करके आपने अपनेबाणों की वर्षा करके युद्धमें प्रलयमचाकर मेरी बड़ी सेनाकाना-शकिया है अब जेसी रीतिसे हम तुमको युद्धमें विजय करके राज्यको पावें और मेरी सेनावचे हे पितामह वही आपको कहना योग्य है इसके अनन्तर पाण्डुके पिताभीष्मजी सब पाण्डवोंसे बोले, कि हे सर्वज्ञ युधिष्ठिर मेरे जीवते हुए युद्धमें जैसेकि विजय नहीं होती है उसको मैं तुम्ह से कहता हूँ ॥ ७० ॥ हे पाण्डव लोगो युद्धमें मेरे विजय होने पर युद्धकेही द्वारा तुम शत्रुओं को विजय करोगे जो युद्ध में विजय चाहते हो तो शीघ्रही मुझपर प्रहार करो, हे कुन्तीके पुत्रो मैं तुमको आज्ञा देता हूँ तुम आनन्दसे मेरे ऊपर प्रहार करो मैं इसरीति के कर्म को बहुत उत्तम मानता हूँ और मुझको तुम अच्छी रीति से जाननेहो कि मेरेही मरने पर शत्रुओं की सब सेना भल्पही काल में मारी जायगी इसहेतु से तुम ऐसा कर्म करो, युधिष्ठिर बोले कि वह उपाय बतलाइये जिस से कि दडहाथ मे लिये मृत्यु के समान युद्धमें क्रुद्धरूप आपको

when putting arrow to your bow Destroye of the warriors chariots, horses and men of the enemy best of Bharats who can conquer you in battle? You have with the shower of your arrows, annihilated my large army, now let me know grandfather how to conquer you & the kingdom and save my name At this Bhishm the father of Pandu thus addressd the Pandavas, I shall tell you, wise Yudhishtir, why you cannot gain victory as long as I live 70 Having conquered me in battle O Pandav, you will defeat all the enemies by fighting Lay hands on me if you desire victory I give you permission sons of hunt, to discharge cheerfully your weapons at me I approve this sort of work You know well that all the army of the enemies will be extupated soon after my death and therefore you should do it Tell me said Yudhishtir how we can

यदासि पाण्डव ॥ ७५ ॥ नाहं जेतु रणे शक्यः सैन्द्रेरपि सुरापुरे । आत्तशस्त्रो रणे  
 यत्तो गृहीतवरकामुकः ॥ ७६ ॥ ततो मां न्यस्तशस्त्रं तु एते हन्युर्महारथाः । निक्षिप्त  
 शस्त्रे पतिते विमुक्तफयचध्वज ॥ ७७ ॥ द्रवमाणे च मीते च तवास्मीति च वादिभि ।  
 स्त्रियांस्त्रीनामधेये च विकले चैकपुत्रिणि ॥ ७८ ॥ अग्रशस्त्रे नरे चैव न युञ्जं रोचते  
 मम । इमे मे गुणुराजेन्द्र संकल्पं पूर्वचिन्तितम् ॥ ७९ ॥ अमहत्त्वध्वजं दृष्ट्वा न  
 युध्येयं कदाचन । य एष द्रौपदो राजेस्त्व सैन्ये महारथः ॥ ८० ॥ शिखण्डी समरा  
 मर्षी शूरश्च समितिज्जयः । ययामवच स्त्री पूर्वं पश्चात् पुंस्त्व समागतः ॥ ८१ ॥  
 जानन्ति च भवन्तोपि सर्वमेतद्यथातथम् । अर्जुनः समरे शूरः पुरस्कृत्य शिखण्डिनम्

विजयकरे, वज्रधारी इन्द्र वरुण कुबेर और यमराज भी विजय करने को  
 योग्य हैं, परन्तु आप युद्धमें देवेन्द्र समेत देवता और असुरों से भी  
 विजय करने के योग्य नहीं हैं, भीष्मजी बोले हे महाबाहु पांडव जो  
 तू कहता है वह सत्यही है यथार्थ में मुझको इन्द्रसमेत देवता और असुरभी विजय  
 करनेको समर्थ नहीं होसके, जोकि शस्त्रोंकाधारण करनेवाला युद्ध में कुशल उत्तम  
 धनुषका खेंचने वाला मैंहूँ इसहेतु से यह सब महारथी मुझशस्त्रों के त्यागने वालेको  
 मारें, शस्त्र त्यागने वाले पृथ्वी पर पड़े कवच और ध्वजासे रहित भागेहुए भयभीत  
 और शरणमें आयेहुए वा स्त्रिके समान नाम रखने वाले व्याकुल वा एक पुत्र वाले  
 से अथवा नीच मनुष्य के साथ युद्ध करना मैं उत्तम नहीं समझताहूँ, हे राजेन्द्र  
 पूर्व विचार कियेहुए मेरे इस संकल्पको सुनों कि मैं अमंगल रूप ध्वजा को देख  
 करकभी नहीं लड़ता, हे राजा तेरी सेनामें यह द्रुपदकाबेटा महारथी युद्धमें क्रोधरूप शूर  
 वीर युद्धको जीतने वाला शिखण्डी नामहै । ८० । यह जैसे कि स्त्री हुआ और  
 पीछे से पुरुषके चिह्न पाये इसका जैसा कि वृत्तान्तहै उसकोतुमभी जानतेहो शूर

conquer you in battle when you roam like Death the bearer of staff, Indra the wielder of vajra, Varun, Kuver and Yamraj may be conquered, but you are invincible by Indra and the gods and danavas." "You are right," replied Bhishma, "undoubtedly the gods headed by Indra and the danavas cannot conquer as long as I use my weapons dexterously in battle and draw my good bow. Let the warriors therefore slay me when I have laid aside my arms. I donot like to fight with one who has laid down arms, one lying on the ground, without armour and banner, running away, terrified, seeking refuge, having a woman like name, distressed, father of one son or a low born. Hear, O king the resolution which I have arrived at: I never fight with one having ominous banner; in thy army, O king, Drupad's son, Shikhandi is a brave and invincible warrior 80. You know already how a woman at first he gained manhood. I shall not

॥ ८२ ॥ मामेव विशिखेतीक्ष्णैरभिद्रवतु दशित । अमङ्गल्यध्वजे तस्मिन् स्त्रीपूर्व  
विशेषत ॥ ८३ ॥ न ग्रहर्तुमभीप्सामि गृहीतेषु कथंचन । तदतर समासाद्य पाण्डवो  
मांघनञ्जय ॥ ८४ ॥ शरैर्घातयतु क्षिप्र समन्ताद् भरतर्षभ । न त पश्यामि लोकेषु मा  
ह्न्याद्यः समुद्यतम् ॥ ८५ ॥ ऋतेरुष्णा महाभागात् पाण्डवाद्वा घनञ्जयात् । एतस्मा  
त्पुरोधाप कचिदन्य ममाग्रतः ॥ ८६ ॥ आचक्ष्वो रणे यत्तो गृहीतवरकामुक । मां  
पातयतु धीमत्सुरेव तव जयोध्वम् ॥ ८७ ॥ एतत् कुरुष्व कीर्तेय यथोक्तं मम सुप्रतः ।  
संग्रामे धार्तराष्ट्रांश्च हन्या सर्वान् समागतान् ॥ ८८ ॥ सञ्जय उवाच । ते तु ब्रह्मा  
ततः प्रार्थो जग्मुः स्वशिविरं प्रति । अभिवाचमहात्मान धीमन् कुरुष्वितामहम् ॥ ८९ ॥  
तथोक्तवति गाङ्गेये परलोकाय दीक्षिते । अर्जुनो दुःखस्तप्तः सर्वाङ्गमिदमब्रवीत्

धीर युद्धमें शस्त्रोंसे अलंकृत अर्जुन शिखण्डी को आगे करके विशिख बाणोंसे  
मेरे सम्मुख जो आयेतो धनुषबाण हाथमें लिये हुए भी उस अमंगली ध्वजावाले वा पृथ्वी  
में स्त्रीरूप रखने वाले पर मैं किसी दशामें भी प्रहार करना नहीं चाहता हूँ हे राजेन्द्र  
युधिष्ठिर उस सेनाको पाकर शीघ्र ही पाण्डव अर्जुन मुझे चारों ओर को बाणोंसे मारे, मैं  
सब लोकों में महानुभाव श्रीकृष्णजी और पाण्डव अर्जुनके सिवाय किसीको नहीं  
देखता हूँ जो मुझ युद्ध में प्रयत्नको विजय कर सके इस का स्थ—यह शस्त्रधारण करने  
वाला और उत्तम धनुषधारी अर्जुन किसी दूसरेको मेरे आगे नियत करके, मुझको  
मारे निश्चय कर के इतरीति से तेरी विजय है हे सुन्दरव्रत युधिष्ठिर तुम इस मेरे  
वचनको प्रतिपालन करो और युद्धमें सम्मुख होने वाले सत्र धृतराष्ट्र के पुत्रों को  
मारो संजय बोल कि इन वार्त्तालापोंके पीछे वह पाण्डव लोग सत्र बातों को जानकर  
भीष्मजीको दण्डमतकरके अपने डेरों को गये, परलोक जानेको उत्सुक दीक्षा किये  
हुए गांगेय भीष्मजी के इतमकार करने पर दुःख से शोक ग्रस्त अर्जुन बड़ी लज्जा  
से यह वचन बोला हे माधवजी मैं युद्ध करनेके दृढ़ महाशक्ती बुद्धिमान कौरवों के

discharge my weapons at Sukhandi who has an ominous banner and  
who was formerly a woman, if he comes before me with bow and ar  
rows and is followed by Arjun the brave in fight and armed with  
weapons Let Arjun and his army wound me with his arrows from  
all sides I see none except mighty Krishna and Arjun the Pandav  
that can conquer me in battle Then let this armed archer Arjun  
preceded by the other, discharge his weapons at me This is the only  
way to your conquest Act upon my advice, virtuous Yudhishtir,  
and destroy all the sons of Dhritrashtra in battle" Sanjaya contin  
ued.— 'Having thus conversed together, the Pandavas learnt all that  
was necessary, and having bowed down to Bhishm went to their  
camp Hearing the words of Bhishm the son of Gangā, desirous of  
departing to the next world, Arjun plunged in grief and shame, thus  
addressed Krishna — "How shall I fight against the head of the

॥ ९० ॥ गुरुणा वृद्धेन न कृतप्रवेन धीमता । पितामहेन सप्राम धृथ योद्धामिमगाधव  
 ॥ ९१ ॥ क्रीडता हि मया गच्छे वासुदेव महामना । वासुदेवितगात्रेण महात्मापरुषी  
 कृत ॥ ९२ ॥ यस्याहमधिष्ठ्याद्वा बाल पितृगदाग्रज । ततित्यगोच पितर पितु  
 पाण्डमहात्मन ॥ ९३ ॥ नाह वातस्तत्र पितुन्नातास्मि तव आगत । इति गमप्रची  
 हाये य स वक्ष्य कथं मया ॥ ९४ ॥ काम वध्यतु मे य मे नाह योत्स्ये महात्मना ।  
 जयो वास्तुतथो वामे कथं वा वृष्ण मन्य स ॥ ९५ ॥ वासुदेव उवाच । प्रतिप्राप  
 वध जिष्णा पुग भीष्मस्य संयुगे । क्षत्रचर्मस्थित पार्थ कथं नैन हनिष्यसि ॥ ९६ ॥  
 पातयेन रथात् पार्थ क्षत्रिय युद्धदुर्मदम् । नाहत्वा युधि गागेय विजयस्ते न वि  
 ष्यति ॥ ९७ ॥ इष्टमेतत्पुरादनेगमिष्यति यमक्षयम् । यच्छ्रे हि पुरा पार्थ तच्चया न

पितामह भीष्मजी के माथ कैम युद्धकरूगा । ९० । हे वासुदेव जी बाल्यास्था में  
 खेले हुए धूतभरे देहसे मेने बडे साहसी पितामह को धूल में मिलाया, निश्चय  
 करके हे श्रीकृष्णजी मुझ बालकने जिमकी वमलमें चढ़कर अपने पितामहान्माण्डु  
 के पिताको तात कहाहै, हेमाधवजी जिमने शल्याक्षयामें मुझको कहाया कि मे  
 तेरेपितामा तातहू तेरातात नहींचू उम को मैं किममकार से मारने के योग्यहू वह  
 अपनी इच्छाके अनुसार मेरी सेनाको मारे परन्तु उस महात्मा के सायनही लहगा  
 मेरीविजय होय ना मृत्युहो हे श्रीकृष्णजी चाहो आप मुझे किसी प्रकार से जानों,  
 वासुदेव जी बोले कि हे विजय करने वाले अर्जुन तुम पूर्व समय में युद्धके बीच  
 भीष्मके मारने का मण करके क्षत्री धर्ममें नियतहुएहो सो तुमसे उमको नहीं  
 मारौगे, हे अर्जुन इस युद्ध में दुर्मद क्षत्री को रथ में गिराओ तुमयुद्धमें गगापुत्रको  
 बिनामारे समारमें विजय और शीर्ति को नहीं पाओगे, आगेके समय में देवताओं  
 ने देखा था कि तुम यमलोक को जाओगे सो हे अर्जुन वह बात भिष्या नहीं है,

family, Bhishma the wise grandfather of the Kauravas 90 I have,  
 O Vasudev often made the body of the grandfather dirty with my  
 dust stained feet when I was playing in childhood Surely O  
 Krishna, the father of the great Pandu whom when in his lap I  
 called father and who in my childhood told me that he was not my  
 father, but my father's father, I cannot find it in my heart that I  
 should kill him I let him, at his desire, destroy my armies, but I  
 shall not fight against him whether I conquer or die O Krishna or  
 whatever you may think of me " You have already made a pro  
 mise, said he him " that you will kill Bhishma in battle  
 How is it that you say you will not kill him? Cursed the fall of  
 that great warrior from his chariot, O Arjun You can neither gain  
 victory nor wholly fame with at killing Bhishma The gods have  
 already foreseen that you would go to the region of Yama and this  
 cannot be false None except you not even Krishna the wielder of

तदन्यथा ॥ ९८ ॥ न हि भीष्म दुराधर्ष व्यात्ताननमिवान्तकम् । त्वदन्य शयनया  
 योद्धमपि वज्रधर स्वयम् । ९९ ॥ जहि भीष्म स्थिरो भूत्वा शृणुचेदं वचो मम ।  
 यथोवाच पुराशक्रं महाबुद्धिर्वृहस्पतिः ॥ १०० ॥ ज्यौयां समपि खेद् वृद्धं गुणैरपि  
 समन्वितम् । आततायिनमायान्त हन्याद् घातकमात्मनः ॥ १०१ ॥ शाश्वतोपस्थितो  
 धर्मः क्षत्रियाणां धनञ्जय । योद्धव्य रक्षितव्यञ्च यष्टव्यश्चानुसूयुभिः । १०२ ॥  
 अर्जुन उवाच । शिखण्डी निघ्न कृष्ण भीष्मस्य भविताधुवम् । हृद्यैव हि  
 सदा भीष्म पाञ्चाल्य चिनिवर्तते ॥ १०३ ॥ ते वय प्रमुखे तस्य पुरस्कृत्य शिखण्डि  
 नम् । गाद्रेय पातयिष्याम उपायेनेति मे मतिः ॥ १०४ ॥ अहमन्यान्महेष्वासाद्वार  
 यिष्यामि सायकैः । शिखण्डपि युध्यां श्रेष्ठ भीष्ममेवाभियोधयेत् ॥ १०५ ॥ भुतहि

तेरेसिवाय आप वज्रधारी इन्द्रभी इस महाबली मृत्यु के समान अर्जय भीष्म से  
 लड़ने के लिये समर्थ नहीं है इसे तू स्थिरहोकर भीष्मको मार और इस मेरेवचनको  
 चुनकर जैसे कि पूर्वकाल में बड़े बुद्धिमान वृहस्पतिजीने इन्द्र से कहाया कि  
 अपने मारनेवाले आततायी आनेवालेको मारेचाहे वहगुणोंसे भराहुआ कुलका  
 वृद्धभीहो ॥१००॥ हे अर्जुन युद्धकरना रत्नाकरना दूसरेके गुणोंमें दोषलगानेवालेका  
 पूजन न करना यज्ञत्रियोंका सनातन धर्मचनाआया है, अर्जुन बोले हे श्रीकृष्णजी  
 शिखण्डी भीष्मजीका अवश्य कालहोगा क्योंकि भीष्मजी उस पांचालदेशी  
 शिखण्डीको युद्धमें देखकर सदैव लैटजतैहै, इसे हम शिखण्डीको उस के सम्मुख  
 कर के युक्तियों से उस गांगेय भीष्मको युद्धमें अवश्य मारेंगे यह मेरा मतहै, मैं  
 अपने शायकोंसे अन्य बड़े २ धनुषधारियों को रोकूंगा और शिखण्डीबड़े युद्धकर्ता  
 भीष्मकेही आगे युद्धकोकरे, मैंने उन कौरवेंद्र भीष्मजी केही मुखसे सुना है कि  
 मैं शिखण्डी को नहीं मारूंगा निश्चय यह पूर्व समय में कन्या होकर पुरुष बना है,

vajra, can cope in battle with brave Bhishm who is invincible like  
 Death Be therefore steady in killing Bhishm and hear the words  
 which are the same as wise Vrihaspati said to India, 'Kill your  
 enemy who attacks you whether he be full of virtues or the head of  
 your family' 100 Fighting protecting and not giving respect to one  
 who paints a virtuous character black are the old practices of ksha-  
 tryas' Arjun said "Shikhandi will surely be cause of Bhishm's  
 death, O Krishn, for Bhishm always turns back from battle at  
 seeing him We shall make Shikhandi to face Bhishm and thus  
 shall kill him with artfulness This is my resolution I shall check  
 the other great archers with my arrows and Shikhandi will be able  
 to fight against Bhishm I have heard it said by Bhishm himself  
 that he would not kill Shikhandi who was transformed from  
 womanhood to manhood Thus the Pandavas came to resolution

पुरुमुख्यस्यताहं हन्यां शिखण्डितम् । कन्या होयापुरा मृत्वा पुरुषः समपद्यत ॥१०६॥  
इत्येवंनिश्चयं कृत्वा पाण्डवाः सहमाधवाः । अनुमान्यमहात्मानं प्रययुर्दृष्टमानसाः ॥१०७॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि नवपादिसाक्षरत्तमोमन्त्रे

अध्याधिकशतोऽध्यायः ॥ १०८ ॥

धृतराष्ट्र उवाच । कथं शिखण्डी गाङ्गेयमश्वघत्तं सयुगे । पाण्डवाश्च कथं भीष्म  
सन्ममाचक्ष्व सञ्जय ॥१॥ सञ्जय उवाच । ततस्तेपाण्डवाः सर्वे सूर्यस्योदयनम्रति ।  
तारुण्यमानास्तु भेरीषु मृदङ्गेष्वानकेषु च ॥ २ ॥ ध्मायत्सुदधिवर्णेषु जलजेषु समस्ततः ।  
शिखण्डिनं पुरस्कृत्य निर्याताः पाण्डवायुधि ॥ ३ ॥ कृत्याभूद्धं महाराज सर्वशत्रु  
निवर्हणम् । शिखण्डी सर्वं सैन्यानामग्र आसीद्विशाम्पते ॥ ४ ॥ चक्ररक्षौ ततस्तस्य  
भीमसेनयत्नजयौ । पृष्ठेनो द्रौपदेयाश्च सौमद्रक्षेत्रीर्यवान् ॥ ५ ॥ सात्यकिश्चेकितानश्च  
तेपांगोता महारथः । धृष्टमुनस्ततः पश्चात् पञ्चालैरभिरक्षितः ॥ ६ ॥ ततो युधिष्ठिरौ

इम प्रकार से पांडव लोग अपने बांधवों समेत निश्चय करके और महात्माओंका प्रतिष्ठा पूर्वक स्तुति पूजन करके ममन्त्र चित्त अपने २ ढेरोंको गये १०७ ॥

अध्याय ॥ १०९ ॥

धृतराष्ट्र बोले कि शिखंडीनेयुद्धमें किसरीति से गांगेयजीको उल्लंघन किया और भीष्मजीने किसरीति से पांडवोंको उल्लंघन किया हे संजय इसको मुझे समझाकर कहो, संजय बोले कि मातःकाम सूर्योदयके समय भेरी मृदंग ढोल आदि बाजोंके बजने और चारों ओर से दधिवर्ण शंखों के बजने पर वह सब पांडव शिखंडी को आगे करके युद्ध भूमि में गये,, हे महाराज राजा धृतराष्ट्र सब शत्रुओं के नाश करनेवाले व्यूहको करके मुख सेनाओं के आगे शिखण्डी हुआ, इसके पीछे भीमसेन और अर्जुन उसके चक्र के रत्नकहुए और द्रौपदी के बेटे और पराक्रमी अभिमन्यु पीछेकी ओर हुए, फिर सात्यकी चेकितान और उनके

and having paid respect and praises to their elders went cheerfully to their respective camps." 106.

### CHAPTER CIX.

How did Shikhandi," asked Dhritrashtra of Sanjaya, "defeat Bhishma the son of Ganga in battle, and how did Bhishma annoy the Pandavas? Pray tell me all this in detail." "In the morning," said Sanjaya, "the Pandavas led by Shikhandi entered the field of battle and were accompanied by the sounds of trumpets, drums and conchs white as the curds of milk. Having formed an array destructive of enemies, Shikhandi led the army. Bhishma and Arjun protected the wheels of his chariot; the sons of Drupadi and Abhimanyu were at his back and behind them were Satyaki, Chekita-

राजापमात्रां सहितः प्रभु । प्रययौ सिंहनादेन नादयन् भरतपर्व ॥ ७ ॥ विराट्  
 स्तुततः पश्चात् स्वेन सैन्येन सवृत । दुग्ध महाबाहो ततः पश्चिमाद्रवत् ॥ ८ ॥  
 केकयात्रानर पञ्च धृष्टकेतुश्च धीर्यवान् । जघन पालयामासुः पाण्डुसैन्यस्यभारत  
 ॥ ९ ॥ एतं द्रुपदमहत्सव्यं पाण्डवास्तत्र वहिनीम् । अश्वद्वन्द्वं सग्रामे त्यक्त्वा  
 जीवितमात्मनः ॥ १० ॥ तथैव कुरवो राजन् भीष्मे वृत्तम् महारथम् । अग्रतः  
 सर्वसैन्यानां प्रययुः पाण्डवान् प्रति ॥ ११ ॥ पुत्रैस्तव दुराघर्षा रक्षितः सुमहाबलः ।  
 तनो द्रोणो महोपासः पुत्रश्चास्य महाबलः ॥ १२ ॥ भगदत्तस्ततः पश्चाद्गजानी  
 केन संवृतः । कृपश्च कृतवर्मा च भगदत्तमनुव्रतौ ॥ १३ ॥ काम्येजराजो धृष्टवास्तवः  
 पदच्छात्रमुदीक्षितः । मागधश्च जयत्सेनः सौवल्दश्च बृहद्बलः ॥ १४ ॥ तथैवाग्रे  
 महोपासः । सुशर्मप्रमुखा नृपः । जघन पालयामासुस्तव सैन्यस्यभारत ॥ १५ ॥

पीछे पांचान देशियोंसे रक्षित महारथी धृष्टद्युम्न उनका रक्तक हुआ इसके अनन्तर  
 नरुन सहदेव समेत सबका प्रभु राजा युधिष्ठिर सिंहनादों को करता हुआ चला  
 उनके पीछे राजा विराट् अपनी सेनाको साथ लेकर चला हैपहावाह उसके  
 पीछे राजा द्रुपद चला, फिर पांचोंभाई केकय और पराक्रमी धृष्टकेतु ने पांडवी  
 सेना के जंघास्थान को रक्षित किया, इस रीतिसे पाण्डव लोग अपने बड़े बड़े  
 को रच कर और अपने जीवन की आशा को त्याग कर युद्ध भूमि में आपसी  
 सेनाके सम्मुख आये । १० । हे महाराज इसी प्रकारसे कौरव लोगभी सब सेनाओं  
 के आगे महारथी भीष्मको करके पाण्डवों के सम्मुख गये, वह अनेय भीष्म  
 आपके शूरवीर पुत्रों में रक्षित थे उनके पीछे बड़े धनुषधारी द्रोणाचार्य और  
 उनका महाबली पुत्रा, इस के पीछे हाथियोंकी सेना समेत राजा भगदत्त और  
 इसकी रक्षामें कृपचार्य और कृतवर्माथे, इसके पीछे राजा काम्योज मुदीक्षित जय-  
 सेन राजा मागध शकुनि और बृहद्बल थे, हे राजा इसी प्रकार सुशर्मा आदि अन्य

and Dhrishtadyumna protected by the Panchal warriors. After them  
 went Yudhishtira the lord of all, raising like a lion and accompanied  
 by Nakul and Sahadev. Then came the king of Virat together with  
 his armies and was followed by king Drupad. The five Kaurava  
 brothers and Dhrishtakou protected the rear of the Pandava armies.  
 Thus the Pandavas, having arranged their great army carefully of  
 their lives faced your armies 10. In the same manner, O king, the  
 Kaurava armies led by Bhishma faced the Pandavas. The invincible  
 Bhishma was guarded by your sons and behind them were the great  
 archers Dronacharya and his valiant son. Behind them was king  
 Bhagdatta with his army of elephants protected by Kripacharya and  
 Krtavarma. Then came the kings of Comba, Sudakshina and Jayatsena,  
 the king of Magdha, Shakuni and Bahubal. Susharma and other  
 great archers protected the rear. On each day, Bhishma the



दिवसे दिवसे प्राप्ति भीष्मः शान्तनयो युधि । आसुरानकरोद्धहान् पैशाचानथ राक्ष  
 सान् ॥ १६ ॥ ततः प्रवृत्ते युद्धं तत्र तेषाञ्च भारत । अन्योन्यं निघ्नतां राजन् यमराष्ट्र  
 विधर्षणम् ॥ १७ ॥ अर्जुनप्रमुखाः पार्थाः पुरस्कृत्य शिखण्डिनम् । भीष्मं युद्धेऽप्यध-  
 रन्त क्रिन्तो विविधान् शगन् ॥ १८ ॥ तत्र मारुत भीमिन ताडितास्तावकाः शरैः ।  
 रुचिरैर्यपरिक्लिप्ताः परलोकां ययुस्तदा ॥ १९ ॥ नकुलः सहदेवश्च सात्यकिश्चमहा  
 रथः । तव सैन्य समासाद्य पीडयामासुरोजमा ॥ २० ॥ ते वध्यमानाः समरे तावका  
 भरतर्षभ । नाशयनुघन् धारयितुं पाण्डवानामहङ्गलम् ॥ २१ ॥ ततस्तुतायकं सैन्यं  
 घण्ट्य मानं समन्ततः । सुमग्न्यासं दक्ष दिशः काल्यमानं महारथैः ॥ २२ ॥  
 आतारं नाशयगच्छन्त तावका भरतर्षभ । वध्यमानाः शिखिर्वाणैः पाण्डवैः सहस्रजुग्धैः  
 ॥ २३ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । पीडयमानं चल दृष्ट्वा पार्थभीष्मः पराक्रमी । यद्वर्धमानं  
 यद्वै धनुषधारी राजाश्रानि आपकी सेना के जघनस्थान को रक्षित किया, मृत्यु के  
 दिनके वर्तमान होनेपर शान्तनुके पुत्र भीष्मने युद्धके भीतर आसुर पैशाच और  
 राक्षस व्यूहों को अलङ्कृत किया, हे भरतवंशी उस के पीछे परस्पर में मारतेहुए  
 आप के पुत्रोंका और पाण्डवोंका यमराज के देशकी वृद्धि करनेवाला महायोरयुद्ध  
 जारीहुआ अर्जुन आदि पाण्डव शिखिर्वाणोंको मारकरके नानाप्रकारके बाणोंकी दवा  
 करतेहुए युद्धमें भीष्म के समस्त वर्तमानहुए, वहाँ आपके शूरवीर भीमसेनके बाणों  
 से घायल रुधिर में डूबेहुए परलोकको सिधारे, और महारथी सात्यकी और नकुल  
 सहदेवने आपकी सेनाको पाकर अनेपराक्रमसे पीड़ायाम किया ॥ २० ॥ हे राजा युद्धमें  
 घायल वह आपके शूरवीर पाण्डवों की वही सेनाके रोकने को समर्पणहीनहुए, फिर  
 आपकी सेना चारों ओर से घायल दशो दिशाओं में प्रयत्न होकर महारथियोंके  
 हाथमें अधिक व्याकुल होकर भागी, हे भरतर्षभ पाण्डवों के तीक्ष्ण बाणों से घायल  
 सृजियों समेत आपके शूरवीरों ने कोई अपना रक्त नहीं पाया, धृतराष्ट्र बोले हे  
 संजय पराक्रमी भीष्मने पाण्डवों के हाथ से पीड़ायाम सेना को देखकर युद्धमें क्रोध

son of Shantannu had formed Asur, Paishach and rakshes arrays. Then there was a severe fighting between your sons and the Pandavas, slaying each other and augmenting the population of Yami's abode. Arjun and other Pandavas led by Shikhandi faced Bhishm with showers of arrows. Your warriors, wounded by the arrows of Bhimsen, went to the region of Yam. Valliant Satyaki, Nakul and Sahadev annoyed your warriors with their arrows. 20. Wounded in battle, your warriors were unable to check the army of the Pandavas. Your army wounded on all sides, dispersed in different directions and ran away much wounded. Wounded by the sharp arrows of the Pandavas and the Srinjayas your warriors could find no propector." " Tell me Sanjaya, all that valliant Bhishm did at seeing his army

द्रुपे कुक्षस्तन्ममाचक्ष्व सञ्जय ॥ २४ ॥ कथंया पाण्डवान्युक्ते प्रत्युघात परन्तः ।  
 विनिघ्नन् सोमकान् धीरस्तदाचक्ष्व ममानघ ॥ २५ ॥ सञ्जय उवाच । आचक्षे  
 ते महाराज यदकार्षीत् पितातव । पीडिते तव पुत्रस्य सैन्ये पाण्डवसृञ्जयै ॥ २६ ॥  
 महप्रभनस शूरा पाण्डवा पाण्डुपुत्रज । अश्वर्षन्त निघ्नन्तस्तव पुत्रस्यवाहिनीम् ॥ २७ ॥  
 त घिनाश मनुष्येन्द्र नरवारणवाजिनाम् । नामृष्यत तदा भीष्म, सैन्यघात  
 रणे परे ॥ २८ ॥ स पाण्डवान् महेश्वास पञ्चालाश्चैव सृञ्जयान् । नाराचैर्वत्स  
 दन्तैश्च शितैरञ्जलिकैस्तथा ॥ २९ ॥ अभ्यवर्षत दुर्धर्षस्त्वक्त्वा जीवितमात्मन ।  
 स पाण्डवाना प्रचरन् पञ्च राजन् महारथान् ॥ ३० ॥ आत्तशस्त्री रणे यत्नाद्वा  
 रयामास सायकैः । नानाशस्त्रास्त्रवैस्तान् धीर्यामर्षप्रवेरिते ॥ ३१ ॥ निजघ्ने समरे  
 कुशो हस्त्यश्च चाभित बहू । रथिनोऽपातयद्वाजान् रथेभ्य पुरर्षभ ॥ ३२ ॥ सादि

क्ष होकर जो २ किया उसको मुझने कही, वह शत्रु सन्तापीधीर सोमकों को  
 मारता हुआ युद्ध में केने पाण्डवों के सम्मुख गया उसको भी हे निष्पाप मुझ से  
 वर्णनकर, संजय बोले कि हेमहाराज जो पाण्डवोंसे और मंजियोंसे पीडित आपकी  
 सेनाको देखकर जो २ आपके पिताने किया उसको मैं कहता हूं, हे पांडुके बड़े  
 भाई वह अत्यन्त असन्निचित शूर पाण्डव आपकेपुत्रकी सेनाको मारते हुए सम्मुख  
 वर्त्तमान हुए, तब भीष्मजीने शत्रुओंके हाथ से पीडित मनुष्य हाथी घोड़ों के नाश  
 को देखकर नहीं सहा, और उस बड़े धनुषधारी अजेयने अपने जीवनको त्याग  
 करके वत्सदन्त अंजलिक सत नाम बाणों से पाण्डवों के ऊपर वर्षा करी हे रामा  
 उस शस्त्र उठानेवालेने युक्ति से पाण्डवोंके अत्यन्त प्रबल पांच महारथियों को  
 शायक नाम बाणों से वा नानाप्रकार के क्रोध से छोड़े हुए अस्त्रों से रोका ॥ ३१ ॥  
 हे पुरुषोत्तम इसके विशेष उन्होंने असंख्य हाथी घोड़े और रथ से रथियों को भी  
 गिराया शत्रुओंके विजय करनेवाले घोड़े के सवारों को घोड़ों की पीठसे और

wounded by the Pandavas," asked Dhritrashtra, "how did he  
 slay the Somaks and free the Pandavas. Give a detailed account of  
 all this, innocent one." O king," replied Sanjaya "I shall tell you all  
 that your father did at seeing your armies wounded by the Pandavas  
 and the Srinjayas. The cheerful Pandavas, O older brother of Pan-  
 du, faced him with a severe slaughter of the armies of your son.  
 Bhishm could not bear the destruction of men, elephants and horses  
 by the enemies and the invincible archer not caring for his life, show-  
 ed on them his arrows known as Vatsdant and Anjalik. That great  
 warrior checked the five valiant Pandavas with sharp arrows and  
 other weapons discharged in anger 31. Besides this, he felled many  
 warriors from their elephants, horses and chariots. He struck down  
 the great horsemen from their horses, the elephant riders from the

नञ्चाद्यपृष्ठेभ्यः पादातांश्च समागतान् ॥ ३३ ॥ गजारेहान् गजेभ्यश्च परेषां जय  
कारिणः । तमेकं समरे भीष्मं त्वरमाणं महारथम् ॥ ३४ ॥ पाण्डवाः समवर्तन्त  
वज्रहस्तमिवामुराः । शक्राशनिसमस्पर्शान् विमुच्यन्निशिताञ्छराः ॥ ३५ ॥ दिद्वददयत  
सर्वांसु घोरं सन्धारयन् वपुः । मण्डलीभूतमेवास्य नित्यं धनुस्त्वेदयत ॥ ३६ ॥ संप्रामे  
युध्यमानस्य शक्रचापोपमं महत् । तद्दृष्ट्वा समरे कर्म पुत्रास्तव विशाम्पते ॥ ३७ ॥  
विस्मयं परमं गत्वा पितामहमपूजयन् । पार्था विमनसो भूत्वा प्रैक्षन्त पितरंतच्च ३८  
युध्यमानं रणेभूरं विप्रचित्तिमिवामराः । न चैनं वारयामासुर्ध्यात्ताननमिवान्तकम्  
॥ ३९ ॥ दशमेहनि संप्राप्ते रथानीकं शिखण्डिनः । अद्रहन्निशितैर्वाणैः कृष्णवर्मेभ्य  
भाननम् ॥ ४० ॥ तं शिखण्डो त्रिमिर्वाणैरभ्ययिष्यत्सलान्तरे । आशीविषमिव कुजं  
कालसृष्टमिवान्तकम् ॥ ४१ ॥ सतेनातिभृशं चिद्धः प्रैक्ष्य भीष्मा शिखण्डिनम् ।

हाथी के सवारों को हाथीभी पीठ से और सम्मुख आनेवाले पदातियोंको भी  
गिराया, फिर युद्धमें शीघ्रता करनेवाले महारथी अकेले भीष्मके सम्मुख पांडव  
लोग ऐसेहुए जैसे कि असुर लोग वज्रधारी इन्द्रके सम्मुख हुए थे, वहां इन्द्र वज्र  
के समान बाणों को छोड़तेहुए भीष्मजी सब दिशाओं में महा भयानक रूप को  
करते हुए दृष्ट पड़े और इनका धनुषभी इन्द्र धनुष के समान मंडल रूप दृष्टगोचर  
हुआ हे राजा आपके पुत्रों ने युद्धमें उस कर्म को देखकर बड़े आश्चर्य में होके  
पितामहकी प्रशंसा करी, और पाण्डवोंने उदासहोकर युद्धमें लड़तेहुए आपके शूर  
पिता को ऐसा देखा जैसे असुर लोगोंने विप्रचित्ती को देखा था, दशवें दिन के  
वर्त्तमान होने पर इस मृत्युके समान भीष्मको शिखंडीकी रथवाली सेनाने नहीं रोका,  
जैसे कि अग्नि वनको जलाना है उसी प्रकार शिखंडी ने अपने तीक्ष्ण बाणों से  
सेना को भस्मकरके अपने तीन बाणोंसे उसकी छातीको घायल किया । ४० । जो  
कि कालपुरुषकी उत्पन्न की हुई मृत्यु और डाढ़में विष धारण करने वाले सर्पकी

back of elephants and the foot soldiers facing him in battle. Bhishm  
of great dexterty in battle alone harrassed all the Pandavas as  
Indra the wielder of vajra had done to the asura. Discharging his ar-  
rows like the vajra of Indra, Bhishma's dreadful form was seen in all  
directions and his bow was seen moving in a circle like Indra's bow.  
Your sons, O king, wondered at and praised his work in the field of  
battle, while the Pandavas looked sorrowfully at your brave father  
fighting his battle as the asurs had done at the sight of Viprachitti.  
On the tenth day Shikhandi's charioteers could not check Bhishm  
like death. As fire burns a forest, so did Shikhandi consume your  
army with his arrows and pierced him with three arrows in the breast  
40. Like the death caused by the god of death and enraged like a  
venomous serpent, brave Bhishm finding himself wounded by Shi.

अनिच्छन्निध संकुदः प्रहसन्निदमवधीत् ॥ ४२ ॥ काममभ्यस वा मा या न त्वां  
 योत्स्ये कथञ्चन । येव हि त्वं कृता धात्रा सैव हि त्वं शिखण्डिनी ॥ ४३ ॥ तस्य  
 तद्वचनं श्रुत्वा शिखण्डी क्रोधमूर्च्छितः । उवाचैनं तथा भीष्मं सुकिणी परिस  
 लिहन् ॥ ४४ ॥ जानामित्वा महाबाहो क्षत्रियाणां मयङ्कुरम् । मया श्रुतञ्च ते युद्धं  
 जामदग्न्येन वैसह ॥ ४५ ॥ दिव्यश्च ते प्रमाद्योयं मयाच बहुश धृतः । जानन्नपि  
 प्रभावन्ते योत्स्येद्याहं त्वयासह ॥ ४६ ॥ पाण्डवानां प्रियं कुर्वन्नात्मनश्च नरोत्तम ।  
 अद्यत्वां योधयिष्यामि रणे पुरुषसत्तम ॥ ४७ ॥ भुवञ्चत्वां हनिष्यामि शपे शत्येन ते  
 प्रतः । पतच्छ्रुत्वा च महाकर्षं यत् कृत्यं तत् समाचर ॥ ४८ ॥ काममभ्यस घामा  
 घानमे जीवन् प्रमोक्ष्यसे । सहृष्ट क्रियतां भीष्म लोकोयं समितिञ्जय ॥ ४९ ॥

समान क्रोधी महाबली भीष्मथे वह महाधनुर्वारी अपनेको शिखंडीसे घायल देखकर  
 अत्यन्त क्रोधयुक्त युद्धको न चाहकर हँसते हुए यह वचन बोले कि तू इच्छाके  
 समान युद्धकर चाहै न कर परन्तु मैं किसी प्रकार से भी तुझ से नहीं लड़ूँगा,  
 क्योंकि निद्रपय करके ईश्वरसे उत्पन्न कीहुई तू वही शिखंडिनी है भीष्मके इस  
 वचन को सुनकर क्रोध में भराहुआ शिखण्डी होठोंको चबाता हुआ भीष्म  
 जीसे बोला कि हेमहाबाहु क्षत्रियों के नाशकरने वाले मैं तुझको जानताहूँ,  
 और तेरा परशुरामजीके साथ युद्धकरना भी सुना और बहुतसा तेरा दिव्य  
 प्रभाव सुना, हे नरोत्तम अब मैं तेरे प्रभावको जानताहुआ भी पाण्डवोंके और  
 अपने प्रयोजनको सिद्ध करनेके निमित्त तुझसे लड़ूँगा, और युद्ध में संग्राम  
 करके अवश्य तुझको मारूँगा यहतेरे आगे सत्य २ शपथ करताहूँ, मेरे इस  
 वचन को सुन कर जो तुझे करना उचितहो उसे अवश्यकर इच्छाके अनुसार  
 चाहै युद्धकर या न कर तू मेरे हाथ से जीवता न छूटेगा, हे युद्ध में विनय  
 करने वाले भीष्म तुम इसलोकको अच्छी रीति से प्रसन्नकरो, संजय बोले कि  
 ऐसे २ वचनरूपी वाणों से अत्यन्त विदीर्ण हृदय करके झुकी हुई गाँठवाले

Shikhandi, was much enraged, yet not liking to fight against him, he  
 said with a smile:— "I shall not discharge my weapons on you  
 whether you do so or not; for surely thou art Shikhandini a girl  
 produced by God" At this Shikhandi bit his lips in anger and said,  
 "Brave Bhishm, destroyer of foes, I know you, I have heard of  
 your battle with Parashuram and of your great fame. Knowing all  
 this, I shall fight with you for the sake of the Pandavas and for my  
 sake. I shall surely kill you in battle, I make a true vow and swear  
 in your presence. Do what you like after hearing this from me.  
 Whether you fight or not, I shall not spare your life. Make the  
 people of this world happy, Bhishm the conquerer!" Sanjaya conti-  
 nued that having wounded Bhishm's heart with his taunts, Shikhandi

सञ्जय उवाच । एवमुक्त्वा ततो भीष्मं पञ्चामिनतपर्वभिः । अविध्यत रणे भीष्मं  
 मणुष्यं वाक्यसायकं ॥ ५० ॥ तस्यतद्वचनं श्रुत्वा सन्त्यसाची महारथः । फालो  
 यमिति सञ्चिन्त्य शिखण्डिनमचोदयत् ॥ ५१ ॥ अहंत्वामनुयावस्थामि परान् विद्राय  
 पदशरैः । अभिद्रव सुसुरेष्वा भीष्मः भीमपराक्रमम् ॥ ५२ ॥ न हि ते संयुगे पीडां  
 शकः कर्तुं महाबलः । तस्मादथ महाबाहो यत्तो भीष्ममभिद्रव ॥ ५३ ॥ अहंत्वाममे  
 भीष्मं यदि चास्यासि मारिय । अथहास्योऽस्य लोकस्य भविष्यसि मया सह ॥ ५४ ॥  
 नाथहास्या यथावीर भवे मपरमाहवे । तथा कुरु रणे यत्नं साधयस्व पितामहम्  
 ॥ ५५ ॥ अहन्ते रक्षण युद्धे करिष्यामि महाबल । चाप्यन् रथिनः सर्वान् साध  
 यस्वपितामहम् ॥ ५६ ॥ द्रोणञ्च द्रोणपुत्रञ्च कृपाञ्चायसुयोधनम् । चित्रसेनं  
 धिक्कर्णञ्च सैन्यवञ्च जयद्रथम् ॥ ५७ ॥ विन्दानुविन्द्वावन्तौ काम्योजञ्चमुद्  
 क्षिगम् । भगदत्तं तथागूरं मागधञ्चमहाबलम् ॥ ५८ ॥ सौमदक्षितथा गूरमायं

पाँच बाणों से युद्ध भूमि में भीष्मजी को घायल किया, फिर महारथी अर्जुन ने  
 उसके इनवचनों को सुनकर यहविचार किया कि अब यही समय है ऐसाजानकर  
 शिखंडीको प्रेरणाकरी । ५० । और कहा कि मैं शत्रुओंको बाणोंसे हटाताहुआ  
 तेरेपीछेढूंगा तुमअत्यंतक्रोधित होकर उत्तमयानक बलरूपवाने भीष्म के सम्मुख  
 जाओ, यहमहाबली युद्धमें तेरे पीड़ा देनेको समर्थ नहीं है इसहेतुसे हे महाबाहो  
 अब युक्ति पूर्वक भीष्मके सम्मुखजाओ हे शिखंडी जो तू भीष्मको बिनामारहुए  
 युद्धमें जायगा तौ मेरा और तेरीदोनों की इसलोक में हँसीहोगी, हे वीर जैसे  
 इस लोकमें हमारी तुम्हारी हँसी न होय वही तुमको युद्धमें उपायकरना योग्य है,  
 हे महाबली मैं सब रथियोंको रोकताहुआ युद्ध में तेरी सहायता करूंगा तुम अवश्य  
 पितामहको विनष्टकरो, मैं द्रोणाचार्य अश्वत्थामा कृपाचार्य दुष्योधन चित्र  
 सेन विकर्ण जयद्रथ सिन्धका राजा विन्द अनुविन्द और अवन्ति देशके राजा

pierced him with five arrows having knots. Arjun heard Shikhandi's words and knowing that it was the time for action, instigated him to go on. 50. He said, "I shall disperse the enemies fighting from behind you; you may with much force face Bhishma of dreadful form and strength. This valliant man is unable to give you trouble in battle; therefore, O brave warriors, attack Bhishma carefully. Both you and I will be laughed at by the world, if you will return from the field of battle without killing him. You should so act today in the field of battle that you and I may not be laughed at. I shall help you, brave man by checking all the charioteers and you are sure to conquer the grandfather. As the coast checks the waters of the Ocean, I shall check Dronacharya, Ashwathama, Kripacharya, Duryodhan, Chitrassen, Vikarn, Jayadrath the Ling of Sindh, Vind and

शुद्धिश्च राक्षसम् । त्रिगर्त्तराजश्च रणे सह सर्वैर्महारथैः ॥५९॥ अहमाचारियिष्यामि  
बलव मकरालयम् । कुलञ्च सहितान् सर्वान् युध्यमानान् महाबलान् । निवारयि-  
ष्यामि रणे साधयस्व पितामहम् ॥ ६० ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि दशमदिवसयुद्धारम्भ भीष्म-

शिखण्डिप्रलापे नवाधिकशतोऽध्यायः ॥ १०९ ॥

धृतराष्ट्र उवाच । कथं शिखण्डी गान्धेय मध्यधावत् पितामहम् । पाञ्चाल्य-समरे  
कुद्धो धर्मात्मानं यतव्रतम् ॥ १ ॥ केऽरक्षन् पाण्डवानोके शिखण्डिनमुदायुधाः । त्वर  
माणास्त्वरकाले जिगीषन्तो महारथाः ॥ २ ॥ कथं शान्तनवो भीष्म स तस्मिन्  
दशमेहनि । अयुष्यत महावीर्य पाण्डवैः सहसृज्यैः ॥ ३ ॥ न मृष्यामि रणे भीष्मं प्रत्युद्योतं  
शिखण्डिनम् । कथिन्नरथभङ्गोऽस्य धनुर्वाशीर्यतास्यतः ॥ ४ ॥ सञ्जय उवाच । माशीर्यतं

काम्बोज मुदाक्षिण शूर भगदत्त महाबली राजामग्न सोमदत्ति राक्षसोंके राजा आर्य  
शृङ्ग और त्रिगर्त इनसबको सब महाराथियोंसमेत युद्धमें ऐमे रोकूंगा जैसे कि किनारा  
या समुद्रकी मर्यादा समुद्रको रोकनेहैं मैं सब सेना से लड़ताहुआ महाबली कौरवों  
को हटाऊंगा तुम पितामह को विजयकरो ६० ॥

अध्याय ११० ॥

धृतराष्ट्र बोले कि युद्ध में क्रोधयुक्त पांचालदेशी शिखंडी किसरीति से उस  
धर्मात्मा सावधान व्रत गगिय भीष्मपितामह के सम्मुखदौड़ा । १ । पाण्डवों की सेनामें  
युद्ध के समय कौन, कौन से शस्त्रधारी विनयाभिलाषी शीघ्रताकरनेवाले महाराथियोंने  
शिखंडी की रक्षाकरी, और वहशान्तनुके पुत्र बड़े पराक्रमी भीष्म उस दशवें दिनमें  
पाण्डव और मृजियों से कैसे २ युद्ध करनेवाले हुए मैं युद्धमें शिखंडी को भीष्मजी  
के सम्मुख जातेहुए शान्ती को नहीं पाताहूँ अर्थात् सहनहीं सक्ताहूँ चाहे इन भीष्म  
जीका रथ दूटगया वा सँचते २ धनुष के खहड भी होगयेहोंपरन्तु तौपी शिखण्डी

Anuvind the princes of Avanti, Camboj, Sudakshin, valliant Bhag-  
datta, brave ling of Magadh, Somdatti, Aryashring the prince of  
rakshases and Trigart. Fighting against all the army, I shall push  
back the Kauravas, you may conquer the grandfather." 59.

### CHAPTER CX

"How did Shikhandi of Panchal, enraged in battle, rush upon  
Bhisma the son of Ganga of true vows," asked Dhritrashtra of  
Sanjaya, "and which of the Pandav warriors, desirous of victory,  
hastened to protect the former. How did Shantanu's son Bhisma of  
true prowess, fight against the Pandavas and the Srinjayas on the  
tenth day? I can ill bear the news of Shikhandi going against  
Shishma. Shikhandi could not withstand him even when Bhisma's  
chariot and bow were broken into pieces." "O best of Bharats,"

धनुश्चास्य रथमङ्गो न चाप्यभूत् । युध्यमानस्य संग्रामे भीष्मस्य भरतर्षभ ॥ ५ ॥  
 निम्नतः समरे शत्रून् शरैः सन्नतपर्शभिः । अनेकशतसाहस्रान्नायकानां महारथाः  
 ॥ ६ ॥ तथा दक्षिणगणा राजन् दयाश्रयं मुसज्जिताः । अश्ववर्त्तन्त युद्धाय पुरस्कृत्य  
 पितामहम् ॥ ७ ॥ यथाप्रतिज्ञं कौरव्य स चापि समितिगयः । पार्थोनामकरोद्भीष्मः  
 सततं समितिक्षयम् ॥ ८ ॥ युध्यमानं महेश्वासं विनिम्नन्तं पराङ् शरैः । पाण्डवाः  
 पाण्डवैः सार्द्धं सर्वे ते चाश्वचारयन् ॥ ९ ॥ दशमेहनि संग्रामे ततस्तांस्त्रिषुवाहिनीम् ।  
 कीर्त्यमाणांशितैर्वाणैः शतशोयसहस्रशः ॥ १० ॥ न हि भीष्मं महेश्वासं पाण्डवाः  
 पाण्डुपूर्वज । अशक्नुवन् रणे जेतुं पाशद्वस्तमिवान्तकम् ॥ ११ ॥ अघोपावाग्नमहाराज  
 सव्यसाची घनउजयः । त्रासयन् रथिनः सर्वाङ् योमत्सुरपरजितः ॥ १२ ॥ सिंह  
 घद्गिनदन्तुर्चैर्धनुर्ग्याक्षिपन्मुहुः । शरीषाद् विभृजन् पार्थां व्यचरन् कालवज्रेण

की सामर्थ्य न था जो उन के सम्मुख जासके, संजयबोले कि हे भरतर्षभ युद्धमें लड़ते और मुसग्रन्थी वाले बाणों से शत्रुओं को मारने में इस भीष्मका न धनुष टूटा न रथ खंडितहुआ हे राजा आपके पुत्रोंकेलाखों महारथी, और हजारोंही अलंकृत हाथी घोड़े पितामह को आगेरुकरके युद्धकरनेके लिये सम्मुख वर्त्तमानहुए, उसयुद्धमें भी सत्य प्रतिज्ञ भीष्मजी ने अपने प्रणके अनुसार पाण्डवोंकी सेनाका बारंबार नाश किया, फिर पाण्डवों समेत उनसब पांचालदेशियों ने बाणों से बड़े ९ शत्रुओं के मारनेवाले युद्धमें प्रवृत्त धनुषधारी भीष्मको क्षमा न किया फिर दशवें दिनके वर्त्तमान होनेपर शिखंडी आदि हजारों शत्रुओंको सेनासमेत बाणोंसे पृथक् करदिया ॥ १० ॥ हे राजा युद्धमें पाण्डवमोग बड़े धनुषधारी भीष्मजी के विजय करनेको ऐसे नहीं समर्थहुए जैसे कि पाशधारी यमराजके विजयकरनेको कोई समर्थ नही, इसके पीछे सव्यसाची बाण फेंकनेवाला अर्थात् बायेंहाथसे भी बाण चलानेवाला सर्वसत्सारी घन का जीतनेवाला अजेय अर्जुन सबरथियोंको भयभीत करताहुआ सम्मुख आया, वह अर्जुन सिंहकेसमान ऊंचे स्वरसे गर्जना करके मृत्युचाको बारंबार दैवता और बाणोंकी

said Sanjaya in reply, " Bhishm's bow was not broken when he was discharging arrows to kill the enemies, nor was his chariot broken. Millions of your son's warriors and thousands of well decked elephants and horses followed the grandfather to do battle. In that battle too, Bhishm of true vows again and again destroyed the armies of the Pandavas. But the Pandavas and the Panchals did not spare Bhishm the destroyer of enemies having sharp arrows. On the tenth day of battle he dispersed thousands of the enemies, Shikhandi and others together with their armies. 10. The Pandavas could not conquer in battle the great archer Bhishm like Yam the bearer of noose. Then invincible Arjun the conquerer of wealth who could discharge arrows with both hands, came to the front terrifying the warriors. Roaring like a lion, twanging his bowstring again and again, and showering

॥ १३ ॥ तस्य शब्देन चित्रस्तास्तावका भरतर्षभ । सिंहस्येव मृगाराजन् व्यद्रवन्त  
महाभयात् ॥ १४ ॥ जयन्ते पाण्डवं दृष्ट्वा तव सैन्यञ्चामिपीडितम् । दुर्योधनस्ततो  
भीष्ममग्नवीरं भयपीडितम् ॥ १५ ॥ वपपाण्डुसुतस्तात श्वेताश्व कृष्णसारथिः । दहते  
मामकान्सर्वान् कृष्णवस्त्रं च काननम् ॥ १६ ॥ पश्य सैन्यानि गाह्ये द्रवमाणानि  
सर्वराः । पाण्डवेन युधांश्रेष्ठ काल्यमानानि संयुगे १७ ॥ यथा पशुगणान् पाल  
सङ्कलयति कानने । तथेदं मामकं सैन्यं काल्यते शत्रुतापन ॥ १८ ॥ धनञ्जयशरै  
र्भनं द्रवमाणं ततस्ततः । भीमोप्येव दुराधर्षो विद्रावयति मे वलम् ॥ १९ ॥ सास्य  
किञ्चेकिनान्धं माद्रीपुत्री च पाण्डवौ । अभिमन्युः सुविप्रान्तो, वाहिनीं द्रवतेमम २०  
धृष्टद्युम्नस्तथा शूरो राक्षसश्च घटोत्कचः । व्यद्रावयतां सहसा सैन्यं मममहारेण  
॥ २१ ॥ वध्यमानस्य सैन्यस्य, सर्वैरतेर्महारथैः । नान्याद्भुतिमपदयामि स्थाने  
वर्षा करतादुभौ, युद्धमे काल के समान आकर विचरतादुभौ, हे राजा आपके शूरवीर  
जसके शब्दसेही भयभीतहोकर बड़ीभयातुरतासे ऐसेभागे जैसेकि सिंहके शब्दसे मृग  
भागते है फिर विजय करनेवाले पाण्डवों को और आपकी पीड़ामान् सेनाको देख  
कर अत्यन्त दुखी दुर्योधन भीष्मजीसेबोला, हे तात यह श्वेत घड़ेवालाश्रीकृष्णजी  
को सारथीरखनेवाला पाण्डव अर्जुन मेरे सब शूरवीरों को ऐसे भस्मकिये डालताहै  
जैसे अग्नि वनको भस्मकरता है हे गांधेयभीष्मजी पाण्डवके हाथसे सबप्रकारसे छिन्न  
भिन्न युद्धसे भागीहुई सेनाओंको देखो, जेने कि वनमें गाय चराने वाला सब  
पशुओंके समूहोंको पृथक् २ कर के हांकता है इसी प्रकार यह शत्रुसंतापी मेरी  
सेनाको हांक छिन्नभिन्न करता है, अर्जुन के वाणोंसे विदीर्ण जहां तहां से भागी  
हुई मेरी सेनाको महादुर्जय भीमसेनभी वैसेही भगाता है, और सास्यकी चेकितान  
वा माद्री के पुत्र दोनों नकुल सहदेव और बड़ावली अभिमन्युयह सब मेरी सेनाको  
भगारहे हैं । २० । इसी प्रकार शूरवीर धृष्टद्युम्न और घटोत्कच राक्षसेभी मेरी  
सेनाको भगायाहै, हे भरतर्षभ देवताओंके समान बल रखनेवाले आपके सिवाय इन

his arrows, he roamed in the field of battle like Yama. Your warriors,  
O king, were terrified at his sound and ran away in terror as a flock  
of deer does at the roar of a lion. Then seeing the Pandavas con-  
quering and his army distressed, Duryodhan said to Bhishm—  
“Father, thus Arjun the Pandav possessor of white horses, having  
Kishkin for the driver, burns down all the warriors as fire burns a  
forest. Do you see, son of Ganga, our armies dispersed by the  
Pandav like a herd of cows driven by the herdsman. Wounded by  
Arjun's arrows and driven away in all directions, my armies are  
defeated by invincible Bhishma, Satyaki, Chekitan, the two sons of  
Madri—Nakul and Sahadev, and valiant Abhimanyu are all putting  
my armies to flight.” 20 In the same manner, valiant Dhrishtadyumna  
and Ghatotkacha the rakshas have caused the flight of my armies. O



युद्धे च भारत ॥ २२ ॥ ऋते त्वां पुरुष्याद्य देवतुष्याराक्रमम् । पर्याप्तस्तु  
मवान् शीघ्रं पीडितानां गतिर्मय ॥ २३ ॥ एवमुक्ता महाराज पिता देव  
व्रतस्तथ । चिन्तयित्वा मुहूर्त्तन्तु कृत्वा निश्चयमात्मनः ॥ २४ ॥ तथसन्धारं  
यन् पुत्रमग्रवीच्छन्तनोः सुतः । दुष्योधन विजानीहि स्थिरो भूत्वा  
विशाम्पते ॥ २५ ॥ पूर्वं कालं तव मया प्रतिज्ञातं महाबल । हत्वा दशसहस्राणि  
क्षत्रियाणां महात्मनाम् ॥ २६ ॥ संग्रायान्यपयातस्य मेतत् कर्म ममाह्निकम् । इति  
तत् कृतवान्माहं यथोक्तं भरतर्षभ ॥ २७ ॥ अद्य चापि महत् कर्म प्रकरिष्ये महा  
बल । अहं चाग्रहतः शेष्ये हनिष्ये चाद्य पाण्डवान् ॥ २८ ॥ अद्य ते पुष्यन्यात्र प्रति  
मोक्ष्ये ऋणन्तव । भर्तृपिण्डकृतं राज्ञस् निहतः घृतनामुखे ॥ २९ ॥ इत्युक्त्वा भरतश्रेष्ठ  
क्षत्रियान् प्रवपश्चरैः । आसत्साद दुराधर्यः पाण्डवानामनीकिनीम् ॥ ३० ॥ अनीक  
मध्ये तिष्ठन्तं गात्रिणं भरतर्षभ । आशीविषमिव कुर्वं पाण्डवाः प्रत्यवारयन् ॥ ३१ ॥

महारथियो से घायल हुई सेनाका कहीं कोई आश्रय नहीं दिखाई देता है हे  
पुरुषोत्तम आप समर्थ हैं इसमें शीघ्र ही इन महादुष्टियों के आश्रय हजिये हे राजा इस  
प्रकारसे कहे हुए आपके पिता देवव्रत भीष्मजी एक मुहूर्त्त तक शोचमें मग्न हो अपने  
निश्चयको करके, आपके पुत्र से मिलकर बोले कि हे राजा दुर्योधन तुम स्थिर  
बुद्धी से समझो, हे महाबली मैंने पूर्वमयमें तुम्हमें वचन पूर्वक प्रण कियाया कि  
दश हजार महात्मा क्षत्रियों को मारकर, युद्धसे पृथक् हूंगा, यह मेरा प्रतिदिनका कर्म है  
सो हे दुर्योधन मैंने अपने वचनके अनुसार उसको पूरा किया, और अब भी बड़े कर्मको  
करूंगा अर्थात् मैं मृतक होकर शयन करूंगा अथवा पाण्डवोंको मारूंगा हे राजा अब  
मैं स्वामी के ऋण से निवृत्त होकर सेनाके मुखपर मृतक होकर तैरे ऋण को चुका-  
ऊंगा, यह कहकर क्षत्रियोंको बाणों से आच्छादित करते हुए अजेय भीष्म ने  
पाण्डवों की सेनाको सम्मुख पाया ॥ ३० ॥ हे भरतर्षभ घृतराष्ट्र उस सेना में नियत  
सर्पके समान क्रोधरूप गांभीय भीष्मजी को पाण्डवों ने युद्धभूमि में आकर रोका,

best of Bharatas, possessor of godlike strength, I see no refuge for my;  
wounded warriors except yourself. : You have the power, best of men,  
protect therefore these distressed soldiers at once." Thus addressed,  
O king, your father Devabrat Bhishma remained plunged in thought  
for a short time, and then having formed a resolution in his mind, he  
said to your son—"Hear attentively, Prince Duryodhan. I have al-  
ready given you word, mighty one, that I shall leave the field of  
battle after slaying ten thousand warriors. This is my daily work  
and I have been doing it according to my promise. I shall do it  
again. I shall lie down dead or shall destroy the Pandavas. I shall  
now die at the entrance of the army after having satisfied the debt  
which I owe you as my master." Thus saying, he covered the  
warriors who encountered him with the shower of his arrows 30. O best

दशनेहनि भीष्मस्तु दर्शयन् शक्तिमात्मन । राजन् शतसहस्राणि सोवर्धात् कुरु  
नन्दन ॥ ३२ ॥ पञ्चालानाञ्च ये श्रेष्ठा राजपुत्रा महारथा । तेषामादत्त तंजांसि  
जले सूर्य इवांशुभिः ॥ ३३ ॥ हत्वा दशसहस्राणि कुञ्जरानां तरस्विनाम् । सा-  
रोहाणां महाराज हयानाञ्चायुतन्तथा ॥ ३४ ॥ पूर्णे शतसहस्रे द्वे पादातानांनरोत्तम ।  
प्रजज्वाल रगे भीष्मो विभूम्न इव पाथकः ॥ ३५ ॥ न चैव पाण्डवेयानां केचिच्छेकुर्नि  
रीक्षितुम् । उत्तर मार्गमास्थाय तपन्तमिव भास्करम् ॥ ३६ ॥ ते पाण्डवेयाः संरब्धा  
महेष्वासेन पीडिताः । घघायाभ्यद्रवन् भीष्मं सुञ्जयाश्च महारथाः ॥ ३७ ॥  
संयुध्यमानो बहुभिर्भीष्मं शान्तनवस्तथा । अवकीर्णो महामेरुः शैलो मेघैरिवावृत-  
॥ ३८ ॥ पुत्रास्तु तव गाङ्गेयं समन्तात् पर्यधारयन् । महत्या सेनया सार्द्धं ततो  
युद्धमधर्षत ॥ ३९ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि दुर्योधनभीष्म संवादे  
दशाधिकशतोऽध्यायः ॥ ११० ॥

हे धृतराष्ट्र दशवें दिन अपनी सामर्थ्य को दिखाते हुये उस भीष्म पितामह ने लाखों  
कोही मारवाला, पांचाल देशियों में जो श्रेष्ठ और महारथी राजकुमार थे उनके  
पंजों को ऐसे ऐंचलिया जैसेकि सूर्य अपनी किरणों से जलको लेंचता है, हे महाराज  
दशहजार शीघ्रगामी हाथियोंको और इतनेही सवारों समेत घोड़ोंको मारा पूरे एक  
लाख पदातियों के मरने पर भीष्मजी युद्ध में ऐसे क्रोधयुक्त हुए जैसे निर्धूम अग्नि  
होताहै, पाण्डवों के शूरवीरों में से कोई भी इस सूर्य समान संतप्त करनेवाले  
भीष्म के सम्मुख देखने को समर्थ नहीं हुआ, तब उस युद्ध में बड़े धनुषधारी से  
पीड़ामान् पाण्डवों के वह शूरवीर महारथी संजय भीष्म के मारने के निमित्त  
सम्मुख गये और जैसे कि बड़ा मेघ पर्वत बादलोंसमेत जाताहै वैसेही शतनु के  
पुत्र भीष्मभी अच्छे २ शूरवीरों समेत राक्षित होकर चले, फिर आपके पुत्रों ने  
यही सेना समेत भीष्मजी को चारों ओर से राक्षित किया और युद्धजारी हुआ । ३९ ।

of Bharats, standing in the midst of the army like an angry serpent  
the son of Ganga was checked by the Pandavas. Showing his  
prowess on that tenth day, the grandfather slew thousands of warriors  
He drew the energy out of the Panchal warriors as the sun with his  
rays draws out water. Having killed ten thousands of swift going  
elephants, ten thousands of horses together with their riders and a  
hundred thousand foot soldiers, Bhishm was enraged in battle like  
smokeless fire. None of the Pandav warriors could look at Bhishma's  
face glorious like the sun. Wounded by that great archer, the  
Pandav and Srinjaya warriors faced Bhishm in order to slay him.  
Like the huge Meru hill covered by clouds, Bhishm protected by  
good warriors, advanced. Your sons with a large army protected him  
and the battle continued." 39.

सञ्जय उवाच । अर्जुनस्तु रणे राजन् दृष्ट्वा भीष्मस्य विक्रमम् । शिखण्डिन  
मथोवाच समभ्येहि पितामहम् ॥ १ ॥ न चापि भीस्त्वया कार्य्या भीष्मादय फथ  
ञ्चन । अहमेन शरैस्तीक्ष्णैः पातयिष्ये रथोत्तमात् ॥ २ ॥ एवमुक्तस्तु पाथेन  
शिखण्डि भरतर्षभ । अभ्यद्रवत गाद्वेयं धृत्वा पार्थस्य भाषितम् ॥ ३ ॥ धृष्टद्युम्न  
स्तथा राजन् सौभद्रश्च महारथः । दृष्ट्वापाद्रवतां भीष्मं श्रुत्वा पार्थस्य भाषितम्  
॥ ४ ॥ विराटद्रुपदौ वृद्धौ कुन्तिभोजश्च दंशितः । अभ्यद्रवत गाद्वेयं पुत्रस्य तव  
पदपतः ॥ ५ ॥ नकुलः सहदेवश्च धर्मराजश्च वीर्यवान् । तथेतदाणि सैन्यानि  
संधाण्येव विज्ञानपते ॥ ६ ॥ समाद्रवन्त गंगेयं श्रुत्वापार्थस्यभाषितम् प्रत्युद्य युष्माकश्च  
समेतांस्तान्महाराजान् ॥ ७ ॥ यथाशक्ति यद्योत्साहं तन्मेनिगदत-धनुः । चित्रसेनो महा  
राज चेकितावं समभ्ययात् ॥ ८ ॥ भीष्मप्रेप्सुं रणेयान्तं हृषं द्वापशिशुर्यथा । धृष्ट

अध्याय ॥ १११ ॥

संजय बोले कि हे राजा फिर अर्जुन युद्धमें भीष्मके पराक्रमको देखकर शिख-  
ण्डी से बोला कि तुम पितामह के सम्मुख होजाओ, अब तुम भीष्मजी से किसी  
प्रकारका भय मत करो मैं इन भीष्मजी को अपने उत्तम वाणों के द्वारा रथसे  
विगराऊंगा हे राजा अर्जुन के ऐसे वचनको सुनकर वह शिखण्डी भीष्म के सम्मुख  
गया, और इसी प्रकार धृष्टद्युम्न और महारथी अभिमन्यु यह दोनोंभी अर्जुन के  
वचनों से प्रसन्न चित्त होकर भीष्मजी के सम्मुख गये, विराट और द्रुपद यह दोनों  
छद्म और शस्त्रों से अलंकृत राजा कुन्तभोज यह तीनों आपके पुत्रके देखते हुए  
भीष्मके सम्मुख गये, और नकुल सहदेव और पराक्रमी धर्मराज युधिष्ठिर और  
अन्य सब सेनाके लोगभी उनके सम्मुख गये, उससमय नकुल और सहदेव दोनों  
अर्जुनके वचनोंको सुनकर आपके पुत्रके देखते हुए भीष्मके सम्मुख दौड़े, फिर आप  
के शूखीरभी अपनासामर्थ्य और साहस के द्वारा उन इकट्ठेहुए महाभारतीयों के सम्मुख

## CHAPTER CXI

Sanjaya continued:—"Seeing the prowess of Bhishm, Arjun thus addressed Shikhandi, "You may now face Bhishm. You need not be afraid of him, for I shall with my arrows cause his fall from his chariot." On hearing these words of Arjun, Shikhandi faced Bhishm. In the same manner, Dhrishtadyumna and valliant Abhimanyu, much pleased at the words of Arjun, encountered Bhishm. Virat and Drupad, the two old warriors, and Prince Kuntbhoj adorned with weapons, encountered Bhishm in the presence of your sons. Nakul, Sahdev and Yudhishtir the just with other warriors also faced him. Nakul and Sahdev rushed against Bhishm on hearing the words of Arjun. Your warriors too, as far as it lay in their power, encountered

धुम्नं महाराज भीष्मान्तिक सुपागतम् ॥९॥ त्वरमाणं रणे यत्तं कृतवर्मा न्यधारयत् ।  
भीमसेनं सुसंकुद्धं गाङ्गेयस्य घघैषिणम् ॥ १० ॥ त्वरमाणो महाराज सोमदत्तिर्यधार  
यत् । तथैव नकुलं शूरं किरन्तं सायकान् बहून् ॥ ११ ॥ विकर्णो धारयामास रच्छन्  
भीष्मस्य जीवितम् । सहदेवं तथा राजन् यान्त भीष्मरथं प्रति ॥ १२ ॥ धारयामास  
संकुद्धः कृपः शारद्वतो युधि । राक्षसं क्रूरकर्माणं भैमसेनि महाबलम् ॥ १३ ॥ भीष्मस्य  
निधनं प्रेपुस्तं दुर्मुखोऽयद्रथद्वली । सात्यकिं समरेयान्तं तव पुत्रो न्यवारयत् ॥ १४ ॥  
अभिमन्युं महाराज यान्तं भीष्मरथं प्रति । सुदक्षिणो महाराज काम्बोजः प्रत्यधारयत्  
॥ १५ ॥ विराटद्रुपवी वृद्धौ समेतावरिमर्दनौ । अश्वत्थामा ततः द्रुदो धारयामास  
भारत ॥ १६ ॥ तथा पाण्डुसुतं ज्येष्ठं भीष्मस्य यधकाक्षिणम् । भारद्वाजो रणे यत्तो धर्म-  
पुत्रमधारयत् ॥ १७ ॥ अर्जुनं रमसयुद्धे पुरस्कृत्य शिखण्डिनम् । भीष्मप्रेपुस्तं महाराज

गये उनका वृत्तान्त मुझसे मुनो, हेमहाराज भीष्मकी रक्षाके निमित्त धिप्रसेनतो चेकि-  
तानके सम्मुख ऐसे गया जैसे कि व्याघ्रका बच्चा बैलके सम्मुख जाता है हे राजा  
भीष्मके समीप आयेहुए शीघ्रताकरनेवाले युद्धमें कुशल धृष्टद्युम्नको कृतवर्मा ने रोका  
। १० । और शीघ्रता करने वाले सोमदत्त ने भीष्मजी के मारने की इच्छा रखने  
वाले महाक्रोधित भीमसेनको रोका, इसीप्रकार भीष्मजी के जीवनके चाहनेवाले  
विकर्ण ने बहुत शायकोंके फेंकने वाले शूर नकुलको रोका, ऐसेही युद्ध में अत्यन्त  
क्रोधी शारद्वत कृपाचार्यने भीष्मके रथपर जातेहुए सहदेवको रोका । १३ । औरवल-  
वान् दुर्मुख उसभीष्मके मारनेमें प्रवृत्त भीमसेनके पुत्र घटोत्कच राक्षसके सम्मुख हुआ,  
और युद्धमें जाते हुए सात्यकी को आपके पुत्रने रोका और भीष्मके रथपर जाते हुए अ-  
भिमन्युको, राजा काम्बोज सुदक्षिण ने रोका और शत्रुओं के मारने वाले विराट् और  
द्रुपद दोनों वृद्धोंको क्रोध युक्त अश्वत्थामाने रोका हे राजा भीष्म के मारनेको उत्सुक

them. Hear of me what they did: for the protection of Bhishm, Chitrasen faced Chekitan as a lion's whelp faces an ox. Kritvarma checked Dhrishadyumn the dexterous in battle who was approaching Bhishm. 10. Somdatta hastened to check angry Bhim, desirous of slaying Bhishm. In the same manner, desirous of protecting Bhishm's life, Vikarna checked Nakul who was discharging many arrows. Likewise Kripacharya much enraged in battle, checked Sahadev advancing against the chariot of Bhishm 13. Valliant Durmukh faced Ghatotkach the son of Bhim desirous of slaying Bhishm. Your son checked the advance of Satyaki, and Sudakishin the king of camboj checked Abhimanyu's advance. Enraged Ashwathama checked the advance of Virat and Drupad the two old warriors. Dronacharya checked the advance of Pandu's eldest son, Yudhishtir the just desirous of slaying Bhishm, and the great archer

भासयन्त दिशी दश ॥ १८ ॥ दुःशासनो महेष्वासो वारयामास संयुगे । अन्ये च  
तावका योधाः पाण्डवानां महारथान् ॥ १९ ॥ भीष्मस्याभिमुखान्यातान् वारयामासु-  
राहवे । धृष्टद्युम्नस्तु सैन्यानि प्राक्रोशंस्तु पुनः पुनः ॥ २० ॥ अश्वद्रवतसंरम्भा भीष्म  
मेकं महारथः । एषोर्जुनो रणे भीष्मं प्रयाति कुरुनन्दन ॥ २१ ॥ अश्वद्रवत मामेष्ट  
भीष्मो हि प्राप्स्यते न वः । अर्जुनं समरे योद्धुं नोत्तमहेतायि वासव ॥ २२ ॥ किमु  
भीष्मो रणे वीरा गतसन्धाऽन्पजीवितः । इति सेनापतेः श्रुत्वा पाण्डवानां महारथाः  
॥ २३ ॥ अश्वद्रवन्त संहृष्टा गाङ्गेयस्य रथमग्रति । आगच्छमानान् समरे वार्योधान् प्रल-  
यन्ति २४ अचारयन्त संहृष्टास्तावकाः पुरुषर्षभाः । दुःशासनो महाराज भयं त्यक्त्वा  
महारथः ॥ २५ ॥ भीष्मस्य जीचिताकांक्षी धनञ्जयमुपाद्रवत् । तथैव पाण्डवाः दूरा

पांडुके वड़े पुत्र धर्मराज युधिष्ठिरको द्रोणाचार्यने भार शिखण्डी को आगे करके  
युद्धमें बेगवान् भीष्मको चाहने दशो दिशाओं के प्रकाश करनेवाले अर्जुनको वड़े  
धनुषधारी दुःशासनने रोका, और आपके अन्य दूरवीरों ने भीष्मके सम्मुख  
जाते हुए पांडवों के महारथियों को युद्धमें रोका । २० । इसके पीछे क्रोधयुक्त  
महारथी धृष्टद्युम्न अकेलाही बारंवार अपनी सेनाओं को इस रीतिने पुकारता हुआ  
भीष्मके सम्मुख गया, कि यह कौरवनन्दन अर्जुन युद्ध में भीष्मके सम्मुख जाता है  
समीप आजाओ इरोमन भीष्मही का नाशहोगा तुम्हारा नहीं होगा, युद्धमें  
अर्जुन से लड़ने को इन्द्रभी साहम नहीं करमक्ता है हे वरिष्ठयोगी फिर वह निर्वल  
थोड़ेजीवनवाला भीष्म युद्धमें क्याकरमक्ता है, पांडवों के महारथी सेनापति के इस  
वचनको सुनकर वह सब अत्यन्त प्रमत्त मनहोकर अर्जुनकेरथके समीप गये पुरुषोंमें  
श्रेष्ठ अत्यन्त प्रमत्त चित्तआपके दूरवीरों ने बहुतमी सामर्थ्योंसे युक्त वड़े पराक्रमी  
पोंके समानयुद्धमें आनेवानों को रोका, फिर भीष्म के जीवनका चाहनेवाला महा-  
रथी दुःशासन भयको त्यागकर अर्जुन के सम्मुख गया । इसीप्रकार दूरवीर पांडव

Dushasan checked Arjun who led by Shikhandi was desirous of  
killing Bhishm and who illumined the ten directions by his glory.  
Your other warriors checked the advance of the other warriors of the  
Pandavas ready to assail Bhishm 20. Then the enraged warrior  
Dhrishtadyumn alone faced Bhishm, saying again and again to his  
warriors:—" Arjun the joy of the Kauravas is advancing against  
Bhishm; come on never without fear; for Bhishm will be killed and  
not you. Even India has not the courage to fight against Arjun;  
what can Bhishm who is infirm and of small duration of life, do against  
him?" Hearing these words from the brave commander of the  
Pandav forces, they cheerfully approached the chariot of Arjun. Your  
warriors the best of men, bravely and cheerfully checked the advancing  
men Valliant Dushasan, desirous of protecting Bhushma's life  
fearlessly encountered Arjun In the same manner the brave Pandavas

माङ्गैरस्य रथमग्रति ॥ २६ ॥ अश्वद्वयन्त संग्रामे तव पुत्रान् महारथा । तत्राद्भुतमप  
 दयाम चित्ररूपं विशास्यते ॥ २७ ॥ तु शासनरथं प्राप्य यत् फलं नात्यवर्त्तत । यत्  
 वारयते वेला क्षुब्धतोय महार्णवम् ॥ २८ ॥ तथैव पाण्डव कुर्षं तव पुत्रो न्यवारयत् ।  
 उभौ तौ रथिनः श्रेष्ठावुभौ भारत दुर्जयो ॥ २९ ॥ उभौ चन्द्रार्कसदृशौ काग्रा द्वाप्या  
 च भारत । तथा तौ जातसरम्भावन्योन्यवधकाक्षिणौ ॥ ३० ॥ समीपतुर्महासंस्थे ऋष  
 शक्रौ यथा पुरा । तु शासनो महाराज पाण्डव विशिखैस्त्रिभिः ॥ ३१ ॥ वासुदेवश्च  
 विशत्या ताडयामास सयुगे । ततोऽर्जुनो जातमन्युर्वाष्पेणैव धीक्ष्य पीडितम् ॥ ३२ ॥ तु शा  
 सनं शतेनाजौ नाराचाना समार्षयत् । ते तस्य कवचं भित्त्वा पपु-शोणितमाह्वे ॥ ३३ ॥  
 दुःशासनस्त्रिभिः क्रुद्धः पार्थ-विन्वाध पत्रिभिः । ललाटेभरतश्रेष्ठ शरीरं सन्ततपर्वभिः ॥ ३४ ॥  
 ललाटस्थैस्तु तैर्वाणे शुशुभे पाण्डवो रणे । यथामेघमहाराज धृक्कैरत्यधमुच्छ्रितैः ॥ ३५ ॥

लोगभी भीष्मजी के रथकेपास आप के महारथी पुत्रोंके सम्मुखगये, हे राजा वह  
 हमने अपूर्व रूप के आश्चर्यको देखा कि अर्जुन ने दुःशासन के रथको पाकर  
 उल्लघन नहीं किया, जैमे कि मर्यादा वा किनारा जल से व्याकुल  
 समुद्रको रोकता है उसी प्रकार आपके पुत्र ने क्रोधयुक्त पाण्डव अर्जुनको रोका, वह  
 दोनों रथियों में श्रेष्ठ दुर्जय पुरुष शोभा और प्रकाश से चन्द्रमा और सूर्य के  
 समान विदित होतेये । ३० । इसी प्रकार वह दोनों क्रोधभरे परस्पर मारने के  
 इच्छावान् युद्ध में ऐसे बड़े जैसे कि पूर्व समय में यमराज और इन्द्र बड़ेये, फिर  
 दुःशासन ने विशिखनाम तीन बाणोंसे अर्जुनको और वासुदेवजी को  
 घायल किया, तदनन्तर क्रोधयुक्त अर्जुन ने श्रीकृष्णजी को पीड़ामान् देखकर  
 युद्धभूमि में नाराचनाम बाणों के एक सैकड़से दुःशासनको घायल किया उन  
 बाणोंने उसके कवचको काटकर उसके रुधिर को पिया फिर महाक्रोधी दुःशासन  
 ने गुप्तग्रन्थी वाले तीन वा पांचबाणोंसे अर्जुन को लगाटपर घायल किया उन

faced your sons near Blushma's chariot. The sight we saw there-  
 O king, was wonderfully strange: Arjun could not pass over Dusha-  
 san's chariot and your son checked the enraged Pandav Arjun, as the  
 coast does the troubled waters of the ocean. The two best of chariot  
 eers, on account of their beauty and glory, looked like the moon and  
 the sun 30. Thus the two enraged warriors, desirous of slaying  
 each other, advanced like Yam and Indra in the days of old. With  
 three sharp arrows Dushasan wounded Arjun and with twenty  
 he wounded Shri Krishn. Arjun, much enraged at the sight of  
 Krishna's wounds, discharged a hundred long shafted arrows at  
 Dushasan. They pierced through his armour and drank his blood.  
 Then Dushasan of exceedingly hot temper wounded Arjun on the  
 forehead with three and five arrows, and with those arrows stuck on

सोतिविद्धो महेश्वासः पुत्रेण तत्र घम्बिना । ध्याराजत् रणे पार्थः किंशुकः पुं-  
प चानिव ॥ ३६ ॥ दुःशासनन्ततः क्रुद्धः पीडयामास पाण्डवः । पर्वणीव मुसुक्रुद्धो  
राहुः पूर्णं निशाकरम् ॥ ३७ ॥ पीड्यमानो यत्नवता पुत्रस्तत्र विशागते । विष्याद्य  
समरे पार्थ कंकपत्रैः शिलाशितैः ॥ ३८ ॥ तस्य पार्थो घनदिडित्वा रथञ्चास्य त्रिभिः  
शरैः । आजघानततः पश्चात् पुत्रं ते निशितैः शरैः ॥ ३९ ॥ सौम्यतकामुकमादायभी  
मस्य प्रमुखे स्थितः । अर्जुनं पंच विंशत्या बाह्वोरुसिचापयत् ॥ ४० ॥ तस्य  
क्रुद्धो महाराज पाण्डवः शयुतापनः । अग्रैर्विद्विशिखान् घोरान् यमदण्डीपमान् बहून्  
॥ ४१ ॥ अप्राप्तानेव यान् बाणान् चिच्छेद् तनयस्तव । यतमानस्य पार्थस्य तदद्भु  
तमिषामयत् ॥ ४२ ॥ पार्थेव निशितैर्वर्षैरविष्यत्तनयस्तव । ततः क्रुद्धो रणे पार्थः

झकाटपर नियत बाणों से वह अर्जुन ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि अत्यन्त ऊंचे  
ऊंचे शिखरों से मेरु पर्वत शोभित होता है फिर वह बड़ा धनुषधारी अर्जुन आपके  
धनुषधारी पुत्र से अत्यन्त घायल होकर युद्धमें ऐसा शोभायुक्त हुआ जैसा कि  
फुल्लारुआ किंशुक वृक्ष होता है इसके पीछे अर्जुन ने उसक्रोधी दुःशासन को ऐसा  
पीड़ित किया, जैसे कि पर्वके दिन अत्यन्त क्रोधयुक्त राहु पूर्णवन्दमाको दुःखित करता  
है हे राजा पराक्रमी अर्जुनसे पीड़यमान आपके पुत्रने, कंकपत्रवाले शिलापर तीक्ष्ण  
किये हुए बाणों से अर्जुन को फिर पीड़यमान किया तबतो अर्जुन ने उसके धनुष  
को काटकर तीन बाणोंसे उसके रथको खंडित किया, उसके पीछे तीक्ष्ण बाणों  
से उसके शरीरको घायल किया फिर भीष्मके आगे नियत होकर उसने दूसरे  
धनुषको लेकर अर्जुन को पश्चीस २५ बाणों से भुजा और छातीपर घायल  
किया हे राजा फिर शत्रु संहारी क्रोधयुक्त अर्जुन ने उसके ऊपर यमराज के  
दण्ड के समान महाभयानक विशिख नाम बहुत से बाणों को चलाया तब आप  
के पुत्रने अर्जुन के उन बाणों को बीचमेंही काटा । ४२ । वह आश्चर्यसा हुआ

his forehead, Arjun looked glorious like mount Meru with its very  
high peaks. The great archer Arjun, excessively wounded by your  
son's arrows, looked beautiful like the Kinshuk tree in bloom. Then  
Arjun so wounded Dushasan of hot temper as on the day of full moon  
Rahu in its great rage harrasses the moon. Wounded by the darts  
of valliant Arjun, your son again wounded him with his sharp arrows  
having vulture feathers. Then having cut down his bow, Arjun  
broke his chariot with three arrows and pierced through his body with  
his sharp arrows. Then standing before Bhishm, Dushasan wounded  
Arjun with twenty five arrows on the breast and arms. Then, O  
king, Arjun the destroyer of foes, much enraged, discharged at him  
dreadful arrows like the staff of Yam, but your son cut them down  
in the way. 42. The sight was wonderful to behold. Then your

शरान् सन्धाय कर्मके ॥ ४३ ॥ प्रेययामास समरे स्वर्णपुष्पाञ्जलिशितान् ।  
न्यज्जंभते महाराज तस्य कावे महात्मनः ॥ ४४ ॥ यथा हसा महाराज तडामं  
प्राप्य भारत । पीडितदेव पुत्रस्ते पाण्डवेन महात्मना ॥ ४५ ॥ हित्वा पार्थरणे  
तूर्णं भीष्मस्य रथमाव्रजत् । अगाधे मज्जतस्तस्य द्वीपो भीष्मोऽभवत्तदा ॥ ४६ ॥  
प्रतिलङ्घ्य तत्र संज्ञा पुत्रस्तत्र विशास्यते । अचारयत्ततः शूरो भूयस्त्वपराक्रमा ॥ ४७ ॥  
शरैः सुनिशितैः पार्थ यथा वृत्रं पुरन्दरः । निर्विभेदं महाकायो विव्यधे नैव चार्जुनः ४८

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि अर्जुनदुःशासनसमागमे ।

एकादशाधिकशतोऽध्यायः ॥ १.११. ॥

फिर आपके पुत्र ने तीक्ष्णशरवाले बाणों से अर्जुन को व्यथित किया, इस के पीछे  
युद्धमें क्रोधभरे अर्जुन ने सुनहरी पुंखत्राले वा शिनापर धिमेहुए बाणों को धनुष  
पर चढ़ाकर युद्धमें फेंका, हे राजा वह बाण उसमहात्मा के शरीरमें ऐसे प्रवेश  
करगये जैसे कि तड़ाग को पाकर हंस प्रवेश करजाते हैं महात्मा पाण्डव के हाथ से  
पीडित आपकापुत्र युद्ध में अर्जुन को छोड़कर शीघ्रही भीष्मजी के रथके पास  
गया तब भीष्मजी उस अगाध जन के हूवेहुएको आधाररूप द्वीप होगये इसकेपीछे  
हे राजा आपके शूरवीर पुत्रने चैतन्यहोकर फिर महा तीव्र बाणों से अर्जुन को  
ऐसा दकदिया जैसे कि बड़े शरीरवाले इन्द्रने वृत्रासुर को आच्छादित कियाया  
उसके घायल करनेपरभी अर्जुन पीड़ामान् नहीं हुआ ४८ ॥

son wounded Arjun with sharp arrows. Thereupon Arjun, much  
enraged in the field of battle, put to his bow arrows sharpened on  
stone and furnished with gold feathers, and discharged them at him  
Those arrows pierced through the body of that great warrior as  
swans enter a lake. Wounded by the great Pandav your son left  
Arjun and hastened to approach Bhishma's chariot. Bhishma protect-  
ed him as an island protects a man fallen into deep sea. Then, O king,  
your valiant son, having regained his consciousness, again covered  
Arjun with very sharp arrows as Indra covered the big body of  
Vritrasur, but Arjun was not disturbed in spite of those wounds." 48.





सञ्जय उवाच ॥ सात्यकिं दशित युद्धे भीष्मायाभ्युद्यत रणे । आर्य्यशृङ्गिर्महोपा  
सो धारयामास सयुगे । १ ॥ माधवस्तु सुसकुदो राक्षस नयनि शरैः । भाजघान  
रणे राजन् प्रहसन्निव भारत ॥ २ ॥ तथैव राक्षसो राजन् माधव नयनि शरैः । अर्द्ध  
यामास राजेन्द्र सकुदः निशिपुद्गवम् ॥ ३ ॥ शैनेय शस्त्रघातु प्रेषयामास सयुगे ।  
राक्षसाय सुसकुदो माधव परवीरहा ॥ ४ ॥ ततो रक्षो महाबाहु सा पकि सरय रि  
क्रमम् । चिन्त्याध विशिखैस्तीक्ष्णैः सिंहनाद ननादच ॥ ५ ॥ माधवस्तु भूश पिदो राक्ष  
सेन रणे तदा । धार्यमाणश्च तेजस्वी जहासच ननादच ॥ ६ ॥ भगदत्तस्तत कुदो  
माधव निशितैः शरैः । नाडयामास समरे तार्क्षरिण्य महागजम् ॥ ७ ॥ विहाय राक्षस  
युद्धे शैनेयो रथिनांवर । प्राग्योतिषाय चिक्षेप शरान् सन्नत पर्वण । ८ ॥ तस्य  
प्राग्योतिषो राजा माधवस्य महजनु । चिच्छेद घातधारेण भस्मेन वृत्तहस्तयत् ॥ ९ ॥

अध्याय ११२ ॥

संजय बोले कि युद्ध में शस्त्रोंसे अलंकृत भीष्म के सम्मुख जाते हुए सात्यकी  
को बड़े धनुषधारी आर्य्यशृङ्गने युद्धभूमि में रोका, हे राजा फिर अत्यन्त क्रोधित  
और हँसते हुए सात्यकीने नौ बाणों से राजस को घायल किया, क्षीनकार अत्यन्त  
कोपयुक्त राजसने भी शिनिषों में भेष्ट सात्यकीको पीडित किया, फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त  
शङ्खुहन्ता सात्यकीने बाणोंकी वर्षा राजस परकी और राजसने तीक्ष्ण विशिखों से  
उस सत्यपराक्रमी महाबाहु सात्यकी को घायल करके बड़े सिंहनाद को किया,  
फिर राजसके हाथसे अत्यन्त घायल और रंकाहुआ महातेश्वी सात्यकीभी हँस  
हँस करगर्जा इमषीछे क्रोधयुक्त भगदत्तने तीक्ष्णशरोंसे सात्यकी को ऐसा घायल  
किया जैसे कि चावकों से बड़े हाथी को घायल करते हैं फिर रथियों में भेष्ट  
सात्यकी ने उस राजसको छोड़कर गुप्त ग्रन्थीवाले बाणों से राजा प्राग्योतिष  
को घायल किया और बड़े हस्त्रमावरी राजा प्राग्योतिषने उस सात्यकी के बड़े

## CHAPTER CXII

Sanjaya continued — "Aryashring the great archer checked Satyaki going in the field of battle against Bhishma armed with weapons. Then, O king, Satyaki much enraged, yet with a smile on his face, wounded the rakshas with nine arrows. In the same manner, the enraged rakshas wounded Satyaki the best of Shunis. Then Satyaki the destroyer of enemies, much enraged, showered his arrows over the rakshas, and the latter having wounded the former with his sharp arrows, roared a loud roar. Then much wounded by the rakshas and checked by him, Satyaki too laughed and roared. Then Bhagdatta in anger wounded Satyaki with his sharp arrows as an elephant with goads. Then Satyaki the best of charioteers left the rakshas and wounded the king of Pragjyotish with arrows having hidden knots. The king of Pragjyotish showed the swiftness

अथान्यदनुरादाय वेगवत् परगीरहा । भगदत्त रणेकुह विन्वाद्य निशिते शूरे ॥ १० ॥  
 सौतिविद्धो महेष्वास सुम्भिकर्णो परिसंलिहन् । शक्तिं कनकैर्दूर्य्य भूषिता मायसीं  
 दृढाम् ॥ ११ ॥ यमदण्डोपमां घोरां चिक्षेप परमाहवे । तामापतन्तीं सहसा तस्य  
 बाहुबलेरिताम् ॥ १२ ॥ सात्यकि समरे राजन् द्विधा चिच्छेद सायकैः । ततः  
 पपात सहसा महोत्केर हतप्रभा ॥ १३ ॥ शक्तिं विनिहतां दृष्ट्वा पुत्रस्तव विशाम्भ  
 ते । महता रथशेन पारयामास माघवम् ॥ १४ ॥ तथा परिवृत्त दृष्ट्वा बाणैः  
 यानां महारथम् । दुर्योधनो भृश कुक्षो भ्रातन् सर्वानुवाचह ॥ १५ ॥ तथा  
 कुक्षत कौरव्या यथा यः सात्यकी युधि । न जीवन् प्रति निर्याति महतोस्मात् रथ  
 प्रजात् ॥ १६ ॥ तस्मिन् हते हत मन्ये पाण्डवानां महद्बलम् । तथेति च बचस्तस्य  
 परिगृह्य महारथा ॥ १७ ॥ शैनेय बोधयामासुर्भीष्मायाश्च्युतरणे । काम्बोजराजो

धनुषको सौ धारवाले भल्ल से काटा, फिर उम शत्रुहन्ता ने दूसरे वेगवान् धनुष  
 को लेकर बड़े तीक्ष्ण बाणों से भगदत्त को घायल किया ॥ १० ॥ फिर इस अत्यन्त  
 घायल होठोंको चाबते बड़े धनुषधारीने सुवर्ण और वैदूर्यमणिसे अलंकृत यमराज  
 के दण्ड के समान महा भयानक लोहेकी दृढशक्ती को फेंका हे राजा उसके  
 हाथने भरित उस अकस्मात् गिरतीहुई शक्तीको सात्यकी ने अपने बाणों से दो  
 खण्ड कर के पृथीपर गिराया फिर आपके पुत्र ने शक्ती को दूराहुआ देखकर  
 बड़े रथों के समूहों से सात्यकी को घेरा फिर उस सात्यकी को घिराहुआ देखकर  
 अत्यन्त क्रोधयुक्त दुर्योधन अपने भाइयोंसेबोला, कि हे कौरवो अब ऐसा करो जिससे  
 कि सात्यकी हमारे इन रथसमूहोंसे जीवता न लौटे, उसके मरने पर मैं पाण्डवों की  
 बड़ी सेनाको भी मृतकही मानताहूं तब महाराथियों ने कहा कि ऐसाही होगा, यह  
 कहकर भीष्म केही आगे सात्यकीसे युद्धकिया और महाबली राजा काम्बोजने  
 भीष्मकी ओर जातेहुए युद्धमें प्रवृत्त अभिमन्युको रोका, अभिमन्युने गुप्त प्रणवीवाले

of his hand by cutting Satyaki's bow with a very sharp edged dart  
 Then that destroyer of enemies took up another bow and wounded  
 Bhagdatta with very sharp arrows 10. Then that great archer  
 much wounded and biting his lips in anger discharged a hard spear of  
 iron, like the staff of Yam decked with gold and jewels, but Satyaki  
 cut down into two pieces with his arrows the spear so hurled and  
 coming suddenly upon him Seeing the spear cut down, your son  
 surrounded Satyaki with a great many chariots Seeing Satyaki sur-  
 rounded by them, enraged Duryodhan said to his brothers —  
 "Kauravas! do so contrive that Satyaki may not leave the net work  
 of our chariots alive At his death I believe that all the army of  
 the Pandavas will be destroyed" The warriors said in reply  
 that they would do as they were told and began to fight against  
 Satyaki in the presence of Bhishm The mighty king of Kamboj

बलवान् धारयामास संयुगे ॥ १८ ॥ आर्जुनिर्नृपतिर्विध्वा शरैः सप्रत पयमिः । पुनरेव  
 चतुःपश्या राजन् विध्वाध तं नृप ॥ १९ ॥ सुदक्षिणस्तु समरे पुनर्विध्वाध पञ्चमिः ।  
 सारथिञ्चास्य नयमि रिच्छन् भीष्मस्य जीवितम् ॥ २० ॥ तद्युद्धमासीत् सुमहत्तयो  
 त्तत्रसमागमे । यदाश्वधावशङ्केयं शिखण्डी शत्रुर्कशनः ॥ २१ ॥ विराटद्रुपदौ वृद्धौ  
 धारयन्तौ महाचमूम् । भीष्मच युधि संरब्धा चाद्रुवन्तौ महारथौ ॥ २२ ॥ अश्वत्थामा  
 रणे क्रुद्धः समियाद्रथसत्तमः । ततः प्रवृत्ते युद्धं तयोस्तस्यच भारत ॥ २३ ॥ विराटो  
 दशभिर्मल्लै राजधान परन्तप । यतमानं महेष्यासं द्रौणिमाहयशोभिनम् ॥ २४ ॥  
 द्रुपदश्च श्रिमिर्योनेर्विध्वाध निशितैस्तदा । गुरुपुत्रं समासाद्य प्रहरन्तौ महाबलौ  
 ॥ २५ ॥ अश्वत्थामाततस्तौ तु विध्वाध बहुभिः शरैः । विराटद्रुपदौ धीरौ भीष्मं  
 प्रति समुद्यतौ ॥ २६ ॥ तत्राद्भुतमपदयाम वृद्धयोश्चरितं महत् । यद्द्रौणिषायकान्

बाणोंसे राजा को घायल करके चौंसठ बाणों से फिर व्यापिन किया, इसके अन  
 न्तर राजा सुदाक्षिण ने पांच बाणोंसे घायल करके नौ बाणों से उसके सारथी को  
 घायल किया । २०। वहाँ उन दोनोंकी सम्मुखतामें बड़ाभारी युद्ध हुआ और शत्रुहन्ता  
 शिखण्डी गांगेयजीकी ओर दौड़ा और युद्धमें क्रोधयुक्त महारथी दोनों विराट्  
 और द्रुपद उस सेना को हटातेहुए भीष्म की ओर की दौड़े तब महाक्रोधित महारथी  
 अश्वत्थामा उनके सम्मुखगया तदनन्तर उसके साथ उन दोनों का बड़ा युद्ध जारी  
 हुआ फिर राजा विराट् ने उस उपाय करनेवाले और युद्ध में शोभा पानेवाले बड़े  
 धनुषधारी अश्वत्थामाको दश भल्लों से घायल किया फिर द्रुपदने तीक्ष्ण धारवाले  
 तीन बाणों से घायल किया फिर वह दोनों गुरु के पुत्रको सम्मुख पाकर प्रहार  
 करने लगे, तदनन्तर अश्वत्थामाने उन भीष्मजी के ऊपर युद्ध में प्रवृत्त विराट् और  
 द्रुपदको अनेक बाणों से घायल किया । २६। वहाँ हमने उन दोनों वृद्धोंके बड़ेभारी

checked Abhimanyu who was coming towards Bhishm. Abhimanyu,  
 having wounded the king with his arrows having killed the archers,  
 pierced him again with sixtyfour arrows. Then king Sudakshin  
 wounded his coachman with five and nine arrows. 20. The two  
 warriors fought very hard. Shikhandi the destroyer of foes rushed  
 upon Bhishm and the two warriors Virat and Drupad, much enraged  
 in battle, rushed against Bhishm, pushing aside the armies. Then  
 valliant Ashwathama much enraged faced him and the two fought  
 very bravely. Then the king of Virat with ten darts wounded the  
 great archer Ashwathama and Drupad wounded him with three.  
 Then the two warriors finding themselves face to face with the son  
 of acharya, began smiting him with their arrows. Ashwathama then  
 wounded with many arrows the two warriors Virat and Drupad  
 advancing against Bhishm. 26. There we saw the bravery of the

घोषान् प्रत्येधारयतां युधि ॥ २७ ॥ सह देवं तथायान्तं कृप शारद्वतोभ्ययान् ।  
 यथा नागो घने नागं मत्तो मत्तनपाद्रवत् ॥ २८ ॥ कृपश्च समर शूरो माद्रीपुत्र  
 महारथम् । आजघान शरैस्तूर्ण सप्तत्यारुस्मभूयैः ॥ २९ ॥ तस्य माद्रीसुतश्चाप  
 द्विधा चिच्छेद सायकैः । अथेनं त्रिन्विजयान विज्याध नवभिः शरैः ॥ ३० ॥ सोम्यत्  
 कर्मकमादायसमरेभारसाधनम् । माद्रीपुत्रं सुसंहृष्टो दशभिर्भिषितैः शरैः ॥ ३१ ॥  
 आजघानो रसि क्रुद्ध इच्छन् भीष्मस्य जीवितम् । तथैव पाण्डवो राज्ञश्छात्रतम  
 मर्षणम् ॥ ३२ ॥ आजघानो रसि क्रुद्धो भीष्मस्य यद्यकः क्षया । तपोयुद्धं समभवत्  
 घोररूपं भयावहम् ॥ ३३ ॥ नकुलन्तु रणे क्रुद्धो विकर्णः शत्रुनापन । विज्याधसाय  
 कै पथ्या रक्षन् भीष्मं महाबलम् ॥ ३४ ॥ नकुलोपि भृशं विद्वत्तव पुत्रेण धीमता ।  
 विकर्ण सप्तसप्तत्या निर्विभेद शिलीमुखे ॥ ३५ ॥ तत्रतौनरशार्दूलौ भीष्महंतौ परन्तपौ ।

कर्मको देखा कि युद्ध में अश्वत्थामा के महाघोर भयानक बाणों को रोका, और  
 कृपाचार्यजी उस जातेहुए सहदेवके सम्मुख ऐंभे गये जैसे कि वन में मनवालाहाथी  
 मतवाने हाथी के सम्मुख जाताहै, वहां शीघ्रही शूरवीर कृपाचार्यने बड़े तीव्रमचर  
 बाणोंसे सहदेव को घायल किया, फिर नहदेव ने उनके धनुष के सह २ करके  
 नौ बाणों से उनको घायल किया । ३० । भीष्मके जीवन को चाहते उस प्रमत्त  
 चित्त और क्रोध में युक्त कृपाचार्य ने माद्रीनन्दन सहदेवको तीव्र दश बाणों मे  
 छाती के ऊपर घायल किया हे राजा इमप्रकार भीष्मके मारने की इच्छासे असह  
 क्रोध भरे सहदेव ने कृपाचार्यको भी छातीपर घायल किया तब उन दोनों  
 का महाघोर और भयानक युद्धहुआ, इसके पीछे शत्रुसंतापी युद्धमें क्रोधि  
 महाबली विकर्ण ने नकुलको सात बाणों से घायल किया तब आपके पुत्रमे अत्य  
 न्त घायल नकुलने भी सतत्तर शिलीमुख बाणोंमे विकर्णको घायल किया, फिर  
 उन शत्रुसंतापी वीरोंने भीष्मके कारण परस्पर में ऐंभे प्रहार किये जैसे कि गो-

two old kings in checking the flight of Aswathama's arrows. Kripa-  
 charya rushed upon Sahadev as one mad elephant in a forest ru hes  
 against another. Valant Kripacharya soon wounded Sahadev with  
 seventy sharp arrows. Sahadev in his turn cut his bow into pieces  
 and wounded him with nine arrows. 30 Desirous of protecting  
 Bhishma's life, cheerful minded and enraged, Kripacharya wounded  
 with ten swift arrows Sahadev the son of Madri in the breast. Desir-  
 ous of slaying Bhishm, uncearable and enraged, Sahadev wounded  
 Kripacharya on the breast and the two warriors fought very bravely  
 Then the destroyer of enemies, enraged in battle, the brave warrior,  
 Vikarn wounded Sahadev with seven arrows. Much wounded by  
 your son, Nakul, with seventy seven arrows sharpened on stone,  
 wounded Vikarn on the breast. Then these warriors, destroyers of  
 enemies, fought against each other on account of Bhishm like two

अन्योन्यं जघ्रतुर्वीरौ मांघ्रे गोदृषमाविच ॥ ३६ ॥ घटोत्कचं रणयान्तं निघ्नन्तं तद्यवादि  
जीम । दुर्मुखः समरे प्राचीद् भीष्महेतोः पराक्रमा ॥ ३७ ॥ हृदिभ्यस्तु रणं राजन्  
दुर्मुखं शत्रुतापनम् । आजघानोरभिः कुरुः शरेणानतपर्वणा ॥ ३८ ॥ भीमसेनमुतश्चापि  
दुर्मुखः समुल्लोः शरैः । पश्यावीरो नदन् दृष्टो विस्वाध रणमूर्खनि ॥ ३९ ॥ धृष्टद्युम्नं  
तथायान्तं भीष्मस्य वधकाक्षिणम् । हार्दिन्यो वारयामास रथश्रेष्ठे महारथ्यः ॥ ४० ॥  
हार्दिक्यः पार्थतवापि विध्वापञ्चभिराघसैः । पुनः पञ्चाशतानूर्णे तिष्ठ तिष्ठेति  
चाग्रवीत् ॥ ४१ ॥ आजघान महाबाहुः पार्थितं महारथ्य । नैवेव पार्थितो राजन् हार्दिक्यं  
नयभिः शरैः ॥ ४२ ॥ विस्वाध निशितंस्तीक्ष्णं कद्रुपश्चरजिह्वमैः । तयोः समभवद्युद्धं  
भीष्महेतुर्नामहाह्वयं ॥ ४३ ॥ अन्योन्याति शयेयुक्तं यथा वृत्रमहेन्द्रयोः । भीमसेनं तथा  
यान्तं भीष्मं प्रति महारथ्यम् ॥ ४४ ॥ भूरिश्रवाभययात्तूर्णे तिष्ठतिष्ठेति चाग्रवीत् । सीम

शाला में दो हथभण्डार करते हैं, भीष्म के कारण से पराक्रम करने वाला दुर्मुख  
युद्धमें आपकी सेनाको मारने वाले और घूँसे हुए घटोत्कच के सम्मुख गया  
। ३७ । फिरक्रोधयुक्त घटोत्कच ने गुप्तग्रन्थी वाले शरों से उस शत्रुसंतापी दुर्मुख  
को छातीपर घायल किया, फिर गर्जना पूर्वक प्रमत्त चित्त दुर्मुखने भी सुन्दर  
मुण्डाले माठ बाणों से भीमसेन के पुत्र घटोत्कचको घायल किया, इसीप्रकार  
मंडारधी कृतवर्मा ने भीष्मके मारनेकी इच्छा रखनेवाले रथियों में श्रेष्ठ जातेहुए  
धृष्टद्युम्न को रोका । ४० । फिर कृतवर्मानेभी पाँच तीक्ष्ण बाणोंसे धृष्टद्युम्नकोघायल  
करके पचास बाणों से शीघ्रही छाती में घायल किया, इसी प्रकार धृष्टद्युम्न ने  
तीक्ष्ण कंकपलवाले नौ बाणों से कृतवर्मा को घायल किया युद्धमें भीष्मके कारण  
उने दोनोंका ऐमांकटिन युद्धहुआ जैसेकि वृत्रामुर और इंद्रका हुआथा, इसीप्रकार  
भूरिश्रवा डर भीष्मकी ओर जाते महारथी भीष्मसेन के सम्मुख शीघ्रता से गया  
और तिष्ठ २ शब्द बोला, उसके पीछे सोमदत्त के पुत्र भूरिश्रवाने युद्ध में तीक्ष्ण

angry bulls in the fold. Showing his prowess for the sake of Bhishm,  
Durmukh faced Ghatotkach who was roarning there and destroying  
your armies 37. Enraged Ghatotkach wounded Durmukh the  
terror of enemies on the breast with arrows having hidden knots.  
Then with a roar Durmukh of cheafal spirit wounded Ghatotkach  
the son of Bhim with sixty arrows. In the same manner, Kritvarma  
checked Dhrishtadyumn the best of charioteers, desirous of slaying  
Bhishm 40. Kritvarma too, with five and fifty iron arrows  
wounded Dhrishtadyumn on the breast. In the same manner,  
Dhrishtadyumn wounded Kritvarma with nine sharp arrows  
having vulture quills. The two heroes fought for the sake of  
Bhishm like Indra and Vri'rassu. Bhurishrava encountered brave  
Bhim who was going towards Bhishm and stopped him with a  
stay, stay. Then Bhurishrava the son of Gandatta wounded Dhr-

दक्षिणोमीममाजघान सना-न्तरे ॥ ४५ ॥ नाराचेन धृतीक्षणेन द्रुमपुत्रेन सयुगे ।  
उरस्थेन वमौ तेन भीमसेन प्रतापवान् ॥ ४६ ॥ स्कन्दशक्त्या यथा ब्रौञ्च पुरा  
नृपतिसत्तम । तौ शरान् सूर्यसकाशान् कर्मारपरिमार्जितान् ॥ ४७ ॥ अग्न्योन्यस्य  
रणे क्रुद्धौ चिक्षिपते नरपमौ । भीमो भीष्मवधाकाक्षी सौमदत्तिं महारथम् ॥ ४८ ॥  
तथा भीष्मजये गृध्नु सौमदत्तिस्तु पाण्डवम् । कृतप्रतिकृते यत्तौ योधयामासत्तरणे  
॥ ४९ ॥ युधिष्ठिरन्तु कौन्तेय महत्या सेनयादृतम् । भीष्मामिममयमायान्त भारद्वाजो  
न्यवारयत् ॥ ५० ॥ द्रोणस्य रथनिर्घोष पर्जन्य निनदोपमम् । धृत्या प्रभद्रका  
राजन् समकम्पन्त मारिष ॥ ५१ ॥ सा सेना महती राजन् पाण्डुपुत्रस्य संयुगे ।  
द्रोणेन धरिता यत्ता न चचालपदात् पदम् ॥ ५२ ॥ चेकितान रणे यत्त भीष्म  
प्रति जनेदधर । चित्रसेनस्तथ सुन क्रुद्धरूपमधारयत् ॥ ५३ ॥ भीष्महेतो पराजान्त

सुनहरी पुंखवाले नाराच बाणसे भीमसेनको छती में घायल किया प्रतापवान् भीम  
सेन उस छाती पर नियत हुए बाणसे ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि पूर्व समयमें  
स्वामिकार्तिकजी की शक्तीसे कौचनाप पर्वत शोभायमान हुआ था, युद्धमें  
क्रोधयुक्त उन दोनों नरोत्तमों ने सूर्य के समान प्रकाशित और साफ किये हुए  
बाणों को परस्परमें फेका, फिर भीष्म के मारने की इच्छा रखने वाले भीमसेनने  
महारथी भूरिश्रवाको और भूरिश्रवा ने भीमसेन को घायल किया, महार पर  
महार करने में कुशल वह दोनों युद्धमें संग्रामकर्त्ता हुए फिर भारद्वाज द्रोणाचार्य  
जी ने बड़ी सेना समेत भीष्मके सम्मुख जाते हुए कुन्ती के पुत्र युधिष्ठिर को  
रोका हेराजा द्रोणाचार्य के रथका शब्द बादल के समान था उसको घुनकर  
॥ ५० ॥ प्रभद्रक नाम राजकुमार बड़े कम्पायमान हुए और पाण्डवों की वह  
बड़ी सेना बुद्धिमान द्रोणाचार्य से रोकी हुई चरण से एक पदभी चलाने वाली  
नहीं हुई और युद्धमें कुशल भीष्म के ऊपर कोप युक्त चेकितान को आप के पुत्र  
चित्रसेन ने रोका पराक्रमी चित्रसेन भीष्मजी के लिये पराक्रमकरने वाली हुआ हेराजा

son on the breast with sharp arrows having golden feathers With  
the arrows piercing his breast, Bhimsen looted glorious like Kraunch  
mountain pierced in the days of old with the spear of Lord  
Kartikeya Enraged in little the two best of men discharged at  
each other bright arrows glorious as the sun Bhim desirous of slay  
ing Bhishm wounded Bhurishrava and was himself wounded by him  
in return The two clever warriors fought valiantly Bharadvaj  
Dronacharya with his huge army checked the advance of Yudhish  
thir the son of Kunti The sound from the chariot of Dronacharya  
was like the peal of thunder on hearing which ( 50 ) the Prabhadraks  
shook with fear The large army of the Pandavas checked by  
Dronacharya, remained motionless Your son Chitrassen checked

चित्रसेनः पराक्रमी । चेकितान परं शक्या योधयामास भारत ॥ ५४ ॥ तथैवचोक्ति-  
तानोपि चित्रसेनमवारयत् । तद्युद्धमासीत् सुमहत् तयोस्तत्र समागमे ॥ ५५ ॥  
अर्जुनो धार्यमाणस्तु बहुशस्तत्र भारत । विमुखाद्विष पुत्रं ते सेनां तव ममर्हत्  
॥ ५६ ॥ दुःशासने पि परया शक्या धार्यमवारयत् । कथं भीष्मं ननो हन्यादिति  
निश्चित्य भारत ॥ ५७ ॥ सा वध्यमाना समरे पुत्रस्य तव वाहिनीः । सोऽप्यते-  
यधिभिः धैर्यस्तत्र तत्रैव भारत ॥ ५८ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि द्वन्द्वसमागमे  
द्वादशाधिकशतोऽध्यायः ॥ ११२ ॥

सञ्जय उवाच । अथ धीरो महोद्यासो मत्तवारणाविक्रमः । समादाय महोद्यायं  
मत्तवारणवारणम् ॥ १ ॥ विधुन्वानो नरश्रेष्ठो द्राव्यपाणो वरुचिनीम । पृतनां  
पाण्डवेपानां गाहमानो महायुध ॥ २ ॥ निमित्तानि निमित्तजः सर्वतो धार्य धी-

उस चित्रसेनने बड़ी सामर्थ्य से चेकितानसे युद्ध किया इसी प्रकार चेकितान ने भी चित्र-  
सेन को रोका, उस समय पर उन दोनों का युद्ध बहुत बड़ा हुआ और वहाँ पर रुके  
हुए अर्जुन ने बहुत प्रकार से, आपके पुत्र का सुत मोड़कर आपकी सेनाका मर्दन  
किया और दुःशासनने भी बड़ेपराक्रमसे यहनिश्चय करके अर्जुनको रोका कि  
यह किसी प्रकारसे हमारे पितामह भीष्मजीकी नहीं मारे हैभरतर्षभयुद्धमें आप के  
पुत्रकी वह घायल हुई सेना उत्तम २ स्थियों समेत जहाँ तहाँ अचेत होकर  
गिरी और भाग गई ५७ ॥

अध्याय ११३ ॥

सञ्जय बोले कि फिर बड़े धनुषधारी मतवाले हाथी के समान पराक्रमी  
नरोत्तम महाबली द्रोणाचार्य भी महागमेन्द्र के हत्यने वाले बड़े धनुष को लेकर  
सबको कंपाते सेना को घायल करते हुए पाण्डवी सेना को मक्काते संतप्त करते हुए

Chakitan who came furiously against Bhishm. Chakrasen did deeds  
of valour for the sake of Bhishm. The two warriors fought very  
bravely and checked each other. Their fighting was tremendous.  
Arjun checked there in his advance made your son turn back and  
destroyed your armies. Dushasan too, desirous of protecting  
Bhishm, checked Arjun. The army of your son wounded in battle  
fell senseless here and there or left the field of battle." 57.

### CHAPTER CXIII.

Sanjaya said: Then the great archer, full of prowess like a mad  
elephant, best of men, valliant Dronacharya took up his large bow  
capable of turning back a huge elephant, wounding and shaking the  
Pandav armies, and seeing signs on all sides, said to his son Ashwa-

यध्वान् । प्रतपन्तमनीकानि द्रोणः पुत्रमभाषत ॥ ३ ॥ अयं हि दिवसस्तात यत्र  
 पार्थो महाबलः । जिवांसुः समरे मीर्यं परं यत्नं करिष्यति ॥ ४ ॥ उत्पतन्ति  
 हि मे वाणा धनुः प्रस्फुरतीवच । योग मस्त्राणि गच्छन्ति हरे मे वसन्ते मतिः ॥ ५ ॥  
 दिव्यशान्तानि घोररागे व्याहरन्ति मृगछिजाः । नीचैर्गृध्रानि लीयन्ते भारतानां  
 चमूं प्रति ॥ ६ ॥ नटप्रभ इवादित्यः सर्वतो लोहिता दिशः । रसते द्ययते  
 भूमि कम्पतीव च सर्वशः ॥ ७ ॥ कङ्कुगृध्रा बलाकाश्च व्याहरन्ति मुहुर्मुहुः ।  
 शिवाश्चैवाशिवा घोरा वेद्यन्त्यो महद्भयम् ॥ ८ ॥ पपात महती चोल्का मध्ये  
 नादित्यमण्डलात् । सऋबन्वश्च पारथा मानुमावृत्य तिष्ठति ॥ ९ ॥ परिव्यस्तथा  
 घोरश्चन्द्रभास्करयोरभूत् । वेद्यानो भवं घोरं राक्षा देहावर्कचर्तनम् ॥ १० ॥ देव  
 तावततस्याथ कौरवेन्द्रश्च देवताः । कम्पन्ते च हसन्ते च सूर्यान्ति च रुदन्ति च ॥ ११ ॥

सब और से बिहनों को देखकर अपने पुत्र अश्वत्थामा से बोले । ३ । हे पुत्र  
 यह बड़ा दिन है जिसमें युद्धके बीच भीष्मको मारना चाहता महाबली अर्जुन बड़े २  
 उपायोको करेगा क्योंकि मेरे बाण उछलने हैं और धनुष कंपायामान होता है और अस्त्रयोग  
 को मान होने है और मेरी मति कूर्वर्त्तमान है दिशाओं में शांती मे रहित भयकारी पशु  
 पक्षी बोलने हैं और भरत शिश्यों की सेना में गृध्र नीच पक्षियों के साथ बैठे हैं । सूर्यप्रभासे  
 रहित हैं और दिशा सब आरमे लाल हैं और पृथ्वी सब प्रकार से शब्दायमान  
 और पी. डिन होकर कंपनी है कंक गृध्र और बलक वारम्बार बोलते हैं अशुभ  
 भयानक शृगाल बड़े भय को प्रकट करते हुए बोलते हैं सूर्यमण्डल में बड़े उल्कापात  
 होते हैं एतद्वं परितः सूर्य को ढककर नियत है इसी प्रकार चन्द्रमा और सूर्य  
 का भयकारी प्रदेश अर्बन्त पारस नाम मण्डल राजाओं के शरीरों का नाश कर  
 ने वाला महाभयको उत्पन्न करता हुआ वर्त्तमान हुआ है । १० । और राजा कुरु  
 के मन्दिर में विराजमान देवता कांपते हँसते नाचते और रोवते हैं ग्रहों ने सूर्य  
 को दक्षिण ओर चिह्न से रहित कर दिया और भगवान् चन्द्रमानीचे मुख होकर

thamr. " This is the day on which Arjun will try his best to kill  
 Bhishm in battle; for my arrows jump up, the bows shake and other  
 weapons offer resistance. My ideas are going wrong and the beasts  
 and birds in all directions utter ominous sounds. Vultures are perched  
 side by side with lower birds in the army of the Kauravas. The sun is  
 dim and the directions are all. The earth gives out sounds and signs  
 of trouble. Kank birds, vultures and herons cry again and again.  
 Ominous and dreadful jackals utter cries of distress. The sun's orb  
 is giving out large sparks of fire and a bar is seen hiding the sun.  
 The circles round the sun and the moon portend a dreadful slaughter  
 of kings. 10- The gods in the palace of the king of Kurus are  
 shaking, laughing dancing and weeping. The stars to the right of  
 the sun have changed their signs and the moon hangs down her face.



अपसृत्य ग्रहाध्वरुणरुद्रमाणां दिवाकरम् । अत्रात्रशिराश्च सङ्गा नृपातिष्ठन् चन्द्रमा-  
 ॥ १२ ॥ यूप्यि च नटे-द्राणां त्रिगतामानि लक्षये । घातंराशस्य संन्येषु नच भ्राजति  
 दक्षिता ॥ १३ ॥ सेनयोस्त्वग्योथापि समन्ताच्छयते महान् । पाञ्चजन्यस्य निर्घोषो  
 गाण्डीवस्य च निस्वन ॥ १४ ॥ ध्रुवमास्थाय शिमतसु रुचमास्त्राणि सयुगे ।  
 अपास्या न्यान् रणे योधानप्येष्यति पितामहम् ॥ १५ ॥ दृष्यन्ति रोमकृपाणि सीदतीत्र  
 च मे मन । चिन्तयित्वा महाबाहो भीष्माञ्जुनसमागमम् ॥ १६ ॥ तच्चेह निरु-  
 तिप्रश्न पाञ्चजन्य पापचैतसम् । पुरस्कृत्य रणे पार्थो भीष्मस्यायोधनं गत ॥ १७ ॥  
 अत्रैवाद्य पुरा भीष्मो नाह हन्या शिखण्डिनम् । स्त्री ह्येषा विहिता धाम्ना दैवाच्च  
 स पुन पुमान् ॥ १८ ॥ समद्भृत्यध्वजध्वज यादवसेनिर्महायलः । न चागद्भुदिके  
 तस्मिन् प्रहरेदापगामृत- ॥ १९ ॥ एतद्विचिन्तयानस्य मञ्जा सीदति मे भृशम् ।

वर्तमान हुए राजाओं के शरीर शोभा से रहित दीख रहे हैं वह शस्त्रपारी अलंकृत  
 राजा लोग दुर्योधन की सेनामें शोभायमान नहीं हैं दोनों सेनाओं में चारों ओर  
 को उसी पांचजन्य शंख और गाण्डीवधनुष के शब्द सुने जाते हैं निश्चय करके  
 वीर अर्जुन युद्ध में दिव्य अस्त्रों को धारण करके युद्ध करने वाले अ य शूर वीरों  
 को छोड़कर पितामह के सम्मुख जादगा, हे महाबाहु अश्वत्थामा भीष्म और  
 अर्जुन की सम्मुखता को शोचकर मेरेरोयें खड़े हुए जाते हैं और चिन्त भी  
 पीड़ामान् होता है वहां अर्जुन उस छत्री और पापात्मा शिखंडी को आगे करके  
 भीष्म के मारने को गयाहे पूर्व समय में भीष्मने कहा था कि मैं शिखंडी को नहीं  
 मारंगा क्योंकि उसको ईश्वर ने पहले स्त्री किया था फिर प्राग्ध मे पुरुष होगया  
 है, यह यज्ञसेन का पुत्र महावनी अशुभ ध्वजाशाला है इस हेतु से गांगेय भीष्मजी  
 उस अमान्य रूप पर प्रहार नहीं करेंगे यह विचारकर मेरेचित्त में बड़ा खेद होता

The faces of the king, have lost their splendour: the princes armed  
 and decked in the armies of Duryodhan donot look splendid. On all  
 sides and in both the armies are heard the sounds of the conch  
 Panchjanya and the bow Gaudiv. Surely brave Arjun, armed with  
 divine weapons, leaving other warriors aside, will face the grandfather  
 My hair, brave Ashwathama, stand on end when I think of the  
 encounter between Bhishma and Arjun. My mind is distressed to  
 think that Arjun under the cover of that deceitful and wicked  
 Shikhandi has gone to slay Bhishma. Bhishma has already said that  
 he will not lay hands on Shikhandi who was originally a woman  
 and turned to manhood as luck would have it. This son of Yajnasen is  
 of great strength and has ominous banner and therefore Bhishma will  
 not discharge his weapons at him. I am much distressed when  
 I happen to think of this. Shikhandi desirous of fighting and eager

यत्रात् । प्रतपन्मनीकानि द्राण पुत्रमभाषत ॥ ३ ॥ अथ हि दिवसस्तात यत्र  
 पार्थो महाबल । जिग्रासु समर मीमां पर यत्न करिष्यति ॥ ४ ॥ उत्पतन्ति  
 हि म बाणा वयु प्रस्फुरतीव च । योग मन्त्राणि गच्छन्ति हरे मे वृत्तते मति ॥ ५ ॥  
 दिव्यशान्तानि घोरान् व्याहरन्ति मृगहिजा । नीचैर्गुह्यानि लीयन्ते भारतना  
 चमू प्रति ॥ ६ ॥ नटप्रम इवादित्य सर्वतो लोहिता दिश । रसते ध्वजते  
 भूमि कम्पनीय च सवश ॥ ७ ॥ कङ्कुगुध्रा बलाकाश्च व्याहरन्ति मुहुर्महु ।  
 शिवाश्चैवाशिवा घोरा वेद्यन्त्यो महद्भयम् ॥ ८ ॥ पपात महती चोत्का मध्ये  
 नादित्यमण्डलात् । स रुच-वश्च पारथा आनुभाव्यतिष्ठति ॥ ९ ॥ परिववस्तथा  
 घोरश्च-द्रभास्करयोरभूत् । वेद्यमानो मय घार राक्षा देहावकर्त्तनम् ॥ १० ॥ देव  
 तायनतस्याव कौरव-द्रस्य देवता । कम्पन्ते च हसन्ते च नृत्यन्ति च ददन्ति च ॥ ११ ॥

सब और ते बिह्नो को देखकर अपने पुत्र अवस्थामा से बोले । ३ । हे पुत्र  
 यह वह दिन है जिसमें युद्धके बीच भीष्मको मारना चाहता महाबली अर्जुन बड़े २  
 उपायोंको करेगा क्योंकि मेरे पास उल्लङ्घनेहै और धन्य कपायमान होताहै और असुरयोग  
 को मानहोनेहै और मेरी मति कूर्त्तर्चनानहै दिशाओंमें शांतीमें रहित भयकारी पशु  
 पत्नी योग्यते, और भरतशिश्योंकी भेनामे गृध्र नीच पक्षियोंके साथ बैठे है । सूर्यप्रभासे  
 रहित है और दिशा मय औरमे लालहै आर पृथ्वी सब प्रकार से शब्दायमान  
 और पी डेन होकर कापनी है कम गृध्र और बलक बारम्बार बोलते हैं अशुभ  
 भयानक शृगाल बड़े भय को प्रकट करत हुए बोलतेहैं सूर्यमण्डलमें ते बड़े उल्कापात  
 होते हैं एक वय परित्र सूर्य को ढककर नियत हैं इसी प्रकार, चन्द्रमा और सूर्य  
 का भयकारी प्रदेश अर्थात् पारस नाम मण्डल राजाओं के शरीरों का नाश कर  
 ने वाला महाभयको उत्पन्न करता हुआ वर्त्तमान हुआ है । १० । और राजा कुरु  
 के मन्दिर में विराजमान देवता कांपते हंसते नाचते और रोवते हैं ग्रहों ने सूर्य  
 को दक्षिणहोकर चिह्नसे रहित कर दिया और भगवान् च दमनीचे मुख होकर

tham This is the day on which Arjun will try his best to kill  
 Bhishm in battle, for my arrows jump up the bow shafts and other  
 weapons offer resistance. My ideas are going wrong and the beasts  
 and birds in all directions utter ominous sound. Vultures are perched  
 side by side with other birds in the army of the Kauravas. The sun is  
 dim and the directions are lost. The earth gives out sounds and signs  
 of trouble. Kind birds, vultures and herons cry again and again.  
 Ominous and dreadful noises utter cries of distress. The sun's orb  
 is giving out large sparks of fire and a bar is seen hiding the sun.  
 The circles round the sun and the moon portend a dreadful slaughter  
 of King Duryodhana. The gods in the place of the king of Kurus are  
 shaking, laughing, dancing and weeping. The stars to the right of  
 the sun have changed their signs and the moon hangs down her face.

अपसव्य ग्रहायकुरलक्ष्माणं दिवाकरम् । अवाकुशिरात्र मग्धा नृपातिष्ठत चन्द्रमाः  
 ॥ १२ ॥ यूपं च नरेन्द्राणां विगतामानि लक्षये । घातैराग्रस्य सैन्येषु न च भ्राजति  
 दंशिताः ॥ १३ ॥ सेनयोस्मयोथापि समन्ताच्छ्रूयते महान् । पाञ्चजन्यस्य निर्घातो  
 गाण्डीवस्य च निःस्वनः ॥ १४ ॥ ध्रुवमास्याय शिमत्सु रुक्तामस्त्राणि संयुगे ।  
 अपास्या न्यान् रणे योधानस्येष्यति पितामहम् ॥ १५ ॥ दृष्यन्ति रोमकूपाणि सीदतीव  
 च मे मनः । चिन्तयित्वा महाबाहो भीष्माहुनसमागमम् ॥ १६ ॥ तच्चेह निरु-  
 त्तिप्रशं पाञ्चाल्यं पापचेतसम् । पुरस्कृत्य रणे पार्थो भीष्मस्यायोधनं गतः ॥ १७ ॥  
 अत्रैवाच्च पुरा भीष्मो नाहं हन्यां शिराण्डिनम् । स्त्री ह्येषा विहिता धाया दैवारुच-  
 स्त पुनः पुमान् ॥ १८ ॥ समद्रव्यध्वजश्चैव यावत्सेनिर्महायलः । न चामद्रविके  
 तस्मिन् प्रहरेदापगामुतः ॥ १९ ॥ एतद्विचिन्तयानस्य मञ्जा सीदति मे भृशम् ।

वर्तमान हुए राजाओं के शरीर शोभा से रहित दीख रहे हैं वह शस्त्रधारी असंक्रुत  
 राजा लोग दुर्योधन की सेनामें शोभायमान नहीं हैं दोनों सेनाओं में चारों ओर  
 को उसी पांचजन्य शंख और गाण्डीवधनुष के शब्द सुने जाते हैं निश्चय करके  
 वीर अर्जुन युद्ध में दिव्य अस्त्रों को धारण करके युद्ध करने वाले अन्य शूर वीरों  
 को छोड़कर पितामह के समुत्त जादगा, हे महाबाहु अश्वत्थामा भीष्म और  
 अर्जुन की सम्मुखता को शोचकर मेरेसे सड़े हुए जाते हैं और चित्त भी  
 पीड़ामान होता है वहां अर्जुन उस छली और पापात्मा शिखंडी को आंग करके  
 भीष्म के मारने को गया है पूर्ण समय में भीष्मने कहा था कि मैं शिखंडी को नहीं  
 मारूंगा क्योंकि इसको ईश्वर ने पहले स्त्री किया था फिर प्रारब्ध से पुरुष होगया  
 है, यह यज्ञसेन का पुत्र महावली अशुभ ध्वजावाला है इस हेतु से गांगेय भीष्मजी  
 उस अमंगल रूप पर प्रहार नहीं करेंगे यह विचारकर मेरेचित्त में बड़ा खेद होता

The faces of the kings have lost their splendour: the princes armed and decked in the armies of Duryodhan donot look splendid. On all sides and in both the armies are heard the sounds of the conch Panehjanya and the bow Gandiv. Surely brave Arjun, armed with divine weapons, leaving other warriors aside, will face the grandfather. My hair, brave Ashwathama, stand on end when I think of the encounter between Bhishm and Arjun. My mind is distressed to think that Arjun under the cover of that deceitful and wicked Shikhandi has gone to slay Bhishm. Bhishm has already said that he will not lay hands on Shikhandi who was originally a woman and turned to manhood as luck would have it. This son of Yajnyasen is of great strength and has ominous banner and therefore Bhishm will not discharge his weapons at him. I am much distressed when I happen to think of this. Shikhandi desirous of fighting and enrag-

अभ्युद्यतोरणे पार्थः कुरुवृद्धमुपाद्रवत् ॥ २० ॥ युधिष्ठिरस्य च क्रोधो भीष्मश्चा  
 र्जुनसङ्गतः । मम चास्त्रं समारम्भं प्रजानामशिवं ध्रुवम् ॥ २१ ॥ मनस्वी धलवान्  
 शूरः कृतास्त्रो लघुविक्रमः । दूरपाती दृढेयुश्च निमित्तज्ञश्च पाण्डवः ॥ २२ ॥ अजेयः  
 समरे चापि देवैरपि सवासवैः । बलवान् बुद्धिमान्धैव जितक्लेशो युधावहः ॥ २३ ॥  
 विजयी च रणे नित्यं भैरवश्च पाण्डवः । तस्य मार्गं परिहरन् द्रुतं गच्छ यतव्रतः  
 ॥ २४ ॥ पश्याद्यैतन्महाघोरे संयुगं वैशसं महत् । हेमश्चित्राणि शूराणां महान्तित्व  
 शुभानि च ॥ २५ ॥ कथंचान्य घदीर्यन्ते शरैः सश्रतपर्वभिः । छिद्यन्ते च  
 ध्वजाग्राणि तोमराश्च धनुषि च ॥ २६ ॥ प्रासादश्च विमलाम्भीक्ष्णाः शक्यस्यश्च  
 कनकोज्ज्वलाः । घैजयन्त्यश्च नागानां संयुद्धेन किरिटिना ॥ २७ ॥ नायं संरक्षितुं

है युद्धमें प्रवृत्त चित्त क्रोधभरा शिखंडी भी कौरवों के दृढ़ पितामह भीष्मजी के  
 सम्मुख गया है । २० । युधिष्ठिर को क्रोध और अर्जुन से सम्मुख हुआ भीष्म  
 और यहाँपर मेरा युद्धसम्बन्धी कर्मका प्रारम्भ यह सब बातें निश्चय करके  
 मजानों के अकल्पण की करनेवाली हैं, पांडव अर्जुन साहसी पराक्रमी शूरीर  
 अस्त्र शस्त्रों का ज्ञाता बड़े तीक्ष्ण दूर गिरने वाले बाणोंका फेंकनेवाला और लक्ष्य  
 भेदी अर्थात् लक्ष्य का जाननेवाला है, यह अर्जुन इन्द्र समेत देवताओं से भी  
 युद्धमें दुर्जय और अजेय है और पराक्रमी बुद्धिमान् दुःख रोगादि का जीतने  
 वाला शूरीरोंमें श्रेष्ठ युद्धमें सदैव विजयी और भयकारी अस्त्रोंका फेंकने वाला है  
 हे सावधान व्रत पुत्र तुम अर्जुन के मार्ग को रोकते हुए शीघ्र जाओ अब इस  
 महा भयकारी युद्धमें इस बड़े नाश को देखो शूर लोगों के कवच जो सुवर्ण से  
 जड़ित और बड़े मंगल स्वरूप हैं वह सब गुप्तग्रन्थी वाले बाणों से तोड़े जाते हैं और  
 ध्वजा तोमर धनुषभी खंड २ किये जाते हैं, और अत्यंत क्रोधयुक्त अर्जुन के हाथ  
 से साफ और तेजप्राप्त और सुवर्ण के समान उज्ज्वल शक्तिपां और हाथियों

ed in battle has also gone to face the grandfather. 20 . Yushthir's  
 anger, Arjun's encounter with Bhishm and my fighting here all these  
 things portend ill to the people. Arjun the Pandav is courageous,  
 strong, valliant and clever in the use of weapons and he throws his  
 sharp arrows far and hits the mark. Arjun is invincible by Indra  
 and other gods. He is full of prowess, wise, conquerer of pain and  
 sickness, best of warriors, ever conquering, terror-striking and dis-  
 charger of weapons. Haste, son, check Arjun's advance and see  
 the dreadful slaughter in battle. The armours of the warriors, gold  
 bedecked and of beautiful make, are being pierced by arrows having  
 hidden knots and the banners, tomars and bows are being broken  
 into pieces. Sharp prases, spears bright as gold, and banners on  
 elephants are being cut down by Arjun. It is no time, my son to  
 remain idle and to rely on the assistance of others Think of heaven

कालः प्राणान् पुष्पोपजीविभिः । याहि स्वर्गं पुरस्कृत्य यशसे विजयाय च ॥ २८ ॥  
 रथनागहवायर्चा महाघोरां सुदुर्गमाम् । रथेन संप्रामनर्द्यां तरत्येव कपिध्वजः ॥ २९ ॥  
 ब्रह्मण्यता दमो दानं तपश्च चरितं महत् । इहैव दृश्यते पार्थे भ्राता यस्य धनञ्जयः  
 ॥ ३० ॥ भीमसेनश्च बलवान् माद्रीपुत्रौ च पाण्डवौ । वासुदेवश्च धार्म्यो यस्य  
 नाथो व्यवस्थितः ॥ ३१ ॥ तस्यैव मन्थुप्रभवो पार्श्वराष्ट्रस्य पुर्मतेः । तपोदग्ध  
 शरीरस्य कोपो दहति भूरतीम् ॥ ३२ ॥ एव संहृद्यते पार्थो वासुदेवव्याथयः ।  
 वारयन् सर्वसैन्यानि घातराश्याणि सर्वशः ॥ ३३ ॥ एतदालोक्यते सैन्यं सोऽथ  
 माणं किरीटिना । महोर्मिनखं सुमहत्तिमिनेव महाजलम् ॥ ३४ ॥ हाहाकिलकिला  
 शब्दाः श्रूयन्ते च समुद्ये । याहि पाञ्चालदायाद महं यास्ये युधिष्ठिरम् ॥ ३५ ॥  
 दुर्गमं हन्तर राक्षो ब्यूहस्यामिततेजसः । समुद्रकुक्षिप्रतिमं सर्वतोतिरथैः स्थितैः

की वैजयन्ती भर्त्याव पनाका दूरही है हे पुत्र दूसरेके आश्रयसे समयव्यतीत करने  
 वालोंसे प्राणोंकी रक्षा करनेका यह समय नहीं है स्वर्गको मुख्य करके यश और  
 विजयकेनिमित्ततुमजाओ, यह वानरध्वज अर्जुन।पकेद्वारा हाथी घोड़े और रथोंसे  
 लहराती बड़ीभयकारी अतिअगम्य युद्ध रूपी नदीको तरता है, इसलोकमें युधिष्ठि-  
 रहीमें कियाहुआ बड़ाभारी तप दान वा धिचकी शान्ती और ब्राह्मणोंकी रक्षा  
 करना दृष्ट पड़ता है जिसकेभाई अर्जुन । ३० । वा महाबली भीमसेन वा माद्री के  
 पुत्र नकुल सहदेव और नाथ वासुदेवजी वर्तमाननहीं । ३१ । उस दुर्बुद्धी जल  
 कुक्कुड़ दुर्योधनके अभिमान से उत्पन्न यह तप रूप क्रोध भरतवंशियों की सेना को  
 भस्मकरे डालताहै, यह वासुदेवजी का आश्रय रखनेवाला अर्जुन दुर्योधनकी सय  
 सेनाओं को सब रीतिसे छि न भिन्न करता विदितहोरहाहै, यह सबसेना अर्जुनके  
 हाथसे व्याकुल बड़े तरंगोंसे युक्त नानामकारके जलजीवोंसे व्याकुल समुद्रकी समान  
 देखनेमें आती है, हाथ हाथऔर कलकलाशब्द सेना के मुखपर सुने जातेहैं तुमराजा  
 हुपद के पुत्र धृष्टद्युम्न के सम्मुख जाओ मैं युधिष्ठिर के सम्मुखजाऊंगा । ३५ ।

and go for victory and fame. Arjun of monkey's standard is crossing by means of his chariot the dreadful and hard-to-cross river having elephants, horses and chariots for its tides. It appears that Yudhishtir alone is the seat of penances, charity, peace of mind and protection of Brahmans. He has on his side his brothers Arjun, valliant Bhimson and Nakul and Sahadev the sons of Madri and Vasudev the lord of all<sup>31</sup>. Produced by the folly of the unwise waterfowl Duryodhan, this ascetic anger will consume all the armies. Arjun, relying on the help of Vasudev, is dispersing the Kaurav armies. All these armies are disturbed by Arjun like an angry sea with big waves and aquatic animals. The sounds of grief and anger are prominent throughout the armies You may go and face Dhrishtadyumn the son of Drupad and I shall encounter Yudhishtir.<sup>35</sup>

॥ ३६ ॥ सत्यकिश्वाभिमन्युश्च धृष्टद्युम्नवृकोदरौ । पर्यरन्त राजानं यमौ च  
मनुजेश्वरम् ॥ ३७ ॥ उपेन्द्रसदृश इयमो महाशाला इवोद्गतः । एष गच्छत्यनी  
काग्रे द्वितीय इव फाल्गुनः ॥ ३८ ॥ उत्तमास्त्राणि चाधत्स्व गृहीत्वा च महद्भुजः ।  
पार्यन्तं याहि राजानं युध्यस्व च वृकोदरम् ॥ ३९ ॥ कोहि नेच्छेत् प्रियं पुत्रं जी-  
घन्ते शाश्वतीः समाः । क्षत्रधर्मेन्तु सम्प्रेक्ष्य ततस्त्वां नियुतम्बहम् ॥ ४० ॥  
एष चाति रणे भीमो दहते वै महाचमूम् । युद्धेषु सदृशस्तात यतस्य  
घरुणस्य च ॥ ४१ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि द्रोणाश्वत्थामसंवादे

त्रयोदशाधिकशतोऽध्यायः ॥ ११३ ॥

सञ्जय उवाच । भगदत्तः कृपः शल्यः कृतवर्मा तथैव च । विन्दानुविन्दावावन्त्यौ  
सिन्धुवध जपद्रुयः ॥ १ ॥ विश्वसेनो विकर्णश्च तथा दुर्मर्षणादयः । दशैते तावका योधा

यड़े तेजस्वी राजा युधिष्ठिर के बड़े ब्यूहका मध्य सब ओरको नियत अति  
राथियों से समुद्रकी कुत्तिके समान कठिनतासे पार उतरने के योग्य है, सात्यकी  
अभिमन्यु धृष्टद्युम्न भीमसेन नकुल सहदेव इन सब ने राजा युधिष्ठिर की चारों  
ओर से रक्षित किया है, निष्णु के समान इयाम यड़े शालि वृक्षके समान ज्वनन  
दूसरे भर्जुन के समान यह शूरवीर सेना के आगे जाता है, इससे तुम बड़े धनुषको  
ले उत्तम अस्त्रोंको धारणकर राजा धृष्टद्युम्न के सम्मुख जाकर भीमसेनसे लड़ो,  
कौनसामनुष्य अपने प्यारे पुत्रको सदैव चिरंजीवी नहीं चाहता है मैं क्षत्रीधर्म को  
देखकर उसके कारण से तुम को आज्ञा देताहूँ कि ॥४०॥ यह भीम महायुद्ध में बड़ी  
सेनाको नाश करताहै हेपुत्र यह भीमसेन युद्धमें यमराज और वरुणके समानहै ॥४१॥

अध्याय ११४ ॥

संजय बोले कि उस महात्मा द्रोणाचार्यके इसवचनको सुनकर भगदत्त कृपा  
चार्य शल्य कृतवर्मा विन्द अनुविन्द अवन्तिदेश के राजालोग वा सिन्धु का राजा

The centre of glorious Prince Yudhishtir's array, having brave warriors on all sides, is hard to cross like the ocean. Satyaki, Abhimanyu, Dhrishtadyumna, Bhimsen, Nakul and Sahadev protect prince Yudhishtir on all sides. Dark-skinned like Vishnu, tall as a *sal* tree and brave like a second Arjun is the commander of the armies. You may go armed with your good weapons and with your bow encounter Dhrishtadyumna and Bhimsen. What man will not wish long life to his son; but I, firm on Kshatrya duty, send you against Bhim who is destroying this large army in the field of battle like Yamraj or Varun. 41.

#### CHAPTER CXIV

Sanjaya continued:—" Having heard the words of Dronacharya, Bhagdatt, Kripacharya, Shalya, Kaitvama, Vind, Anuvind, the

भीमसेनमयोधयन् ॥ २ ॥ महत्या सेनया युक्ता नानादेशसमुत्थया । भीष्मस्य समरे  
राजन् प्राययाना महद्यथाः ॥ ३ ॥ शल्यस्तु नवमिवाणभीमसेनमताडयत् । कृतवर्मा  
त्रिभिर्वाणैः कृपश्च नवभिः शरैः ॥ ४ ॥ चित्रसेनो विकर्णश्च भगदत्तश्च मरिच्य । दशभि  
र्हृदमिवाणैर्भीमसेनमताडयन् ॥ ५ ॥ संधवश्च त्रिभिर्वाणैर्भीमसेनमताडयत् । बिन्दानु  
बिन्दाचावन्त्यौ पञ्चभिः पञ्चभिः शरैः ॥ ६ ॥ दुर्मर्षणस्तु विंशत्या पाण्डवं निशितैः  
शरैः । स तान् सर्वान् महाराज राजमानान् पृथक् पृथक् ॥ ७ ॥ प्रवीरान् सर्वलोकस्य  
यात्तराणान् महारथान् । जघान समरे वीरः पाण्डवः परबोहरहा ॥ ८ ॥ सप्तभिः शल्य  
मविष्यत् कृतवर्माणमष्टभिः । कृपस्य सशरं चापं मध्ये चिच्छेद् भारत ॥ ९ ॥ अयं न  
छिन्नधन्वाने पुनर्विध्याधसप्तभिः । बिन्दानुबिन्दा च तथा त्रिभिस्त्रिभिस्ताडयत् ॥ १० ॥

जयद्रथ चित्रसेन विकर्ण दुर्मर्षण आदि आपके इन दश शूरवीरों ने युद्ध किया, वह  
राजा लोग नानाप्रकार के देशों में उत्पन्न होनेवाले वही सेना समेत थे और  
भीष्म के बड़े यशको चाहनेवाले थे उनमें से शल्य ने नौ बाणों से कृतवर्मा ने तीन  
बाणों से कृपाचार्य ने नौ बाणों से भीमसेनको घायल किया और चित्रसेन भगदत्त  
और विकर्ण ने दश २ बाणों से जयद्रथ ने तीन बाणों से व्यथित किया । ५ ।  
और अवन्ति देशके राजा बिन्द अनुबिन्द ने पांच २ बाणों से और दुर्मर्षणने  
तीक्ष्णधारके वीम बाणों से भीमसेन को घायल किया, हे महाराज फिर उन सब  
पृथक् शोभायमान महाभारती धृतराष्ट्र के पुत्रोंको, युद्ध में घायलकरके शत्रुओं  
के मारनेवाले वीर पाण्डव भीमसेन ने सात बाणसे शल्य को आठ से कृतवर्मा को  
घायलकर, कृपाचार्यके बाण समेत धनुष को बीच में से काटकर फिर उस दूढ़े  
धनुषवाले को सात बाणों से घायल किया, वैसेही अवन्तिदेश के राजा बिन्द  
अनुबिन्द को तीन २ बाणों से और दुर्मर्षण को बीस बाणों से और चित्रसेन को

princes Avanti, the king of Sindh, Jayadrath, Chitrassen, Vikarn,  
Durmarshan and others—all these ten warriors encountered Bhimsen.  
They were accompanied by the warriors of different climes and were  
desirous of Bhishm's fame. Shalya wounded Bhim with nine arrows,  
Kritvarma wounded him with three, Kripacharya with nine Chitrassen  
BhagJatta and Vikarn wounded him with ten arrows each and Jayad-  
rath with three 5. Vind and Anuvind, the princes of Avanti, wounded  
him with five arrows each and Durmarshan pierced him with twenty  
sharp arrows The destroyer of enemies, Bhimsen the brave Pandav  
wounded all those sons of Dhritrashtra in battle, he pierced Shalya  
with seven arrows and kritvarma with eight, and having cut the bow  
and arrow of Kripacharya from the middle he wounded him with  
seven arrows. In the same manner he wounded Vind and Anuvind  
with three arrows each, Durmarshan with twenty and Chitrassen

दुर्मर्षेणञ्च विशस्या चित्रसेनस पञ्चमि । विकर्णं दशभिर्वाणैः पञ्चमिञ्च जयद्रथम् ॥ ११ ॥ विध्या भीमो न दधुः सैन्धवञ्च पुनरिषिम् । अधान्यस्तु राक्षस्य गौतमो रथिना वरः ॥ १२ ॥ भीम विध्याध सरस्वती दशभिर्नैः शरैः । स विधो दशभिर्वाणैस्तैश्चै रिव महाक्षिपः ॥ १३ ॥ तम कुक्षो महापुञ्ज भीमसेन प्रतापवान् । गौतम तादयामास शरैर्वहुभिराहवे । १४ ॥ सैन्धवस्य तथाश्याध सारथिञ्च त्रिभिः शरैः । प्राहिणो मृ- त्युलोकाय कालान्तकसमद्युतिः ॥ १५ ॥ हताश्वान्पु रयात्तर्जनमवप्लुत्य महारथः । शर- धिक्षेप निशितान् भीमसेनस्य सयुगे ॥ १६ ॥ तस्य भीमो धनुर्मध्ये द्वाभ्यां चिच्छेत् मरिप । भल्लाभ्यां भरतक्षेप सैन्धवस्य महारथिनः ॥ १७ ॥ स छिन्नधन्वा विरयो हताश्वो हतसारथि । चित्रसेनस्य राजप्राख्येह त्वरान्वित ॥ १८ ॥ अत्यद्भुतरण कर्म कृतवांस्तत्र पाण्डव । महारथान् शरीरविध्वा धारयित्वा च मरिप ॥ १९ ॥ धिरप सैन्धव

पांच बाणसे घायल किया, । १० । फिर विकर्णको दश बाणों से जयद्रथको पांच बाणसे घायलकर फिर उसी को तीन तीक्ष्ण बाणों से व्यथित कर के बड़े प्रसन्न चित्त होकर भीमसेन गर्जना करने लगे, तब रथियों में श्रेष्ठ क्रोधयुक्त कृपाचार्य ने दूसरे धनुषको लेकर तीक्ष्ण धारवाले द्वादश बाणों से भीमसेनको घायल किया वह बारह बाणोंसे ऐसा घायल हुआ जैसे कि चावकोंसे हाथी घायल होता है, इस के पीछे क्रोधयुक्त प्रतापी भीमसेनने, युद्धमें अनेक बाणों से कृपाचार्य को घायल करके तीन बाणों से जयद्रथ के घोड़े और सारथीको मृत्युके लोक में भेजा फिर उस महारथी ने धनुष को घोंटों के रथ से क्षीप्रही कृदकर । १५ । भीमसेनके ऊपर तीक्ष्णधारवाले बाणों को फेंका हे राजा धृतराष्ट्र भीमसेन ने दो भल्लों से उस महात्मा जयद्रथ के धनुष को मध्य में से काटा, वह दृष्टेधनुषहीन क्षीप्रता करने वाला जयद्रथ जिसके घोड़े और सारथी मरगये थे । १६ । चित्रसेन के रथपर सवार हुआ वहाँ पांडव भीमसेन ने युद्ध में अपूर्व कर्म को किया । १८ । अर्थात् उसने सब लोगों के देखते बाणों से महारथियोंको घायल कर के जयद्रथको विरय किया,

with five 10. Then he wounded Vika n with ten arrows, and having wounded Jayadrath with five and three arrow he began to roar loud. Then Kripacharya the best of charioteers, having taken up another bow, wounded Bhimsen with twelve arrows as an elephants is wound ed with darts. Then Bhimsen enraged and full of prowe, wounded Kripacharya with many darts and with three darts sent Jayadrath's horses and coachman to the region of Yam. That great warrior soon leapt down from the chariot of which the horses were dead 15. He then showed his sharp arrows on Bhim. The latter with two darts cut down Jayadrath's bow from the middle. Then Jayadrath with his bow cut down and deprived of the use of his chariot of which the horses and driver were dead, mounted the chariot of Chitrasen. There Bhimsen the Pandav did p oligies of valour 18. Within sight of



चक्रे सर्वलोकात् पश्यतः । तदा न ममृषे शल्यो भीमसेनस्य विक्रमम् ॥ २० ॥ स  
 सन्धाय शरांस्तीक्ष्णान् कर्मांश्परिमार्जितान् । भीमं विष्याद्य समरे तिष्ठतिष्ठेति चाब्र-  
 धीत् ॥ २१ ॥ कृपय कृतवर्मा च भगदत्तश्च वीर्यवान् । विन्दानुविंदावायन्यौ चित्रसेनश्च  
 संयुगे ॥ २२ ॥ दुर्मर्षणो विकर्णश्च सिन्धुराजश्च वीर्यवान् । भीमं ते विष्यधुस्तर्जुं शल्य-  
 द्वेतारिन्दमाः ॥ २३ ॥ स च तान् प्रतिविष्याद्य पञ्चभिः पञ्चभिः शरैः । शल्यं विष्याद्य  
 सप्तत्या पुनश्च दशभिः शरैः ॥ २४ ॥ तं शल्यो नयन्निर्मिषा पुनर्विष्याद्य पञ्चभिः ।  
 सारथिञ्चास्य भलेन गाढं विष्याद्य मर्गणि ॥ २५ ॥ विशोकं प्रेक्ष्य निर्भिन्नं भीमसेनः  
 प्रतापवान् । मदुराजं त्रिभिर्नृपैश्शङ्कोरसि चार्पयत् ॥ २६ ॥ तथेतान् महेष्वासांस्त्रि-  
 भिस्त्रिभिरजिह्वागैः । ताडयामास समरं सिद्धयद्दिननाद्य ॥ २७ ॥ ते हि यत्ता महे-  
 तव शल्यने भीमसेनके पराक्रम को नहीं सहा और बड़े तीक्ष्ण बाणों को धनुषपर  
 चढ़ाकर । २० । भीमसेन को घायल किया और तिष्ठ २ वचनको उच्चारण किया  
 इस को देखकर पराक्रमी कृपाचार्य कृतवर्मा भगदत्त । २१ । और भवान्तिदेश के  
 राजा विन्द अनुविन्द दुर्मर्षण विकर्ण पराक्रमी जयद्रथ इन सब शत्रु विजयी  
 लोगोंनेभी शल्यको देखकर शीघ्रही भीमसेनको घायल किया और उसने उन सबको  
 पाँच २ बाणोंसे घायल किया । २१ । शल्यको सत्तर बाणों से और दश भल्लों  
 से घायल किया फिर शल्यने उसको नौ बाणों से घायल करके पाँच बाणों से  
 फिर व्यथित कर दिया । २४ । और एक भल्ल से उसके सारथी को मर्मस्थल  
 में घायल किया इसके पीछे उस प्रतापी भीमसेन ने अपने विश्वकनाम सारथी  
 को घायल देखकर । २५ । तीन बाणों से मद्र के राजा शल्यको, भुजा और  
 छाती पर घायल किया, इसी प्रकार सीधे चलनेवाले तीन २ बाणों से अन्य २  
 बड़े २ धनुषधारियों को व्यथित करताहुआ सिंह के समान गर्जना करी, फिर  
 उन सावधान बड़े २ धनुषधारियों ने युद्धमें कुशल भीमसेन को तीक्ष्ण नोक  
 all he wounded the other warriors and made Jaya-drath chariotless.  
 Shalya could not bear to see his prowess and put up sharp  
 arrows to his bow. 20 : Having wounded Bhimsen he cried out 'stay,  
 stay. At this valiant Kripacharya, Kirtvama, Bhagdatta, Vind and  
 Anuvind the two princes of Avanti, Durmarshau, Vikarna, and  
 valiant Jayadrath, all these conquerors of foes followed the example  
 of Shalya in wounding Bhimsen and he in his turn, wounded them  
 with five arrows each. 23. He wounded Shalya with seventy arrows  
 and ten darts, Shalya wounded him with nine and five arrows and his  
 coachman with one. Glorious Bhimsen seeing Vishwak his coachman  
 wounded, pierced the king of Madra with three arrows on the breast  
 and arms. In the same manner he wounded the other great archers with  
 three arrows each going straight and then roared like a lion. Then those  
 mighty and skilful archers wounded Bhimsen, clever in fighting.

प्रासा. पाण्डव युद्धकोविदम् । त्रिभिस्त्रिभिरकुण्ठाग्रैर्धृश मर्मस्यताडयन् ॥ २८ ॥  
 सौतिविद्धा महेष्वासो भीमसेनो विजये । पर्वतो वारिधाराभिर्वर्षमाणेरिवाम्बुदः  
 ॥ २९ ॥ स तु क्रोधसमाविष्ट पाण्डवानां महारथ । मद्भस्वर त्रिभिर्वर्णिर्धृशं विध्वा  
 महायथा ॥ ३० ॥ कृपञ्च नवभिर्वाणैर्धृशं विध्वा समेतत । प्राग्ज्योतिषं शतैराजै  
 राजन् विध्वाघ सायके ॥ ३१ ॥ ततस्तु सशर चापं सात्वतस्य महात्मनः । क्षुप्रेण  
 सुतीक्ष्णेन चिच्छेद् कृन्तस्तवत् ॥ ३२ ॥ तथा न्यद्धनुरादाय कृतवर्मा वृकोदरम् । बाज  
 धान व्रुवामध्ये नाराचेन परन्तः ॥ ३३ ॥ भीमस्तु समरे विध्वा शल्यं नवभिरायसे ।  
 भगदत्तं त्रिभिश्चैव कृतवर्माणमष्टभिः ॥ ३४ ॥ द्वाभ्या द्वाभ्यां तु विध्वाघ गातमप्रभु  
 तीन् रयान् । ते पित समरे राजन् विज्यधुर्निश्चिते, शरैः ॥ ३५ ॥ स तथा पीड्यमानोपि  
 बाले तीन २ बाणों से मर्मस्थलों में अत्यन्त घायल किया परन्तु वह अत्यन्त  
 घायल बड़ा धनुषधारी भीमसेन ऐसे पीड़मान नहीं हुआ । २८ । जैसे कि जम  
 घारा वर्षा करने वाले बादलों से पर्वत पीड़ा नहीं पाता है फिर उस बड़े यश-  
 स्वी महारथी पाण्डव भीमसेन ने क्रोधमें भरके सत्य राजा को तीन बाणों  
 से अत्यन्त घायल करके युद्धभूमि में सौ शायकों से राजा प्राग्ज्योतिष को  
 घायल किया । ३० । इसके पीछे इसी यशस्वीने कृपाचार्य को बाणों से अत्यन्त  
 घायल करके अपनी हस्तलाघवता से महात्मा कृतवर्मा के बाण समेत धनुष  
 को । ३१ । अत्यन्त तीक्ष्ण चुराओं से काट्य और इमी प्रकार से कृतवर्मा ने दूसरे  
 धनुषको लेकर भीमसेन को । ३२ । दोनों भृकुटियों के मध्य में नाराच बाणसे  
 घायल किया फिर शत्रु संताती भीमसेन ने शल्य को नौ लोहेके बाणों से  
 घायल करके । ३३ । तीन बाणों से भगदत्तको आठ बाणों से कृतवर्माको और  
 दो २ बाणोंसे कृपाचार्य आदि रथियोंको घायल किया । ३४ । इन सबोंनेभी इसको  
 तीक्ष्णधारके बाणोंसे घायल किया । ३५ । फिर महारथियोंके सब शस्त्रोंसे पीड़मान

with three arrows each in the vital parts, but that great archer, though much wounded, was not distressed at all as a mountain is not distressed by the fall of rain. Then the great warrior Bhimsen the Pandav, much enraged, wounded the king of Madia with three arrows and the king of Pragjyotish with a hundred 30. Then having wounded brave Kripacharya with his arrows, he showed the swiftness of his hand in cutting down the bow of Kirtvarma. The latter took up another bow and wounded Bhima in the middle of the brow. Then Bhima the destroyer of enemies, wounded Shalya with nine iron arrows and having stuck Bhagdatta with three, he pierced Kirtvarma with eight and Kripacharya with two 34. Those warriors too, wounded him with their sharp arrows 35. Exceedingly wounded by their arrows, Bhima did not care for them as straw and would fire

सर्वशस्त्रमहारथैः । मत्वा तृणेन तांस्तुल्यान् धिक्चारगतः ॥३६॥ ये चापि रथिनां  
 श्रेष्ठा भीमाप निशितान् शरान् । प्रेषयामासुरव्यघ्राः शतशोय सहस्रशः ॥ ३७ ॥ तस्य  
 शक्तिं महावेगा भगदत्तो महारथः । चिक्षेप समरे वीर स्वर्णदण्डा महामते । ॥ ३८ ॥  
 तोमरं सैन्ययो राजा पटिशञ्चमहामुजः । शतत्रैव कृपा राजान्तर शल्यश्च सयुगे  
 ॥ ३९ ॥ अथेतरं महेंद्रासा पञ्च पञ्च शिली मुघान् । भीमसेन समुद्दिश्य  
 प्रेषयामासुरीजसाः ॥ ४० ॥ तोमरञ्च द्विवा चक्रे पुरमेणा निलात्मजः ॥ पटिशञ्च  
 त्रिभिर्वाणैश्च चण्डैः तिलकाण्डधनुः ॥ ४१ ॥ स विभेद शतघ्नीञ्च नमभिः कद्वपत्रिभिः ।  
 मद्राजप्रयुक्तव शरैश्चरामहारथः ॥ ४२ ॥ शक्तिचिच्छेदसदृश भगदत्त रितारणे ।  
 तथैतरान् शरान्घोरान् शरैः सन्नतपर्वभिः ॥ ४३ ॥ भीमसखा रणश्लाघी त्रिचैकैक  
 समाच्छिन्दत् । तादृक् सर्वाङ्ग महेंद्रासान् त्रिजिह्वाभिस्तद्वयत् ॥ ४४ ॥ ततो  
 घनञ्जयस्तत्र वर्त्तमाने महारणे । आजगाम रथेनार्द्धा भीमं दृष्ट्वा महारथम् ॥ ४५ ॥

वह भीमसेन भी उनको दृष्ट्वा के समान कर दुःख से रहित प्रमत्त मुखहोकर भ्रमण  
 करने लगा । ३६ । उन सावधान रथियों में श्रेष्ठ लोगों ने भी भीमसेन के ऊपर  
 हजारों तीक्ष्ण बाणों को चलाया । ३७ । महावीर भगदत्त ने उस बुद्धिमान के ऊपर  
 बड़ी वेगवान् प्रकाशित सुनहरी दण्डवाली शक्तियों और राजा जयद्रथ ने तोमर को  
 महामुजेन पटिश को कृपाचार्य ने शनन्नी को शल्य ने बाण को । ३९ और अन्य बड़े  
 धनुषधारियों ने भीमसेन को लक्ष अथवा निशाना बनाकर पाँच २ शिलीमुख  
 बाणों को बड़े पराक्रम से चलाया । ४० । तब वायुपुत्र भीमसेन ने तोमर को तो  
 चुरप्रनाम बाण ने दो खण्ड किये और तीस बाण ने पटिश को तिल के काँडे के  
 समान काटा । ४१ । नौ बाणों से शनन्नी को तोड़ राजामद्र के चलाये  
 हुए बाण को काटकर भगदत्त की चन्दाई हुई शक्तियों को काट डाला इसी प्रकार युद्ध  
 में प्रशंसनीय भीमसेन ने गुप्तगन्धी वाले बाणों से अन्य भयानक बाणों को काटा  
 अर्थात् प्रत्येक के खण्ड २ कर दिये और उन सब धनुषधारियों को तीन २  
 बाणों से घायल किया । ४४ । इसके पीछे वहाँ घोर युद्ध के होने पर अर्जुन उस युद्ध

of pain with a cheerful mind. The wisest and best of charoteers too,  
 discharged thousands of arrows at him. Valiant Bhagdatta dis-  
 charged at him a swift and bright spear with gold handle. Prince  
 Jayadrath hurled a *tomar*, Kripacharya a *Shataghni*, Shalya his arrows  
 and others great archers, having made him the mark, discharged at  
 him five arrows each 10. Then Bhim the son of Vayu cut the *tomar*  
 in two by one sharp arrow and *pattish* with three. He cut the  
*Shataghni* with nine arrows, and having cut down the arrow of the  
 king of Madra, he cut into pieces the spear of Bhagdatta. Thus  
 Bhimsen, clever in battle, cut down other arrows too having hidden  
 knots and wounded those archers with three arrows each. 44. At  
 this when the battle was raging furiously, Arjun saw brave Bhim-

निघ्नन्त समरे शत्रून् योधयानश्च सायकै । तौ तु तत्र महात्मानौ समेतौ धीम  
पाण्डवौ ॥ ४६ ॥ न शशसुज्जय तत्र तावका पुरुषर्षभा । अघातुन रणे भीम  
योधयन्त महा रथान् \* ४७ ॥ भीष्मस्य निघनाकाक्षी पुरस्कृत्य शिरण्डिनम् ।  
आसस्ताद् रणे धीरास्तावकान् दश भारत ॥ ४८ ॥ यस्म भीम रणे राजन् योधयन्तो  
व्यवस्थिताः । भीमसुता नथा विष्वङ्गीमस्य प्रियकाभ्यया ॥ ४९ ॥ ततो दुर्यो  
धनो राजा सुशर्माणमचोदयत् । अर्जुनस्य धर्धार्याय भीमसेनस्य चोभयो ॥ ५० ॥  
सुशर्मन् गच्छ शीघ्र त्व वलीधै पत्न्यारित । जहि पाण्डुसुताघेतौ धनञ्जयवृकोदरो  
॥ ५१ ॥ तच्छ्रुत्य वचन तस्य त्रैगर्भ प्रस्थलाधिप । अभिद्रुत्य रणे भीम मर्जुन  
वैव धन्विनौ ॥ ५२ ॥ रथैरनेक साहसैः समन्तात् पर्यवारयत् । तत प्रवृत्ते युद्ध  
मर्जुनस्य परै सह ॥ ५३ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि भीमार्जुन पराक्रमे

चतुर्दशाधिकशतोऽध्यायः ॥ ११४ ॥

में शत्रुओं को मारता सायकों से लड़ता महारथी भीमसेन को देखकर रथपर बैठा  
हुआ युद्धभूमि में आया वहां उन दोनों महात्मा पाण्डवों को युद्धमें मट्ट देखकर  
। ४६ । आपके शूरवीर पुरुषोंने वहां अपने विजयकी आशा नहीं की फिर युद्धमें  
महाराथियों से लड़ते हुए भीमसेन को देखकर भीष्म के मारने की इच्छाकरने  
वाले अर्जुन ने शिखंडी को आगे करके उस युद्धमें आपके उन दश शूरों को पाया  
जो भीमसेन से युद्धकरने में नियतथे उनको अर्जुन ने भीमसेन की प्रसन्नता के  
लिये बाणों से घायल किया । ४९ । फिर राजा दुर्योधनने अर्जुन और भीमसेन  
इनदोनों के मारने के निमित्त राजासुशर्मा को आज्ञाकरी । ५० । कि हेसुशर्मा तुम  
अपनी सेनासमेत शीघ्रही जाकर इनदोनों पांडव अर्जुन और भीमसेन को मारो । ५१ ।  
फिर प्रस्थलाधिप राजा सुशर्मने उसके उस वचनको सुन युद्ध में जाके भीमसेन  
और अर्जुन दोनों धनुषधारियों को । ५२ । हजारों रथियों समेत चारों ओरसे घेर  
लिया फिर अर्जुन से और शत्रुओं से युद्ध होना प्रारभ हुआ ५३ ।

seen there and came on to him in his chariot, killing the enemies in  
the way And seeing the two Pandavas engaged there in battle  
your warriors despaired of their own victory Seeing Bhim engaged  
in fighting Arjun desirous of slaying Bhishm and led by Shikhandi,  
met in combat those ten warriors who were engaged in fighting with  
Bhim To please the latter he wounded them all with his arrows 49  
Prince Duryodhan ordered king Susharma to kill Arjun and Bhim,  
saying, "Go, Susharma with your armies and kill both Arjun  
and Bhim." Susharma the king of Prasthal, at the order of  
Duryodhan, surrounded Bhim and Arjun with thousands of chariots  
and the fight was hard between Arjun and the enemies" 53

संजयउवाच ॥ अर्जुनस्तुरणे शल्यं यत्मानं महारथं । छादयामास समरं शरैः सन्नतं  
 पर्वभिः ॥ १ ॥ सुशर्माणं कृपाञ्चैव त्रिभिरिभिरपि धृतं । प्राग्ज्योतिषं च समरे सिंघ-  
 धञ्च जयद्रथं ॥ २ ॥ चित्रसेनं विकर्णञ्च कृतवर्माणमेव च । दुर्मर्षणञ्च राजेंद्रं ह्याधृत्याञ्च  
 महारथौ ॥ ३ ॥ एकैके त्रिभिरानलैर्लङ्क्यार्धदण्डजितैः । शरै रतिरथो युद्धे पाण्डव  
 यत्किं नोत्तम ॥ ४ ॥ जयद्रथो रणे पार्थं विध्वामारुत सायकैः । भीमं विध्वामारुत तरसा चित्र  
 सेन रथे स्थितः ॥ ५ ॥ शल्यश्च समरे जिष्णुं कृपश्च रथिनां वरः । विध्यघाते महाराज  
 बहुधामर्मभेदिभिः ॥ ६ ॥ चित्रसेना दयश्चैव पुत्रास्तव विधापते । पञ्चभिः पञ्चभिस्तूर्ण  
 संयुगे निशितै रशैः ॥ ७ ॥ आजघ्नुरर्जुनं संश्लेष्ते भीमसेनञ्च मारिष्य । तीतत्र रथिनां  
 श्रेष्ठौ कौन्तेयौ भरतर्षभौ ॥ ८ ॥ अपीडयेतां समरे त्रिगर्तानां महद्वलं । सुशर्मापि रणे  
 पार्थं शरैर्नैव भिराशुभिः ॥ ९ ॥ ननादवलचन्नादं शासयानो महद्वलं । अन्ये च रथिनः

अध्याय ६१५ ॥

संजय बोले कि फिर अर्जुन ने युद्ध में उपाय करनेवाले महारथी शल्य  
 को गुप्तगन्धीवाले बाणोंसे दककर सुशर्मा कृपाचार्य राजा प्राग्ज्योतिष जयद्रथ राजा  
 सिंघ इन सबको तीन २ बाणों से घायल किया, और चित्रसेन विकर्ण कृतवर्मा दुर्म-  
 र्षण और अत्रन्तिदेशके महारथी राजा छोग । ३ । इन सबको कंक और मोरपञ्चवाछे  
 तीन २ बाणों से घायल किया और युद्धमें अतिरथी जयद्रथने आपके सेनाको  
 बाणों से पीड़ित करते हुए अर्जुन को सायकों से घायल करके चित्रसेनके रथपर  
 बैठकर बड़ी तीव्रतासे भीमसेनको घायल किया । ५ । हे राजा रथियों में श्रेष्ठ शल्य  
 और कृपाचार्य ने मर्मभेदी बाणों से अर्जुन को अनेक रीतिसे घायल किया । ६ ।  
 और चित्रसेन आदि आपके पुत्रों ने तीक्ष्ण धारवाले पांच २ बाणों से, अर्जुन और  
 भीमसेनको घायल किया वहां उन भरतवंशियों में और रथियों में श्रेष्ठ दोनों  
 पांडवोंने । ८ । त्रिगर्त देशियों की बड़ी सेनाको पीड़ामान किया फिर सुशर्माभी

## CHAPTER CXV

Sanjaya continued:—"Having covered valliant Shalya with his arrows, Arjun wounded Susharma, Kripacharya, king Pragjyotish and Jayadrath the king of Sindh with three arrows each. He then wounded Chitrasen, Vikarn, Kritvarma, Durmarshan and the brave warrior princes of Avanti each with three arrows having peacock feathers. And wounding your armies with arrows, valliant Jayadrath wounded Arjun, and having mounted upon Chitrasen's chariot he wounded Bhim with great swiftness. 5. Shalya the best of charioteers, O king, and Kripacharya wounded Arjun in different ways. Your sons, Chitrasen and others, each of them wounded Bhim and Arjun with five arrows having sharp edges. Then the two Pandavas, best of charioteers and Bharats, cut down the large

शूरा भीमसेन धनंजय ॥ १० ॥ विष्यधुनिंशिनैर्जाणे रक्मपुष्पैरजिह्वैः । तेषां च रथिना  
 मेष्य कौंतेयो भरतपुत्रौ ॥ ११ ॥ श्रीडमानी रयोदारौ चित्ररूपौ व्यद्वयतां । आमिपेन्मू  
 गवामध्ये सिंहाविषमदोक्तयोः ॥ १२ ॥ डिवाधनुषिगुराणां शराश्च बहुधारणे । पात  
 यामास तुर्वीरौ शिरसि शतशो नृणां ॥ १३ ॥ रथाश्च वर्योमग्ना ह्यथा शतशो हताः ।  
 गजाश्च सगजारोहाः पेतुरव्यामहाहवे ॥ १४ ॥ रथिनः सादित्वापि तत्र तत्र निपृदिता  
 दृश्यते बहवो राजन्वेपमाना समततः ॥ १५ ॥ हतैर्गजपदान्योर्ध्वजभिश्चानिपृदितैः ।  
 रथैश्च बहुधा भग्नैः सतास्तीर्यतमेदिनी ॥ १६ ॥ छत्रैश्च रथाच्छिन्नैर्ध्वजैश्च रथि  
 नः पतितैः । अक्रुशे रथविद्धैश्च परिस्तोर्मदच भारत ॥ १७ ॥ केयूरे रमंदरारे राक्षसं शूरी  
 तैस्तथा । उष्णीषैर्धृष्टिमिश्चैव चामरभ्यजनेरपि ॥ १८ ॥ तत्र तत्रापि खैश्च घाहुमि  
 तीव्रगामी नौ राणोऽंते अर्जुन को घायल करके बड़ी सेनाको भयभीत करता हुआ  
 बड़े शब्द से गर्जा और अन्य सूरवीर रथियों ने भीमसेन और अर्जुन को सीधे  
 चलनेवाले सुनहरी पुंखवाले तीक्ष्ण धारके राणों से घायल किया उन रथियों के  
 मध्य में भरतरथियों में श्रेष्ठ कुंती के पुत्र महारथी ग्रीडाकरते हुए ऐसे अपूर्व  
 रूपसे आये जैसे कि वैलोंके मध्य में पांसकी इन्डा रखने वाले मतवाले दो सिंह  
 आते हैं । १२ । उन दोनों वीरोंने युद्ध में शूरोंके धनुषोंको बहुत प्रकार से काटकर  
 सैकड़ों मनुष्यों के शिरोंको गिराया । १३ । बहुतसे रथटूटे सैकड़ों घोड़े मारे गये  
 और सवारों समेत हाथी पृथ्वी पर गिरे । १४ । रथी और सवार भी जहाँ वहाँ  
 नाशको प्राप्त चारों ओर से कँपते हुए दृष्टिआये । १५ । भूतक हाथी घोड़े पदाती  
 और अनेक प्रकारसे टूटे हुए रथों से पृथ्वी सविस्तरसी होगई, हे राजा कनेक प्रकार  
 से टूटे हुए छत्र और गिराई हुई ध्वजा और खंडित अक्रुश परशु केयूर बाजूनन्द  
 हार कोमल मृगचर्म मंडील दुधारे सङ्ग चामर वा व्यजनोंसे और जहातडा कटी हुई

army of Prigartas Susharma too, having wounded Arjun with nine  
 arrows, terrified the large army and roared a loud roar. And other  
 brave charioteers too, wounded Bhimson and Arjun with straight  
 going and sharp edged arrows having golden feathers. In the midst  
 of those charioteers entered the two villiant sons of Kunti, best of  
 Bharats, like two lions desirous of flesh coming playfully in a strange  
 way in the midst of a herd of bulls 12. The two warriors cut down  
 in various ways the bows and heads of other warriors by hundreds.  
 Many chariots were broken, hundreds of horses were killed and  
 elephants with their riders lay dead on the ground. Chariots and  
 their riders too, were destroyed here and there and were to be seen  
 shaking 15. The ground was strewn over with the dead horses,  
 elephants and foot soldiers and with the broken chariots. The  
 broken umbrellas, the fallen banners the broken goads, axes, armlets,  
 bracelets, soft deer skins, turbans, double edged swords, fly flappers

धृष्टकेतुः । ऊर्मिद्वयं नरेन्द्राणां समास्तीर्यत मेदिनी ॥ १९ ॥ तत्राद्भुतमपश्याम रणे  
 पार्थस्य निष्क्रमम् । शरं सप्तार्थं तान् धारान् मन्द जघान महाबलः ॥ २० ॥ पुत्रस्तु  
 तवतं दृष्ट्वा भीमार्जुनपराक्रम । गागेयस्य रथाभ्याश्च सुपजग्मे महाबलः ॥ २१ ॥ कृपश्च  
 कृतवर्मा च सन्ध्याय जयद्रथः । विन्दानुविन्दापवन्त्यौ नाजहुः संयुगं तदा ॥ २२ ॥  
 ततो भीमो गृहेपासः फाल्गुनश्च महारथः । कौरवाणां चमूं धोरां यशो बुधुवत् रणे  
 ॥ २३ ॥ ततो वह्निं यथाजानामयुनान्ययेद्वानिच । धनञ्जयस्यै तूर्णं पातयन्तिस्मभू  
 मिपाः ॥ २४ ॥ ततस्तान् शरजालेन सन्निवार्यं महारथान् । पार्थः समन्तात् समरे  
 प्रेषयामास मृत्युरे ॥ २५ ॥ शङ्खपरशु समरे डिण्णं कौदक्षिन् महारथः । धाजघानोरसि  
 सुद्धो भल्ले सप्ततपसि ॥ २६ ॥ तस्य पार्थो घनुदिष्ट्वा हस्तापञ्च पञ्चभिः ।  
 अयं सायकस्तीक्ष्णभृश विन्याय मर्मणि ॥ २७ ॥ अथान्यदनुरादाय समरे भारता

राजाओं की चन्द्रचर्चिन भुजा और जंजाओं ने भी पृथ्वी आच्छादित दीखती  
 थी, वहां हमने युद्धके बीच अर्जुन के अपूर्व पराक्रम को देखा कि उस महाबली  
 ने उन सप्तशूरीरों को धारों में ढककर घायल कर दिया । २० । फिर आपका  
 महाबली पुत्र भीमसेन और अर्जुन के उस पराक्रम को देखकर गागेय भीष्मजी  
 के पाम गया । २१ । तब कृपाचार्य कृतवर्मा जयद्रथ राजागिर और अवन्ति देश  
 के विन्द अनुवि द नाम राजाओं ने युद्धको नहीं त्यागा । २२ । इसके पीछे वड़े  
 धनुश्वारी भीमसेन और महारथी अर्जुन युद्धमें कौरवों की महाभयकारी मेनाकी ओर  
 दौड़े । २३ । उसके पीछे राजाओं ने उड़ी जीवनासे मोरके समान चित्रित हजारों छाखों  
 किन्तु अंतर्गों धारों को अर्जुन के रथपर गिराया । २४ । तब अर्जुनने चारों ओर  
 से उन महाशयियों को धारोंके जालमें रोककर मृत्यु के लोकों को भेजा । २५ ।  
 फिर कौशयुक्त युद्धमें कीड़ा करने महारथी शङ्खने गुप्त ग्रंथीवाले भस्त्रों में अर्जुन  
 को छातीपर घायल किया । २६ । तब अर्जुनने उसके धनुषको तेड़े पांचधारोंसे उस  
 के हस्तत्राणको काटके तीक्ष्ण शायकों से उसके मर्मस्थलोंको अत्यन्त घायल किया

and fans, the severed arms of the kings, sandal pasted, and other things covered the ground. Then we saw in the field of battle the wonder working prowess of Arjun who covered and wounded all those warriors with his arrows 20. Then your brave son, seeing the prowess of Bhishma and Arjun, went to Bhishma the son of Ganga. Kripacharya, Kritvarma, Jayadrath the king of Sindhu, and Vind and Anuvind the two princes of Avanti did not desert the field of battle. Then the great archer warriors, Bhishma and Arjun rushed up on the dreadful army of the Kauravas and the warriors with great dexterity discharged hundreds of thousands of arrows, peacock coloured, at the command of Arjun, but the latter destroyed the network of their arrows and sent them to the region of Yami 25. Valhant Shalya with arrows having hidden points, as if playing in battle, wounded

धनम् । यद्रेष्वरो रणे जिष्णु ताडयामास रोपित ॥ २८ ॥ त्रिभि शरैर्महाराज वासुदे  
वष पञ्चभिः । भीमसेनञ्च नवभिर्षाहोहरसि चार्पयत् ॥ २९ ॥ ततो द्रोणो महाराज  
मागधञ्च महारथ ॥ दुर्योधनसमादिष्टौ त देशमुपजग्मतु ॥ ३० ॥ यत्र पाणो महा  
राज भीमसेनश्च पाण्डव । कौरव्यस्य महासेनां जगत् सुमहारथौ ॥ ३१ ॥ जयत्से  
नस्तु समरे भीमः भीमायुध युधि । विव्याध निशितैर्वाणैरर्धमर्भरतर्षम् ॥ ३२ ॥ त भीमो  
दशभिर्विध्वा पुनर्विव्याध पञ्चभिः । सारथिञ्चास्य भलेन रथनीडादपातयत् ॥ ३३ ॥  
वद्भ्रान्तैस्तुरगैः सोऽथ द्रवमाणैः समन्ततः । मामघोपस्तौ राजा सघसैन्यस्य पश्यतः ॥ ३४ ॥  
द्रोणश्च विधर दृष्ट्वा भीमसेन शिलीमुखैः । विव्याध वाणैर्निशितैः पञ्चपाष्टि  
भिरापसैः ॥ ३५ ॥ त भीमः समरच्छाघी गुरुपितृसम रणे । विव्याध पञ्चभिर्मल्लैस्तथा

। २७ । फिर क्रोधयुक्त राजा मद्रने दूसरे बड़े हृदयनुप को लेकर वाणों से अर्जुन  
को व्याधित किया ॥ २८ ॥ तीन वाणों से अर्जुन को पांच वाणों से वासुदेवजी  
को नर पाणों में भीमसेन को भुजा और छाती पर घायल किया । २९ । इसके  
पीछे महारथी द्रोणाचार्य और राजा मगध यह दोनों । दुर्योधन की आज्ञासे उस  
स्थानपर पहुँचे । ३० । जहाँ कि बड़े महारथी अर्जुन और भीमसेन ने कौरवी दुर्यो  
धन की बड़ी सेनाको माराया फिर जयसेन ने भयकारी शस्त्रवाले भीमसेनको तीन  
आठवाणों से घायल किया । ३१ । और भीमसेनने उसको दश वाणों से घायल  
करके पांच वाणोंसे फिर घायल किया और एक भल्ल से उसके सारथीको रथ के  
बैठने के स्थान से गिरादिया । ३२ । फिर वह राजा मगध सब सेना के देखतेहुए  
चारों ओर को बहकेहुए घोड़ों के कारण से युद्धसे दूर चला गया । ३३ । द्रोणा  
चार्यने समय पाकर तीक्ष्ण धारवाले लोहे के शिलीमुख नाम पैंसठ वाणों से  
भीमसेन को घायल किया । ३४ । हे भरतवंशी युद्धमें प्रवेश पावनेवाले भीमसेन ने

Arjun on the breast Arjun then cut down his bow and having cut  
asunder his hand guard with five arrows, wounded him in the vital  
parts very severely. Thereupon the king of Madra much enraged,  
taking up a hard bow, wounded Arjun with three arrows, Vasudev  
with five and Bhim with nine arrows on the breast and arms. In  
the meantime valiant Dronacharya and the king of Magadh came  
there by Duryodhan's order (30) where the great charioters Arjun  
and Bhim were destroying the Kaurav armies. Jayasen wounded  
Bhim of dreadful arms with eight arrows of very keen edge.  
Bhimsen wounded him with ten and five arrows and with one dart  
he caused the driver to fall down from his seat on the chariot. Then  
the king of Magadh was taken far from the sight of the armies by the  
drivenless horses. Dronacharya found an opportunity to pierce sixty-  
five iron arrows, sharpened on stone, through the body of Bhim, but  
the latter praiseworthy in little wounded the venerable preceptor



पश्या च मारत ॥ ३६ ॥ अर्जुनस्तु सुशर्माणं विधा दधुमिरायसं । व्यधमन्तस्य तत्  
 सैन्यं महान्नाणि यथानिलः ॥ ३७ ॥ ततो भीमद्रव राजा च कौसत्यद्वय दृढहल ।  
 समयचरन्त सङ्गुद्धा भीमसेनघनञ्जयौ ॥ ३८ ॥ तथैवपाण्डवा जग धृष्टद्युम्नश्च पारितः ।  
 अश्वद्रवन् रणे भीष्म व्यादितास्यमित्रान्तकम् ॥ ३९ ॥ शिखण्डी तु समाम्नाद्य भार  
 तानां पितामहम् । अश्वद्रवत सहस्रो भयत्यक्ता महारथात् ॥ ४० ॥ युधिष्ठिरमुखा  
 पार्था पुरस्हत्य शिखण्डिनम् । अयोधयन् रणे भीष्म सहिता सर्वसृजयैः ॥ ४१ ॥  
 तथैव तावका सर्वे पुरस्हत्य यतव्रतम् । शिखण्डिप्रमुधान् पार्थान् योधयन्तिरुम सयुगे  
 ॥ ४२ ॥ तत प्रवृत्ते युद्ध कौरवाण भयावहम् । तत्र पाण्डुसुते सार्धं भीष्मश्चरिजय  
 मति ॥ ४३ ॥ तावकानां जये भीष्मो ग्लह आसीद्विश्राम्ति । तत्र हि वृन्मासक्त विजया  
 येतराय वा ॥ ४४ ॥ धृष्टद्युम्नस्तु राजेन्द्र सखसेन्यान्व बोधयत् । अश्वद्रवत गात्रय

पिता के समान गुप्तको भी पैसठ भल्योसे घायल किया । ३६ । फिर अर्जुनने बहुत  
 से लोहेके बाणों से सुशर्मा को घायन करके उसकी उस भुजाको ऐसे अलग  
 कर दिया जैसे कि बायु पादलों को अलग करदेताहै । ३७ । उसके पीछे भीष्म  
 और राजा कौशल्य दृढहल यह सब अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर भीमसेन और  
 अर्जुनके सम्मुख गये । ३८ । इसी रीतिसे क्रूर पांडव और पर्यंतका पुत्र धृष्टद्युम्न  
 उस मृत्युके समान भीष्मके सम्मुख गये । ३९ । और अत्यन्त प्रव्रज चित्त शिखण्डी  
 भरतवंशियों के पितामहको पाकर और उसने निर्भय होकर सम्मुख हुआ । ४० ।  
 और युधिष्ठिर आदि पांडव सब मृजियों समेत शिखण्डीको आगे करके युद्ध में  
 भीष्मजी से युद्ध करनेलगे । ४१ । इसप्रकार आपके सबपुत्र भीष्मजीको आगे करके  
 युद्ध में उन पांडवोंसे जिनका अग्रवर्ती शिखण्डी था युद्ध करने में प्रवृत्तहुए । ४२ ।  
 उसके पीछे वहां पर भीष्मकी विजय के विषय में कौरवों का भयकारी युद्ध पांडवों  
 के साथ जारीहुआ हे घृतराष्ट्र तब भीष्मजी आपके पुत्रों की विजयके ग्लह अर्थात्  
 चौपड़के दांव हुए वहां पर विजय वा पराजय के निमित्त दूर मारम्भ हुआ फिर  
 धृष्टद्युम्न ने सब सेनाको आज्ञाकरी कि हे श्रेष्ठ रथियो निर्भय होकर भीष्मके

with sixty five darts 36 Arjun then wounded Susharma with many iron arrows and covered his arm as the wind does the clouds. Then Bhishm with Princes Kourl and Vrihadbal, much enraged, encountered Blum and Aijun In the same manner, the brave Pandav and Dhrishtadyumn the descendant of Parshat faced deadly Blushm, and Shukhandi with a cheerful mind fearlessly encountered the grandfather of Bharat. 40 Yuddhishtim and other Pandavas with the Srinjayas, led by Shukhandi, fought against Bhishm In the same manner, your sons led by B'ishm encountered the Pandavas led by Shukhandi Then for the victory of Bhishm the Kauravas and the Panjavas fought a dreadful battle Bhishm

मौमैष्ट रवसत्तमा, ॥ ४५ ॥ सेनापतिवचः श्रुत्वा पाण्डवानां वरूथिनी । भीष्मं समभ्य-  
याचूर्णं प्राणाभ्यस्तव महाहवे ॥ ४६ ॥ भीष्मोऽपि रथिनां श्रेष्ठः प्रतिज्ज्ञमाह तां चमूम् ।  
आतन्तीं महाराज वेलामिव महोदाधि ॥ ४७ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्माधर्पणीणि भीमार्जुन पराक्रमे

पंचदशाधिकशतोऽध्यायः ॥ ११५ ॥

धृतराष्ट्र उवाच । कथं शान्तनवो भीष्मो दशमेहनि सञ्जय । अगुध्यत महा-  
वीर्यः पाण्डवैः सह सञ्जयै ॥ १ ॥ कुरवश्च कथंयुद्धे पाण्डवान् प्रत्यचारयन् ।  
आचक्ष्व मे महायुद्धं भीष्मास्याहवशोभिन् ॥ २ ॥ सञ्जय उवाच । कुरवः पाण्डवै-  
सार्षं यदयुध त भारत । यथा च तदभूद्युद्धं तत्तु वदयामि साम्प्रतम् ॥ ३ ॥  
गमिता, पलोकाय परमाग्रैः किरिटिनः । अह्न्यहनि स्तुष्टास्त्रावकानां महारथा-

सम्मुख चलो मन में किसी प्रकार भी सन्देह मत करो । ४५ । तब पांडवों की  
सेना अपने सेनापति के वचन को सुनकर प्राणों के मोड़को त्यागकर उस  
महायुद्ध में शीघ्र ही भीष्म के सम्मुख गई । ४६ । हे महाराज रथियों में  
श्रेष्ठ भीष्मजी ने उस आईहुईड़ी सेना को ऐसा रोका जैसे कि महासमुद्र को  
किनारा रोकता है ४७ ॥

अध्याय ११६ ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय शतनु के पुत्र बड़े पराक्रमी भीष्मजी दशवें दिन पांडव  
और सृजियों के साथ कैभर युद्धकरतेहुए और कौरवोंने युद्धमें पांडवोंको कैसे रोका  
हे संजय तू युद्धमें शोभापानेवाने भीष्मजीके महामारी युद्धको मुझसे वर्णन कर के  
कह । २ । संजय बोले कि हे भरतवंशी कौरव लोगोंने पांडवोंके साथ जैसे युद्धकिया  
और जैसे युद्धहुआ वह यथार्थ तुम से कहताहूँ । ३ । अर्जुन के बड़े अस्त्रों से आप के  
महारथी अत्यन्त क्रोधपूर्वक प्रतिदिन परलोकमें भेजेमये । ४ । और युद्धको विजयकरने

then was the bet in the game for victory and defeat Dhrishtadyumna  
gave an order to all his armio, to advance fearlessly against Blushm  
without hesitation 45. The warriors catches of their lives rushed  
upon Blishm at the word of command and Blarshun checked that  
advancing army as the coast checks the waters of the ocean " 47.

#### CHAPTER CXVI

Dhritishktra sud, " How d d the son of Shantanu, Blishm of  
great prowess, fight against the Pandvas and the Sanjyayas on that  
tenth day ? How did the Kauravas check the Pandvas ? Give me  
Sanjaya, a detailed account of the g oit war of Blushm " Sanjaya-  
s. I shall tell you how the Kauravas and the Pandvas fought against  
each other and the events of the war as they happened 3 By the  
powerful weapons of Arjun your enraged warriors were sent every

॥ ४ ॥ यथाप्रतिज्ञं कौरव्यः स चापि समितिञ्जयः । पार्थानामकरोद्धीप्सः सततं  
समितिक्षयम् ॥ ५ ॥ कुरुभिः सहितं भीष्मं युध्वमानेपरन्तप । अर्जुनञ्च सपाञ्चाल्यं  
संशयो विजये भवत् ॥ ६ ॥ दशमेहानि तस्मिंस्तु भीष्मार्जुनसमागमे । अवर्त्तत  
महारौरः सततं समितिक्षयः ॥ ७ ॥ तस्मिन्नुत्तमो राजन् भयशश्च परन्तपः ।  
भीष्मः शान्तनयो योधान् जवान् परमाश्रयित् ॥ ८ ॥ यथामन्त्रातकल्पानि नामगो  
त्राणि पार्थिव । ते हतास्तत्र भीष्मेण शूराः सर्वेऽनिवर्त्तिनः ॥ ९ ॥ दशाहानि  
ततस्तप्त्वा भीष्मः पाण्डववाहिनीम् । निरविद्यन् धर्मात्मा जीवितेन परन्तप ॥ १० ॥  
स क्षिप्रं वधमन्विच्छन्नात्मनोभिसुखेरणे । न हन्यां मानवश्रेष्ठान् संश्रामे सुबहूनि  
॥ ११ ॥ चिन्तयित्वा महाबाहुः पिता देवव्रतस्तव । अश्वासस्य महाराज पाण्डव  
घातयमग्रवीत् ॥ १२ ॥ युधिष्ठिर महाप्राज्ञ सर्वशास्त्रप्रशारद् । धृष्टप्य वचनं

वाले उम कौरवी भीष्मने भी अपने कियेहुए सत्यसंकल्पके अनुसार पांडवोंकी सेनाका  
सदैव नाश किया । ५। हे शत्रुसंनापी धृतराष्ट्र कौरवों समेत भीष्म और धृष्टद्युम्नसमेत  
अर्जुन इनदोनों युद्धकरनेवालोंकोअपने २ विनय करने में सन्देह हुआ । ६। फिर  
उस दशवेंदिन के युद्धमें भीष्म और अर्जुनकी सम्मुखता में बारम्बार बड़ी भयकारी  
मलय वर्त्तमानहुई, उसदिनमें शत्रुसंनापी उत्तम अश्वों के ज्ञाता भीष्मजीने हजारों  
थड़े २ शूरीरों को मारा । ८। उनजोगों के नाम और गोत्र अज्ञातकल्पके समान  
थे अर्थात् नहीं मालूम सेही थे वह युद्ध में पीठ न मोड़नेवाले महाराज भीष्मजी के  
हाथ से मारेगये । ९। इसके पीछे धर्मात्मा भीष्मजी ने दशदिन तक पांडवी सेना  
को अच्छीरीति से संनष्ट करके जीवन से वैराग्य पाया । १०। वह युद्ध में सम्मुख  
शीघ्रही अपने मरनेका इस रीति से विचार करनेवाला हुआ कि मैं युद्धमें बहुतसे श्रेष्ठ  
मनुष्यों को नहीं मारूंगा । ११। हे महाराज आप के पिता देवव्रत महाबाहु भीष्मजी चि-  
न्ताकरके पांडवोंके सम्मुख होकर यह वचनबोला । १२। कि हे बड़ेजानी सर्वशास्त्रज्ञ

day to the other world. The conquerer in battle, Bhishm the Kaurav destroyed every day the army of the Pandavas according to his promise. The Kauravas with Bhishm and Arjun with Dhrishtadyumni on both sides were doubtful of their victory. On the tenth day both Arjun and Bhishm fought very hard. Bhishm the destroyer of enemies and skilful in the use of weapons killed thousands of great warriors on that tenth day. The names and families of the warriors who, not turning their face from the battle met their death at the hands of Bhishm, cannot be told. Having destroyed the armies of the Pandavas for ten day, Bhishm, left all regard for his life. 10. While in the field of battle his thoughts about his death ran thus:—"I shall not slay any more good warriors in battle." Your father Derarat, better known as Bhishm of great arms, with this thought uppermost

[ ४१२ ]

तापः परं स्वर्गस्य जगता ॥ १३ ॥ निर्विजोस्मि भूय तात देहेनानेन भारत ।  
 त्वय्यदं मया वात सुगुहं प्राणिनोरण ॥ १४ ॥ तस्मात् पार्थ पुरोधाय पञ्चालान्  
 वधयिष्यामि । मध्ये कियतां यतो मम वेदिवृत्तसि प्रियम् ॥ १५ ॥ तस्य तन्म  
 तमात्राय पाण्डव सत्यदर्शन । भीष्म प्रति ययौ राजा सत्रामे सह सृञ्जय ॥ १६ ॥  
 धृष्टद्युम्नस्ततो राजन् पाण्डव्य युधिष्ठिर । श्रुत्वा भीष्मस्य ता वाच बोद्ध्यामास  
 त्वर्षेण ॥ १७ ॥ अभिद्रव्य युध्व्य भीष्म जयत सयुगे । रक्षिता सत्यसन्धेन  
 त्रिष्णुना त्रिपुजिष्णुना ॥ १८ ॥ अयञ्चापि महेष्वास पार्षतो घाहिनीपति । भीम  
 सेनश्च समरे बालविष्यति वा ध्रुवम् ॥ १९ ॥ मावो भीष्मान्द्रय किञ्चिदस्त्वद्य युधि  
 क्ष्मया । ध्रुव भीष्म विजेष्यामि पुरस्कृत्य शिखण्डिनम् ॥ २० ॥ ते तथासमय

पुत्र युधिष्ठिर मेरे इस स्वर्ग के देनेवाले धर्मरूपी वचनों को सुन । १३ । हे भरतवशी वेद मैं  
 इस शरीरसे अत्यन्त प्रीति रहित हूँ और युद्ध में अनेकों जीवधारियों को मारते हुए मेरा  
 समय व्यतीत हुआ । १४ । इस हेतुसे जो तू मेरा भला चाहता है तो तू अर्जुन को  
 और इसी प्रकार पांचालदेशियों को और क्षत्रियों को आगे रुक के मेरे मारने का विचार  
 पूर्वक उपाय कर । १५ । सत्यदर्शी पाण्डव राजा युधिष्ठिर उन के इस अभिप्रायके मतको  
 जानकर सृनिधियों समेत युद्ध में भीष्मजी के सम्मुख गया । १६ । हे राजा उसके पीछे  
 धृष्टद्युम्न और पाण्डव युधिष्ठिर ने भीष्म जीके ऐसे वचनों को सुनकर सेनाको आज्ञा  
 करी । १७ । कि चलकर युद्ध करो और युद्धमें सत्यसंकल्प एकही रथसे विजय करने  
 वाले अर्जुन से रक्षित होकर तुम भीष्म जी को विजय करो । १८ । निश्चय करके  
 यह बड़ा धनुषधारी सेन पाति धृष्टद्युम्न और भीमसेन भी युद्धमें तुम्हारी रक्षा करेंगे  
 । १९ । हे सृजियो अब युद्धमें तुमको भीष्मसे कोई प्रकारका भयन ही होगा निश्चय  
 करके हम शिखण्डी को आगे करके भीष्मको विजय करेंगे । २० । वह क्रोधसे

in his mind, said to the Pandavs, " Wise and learned son, Yudhis  
 thir, hear my words which are giver of paradise Descendant of  
 Bharat ! son ! I have lost all love for my body I have lost much  
 time in killing the living beings in battle You should, if thou  
 would t do me good, contrive for my death with the assistance of  
 Arjun the Srinjayas and the Panchals" The truthful Pandav,  
 Prince Yudhishtir learning the object of his desire, faced Bhishm in  
 company with the Srinjayas 16 Then Dhrishtadyumna and  
 Yudhishtir the Pandav, hearing the words of the grandfather, ordered  
 the armies to advance for battle and to conquer Bhishm under the  
 guidance of Arjun of true vows and conquerer with a single chariot 18  
 Surely this great archer Dhrishtadyumna the commander of armies  
 and Bhimsen will protect you in battle You will have no cause of  
 fear from Bhushm O Srinjaya surely, led by Shikhandi we shall

दशमेहनि पाण्डवाः । ब्रह्मलोकपरा मृत्या एज्जम्. क्रोधमूर्च्छिताः ॥ २१ ॥  
 शिखण्डिनं पुरस्कृत्य पाण्डवश्च घनञ्जयम् । भीष्मस्य पातने यत्नं परम् ते संमा-  
 स्यताः ॥ २२ ॥ ततस्तव सुतादिष्टा नानाजनपदेदवराः । द्रोणेन सह पुत्रेण सह  
 सेना महबला ॥ २३ ॥ दुःशासनश्च यलघान् सह सर्वे सहोदरे । भीष्मं समरे  
 मध्यस्थं पाण्डवाश्चक्रिरे तदा ॥ २४ ॥ ततस्तु तावकाः शूरा परस्कृत्य महाप्रतप्तम् ।  
 शिखंडीप्रमुखान् पार्थान् योवयन्तिस्म संयुगे ॥ २५ ॥ वेदिभिस्तु सपञ्चालैः  
 सहितो वानरध्वजः । यथा शान्तमनं भीष्मं पुरस्कृत्य शिखण्डिनम् ॥ २६ ॥ द्रोणपुत्रं  
 शिखेनसा घृष्टकेतुस्तु पौरुषम् । अभिमन्युः सहामात्य दुर्योधनमपोधयत् ॥ २७ ॥  
 विराटस्तु सहानीक सहसेनं जयद्रथम् । वृद्धक्षत्रस्य दायाद माससावपरं तप ॥ २८ ॥  
 मद्राजं महेष्वास सहसेनं युधिष्ठिरः । भीमसेनो मिश्रस्तु नागानीकमुपाद्रथत्

मूर्च्छित पाण्डव दशवें दिन उत्ती प्रहार का नियम करके ब्रह्मलोक को उत्तम मानते  
 हुए सब मिलकर चले । २१ । और शिखण्डी को और पाण्डव अर्जुन को आगे  
 करके भीष्मके गिराने के लिये बड़े उपायोंमें नियत हुए । २२ । उसके पीछे आपके  
 पुत्रकी आज्ञासे नानादेशों के राजालोग द्रोणाचार्य अश्वत्थामा और सेना समेत  
 महायुद्धी धनुषधारी दुःशासनसब अपने इष्ट मित्र और विरादरी वालोंसे युक्त इन  
 सबोंने आकर युद्धमें नियत भीष्मजीको चारोंओरसे रक्षितकिया । २३ । इसके पीछे  
 आप के शूरीर पुत्र भीष्मजी को आगे करके उन पाण्डवोंसे लड़नेके लिये जिनका  
 कि अग्रग भी शिखण्डीया युद्धमें मर चुके हुए । २४ । फिर वह वानरध्वज अर्जुन चंदरी  
 देशके और पांचाल देशके लोगों के साथ शिखण्डी को आगे करके शत्रुके पुत्र  
 भीष्मजी के सम्मुख गया । २५ । सात्यकीने अश्वत्थामाको और घृष्टकेतुने कौरवोंको और  
 अभिमन्युने मंत्रियों समेत असुर्योधनको युद्धमें सम्मुखहोकर युद्धकिया । २६ । और सेना  
 समेत राजाविराट ने वार्द्धसेनके पुत्र जयद्रथसे सेनासमेत सम्मुखता करी । २७ । और  
 युधिष्ठिरने बड़ेधनुषधारी सेनासमेत राजामद्रको सम्मुखपायाऔर चारोंओरसे रक्षित

conquer Bhishma 20. On that tenth day, the Pandavas insesibel with anger and firm on their resolve, went together thinking highly of the region of Brahm, and led by Shikhandi and Arjun they tried hard to slay Bhishma. Then by the order of your son, the princes of various countries together with Dronacharya, Ashwathama and Dushasan the mighty archer, followed by their armies, friends and allies, protected Bhishma from all sides. Then your brave sons, led by Bhishma, were ready to fight against the Pandavas led by Shikhandi. 25 Arjun of monkey's standard, together with the people of Chanderi and Panchal, led by Shikhandi, proceeded to encounter Bhishma the son of Shantamu. Satyaki met with Ashwathama in combat. Dhushketu with the Kauravas and Abhimanyu with Dur-

॥ २९ ॥ अप्रभृष्यमनावार्य सर्वशक्तमुताम्बरम् । द्रौणिं प्रति ययौ वत्सः पाञ्चाल्यः सह सोदरैः ॥ ३० ॥ कर्णिकारश्चजम्बूवैव सिंहकेतुरादिमः । प्रपुञ्जगाम सौमद्र राजपुत्रो वृहद्वलः ॥ ३१ ॥ शिखण्डिनश्च पुत्रास्ते पाण्डवश्च धनञ्जयम् । राजानि समदेवार्थं मणिपेतुर्जिह्वांसवः ॥ ३२ ॥ तस्मिन्नतिमहाभीमे सेनयोर्वै पराक्रमे । सम्प्रधावत् स्वनीकेषु मेदिनीं समकम्पत ॥ ३३ ॥ तान्यनीकान्यनीकेषु समसज्जत भारत । तावकानां परेषाम्बु हृष्टा शान्तनयं रणे ॥ ३४ ॥ ततस्तेषां प्रतप्तामा मय्यो म्यमभिधावताम् । प्रादुरासीन्महाशब्दो विषु सर्वासु भारत ॥ ३५ ॥ शङ्खदुग्धमिषोपध्वं वारणानां च हृंहितैः । सिंहनादयः सैन्यानां दारुणं समपद्यत ॥ ३६ ॥

भीमसेन बड़ीसेनाकीओर चला । २९ । और मतवाला धृष्टद्युम्न अपनेनिजपाद्यों और मातेदारों समेत उसअंजय सब शस्त्रधारियोंमें अष्ट स्वाधीन न होनेवाले अश्वरथामाके सम्मुखगया । ३० । शत्रुओंका विजयकरनेवाला सिंहकी ध्वजासे युक्त - राजकुमार वृहद्वल उसकर्णिकार वृत्तकी चिह्नवाली ध्वजावाले अभिमन्युके सम्मुखगया । ३१ । आपके सब राजा सेनाओंसमेत शिखण्डी और पाण्डव अर्जुन के मारनेके इच्छावान् युद्धमें अर्जुनके सम्मुख दौड़े । ३२ । उस समय उन भयानक सेनाओं समेत तुम्हारे पुत्रोंके दौड़ने से पृथ्वी अच्छेमकार मे कंपायमान हुई । ३३ । भरतर्षभ भीष्मजी को युद्धमें देखकर आपके पुत्रोंकी और पाण्डवों की सेनापरस्परमें बड़े २ पराक्रमोंको कर करके लड़ीं । ३४ । इसके पीछे उन अत्यन्त पीड़ापान परस्पर दौड़नेवालों का बड़ा भारी महाशब्द सब ओर को जारीहुआ । ३५ । और शंख दुग्धमियों के शब्द वा हाथियों की चिहाड़ अथवा सेनाके मनुष्योंके सिंहनादोंसे महाभारी द्रव उत्पन्नहुआ । ३६ । सब राजाओंका चन्द्रमा और सूर्यके समान तेज वा गूर वीर

yodhan and his counsellors. King Virat and his armies met Jayadrath the son of Vardhakeshem and his armies. Yudhishtir found the great archer Prince of Madra and his army face to face with him and protected on all sides, Bhimsen rushed upon the great army. Proud Dhrishtadyumna with his brothers and allies faced invincible Abhimanyu the best of arm-bearers, 30. Prince Vrahadval of lion's standard, the conqueror of foes faced Abhimanyu who had the Karnikar tree for his ensign. All your warriors together with the armies, desirous of slaying Shikhandi and Arjun, rushed to fight against the latter. The earth shook with the rushing on of your sons and their armies. Seeing Bhim in the field of battle, the armies of your sons and those of the Pandavas fought very bravely. Then there was a tremendous noise at the meeting of the two armies, 35. The scene was very dreadful with the uproar made by the peals of conchs and trumpets, the shrieks of elephants and the leonine roars of the warriors. The sun-and-moon like glory of all the kings and warriors

सा च सर्वनरेद्राणां चन्द्राकंसदत्ता प्रभा । वीराङ्गदकिरीटेषु निष्प्रभा समपद्यत ॥ ३७ ॥  
 राज्ञो मेघास्तु सप्तजम्बुः शस्त्रविद्युद्भिद्राट्वाः । धनुषाच्छाणि निर्घोषो दारुणः समपद्यत ॥ ३८ ॥  
 बाणशंखप्रणादाश्च भेरीणाञ्च महास्वनाः । रथघोषश्च सञ्जज्ञे सैनयोद्यमयो  
 रपि ॥ ३९ ॥ पाराशक्त्युष्टिसंघैश्च बाणौघैश्च समाकुलम् । निष्प्रकाशमिधाकाशं सैनयोः  
 समपद्यत ॥ ४० ॥ भन्याम्ये रथिनः पेतुर्वाजिनश्च महाहवे । कुञ्जरान् कुञ्जरा जघ्नुः  
 पादाताश्च पदातयः ॥ ४१ ॥ सत्रासीत् सुमहद्वृद्धं कुरुणां पाण्डवैः सह । भीष्महेतोर्न  
 रभ्याश्च ह्येनयोराभिधे यथा ॥ ४२ ॥ तेषां समागमो घोरां वभूवयुधि सङ्गतः । अग्नौ  
 चस्य बधार्थाय जिगीयूणां महाहवे ॥ ४३ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि भीष्मोपदेशे

पौंड्रशपिकशतोऽध्यायः ॥ ११६ ॥

सञ्जय उवाच । अभिमन्युर्महाराज तव पुत्रमवोचयत् । महत्या सैनया युक्तं  
 भीष्महेतोः पराक्रमी ॥ १ ॥ दुर्योधनो रणे कार्पिणं नवमिनंतपर्वभिः । आग्रपाणो

लोगों के बाजूबंद और मुकुटप्रभामे रहित होगये ॥ ३७ ॥ शस्त्ररूपी बिजलीसे युक्त धूलके  
 बादल उत्पन्न हुए और धनुषों के भी भयकारी शब्दवर्त्तमान हुए ॥ ३८ ॥ दोनोंसेना-  
 ओंका आकाश शक्ति पाश और दुधारे खण्ड और बाणोंके समूहोंसे व्याप्त होकर  
 प्रभासे रहित होगया ॥ ४० ॥ उसचड़े मारी युद्धमेंसी घोड़े हाथी ऐसे परस्पर में छेड़  
 कि हाथीको हाथीने पदाती को पदातीने मारा, हे नरोत्तम वहाँ भीष्मके कारण  
 पांडव और कौरवोंका ऐसा महाभारी युद्ध हुआ जैसा कि पराये मांस के निमित्त दोबान  
 पक्षियोंका युद्ध होता है ॥ ४२ ॥ उनविजयाभिनायी शूरोरोंका भयानक युद्ध परस्पर  
 में एक एकके मारने के निमित्त वर्त्तमान हुआ ॥ ४३ ॥

अध्याय ॥ ११७ ॥

संजय बोला हे महाराज पराक्रमी अभिमन्यु ने भीष्मके कारण बड़ी सेनासे  
 संपुक्त आपके पुत्रसे युद्ध किया ॥ १ ॥ तब क्रोधयुक्त दुर्योधन ने झुकीगाँठ वाले

and of their b accolets and diadems, faded The clouds of dust arose  
 having bright weapons for lightning and the sounds from the bows  
 were tremendous. The space between the two armies was filled with  
 nooses, double edged swords and flights of arrows. 40. In that battle  
 the charioteers, horsemen and elephant riders fought and slew one  
 another. The battle between the Kauravas and the Pandavas on  
 account of Bhishma was very severe like that of two hawks for the  
 flesh of another bird. The warriors desirous of conquest fought to  
 slay one another. 43.

## CHAPTER CXVII

Sanjaya said, " Brave Abhimanyu fought against your son and  
 his large army on account of Bhishma Then came the Pandavas

॥ २९ ॥ अथ धृष्टकेतुना वार्य सर्वशस्त्रभूताम्बरम् । द्रौणिं प्रति ययौ वसतः पाञ्चानन्यः सह सोदरे ॥ ३० ॥ कर्णिकारध्वजश्चैव सिंहकेतुश्चरिन्दम । मरुत्पुञ्जगाम सौमद्र राजपुत्रो वृहद्वलः ॥ ३१ ॥ शिखण्डिनश्च पुत्रास्ते पाण्डवश्च घनञ्जयम् । राजभिः समरे वार्य अभिपेतुर्जिह्वांसवः ॥ ३२ ॥ तस्मिन्नतिमहाभीमे सेनयोर्वै पराक्रमे । सम्प्रधावत् स्वनीकेषु मेदिनी सम कम्पत ॥ ३३ ॥ तान्यनीकान्यभीकेषु समसज्जन्त भारत । तावकानां परेषाञ्च दृष्ट्वा शान्तनवं रणे ॥ ३४ ॥ ततस्तेषां प्रतप्तानां मन्यो म्यमभिधावताम् । प्रादुरासीन्महाशय्यो दिपु सर्वासु भारत ॥ ३५ ॥ शलवुडु मिधोयश्च धारणानां च हंहितैः । सिंहनादश्च सेन्यानां दाहण समपद्यत ॥ ३६ ॥

भीमसेन बड़ी सेना की ओर चला । २९ । और मतवाला धृष्टद्युम्न अपने निज भाइयों और नातेदारों समेत उस भोज्य सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ स्वाधीन होने वाले अश्वत्थामा के सम्मुख गया । ३० । शत्रुओं का विजय करने वाला सिंह की ध्वजा से युक्त राजकुमार वृहद्वल वसकर्णिकार वृत्त की चिह्न वाली ध्वजा वाले अभिमन्यु के सम्मुख गया । ३१ । आपके सब राजा सेनाओं समेत शिखण्डी और पांडव अर्जुन के मारने के इच्छावान् युद्ध में अर्जुन के सम्मुख दौड़े । ३२ । उस समय उन भयानक सेनाओं समेत तुम्हारे पुत्रों के दौड़ने से पृथ्वी अच्छे प्रकार से कंपाया मान हुई । ३३ । भरतर्षभ भीष्मजी को युद्ध में देखकर आपके पुत्रों की और पांडवों की सेना परस्पर में बड़े २ पराक्रमों को कर करके लड़ी । ३४ । इसके पीछे उन अत्यन्त पीड़ा मान परस्पर दौड़ने वालों का बड़ा भारी महाशब्द सब ओर को जारी हुआ । ३५ । और शंख बुन्दुभिषों के शब्द वा हाथियों की चिंहाड़ अथवा सेना के मनुष्यों के सिंहनादों से महामारी भय उत्पन्न हुआ । ३६ । सब राजाओं का चन्द्रमा और सूर्य के समान तेज वा शूर वीर

yodhan and his counsellors. King Virat and his armies met Jayadrath the son of Vardhakesham and his armies. Yudhishthir found the great archer Prince of Madra and his army face to face with him and protected on all sides, Bhimsen rushed upon the great army. Proud Dhrishtadyumna with his brothers and allies faced invincible Ashvathama the best of arm-bearers. 30. Prince Vrahadval of lion's standard, the conqueror of foes faced Abhimanyu who had the Larnikar tree for his ensign. All your warriors together with the armies, desirous of slaying Shikhandi and Arjun, rushed to fight against the latter. The earth shook with the rushing on of your sons and their armies. Seeing Blum in the field of battle, the armies of your sons and those of the Pandavas fought very bravely. Then there was a tremendous noise at the meeting of the two armies. 35. The scene was very dreadful with the uproar made by the peals of conchs and trumpets, the shrieks of elephants and the lionine roars of the warriors. The sun-and-moon like glory of all the kings and warriors



रसि कुद्ध पुनश्चैव त्रिभिः शरैः ॥ २ ॥ तस्य शक्तिं रणे दक्षिणमृत्योघोरा स्वसामिव ।  
प्रेषयामास सङ्कोहो दुर्योधनस्य प्रति ॥ ३ ॥ ताम्रापत तीं सहसा घोररूपा विशम्पते ।  
द्विधा चिच्छेदते पुत्रं पुरमेण महारथ ॥ ४ ॥ तार्क्षिकपतितादृश्वकर्णि परमयोपन ।  
दुर्योधन त्रिभिर्योनिर्वाहोरसिचार्पयत् ॥ ५ ॥ पुनश्चैन शरैर्घोरै राजधानस्तनातरे ।  
यशभिर्मरतघ्ने भरताना महारथ ॥ ६ ॥ तदुद्धममवद्धोर चित्ररूपञ्च भारत । इन्द्रिय  
प्रीतिजनन सर्वपाथेन पूजितम् ॥ ७ ॥ भीष्मस्य निधनार्याय पाथस्य विजयाय च ।  
युयुधाते रणे घोरौ सौभद्रकुरपुङ्गवौ ॥ ८ ॥ सात्यकिं रमस युद्धे द्रौणिर्माह्वयपुङ्गव ।  
आजघानोरसि कुद्धो नाराचन परन्तप ॥ ९ ॥ शैवोपि गुरो दुष्टं सर्वमर्भसु भारत ।  
यताडयद् मेवात्मा नयमि कटुघाजितैः ॥ १० ॥ अश्वत्थामा तु समरे सात्यकिं नयमि  
शरैः । त्रिजता च पुनस्तूर्णं चाहोस्वसि चार्पयत् ॥ ११ ॥ सोतिविद्धो महत्प्रासो द्रोणपु

नव बाणों से अभिमन्युको व्याधित करके तीन बाणों से फिर उस को घायल  
किया । ७ । तब अत्यन्त कोपयुक्त अभिमन्यु ने घृत्पके समान भयकारी शक्ती को  
दुर्योधन के रथपर चनाया । ८ । हेराजा आपके पुत्र महारथीने उस अकस्मात् गिरती  
हुई भयकारी शक्तीको सुरम बाणोंमें दो खड कर दिये । ९ । फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त  
अभिमन्यु ने उसदूढ़कर गिरी हुई शक्ती को देखकर दुर्योधन की भुजा और छाती  
को तीन बाणों से घायल कर दिया हे राजा वह भयकारी युद्धमें अपूर्व रूप का  
चित्तका आनन्द देनेवाला सवराजाओंसे पूजितहुआ वह सुभद्राकापुत्र और कौरवों  
में श्रेष्ठ दुर्योधन दोनों शूरवीर भीष्म के मारने वा अर्जुन के विजय के निमित्त  
युद्ध करनेवाले हुए शत्रुओंके तपानेवाले युद्धमें वेगवान् व ह्मणोंमें श्रेष्ठ अश्वत्थामा  
ने सात्यकी को नाराचनाम बाणसे छतीपर घायल किया । ९ । फिर बड़े  
बुद्धिमान् सात्यकानेभी गुरुके पुत्रकोनवबाणोंसे सर्वमर्स्थलोंमें घायल किया । १० ।  
तिस पीछे अश्वत्थामा ने सात्यकी को नव बाणों से छातीपर और तास बाणों से

with nine arrows having holed joints wounded Abhimanyu and again pierced him with three more. Thereupon Abhimanyu much enraged hurled a deadly spear at Duryodhan's chariot but your brave son cut with his arrow the spear coming on towards him. Abhimanyu much enraged at the sight of that falling spear wounded the breast and arm of Duryodhan with three arrows. That dreadful battle O king was pleasing to the mind and respected by all the kings. The son of Subhakra and Duryodhan the best of the kaurvas both warriors fought for the death of Bhishma and the victory of Arjun. Ashwathama the destroyer of foes clever in battle and best of Brahmins wounded Satyaki on the breast with an arrow known as Narach. Satyaki the wise too, wounded the preceptor's son with nine arrows in the vital parts of the body. 10. Then Ashwathama wounded Satyaki on the breast with nine arrows and on

धेण सात्वतः । द्रोणपुत्रं त्रिभिर्याणैराजधान महायशः ॥ १२ ॥ पौरवो धृष्टकेतुश्च शरै  
राच्छाद्य संयुगे । बहुधा दारयाञ्चके महेष्वासं महारथः ॥ १३ ॥ तथैव पौरवं युद्धे  
धृष्टकेतुमहारथः । त्रिशता निशितैर्वाणैर्विव्याधाशु महाबुजः ॥ १४ ॥ पौरवस्तु धनु-  
दिष्टत्वा धृष्टकेतुमहारथ । ननाद बलघन्नादं विम्याध च शितैः शरैः ॥ १५ ॥ सान्यत्  
कामं क्रमादाय पौरवं निशितैः शरैः । आजधान महाराज त्रिसप्तत्या शिलीमुखैः ॥ १६ ॥  
तौतुतत्र महष्पासौ महामात्रौ महारथौ । महता शरवर्षेण परस्परमविध्यताम् ॥ १७ ॥  
अन्योन्यस्य धनुदिष्टत्वा हयाग्रहत्वाच्चभारत । विरथावसिपुक्षा १ समीपनुरमर्षणौ ॥ १८ ॥  
आर्षमे चर्मणौ चित्रे शतचन्द्रपुरस्कृते । तारकाशतचित्रं च निस्त्रिंशौ सुमहाप्रभौ  
॥ २९ ॥ प्रगृह्य धियालौ राजंस्तावन्धोन्यमभिदुतौ । घासितसङ्गमे यत्नौ सिंहाविष महा  
घने ॥ २० ॥ मण्डलानि विचित्राणि गतप्रत्या गतानि च । चेरतुदंशयन्तौ च प्राययन्तौ

भुजाओंपर घायल किया । ११ । द्रोणाचार्य के पुत्रने अत्यन्त घायल बड़े धनुष  
धारी यशवान् सात्वकी ने अश्वत्थामा को तीन बाणों से घायल किया । १२ ।  
महारथी पौरवने बड़े धनुषधारी धृष्टकेतु को बाणोंसे दककरअत्यन्त घायल किया, इसी  
प्रकार महारथी धृष्टकेतुने शघ्रितासे तेजघारवाले बाणोंसे पौरव को घादल किया । १४ ।  
फिर महारथी पौरव धृष्टकेतु के धनुषको काट कर महाघोर शब्दसे गर्जा और तीव्र बाणों  
से घायल किया । १५ । हेमहाराज उसने दूसरे धनुषको लेकर गिलीमुखनाम तीक्ष्ण  
बाणोंसे पौरवको व्यथित किया । १६ तबवहां उनदोनों बड़ेधनुषधारी शोभायमान  
महारीयोंने बाणोंकी बड़ीवर्षासे परस्परमें घायल किया । १७ । वहदोनों क्रोधयुक्त  
परस्पर में धनुष काटकर वा घोड़ों को मारकर विरथ हो खड्गमहारी युद्ध करने  
के लिये सम्मुख हुए । १८ । हे राजा वह दोनों शूरीर अत्यन्त स्वच्छरूप सूर्य  
चन्द्रमा से प्रकाशित खड्ग और उत्तम चित्रोंसे चित्रित ढालों को । १९ । ठेकर  
परस्पर में ऐसे सम्मुख गये जैसे कि महा वन में सिंहनी के मिलाप में उपाय  
करने वाले दो सिंह होते हैं । २० । परस्पर दितलाने और चारते हुए दोनों

the arms with thirty. Much wounded by the son of ucharya the  
great archer Satyaki of great glory, wounded him with three arrows.  
Valliant Paurav covered the great archer Dhrishtaketu with his  
arrows and wounded him much. In the same manner, brave Dhrisht-  
ketu wounded Paurav with his swift and sharp arrows. The brave  
Paurav cut down the bow of Dhrishtketu and with a loud roar wound-  
ed him with his arrows. 15. He took up another bow and with  
arrows sharpened on stone wounded Paurav. The two great archers  
then showered their arrows and wounded each other. The two  
enraged warriors cut down each other's bows and having killed the  
horses they jumped down from their chariots and faced each other to  
fight with swords. The two brave warriors with clean swords, bright  
like the sun and the moon, and good shields worked over with figures

परस्परम् ॥ २१ ॥ पौरवो धृष्टकेतुस्तु शंखदेशे महासिना । ताडयामास संकुशस्तिष्ठ  
तिष्ठति चाग्रवीम् ॥ २२ ॥ चेदिराजोपि समरे पौरव पुरुषर्षभम् - आजघान शिताम्रेण  
जत्रदेनो महासिना ॥ २३ ॥ तावद्योन्यं महाराज समासाद्य महाहवे । अन्वोऽप्यधेमाभिहतो  
निततुरारिन्दमौ ॥ २४ ॥ ततः स्वरथमंगैष्य पौरवं तनयस्तथ । अयत्सेनो रणेनाजाबपो  
बाहुरणोजिरात् ॥ २५ ॥ धृष्टकेतुस्तु समरेमाद्रीपुत्रः प्रतापवान् । अपोबाहुरणेभ्यः सहदेवः  
पराक्रमी ॥ २६ ॥ चित्रसेनः सुशर्माणं विद्या बहुमिरायसेः । पुनर्विध्याद्य त वध्वा  
पुनश्च नवभिः शरैः ॥ २७ ॥ सुशर्मो तु रणे क्रुशस्तथ पुत्रं विशागन्तः । दशभि  
र्दशभिश्चैव विध्याद्य निशिनैः शरैः ॥ २८ ॥ चित्रसेनश्च तं राजं विशतानतपर्वभिः ।  
आजघान रणे क्रुशः स च तं प्रत्यविष्यत् ॥ २९ ॥ श्रीप्रस्थ समरे राज्ञश्च यशो  
मानश्च पर्ययन् । सौमद्रेः राजपुत्रस्त वृहद्वलमयोधयत् ॥ ३० ॥ पार्थ हेतोः

वीरों ने विभिन्न दाहेंवायें मंडलों को किया । २१ । फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त पौरव  
बड़े खड्ग से धृष्टकेतु को शंखनाम भंग में घायल करके अर्थात् बाणों के नीचे  
छाती के ऊपर इधर उधरके हाड़ों में महरा करके तिष्ठ तिष्ठ यह शब्द बोले । २२ ।  
राजा चन्देरीने भी युद्ध में पौरव को तीक्ष्ण धार वाले बड़े खड्ग से बाहुदेश  
नाम भंगमें अर्थात् जाड़े में घायल किया । २३ । हे शत्रुहन्ता यह दोनों महा  
युद्ध में परस्पर भिड़े हुए तीक्ष्णता से घायल होकर पृथ्वीपर गिरपड़े । २४ ।  
उसके पीछे आपका पुत्र जितमेन युद्ध भूमि में पौरवको अपने रथपर सवार करके  
उसी रथके द्वारा युद्धभूमि से दूर ले गया । २५ । फिर माद्रीका पुत्र प्रतापवान्  
शूर पराक्रमी सहदेव युद्धमें धृष्टकेतु को वूरसे गया । २६ । चित्रसेन ने सुशर्मा को  
बहुत से सोहे के बाणों से घायल करके फिर साठ बाण से और नव बाणों से  
घायल किया । २७ । तब उम क्रोधयुक्तने भी उस चित्रसेन को कुकी गाँठ वाले  
तीस बाणों से घायल किया फिर उसने उसको घायल किया । २८ । हे राजा  
भीष्म के युद्ध में यशकीर्ति और प्रतिष्ठा को बढ़ाते हुए अभिमन्यु ने वृहद्वल

of various sorts, faced each other in battle as two furious lions wishing  
to secure a lioness, meet each other in a forest. Showing their prowess  
and desirous of fighting they turned right and left in circles. Then  
Paurav, much enraged, wounded his adversary on the breast and cried  
out 'stay, stay.' The prince of Chanderi too, wounded Paurav on the  
the jaw bone. The two warriors wounded by each other, fell down on  
earth. Then your son Jitsen took up Paurav on his chariot and  
carried him far away from the field of battle 25. Valliant Sahadev  
the son of Madri lifted up Dhrishtaketu and took him away out of  
the field of battle. Chitrasen wounded Susharma with many iron  
arrows numbering sixty and nmo. The other too, much enraged,  
wounded Chitrasen with thirty arrows having hooked points. They  
wounded each other. In the war of Bhishm, Abhimanyu aspiring

पराक्रान्तो भीष्मस्यायोधने प्रति । अर्जुनि कौसलेन्द्रस्तु पिप्वा पञ्च मिरायसैः ॥ ३१ ॥ पुनर्विध्याध विशस्या शरैः सज्जतयवामि । सौमद्रः कौसलेन्द्रस्तु विध्याधाध मिरायसैः ॥ ३२ ॥ नाकमपत सग्रामे विध्य ध ध पुनः शरैः ॥ कौसल्यस्य धनुश्चापि पुनर्दिक्छेद फाल्गुनि ॥ ३३ ॥ आज्ञवान शरैश्चापि त्रिशता कद्रु पशिभिः ॥ सोम्यत् कार्मुकमादाय राजपञ्चेद्वदलः ॥ ३४ ॥ फाल्गुनि समरे कुक्षो निध्याध बहुभिः शरैः । तथोयुद्धं समभवत् भीष्महतोः परन्तप ॥ ३५ ॥ संर प्ययोर्महाराज समरे विजयोधिनी । बथा देवासुरे युद्धे बलिवातसवधोरभूत् ॥ ३६ ॥ भीमसेनो रथानीकं योधपद् बहुबभौजत । यथा शक्ती यज्ञपाणिर्धारयत् पर्वतोत्त मान् ॥ ३७ ॥ ते वक्ष्यमाना भीमेन मातङ्गा गिरिसभिमा । निपेतुर्दुर्वी सहिता नादयन्तो वसुधराम् ॥ ३८ ॥ गिरिमात्रा हि ते नागा भिद्याश्चनचयोपमा । विरे

नाम राजकुमार से युद्ध किया । ३० । और अर्जुन के कारण से भीष्म की युद्ध-भूमि में पराक्रम करने वाला हुआ और राजा कौशल ने अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु को पाँच छोड़े के बाणों से बंध कर । ३१ । फिर गुप्तग्रन्थी वाले बीस बाणसे घायल किया और अभिमन्यु ने राजा कौमलको आठ छोड़े के बाणों से घायल और कम्पायमान करके उसके धनुष को भी काटा । ३२ । और कंकपल्लवाले तीस बाणों से भी घायल किया उस युद्ध में क्रोधपुक्त राजकुमार दृढवृत्तने दूसरे धनुषको लेकर । ३३ । अभिमन्यु को बहुत से बाणों से घायल किया हे शत्रुओं के संहार करनेवाले उन दोनोंका युद्ध भीष्म के कारण ऐसा अच्छा हुआ जैसा कि देवता और असुरों के युद्ध में राजा बलि और इन्द्रका हुआ । ३४ । भीमसेन रथों की सेनासे लड़ता ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि बज्रको धारण करने वाला इन्द्र उत्तम पर्वतों को फाड़ता हुआ शोभित होता है । ३५ । भीमसेन के हाथ से घायल पर्वतों के समान वह सब हाथी एक साथही पृथ्वीको शम्भायमान करते हुए भूमिपर गिरे । ३६ । पर्वतके समान दूटैहुए वह हाथी पृथ्वीपर

for fame and greatness, fought against Prince Vrahadbal 50. He fought for the love of Arjun in the battle field of Bhushm. Prince Kosal wounded Arjun's son Abhimanyu with five and twenty iron arrows having hidden knots and Abhimanyu having wounded and shaken his adversary with eight iron arrows, cut down his bow. With thirty arrows having peacock feathers he wounded him again. Enraged in battle, Prince Vrahadbal took up another bow and wounded Abhimanyu with many arrows. The two heroes, O destroyer of foes, fought like Indra and Bali in the war between the gods and the danavas 36. Bhishm fighting against the army of chariots looked graceful like Indra the wielder of vajra breaking through mountains. Wounded by Bhimsen the elephants as huge as hills fell on earth ringing the air with their shrieks. The elephants

जयंमुखां प्राप्ता विकीर्णा इव पर्वताः ॥ ३९ ॥ युधिष्ठिरे महेष्वासो मदराजानमा  
ह्वये । महत्या सेनया युग्मं पादयामास सङ्गतम् ॥ ४० ॥ मद्देश्वरश्च समरे धर्म  
पुत्रं महारथम् । पादयामास संरम्भो भीष्महेतोः पगाक्रमी ॥ ४१ ॥ विराट् सैन्यवो  
राजा विध्वा सन्नतपर्वामि । नवभिः सायकैस्तीक्ष्णैश्चिन्शता पुनरार्पयत् ॥ ४२ ॥  
विराटश्च महाराज सैन्यं चाहिनीपतिः । त्रिशद्भिर्निशैतर्वाणैराजघातस्तनान्तरे  
॥ ४३ ॥ चित्रशामुकनिर्भयौ चित्रमार्गयुधजौ ॥ रेजनुदिवन्नरूपौ तौ समामेमास्य  
सैन्यवौ ॥ ४४ ॥ द्रोणः पाञ्चालयुत्रेण समागम्य महारणे । महासमुद्रं चक्रे शरैः  
सन्नतपर्वभिः ॥ ४५ ॥ ततो द्रोणो महाराज पार्यंतस्य महश्चतुः । छित्वा पञ्चाश  
तेष्टूणां पार्यंतं समविध्यत ॥ ४६ ॥ सोम्यत् कौमुकमादाय पार्यंतः परधीरहा ।  
द्रोणास्य निपतयुद्धे प्रेषयामास शायकान् ॥ ४७ ॥ ताच्छरच्छरघातेन विच्छेद

वर्तमान ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि दूटे हुए पहाड़ होते हैं ३९ । वही सेना  
रक्षित बड़े धनुषधारी युधिष्ठिर ने युद्ध में सम्मुख आये हुए राजा मद्रको पीड़ामान  
किया । ४० । फिर क्रोधयुक्त महारथी राजा मद्र ने भीष्म के कारण से धर्म पुत्र  
युधिष्ठिरको पीड़ामान किया । ४१ । राजा सिन्धने गुप्तग्रन्थी वाले नव बाणों से  
विराट्को वेधकर तीस बाणों से घायल किया । ४२ । फिर बाहिनीपति विराट्ने  
राजा सिन्धको तीक्ष्ण धारवाले तीस बाणों से छाती में घायल किया । ४३ ।  
वह दोनों जड़ाऊ धनुष खट्वा चर्म ध्वजा शस्त्रवाले अपूर्व रूप विराट् और  
जयद्रथ युद्ध में महाशोभायमान हुए । ४४ । द्रोणाचार्य ने अपूर्व युद्ध के बीच  
धृष्टद्युम्न के साथ बड़ेकर गुप्तग्रन्थीवाले बाणों से महाप्रबल युद्ध किया । ४५ ।  
इसके पीछे द्रोणाचार्य ने धृष्टद्युम्न के बड़े धनुष को काटकर पचास बाणों में  
उसको वेधा । ४६ । फिर धृष्टद्युम्न ने दूसरे धनुष को लेकर द्रोणाचार्य के देखते  
हुए शायकों को चलाया । ४७ । उस महारथी ने बाणों के महारतेही उन बाणों

fallen down on the ground looked like huge mountains broken into  
pieces. Protected by a large army the great archer Yudhishtir  
wounded the king of Madra who was opposing him in battle. 40.  
40. The valliant king of Madra, much enraged on account of  
Bhisam, wounded Yudhishtir the son of Dharna. The king of  
Sindh wounded and pierced king Virat with nine and thirty arrows  
having hidden knots and king Virat wounded the king of Sindh  
with thirty sharp edged arrows on the breast. The two warriors,  
Virat and Jayadrath, armed with jewelled bows, swords, banners  
and weapons, looked wonderfully glorious in battle. In that wonder-  
ful battle Dronacharya and Dhrishtadyumn fought very valliantly  
with arrows having hidden knots 45. Then Dronacharya cut down  
the bow of Dhrishtadyumn and pierced him with fifty arrows.  
And the latter, taking up another bow, discharged his arrows at

समहारयः । द्रोणोऽपदपुत्राय प्राहिणोत्पञ्च सायकान् ॥ ४८ ॥ ततःक्रुद्धोमहाराज  
 पार्षतः परवीरहा । द्रोणाय चिक्षेप गदां यमदण्डोपमां रणे ॥ ४९ ॥ तामापतन्तो  
 सहसा हेमपट्विभूषिताम् । शरैः पञ्चाशता द्रोणो वारयामास संयुगे ॥ ५० ॥  
 सा छिन्ना घट्टया राजन् द्रोणचापच्युतैः शरैः । चूर्णीकृता चिंशीर्यन्ती पपात  
 घसुधातले ॥ ५१ ॥ गदां चिनिहतां दृष्ट्वा पार्षतः शत्रुतापनः । द्रोणाय प्रार्थितं चिक्षेप  
 सर्वपाट्यर्षी शुभम् ॥ ५२ ॥ तां द्रोणो नयमिषाणैश्चिच्छेद् धुधि भारत । पार्षतञ्च  
 महेष्वास पीडयामास संयुगे ॥ ५३ ॥ पचमेतन्महायुधं द्रोणपार्षतयोरिभूत् । भीष्मं प्रति  
 महाराज घोररूपं भयानकम् ॥ ५४ ॥ अर्जुन प्राप्य गाङ्गेयं पीडयन्निशितैः शरैः । अग्न्य  
 द्रवत सम्भक्तो वने मत्त मिषद्विभम् ॥ ५५ ॥ प्रत्युद्ययौ च तं राजा भगदत्तः प्रतापवान् ।  
 त्रिधामिन्नेतनातेन मदधिने महाबलः ॥ ५६ ॥ तमापततं सहसा महद्भगज सभिम् ।

को कादा फिर द्रोणाचार्य ने घृष्ट्युम्न के लिये पांच शायकों को चलाया । ४८।  
 इतके पीछे क्रोधयुक्त घृष्ट्युम्न ने यमदण्ड के समान गदाको द्रोणाचार्य के  
 ऊपर फेंका । ४९ । और द्रोणाचार्य ने उस गिरने वाली गदाको पचास बाणों  
 से रोका । ५० । हे राजा द्रोणाचार्य के घनुष से निकले हुए बाणों ने उस गदा  
 को चूर्ण करके पृथ्वी पर गेरा । ५१ । शत्रुसंतापी घृष्ट्युम्न ने गदाको टूटीटुई  
 देस कर सब लोहमयी दृढ़शक्ती को द्रोणाचार्य के ऊपर फेंका । ५२ । फिर द्रोणा-  
 चार्य ने भी उस बड़े घनुषवारी घृष्ट्युम्न को पीड़ित किया । ५३ । हे राजा इस  
 प्रकार भीष्म के सम्मुख द्रोणाचार्य और घृष्ट्युम्न का महा भयानक रूप बुद्ध  
 हुआ । ५४ । फिर तीक्ष्ण बाणों से सबको पीड़ित करता हुआ गांगेय भीष्मजी  
 को पाकर वन के सम्मुख ऐसा गया जैसे कि वन में अत्यन्त मतवाला हाथी  
 मदोन्मत्त गजेन्द्रके सम्मुखहोये । ५५ । प्रतापवान् महाबली राजा भगदत्त तीन अंगोंसे  
 मदचूने वाले महा मतवाले हाथी की सवारीसे सम्मुख गया । ५६ । तब अर्जुन बड़े

the former and cut down his arrows with his own. Dronacharya then discharged five arrows at him and Dhrishtadyumna much enraged hurled at him his mace like the staff of Yam; but Dronacharya checked it with fifty arrows. 50. The arrows shot from the bow of Dronacharya broke the mace into pieces. Seeing his mace cut down, Dhrishtadyumna the destroyer of foes hurled a hard spear, made entirely of iron, at Dronacharya. The latter too, wounded the former with his weapons. Thus in the presence of Bhishma there was a severe fight between Dronacharya and Dhrishtadyumna. Wounding all with his sharp arrows, he rushed against Dronacharya as one mad elephant rushes against another in a forest. 55. Mighty king Bhag-datta of great prowess came upon the back of the elephant who dropped juice from three parts of his body. Arjun carefully faced

पर्यन्त समास्थाय भीमस्तु प्रत्यपद्यत ॥ ५७ ॥ ततो गजगमोराजा भगदत्त प्रतापवान् । अर्जुन शरवर्षेण धारयामास मयुगे ॥ ५८ ॥ अर्जुनस्तु ततो नाग मायान्त रजतो पत्नै । विमलैरायसैस्तीक्ष्णैरविध्यत महारणे ॥ ५९ ॥ शिखण्डिनञ्च धौन्तेयो याहि याहीत्यघोदयत् । भीष्म प्रति महाराज जह्नेनमिति चाब्रवीत् ॥ ६० ॥ प्राग्ज्योतिषस्तनो हित्वा पाण्डव पाण्डुपूर्वज । प्रययौ स्मरितो राजन् द्रुपदस्य स्व प्रति ॥ ६१ ॥ ततोर्जुनो महाराज भीष्ममभ्यद्रवद्रुतम् । शिखण्डिन पुरस्सृत्य ततो युग्ममपत्तत ॥ ६२ ॥ ततस्ते तावका शरा पाण्डव रभस युधि । समभ्यधावन् प्रोशन्तस्तद्भुतगिवाभधत् ॥ ६३ ॥ नानाविधान्यनीधानि पुत्राणान्ते जनाधिप । अर्जुनो व्यधमरुतान् द्विधीवाध्नाणि मारुतः ॥ ६४ ॥ शिखण्डीतु समासाय भरतानां पितामहम् । इषुभिस्सूर्गमध्यमो बहुभि ससमा बिनोत् ॥ ६५ ॥ स्याम्यगारक्षार्पाच्चरसिशक्तिगदेन्धन । गरत्तघमहा बाल क्षत्रियान् समरेदहत् ॥ ६६ ॥ यथाग्निं कुमहनिद्ध कक्षे चरति नानिद्ध । तथा जज्वाल

उपाय में नियत होकर उस गजेन्द्रपरावतके समान महानली गिरतेहुए हाथीके सम्मुख हुआ । ५७ । उसके पीछे प्रतापवान् भगदत्तने बाणों की वर्षासे दकदिया । ५८ । फिर अर्जुनने चाँदीके समानस्वच्छ लाहेके बाणोंसे उस आतेहुए हाथीको वेधा । ५९ । हे महाराज फिर अर्जुनने शिखण्डीको भीष्मकी ओर प्रेरित किया और कहा कि जाओ इसकोमारो । ६० । हेपांडुके ज्येष्ठभ्राता धृतराष्ट्र फिरराजा प्राग्ज्योतिष अर्जुनको जोह कर शीघ्रही द्रुपदके रथके समीपगया । ६१ । इसकेपीछे अर्जुन शिखण्डीको आगेकरके शीघ्रही भीष्मके सम्मुखगया और युद्ध जारीहुआ । ६२ । तदनन्तर आप के शूरवीर पुन पुकारते हुए वहे वेगसे अर्जुन के सम्मुख दौड़े वह आश्चर्यसा हुआ । ६३ । वहाँ अर्जुन ने आपके पुत्रोंकी नानाप्रकार की सेनाको ऐसे छिन्न भिन्न करादिया जैसे कि वायु आकाशमें बादलोंको छिन्न भिन्न करदेताहै । ६४ । फिर उस सावधान शिखण्डीने भरतवशियोंके पितामह भीष्मको पाकर अनेकबाणोंसे दकदिया । ६५ । उस रथरूप अग्निशाला और धनुषरूप ज्वाला वा खड्ग शक्तीरूप इन्धन वा बाण समूहरूप भज्जालितरूप वाले भीष्मने युद्धमें क्षत्रियोंको भस्म कर दिया

that powerful elephant coming on like Airavat the prince of elephants. Then glorious Bhagdatta hid him with the shower of his arrows. With iron arrows bright as silver, Arjun wounded that advancing elephant. Then he sent Shukhandi against Bhishm saying, "Go and kill him 60 The king of Pragjyotish O elder brother of Pandu, left Arjun and hastened to encounter Drupad in his chariot. Then Arjun following Shil handi hastened against Bhishm and began fighting. Then your brave sons came up roaring against Arjun. It was a wonderful sence Arjun dispersed the armies of your sons as the wind disperses the clouds. Clever Shukhandi covered the grand father with his arrows. 65 In that sacrificial ground having chariots

भीष्मोऽपि विश्वान्यस्त्राग्युदीरयन् ॥ ६७ ॥ सोमकांश्च रणे भीष्मो जम्ने पार्थपदानुमान् ।  
 ग्यचारयत तत् सैन्यं पाण्डवस्य महारथः ॥ ६८ ॥ सुवर्णपुष्पैरिषुभिः शिखैः सज्जनपर्वभिः ।  
 नादयन् स विशो भीष्मः प्रदिजश्च महाद्वये ॥ ६९ ॥ पातयन् रथिनो राजन् हव्यांश्च सह  
 सादिभिः । सुष्ठतायवज्जनीच चकार स रथमज्जान् ॥ ७० ॥ निर्मनुष्यान् रथान् राजन्  
 गजानश्वांश्च सगुमे । चकार समरे भीष्मः सर्वशस्त्रभृताम्बरः ॥ ७१ ॥ तस्य ज्यातल  
 निर्घोषं चिरूज्जितमिवाशने । निशम्य सर्वतो राजन् समक्कम्पन्त सैनिकाः ॥ ७२ ॥  
 अमोघा ग्यतन् वाणाः पितुस्ते भनुजेश्वरः । नासज्जन्त शरीरेषु भीष्मचापस्युताः शराः  
 ॥ ७३ ॥ निर्मनुष्यान् रथान् राजन् सुयुक्तान् जवनैर्हयैः । धातायमानान्द्राक्षं ह्रियमा  
 णान् विशाम्पते ॥ ७४ ॥ चेदिकाशिकरूपाणां सहस्राणि चतुर्दश । महारथाः समाख्याताः

। ६६ । जैसे कि वन में वृद्धियुक्त बड़ी अग्निवायु के साथ घूमती है उसी प्रकार  
 दिव्यअस्त्रोंको चलाते हुए भीष्मजीभी अग्निकी वर्षा करनेवासे हुये । ६७ । भीष्मजी  
 ने अर्जुन के पीछे चलने वाले सोमकों को मारकर सब सेनाको भी रोका । ६८ ।  
 हे राजा भारी युद्धमें दिशा और विदिशाओंको शब्दायमान करने और सुनहरी  
 पुंखवाले वा गुह्यग्रन्थी बाने वाणोंसे । ६९ । रथी घोड़े और सवारोंको गिराते  
 हुए भीष्मने रथके समूहोंको मुसह ताल वनोंके समान कर दिया । ७० । सब शस्त्र  
 पारियों में श्रेष्ठ भीष्मने युद्ध में रथ हाथी और घोड़ों को सवारों से रहित किया  
 । ७१ । हे राजा उसके धनुष मत्स्यंका के वज्र के समान शब्दको सब ओर से  
 घुनकर सब सेना अत्यन्त कम्पायमान हुई । ७२ । इसके पीछे वह वाण बारम्बार  
 सफल होकर गिरे और भीष्म के धनुष से निकले हुए वाण शरीरोंमें लग २ कर  
 पारही होगये । ७३ । हे राजा मैंने तीव्रगामी घोड़ों से युक्त और वायुके समान  
 चलने वाले रथों को बिना सवारों के धोड़ देखा । ७४ । चन्देरी काशी क्रोश  
 देशियों के कुलीन महारथी शरीरके मोहको त्यागने वाले महा प्रतिद्व युद्धसे

for altar, bows for fire, swords and spears for fuel, glorious Bhishm  
 burnt down with his arrows many a warrior in the field of battle.  
 Bhishm went on spreading fire as the wind carries with it fire in a  
 burning forest. Bhishm killed the Somaks who followed Arjun and  
 checked the whole army. Filling all the directions of the field of  
 battle with sounds and slaying the riders of chariots and horses with  
 his arrows having hidden knots, Bhishm made the groups of chariots  
 like a forest of headless palms 70. Bhishm the best of warriors  
 made the chariots, elephants and horses riderless in the field of battle.  
 Hearing the vajra like sounds of his bowstring, all the army shook  
 with fear. The arrows fell again and again hitting the marks and  
 pierced through the bodies of those they touched. I saw, O king,  
 chariots swift as wind made riderless. The noble warriors of  
 Chanderi, Kashi and Krosh, setting aside all love for life, not turning



कुलपुत्रास्तनुयजः ॥ ७५ ॥ अपरायत्तिनः शूरा सुवर्णचिकृतध्वजाः । संप्रामे भीष्ममा  
साय सवाजिरथकुञ्जराः ॥ ७६ ॥ जग्मुस्ते परलोकाय व्यादितास्पमिधान्तकम् । न  
तत्रासीद्रेण राजन् सोमकानां महारथः ॥ ७७ ॥ यः संप्राप्य रणे भीष्मं जीवियतेस्ममनो  
दधे । तांश्च सर्वान् रणे योधान् प्रेतराजपुरं प्रति ॥ ७८ ॥ नीतानमन्यन्त जना इष्ट्वा  
भीष्मस्यधिक्रमम् । न कश्चिदेनं समरे प्रत्युवाति महारथः ॥ ७९ ॥ श्रुते पाण्डुसुतं वीरं  
श्वेतादयं कृष्णसारथिम् । शिखण्डिनञ्च समरे पाञ्चाल्यममितीजसम् ॥ ८० ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि संकुलयुद्धे

सप्तदशाधिकशतोऽध्यायः ॥ ११७ ॥

सञ्जय उवाच । शिखण्डीतुरणे भीष्म मासाद्यपुदपर्वमम् । दशभिर्निशितैर्मल्लै राज  
घान स्तनान्तरे ॥ १ ॥ शिखण्डिनस्तु गाङ्गेयः क्रोधदीप्येन च वृषा । सम्प्रेक्षत कटाक्षेण  
निर्हृहन्निभारत ॥ २ ॥ स्मृत्यं तस्य स्मरन् राजन् सर्वलोकस्य पश्यतः । नाजघान

मुख न मोहनेवाले अति शूर सुनहरी ध्वजावासे घोड़े रथ हाथियों समेत उस  
मुत्तुके समान भीष्मको युद्ध में पाकर परलोक को सिपारे हे राजा उसयुद्ध में  
सोमकों का ऐसा कोई महारथी नहीं हुआ ७७। जो युद्धभूमि में भीष्म को पाकर  
जीवता हुआ जावे सबमनुष्यों ने भीष्मजी के पराक्रम को देखकर उन सब धूरवीरों  
को यमपुर को पहुँचा हुआही माना युद्धमें । ७९। श्वेत घोड़ेवाले श्रीकृष्णजी  
को सारथी रखनेवाले वीर अर्जुन और वड़े तेजस्वी पांचालदेशी शिखण्डी के  
सिवाय कोई महारथी उनके सम्मुख नहीं गया ८० ॥

अध्याय ११८ ॥

संजय बोले हे पुरुषोत्तम धृतराष्ट्र शिखण्डी ने युद्ध में भीष्मजी को पाकर  
सीध्ण भारवासे दश भल्लों से छाती में घायल किया । १। फिर तिरछी दृष्टि  
से भस्मकरते हुए भीष्मजीने क्रोधयुक्त नेत्रोंसे शिखण्डीको देखा । २। हेराभा उसके  
स्त्रीपनको ध्यान करते हुए भीष्मजीने सबके देखतेहुए महार नहीं किया और उस

their faces from the field of battle, exceedingly brave, with golden  
banners, horses, chariots and elephants, died in battle before dreadful  
Bhishm. None of the Somak warriors went away alive from the  
field of battle after encountering Bhishm. The people who saw  
Bhishma's prowess believed that he would send all the warriors to  
the region of Yam. No warrior could oppose him except Shikhandi  
and Arjun whose white horses were driven by Krishn." 30

### CHAPTER CPVIII

Sanjaya said to Dhritrashtra, " Having encountered Bhishm in  
battle, Shikhandi wounded him with ten darts in the breast. Bhishm  
then turned his eyes in anger towards Shikhandi as if he would burn  
him down; but remembering his womanhood he gave him no reply  
with his weapons and Shikhandi did not know it. Then Arjun said

रणे भीष्मः स च तन्नावबुधवान् ॥ ३ ॥ अर्जुनस्तु महाराज शिखण्डिनममायत । अग्नि  
द्रवस्व त्वरितं जहि चेन पितामहम् ॥ ४ ॥ किन्ते विघ्नस्तथा वीर जहि भीष्मं महार  
थम् । न ह्यन्यमनुपदयामि कश्चिद्योधिष्ठिरे वले ॥ ५ ॥ यः शक्तः समरे भीष्मं प्रति  
योद्धुं मिहाहवे । श्रुते स्यात्पुरुषव्याघ्र सत्यमेतद्भ्रवीमि ते ॥ ६ ॥ यद्यमुक्तस्तु पापेन  
शिखण्डी भरतर्षभ । शूरनानाधिघैस्तूर्णे पितामहमवाफिरत् ॥ ७ ॥ अचिन्तयित्वा तान्  
वाणान् पिता देवव्रतस्तव । अर्जुन समरे दुष्टं धारयामास सायकैः ॥ ८ ॥ तथैव च  
चम् स्यात्पाण्डवानां महारथः । अप्रेषीत् स शरैस्तीक्ष्णैः परलोकाय मायि ॥ ९ ॥  
तथैव पाण्डवा राजन् सैन्येन महता वृताः । भीष्म सञ्छादयामामुर्मेषा इव त्रिधाकरम्  
॥ १० ॥ स समस्तात् परिहृतो भारतो भरतर्षभ । निर्दवाहरणे शूराश्च ये धनिरपि  
श्वलक्ष् ॥ ११ ॥ तद्वाद्भुतमपश्याम तव पुत्रस्य पौरुषम् । अयोधयञ्चयत् पार्थ जुगोपश्च  
पितामहम् ॥ १२ ॥ कर्मणा तेन समरे तव पुत्रस्य चन्विनः । दुःशासनस्य तुतुषु सर्वे

शिखण्डीने उसको नहीं जाना । ३ । इसके पीछे अर्जुनने शिखण्डी से कहा कि  
शीघ्रही इन पितामह को सम्मुख चककर मारो । ४ । हे वीर मैंने मारनेकीही  
इच्छासे तुम्हको आगे किया है कि तुम इस महारथी भीष्मको मारो मैं युधिष्ठिर  
की सेनाभर में किसी औरको ऐसा नहीं देखनाहूँ जो तेरे सिवाय इस प्रबल युद्धमें  
भीष्मजी के सम्मुख युद्ध करनेको समर्थ होवे हे पुरुषोत्तम मैं यह सत्यहीसत्य कहता  
हूँ । ५ । फिर अर्जुनसे इसरीति से करेहुए शिखण्डीने शीघ्रही नानाप्रकारके बाणों से  
पितामहको दक दिया । ६ । हम के पीछे आपके पिता देवव्रत भीष्मजीने उन बाणों  
को तुच्छ समझकर क्रोधपुक्तहोके युद्धभूमि में अर्जुनको आयाकोंसेरोका । ७ । इसी  
प्रकार उसमहारथी अर्जुनने सबमेनाको अपनेबाणोंसे परलोकमें भेजा । ८ । इसप्रकार  
बड़ीसेना समेत पाण्डवों ने भीष्मको ऐसे घेरलिया जैसा कि बादल सूर्यको घेरलेंतै  
। ९ । फिर चारों ओरसे घिरेहुए भीष्मजी ने शूरवीरोंको ऐसा भस्मीभूत किया  
जैसे कि कोपित अग्नि वनको भस्मकरदेताहै । १० । वहाँ हमने आपके पुत्रके  
पुरुषार्थ को देखा जो अर्जुन से युद्धकरके पितामह को राक्षित किया । १२ ।

to Shikhandi, "Hasten to face the grandfather and slay him. I have put you before me in order to slay him. I see none in Yudhishtir's army except you, who can withstand him in battle, and what I say is the truth." Thus addressed by Arjun, Shikhandi soon hid the grandfather with his arrows. Then your father Devabart Bhishm, disregarding those arrows, checked Arjun with his shafts. In the same manner, valliant Arjun sent the warriors to the region of Yam. The Pandavas surrounded Bhishm as clouds do the sun. 10 Then surrounded on all sides, Bhishm began to destroy the warriors as fire in its fury does a forest. There we saw the prowess of your son who fought against Arjun and protected the grandfather. From

लोषा महात्मनः ॥ १३ ॥ यदेक समरे पार्थाय सार्जुमान् समयोद्यतः । न चैनं पाण्डया युद्धे वाग्यामासुर्व्वरम् ॥ १४ ॥ दुःशासनेन समरे रथिनो विधीकृताः । सादिनो न मपेयासा हस्तिनाञ्च गदाचला ॥ १५ ॥ विभीभिर्जाः शैरस्तीक्ष्णैर्निपेतुर्मृपातले शरानुरास्तैषान्ये दन्तिनो मित्रादिशः ॥ १६ ॥ यथ शिरिध्नं प्राप्य ज्वले हीनाच्छिद्यन्वणम् । तथा जज्वाल पुत्रन्ते पाण्डु सेनां विभिर्दहन् ॥ १७ ॥ तं भारतमहामात्रं पाण्डवानां महारथ । जेतुं नोत्सहते कश्चिन्नाभ्युघातुक्यञ्चन ॥ १८ ॥ ऋते महेन्द्रनयान्द्वेताभ्यात् कृष्णसारथे । सहितं समरे राजन् निर्दिज्य विजयोर्जुनः ॥ १९ ॥ भीष्ममेवाभिदुद्राघ सर्वं सैन्यस्य पश्यतः । विजितस्तवपुत्रोऽपि भीष्मयाहुव्यपाश्रयः ॥ २० ॥ पुनः पुनः समाश्रय्य प्रायुषत मदोत्कटः । भर्जुनस्तु

आपके धनुषधारी पुत्र दुश्शासन के कर्ममें युद्ध में सब लोगों को विश्वास हुआ कि । १३ । इस अहमे नेही अर्जुन से उसके सब माथी पाण्डवों समेत युद्ध किया और प्रत्यक्ष मैं उसको पाण्डव लोग युद्ध से नहीं हटासके । १४ । उस युद्ध में दुश्शासन के हाथ से रथी धिरथ हुए और बड़े धनुषधारी सवार और महाबली हाथी । १५ । तीक्ष्णबाणों ने घायल होकर पृथ्वी पर गिर और इसी प्रकार बाणों से पीड़ित मान अन्य हाथी चारों दिशाओं में भागे । १६ । जैसे कि अग्नि इन्धन को पाकर प्रकाशित ज्वालन होकर प्रत्यक्ष कोपयुक्त होती है उसी प्रकार पाण्डवों को मेनाका जजाता हुआ आपका पुत्र भी ज्वलित अग्नि के समान होगया । १७ । हे भरतवशीपाण्डवोंके किसी महारथी ने जेतघोड़े वाले श्रीकृष्ण महागज को सारथी बनानेवाले महारथी इन्द्रके पुत्र अर्जुन के सिवाय उस बड़े शोभायमान के विजय करनेको साहस और उत्साह नहीं किया और न किसी रीति से सम्मुख जानका विचार किया । १८ । हे राजा फिर वह विजयी अर्जुन युद्ध में उसको जीतकर सब सेना के देखने हुए भीष्मजी के सम्मुखगया और वह पराजय पाने वाला आपका पुत्र महामदो-मत्त उन भीष्मजीकी धुमाओ

the prowess of your son Dushasan, all the people belived that he alone was capable of withstanding Arjun and other Pandavas. Dushasan destroyed the chariots of the warriors, and the great archers, horsemen and powerful elephants, wounded by sharp arrows, fell down on earth. Other elephants wounded by arrows fled in all directions. As fire fed by fuel burns and blazes up furiously, so did your son destroy the Pandav armies 17. None of the Pandav warriors, O king except the valliant son of Indra, Arjun who had Krishan for the driver of his white horses, dared to conquer him in battle, nor did any one oppose him. Then Arjun the conquerer, having conquered him in battle within sight of all the warriors, faced Bhishm, and your son, de'cated in battle, took refuge with Bhishm. 20.

रणे राजन् योधयन् संन्यराजत ॥ २१ ॥ शिखण्डीतुरणे राजन् त्रिव्याधेन पितामहम् ।  
 शरैरशनिसेस्पर्शस्तथा सर्वविधोपमैः ॥ २२ ॥ न च स्म ते रुजं चक्षुः पितुस्तथ जने  
 दधर । स्मयमानस्तु गाङ्गेयस्तान् धाणान्जगृहे तदा ॥ २३ ॥ उष्णासौ हि नरोयद्वज्र  
 जलधाराः प्रतीच्छति । तथा जग्राह गाङ्गेयः शरधाराः शिखण्डिन ॥ २४ ॥ तं क्षत्रिया  
 महाराज वदधुर्वोरमाह्वे । भीष्मं दहन्तं सैन्यानि पाण्डवाना महारमनाम् ॥ २५ ॥  
 ततोऽग्रधीच्छ सुतः सर्वसैन्यानि मारय । अभिद्रवत संप्रामे फाल्गुनं सर्वतो रणे  
 ॥ २६ ॥ भीष्मो च समरे सर्वां पालयिष्यति धर्मवित् । ते मयं सुमहत्प्रकृया  
 पाण्डवान्प्रतिपुंर्यत ॥ २७ ॥ हेमतालेन महता भीष्मस्तिष्ठति पालयन् । सर्वेषां धार्तरा-  
 ष्ठाणां समरे शनं धर्मव ॥ २८ ॥ त्रिदशपि सप्तयुक्तानालं भीष्म समासितुम् ।  
 किमुपायां महारमानं मर्येभृता महाबलाः ॥ २९ ॥ तस्माद्द्रवत मापोषा फाल्गुनं  
 का आश्रयलेकर । २० । बारंबार साहस्यको करके फिर युद्ध करनेलगा तब वह  
 अर्जुन युद्ध में लड़ताहुआ महा शोभायमान हुआ । २१ । हे राजा कि शिखण्डी  
 ने युद्ध में बज्रके समान स्पर्शजाले बिपभरे सर्पके समान बाणों से पितामह को  
 घायल किया । २२ । उन बाणों से आपके पिताकुछ भी पीड़ित नहीं हुए उस  
 समय आश्चर्य्य करते हुए भीष्मजीने उन बाणों को सह लिया । २३ । जैसे  
 प्याससे दुखी मनुष्य जलकी धाराओं को चाहताहै उसी प्रकार भीष्मजी ने  
 शिखण्डीकी बाणधाराओं को सहजदीमें सहलिया । २४ । फिर क्षत्रियोंने महान्मा  
 पाण्डवों की सेनाओं के भस्म करनेवाले भीष्मजी को युद्धमें भयंकर देखा । २५ ।  
 इसके पीछे आपका पुत्र सब सेनाओं से बोला कि युद्ध में सब मोर से अर्जुन के  
 सम्मुख जाओ । २६ । धर्म के जानने वाले भीष्मजी युद्धमें तुमसब की रक्षाकरेगे  
 वह भयको अत्यन्त त्यागकरके पाण्डवोंके सम्मुख युद्धकरते हैं युद्धमें धृतराष्ट्रके सब  
 पुत्रों के सुखरूप चित्तकी रक्षाकरते हुए भीष्मजी सुनहरी तालध्वजासमेत निपत हैं  
 । २८ । २९ । उपाय करनेवाले देवतालोगभी भीष्मके सम्मुख खड़े होनेको समर्थ नहीं

Again taking courage he engaged in battle. Arjun fighting there was very glorious to behold. Again Shikhandi wounded the grandfather with his arrows hard of touch like vajra and poisonous like serpents. Your father was not disturbed with those arrows and bore them to the great amazement of all. 23. As one afflicted with thirst looks expectantly for a shower of rain, Bhishm bore patiently the shower of Shikhandi's arrows. The kshatriyas then looked at the dreadful form of Bhishm the destroyer of Pandav armies. Your son then ordered his soldiers to attack Arjun on all sides, saying, "Bhishm who knows his dharma well, will protect you in battle. He is fighting fearlessly against the Pandavas and is standing in the battle field with his golden standard of palm tree, pleasing the sons of

माप्य संयुगे । अहमद्य रणे यत्तो पोषयिष्यामि पाण्डवम् ॥ ३० ॥ सहितः सर्वतो  
 पत्नैर्मघद्विर्वसुधाधिपैः । तच्छुत्वा तु वचो राजंस्ततैः पुत्रस्यधन्विनः ॥ ३१ ॥  
 सर्वे पोधा सुसंरब्धा बलवन्तो महाबलाः । ते विद्वा कलिङ्गाश्च दासैरकणायह  
 ॥ ३२ ॥ अभिपेतुर्निपादाश्च सौवीराश्च महारणे । बाह्लिका द्रुदाश्चैव प्रती-  
 ष्योदीमालयाः ॥ ३३ ॥ अभिपाहाः शूरसेनाः शिषयोऽप्य वशातयः । शाल्वाः  
 शकास्त्रिगर्ताश्च अम्बष्ठा केकयै सह ॥ ३४ ॥ अभिपेतु रणे पार्थ पतङ्गा इव पावकम् ।  
 स तान् सर्वान् शतानीकान् महाराज महारथान् ॥ ३५ ॥ विद्यान्यस्त्राणि सन्निभस्य  
 प्रसन्धाय धमञ्जयः । स तैरस्त्रैर्महावेगैर्ददाहाशु महायलाः ॥ ३६ ॥ शरज्जता  
 पैर्धौमत्सुः पतङ्गानिव पावकः । तस्य बाणसहस्राणि सृजतो दृढधन्विनः ॥ ३७ ॥  
 दीप्यमानमिवाकाशे गाण्डीयं समदृश्यत । ते शरार्त्ता महाराज विप्रहीर्णमहाबलाः

हैं तो मरण धर्मवाले पांडव उस महात्मा के सम्मुख होनेको कैसे समर्थ होसके हैं  
 । २९ । इस निमित्त मेरे शूरवीर लोग जाकर युद्धमें अर्जुन को पाकर संग्राम करो  
 अब युद्ध में चैतन्यहोकर मैं तुमसब राजाओं समेत पांडव युधिष्ठिरसे लड़ूंगा हे राजा  
 आपके धनुषधारी पुत्रके इस वचनको सुनकर । ३१ । सब शूरवीर लोग अत्यन्त  
 क्रोधयुक्त महाबली विदेह कलिंग दासैरक गण निपाद सौवीर बाह्लीक द्रुदऔर  
 पश्चिमोत्तरीय राजा लोग मालव । ३३ । अभिपाह शूरसेन शिष्य वशातय शाल्वशक  
 त्रिगर्त केकयों समेत अम्बष्ठ । ३४ । यह सब उस महायुद्ध में अर्जुनके सम्मुख दौड़े  
 हे राजा जैसे कि पतंग और शतभा अग्नि में गिरते हैं इसी प्रकार युद्धमें उस अद्रि  
 नीय अर्जुन की ओरको दौड़े । ३५ । फिर उसमहाबली अर्जुनने दिव्य अस्त्रोंको  
 विचार पूर्वक प्रयोग करके उन बड़े उत्तम दिव्य अस्त्रों और बाणों के उष्ण  
 तेजसे शीघ्रही इन सबसेना समेत महारथियों को ऐसे भस्म किया जैसे कि अग्नि  
 पतंगोंको भस्म करदेताहै । ३७ । उसमहाबली अर्जुनका वह गांडवि धनुष हजारों

Dhritrashtra : Even the great gods dare not withstand him; how  
 can the Pandavas who are only mortals oppose him. All my warriors  
 should therefore oppose Arjun and I with all my princes shall fight  
 against Yudhishtir." Hearing these words of your son, the archer,  
 ( 31 ) all the warriors in great anger—valliant Videh Keling the  
 Dasairaks, the Nishadas, the Sauvirs, the Vahliks, the Daradas, the  
 princes of the North-west, the Malvas, the Shursenas, the Shivayas,  
 the Vatashayas, the Shalwashaks, the Trigartas, the Kaikayas and  
 the Amvashtas—rushed upon Arjun. They ran against Arjun as  
 insects fall into the burning fire. 35, Valliant Arjun then carefully  
 discharged his divine weapons and with them as well as with the fire  
 of his arrows, he soon destroyed those warriors as fire does the insects.  
 The Gandiv bow of mighty Arjun, discharging myriads of arrows.

॥ ३८ ॥ नाशयन्तं राजानं सहिता वानरध्वजम् । सध्वजा रथिनः पेतुर्हया रोहा हयैः सह ॥ ३९ ॥ सगजाश्च गजारोहाः किरिदिशरताडिताः । ततोर्जनं मुजोत्सृष्टैवृत्तासीदसुन्धरा ॥ ४० ॥ विद्रवद्भिश्च बहुधा बलैरपहा समन्ततः । यय पाथो महाराज द्रावयित्वा यरुथिनीम् ॥ ४१ ॥ दुःशासनाय सु बहून् प्रेष यामास सायकान् । ते तु भित्त्वा तव सुतं दुःशासनमयोमुखाः ॥ ४२ ॥ धार्ष्णी विविशुः सर्वे यत्नीक मित्र पन्नगाः । हयाँश्चास्य ततो जघ्ने सारथिञ्च न्यपात यत् ॥ ४३ ॥ विविशतिञ्च विशत्पा विरथं कृतयान् प्रभुः । आजघान भृशश्चैव पञ्चभिर्भतपर्वभिः ॥ ४४ ॥ कृपं विकर्णं शल्यञ्च विष्ठां यहुभिरायसैः । चकार विर याँश्च कौन्तेय ' द्येतयाहनः ॥ ४५ ॥ एघन्ते विरयाः सर्वे कृपः शल्यश्च मरिष्य । दुःशासनो विकर्णश्च सधैवच विविशतिः ॥ ४६ ॥ सम्प्राद्रवन्त समरे निक्षिप्ताः सत्य

धार्ष्णी को छोड़ता हुआ आकाश में प्रकाशमान दृष्टपदा वह धार्ष्णीसे पीड़ामान-  
राजासौग जिनकी यड़ी २ ध्वजा दृष्टगर्भी एक साथ उस वानरध्वज अर्जुन के  
सम्मुख वर्तमान नहीं रहे । ३९ । अर्जुनके धार्ष्णी से घायल रथी लोग ध्वजार्यों समेत  
और घोड़ों समेत अश्वारूढ वा हाथियों समेत हाथियोंके सवार पृथ्वीपर गिरे । ४० ।  
इसके पीछे अर्जुन के हाथोंके छूटे हुए धार्ष्णी से और चारों ओरसे राजाओंकी भागी  
हुई सेनाओं से पृथ्वी व्याप्त होगई । ४१ । फिर अर्जुन ने सेनाको भगाकर दुःशासन  
के ऊपर बहुतसे धार्ष्णीकी वर्षा की । ४२ । वह लोहके सवशण आपके पुत्र दुःशासन  
को । ४३ । क्योंकि पृथ्वी में ऐसे प्रवेश करगये जैसे कि सर्पवामी में प्रवेश करता  
है तदनन्तर प्रभु अर्जुन ने उस के घोड़ों को मारकर सारथी को गिराया और  
वीसवाण से विविशतिको रथने विरथ कर दिया । ४४ । और मुनीगंडवाले  
पाँच धार्ष्णी से अत्यन्त घायल भी किया इसी रीति से उससेवत घोड़ेवाले अर्जुनने  
कृपाचार्य कर्ण और शल्यको बहुतसे लोहे के धार्ष्णीसे घेपकर विरथकर दिया  
हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र इस प्रकार वह सवकृपाचार्य और शल्य विरथ हुए । ४६ ।

looked glorious in the air. The princes afflicted by arrows, with broken banners, could no longer withstand his fury. Wounded by his arrows, the bannerd charioteers, horsomen with their horses and riders of elephants fell down on earth. 40. Then the ground was filled with the arrows of Arjun and the dead bodies of the warriors slain. Having put the army to flight, Arjun discharged many arrows at Dushasan. Those iron arrows having pierced through Dushasan's body entered the ground as a serpent enters a mole hill. He then killed his horses and driver and with twenty arrows made Vivinshati destitute of chariot. With five arrows having bent heads he wounded him severely. Thus Arjun the possessor of white stood, having pierced Kripacharya, Karan and Shalya with many

साचिना । पूर्वाहणे भरतश्रेष्ठ पराजित्य मउरथान् ॥४७॥ प्रजग्वाल रणे पार्थो विधूम  
इव पावकः । तथैव शरवर्षेण भास्वतो रस्मिधानिव ॥ ४८ ॥ अन्यानपि महाराज ताप  
यामास पार्थिवान् । परांमुष्णीकृत्य तथा शरचर्महारथान् ॥ ४९ ॥ प्रायश्चयत सप्राप्ते  
शोणितोदां महानदीम् । सभ्येन कुरसैन्यानां पाण्डवानाञ्च भारत ॥ ५० ॥ गजाश्चर  
यसंघाश्च बहुधा रथिमिहताः । रथाश्च निहता नागैर्हयाश्चैव पदातिभिः ॥ ५१ ॥ अन्त  
रालिख्यमानानि शरीराणि शिरांसि च । निपेतुर्हि सु सर्वासु गजाश्चरयथोधिनाम्  
॥ ५२ ॥ छत्रमायोधने राजन् कुण्डलाङ्गधारिभिः । पतितैः पार्थमानैश्च राजपुत्रैर्महा  
रथैः ॥ ५३ ॥ रथनेमिनिकृत्तैश्च गजैश्चैवावपोधितैः । पादाताश्चाप्यघातस्त साहसवद्  
यथोधिनाः ॥ ५४ ॥ गजाश्च रथयोधाश्च परिपेतुः समन्ततः । विकीर्णाश्च रथा भूमौ भग्ना  
चक्रयुग्मध्वजाः ॥ ५५ ॥ तद्गजाश्चरयथोधाना रुधिरेण समुक्षितम् । छत्रमायोधने

और युद्ध में अर्जुनसे पराजित दुश्शासन विकर्ण और विविंशति मुखको मोड़गये  
। ४७ । हे भरतर्यम् मध्याह्नकाल में अर्जुन महाराथियों को विजय करके युद्ध में  
निर्धूम अग्निके समान प्रकाशमान हुआ । ४८ । इसीप्रकार वाणों की वर्षासे, अन्य  
राजाओं को वा महाराथियों के मुखों को फिरवाके युद्ध में रुधिर रूप जल रखने  
वाली बड़ी नदी को जारी किया । ५० । फिर पांडव और कौरवोंकी सेनाओं में  
बहुधाहाथी घोड़े और रथोंके समूह रथियों के हाथ से मारे गये । ५१ । हाथियों  
से रथ और पैदलोंसे घोड़ेमारे गये और बीचमेंसे कटेहुए हाथी घोड़े रथ और  
वीरसवारों के शरीर दिशाओं में गिरे हे राजाकुण्डल बाजुबन्द धारण करनेवालों  
से युद्धभूमि आच्छादित होगई । ५२ । और गिरे वा गिरतेहुए महारथी राजकुमारों  
से वा रथोंकी नेमियों से कटे और मरेहुए हाथियों से भी वह युद्धभूमि ढकगई  
। ५३ । पैदल भी दौड़े और अश्व सवार घोड़ों समेत दौड़े वा हाथी घोड़े और रथों  
के शूरवीर चारों ओर से गिरे । ५४ । और वह रथ जिनके पहिये जुए ध्वजा

arrows of iron, caused them to leave their chariots. Thus Kripacharya  
Shalya and others, O Dhritasashtra, were forced to leave their chariots.  
Defeated in battle by Arjun, Dushasan, Vikarn and Vivinshati turned  
their faces. Having conquered those warriors by mid day, Arjun  
shone in the field of battle like smokeless fire, causing the other kings  
and warriors to turn back with the force of his arrows, he caused a  
large river of blood to flow, 50. Then in the armies of the Pandavas  
and Kauravas many elephants, horses and chariots were destroyed  
by the charioteers. Chariots were destroyed by elephants and horses  
by foot soldiers. The elephants, horses and chariots with the dead  
bodies of warriors fell down in all directions and the ground was spread  
over with the bodies of those who wore ear-rings and armlets. The  
foot soldiers and war horses with riders were seen in all  
directions. 55. The chariots with their and bal wheels

रेजे एताम मिथ शरदम् ॥ ५६ ॥ श्वानः पत्ताकाश्च गृधाश्च वृषा गोमायुभिः  
सह । प्रणहुर्भक्ष्यमासाद्य धिक्कृताश्च मृगहिजाः ॥ ५७ ॥ वयुर्गृध्रविचार्य वितु  
सर्वांस्तु माकताः । हृद्यमानेषु रक्षःसु मुनेषु च नदरासु च ॥ ५८ ॥ काञ्चनानि  
च दामानि पताकाश्च महाधनाः । धूयमाना व्यहृद्यन्त सहस्रा माद्यतेरिताः ॥ ५९ ॥  
इवेतच्छत्रसहस्राणि सञ्चआथ महारथाः । धिक्कीणाः समहृद्यन्त शतशोथसहस्रमाः  
॥ ६० ॥ सपत्ताकायमातेगा दिशोजगमुः शरातुगाः । क्षत्रियाथ मनुष्येद्रगदाशक्ति धनु  
र्भराः ॥ ६१ ॥ समंततश्च हृद्यन्ते पतिता घर्णीतले । ततो भीष्मो महाराज दिव्यमख  
मुदीरयत् ॥ ६२ ॥ अभ्यधावत कौन्तेय मिततां सर्वचन्विनाम् । तं शिरण्हीरणे प्राप्त  
महद्रथत दक्षितः ॥ ६३ ॥ ततः समाहरद्भीष्मस्तद्वक्षं पावकोपमम् । स्वरितः पांड

दूट गई थी पृथ्वीपर पड़े हुए हाथी घोड़े और रथ समूहों के कथिर में छिड़की हुई  
व डकी हुई वह युद्धभूमि ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि शरदऋतुका लाल बादल  
होना है फिर कुत्ते कौचे गिद्ध भेड़िये गृमान और विपरीत रूपके पशु पक्षी अपने  
भक्षकों पाकर शब्द करने लगे और सब दिशाओं में अनेक प्रकार की वायु  
चली । ५८ । राक्षसों के देखने और जीवों के शब्द करनेपर मुनहरी रस्सी व  
मासा व बहुमूल्य की पताका । ५९ । अकस्मात् हवामे चलायमान होकर दृष्टि  
गोचर हुई हजारों इत छत्र व बड़े २ रथ ध्वजामों समेत दूटे हुए दिशाईपड़े और  
बाणों से पीड़ामान हाथी पताकाओं समेत चारों दिशाओं की चलेगये । ६१ ।  
हे महाराज गदाशक्ति और धनुष के धारण करनेवाले चञ्चलीलोग चारों ओर से  
पृथ्वीपर पड़े हुए दृष्ट आये । ६२ । इस के पीछे भीष्मजी ने दिव्य अस्त्रों को  
मकट किया और सब धनुषधारियों के देखने हुए अर्जुन के सम्मुख दौड़े । ६३ ।  
तब शस्त्रों से अर्जुन शिखण्डी उन भीष्मजी के सम्मुख पहुँचा इसको देखतेही  
भीष्मजीने उस अग्निके समान मकट किये हुए अस्त्रको सँचलिया । ६४ । हे राजा

broken down fell on earth, and the ground covered and besprinkled  
with the blood of elephants, horses and charioteers looked glorious  
like the red cloud of Winter. Dogs, crows, vultures jackals, wolves  
and other strange looking birds and beasts howled at the prospect  
of their food and the winds blew from all quarters. At the sight of  
rakshases and the sounds of anima's, golden ropes, chaplets and  
banners were seen fluttering with the sudden gust of wind. Thousands  
of white umbrellas and huge chariots with banners were to be seen  
lying on the ground and the elephants bearing banners, wounded  
with arrows, fled in all directions. 61. The wielders of prases,  
spears and bows were seen fallen on the ground. Then Bhishm  
drew out his divine weapons, and in the presence of all the warriors  
rushed upon Arjan; but Shikhandi, armed with weapons, came face  
to face with him and at the sight of him he withdrew his weapon



घोराजम्घ्यम द्येतवाहन ॥ ६४ ॥ निजघ्ने तावक सैन्य मोहयित्वा पितामहम् ॥ ६५ ॥  
इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि संकुलयुद्धे

अष्टादशाधिकशतोऽध्यायः ॥ ११८ ॥

सञ्जय उवाच । सम द्यूढेष्वनीकेषु भूषिष्ठेष्वनिवर्त्तिन । ब्रह्मलोकपरा सर्वे सम  
पद्यन्त भारत ॥ १ ॥ नहनीकमनीकेन समसज्जत संकुले । रथान् रथिभिः सार्धपादा  
तान् पदातिभिः ॥ २ ॥ अश्वानाश्चैर्युध्यन्त गजान् गजयोधिभिः । उन्मत्तवन्महाराज  
युध्यन्ते तत्र भारत ॥ ३ ॥ महान् व्यतिकरो रौद्र सैन्यो समपद्यत । नरनागगणेष्वेव  
विकीर्णेषु च सर्वश ॥ ४ ॥ क्षये तस्मिन्महाराष्ट्रे निर्विशेषमजायत । ततः शल्य इष  
क्षेव चित्रसेनश्च भारत ॥ ५ ॥ दुःशासनो विकर्णश्च रथानास्थायभास्वरान् । पाण्ड  
वानां रणे दूरा ध्वजिनीं समकम्पयन् ॥ ६ ॥ सावध्यमाना समरे पाण्डुसेना महात्मभिः ।

श्वेत घोड़े रखनेवाले मन्त्रेण पाण्डव अर्जुन ने शांघ्रही पितामह को मोहित करके  
आपका सेनाको मारा ६५ ॥

अध्याय ॥ ११९ ॥

संजय बोले कि हे भरतवंशो इस रीति से उन बहुवर्ती सेनाओं के तैयार होने  
पर युद्ध में मुख न मोड़नेवाले सब शूरवीर ब्रह्मलोक को उत्तम माननेवाले वर्त्तमान  
हुए, इस तुमुल युद्ध में सेनासे सेना नहीं पिड़ी किन्तु इस रीति से लड़े कि रथी  
रथियों से पदाती पदातियों से घोड़े घोड़ों से हाथी हाथियों के सवारों से युद्ध  
करनेवाले हुए हे राजा उन्मत्त के समान युद्ध करने वाली दोनों सेनाओंको बड़ा  
भयकारी दुःख वर्त्तमान हुआ अर्थात् सब प्रकार से मनुष्य और हाथियों के मरनेपर  
उस भयकारी नाशक प्रलयमें अनीति जारी हुई इसके पीछे शल्य कृपाचार्य  
चित्रसेन दुःशासन विकर्ण इन सब शूरों ने प्रकाशित रथों पर सवार होकर पाण्डवों  
की सेनाको बहुतकम्पायमान किया हे राजा युद्ध में महात्माओं के हाथसे घायल

glorious like fire Then the possessor of white horses, Arjun the  
middle one of the Pandavas, soon made the grandfather in-sensible  
and desirous of going to his arms"

## CHAPTER CXIX

Sanjaya continued: "Thus, O descendant of Bharat, when  
numerous armies were ready, the warriors unwilling to turn their  
faces from the field of battle and desirous of departure to the region of  
Brahm, stood there. In that dreadful battle the two armies did not  
meet together, the charioteers fought against charioteers, horsemen  
met horsemen, elephant riders fought against the riders of elephants  
The two armies fighting furiously came to great grief After the  
slaughter of men and elephants in that dreadful distraction like  
pralaya, there was much harm done Then the great warriors

धाम्यते बहुधा राजन् माकृतेनेव नौजले ॥ ७ ॥ यथा हि शैशिरः कालो गवां मर्माणि  
 कृन्तति । तथा पाण्डुसुतानां वै भीष्मो मर्माणि कृन्तति ॥ ८ ॥ तथैव तव सैन्यस्य पापेन  
 च महात्मना । नयमघमतीकाशाः पातिता बहुधा गजाः ॥ ९ ॥ मृग्यमानाश्च दृश्यन्ते  
 पापेन नरयूथपाः । इधुभिस्ताड्यमानाश्च नारायैश्च सहस्राः ॥ १० ॥ पेतुरास्तेस्वरंघोरं  
 कृत्वा तत्र महागजाः । आनन्दामरगैः कार्यनिहतानां महात्मनाम् ॥ ११ ॥ छत्रमायोधनं  
 रेजे शिरमिदं स कुण्डलेः । तस्मिन्नेव महाराज महावीरवरक्ष्ये ॥ १२ ॥ भीष्मे च  
 युधि धिक्कान्ते पाण्डवे च धनञ्जये । तं पगक्रान्तमालोक्य राजन् युधि पितामहम्  
 ॥ १३ ॥ अश्रुयत्तं ते पुत्राः सर्वसैन्यपुरस्कृताः । इच्छन्तो निधनं युद्धे स्वर्गं कृत्वाप  
 राणम् ॥ १४ ॥ पाण्डवानभ्यर्चन्त्य तस्मिन् वीरवाक्ष्ये । पाण्डवापि महाराज स्मरन्तो

पाण्डवोंकी सेना अनेक प्रकार से ऐमे घुमी जैसे कि जलमें वायुके कारण नौका  
 घूमती है, जैसे कि अत्यंत जाड़ा मौसमोंको सनागहै उसीप्रकार भीष्मजी पाण्डवोंके  
 मर्मों को काटतेहैं । ८। महात्मा अर्जुन के हाथ से तुम्हारा सेनाके बहुत से हाथी जो  
 कि नवीन बादलके समान थे युद्धमें गिराये गये । ९। अर्जुनके हाथ से सेनाके प्रधान  
 लोग मर्दन कियेहुए दृष्टआते हैं और वहां पर नाराच नाम बाणों से पायल हुए  
 हजारों । १० । बड़े २ हाथी दुख से महाभयानक शब्दोंको करके गिरपड़े  
 मृतक हुए महात्माओं के भूषणों से अलकृत शरीरों से । ११ । और कुण्डल  
 धारी शिरों से ढकीहुई युद्धभूमि बड़ी शोभायमान हुई है राजा उत्तम वीरोंके  
 बड़े नाश होने पर युद्ध में भीष्म और पाण्डव अर्जुन की परस्पर में चढ़ाईयां  
 होनेपर वह आपके सब पुत्र जिनके कि आगे सेना चलतीथी युद्ध में पितामहको  
 पराक्रम करने वाला देखकर स्वर्गकोही श्रेष्ठ स्थान मानकर युद्ध में मरण को  
 चाहते हुए । १४ । उस उत्तम वीरोंके नाश में पाण्डवों के समुत्त हुए है

Shalya, Kripacharya, Chitransen, Dushasan and Vikarna, mounted on  
 glorious chariots, destroyed the armies of the Pandavas. Wounded  
 in battle by those great men, the armies of the Pandavas turned  
 round like a boat in the midst of stormy waters. As winter cuts the  
 cattle to the quick so did Bhishm with the Pandav armies. Many  
 elephants of your army, like new clouds, were destroyed in battle by  
 Arjun. The principal warriors of your army are to be seen destroyed  
 by Arjun, and wounded by long shafted arrows, thousands of elephants  
 fell down with loud shrieks. The field of battle looked grand by the  
 dead bodies of great men decked with ornaments and the heads  
 decked with ear-rings. At the destruction of the great warriors in  
 the war between Bhishm and Arjun the Pandav, your sons with  
 their armies seeing the great prowess of the grandfather, desired to  
 die in battle for the sake of paradise, 14. They faced the Pandavas  
 during that destruction of the warriors. Engaged in battle for the

विविधान् यद्वन् ॥ १५ ॥ फलेशान् कृतान् सपुत्रेण स्वया पूर्वं मराधिप । भयं त्यक्त्वा  
 रणे शूरा ब्रह्मलोकाय तत्पराः ॥ १६ ॥ तावकांस्तव पुत्रांश्च योधयन्ति प्रहृष्टवत् ।  
 सेनापतिस्तु समरे ग्राह्यः सेनां महारथः ॥ १७ ॥ धर्मिद्रवत गात्रेयं सोमका  
 सुहृदः सह । सेनापतिवचः श्रुत्वा सोमकाः सृञ्जयाश्चते ॥ १८ ॥ अभ्यद्र  
 यन्त गात्रेयं शरवृष्ट्यासमाहताः । वध्यमानस्ततो राजन् पिता शान्तनवस्तथ  
 ॥ १९ ॥ अमर्षवशमापद्यो योधयाणां स सृञ्जयान् । तस्य कीर्त्तिमत्तत्तात  
 पुरा रामेण धीमता ॥ २० ॥ सम्प्रदत्ताशिक्षावै परानीकविनाशिनी । सर्तां शिक्षाम  
 चिह्नाय कुर्वन् परयत्नक्षयम् ॥ २१ ॥ अहन्यहनि पार्यानां वृद्धः कुरुपितामहः । भीष्मो  
 दशसहस्राणि जघान परवीरहा ॥ २२ ॥ तस्मिन्सु दशमे प्राप्ते दिवसे भरतर्षभ । भीष्मे  
 र्णकेन मृत्येयुषाञ्चालेषु संयुगे ॥ २३ ॥ गजान्श्च भूमितं हत्वा हतास्तत महारथाः ।

महाराज ब्रह्मलोक के लिये युद्धमें पहुँच शूरवीर पाण्डव पूर्व समय में पुत्र  
 समेत आप के दिये हुए नाना प्रकार के कष्टोंको स्मरण करते युद्ध में भयको  
 त्याग कर । १६ । अत्यन्त प्रमत्तके समान आपके पुत्र और शूरवीरों से  
 लड़ने हैं किा महारथी सेनापति ने अपनी सेनासे कहा कि सब मंजियों समेत  
 सोमक लोग शीघ्र भीष्मके सम्मुख चलो वर सोमक और मंजयनाम क्षत्री सेना  
 पति के वचनको सुनकर । १८ । शत्रुओं की वर्षा में घायल हुए भीष्मजी के सम्मुख  
 गये हे राजा इसके पीछे आपके पिता भीष्मजी महा घायल और क्रोध के  
 वशीभूत होकर उन मंजियों से युद्ध करनेलगे हे तान पूर्वसमय में बुद्धिमान  
 परशुरामजी ने उस को अच्छे प्रकारसे शिक्षाकरी जोकि शत्रुकी सेनाके नाश  
 करनेवासे और कौरवोंके वृद्ध पितामह भीष्मने उस शिक्षाको काममें लाकर शत्रु-  
 शौकी सेनाका नाशकरते हुए प्रतिदिन पाण्डवों की दशहजार सेनाको मारा  
 । २० । हे भरतर्षभ उस दशवें दिनके वर्तमान होनेपर अकेले भीष्मने युद्धमें मरत्य  
 और पांचाल देशी सेना । २३ । दश हजार हाथियोंका यूथ मारकर सात महारथी

sake of paradise, the brave Pandavas remembered the former wrongs  
 done to them by yourself and your sons and setting aside all fear in  
 Lattle, with cheerful minds face your sons and warriors. Then the  
 brave commander ordered the armies of Srinjaya and Somak warriors  
 to hasten against Bhishm. At the commands of their chief the  
 Srinjayas and the Somaks faced Bhishm who was much wounded.  
 Then your father much wounded and enraged, fought against the  
 Srinjayas. Bhishm the old grandfather of the Kauravas used to  
 his advantage the knowledge of arms which he had formerly  
 acquired of Parashuram and killed ten thousand warriors of the  
 Pandavas each day. 22. On that tenth day Bhishm alone killed ten  
 thousand elephants of Matsya and Panchal with seven warriors of

हत्वा पञ्चसहस्राणि रथानां प्रपितामहः ॥ २४ ॥ नराणाञ्च महायुद्धे सहस्राणि चतु  
 दश । दन्तिनाञ्च सहस्राणि हयानामयुतं पुनः ॥ २५ ॥ शिखायलेन निहतं पित्रातथ  
 विशम्पते । ततः सर्वे महीपानां क्षपयित्वा यक्षयिनीम् ॥ २६ ॥ विराटस्य प्रियोद्घाता  
 शतानीको निपातितः । शतानीकञ्च समरे हत्वा भीष्मः प्रतापवान् ॥ २७ ॥ सहस्राणि  
 महाराज रात्रां भल्लैरघातयत् । उद्धिन्वा समरे योजा विकीर्णं धनञ्जयम् ॥ २८ ॥  
 ये च केचन पार्यानामशिवाता धनञ्जयम् । राजानो भीष्ममाम्नाय गतास्ते यमसादनम्  
 ॥ २९ ॥ पञ्च दशदिशो भीष्मः शरजालैः समन्ततः । अतीत्यसेनापार्यानामवतस्थे  
 चमूले ॥ ३० ॥ स कृत्वा समहत् कर्म तस्मिन् वै दशमेहनि । सेनयोरन्तरे तिष्ठन्  
 प्रगृहीतशरासनः ॥ ३१ ॥ नचैनं वार्यिवाः केचिच्छका यजन् निरीक्षितुम् । मध्यं  
 प्रातः पथा भीष्मे तपन्तं भास्करं दिवि ॥ ३२ ॥ पथा दैत्यचमूशकस्तापया मास संयुगे ।

मारे फिर पांच हजार रथियोंको मारकर प्रबल युद्धमें मनुष्यों के चौदह हजार  
 समूहको मारके हाथियोंके बहुत हजार और घोड़ों के दश हजार गूथ पराक्रम के  
 द्वारा आपके पिता के हाथ से मारे गये इसके पीछे सब राजाओं की सेना  
 को इधर उधर करके । २६ । विराटके प्यारे भाई शतानीकको रथमें गिराया हे  
 राजा प्रतापवान् भीष्मने शतानीकको मारकर । २७ । हजारों राजाओं को  
 भल्लोंमें मारवाला और जो कोई राजा पाण्डवों के वा अर्जुन के आगे पीछे चारों  
 ओर को चलनेवाले थे । २८ । वह राजानोंगयी भीष्मको पाकर यमलोकको  
 सिधारे भीष्मजीने इस रीति से बाणों के जालों से चारों ओर की दशों दिशाओं  
 को ढक दिया । २९ । और आप पाण्डवों की सेनाको उल्लंघन करके सेना मुखपर  
 नियत हुआ वह उस दशवें दिन में बड़े कर्मको कर के । ३० । धनुषको हाथमें पकड़नेवाला  
 दोनों सेनाओंके मध्यमें नियतहुआ कोई राजालोग युद्धमें उसके देखनेको ऐसे समर्थ नहीं  
 हुए । ३१ । जैसे कि भीष्म ऋतु में आकाश स्थल संतप्त करने सूर्य को नहीं देखसका  
 और जैसे कि इन्द्रने युद्ध में दैत्योंकी सेनाको तपाया । ३२ । इसी प्रकार भीष्म

renown, five thousands of charioteers and fourteen thousand men. He destroyed many thousands of elephants and ten thousands of horses by his great prowess. Then having dispersed the army of kings he felled Shatanik the dear brother of king Virat. Having slain Shatanik, valliant Bhishma destroyed thousands of warriors with his darts and whatever warriors of the Pandavas followed Arjun were sent by Bhishma to the region of Yam. With the network of his arrows he filled all the directions and having crossed the army of the Pandavas he stood at the entrance. He did prodigies of wonder on that tenth day, 30. With the bow in his hand he stood in the midst of the two armies and none of the warriors could gaze at him like the sun standing high in heaven in Summer. He destroyed the Pandav armies as Indra did the armies of the danavas Devaki's

तथा भीष्म पाण्डवैः स्तापयामास भारत । तथा चैन पराक्रान्तगालोऽप्य मधुसूदनः ।  
 उवाच देवकीपुत्र प्रीयमाणो धनञ्जयम् ॥ ३४ ॥ एष शान्तनुवो भीष्मः सेनयो  
 रन्तरे स्थितः । स भिद्यत्य बलादेन विजयस्ते भविष्यति ॥ ३५ ॥ बलात् संस्तम्भयस्यैनं  
 यत्रैवा भिद्यते च भूः । न हि भीष्मशरानन्यः सोढुमुत्सहते विभो ॥ ३६ ॥ ततस्तस्मिन्  
 क्षणे राज्ञोऽश्विदितो धानरध्वजः । सध्वजं सरथ साध्वं भीष्ममन्तर्दधे शरैः ॥ ३७ ॥  
 स चापि कुरुमुख्यानां मृगमः पाण्डवे रितान् । शरघातैः शरघातान् बहुधा विदु  
 धावतान् ॥ ३८ ॥ ततः पञ्चालराजश्च धृष्टकेतुश्च वीर्यवान् । पाण्डवो भीः सनदश्च  
 धृष्टसुम्नश्च पार्षतः ॥ ३९ ॥ यमौ च चेकितानश्च केकयाः पञ्च चैव ह । सात्यकिश्च  
 महाबाहुः सौमद्रोऽप्यश्वत्थकः ॥ ४० ॥ द्रौपदेयाः शिष्यगण्डौ च कुन्तिभोजश्च  
 धीर्यवान् । सुशर्मा च विराटश्च पाण्डवेषां महाबलाः ॥ ४१ ॥ एते चान्ये च बहवः

जी ने पाण्डवों के शूरवीरों को भी संतप्त किया मधुदैत्य के मारनेवाले देवकी  
 के पुत्र श्रीकृष्णजी इस प्रकार पराक्रम करनेवाले भीष्मको देखकर अपने मित्र  
 अर्जुन से बोले कि यह शान्तनुका पुत्र भीष्म दोनों सेनाओं में नियत है । ३४ ।  
 बड़े बलसे इसको मारकर तेरी विजय होगी तू बलसे इसको बड़ा नियत कर जहां  
 यह सेना घायल होती है । ३५ । हे समर्थ भीष्मके बाण मरने को कोई साहस  
 नहीं करता है इसके अनन्तर उस क्षण में प्रेरित वानरध्वज अर्जुन ने । ३६ ।  
 बाणों से भीष्मको ध्वजा रथ और घोड़ों समेत गुप्त कर दिया फिर उस प्रतापी  
 भीष्मने भी पाण्डवों के चलाये हुए बाण सपूहोंको अपने बाणों से अनेक प्रकार  
 करके छिन्न भिन्न कर दिया । ३८ । इसके पीछे राजा द्रुपद और पराक्रमी धृ-  
 तकेतु पाण्डव भीमसेन धृष्टसुम्न नकुल सहदेव चेकितान पांचोभाई केकय । ३९ ।  
 महाबाहु सात्यकी अभिमन्यु अश्वत्थक द्रौपदी के पांचोपुत्र शिष्यगण्डौ पराक्रमी  
 राजा कुन्तिभोज । ४० । सुशर्मा राजा विराट् यह सब बहुतसे पाण्डवों के शूरवीर  
 भीष्मजीके शायकोंसे पीड़ामान हुए । ४१ । अर्जुनके हाथ से पीड़ित शूरवीर शोक

son Shree Krishna the destroyer of Madhu, seeing the prowess of Bhishm, said to his friend Arjun: "Bhishm the son of Shantnu is standing between the two armies 34. Thy conquest lies in killing him. Force him with the strength of your arms to move from the place where the armies are long wounded. They are unable to withstand his arrows." Thus advised, Arjun of monkey's standard hid with his arrows the banner, chariot and horses of Bhishm; but the latter destroyed with his arrows the network of the Pandava's arrows. Then Prince Drupad, valliant Bhimsen, Dhrishtadyumna, Nakul, Sahadev, Chekitan, the five Kailaya brothers, Shikhandi, valliant king Kuntibhoj. 40. Susharma, king Virat and other warriors of the Pandavas were wounded by his arrows. The warriors wounded by his arrows were plunged in the ocean of grief. Then

पीडिता भीष्मसायकैः । समद्धताः फाल्गुनेन निमग्नाः शोकसागरे ॥ ४२ ॥ ततः  
 शिखण्डी घेगेन प्रगृह्य परमायुधम् । भीष्ममेवामिदुद्राघं रक्षमाणः किरीटिना ॥ ४३ ॥  
 ततोऽस्यादुर्धरात् इत्वा सयान् रण विभागवित् । भीष्ममेवामिदुद्राघं भीमत्सुरपरा-  
 जितः ॥ ४४ ॥ सात्यकिश्चेकितानश्च धृष्टद्युम्नश्च पार्थतः । विराटो द्रुपदश्चैव माद्री-  
 पुत्रौ च पाण्डवौ ॥ ४५ ॥ बुद्धुर्भीष्ममेवाजौ रक्षिता दृढचन्वना । अभिमन्युश्चसमरे  
 द्रौपद्याः पञ्च चारुजनाः ॥ ४६ ॥ बुद्धुः समरे भीष्मं समुद्यतमहायुधाः । ते सर्वे दृढ-  
 धन्वानः संयुगेष्वपलायिनः ॥ ४७ ॥ यद्बुधाः भीष्ममानच्छ्रेयमर्गिणैः क्षतमार्गणैः । विपूय-  
 नान् घाणगणान् ये मुक्ताः पार्थिवोत्तमैः ॥ ४८ ॥ पाण्डवानामद्रीनात्मा व्यग्राहतचक-  
 र्पिनीम् । चक्रे शरविघातञ्च क्रीडन्निव पितामहः ॥ ४९ ॥ मामिसन्धसपाञ्चादये  
 स्मयमानो मुहुर्मुहुः । स्त्रीस्य तस्यानुसंस्मृत्य भीष्मो घाणान् शिखण्डिने ॥ ५० ॥

ममद्रुपे दृढगये इसके पीछे बड़ी तीव्रतासे शिखण्डी उत्तम धनुषको लेकर ॥ ४२ ॥ अर्जुन  
 से रक्षाकिपाहुआ भीष्मकेसममुखचलायुद्धके प्रकारोंकाज्ञाता भजेयअर्जुन भीष्मकेसब  
 साथियोंकोमारकर उनके सम्मुखपला सात्यकी चेकितान धृष्टद्युम्न ॥ ४४ ॥ विराट् द्रुपद-  
 माद्रीके-दोनों पुत्र यहसब दृढ धनुषयुक्त अर्जुनसे रक्षित होकर युद्धभूमि में भीष्मके  
 सम्मुख गये । ४५ । और अभिमन्यु वा द्रौपदीके पांचोपुत्र यह भी बड़े शस्त्रोंके  
 धारण करनेवाले युद्ध में भीष्मकी ओर चले । ४६ । और दृढधनुषधारी युद्ध में  
 मुख न मोड़नेवाले घाणोंसे घायत उन सयने भी पितामह भीष्मको घाणोंकी बड़ी  
 बर्षसे आच्छादित किया । ४७ । फिर प्रसन्नाचित भीष्मने उन घाण सगुहों को  
 जिनको कि उत्तम राजाओंने छोड़ा था काटकर पांडवोंकी सेनाको मर्याया । ४८ ।  
 क्रीड़ा करतेहुए पितामहने घाणों को निष्फलकर बारम्बार आश्चर्य युक्त होकर  
 उसके स्त्रीपने को स्मरणकर के घाणोंको पांचालदेशी शिखण्डी पर नहीं चलाया  
 फिर उस महारथीने द्रुपदकी सेनामें सात रथियोंको मारा । ५० । इसके अनन्तर

Shikhandi taking up his good bow, protected by Arjun, faced Bhi-  
 shm, and Arjun, skilful in all the ways of war, killed all the followers  
 of Bhishm and encountered him. Satyaki, Chekitan, Dhrishtadyumn,  
 Virat, Drupad, the two sons of Madri and other great archers,  
 protected by Arjun, faced Bhishm in battle 45. Abhimanyu and  
 the five sons of Draupadi, armed with powerful weapons, rushed to-  
 wards him. Those wielders of hard bows, firm in the field of battle,  
 though wounded by arrows covered the grandfather with the shower  
 of their arrows. Bhishm with a cheerful mind cut down the arrows  
 discharged by those princes and wounded the Pandav warriors. The  
 grandfather, as if in play, cutting again and again those arrows in a  
 wonderful manner and remembering the womanhood of Shikhandi of  
 Panchal, did not discharge his arrows at him. Then the brave  
 warrior struck down seven charioteers of Drupad's army. 50 .

जधान् द्वयदानीके रथान्सप्त महारथः । ततः किलकिलाशब्दः क्षणेन संममूत्तदा ५१  
मत्स्यपाञ्चालवेदीनां तमेकमभिधावताम् । ते नराभ्यरथमातैर्मार्गणेदम् परन्तप  
॥ ५२ ॥ तमेकं छादयामासुर्मेघा इव दिघाकरम् । भीष्मं भागीरथीपुत्रं प्रतपन्तरथे  
रिपुम् ॥ ५३ ॥ ततस्तस्य च तेषाम्य युद्धे देवासुरोपमे । किरीटी भीष्ममागच्छत  
पुरस्कृत्य शिखण्डिनम् ॥ ५४ ॥

इति श्री महामारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि भीष्मपराक्रमे

एकोनविंशधिकशतोऽध्यायः ॥ ११२ ॥

सञ्जय उवाच । पश्यन्ते पाण्डवाः सर्वे पुरस्कृत्य शिखण्डिनम् । विन्ध्यधुः समरे  
भीष्मं परिघार्य्य समन्ततः ॥ १ ॥ शतघ्नीभिः सुघोराभिः परिघैश्च परस्वधैः । मुह  
रैर्मुसलेः प्रासैः क्षेपणीयैश्च सर्वशः ॥ २ ॥ करैः कनकपुल्लैश्च शक्तिसोमरक्तपत्रैः ।  
नाराचैर्वरसदन्तैश्च भुशुण्डीभिश्च सर्वैः ॥ ३ ॥ अताडयन् रणे भीष्मं सहिताः सर्वे

क्षणमावृष्टी में उस अकेले की ओर दौड़ते हुये मत्स्य पांचाल और चंदेरी  
देशके सत्रियों का कलकला शब्द उत्पन्नहुआ । ५१ । हे शत्रुसंतापी उन मनुष्यों  
ने रथके समूह और घाणों से उस युद्ध में शत्रुके तपानेवाले भागीरथी के पुत्र  
अकेले भीष्म को ऐसे ढक दिया जैसे कि बादल सूर्यको ढकदेते हैं हम के  
पीछे देव दानवोंके सपान दोनोंके युद्धमें अर्जुनने शिखंडी को भागेकरके भीष्म  
को मोहित किया । ५३ ।

अध्याय १२० ॥

संजय बोले कि इसप्रकार से उन सब पांडवों ने शिखंडी को आगे करके  
और युद्ध में चारों ओर से भीष्मजी को घेरकर घायल किया । १ । बड़े भयानक  
शतघ्नी परिघ फरसे मुद्गल मुशल प्रास क्षेपणी कनकपुल्लवाले शरशक्ति तोमर  
कंपन नाराच वरसदन्त भुशुंडी आदि अनेक शस्त्रों के द्वारा युद्ध में सब सत्रियों

Immediately after this there was a great noise from the armies of Matsya, Panchal and Chanderi warriors rushing against him. With their numerous chariots, O destroyer of enemies, they so covered brave Bhishm under the flight of their arrows as clouds hide the sun. Then in that war, like that of the gods and danavas, Arjun from behind the back of Shikhandi: discharged his arrows and made Bhishm insensible." 53.

#### CHAPTER CXX

Sanjaya continued:— "Thus led by Shikhandi, the Pandavas surrounded Bhishm and wounded him with dreadful *Shataganis*, clubs, axes, *mudgals*, *mushals*, *prases*, missiles, arrows with golden feathers, spears, *tomars*, *lampans*, *valsants*, *bhushundis* and other weapons. All the Scrinjays discharged their weapons at once and

सृज्या । स विशीर्णतनुनाण पीडितो बहुमिस्तदा ॥ ४ ॥ न विध्यये तदभीष्मो  
मिथमानेषु मर्मसु । सन्वीप्तशरचापाग्निरप्रपसृतमाकतः ॥ ५ ॥ नेमिनिर्होदसस्तापो  
महास्त्रोदयपाथक । चित्रचापमहाज्वालो चरिद्वयमहंघन ॥ ६ ॥ युगान्ताग्निसम  
प्रव्य परेषां समपद्यत । विवृत्य रथसधानामन्तरेण धिनि सृत ॥ ७ ॥ दृष्टते स्म  
मरेन्द्राणां पुनर्मध्यगतद्वन्द्व । तत पाञ्चालराजश्च घृष्टकेतुमचिन्त्य च ॥ ८ ॥  
पाण्डवानीकिर्भीमस्य माससाद् विशाम्पते । ततः सात्पकिर्भीमश्च पाण्डवश्च जन  
ज्ययम् ॥ ९ ॥ दुपदश्च विराटश्च घृष्टघुम्नश्च पार्वतम् । भीमघोषैर्महाघैर्मर्मोपरण  
मेदिभिः ॥ १० ॥ पदेताभिश्चितैर्भीष्म शविष्याघोचमै शरैः । तस्य तेनिशितात्त वाणात्  
सन्निवार्ये महारथाः ॥ ११ ॥ दशमिर्दशमिर्भीष्ममर्हयामासुर्योजसा । शिखण्डीतुम्  
हाबाणात् शान्मुमोक्ष महारथ ॥ १२ ॥ नचकुले व्रजतस्थ स्वर्णगुहा, शिलाशिता ।

ने एकसाधही भीष्म को बहुत प्रकार से घायन किया वह भीष्म दूरे कबच  
बहुतशस्त्रोंसे पीड़ामान ॥ ४ ॥ और मर्मस्थनों के घायनहोने परभी दुःखी नहींहुए जिसके  
बाण और अश्वों से मकटहोने वाली प्रकाशित आग्नि और रथकी चक्रपारा का शब्द व  
पट्टिश आदि वड़े २ शस्त्रोंका प्रकाश और जुड़ाऊ घनुपवाले वड़े २ शूरवीरोंकानाशही  
बड़ाईधनया । ६ । वह प्रलयान्निके समान शत्रुओं के सम्मुखहुआ और अरकाश  
पाकर रथों के समूहोंमें से बाहर निकल गया फिर राजाओं के मध्यमें वसैमानहोकर  
युमता दृष्टपड़ा इसके पीछे राजा पांचाल और घृष्टकेतुको ध्यान न करके पाण्डवों  
की सेना के मध्यवर्तीहोकर भीष्मजी ने सात्पकी भीमसेन अर्जुन द्रुपद विशंट  
घृष्टघुम्न इन छः महारथियोंको वड़े भयकारी युद्धमें घायल करनेवाले उत्तम तीक्ष्ण  
बाणोंसे घायल किया फिर उन महाराथियोंने उनके उन तीक्ष्णबाणों को दूरकरके  
बड़ेवेगसे दश दशबाणों के द्वारा भीष्मजीको पीड़ामान किया और महारथी  
शिखण्डीने सुनहरी पुंखवाले शिनापर तीक्ष्णकिये बाणोंकोमारा वह बाण शीघ्रही

wounded Bhishm on all sides Bhishm with his armour broken and  
wounded with different sorts of weapons in the vital parts felt no  
pain. Having his arrows and weapons for blazing fire of which the  
rumbling of his chariot wheels was the din, the mighty weapons were  
the light and the dead bodies of the warriors having jewelled bows,  
formed the fuel. Thus like the fire of *pra'aya* he faced his enemies  
and in good time got clear of the lines of their chariots. Then he  
was seen roaming in the midst of the princes. And disregarding the  
king of Panchal and Dhrishtaketu, he wounded with his dreadful  
arrows the six warriors of the Pandavas, namely Satyaki, Bhimsem,  
Arjun, Drupad, Virat and Dhrishtadyumna. Those warriors however  
removed his arrows and wounded him with ten arrows each. Valiant  
Shikhandi discharged his arrows having golden fathens and sharpened  
on stone. They pierced through his body. Then enraged Arjun



ततः किंटीसंरन्धो भीष्ममेवाश्रयधावत ॥१३॥ शिखण्डिनं पुरस्कृत्य धनुश्चास्यसमा  
 छिन्नत । भीष्मस्य धनुषश्छेदं मामृष्यन्तमहारथा ॥ १४ ॥ द्रोणश्च कृतवर्माच सैम्य  
 वश्च जयद्रथः । भूरिश्रवाः शलः शल्यो भगदत्तस्तथैवच ॥ १५ ॥ ससैतेपरमकुदा कि  
 रीट्निममिदता । तत्र शस्त्राणि दिव्यानि दर्शयन्तो महारथाः ॥ १६ ॥ अभिपेतुर्धरां  
 कुदाच्छादयन्तश्च पाण्डवम् । तेषामापततां शब्दः शुशुबे फाल्गुने प्रति ॥ १७ ॥  
 उद्धूतानां यथाशब्दः समुद्राणां युगक्षये । जनतानयत गृह्णीत चित्तध्वमथकर्तत ॥ १८ ॥  
 इत्यासीत्तुमुलः शब्दः फाल्गुनस्य रथं प्रति । तं शब्दं तुमुलं श्रुत्वा पाण्डवानां महा  
 रथाः ॥ १९ ॥ अश्रयधावद् परीपुसन्तः फाल्गुनं भरतर्षभ । सात्यकिर्भीमसेनश्च  
 घृष्टयुग्मं धार्यतः ॥ २० ॥ विराटद्रुपदौ चोमौ राक्षसश्च घटोरकश्च । अभिमन्युश्च  
 संकुलः ससैते क्रोधमूर्च्छिताः ॥ २१ ॥ समश्रयधावंस्स्वारिताश्चित्रकामुक्काधारिणः । तेषां  
 सममथयुद्धं तुमुलं लोमहर्षणम् ॥ २२ ॥ संभामे भरतर्षभ, देवानां दानवैरिय ।

भीष्मजीके शरीरमें प्रवेश करगये इसके पीछे क्रोधयुक्त अर्जुनने शिखंडीको आगे  
 करके भीष्मजीके सम्मुख दौड़कर उनके धनुषको काटा फिर द्रोणाचार्य कृत-  
 वर्मा महारथी जयद्रथ भूरिश्रवा शल्य और भगदत्त भीष्मके धनुष को तोड़ना  
 न सहकर बड़े क्रोधयुक्तहोकर सातोमिलकर अर्जुनके सम्मुखगये वहां दिव्य अस्त्रों  
 को दिखातेहुए । १६ । पांडवोंको शस्त्रोंसे दकते उन सबक्रोधभरे महारथी पुरुषोंके  
 ऐसे शब्द सुनेगये जैसे कि मलयकाम में उठेहुए समुद्र के शब्द होतेहैं और अर्जुन  
 के रथपर ऐसे काठिन शब्दहुए कि लेचलो पकड़ो घायल करो मारो । १८ । हे  
 राजा पांडवों के महारथी उम काठिन कठोर शब्दको सुनकर अर्जुन को चाहते हुए  
 उन महारथियों के सम्मुख दौड़े सात्यकी भीमसेन घृष्टयुग्म विराट् द्रुपद नकुल  
 सहदेव घटोत्कचराक्षस और अत्यन्तक्रोधयुक्त अभिमन्यु महाक्रोधमें ज्वलित होकर  
 अपूर्व धनुषोंको लिये उनसातोंमहारथियोंके सम्मुख दौड़े इनमरुलोंका युद्धपेसा

led by Shikhandi rushed against Bhishm and cut down his bow. Dronacharya, Kritvarma, valliant Jayadrath, Bhurishrava, Shalya and Bhagdatta could not bear that injury to Bhishma's bow and all those seven warriors together faced Arjun. Then displaying their divine weapons and covering the Pandavas with their weapons, the sounds of those enraged warriors were heard like that of the angry ocean at the end of the Yug. Approaching Arjun's chariot they cried out, "Take him, seize him, wound him, kill him," The Pandav warriors hearing those cries, rushed against them for the sake of Arjun. Satyaki, Bhimsen, Dhrishtadyumna, Virat, Drupad Nakul, Sahadev, Ghatotkach the rakshas and enraged Abhimanyu, all these warriors much enraged took up their wonderful bows and rushed upon the seven. Then the battle between the two parties was as

शिक्षणदीप्त रणे श्रेष्ठो रक्षमाणः किराटिना ॥ २३ ॥ अविध्यदशभिर्मिषं छिन्नघन्या  
नमाहवे । सारथिं दशभिर्दशस्य ध्वजस्यैकेन चिच्छिदे ॥ २४ ॥ संग्रामं वामुकं  
मादाय गात्रेयो वेगवत्तरम् । तदप्यस्य शिरःवाणैस्त्रिभिश्चिच्छेद फाल्गुन ॥ २५ ॥  
एव स पाण्डवः क्रुद्ध आत्तमात्तं पुनःपुनः । धनुश्चिच्छेद भीष्मस्य सत्र्यमार्चीपर  
न्तपः ॥ २६ ॥ सछिन्नघन्या संक्रुद्धः सुविकणी परिसंलिहन् । शक्तिजग्राह तरसा गिरिणा  
मपि दारणीम् ॥ २७ ॥ ताञ्च चिक्षेप संक्रुद्धः फाल्गुनस्य रथं प्रति । तामापवन्तां  
संग्रहस्य ज्वलन्तीमशनीमिव ॥ २८ ॥ समावृत्त शिताम् भलान् पञ्च पाण्डवनन्दन ।  
तस्य चिच्छेदतां शक्तिं पञ्चधा पञ्चामि शरैः ॥ २९ ॥ संक्रुद्धोभरतश्रेष्ठ भीष्मबाहुमधेरि  
ताम् । सापपात तयाच्छिन्ना संक्रुद्धेन किराटिना ॥ ३० ॥ मेघवृन्दपरिप्लवा चिच्छि-  
महाघोर रोमहर्षणदुष्प्रा ॥ ३१ ॥ जैसाकिदैत्योत्त और देवताभोत्त दुष्प्राथा फिर युद्धमें  
अर्जुनने रक्षित शिरवीने उन दूरे धनुषबासे भीष्मको दशबाणोंसे बेधा औरदशही  
बाणोंमें सारथीको घायल किया और एकबाणसे उसकीध्वजाकोभीछेदवाला ॥ २४ ॥  
गंगेय भीष्मजी बड़े वेगवान् दूसरे धनुषका लेकर युद्धकरने लगे अर्जुन ने उन  
के उस धनुषकोभी तीन तीक्ष्ण बाणों से काटा । २५ । इसरीति से उसशत्रुसंतापी  
क्रोधभरे अर्जुन ने बारंवार लिये हुए भीष्मके धनुषोंको काटा । २६ । तब उन  
दूरे धनुष अत्यन्त क्रोधयुक्त होवाँको वास्तवहूए भीष्मजीने पर्वतों कोभी फाड़ने  
वाली घोरशक्ती को हाथ में लिया । २७ । और बड़े क्रोधमें उस शक्ती को  
अर्जुन के रथपर फेंका उस ध्वजके समान प्रकाशमान आनीहुई शक्ती को देखकर  
पांडुनन्दन अर्जुन ने पांच तीक्ष्ण भलोंको हाथ में लिया और उनकी उस  
शक्ती को पांचबाणों से टुकड़े टुकड़े करदिया । २९ । हे राजा अर्जुन ने भीष्मकी  
धुनासे फेंकी हुई शक्ती को काटा फिर अर्जुन से कटीहुई शक्ती रथसे ऐमे गिर-  
पड़ी । ३० । जैसे कि बादलोंके समूहों से अलग होकर बिजली गिरती है शत्रु-

ferocious as that between the gods and danavas. Then Shikhandi, protected by Arjun, wounded Bhishma, whose bow was cut down, with ten arrows, with ten more he wounded his driver and with one he pierced through his banner. Bhishma the son of Ganga then took up another bow and began fighting. Arjun cut down the other bow too, with three sharp arrows. Thus in his rage Arjun the destroyer of enemies again and again cut down Bhishma's bow. 26 Much enraged at the cutting of his bows, Bhishma biting his lips in anger, took up a dreadful spear capable of piercing mountains and in great rage hurled it at Arjun's chariot. Seeing that spear coming on like bright vajra, Arjun the joy of Panda, took up five darts in his hand and with them he cut down the spear in pieces. Hurled by the arms of Bhishma the spear was cut down by Arjun and it fell off the chariot (30) as lightning from clouds. Bhishma the destroyer of the

क्षेत्रे शतहृदा । छिन्नांतां शकिमालोप्य भीष्मः क्रोधसमन्वितः ॥ ३१ ॥ अचिन्तयद्भजे  
वीरो युद्धपापपरुषजयः । शकोहं धनुषैकेन निहन्तु सर्वपाण्डवान् ॥ ३२ ॥ यद्येषां  
न भवेद्गोप्ता विश्वक्सेनो महाबलः । कारणद्वयमास्थाय नाहं योत्स्यामि पाण्डवान्  
॥ ३३ ॥ अवध्यत्वाच्च पाण्डूनां स्त्रीमावाञ्छ शिखाण्डिनः । पित्रा तुष्टेन  
मे पूर्वपदाकाली मुद्रावहम् ॥ ३४ ॥ स्वच्छन्दमरणं दत्तं मवध्यत्वरणे तथा । तस्माद्मृत्यु  
महं मन्ये प्राप्तकालमिवात्मनः ॥ ३५ ॥ एवं ज्ञात्वा व्यवसितं भीष्मस्यामिततेजसः ।  
ऋषयो वसवश्चैव वियत्तस्या भीष्ममग्रवन् ॥ ३६ ॥ पक्षे व्यवसितं तात तद्दस्माकमपि  
प्रियम् । तत् कुरुष्व महापुत्र युद्धे युधि निवर्तय ॥ ३७ ॥ अस्व वाक्यस्य निर्धने प्रादु  
रासीच्छिबो निलः । अनुलोमः सुगन्धी च पृथतैश्च समन्वितः ॥ ३८ ॥ देवदुष्टुभय  
इक्ष्वेय सम्प्रणेदुर्महास्वनाः । पपात पुष्पहृष्टिश्च भीष्मप्योपरि मारिष ॥ ३९ ॥ नवं

आँके पुराँके विजयकरने वाले वीर भीष्म ने उस टूटी हुई शक्ती को देखकर युद्ध  
में चिन्ताकरी कि मैं अकेले धनुष से सब पांडवों के मारने को कैसे समर्थ हूँगा  
। ३२ । दूसरे इन्हीं के रक्षक महाबली श्रीकृष्णजी हैं इन दोनों कारणों से  
मैं पांडवों से नहीं लड़ूँगा मयम तो पांडवों के अवध्यहोने से दूसरे शिखंडी के  
स्त्रीपनेसे पूर्वसमय में मेरे मतान्न चित्त पिताने काली नाम मायाको विवाहा  
। ३४ । उससमय मुझको वरदान दिया था कि तू अपनी इच्छा के अनुसार  
मरेगा और युद्धमें सबसे अवध्य होगा इसकारण से मैं अपनी मृत्यु को समय पर  
वर्त्तमान मानता हूँ । ३५ । बढ़तेजस्वी भीष्मजी के इस प्रकारके निश्चयको  
जान कर आकाशमें नियत ऋषियों ने और अष्ट वसुओं ने भीष्मजी से कहा  
। ३६ । हे तात तुमने निश्चय किया वही हमको भी अभीष्ट है हे महाराज तुम  
इसी को करो और युद्धमें अपने चित्तको हटाओ । ३७ । इसवचन के समाप्त  
होने पर चारोंओर से वह वायु प्रकटहुई जो कि आनन्दरूप त्रिविध प्रकार से  
सुगन्ध युक्त थी । ३८ । उस समय देवताओं की भी दुन्दुभियाँ अच्छे प्रकार

enemies seeing his spear broken down thought within himself: "With  
a single bow I can not destroy the Pandavas who have mighty  
Shree Kaishn for their protector. I shall not fight against the  
Pandavas for two reasons:— firstly they are not destructible and  
secondly on account of the womanhood of Shikhandi. Formerly, my  
father of cheerful spirit married my stepmother Kali and granted me  
the boon that I should die when I desired and should not be killed in  
battle. Now I think that this is the proper time for me to die." At  
this resolution of Bhishm there came a sound from the rishis and the  
eight Vasus staying in mid air, "Your resolution is desirable to us.  
Do as you say and remove your mind from battle." As soon as  
those words were finished there blew from all quarters a breeze

तच्छुभे कश्चिदेषां सम्बद्धतां नृप । श्रुते भीष्म महाबाहुं माञ्चाणि-मुनितेजसा  
 ॥ ४० ॥ सम्प्रमद्वय-महानासीत् त्रिदशानां विशाम्पते । पतिष्यति रथाभीष्मे सर्वलो-  
 कप्रिये तदा ॥ ४१ ॥ इति देवगणानाञ्च वाक्यं श्रुत्वा महातपाः । ततः शान्तनवो भीष्मो  
 बीभत्सुं नादयधत्त ॥ ४२ ॥ सिधमान- शितैर्वाणे सर्वावरणभेदिभिः । शिखण्डीतु  
 महाराज भरतानः पितामहम् ॥ ४३ ॥ आजघानोरसि क्रुद्धो तवभिर्निशितैः शरैः ।  
 सतेना भिहतः संख्ये भीष्म- कुरुपितामह ॥ ४४ ॥ नाकम्पत महाराज्जितिकम्येयथा  
 खलः । ततः प्रहस्य बीभत्सुर्वाक्षिपन् गाण्डिव धनुः ॥ ४५ ॥ गागेयं पञ्चविंशत्या  
 द्वादकाणाम् समाप्यत् । पुनः पुन शतैरेनं स्वरमाणो धनञ्जयः ॥ ४६ ॥ सर्वगात्रेषु  
 संक्रुद्धः सर्वममंस्वताडयत् । एवमग्रेरपि भृशं विध्यमानः सहस्रश ॥ ४७ ॥  
 तानप्याशु शरैर्भीष्म प्रतिव्याध महारथः । तैश्च मुक्तञ्छरात् भीष्मा युधि सत्यपरा-

से बर्जी और भीष्मजी के ऊपर पुष्पोंकी वर्षा हुई, हे राजा व्यासमुनिके तेजसे  
 भरे और महाबाहु भीष्म के सिवाय उन वार्त्तालाप करनेवालों के वचनको किसी  
 ने भी नहीं सुना । ४० । तब सब लोकके प्यारे भीष्मजी के रथ से पृथक् होने  
 पर भीष्मके चाहने वाले सब देवताओं को बड़ा आश्चर्य हुआ । ४१ । इस के  
 पीछे शतनुका पुत्र तेजस्वी भीष्म देवगणों के वचनको सुनकर अर्जुन के सम्मुख  
 नहीं रहा । ४२ । जो कि सब पक्षों के तोड़नेवाले शिखण्डी बाणों से भी घायल  
 था तो भी क्रोधयुक्त शिखंडी ने भरतवंशियों के पितामहको । ४३ । तीक्ष्ण धार  
 के नौ बाणों से छातीपर घायल किया वह कौरवों के पितामह भीष्मजी युद्ध में  
 उस बहार से घायल होकर भी ऐसे कंपायमान नहीं हुए जैसे कि भूकम्प होने पर  
 पर्वत नहीं हिलता इस के पीछे गांडीव धनुष को खेंचनेवाले अर्जुन ने हँसकर  
 गांगेय भीष्मजीको द्वादक नामके पञ्चीस बाणों से घायल किया फिर शीघ्रता  
 करनेवाले अत्यन्त क्रोधयुक्त अर्जुन ने जैसे भीष्मको सैकड़ों बाणों से सब अंग  
 और मर्मस्थलों पर घायल किया इसीप्रकार दूसरे शत्रुओं ने भी इनको अनेक  
 प्रकारसे घायल किया । ४७ । फिर महारथी भीष्मने शीघ्रही उनको अपने बाणों से

giving pleasure and charged with sweet odours. The trumpets of the  
 gods sounded and there was a shower of flowers over Bhishm. None  
 except Bhishm and myself favoured of Vayas, could hear that  
 talk. 40. All the gods were filled with wonder when Bhishm the  
 favourite of all the world fell down from his car. After hearing the  
 words of the gods Bhishm encountered Arjun no more. Already  
 wounded by the sharp arrows, the grandfather of the Bharats was  
 again wounded by furious Shikhandi with nine arrows in the breast,  
 but Bhishm did not shake even with these fresh wounds and  
 remained firm as a mountain at the time of earthquake. Then Arjun  
 the wielder of Gandiv wounded the son of Ganga with twenty five

क्रमः ॥ ४८ ॥ निवारयामास शरैः समं सन्नतपर्वभिः । शिखण्डीतु रणे घाणान् यान्  
मुनोच महारथः ॥ ४९ ॥ न चकृते रुजं तस्य रुक्मपुत्राः शिलाशिताः । ततः किरि  
टीसंकुञ्जो भीष्ममेवाभ्यवर्तत ॥ ५० ॥ शिखण्डिनं पुस्तकृत्य धनुषास्य समाच्छि  
नत् । अथैनं नयमिर्विध्वा ध्वजमेकेन चिच्छिन्दे ॥ ५१ ॥ सारथिं विशिलैश्चास्य दशभि  
समकम्पयत् । सोन्यत् कार्मुकमादाय गाङ्गेयो बलवत्तरम् ॥ ५२ ॥ तदप्यस्य शितैर्भले  
स्त्रिधा अभिरघातयत् । निमेषार्धेन कौन्तेय आत्तमात्रं महारणे ॥ ५३ ॥ एवमस्य धनु  
स्याजौ चिच्छेद् सुबहून्यथ । ततः शान्तनवो भीष्मो धीमत्सु नात्यवर्तत ॥ ५४ ॥  
अप्यैनं पञ्चविंशत्या क्षुद्रकाणां समर्पयत् । सोतिविद्धो महेष्भासो दुःशासन

घायल किया और उनके छोड़े हुए बाणों को गुप्तप्र-धीवासे बाणों से जहाँका तहाँ  
रोंक दिया । ४८ । इसके पीछे महारथी शिखंडी ने युद्धमें जिन बाणोंको छोड़ा  
उन मुनहरीपुंलवाके तीक्ष्णधार युक्त बाणोंने उन भीष्मजी को पीड़ित नहीं किया  
। ४९ । इसके अनन्तर अत्यन्त क्रोधयुक्त अर्जुन शिखण्डी को आगे करके भीष्म  
के सम्मुख वर्त्तमान हुआ और उनके धनुष को काटा उसीप्रकार इनको दशबाणोंसे बेध  
कर एक बाणसे उनकी ध्वजा को भी काटा और दश विशिलबाणों से उनके सारथी  
को अत्यन्त कम्पायमान किया । ५१ । फिर भीष्मने दूसरे मलय धनुषको लेकर तैयार  
किया इस धनुषके भी अर्जुनने तीन तीक्ष्ण भल्लोंसे तीन खंड किये । ५२ । इसीप्रकार  
से अर्जुन ने आधेही निमेष में उस युद्धभूमिमें हाथमें लिये हुए उनके अनेक धनुषोंको  
काटा । ५३ । फिर शान्तनु के पुत्र भीष्म अर्जुन के सम्मुख वर्त्तमान नहीं हुए  
तब अर्जुन ने उनको क्षुद्रक नाम पच्चीस बाणों से घायल किया । ५४ । फिर  
वह अत्यन्त घायल बड़े धनुषधारी भीष्मजी दुःशासन से बोले कि इस पाँदवों के  
महारथी युद्धमें क्रोधरूप अर्जुन ने युद्ध के बीच हजारों बाणों से मुझको घायल

arrows with a smiling face. Then much enraged he pierced all parts  
of his body with hundreds of arrows. Then valliant Bhishm soon  
wounded him with his arrows and checked the flight of his arrows  
with his arrows having hidden knots. Shikhandi the brave warrior  
again discharged his arrows, but those arrows having golden feathers  
did not trouble him much. Then Arjun much enraged, stopping be-  
hind Shikhandi; encountered Bhishm and cut down his bow, 50.  
Having wounded him with ten arrows, he cut down his banner with  
one and wounded his chariot driver with ten more. Then Bhishm  
prepared another strong bow which was cut into three parts by  
Arjun's three arrows. Then Arjun cut down several bows of  
Bhishm. At the son of Shantanu encountered Arjun no more, and  
the latter again wounded him with twenty five arrows. 51. Exceedingly  
wounded, Bhishm the mighty archer said to Dushasan, "This  
mighty charioteer of the Pandavas, Arjun the embodiment of anger,

मभापत ॥ ५५ ॥ एष पाथो रणे दुःखः पाण्डवानां महारथः । शरैरेकसाहसैर्मा  
मेवाभ्य हनद्रणे ॥ ५६ ॥ न वैष समर शक्यो जेतुं वज्रभृता अपि । न चापि  
सहिता वीरा देवदानवराक्षसाः ॥ ५७ ॥ माञ्चापि शका निर्जेतुं किम् मर्त्या  
महारथाः । एवं तयो सम्बद्धतोः फाल्गुनो निश्चितैः शरैः ॥ ५८ ॥ शिखण्डिनं  
पुरस्कृत्य भीष्मं विव्याध संयुगे । ततो दुःशासनं भूयः स्मयमान इयावधीत् ॥ ५९ ॥  
अतिविद्धः शिखण्डिर्गोभृशं गाण्डीवधन्वना । वज्राशनिसमस्पर्शा अर्जुनेन शरायुधि  
॥ ६० ॥ मुक्ताः सर्वेऽप्यवाच्छिन्ना नेमैः चाणाः शिखण्डिनः । निरुन्तमाना मर्माणि  
ददाचरणभेदिनः ॥ ६१ ॥ सुसला इव मे भ्रान्ति नेमैः चाणाः शिखण्डिनः । वज्रदण्ड

किया है यह अर्जुन युद्धमें वज्रधारी इन्द्रभी भी विजय करनेके योग्य नहीं है  
। ५५ । और धीर देवता दानव राक्षसभी तब मिलकर मेरे विजय करनेको  
समर्थ नहीं हैं फिर पृथ्वी के नर महारथी क्या पदार्थ हैं । ५६ । इस रीति से इन  
दोनों के वार्त्तालाप होनेपर अर्जुन ने शिखंडी को आगे करके भीष्मजीको तीक्ष्ण  
धारवाले बाणों से फिर घायल किया । ५७ । तब तो उस गांडीवधनुषधारी के  
तीक्ष्ण बाणों से अत्यन्त घायल और आश्चर्य युक्त भीष्मजी दुःशासन से कह-  
ने लगे । ५८ । कि युद्ध में इन्द्रवज्रके समान अर्जुन के छोड़े हुए स्पर्श करने  
वाले बाण सब सफल हुए हैं इस से विदित होता है कि ये बाण शिखंडी के नहीं  
हैं । ५९ । बड़ेबड़े और मर्मस्थलों के काटने वाले पर्वतों को भेदनकरने वाले बाण  
मुसलोंके समान मुक्तकोमारते हैं यह बाण किसी प्रकार से शिखंडी के नहीं हैं । ६० ।  
वज्रदण्ड के समान स्पर्शवाले वा वज्रके समान तीक्ष्ण कण्ट से सहने के योग्य  
बाण मेरे प्राणों को पीड़ा देते हैं इससे यह शिखंडी के बाण नहीं हैं । ६१ ।  
यमदुर्तों के समान अभिय गदा और परिय के समान स्पर्शवाले बाण मेरे

has wounded me with thousands of arrows. Surely Arjun is in-  
vincible even by Indra the wielder of vajra 55. Valliant gods, danavas  
and rakshases joined together cannot conquer me; what to say of  
mortal men?" When the two were thus talking together, Arjun  
preceded by Shikhandi again wounded Bhishm with his sharp arrows.  
Exceedingly wounded by the sharp arrows of the wielder of Gandiv  
and much amazed, Bhishm thus addressed Dushasan:—"The arrows  
discharged by Arjun, hard to the touch like vajra, have all done  
their work; I think therefore that those arrows were not discharged by  
Shikhandi. Very hard, piercing the vital parts and capable of break-  
ing through mountains, those arrows hit me like maces; they cannot  
belong to Shikhandi. 60. Hard to the touch like Brahm-dand, sharp  
and unbearable like vajra, the arrows give me pain and therefore  
they could not belong to Shikhandi. Like the unwelcome messengers  
of Yama, the arrows hard as maces and clubs, draw life out of me."

समस्पर्शा घञ्जयेग दुरासदा ॥ ६२ ॥ मम प्राणानारुजन्ति नेमे घाणाः शिखण्डिन ।  
 नाशवन्तीव मे प्राणान् यमदत्ता इवाहिताः ॥ ६३ ॥ गदापरिघसंस्पर्शा नेमे  
 घाणाः शिखण्डिनः । भुजगा इव संक्रुद्धा लेलिहाना विषोत्थनाः ॥ ६४ ॥ समा  
 विशन्ति मर्माणि नेमेघाणां शिखण्डिनः । अर्जुनस्य इमयाणां नेमेघाणां शिखण्डिनः ॥ ६५ ॥  
 रुन्तन्ति मम गात्राणि माघमासे गवाहव । सर्वे ह्यपि न मे दुःखं कुर्युरप्ये  
 नराधिपाः ॥ ६६ ॥ धीर गाण्डीव धन्वान मृते जिष्णु कपिध्वजम् । इति प्रयच्छा  
 न्तनवो विघ्नक्षुरिव पाण्डवान् ॥ ६७ ॥ शक्तिमीप्स सपार्थाय ततश्चिक्षेप भारत । तामस्य  
 विशिष्टैश्छिन्वा त्रिधा त्रिमिरपातयत् ॥ ६८ ॥ पश्यतां कुरुवीराणां सर्वेषां तव भारत ।  
 चर्मणारूप गाङ्गेयो जातरूपपरिहृतम् ॥ ६९ ॥ खड्गचाम्यतरप्रेम्सुर्मृत्योरमेजयायथा ।

माणों को निकालते हैं यह बाण शिखण्डी के नहीं हैं । ६२ । सर्पों के समान  
 अत्यन्त क्रोधयुक्त विषभरे चाटते हुए मेरे मर्मां में प्रवेश करते हैं इससे यह बाण  
 शिखण्डी के नहीं हैं । ६३ । यह बाण भ्रमर अर्जुन के हैं शिखण्डी के नहीं  
 हैं क्योंकि यह बाण मेरे अंगों को ऐसे चूर्ण किये डालते हैं जैसे कि भाद्रपदके  
 महान में प्रचण्ड सूर्य अंगों को संतप्त करके चूर्णभूत करते हैं । ६४ । विजयी  
 गांडीव धनुषधारी वानरध्वज धीर अर्जुन के सिवाय अन्य पृथ्वी के सबराजा  
 लोग भी मुझको व्यथित नहीं कर सकते । ६५ । हे भरतर्षभ इस प्रकार बोलते बा  
 पाण्डवोंको भस्मकरना चाहते उन शत्रु के पुत्र भीष्म ने अर्जुन के ऊपर श-  
 क्तीको छोड़ा । ६६ । इसको देखकर अर्जुन ने आपके सब कौरवी धारोंके देखते  
 हुए इनकी शक्तीको विशिखनाम वीनवाणों से काटकर गिराया । ६७ । फिर  
 दोधातों में से एकको चाहते गांगेय भीष्मजी ने सुवर्ण जटिन डाल और तन-  
 वारको मृत्यु के लिये वा विजय के निमित्त हाथ में पकड़ा । ६८ । तब अर्जुन ने  
 उत्तरप में नहीं उत्तरे हुए की उस डालको शायकनाम बाणों से सौ डकड़े  
 किया यह पड़ा आश्चर्यसा हुआ । ६९ । इसके पीछे राजा युधिष्ठिर ने अपनी

those are not Shikhandi's arrows. Like venomous serpents much  
 enraged with tongues projected, the arrows enter my vital parts and  
 therefore they cannot be Shikhandi's arrows. They are certainly  
 Arjun's and not Shikhandi's, for these arrows are withering up my  
 limbs like the sun of Bhadrpad. Except conquering Arjun, the  
 wielder of the Gandiv, who has a monkey's figure on his banner, none  
 of the kings of the world can wound me." Thus talking and wishing  
 to destroy the Pandavas, Bhishm the son of Shantanu hurled a spear  
 at Arjun, and seeing that spear coming towards him, Arjun in the  
 presence of all the warriors of the Kauravas, cut it down with three  
 arrows. Then remembering his adored god, Bhishm the son of Gan-  
 ga took up his sword and shield for death or victory; but before he  
 could dismount his chariot, Arjun cut his shield into hundred pieces

तस्य तच्छ्रुतवा चर्म व्यधमत्सायकैस्तथा ॥ ७० ॥ रथादनवरुदस्य तदद्भुतमिया  
भवत् । ततो युधिष्ठिरो राजा स्वान्पत्नीकान्यचोदयत् ॥ ७१ ॥ अमिद्वयत गात्रं मा  
वोस्तु मयमण्यपि । अथ ते तामरैः प्रासैर्वाणैश्चैव समन्ततः ॥ ७२ ॥ पद्दिशैश्च सुनि  
क्षिप्तैर्नाणैश्च तथा शितैः । वत्सदन्तैश्च मल्लैश्च तमेकमभिदुषुः ॥ ७३ ॥ सिंहना  
दन्ततो घोरः पांडवानामभूत्तदा । तथैव तव पुत्राय नेदुर्भीष्मजयपिणः ॥ ७४ ॥ तमेक  
मभ्यरक्षन्त सिंहनानाश्चक्रिरे । तत्रासौत्तुमुलं युद्धं तापकानां परैः सह ॥ ७५ ॥  
दशमेहनि राजेन्द्र भीष्माजुनसमागमे । आसीद्गात्र इवावर्त्तो मुहूर्त्तमुदधेरिव ॥ ७६ ॥  
सैन्यानां युध्यमानानां निम्नतामितरेतरम् । असौम्यरूपा पृथिवी शोणितकामपत्तदा  
॥ ७७ ॥ समञ्च विषमश्चैव न प्रात्रायत किञ्चन । योधानामयुतं हरया तस्मिन् स

सेनाओं को आज्ञा की कि भीष्म के सम्मुख जाओ तुमको थोड़ा सा भीष्म न होगा  
। ७० । यह सुनकर वह सेना चारों ओरसे तामर भास वाणसमूह पहिना सुन्दर  
खग्न तीक्ष्णनाराच । ७१ । वत्सदन्त और मल्लों समेत उस भकेसे के सम्मुख  
गये इसके पीछे पांडवों के महाभयकारी सिंहनाद जारी हुए । ७२ । इसी प्रकार  
भीष्मकी विजय चाहने वाले आपके पुत्रभी गये और उम भकेले भीष्मके ओर  
पास वर्त्तमान होकर सिंहनाद करने लगे । ७३ । हेराजेन्द्र वहाँ दशवें दिन भीष्म  
और अर्जुनको सम्मुखतामें आपके पुत्रोंका युद्ध अन्य लोगोंसे महाघोर रूप हुआ  
। ७४ । परस्पर में मारती ओर लड़ती हुई सेनाके भ्रमण चक्र एक मुहूर्त्त पर्यन्त  
गगा और समुद्रके गिर्वाणके समान हुए । ७५ । तबपृथ्वी अशुभरूपी औररुधिरसे  
पूर्ण होगई उस समय अच्छा बुरा कुछनहीं मालूम हुआ । ७६ । वह भीष्म उस  
दशवें दिन में दश हजार वीरों को मारकर मरस्थलों में महाघायत होनेपर भी  
युद्ध में नियत रहे । ७७ । इसके पीछे उससेना मुखपर नियत घनुपधारी अर्जुन ने

with his sharp arrows. It was a wonder. Then Yudhishtir ordered  
his armies to face Bhishm without fear. 70. At this the warriors  
armed with *tomars*, *prases*, *arrows*, *pattishas*, *swords*, *sharp arrows*,  
*vatsadants* and *darts*, faced Bhishm. Then the Pandavas roared like lions.  
In the same manner, desirous of Bhishma's conquest, the Kauravas  
raised their war cries and having stationed themselves all round him,  
began roaring like lions. On that tenth day in the encounter of  
Bhishm and Arjun, your sons fought very valliantly against other  
foes. The rounds of the armies killing and fighting against one  
another were like the tides of the Ganges and the sea for some  
time. The ground became hideous and full of blood and nothing  
good or bad, was discernible. Having killed ten thousand warriors  
on that tenth day, Bhishm remained firm in battle although he was  
much wounded in the vital parts. Then, stationed on the entrance



दशमेहनि ॥ ७८ ॥ अतिष्ठद्वाहवे भीष्मो मिथ्यानेषु मर्मसु । ततः सेनामुखे तस्मिन् स्थितः पार्थोऽनुधरः ॥ ७९ ॥ मध्येन कुरुसैन्यानां द्रावयामास बाहिनीम् । घयम्भेत ह्याङ्गिताः कुन्तीपुत्राञ्जनभयात् ॥ ८० ॥ पीड्यमाना शितैः शस्त्रैः प्राद्रवामरणतदा । सौवीराः कितवाः प्राच्याः प्रतीच्योदीच्यमालवाः ॥ ८१ ॥ अभीपाहाः शूरसेनाः शिवपोषवशातयः । शाल्वा श्रयास्त्रिगर्ताश्च अम्बुष्ठाः केकयै सह ॥ ८२ ॥ सर्वपते महात्मानः शरात्तां प्रणपीडिताः । सन्नामे नाजहुर्भीष्म युध्यमान किरोटिना ८३ ॥ ततस्तमेकं घहृवः परिवार्य्यसमन्ततः । परिकान्यकुरुन् सर्वांश्च शरवर्षैरघाहिरन् ॥ ८४ ॥ निपातयन्ते गृह्णीत युध्यध्व मवकृन्तत । इत्यासीत् तुमुलः शब्दो राजन् भीष्मरथ प्रति ॥ ८५ ॥ निहत्य समरे राजन् शतशोऽपि सहस्रशः । न तस्यासीदनिर्भिन्नं गात्रेऽथ गृह्यन्तन्तरम् ॥ ८६ ॥ एवमूनस्तत्र पिता शरीरैश्चकलीकृतः । शिताग्रैः फालगुनेनाजौ प्राक् कौरवी सेनाके मध्यमे से सेनाको भगाया ॥ ८७ ॥ तव ह्यस श्वेतघोड़े रखनेवाले कुन्ती के पुत्र अर्जुनसे भयभीत व बाँझ शस्त्रों से पीड़ामान होकर युद्ध से भागे । ७९ । सौवीर कितव व पूर्वो पश्चिमी और उत्तराय राजा व मालव देशा अभीपाह शूरसेन शिवय वशातय शाल्व आश्रय त्रिगर्त अंबुष्ट केकयों समेत इनसब बाणों से पीड़ित और घावोंसे दुःखी महात्माओंने युद्धमें अर्जुनके साथ लड़तेहुए भीष्मको त्याग नहीं किया इसके पीछे बहुतसे क्षत्रियों ने चारों ओरसे उस अकेले को घेरकर । ८२ । और सबकौरवों को हटाकर घाणों की वर्षा से ढकादिया और गिराओ पकड़ो लड़ो काटो यह काठेन शब्द भीष्म के रथ के पासहुए और युद्धमें हजारों को मारकर । ८४ । उसके शरीर में दंक्र दलका भी अन्तर घावोंसे चक्की नहींरहा ऐसी दशावाले अर्जुन के तीक्ष्ण नोकवाले बाणों से अत्यन्त घायल किये हुए आपके पिता भीष्मजी कुछ मूर्ख के शेष रहनेपर आपके पुत्रों के देखतेहुए रथ परसे आँधोशर होकर पृथ्वी पर गिम्पड़े । ८६ । हेभरतवंशो रथ से भीष्मजी के

of the army, Arjun hit the centre of the Kaurava army and put it to flight. Afraid of Kunti's son Arjun the possessor of white horses, and wounded by his arrows, we fled from the field of battle, 79. The Sauvira, the Kitavas, the Eastern, Western and Northern princes, the Malavas, the Avishahs the Shursenas, the Shivayas, the Vashatayas, the Shalwas, the Ashrayas, the Trigartas, the Ambvashtas and the Kailayas, although pierced with arrows and smarting with the wounds, did not desert Bhishm as long as he fought against Arjun. Then many kshatriya warriors having surrounded him and pushed back the Kauravas, covered him with their arrows and the cries of "Pull, seize, fight and cut" were heard round the chariot of Bhishm. Having killed thousands there was not the space of an inch left unwounded on his body. Thus wounded by the sharp pointed arrows

शिराः प्रापतद्रथात् ॥ ८७ ॥ किञ्चिच्छेपे दिनकरे पुत्राणां तत्र पश्यताम् । दाहेति द्विवि  
 देधानां पार्थिधानाञ्च भारत ॥ ८८ ॥ पतमाने रथाङ्गीष्मे यमूच समहास्यत । सम्पतन्त  
 नमिप्रेक्ष्य महात्मानं पितामहम् ॥ ८९ ॥ सह भीष्मेण सर्वेषां प्रापतन् हृदयानिनः । स  
 पपात महाबाहुयसुधा मनुनादयन् ॥ ९० ॥ इन्द्रध्वज इवोत्प्लुष्टः केतु सर्वधनुष्मताम् ।  
 धरणीं न स पस्पर्श शरसंघैः समावृतः ॥ ९१ ॥ शरतल्पे महेष्वासं शयानं पुरुषर्षभम् ।  
 रथात् प्रपतितं चैनं दिव्यो माय शमाविशत् ॥ ९२ ॥ अश्ववर्षञ्च पर्जन्यः प्राकम्पत  
 च मेदिनी । पतद् स दशो चापि दक्षिणेन दिवाकरम् ॥ ९३ ॥ संज्ञां चोपालमङ्गीरः  
 कालं सञ्चिन्त्य भारत । अन्तरिक्षे च शुभाव दिव्या वाचः समन्ततः ॥ ९४ ॥ कथमहा  
 गिरतेही राजाओं में और आकाशके देवताओं में हायर आदि बहुत मे शब्द होने  
 लगे । ८७ । उस महात्मा पितामहको गिरतेहुए देखकर भीष्मके साथ हम सबके भी  
 हृदय फट गये । ८८ । वह महाबाहु इन्द्र ध्वजा के समान ऊँचा और सबधनुषधारि-  
 यों में ध्वजा रूप भीष्म पृथ्वी को अच्छी रीति से कंपायमान करता गिरा । ८९ ।  
 उन बाणसमूहों से वेधित होनेपर भी भीष्मजी ने पृथ्वी को स्पर्श नहीं किया  
 अर्थात् बाण शय्याही के ऊपर रहे फिर उस बाणशय्या पर सोते हुए बड़े धनुष-  
 धारी पुरुषोत्तमरूप रहते गिरतेहुए भीष्मजी में दिव्यभाव प्रविष्ट हुआ बादल वर्षा  
 करनेलगे पृथ्वी कंपायमान हुई । ९१ । उस गिरते हुए ने भी दक्षिण दिशा में  
 नियत सूर्य को देखा हे भरतर्षभ उसप्रतापी शूरवीर ने कालज्ञानको विचार कर  
 सावधानी को पाया । ९२ । और अन्तरिक्ष में चारों ओर से यह दिव्य वचन  
 सुने कि सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ महात्मा पुरुषोत्तम भीष्म दक्षिणायन सूर्य वर्च-  
 मान रहने पर किसी प्रकार से भी अपना शरीर नहीं त्यागेगा भीष्मजी इस वचन  
 को सुनकर बोले कि मैं अभी नियत वर्चमान हूँ । ९४ । पृथ्वीपर गिरतेहुए उत्तरा-

of Arjun, your father, a little before sunset, with a sight of your sons,  
 fell down prone from his chariot. At the fall of Bhishm from the  
 chariot, there were cries of sorrow raised from the kings and the gods  
 on high. Our hearts broke with his fall. That valliant man, tall as  
 Indra's banner, shook the earth with his fall, but pierced with arrows  
 as he was, he did not touch the ground and remained upraised on the  
 bed of arrows. While lying on that bed of arrows, the great archer,  
 best of men, Bhishm fallen down from his chariot, exhibited signs of  
 his divine origin: rain fell from clouds and the earth shook. 91. At his  
 fall he saw the sun in his southern course and thinking of the unfit-  
 ness of the time he regained his senses. He heard these words from  
 the mid air:— "Mighty Bhishm the best of men bearing arms, will  
 not leave his mortal frame as long as the sun will stay in the South."  
 On hearing these words Bhishm said:—"I am yet alive" and longing

रमा गात्रेय सर्वशस्त्रमृतावर । काल कर्त्ता नरक्याग्र सम्प्राप्ते दक्षिणायने ॥ ९५ ॥  
 स्थितोऽमीति च गात्रेयस्तच्छ्रुत्वा वाक्यमब्रवीत् । धारयामास च प्राणान् पतितोऽपि  
 महीतले ॥ ९६ ॥ उत्तरायणमन्विच्छन् भीष्म कुरुपितामहः । तस्य तन्मतमाज्ञाय गङ्गा  
 हिमवत गुता ॥ ९७ ॥ महर्षीन् हसरूपेण प्रेषयामास तत्रैव । तत सम्पातिनो हस्ता  
 स्मरितो मानसौकस ॥ ९८ ॥ आजगमु सहिता द्रष्टुं भीष्म कुरुपिता महम् । यत्रशते  
 नरधेष्ट शरतल्पे पितामहः ॥ ९९ ॥ तेषुभीष्मं समासाद्य ऋषयो हंसरूपिण । अगदप  
 ष्ठर तल्पस्थ भीष्म कुरुकुलोद्ग्रहम् ॥ १०० ॥ ते त दृष्ट्वा महात्मान कृत्या चापि प्रद  
 क्षिणम् । गात्रेयं भरतधेष्ट दक्षिणे नच भास्करम् ॥ १०१ ॥ इतरेतमामन्त्र्य प्राहुस्त  
 मनीषिणः । भीष्म कथं महात्मासत् सस्याता दक्षिणायने ॥ १०२ ॥ इत्युक्त्वा प्रस्रियता  
 हस्ता दक्षिणामभितो दिशम् । सम्प्रेक्ष्य वै महाबुद्धिभिः तद्विस्थाच भारत ॥ १०३ ॥ तानब्र

यग की चाहते उन कौरवों के पितामह भीष्मजी ने प्राणों को धारण किया । ९५।  
 हिमाचन की पुत्री श्रीगंगाजीने उन के अभिमायको जानकर महर्षि लोगोंको हंस  
 रूप करके उनके समीप भेजा । ९६। इसके पीछे वह बहुत उड़ने वाले शीमगामी  
 हंस एक साथी उन कौरवों के पितामह भीष्मजी के देखनेको । ९७। उस स्थानपर  
 आये जहाँ नरोत्तम भीष्म पितामह शरशय्या पर सोतेथे वहाँ आकर हंसरूप महर्षियों  
 ने उस शरशय्या पर नियतहुए कौरव भीष्मजी को देखा और उनको दक्षिणायन  
 सूर्य में पड़ाहुआ देखकर बड़ी परीक्षा कर परस्पर में सलाह करके यह कहा  
 । १००। कि भीष्म महात्मा दक्षिणायनमें कैसे जायगा ऐसा कहकर वह हंस दक्षि  
 णकी ओरको चलेगये । १०१। हेभरतपंथ यह बुद्धिमान भीष्मजी अच्छी रीति से  
 उनको देख विचारकर शोच पूर्वक बोले कि हे महर्षियों में किसी रीतिसे भी दक्षिणायन  
 सूर्य में नहीं जाऊंगा यही मेरे मनमें दृढ़ता है उत्तरायण सूर्य होने पर मैं अवश्य  
 अपनेप्राचीन स्थान पर जाऊंगा । १०३। हे हंसरूप महात्मा लोगों में आप लोगों से

for the Northern course of the sun the grandfather of the Kauravas did not die 95 Ganga the daughter of Himachal, knowing the object of his desire, sent to him the Maharshis in the disguise of swans. These swiftly going swans came at once to see the grandfather of the Kauravas to the place where he was lying on the bed of arrows. They saw him lying there on the arrowy bed, and seeing him lying down during the southern course of the sun, they went round him and said unanimously. 100 "This great Bhisim cannot depart from this world when the sun is in its southern course." Having said this, the swans flew away towards the south. Bhisim the wise, having looked at them carefully, said, "I am resolved. O great rishis, not to leave this world during the southern course of the sun, but as soon as he changes his course towards the north I

धीच्छान्तनयो नाहं गन्ता कथञ्चन । दक्षिणावर्त्त आदित्ये एतन्मे मनसि स्थितम् ॥ १०४ ॥  
 गमिष्यामि स्वकं स्थानमासीद्यन्मे पुरातनम् । उदगायन आदित्ये हंसाः सत्यं धर्मीमि  
 वः ॥ १०५ ॥ धारयिष्याम्यहं प्राणानुत्तरायणकाक्षया । ऐश्वर्य्यभूतः प्राणानामस्सर्गो  
 हि यतो मम ॥ १०६ ॥ तस्मात् प्राणान् धारयिष्ये ममर्य्यदगायने । यद्य दत्ता धरो  
 महो पित्रा तेन महारमना ॥ १०७ ॥ छन्दो मृत्युरित्येयं तस्य चास्तु द्रस्तया । धार  
 यिष्ये ततः प्राणान्स्सर्गो नियते सति ॥ १०८ ॥ इत्युक्त्वा तांस्तदा हंसाः स शैले शर  
 तम्पवः । ययं कुरुणा पतिते मृद्धे भीष्मे महोत्तसि ॥ १०९ ॥ पाण्डवाः सुहृज्जयार्थं  
 सिंहनादं प्रचक्रिरे । तस्मिन् हत महासत्वे भरतानां पितामह ॥ ११० ॥ न किञ्चित्  
 प्रत्यपचन्त पुत्रास्ते भरतपेभ । सम्मोदश्चैव तुमुलुः कुरुणामभयसदा ॥ १११ ॥ ह्य

कहताहं कि मैं उत्तरायण की इच्छा से प्राणों को धारण करूँगा । १०४ । क्योंकि  
 अपने प्राणोंका त्यागना मेरेही स्वाधीन है इस हेतुसे उत्तरायण सूर्य्य में प्राण  
 त्यागकरने की इच्छासे मैं तबतक अपने प्राणोंको धारण करूँगा । १०५ । उस  
 महात्मा पिताने जो मुझको अपनी इच्छाके अनुसार जब चाहे तब मरेँ यह  
 जो वर प्रदान किया है उसको मैं बेसेही समझना हूँ और वास्तव में भी वह  
 यथार्थ है । १०६ । इस कारण देहत्याग निश्चय होनाने पर भी अपने प्राणों को  
 धारण करूँगा उन हंतों से ऐसा कहकर शर शय्या पर शयन कर गये । १०७ ।  
 इस प्रकार उस बड़े पराक्रमी कौरवोंके वृद्ध और प्रधान भीष्मजी के गिराने पर  
 पाण्डवोंने और श्रमिणोंने सिंहनाद किया । १०८ । हे राजा उनबड़े बलिष्ठ  
 मत्तापवान् कौरवों के वृद्ध पितामह के आसन्न मृत्युहोने पर आपके पुत्रोंने कुछ  
 करने के योग्य कर्म को नहीं माना । १०९ । उस समय कौरवोंको बड़ा भारी  
 मोह उत्पन्नहुआ उसकेपीछे कृपाचार्य्य औरदुर्य्योधनआदि सबलोग स्वासार्थों को  
 लेलकर बड़ाखुदन करनेलगे और इसी व्याकुलतामें बहुत विलम्ब तक अचेत नियत

shall depart to my old seat in heaveon. I say to you, great wish is in  
 the form of swans, that I shall live and wait till then; for my life  
 is in my power and I will not die till the sun has changed his course  
 towards the north. 105. My mighty father granted me the boon  
 that I should live as long as I deaned. I think his words were true  
 to the letter. I shall therefore keep my life although the desertion  
 of this body is certain." Having said this to the swans, he lay down  
 again on his arrowy bed. Thus the mighty ancestor of the  
 Kauravas fell, and the Pandavas with the Scinjayns raised  
 a leonine roar. At the fall of that mighty ancestor of the  
 Kauravas and his being at the point of death, your sons knew not  
 what to do. The Kauravas were then very dejected, and Duryo-  
 dhan and others wept with deep sighs. They remained insensible

दुःख्योधनमुखा नि भवस्य कुरुस्तत । विपादाच्च चिरंकालनतिष्ठन् विगतेन्द्रियाः ॥ ११२ ॥ दध्नुश्चैव महाराज न युद्धे दधिरे मनः । ऊरुमाहृष्टहीताश्च नाश्रयधावन्त पाण्डवान् ॥ ११३ ॥ अयस्य शान्तनो पुत्रे हते भीष्मे महौजासि । अभावः सहसा राजन् कुरुराजस्य तर्कितः ॥ ११४ ॥ हतप्रवीरास्तु ययं निरुत्ताश्च शितैः शरैः । कर्त्तव्यं नामि जानीमो निजिना सन्ध्यासाचिना ॥ ११५ ॥ पाण्डवाश्च जयं लब्ध्वा परत्र च परां गतिम् । सर्वे दध्नुर्महाशैलान् शूणः परिवधाहवः ॥ ११६ ॥ सोमकाश्च सपञ्चालाः प्राद्वप्यन्तजनेभ्यः । ततस्तूर्यसहस्रेषु नदत्सु समहावलः ॥ ११७ ॥ मास्फोटयामास भृशं भीमसेनो ननाद च । सेनयोरुभयोश्चापि गाङ्गेये निहते विमौ ॥ ११८ ॥ सन्ध्याय वीराः शस्त्राणि प्राध्यायन्त समन्ततः । प्राक्रोशन् प्राद्ववंश्चाग्रे जग्मुर्मोहं तथा परं

होकर मश शोचग्रहाणाते युद्धमें विचित्रही लगाया । १११ । हृदयके ग्राह से पकड़ेहुये मर्याद शोचसे अतितहोके पाण्डवों के सम्मुख भी नहीं दौड़े । ११२ । जिनके कि वड़े २ शूरवीर मारेगये ऐसे हमलोगोंने दुःख्योधनका नाशहोना विचित्र से विचारकिया । ११३ । अर्जुनसे परास्तहोकर हमलोगोंने करने के योग्यकर्म कोभी नहींजाना और परिष के समान भुजाधारी सबशूरवीर पाण्डवोंने इसलोक में तो विजयस्वी कीतिको और परलेक में उत्तम गतिको पाकर बड़े २ शस्त्रों को बजाया हे राजा पांचालों समेत सोमकलोग अत्यन्त मसन्न हुए । ११५ । फिर हजारों यज्ञों के वज्रने पर उस महाबली भीमसेन ने भुजदण्डों के कठिन शब्द किये मर्याद दोनों खंभ ठोककर यड़ी गर्जनाकरी । ११६ । उस समर्थ गांगेय भीष्मजी के आसन्न मृत्युहोने पर दोनों सेनाओं के शूरवीरों ने शस्त्रोंको त्यागकरके चारों ओरसे बड़ा ध्यान किया । ११७ । कोई पुकारा कोई भागा कोई अचेत हुआ किसीने क्षत्रीकुलकी मशंसाकरी किसी ने भीष्मजी की मशंसा करी । ११८ । ऋषियों ने और पितरों ने भी महाव्रत भीष्मजी की मशंसा करी

for a long time and did not rejoin in battle on account of sorrow. 111. Being much dejected in mind they did not rush against the Pandavas. At the death of our great warriors, we thought that the destruction of Duryodhan was sure. Defeated by Arjun we did not know what to do, and all the Pandav warriors with their arms like clubs, got victory and fame in this world and the regions of the righteous in the next. They blew their conchs and the Somaks with the Panchals were much pleased. 115. At the sounds of thousands of the musical instruments, valliant Bhimsen made a great noise by the beating of his upper arms and roared a loud roar. When mighty Bhishm the son of Ganga was at the point of death, the warriors of both the armies laid down their arms and remained plunged in deep thought. Some cried out, some fled, some became insensible, some praised the

॥ ११९ ॥ क्षत्रं चान्येभ्यनिन्दन्त भीष्मं चान्येभ्यपूजयन् । ऋषयः पितरश्चैव प्रशशं  
स्महेहाव्रतम् ॥ १२० ॥ मरतानाञ्च ये पूर्वं ते चैनं प्रशशंसिरे । महोपनिषदञ्चैव  
योगमास्थाय धीर्यवान् । जपन् शान्तनवो धीमान् कालाकांक्षी स्थितोभवत् ॥ १२१ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि भीष्मपराक्रमे

विंशत्यधिकशतोऽध्यायः ॥ १२० ॥

पृतराष्ट्र उवाच । कथमासंस्तुता योषा हीना भीष्मिण सञ्जय । बलिना देय  
कल्पेन गुर्वर्थं ब्रह्मचारिणा ॥ १ ॥ तद्वै निहतान् मन्ये कुरुनभ्याश्च पाण्डवैः ।  
न प्राहरद्यदा भीष्मो वृणित्वाद्द्रुपदात्मजम् ॥ २ ॥ ततो दुःखतरं मन्ये किमन्यत्  
प्रमथिष्यति । अद्याह पितरं भुत्वा निहतं स्मसुदुर्मतिः ॥ ३ ॥ अश्मसारमयं नूनं  
हृदयं मम सञ्जय । श्रुत्या विनिहतं भीष्म शतधा यन् ईर्यते ॥ ४ ॥ यदन्य

और भरतवंशीयों के जो पूर्व के स्वर्गवासी पुरखालोग थे उन्हीं ने भी उनकी  
बड़ी प्रशंसा की । ११९ । पराक्रमी और बुद्धिमान् भीष्मजी महा उपनिषद् रूपी  
योग में वर्त्तमान होकर जपमें प्रवृत्त उत्तरायण सूर्य काल के इच्छावान्  
होकर नियत हुए १२१ ॥

अध्याय १२१ ॥

पृतराष्ट्र बोले हे संजय उन पराक्रमी देवता के समान गुरु पिता ब्रह्मचारी  
भीष्म से पृथक् होकर शूरावीर लोग किसदशा में होकर कौन काम करनेलगे  
। १ । जबकि भीष्मजी ने दयाकरके शिखण्डी के ऊपर किसी शस्त्रका प्रकार नहीं  
किया तभी से मैं कौरवों को पांडवों के हाथ से मृतकरूप मानता हूँ । २ । हे  
संजय अब इससे अधिक दूसरा कौनसा दुःखहोगा कि पिता को भी मृतक सुनकर  
में निर्बुद्धी जीता हूँ । ३ । हे तात निश्चयकरके मेरा हृदय लोहे से भी कठोर  
है जो अपने पिता भीष्मजी को भी सुनकर सो दुकड़े नहीं होता है सुन्दर व्रत

kahatryas and some praised Bhishm. The rishis and pitars too, praised Bhishm of dreadful vow and the forefathers of the Bharats residing in heaven, gave him much praise. Valliant and wise Bhishm engaged in *yog* and *jap*, waited there for the northern course of the sun." 120.

## CHAPTER CXXI

Dhritrashtra said:—"What did the warriors do, Sanjaya, after being separated from Bhishm the grandfather, venerable like a god? When I heard that he, out of mercy spared Shikhandi and did not wound him in return, I thought that the Kauravas were all slaughtered by the Pandavas. What grief can be greater, O Sanjaya, than that I am alive after hearing the death of my father! Surely my heart must be harder than iron as it does not break into a hundred pieces at hearing the news of my father's death. Let me

निहतोनाजो भीष्मेण जयमिच्छता । भेष्टितं कुर्त्तुमिहेन तन्मे कथय सुव्रत ॥ ५ ॥  
 पुनः पुनर्नमृष्यामि हतं देवव्रतं रणे । नहतो जामदग्न्येन द्विवेरस्वैरयं पुरा ॥ ६ ॥  
 स हतो ग्रीपधेयेन पाञ्चाल्येन शिखण्डिना । सञ्जय उवाच । सायाहने निहतो भूमौ  
 धार्तराष्ट्रान् विपादयन् ॥ ७ ॥ पञ्चालानां द्वौ हव्य भीष्मः कुक्षितामहः । स  
 शेते शरतल्पस्थो मेदिनीमस्पृशंस्तदा ॥ ८ ॥ भीष्मे रथात् प्रपतिते प्रच्युते धर्मा-  
 तले । हावेति तुमुलः शब्दो भूतानां सम पद्यत ॥ ९ ॥ सीमावृक्षे निपतते कुरूणां समि-  
 तिञ्जये । सेनयो रमयो राजन् क्षत्रियान् मयमाविशत् ॥ १० ॥ भीष्मं शान्तनवं दृष्ट्वा  
 विशीर्णकयचध्वजम् । कुरवः पर्यवसन्त पाण्डवाश्च विशास्यते ॥ ११ ॥ एतं तमः संवृ-  
 तममूवासीद्भानुर्गतप्रभम् । ररासपृथिवी चैव भीष्मे शान्तवे हते ॥ १२ ॥ अथ ब्रह्मविदां

धारी संजय पहां युद्धभूमि में विजयाभिलाषी कौरवोत्तम आसन्न मृत्यु भीष्मजी  
 ने जो काम किया वह मुझ से कहो । ५ । मैं युद्ध में मृतक देवव्रत भीष्मको  
 वारम्बार स्मरण करके अर्धय होता हूँ कि जो भीष्म पूर्ण समय में परगुरामजी  
 के भी दिव्य अस्त्रों से नहीं मारागया वह द्रुपद के पुत्र पांचाल देशी शिखण्डी  
 के हाथ से मारागया । ६ । संजय बोले कि सायंकाल के समय पृथराष्ट्र के  
 पुत्रों के व्याकुल करनेवाले पांचाल देशियों को कौरवों के पितामह भीष्म जी ने  
 आनन्द दिया, और वाणशय्यापर नियत पृथ्वी को बिना स्पर्श किये शयन  
 करनेवाले हुए रथसे भीष्मके गिरने और पृथ्वीतल से ऊपर पड़ने पर जीवोंका  
 हाय हाय शब्द अत्यन्ततासे हुआ। कौरवों के युद्ध की सीमाके वृक्षरूप महाविजयी  
 भीष्मके गिरने पर । ९ । दोनों सेनाओं के क्षत्रियों में महाभय उत्पन्न हुआ हे राजा शंतनु  
 के पुत्र भीष्मको दृढाकवच और ध्वजा से रहित देखकर चारों ओरसे कौरव और पांडव  
 वर्त्तमान हुए आकाश में अंघेरी छागई सूर्यमें अप्रकाशता आगई । ११ । और पृथ्वी  
 ऐसे शब्दों से शब्दायमान हुई कि यह ब्रह्मज्ञानियों में वा ब्रह्मके जानने वालों में

know, good Sanjaya, all that Bhishm the best of Kauravas desirous of  
 victory and fated to die did in the field of battle. Rememoring Deva-  
 brat Bhishma's death in the field of battle, I become impatient again  
 and again to think that he who was not killed by the divine weapons  
 of Parashuram, is now destroyed by Shikhandi of Panchal the son of  
 Drupad." 6. "By the approach of evening," said Sanjaya, "Bhishm  
 the grandfather pleased the Panchals to the great grief of the  
 Kauravas. Lying on the bed of arrows without touching the ground,  
 Bhishm fallen from his chariot caused great grief to all the people.  
 At the fall of Bhishm the great conquerer and boundary tree of the  
 Kaurav war, great fear was caused among the warriors of both the  
 armies. Seeing Bhishm with the armour and banner broken the  
 Kauravas and the Pandavas gathered on all sides; the sky became  
 dark and the sun's light dimmed. 11. The earth was filled with the

श्रेष्ठो ह्ययं ब्रह्म विद्वांश्वरः । इत्यभाषन्त भूतानि शयान पुरपर्यमम् ॥ १३ ॥ अयं पितर  
माशाय कामाक्षं शान्तनुं पुरा । ऊर्ध्वरेतसमात्मानं चकार पुरुषर्षभ ॥ १४ ॥ इति स्म  
शरतत्पस्थं भरतानां महत्तमम् । ऋषयस्त्वभ्यभाषन्त संहिताः सिद्धचारणैः ॥ १५ ॥  
हते शान्तनवे भीष्मे भरतानां पितामहे । न किञ्चित् प्रत्यपद्यन्त पुत्रास्तथ हि मारिष्य  
॥ १६ ॥ वियण्णयदनाश्चासन् हतश्रीकाश्च भारत । अतिष्ठन् व्रीहिताड्यैव हिया युक्ता  
राधोमुखाः ॥ १७ ॥ पाण्डवाश्च जय लब्ध्वा संप्रामादितसि स्थिताः । सर्वे क्षमुर्महा  
शयान् हेमजालपरिष्कृतात् ॥ १८ ॥ हर्षोत्तर्ग्यसहस्रेषु वाद्यमानेषु चानघ । अपश्याम  
महाराज भीमसेनं महाबलम् ॥ १९ ॥ चिक्रीडयान् कान्तेय हर्षेण महतायुतम् । निहत्य  
तस्मा शत्रुं महाबलसमन्वितम् ॥ २० ॥ सम्मोहयापि तमल पुरुषानामभवत्ततः । कर्ण  
दुष्योन्धनौ चापि निःशस्त्रौ सुदुर्मदौ ॥ २१ ॥ तथा निगतिं भीष्मे कौरवार्णां पिता

श्रेष्ठ है । १२ । जीवों ने उस सोतेहुए पुरुषोत्तम को विषय में यह वचन कहा  
कि पूर्वं समय में इसी श्रेष्ठ पुरुषने अपने पिता शान्तनु को कामाग्नि से पीड़ित  
जानकर अपने को ब्रह्मचारी किया और चारणां समेत ऋषियों ने उन वाण  
शाय पर नियत कौरवों के पितामह भीष्मजी के आसन्न मृत्यु होने पर यह  
वचन कहा । १५ । कि आपके पुत्रों ने कुछ करने योग्य कर्मको नहीं  
जाना है भरतर्षभ धृतराष्ट्र उनशोभा में राहत विन्न स्वरूप लज्जा युक्त इसी से  
भर युद्ध में मृत्त पाण्डवों ने विजय को पाकर । १७ । सुवर्ण जालों से अलंकृत  
पड़े बड़े शस्त्रों को बजाया है निष्पाप बड़े आनन्द के हजारों वानों के  
बजने पर हमने महाबली कुन्ती के पुत्र भीष्मसेन को बड़ी प्रसन्नता युक्त झोड़ा  
करता हुआ देखा । १९ । बड़े बली पांडव शत्रुको अपने बग में मारकर  
महा प्रमत्त हुए तब कौरवों में महा काठिन्योह उत्पन्न हुआ । २० । इसी प्रकार  
भीष्म जी के मरने पर कर्ण और दुष्योन्धन ने भी बारम्बार श्वास लिये । २१ ।

sounds of 'He was the best of those who know Brahm' People  
remarked about that best of men lying there—"This is he who in  
former times knowing his father Shantantu to be burning in the fire  
of lust, observed a vow of perpetual celibacy : Seeing the grandfather  
of the Kauravas lying on the bed of arrows from head to foot and  
ready to die, the rishis said —15. "The sons of Dhritrashtra did not  
ret wisely." Splendourless and ashamed full of enmity and engaged  
in battle, the Pandavas having got victory blew their conchs docket  
with the network of gold At the sound of thousands of the musical  
instruments we saw mighty Bhimsen, the son of Kunti, beating time  
in his glee. The valliant Pandavas having killed the enemy by their  
prowess, were choerful in spirit and the Kauravas were much chagrined.  
30. At the fall of Bhishm Duryodhan and kaurav heaved sighs  
of distress All the people wept for grief and there was confusion



महे । दाहाभूतमभूत् सर्वं निर्मर्यादमघर्त्तत ॥ २२ ॥ दृष्ट्वाच पतितं भीष्मं पुत्रो दुःशा-  
सनस्तथ । उत्तमं जघमास्थाप द्रोणानीकमुपाद्रुषत् ॥ २३ ॥ आत्रा प्रस्थापितो धीरः  
स्वेमानीकेन दृशितः । प्रययौ पुरुषव्याघ्रः स्वसैन्यं स विपादयन् ॥ २४ ॥ तमायातममभि-  
प्रेक्ष्य कुरवः पर्यवारयन् । दुःशासनं महाराज किमयं यक्ष्यतीति च ॥ २५ ॥ ततो  
द्रोणाय निहतं भीष्ममाचष्ट कौरवः । द्रोणस्तन्नामिषं श्रुत्वा मुमोह भरतर्षभ ॥ २६ ॥ स  
सन्नामुपलभ्याशु भारद्वाजः प्रतापवान् । निवारयामास तदा स्वान्यनीकानि मारिष  
॥ २७ ॥ विनिवृत्तान् कुक्कुटं दृष्ट्वा पाण्डवापि स्वसैनिकान् । वृत्तैः शीघ्राश्वसंयुक्तैः सम-  
न्तात् पर्यवारयन् ॥ २८ ॥ निवृत्तेषु च सैन्येषु पाण्डुपुत्रेण संवशः । निर्मुक्तकवचाः सर्वे  
भीष्ममीयुर्नराधिपाः ॥ २९ ॥ व्युपरम्य ततोऽयुद्धाघोचा शतसहस्रतः उपतस्थुर्महात्मनः

सब हाय हाय रूप हुआ और अमर्यादा वर्त्तमान हुई आपका पुत्र दुश्शामन  
भीष्मजी को गिरा हुआ देखकर । २२ । बड़ी तीव्रता में नियत होकर द्रोणा-  
चार्य की सेना में गया वह भाई का भेजा हुआ अपनी सेना से अलंकृत धीर  
दुश्शासन अपनी सेनाको विह्वल करता हुआ गया हे राजा कौरवों ने उस  
भाये हुए दुश्शासन को देखकर चारोंओरसे इस निमित्त घेर लिया कि देखिये  
यह क्या कहता है । २४ । इसके पीछे दुश्शासन ने भीष्मजी के मरनेका वृत्तान्त  
द्रोणाचार्य जी से कहा । २५ । तब द्रोणाचार्य उसके अमिष वचनको सुन  
कर शोक से अचेतहोगये फिर उसप्रतापवान् द्रोणाचार्य ने सचेतहोकर । २६ ।  
अपनी सेनाओं को और कौरवों ने भी लौटेहुए अपने कौरवी लोगों को देखकर  
अपनी मवल सेनाको निषेधकरदिया । २७ । और शीघ्रगामी घोड़ों पर सवार अप-  
ने दूतों को इधर उधर भेजकर सब को निषेध करवादिया । २८ । फिर सबराजालोग  
अपने २ कवचोंको उतार २ कर भीष्मजी के पासगये तदनन्तर लाखों शूरीर  
युद्ध को विश्राम करके उसमहात्मा भीष्मके पास आकर ऐसे नियतहुए जैसे कि  
देवता लोग ब्रह्मजी के पास इकट्ठे होते हैं हे राजा इसके पीछे सब पांडव लोग

throughout. At the sight of Bhishma's fall your son Dushasan hastened to the army of Dronacharya. Sent by his brother with his army, brave Dushasan went on upsetting the minds of the soldiers. At his arrival the Kauravas surrounded him on all sides to hear what he had to say to them. He related to Dronacharya the account of Bhishma's death, and hearing that unwelcome news Dronacharya swooned. On regaining consciousness he ordered his soldiers to desist from fighting and other Kauravas followed his example. They sent swift messengers all round the army to stop fighting. Then all the warriors put off their armour and went to Bhishma, and millions of warriors, leaving the field of battle, collected all round him like gods round Brahma. Then the Pandavas and the Kauravas, seeing

प्रजापतिमिधामराः ॥३०॥ ते तु भीष्मं समासाद्य शयानं भरतर्षभम् । अभिवाद्याय तिष्ठ  
 न्त पाण्डवाः कुरुभिः सह ॥ ३१ ॥ अयं पाण्डू कुन्तीस्य प्रणिपत्याग्रतः स्थितान् ।  
 भीष्मभापुत धर्मात्मा भीष्मः शान्तनवंस्तदा ॥ ३२ ॥ स्वागतं वीमहाभागः स्वागतं धीमहा  
 रयाः । तुष्यामि दर्शनाच्चार्हं युष्माकममरोपमाः ॥ ३३ ॥ अभिमन्त्रयाय तानेवं शिर  
 सालम्बताग्रधीम् । शिरो मे लम्बतेत्यर्थं मुपधानं प्रदीपयताम् ॥ ३४ ॥ ततो नृपा सजा  
 जहस्तनुनि च मृदूनि च । उपधानानि मुख्यानि नैष्ठिकानि गितामहः ॥ ३५ ॥ अथाग्रधी  
 भरस्याग्रः प्रहस्तत्रिय तादनुपात् । नैतानि वीरशय्यासु युक्तरूपाणि पार्थिवाः ॥ ३६ ॥  
 ततो वीर्य नरश्रेष्ठ गम्यमापत पाण्डवम् । धनञ्जयदीपयाहुं सर्वलोकमहारथम् ॥ ३७ ॥  
 धनञ्जय महाबाहो शिरो मे ताव लम्बते । क्षीयतामुपधानं यं ययुकमिह मन्यसे ॥ ३८ ॥  
 इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि दशमदिवसावहारे  
 एकविंशत्यधिशतोऽध्यायः ॥ २९ ॥

भी कौरवों समेत उस शयनकरते हुए भीष्मजी को पाकर । ३० । दोनों हाथोंसे  
 दण्डवत्करके नियतहुए इसके पीछे शतनुकेपुत्र भीष्मजी सबकी थपार्योग्य शिष्टाचारी  
 करके अपनेसमुख बैठेहुए पांडव और कौरवोंसे बोले हे महाभागो तुम्हारा आगमन  
 सफल हो और हेमहारधी लोगो तुम्हारा आगमन भेद्यहो । ३१ । हे देवताओंके  
 समान पुरुष लोगो मैं तुम्हारे देखनेसे बड़ा प्रसन्न होताहूँ इन सबलोगों से ऐसा  
 कहकर फिर शिरको लटकाये हुए कहने लगे । ३२ । कि मेराशिर अत्यन्त लटकता  
 है इससे मुझे तकिया दो यह सुनकर राजाओं ने बड़े उत्तम मृदुस्पर्शवाले तकिये  
 लाकर दिये । ३३ । इन तकियों को पितापहने नहींचाहा और हँसकर राजाओं  
 से कहा कि । ३४ । हे राजाओ यह तकिये वीरोंकी शय्याओं पर शोभित नहीं  
 होते हैं फिरसब लोकके महारथी प्रतापी पांडव अर्जुनको देखकर बोले कि हेमहाबाहु  
 अर्जुन मेरा शिर लटकता है तू मुझको उचित तकिये देदे । ३५ ।

him lying there, stationed themselves after saluting him with both hands. Then Bhishma the son of Shantana, having asked of their welfare, said to the Kauravas and Pandavas seated before them, "You are welcome, great men, may you be happy and prosperous, brave warriors! men like gods, I am much pleased to see you." Having said this he again continued with his head lying low:—"My head is hanging painfully, pray give me a pillow." At this the kings brought him soft pillows; but the grandfather was not satisfied and with a smiling face he said to them, "These pillows are not befitting the warrior." Then looking towards Arjun the world's bravest warrior, he said:—"My head hangs down, brave Arjun, give me a fitting pillow." 37.

सह्य उवाच । समारोप्य महच्छाप मभिवाद्य पितामहम् । नेत्राभ्यामधुपूर्णाभ्या  
मिदं वचनमब्रवीत् ॥ १ ॥ आज्ञापय कुरुश्रेष्ठ सर्वशस्त्रपुत्रावर । प्रेष्योहि तव बुधैः क्रियतां  
किं पितामह ॥ २ ॥ तमप्रवीच्छा त्वनघ शिरोमेतात लभ्यते । उपधानकुरुश्रेष्ठ फाल्गुनो  
पब्धस्त्वमे ॥ ३ ॥ शिरस्थानुरूपं वै शीघ्रं घोरं प्रयच्छमे । त्वं हि पार्थ समर्थोऽसि श्रेष्ठ सर्व  
धनुष्मताम् ॥ ४ ॥ क्षत्रधर्मस्थवेत्ता बहुद्विस्तत्त्वगुणान्वित । फाल्गुनोऽपि तथेत्युक्तवाच्यघसाय  
मरोचयत् ॥ ५ ॥ युहानुमन्मगोडीवशरावसप्रतपर्वणः । अनुमान्य महात्मानं भारतानामहा  
रथम् ॥ ६ ॥ त्रिभिरस्त्रीह्येवंहावेगैरन्यगुणाच्छिरः शरैः अभिप्रायेतु विदितेधर्मात्मासध्यसा  
धिता ॥ ७ ॥ अनुपपन्नरतश्रेष्ठो भीष्मो धर्मार्थतत्त्ववित् । उपधानेन दत्तेन प्रत्यनन्दश्च

अध्याय ॥ १२२ ॥

संजय बोले कि इस वचनको सुननेही अर्जुन बड़े भारी धनुष को हाथमें लेकर  
अधुना तयुक्त हो पितामहको दण्डवत्करके यह वचन बोला । १ । हे कौरवोंमें श्रेष्ठ  
सब शस्त्रधारियों के शिरोमणि महादुर्जय पितामह मैं आपका दामाद आपभुक्त को  
जो आज्ञा दें वही मैं करूँ । २ । भीष्मजीने कहा हे तात कौरवों में श्रेष्ठ अर्जुन मेरा  
शिरलटकता है तू मुझको तकियादे । ३ । हे वीर बहुतशीघ्र मेरे शयनके योग्य  
तकियादे दे । अर्जुन तूही समर्थ होगा तूही सब धनुषधारियों में श्रेष्ठ होगा तूही  
क्षत्रीधर्मका जानने वाला बुद्धिमान सनांगुणयुक्त होगा यह सुनकर अर्जुन ने भी  
बहुत श्रेष्ठ कहकर उपाय और परिश्रमको अंगीकार किया । ४ । और गाँडीवधनुष  
को हाथमें लेकर गुप्त ग्रन्थीवाले बाणों को अभिमंत्रितकर भीष्मजीकी प्रतिष्ठाकरके  
तीक्ष्ण और वेग युक्त तीनबाणों से उनके शिरको सीधा किया चित्तका भ्रियज्ञान  
होने पर धर्मात्मा और मुहूर्तना के जाननेवाले भरतर्षभ भीष्मजी इस कर्मको देख  
कर अर्जुनपर अत्यन्त प्रमन्नहुये और इसतकिये के देनेसे अर्जुनकी बड़ी प्रशंसाकी

### CHAPTER CXXII

"As soon as Arjun heard those words," said Sanjaya, "he took up in his hand his large bow with tears in his eyes, and bowing down before him he said, "Best of the Kauravas and prince of warriors, invincible grandfather, I am at your service to do your behest." "My head hangs down, son, best of the Kauravas," replied Bhishm, "give me a pillow. Hasten, O warrior, to give me a pillow suitable for my repose. Thou alone canst give it. Thou art the foremost of archers. Thou knowst the duties of a Kshatriya and art wise and endowed with sagacity." At this Arjun said 'Very well' and accepted the undertaking. Having taken up the Gandiv bow he pronounced aphorisms on his arrows having hidden knots, and with three sharp arrows he respectfully upraised the head of the grandfather. Virtuous Bhishm the best of Bharats was exceedingly pleased with Arjun at thus giving him the object of his desire and eulogised him for giving

नम्रप्रयम् ॥ ८ ॥ ग्राहसर्गान् समुद्रीश्व भरताम् भारतं प्रति । कुन्तीपुत्रं युवां श्रेष्ठं सुहृ-  
दां प्रीतिवर्धनम् ॥ ९ ॥ शयनस्यानुरूपं मे पाण्डवोपहितं त्वया । यद्यप्यथा प्रपंचयाः  
शयनेत्यमहं रुपा ॥ १० ॥ एवमेव महाबाहो धर्मेषु पथितिष्ठता । स्वतप्यं क्षत्रियेणा  
जो शरत्क्षपगतेनये ॥ ११ ॥ एवमुक्त्वा तु भीमदत्तं सर्वोस्तानप्रवीक्ष्य च । राक्षस्य राज  
पुत्रांश्च पंडवा नमिसंस्थितान् ॥ १२ ॥ पश्यच्चमुपधानं मे पाण्डवेनामिसन्धितम् । शि-  
ष्येहमस्याः शय्यायां यावदावर्त्तनं रवे ॥ १३ ॥ येन दामां गमिष्यन्ति ते च प्रेक्षयन्ति मां  
नृपाः । दिग्धैश्च वणाक्रान्तां यदा गन्ता दिग्गकरः ॥ १४ ॥ नूनं सताम्यपु कृतं रथेनेत्त  
मतेजसा । विमोहयेहे तदा प्राणान् सुहृदः सुमित्रानिव ॥ १५ ॥ परित्राः पश्यतामत्र  
ममायसक्षने नृपाः । उपासिष्ये विषस्वन्त मेवं शरशताचित् । उपारम्ये संप्राप्ताद्  
बैरमुखस्य पाथिवाः ॥ १६ ॥ सञ्जय उवाच । उपातिष्ठन्नयो वैद्याः शब्दोदरणको-

। ८ । और सब भरतवंशियोंके मध्यमें इस श्रेष्ठ मित्रोंकी प्रीतिके बढ़ाने वाले कुन्ती  
के पुत्र अर्जुन से बोले कि । ९ । हे पांडव तुमने शयनके समान मुझको तक्रिया  
दिया और जो कदाचित् विपरीत कर्म करते तो मैं अवश्य तुमको शाप देता । १० ।  
हे महाबाहु धर्ममें नियत शरशय्यापर वर्त्तमान क्षत्रीको युद्धभूमि में निश्चय करके  
इसीरिति से शयनकरना योग्य है । ११ । इस रीति के बचन अर्जुन से कह कर  
और पास बैठे हुए राजकुमारों से बोले । १२ । कि पांडवके लगाये हुए मेरे तकिये  
को देखो मैं इसशय्या पर तबतक शयन करूंगा जबतक कि सूर्य दक्षिण मार्ग  
से उत्तर मार्ग में अर्धात् दक्षिणायन से उत्तरायण होजायेंगे । १३ । जो राजा  
उस समय मुझको मिलेंगे वह मुझको देखेंगे । १४ । जब सूर्य सात घोड़ों के उत्तम  
प्रकाशवान रथपर चढ़कर कुबेर की दशा को जावेगा तब मैं भी अपने छह छ  
मित्रों समेत प्राणों को त्यागूंगा । १५ । हे राजालोगो यहां मेरे निवासस्थान पद  
तुम खाई को खुदवाओ क्योंकि मैं इसरीति से हजारों बाणों से छिदे हुए शरीरसे  
सूर्य की उपासना करूंगा और तुम सब शत्रुताको त्यागकर युद्ध मतकरो । १६ ।

him the pillow. In the midst of all the descendants of Bharats, he  
thus addressed Arjun the joy of his friends:— " You have given me.  
O Pandav, a pillow to mach my bed. I should have cursed you, if you  
had acted otherwise. 10. A kshatrya, firm on duty and lying on  
the bed of arrows in the battle field, should certainly repose like this."  
Having said such words to Arjan, he turned to the princes sitting  
by, saying, " Look at the pillow which the Pandav has furnished  
for me. I shall repose on this bed as long as the sun would take to  
change his course from South to North; the Kings who come to me  
then, will see me. When the sun on his brilliant chariot drawn by  
seven fleet horses will turn in the direction of Kuver, I shall leave  
my body with my friends. Dig a ditch round me warriors; for, with  
my body pierced by thousands of arrows, I shall adore the sun. I

विदा । सर्वोपकरणैर्धुका । कुशलै साधुशिक्षिता ॥ १७ ॥ तान् दृष्ट्वा जाह्नवीपुत्र  
प्रोवाच तनय तत्र । धनं दत्त्वा विद्युन्मतां पूजयित्वा चिकित्सका ॥ १८ ॥ एवमते  
मयेदात् वैधै कार्यमिहास्तिकं । क्षत्रधर्मे प्रशस्ताहि प्राप्तोस्मि परमागतम् ॥ १९ ॥  
नैव धर्मो महीपाला शरत्पगतस्य मे । एभिरेव शरीरैश्चाह वृन्धव्योस्मि नराधिपा  
॥ २० ॥ तच्छ्रुत्वा पचन तस्य पुत्रो दुर्योधनस्तथ । वैद्यान् विसर्जयामास पूजयित्वा  
यथाहृत ॥ २१ ॥ ततस्ते विस्मय जम्बूनानाजनपदेश्वरा । स्थितिं धर्मे परादृष्ट्वा  
भीष्मस्यामिततेजस ॥ २२ ॥ उपधानवतोदत्त्वा पितुस्तेमनोजेश्वरा । सहितापाडवा  
सर्वे कुरवश्च महारथा ॥ २३ ॥ उपगम्यमहात्मान शयान शयने शुभे । तेभिर्वायततो  
भीष्म एत्याच त्रिप्रदक्षिणम् ॥ २४ ॥ विधाय रक्षाभीष्मस्य सर्वे एव समन्तत । धीरा  
स्वशिचिराण्येव ध्यायन्त परमातुरा ॥ २५ ॥ निवेशायाऽपुपागच्छन् सायाह्ने रुधिरौ

इसके अनन्तर हे राजा वहाँ सब भूषण और चिकित्सा के यन्त्रों से अलंकृत  
पीड़ितों से स्तूपमान सर्ववैद्य लोग आनकर वर्त्तमानहुए । १७ । गांगेय भीष्मजी  
उनको देखकर आपके पुत्र से बोले कि इन वैद्योंको सत्कार करके दक्षिणापूर्वक  
तुम विदाकर दो । १८ । अब यहाँ मेरी यह दशाहेने पर मुझको वैद्योंसे क्या प्रयो-  
जन है क्योंकि मैं क्षत्री धर्म में भेष्ट होकर परम गतिको प्राप्त हूँ । १९ । हे राजाभो  
मुझ बाणशय्यापर वर्त्तमानकापही धर्म है कि मैं इन्हीं बाणोंसेमेत जलाया जाऊँ । २० ।  
उन के इस पचनको सुनकर आपके पुत्र दुर्योधनने अपनी योग्यता के अनुसार  
उन वैद्योंको पारतोपिक देकर विदाकिया । २१ । फिर नानादेश के राजाओंने  
बड़े तेजस्वीभीष्मजीको अपने धर्ममें दृढ़ देखकर बड़ा आश्चर्य किया । २२ । इसकेपीछे  
आपके पिताको ताकीया देकर वहसब महारथी राजा वा पांडव और कौरव एक  
साथही शुभशय्यापर सोतेहुए मरात्मा भीष्मकेपास जाकर दंडवत् पृर्वक तीनपरि-  
क्रमाकर । २४ । सायंकाल के समय सबधीर चारों ओर से ध्यानकरते बड़े डाली

advise you to give up enmity and bloodshed." In the meantime  
there came to the place, all the physicians, praised by the wife, with  
medicines and surgical instruments Bhishm the son of Ganga, casting  
his eye on them, said to your son, "Dismiss these physicians with  
donations and respect. What can the physicians avail me in this  
state of health? I have got all that a Kshatrya, firm on his duty,  
should desire. It is my duty and do no, that, lying on the bed of  
arrows as I am, I should be burnt along with these arrows." 20 At  
this, your son Duryodnan dismissed the physicians with donations  
befitting his rank. The princes of different countries, finding Bhishm  
firm on his duty, were much amazed. Then having furnished a pillow  
for your father, all the kings with the Kauravas and the Pandavas  
bowed to Bhishm who was lying on the bed of arrows and having  
turned round him three times retired to their respective tents with

क्षिताः । निविष्टान्पांडवांश्चैष प्रीयमाणान्महाराथान् ॥ २६ ॥ भीष्मस्य पतने हृद्यनुपगम्य महा  
 ययः । उवाच माधवः काले धर्मपुत्रं युधिष्ठिरम् ॥ २७ ॥ विष्टया जयसि कौरव्य विष्टयामीशो  
 निपप्रतिष्ठः । अयस्यो मानुषैरेव सत्यसन्धो महारथः ॥ २८ ॥ अथवा दैवतैः सार्धं सर्वं शा  
 स्त्रं स्वपारागः । त्वन्तु चचुर्हण प्राप्य दग्धो घोरैः क्षपुषा ॥ २९ ॥ एवमुक्त्वा धर्मराजः  
 प्रत्युवाच जनाह्वयः । तव प्रसादाद्विजयः क्रोधात्तव पराजयः ॥ ३० ॥ त्वंहिनः शरणं  
 कृष्ण भगवानामयङ्कुरः । वनाभ्यर्षो जयस्तेषां येषां त्वमसि केशव ॥ ३१ ॥ रक्षितासमरे  
 नित्यं नित्यञ्चापि हिते रतः । सर्वं यात्वा समासाद्य नाभ्यर्षमिति मे मतिः ॥ ३२ ॥ एव  
 मुक्तः प्रत्युवाच स्वयमानो जनार्दन । तयैवैतद्युक्तरूपं वचनं पार्थिवोत्तम ॥ ३३ ॥

इति महा० भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि द्वाविंशत्याधिकशतौऽध्यायः ॥ १२२ ॥

हथिर से भरेहुए अपने २ डेरोंमें विभ्राम करनेके लिये गये और महायत्नी माधवजी  
 उस मत्तन चिच देवेहुए महारथी भीष्मजी के गिरनेपर मत्तन हृदय पांडवोंके पास  
 जाकर समय पाकर धर्मपुत्र युधिष्ठिर से कहनेलगे । २७ । हे कौरव तुमपारंग्य से  
 विजय पातेहो और यह मनुष्यों से अथय सत्यप्रतिज्ञ महारथी भीष्म पारंग्य से  
 गिरायागया । २८ । अथवा देवताओं समेत सबशस्त्रों में पूर्ण तुम्हनेत्र से मारनेवाले  
 को पाकर घोर नेत्र से भस्महोगया । २९ । यह सुनकर धर्मराज युधिष्ठिरने श्री  
 कृष्णजी को उचर दिया कि आपके मत्तनहोनेसे विजय है और आपकेही अमत्तन  
 होने से पराजय है । ३० । हे भक्तमयहारी श्रीकृष्णजी आपही हमारेसारेके स्यान्हो  
 और उन लोगोंको विजयकापाना कुछ आश्चर्य नहीं है जिनके हिनकाने में सदैव  
 मटत चिच और युद्धमें सदैव रक्षकहो आपको सवमकार से प्राप्त होकर विनयका  
 होना कुछ आश्चर्य नहीं है यहमेरा मत है । ३१ । इस रीतिके युधिष्ठिर के वचनों  
 को सुनकर श्रीकृष्णजी बड़ी मन्दमुमकान समेत बोले कि हेराजामों में श्रेष्ठ युधि-  
 ष्ठिर यहकहना तुम्ही को योग्य है ॥ ३३ ॥

heavy hearts. Mighty Madhav went to the Pandavas sitting much  
 pleased at the fall of Bhishm, and in his leisure thus addressed  
 Yudhishtir:- "You have got victory by your good luck and it  
 was by your good fortune that invincible Bhishm of true vows was  
 slain. We may say that he was burnt by thy wrathful eyes which  
 can slay all the gods armed with weapons" To these words of  
 Shri Krishn, Yudhishtir made the following reply:- "Victory goes  
 hand in hand with your pleasure and defeat goes along with your  
 displeasure, 30. O dispeller of the fear of your devotees, Shree  
 Krishn, you are our only refuge. It is not difficult for them to gain  
 victory who alway have you for their well-wisher and protector in  
 battle. I think it is not strange for us to gain victory when you are  
 on our side." On hearing these words of Yudhishtir, Shree Krishn  
 smiled very slowly and said, "O best of Kings; Yudhishtir, such  
 words can come from thee alone" 33.

सन्ध्या उवाच ॥ व्युद्यमान्तु महाराज सर्वभ्यां सर्वपाथिवाः । पाण्डवा  
धार्तराष्ट्रश्च उपातिष्ठन् पितामहम् ॥ १ ॥ ते वीरशयनेवीरं शयानं कुर्यस्तमम् । जामि  
पाद्योपतस्थुर्ध्वक्षत्रियाः क्षत्रियर्षमम् ॥ २ ॥ कन्याश्चन्वनचूर्णश्च लाजैर्मादलेक्ष्य सर्वशः ।  
अपाकिरञ्जान्तनवं तत्र गत्वा शहस्रशः ॥ ३ ॥ स्त्रियोवृक्षास्तथा घाताः प्रेक्षकाश्च पृथ  
गजनाः । समभ्ययुःशान्तनवं भूतानीवतमोनुदम् ॥ ४ ॥ तूपाणि शतसेह्यानि तथैवमनसं  
काः । शिल्पिनश्च तथा जम्बुः कुरुवृद्धं पितामहम् ॥ ५ ॥ उपारम्य च युद्धेभ्यः सन्नाहान्  
विप्रमुच्यते । आयुधानि च निक्षिप्य सहितः कुरुपाण्डवाः ॥ ६ ॥ अन्वास्तन्तुराद्यर्ष  
देवव्रतमरिन्दमम् । अन्वोऽन्य प्रीतिमन्तस्ते यथापूर्वं यथावयः ॥ ७ ॥ सापाथिवशतकीर्णाः

अध्याय । १२३ ।

संजय बोले हे महाराज रात्रिके व्यतीत होने पर सबराजा वा पाण्डव और  
धृतराष्ट्र के पुत्र पितामह के पास वर्त्तमान हुए । १ । क्षत्रीलोग उन कौरवोत्तम  
क्षत्रियोंमें श्रेष्ठ वीरशय्या पर सोतेहुए वीर भीष्मजी को दण्डवत करके उनके पास  
नियत हुए । २ । वहाँपर हजारों कन्याओं ने जाकर चन्दन चूराखील और संव  
प्रकारकी मालाओंसे भीष्मजी का पूजन किया । ३ । वृद्धास्त्री वा घाला स्त्री और  
देखने वाले अन्य सावधान लोगभी उन्भीष्मजी के समीप ऐसे गये जैसे कि सूर्य  
की उपासनाको मनुष्य और स्त्री जाते हैं । ४ । तालस्वर समेत ईश्वर का  
वर्णनकरने वाले धर्मिणांजे समेत नाचनेवाले नट नागर और कारीगर लोग भी  
वृद्ध पितामह भीष्मजी के पासगये । ५ । वह कौरव पाण्डवपुत्रों से निवृत्तहो शरीर  
के कषचादिकों को उतार सब शस्त्रोंको त्याग एकसाथ मिले हुए । ६ । उनवृज्य  
शत्रुजय देवधन भीष्मजी के पामआकर बैठगये और सबलोगपुत्रोंके समान प्रख्या  
के क्रमसे परस्पर में प्रीतिमान थे, वह सैकड़ों राजाओं से व्याप्त भीष्मजी से

### CHAPTER CXXIII

Sanjaya continued.—“At the close of the night, all the kings  
with the Pandavas and the sons of Dhritrashtra came to the grand-  
father and sat by him after bowing to that best of the Kauravas and  
kshatriyas lying on the warlike bed. Thousands of girls came there  
and worshipped him with sandal powder, fried paddy and garlands.  
Old and young women and wise men came to Bhishma as if to  
worship the sun. Singers, players, dancers, acrobats, artisans and  
others too, came to see the old grandfather. The Kauravas and the  
Pandavas having given up fighting and put off their armour and  
their arms, came together and sat by the invincible destroyer of  
enemies, Devabrat Bhishma. As in the days of old they behaved  
affectionately in the order of their ages. Consisting of thousands of  
kings, the court of the descendants of Bharat, glorious by the  
presence of Bhishma, looked beautiful like the sun's orb in the sky.

समितिर्भीष्मशोभिता । शुशुभे मारुतीदीप्ता दिवीवादित्यमण्डलम् ॥ ८ ॥ धियमो च  
नृपाणां सा गङ्गामुत्सुपासताम् । वचानामिव देवेशे पितामहमुपासताम् ॥ ९ ॥ भीष्म  
स्तुवेदनां धैर्याग्निगृह्य मरतयम । अमिततः शरैश्चैव निःश्वसन्नुद्यतो यथा ॥ १० ॥  
शरमिततकायोपि शस्त्रसन्तापमूर्च्छितः । पानीयमिदं संप्रेष्य रामस्तान् प्रत्यभाषत  
॥ ११ ॥ तत्रस्ते क्षत्रिया राजान् नृपाजहुः समन्ततः । मत्स्यानुच्चाध्वचान् राजान् वारि  
कुम्भाध शीतलान् ॥ १२ ॥ उपासन्तनुपानीयं दृष्ट्वा शान्तनयोऽब्रवीत् । नाद्यातीतामया  
शम्या भोगाः केचनमनुयाः ॥ १३ ॥ व्यपक्रान्तो मनुष्येभ्यः शरशय्यां गतोऽहम् । प्रती  
क्षमाणस्तिष्ठामि निवृत्तिं शशि दूर्ययोः ॥ १४ ॥ एषमुक्त्या शान्तनयो निन्दन् वाक्येन  
पाधिवान् । अर्जुनं द्रष्टुमिच्छामीत्यभ्यभाषत भारत ॥ १५ ॥ अयं पितर्य महाबाहुर्भियाद्य  
पितामहम् । अतिव्रत प्राञ्जलिः प्रय किंकरोमीति चाब्रवीत् ॥ १६ ॥ तदृष्ट्वा पाण्डवं

शोभायमान भरतवंशियों की सभा ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि आकाश में सूर्य  
मंडल शोभित होता है । ८ । गंगाजी के पुत्र की उपासना करनेवाले राजाओं की वह  
सभा ऐसी महाशान्त हुई जैसे कि देवताओं के ईश्वर ब्रह्माजी की उपासना करने  
वाली देवसभा होती है । ९ । भरतवंशियों में अश्रु बाणों से पीड़ितमान सर्प के समान  
व्याप्त लेने बाणों से पीड़ित शरीर और शस्त्रों के प्रहार से मूर्च्छितान् भीष्मजी उन  
राजाओं को देखकर धैर्य से पीड़ा को सहकर यह बचन बोले कि हमारे निचे जल  
को लाओ । ११ । इसके पीछे उन क्षत्रियों ने चारों ओर से छोटे बड़े भोजन पात्र  
और शीतलजलके घटादिक पात्रों को भेगाया । १२ । भीष्मजी उसप्रकार से  
छाये हुए जलको देखकर बोले कि हे तान अरुहोई मानुषी भोग मुक्त से  
भोगाना जाता । १३ । मैं मनुष्यों से पृथक् वायुप्रस्थान पर वर्तमान चन्द्रमा और  
सूर्य के सौदने की घाट देखता हुआ नियत हूँ । १४ । हे धृतराष्ट्र भीष्मजी इस  
प्रकार से कहकर अपने मुखसे राजाओं की निन्दा करते हुए फिर बोले कि मैं अर्जुन  
को देखा चाहता हूँ । १५ । इस के पीछे महाबाहु अर्जुन पितामहके समीप  
दण्डवत् पूर्वक आकर वहीनव्रतामे झुका हुआ नियत हुआ और हाथ जोड़ कर

The assembly of kings adoring Bhishm the son of Ganga, looked glorious like the assembly of gods adoring Brahma. Best of the descendants of Bharat, wounded by arrows, sighing like a serpent on account of the wounds of arrows and insensible on account of the wounds of other weapons, Bhishm, looking at the assemblage of kings and bearing the pangs with patience, said, "Fetch me water to drink." 11. Those kshatriyas brought large and small vessels full of cold water; but Bhishm casting his eye on them, said, "I can no longer enjoy human things. I am lying on the bed of arrows separate from men and waiting for the change of the Sun's course." Having said this, Bhishm rebuked those kings, saying, "I wish to see Arjun." At this brave Arjun approached the grandfather bow-



राजन्मिवाद्याप्रतस्थितम् । अम्यभापत धर्मात्मा भीष्मजीतोघनञ्जयम् ॥ १७ ॥  
 दहानीय शरीरं मे सेवृतस्य तवेधुभिः । मर्त्याणि परित्युपन्ते सुखञ्च परिश्रुष्यति ॥ १८ ॥  
 वेदमार्त्तशरीरस्य प्रयच्छापो ममाङ्गुन । एवं हि शक्तो महेष्वास दातुमागो ययाधिधि  
 ॥ १९ ॥ अङ्गुनस्तु तथेत्युक्त्वा रथमारुह्य धीरवान् । धर्मिष्ठं पलवत कृत्वा गांडीयं  
 व्याक्षिपद्धनुः ॥ २० ॥ तस्य ज्यातलनिर्घोषं विस्फूर्जितमिवाशनेः । धिधेम्नुः सर्वभूतानि  
 सर्वं ध्रुत्वाच पार्थिवाः ॥ २१ ॥ ततः प्रदक्षिणं कृत्वा रथेन रथिनाथरः । शयानं भरत  
 श्रेष्ठं सर्वशस्त्रभूतांवरम् ॥ २२ ॥ सन्धाय च शरं दीप्तमग्निमग्न्य स पाण्डवः । पाञ्चम्या  
 ख्येन संयोज्य सर्वलोकस्य पश्यतः ॥ २३ ॥ अविध्यत पृथिवीं पार्थः पाद्वै भीष्मस्य

बोला कि मुझे क्या आज्ञाहोती है । १७ । फिर धर्मात्मा भीष्मजी बहुत प्रसन्न होके  
 उसविनीत हाथजोड़े हुए वर्तमान संसारके घनादि संपीचियों के विजय करने वाले  
 अङ्गुन को अपने सम्मुख खड़ा हुआ देखकर बोले । १७ । कि तेरे बाणोंसे भरा  
 हुआ मेराशरीर जलरहा है और मर्मस्थलों में बड़ीपीड़ा है मुख सूखा जाता है । १८  
 है अङ्गुन मुझ दुःख से पीड़ावान् को बलपिच्छा दे दे बड़े धनुषधारी तूही बुद्धि के  
 अनुसार जल देने को समर्थ है । १९ । इतनी बातके सुनतेही उस पराक्रमी अङ्गुन  
 ने बहुत अच्छा ऐसा कहकर रथपर सवारहो बड़े पराक्रमी गांडीवधनुष को मत्पंचा  
 युक्त करके पलसे खिंचा । २० । उसकी मत्पंचा का "और धनुषकी टंकारका शब्द  
 इन्द्रवज्रके समान था उस शब्दको सुनकर सब जीवधारी और राजालोग भयभीत  
 होगये । २१ । तदनन्तर रथियों में श्रेष्ठ अङ्गुन ने रथके द्वारा उसभरतर्षभ महाशस्त्र  
 धारी सोतेहुए भीष्मजी की परिक्रमा करके धनुष पर प्रकाशवान् अभिमंत्रित बाण  
 को चढ़ाकर मेघ झल्ल से संयुक्त करके सब लोगों के देखते हुए । २३ । भीष्मजी  
 के दक्षिण ओर में पृथ्वी को वेधा उसके वेधतेही पृथ्वी में से निर्मल महा शुभ

ing and stood there with downcast head. Then with joined palms he said, "What is your wish?" 16. Virtuous Bhishma, much pleased with the humble attitude of Arjun the conquer of the world and seeing him standing in his presence, said, "Full of thy arrows my body is burning and I feel much pain in the vital parts. My mouth is parched. Give me, distressed with pain as I am, water to drink. Thou alone, O great archer, canst supply me water by your wisdom!" At this Arjun said, "Very well" and mounting his chariot, he put string to the Gandiv bow of great strength and pulled it with great force. 20. The sound of his bow and bowstring was like that of the vajra of Indra causing fear to the kings as well as the other living beings. Then Arjun the best of charioteers having gone round the sleeping warrior Bhishma, the best of Bharats, put to his bow bright arrow and having inspired it with aphorism and united it with the weapon producing water, pierced with it the ground to

दक्षिणे । उत्पपात ततो घारा वारिणो विमलानुभा ॥ २४ ॥ शीतस्यामृतकल्पस्य  
 दिव्यगन्धरसस्य च । अतर्पयत्ततः पार्थः शीतया अलघारया ॥ २५ ॥ भीष्मं कुरुणा  
 मृपमं दिव्यकर्म पराक्रमम् । कर्मणा तेन पार्थस्य शक्रस्येव विकुर्यतः ॥ २६ ॥ विस्मयं  
 परमं जग्मुस्तत्ते पशुघाधिपाः । तत् कर्म श्रेष्ठं धीमसौ रतिमानुपविक्रमम् ॥ २७ ॥  
 संप्रावेणस कुरवो गावः शीतार्दिता इव । विस्मयाच्चोत्तरीयानि व्याविश्यन् सर्वतो  
 नृपाः ॥ २८ ॥ शंखदुन्दुभिनिर्घोषस्तुमुलः स्रधतोमयत् । एत शान्तनयश्चापि राजन्  
 योभक्तसुमत्र शीत् ॥ २९ ॥ सर्वपाथिववीराणां सत्रिधौ पत्रयप्रिय । नैतच्छिष्टं महा  
 बाहो त्वयि कौरवमन्दन ॥ ३० ॥ कथितो नारदेनासि पूर्वविरमितघने । वामुदेवमहाय  
 स्त्वेमहत् कर्म करिष्यसि । ३१ ॥ यत्रोत्सहनि देवेन्द्रः सह देवैरपिमयम् । विदुस्त्यां  
 निघनं पार्थ सर्वज्ञस्य तद्विदः ॥ ३२ ॥ धनुर्धराणामेकस्य वृथिः प्रायवरो नृप ॥ ३३ ॥

पवित्र जलकी घारा ऊपरकी ओर फुल्लारे के समान निकली । २४ । वहजल  
 महाशीतल अमृत के समान दिव्य मुगन्धित और रससे भरा हुआ था उसशीतल  
 जलकी घारा से अर्जुन ने कौरवों में भेष्ट दिव्य कर्म और बलबाले भीष्मजी को  
 वृत्तकरादिया इस के पीछे इन्द्रके समान अर्जुन के उत्तकर्म से । २६ । उनमय  
 राजाओंको बड़ा आश्चर्य्य हुआ अर्जुन के इस अमानुषी कर्म और बलको देखकर  
 कौरवलोग ऐसे महाकंपायमान हुए जैसे कि शीतसे कंपायमान गीर्ण होती हैं राजा  
 लोगों ने बड़े आश्चर्य्य से सब ओरको अपने २ दुपट्टोंको ढिंलाया । २८ । और  
 सब ओरसे शंख दुन्दुभियों के कठिनशब्द हुये हे राजा उस जलसे वृत्त हुए भीष्म  
 जी सब धूरवीर राजाओं के सम्मुख बड़ी प्रशंसा करके अर्जुन से यह वचन बोले  
 कि हे महाबाहु हे कौरवमन्दन यह तुझमें आश्चर्य्य की बातनहीं है । ३० ॥ हे बड़े  
 तेजस्वी तुमको नारदजीने प्राचीन ऋषि वर्णन किया है तुम वामुदेवजीके संग होकर  
 बड़े २ कर्म करोगे । ३१ ॥ जिस कर्म के करनेको देवताओं समेत इन्द्रभी असमर्थ हैं  
 वह तुम करसकोगे हे अर्जुन मुख्य वृत्तान्तके शावलोगोंने तुमको सब लज्जीकुलमात्र

the right of Bhishma within sight of all. As soon as the arrow  
 pierced the ground, there came out of it a fountain of pure water,  
 cold and sweet to the taste like nectar and sweet scented. With that  
 fountain of cold water Arjun quenched the thirst of brave Bhishma.  
 All the kings wondered at the Indra-like prowess of Arjun. The  
 Kauravas trembled at the superhuman deed and strength of arms  
 as cows shake by cold. The kings fluttered their cloths at the  
 wonderful deed and loud peals of conchs and trumpets were heard  
 on all sides. Satisfied by the drink, Bhishma praised Arjun's work  
 in the presence of all the kings, saying, "It is not strange for you,  
 joy of Kauravas. 30. O glorious one, thou art spoken of as an  
 ancient rishi by Narad and, accompanied by Varsudev, you will do  
 great deeds. Thou canst do deeds impossible to Indra and other

मनुष्या जगति श्रेष्ठाः पक्षिणां पतंगेश्वर । सर्पितां सागरः श्रेष्ठो गौर्वरिष्ठा चतुष्पदाश्च ॥ ३४ ॥ आदित्यस्तेजसां श्रेष्ठो सिरीणा हिमवान् चर । जातीनां ब्राह्मणः श्रेष्ठः श्रेष्ठस्त्वमसि धन्विनाम् ॥ ३५ ॥ नवै धृतं घातैरुत्थेण वास्य मयोच्यमानं विदुरेण वैध । द्रोणेन रामेण जनादनेन मुहुर्मुहुः सञ्जयेनापि चोक्तम् ॥ ३६ ॥ परीतघृद्धिर्हि विसंभ्र कज्जो दुर्योधनो न च तच्छृद्ध्यति । स शश्वते वै निहतधिराय शान्नातिगो भीम-धत्ताभिभूत ॥ ३७ ॥ एतच्छ्रुत्वा तद्वचः कौरवेन्द्रो दुर्योधनो दीनमना बभूव । तमग्र योऽजन्तनयोर्भिवीक्ष्य निशेध राजन् भवयतिमन्यु ॥ ३८ ॥ दृष्ट दुर्योधने तत्ते यथा पार्थेन धीमता । जलस्य धारा जनिता शीतस्यामृतमग्निधनः ॥ ३९ ॥ एतस्य कर्त्ता

का निश्चयज्ञानाहै । ३२ । तुम उत्तम धनुषधारियों में अद्वितीय हो और पृथ्वीके सब मनुष्योंमें तुम अत्यन्त श्रेष्ठ हो इस संसार में मनुष्य सब से उत्तम है पक्षियों में गरुड़ श्रेष्ठ है । ३३ । नदियों में समुद्र श्रेष्ठ है पशुओं में गौ उत्कृष्ट है मकाशवानों में सूर्य श्रेष्ठ है पर्वतों में हिमालय जातियों में ब्राह्मण श्रेष्ठ है इसी प्रकार तुम धनुष धारियों में श्रेष्ठ हो धृतराष्ट्रके पुत्र ने मेरा कहना वा विदुरजी द्रोणचार्य परशुराम जी और श्रीकृष्णजी का जो कहना और बारंबार संजयका भी कहना नहीं सुना । ३५ । निश्चयकरके निर्दुद्धी और अवैतों के समान दुर्योधन उन कहनेपर श्रद्धा नहीं करता है वह शास्त्रके विपरीत कर्मकर्त्ता भीमसेनके वचने द्वारा दुःखा भरा दुःखा बहुत काल तक सोवेगा । ३६ । कौरवोंका राजा दुर्योधन उनके इस वचनको सुनकर चित्त से उदास होगया इस को उदास देखकर भीष्मजी ने कहा कि हे राजा अबभी समझकर निरहंकारी होजाओ । ३७ । हे दुर्योधन तुमने यह देखा जैसे कि बुद्धिमान अर्जुन ने शीतल अपृतकेतुस्य सुगन्धिवर्षे ज्योति उत्तम जलकी धारा उत्पन्न करी । ३८ । इमलोकमें इसकर्मका करने वाला दूसरा कोई मनुष्य नहीं है आग्नेय वारुण सौम्य वायव्य वैष्णव ऐन्द्र पाशुपति पारमेष्ठ्य

gods; those who know the reality, say that thou art the doath of all kshatryas. You are matchless among warriors and are the best among men. Man is foremost of all beings in this world; garur is foremost among birds; the Ocean is foremost among rivers; cow is the best of braste; the sun holds the first place amongst luminaries; Himalyas amongst mountains, Brahmans among the four orders and you among the archers. The son of Dhritrashtra disregarded my advice as well as that of Vidur, Dronacharya, Parashuram, Krishna and Sanjaya. 35 Surely, Duryodhan is foolish and unwise enough to disregard that advice. Doing deeds against the dictates of the Shastras, he will sleep long defeated and slain by Bhim." Duryodhan the prince of the Kauravas was displeased at these words and seeing him in that state Bhishma said, "Be wise even now O King, and give up self conceit. You have seen, Duryodhan, how Arjun

लोकास्मिन् नान्यः कश्चन विद्यते । आनेयंवारुणं सौम्यं वायव्यमथ वैष्णवम् ॥ ४० ॥  
 ऐन्द्रं पाशुपतं ब्राह्मं पारमेष्ठ्यं प्रजापतेः । धातुस्त्वष्टुश्च सवितुर्व्यस्यतमघातपिया  
 ॥ ४१ ॥ सर्वस्मिन्मानुषे लोके वेत्येको हि घनञ्जयः । कृष्णो धा देवकीपुत्रो नान्यां  
 घेदेह कश्चन ॥ ४२ ॥ अशक्यः पाण्डवस्तात युद्धे जेतुं कथंचन । अमानुषाणि कर्माणि  
 तस्यैतानि महात्मनः ॥ ४३ ॥ तेन सत्त्ववता संख्ये शूराणाह्वयोभिना । कृतिना समरे राजन  
 सन्धिर्भवेत्तु भाविरम् ॥ ४४ ॥ यावत् कृष्णो महाबाहुः स्वाधीनः कुरुसत्तम । तावत्  
 पार्थेन शूरेण सन्धिः ते तात युज्यताम् ४५ यावत्ते च मू-सर्वाः शूरेः सप्रतपवर्भि-नाश  
 यन्तर्जुनस्तायत्सन्धिस्ते तावद्युज्याताम् ॥ ४६ ॥ यावत्सिद्धिंति समरे हतशेषाः सहोदराः  
 मृषाथ यह्यो राजंस्तावत् सन्धिः प्रयुज्यता ॥ ४७ ॥ न निर्देहति ते पावत् क्रोधर्धं ते  
 क्षणधूमम् । युधिष्ठिरो रणे तावत् सन्धिस्ते तात युज्यताम् ॥ ४८ ॥ नकुलः सहदेवश्च

प्रजापत धाता त्वष्टा और सविता के अस्त और सौरि इन सब प्रजों को भी  
 इस नर लोक में अकेला अर्जुनही जानता है वा देवकीनन्दन श्रीकृष्णजी जानते  
 हैं इनदोनों महापुरुषों के सिवाय इस लोक में दूसरा कोई नहीं जानता है  
 । ४१ । हे तात युद्ध में इन पाण्डवों को देवता और असुर भी जीतनेको समर्थ  
 नहीं हैं जिस महात्मा के यह अमानुषी कर्म हैं हे राजा उस युद्धमें पराक्रमी शूरवीर  
 युद्धमें शोभापाने वाले अर्जुनके साथ सन्धिकरने में विलम्ब मतकरो । ४२ । हे  
 कौरवोत्तम जबतक महाबाहु श्रीकृष्णजी अपने स्वाधीन हैं तबतक शूरवीर अर्जुन  
 के साथ तुमकोसन्धिकरलेना योग्य है । ४३ । हे तात जबतक अर्जुन गुप्तग्रन्थी  
 वाले घाणों से तेरी सब सेनाका नाश नहीं करे तबतक तुमको सन्धिकरलेना अ-  
 त्यन्तही योग्य है । ४४ । हे राजा जबतक युद्धमें मरनेसे शेष बचेहुए अपने निज  
 बांधव लोग वा बहुतसे राजालोग नियत हैं तबतक सन्धिहोजाय और जबतक कि  
 क्रोधसे अग्निरूप नेत्र युधिष्ठिर इस तेरी सेनाको भस्मनहीं करता है वा पाण्डव  
 नकुल सहदेव और भीमसेन सब ओर से सेनाका नाशनहीं करें । ४८ । तबतक

the wise produced the fire fountain of water cold as nectar and full  
 sweet scent, None in this world can do it. None in this world  
 knows the use of the weapons of Agni, Varun, Som, Vayu, Vishnu,  
 Indra, Pashupati, Parmeshthi, Prajapati, Dhata, Twashta, Savita  
 and Surya except Arjun and Shree Krishn. 41. Even the gods  
 and asurs are unable to conquer the Pandavas. You must have no  
 hesitation in contracting peace with one who can do such superhu-  
 man deeds. Make peace with Arjun so long as Krishn is with us.  
 You can make peace with Arjun so long as his arrows having hidden  
 knots have not destroyed all your warriors. 45. It is well to have  
 peace so long as some of our kinsmen and many kings are alive and  
 so long as Yndhishtir with his fiery eyes has not burnt your armies

मोमसेनश्च पाण्डवः । यावच्चतुर् महाराज नाशयन्ति न सर्वशः ॥ ४९ ॥ तावत्ते  
पाण्डवैर्वीरैः सौहार्दं मम रोचते । युद्धं महन्तमेवास्तु तात संश्राम्य पाण्डवैः ॥ ५० ॥  
एतत्तु रोषतां वाक्यं यदुक्तोसि मयानघ । एतत्तु त्वममह मन्ये तव सैव कुलस्यच  
॥ ५१ ॥ स्वकथा मन्युं युपशाम्य स्वं पार्थैः पर्ज्यान्तमेतद्यत् कृतं फाल्गुनेन । भीमत्वां  
तादस्तु वः सौहृदश्च जीयन्तु शेषाः साधु राजन् प्रसीद ॥ ५२ ॥ राज्यस्यार्थं दीयतां  
पाण्डवानां मिन्द्रप्रस्थ धर्मराजोभियातु । मामित्रधुक् पार्थिवानां जघन्यः पापां कीर्त्ति  
प्रापस्यसे कौरवेन्द्र ॥ ५३ ॥ ममावसानाच्छान्तिरस्तु प्रजानां संगच्छन्तां पार्थिवाः प्रीति  
मन्तः । पिता पुत्रं मातुल भागिनेषो ज्ञाता चैव भ्रातर प्रेतु राजन् ॥ ५४ ॥ नवे देवं  
प्राप्तकाल वचो मे मोहाविष्टः प्रतिपत्स्यत्युद्धवां । तत्पश्यन्तेऽप्यतदन्ताः स्य सर्वे सत्या

वीर पाण्डवों के साथ तेरी प्रीतिहोना मुझको अभीष्टहो हेतात मैं चाहताहूँ कि यह  
महामयन युद्ध अभीष्टही मरण पर्यन्तरहै तू अवश्य पाण्डवों से सन्धिकर । ४९ ।  
इस बातको तू मनसे समझकर अंगीकारकर हेतात यह मैंने तुझको समझाया है  
यादे तू समझेगा तो तेरी और कुल के लोगोंकी कुशल अवश्य होगी । ५० ।  
अहंकारको त्यागकरके पाण्डवों से सन्धिकर अर्जुनके इतने ही करनेको तू बहुत  
समझ भीष्मकेही मरणान्तसे तुम्हारी और पाण्डवोंकी प्रीतिहो यह बहुतश्रेष्ठहै इसी  
प्रीतिमें शेष बचेहुएसत्री वचनायेंगे हे राजा मेरे इस कहनेपर प्रसन्नहोके पाण्डवों  
के आये राज्यको देदो और धर्मराज राजा युधिष्ठिर इन्द्रप्रस्थको जाय हे कौरवेन्द्र  
तू मित्रोंसे शत्रुता करनेवाला राजाओंमें नीच मतहो नहीं तो पापरूपी अपकीर्त्तिको  
पावेगा । ५१ । मेरेनाश होने से प्रजाओं को सुखहो और प्रीति रखनेवाले राजा  
लोग परस्पर में मिलें हे तात पिता पुत्र से मामा भानजे से भाई भाई से आनन्द  
पूर्वक मिलें जो मोहसे भरेहुए निर्बुद्धितासे समय के अनुसार मेरेकहे हुए वचन को  
नहीं मानेगा तो अन्त में महादुःखों को पावेगा और सबकी एकसीही दशा है मैं  
इस बातको सत्यही कहता हूँ । ५४ । गान्धेय भीष्मजी राजाओंके मध्य में घड़ी

and the Pandavas Bhim, Nakul and Sahadev have not destroyed them. I like to see you united with the brave Pandavas. I shall be happy, if this war ends with my death. Be sure to make peace with the Pandavas. Act upon my advice; your welfare and that of your kinsmen depends upon it 50. Give up selfishness and make peace with the Pandavas. What Arjun has done is sufficient. Let Bhishma's death be the restoration of friendship between the Kauravas and the Pandavas. Thus the rest of the kshatriyas will not die. Be pleased to give half the kingdom to the Pandavas. Take Prince Yudhishtir to Indraprasth. Princes of the Kauravas, do not achieve sinful notoriety among kings by incurring the reproach of meanness and making foes of friends. Let the people be happy with my death and the loving kings meet together. Let fathers

मेतां भारतीमीरयामि ॥५५॥ पतद्वाक्यसौददादापगेषो मध्ये राधां भारतं आवयित्वा ।  
तूष्णीमासीच्छल्यसन्तप्तमर्मा योज्यात्मानं वेदनां सचिद्यस्य ॥ ५६ ॥ सञ्जय उवाच ।  
धर्मार्थसहितं वाक्यं श्रुत्वा हितप्रनामयम् । नातोच्चयतपुञ्जस्ते मुमुर्षु रिष जेपजम् ५७॥  
इति महा० भीष्मार्चणे भीष्मवर्षणे त्रयविंशधिकशततमोऽध्यायः ॥ १२३ ॥

सञ्जय उवाच । ततस्ते पार्थिवाः सर्वे जग्मुः स्थानालयान् पुनः । तूष्णीं भूते महा  
राज भीष्मे शान्तनुनन्दने ॥ १ ॥ श्रुत्वा तु निहतं भीष्म राधेयः पुरुषर्षभः । ईयदागत  
सन्नासस्त्वययोपजगामह ॥ २ ॥ स ददर्श महात्मानं शरतल्पगतं तदा । जन्मशय्या  
गतं धीरं कार्तिकेयमिव प्रभुम् ॥ ३ ॥ निर्मोलिताक्षं तं धीरं साधुकण्ठस्तदा वृषः ।  
भीष्मभीष्ममहाबाहो इत्युवाच महापुतिः ॥ ४ ॥ राधेयोहं कुरुध्रेष्ठ नित्यमक्षिगतस्तव ।  
हेष्योहं तव सर्वत्र इति चैनसुवाचह ॥ ५ ॥ तद्युत्वा कुरुवृष्टोहि यलातसंहृतलोचनः

शुभचिन्तकतासे कौरवोंके राजा दुर्योधन को यह वचन सुनाकर भालेंसि पीड़ित अंगों  
के दुःखोंको सहकर मनबुद्धिको आत्मामें लयकरके गीन होगये । ५५। संजयबोले कि  
आपके पुत्रने धर्म अर्थ से संयुक्त होकर प्रियकारी निर्दोष निरुपाधि वचनोंको सुनकर  
ऐसे स्वीकार नहीं किया जैसे कि सन्निकट मरनेवाला पुरुष वैद्यकी औषधीको नहीं  
अंगीकार करताहै ५६ ॥ अध्याय १२४ ॥

संजय बोले हे महाराज शतनुके पुत्र भीष्मजीके मौनहोनेपर वह तब राजा लोग  
फिर अपने२ डेरोंको गये । १। पुरुषोत्तम कर्ण भीष्मजीको मृतकमुनक ( कुछेकव्याकु  
लसाहोकर पड़ी शीघ्रतासे उनकेपासगया । २। वहाँ उसने जब उसमहात्मा समर्थ शूर  
धीर जन्मशय्या पर वर्तमान स्वामिकार्तिकके समान शरशय्यापर नियत भीष्मजीको  
देखा । ३। तब अश्रुपातोंसे गदगद कण्ठहोकर बड़ातेजसी कर्ण उस निमलित्तासने  
बोला हेमहाबाहु भीष्म हे कौरवोत्तम मैं राधाका पुत्र सदैव आपके नेत्रोंके आगे रहने  
वालाहूँ हे सर्वज्ञ मैं आपका द्वेषी हूँ इन बातों को सुनकर बड़ेबलसे नेत्रों को खोलकर  
गांगेय भीष्मजीने अपने निवासस्थान को एकांत रूप देखकर स्थान के रत्नों को

meet sons, maternal uncles with sisters, sons and brothers with  
brothers. You will fall into deep misery, if you will not give ear to  
my advice and all others will suffer with you. I speak the truth:"  
Having said these words to Duryodhan the prince of the Kauravas,  
Bhishm suffering from the pangs of darts, became silent and fell in  
meditation. Sanjaya says, "Your son heard those words full of wisdom  
and profit, but did not accept them as a person about to die refuses to  
take medicine." 56. CHAPTER XXIV

Sanjaya said, "When Bhishm the son of Shantanu had become  
silent, all the kings went away to their respective tents. Karan the  
best of men, having heard of Bhishm's fall, came to him with a dis-  
tressed mind. Seeing him on the bed of arrows, like Lord Kartikeya  
lying at his birth on his bed of reeds, glorious Karan with tears in his  
eyes and voice choked said to Bhishm whose eyes were closed, "Valiant  
Bhishm, best of the Kauravas, I am Radha's son who was always hateful

शनैरुद्धीक्ष्य सत्नेह मिदं वचनमब्रवीत् ॥६॥ रहितं धिष्ण्यमालोक्य समुत्सार्य च रक्षिणः  
 पितेव पुत्रं गांगेयः परिरभ्यैकजायिता ॥ ७ ॥ एह्येहि मे विप्रतीपस्पर्धसत्वं मया सह ।  
 यदिमानाधिगच्छेयानते श्रेयोधुवं भवेत् ॥ ८ ॥ कर्तव्यस्त्वं नराधेयो नतवाधिरथ पिता ।  
 सूर्यजस्त्वं महात्माहो विदितो नारदान्मया ॥ ९ ॥ कृष्णद्वैपायनाच्चैव तच्च सत्यं न  
 संशयः । न च द्वेषोऽस्ति मे तात त्वयि सत्यं ब्रवीमि ते ॥ १० ॥ तेजोवधनिमित्तन्तु परम  
 त्वाहमब्रवं । यत्कस्मात्पाण्डवान्सर्वा नवाक्षिपासि म्रत ॥ ११ ॥ यनासि बहुशोराहा  
 घोदितः सुतनन्दन । जातोऽसि धर्मलोपिन ततस्ते दुर्धिरिदृशी ॥ १२ ॥ नीचाश्रयान्मत्स  
 रेण द्वेषिणीं गुणिनामपि । तेनासि बहुशो रुक्षं धावितः कुरुससदि ॥ १३ ॥ जानामि  
 समरे धीर्यं शत्रुभिर्दुःसहं भुभिः । ब्रह्मग्यता च शौर्यञ्च दानेव परमास्थितिम् ॥१४॥  
 न त्वया सहशः कश्चित् पुरुषेष्धर्मरोपमः । कुलभेदमयाच्छाहं सदा परममुक्तवान्

उठाकर जैसे कि पिता पुत्रपर स्नेहकरता है उसीप्रकारसे कर्णको एकहाथसे छातीके  
 द्वारा मिलाकर घड़े धीरे-यहवचन बोले । ७। कि हे मेरेद्वेषी आओ तू मेरेसाथ ईर्ष्या  
 करता है जो तू मुझको महीं मिलता तो निश्चयकरके तोराभला नहीं होता । ८। तू  
 राधाका पुत्रनहीं है किन्तु कुन्तीकाही पुत्र है और तेरापिता अधिरथीनहीं है सूर्यका पुत्र  
 है यहभेद मुझको नारदजीने बताया है । ९। और व्यासजी बाकेदावजीसेभी विदित  
 हुआ इसमें किसी बातकाभी सन्देह नहीं है और यहवातभी मैं सत्य ९ कहता हूँ कि  
 तेरेसाथ मेरी किसीप्रकारकी भी द्वेषता नहीं है । १०। मैंने तेरे तेज नष्टहोने के लिये  
 कठोर वचनकहे थे हे सुन्दरव्रतवाले कर्ण तू अरुस्मात् सब पांडवोंको मारेगा । ११।  
 हेसुतनन्दन इसीकारणते राजा दुर्योधन ने तुमको बारबार कहकर उधुक्त किया है  
 तू धर्मके यूपसे उत्पन्न हुआ है इसहेतुसे तेरी ऐसी बुद्धि है । १२। गुणवान् मनुष्यों  
 की बुद्धिभी नीचों के संगतेवा ईर्ष्यासे द्वेष करनेवाली होजाती है इसीहेतुसे कौरवों  
 की सभामें बहुधा क्रोधे-वचन सुनेगये । १३। मैं युद्धमें तेरे पराक्रमको पृथ्वी भरके  
 भी शत्रुओंसे असह्य जानता हूँ और वेद ब्राह्मण की रक्षाकरनेमें शूरतामें और दान  
 में तेरी बड़ी हड़ताको जानता हूँ । १४। मनुष्यमात्रों में तेरेसमान देवताओं के समान

in your sight." At this Bhishm opened his eyes with great exertion and seeing his habitation deserted, he ordered the guards to move away, and as a father loves a son, he embraced Karan with one arm and

॥ १५ ॥ इत्येव चारुसन्धाने लाघवेऽस्त्रगले तथा । सदृशः पादगुणेनासि कृष्णे नचमहा  
 रम्भा ॥ १६ ॥ कर्णे काशिशुरे गत्या त्वयैकेनच नुष्मता । कन्यायं पुरुराजस्य राजानो  
 मुदितायुधि ॥ १७ ॥ तथा च बलवान् राजा जरासन्धो दुरासदः । समरे समरश्लाघि  
 न्तयया मन्त्रशोभवत् ॥ १८ ॥ ब्रह्मस्य सत्पराधीनं तज्जमा च बलेनच । देवगर्भममः  
 संवये मनुष्यैरधिको युधि ॥ १९ ॥ व्यपनीतोद्य मनुष्यैः यस्त्रयां प्रति पुराकृतः । दैवं  
 पुरयकरिण न शक्यमतिगतिनुम् ॥ २० ॥ सोदृश्या पाण्डवाजीरा भ्रातरस्तेऽग्निमूढन ।  
 सद्गच्छतेर्महाबाहो ममचेदिच्छसिप्रियम् ॥ २१ ॥ मयाभवतुनिर्गन्तं धीरमादित्यनमूढन ।  
 पृथिन्यांसर्वराजानो भयत्पयानिरामया ॥ २२ ॥ कर्ण उवाच । जानाम्येव महाबाहो  
 सर्वमेतन्न संशयः । यथाचक्षिमेभीष्म कौन्तेयोद्वन्द्वमृतजः ॥ २३ ॥ अथकर्णस्त्वहंकुन्त्या

पराक्रमी कोई नहीं है मैंने कुलकी द्वेपनाके भयमे सदैव कटारवधन कहे । १५। पाण  
 और ब्रह्मोंके चक्रानेमें और हस्तलाघवतामेंवा अश्वत्थमें तू महात्मा श्रीकृष्णजी और  
 अर्जुन के समान है । १६ । हे कर्ण तुम्ह अकेले धनुषभारी ने काशीपुरी में जाकर  
 कुरुराजकी कन्याके निमित्त बड़े २ राजाओंका युद्धमें मर्दन किया । १७। इसीप्रकार  
 पराक्रमी और दुरासे विजयहोनेवाला कीर्तिपान् राजाजरामन्त्रयुद्धमें तेरेसमान नहीं  
 हुआ । १८। तुम वेद और ब्राह्मणोंकी रक्षाकरनेवाले अपने तेज यन्त्रमे युद्धकरनेवाले  
 देवगर्भके समान युद्धमें मनुष्यों से अधिकहो । १९। अब वह मेराक्रोध दूरहुआ जो  
 पूर्वमय में मैंने तुम्हपर कियाथा देवी वातको अर्थात् होनहारको कोईभी उपायोंसे  
 उत्तरयत नहीं करसक्ता २०। हे शत्रुहन्ता यह धीर पांडव तेरेसगेभाई हैं ॥ महाबाहु  
 जो तू मेरा हित चाहताहै तो उनसे मिलापकर । २१। हे सूर्यनन्दन अब तू मेरेकहनेसे  
 शत्रुताको त्यागकर जिसमे कि पृथ्वी के सवराजालोग निर्विघ्नहों । २२। कर्ण ने  
 कहा हे महाबाहु भीष्मजी मैं यह निस्तन्दह मयप्रकारमे जानताहूँ कि मैं कुन्ती का  
 पुत्रहूँ परन्तु मुझे कुन्ती ने त्यागकर दिया तब सूत ने मेरा पोषण किया इस से

reason why you spoke harsh words in the camp of the Kauravas. I know that thy prowess is unbecomable by all thy foes. I know also thy regard for Brahman-, thy courage and thy attachment to alms giving. O godlike man, thou art matchless. From fear of dissensions I always spoke ill of thee. In bowmanship, in the use of weapons in lightness of hand and in the strength of arms thou art a match for Arjun or Krishn. At Kashi you alone crushed all the kings to fetch a bride to the king of Kurus. Even king Jarasandh of great prowess could not withstand thee. You are the protector of the Vedas and Brahmanas and like the progeny of gods you are above men in the field of battle. All my former anger against you is subsided, but none can overstep Fate by worldly means. 20. The brave Pandavas, O destroyer of foes, are your own brothers. Mix with them if you would please me. Take my advice and leave the side of the enemy so that all the princes of the world may not be destroyed." To this Karan made the following reply— I know well that I am Kunti's son and not



शनैरुद्धाहय सस्नेह मिदं वचनमब्रवीत् ॥६॥ रहितं धिषण्यमालोक्य समुत्सर्ग्य च रक्षिणः  
पितृवपुत्रं गानेय. परिस्पर्शकशणिना ॥ ७ ॥ एहो हि मे विप्रतीपस्पर्धसत्यं मया सह ।  
यदि मां माधिगच्छेयान्ते त्रेयोयुषं भवेत् ॥ ८ ॥ कौंतेयस्त्वं नराभेयो न तवाधिरथ पिता ।  
सूर्यजस्त्वं महाबाहो विदितो नारदान्मया ॥ ९ ॥ कृष्णद्वैपायनाच्चैव तच्च सत्यं न  
संशयः । न च द्वेषोऽस्ति मे तात त्वयि सत्यं ब्रवीमि ते ॥ १० ॥ तेजो वधनिमित्तन्तु परुष  
त्वाहमब्रवम् । शकस्मात्पाण्डवान्सर्वां नवाक्षिपासि सव्रत ॥ ११ ॥ यनासि बहुशोराणां  
घोदितः सूनन्दन । जातोऽसि घर्मलोपेन ततस्ते युद्धिरीदृशी ॥ १२ ॥ नीचाध्यात्मरस  
रेण द्वेषिणीं गुणिनामपि । तेनासि बहुशो रुद्धं थाचितः कुरुससदि ॥ १३ ॥ जानामि  
समेते धीर्यं शत्रुभिर्दुःसहं भुभिः । ब्रह्मज्यता च शौर्यञ्च दानेन नरमांस्थितिम् ॥ १४ ॥  
न त्वया सहशः कश्चित् पुरुषेण्यमरोपम । कुलभेदमयाच्चाहं सदा परुषमुक्त्वान्

उठाकर जैसे कि पिता पुत्रपर स्नेहकरता है उसी प्रकारसे कर्णको एकहाथसे छातीके  
द्वारा मिलकर घड़े धीरे-यहवचन बोले । ७। कि हे मेरे द्वेषी आओ २ तू मेरे साथ ईर्ष्या  
करता है जो तू मुझको यहीं मिलता तो निश्चयकरके तोरा मला नहीं होता । ८। तू  
राधाका पुत्र नहीं है किन्तु कुन्तीका ही पुत्र है और तेरा पिता अधिरथी नहीं है सूर्यका पुत्र  
है यह भेद मुझको नारदजीने बताया है । ९। और व्यासजी वाकेशवजीसे भी विदित  
हुआ इसमें किसी बातका भी सन्देह नहीं है और यह बात भी मैं सत्य २ कहता हूँ कि  
तेरे साथ मेरी किसी प्रकारकी भी द्वेषता नहीं है । १०। मैंने तेरे तेज नष्ट होने के लिये  
कठोर वचन कहे थे हे सुन्दरव्रतवाले कर्ण तू अकस्मात् सब पांडवोंको मारेगा । ११।  
हे सूनन्दन इसी कारणसे राजा दुर्योधन ने तुमको बार-बार कहकर उद्युक्त किया है  
तू धर्मके यूपसे उत्पन्न हुआ है इस हेतुसे तेरी ऐसी युद्धि है । १२। गुणवान् मनुष्यों  
की युद्धि भी नीचों के संगे वा ईर्ष्यासे द्वेष करनेवाली हो जाती है इस हेतुसे कौरवों  
की समा में बहुत ही रुखे वचन सुनेगये १३ मैं युद्धमें तेरे पराक्रमको पृथ्वी भर के  
भी शत्रुओंसे असह्य जानता हूँ और वेद ब्राह्मण की रक्षा करने में शूरतामें और दान  
में तेरी बड़ी हृदयताके जानता हूँ । १४। मनुष्यमात्रों में तेरे समान देवताओं के समान

in your sight." At this Bhishm opened his eyes with great exertion and seeing his inhibitor abashed, derisive, & disgusted he embraced him, and as a father loves a son, he embraced Karan with one arm and said these words very slowly:—"Come my opponent and adversary. Certainly it would not be well for thee if you had not come to me. You are the son of Kunti and not of Radha; your father is Surya and not the chariot driver. I have got this information from Narad. Vyas and Keshav too, know this and there is no doubt about it. I tell you truly that I bear no enmity against you. 10. I said harsh words in order to deprive thee of thy zeal and that you may not destroy all the Pandavas at once. It is why Prince Duryodhan instigates you again and again. You came into this world in a sinful way and therefore thy heart is so inclined. Even good men may lean towards wickedness by the society of bad men and this was the

॥ १५ ॥ इत्येवं चाखिलसन्धाने लाघवेऽस्त्रगले तथा । मरुताः पाण्डुनेतामि कृष्णे न च गदा  
 त्मना ॥ १६ ॥ कर्णे काशिशुरे गत्वा त्वयं केन च नु प्रभता । कन्यायं कुरुराजस्य राजानो  
 मृदितायुधि ॥ १७ ॥ तथा च धृतराज राजा जरासन्धो दुरासदः । समरे समरश्लाघि  
 न्तपया सशशोमवत् ॥ १८ ॥ अथ यः सत्यपार्थिव तपसा च यत्नेन च । देवगर्भसमः  
 संवये मनुष्यैरपि को युधि ॥ १९ ॥ व्यपनीतोऽयं मनुष्यं पश्यां प्रति पुराकृत । देव  
 पुरुषकारेण न शक्यमतिशतितुम् ॥ २० ॥ सौर्य्या पाण्डुपुत्रोऽस्मात्तरस्तेऽग्निसूदन ।  
 सद्गच्छते महाबाहो मम चेद्विच्छसि मियम् ॥ २१ ॥ मया गवतु निर्यस्तं धर्ममादित्यनन्दन ।  
 पृथिव्यां सर्वराजानो भवन्मयानिरामया ॥ २२ ॥ कर्ण उवाच । जानाम्येव महाबाहो  
 सर्वमेतत्प्र संशयः । यथावदस्मि मे भीष्म कौन्तेयोर्द्वन्द्वमूतज ॥ २३ ॥ अथ कर्णोऽस्वयं कुन्त्या

पराक्रमी कोई नहीं है मैंने कुलकी द्वेषनाके भयसे सदैव कटोरवधन कहे । १५। पाण  
 और अर्जुन के चलाने में और हस्तशायनता में वा अस्त्रयन्त्र में तू महात्मा श्रीकृष्णजी और  
 अर्जुन के समान है । १६ । हे कर्ण तुम्हें अकेले धनुषपारी ने काशीपुरी में जाकर  
 कुरुराजकी कन्याके निमित्त बड़े २ राजाओंका युद्धमें मर्दन किया । १७। इसी प्रकार  
 पराक्रमी और दु खसे विषय होनेवाला कीर्तिमान राजा जरासन्ध युद्धमें तेरे समान नहीं  
 हुआ । १८। तुम वेद और ब्राह्मणोंकी रक्षा करनेवाले अपने तेज यन्त्रे युद्ध करनेवाले  
 देवगर्भके समान युद्धम मनुष्यों से अधिक हो । १९। अब वह मेरा क्रोध दूर हुआ जो  
 पूर्व समय में मैंने तुम्हपर किया था देवी बातको अर्थात् होनेहारको कोईभी उपायोंमे  
 उल्लंघन नहीं कर सकता । २०। हे शत्रुहन्ता यह वीर पांडव तेरे सगे भाई हैं हे महाबाहु  
 जो तू मेरा हित चाहता है तो उन से मित्रापकर । २१। हे सूर्यनन्दन अब तू मेरे कहनेसे  
 शत्रुताको त्याग कर जिससे कि पृथ्वी के सव राजालोग निर्विघ्न हों । २२। कर्ण ने  
 कहा हे महाबाहु भीष्मजी मैं यह निस्तन्देह ममप्रकारसे जानता हूं कि मैं कुन्ती का  
 पुत्र हूं परन्तु मुझे कुन्ती ने त्याग कर दिया तब सूत ने मेरा पोषण किया इस से

reason why you spoke harsh words in the camp of the Kauravas. I know that thy prowess is unbearable by all thy foes. I know also thy regard for Brahmins, thy courage and thy attachment to alms giving. O godlike man, thou art matchless. From fear of dissensions I always spoke ill of thee. In bowmanship, in the use of weapons in lightness of hand and in the strength of arms thou art a match for Arjun or Krishna. At Kashi you alone crushed all the kings to fetch a bride to the King of Kurus. Even King Jarasandh of great prowess could not withstand thee. You are the protector of the Vedas and Brahmins and like the progeny of gods you are above men in the field of battle. All my former anger against you is subsided, but none can overstep Fate by worldly means. 20. The brave Pandavas, O destroyer of foes, are your own brothers. Mix with them if you would please me. Take my advice and leave the side of the enemy so that all the princes of the world may not be destroyed. To this Karan made the following reply— I know well that I am Kunti's son and not

सूतेन च विवर्धितः ॥ भुङ्क्त्वा दुःपुत्र्यो धनैश्चर्ये न मिथ्या कर्तुं मुत्सहे ॥ २४ ॥ वसुदेवसुतो  
 यद्रूपपाण्डवाय हृदप्रतः । वसुचैव शरीरञ्च पुनर्दारुतथायशः ॥ २५ ॥ सर्वदुःपुत्र्यो धन  
 स्यायं त्यक्तमे भूरिदक्षिण । माचैतद्व्याधिमरणं क्षत्रस्यादिति कौरव ॥ २६ ॥ कोपिताः  
 पाण्डवानित्यंसमाभित्य सुयोधनम् । अवश्यभावीह्यर्थोयं योनशक्त्योनिवर्तितुम् ॥ २७ ॥  
 दैवं पुरुषकारेणको निवर्तितुमुत्सहेत् । पृथिवीक्षयशंसिनि निमित्तानिपितामह ॥ २८ ॥  
 भवद्भिरुपलभ्यानि कथितानिच संसदि । पाण्डवावावसुदेवश्च विदिताममसर्पेशः ॥ २९ ॥  
 अजेयाः पुरुषैरभ्यैरिति तांश्चोत्सहामहे । विजयिष्येरणे पाण्डू नितिमेनिधितमनः ॥ ३० ॥  
 नचशक्त्यमवघट्टं वैरेमेतत्सुदारुणम् । धनञ्जयेनयोत्स्येहं स्वधर्मप्रीतमानसः ॥ ३१ ॥  
 अनुजानीष्वमातात युद्धायकृतनिश्चयम् । अनुज्ञातस्त्वया धीरयुध्येयमिति मे मतिः ॥ ३२ ॥

दुःपुत्र्यो धनके ऐश्वर्यको भोगकर उसको निष्फलकरना मैं उचित नहीं समझता हूँ  
 जैसे कि वसुदेव जीके पुत्र श्रीकृष्णजी पाण्डवों के निमित्त हृद प्रतवाले हैं उसी प्रकार  
 मैंने भी ॥ २५ ॥ धन जन पुत्र स्त्री परिवार और कीर्ति दुःपुत्र्यो धनके निमित्त विचारकर  
 लिये हैं हे बड़ी दक्षिणावाले कौरव कुल क्षत्री मैं रोगादिकों से मरना योग्य नहीं  
 समझता हूँ ॥ २६ ॥ मैंने वसुदेव के आश्रय में होकर पाण्डवों को संदेव क्रोधित किया  
 है और होतव्यता है वह तो अवश्यही होगी उसका मिटाने वाला कोई भी नहीं है कौन  
 सा मनुष्य होनहारको उपायोंके द्वारा लौटा सकता है हेपितामह संसारके मनुष्योंके नाश  
 कारी चिह्न आपलोगोंने देखे हैं और सभामें वर्णन किये पाण्डव और वासुदेवजी सब  
 प्रकारसे मेरे जाने हुए हैं ॥ २९ ॥ वह अन्य मनुष्य तो अजेय हैं परन्तु उत्साह पूर्वक कह-  
 ता हूँ कि मैं उन पाण्डवों को विजय करूंगा यह मेरे चित्तका निश्चय है ॥ ३० ॥ जोकि यह  
 महा भयकारी शत्रुता त्यागकरने के योग्य नहीं है इस कारण अपने धर्ममें मस्त चित्त  
 होकर मैं अर्जुनसे लड़ूंगा ॥ ३१ ॥ हे तात युद्धके निमित्त तुम्हीं निश्चय करके युद्धको  
 आज्ञा दो आपकीही आज्ञा से मैं युद्ध करूँ यही मैं चाहता हूँ ॥ ३२ ॥ और जो मैंने नि-

of the Sut. But he brought me up when I was deserted by Kunti' and  
 having enjoyed Duryodhan's wealth, I donot like to desert him. All  
 my wealth, sons, wives will I sacrifice for the good of Duryodhan and  
 shall be as faithful to him as Krishn is to the Pandavas. Being born  
 a kashtrya I donot like to die of sickness or other causes. Being attach-  
 ed to Duryodhan I have always looked down upon the Pandavas. Fate  
 will have her course; none can undo her works. You have seen, O  
 grandfather, the signs destructive of the world and have spoken of them  
 in the assembly. I know that the Pandav (Arjun) and Vasudev are  
 invincible and yet I aspire to conquer them. I am resolved to do this.  
 30. I shall fight against Arjun because I donot like to set aside this  
 great enmity. I ask your own permission to fight, and it is the desire  
 of my heart that I should fight with your consent I ask your pardon  
 for all the harsh words which I ever uttered." At this Bhishm said,

युद्धं विप्रतीपं वा रमसाभापलात्तया । यन्मये ह कृतं किञ्चित् तन्मे त्वं क्षम्यतु महसि ॥ ३३ ॥  
भीष्म उवाच । न चेच्छत्र्यमवच्छादं धैर्यमेतत् सुदारुणम् । अनुजानामि कर्णत्वाद्युत्पत्त्यस्य  
स्वर्गोक्तम्यथा ॥ ३४ ॥ निर्मन्मुर्गंत संरम्भः कृतकर्मारणे समह । यथाशक्ति योत्साहं सतां  
वृत्तेषु हृत्तयात् ॥ ३५ ॥ अहं वामनुजानामि यदिच्छसि तदाप्नुहि । क्षत्रधर्मजितौ  
यदोक्तानवाप्तस्यसि धनञ्जयात् ॥ ३६ ॥ युष्मत्स्वनिहन्तु नरो पलवीर्यं यथाश्रयः । धर्म्यादि  
युद्धाच्छ्रेयोऽथत् क्षत्रियस्य न विद्यते ॥ ३७ ॥ प्रथमेहि कृतोपलः सुमहान् सुचिरमया ।  
न चैव शक्तिः कर्तुं कर्णं सत्यं प्रधीमि ते ॥ ३८ ॥ सम्भ्रज्य उवाच । इत्युक्त्यति गाद्रेये  
अभिवाप्रोपमेत्यच । रुध्रेयो रथमावह्य प्रायात्तप सुतं प्रति ॥ ३९ ॥

इति श्री महाभारते भीष्मपर्वणि भीष्मवधपर्वणि भीष्मकर्णसमागमे

चतुर्विंशत्यधिकशतोऽध्यायः ॥ १२४ ॥

समाप्त्येव भीष्मपर्वः ।

युद्धिता व चपलता मे अत्यन्त दुरी २ विपरीत वार्त्ता करी आप उन मेरे कठोर बचनों  
को क्षमा करनेके योग्य हैं । ३१। भीष्मजी बोले कि जो यह अत्यन्त भय उत्पन्न करने  
वाली शत्रुता त्याग करनेके योग्य नहीं है तो हे कर्ण मैं तुम्हको आशा देता हूँ कि स्वर्ग  
की इच्छासे तू युद्ध कर । ३४। क्रोध अहंकार से रहित चल और साहस्यके अनुसार  
युद्धमें क्षमा करनेवाला शक्ति और उत्साह के समांन संतुलनोंकी वृत्ति करे । ३५। मैं  
तुम्हको आशा देता हूँ और जो तू चाहता है उसको मांसहो क्षत्रीधर्मसे पराजय पानेवा-  
ले निस्सन्देह उत्तम लोकोंको पाते हैं । ३६। अहंकार रहित बलिष्ठ अमनी सामर्थ्य के  
आश्रयमें रहने वाले को धर्मयुद्धके सिवाय सत्री का कल्याण करनेवाला दूसरा कोई  
भी धर्म नहीं है । ३७। अर्थात् बहुतकाल तक सन्धिमें बहुतसा उपाय किया परन्तु करने  
को समर्थ नहीं हुआ हे कर्ण यह तुम्हमे सत्यही सत्य कहता हूँ । ३८। संजय बोले कि  
गांगेय भीष्मजी के इस प्रकार कहने पर राधाका पुत्र कर्ण दण्डवत् पूर्वक अत्यन्त स्तु-  
तिकर रोता हुआसा अपने रथपर सवार होकर आपके पुत्रके पास आया । ३९ ॥

" If you donot like to withdraw yourself from war, I give you per-  
mission to fight for the sake of heaven. Purge thyself of anger and  
selfishness and be brave and forgiving in battle. Do as you like I give  
you permission. Even the conquered in war gain good regions. 36. Free  
from pride, powerful and self relying men have no other duty than  
war. I always tried to have peace but all my efforts were in vain. I  
speak the truth, Karan." Sanjaya said that on hearing the words of  
Bhishma the son of Ganga, Karan bowed down to him with tears in  
his eyes and took leave of him. He then mounted his chariot and  
came back to Duryodhan, 39.



# CONTENTS OF BEISHIM PARYA.

अध्याय विषय	पृष्ठ	Chapter	Subject	Page
१ कौरव पांडवों के युद्धमें नियम ४२३५	४०	1. Rules in the War.		4235
२ भयानक उत्पात	४५	2. Dica iful omens.		40
३ " " "	५८	3. " " "		45
४ स्थावर जंगम वर्णन	६१	4. Moveables and Immoveables		58
५ जम्बूद्वीप	६४	5. Jambukhand.		61
६ जम्बूद्वीप	७१	6. Jambudwip.		64
७ मेरु पर्वतके उत्तरीय भाग	७६	7. North of Meru.		71
८ पर्वत वासी	७९	8. Hill Tribes.		76
९ नदी और देश	८७	9. Rivers and countries.		79
१० जम्बूद्वीप	८९	10. Jambukhand.		87
११ शाकद्वीप	९४	11. Shakdwip.		89
१२ जम्बूद्वीप	९४	12. Jambukhand.		94
१३ भीष्मसुपुत्रवर्णन	१३०१	13. The Fatal News.		4301
१४ धृतराष्ट्र संज्ञय सम्वाद	३	14. Dhritrashtra and Sanjaya.		3
१५ दुर्योधन दुःशसतन "	१३	15. Duryodhan and Dushasan.		13
१६ सेना का वर्णन	१६	16. The armies.		16
१७ " " "	२०	17. " " "		20
१८ " " "	२५	18. " " "		25
१९ सेनाबन्ध	२८	19. The Array.		28
२० " " "	३४	20. " " "		34
२१ युधिष्ठिर भर्जुन सम्वाद	३८	21. Yudhishtir and Arjun.		38
२२ कृष्णार्जुन सम्वाद	४०	22. Krishna and Arjuna.		40
२३ दुर्गा स्तोत्र	४३	23. Durga-stotra.		43
२४ योद्धा के चित्तकी दशा	४६	24. The warriors.		46
२५ भगवद्गीता प्रारंभ	४९	25. The Bhagwadgita.		49
२६ सांख्य योग	५६	26. Sankhya-yog.		56
२७ कर्म योग	६७	27. Karan-yog.		67
२८ ब्रह्मार्पण योग	७४	28. Brahmarpan-yog.		74
२९ संन्यास योग	८१	29. Samnye-yog		81
३० अध्यात्म योग	८६	30. Adhyatm-yog.		86
३१ विज्ञान योग	९३	31. Vijyan.		93
३२ ब्रह्म योग	९७	32. Brahm-yog.		97
३३ राज गुह्य	४४०१	33. Raj-guhya.		4101
३४ विश्वनि	६	34. of Divine Nature.		6
३५ विश्वरूप	१२	35. Vishwarup.		12
३६ " " "	२२	36. " " "		22
३७ जीव ब्रह्म	२५	37. Soul and Brahm.		25
३८ प्रकृति	३०	38. Prakriti.		30
३९ पुरुषोत्तम योग	३४	39. Purshottam.		34
४० सम्प्रतिमान	३७	40. The Destinies.		37

अध्याय	विषय	पृष्ठ	Chapter	Subject	Page
४१	अज्ञा	४१	41.	Faith.	41
४२	तत्त्व निर्णय	४५	42.	Salvation.	45
४३	युद्ध की तयारी	५७	43.	The War.	57
४४	बाण वृष्टि	७१	44.	The shower of Arrows.	71
४५	युद्ध का वर्णन	७५	45.	The war.	75
४६	"	८६	46.	"	86
४७	श्वेत युद्ध	९२	47.	Shwet's battle.	92
४८	श्वेत वध	४५००	48.	Shwet's death.	4500
४९	प्रथम दिन का युद्ध	१४	49.	First day's battle.	14
५०	क्रौंच व्यूह	२०	50.	The phalanx.	20
५१	युद्ध की तयारी	२७	51.	The Preparations.	27
५२	द्रोण और द्रुपद का युद्ध	३१	52.	Drona and Drupad.	31
५३	धृष्टद्युम्न का युद्ध	३९	53.	Dhrishtadyumna.	39
५४	कलिंग वध	४४	54.	Kaling's Death.	44
५५	लक्ष्मण और अभिमन्यु	५८	55.	Lakshmana and Abhimanyu.	58
५६	अर्धचन्द्र व्यूह	६३	56.	The Crescent Array.	63
५७	घोर युद्ध	६६	57.	The Battle.	66
५८	भीम और युधिष्ठिर की वीरता	७०	58.	Bravery.	70
५९	तीसरे दिन का युद्ध	७६	59.	The Third day.	76
६०	चौथे दिन का युद्ध	९५	60.	The Fourth day.	95
६१	अभिमन्यु की वीरता	४६००	61.	Abhimanyu.	4600
६२	भीम युद्ध	४	62.	Bhim.	4
६३	भीम की वीरता	१२	63.	Do.	12
६४	चौथे दिन का युद्ध	१६	64.	The Fourth day's battle.	16
६५	भीष्मजी की मति	२६	65.	Bhishma's advice.	26
६६	नारायण स्तुति	३५	66.	Narayan's Praise.	35
६७	नारायण महिमा	४०	67.	Narayan's greatness.	40
६८	ब्रह्मस्तव	४२	68.	Brahmastav.	42
६९	भीष्मकायायल होता	४५	69.	Bhishma wounded.	45
७०	पररूपर युद्ध	४९	70.	The Battle.	49
७१	"	५२	71.	"	52
७२	भीष्मकायुद्ध	५७	72.	Bhishma's fighting.	57
७३	"	६१	73.	"	61
७४	सात्यकी और भूरिश्रवा	६६	74.	Satyaki and Bhurishrava.	66
७५	मकरव्यूह	७१	75.	The Crocodils Array.	71
७६	धृतराष्ट्र और सञ्जय सम्वाद	७५	76.	Dhritrashtra and Sanjaya.	75
७७	"	७८	77.	"	78
७८	भीमसेन व चित्रसेन	८७	78.	Bhimasen and Chitrasen.	87
७९	भीष्म युद्ध	८९	79.	Bhishma's bravery.	89
८०	भीमसेन व भीष्म	९१	80.	Bhimasen and Bhishma.	91
८१	भीष्म दुर्योधन सम्वाद	९९	81.	Bhishma and Duryodhan.	99
८२	व्यूह रचना	४७-२	82.	The Phalanx	4702

अध्याय	विषय	पृष्ठ	Chapter	Subject	Page
८३	शोकवध	७	83.	The Death of Shantani	7
८४	धृतराष्ट्र सम्भव-सम्वाद	१५	84.	Dhritrashtra and Sanjaya	15
८५	अर्जुनकी वीरता	२१	85	Arjun's bravery.	21
८६	अर्जुन व भीष्म	२८	86	Arjun and Bhishm.	28
८७	भीष्म और युधिष्ठिर	३४	87.	Bhishm and Yudhishtir.	34
८८	भगदत्तकी वीरता	४०	88.	Bhagdatta's bravery.	40
८९	दुर्योधन व भीष्म सम्वाद	४५	89	Duryodhan and Bhishm.	45
९०	मत्स्यमार्तण्डिकानाश	५०	90.	Destruction of Matsya-Matanga.	50
९१	इरावतकी उत्पत्ति	५४	91.	Iravan's origin.	54
९२	घटोत्कच व दुर्योधनयुद्ध	६४	92.	Ghatotkach and Duryodhan.	64
९३	" "	६७	93.	" "	67
९४	" "	७२	94.	" "	72
९५	भीमसेन व अश्वत्थामा	७७	95.	Bhim and Ashwathama.	77
९६	इरावत वध	८३	96.	Iravan killed.	83
९७	छठा दिन	९२	97.	The sixth day.	92
९८	दुर्योधन भीष्म सम्वाद	४८०	98.	Duryodhan and Bhishm.	480
९९	" "	६	99	" "	6
१००	अर्जुन और भीष्म	१२	100.	Arjun and Bhishm.	12
१०१	अलम्बुष व अभिमन्यु	१५	101.	Alambush and Abhimanyu	15
१०२	" "	२१	102.	" "	21
१०३	द्रोणाचार्य व अर्जुन	२८	103	Dronacharya and Arjun.	28
१०४	अर्जुन व भीष्म	३३	104.	Arjun and Bhishm.	33
१०५	अर्जुन व सुशर्मा	३८	105.	Arjun and Susharma.	38
१०६	कौरवी सेना का परास्त होना	४३	106.	Defeat of the Kaurav army.	43
१०७	पांडवों की सेना का नाश	४७	107.	Destruction of the Pandav army.	47
१०८	भीष्म की मृत्युका उपाय	५६	108.	Plan of Bhishm's death.	56
१०९	शिक्षंडी व भीष्म	६९	109.	Shikhandi and Bhishm.	69
११०	दुर्योधन भीष्म सम्वाद	७६	110.	Duryodhan and Bhishm.	76
१११	दुश्शासन व अर्जुन	८१	111.	Dushasan and Arjun.	81
११२	द्वन्द्व युद्ध	८७	112.	Duelling.	87
११३	द्रोणाचार्य व अश्वत्थामा	९३	113.	" "	93
११४	भगदत्तादि व भीम	९८	114.	" "	98
११५	शिक्षंडी व भीष्म	४९०	115.	" "	490
११६	दशवें दिन का युद्ध	१०	116.	The tenth day.	10
११७	" "	१५	117.	" "	15
११८	" "	२४	118.	" "	24
११९	" "	३२	119.	" "	32
१२०	भीष्म वध	३८	120.	Bhishm's fall.	38
१२१	बाणों का तर्किया	५३	121.	The pillow of arrows.	53
१२२	" "	५८	122.	" "	58
१२३	भीष्मोपदेश	६२	123.	Bhishm's advice.	62
१२४	भीष्म व करण का सम्वाद	६५	124.	Bhishm and Karan.	65